Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

को छोड़कर नये यार के साथ भाग जाय. इस तरह के अनेकों लोग हैं मगर इनमें कुछ का ज़िक्र मिसाल के तौर पर किया गया है कि हमारे साधन का चुनाव—कार्यकर्त्ता—बाक़ी सर्वोदय कार्यक्रम के रास्ते में रुकावट न डाले.

जब गान्धी जी ने सत्याग्रहियों के लिये एक आम मांग की तो उन्होंने कचेहरियां, कालेज और स्कूल छुड़वाये, ये सब न सिर्फ़ सर्वोदय समाज में न थे बल्कि 'सर्वोदय के विरोधी' थे और उनके बन्द होने से सर्वोदय की प्रगति हुई. मैं यहां इसका ज़िक्र कर दूं कि जब जब गान्धी जी ने आन्दोलन शुरू किये मुझे हर बार गान्धी जी से साफ़ आदेश मिले कि मैं जिस फ़र्ज़ को पूरा करने में लगा हुआ हूं उसे न छोड़ूँ. "गिरफ़्तार होने न जाओ न कोई क़ानून शिकनी करो. अगर तुम अपना फ़र्ज़ मुनासिब तरीक़े से अदा करोगे तो वे तुम्हें गिरफ़्तार करने के लिये मजबूर हो जायंगे.'' मैंने न कभी क़ानून शिकनी की और न गिरफ़्तार होने गया. और फिर भी मैं सात मर्तबा जेल गया. अगर सर्वोदय समाज रचना के लिये हमारा जीवन अर्पित है तो हमें किसी भी परिस्थिति में अपनी ज़िम्मेवारी की जगह छोड़कर न भागना चाहिये. किसी कार्यक्रम में लक्ष्य मुक़र्रर करने से ज़्यादा जोश पैदा होता है और तब इस क़िस्म की बातें होती हैं. हमें ऐसे प्रलोभनों से बचना चाहिये.

सर्वोदय में न कोई छोटा है न बड़ा. भंगी का काम भी अगर सच्ची सर्वोदय भावना से किया जाय तो उसकी अहमियत किसी भी काम के बराबर है. असली चीज़ अहिंसा है. उससे बढ़कर अहम और कोई चीज़ नहीं.

—जे. सी. कुमारप्पा

کو چھوڑ کر نئے یار کے ساتھ بھاگ جائے . اِس طرح کے انیکوں لوگ ھیں مگر اِن کچھ کا ذکر مثال کے طور پر کیا گیا ھے کہ ھمارے سادھن کا چناؤ—کاریہ‌کرتا—باقی سرودے کاریہ‌کرم کے راستے میں رکاوٹ نہ ڈالے .

جب گاندھی جی نے ستیاگراھیوں کے لئے ایک عام مانگ کی تو اُنھوں نے کچہریاں' کالج اور اسکول چھڑوائے' یہ سب نہ صرف سرودے سماج میں نہ تھے بلکہ 'سرودے کے ورودھی' تھے اور انکے بند ھونے سے سرودے کی پرگتی ھوئی . میں یہاں اِسکا ذکر کر دوں کہ جب جب گاندھی جی نے آندولن شروع کیئے مجھے ھر بار گاندھی جی سے صاف آدیش ملے کہ میں جس فرض کو پورا کرنے میں لگا ھوا ھوں اُسے نہ چھوڑوں . "گرفتار ھونے نہ جاؤ نہ کوئی قانون شکنی کرو . اگر تم اپنا فرض مناسب طریقے سے اداکرو گے تو وے تمہیں گرفتار کرنے کے لئے مجبور ھو جائیں گے." میں نے نہ کبھی قانون شکنی کی اور نہ گرفتار ھونے گیا . اور پھر بھی میں سات مرتبہ جیل گیا . اگر سرودے سماج رچنا کے لئے ھمارا جیون اَرپت ھے تو ھمیں کسی بھی پرستھتی میں اپنی ذمہ‌داری کی جگہ چھوڑ کر نہ بھاگنا چاھیئے . کسی کاریہ کرم میں لکش مقرر کرنے سے زیادہ جوش وخروش پیدا ھوتا ھے اور تب اِس قسم کی باتیں ھوتی ھیں . ھمیں ایسے پرلوبھن سے بچنا چاھئے .

سرودے میں نہ کوئی چھوٹا ھے نہ بڑا . بھنگی کا کام بھی اگر سچی سرودے بھاونا سے کیا جائے تو اُسکی اھمیت کسی بھی کام کے برابر ھے . اصلی چیز اھنسا ھے . اُس سے بڑھ کر اھم اور کوئی چیز نہیں .

—جے . سی . کمارپا

बात नहीं है कि एक बड़े किसान से भूमि लेकर उसे छोटे टुकड़ों में बांटकर व्यक्तिगत किसानों को दे दिया जाय. जमीन को जोतने वाले को कुछ वर्षों के लिये पट्टे पर देना चाहिये और उनके काम की सावधानी के साथ छानबीन करनी चाहिये. इस काम के लिये भी कार्य कर्त्ताओं की तालीम के लिये कृषि कालेजों की जरूरत है.

8. लोग शान्ति पूर्वक जमीन पर अपने स्वामित्व को छोड़ दें इसके लिये उन्हें समझाने की जरूरत है. समझाने बुझाने और लोगों के दिलों को बदलने के लिये भी हमें कार्य कर्त्ताओं की जरूरत होगी. इस लक्ष्य को हासिल करने के लिये शिक्षित कार्यकर्त्ता हमारे साधन हैं. इस बात के लिये भी हमें कृषि कालेजों की जरूरत है.

इस संक्षिप्त विश्लेषण से हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि योजना की सफलता का सारा दारमदार कार्यकर्त्ता पर है. वक्त और विस्तार पर ज्यादा तवज्जह देने से हम हिंसा की तरफ़ बढ़ेंगे, लक्ष्य और निशाने (target) हिंसात्मक योजना के अंग हैं.

चूंकि कार्यकर्त्ता हमारे साधन हैं इसलिये समस्या का हल इस बात में है कि कैसे उन्हें पाया जाय. मौजूदा संस्थाओं में जो लोग काम कर रहे हैं उनसे हटाकर उन्हें इस काम में लगाने का अर्थ हिंसा है.

इस बात को साफ़ करने के लिये इस बात की इजाज़त होनी चाहिये कि मैं दो-एक नुमायां मिसालें दूं कि लोग भावावेश के कारण अपनी जिम्मेवारियों की जगहें छोड़ कर मौजूदा जरूरत की पूर्ति में लग गये (मुझे विश्वास है कि सम्बन्धित व्यक्ति मुझे क्षमा करेंगे). जीवनदान की पुकार पर श्रीमती आशा देवी आर्यनायकम उदार चित्त से आगे बढ़ीं और भूदान आन्दोलन के लिये उन्होंने अपनी सेवायें अर्पित कर दीं. क्या यह मुनासिब बात हुई ? क्या उनका जीवन पहले से ही बुनियादी तालीम के लिये अर्पित नहीं था ? नई तालीम सर्वोदय समाज रचना का एक अंग है. जब सर्वोदय समाज रचना में भूदान का सम्बन्ध उसके आर्थिक, सामाजिक, और राजनैतिग क्षेत्रों से है, भावी नागरिकों की रचना में बुनियादी तालीम सांस्कृतिक और आध्यात्मिक अंशदान है. कौन ज्यादा जरूरी है ? बुनियादी तालीम का काम छोड़कर भूदान में लगना दरअस्ल एक पिछड़ा हुआ क़दम है. बाइबिल के लफ़्ज़ों को अगर हम इस्तेमाल करें तो यह होगा कि :— "बच्चों की रोटी लेकर उन्हें कुत्तों के आगे फेंकना मुनासिब नहीं है." इसी तरह से श्री शंकर राव देव और श्री अन्ना साहब सहस्रबुद्धे जो सर्व सेवा संघ में जरूरी जगहों पर काम कर रहे थे अपना काम छोड़ कर भूदान के काम में लग गये. यह तो वही बात हुई कि कोई पत्नी अपने विवाहित पति

بات نہیں ہے کہ ایک بڑے کسان سے بھومی لیکر اُسے چھوٹے ٹکڑوں میں بانٹ کر ویکتی گت کسانوں کو دے دیاجائے. زمین کو جوتنے والے کو کچھ ورشوں کے لئے پٹے پر دینا چاہیئے اور اُنکے کام کی ساودھانی کے ساتھ چھان بین کرنی چاہیئے. اِس کام کے لئے بھی کاریہ کرتاؤں کی تعلیم کے لیئے کرشی کالجوں کی ضرورت ہے.

8. لوگ شانتی پوروک زمین پر اپنے سوامتو کو چھوڑ دیں اِسکے لئے اُنہیں سمجھانے بجھانے کی ضرورت ہے. سمجھانے بجھانے اور لوگوں کے دلوں کو بدلنے کے لئے بھی ہمیں کاریہ کرتاؤں کی ضرورت ہوگی. اِس لکش کو حاصل کرنے کے لئے ٹریند کاریہ کرتا ہمارا سادھن ہے. اِس بات کے لیئے بھی ہمیں کرشی کالجوں کی ضرورت ہے.

اِس سنکشپت وشلیشن سے ہم اِس نتیجے پر پہونچتے ہیں کہ یوجنا کی سپھلتا کا سارا دارومدار کاریہ کرتا پر ہے. وقت اور وستار پر زیادہ توجہ دینے سے ہم ہنسا کی طرف بڑھیں گے. لکش اور نشانے ہنساتمک یوجنا کے انگ ہیں.

چونکہ کاریہ کرتا ہمارے سادھن ہیں اِسلئے سمسیا کی جڑ اِس بات میں ہے کہ کیسے اُنہیں پایا جائے. موجودہ سنستھاؤں میں جو لوگ کام کر رہے ہیں اُن سے ہٹا کر انہیں اِس کام میں لگانے کا ارتھ ہنسا ہے.

اِس بات کو صاف کرنے کے لیئے اِس بات کی اجازت ہونی چاہئے کہ میں دو ایک نمایاں مثالیں دوں کہ بھاواویش کے کارن اپنی زمہداریوں کی جگہیں چھوٹ کر موجودہ ضرورت کی پورتی میں لگ گئے (مجھے وشواس ہے کہ سمبندھت ویکتی مجھے چھما کریں گے)۔ جیون دان کی پکار پر شریمتی آشادیوی آریہ نائیکم اُدارچت سے آگے بڑھیں اور بھودان آندولن کے لئے انہوں نے اپنی سیوائیں ارپت کردیں. کیا یہ مناسب بات ہوئی ؟ کیا انکا جیون پہلے سے ہی بنیادی تعلیم کے لئے ارپت نہیں تھا ؟ نئی تعلیم سروودے سماج رچنا کا ایک انگ ہے. جبکہ سروودے سماج رچنا میں بھودان کا سمبندھ اُسکے آرتھک، سماجک اور راجنیتک چھیتروں سے ہے، بھاوی ناگرکوں کی رچنا میں بنیادی تعلیم سانسکرتک اور ادھیاتمک انشدان ہے. کون زیادہ ضروری ہے ؟ بنیادی تعلیم کا کام چھوڑ کر بھودان میں لگنا دراصل ایک پچھڑا ہوا قدم ہے بائبل کے لفظوں کو اگر ہم استعمال کریں تو یہ ہوگا کہ :— "بچوں کی روٹی لیکر اُنہیں کتوں کے آگے پھینکنا مناسب نہیں ہے." اِسی طرح سے شری شنکر راؤ دیو اور شری انا صاحب سہسربدھے جو سرو سیوا سنگھ میں ضروری جگہوں پر کام کر رہے تھے اپنا کام چھوڑ کر بھودان کے کام میں لگ گئے. یہ تو وہی بات ہوئی کی پتنی اپنے وواہت پتی

भूदान : साध्य और साधन

अहिंसक समाज रचना में हमेशा जागरूक रहने की जरूरत है. इस बात को सदा याद रखना चाहिये कि हमारे साध्य और साधन क्या हैं. साध्य पर जरा ज्यादा जोर देने का नतीजा यह होगा कि मोह पैदा होगा और मोह से हिंसा पैदा होती है. भूदान आन्दोलन चूंकि सर्वोदय समाज रचना की एक जोरदार कोशिश है. इसलिये हमें उसके हर पहलू की होशियारी से जांच करनी चाहिये. उसके साध्य और साधनों को अलग करके हमेशा इस बात पर निगाह रखनी चाहिये कि हमारा उनकी तरफ क्या रवइया हो.

भूदान के साध्य (ends) और साधनों (means) का हम इस प्रकार वर्गीकरण कर सकते हैं :

(1) आर्थिक— साध्य :—ग़रीबी को दूर करना.
साधन :—जमीन का मुनासिब बटवारा और उचित पैदावार.

(2) सामाजिक—साध्य :—सम्पत्ति का स्वामी व्यक्ति के बजाय समाज को बनाना.
साधन—सम्पत्ति का फिर से वितरण.

(3) राजनैतिक—साध्य :—अहिंसक उपायों से भूमि का स्वामित्व बदलना. (भूमि हीनों को भूमि का स्वामी बनाना).
साधन :—समझा बुझा कर लोगों के विचारों और दृष्टि कोण को बदलना.

साध्य को समझने के लिये सफ़ाई से देखने की जरूरत है. अगर हम मुनासिब साधन बरतेंगे तो साध्य अपने आप ठीक रहेंगे.

इसलिये हम यहां साधनों के सम्बन्ध में ही विचार करेंगे :

1. भूमि का उचित इस्तेमाल करके ही हम ग़रीबी को दूर कर सकते हैं. जब हम निर्यात यानी बाहर भेजने के लिये या मिलों के लिये माल का उत्पादन करते हैं तो हम बेकारी को बढ़ाते हैं, ग़रीबी को बढ़ाते हैं और मुसीबतों को बढ़ाते हैं. इसलिये हमें स्वावलम्बन के उसूल को सामने रखकर मुक़ामी जरूरतों को पूरा करने के लिहाज से पैदावार पर जोर देना चाहिये. किसानों और कार्यकर्ताओं को इस कार्यक्रम की तफ़सील पर तालीम देने के लिये कृषि कालेजों और प्रदर्शन केन्द्रों की हमें बेहद जरूरत है.

2. इस समय खेतों के मालिक व्यक्तिगत लोग हैं. हमें इसमें तब्दीली करनी है. भूमि किसी की जाती मिल्कीयत नहीं होनी चाहिये, चाहे छोटी हो या बड़ी. यह कोई मुनासिब

بھودان : سادھیہ اور سادھن

ہنسک سماج رچنا میں ہمیشہ جاگروک رہنے کی ضرورت ہے ۔ اِس بات کو سدا صاف رکھنا چاہیئے کہ ہمارے سادھیہ اور سادھن کیا ہیں ۔ سادھیہ پر ذرا زیادہ زور دینے کا نتیجہ یہ ہوگا کہ موہ پیدا ہوگا اور موہ سے ہنسا پیدا ہوتی ہے ۔ بھودان آندولن چونکہ سرودے سماج رچنا کی ایک زوردار کوشش ہے اِسلئے ہمیں اُسکے ہر پہلو کی ہوشیاری سے جانچ کرنی چاہیے اُسکے سادھیہ اور سادھنوں کو الگ کر کے ہمیشہ اِس بات پر نگاہ رکھنی چاہیئے کہ ہمارا اُنکی طرف کیا رویہ ہو ۔

بھودان کے سادھیہ (ends) اور سادھنوں (means) کا ہم اِس پرکار ورگی کرن کر سکتے ہیں :

(1) ارتھک — سادھیہ :—غریبی کو دور کرنا ۔
سادھن :—زمین کا مناسب بٹوارہ اور اُچت پیداوار ۔

(2) سماجک—سادھیہ :—سمپتی کا سوامی ویکتی کے بجائے سماج کو بنانا ۔
سادھن —سمپتی کا پھر سے وترن ۔

(3) راجنیک — سادھیہ :—اہنسک اُپایوں سے بھومی کا سوامتو بدلنا ۔ (بھومی ہینوں کو بھومی کا سوامی بنانا) ۔
سادھن :—لوگوں کے وچاروں اور درشٹی کون کو سمجھا بجھا کر بدلنا ۔

سادھیہ کو سمجھنے کے لئے صفائی سے دیکھنے کی ضرورت ہے اور سادھنوں کی پوترتا کو دھیان میں رکھنے کی ضرورت ہے ۔ اگر ہم مناسب سادھن برتینگے تو سادھیہ اپنے آپ ٹھیک رہیں گے ۔

اسلئے ہم یہاں سادھنوں کے سمبندھ میں ہی وچار کرینگے :

1. بھومی کا اُچت استعمال کر کے ہی ہم غریبی کو دور کر سکتے ہیں' جب ہم نریات یعنی باہر بھیجنے کے لئے یا ملوں کے لئے مال کا اُتپادن کرتے ہیں تو ہم بیکاری کو بڑھاتے ہیں' غریبی کو بڑھاتے ہیں اور مصیبتوں کو بڑھاتے ہیں ۔ اِسلئے ہمیں سواولمبن کے اصول کو سامنے رکھکر مقامی ضرورتوں کو پورا کرنے کے لحاظ سے پیداوار پر زور دینا چاہیئے ۔ کسانوں اور کاریہ کرتاؤں کو اس کاریہ کرم کی تفصیل پر تعلیم دینے کے لئے کرشی کالجوں اور پردرشن کیندروں کی ہمیں بے حد ضرورت ہے ۔

2. اس سمے کھیتوں کے مالک ویکتی گت لوگ ہیں ۔ ہمیں اُسمیں تبدیلی کرنی ہے ۔ بھومی کسی کی ذاتی ملکیت نہیں ہونی چاہئے چاہے چھوٹی ہو یا بڑی ۔ یہ کوئی مناسب

हमारी राय

दोनों प्रधान मंत्रियों ने यह विश्वास प्रकट किया कि रूस और भारत दोनों के बीच कल्चरी, आर्थिक, तिजारती, साइन्सी और तकनीकी सहयोग और लेन देन बराबर बढ़ता रहेगा. कुछ दिन पहले जो तिजारती समझौता रूस और भारत के बीच हुआ था उसकी और जो फ़ौलाद का नया कारखाना भारत में खड़ा करने का रूस ने वादा किया है इन दोनों की भी सराहना की गई. दोनों प्रधान मंत्रियों को विश्वास है कि इस तरह मिलकर काम करने से रूस और भारत दोनों का भला होगा.

दोनों प्रधान मंत्रियों ने अपने इस मिलन पर ख़ुशी ज़ाहिर की और पक्का विश्वास ज़ाहिर किया कि इन दोनों देशों और उनकी जनता के बीच प्रेम और दोस्ती बढ़ती रहेगी जिस से दुनिया की अमन तहरीक को बहुत बड़ी शक्ति मिलेगी.

प्रधान मंत्री बुलगेनिन और प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू का यह एलान दुनिया की तमाम पिछड़ी हुई और कमज़ोर क़ौमों के दिलों को साहस और आशा से भर देगा, क़ौमी आज़ादी की तहरीकों को हर जगह बढ़ावा देगा और जंग के ख़तरे से दुनिया को बचाने में बहुत बड़ा काम करेगा. दुनिया के अमन के लिये सब से बड़ी ज़रूरत इसी चीज़ की है कि कोई किसी दूसरे के अन्दरूनी मामलों में दख़ल न दे. सब अपने अपने घरों में आज़ाद और बाहर दुनिया में एक दूसरे के साथ मिलकर प्रेम और अमन के साथ रहें. किसी देश में किसी दूसरे देश के फ़ौजी अड्डे न हों. कोई किसी देश के दो दलों में से किसी एक को अपनी फ़ौजों या जंगी बेड़ों से मदद न दे. दुनिया की फ़ौजी और जंगी गुट्टे टूटें. सब सब के भले में अपना भला समझें, सब की आज़ादी में अपनी आज़ादी और सब की बहबूदी में अपनी बहबूदी. इसमें हम काले या गोरे, एशिया या यूरप, पूरब या पच्छिम, कम्युनिस्ट या ग़ैर कम्युनिस्ट का कोई फ़र्क़ नहीं करते. दुनिया के इस हालत तक पहुंचने के लिये आज सबसे बड़ी ज़रूरत इसी चीज़ की है कि यह तीन बड़े मुल्क, रूस, चीन और हिन्दुस्तान, जिनकी सरहदें मिली हुई हैं और जिनमें दुनिया की आधे से ज़्यादा आबादी रहती है एक दूसरे के साथ मिलकर आज़ादी बराबरी और इनसानी भाईचारे के नाम पर खड़े हों. दुनिया के अमन और सब के भले की यही सबसे बड़ी गारंटी हो सकती है. हम रूस और हिन्दुस्तान दोनों देशों, वहां की जनता और वहां की सरकारों को इस तारीख़ी एलान पर दिल से बधाई देते हैं.

24. 6. 55.

—सुन्दरलाल

ہماری رائے

دونوں پردھان منتریوں نے یہ وشواس پرگٹ کیا کہ روس اور بھارت دونوں کے بیچ کلچری، آرتھک، تجارتی، سائنسی اور تکنیکی سہیوگ اور لین دین برابر بڑھتا رہیگا. کچھ دن پہلے جو تجارتی سمجھوتا روس اور بھارت کے بیچ ہوا تھا اُس کی اور جو وعدہ فولاد کا نیا کارخانہ بھارت میں کھڑا کرنے کا روس نے کیا ہے اِن دونوں کی بھی سراہنا کی گئی. دونوں پردھان منتریوں کو وشواس ہے کہ اِس طرح ملکر کام کرنے سے روس اور بھارت دونوں کا بھلا ہوگا.

دونوں پردھان منتریوں نے اپنے اِس ملن پر خوشی ظاہر کی اور پکا وشواس ظاہر کیا کہ اِن دونوں دیشوں اور اُن کی جنتا کے بیچ پریم اور دوستی بڑھتی رہے گی جس سے دنیا کی امن تحریک کو بہت بڑی شکتی ملے گی.

پردھان منتری بلگانن اور پردھان منتری جواہرلال نہرو کا یہ اعلان دنیا کی تمام پچھڑی ہوئی اور کمزور قوموں کے دلوں کو ساہس اور آشا سے بھر دیگا، قومی آزادی کی تحریکوں کو ہر جگہ بڑھاوا دیگا اور جنگ کے خطرے سے دنیا کو بچانے میں بہت بڑا کام کریگا. دنیا کے امن کے لئے سب سے بڑی ضرورت اِسی چیز کی ہے کہ کوئی کسی دوسرے کے اندرونی معاملوں میں دخل نہ دے. سب اپنے اپنے گھروں میں آزاد اور باہر دنیا میں ایک دوسرے کے ساتھ ملکر پریم اور امن کے ساتھ رہیں. کسی دیش میں کسی دوسرے دیش کے فوجی اڈّے نہ ہوں. کوئی کسی دیش کے دو دلوں میں سے کسی ایک کو اپنی فوجوں یا جنگی بیڑوں سے مدد نہ دے. دنیا کی فوجی اور جنگی گٹھ بندیاں ٹوٹیں. سب سب کے بھلے میں اپنا بھلا سمجھیں، سب کی آزادی میں اپنی آزادی اور سب کی بہبودی میں اپنی بہبودی. اِس میں ہم کالے یا گورے، ایشیا یا یورپ، پورب یا پچھم، کمیونسٹ یا غیر کمیونسٹ کا کوئی فرق نہیں کرتے. دنیا کے اِس حالت تک پہنچنے کے لئے آج سب سے بڑی ضرورت اِسی چیز کی ہے کہ یہ تین بڑے ملک—روس، چین اور ہندستان—جن کی سرحدیں ملی ہوئی ہیں اور جن میں دنیا کی آدھے سے زیادہ آبادی رہتی ہے، ایک دوسرے کے ساتھ ملکر آزادی، برابری اور انسانی بھائی چارے کے نام پر کھڑے ہوں. دنیا کے امن اور سب کے بھلے کی یہی سب سے بڑی گارنٹی ہو سکتی ہے. ہم روس اور ہندستان دونوں دیشوں، وہاں کی جنتا اور وہاں کی سرکاروں کو اِس تاریخی اعلان پر دل سے بدھائی دیتے ہیں.

24. 6. 55.

—سندرلال

दोनों प्रधान मंत्रियों ने यह राय भी ज़ाहिर की कि बावजूद ऊपर की सब बातों के अंतर राष्ट्रीय तनाव के कई कारन ख़ास कर एशिया में अभी तक मौजूद हैं. उन्हों ने यह उम्मीद ज़ाहिर की कि नए चीनी जनराज का ताईवान यानी फ़ारमूसा पर जो जायज़ हक़ है वह उसे शान्ति के उपायों से मिल सकेगा. दोनों ने अपना यह विश्वास भी दुहराया कि नए चीनी जनराज को यू-एन-ओ. यानी संयुक्त राष्ट्र संघ में लेने से कुछ क़ौमों का लगातार इनकार करना दुनिया की बहुत सी मुसीबतों की जड़ है. उन्होंने ज़ोर दिया कि नए चीनी जनराज को यू. एन. ओ. में मुनासिब जगह मिलने पर ही यू. एन. ओ. का अधिकार पक्का और उसका काम पूरा हो सकता है.

हिन्द चीन की बाबत जनीवा कान्फ़रेंस के फ़ैसलों की सराहना करते हुए दोनों प्रधान मंत्रियों ने उन फ़ैसलों पर ठीक ठीक अमल कराने के लिये अपनी दोनों की ख़ास ज़िम्मेदारी का एलान किया और यह कहा कि कुछ लोगों की नई हरकतों से उस अमल दरामद में रुकावटें पैदा हो जाने का डर है. उन्होंने उन सब सरकारों पर जिनका हिन्द चीन के मामले से कुछ भी सम्बन्ध है ज़ोर दिया कि वह इस मामले में अपनी अपनी ज़िम्मेदारियों को ठीक ठीक पूरा करें ताकि हिन्द चीन के सम्बन्ध में जनीवा कान्फ़रेंस के फ़ैसले कामयाब हो सकें. उन्हों ने ख़ासकर इस बात पर ज़ोर दिया कि हिन्द चीन में जहां जहां चुनाव होने वाले हैं वहां वहां सब सरकारों का फ़र्ज़ है कि इस बात की पूरी कोशिश करें कि जनीवा के फ़ैसलों पर अमल करने में कोई रुकावट पैदा होने न पावे.

दोनों प्रधान मंत्रियों ने यह विचार प्रकट किया कि तरह तरह के हथियार और जंग के सामान, मामूली और ऐटमी, तैयार करते जाने की प्रवृत्ति से क़ौमों के अन्दर एक दूसरे से डर और अविश्वास बढ़ता जा रहा है, जिससे क़ौमों के वह साधन जो जनता को ऊपर उठाने में ख़र्च होने चाहिएं थे जंग की तैयारियों में ख़र्च हो रहे हैं. इस लिये दोनों प्रधान मंत्रियों की राय है कि न्युक्लीयर और थरमो न्युक्लीयर हथियारों (ऐटम बम हाइड्रोजन बम वग़ैरा) के तैयार करने, उनके तजुरबे करने और उनके इस्तेमाल करने पर पूरी पूरी रोक लगा दी जावे और साथ ही मामूली हथियारों और लड़ाई के सामान में भी सब मुल्कों के अन्दर एक साथ ज़बरदस्त कमी की जावे और इन बातों पर अमल कराने के लिये एक मज़बूत अन्तर राष्ट्रीय संगठन क़ायम किया जावे. जंग के हथियारों की इस मनाही और रोक थाम के लिये सोवियत रूस की हाल की तजवीज़ों की तरफ़ भी दुनिया का ध्यान दिलाया गया है.

دونوں پردھان منتریوں نے یہ رائے بھی ظاهر کی کہ باوجود اُوپر کی سب باتوں کے انتر راشٹریہ تناؤ کے کئی کارن خاص کر ایشیا میں ابھی تک موجود هیں . اُنہوں نے یہ اُمید ظاهر کی کہ نئے چینی جن راج کا تائیوان یعنی فارموسا پر جو جائز حق هے وہ اُسے شانتی کے اُپایوں سے مل سکےگا . دونوں نے اپنا یہ وشواس بھی دهرایا کہ نئے چینی جن راج کو یو-این-او یعنی سنیکت راشٹر سنگھ میں لینے سے کچھ قوموں کا لگاتار انکار کرنا دنیا کی بہت سی مصیبتوں کی جڑ هے. اُنہوں نے زور دیا کہ نئے چینی جن راج کو یو - این - او میں مناسب جگہ ملنے پر هی یو - این- او کا ادھیکار پکا اور اُس کا کام پورا هو سکتا هے .

هند چین کی بابت جنیوا کانفرنس کے فیصلوں کی سراهنا کرتے هوئے دونوں پردھان منتریوں نے اُن فیصلوں پر ٹھیک ٹھیک عمل کرانے کے لئے اپنی دونوں کی خاص ذمہداری کا اعلان کیا اور یہ کہا کہ کچھ لوگوں کی نئی حرکتوں سے اُس عمل درآمد میں رکاوٹیں پیدا هو جانے کا ڈر هے . اُنہوں نے اُن سب سرکاروں پر جن کا هند چین کے معاملے سے کچھ سمبندھ هے زور دیا کہ وہ اِس معاملے میں اپنی اپنی ذمہداریوں کو ٹھیک ٹھیک پورا کریں تاکہ هند چین کے سمبندھ میں جنیوا کانفرنس کے فیصلے کامیاب هو سکیں . اُنہوں نے خاص کر اِس بات پر زور دیا کہ هند چین میں جہاں جہاں چناؤ هونے والے هیں وهاں وهاں سب سرکاروں کا فرض هے کہ اس بات کی پوری کوشش کریں کہ جنیوا کے فیصلوں پر عمل کرنے میں کوئی رکاوٹ پیدا هونے نہ پاوے .

دونوں پردھان منتریوں نے یہ وچار پرگٹ کیا کی طرح طرح کے هتھیار اور جنگ کے سامان، معمولی اور ایٹمی، تیار کرتے جانے کی پرورتی سے قوموں کے اندر ایک دوسرے سے ڈر اور اوشواس بڑھتا جا رها هے، جس سے قوموں کے وہ سادھن جو جنتا کو اُوپر اُٹھانے میں خرچ هونے چاهئیں تھے جنگ کی تیاریوں میں خرچ هو رهے هیں . اِس لئے دونوں پردھان منتریوں کی رائے هے کہ نیوکلیر اور تھرمو نیوکلیر هتھیاروں (ایٹم بم هائڈروجن بم وغیرہ) کے تیار کرنے، اُن کے تجربے کرنے اور اُن کے استعمال کرنے پر پوری پوری روک لگادی جاوے اور ساتھ هی معمولی هتھیاروں اور لڑائی کے سامان میں بھی سب ملکوں کے اندر ایک ساتھ زبردست کمی کی جاوے اور اِن باتوں پر عمل کرانے کے لئے ایک مضبوط انترراشٹریہ سنگٹھن قائم کیا جاوے جنگ کے هتھیاروں کی اِس مناهی اور روک تھام کے لئے سوویت روس کی حال کی تجویزوں کی طرف بھی دنیا کا دھیان دلایا گیا هے .

और एक दूसरे को ठीक ठीक समझने की पक्की बुनियादों पर क़ायम है और क़ायम रहेगा.

दोनों ने पंच शील के मशहूर पाँच सिद्धान्तों पर अपनी रज़ामन्दी ज़ाहिर की. जिन शब्दों में यह पाँच सिद्धान्त एलान के अन्दर दुहराए गए हैं वह यह हैं :—

(1) एक दूसरे के देशों की अखंडता और कामिल आज़ादी की इज़्ज़त करना.

(2) किसी का दूसरे पर हमला न करना.

(३) किसी का दूसरे के अन्दरूनी मामलों में किसी वजह से भी, चाहे वह वजह आर्थिक हो या राजनैतिक या विचारों या आदर्शों सम्बन्धी, किसी तरह का दख़ल न देना.

(4) बराबरी और एक दूसरे के फ़ायदे को हमेशा निगाह में रखना.

और (5) अमन के साथ मिलकर रहना.

दोनों प्रधान मंत्रियों ने यह पक्का विश्वास प्रकट किया कि दुनिया की क़ौमों के दिमाग़ों से एक दूसरे के डर और बेएतबारी को मिटाने और क़ौमों क़ौमों के बीच के आपसी तनाव को कम करने की सब से बड़ी उम्मीद इसी बात पर है कि सब क़ौमें एक दूसरे के साथ सम्बन्ध रखने में इन उसूलों पर अमल करें.

दोनों ने यह भी कहा कि शान्ति की जो फ़िज़ा सब के इन उसूलों पर अमल करने से पैदा होगी उस फ़िज़ा में ही आज कल के अन्तरराष्ट्रीय सवालों का हल आपसी समझौतों और शान्ति के तरीक़ा से मुमकिन हो सकता है.

दोनों प्रधान मंत्रियों ने यह एलान किया कि दुनिया के बहुत से हिस्सों में छोटी और कमज़ोर क़ौमों के दिलों में दूसरी ताक़तों से जो डर बैठा हुआ है उसे दूर करना ज़रूरी है और उसे दूर करने का तरीक़ा भी मिल कर रहने के इन्हीं पाँच उसूलों पर अमल करना है.

दोनों प्रधान मंत्रियों ने अप्रैल सन् 1955 की बान्डूंग की एशियन अफ़रीकन कान्फ़रेंस और उसके फ़ैसलों की सराहना की और यह राय ज़ाहिर की कि उस कान्फ़रेंस के फ़ैसलों से दुनिया की शान्ति को बहुत बड़ी मदद मिलेगी.

दोनों ने इन बातों पर ख़ुशी ज़ाहिर की कि पूरबी और दक्खिन पूरबी एशिया में तनाव कम हो रहा है, यूरप में आस्ट्रिया एक अखंड और आज़ाद देश मान लिया गया है, सोवियत रूस और यूगोसलाविया में फिर से प्रेम सम्बन्ध क़ायम हो गया है. और इस ऐटमी ज़माने में जंग के ख़तरों को लगभग सब देशों के लोग पूरी तरह महसूस करने लगे हैं.

ایک دوسرے کو ٹھیک ٹھیک سمجھنے کی پکی بنیادوں پر قائم ہے اور قائم رہیگا۔

دونوں نے پنچ شیل کے مشہور پانچ سدھانتوں پر اپنی رضامندی ظاہر کی۔ جن شبدوں میں یہ پانچ سدھانت اعلان کے اندر دہرائے گئے ہیں وہ یہ ہیں :—

(1) ایک دوسرے کے دیشوں کی اکھنڈتا اور کامل آزادی کی عزت کرنا۔

(2) کسی کا دوسرے پر حملہ نہ کرنا۔

(3) کسی کا دوسرے کے اندرونی معاملوں میں کسی وجہ سے بھی، چاہے وہ وجہ آرتھک ہو یا راجنیتک وچاروں یا آدرشوں سمبندھی کسی طرح کا دخل نہ دینا۔

(4) برابری اور ایک دوسرے کے فائدے کو ہمیشہ نگاہ میں رکھنا اور۔

(5) امن کے ساتھ مل کر رہنا۔

دونوں پردھان منتریوں نے یہ پکا وشواس پرکٹ کیا کہ دنیا کی قوموں کے دماغوں سے ایک دوسرے کے ڈر اور بےاعتباری کو مٹانے اور قوموں قوموں کے بیچ کے آپسی تناؤ کو کم کرنے کی سب سے بڑی امید اسی بات پر ہے کہ سب قومیں ایک دوسرے کے ساتھ سمبندھ رکھنے میں ان اصولوں پر عمل کریں۔

دونوں نے یہ بھی کہا کہ شانتی کی جو فضا سب کے ان اصولوں پر عمل کرنے سے پیدا ہوگی اس فضا میں ہی آجکل کے انترراشٹریہ سوالوں کا حل آپسی سمجھوتوں اور شانتی کے طریقوں سے ممکن ہو سکتا ہے۔

دونوں پردھان منتریوں نے یہ اعلان کیا کہ دنیا کے بہت سے حصوں میں چھوٹی اور کمزور قوموں کے دلوں میں دوسری طاقتوں سے جو ڈر بیٹھا ہوا ہے اسے دور کرنا ضروری ہے اور اسے دور کرنے کا طریقہ بھی مل کر رہنے کے ان ہی پانچ اصولوں پر عمل کرنا ہے۔

دونوں پردھان منتریوں نے اپریل سن 1955 کی باندونگ کی ایشین افریقن کانفرنس اور اس کے فیصلوں کی سراہنا کی اور یہ رائے ظاہر کی کہ اس کانفرنس کے فیصلوں سے دنیا کی شانتی کو بہت بڑی مدد ملے گی۔

دونوں نے ان باتوں پر خوشی ظاہر کی کہ پوربی اور دکھن پوربی ایشیا میں تناؤ کم ہو رہا ہے، یورپ میں آسٹریا ایک اکھنڈ اور آزاد دیش مان لیا گیا ہے، سوویت روس اور یوگوسلاویا میں پھر سے پریم سمبندھ قائم ہو گیا ہے اور اس ایٹمی زمانے میں جنگ کے خطروں کو لگ بھگ سب دیشوں کے لوگ پوری طرح محسوس کرنے لگے ہیں۔

हमारी राय — ہماری رائے

रूस, चीन और हिन्दुस्तान

आज कल की हालत में रूस, चीन और हिन्दुस्तान की दोस्ती न केवल इन तीनों देशों की भलाई, बहबूदी और सलामती के लिये ही जरूरी है बल्कि दुनिया के दूसरे देशों खासकर एशिया और अफरीका के पिछड़े हुए देशों की आजादी, तरक्की और सलामती के लिये भी उतनी ही जरूरी है, चीन के प्रधान मंत्री श्री चाऊ एन. लाई के भारत आने और भारत के प्रधान मंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू के चीन जाने ने चीन और भारत की दोस्ती को अनन्त काल के लिये पक्का कर दिया और दोनों देशों की करोड़ों जनता के दिलों में प्रेम और एकता की वह सद्भावनाएं जगा दीं जिन्हों ने दुनिया की पिछड़ी हुई क़ौमों में एक नई रूह फूँक दी. हाल में प्रधान मंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू का जिस प्रेम, उत्साह, उमंग, जोश और खुलूस के साथ रूस की करोड़ों जनता ने जगह जगह स्वागत किया उसकी खबरें दुनिया भर के अखबारों में छप चुकी हैं. कहा जाता है कि एक जगह नहीं अनेक जगह रूसी जनता के प्रेम को देख कर जवाहर लाल जी की आँखों से आँसू छलक पड़े. उनके रूस छोड़ने से पहले रूस के प्रधान मंत्री मारशल बुलगेनिन और भारत के प्रधान मंत्री जवाहर लाल नेहरू के दसखत से जो एलान दुनिया भर के अखबारों में शाये हुआ है वह हमारी राय में अभी तक इस सदी का सब से बड़ा तारीखी एलान है. उस एलान की खास खास बातें यह हैं :—

प्रधान मंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू के रूस की राजधानी मास्को में रहने के दिनों में प्रधान मंत्री श्री बुलगेनिन और रूसी सरकार के दूसरे मेम्बरों के साथ दोनों देशों के आपसी सम्बन्ध और दुनिया की आज कल की अंतर राष्ट्री स्थिति पर जवाहर लाल जी की अनेक बार खूब दिल खोल कर और दोस्ताना ढंग से बातें हुईं.

दोनों प्रधान मंत्रियों ने इस बात पर खुशी जाहिर की कि सोवियत रूस और हिन्दुस्तान के बीच सम्बन्ध दोस्ती

روس، چین اور ہندستان

آجکل کی حالت میں روس، چین اور ہندستان کی دوستی نہ کیول اِن تینوں دیشوں کی بھلائی، بہبودی اور سلامتی کے لئے ہی ضروری ہے بلکہ دنیا کے دوسرے دیشوں، خاص کر ایشیا اور افریقہ کے پچھڑے ہوئے دیشوں کی آزادی، ترقی اور سلامتی کے لئے بھی اُتنی ہی ضروری ہے. چین کے پردھان منتری شری چاؤ این-لائی کے بھارت آنے اور بھارت کے پردھان منتری شری جواہر لال نہرو کے چین جانے نے چین اور بھارت کی دوستی کو اننت کال کے لئے پکا کر دیا اور دونوں دیشوں کی کروڑوں جنتا کے دلوں میں پریم اور ایکتا کی وہ سدبھاونائیں جگادیں جنھوں نے دنیا کی پچھڑی ہوئی قوموں میں ایک نئی روح پھونک دی. حال میں پردھان منتری شری جواہرلال نہرو کا جس پریم، اُتساہ، اُمنگ، جوش اور خلوص کے ساتھ روس کی کروڑوں جنتا نے جگہ جگہ سواگت کیا اُس کی خبریں دنیا بھر کے اخباروں میں چھپ چکی ہیں. کہا جاتا ہے کہ ایک جگہ نہیں انیک جگہ روسی جنتا کے پریم کو دیکھ کر جواہرلال جی کی آنکھوں سے آنسو چھلک پڑے. اُن کے روس چھوڑنے سے پہلے روس کے پردھان منتری مارشل بلگینن اور بھارت کے پردھان منتری جواہرلال نہرو کے دستخط سے جو اعلان دنیا بھر کے اخباروں میں شائع ہوا ہے وہ ہماری رائے میں ابھی تک اِس صدی کا سب سے بڑا تاریخی اعلان ہے. اُس اعلان کی خاص خاص باتیں یہ ہیں :—

پردھان منتری شری جواہرلال نہرو کے روس کی راجدھانی ماسکو میں رہنے کے دنوں میں پردھان منتری شری بلگینن اور روسی سرکار کے دوسرے ممبروں کے ساتھ دونوں دیشوں کے آپسی سمبندھ اور دنیا کی آجکل کی انتر راشٹریہ استھتی پر جواہرلال جی کی انیک بار خوب دل کھول کر اور دوستانہ ڈھنگ سے باتیں ہوئیں.

دونوں پردھان منتریوں نے اس بات پر خوشی ظاہر کی کہ سوویت روس اور ہندستان کے بیچ سمبندھ دوستی اور

सात अध्याय हैं—खानपान, पहनावा, खेती, उद्योग धन्धे, व्यापार और व्यवसाय. सब पर सर्वोदय की दृष्टि से विचार किया गया है.

दूसरी पुस्तक में सर्वोदय के उसूलों से शोषण हीन समाज व्यवस्था कैसे क़ायम की जा सकती है और उसे अमल में लाने के लिये सर्वोदयवादी राज व्यवस्था कैसे क़ायम हो सकती है इस पर विस्तार से विचार किया गया है. पुस्तक चार खंडों में है. पहला खंड है राजनीति और गान्धी जी, दूसरा खंड है—सर्वोदय में समाज का आदर्श, तीसरे खंड में है—सर्वोदय में राज्य का स्वरूप और चौथे खंड में है—सर्वोदय में राज्य गठन. पुस्तक में दिये हुये लेखक के विचार मनन करने योग्य हैं.

तीसरी पुस्तक में लेखक ने सर्वोदय विचार धारा के प्रचार के लिये जो यात्रा की उसका वर्णन है.

'चौथी पुस्तक प्राकृतिक चिकित्सा ही क्यों' में कुछ रोगियों का ज़िक्र है जो मेहन स्नान, कटि स्नान, मिट्टी और पानी की पट्टी के इलाज से अच्छे हुये. आखरी 24 सफ़ों में प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धान्तों की चर्चा की गई है.

पाँचवीं पुस्तक में 290 सफ़ों में भारत के विधान की विस्तार से चरचा की गई है और पचास सफ़ों में सर्वोदय की दृष्टि से उसकी आलोचना की गई है.

छठवीं पुस्तक में भूदान, एक ही वर्ग—श्रमिक वर्ग, ग्रामोद्योग, मर्यादित यंत्रोद्योग, व्यापार—संस्थागत आदि नियमों पर सर्वोदय की दृष्टि से विचार किया गया है.

मेरा साहित्यिक जीवन

लेखक श्री भगवान दास केला; छापने वाले—ऊपर के वही, दाम तीन रुपये, सफ़े 268.

केला जी शिक्षक, लेखक, साहित्य सेवी, समाज सेवी, सभी कुछ रहे हैं. अपने विचारों और अनुभवों को उन्होंने दर्जनों पुस्तकों द्वारा पाठकों को उपहार में दिया है. उनके विचारों के पीछे जो जीवन दर्शन है उस पर उनकी इस आत्मकथा से काफ़ी रोशनी पड़ती है. साहित्यिकों के लिये यह पुस्तक प्रोत्साहन देने वाली है.

—वि. ना. पा.

سات ادھیائے ھیں—کھان پان، پہناوا، کھیتی، اُدیوگ دھندھے، ویاپار اور ویوسائے. سب پر سرvodے کی درشٹی سے وچار کیا گیا ھے.

دوسری پستک میں سرووِدے کے اُصولوں سے شوشن ھین سماج ویوستھا کیسے قائم کی جا سکتی ھے اور اُسے عمل میں لانے کے لئیے سرووِدے وادی راج ویوستھا کیسے قائم کی جا سکتی ھے اس پر وستار سے وچار کیا گیا ھے. پستک چار کھنڈوں میں ھے پہلا کھنڈ ھے راج نیتی اور گاندھی جی، دوسرا کھنڈ ھے—سرووِدے میں سماج کا آدرش، تیسرے کھنڈ میں ھے—سرووِدے میں راجیہ کا سوروپ اور چوتھے کھنڈ میں ھے—سرووِدے میں راجیہ گٹھن پستک میں دئیے ھوئے لیکھک کے وچار منن کرنے یوگیہ ھیں.

تیسری پستک میں لیکھک نے سرووِدے وچار دھارا کے پرچار کے لیئے جو یاترا کی اسکا ورنن ھے.

چوتھی پستک پراکرتک چکتسا ھی کیوں' میں کچھ روگیوں کا ذکر ھے جو مہن اسنان' کٹی اسنان، مٹی اور پانی کی پٹی کے علاج سے اچھے ھوئے آخری 24 صفحوں میں پراکرتک چکتسا کے سدھانتوں کی چرچا کی گئی ھے.

پانچویں پستک میں 290 صفوں میں بھارت کے ودھان کی وستار سے چرچا کی گئی ھے اور پچاس صفحوں میں سرووِدے کی روشنی سے اسکو آلوچنا کی گئی ھے.

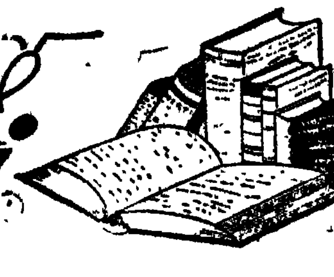
چھٹویں پستک میں بھودان' ایک ھی ورگ—شرمک ورگ' گراموديوگ مریادت ینتروديوگ. ویاپار-سنستھاگت آدی وشیوں پر سرووِدے کی درشٹی سے وچار کیا گیا ھے.

میرا ساھتک جیون

لیکھک شری بھگوان داس کیلا ؛ چھاپنے والے اُوپر کے وھی ؛ دام—تین روپئے ؛ صفے—268 کیلاجی شکشک' لیکھک' ساھت سیوی' سماج سیوی سبھی کچھ رھے ھیں. اپنے وچاروں اور انوبھووں کو اُنھوں نے درجنوں پستکوں کے دوارا پاٹھکوں کو اُپہار میں دیا ھے. اُنکے وچاروں کے پیچھے جو جیون درشن ھے اُس پر اُنکی اِس آتم کتھا سے کافی روشنی پڑتی ھے. ساھتکوں کے لئے یہ پستک کافی پروتساھن دینے والی ھے.

وی. نا. پا

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

(1) सर्वोदय दैनिक जीवन में

लिखने वाले—भगवानदास केला; छापने वाले-भारतीय ग्रन्थ माला, दारागंज; दाम—छै आना. सफ़ा—42;

(2) राज्य व्यवस्था सर्वोदय दृष्टि से

लिखने वाले—छापने वाले—वही; दाम डेढ़ रुपया. सफ़ा—160;

(3) मेरी सर्वोदय यात्रा

लिखने वाले—छापने वाले—वही; दाम सात आना. सफ़ा—84;

(4) प्राकृतिक चिकित्सा ही क्यों ?

लिखने वाले—छापने वाले—वही; दाम पांच आना. सफ़ा—83;

(5) भारतीय शासन

लिखने वाले—छापने वाले—वही; दाम तीन रुपया. सफ़ा—340;

(6) आर्थिक क्रान्ति के आवश्यक कदम

लिखने वाले—जवाहिर लाल जैन; छापने वाले—ऊपर के, दाम सात आने; सफ़ा—56;

इन छै किताबों में पांच के लिखने वाले—श्री भगवानदास केला हैं और छठवीं के श्री जवाहर लाल जैन. सभी पुस्तकें गान्धी जी की सर्वोदय विचार धारा को सामने रख कर लिखी गई हैं और अपने उसूलों की ज़ोरदार समर्थक हैं. केला जी अपने आप में एक संस्था हैं. हिन्दी साहित्य को उनकी देन समोपयोगी; ठोस और बहुमूल्य है.

पहली पुस्तक रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में सर्वोदय उसूलों के अमल पर रोशनी डालती है. इस छोटी सी पुस्तक के

(1) سروودے دینک جیون

لکھنے والے—بھگوان‌داس کیلا؛ چھاپنے والے—بھارتیہ گرنتھ مالا، داراگنج؛ دام—چھ آنہ . صفحہ—24؛

(2) راجیہ ووستھا سرودے درشٹی سے

لکھنے والے—چھاپنے والے—وہی؛ دام ڈیڑھ روپیہ . صفحہ—160

(3) راجیہ سروودے یاترا

لکھنے والے—چھاپنے والے—وہی؛ دام سات آنہ . صفحہ—84 .

(4) پراکرتک چکتسا ھی کیوں

لکھنے والے—چھاپنے والے—وہی؛ دام پانچ آنہ . صفحہ—83 .

(5) بھارت شاشن

لکھنے والے—چھاپنے والے—وہی دام تین روپیہ . صفحہ—340 .

(6) آرتھک کرانتک کے آوشیک قدم

لکھنے والے—جواھر لال جین؛ چھاپنے والے—اُپر کے، دام سات آنے؛ صفحہ—56 .

اِن چھ کتابوں میں پانچ کے لکھنے والے—شری بھگوان‌داس کیلا ھیں اور چھٹویں کے شری جواھر لال جین . سبھی پستکیں گاندھی جی کی سروودے وچار دھارا کو سامنے رکھکر لکھی گئی ھیں اور اپنے اُصولوں کی زوردار سمرتھک ھیں . کیلا جی اپنے آپ میں ایک سنستھا ھیں . ھندی ساھتیہ کو اُنکی دین سمے اپیوگی؛ ٹھوس اور بہولیہ ھے .

پہلی پستک روزمرہ کی زندگی میں سروودے اُصولوں کے عمل پر روشنی ڈالتی ھے . اِس چھوٹی سی پستک کے

कक्षा में गई और भइया दूज का महत्व समझाते हुए हिन्दी विभाग के 45 से अधिक विद्यार्थियों को व चीनी अध्यापकों को मिठाई खिलाई. उस दिन का दृश्य भी याद रहेगा. लड़के हैं तो बड़े बड़े लेकिन ऐसे नाच नाच कर मिठाई खा रहे थे मानों छोटे बच्चे हों. सभी विद्यार्थियों ने अलग अलग आ कर मुझे दोनों हाथों से पकड़ कर कंधे पर सिर रख कर विश्वास दिलाया कि वे सब मेरे छोटे भाई बहिन हैं. यहां के विद्यार्थी इतनी जल्दी मुझ से इतना स्नेह करने लगेंगे इसकी तो कल्पना भी नहीं की थी. इस तरह दिवाली और भइया दूज बहुत अच्छी तरह हंसी ख़ुशी से कट गये.

ککشا میں گئی اور بھیا دوج کا مہتو سمجھاتے ہوئے ہندی وبھاگ کے پینتالیس سے ادھک ودیارتھیوں کو اور چینی ادھیاپکوں کو مٹھائی کھلائی ۔ اُس دن کا درشیہ بھی یاد رہیگا ۔ لڑکے ہیں تو بڑے بڑے لیکن ایسے ناچ ناچ کر مٹھائی کھا رہے تھے مانو چھوٹے بچے ہوں اور سب ہی ودیارتھیوں نے الگ الگ آکر مجھے دونوں ہاتھوں سے پکڑ کر کندھے پر سر رکھ کر وشواس دلایا کہ وہ سب میرے چھوٹے بھائی بہن ہیں۔ یہاں کے ودیارتھی اتنی جلدی سے مجھ سے اتنا سنیہہ کرنے لگیں گے اس کی تو کلپنا بھی نہیں تھی ۔ اِس طرح دیوالی اور بھیا دوج بہت اچھی طرح ہنسی خوشی کٹ گئی ۔

"……हमारे सामने जो कुछ हो रहा है, उसे हम देख रहे हैं. आटे की छोटी छोटी मिलें हाथ की चक्कियों को, तेल की मिलें गाँव की ढेंकी को और शकर की मिलें गुड़ बनाने के देहाती साधनों वग़ैरा को मिटाती जा रही हैं. देहाती मज़दूरी के इस तरह उठ जाने से देहात वाले कंगाल हो रहे हैं और धनी लोग मालदार बन रहे हैं. अगर काफ़ी लम्बे अरसे तक यही सिलसिला चलता रहा तो और किसी जतन के बग़ैर ही देहातों का नाश हो जायेगा."

महात्मा गाँधी

"……ہمارے سامنے جو کچھ ہو رہا ہے' اُسے ہم دیکھ رہے ہیں ۔ آٹے کی چھوٹی چھوٹی ملیں ہاتھ کی چکیوں کو' تیل کی ملیں گاؤں کی ڈھینکی کو اور شکر کی ملیں گڑ بنانے کے دیہاتی سادھنوں وغیرہ کو مٹاتی جارہی ہیں ۔ دیہات والے کنگال ہو رہے ہیں اور دھنی لوگ مالدار بن رہے ہیں ۔ اگر کافی لمبے عرصے تک یہی سلسلہ چلتا رہا تو اور کسی جتن بغیر ہی دیہاتوں کا ناش ہو جائیگا ۔

—مہاتما گاندھی

खुल गया है और फिर से भारत चीन मिल रहे हैं मानों सदियों से बिछुड़े हुए दो सगे भाई फिर मिल रहे हों. पंडित नेहरू के भाषणों से यहां पर बहुत अच्छा असर पैदा हुआ है और हम लोग आशा करते हैं कि एक दिन जरूर सिर्फ शान्ति के लिये ही नहीं बल्कि राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यापारिक क्षेत्रों में भी भारत और चीन एक संयुक्त मोर्चा क़ायम करेंगे जिससे कि एशिया की जनता को साम्राज्यवाद, पूंजीवाद, उपनिवेशवाद और सामंतवाद जैसे अभिशापों से सदैव के लिये मुक्ति मिल जायगी.

हम लोगों की इज्जत यहां पहले तो थी ही पर पंडित जी के आने से और भी बढ़ गई है. एक दिन चीन के शिक्षा मंत्री ने हमें दावत दी और बहुत देर तक हम से हमारे यहां के जीवन के बारे में बातें की. इसके अलावा जब भी कोई भारतीय मेहमान पेकिंग विश्वविद्यालय आता है जैसे कि कलकत्ता के मेयर श्री मुखर्जी आये थे तब हम लोगों को खास तौर से बात चीत करने और विश्वविद्यालय का हाल बताने के लिये निमंत्रित किया जाता है. हम लोग आशा करते हैं कि भविष्य में यहां और अधिक संख्या में भारतीय आयेंगे और हर दिशा में भारत चीन की दोस्ती का काम ज्यादा से ज्यादा आगे बढ़ेगा.

अभी हम लोग एक सिनेमा फिल्म देखकर लौटे हैं जिसमें पंडित जी के पेकिंग में स्वागत का दृश्य दिखाया गया है. अभी पूरी रील तो तैयार नहीं हुई सिर्फ हवाई अड्डे पर स्वागत वाला भाग दिखाया गया. आशा है कुछ दिनों में पूरी रील तैयार हो जायगी. हम लोग बड़ी उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं. यह रील भारत में दिखाई जायगी.

तारीख 27 को नेहरू जी वापस गये और तारीख 28 को थी भइया दूज. दिवाली के दिन भी दोपहर में मेरी कक्षा के 30 से अधिक विद्यार्थी एकाएक हमारे खाने के समय आ गये और दिवाली की बधाइयां देने लगे. दिवाली का दिन था. तरह तरह की चीजें बनवाई थीं. और सब तो खतम हो गई थीं अंत में खाने के लिये गाजर का हलुआ बच रहा था वह भी हमारे हिस्से का. खाने ही वाले थे कि वे लोग आ धमके और मिठाई खायंगे चिल्लाने लगे. ग़नीमत थी कि मेरी कक्षा के विद्यार्थी थे. किसी तरह थोड़ा थोड़ा हलवा सब को दिया और उनसे वायदा किया कि मिठाई फिर खिलायंगे. हंसते कूदते विद्यार्थी वापस चले गये. तबियत बहुत खुश हुई. इसके बाद तारीख 28 को दूज के दिन पांचों कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिये मैंने भइया दूज के उपलक्ष में पांच बड़े बड़े पैकेट मिठाइयों के खरीदे और एक पैकेट अलग से खरीदा चीनी अध्यापकों के लिये. उस दिन यहां वर्मा जी, मुख्तार और राजेश को टीका लगाया और सूजी का हलवा खिलाया. उस दिन मेरी क्लास तो थी ही मिठाई लेकर मैं

کھل گیا ہے اور پھر سے بھارت چین مل رہے ہیں مانو صدیوں سے بچھڑے ہوئے دو بھائی پھر گلے مل رہے ہوں۔ پنڈت نہرو کے بھاشنوں سے یہاں پر بہت اچھا اثر پیدا ہوا ہے اور ہم لوگ آشا کرتے ہیں کہ ایک دن ضرور پھر شانتی کے لئے ہی نہیں بلکہ راج نیتک، سماجک، سانسکرتک اور ویوپارک چھیتروں میں بھی بھارت اور چین ایک سنیکت مورچہ قائم کریں گے جس سے کہ ایشیا کی جنتا کو سامراج واد، پونجی واد، اپنیویش واد اور سامنت واد جیسے ابھشاپوں سے سدیو کے لئے مکتی مل جائے گی .

ہم لوگوں کی عزت یہاں پہلے تو تھی ہی پر پنڈت جی کے آنے سے اور بھی بڑھ گئی ہے . ایک دن چین کے شکشا منتری نے ہمیں دعوت دی اور بہت دیر تک ہم سے ہمارے یہاں کے جیون کے بارے میں باتیں کیں . اِس کے علاوہ جب بھی کوئی بھارتیہ مہمان پیکنگ وشودیالیہ آتا ہے، جیسے کہ کلکتہ کے میئر شری مکھر جی آئے تھے، تب ہم لوگوں کو خاص طور سے بات چیت کرنے اور وشودیالیہ کا حال بتانے کے لئے نمنترت کیا جاتا ہے۔ ہم لوگ آشا کرتے ہیں کہ بھوشیہ میں یہاں اور ادھک سنکھیا میں بھارتیہ آئیں گے اور ہر دشا میں بھارت چین کی دوستی کا کام زیادہ سے زیادہ آگے بڑھے گا .

ابھی ابھی ہملوگ ایک سنیما فلم دیکھ کر لوٹے ہیں جس میں پنڈت جی کے پیکنگ میں سواگت کا درشیہ دکھایا گیا ہے . ابھی پوری ریل تو تیار نہیں ہوئی، صرف ہوائی اڈے پر سواگت والا بھاگ دکھایا گیا۔ آشا ہے کچھ دنوں میں پوری ریل تیار ہو جائیگی . ہملوگ بڑی اُتسکتا سے اُسکی پرتیکشا کر رہے ہیں . یہ ریل بھارت میں بھی دکھائی جائیگی۔

تاریخ 27 کو نہرو جی واپس گئے اور تاریخ 28 کو تھی بھیادوئج . دیوالی کے دن دوئج دوپہر میں میری ککشا کے 30 سے ادھک ودیارتھی یکایک ہمارے کھانے کے سمے آگئے اور دیوالی کی بدھائیاں دینے لگے۔ دیوالی کا دن تھا، طرح طرح کی چیزیں بنوائیں تھیں . اور سب تو ختم ہو گئیں تھیں، انت میں کھانے کے لئے گاجر کا حلوہ بچ رہا تھا، وہ بھی ہمارے حصے کا کھانے ہی والے تھے کہ وے لوگ آدھمکے اور "متھائی کھائیں گے" "متھائی کھائیں گے" چلانے لگے غنیمت تھی کہ میرے ہی ککشا کے ودیارتھی تھے . کسی طرح تھوڑا تھوڑا حلوہ سب کو دیا اور وعدہ کیا کہ متھائی پھر کھلائیں گے . ھنستے کودتے ودیارتھی واپس چلے گئے . طبیعت بہت خوش ہوئی . اِس کے بعد تاریخ 28 کو دوئج کے دن پانچوں ککشاؤں کے ودیارتھیوں کے لئے میں نے بھیا دوئج کے اُپلکش میں پانچ بڑے بڑے پیکٹ متھائیوں کے خریدے اور ایک پیکٹ الگ سے خریدا چینی ادھیاپکوں کے لئے . اِس دن یہاں ورما جی، مختار اور راجیش کو ٹیکا لگایا اور سوجی کا حلوہ کھلایا۔ اُس دن میری کلاس تو تھی ہی، متھائی لے کر میں

इतना सीख लिया" वे बहुत प्रभावित हुए. इसके बाद थोड़ी देर तक इन्दिरा जी मुझ से बात करती रहीं. पेकिंग विश्व-विद्यालय के बारे में उन्होने दुख प्रगट किया कि समय नहीं मिला कार्यक्रम अधिक व्यस्त रहा. हम लोगों ने उनसे कहा कि आप दुबारा चीन आइये तब तक हमारे सैकड़ों विद्यार्थी आप से हिन्दी में बात करने के लिये तैयार हो जायंगे. इस पर उन्होंने बहुत खुशी जाहिर की और फिर हाथ मिला कर हम लोग वापस आ गये. हां, पन्डित जी ने यह भी बताया कि उन्होंने चीन में चार चीनी शब्द सीख लिये हैं. नी हाव (आप कैसे हैं) चाउ-चि-येन (फिर मिलेंगे) इन्तू रन (भारतीय) और वान-स्वे (जिन्दाबाद).

तारीख 27 को सुबह हम लोग उन्हें विदा करने फिर हवाई अड्डे पर गये. उस दिन तो सिर्फ चुने हुए लोग ही जा पाये थे जिन में हम लोग भी शामिल थे. उस दिन हवाई अड्डे पर एक और अजीब बात हुई. तिब्बत के दलाईलामा और पंचन लामा से हमने खूब बातें कीं. तिब्बत की अजीबो ग़रीब पोशाक में यह दोनों बिलकुल नौजवान नेता बड़े अच्छे लग रहे थे और सब लोगों से खूब बातें कर रहे थे. आठ बजे पंडित जी मोटर से आये फौजी सलामी ली और फिर एक बिदाई का छोटा सा भाषण दिया. इसके बाद सब से हाथ मिला कर हवाई जहाज में चले गये. थोड़ी ही देर में हवाई जहाज हमारे सिरों पर मंडराने लगा. सब लोग हवाई अड्डे पर खड़े हाथ हिलाकर अभिवादन करते रहे और उनका जहाज नान किंग शंघाई की तरफ़ बढ़ा चला जा रहा था. पेकिंग से नान किंग शंघाई हैंगचौ होते हुए केन्टन और वहां से तारीख 29 को भारत के लिये रवाना हो गये.

चीनी जनता ने हर जगह पंडित नेहरू का जो शानदार स्वागत किया वह चीन के इतिहास में एक अनोखी यादगार रहेगी. बहुत बूढ़े पुराने लोगों ने, जिन्हें कि पिछले 75 वर्षों से नेताओं के स्वागत देखने का अवसर मिला है, हमें बताया कि उन्होंने पेकिंग में किसी भी व्यक्ति का इस तरह स्वागत होते नहीं देखा. पंडित नेहरू तो भारत पहुंच गये लेकिन यहां की करोड़ों जनता रोज रोज उनके बारे मे तरह तरह के संस्मरणों द्वारा उन्हें अपने पास ही पाती है. चेअर-मैन माओ कभी किसी भोज वग़ैरह में शामिल नहीं होते और बहुत कम मेहमानों से मिलते जुलते हैं लेकिन भारतीय राजदूत श्री राघवन द्वारा दिये गये भोज में माओ खुद तशरीफ़ लाये. इसके अलावा पंडित नेहरू के निवास काल में कई बार माओ नेहरू की भेंटें हुई और देर देर तक बात चीत हुई. पिछले सौ साल से साम्राज्यवादी ताक़तों ने भारत और चीन दोनों देशों को अपने शिकंजे में जकड़ रखा था इसलिये हम भारतीय और चीनियों का एक दूसरे के देश में आना जाना बन्द सा हो गया था. अब फिर यह दरवाज़ा

اتنا سیکھ لیا " وہ بہت پربھاوت ہوئے . اس کے بعد تھوڑی دیر تک اندرا جی مجھ سے بات کرتی رہیں . پیکنگ وشودیالیہ کے بارے میں انہوں نے دکھ پرگٹ کیا کہ سمے نہیں ملا کاریہ کرم ادھک ویست رہا . ہم لوگوں نے ان سے کہا کہ آپ دوبارہ چین آئیے تب تک ہمارے سیکڑوں ودیارتھی آپ سے ہندی میں بات کرنے کے لئے تیار ہو جائینگے . اس پر انہوں نے بہت خوشی ظاہر کی اور پھر ہاتھ ملا کر ہم لوگ واپس آگئے. ہاں، پنڈت جی نے یہ بھی بتایا کہ انہوں نے چین میں چار چینی شبد سیکھ لئے ہیں — نی ہاو (آپ کیسے ہیں) چاؤ - چی - این (پھر ملینگے) اِنتورن (بھارتیہ) اور وان - سوے (زندہباد) .

تاریخ 27 کو صبح ہم لوگ انہیں بدا کرنے پھر ہوائی اڈے پر گئے . اس دن تو صرف چنے ہوئے لوگ ہی جا پاتے تھے جن میں ہم لوگ بھی شامل تھے . اس دن ہوائی اڈے پر ایک اور عجیب بات ہوئی . تبت کے دلائی لاما اور پنچن لاما سے ہم نے خوب باتیں کیں . تبت کی عجیب و غریب پوشاک میں یہ دونوں بالکل نوجوان نیتا بڑے اچھے لگ رہے تھے اور سب لوگوں سے خوب باتیں کر رہے تھے . 8 بجے پنڈت جی موٹر سے آئے، فوجی سلامی لی اور پھر ایک بدائی کا چھوٹا سا بھاشن دیا . اس کے بعد سب سے ہاتھ ملا کر ہوائی جہاز میں چلے گئے . تھوڑی ہی دیر میں ہوائی جہاز ہمارے سروں پر منڈرانے لگا . سب لوگ ہوائی اڈے پر کھڑے ہاتھ ہلاکر ابھیوادن کرتے رہے اور ان کا جہاز نان کنگ شنگھائی کی طرف بڑھا چلا جا رہا ہے . پیکنگ سے نان کنگ شنگھائی ہینگچو ہوتے ہوئے کینٹن اور وہاں سے تاریخ 29 کو بھارت کے لئے روانہ ہوگئے .

چینی جنتا نے ہر جگہ پنڈت نہرو کا جو شاندار سواگت کیا وہ چین کے اتہاس میں ایک انوکھی یادگار رہے گی . بہت بوڑھے پرانے لوگوں نے، جنہیں کہ پچھلے 75 برسوں سے نیتاؤں کے سواگت دیکھنے کا اوسر ملا ہے، ہمیں بتایا کہ انہوں نے پیکنگ میں کسی بھی ویکتی کا اس طرح سواگت ہوتے نہیں دیکھا . پنڈت نہرو تو بھارت پہنچ گئے، لیکن یہاں کی کروڑوں جنتا اور روز روز ان کے بارے میں طرح طرح کے سنسمرنوں دوارا انہیں اپنے پاس ہی پاتی ہے . چیئرمین ماؤ کبھی کسی بھوج وغیرہ میں شامل نہیں ہوتے اور بہت کم مہمانوں سے ملتے جلتے ہیں، لیکن بھارتی راجدوت شری راگھون دوارا دئے گئے بھوج میں ماؤ تشریف لائے . اس کے علاوہ پنڈت نہرو کے نواس کال میں کئی بار ماؤ-نہرو کی بھینٹ ہوئیں اور دیر دیر تک بات چیت ہوئی . پچھلے سو سال سے سامراج وادی طاقتوں نے بھارت - چین دونوں دیشوں کو اپنے شکنجے میں جکڑ رکھا تھا . اس لئے ہم بھارتیہ اور چینیوں کا ایک دوسرے کے دیش میں آنا جانا بند سا ہو گیا تھا . اب پھر یہ دروازہ

सिखाया और उस दिन पन्डित जी के स्वागत के उपलक्ष में चीनियों द्वारा गाया गया. संस्कृत के कठिन शब्दों का शुद्ध उच्चारण और मधुरलय के साथ वन्दे मातरम गीत सुनकर पन्डित जी के साथ वाले सभी भारतीय आश्चर्य चकित रह गये. बाद में एम्बेसी वालों ने हमें घेर लिया और बड़ी देर तक दर्यांफ्त करते रहे कि आखिर वन्दे मातरम जैसा कठिन गीत चीनियों ने कैसे सीख लिया ? इत्तफाक से हम लोग अपने साथ लता मंगेशकर द्वारा गाये हुए वन्दे मातरम का रिकार्ड लेते आये थे जिससे सिखाने में बड़ी मदद मिली.

उस दिन की मीटिंग खतम होने के बाद घंटे भर तक हम लोग पंडित जी के दल के साथ साथ सुनयात सेन पार्क में किये गये नाच समारोहों, गानों और खेल कूद में भाग लेते रहे लेकिन सीधे बात चीत करने का अवसर उस दिन भी नहीं मिला क्योंकि चीनी नेता चाउ-एन-लाइ वग़ैरा स्वयं पंडित जी को समारोहों की बातें बतला रहे थे. शाम हो गई थी. पार्क के पेड़ों पर रंग बिरंगी बिजली बत्तियां जगमगा रही थीं मीटिंग खतम होने के बाद हज़ारों लोग सैकड़ों दलों में विभक्त हो कर नाच नाच कर भारत चीन मैत्री के लिये अपनी खुशी जाहिर कर रहे थे. हम में से हर एक ने महसूस किया कि हम चीन में भारत के करोड़ों लोगों के प्रतिनिधि हैं. सात बजे पंडित जी को चेअरमैन माओ से मिलना था इसलिये वे चाउ-एन-लाइ के साथ रवाना हो गये. हम लोग नौ बजे रात तक पार्क में घूमते रहे.

इसके बाद पंडित नेहरू मुकडेन और पोर्टआर्थर व डायरिन देखने चले गये. तारीख 26 को पेकिंग वापस आये. उस दिन पंडित जी ने चीनी नेताओं के सम्मान में पेकिंग होटल में एक बड़ा भारी भोज दिया. हम लोग भी खास तौर पर आमंत्रित थे. इस भोज में भी चाउ-एन-लाइ, ज़ू-ते, ल्यू शान - ची, मैडम सुनयात सेन वग़ैरा बड़े बड़े नेता शामिल थे और लगभग 800 व्यक्ति आमंत्रित थे. पेकिंग होटल के सजे हुए हाल में दावत का इन्तजाम था. हाल चारों ओर से बिजलियों से जगमग था. इत्तफ़ाक की बात कि उस दिन दिवाली थी. हम लोग बहुत खुश थे कि घर से इतनी दूर होते हुए भी हमारी दिवाली अच्छी रही. उसी दिन क़िदवई साहब की मृत्यु का दुख समाचार पहुंचा. पंडित जी ने उस दिन भोज के अपने भाषण में किदवई साहब का हृदय स्पर्षी उल्लेख भी किया. इसी कारण उस दिन के अन्य छोटे मोटे कार्यक्रम नहीं किये गये. उस दिन तो भोज खतम होने पर पंडित जी से सीधे बात चीत करने का मौका मिल गया. वे हम से काफी देर तक बात करते रहे. हमारे यहां आने के बारे में. हमारे यहां के जीवन के बारे में और हमारे यहां के अनुभवों के बारे में. पंडित जी ने मुझ से पूछा कि चीनी भाषा कितनी सीखली है, मैंने जब बताया कि काम चलाने भर को बोल लेती हूं तो खुश होकर कहा "अच्छा!

سکھایا اور اُس دن پنڈت جی کے سواگت کے اپلکش میں چینیوں دوارا گایا گیا ۔ سنسکرت کے کٹھن شبدوں کا شدھ اُچارن اور مدھرلئے کے ساتھ بندے ماترم گیت سن کر پنڈت جی کے ساتھ والے سبھی بھارتیہ آشچریہ چکت رہ گئے ۔ بعد میں ایمبیسی والوں نے ہمیں گھیر لیا اور بڑی دیر تک دریافت کرتے رہے کہ آخیر بندے ماترم جیسا کٹھن گیت چینیوں نے کیسے سیکھ لیا ؟ اتفاق سے ہم لوگ اپنے ساتھ لتا منگیشکر دوارا گائے ہوئے بندے ماترم کا ریکارڈ لیتے آئے تھے جس سے سکھانے میں بڑی مدد ملی ۔

اُس دن کی میٹنگ ختم ہونے کے بعد گھنٹے بھر تک ہم لوگ پنڈت جی کے دل کے ساتھ ساتھ سن یات سین پارک میں کئے گئے ناچ سماروہوں' گانوں اور کھیل کود میں بھاگ لیتے رہے' لیکن سیدھے بات چیت کرنے کا اوسر اُس دن بھی نہیں ملا کیونکہ چینی نیتا چاؤ-این-لائی وغیرہ سویم پنڈت جی کو سماروہوں کی باتیں بتلارہے تھے۔ شام ہوگئی تھی ۔ پارک کے پیڑوں پر رنگ برنگی بجلی کی بتیاں جگمگا رہی تھیں میٹنگ ختم ہونے کے بعد ہزاروں لوگ سیکڑوں دلوں میں وبھکت ہوکر ناچ ناچ کر بھارت چین میتری کے لئے اپنی خوشی ظاہر کر رہے تھے ۔ ہم میں سے ہر ایک نے محسوس کیا کہ ہم چین میں بھارت کے کروڑوں لوگوں کے پرتینِدھی ہیں ۔ سات بجے پنڈت جی کو چیئرمین ماؤ سے ملنا تھا اس لئے وے چاؤ-این-لائی کے ساتھ روانہ ہوگئے ۔ ہم لوگ نو بجے رات تک پارک میں گھومتے رہے ۔

اس کے بعد پنڈت نہرو مکڈین اور پورٹ آرتھر و ڈائرین دیکھنے چلے گئے ۔ تاریخ 26 کو پیکنگ واپس آئے ۔ اُس دن پنڈت جی نے چینی نیتاؤں کے سمّان میں پیکنگ ہوٹل میں ایک بڑا بھاری بھوج دیا ۔ ہم لوگ بھی خاص طور پر آمنترت تھے ۔ اُس بھوج میں بھی چاؤ - این- لائی چو-تے، لیو شان' چی' مہترم سن-یات-سین وغیرہ بڑے بڑے نیتا شامل تھے. اور لگ بھگ 800 ویکتی آمنترت تھے اور پیکنگ ہوٹل کے سجے ہوئے ہال میں دعوت کا انتظام تھا ۔ ہال چاروں اور سے بجلیوں سے جگمگ تھا۔ اتفاق کی بات ہے کہ اُس دن دیوالی تھی۔ ہم لوگ بہت خوش تھے کہ آپ لوگوں سے اِتنی دور ہوتے ہوئے بھی ہماری دیوالی اچھی رہی۔ اُس دن قدوئی صاحب کی مرتیو کا دکھد سماچار پہنچا ۔ پنڈت جی نے اُس دن بھوج کے اپنے بھاشن میں قدوئی صاحب کا ہردے اسپرشی اُولیکھ بھی کیا اِسی کارن اُس دن کے انیہ چھوٹے موٹے کاریہ کرم نہیں کئے گئے ۔ اُس دن تو بھوج ختم ہونے پر پنڈت جی سے سیدھے بات چیت کرنے کا موقع مل گیا ۔ وے ہم سے کافی دیر تک بات کرتے رہے—ہمارے یہاں آنے کے بارے میں' ہمارے یہاں کے جیون کے بارے میں اور ہمارے یہاں کے انوبھوں کے بارے میں ۔ پنڈت جی نے مجھ سے پوچھا کہ چینی بھاشا کتنی سیکھ لی ہے ؟ میں نے جب بتایا کہ کام چلانے بھر کو بول لیتا ہوں تو خوش ہو کر کہا " اچھا !

के इन दोनों महान नेताओं का अभिवादन किया. नेहरू जी को तो पेकिंग की जनता ने पहली बार देखा ही साथ ही साथ बहुत से लोगों ने हमें बताया कि चाउ-एन-लाइ को भी उन्होंने साफ साफ पहली बार देखा.

इसके बाद नेहरू जी का पेकिंग में व्यस्त कार्य क्रम शुरू हो गया. चीनी नेताओं से लम्बी लम्बी बात चीत और बाक़ी समय में पेकिंग की मुख्य मुख्य चीज़ों को देखने का कार्यक्रम हम लोग रोज़ रोज़ अख़बार में पढ़ते रहे. हमें मालूम था कि पंडित जी पेकिंग युनिवर्सिटी भी देखने आयंगे इसलिये हम लोगों ने उनसे मिलने की कोई ख़ास कोशिश नहीं की. इसके बाद उनका कार्यक्रम इतना अधिक व्यस्त रहा कि वे किसी को भी अलग से समय नहीं दे सके. यहां तक कि बाहर से आये हुए भारतीयों तक से अलग से नहीं मिल पाये. बाद में उनका प्रोग्राम कुछ बदल दिया गया और वह लम्बी लम्बी बात चीतों के कारण पेकिंग विश्वविद्यालय भी आ सके. उनके स्वागत में पेकिंग के नागरिकों की ओर से सुनयत सेन पार्क में एक बड़ी भारी आम सभा हुई जिसमें लगभग 50 हज़ार लोग उपस्थित थे. उस दिन पब्लिक मीटिंग में जाने के लिये हमें ख़ास तौर से निमंत्रण मिला हम सब एक घंटा पहले मीटिंग मे पहुंचे और सब से आगे बैठाये गये. उस दिन भी पार्क के फाटक से सभा मंच तक हज़ारों आदमियों ने हमारा बड़ा सुन्दर स्वागत किया. हवाई अड्डे पर जाने के समय तो हम लोग मोटर पर थे लेकिन पार्क के फाटक से मंच तक पैदल ही गए. लगभग एक फर्लांग या कुछ ज़्यादा इतना रास्ता चलना मुश्किल हो गया हमारे लिये. लोगों की तालियां हमारे मुंह के इतने समीप बज रही थीं कि अपने मुंह को बचाने की कोशिश करनी पड़ती थी. इस तरह के स्वागत की तो हम कभी कल्पना भी नहीं कर सकते थे. पहली बार हमें अपने भारतीय होने पर गर्व हुआ और यह सोचकर और ख़ुशी हुई कि मुझे चीन आने और यह सब देखने का मौक़ा मिला. उस दिन भी पंडित जी ने बड़ी देर तक हिन्दी में भाषण दिया जिसका अनुवाद चीनी में किया गया. स्वागत करते हुए पीकिंग के मेयर ने चीनी में भाषण दिया जिसका अनुवाद चीनी से हिन्दी में कर सुनाया गया. चीनी से हिन्दी अनुवाद करने वाली हमारे ही विभाग की एक लड़की चुनी गई थी जिसने बहुत अच्छे तरीक़े से अपना काम किया. पन्डित जी ने बड़े ध्यान से चीनी लड़की के मुंह से हिन्दी सुनी और उनके चेहरे से ज़ाहिर था कि वे .ख़ुश हुए. इसी मीटिंग में उनके स्वागत में चीनी नवजवानों और नवयुवतियों ने मिल कर बन्दे मातरम गीत गाया. पन्डित जी के आने के हफ़्ते भर पहले पेकिंग की Music Academy के प्रधान हमारे पास आये थे और चार दिन तक हमारे साथ वन्दे मातरम गान के शब्दों का उच्चारण और उनकी ध्वनि व राग का अभ्यास करते रहे थे. फिर यही राग उन्होंने अपनी एकेडमी के सदस्यों को

کے ان دونوں مہان نیتاؤں کا ابھیوادن کیا ۔ نہرو جی کو تو پیکنگ کی جنتا نے پہلی بار دیکھا ہی ساتھ ہی ساتھ بہت سے لوگوں نے ہمیں بتایا کہ چاؤ - این - لائی کو بھی انہوں نے صاف صاف پہلی بار دیکھا ۔

اس کے بعد نہرو کا پیکنگ میں ویست کاریہ کرم شروع ہو گیا ۔ چینی نیتاؤں سے لمبی لمبی بات چیت اور باقی سمے میں پیکنگ کی خاص خاص چیزوں کو دیکھنے کا کاریہ کرم ہم لوگ روز اخبار میں پڑھتے رہے ۔ ہمیں معلوم تھا کہ پنڈت جی پیکنگ یونیورسٹی بھی دیکھنے آئیں گے ۔ اس لئے ہم لوگوں نے ان سے ملنے کی کوئی خاص کوشش نہیں کی ۔ اس کے بعد ان کا کاریہ کرم اتنا ادھک ویست رہا کہ وے کسی کو بھی الگ سے سمے نہیں دے سکے ۔ یہاں تک کہ باہر سے آئے ہوئے بھارتیوں تک سے الگ سے نہیں مل پائے ۔ بعد میں ان کا پروگرام کچھ بدل دیا گیا اور وہ لمبی لمبی بات چیتوں کے کارن پیکنگ وشودیالیہ بھی نہ آسکے ۔ ان کے سواگت میں پیکنگ کے ناگرکوں کی اور سے سن یات سین پارک میں ایک بڑی بھاری عام سبھا ہوئی جس میں لگ بھگ 50 ہزار لوگ اپستھت تھے ۔ اس دن پبلک میٹنگ میں جانے کے لئے ہمیں خاص طور سے نمنترن ملا ۔ ہم سب ایک گھنٹہ پہلے میٹنگ میں پہنچے اور سب سے آگے بٹھائے گئے ۔ اس دن بھی پارک کے پھاٹک سے سبھا منچ تک ہزاروں آدمیوں نے ہمارا بڑا سندر سواگت کیا ۔ ہوائی اڈے پر جانے کے سمے تو ہم لوگ موٹر پر تھے لیکن پارک کے پھاٹک سے منچ تک پیدل ہی گئے ۔ لگ بھگ ایک فرلانگ یا کچھ زیادہ ۔ اتنا راستہ چلنا مشکل ہو گیا ۔ ہمارے لئے لوگوں کی تالیاں ہمارے منہ کے اتنے سمیپ بج رہی تھیں کہ اپنے منہ کو بچانے کی کوشش کرنی پڑتی تھی ۔ اس طرح کے سواگت کی تو ہم کبھی کلپنا بھی نہیں کر سکتے تھے ۔ پہلی بار ہمیں اپنے بھارتیہ ہونے پر گرو ہوا ۔ اور یہ سوچ کر اور خوشی ہوئی کہ مجھے چین آنے اور یہ سب دیکھنے کا موقع ملا ۔ اس دن بھی پنڈت جی نے بڑی دیر تک ہندی میں بھاشن دیا جس کا انوواد ہندی سے چینی میں کیا گیا ۔ سواگت کرتے ہوئے پیکنگ کے میئر نے چینی میں بھاشن دیا جس کا انوواد چینی سے ہندی میں کر سنایا گیا چینی سے ہندی انوواد کرنے والی ہمارے ہی وبھاگ کی ایک لڑکی چنی گئی تھی جس نے بہت اچھے طریقہ سے اپنا کام کیا ۔ پنڈت جی نے بڑے دھیان سے چینی لڑکی کے منہ سے ہندی سنی اور ان کے چہرے سے ظاہر تھا کہ وے خوش ہوئے اسی میٹنگ میں ان کے سواگت میں چینی نوجوانوں اور نو یوتیوں نے مل کر بندے ماترم گیت گایا ۔ پنڈت جی کے آنے کے ہفتے بھر پہلے پیکنگ کی Music Academy کے پردھان ہمارے پاس آئے تھے اور چار دن تک ہمارے ساتھ بندے ماترم گان کے شبدوں کے اچارن اور ان کی دھونی و راگ کا ابھیاس کرتے رہے تھے ۔ پھر وہی راگ انہوں نے اپنی ایکیڈمی کے سدسیوں کو

इत्यादि भी जमा थे. एम्बेसी के लोग तो साढ़े ग्यारह बजे आये हम लोग नौ बजे ही पहुंच गये थे. नौ बजे तक ही 10 हजार से ज्यादा लोग जमा हो चुके थे. पंडित नेहरू का हवाई जहाज 12.15 पर दिखाई दिया उसके पहले तो हम जगह जगह जा कर जनता के कौतूहल पूर्ण सवालों का जवाब देते रहे. हमारे विद्यार्थी तो हमारे साथ थे ही इसलिये भाषा संबंधी कोई कठिनाई नहीं हुई. चीनी पत्रकारों ने पंडित नेहरू के आने के बारे मे हमारी राय पूछी. हम लोग बहुत खुश थे और भारतीय पोशाक में हजारों नर नारियों का ध्यान आकर्षित किये हुए थे, ऐम्बेसी के भारतीय सज्जनगण सब यूरुपीय वेश में थे इसलिये उन की ओर लोगों का ध्यान नहीं गया. जो दूसरे भारतीय आये हुए थे उनके साथ हम लोग खड़े तो हो गये पर हमारा मन अपने विद्यार्थियों के साथ था. पंडित नेहरू के हवाई जहाज को ऊपर देखते ही बहुत जोर से नारे लगने शुरू हो गये. चीनी नेता प्रधान मंत्री चाउ. इन. लाई. मैडम सुनयत सेन, दलाइलामा आदि बहुत पहले से हवाई अड्डे पर आ गये थे और आजादी से घूम घूम कर सब से खूब बातें कर रहे थे, खूब हंस बोल रहे थे. बहुत से लोगों ने हमें बताया कि इस तरह इतनी आजादी के साथ हंसना बोलना भी यहां के लिये नई चीज है.

हवाई जहाज से उतर कर पंडित नेहरू ने फौजी सलामी ली. उसके बाद चीनी बड़े बड़े नेताओं व राजदूतों वगैरा से हाथ मिलाया. फिर हिन्दी में भाषण दिया जिसका अनुवाद चीनी में कर दिया गया. उस दिन मौसम तो बहुत अच्छा था. धूप निकली थी लेकिन हवा तेज चल रही थी. भाषण के बाद पंडित नेहरू बारी बारी से स्वागत करने वाले दलो से मिले. सारा हवाई अड्डा नारों से गूँज रहा था. हमारे विद्यार्थियों ने हमसे अनुरोध किया कि हम अपने विभाग का परिचय पंडित नेहरू से करा दें. इसलिये जब पंडित जी पेकिंग विश्वविद्यालय के लड़कों के पास पहुंचे तब हम लोग भी बढ़कर उनमें शामिल हो गये. पंडित जी के आने पर— हम लोगों ने उन्हें हिन्दी विभाग के बारे में बताया. हिन्दी के विद्यार्थियों को देखकर वे बहुत खुश हुए. हमने उन्हें पेकिंग विश्वविद्यालय में आने का निमन्त्रण किया. उन्होने और चाउ-एन-लाइ तथा इंदिरा जी ने हम पांचों अध्यापकों से हाथ मिलाया और हम लोगों को देखकर बहुत खुशी जाहिर की. इसी बीच में मैंने सुश्री इंदिरा गांधी से भी कुछ बातें कीं. उस तमाम हो हल्ले के बीच कोई खास बात करना तो संभव नहीं था पर हमसे परिचय हो जाने का ही हम सब को बड़ा आनन्द हुआ. इसके बाद पंडित जी और चाउ-एन-लाइ एक साथ मोटर में खड़े होकर हवाई अड्डे के बाहर गये. इस तरह से खुली मोटर में खुले आम चाउ-एन-लाइ पहली बार पेकिंग में निकले. लाखों जनता ने जोर शोर से एशिया

اتیاد بھی جمع تھے. ایم بیسی کے لوگ تو ساڑھے گیارہ بجے آئے' ہم لوگ نو بجے ہی پہنچ گئے تھے. نو بجے تک 10 ہزار سے زیادہ لوگ جمع ہو چکے تھے . پنڈت نہرو کا ہوائی جہاز 12.15 پر دکھائی دیا . اُس کے پہلے تو ہم جگہ جگہ جاکر جنتا کے کوتوھل پورن سوالوں کا جواب دیتے رہے. ہمارے ودیارتھی تو ہمارے ساتھ تھے ہی اس لئے بھاشا سمبندھی کوئی کٹھنائی نہیں ہوئی. چینی پترکاروں نے پنڈت نہرو کے آنے کے بارے میں ہماری رائے پوچھی . ہم لوگ بہت خوش تھے اور بھارتیہ پوشاک میں ہزاروں نر ناریوں کا دھیان آکرشت کئے ہوئے تھے . ایم بیسی کے بھارتیہ سجن گن سب یوروپیہ ویش میں تھے . اس لئے ان کی اور لوگوں کا دھیان نہیں گیا . جو دوسرے بھارتیہ آئے ہوے تھے' اُن کے ساتھ ہم لوگ کھڑے تو ہو گئے پر ہمارا من اپنے ودیارتھیوں کے ساتھ تھا . پنڈت نہرو کے ہوائی جہاز کو اوپر دیکھتے ہی بہت زور سے نعرے لگانے شروع ہوگئے. چینی نیتا پردھان منتری چو. این. لائی' میڈم سن یات سین' دلائی لاما آدی بہت پہلے سے ہوائی اڈے پر آگئے تھے اور آزادی سے گھوم گھوم کر سب سے خوب ہنس بول رہے تھے . بہت سے لوگوں نے ہمیں بتایا کہ اس طرح اتنی آزادی کے ساتھ ہنسنا بولنا بھی یہاں کے لئے نئی چیز ہے .

ہوائی جہاز سے اُتر کر پنڈت نہرو نے فوجی سلامی لی . اس کے بعد چینی بڑے بڑے نیتاؤں' راجدوتوں وغیرہ سے ہاتھ ملایا . پھر ہندی میں بھاشن دیا جس کا انواد چینی میں کر دیا گیا . اس دن موسم تو بہت اچھا تھا . دھوپ نکلی تھی . لیکن ہوا تیز چل رہی تھی . بھاشن کے بعد پنڈت نہرو باری باری سے سواگت کرنے والے دلوں سے ملے . سارا ہوائی اڈا نعروں سے گونج رہا تھا . ہمارے ودیارتھی نے ہم سے انورودھ کیا کہ ہم اپنے وبھاگ کا پریچے پنڈت نہرو سے کرا دیں . اس لئے جب پنڈت جی پیکنگ وشودیالیہ کے لڑکوں کے پاس پہنچے تب ہم لوگ بھی بڑھکر ان میں شامل ہوگئے. پنڈت جی کے آنے پر ہم لوگوں نے انہیں ہندی وبھاگ کے بارے میں بتایا . ہندی کے ودیارتھیوں کو دیکھکر وے بہت خوش ہوئے . ہم نے انہیں پیکنگ وشودیالیہ میں آنے کا نمنترن دیا . انہوں نے اور چاؤ - این - لائی تتھا اندرا جی نے ہم پانچوں ادھیاپکوں سے ہاتھ ملایا اور ہم لوگوں کو دیکھکر بہت خوشی ظاہر کی . اسی بیچ میں میں نے سوشری اندرا گاندھی سے بھی کچھ باتیں کیں . اُس تمام ہو ہلے کے بیچ کوئی خاص بات کرنا تو سمبھو نہیں تھا . پر ہم سے پریچے ہوجانے کا ہی ہم سب کو آنند ہوا . اس کے بعد پنڈت جی اور چاؤ - این - لائی ایک ساتھ موٹر میں کھڑے ہو کر ہوائی اڈے کے باہر گئے. اس طرح سے کھلی موٹر میں کھلے عام چاؤ - این - لائی پہلی بار پیکنگ میں نکلے . لاکھوں جنتا نے زور شور سے ایشیا

Indians के दल में शामिल हो कर स्वागत करें व पीकिंग विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के साथ न खड़े हों. यह बात वैसे तो हम लोग न मानते पर विश्वविद्यालय की ओर से प्रार्थना की जाने पर हमने स्वीकार कर लिया. आप समझ सकते हैं कि चीनी विद्यार्थियों के साथ हवाई अड्डे तक जाने और उनके साथ वहां खड़े होने में जो श्रेय व उत्साह मिलता वह किसी दूसरी जगह मिलना संभव न था. हमने निश्चय किया कि जायंगे तो विद्यार्थियों के साथ पर हवाई अड्डे पर खड़े हो जायंगे Oserseas Inians के दल के साथ. सारे चीन से भारतीय आकर पीकिंग में जमा हो गये थे फिर भी उनकी कुल तादाद 10-12 ही थी. शांघाई से भारतीय नहीं आये थे क्योंकि पंडित नेहरू का शांघाई जाने का भी प्रोग्राम था. वहां 200 भारतीय हैं. 19 तारीख को सुबह 8 बजे हम हवाई अड्डे के लिये रवाना हुए. हमारी इच्छा न होते हुए भी हमारे लिये खास तौर पर एक मोटर का प्रबंध किया गया. यहां पहली मई और पहली अक्टूबर के अलावा पढ़ाई की और छुट्टियां नहीं होतीं. पहली बार नेहरू जी के आगमन के उपलक्ष में पेकिंग की सब शिक्षण संस्थायें बंद रहीं. उस दिन का दृश्य तो कभी भुलाया नहीं जा सकता. पंडित नेहरू का स्वागत तो पीछे हुआ हवाई अड्डे जाते समय हम लोगों का इतना ज़ोरदार स्वागत हुआ मानों सारा आयोजन हमारे ही लिये किया गया हो. भारतीय पोशाक पहिने हुए हमें मोटर में बैठा देखकर सड़क के दोनों किनारों पर खड़े हज़ारों आदमी ताली बजा बजा कर "भारत चीन मैत्री जिन्दाबाद", "शान्ति जिन्दाबाद". के नारे लगा कर खूब उछल कूद रहे थे. उस दिन तो दो लाख से ज्यादा आदमी सड़क के किनारे पर सुबह से खड़े थे. आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इस तरह से खुले आम यहां पहले किसी का भी स्वागत नहीं किया गया. आम तौर से नेता लोग आते हैं तो चीन के बड़े बड़े नेता उनके स्वागत के लिये मेहमानों सहित पेकिंग होटल चले जाते हैं जो यहां मेहमानों को ठहराने के लिये खास जगह है. आम जनता को तो अखबार पढ़कर ही मालूम हो पाता है कि कोई विदेशी नेता पेकिंग में आया है और चीनी नेतागणों के दर्शन तो साल में सिर्फ दो बार होते हैं—पहली मई और पहली अक्टूबर को जब कि वह कतार में खड़े हो कर जनता का स्वागत करते हैं. अब की बार वह सारे नियम टूट गये या यों कहिये कि पंडित नेहरू के आने के बाद से यहां स्वागत का नया रिवाज शुरू हो गया. उस दिन हवाई अड्डे पर 10 हज़ार से ज्यादा आदमी मौजूद थे. व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से इससे ज्यादा आदमियों को अड्डे के बाहर सड़कों के किनारे बहुत दूर तक खड़े रहना पड़ा. उस दिन भारतीय और चीनी झंडों से हवाई अड्डा खूब सजाया गया था. बहुत से विदेशी प्रतिनिधि व राजदूत

Indians کے دل میں شامل ہو کر سواگت کریں و پیکنگ وشودیالیہ کے ودیارتھیوں کے ساتھ نہ کھڑے ہوں. یہ بات ویسے تو ہم لوگ نہ مانتے پر وشودیالیہ کی اور سے پرارتھنا کی جانے پر ہم نے سویکار کر لیا۔ آپ سمجھ سکتے ہیں کہ چینی ودیارتھیوں کے ساتھ ہوائی اڈے تک جانے اور اُن کے ساتھ وہاں کھڑے ہونے میں جو شریے و اُتساہ ملتا وہ کسی دوسری جگہ ملنا سمبھو نہ تھا۔ ہم نے نشچے کیا کہ جائینگے تو ودیارتھیوں کے ساتھ پر ہوائی اڈے پر کھڑے ہو جائینگے۔ Overseas Indians کے دل کے ساتھ۔ سارے چین سے بھارتیہ آکر پیکنگ میں جمع ہوگئے تھے' پھر بھی اُن کی کل تعداد 10-12 ہی تھی۔ شنگھائی سے بھارتیہ نہیں آئے تھے کیونکہ پنڈت نہرو کا شنگھائی جانے کا بھی پروگرام تھا۔ وہاں 200 بھارتیہ ہیں. 19 تاریخ کو صبح 8 بجے ہوائی اڈے کے لیئے روانہ ہوئے۔ ہماری اِچھا نہ ہوتے ہوئے بھی ہمارے لیئے خاص طور پر ایک موٹر کا پربندھ کیا گیا۔ یہاں پہلی مئی اور پہلی اکتوبر کے علاوہ پڑھائی کی اور چھٹیاں نہیں ہوتیں۔ پہلی بار نہرو جی کے آگمن کے اُپلکش میں پیکنگ کی سب شکشا سنستھائیں بند رہیں۔ اُس دن کا درشیہ تو کبھی بھلایا نہیں جا سکتا. پنڈت نہرو کا سواگت تو پیچھے ہوا' ہوائی اڈے جاتے سمے' ہم لوگوں کا اتنا زوردار سواگت ہوا. مانو وہ سارا آیوجن ہمارے ہی لیئے کیا گیا ہو۔ بھارتیہ پوشاک پہنے ہوئے ہمیں موٹر میں بیٹھا دیکھکر سڑک کے دونوں کناروں پر کھڑے ہزاروں آدمی تالی بجا بجا کر "بھارت چین میتری زندہ باد" "شانتی زندہ باد" کے نعرے لگا کر خوب اچھل کود رہے تھے۔ اس دن تو دو لاکھ سے زیادہ آدمی سڑک کے کنارے پر صبح سے کھڑے تھے۔ آپکو جان کر یہ آشچریہ ہوگا کہ اس طرح سے کھلے عام یہاں پہلے کسی کا بھی سواگت نہیں کیا گیا۔ عام طور سے جب نیتا لوگ آتے ہیں تو چین کے بڑے بڑے نیتا اُن کے سواگت کے لیے مہمانوں سہیت پیکنگ ہوٹل چلے جاتے ہیں' جو یہاں مہمانوں کو ٹھہرانے کے لئے خاص جگہ ہے۔ عام جنتا کو تو اخبار پڑھکر ہی معلوم ہوتا ہے کہ کوئی ودیشی نیتا پیکنگ میں آیا ہے اور چین نیتاگنوں کے درشن تو سال میں صرف دو بار ہوتے ہیں—پہلی مئی اور پہلی اکتوبر کو جب کہ وہ قطار میں کھڑے ہوکر جنتا کا سواگت کرتے ہیں۔ اب کی بار یہ سارے نیم ٹوٹ گئے یا یوں کہیے کہ پنڈت نہرو کے آنے کے بعد سے یہاں سواگت کا نیا رواج شروع ہو گیا۔ اس دن ہوائی اڈے پر 10 ہزار سے زیادہ آدمی موجود تھے۔ ویوستھا بنائے رکھنے کے اُدیش سے اس سے زیادہ آدمیوں کو ہوائی اڈے پر جانے کی صلاح نہیں دی گئی۔ باقی دولاکھ سے زیادہ آدمیوں کو اڈے کے باہر سڑکوں کے کنارے بہت دور تک کھڑے رہنا پڑا۔ اُس دن بھارتیہ اور چینی جھنڈوں سے ہوائی اڈا خوب سجایا گیا تھا۔ بہت سے ودیشی پرتیندھی و راجدوت

चीन में पंडित नेहरू

श्रीमती प्रभा प्रसाद

(लेक्चरार, हिन्दी विभाग, पीकिंग विश्वविद्यालय)

[श्रीमती प्रभादेवी पहली भारतीय महिला हैं जो पीकिंग विश्वविद्यालय में हिन्दी कीशिक्षक हैं. पंडित नेहरू जब चीन गये यह उस समय वे उनके स्वागत का वर्णन है—एडीटर]

पंडित नेहरू के आने की तैयारी और उनके यहां रहने के दिनों में व्यस्त कार्य-क्रम रहा. 15 अक्टूबर को नेहरू जी भारत से चल दिये थे यह खबर यहां मिलते ही हमारे विद्यार्थियों में हमारे प्रति जो प्यार उमड़ा उसे पत्र में लिखना कठिन है. कक्षा शुरू होने से पहले ही वे मेरे पास आ जाते थे तरह तरह के सवाल करते थे. मेरे साथ ही घर से क्लास तक जाते थे और फिर क्लास खतम होने पर साथ ही घर तक पहुंचाने भी आते थे. उन्हें इस बात की बड़ी बेचैनी थी कि कहीं ऐसा न हो कि अधिक व्यस्त रहने के कारण पंडित जी उन्हें मुलाकात न दे सकें. पंडित नेहरू कैसी टोपी लगाते हैं, कैसे हंसते हैं, कैसे खाना खाते हैं, क्या वह भी बहुत दूध पीते हैं, विद्यार्थियों से मिलना पसंद करते हैं कि नहीं, जल्दी नाराज़ तो नहीं हो जाते, हम कैसे उनसे मिल सकते हैं, आप किसी तरह हमारा परिचय उनसे करा दीजियेगा. हम सिर्फ एक बार उन्हें देखना चाहते हैं, उनके साथ शांति जिंदाबाद का नारा लगाना चाहते हैं, वह एशिया के बहुत बड़े नेता हैं, उनके आने से भारत चीन मैत्री पक्की हो जायगी, आप अपने साथ हमें भी भारत ले चलियेगा ? इत्यादि इत्यादि बातों का जवाब देते देते नाक में दम हो गया. इंदिरा गांधी के बारे में उन्हें नहीं मालूम था, धीरे धीरे खबर आई कि पंडित नेहरू केन्टन पहुंच गये और 50 हज़ार आदमियों ने हवाई अड्डे पर उनका स्वागत किया. इसके बाद मालूम हुआ कि वह हन्कांग (हैं कौ) पहुंच गये. उसी रास्ते से जिस रास्ते हम लोग आये थे. वहां इतनी ज्यादा भीड़ थी कि उनकी मोटर एक घंटे तक आगे बढ़ ही नहीं सकी. 18 तारीख को हमें खबर मिली कि 19 को 12 बजे पंडित जी पेकिंग के हवाई अड्डे पर पहुंच जायेंगे. आप को तो मालूम ही है कि यहां पर हम पांच भारतीय शिक्षक हैं और एक व्यापारी हैं. एमबेसी वालों ने हमारे विश्वविद्यालय से प्रार्थना की कि भारतीय अध्यापक कृपा करके Overseas

چین میں پنڈت نہرو

شری متی پربھا پرساد، ایم. اے.

(لیکچرر، ہندی وبھاگ، پیکنگ وشوودیالیہ)

[سری متی پربھا دیوی پہلی بھارتی مہیلا ہیں جو پیکنگ وشوودیالیہ میں ہندی کی شکشک ہیں. پنڈت نہرو جب چین گئے یہ اُس سمے کے اُن کے سواگت کا ورنن ہے . اڈیٹر]

پنڈت نہرو کے آنے کے تیاری اور اُن کے یہاں رہنے کے دنوں میں ویست کاریہ کرم رہا . 15 اکتوبر کو نہرو جی بھارت سے چل دیئے تھے یہ خبر یہاں ملتے ہی ہمارے ودیارتھیوں میں ہمارے پرتی جو پیار اُمڑا اُسے پتر میں لکھنا کٹھن ہے . کچھا شورع ہونے سے پہلے ہی وے میرے پاس آجاتے تھے طرح طرح کے سوال کرتے تھے . میرے ساتھ ہی گھر سے کلاس تک جاتے تھے اور کلاس ختم ہونے پر ساتھ ہی گھر تک پہنچانے بھی آتے . اُنہیں اس بات کی بڑی بے چینی تھی کہ کہیں ایسا نہ ہو کہ ادھک ویست رہنے کے کارن پنڈت جی اُنہیں ملاقات دے سکیں . پنڈت نہرو کیسی ٹوپی لگاتے ہیں . کیسے ہنستے ہیں، کیسے کھانا کھاتے ہیں، کیا وہ بھی بہت دودھ پیتے ہیں، ودیارتھیوں سے ملنا پسند کرتے ہیں کہ نہیں، جلدی ناراض تو نہیں ہوجاتے، ہم کیسے اُن سے مل سکتے ہیں، آپ کسی طرح ہمارا پریچئے اُن سے کرادیجئے گا . ہم صرف ایک بار اُنہیں دیکھنا چاہتے ہیں، اُن کے ساتھ شانتی زندہ باد کا نارا لگانا چاہتے ہیں، وہ ایشیا کے بہت بڑے نیتا ہیں، اُن کے آنے سے بھارت چین میتری پکی ہو جائے گی، آپ اپنے ساتھ ہمیں بھی بھارت لے چلئے گا ؟ اتیادی اتیادی باتوں کا جواب دیتے دیتے ناک میں دم ہوگیا اِندرا گاندھی کے بارے میں نہیں معلوم تھا، دھیرے دھیرے خبر آئی کہ پنڈت نہرو کینٹن پہنچ گئے اور 50 ہزار آدمیوں نے ہوائی اڈے پر اُن کا سواگت کیا . اِس کے بعد معلوم ہوا کہ وہ ہنکانگ (ہیں کو) پہنچ گئے . اُسی راستے سے جس راستے ہم لوگ آئے تھے . وہاں اِتنی زیادہ بھیڑ تھی کہ اُن کی موٹر ایک گھنٹے تک آگے بڑھ ہی نہیں سکی 18 تاریخ کو ہمیں خبر ملی کہ 19 کو 12 بجے پنڈت جی پیکنگ کے ہوائی اڈے پر پہنچ جائیںگے . آپ کو تو معلوم ہی ہے کہ یہاں پر ہم پانچ بھارتیہ شکشک ہیں اور ایک بیوپاری ہیں . ایمبیسی والوں نے ہمارے وشوودیالیہ سے پرارتھنا کی کہ بھارتیہ ادھیاپک کرپا کر کے Overseas

आत्मा पर पाला मार दिया है वहां उन्हें अपने ही देश में अपने तरीक़े से तरक़्क़ी करने में बड़ी बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है.

आज अफ़रीका वासियों के नेताओं का यह फ़र्ज़ है कि वह अपनी जातीय और सांस्कृतिक विशेषताओं का अध्ययन करें, उनमें जो स्थायी मूल्यों की बातें हैं और जिनसे उनके जीवन को सुन्दर बनाने में मदद मिलेगी, उनसे चिपटे रहें, अपने ऊपर विश्वास रखें, अपने भविष्य के ऊपर विश्वास रखें, उनमें जो पहले कमियां थीं उन्हें आज के ज़माने में और भविष्य में दूर करने की कोशिश करें', एशिया, यूरोप और अमरीका की संस्कृतियों की जिन ख़ूबियों से वह समझते हैं कि उनका दुनियावी फ़ायदा होगा और उनकी बौद्धिक और आध्यात्मिक तरक़्क़ी होगी और पिछली सदियों में उन्होंने जो उन्नति की थी उस तरह की उन्नति वह फिर कर सकें इसमें उन्हें सहायता देंगी, उनको वह पूरी तरह स्वीकार करें'. ईश्वर करे अन्य पीड़ित लोगों की तरह पीड़ित अफ़रीका वासियों की आर्त्त पुकार सिर्फ़ यह न हो कि—'हे ईश्वर ! हे ईश्वर ! क्या तू मेरी गुहार न सुनेगा ?' बल्कि वह एक उम्मीद से भरी और एतक़ाद पैदा करने वाली इबादत हो. और परवरदिगार की रहमत उन पर बरसे जो किसी एक क़ौम का परवरदिगार नहीं है और जिसके उतने नाम हैं जितनी कि ज़बानें और न वह किसी एक गिरोह का परवरदिगार है जो समझता है कि अल्लाह की सब नियामतें सिर्फ़ उसके लिये हैं बल्कि जो सब इनसानों का परवर दिगार है चाहे उनका रंग या मज़हब कैसा ही क्यों न हो. ऐसा सर्व व्यापी परमात्मा अफ़रीका निवासियों को तरक़्क़ी की मंज़िल पर बढ़ने और अपना मक़सद हासिल करने में मदद दे.

آتما پر پالا مار دیا ہے وہاں انہیں اپنے ہی دیش میں اپنے طریقہ سے ترقی کرنے میں بڑی بڑی مشکلوں کا سامنا کرنا پڑ رہا ہے .

آج افریقہ نواسیوں کے نیتاؤں کا یہ فرض ہے کہ وہ اپنی جاتی اور سنسکرتک وشیشتاؤں کا ادھین کریں، ان میں جو استھائی مولیوں کی باتیں ہیں اور جن سے انکے جیون کو سندر بنانے میں مدد ملے گی، ان سے چپٹے رہیں، اپنے اوپر وشواس رکھیں، اپنے بھوشیہ کے اوپر وشواس رکھیں، ان میں جو پہلے کمیاں تھیں انہیں آج کے زمانے میں اور بھوشیہ میں دور کرنے کی کوشش کریں، ایشیا، یورپ اور امریکہ کی سنسکرتیوں کی جن خوبیوں سے وہ سمجھتے ہیں کہ ان کا دنیاوی فائدہ ہوگا اور ان کی بودھک اور آدھیاتمک ترقی ہوگی اور پچھلی صدیوں میں انہوں نے جو اُنتی کی تھی اس طرح کی اُنتی وہ پھر کر سکیں اِس میں انہیں سہایتا دیں گی، ان کو وہ پوری طرح سویکار کریں . ایشور کرے انیہ پیڑت لوگوں کی طرح پیڑت افریقہ واسیوں کی آرت پکار صرف یہ نہ ہو کہ—'ہے ایشور ! ہے ایشور ! کیا تو میری گوہار نہ سنیگا !' بلکہ وہ ایک امید سے بھری اور اعتقاد پیدا کرنے والی عبادت ہو ! اور پروردگار کی رحمت اُن پر برسے جو کسی ایک قوم کا پروردگار نہیں ہے اور جس کے اِتنے نام ہیں جتنی کہ زبانیں اور نہ وہ کسی ایک گروہ کا پروردگار ہے جو سمجھتا ہے کہ اللہ کی سب نعمتیں صرف اُس کے لئے ہیں بلکہ جو سب انسانوں کا پروردگار ہے چاہے اُن کا رنگ یا مذہب کیسا ہی کیوں نہ ہو . ایسا سرو ویاپی پرماتما افریقہ نواسیوں کو ترقی کی منزل پر بڑھنے اور اپنا مقصد حاصل کرنے میں مدد دے .

जो रात और दिन एक बार अतीत की ओर चले जाते हैं, वे फिर कभी वापिस नहीं आते; जो मनुष्य पाप करता है, उसके वे रात दिन बिल्कुल निष्फल जाते हैं.

—महावीर स्वामी

جو رات اور دن ایک بار اتیت کی اور چلے جاتے ہیں، وے پھر کبھی واپس نہیں آتے؛ جو منش پاپ کرتا ہے، اس کے وے رات دن بالکل نشپھل جاتے ہیں .

—مہاویر سوامی

पन्द्रहवीं सदी का माली साम्राज्य—निगर वैली की मुसलिम रियासतों में ऊंची संस्कृति और अरब साहित्य को उन्होंने जन्म दिया; प्राचीन अफ़रीक़ी नगर—घना, जेन्ने, टिम्बकटू, गाओ, कानो और पश्चिमी तटके बहुत से शहर, बेनिन और दूसरे; पूर्वी अफ़रीक़ा के बान्तू लोगों की उन्नति—उन्होंने जो साम्राज्य क़ायम किये (सत्रहवीं सदी का मोनोमोटापा साम्राज्य और दूसरे राज्य); और उनके निर्माण किये हुये आश्चर्यजनक प्राचीन नगर जैसे ज़िम्बाबावे, जिसके खंडहर अब तक हमारी हैरत के सबब हैं, और इन सबके अलावा पश्चिमी अफ़रीकियों और बान्तू लोगों की महान कला, उनकी कांसे की कलाकृतियां प्राचीन यूनानियों और रोमियों द्वारा बनाई हुई अच्छी से अच्छी कला की चीज़ों से टक्कर लेती हैं. इनके अलावा अफ़रीका निवासियों की धर्म से सम्बन्धित कला और लकड़ी की बेजोड़ खुदाई कि जिसका ताल्लुक़ भी धार्मिक अनुष्ठान की चीज़ों से है.

इनके अलावा अफ़रीका की नृत्य कला और अफ़रीक़ा की संगीत कला भी है—नगाड़ा, बांसुरी और हार्प और गायन. यह सब अफ़रीकियों की विरासत में मिली हुई निधि है. इनका उचित मूल्यांकन होना चाहिये और तभी अफ़रीका निवासी दूसरे इनसानों की तुलना में बड़प्पन हासिल करने की कोशिश करेगा. नाच और गानों के साथ सीधी सादी और खुश ज़िन्दगी, जो अफ़रीकियों को एक चमक दमक देती है; उसकी असीम शक्ति और परिश्रम भी उसे शान के साथ जीने की कला सिखाते हैं और अफ़रीकी ज़िन्दगी को अनमोल विरासत देते हैं. इस तरह से अफ़रीका न केवल अपने को लाभ पहुंचायेगा बल्कि मानव समाज की हित साधना करेगा.

प्रायश्चित की ज़रूरत

इनसानों का वह गिरोह जिसने अफ़रीका निवासियों के साथ ज़ुल्म किये हैं आज के अफ़रीकियों के साथ अपने बर्ताव में तब्दीली करके कम से कम आंशिक प्रायश्चित करे और आज उन लोगों को रोक कर जो अफ़रीका निवासियों के साथ अब भी अन्याय और अत्याचार करने की क़सम खाये बैठे हैं अपने पुराने पापों के लिये अफ़रीका निवासियों से क्षमा याचना करे.

जहां अफ़रीका निवासियों की सारी कोशिशें और सारी ज़िन्दगी यूरोप वालों के चुंगल में जकड़कर बेकार नहीं बना दी गई हैं, जैसा कि पश्चिमी अफ़रीका में (जहां अनेकों हमदर्द और दूरन्देश अंग्रेज़ अफ़सरों, शिक्षकों और अन्य लोगों ने उन्हें मदद दी है) अफ़रीका निवासियों ने अपनी आत्मा एकदम नहीं खोई है. लेकिन जहां उपनिवेशवाद, शोषण और रंग भेद के ज़हर ने अफ़रीका निवासियों की

پندرھویں صدی کا مالی سامراج نگر ویلی کی مسلم ریاستوں میں اونچی سنسکرتی اور عرب ساھتیہ کو انہوں نے جنم دیا؛ پراچین افریقہ نگر—گھنا، جلینے، ٹمبکٹو، گاؤ، کانو اور پچھمی تٹ کے بہت سے شہر، بینن اور دوسرے؛ پوربی افریقہ کے بانتو لوگوں کی اُنتی انہوں نے جو سامراجیہ قایم کئے (سترھویں صدی کا مونو موٹاپا سامراجیہ اور دوسرے راجیہ)؛ اور اُن کے نرمان کئے ہوے آسچریہ جنک پراچین نگر جیسے ذیمبابوے، جس کے کھنڈھر اب تک ھماری حیرت کے سبب ھیں اور، اُن سب کے علاوہ پچھمی افریقیوں، اور بانتو لوگوں کی مہان کلا؛ اُن کی کانسے کی کلا کرتیاں پراچین یونانیوں اور رومیوں دوارا بنائی ہوئی اچھی سے اچھی کلا کی چیزوں سے ٹکر لیتی ھیں. ان کے علاوہ افریقہ نواسیوں کی دھرم سے سمبندھت کلا اور لکڑی کی بے جوڑ کھدائی کہ جس کا تعلق بھی دھارمک انوشٹھان کی چیزوں سے ھے.

اِن کے علاوہ افریقہ کی نرتیہ کلا اور افریقہ کی سنگیت کلا بھی ھے—نگاڑا، بانسری اور ھارپ اور گاین. یہ سب افریقیوں کی وراثت میں ملی ہوئی ندھی ھے. اِن کا اُچت مولیانکن ھونا چاھئیے اور تبھی افریقہ نواسی دوسرے انسانوں کی تلنا میں بڑپن حاصل کرنے کی کوشش کرے گا. ناچ اور گانوں کے ساتھ سیدھی سادی اور خوش زندگی جو افریقیوں کو ایک چمک دمک دیتی ھے؛ اُس کی اسیم شکتی اور پرشرم بھی اُسے شان کے ساتھ جینے کی کلا سکھاتے ھیں اور افریقی زندگی کو انمول وراثت دیتے ھیں. اِس طرح سے افریقہ نہ کیول اپنے کو لابھ پہنچائے گا بلکہ مانو سماج کی ھت سادھنا کرے گا.

پرائشچت کی ضرورت

انسانوں کا وہ گروہ جس نے افریقہ نواسیوں کے ساتھ ظلم کئے ھیں. آج کے افریقیوں کے ساتھ اپنے برتاوے میں تبدیلی کر کے کم سے کم آنشک پرائشچت کریں اور آج ان لوگوں کو روک کر جو افریقہ نواسیوں کے ساتھ اب بھی انیائے اور اتیاچار کرنے کی قسم کھائے بیٹھے ھیں. اپنے پرانے پاپوں کے لئے افریقہ نواسیوں سے چھما یاچنا کرے.

جہاں افریقہ نواسیوں کی ساری کوششیں اور ساری زندگی یورپ والوں کے چنگل میں جکڑ کر بیکار نہیں بنا دی گئی ھیں، جیسا کہ پچھمی افریقہ میں (جہاں انیکوں ھمدرد اور دوراندیش انگریز افسروں، شکچھکوں اور انیہ لوگوں نے انہیں مدد دی ھے) افریقہ نواسیوں نے اپنی آتما ایک دم نہیں کھوئی ھے. لیکن جہاں اپنیویش واد شوشن اور رنگ بھید کے زھر نے افریقہ نواسیوں کی

पेशीन गोई कर सकता था कि मध्य और उत्तरी यूरोप के चमड़े से बदन ढकने वाले और नीले रंग से जिस्म रंगने वाले जंगली लोग, जो अपने देवताओं को इनसानों की बलि चढ़ाकर सन्तुष्ट किया करते थे—आज के जर्मन, केल्ट और स्लाव लोग—मौजूदा सभ्यता के अलम बरदार बनेंगे ?

आत्म सम्मान की भावना

जब तक अफ़रीका निवासी विभिन्नता में एकता को साकार करने वाली मानव सभ्यता की क़तार में शामिल न होंगे तब तक स्वर की एकता पैदा न होगी. बहुत सी ऐसी क़ौमें, जिनमें माद्दा है और जिन्होंने बहुत कुछ कर दिखाया है, मानव सभ्यता की समृद्धता और विभिन्नता को अपनी सौग़ात देने से वंचित रहे हैं. इस सिलसिले में उत्तर और दक्खिन अमरीका की बहुत सी क़ौमों के नाम लिये जा सकते हैं. इनमें से कुछ की प्राचीन तहज़ीब याफ़्ता क़ौमों में शुमार की जाती थी. मिसाल के तौर पर मैक्सिको के नाहुआ क़बीलों के लोग (टालटेक, अज़टेक और दूसरे), मिक्सटेक, ज़ेपोटेक, ओटोमी और मेक्सिको की दूसरी क़ौमें और मैक्सिको और गौटेमाला के माया लोग, कोलम्बिया के चिबचास, दक्खिन अमरीका के अन्दीन क्षेत्र के क्वेचुआ और अयमारा, पालीनीशिया के लोग और अमरीका और ओसानिया के दो समूहों के लोग जिन्हें अपने बुज़ुर्गों की कीर्ति की कहानी विरसे में मिली है. मानव सभ्यता को अगर इन जातियों की दिमाग़ी ख़ूबियाँ हासिल होतीं तो उसके कारनामों में चार चाँद लगते. इनमें से बहुत सी क़ौमें या तो मिट गईं या उनकी ख़सूसियतें ख़त्म हो गईं. लेकिन अफ़रीका निवासी अब भी जीवित है और जाग्रत है और अगर मानव सभ्यता के समवेत संगीत में उसका स्वर भी शामिल करना है तो उसे उसका खोया आत्म सम्मान वापस करना होगा. उसे यह महसूस कराना होगा कि उसकी प्राचीन उन्नति कुछ मामूली नहीं थी और अगर उसका अपने अन्दर विश्वास जाग जाय तो अब भी वह मानव सभ्यता की तरक़्क़ी में अपना भी शानदार योगदान दे सकता है.

चलती फिरती तसवीर की तरह हमारी आंखों के सामने से उन साम्राज्यों के नज़ारे घूम जाते हैं जिन्हें अफ़रीका निवासियों ने क़ायम किये थे और जिनकी सभ्यता देश की सांस्कृतिक और आर्थिक परिस्थितियों के अनुकूल थी—नाइजर और सेनेगल नदियों के किनारे घना का साम्राज्य, घना के बाद मन्दिगों या माली साम्राज्य; निगर इलाक़े में सोंगोई, मासी और दूसरे राज्य; ईसाइयों और मुसलमानों से पहले पच्छिमी अफ़रीका की संस्कृति ने उस क्षेत्र में आश्चर्यजनक कला कृतियों को जन्म दिया; चौदहवीं और

پیشین گوئی کر سکتا تھا کہ مدھیہ اور اُتری یورپ کے چمڑے سے بدن ڈھکنے والے اور نیلے رنگ سے جسم رنگنے والے جنگلی لوگ، جو اپنے دیوتاؤں کو انسانوں کی بلی چڑھاکر سنتشٹ کیا کرتے تھے—آج کے جرمن، کیلٹ اور سلاو لوگ موجودہ سبھیتا کے علمبردار بنینگے ؟

آتم سمان کی بھاونا

جب تک افریقہ نواسی وبھنتا میں ایکتا کو ساکار کرنے والی مانو سبھیتا کی قطار میں شامل نہ ہوں گے تب تک سور کی ایکتا پیدا نہ ہوگی۔ بہت سی ایسی قومیں، جن میں مادہ ہے اور جنہوں نے بہت کچھ کر دکھایا ہے، مانو سبھیتا کی سمردھتا اور وبھنتا کو اپنی سوغات دینے سے ونچت رہے ہیں۔ اس سلسلے میں اُتر اور دکھن امریکہ کی بہت سی قوموں کے نام لیے جاسکتے ہیں۔ ان میں سے کچھ کی پراچین تہذیب یافتہ قوموں میں شمار کی جاتی تھی۔ مثال کے طور پر مکسیکو کے ناہوا قبیلوں کے لوگ (ٹالٹیک، ازٹیک اور دوسرے) مکسٹیک، زیپوٹیک اوٹومی اور میکسیکو کی دوسری قومیں اور میکسیکو اور گوٹے مالا کے مایا لوگ، کولمبیا کے چبوچاس، دکھن امریکہ کے اندین چھیتر کے کوئیچوآ اور ایمارا، پالینیشیا کے لوگ اور امریکہ اور اوسانیا کے دو سموہوں کے لوگ جنہیں اپنے بزرگوں کی کیرتی کی کہانی ورثہ میں ملی ہے۔ مانو سبھیتا کو اگر ان جاتیوں کی دماغی خوبیاں حاصل ہوتیں تو اس کے کارناموں میں چارچاند لگتے۔ ان میں سے بہت سی قومیں یا تو مٹ گئیں یا ان کی خصوصیتیں ختم ہوگئیں۔ لیکن افریقہ نواسی اب بھی جیوت ہیں اور جاگرت ہے اور اگر مانو سبھیتا کے سموبت سنگیت میں اس کا سور بھی شامل کرنا ہے تو اسے اس کا کھویا آتم سمان واپس کرنا ہوگا۔ اسے یہ محسوس کرانا ہوگا کہ اس کی پراچین اُنتی کچھ معمولی نہیں تھی اور اگر اس کا اپنے اندر وشواس جاگ جائے تو اب بھی وہ مانو سبھیتا کی ترقی میں اپنا بھی شاندار یوگ دان دے سکتا ہے۔

چلتی پھرتی تصویر کی طرح ہماری آنکھوں کے سامنے سے ان سامراجوں کے نظارے گھوم جاتے ہیں جنہیں افریقہ نواسیوں نے قائم کئے تھے اور جن کی سبھیتا دیش کی سانسکرتک اور آرتھک پرستھتیوں کے انوکول تھی—نائجر اور سینیگل ندیوں کے کنارے گھانا کا سامراج، گھانا کے بعد مندنگوں یا مالی سامراج؛ نگر علاقے میں سنگوئی، ماسی اور دوسرے راج، عیسائیوں اور مسلمانوں سے پہلے پچھمی افریقہ کی سنسکرتی نے اس چھیتر میں آشچریہ جنک کلا کرتیوں کو جنم دیا؛ چودھویں اور

तहज़ीब याफ़्ता क़ौमों में, जिनमें मौजूदा यूरोपियन क़ौमों के पुरखे भी शामिल थे, ज़िन्दा आदमियों की क़ुरबानी का रिवाज था. लेकिन जंगली क़ौमों के मूढ़ विश्वासों के मुताबिक़ मानव बलि उतनी बीभत्स नहीं है जितना धर्म के नाम पर सभ्य और ईसाई यूरोप का मानव बलि का रिवाज. मिसाल के तौर पर रोमन कैथलिकों के 'इन्क्वीज़ीशन' या 'मज़हबी अमल' और शुरू मौजूदा ज़माने और मंझले ज़माने में यूरोप के ज़्यादातर ईसाई मुल्कों में 'डायनों' (?) को ज़िन्दा जलाने का रिवाज था. इसके मुताबिक़ हज़ारों आदमी, जिनका क़ुसूर महज़ इतना था कि वे ईसाई मज़हब की दूसरे शाख़ के मज़हबी अक़ीदों पर विश्वास नहीं करते थे और जिनके ख़िलाफ़ यह इलज़ाम लगाया जाता था कि जादू के बल पर ये असली ईसाइयों को सही रास्ते से बहकाकर झूठे मज़हबी रास्ते पर ले जाने की कोशिश करते हैं, धीमी धीमी आग पर ज़िन्दा जला दिया जाता था. और यह सब मानव इतिहास की उन सदियों के दौरान में हो रहा था जिन में कहा जाता है कि इनसान ने तरक़्क़ी की बहुत सी मंज़िलें तय कीं. जो लोग मज़हबी मामलों और सामाजिक मामलों में अफ़रीका निवासियों की बर्बरता और हैवानियत पर लानत भेजते हैं वे उन लोगों में से हैं जिन के मुताल्लिक़ हज़रत ईसा ने कहा है कि इन्हें दूसरे की आंखों का तिल दिखाई देता है मगर अपनी आंखों का लट्ठा नहीं दिखाई देता.

लेकिन युग-भावना आख़िरकार काम कर रही है. आधुनिक युग के मानव इतिहास की सबसे ख़ास घटना यह है कि अफ़रीका निवासी भी अब सोते से जाग गया है. वह अपनी नींद की ख़ुमारी दूर कर रहा है. वह जातियों और देशों की श्रेणी में अपनी मुनासिब जगह हासिल करने के लिये बेचैन हो रहा है. उसने यह सबक़ पश्चिम के लोगों से सीखा है. इसमें कोई शक नहीं कि यह सचाई अनुग्रह के साथ क़ुबूल करनी पड़ेगी कि यद्यपि पश्चिम के ज़्यादातर लोग अफ़रीका वालों को लूटने, उनका शोषण करने और बदनाम करने गये, लेकिन उन्हीं पश्चिम वालों में अफ़रीका वालों को अपने कुछ सच्चे दोस्त और हित चिन्तक भी मिले. सदियों के अत्याचारों, शोषण और ग़लत फ़हमियों के बन्धनों से मुक्त होकर अफ़रीका निवासी इस हालत में आयेगा कि वह मानव उन्नति में अपना भी उचित योगदान दे. क़ुदरत ने उसे जो ख़ूबियाँ अता की हैं उनके ज़रिये वह इस परिस्थिति में होगा कि वह मानव समाज को सुखी बना सके. कोई नहीं जानता कि क़ुदरत, क़िस्मत या ईश्वर ने हमारे लिये क्या योजना बना रखी है. ढाई हज़ार बरस पहले या दो हज़ार बरस पहले सुसभ्य यूनान या रोम में कौन इस बात पर विश्वास कर सकता था या

تہذیب یافتہ قوموں میں جن میں موجودہ یوروپین قوموں کے پرکھے بھی شامل تھے' زندہ آدمیوں کی قربانی کا رواج تھا. لیکن جنگلی قوموں کے موڑھ وشواسوں کے مطابق مانوبلی اتنی ویبھتس نہیں ہے جتنا دھرم کے نام پر سبھیہ اور عیسائی یورپ کا مانو بلی کا رواج . مثال کے طور پر رومن کیتھلکوں کے 'انکوزیشن' یا مذہبی عمل' اور شروع موجودہ زمانے اور منجھلے زمانے میں یورپ کے زیادہ تر عیسائی ملکوں میں 'ڈائنوں' (؟) کو زندہ جلانے کا رواج تھا . اِس کے مطابق ہزاروں آدمی' جن کا قصور محض اتنا تھا کہ وے عیسائی مذہب کی دوسرے شاخ کے مذہبی عقیدوں پر وشواس نہیں کرتے تھے . اور جن کے خلاف یہ اِلزام لگایا جاتا تھا کہ جادو کے بل پر یہ اصلی عیسائیوں کو صحیح راستے سے وہ بہکاکر جھوٹے مذہبی راستے پر لیجانے کی کوشش کرتے ہیں' دھیمی دھیمی آگ پر زندہ جلا دیا جاتا تھا . اور یہ سب مانو ایتہاس کی اُن صدیوں کے دوران میں ہو رہا تھا . جن میں کہا جاتا ہے کہ انسان نے ترقی کی بہت سی منزلیں طے کیں . جو لوگ مذہبی معاملوں اور سماجک معاملو میں افریقہ نویسیوں کی بربرتا اور حیوانیت پر لعنت بھیجتے ہیں وے اُن لوگوں میں سے ہیں جن کے متعلق حضرت عیسیٰ نے کہا ہے کہ اُنہیں دوسرے کی آنکھوں کا تل دکھائی دیتا ہے . مگر اپنی آنکھوں کا لٹھا نہیں دکھائی دیتا .

لیکن یگ بھاونا آخرکار کام کررہی ہے . آدھونک یگ کے مانو اِتہاس کی سب سے خاص گھٹنا یہ ہے کہ افریقہ نواسی بھی اب سوتے سے جاگ گیا ہے . وہ اپنے نیند کی خماری دور کررہا ہے . وہ جاتیوں اور دیشوں کی شرینی میں اپنی مناسب جگہ حاصل کرنے کے لئے بیچین ہو رہا ہے . اس نے یہ سبق پچھم کے لوگوں سے سیکھا ہے . اس میں کوئی شک نہیں کہ سچائی انوگرہ کے ساتھ قبول کرنی پڑے گی کہ حالانکہ پچھم کے زیادہ تر لوگ افریقہ والوں کو لوٹنے اور اس کا شوشن کرنے اور بدنام کرنے گئے' لیکن اُنھیں پچھم والوں میں افریقہ والوں کو اپنے کچھ سچے دوست اور ہت چنتک بھی ملے صدیوں کے اتیاچاروں' شوشن اور غلط فہمیوں کے بندھنوں سے مکت ہوکر افریقہ نواسی اس حالت میں آئیگا کہ وہ مانو اُنتی میں اپنا بھی اُچت یوگ دان دے . قدرت نے اُسے جو خوبیاں عطا کی ہیں اُن کے ذریعے وہ اِس پرستھتی میں ہوگا کہ وہ مانو سماج کو سکھی بنا سکے . کوئی نہیں جانتا کہ قدرت' قسمت یا ایشور نے ہمارے لئے کیا یوجنا بنا رکھی ہے . ڈھائی ہزار برس پہلے یا دو ہزار برس پہلے سوسبھیہ یونان یا روم میں کون اِس بات پر وشواس کر سکتا تھا یا

साहित्य को भी उसने अपनी स्वाभाविकता सादगी से प्रभावित किया है. सभ्यता के माप दण्ड में वह आदिमयुग और सभ्य युग के चौराहे पर खड़ा है. आदिवासी जीवन के रहस्यों से उसका सम्पर्क है, धार्मिक विश्वास का उसके पास बाहुल्य है. इस सबसे वह साहित्य को धनी बनाता है.

उसे अवसर नहीं मिला

अफ़रीका के काले आदमियों को अपनी शक्ति को पहचानने और तरक़्क़ी की ऊंची मंज़िल तक पहुंचने का अब तक मौक़ा नहीं मिला. अफ़रीका का अब तक जो भी असर पड़ा है वह नुमाया तौर पर अमरीका में उसकी ग़ुलाम आबादी के सबब पड़ा. फिर भी अपनी कला में—ख़ास तौर पर मूर्तिकला की अद्भुत परम्पराओं में, जिनका सम्बन्ध उसकी पशु पूजा के विश्वास के साथ है—लकड़ी की कलापूर्ण खुदाइयों में, हाथी दांत की कला में, पत्थर की मूर्तियों के गढ़ने में कांसे की मूर्तियां बनाने में, मिट्टी के माडेल तैयार करने में उसने प्रसिद्धि पाई है. अफ़रीका के भीतरी मध्य भाग में ठेठ अफ़रीकी लोगों में गुफाओं और चट्टानों पर उसकी प्रागैतिहासिक चित्र कला में, उत्तर और दक्षिण में, उसके सादगी से भरी कच्ची झोंपड़ियों के निर्माण में अफ़रीका निवासी ने आज की दुनिया के लिये भी कला की एक नई उदार शैली, और रेखाओं का सुन्दर इस्तेमाल करने की कला दी है. पिछली सदियों में नील के पठार में उसने जिस उन्नत निर्माण कला का प्रदर्शन किया है उससे वह अपनी कला की शक्ति को पहचानने लगा है.

अफ़रीकी मानव परिवार की सबसे अधिक तिरस्कृत सन्तान है. उसके साथ बेहद बदसलूकियां की गई हैं. अब भी ऐसे कुछ लोग हैं जो उसे ग़रीबी, दासता और अज्ञान के बन्धनों में बांधे रखना चाहते हैं जिससे एक ओर तो वह उसका लहू बैल की तरह शोषण कर सकें और दूसरी ओर अपनी आत्मा और अपने विवेक को भी साफ़ रख सकें. गृहस्थ और सामाजिक जीवन के दायरे में अफ़रीका में जो पारस्परिक सहयोग और मधुर एकरसता है (अफ़रीकी महिलायें मेहनती और स्वामिभक्त होती हैं और उनमें आदि जीवन की एक सादगी होती है और वे अफ़रीका के गृहस्थ जीवन की बुनियाद होती हैं) उसे भी समझने की कोशिश नहीं की गई और चूंकि पश्चिमी सामाजिक जीवन के तरीक़ों से अफ़रीकी सामाजिक जीवन के तरीक़े भिन्न हैं इसलिये उसकी सरापा निन्दा की जाती है और उसे 'मूढ़ धर्मियों की बर्बर चालें' समझा जाता है.

यह सही है कि अफ़रीका में कुछ क़बीलों में मानव बलिदान उनके धार्मिक विश्वास का अङ्ग समझा जाता था. लेकिन यह इनसानों की बलि चढ़ाने का रिवाज महज़ अफ़रीकनों की ही विशेषता नहीं थी. दुनिया की ज़्यादातर

ساہتیہ کو بھی اس نے اپنی سوابھاوک سادگی سے پربھاوت کیا ہے. سبھیتا کے ماپ دنڈ میں وہ آدیگ اور سبھیہ یگ کے چوراہے پر کھڑا ہے. آدی واسی جیون کے رہسیوں سے اس کا سمپرک ہے، دھارمک وشواس کا اس کے پاس باہولیہ ہے. اس سب سے وہ ساہتیہ کو دھنی بناتا ہے.

اسے اوسر نہیں ملا

افریقہ کے کالے آدمیوں کو اپنی شکتی کو پہچاننے اور ترقی کی اونچی منزل تک پہنچنے کا اب تک موقع نہیں ملا. افریقہ کا اب تک جو بھی اثر پڑا ہے وہ نمایاں طور پر امریکہ میں اس کی غلام آبادی کے سبب پڑا. پھر بھی اپنی کلا میں— خاص طور پر مورتی کلا کی ادبھت پرمپراؤں میں، جن کا سمبندھ اس کی پشو پوجا کے وشواس کے ساتھ ہے. لکڑی کی کلا پورن کھدائیوں میں، ہاتھی دانت کی کلا میں، پتھر کی مورتیوں کے گڑھنے میں کانسے کی مورتیاں بنانے میں، مٹی کے ماڈل تیار کرنے میں اس نے پرسدھی پائی ہے. افریقہ کے بھیتری مدھیہ بھاگ میں ٹھیٹھ افریقی لوگوں میں گپھاؤں اور چٹانوں پر اس کی پراگیتہاسک چتر کلا میں، اتر اور دکشن میں، اس کے سادگی سے بھری کچی جھونپڑیوں کے نرمان میں افریقہ نواسی نے آج کی دنیا کے لئے بھی کلا کی ایک نئی ادار شیلی اور ریکھاؤں کا سندر استعمال کرنے کی کلا دی ہے. پچھلی صدیوں میں نیل کے پٹھار میں اس نے جس انت نرمان کلا کا پردرشن کیا ہے اس سے وہ اپنی کلا کی شکتی کو پہچاننے لگا ہے.

افریقہ کی مانو پریوار کی سب سے ادھک ترسکرت سنتان ہے. اس کے ساتھ بےحد بدسلوکیاں کی گئی ہیں. اب بھی ایسے کچھ لوگ ہیں جو اسے غریبی، داستا اور اگیان کے بندھنوں میں باندھے رکھنا چاہتے ہیں جس سے ایک اور تو وہ اس کا لہو بیل کی طرح شوشن کر سکیں اور دوسری اور اپنی آتما اور اپنے وویک کو بھی صاف رکھ سکیں. گرہستھ اور سماجک جیون کے دائرے میں افریقہ میں جو پارسپرک سہیوگ اور مدھر ایکرستا ہے. (افریقی مہیلائیں محنتی اور سوامی بھکت ہوتی ہیں اور ان میں آدی جیون کی ایک سادگی ہوتی ہے اور وے افریقہ کے گرہستھ جیون کی بنیاد ہوتی ہیں) اسے بھی سمجھنے کی کوشش نہیں کی گئی اور چونکہ پچھمی سماجک جیون کے طریقوں سے افریقی سماجک جیون کے طریقے بھن ہیں اس لئے اس کی سراپا نندا کی جاتی ہے اور افریقی مذہب کی بھی نندا کی جاتی ہے اور 'اسے موڑھ دھارمیوں کی بربر چالیں' سمجھا جاتا ہے.

یہ صحیح ہے کہ افریقہ میں کچھ قبیلوں میں مانو بلیدان ان کے دھارمک وشواس کا انگ سمجھا جاتا تھا. لیکن یہ انسانوں کی بلی چڑھانے کا رواج محض افریقنوں کی ہی وشیشتا نہیں تھی. دنیا کی زیادہ تر

गये. बाद में वे या तो उन जातियों में रल मिल गये जो उनके बाद आई या मिट गये और या दक्खिन भारत या अन्दमान के टापुओं में छोटे छोटे क़बीलों के रूप में अब भी बाक़ी हैं. चूंकि ये लोग इओलिथिक या उस जमाने के थे जब खाना इकट्ठा करने की तलाश में लोग घूमते थे इसलिये इनकी सभ्यता के कोई निशान बाक़ी नहीं रह गये. लेकिन ऐसा ख़याल किया जाता है कि उनके कुछ मजहबी अक़ीदे और आचार विचार अब भी उन लोगों के मजहबी विश्वासों और धार्मिक पूजाओं की बुनियादी तह में पाये जाते हैं जो उनके बाद भारत आये और जिनका अपने से पहले आये हुये अफ़रीक़ी निग्रो लोगों से सम्बन्ध था.

अफ़रीका और दुनिया

दो हज़ार बरस पहले अचरज से भरकर रोमन कहा करते थे—'अफ़रीक़ा में रहती है हमेशा कुछ न कुछ नवीनता.' प्राचीन सभ्य क़ौमों के साथ साथ रोमन भी अफ़रीक़ा की विशालता, प्राचीनता, अजनबीयत, और प्राग् ऐतिहासिकता से आकर्षित हुये. मिस्र अफ़रीक़ा का ही हिस्सा है और मिस्र के दक्खिन में नूबिया है और काला हिन्टरलैन्ड है जो अब तक यूरोपियनों के लिये एक अज्ञात भू-भाग है और जिससे एशिया की प्राचीन क़ौमों का भी परिचय नहीं था; हालांकि कारथेजी हन्नो ने हज़रत ईसा से छै सौ बरस पहले अटलांटिक से गाइना तक समूचे पच्छिमी अफ़रीक़ा के तट की खोज की थी. यह भी कहा जाता है कि मिस्री फेरोए (फ़रऊन) नेचो ने फ़िनीशी खोजियों को ईसा से सात सदी पहले अफ़रीक़ा की प्रदक्षिणा के लिये भेजा था जो लाल सागर के पूर्वी किनारे से रवाना हुये और पूरे अफरीक़ा की परिक्रमा करके जिब्राल्टर और उत्तर अफरीक़ा से होते हुये मिस्र लौटे.

अफरीक़ा और उसके निग्रो निवासियों का जितना यूरोपियनों और कुछ एशियाइयों ने शोषण किया उतना दुनिया के किसी भी दूसरे हिस्से या उसके निवासियों का शोषण नहीं हुआ. और इसी शोषण के जरिये और यह शोषण हृदयहीन शोषण था और जिसने यह दिखा दिया कि गोरे लोग, यूरोप निवासी और पश्चिम एशिया के निवासी दोनों, काले आदमी की बनिस्बत कहीं ज्यादा असभ्य और जंगली हैं. अफ़रीका का यह निवासी अमरीका और दूसरे देशों में ग़ुलाम बनाकर बेचा गया. ग़ुलाम बनकर जहां-जहां वह गया वहां अपनी हड्डी तोड़ मेहनत के जरिये उसने अपनी असहायता में भी मानवता की सेवा की. उसने दूसरे देशों की पैदावार और धन को बढ़ाया. उसने अपने संगीत और नृत्य को आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय रूप देकर कला के क्षेत्र में नई धारा बहाई. अब मूर्तिकला और चित्र कला के क्षेत्र में भी हाल में उसकी देन शुरू हुई है. आधुनिक युग के

گئے. بعد میں وے یا تو اِن جاتیوں میں رل مل گئے جو اُن کے بعد آئیں یا مٹ گئے اور یا دکھن بھارت یا اندمان کے ٹاپوؤں میں چھوٹے چھوٹے قبیلوں کے روپ میں اب بھی باقی ھیں . چونکہ یہ لوگ اِیولتھک یا اُس زمانے کے تھے جب کھانا اکٹھا کرنے کی تلاش میں لوگ گھومتے تھے . اِس لئے اُن کی سبھیتا کے کوئی نشان باقی نہیں رہ گئے .

لیکن ایسا خیال کیا جاتا ھے کہ اُن کے کچھ مذھبی عقیدے اور آچار وچار اب بھی اُن لوگوں کے مذھبی وشواسوں اور دھارمک پوجاؤں کی بنیادی تہ میں پائے جاتے ھیں جو اِن کے بعد بھارت آئے اور جن کا اپنے سے پہلے آئے ھوئے افریکی نیگرو لوگوں سے سمبندھ تھا .

افریقہ اور دنیا

دو ھزار برس پہلے اچرج سے بھر کر رومن کہا کرتے تھے—'افریقہ میں رھتی ھے ھمیشہ کچھ نہ کچھ نوینتا'. پراچین سبھیہ قوموں کے ساتھ ساتھ رومن افریقہ کی وشالتا' پراچینتا' اجنبیت' اور پراگ ایتہاسکتا سے آکرشت ھوئے . مصر افریقہ کا ھی حصہ ھے اور مصر کے دکھن میں نوبیا ھے اور کالا ھنٹرلینڈ ھے جواب تک یوروپینوں کے لئے ایک اگیات بھوبھاگ ھے اور جن سے ایشیا کی پراچین قوموں کا بھی پریچے نہیں تھا؛ حالانکہ کارتھیجی ھنو نے حضرت عیسیٰ سے چھ برس پہلے اٹلانٹک سے گائنا تک سموچے پچھمی افریقہ کے تٹ کی کھوج کی تھی . یہ بھی کہا جاتا ھے کہ مصری پیروئے (فرعان) نیچو نے فنشی کھوجیوں کو عیسیٰ سے سات صدی پہلے افریقہ کی پردکشن کے لئے بھیجا تھا جو لال ساگر کے پوربی کنارے سے روانہ ھوئے . اور پورے افریقہ کی پریکرما کرکے جیبرالٹر اور اُتر افریقہ سے ھوتے ھوئے مصر لوٹے .

افریقہ اور اُس کے نیگرو نواسیوں کا جتنا یوروپینوں اور کچھ ایشیائیوں نے شوشن کیا اُتنا دنیا کے کسی بھی دوسرے حصے یا اُس نواسیوں کا شوشن نہیں ھوا . اور اسی شوشن کے ذریعہ اور یہ شوشن ھردئےھین شوشن تھا . اور جس نے یہ دکھا دیا کہ گورے لوگ' یورپ نواسی اور پچھمی ایشیا کے نواسی دونوں' کالے آدمی کی بہ نسبت کہیں زیادہ اسبھیہ اور جنگلی ھیں ' افریقہ کا یہ نواسی امریکہ اور دوسرے دیشوں میں غلام بنا کر بیچا گیا . غلام بن کر جہاں جہاں وہ گیا وھاں اپنی ھڈی توڑ محنت کے ذریعہ اُس نے اپنی اسہائتا میں بھی مانوتا کی سیوا کی . اُس نے دوسرے دیشوں کی پیداوار اور دھن کو بڑھایا . اُس نے اپنے سنگیت اور نرتیہ کو آدھونک انتر راشٹریہ روپ دے کر کلا کے چھیتر میں نئی دھارا بہائی . مورتی کلا اور چترکلا کے چھیتر میں بھی حال میں اُس کی دین شروع ھوئی ھیں . آدھونک یگ کے

मिशनरी जो इस 'अंधेरे महाद्वीप' को रोशन करने गये थे समझते थे कि अपने दक़ियानूसी मजहबी विचारों, और अपने बर्बर रीति रिवाजों के सबब अफ़रीक़ी अज्ञान और मूढ़ाचारों के अन्धकार में ग़ोता खा रहा है, और जैसा कि ये मिशनरी समझते हैं, ईसू ख़ीस्त का मजहब ही उसका उद्धार कर सकता है. अफ़रीक़नों की तरफ़ इसलाम के प्रचारकों—अरबों, बर्बरों या नौ मुसलिम अफ़रीक़ियों का, रवय्या भी यही था.

अफ़रीक़ा का रहस्य

ज़माने के नये दौर का यह तक़ाज़ा है कि हम अफ़रीक़ा के तरफ़ अपने रवय्ये में तब्दीली करें. मिसाल के तौर पर अफ़रीक़ा के ख़ास फूल पौधों को लें. कुछ ख़ास तरह के फूल-पौधे और जानवर, जो दुनिया में और कहीं नहीं मिलते और जिनका जनम अफ़रीक़ा की ही सरज़मीन पर हुआ, अब तक अफ़रीक़ा में मिलते हैं. और इसी वजह से अफ़रीक़ा, जहां की सरज़मीन में क़ुदरत ने अपना रूप बिखेरा है, नवीनता और सतत् दिलचस्पी का केन्द्र है. वहां के पेड़ और पौधे भी अजीब क़िस्म के हैं—तेलिया खजूर 'बाओबाब', कोलानट, गोंद के पौधे—इनके अलावा कुछ ऐसे पेड़ पौधे जो उस ज़माने से पहले के हैं जब धरती के भीतर से ज्वालामुखी फूटी थी और जलते हुये लावा के ढेरों ने ज़मीन की सतह के ऊपर के सब पेड़ पौधों को बरबाद कर दिया था. अफ़रीका के हाथी और गेंडे, जल-हाथी (हिप्पोपोटामस), ज़िराफ़, ज़ेबरा, ओकापी, क्वागा, ग्नू, शेर बबर, इन्सानों की तरह के भीमकाय बन्दर, गोरिल्ला और शिम्पेंजी अफ़रीक़ा की विशेषता हैं. इनके अलावा ख़ुद अफ़रीक़ा का निवासी—वहां का मानव; उसकी जिस्मानी और दिमाग़ी विशेषतायें—काला रंग, शक्तिशाली और उद्योगी, हंसमुख और सादगी की मूरत और क़ुदरत के साथ एकरस—ये उसकी ख़ासियतें हैं जो उसे मानवों की दुनिया में एक ख़ास जगह देती हैं. जो लोग उसे क़रीब से देखते हैं उनके लिये वह पसन्द और प्यार की वस्तु है.

निग्रो या अफ़रीक़ा का काला आदमी इन्सानों के तीन गिरोहों में से एक है. दूसरे दो गिरोह हैं—गोरे या कोह-क़ाफ़ी (जिनमें गेहुंये रंग की जातियां भी शामिल हैं) और पीले या मंगोली (जिनमें अमरीका के रेड इण्डियन जो पीली जातियों ही की शाख़ हैं) दुनिया में जब इनसानी नस्लों की शुरुआत हुई उस समय गोरी जातियों के इनसानों के विकास क्रम में, कहा जाता है कि, काली जातियों के ख़ून के मिश्रण ने तेज़ ख़मीर का काम किया.

जैसा कि इनसानी नस्लों की विद्या के जानकार विद्वानों ने पता लगाया है हमारे देश में ऐतिहासिक युग से पहले अफ़रीक़ी निग्रो आये और देश के एक बड़े भाग में बस

مشنری جو اس اندھیرے 'مہادیپ' کو روشن کرنے گئے تھے سمجھتے تھے کہ اپنے دقیانوسی مذہبی وچاروں' اور اپنے بربریت رواجوں کے سبب افریقی اگیان اور موڑھا چاروں کے اندھکار میں غوطہ کھا رہا ہے' اور جیسا کہ یہ مشنری سمجھتے ہیں' عیسو کھرسیت کا مذہب ہی اس کا اُدھار کر سکتا ہے۔ افریقیوں کی طرف اسلام کے پرچارکوں—عربوں' بربروں یا نو مسلم افریکیوں کا' رویہ بھی یہی تھا۔

افریقہ کا رہسیہ

زمانہ کے نئے دور کا یہ تقاضہ ہے کہ ہم افریقہ کے طرف اپنے رویئے میں تبدیلی کریں۔ مثال کے طور پر افریقہ کے خاص پھول پودھوں کو لیں۔ کچھ خاص طرح کے پھول پودھے اور جانور' جو دنیا میں اور کہیں نہیں ملتے۔ اور جن کا جنم افریقہ کی ہی سر زمین پر ہوا' اب تک افریقہ میں ملتے ہیں۔ اور اِسی وجہ سے افریقہ' جہاں کی سرزمین میں قدرت نے اپنا روپ بکھیرا ہے' نوینتا اور ستت دلچسپی کا کیندر ہے۔ وہاں کے پیڑ اور پودھے بھی عجیب قسم کے ہیں۔ تیلیا کھجور 'باؤباب' کولانٹ' گوند کے پودھے—اِن کے علاوہ کچھ ایسے پیڑ پودھے جو اِس زمانے سے پہلے کے ہیں جب دھرتی کے بھیتر سے جوالامکھی پھوٹی تھی اور جلتے ہوئے لاوا کے ڈھیروں نے زمین کی سطح کے اوپر کے سب پیڑ پودھوں کو برباد کر دیا تھا۔ افریقہ کے ہاتھی اور گینڈے' جل ہاتھی (ہپوپوٹامس) جراف' زیبرا' اوکاپی' کواگا' گنو' شیر ببر' انسانوں کی طرح کے بھیم کایہ بندر گوریلا او رشمپنزی افریقہ کی وشیشتا ہیں۔ اِن کے علاوہ خود افریقہ کا نواسی—وہاں کا مانو؛ اس کی جسمانی اور دماغی وشیشتائیں—کالا رنگ' شکتی شالی اور اُدیوگی' ہنس مکھ اور سادگی کی مورت اور قدرت کے ساتھ ایک رس—یہ اُس کی خاصیتیں ہیں جو اسے مانووں کی دنیا میں ایک خاص جگہ دیتی ہیں۔ جو لوگ اسے قریب سے دیکھتے ہیں ان کے لئے وہ پسند اور پیار کی وستو ہے۔

نیگرو یا افریقہ کا کالا آدمی انسانوں کے تین گروہوں میں سے ایک ہے۔ دوسرے دو گروہ ہیں—گورے یا کوہ کافی (جن میں گیہونے رنگ کی جاتیاں بھی شامل ہیں) اور پیلے یا منگولی (جن میں امریکہ کے ریڈ انڈین جو پیلی جاتیوں ہی کی شاخ ہیں)۔ دنیا میں جب انسانی نسلوں کی شروعات ہوئی اُس سمئے گوری جاتیوں کے انسانوں کے وکاس کرم میں' کہا جاتا ہے کہ' کالی جاتیوں کے خون کے مشرن نے تیز خمیرا کا کام کیا۔

جیسا کہ انسانی نسلوں کی ودیا کے جانکار ودوانوں نے پتہ لگایا ہے۔ ہمارے دیش میں ایتہاسک یگ سے پہلے افریقی نیگرو آئے اور دیش کے ایک بڑے بھاگ میں بس

अफ़रीक़ा

डाक्टर सुनीति कुमार चैटरजी एम. ए., डी. लिट.

[लेखक कलकत्ता यूनिवर्सिटी के कम्पेरिटेव फ़ाइलालाजी के प्रोफ़ेसर, एशियाटिक सोसाइटी के अध्यक्ष, और वेस्ट बंगाल लेजिस्लेटिव कौन्सिल के सभापति हैं. यह लेख रामकृष्ण मिशन इन्स्टिट्यूट आफ़ कल्चर में दिये हुये उनके भाषण—'पच्छिमी अफ़रीक़ा के लोग और उनकी संस्कृति' पर आधारित है. मूल लेख अंगरेज़ी में था. नीचे कविता की लाइनों का अनुवाद लेखक का किया हुआ है.]

❀ ❀ ❀

आंधारे ते भय करिना—
आंधार आमि बासि भालो.
आंधार देखले मने पड़े,
श्यामा मा मोर एमनि कालो.
भयेर आकार देखले परे,
डाकि आमार श्यामा मा रे,
आंधार माझे (भयेर माझे) देखते जे पाइ
मायेर राङ्गा पायेर आलो. *

अफ़रीक़ा को 'श्याम महाद्वीप' कहा गया है. अभी थोड़े समय पहले तक यूरोप और एशिया के लोगों के लिये वह एक अंधेरा और अज्ञात महादेश था लेकिन यूरोपियन लोगों की जिज्ञासा और अरबों और यूरोपियनों के फैलाव और शोषण की भावना की बदौलत अफ़रीक़ा का कोना कोना घनिष्ट परिचय की और रोशनी से जगमग कर रहा है. अफ़रीक़ा को 'काला' भी कहा जाता था क्योंकि वहां के निवासी (बाद के अरब हमलावरों और उत्तर के हमाटिक लोगों को छोड़ कर) काले हैं—गहरे काले रंग से लेकर हलके काले रंग के—जिनकी अपनी ख़ूबसूरती है और जिसकी क़द्र बाहर के लोग नहीं कर पाते. ज़्यादातर क्रिस्तानी

---

*मैं अंधेरे से नहीं डरता—
मैं अंधेरे को प्यार करता हूं.
अंधेरा देखते ही मन में आता है,
मेरी मां काली ! इसी तरह सांवले रंग की हैं.
डर की शक्ल देखने के बाद,
पुकारता हूं 'ओ मा काली !'
अंधेरे के बीच में, डर के बीच में देखता हूं,
मां के पैरों के महावर का प्रकाश.

افریقہ

ڈاکٹر سونیت کمار چٹر جی ایم . اے . ڈی . لٹ

[لیکھک کلکتہ یونیورسٹی کے کمپریٹیو فائیلالجی کے پروفیسر ایشیاٹک سوسائٹی کے ادھیکش' ویسٹ بنگال لجسلیٹیو کونسل کے سبھاپتی ھیں . یہ لیکھ رام کرشن مشن انسٹیٹیوٹ آف کلچر میں دئے ھوئے ان کے بھاشن—'پچھمی افریقہ کے لوگ اور ان کی سنسکرتی' پر آدھارت ھے . مول لیکھ انگریزی میں تھا . نیچے کویتا کی لائینوں کا انوواد خود لیکھک کا کیا ھوا ھے .]

❀ ❀ ❀

آں دھارے تے بھئے کرینا—
آں دھار آمی باسی بھالو .
آں دھار دیکھ لے منے پڑے'
شیاماماں مور ایمنی کالو .
بھیئر آکار دیکھ لے پرے'
ڈاکی آمار شیاما مارے'
آں دھار ماجھے (بھیر ماجھے) دیکھتے جے پائی
مائیر رانگا پائیر آلو . *

افریقہ کو 'شیام مہادیپ' کہا گیا ھے . ابھی تھوڑے سمے پہلے تک یورپ اور ایشیا کے لوگوں کے لئے وہ ایک اندھیرا اور اگیات مہادیش تھا لیکن یورپین لوگوں کی جگیاسا اور عربوں اور یوروپینوں کے پھیلاو اور شوشن کی بھاونا کی بدولت افریقہ کا کونہ کونہ گھنشٹ پرچیہ کی روشنی سے جگمگ کررھا ھے . افریقہ کو 'کالا' بھی کہا جاتا تھا کیونکہ وھاں کے نواسی (بعد کے عرب حملہ آوروں اور اُتر کے ھماٹک لوگوں کو چھوڑکر) کالے ھیں—گہرے کالے رنگ سے لیکر ھلکے کالے رنگ کے—جن کی اپنی خوبصورتی ھے جس کی قدر باھر کے لوگ نہیں کرپاتے. زیادہ تر کرستانی

---

*میں اندھیرے سے نہیں ڈرتا—
میں اندھیرے سے پیار کرتا ھوں .
اندھیرا دیکھتے ھی من میں آتا ھے'
میری ماں کالی ! اسی طرح سانولے رنگ کی ھیں'
ڈر کی شکل دیکھنے کے بعد'
پکارتا ھوں 'او ماں کالی !'
اندھیرے کے بیچ میں' ڈر کے بیچ میں دیکھتا ھوں .
ماں کے پیروں کے مہاور کا پرکاش .

चीन के पुराने फ़िलासफ़र व्यक्तिवाद को "यांग चू" कहा करते थे जिसके मानी हैं 'हर एक अपने को सम्हाले' और समाजवाद को कहा करते थे "मिहतेह" यानी सबसे एक बराबर प्रेम करो. इन दोनों असूलों को मिलाकर ही सच्चा समाज संगठन हो सकता है, यह दोनों मिलाकर ही धरती पर मज़बूत और टिकाऊ "अमन" क़ायम कर सकते हैं, क्योंकि इन से ही लोगों में एक दूसरे के भले की इच्छा जाग सकती है. इस तरह के अल्लाह के बंदे ही लोगों में एक दूसरे के भले की इच्छा पैदा कर सकते हैं. इसके लिए उन्हें दो बातें करनी होंगी. पहली यह कि सब अलग अलग धर्मों की बुनियादी एकता और उनकी बुनियादी सच्चाइयों को सामने लाकर उनके मानने वालों में एक दूसरे के साथ प्रेम और एक दूसरे का आदर पैदा करें. और दूसरी यह है कि सब धर्मों के निचोड़ के रूप में दुनिया को यह बतावें कि सच्चे समाज संगठन के असूल क्या होने चाहिएँ जिन पर चलकर सब लोगों की जायज़ ज़रूरतें और जायज़ इच्छाएं पूरी हो सकें, हर एक को ठीक ठीक काम और ठीक ठीक मज़दूरी मिल सके, हर काम के लिए ठीक ठीक आदमी मिल सकें, और हमारे समाज की यह इतनी बड़ी मशीन इस तरह चल सके कि किसी के ऊपर मुनासिब से ज्यादा बोझ न हो, कोई भूखा, नंगा या बिना घर के न रहे और सबका सब तरह भला और सब की तरक़्क़ी हो.

ऐ दुनिया के साइंसदानों! सब से भारी ज़िम्मेवारी तुम्हारे ऊपर है! तुम ही ज्ञान का पता लगाते हो और उसे फैलाते हो. वह ज्ञान दुनिया के भले के लिए काम में आना चाहिए. लेकिन इस समय वह दुनिया के बुरे के लिए काम में लाया जा रहा है! इसलिए अपनी माद्दी साइंस को रूहानी साइंस से रोशन करो. अपनी साइंस के साथ परोपकार की पक्की भावना को मिला दो! सब मिल जाओ! लोगों को दिखला दो कि समाज संगठन का ठीक तरीक़ा क्या हो सकता है. तुमने अगर अपना यह फ़र्ज़ पूरा न किया तो मानव समाज मिट सकता है! और यदि तुमने अपना यह फ़र्ज़ पूरा कर लिया तो मानव समाज बच सकता है, जी सकता है, और सब शांति और सुख के साथ रह सकते हैं.

چین کے پرانے فلسفر ویکتی واد کو "یانگ چو" کہا کرتے تھے جس کے معنی ہیں' ہر ایک اپنے کو سنبھالے' اور سماج واد کو کہا کرتے تھے "مہہ تیہ" یعنی سب سے ایک برابر پریم کرو . ان دونوں اصولوں کو ملاکر ہی سچا سماج سنگٹھن ہوسکتا ہے' یہ دونوں مل کر ہی دھرتی پر مضبوط اور ٹکاؤ "امن" قائم کرسکتے ہیں' کیونکہ ان سے ہی لوگوں میں ایک دوسرے کے بھلے کی اچھا جاگ سکتی ہے . اس طرح کے اللہ کے بندے ہی لوگوں میں ایک دوسرے کے بھلے کی اچھا پیدا کرسکتے ہیں . اس کے لئے انہیں دو باتیں کرنی ہونگی . پہلی یہ کہ سب الگ الگ دھرموں کی بنیادی ایکتا اور ان کی بنیادی سچائیوں کو سامنے لاکر ان کے ماننے والوں میں ایک دوسرے کے ساتھ پریم اور ایک دوسرے کا آدر پیدا کریں . اور دوسری یہ ہے کہ سب دھرموں کے نچوڑ کے روپ میں دنیا کو یہ بتاویں کہ سچے سماج سنگٹھن کے اصول کیا ہونے چاہئیں جن پر چل کر سب لوگوں کی جائز ضرورتیں اور جائز اچھائیں پوری ہوسکیں' ہر ایک کو ٹھیک ٹھیک کام اور ٹھیک ٹھیک مزدوری مل سکے' ہر کام کے لئے ٹھیک ٹھیک آدمی مل سکیں' اور ہمارے سماج کی یہ اتنی بڑی مشین اس طرح چل سکے کہ کسی کے اوپر مناسب سے زیادہ بوجھ نہ ہو' کوئی بھوکا' ننگا یا بنا گھر کے نہ رہے اور سب کا سب طرح بھلا اور سب کی ترقی ہو .

اے دنیا کے سائنس دانوں ! سب سے بھاری ذمہ واری تمہارے اوپر ہے ! تم ہی گیان کا پتہ لگاتے ہو اور اسے پھیلاتے ہو . وہ گیان دنیا کے بھلے کے لئے کام میں آنا چاہئے . لیکن اس سمے وہ دنیا کے برے کے لئے کام میں لایا جا رہا ہے ! اس لئے اپنی مادی سائنس کو روحانی سائنس سے روشن کرو . اپنی سائنس کے ساتھ پروپکار کی پکی بھاؤنا کو ملا دو ! سب مل جاؤ ! لوگوں کو دکھلا دو کہ سماج سنگٹھن کا ٹھیک طریقہ کیا ہوسکتا ہے . تم نے اگر اپنا یہ فرض پورا نہ کیا تو مانو سماج مٹ سکتا ہے ! اور یدی تم نے اپنا یہ فرض پورا کرلیا تو مانو سماج بچ سکتا ہے' جی سکتا ہے اور سب شانتی اور سکھ کے ساتھ رہ سکتے ہیں .

के क़ानून बनावें ताकि दूसरे उन पर चलें. नेक और समझदार लोग ही नेकी और समझ के क़ानून बना सकते हैं, और ऐसे क़ानूनों से ही दुनिया का भला हो सकता है. सच यह है कि जब इस तरह के खुदा के बंदे दुनिया में काफ़ी हो जायं, तो क़ानूनों और क़ानूनी लोगों की ज़रूरत ही बहुत कम रह जाती है. नैतिक यानी इख़लाक़ी क़ानून जो हमारे दिलों में लिखे रहते हैं बाहर के किताबी क़ानूनों को अनावश्यक बना देते हैं. जिस तरह बीमारी को पहले ही से रोकना बीमारी आ जाने पर इलाज करने से कहीं अच्छा है उसी तरह क़ानूनसाज़ी से तालीम कहीं ज़्यादे ज़रूरी है. अन्दर के स्वाभाव से जो चीज़ निकलती है वह बाहर के डर या दबाव से कहीं अच्छी होती है. इसलिए तालीम का मोल बहुत अधिक है. तालीम देने वालों का मिशन बड़ा और ऊंचा मिशन है, सच्चा ब्राह्मण, सच्चा मौलवी और सच्चा रब्बी ही, यानी जनम से अपने को ब्राह्मन, मौलवी या रब्बी मानने वाला नहीं बल्कि अपनी क़ाबलियत और अपने चलन से ब्रह्म, मौला या रब का सच्चा सेवक ही, यानी केवल वह आदमी ही जिसने इस बात को समझ लिया है, कि एक ही परमात्मा एक ही अल्लाह, सबके घट के अन्दर मौजूद है, केवल ऐसे आदमी को ही तालीम का काम और क़ानून बनाने का काम सिपुर्द होना चाहिए. यह दोनों ज़िम्मेवारियां, बड़ी पाक ज़िम्मेवारियां हैं.

उसी देश के लोग सुखी और ख़ुशहाल रह सकते हैं जिस देश में इस तरह के सच्चे ब्राह्मण, मौलवी या रब्बी काफ़ी हों, जो अच्छे से अच्छे अर्थों में अपनी बातों से और अपनी मिसाल से दोनों से लोगों को ठीक तालीम दे सकें, वे लोग नहीं जिन्होंने धर्म या मज़हब को अपना पेशा बना लिया है और आदमियों आदमियों के बीच भेद भाव और नफ़रतें पैदा करते रहते हैं. इस तरह के देश में ही सच्ची समाजवादी सभ्यता (Socialistic civilisation) पैदा हो सकती है. ऐसे देश में ही लोग बीच के सुनहरे रास्ते पर चलेंगे और सबको अधिक से अधिक सुख मिलेगा. तब ही लोग इस तरह की बातों को समझेंगे जैसे बाइबल का यह कहना कि "कोई आदमी केवल अपने लिए नहीं जीता, हम सब एक दूसरे के अंग हैं......ईश्वर ने धरती की सतह पर रहने वाली सब क़ौमों को एक ख़ून से बनाया है" या वेद का यह कहना कि "सब आदमियों का एक दूसरे के साथ वैसा ही संबंध है जैसा सिर, हाथ, पेट और टांगों का एक दूसरे के साथ" या क़ुरान का यह कहना कि "सब जानदार अल्लाह का कुनबा हैं", या शेख़ सादी का यह कहना कि "आदम की सब औलाद एक दूसरे के हाथ पैरों की तरह हैं." तब ही व्यक्तिवाद और समाजवाद यानी इंडिविजुअलिज़्म और सोशलिज़्म में अच्छा समन्वय यानी मेल होगा.

کے قانون بناویں تاکہ دوسرے ان پر چلیں. نیک اور سمجھدار لوگ ہی نیکی اور سمجھ کے قانون بنا سکتے ہیں' اور ایسے قانونوں سے ہی دنیا کا بھلا ہوسکتا ہے. سچ یہ ہے کہ جب اس طرح کے خدا کے بندے دنیا میں کافی ہوجائیں تو قانونوں اور قانونی لوگوں کی ضرورت ہی بہت کم رہ جاتی ہے. نیتک یعنی اخلاقی قانون جو ہمارے دلوں میں لکھے رہتے ہیں باہر کے کتابی قانونوں کو اناوشیک بنا دیتے ہیں. جس طرح بیماری کو پہلے ہی سے روکنا بیماری آجانے پر علاج کرنے سے کہیں اچھا ہے اسی طرح قانون سازی سے تعلیم کہیں زیادہ ضروری ہے. اندر کے سبھاؤ سے جو چیز نکلتی ہے وہ باہر کے ڈر یا دباؤ سے کہیں اچھی ہوتی ہے. اس لئے تعلیم کا مول بہت ادھک ہے. تعلیم دینے والوں کا مشن بڑا اونچا مشن ہے' سچا برہمن' سچا مولوی' اور سچا ربی ہی' یعنی جنم سے اپنے کو برہمن' مولوی یا ربی ماننے والا نہیں بلکہ اپنی قابلیت اور اپنے چلن سے برہم' مولا یا رب کا سچا سیوک ہی یعنی کیول وہ آدمی ہی جس نے اس بات کو سمجھ لیا ہے' کہ ایک ہی پرماتما ایک ہی اللہ' سب کے گھٹ کے اندر موجود ہے' کیول ایسے آدمی کو ہی تعلیم کا کام اور قانون بنانے کا کام سپرد ہونا چاہئے. یہ دونوں ذمہ واریاں بڑی پاک ذمہ واریاں ہیں.

اسی دیش کے لوگ سکھی اور خوشحال رہ سکتے ہیں جس دیش میں اس طرح کے سچے برہمن' مولوی یا ربی کافی ہوں' جو اچھے سے اچھے ارتھوں میں اپنی باتوں سے اور اپنی مثال سے دونوں سے لوگوں کو ٹھیک تعلیم دے سکیں' وے لوگ نہیں جنھوں نے دھرم یا مذہب کو اپنا پیشہ بنا لیا ہے اور آدمیوں آدمیوں کے بیچ بھید بھاؤ اور نفرتیں پیدا کرتے رہتے ہیں. اس طرح کے دیش میں ہی سچی سماجوادی سبھیتا (Socialistic Civilisation) پیدا ہوسکتی ہے. ایسے دیش میں ہی لوگ بیچ کے سنہرے راستے پر چلیں گے اور سب کو ادھک سے ادھک سکھ ملیگا. تب ہی لوگ اس طرح کی باتوں کو سمجھیں گے جیسے بائبل کا یہ کہنا کہ "کوئی آدمی کیول اپنے لئے نہیں جیتا' ہم سب ایک دوسرے کے انگ ہیں... ایشور نے دھرتی کی سطح پر رہنے والی سب قوموں کو ایک خون سے بنایا ہے" یا وید کا یہ کہنا کہ "سب آدمیوں کا ایک دوسرے کے ساتھ ویسا ہی سمبندھ ہے جیسا' سر ہاتھ' پیٹ اور ٹانگوں کا ایک دوسرے کے ساتھ" یا قرآن کا یہ کہنا کہ "سب جاندار اللہ کا کنبہ ہیں" یا شیخ سعدی کا یہ کہنا کہ "آدم کی سب اولاد ایک دوسرے کے ہاتھ پیروں کی طرح ہیں." تب ہی ویکتی واد اور سماجواد یعنی انڈیویجولزم اور سوشلزم میں سچا سمنوے یعنی میل ہوگا.

दुनिया के अध्यापक, विद्वान लोग और साइंसदां अगर डटकर अपने फ़र्ज़ को पूरा करने के लिए खड़े हो जावें तो राजकाजी नेताओं की सब बुराइयां उन पर से इस तरह झड़ जावें जिस तरह तूफ़ान के आने पर दरख़्तों के पुराने पत्ते झड़कर गिर पड़ते हैं.

योरुप के इतिहास से पता लगता है कि ईसाई धर्म के पादरी लोग जब जब नेक, निस्वार्थ और सच्चे रहे हैं तब तब उन्होंने अन्यायी राजाओं के ज़ुल्म से दुनिया को बचाया है. इसके ख़िलाफ़ जब जब पादरियों में इंसानी शकल के अन्दर शैतान पैदा हो गए हैं जैसा कि 'इनक्विज़िटर' थे तब तब ज़ालिम बादशाहों के साथ मिलकर उन्होंने धरती को कंपा दिया है. तब तब अनेक राष्ट्रों और करोड़ों इंसानों की आह आसमान तक पहुंची है और अल्लाह की तरफ़ से बदला पाखंडी पुरोहितों और ज़ालिम राजाओं दोनों के सर पर टूटा है. प्राचीन भारत में ऋषियों ने अनेक बार बुरे राजाओं को दंड दिया है और मिटा भी डाला है. इसलाम की तारीख़ में नेक और ख़ुदापरस्त आलिमों ने अकसर सुलतानों और बादशाहों के ज़ुल्मों को रोक दिया है. ईसाई धर्म के अन्दर भी बड़े बड़े बहादुर सुधारक और शहीद हो चुके हैं जिन्होंने अपने आत्मबल से बड़े बड़े बादशाहों से टक्कर ली. यहूदियों में भी जेरेमिया जैसे नबी हुए हैं जिन्होंने अपने समय के ज़ालिमों का मुक़ाबला किया.

आजकल के अध्यापकों और साइंसदानों को चाहिए कि अपने पाक मिशन के लिए खड़े हो जावें. उन्हें चाहिए कि धन और दुनिया के ऐश आराम की चाह को अपने अन्दर से मिटा डालें. ज्ञान और परोपकार की क़ीमत धन नहीं है, प्रेम और मान है, माँ बाप अपने बच्चों से जो प्रेम करते हैं और उनके लिए जो क़ुरबानियां करते हैं उसकी क़ीमत क्या उन्हें धन के रूप में अदा की जा सकी है ?

क़ुरान में लिखा है :—

"बड़ी से बड़ी इज़्ज़त उनको मिलनी चाहिए जो अल्लाह से डरते हैं और लोगों से प्रेम करते हैं. जो सबसे नेक है वही अल्लाह के सबसे नज़दीक है."

अध्यापक को चाहिए कि अपनी ज़िन्दगी की ज़रूरतों को कम से कम रक्खे और कम से कम ज़रूरतों के पूरा होने में संतोष माने. उसे चाहिए कि जान बूझ कर और अपनी मरज़ी से ग़रीबों की सी ज़िन्दगी बसर करे. तब उसके अन्दर के तप और ज़ोहद की आग यानी उसका आत्मबल बढ़ता और चमकता चला जायगा. सब नेक आदमी उसे प्यार करेंगे और उसका आदर करेंगे. सब बुरे आदमी उससे डरेंगे और उसके असर से धीरे धीरे अपने को बदलेंगे. लोभी और ख़ुदग़रज़ लोग भी उसे देखकर शरमावेंगे और अपने ऊपर क़ाबू हासिल करना सीखेंगे. ऐसे आदमियों से लोग प्रार्थना करेंगे कि वे अच्छे और समझदारी

دنیا کے ادھیاپک ودوان لوگ اور سائنس‌داں اگر ڈٹ کر اپنے فرض کو پورا کرنے کے لئے کھڑے ہوجائیں تو راج‌کاجی نیتاؤں کی سب برائیاں ان پر سے اس طرح جھڑ جاویں جس طرح طوفان کے آنے پر درختوں کے پرانے پتے جھڑ کر گر پڑتے ہیں۔

یورپ کے اتہاس سے پتہ چلتا ہے کہ عیسائی دھرم کے پادری لوگ جب جب نیک نسوارتھ اور سچے رہے ہیں تب تب انہوں نے انیائی راجاؤں کے ظلم سے دنیا کو بچایا ہے۔ اس کے خلاف جب جب پادریوں میں انسانی شکل کے اندر شیطان پیدا ہوگئے ہیں جیسا کہ 'انکوزیٹر' تھے تب تب ظالم بادشاہوں کے ساتھ مل‌کر انہوں نے دھرتی کو کانپا دیا ہے۔ تب تب انیک راشٹروں اور کروڑوں انسانوں کی آہ آسمان تک پہونچی ہے اور اللہ کی طرف سے بدلہ پاکھنڈی پروہتوں اور ظالم راجاؤں دونوں کے سر پر ٹوٹا ہے۔ پراچین بھارت میں رشیوں نے انیک بار برے راجاؤں کو دنڈ دیا ہے اور مٹا بھی ڈالا ہے۔ اسلام کی تاریخ میں نیک اور خدا پرست عالموں نے اکثر سلطانوں اور بادشاہوں کے ظلموں کو روک دیا ہے۔ عیسائی دھرم کے اندر بھی بڑے بڑے بہادر سدھارک اور شہید ہوچکے ہیں جنہوں نے اپنے آتم‌بل سے بڑے بڑے بادشاہوں سے ٹکر لی ہے۔ یہودیوں میں بھی جیریمیا جیسے نبی ہوئے ہیں جنہوں نے اپنے سمے کے ظالموں کا مقابلہ کیا۔

آجکل کے ادھیاپکوں اور سائنسدانوں کو چاہئے کہ اپنے پاک مشن کے لئے کھڑے ہوجائیں۔ انہیں چاہئے کہ دھن اور دنیا کے عیش و آرام کی چاہ کو اپنے اندر سے مٹا ڈالیں۔ گیان اور پروپکار کی قیمت دھن نہیں ہے، پریم اور مان ہے۔ ماں باپ اپنے بچوں سے جو پریم کرتے ہیں اور ان کے لئے قربانیاں کرتے ہیں اس کی قیمت کیا انہیں دھن کے روپ میں ادا کی جاسکتی ہے؟

قرآن میں لکھا ہے :—

"بڑی سے بڑی عزت ان کو ملنی چاہئے جو اللہ سے ڈرتے ہیں اور لوگوں سے پریم کرتے ہیں۔ جو سب سے نیک ہے وہی اللہ کے سب سے نزدیک ہے۔"

ادھیاپک کو چاہئے کہ اپنی زندگی کی ضرورتوں کو کم سے کم رکھے اور کم سے کم ضرورتوں کے پورا ہونے میں سنتوش مانے۔ اسے چاہئے کہ جان بوجھ کر اور اپنی مرضی سے غریبوں کی سی زندگی بسر کرے۔ تب اس کے اندر کے تپ اور زہد کی آگ یعنی اس کا آتم‌بل بڑھتا اور چمکتا چلا جائیگا۔ سب نیک آدمی اسے پیار کریں گے اور اس کا آدر کریں گے۔ سب برے آدمی اس سے ڈریں گے اور اس کے اثر سے دھیرے دھیرے اپنے کو بدلیں گے۔ لوبھی اور خود غرض لوگ بھی اسے دیکھ کر شرماوینگے اور اپنے اوپر قابو حاصل کرنا سیکھیں گے۔ ایسے آدمیوں سے لوگ پرارتھنا کریں گے کہ وہ اچھے اور سمجھداری

इल्म यानी ज्ञान एक शक्ति होती है. अध्यापक के पास इल्म होता है. उसमें वह शक्ति होती है कि लोगों के दिलों और दिमाग़ों को नेकी की तरफ़ ले जाय या बदी की तरफ़. राजा के पास तलवार होती है. वह अधिक से अधिक आदमी के जिस्म को क़ाबू में कर सकता है. अध्यापक और पुजारी की शक्ति राजा की शक्ति से बढ़कर होती है इसीलिए पाखंडी और झूठे पंडे पुरोहित और मुल्ला पादरी बुरे से बुरे राजाओं और बादशाहों से ज़्यादा नुक़सान कर सकते हैं. सीधे या टेढ़े, कम या बहुत, बिना पंडे पुरोहितों की मदद के राजाओं का .ज़ुल्म चल ही नहीं सकता. धर्म और राजनीति अगर आदमी के भले के लिए मिल जावें तो ज़मीन पर स्वर्ग ला सकते हैं. यही दोनों अगर लोगों को ग़ुलाम बनाने और उन्हें चूसने के लिये मिल जावें तो इस धरती को नरक बना देते हैं. रूहानी शक्ति यानी आत्म-बल राजशक्ति को क़ाबू में कर सकती है और जिधर चाहे मोड़ सकती है.

वेद में लिखा है कि :—

"विद्या (साइंस) किसी ब्राह्मन (ज्ञानी) पास गई और कहने लगी कि मेरी रक्षा करो और मुझे एक पाक अमानत की तरह बचा कर रक्खो. मुझे उन लोगों को मत दो जिनके मन में खोट है, जिनके दिलों में टेढ़ापन है, जिन्हें अपने ऊपर क़ाबू नहीं है, जो घमंडी हैं, ज़ालिम हैं, लोभी हैं, बिलासी हैं और दूसरों से ग़ैरियत बरतते हैं. मुझे केवल ऐसे आदमियों को दो जो नेक और पाक हैं, सबका भला चाहते हैं और सबके भले के काम करते हैं. मुझे केवल उन्हीं को दो तब मेरी शक्ति बढ़ेगी और मैं दुनिया का भला कर सकूँगी !"

मनुस्मृति में लिखा है कि :—

"विद्या की शक्ति यानी आत्मा की शक्ति और राज शक्ति यानी फ़ौजी शक्ति दोनों को एक दूसरे की ज़रूरत है. इनमें से कोई दूसरे के बिना फलफूल नहीं सकती. पर यदि फ़ौजी शक्ति .ज़ुल्म के रास्ते पर चलने लगे और विद्या की शक्ति को अपना साधन बनाने लगे तो विद्वान का धर्म हो जाता है कि राज शक्ति को रोके और ठीक तरफ़ चलावे. विद्या में ऐसा करने की शक्ति है क्योंकि विद्या ही राज के हथियारों और साज़ सामान को बनाती है. जो विद्या हथियारों को बनाती है वही उन्हें तोड़कर ख़तम भी कर सकती है."

शुक्रनीति में लिखा है कि :—

"जब क्षत्री लोग जिनके हाथों में तलवार है यह देखते हैं कि ब्राह्मण यानी अल्लाह वाले अपने धर्म पर डटे हुए हैं तब वे डर जाते हैं और ख़ुद भी अपने सच्चे धर्म से इधर उधर नहीं भटक पाते. इसलिए ज्ञानी और ईश्वर भक्त लोगों को चाहिये कि दुनिया को ठीक रखने के लिए ख़ुद तप यानी रियाज़त में लगे रहें."

علم یعنی گیان ایک شکتی ہے ۔ ادھیاپک کے پاس علم ہوتا ہے ۔ اس میں وہ شکتی ہوتی ہے کہ لوگوں کے دلوں اور دماغوں کو نیکی کی طرف لیجائے یا بدی کی طرف. راجہ کے پاس تلوار ہوتی ہے ۔ وہ ادھک سے ادھک آدمی کے جسم کو قابو میں کرسکتا ہے ۔ ادھیاپک اور پجاری کی شکتی راجہ کی شکتی سے بڑھ کر ہوتی ہے اسی لئے پاکھنڈی اور جھوٹے پنڈے پروہت اور ملا پادری برے سے برے راجاؤں اور بادشاہوں سے زیادہ نقصان کرسکتے ہیں ۔ سیدھے یا ٹیڑھے' کم یا بہت بنا پنڈے پروہتوں کی مدد کے راجاؤں کا ظلم چل ہی نہیں سکتا ۔ دھرم اور راج نیتی اگر آدمی کے بھلے کے لئے مل جاویں تو زمین پر سورگ لاسکتے ہیں ۔ یہی دونوں اگر لوگوں کو غلام بنانے اور چوسنے کے لئے مل جاویں تو اس دھرتی کو نرک بنا دیتے ہیں ۔ روحانی شکتی یعنی آتم بل راج شکتی کو قابو میں کرسکتی ہے اور جدھر چاہے موڑ سکتی ہے ۔

وید میں لکھا ہے کہ :—

"ودیا (سائنس) کسی برھمن (گیانی) کے پاس گئی اور کہنے لگی کہ میری رکشا کرو اور مجھے پاک امانت کی طرح بچاکر رکھو ۔ مجھے ان لوگوں کو مت دو جن کے من میں کھوٹ ہے' جن کے دلوں میں ٹیڑھاپن ہے' جنھیں اپنے اوپر قابو نہیں ہے' جو گھمنڈی ہیں' ظالم ہیں' لوبھی ہیں' ولاسی ہیں اور دوسروں سے غیریت برتتے ہیں ۔ مجھے کیول ایسے آدمیوں کو دو جو نیک اور پاک ہیں' سب کا بھلا چاہتے ہیں اور سب کے بھلے کے کام کرتے ہیں ۔ مجھے کیول انہیں کو دو ۔ تب میری شکتی بڑھیگی اور میں اس دنیا کا بھلا کر سکوں گی !"

منوسمرتی میں لکھا ہے کہ :—

"ودیا کی شکتی یعنی آتما کی شکتی اور راج شکتی یعنی فوجی شکتی دونوں کو ایک دوسرے کی ضرورت ہے ۔ ان میں سے کوئی دوسرے کے بنا پھل پھول نہیں سکتی ۔ پر یدی فوجی شکتی ظلم کے راستے پر چلنے لگے اور ودیا کی شکتی کو اپنا سادھن بنانے لگے تو ودوان کا دھرم ہو جاتا ہے کہ راج شکتی کو روکے اور ٹھیک طرف چلاوے ۔ ودیا میں ایسا کرنے کی شکتی ہے کیونکہ ودیا ہی راج کے ہتھیاروں اور ساز و سامان کو بناتی ہے ۔ جو ودیا ہتھیاروں کو بناتی ہے وہی انہیں توڑ کر ختم بھی کرسکتی ہے ."

شکر نیتی میں لکھا ہے کہ :—

"جب چھتری لوگ جن کے ہاتھوں میں تلوار ہے یہ دیکھتے ہیں کہ برھمن یعنی الله والے اپنے دھرم پر ڈٹے ہوئے ہیں تب وے ڈر جاتے ہیں اور خود بھی اپنے سچے دھرم سے اِدھر اُدھر نہیں بھٹک پاتے ۔ اس لئے گیانی اور ایشور بھکت لوگوں کو چاہئے کو دنیا کو ٹھیک رکھنے کے لئے خود تپ یعنی ریاضت میں لگے رہیں ."

चलना चाहिये. जो राजा या हाकिम इस तरह की पाप की चीज़ों से धन कमाता है उसकी बाबत मनुस्मृति में लिखा है कि :—

"जो तालीम देने वाला लोभी और पापी राजाओं से धन लेकर पढ़ाता है वह इस तरह के राजाओं की बुराई उनके सामने प्रगट नहीं कर सकता और इसीलिये ख़ुद भी नरक में जाता है और राजा को भी नरक में ढकेलता है."

सूफ़ी कहता है कि :—

"चूं दिहद क़ाज़ी बदिल रिश्वत क़रार
के शनासद ज़ालिम अज़ मज़लूम ज़ार"

यानी अगर क़ाज़ी ही अपने दिल के अन्दर रिश्वत को जगह दे दे तो फिर ज़ालिम और मज़लूम में फ़रक़ कौन कर सकता है ?

जो तालीम देने वाला मास्टर या अध्यापक ज़ुल्म और बुराई को बढ़ाता है वह आगे की तमाम नस्लों को ख़राब करता है और सारे देश और सारी सभ्यता को बरबादी की तरफ़ ले जाता है, अध्यापक को कोई काम ऐसा नहीं करना चाहिये जिससे उसे किसी दरजे तक भी और किसी तरह भी अपनी आज़ादी, अपने आत्मा और अपनी ज़मीर को बेचना पड़े. अध्यापक के ऊपर सब से बड़ी ज़िम्मेदारी है. वह सारे देश को बना सकता है या मिटा सकता है. वह इन्सानी सभ्यता को चमका सकता है या ख़तम कर सकता है.

मुहम्मद साहब की एक मशहूर हदीस है:—

जब आलिम नेकी के रास्ते से हट जाते हैं तो सारा आलम ग़लत रास्ते पर पड़ जाता है."

गीता में लिखा है कि :—

"बड़ा या समझदार आदमी जो कुछ करता है बाक़ी सब लोग उसी की नक़ल करते हैं, वह जिस चीज़ को ठीक क़रार दे देता है दुनिया उसी पर चलती है."

इंजील में लिखा है :—

"क्या अंधे अंधों को रास्ता दिखा सकते हैं ? क्या वे दोनों ख़न्दक़ में नहीं गिरेंगे ?"

उपनिषद में लिखा है कि :—

"जो अभागे लोग अंधेरे में पड़े हुए हैं लेकिन ख़ुद अपने को धीर और पंडित मानते हैं और अपनी पंडिताई के घमंड में हैं वे एक गढ़े से दूसरे गढ़े में गिरते रहते हैं, जिस तरह वह अंधे लोग गिरते हैं जिन्हें अंधे रास्ता दिखा रहे हों !"

मुहम्मद साहब की एक हदीस है :—

"दुनिया के लोग अपने बादशाहों के दीन पर जाते हैं."

ठीक इसी मानी की एक मशहूर संस्कृत कहावत है :—

"यथा राजा तथा प्रजा."

چلنا چاہئے . جو راجا یا حاکم اس طرح کی پاپ کی چیزوں سے دھن کماتا ہے اُس کی بابت منوسمرتی میں لکھا ہے کہ :—

"جو تعلیم دینے والا لوبھی اور پاپی راجاؤں سے دھن لیکر پڑھاتا ہے وہ اِس طرح کے راجاؤں کی برائی ان کے سامنے پرگٹ نہیں کرسکتا اور اسی لئے خود بھی نرک میں جاتا ہے اور راجا کو بھی نرک میں ڈھکیلتا ہے ."

صوفی کہتا ہے کہ :—

"چوں دہد قاضی بدل رشوت قرار
کے شناسد ظالم از مظلوم زار"

یعنی اگر قاضی ہی اپنے دل کے اندر رشوت کو جگہ دیدے تو پھر ظالم اور مظلوم میں فرق کون کرسکتا ہے ؟

جو تعلیم دینے والا ماسٹر یا ادھیاپک ظلم اور برائی کو بڑھاتا ہے وہ آگے کی تمام نسلوں کو خراب کرتا ہے اور سارے دیش اور ساری سبھیتا کو بربادی کی طرف لیجاتا ہے ادھیاپک کو کوئی کام ایسا نہیں کرنا چاہئے جس سے اُسے کسی درجہ تک بھی اور کسی طرح بھی اپنی آزادی اپنی آتما اور اپنے ضمیر کو بیچنا پڑے . ادھیاپک کے اوپر سب سے بڑی ذمہ داری ہے . وہ سارے دیش کو بنا سکتا ہے یا مٹا سکتا ہے . وہ انسانی سبھیتا کو چمکا سکتا ہے یا ختم کرسکتا ہے .

محمد صاحب کی ایک مشہور حدیث ہے :—

"جب عالم نیکی کے راستے سے ہٹ جاتے ہیں تو سارا عالم غلط راستے پر پڑ جاتا ہے ."

گیتا میں لکھا ہے کہ :—

"بڑا یا سمجھدار آدمی جو کچھ کرتا ہے باقی سب لوگ اُسی کی نقل کرتے ہیں . وہ جس چیز کو ٹھیک قرار دیدیتا ہے دنیا اُسی پر چلتی ہے ."

انجیل میں لکھا ہے :—

"کیا اندھے اندھوں کو راستہ دکھا سکتے ہیں ؟ کیا وہ دونوں خندق میں نہیں گریں گے ؟"

اُپنشد میں لکھا ہے کہ :—

"جو ابھاگے لوگ اندھیرے میں پڑے ہوئے ہیں لیکن خود اپنے کو دھیر اور پنڈت مانتے ہیں اور اپنی پنڈتائی کے گھمنڈ میں ہیں وے ایک گڑھے سے دوسرے گڑھے میں گرتے رہتے ہیں ، جس طرح وے اندھے لوگ گرتے ہیں جنہیں اندھے راستہ دکھا رہے ہوں !"

محمد صاحب کی ایک حدیث ہے :—

"دنیا کے لوگ اپنے بادشاہوں کے دین پر جاتے ہیں ."

ٹھیک اسی معنی کی ایک مشہور سانسکرت کہاوت ہے :—

"یتھا راجہ تتھا پرجا ."

मिल्कियत न समझें, सबकी मिल्कियत समझें. जो लोग राज करते हैं उनका काम है कि राज करते हुए भी अपनी ख़ुदी को ऊपर आने न दें. जो लोग देश को या मानव समाज को बढ़ने और तरक़्क़ी करने में मदद देते हैं उनका फ़र्ज़ है कि ख़ुद किसी पर हावी होने की कोशिश न करें. यही काम विद्वानों और अध्यापकों का है.

अध्यापक को चाहिये कि वह किसी दूसरे का मोहताज न हो, उसका जीवन सादे से सादा हो, वह अपनी तबियत से आज़ाद हो और फिर भी अपने को छोटे से छोटा समझे. उसका दिल प्रेम से भरा हो और वह प्रेम ही का प्रचारक हो. यदि ऐसा होगा तो उसकी मिसाल को देख कर और उसकी रूहानी ताक़त यानी उसके आत्म बल को देखकर ऊंचे से ऊंचे हाकिम भी बुराई करने से डरेंगे और बचे रहेंगे. जहां भी वह खड़ा हो जायेगा वहां नेकी और परोपकार ही दिखाई देंगे. किसी अध्यापक या सम्पादक को किसी बुरे आदमी से तनख़्वाह या मदद नहीं लेनी चाहिये. सब धर्मों की किताबें हमें इस बारे में सावधान करती रही हैं.

मनुस्मृति में लिखा है :—

"जितनी तरह की पाकियां हैं उनमें सब से बढ़कर पाकी पैसे की पाकी है. जो पैसे के मामले में पाक है वही सचमुच पाक है. मिट्टी और पानी से मल मलकर बार बार बदन धोने वाला पाक नहीं है."

एक सूफ़ी ने कहा है :

"जब लालच बीच में आ गई तो हुनर छिप गया, जब ख़ुदी बीच में आ गई तो ख़ुदा ओझल हो गया. इनके आने से सैकड़ों परदे दिल से उठ उठ कर आंख के ऊपर पड़ जाते हैं."

वेदान्त के शब्दों में माया (ख़ाहिश) दो काम करती है, एक "आवरण" यानी हमारी आंख पर परदा डाल देना और दूसरा "विक्षेप" यानी हमारे दिल और दिमाग़ को सब तरफ़ से हटा कर अपनी उसी इच्छा को पूरा करने की तरफ़ लगा देना. आवरण का इलाज है "वैराग्य" यानी दुनियावी ख़्वाहिशों की तरफ़ से बेताल्लुक़ हो जाना. इसी को मुजानबत कहते हैं. विक्षेप का इलाज है "अभ्यास" यानी मश्क़. इसे मुनाज़लत भी कहते हैं. इन्हीं को इख़लास और जिहाद भी कहा जा सकता है.

गुरु, आचार्य, अध्यापक, पीर, मौल्लिम और अतालीक़ का फ़र्ज़ है कि अपने अन्दर के इख़लास में फ़रक आने न दे और ख़िदमते ख़ल्क़ को ही अपनी सब से बड़ी इबादत समझे. उसे चाहिये कि हक़ यानी सच्चाई से कभी बाल भर भी इधर उधर न हिले. दिमाग़ी फल की परख उसकी माली यानी आर्थिक जड़ से होती है. इसलिये किसी देश का भी तालीम का ख़र्च शराब जैसी चीज़ों के टैक्सों से नहीं

ملکیت نہ سمجھیں، سب کی ملکیت سمجھیں ۔ لوگ راج جو کرتے ہیں اُن کا کام ہے کہ راج کرتے ہوئے بھی اپنی خودی کو اُوپر آنے نہ دیں ۔ جو لوگ دیش کو یا مانو سماج کو بڑھنے اور ترقی کرنے میں مدد دیتے ہیں اُن کا فرض ہے کہ خود کسی پر حاوی ہونے کی کوشش نہ کریں ۔ یہی کام ودوانوں اور ادھیاپکوں کا ہے ۔

ادھیاپک کو چاہئے کہ وہ کسی دوسرے کا محتاج نہ ہو، اُس کا جیون سادے سے سادہ ہو، وہ اپنی طبیعت سے آزاد ہو اور پھر بھی اپنے کو چھوٹے سے چھوٹا سمجھے اُس کا دل پریم سے بھرا ہو اور وہ پریم ہی کا پرچارک ہو ۔ یدی ایسا ہوگا تو اُس کی مثال کو دیکھ کر اور اُس کی روحانی طاقت یعنی اُس کے آتم بل کو دیکھ کر اُونچے سے اُونچے حاکم بھی برائی کرنے سے ڈریں گے اور بچے رہیں گے ۔ جہاں بھی وہ کھڑا ہوجائیگا وہاں نیکی اور پروپکار ہی دکھائی دیں گے ۔ کسی ادھیاپک یا سمپادک کو کسی برے آدمی سے تنخواہ یا مدد نہیں لینی چاہئے ۔ سب دھرموں کی کتابیں اِس بارے میں ہمیں ساؤدھان کرتی رہی ہیں ۔

منوسمرتی میں لکھا ہے :—

"جتنی طرح کی پاکیاں ہیں اُن میں سب سے بڑھ کر پاکی پیسے کی پاکی ہے. جو پیسہ کے معاملے میں پاک ہے وہی سچ مچ پاک ہے ۔ مٹی اور پانی سے مل مل کر بار بار بدن دھونے والا پاک نہیں ہے ."

ایک صوفی نے کہا ہے :—

"جب لالچ بیچ میں آگئی تو ہنر چھپ گیا، جب خودی بیچ میں آگئی تو خدا اُوجھل ہوگیا ۔ اِن کے آنے سے سیکڑوں پردے دل سے اُٹھ اُٹھ کر آنکھ کے اُوپر پڑجاتے ہیں ۔"

ویدانت کے شبدوں میں مایا (خواہش) دو کام کرتی ہے، ایک "آورن" یعنی ہماری آنکھ پر پردہ ڈال دینا اور دوسرا "وکشیپ" یعنی ہمارے دل اور دماغ کو سب طرف سے ہٹا کر اپنی اُسی اچھا کو پورا کرنے کی طرف لگا دینا ۔ آورن کا علاج ہے "ویراگ" یعنی دنیاوی خواہشوں کی طرف سے بے تعلق ہو جانا ۔ اِسی کو مجانبت کہتے ہیں ۔ وکشیپ کا علاج ہے "ابھیاس" یعنی مشق. اِسے منازلت بھی کہتے ہیں ۔ اِنہیں کو اخلاص اور جہاد بھی کہا جاسکتا ہے ۔

گورو، آچاریہ، ادھیاپک، پیر، معلم اور اطالیق کا فرض ہے کہ اپنے اندر کے اِخلاص میں فرق آنے نہ دے اور خدمت خلق کو ہی اپنی سب سے بڑی عبادت سمجھے ۔ اُسے چاہئے کہ حق یعنی سچائی سے کبھی بال بھر بھی اِدھر اُدھر نہ ہلے ۔ دماغی پھل کی پرکھ اُس کی مالی یعنی آرتھک جڑ سے ہوتی ہے ۔ اِسی لئے کسی دیش کا بھی تعلیم کا خرچ شراب جیسی چیزوں کے ٹیکسوں سے نہیں

हों. स्वराज का मतलब यही है कि हमारे अन्दर का ऊंचा 'स्व' यानी ऊंचा आपा हम सब पर राज करता हो. जो लोग अपने देश में ऐसा सच्चा स्वराज चाहते हैं और उसे क़ायम रखना चाहते हैं उनका पहला फ़र्ज़ यह है कि देश की सारी जनता के अन्दर सब मर्दों, औरतों, बड़ों और छोटों के अन्दर उस बड़ी आत्मा को जगावें ताकि सब सबके भले में ही अपना भला देखें, तब ही सचमुच सबको सुख मिल सकता हैं.

इस नेक और ज़रूरी काम की शुरूआत हमें तालीम से ही करनी चाहिये, हमारी तालीमगाहें हमारे सब स्कूल और कालिज सचमुच 'देवालय' यानी 'ख़ानए ख़ुदा' होने चाहियें. तालीम से उतर कर यह ज़िम्मेवारी हमारे अख़बारों पर है क्योंकि अख़बार भी जनता की तालीम का एक बहुत बड़ा साधन है.

इसलिए जिन लोगों के सिपुर्द तालीम का काम है, चाहे स्कूलों और कालिजों के अध्यापक और चाहे अख़बारों के एडीटर, उनके लिये ज़रूरी है कि वे ऊँचे मानी में ईश्वर प्रेमी हों यानी यह कि उन्हें सबके अन्दर एक ही ईश्वर अल्लाह का जलवा काम करता हुआ दिखाई देता हो. उनके अन्दर तप यानी रियाज़त और इख़लास यानी निस्वार्थता होनी चाहिये. उनमें विद्या यानी इल्म और ज्ञान यानी इरफ़ान होना चाहिये. तब ही वे पहले अपने अन्दर रूहानी बराबरी (Equality), भाईचारा (Fraternity) और आज़ादी (Liberty) पैदा करके जनता को वह तालीम और वह नेक जानकारी दे सकेंगे जिससे जनता के अन्दर सच्ची बराबरी, सच्चा भाईचारा और सच्ची आज़ादी पैदा हो सके.

चीनी महात्मा लाओत्से ने अपनी किताब "ताओ तेह किंग" में लिखा है :—

"सब चीज़ें उसी एक परमात्मा से पैदा होती हैं. उससे सबको ख़ूराक मिलती है. उसी की शक्ति सबको रूप देती है, वही सबको कमाल तक पहुंचाती है. वही सबकी रक्षा करती है. उसके काम करने के ढंग से हमें तीन सबक़ मिलते हैं. अव्वल यह कि हम सब चीज़ें और सब तरह का माल पैदा करें लेकिन किसी चीज़ या किसी माल को अपना न समझें. दूसरा यह कि सब काम करें लेकिन अपनी ख़ुदी को ऊपर आने न दें. और तीसरा यह कि सबको बढ़ावें पर किसी पर हावी होने की इच्छा न करें. परमात्मा सब चीज़ों को प्यार करता है और चलाता है पर आप कहीं दिखाई नहीं देता. न अपनी मिल्कियत जताता है."

ऊपर के शब्दों में हमारी बड़ी आत्मा का यानी हमारे उस आपे का जिसे हम इन्सान का बड़ा आपा कहते हैं पूरा बयान आ गया. जो लोग मुल्क में धन दौलत पैदा करें उनका फ़र्ज़ है कि धन दौलत पैदा करते हुए भी उसे अपनी

ھوں ۔ سوراج کا مطلب یہی ھے کہ ھمارے اندر کا اونچا 'سو' یعنی اونچا آپا ھم سب پر راج کرتا ھو ۔ جو لوگ اپنے دیش میں ایسا سچا سوراج چاھتے ھیں اور اسے قائم رکھنا چاھتے ھیں ان کا پہلا فرض یہ ھے کہ دیش کی ساری جنتا کے اندر سب مردوں' عورتوں' بڑوں اور چھوٹوں کے اندر اس بڑی آتما کو جگاویں تاکہ سب سب کے بھلے میں ھی اپنا بھلا دیکھیں ۔ تب ھی سچ مچ سب کو سکھ مل سکتا ھے ۔

اِس نیک اور ضروری کام کی شروعات ھمیں تعلیم سے ھی کرنی چاھئے ۔ ھماری تعلیمگاھیں' ھمارے سب اسکول اور کالج سچ مچ 'دیوآلیہ' یعنی 'خانۂ خدا' ھونے چاھئیں ۔ تعلیم سے اُتر کر یہ ذمہواری ھمارے اخباروں پر ھے کیونکہ اخبار بھی جنتا کی تعلیم کا ایک بہت بڑا سادھن ھیں ۔

اس لئے جن لوگوں کے سپرد تعلیم کا کام ھے چاھے اسکولوں اور کالجوں کے ادھیاپک اور چاھے اخباروں کے ایڈیٹر اُن کے لئے ضروری ھے کہ وہ اونچے معنوں میں ایشور پریمی ھوں ۔ یعنی یہ کہ انھیں سب کے اندر ایک ھی ایشور اللہ کا جلوہ کام کرتا ھوا دکھائی دیتا ھو ۔ ان کے اندر تپ یعنی ریاضت اور اخلاص یعنی نسوارتھتا ھونی چاھئے ۔ ان میں ودیا یعنی علم اور گیان یعنی عرفان ھونا چاھئے ۔ تب ھی وہ پہلے اپنے اندر روحانی برابری (Equality)' بھائی چارا (Fraternity) اور آزادی (Liberty) پیدا کرکے جنتا کو وہ تعلیم اور وہ نیک جانکاری دے سکیں گے جس سے جنتا کے اندر سچی برابری سچا بھائی چارا اور سچی آزادی پیدا ھوسکے ۔

چینی مہاتما لاؤتسے نے اپنی کتاب "تاؤتیہ کنگ" میں لکھا ھے :—

"سب چیزیں اسی ایک پرماتما سے پیدا ھوتی ھیں ۔ اسی سے سب کو خوراک ملتی ھے ۔ اس کی شکتی سب کو روپ دیتی ھے ۔ وھی سب کو کمال تک پہونچاتی ھے وھی سب کی رکشا کرتی ھے ۔ اس کے کام کرنے کے ڈھنگ سے ھمیں تین سبق ملتے ھیں: اول یہ کہ ھم سب چیزیں اور سب طرح کا مال پیدا کریں لیکن کسی چیز یا کسی مال کو اپنا نہ سمجھیں ۔ دوسرا یہ کہ سب کام کریں لیکن اپنی خودی کو اوپر آنے نہ دیں اور تیسرا یہ کہ سب کو بڑھاویں پر کسی پر حاوی ھونے کی اِچھا نہ کریں ۔ پرماتما سب چیزوں کو پیار کرتا ھے اور چلاتا ھے پر آپ کہیں دکھائی نہیں دیتا نہ اپنی ملکیت جتاتا ھے"

اوپر کے شبدوں میں ھماری بڑی آتما کا یعنی ھمارے اس آپے کا جسے ھم انسان کا بڑا آپا کہتے ھیں پورا بیان آگیا ۔ جو لوگ ملک میں دھن دولت پیدا کریں اُن کا فرض ھے کہ دھن دولت پیدا کرتے ھوئے بھی اسے اپنی

और ज़िन्दगी की सारी ज़रूरी चीज़ें और आदमी को आराम पहुंचाने वाली चीज़ें सब में बराबर की बंटी हुई हों. सबको सुखी रखने और सबको आराम पहुंचाने में ही हरेक के दिल को सबसे बड़ी राहत मिले. अगर यह बड़ी आत्मा हमारे राजकाज को चलाने लगे तो कोई आदमी अपनी "पार्टी" के लिये काम न करे, सब सबके लिये काम करें. जब हमें सबका भला देखना हो, सबके साथ न्याय करना हो, सबका एक बराबर हित करना हो तो पार्टियों की कोई ज़रूरत ही नहीं रह जाती. पार्टियां वहीं बनती हैं जहां या तो हमारे आर्थिक हित एक दूसरे से टकराते हों और या हमारे धर्म या सम्प्रदाय एक दूसरे से टक्कर लेते हों. इसी तरह अगर हमारी दूकानों, बाज़ारों, कारख़ानों, व्यापार मंडलों, पुलिस चौकियों, फ़ौजों, कचहरियों, म्युनिसिपेलटियों, अस्पतालों, जहाज़ों और रेलों में और जहां कहीं आदमियों को आदमियों से वास्ता पड़ता है इसी बड़ी आत्मा का राज हो तो हर जगह सब लोग ईमानदारी से, नरमी के साथ, हमदर्दी के साथ और सबका भला चेतते हुए अपने अपने फ़र्ज़ों को अदा करें. अगर यह बड़ी आत्मा हमारी क़ानून सभाओं में क़ानून बनाने वालों के अन्दर जागी हुई हो तो हमारे सब क़ानून नेक, दूरंदेशी के और सबका भला करने वाले हों. तब हम हर क़ानून के बनाने में सब तबियतों और सब पेशों और सब जमातों के लोगों का एकसा ख़याल रक्खें. हमारी यही बड़ी आत्मा यदि हमारे बच्चों की तालीम में हमारे विद्वानों और अध्यापकों की रहनुमाई कर सके तो नई पीढ़ी के लोगों को ठीक ठीक तालीम मिल सके और सब लोगों के सब काम बहुत जल्दी दुरुस्त हो जावें.

जिन लोगों में यह बड़ी आत्मा जाग गई है यानी जिन्होंने सबके अन्दर अपने को और अपने अन्दर सबको और घट घट में समाए हुए एक आत्मा को जान लिया है वही बेग़रज़, बेलाग, परोपकारी, और सचमुच अक़लमन्द हो सकते हैं. इस तरह के मर्द और औरत सब से मान और आदर पाने के हक़दार होते हैं. क़ुदरती तौर पर सब उनपर भरोसा करेंगे, वही क़ौम के सच्चे नुमाइन्दे होंगे, क्योंकि इन्सान के अन्दर जो सब से अच्छे भाव हैं वही उनके अन्दर जागे हुए होंगे. जहां कहीं और जिस देश में भी इस तरह के ऊंचे आदमी हुकूमत करेंगे, इन्तज़ाम करेंगे, क़ानून बनाएंगे और लोगों की रहनुमाई करेंगे, वहीं सच्चा रामराज समझना चाहिए, वहीं हुकूमते इलाही है क्योंकि वहां नेकों और नेकी का राज है.

यह ज़रूरी है कि तालीम के और क़ानून बनाने के मैदानों में कम से कम इन दो जगह इसी तरह के लोगों का बोलबाला हो और उन्हीं की आवाज़ पर सब चलते

اور زندگی کی ساری ضروری چیزیں اور آدمی کو آرام پہونچانے والی چیزیں سب میں برابر کی بٹی ہوئی ہوں. سب کو سکھی رکھنے اور سب کو آرام پہونچانے میں ہی ہر ایک کے دل کو سب سے بڑی راحت ملے. اگر یہ بڑی آتما ہمارے راج کاج کو چلانے لگے تو کوئی آدمی اپنی پارٹی کے لئے کام نہ کرے، سب سب کے لئے کام کریں۔ جب ہمیں سب کا بھلا دیکھنا ہو، سب کے ساتھ نیائے کرنا ہو، سب کا ایک برابر ہت کرنا ہو تو پارٹیوں کی کوئی ضرورت ہی نہیں رہ جاتی۔ پارٹیاں وہیں بنتی ہیں جہاں یا تو ہمارے آرتھک ہت ایک دوسرے سے ٹکراتے ہوں اور یا ہمارے دھرم یا سمپردائے ایک دوسرے سے ٹکر لیتے ہوں۔ اسی طرح اگر ہماری دوکانوں، بازاروں، کارخانوں، ویاپار منڈلوں، پولیس چوکیوں، فوجوں، کچہریوں، میونسپلٹیوں، اسپتالوں، جہازوں اور ریلوں میں اور جہاں کہیں آدمیوں کو آدمیوں سے واسطہ پڑتا ہے اسی بڑی آتما کا راج ہو تو ہر جگہ سب لوگ ایمانداری سے، نرمی کے ساتھ، ہمدردی کے ساتھ اور سب کا بھلا چیتتے ہوئے اپنے اپنے فرضوں کو ادا کریں۔ اگر یہ بڑی آتما ہماری قانون سبھاؤں میں قانون بنانے والوں کے اندر جاگی ہوئی ہو تو ہمارے سب قانون نیک، دوراندیشی کے اور سب کا بھلا کرنے والے ہوں۔ تب ہم ہر قانون کے بنانے میں سب طبیعتوں اور سب پیشوں اور سب جماعتوں کے لوگوں کا ایک سا خیال رکھیں۔ ہماری یہی بڑی آتما یدی ہمارے بچوں کی تعلیم میں ہمارے ودوانوں اور ادھیاپکوں کی رہنمائی کرسکے تو نئی پیڑھی کے لوگوں کو ٹھیک ٹھیک تعلیم مل سکے اور سب لوگوں کے سب کام بہت جلدی درست ہو جاویں۔

جن لوگوں میں یہ بڑی آتما جاگ گئی ہے یعنی جنہوں نے سب کے اندر اپنے کو اور اپنے اندر سب کو اور گھٹ گھٹ میں سمائے ہوئے ایک آتما کو جان لیا ہے وہی بےغرض، بےلاگ، پروپکاری، اور سچ مچ عقلمند ہوسکتے ہیں۔ اس طرح کے مرد اور عورت سب سے مان اور آدر پانے کے حقدار ہوتے ہیں۔ قدرتی طور پر سب اُن پر بھروسہ کرینگے، وہی قوم کے سچے نمائندے ہونگے، کیونکہ انسان کے اندر جو سب سے اچھے بھاؤ ہیں وہی ان کے اندر جاگے ہوئے ہونگے۔ جہاں کہیں اور جس دیش میں بھی اس طرح کے اونچے آدمی حکومت کرینگے، انتظام کریں گے، قانون بنائینگے اور لوگوں کی رہنمائی کریں گے وہیں سچا رام راج سمجھنا چاہئے، وہیں حکومت الٰہی ہے کیونکہ وہاں نیکوں اور نیکی کا راج ہے۔

یہ ضروری ہے کہ تعلیم کے اور قانون بنانے کے میدانوں میں کم سے کم ان دو جگہ اسی طرح کے لوگوں کا بول بالا ہو اور انہیں کی آواز پر سب چلتے

सच्चा समाजवाद

डाक्टर भगवानदास

दुनिया की सब धार्मिक किताबों में इस धरती के ऊपर रामराज की स्थापना या आसमानी हुकूमत या हुकूमते इलाही के क़ायम होने की चर्चा की गई है. सच यह है कि आदमी के अन्दर दो आपे हैं, एक उसका छोटा आपा और दूसरा बड़ा आपा. छोटा आपा उस आदमी का आपा है जो अपने आपको अपने शख़्सी वजूद तक महदूद समझता है. बड़ा आपा उस आदमी का आपा है जिसने दुनिया के सब लोगों के आपे के साथ अपने आपे की एकता को अनुभव कर लिया है. इस तरह के लोग ही अपने छोटे आपे को जीत कर सचमुच आत्म विजयी, अपने ऊपर क़ाबू रखने वाले, नेक, परोपकारी, तजरबेकार और बुद्धिमान कहला सकते हैं. इस जमीन पर रामराज का मतलब इसी बड़े आपे का राज यानी उन लोगों का राज है जिनके अन्दर यह बड़ी आत्मा जाग चुकी है. यही सच्चा 'स्वराज' है. मनुस्मृति में लिखा है :—

सर्व भूतेषु चात्मानम्
सर्व भूतानि चात्मनि
समं पश्यन् आत्मयाजी
स्वाराज्यं अधिगच्छति

—यानी जो आदमी सब प्राणियों के अन्दर अपनी आत्मा को और अपने अन्दर सब प्राणियों को एक बराबर देखता है और इस बड़ी आत्मा के लिये अपनी छोटी आत्मा को क़ुरबान कर देता है वही 'स्वाराज' को हासिल करता है.

इस अन्दर के स्वराज से ही बाहर का स्वराज पैदा हो सकता है.

इस ऊपर की छोटी सी बात में सारी मानव समस्याओं, सब इन्सानी मुश्किलों का हल मौजूद है, और वही एक हल हो सकता है. अगर हमारे घरेलू जीवन में इसी बड़ी आत्मा का राज हो तो हमारा घरेलू जीवन सुख से भर जावे. तब दूसरों को सुखी रखना हमारा फ़र्ज़ हो जावे और प्रेम हमारा सबसे बड़ा उसूल. अगर यही बड़ी आत्मा आर्थिक मैदान में मानव समाज को चलाने लगे तो कोई आदमी अपनी ख़ुदग़रज़ी के लिये या लोभ में आकर अपने लिये धन जमा न करे, हर आदमी अपनी सारी धन संपत्ति को सबकी चीज़ समझे, उसे सबके भले के लिये ख़र्च करे

سچا سماجواد

ڈاکٹر بھگوان داس

دنیا کی سب دھارمک کتابوں میں اس دھرتی کے اوپر رام راج کی استھاپنا یا آسمانی حکومت یا حکومت الٰہی کے قائم ہونے کی چرچا کی گئی ہے. سچ یہ ہے کہ آدمی کے اندر دو آپے ہیں، ایک اس کا چھوٹا آپا اور دوسرا بڑا آپا. چھوٹا آپا اس آدمی کا آپا ہے جو اپنے آپ کو اپنے شخصی وجود تک محدود سمجھتا ہے. بڑا آپا اس آدمی کا آپا ہے جس نے دنیا کے سب لوگوں کے آپے کے ساتھ اپنے آپے کی ایکتا کو انوبھو کرلیا ہے. اس طرح کے لوگ ہی اپنے چھوٹے آپے کو جیت کر سچ مچ آتم وجئی، اپنے اوپر قابو رکھنے والے، نیک، پروپکاری، تجربہ‌کار اور بدھیمان کہلا سکتے ہیں. اس زمین پر رام راج کا مطلب اسی بڑے آپے کا راج یعنی ان لوگوں کا راج ہے جن کے اندر یہ بڑی آتما جاگ چکی ہے. یہی سچا "سوراج" ہے. منوسمرتی میں لکھا ہے :—

سرو بھوتیشو چاتمانم
سرو بھوتانی چاتمنی
سمم پشین آتمیاجی
سوراجیم ادھیگچھتی

—یعنی جو آدمی سب پرانیوں کے اندر اپنی آتما کو اور اپنے اندر سب پرانیوں کو ایک برابر دیکھتا ہے اور اس بڑی آتما کے لئے اپنی چھوٹی آتما کو قربان کردیتا ہے وہی 'سوراج' کو حاصل کرتا ہے.

اس اندر کے سوراج سے ہی باہر کا سوراج پیدا ہوسکتا ہے.

اس اوپر کی چھوٹی سی بات میں ساری مانو سمسیاؤں، سب انسانی مشکلوں کا حل موجود ہے، اور وہی ایک حل ہو سکتا ہے. اگر ہمارے گھریلو جیون میں اسی بڑی آتما کا راج ہو تو ہمارا گھریلو جیون سکھ سے بھر جاوے. تب دوسروں کو سکھی رکھنا ہمارا فرض ہو جاوے اور پریم ہمارا سب سے بڑا اصول. اگر یہی بڑی آتما آرتھک میدان میں مانو سماج کو چلانے لگے تو کوئی آدمی اپنی خود غرضی کے لئے یا لوبھ میں آکر اپنے لئے دھن جمع نہ کرے، ہر آدمی اپنی ساری دھن سمپتی کو سب کی چیز سمجھے، اسے سب کے بھلے کے لئے خرچ کرے

जिससे देशों के आपसी सम्बन्ध ठीक ठीक रह सकेंगे. फिर विश्व में तनाव कम हो जायगा, और इसकी पूरी उम्मीद है कि पूरब और पच्छिम की बाक़ी समस्यायें आपसी बात चीत से हल हो सकेंगी."

पञ्चशील उन सब मर्दों, औरतों और बच्चों का समर्थन चाहता है जो अपना और सबका जीवन सुखी बनाने के लिये अपने समय और शक्ति को लगाना चाहते हैं. ये सिद्धान्त यदि टिकाऊ अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धान्त बना लिये गए तो विश्व की जनता शान्ति, सहयोग, दोस्ती और सुख से अपना जीवन बिता सकेगी.

جس سے دیشوں کے آپسی سمبندھ ٹھیک رہ سکیں گے. پھر وشو میں تناؤ کم ہو جائیگا' اور اِس کی پوری اُمید ہے کہ پورب اور پچھم کی باقی سمسیائیں آپسی بات چیت سے حل ہوسکیں گی."

پنچ شیل اُن سب مردوں' عورتوں اور بچوں کا سمرتھن چاہتا ہے جو اپنا اور سب کا جیون سکھی بنانے کے لئے اپنے سمے اور شکتی کو لگانا چاہتے ہیں. یہ سدھانت یدی ٹکاؤ انتر راشٹریہ سدھانت بنالئے گئے تو وشو کی جنتا شانتی' سہیوگ' دوستی اور سکھ سے اپنا جیون بتاسکے گی.

"कुछ साम्राजी ताक़तों ने अपने अधीन देशों की जनता को शिक्षा और संस्कृति के बुनियादी अधिकार देने से भी इन्कार कर दिया है, जिस से उनके व्यक्तित्व (शख़्सियत) के विकास में रुकावट पड़ती है, और जो एशिया व अफ़रीक़ा की जनता के बीच सांस्कृतिक सम्बन्धों को रोकता है."

इस सम्मेलन में आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक सभी विषयों पर एक राय से प्रस्ताव पास हुए हैं ताकि भविष्य में हर मैदान में एशियाई अफ़रीक़ी मुल्कों के सम्बन्ध क़ायम रह सकें और बढ़ें.

एक और फ़ायदा जो इस बांडुंग सम्मेलन से हुआ है वह है आपसी ग़लतफ़हमियों, शकों और मनमुटाव का कम होना और एक दूसरे को समझना. जो मनमुटाव साम्राजवादियों ने एशियाई मुल्कों के अन्दर पैदा कर दिये थे वे बड़ी हद तक जाते रहे. इसका सब से सुन्दर सबूत पाकिस्तान के प्रधान मंत्री मुहम्मद अली का कलकत्ते का 27 अप्रेल सन 1955 का बयान है. उन्होंने कलकत्ते में प्रेस सम्वाद दाताओं के सामने कहा :—

"चीन के प्रधान मंत्री चाउ-ऐन-लाई से मिलने के बाद मैंने उनके बारे में अपना विचार बदल दिया है......चाउ-ऐन-लाई मुझे बहुत प्रिय हैं. उनकी अमनपसन्दी पर और दुनिया की समस्याओं को शान्तिपूर्वक समझौते के साथ सुलझाने की उनकी हार्दिक इच्छा पर मुझे पूरा विश्वास हो गया है."

श्री नेहरू ने इस सम्मेलन की सफलता पर बोलते हुए कहा:—"एशियाई अफ़रीक़ी सम्मेलन ने जो एकता हासिल की उसकी मिसाल दुनिया में कहीं नहीं है. यह एक अनोखा सम्मेलन था."

पंचशील और दुनिया का अमन

जनवादी चीन की उपप्रधान मैडम सूंग-चिंग-लिंग (श्रीमती सनयात् सेन) ने पञ्चशील का महत्व बताते हुए एक लेख में लिखा है :—

"पञ्चशील बेहतरीन इन्सानियत और ऊंचे विचारों की उपज है. वैसे भी ये सिद्धान्त उन देशों में सम्बन्ध क़ायम करते हैं जिनमें मनुष्य जाति की अधिकतर आबादी रहती है. हम जो इन सिद्धान्तों का प्रचार करते हैं यह मानते हैं कि इनका असर हमारी सीमा से भी परे तक फैला हुआ है. यह पक्की बात है कि इन सिद्धान्तों को मन्ज़ूर करने वालों और इन पर चलने वालों की तादाद लगातार बढ़ती जायगी. इसके लिये हर अमनपसन्द आदमी को सच्ची कोशिश करनी चाहिये."

"यदि सब इन्हें मान ले तो इन पांच सिद्धान्तों को बहुत से सवाल तय करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकेगा

"کچھ سامراجی طاقتوں نے اپنے ادھین دیشوں کی جنتا کو شکشا اور سنسکرتی کے بنیادی ادھیکار دینے سے بھی اِنکار کردیا ہے' جس سے اُن کے ویکتتو (شخصیت) کے وکاس میں رکاوٹ پڑتی ہے' اور جو ایشیا و افریقہ کی جنتا کے بیچ سانسکرتک سمبندھوں کو روکتا ہے."

اِس سمیلن میں آرتھک' سانسکرتک اور راجنیتک سبھی وشیوں پر ایک رائے سے پرستاؤ پاس ہوئے ہیں تاکہ بھوشیہ میں ہر میدان میں ایشیائی افریقی ملکوں کے سمبندھ قائم رہ سکیں اور بڑھیں.

ایک اور فائدہ جو اِس باندونگ سمیلن سے ہوا ہے وہ ہے آپسی غلط فہمیوں' شکوں اور من مٹاؤ کا کم ہونا اور ایک دوسرے کو سمجھنا. جو من مٹاؤ سامراج وادیوں نے ایشیائی ملکوں کے اندر پیدا کردئے تھے وہ بڑی حد تک جاتے رہے. اِس کا سب سے سندر ثبوت پاکستان کے پردھان منتری محمد علی کا کلکتے کا 27 اپریل سن 1955 کا بیان ہے. اُنھوں نے کلکتے میں پریس سمواد داتاؤں کے سامنے کہا :—

"چین کے پردھان منتری چاؤ - اِن - لائی سے ملنے کے بعد میں نے اُن کے بارے میں اپنا وچار بدل دیا ہے......چاؤ اِن - لائی مجھے بہت پریہ ہیں. اُن کی امن پسندی پر اور دنیا کی سمسیاؤں کو شانتی پوروک سمجھوتے کے ساتھ سلجھانے کی اُن کی ہاردک اِچھا پر مجھے پورا وشواس ہوگیا ہے."

شری نہرو نے اِس سمیلن کی سپھلتا پر بولتے ہوئے کہا :— "ایشیائی افریقی سمیلن نے جو ایکتا حاصل کی اُس کی مثال دنیا میں کہیں نہیں ہے. یہ ایک انوکھا سمیلن تھا."

پنچ شیل اور دنیا کا امن

جن وادی چین کی اُپ پردھان میڈم سونگ - چنگ - لنگ (شریمتی سن - یات - سین) نے پنچ شیل کا مہتو بتاتے ہوئے ایک لیکھ میں لکھا ہے :—

"پنچ شیل بہترین اِنسانیت اور اُونچے وچاروں کی اُپج ہے. ویسے بھی یہ سدھانت اُن دیشوں میں سمبندھ قائم کرتے ہیں جن میں منشیہ جاتی کی ادھکتر آبادی رہتی ہے. ہم جو ان سدھانتوں کا پرچار کرتے ہیں یہ مانتے ہیں کہ اِن کا اثر ہماری سیما سے بھی پرے تک پھیلا ہوا ہے. یہ پکی بات ہے کہ اِن سدھانتوں کو منظور کرنے والوں اور ان پر چلنے والوں کی تعداد لگاتار بڑھتی جائیگی. اِس کے لئے ہر امن پسند آدمی کو سچی کوشش کرنی چاہئے"

"یدی سب اِنھیں مان لیں تو اِن پانچ سدھانتوں کو بہت سے سوال طے کرنے کے لئے استعمال کیا جاسکے گا

में भी अपने एजेन्ट भेज कर कान्फ़रेन्स को असफल बनाने का भरसक प्रयत्न किया था.

प्रधान मंत्री चाउ-ऐन-लाई ने इस कान्फ़रेन्स में बोलते हुए कहा:—"श्री नेहरू से मुझे यह पता चला है कि ब्रिटेन के प्रधान मंत्री सर ऐन्थनी ऐडन को शान्तिपूर्वक साथ साथ रहने के ये पांच सिद्धान्त मंजूर हैं. यदि यह सच है तो मैं इंगलैन्ड के साथ भी संयुक्त बयान पर वैसे ही दस्तख़त करने को तैयार हूं जैसे मैंने हिन्दुस्तान और बरमा के साथ किये हैं."

अमरीकी साम्राजवादियों की दस्तन्दाज़ी के बावजूद बांडुंग कान्फ़रेन्स पूरी तरह कामयाब हुई, और साम्राजवादियों को वहां एक ज़बरदस्त धक्का पहुंचा.

बांडुंग सम्मेलन के बाद 29 देशों का एक मत से जो ऐलान निकला उसमें पंचशील के ये पांचों उसूल पूरी तरह शामिल और स्वीकार कर लिये गए हैं. यह ऐलान दुनिया के सब अख़बारों में छप चुका है.

चीन के प्रधान मंत्री चाउ-ऐन-लाई ने बांडुंग सम्मेलन से वापिस आकर जकार्ता में कहा कि बांडुंग सम्मेलन का ऐलान पंचशील का ही नया ऐडीशन है.

30 अपरेल को भारत की पार्लिमेन्ट में बांडुंग कान्फ़रेंस पर बोलते हुए श्री नेहरू ने कहा :—

"बांडुंग में विश्व शान्ति और सहयोग पर जो ऐलान निकला है उसमें हमें पञ्चशील के पांचों उसूल पूरी तरह शामिल मिलते हैं और उनके अलावा वह तफ़सील मिलती है जो इन पांचों उसूलों को और ज़्यादा मज़बूत कर देती है.........हमें ख़ुश होने के लिये काफ़ी वजह है कि बांडुंग कान्फ़रेन्स ने जिसमें दुनिया की आधी से ज़्यादा आबादी के नुमाइन्दे शामिल थे, यह ऐलान कर दिया है कि अगर दुनिया में अमन क़ायम रखना है और राष्ट्रों राष्ट्रों के बीच सहयोग हासिल करना है तो दुनिया के देशों के आपसी सम्बन्ध इन्हीं उसूलों पर क़ायम होने चाहियें."

इस सम्मेलन में सब से बड़ी जीत एकता की हुई. सभी एशियाई अफ़रीक़ी मुल्कों के प्रतिनिधियों ने सब प्रस्तावों को एक राय से पास किया.

उपनिवेशवाद (दूसरों की ग़ुलामी) के ख़िलाफ़ प्रस्ताव साम्राजवादियों के लिए एक ज़बरदस्त चुनौती है. इस प्रस्ताव में कहा गया है :—

"एशिया और अफ़रीक़ा के मुल्कों का यह सम्मेलन इस सच्चाई को स्वीकार करता है कि एशिया के बहुत से हिस्सों में उपनिवेशवाद (दूसरों की ग़ुलामी) की मौजूदगी, चाहे जिस शक्ल में हो, न केवल हमारे सांस्कृतिक सहयोग को रोकती है बल्कि वहां की जनता की राष्ट्रीय संस्कृतियों को भी कुचलती है.

میں بھی اپنے ایجنٹ بھیج کر کانفرنس کو اسپھل بنانے کا بھرسک پریتن کیا تھا .

پردھان منتری چاؤ - این - لائی نے اِس کانفرنس میں بولتے ہوئے کہا :—"شری نہرو سے مجھے یہ پتہ چلا ہے کہ بریٹین کے پردھان منتری سر اینتھنی ایڈن کو شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنے کے یہ پانچ سدھانت منظور ہیں . یدی یہ سچ ہے تو میں انگلینڈ کے ساتھ بھی سنیکت بیان پر ویسے ہی دستخط کرنے کو تیار ہوں جیسے میں نے ہندستان اور برما کے ساتھ کئے ہیں ."

امریکی سامراج‌وادیوں کی دست‌اندازی کے باوجود بانڈونگ کانفرنس پوری طرح کامیاب ہوئی' اور سامراج‌وادیوں کو وہاں ایک زبردست دھکا پہونچا .

بانڈونگ سمیلن کے بعد 29 دیشوں کا ایک مت سے جو اعلان نکلا اُس میں پنچ شیل کے یہ پانچوں اصول پوری طرح شامل اور سویکار کر لئے گئے ہیں. یہ اعلان دنیا کے سب اخباروں میں چھپ چکا ہے .

چین کے پردھان منتری چاؤ - این - لائی نے بانڈونگ سمیلن سے واپس آکر جکارتا میں کہا کہ بانڈونگ سمیلن کا اعلان پنچ شیل کا ہی نیا ایڈیشن ہے .

30 اپریل کو بھارت کی پارلیمنٹ میں بانڈونگ کانفرنس پر بولتے ہوئے شری نہرو نے کہا :—

"بانڈونگ میں وشو شانتی اور سہیوگ پر جو اعلان نکلا ہے اُس میں ہمیں پنچ شیل کے پانچوں اصول پوری طرح شامل ملتے ہیں اور اُن کے علاوہ وہ تفصیل ملتی ہے جو اِن پانچوں اصولوں کو اور زیادہ مضبوط کردیتی ہے......ہمیں خوش ہونے کے لئے کافی وجہ ہے کہ بانڈونگ کانفرنس نے' جس میں دنیا کی آدھی سے زیادہ آبادی کے نمائندے شامل تھے' یہ اعلان کردیا ہے کہ اگر دنیا میں امن قائم رکھنا ہے اور راشٹروں راشٹروں کے بیچ سہیوگ حاصل کرنا ہے تو دنیا کے دیشوں کے آپسی سمبندھ اِنھیں اصولوں پر قائم ہونے چاہئیں ."

اِس سمیلن میں سب سے بڑی جیت ایکتا کی ہوئی . سبھی ایشیائی افریقی ملکوں کے پرتندھیوں نے سب پرستاؤں کو ایک رائے سے پاس کیا .

اُپنویش‌واد (دوسروں کی غلامی) کے خلاف پرستاؤ سامراج‌وادیوں کے لئے ایک زبردست چنوتی ہے . اِس پرستاؤ میں کہا گیا ہے :—

"ایشیا اور افریقہ کے ملکوں کا یہ سمیلن اِس سچائی کو سویکار کرتا ہے کہ ایشیا کے بہت سے حصوں میں اُپنویش‌واد (دوسروں کی غلامی) کی موجودگی' چاہے جس شکل میں ہو' نہ کیول ہمارے سانسکرتک سہیوگ کو روکتی ہے بلکہ وہاں کی جنتا کی راشٹریہ سنسکرتیوں کو بھی کچلتی ہے .

के बाद मैंने देखा कि चाउ-नेहरू के संयुक्त बयान पर जापानी जनता में इतना जोश था कि मैं उसे बयान नहीं कर सकता. सब देशों के नर नारी आज भारत चीन की दोस्ती और पञ्चशील को अमन की एक मात्र उम्मीद समझते हैं."

कलकत्ते की हिन्द चीन मैत्री कान्फ़रेन्स

21 अपरेल से 24 अपरेल सन 1955 तक कलकत्ते में भारत-चीन मैत्री संघ की एक कुल-हिन्द कान्फ़रेन्स हुई थी जिसमें पीकिंग के चीन-भारत मैत्री संघ की तरफ़ से भी एक प्रतिनिधि मंडल आया था और दिल्ली के चीनी राजदूत जनरल यू-आंग ने भी हिस्सा लिया था. कलकत्ते की उस भारत-चीन मैत्री कान्फ़रेन्स ने भी पञ्चशील के पांचों सिद्धान्तों को दुनिया के सब देशों के मिलकर शान्तिपूर्वक रहने का आधार ऐलान किया, और इन्हीं की रोशनी में दिल्ली की एशियाई कान्फ़रेन्स की तरह अमरीका से मांग की कि वह अपनी फ़ौजें ताइवान (फ़ारमूसा) से हटा ले और ताइवान को जनवादी चीन के हवाले कर दे. कलकत्ता कान्फ़रेन्स ने यह भी पास किया कि च्यांग-काई-शेक के नुमाइन्दे को चीन के नाम पर यू० एन० ओ० में बैठने का कोई हक़ नहीं है और उसे वहां से हटाकर जनवादी चीन के नुमाइन्दे को उसकी जगह दी जानी चाहिये, और कोई देश किसी दूसरे देश के अन्दर के मामलों में दख़ल न दे.

बांडुंग एशियाई अफ़रीक़ी कान्फ़रेन्स

18 अपरेल से 24 अपरेल तक के एशियाई अफ़रीक़ी बांडुंग सम्मेलन में इन्डोनेशिया के प्रधान मंत्री ने 'पंचशील' का समर्थन करते हुए कहा :—

"पञ्चशील" की यह आलोचना की जाती है कि संयुक्त राष्ट्र संघ के घोषणा-पत्र (ऐलान) में ये सब सिद्धान्त आगए, इसलिये इसकी कोई अलग आवश्यकता नहीं है, या फिर ये घोषणा-पत्र के अनुसार नहीं हैं.........यह भी कहा जाता है कि ये कम्यूनिस्टों की उपज हैं. पर ये सिद्धान्त हम सब से गहरा सम्बन्ध रखते हैं. दुर्भाग्य से इन सिद्धान्तों के बारे में बहुत सी ग़लतफ़हमियां हैं. यह इसलिये हैं क्योंकि ये सिद्धान्त एशिया और अफ़रीक़ा के उन नेताओं ने निकाले हैं जिनको अभी तक असलियत से परे सपनों की दुनिया में बसने वाले कहा जाता है. असलियत से परे सपनों की दुनिया में बसने वाले कौन हैं ? क्या वे लोग हैं जो इन सिद्धान्तों पर विश्वास करते हैं, या वे लोग हैं जो इस तरह के मायाजाल को फैलाते हैं कि ऐटम और हाइड्रोजन बम ही दुनिया में शान्ति क़ायम कर सकते हैं ?"

ज़ाहिर है कि इन सिद्धान्तों के ख़िलाफ़ वही साम्राज-वादी हैं जो ऐटम और हाइड्रोजन बम की दौड़ में दुनिया को तबाह करना चाहते हैं, और जिन्होंने इस बांडुंग सम्मेलन

کے بعد میں نے دیکھا کہ چاؤ نہرو کے سنیکت بیان پر جاپانی جنتا میں اتنا جوش تھا کہ میں اسے بیان نہیں کرسکتا . سب دیشوں کے نرناری آج بھارت چین کی دوستی اور پنچ شیل کو امن کی ایک ماتر اُمید سمجھتے ہیں ."

کلکتے کی ہند چین میتری کانفرنس

21 اپریل سے 24 اپریل سن 1955 تک کلکتے میں بھارت چین میتری سنگھ کی ایک کل-ہند کانفرنس ہوئی تھی جس میں پیکنگ کے چین-بھارت میتری سنگھ کی طرف سے بھی ایک پرتینِدھی منڈل آیا تھا اور دلی کے چینی راجدوت جنرل یو-آنگ نے بھی حصہ لیا تھا. کلکتے کی اُس بھارت-چین میتری کانفرنس نے بھی پنچ شیل کے پانچوں سدھانتوں کو دنیا کے سب دیشوں کے ملکر شانتی پوروک رہنے کا آدھار اعلان کیا اور انہیں کی روشنی میں دلی کی ایشیائی کانفرنس کی طرح امریکہ سے مانگ کی کہ وہ اپنی فوجیں تائیوان (فارموسا) سے ہٹالے اور تائیوان کو جن‌وادی چین کے حوالے کردے . کلکتہ کانفرنس نے یہ بھی پاس کیا کہ چیانگ کائی شیک کے نمائندے کو چین کے نام پر یو-این-او-میں بیٹھنے کا کوئی حق نہیں ہے اور اُسے وہاں سے ہٹاکر جن‌وادی چین کے نمائندے کو اُس کی جگہ دی جانی چاہئے' اور کوئی دیش کسی دوسرے دیش کے اندر کے معاملوں میں دخل نہ دے .

باندونگ ایشیائی افریقی کانفرنس

18 اپریل سے 24 اپریل تک کے ایشیائی افریقی باندونگ سمیلن میں انڈونیشیا کے پردھان منتری نے 'پنچ شیل' کا سمرتھن کرتے ہوئے کہا :—

"پنچ شیل کی یہ آلوچنا کی جاتی ہے کہ سنیکت راشٹر سنگھ کے گھوشناپتر (اعلان) میں یہ سب سدھانت آگئے' اِس لئے اس کی کوئی الگ آوشیکتا نہیں ہے' یا پھر یہ گھوشناپتر کے انوسار نہیں ہیں . . . یہ بھی کہا جاتا ہے کہ یہ کمیونسٹوں کی اُپج ہیں . پر یہ سدھانت ہم سب سے گہرا سمبندھ رکھتے ہیں. دربھاگیہ سے اِن سدھانتوں کے بارے میں بہت سی غلط فہمیاں ہیں . یہ اس لئے ہیں کیونکہ یہ سدھانت ایشیا اور افریقہ کے اُن نیتاؤں نے نکالے ہیں جن کو ابھی تک اصلیت سے پرے سپنوں کی دنیا میں بسنے والے کہا جاتا ہے . اصلیت سے پرے سپنوں کی دنیا میں بسنے والے کون ہیں ؟ کیا وے لوگ ہیں جو اِن سدھانتوں پر وشواس کرتے ہیں' یا وہ لوگ ہیں جو اِس طرح کے مایا جال کو پھیلاتے ہیں کہ ایٹم اور ہائیڈروجن بم ہی دنیا میں شانتی قائم کرسکتے ہیں ؟"

ظاہر ہے کہ اِن سدھانتوں کے خلاف وہی سامراج‌وادی ہیں جو ایٹم اور ہائیڈروجن بم کی دوڑ میں دنیا کو تباہ کرنا چاہتے ہیں' اور جنہوں نے اِس باندونگ سمیلن

सक हैं. इसीलिए विश्व शांति परिशद, कुल भारत शांति परिशद और हर देश में वहां की मुक़ामी शांति परिशद सब ने लगातार इन सिद्धांतों का प्रचार किया है. विश्व शांति परिशद के क़ायम होने के समय परिशद के प्रेसीडेंट प्रो० जोल्यो क्यूरी ने नीचे लिखे सिद्धांतों पर शांति आंदोलन की रूप रेखा क़ायम की थी :—

(1) विश्व यानी दुनिया में अलग अलग सामाजिक व्यवस्थाओं वाले देश शांतिपूर्वक साथ साथ रह सकते हैं.

(2) राष्ट्रों के बीच सब मतभेद आपसी बातचीत और समझौते से और सब की मंजूरी से तय होने चाहिएं.

(3) किसी भी देश के अन्दर के मामले और मतभेद केवल वहां के लोगों के घरेलू मामले हैं, जिनमें किसी बाहर वाले को दख़ल देने का हक़ नहीं है.

विश्व शांति आंदोलन के शुरू से ही विश्व शांति परिशद ने इन सिद्धांतों के प्रचार और मंजूरी के लिए दुनिया भर में आंदोलन किया. ये सिद्धांत पञ्चशील से मिलते जुलते हैं.

विश्व शान्ति आन्दोलन ने सब देशों की मुकम्मिल आज़ादी और अखंडता की रक्षा के लिये आवाज़ उठाई. उसने किसी देश पर किसी दूसरे देश के हमले का हमेशा विरोध किया.

विश्व शान्ति आन्दोलन ने ऐसी तमाम संधियों और गुटबन्दियों का हमेशा विरोध किया जो एक ताक़तवर राष्ट्र दबाव डालकर या धमकी देकर दूसरे राष्ट्रों पर अपना राजनैतिक, आर्थिक या फ़ौजी असर क़ायम करने के लिये करना चाहता है.

कुल भारत शान्ति परिषद ने इन सिद्धान्तों को पूरे भारत में जनता तक पहुंचाने के लिये लगातार काम किया है.

कुल भारत शान्ति परिषद ऐटम और हाइड्रोजन बमों के ख़िलाफ़ हमेशा आवाज़ उठाती रही है और इन हिंसक हथियारों के बन्द कराने के लिये लाखों की तादाद में जनता से दस्तख़त कराती रही है.

विश्व शान्ति परिषद ने अपनी नवम्बर 1954 की बैठक में चाऊ-नेहरू के इन पांच सिद्धान्तों का पूरी तरह समर्थन किया और देश देश में इसका प्रचार करने का बीड़ा उठाया.

जापान की शान्ति परिषद के प्रेसीडेन्ट प्रसिद्ध देश भक्त प्रो० इकुओ-आयोमा (Pro. Ikuo-Oyama) ने कहा है :—

"जापान की जनता ने पञ्चशील को एशिया की शान्ति और विश्व शान्ति और सुरक्षा की एक रोशनी के रूप में स्वीकार कर लिया है. कई हफ़्ते पूरे जापान का दौरा करने

رخ ھیں . اِسی لئے وشوشانتی پریشد' کل بھارت شانتی پریشد اور ھر دیش میں وھاں کی مقامی شانتی پریشد سب نے لگاتار اِن سدھانتوں کا پرچار کیا ھے . وشوشانتی پریشد کے قائم ھونے کے سمے پریشد کے پریسیڈنٹ پروفیسر جولیو کیوری نے نیچے لکھے سدھانتوں پر شانتی آندولن کی روپ ریکھا قائم کی تھی :—

(1) وشو یعنی دنیا میں الگ الگ سماجک ویوستھاؤں والے دیش شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہ سکتے ھیں .

(2) راشٹروں کے بیچ سب متبھید آپسی بات چیت اور سمجھوتے سے اور سب کی منظوری سے طے ھونے چاھئیں .

(3) کسی بھی دیش کے اندر کے معاملے اور متبھید کیول وھاں کے لوگوں کے گھریلو معاملے ھیں' جن میں کسی باھر والے کو دخل دینے کا حق نہیں ھے .

وشوشانتی آندولن کے شروع سے ھی وشوشانتی پریشد نے اِن سدھانتوں کے پرچار اور منظوری کے لئے دنیا بھر میں آندولن کیا . یہ سدھانت پنچ شیل سے ملتے جلتے ھیں .

وشوشانتی آندولن نے سب دیشوں کی مکمل آزادی اور اکھنڈتا کی رکشا کے لئے آواز اُٹھائی . اُس نے کسی دیش پر کسی دوسرے دیش کے حملے کا ھمیشہ ورودھ کیا .

وشوشانتی آندولن نے ایسی تمام سندھیوں اور گٹ بندیوں کا ھمیشہ ورودھ کیا جو ایک طاقتور راشٹر دباؤ ڈال کر یا دھمکی دے کر دوسرے راشٹروں پر اپنا راجنیتک' آرتھک یا فوجی اثر قائم کرنے کے لئے کرنا چاھتا ھے .

کل بھارت شانتی پریشد نے اِن سدھانتوں کو پورے بھارت میں جنتا تک پہونچانے کے لئے لگاتار کام کیا ھے .

کل بھارت شانتی پریشد ایٹم اور ھائڈروجن بموں کے خلاف ھمیشہ آواز اُٹھاتی رھی ھے اور اِن ھنسک ھتھیاروں کے بند کرانے کے لئے لاکھوں کی تعداد میں جنتا سے دستخط کراتی رھی ھے .

وشوشانتی پریشد نے اپنی نومبر 1954 کی بیٹھک میں چو - نہرو کے اِن پانچ سدھانتوں کا پوری طرح سمرتھن کیا اور دیش دیش میں اِس کا پرچار کرنے کا بیڑا اُٹھایا .

جاپان کی شانتی پریشد کے پریسیڈنٹ پرسدھ دیش بھکت پروفیسر اِکواو - اویاما (Prof. Ikuo-Oyama) نے کہا ھے :—

"جاپان کی جنتا نے پنچ شیل کو ایشیا کی شانتی اور وشوشانتی اور سرکشا کی ایک روشنی کے روپ میں سویکار کرلیا ھے . کئی ھفتے پورے جاپان کا دورہ کرنے

संयुक्त राष्ट्र संघ में बैठने का च्यांग-काई-शेक के नुमाइन्दे को कोई हक़ नहीं है, उसे वहां से हटाकर जनवादी चीन के सच्चे नुमाइन्दे को उसकी जगह दी जानी चाहिए, फ़िलिस्तीन में अरबों के साथ ज़ुल्म और उनके देश में ग़ैरों की मदाख़लत बन्द होनी चाहिए, वग़ैरा वग़ैरा.

दिल्ली के इस एशियाई सम्मेलन में पूरबी बंगाल के संयुक्त मोर्चे और पाकिस्तानी प्रतिनिधि मंडल के नेता मौलाना भाशानी ने कहा था :—

"मेरी मातृ-भूमि के हाकिम 'दक्खिन पूरबी एशियाई सुरक्षा संस्था (S. E. A. D. O.)' में शामिल हो गये हैं जिसकी एशिया के अधिकतर मुल्कों ने निन्दा की है. साम्राजवादी जहां भी युद्ध का जाल फैलाते हैं चाहे वह फ़ौजी समझौता हो या गठबंधन, वहां जनतंत्र का चिराग़ बुझ जाता है और युद्ध का ख़तरा बढ़ जाता है.

"एशिया के देश युद्ध नहीं चाहते. युद्ध की नीति और इनसानी ख़ुशहाली साथ साथ नहीं चल सकतीं. आपको इन दोनों में से एक को चुनना पड़ेगा. क्या ही अच्छा हो कि मेरा देश पाकिस्तान पंचशील को स्वीकार करले. यदि मेरा देश पंचशील को मान ले तो मैं आसानी से कल्पना कर सकता हूं कि भारत और पाकिस्तान के सब झगड़े जो अभी तक नहीं सुलझे बहुत जल्दी सुलझ जाएंगे.

"मैं आशा करता हूं कि आगामी एशियाई अफ़रीक़ी बांडुंग कान्फ़रेंस (18 से 24 अप्रैल सन 1955) में आने वाले सब राष्ट्र पञ्चशील के उसूलों को स्वीकार कर लेंगे. मैं यह भी उम्मीद करता हूं कि एशिया और अफ़रीक़ा के देश पञ्चशील को कारामद बनाने के लिए आवश्यक क़दम उठाएंगे."

इसी एशियाई सम्मेलन में बोलते हुए जनवादी चीन के वाइस चेयरमैन को-मो-जो ने कहा था :—

"चीन की जनता को इस बात का अभिमान है कि सब राष्ट्रों के शान्तिपूर्वक साथ साथ रहने के पांच सिद्धान्तों की पहल क़दमी करने वाले दो मुल्कों में से एक चीन है. हमारी यह हार्दिक इच्छा है कि साथ साथ मिलकर रहने की बुनियाद पर एशिया और तमाम दुनिया के मुल्कों से हम प्रेम क़ायम करें. हम पूरी तरह विश्वास करते हैं कि पञ्चशील के सिद्धान्तों पर ही अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों को ठीक ठीक क़ायम किया जा सकता है और मज़बूती के साथ आगे बढ़ाया जा सकता है. पर कुछ देशों के शासक शांति पूर्वक साथ साथ रहने के बिलकुल ख़िलाफ़ हैं. अमरीकी राज मंत्री जान फ़ोस्टर डलेस को इसमें भी 'एक नई चाल' और 'ख़तरा' दिखाई देता है."

विश्व शान्ति आन्दोलन

पञ्चशील और विश्व शांति दोनों एक ही तसवीर के दो

سنیکت راشٹر سنگھ میں بیٹھنے کا چیانگ کائی شیک کے نمائندے کو کوئی حق نہیں ہے، اسے وہاں سے ہٹاکر جن‌وادی چین کے سچے نمائندے کو اس کی جگہ دی جانی چاہئے، فلسطین میں عربوں کے ساتھ ظلم اور ان کے دیش میں غیروں کی مداخلت بند ہونی چاہئے وغیرہ وغیرہ.

دلی کے اس ایشیائی سمیلن میں پوربی بنگال کے سنیکت مورچے اور پاکستانی پرتینیدھی منڈل کے نیتا مولانا بھاشانی نے کہا تھا :—

"میری ماتربھومی کے حاکم 'دکھن پوربی ایشیائی سرکشا سنستھا (S.E.A.D.O.)' میں شامل ہوگئے ہیں جس کی ایشیا کے ادھکتر ملکوں نے نندا کی ہے. سامراج‌وادی جہاں بھی یدھ کا جال پھیلاتے ہیں چاہے وہ فوجی سمجھوتہ ہو یا گٹھ بندھن' وہاں جن‌تنتر کا چراغ بجھ جاتا ہے اور یدھ کا خطرہ بڑھ جاتا ہے.

"ایشیا کے دیش یدھ نہیں چاہتے. یدھ کی نیتی اور انسانی خوشحالی ساتھ ساتھ نہیں چل سکتیں. آپ کو ان دونوں میں سے ایک کو چننا پڑیگا. کیا ہی اچھا ہو کہ میرا دیش پاکستان پنچ شیل کو سویکار کرلے. یدی میرا دیش پنچ شیل کو مان لے تو میں آسانی سے کلپنا کرسکتا ہوں کہ بھارت اور پاکستان کے سب جھگڑے جو ابھی تک نہیں سلجھے بہت جلدی سلجھ جائینگے.

"میں آشا کرتا ہوں کہ آگامی ایشیائی افریقی بانڈونگ کانفرنس (18 سے 24 اپریل سن 1955) میں آنے والے سب راشٹر پنچ شیل کے اصولوں کو سویکار کرلینگے. میں یہ بھی امید کرتا ہوں کہ ایشیا اور افریقہ کے دیش پنچ شیل کو کارآمد بنانے کے لئے آوشیک قدم اٹھائینگے."

اسی ایشیائی سمیلن میں بولتے ہوئے جن‌وادی چین کے وائس چیرمین کو - مو - جو نے کہا تھا :—

"چین کی جنتا کو اس بات کا ابھیمان ہے کہ سب راشٹروں کے شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنے کے پانچ سدھانتوں کی پہل قدمی کرنے والے دو ملکوں میں سے ایک چین ہے. ہماری یہ ہاردک اچھا ہے کہ ساتھ ساتھ ملکر رہنے کی بنیاد پر ایشیا اور تمام دنیا کے ملکوں سے ہم پریم قائم کریں. ہم پوری طرح وشواس کرتے ہیں کہ پنچ شیل کے سدھانتوں پر ہی انتر راشٹریہ سمبندھوں کو ٹھیک ٹھیک قائم کیا جاسکتا ہے اور مضبوطی کے ساتھ آگے بڑھایا جاسکتا ہے پر کچھ دیشوں کے شاسک شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنے کے بالکل خلاف ہیں. امریکی راج منتری جان فوسٹر ڈلس کو اس میں بھی 'ایک نئی چال' اور 'خطرہ' دکھائی دیتا ہے."

وشو شانتی آندولن

پنچ شیل اور وشو شانتی دونوں ایک ہی تصویر کے دو

सिद्धान्तों की भरसक सराहना की है. लंदन के पत्र "डेली हैराल्ड" ने लिखा है :-"इतिहास 1954 का साल चाउ-नेहरू की दिल्ली बात चीत के लिए सदा याद किया जायगा."
इसी तरह इन्डोनेशिया, बरमा, जापान, बग़दाद जैसी अनेक जगहों के अखबारों ने अपने अपने सम्पादकी लेखों में पंचशील की प्रशंसा की है. रूस के दैनिक पत्र "प्रावदा" ने लिखा है :—"इसमें कोई शक नहीं कि ये सबसे अच्छे पांच सिद्धान्त यदि एशिया और दूसरे मुल्कों ने अपना लिए तो युद्ध का खतरा कम हो जायगा, अन्तर्राष्ट्रीय तनाव कम करने में मदद मिलेगी और मुल्कों मुल्कों के बीच मिलकर रहने और मिलकर काम करने की सम्भावना बढ़ जायगी."

श्री नेहरू ने बड़े ज़ोरदार शब्दों में कहा था :—

"अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को शान्ति के साथ सुलझाने की भावना रखने वाला ऐसा कोई राष्ट्र नहीं जो इन पांच सिद्धान्तों से सहमत न हो. आज संसार में दिक़्क़तें इसलिए पैदा हो गई हैं क्योंकि एक देश दूसरे देश पर हुकूमत करता है और एक दूसरे के मामलों में दस्तन्दाज़ी की जाती है."

प्रधान मंत्री चाउ-ऐन-लाई ने पंचशील पर बोलते हुए कहा था :—

"इन पांच सिद्धान्तों के आधार पर दुनिया के तमाम राष्ट्र शान्तिपूर्वक साथ साथ रह सकते हैं; चाहे वे मुल्क छोटे हों या बड़े, बलवान हों या कमज़ोर, और उनकी चाहे कुछ भी सामाजिक व्यवस्था हो. हर राष्ट्र की जनता की क़ौमी आज़ादी और खुद फ़ैसले के अधिकार का हमें आदर करना चाहिए. यदि दुनिया के सब राष्ट्र इन सिद्धान्तों की बुनियाद पर अपने संबंध क़ायम कर लें तो कोई दूसरे पर हमला नहीं कर सकेगा, और दुनिया के सब राष्ट्र सचमुच शान्ति से साथ साथ रहने लगेंगे."

दिल्ली की एशियाई कान्फ़रेन्स

6 अप्रैल से 10 अप्रैल 1955 तक दिल्ली में एक बहुत बड़ी ग़ैर सरकारी एशियाई कान्फ़रेंस हुई थी जिसमें भारत, पाकिस्तान, लंका, बरमा, हिन्द-चीन, इन्डोनेशिया, चीन, कोरिया, जापान, एशियाई रूस, सीरिया और दूसरे अरब देशों को मिलाकर 18 देशों के 200 नुमाइन्दों ने हिस्सा लिया था. कान्फ़रेंस ने एक राय से यह तजवीज़ पास की कि दुनिया के और ख़ास कर एशिया के सब देशों के आपसी संबंध पंचशील के पांच सुनहरे असूलों पर ही क़ायम होने चाहिएं. पंचशील के इन असूलों की रोशनी में ही कान्फ़रेंस ने इस तरह के प्रस्ताव भी पास किए कि हिन्द-चीन में बाहर के देशों की दस्तन्दाज़ी बन्द होनी चाहिए, ताइवान (फ़ारमूसा) से अमरीका को अपना जहाज़ी बेड़ा और अपनी फ़ौजें हटाकर ताइवान और आस पास के सब टापू जनवादी चीन के हवाले कर देने चाहिएं, चीन की तरफ़ से

سدھانتوں کی بھرسک سراھنا کی ھے. لندن کے پتر "ڈیلی ھیرالڈ" نے لکھا ھے :—"اِتہاس میں 1954 کا سال چاؤ نہرو کی دلی بات چیت کے لئے سدا یاد کیا جائےگا."
اِسی طرح انڈونیشیا، برما، جاپان، بغداد جیسی انیک جگہوں کے اخباروں نے اپنے سمپادکی لیکھوں میں پنچ شیل کی پرشنسا کی ھے. روس کے دینک پتر "پراودا" نے لکھا ھے :—
"اِس میں کوئی شک نہیں کہ یہ سب سے اچھے پانچ سدھانت یدی ایشیا اور دوسرے ملکوں نے اپنالئے تو یدھ کا خطرہ کم ھو جائےگا، انتر راشٹریہ تناؤ کم کرنے میں مدد ملےگی اور ملکوں ملکوں کے بیچ ملکر رھنے اور ملکر کام کرنے کی سمبھاؤنا بڑھ جائیگی."

شری نہرو نے بڑے زوردار شبدوں میں کہا تھا :—

"انتر راشٹریہ سمسیاؤں کو شانتی کے ساتھ سلجھانے کی بھاونا رکھنے والا ایسا کوئی راشٹر نہیں جو ان پانچ سدھانتوں سے سہمت نہ ھو. آج سنسار میں دقتیں اِس لئے پیدا ھوگئی ھیں کیونکہ ایک دیش دوسرے دیش پر حکومت کرتا ھے اور ایک دوسرے کے معاملوں میں دست‌اندازی کی جاتی ھے."

پردھان منتری چاؤ این - لائی نے پنچ شیل پر بولتے ھوئے کہا تھا :—

"ان پانچ سدھانتوں کے آدھار پر دنیا کے تمام راشٹر شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہ سکتے ھیں، چاھے وہ ملک چھوٹے ھوں یا بڑے، بلوان ھوں یا کمزور، اور اُن کی چاھے کچھ بھی ساماجک ویوستھا ھو. ھر راشٹر کی جنتا کی قومی آزادی اور خود فیصلے کے ادھیکار کا ھمیں آدر کرنا چاھئے. یدی دنیا کے سب راشٹر اِن سدھانتوں کی بنیاد پر اپنے سمبندھ قائم کرلیں تو کوئی دوسرے پر حملہ نہیں کرسکےگا، اور دنیا کے سب راشٹر سچ مچ شانتی سے ساتھ ساتھ رھنے لگینگے."

دلی کی ایشیائی کانفرنس

6 اپریل سے 10 اپریل 1955 تک دلی میں ایک بہت بڑی غیر سرکاری ایشیائی کانفرنس ھوئی تھی جس میں بھارت، پاکستان، لنکا، برما، ھند چین، انڈونیشیا، چین، کوریا، جاپان، ایشیائی روس، سیریا اور دوسرے عرب دیشوں کو ملاکر 18 دیشوں کے 200 نمائندوں نے حصہ لیا تھا. کانفرنس نے ایک رائے سے یہ تجویز پاس کی کہ دنیا کے اور خاص کر ایشیا کے سب دیشوں کے آپسی سمبندھ پنچ شیل کے پانچ سنہرے اصولوں پر ھی قائم ھونے چاھئیں. پنچ شیل کے اِن اصولوں کی روشنی میں ھی کانفرنس نے اِس طرح کے پرستاؤ بھی پاس کئے کہ ھند چین میں باھر کے دیشوں کی دست‌اندازی بند ھونی چاھئے، تائیوان (فارموسا) سے امریکہ کو اپنا جہازی بیڑا اور اپنی فوجیں ھٹاکر تائیوان اور آس پاس کے سب ٹاپو جن‌وادی چین کے حوالے کردینے چاھئیں، چین کی طرف سے

अब उन्होंने दूसरे तरीक़े निकाले हैं. वह फ़ौजी संगठन बनाते हैं और कुछ एशियाई देशों को लालच देकर अपने गुट में मिलाना चाहते हैं. यदि इन फ़ौजी समझौतों को हम ध्यान से देखें तो उन संगठनों में आने के बाद इन देशों को अपनी आज़ादी त्याग देनी पड़ती है.

इस तरह के दो सबसे बड़े फ़ौजी संगठन 'सीटो' और 'नाटो' कहलाते हैं. सीटो का अर्थ है दक्खिन पूरबी एशियाई देशों का संगठन. नाटो का अर्थ है उत्तर अटलांटिक शक्तियों का संगठन. कहा जाता है कि यह फ़ौजी संगठन सामूहिक सुरक्षा के लिये हैं. सामूहिक सुरक्षा का अर्थ है कि यदि 'सीटो' के एक राष्ट्र स्याम पर कोई हमला होता है तो सीटो नामक फ़ौजी गुट के सारे राष्ट्रों को उसकी सहायता करनी पड़ेगी. सहायता कैसे की जाय, यह अमरीकी सरकार तय करेगी. और जो सेना शत्रु का मुक़ाबला करेगी उसकी कमान अमरीका के हाथ में रहेगी, और वह राष्ट्र कठपुतली बनकर अमरीका के इशारों पर नाचेगा. इन फ़ौजी गुटबन्दियों का केवल यह मतलब है कि एशिया वालों को एशिया वालों से लड़ाया जाय और अपना मतलब सिद्ध किया जाय. इन चालों को विफल करने का तरीक़ा पंचशील है.

भारत में अंग्रेज भी तरह तरह की संधियां कर चुके हैं. वह हमारे राजाओं को एक दूसरे से लड़ाते थे. किसी एक के मित्र बनकर दूसरे को पराजित करते थे और फिर दोनों को गुलाम बना लेते थे. इतिहास गवाह है कि किसी भी लड़ाई में यदि एक तरफ़ खाली अंग्रेज थे और दूसरी तरफ़ खाली हिन्दुस्तानी तो अंग्रेजों को कभी भी विजय नहीं मिली. इसलिये अङ्गरेज हिंदुस्तानियों के साथ मिलकर हिदुस्तानियो को हराते थे. ठीक यही नीति आज अमरीकी एशिया में चला रहे हैं. इस नीति का खन्डन केवल पचशील कर सकता है.

इस तरह पञ्चशील हमारी सुरक्षा, शांति और विकास के लिये सबसे आवश्यक है.

18 अप्रैल से 24 अप्रैल सन 1955 तक इंडोनेशिया के बांडुंग शहर में 29 एशियाई और अफ़रीक़ी राष्ट्रों की एक कांफ़रेंस हुई थी. उस कांफरेंस की राजनैतिक समिति में बोलते हुए श्री नेहरू ने कहा था कि :—

"उपनिवेशवाद (दूसरे देशों की गुलामी) का सबसे बड़ा रक्षक और समर्थक 'नाटो' है......पच्छिम के नाटो राष्ट्रों ने गोवा में भारत को नीचा दिखाने का प्रयत्न करके सबसे बड़ी बदतमीज़ी का सबूत दिया है......यदि नाटो की गुट न हो तो उत्तरी अफ़रीक़ा के देश आज आज़ाद हो जाएँ."

पंचशील पर दुनिया की राय

सभी मुल्कों की अमनपसन्द जनता ने पंचशील के पांच

اب اُنھوں نے دوسرے طریقے نکالے ہیں. وہ فوجی سنگھٹن بناتے ہیں اور کچھ ایشیائی دیشوں کو لالچ دےکر اپنے گٹ میں ملانا چاہتے ہیں. یدی اِن فوجی سمجھوتوں کو ہم دھیان سے دیکھیں تو اِن سنگٹھنوں میں آنے کے بعد اِن دیشوں کو اپنی آزادی تیاگ دینی پڑتی ہے.

اِس طرح کے دو سب سے بڑے فوجی سنگٹھن 'سی ٹو' اور 'ناٹو' کہلاتے ہیں. سی ٹو کا ارتھ ہے دکھن پوربی ایشیائی دیشوں کا سنگٹھن. ناٹو کا ارتھ ہے اُتر اٹلانٹک شکتیوں کا سنگٹھن. کہا جاتا ہے کہ یہ فوجی سنگٹھن سامُوہک سرکشا کے لئے ہیں. سامُوہک سرکشا کا ارتھ ہے کہ یدی 'سی ٹو' کے ایک راشٹر سیام پر کوئی حملہ ہوتا ہے تو سی ٹو نامک فوجی گٹ کے سارے راشٹروں کو اُس کی سہائتا کرنی پڑےگی. سہائتا کیسے کی جائے یہ امریکی سرکار طے کرےگی. اور جو سینا شترو کا مقابلہ کرےگی اُس کی کمان امریکہ کے ہاتھ میں رہےگی' اور وہ راشٹر کٹھ پتلی بن کر امریکہ کے اشاروں پر ناچےگا. اِن فوجی گٹ بندیوں کا کیول یہ مطلب ہے کہ ایشیا والوں کو ایشیا والوں سے لڑایا جائے اور اپنا مطلب سدھ کیا جائے. اِن چالوں کو وِپھل کرنے کا طریقہ پنچ شیل ہے.

بھارت میں انگریز بھی طرح طرح کی سندھیاں کرچکے ہیں. وہ ہمارے راجاؤں کو ایک دوسرے سے لڑاتے تھے. کسی ایک کے مِتر بنکر دوسرے کو پراجت کرتے تھے اور پھر دونوں کو غلام بنا لیتے تھے. اتہاس گواہ ہے کہ کسی بھی لڑائی میں یدی ایک طرف خالی انگریز تھے اور دوسری طرف خالی ہندستانی تو انگریزوں کو کبھی بھی وجے نہیں ملی. اِس لئے انگریز ہندستانیوں کے ساتھ ملکر ہندستانیوں کو ہراتے تھے. ٹھیک یہی نیتی آج امریکی ایشیا میں چلا رہے ہیں. اِس نیتی کا کھنڈن کیول پنچ شیل کرسکتا ہے.

اِس طرح پنچ شیل ہماری 'سرکشا' شانتی اور وکاس کے لئے سب سے آوشیک ہے.

18 اپریل سے 24 اپریل سن 1955 تک انڈونیشیا کے بانڈونگ شہر میں 29 ایشیائی اور افریقی راشٹروں کی ایک کانفرنس ہوئی تھی. اُس کانفرنس کی راج نیتک سمیتی میں بولتے ہوئے شری نہرو نے کہا تھا کہ :—

"اُپنویش واد (دوسرے دیشوں کی غلامی) کا سب سے بڑا رکشک اور سمرتھک 'ناٹو' ہے......پچھم کے ناٹو راشٹروں نے گوآ میں بھارت کو نیچا دکھانے کا پریتن کرکے سب سے بڑی بدتمیزی کا ثبوت دیا ہے......یدی ناٹو کی گٹ نہ ہو تو اُتری افریقہ کے دیش آج آزاد ہوجائیں."

پنچ شیل پر دنیا کی رائے

سبھی ملکوں کی امن پسند جنتا نے پنچ شیل کے پانچ

सांड की धौंस सुनकर शेर से जाकर कहा कि सांड आप ऐसे महान् व्यक्ति को चुनौती दे रहा है और कभी सांड के पास जाकर शेर की गरज को सांड का अपमान बताया. दोनों चक्कर में आ गए और लड़ बैठे. इसी तरह साम्राजवादी और उनके पिट्ठू कभी हमसे कहते हैं कि चीन दूसरे ऐशियाई देशों को खा जाएगा और कभी पाकिस्तान और लंका से कहते हैं कि भारत तुम्हें हज़म कर जायगा. इस सारे भ्रम को ख़तम करने का एक मात्र रास्ता पञ्चशील है.

कुछ साम्राजवादी एशिया के देशों में जनतंत्र (डेमोक्रेसी) की रक्षा के लिये ज़मीन आसमान एक किये दे रहे हैं. पर सवाल उठता है कि आज़ाद देशों में ही जनतन्त्र की रक्षा करने का भार वह क्यों अपने सर ओढ़ रहे हैं? जो देश अभी तक उनके अधीन हैं उन्हें आज़ाद करके वह वहां जनतन्त्र क़ायम क्यों नहीं करते? मलाया को आज़ादी क्यों नहीं दी जाती? पच्छिमी एशिया के देशों से ये लोग अपना डेरा डंडा क्यों नहीं उठा ले जाते? अफ़रीक़ा में जनतन्त्र के सिद्धान्तों का खुला उल्लंघन वह क्यों कर रहे हैं? फ़ारमूसा में क्या उन्होंने सचमुच जनतन्त्र क़ायम कर रखा है? दक्खिनी कोरिया में सिंगमैन री की सरकार क्या जनतन्त्र के सिद्धान्तों पर क़ायम है? फ़िलीपाइन और श्याम के जनतन्त्रों का हाल भी खुल चुका है. इन देशों पर क़ब्ज़ा जमाए रखने के लिए किस तरह अमरीकी अपने पिट्ठुओं को क़ायम रखते हैं, यह अब किसी से छिपा नहीं है. पाकिस्तान में अमरीका के क़दम आते ही जनतन्त्र के साथ जो सलूक हुआ वह हमारी आंखें खोलने के लिये काफ़ी है. सच यह है कि जनतन्त्र की दुहाई इन लोगों के लिये केवल एक चाल है जिसकी आड़ में वह शिकार खेलना चाहते हैं. उनके ये नापाक मनसूबे ख़ाक में मिलाने का एक मात्र उपाय पञ्चशील के उसूल हैं.

साम्राजियों की फ़ौजी गुटबन्दियां

इन साम्राजियों को एशिया के देशों से अपने कारख़ानों के लिये कच्चा माल चाहिये, सस्ते मजदूर चाहिएं और अपना तैयार माल बेचने के लिये मंडियां चाहिये. अपना काम बनाने के लिये वह लड़ाई छेड़ना चाहते हैं. पर लड़ाई हो एशिया एशिया वालों में! लड़ाई में वह मंहगे दामों अपने हथियार बेचें और फिर हमें अपना ग़ुलाम बना सकें! कोरिया में उन्होंने लड़ाई छेड़ी. उन्होंने अपील की कि एशियाई देशों की फ़ौजें कोरिया में लड़ने आएं, पर उन्हें सफलता न मिली. जब केवल उनके अपने भोले भाले नौजवान ही कोरिया में मरते चले गए तो उन्होंने लड़ाई बन्द कर दी. हिन्द-चीन में भी उन्होंने ताक़त आज़मा कर देख लिया. वहां के युद्ध में भी वह एशिया वालों की लाशों पर अपने वश का महल नहीं खड़ा कर सके.

سانڈ کی دھونس سنکر شیر سے جاکر کہا کہ سانڈ آپ ایسی مہان ویکتی کو چنوتی دے رہا ھے اور کبھی سانڈ کے پاس جاکر شیر کی گرج کو سانڈ کا اپمان بتایا. دونوں چکر میں آگئے اور لڑ بیٹھے . اِسی طرح سامراج‌وادی اور اُن کے پٹھو کبھی ہم سے کہتے ھیں کہ چین دوسرے ایشیائی دیشوں کو کھاجائیگا اور کبھی پاکستان اور لنکا سے کہتے ھیں کہ بھارت تمھیں ھضم کرجائیگا. اِس سارے بھرم کو ختم کرنے کا ایک ماتر راستہ پنچ شیل ھے .

کچھ سامراج‌وادی ایشیا کے دیشوں میں جن‌تنتر (ڈیموکریسی) کی رکشا کے لئے زمین آسمان ایک کئے دے رھے ھیں . پر سوال اُٹھتا ھے کہ آزاد دیشوں میں ھی جن‌تنتر کی رکشا کرنے کا بھار وہ کیوں اپنے سر اوڑھ رھے ھیں ؟ جو دیش ابھی تک اُن کے ادھین ھیں اُنھیں آزاد کرکے وہ وھاں جن‌تنتر قائم کیوں نہیں کرتے ؟ ملایا کو آزادی کیوں نہیں دی جاتی ؟ پچھمی ایشیا کے دیشوں سے یہ لوگ اپنا ڈیرا ڈنڈا کیوں نہیں اُٹھا لے جاتے ؟ افریقہ میں جن‌تنتر کے سدھانتوں کا کھلا اُلنگھن وہ کیوں کر رھے ھیں ؟ فارموسا میں کیا اُنھوں نے سچ مچ جن‌تنتر قائم کررکھا ھے ؟ دکھنی کوریا میں سنگمینری کی سرکار کیا جن‌تنتر کے سدھانتوں پر قائم ھے ؟ فلپائن اور سیام کے جن‌تنتروں کا حال بھی کھل چکا ھے . اِن دیشوں پر قبضہ جمائے رکھنے کے لئے کس طرح امریکی اپنے پٹھوؤں کو قائم رکھتے ھیں، یہ اب کسی سے چھپا نہیں ھے . پاکستان میں امریکہ کے قدم آتے ھی جن‌تنتر کے ساتھ جو سلوک ہوا وہ ھماری آنکھیں کھولنے کے لئے کافی ھے . سچ یہ ھے کہ جن‌تنتر کی دوھائی اِن لوگوں کے لئے کیول ایک چال ھے جس کی آڑ میں وہ شکار کھیلنا چاھتے ھیں . اُن کے یہ ناپاک منصوبے خاک میں ملانے کا ایک ماتر اُپائے پنچ شیل کے اصول ھیں .

سامراجیوں کی فوجی گٹ بندیاں

اِن سامراجیوں کو ایشیا کے دیشوں سے اپنے کارخانوں کے لئے کچا مال چاھئے، سستے مزدور چاھئیں اور اپنا تیار مال بیچنے کے لئے منڈیاں چاھئیں . اپنا کام بنانے کے لئے وہ لڑائی چھیڑنا چاھتے ھیں . پر لڑائی ھو ایشیا ایشیا والوں میں ! لڑائی میں وہ مہنگے داموں اپنے ہتھیار بیچیں اور پھر ھمیں اپنا غلام بنا سکیں ! کوریا میں اُنھوں نے لڑائی چھیڑی . اُنھوں نے اپیل کی کہ ایشیائی دیشوں کی فوجیں کوریا میں لڑنے جائیں . پر اُنھیں سپھلتا نہ ملی . جب کیول اُن کے اپنے بھولے بھالے نوجوان ھی کوریا میں مرتے چلے گئے تو اُنھوں نے لڑائی بند کردی . ھند چین میں بھی اُنھوں نے طاقت آزماکر دیکھ لیا . وھاں کے یدھ میں بھی وہ ایشیا والوں کی لاشوں پر اپنے بش کا محل نہیں کھڑا کرسکے .

अपनी आजादी क़ायम रख सकते हैं, जो देश अभी तक दूसरों के गुलाम हैं वह गुलामी से छुटकारा पा सकते हैं, एशिया के सब देश एक दूसरे के निकट आकर एकता की डोर में मजबूती से बंध सकते हैं और पूरे महाद्वीप में वह शान्ति क़ायम हो सकती है जिसके बग़ैर एशिया की पूरी शक्ति निर्माण यानी तामीरी कामों की तरफ नहीं लग सकती. एशिया अब सैकड़ों बरस की गुलामी के बाद जाग रहा है. जब हम एशिया के जागरण की बात करते हैं तो उन साम्राजियों का चित्र हमारे सामने सजीव हो उठता है जो अब तक हमें अपने चंगुल में जकड़े हुए थे. उनकी शक्ति कम अवश्य हो गई है पर उनकी साम्राज लालसा अभी मिटी नहीं है. वह भी अपने को अलग अलग कमजोर पाकर एक साथ मिल गए हैं और अपनी सामूहिक शक्ति से हमें फिर से क़बजे में करना और क़बजे में रखना चाहते हैं. उनके पास धन है, साधन हैं, ऐटम बम हैं, जबरदस्त सेनाएं हैं. उनकी साजिशें खुले तौर पर हमारे चारों तरफ जारी हैं. यदि हम होशियार न रहे तो फिर सदियों के लिए गुलाम बन जाने का डर है. अपनी सलामती के लिये हमारे पास सब से बड़ा हथियार एक ही है और वह है हमारी 'एकता.' यह एकता कैसे हो इसका मार्गदर्शन पञ्चशील करता है. इस तरह ऐटम बमों के मुक़ाबले के लिये पंचशील ही हमारा सब से बड़ा हथियार है.

अब हमें दूसरे महायुद्ध के बाद की हालत पर एक निगाह डाल लेनी चाहिये. इन दस बरस का इतिहास हमें बताता है कि एशिया के सब देशों की आजादी एक सूत में बंधी हुई है. भारत को छोड़ने से पहले अङ्गरेजों ने बरमा या लंका को नहीं छोड़ा. डच और फ्रांसीसी भी अङ्गरेजों के भारत छोड़ने के बाद ही अपने को बेबस अनुभव करने लगे. हमारी सबकी गुलामी और आजादी एक दूसरे से बंधी हुई है. यदि हममें से कोई फिर से गुलाम होता है तो हम सबकी आजादी खतरे में पड़ जाती है. आज भी जैसे जैसे एशिया के बड़े देश साम्राजियों से नाता तोड़ते जाते हैं वैसे वैसे ही दूसरे देश भी उनसे अपना दामन बचा रहे हैं. एशिया के सबसे बड़े दो देश चीन और भारत हैं. इन दोनों के कारण दूसरे देशों को साहस मिलता है और वह अपने बंधन काटने में अपने को निस्सहाय महसूस नहीं करते. यदि एशिया को फिर से गुलाम बनने नहीं देना है तो भारत और चीन को अपनी आजादी की भी रक्षा करनी होगी और पूरे एशिया को भी गुलामी से बचाए रखना होगा. इसका रास्ता पञ्चशील के सिवा दूसरा नहीं है.

पच्छमी साम्राजवादी चुप नहीं हैं. कहते कि एक जङ्गल में एक शेर और एक सांड रहते थे. दोनों में दोस्ती थी. एक सियार को उनकी यह दोस्ती नहीं भाई. उसने कभी

اپنی آزادی قائم رکھ سکتے ھیں' جو دیش ابھی تک دوسروں کے غلام ھیں وہ غلامی سے چھٹکارا پا سکتے ھیں' ایشیا کے سب دیش ایک دوسرے کے نکٹ آکر ایکتا کی ڈور میں مضبوطی سے بندھ سکتے ھیں اور پورے مہادیپ میں وہ شانتی قائم ھو سکتی ھے جس کے بغیر ایشیا کی پوری شکتی نرمان یعنی تعمیری کاموں کی طرف نہیں لگ سکتی. ایشیا اب سیکڑوں برس کی غلامی کے بعد جاگ رہا ھے. جب ھم ایشیا کے جاگرن کی بات کرتے ھیں تو اُن سامراجیوں کا چتر ھمارے سامنے سجیو ھو اُٹھتا ھے جو اب تک ھمیں اپنے چنگل میں جکڑے ھوئے تھے. اُن کی شکتی کم اوشیہ ھو گئی ھے پر اُن کی سامراج لالسا ابھی مٹی نہیں ھے. وہ بھی اپنے کو الگ الگ کمزور پاکر ایک ساتھ مل گئے ھیں اور اپنی سامو ھک شکتی سے ھمیں پھر سے قبضے میں کرنا اور قبضے میں رکھنا چاھتے ھیں. اُن کے پاس دھن ھے' سادھن ھیں' ایٹم بم ھیں' زبردست سینائیں ھیں. اُن کی سازشیں کھلے طور پر ھمارے چاروں طرف جاری ھیں. یدی ھم ھوشیار نہ رھے تو پھر صدیوں کے لئے غلام بن جانے کا ڈر ھے. اپنی سلامتی کے لئے ھمارے پاس سب سے بڑا ھتھیار ایک ھی ھے اور وہ ھے ھماری 'ایکتا'. یہ ایکتا کیسے ھو اِس کا مارگ درشن پنچ شیل کرتا ھے. اِس طرح ایٹم بموں کے مقابلے کے لئے پنچ شیل ھی ھمارا سب سے بڑا ھتھیار ھے.

اب ھمیں دوسرے مہا یدھ کے بعد کی حالت پر ایک نگاہ ڈال لینی چاھئے. اِن دس برس کا اتہاس ھمیں بتاتا ھے کہ ایشیا کے سب دیشوں کی آزادی ایک سوت میں بندھی ھوئی ھے. بھارت کو چھوڑنے سے پہلے انگریزوں نے برما یا لنکا کو نہیں چھوڑا. ڈچ اور فرانسیسی بھی انگریزوں کے بھارت چھوڑنے کے بعد ھی اپنے کو بے بس انوبھو کرنے لگے. ھماری سب کی غلامی اور آزادی ایک دوسرے سے بندھی ھوئی ھے. یدی ھم میں سے کوئی پھر سے غلام ھوتا ھے تو ھم سب کی آزادی خطرے میں پڑ جاتی ھے. آج بھی جیسے جیسے ایشیا کے بڑے دیش سامراجیوں سے ناتا توڑتے جاتے ھیں ویسے ویسے ھی دوسرے دیش بھی اُن سے اپنا دامن بچا رھے ھیں. ایشیا کے سب سے بڑے دو دیش چین اور بھارت ھیں. اُن دونوں کے کارن دوسرے دیشوں کو ساھس ملتا ھے اور وہ اپنے بندھن کاٹنے میں اپنے کو نس سہائے محسوس نہیں کرتے. یدی ایشیا کو پھر سے غلام بننے نہیں دینا ھے تو بھارت اور چین کو اپنی آزادی کی بھی رکشا کرنی ھوگی. اور پورے ایشیا کو بھی غلامی سے بچائے رکھنا ھوگا. اِس کا راستہ پنچ شیل کے سوا دوسرا نہیں ھے.

پچھمی سامراج وادی چپ نہیں ھیں. کہتے ھیں کہ ایک جنگل میں ایک شیر اور ایک سانڈ رھتے تھے. دونوں میں دوستی تھی. ایک سیار کو اُن کی یہ دوستی نہیں بھائی. اسنے کبھی

मंत्रियों ने दोनों देशों के आपसी मसलों पर साफ़ साफ़ बात चीत की.

"2—दोनों प्रधान मंत्रियों ने इस बात की दुबारा पुष्टि की कि वे दुनिया में और ख़ास तौर पर दक्खिन पूरबी एशिया में शान्ति क़ायम करने की पूरी कोशिश करेंगे. उन्होंने यह उम्मीद ज़ाहिर की कि हिन्द-चीन में शान्ति क़ायम करने के सवाल पर जनेवा में जो बात चीत चल रही है उसका सन्तोषजनक फ़ैसला हो जाएगा.

"3—चीन और भारत के संबंधों के बारे में जिन सिद्धान्तों पर समझौता हुआ था वह ये हैं :—

"(1) एक दूसरे देशों की अखन्डता और मुकम्मिल आज़ादी का आदर करना.

"(2) किसी दूसरे पर हमला न करना.

"(3) किसी दूसरे के अन्दरूनी मामलों में दख़ल न देना.

"(4) बराबरी और एक दूसरे के हित का ख़याल रखना.

"(5) शान्तिपूर्वक साथ साथ रहना.

"दोनों प्रधान मंत्री इस बात पर सहमत हैं कि ये सिद्धान्त चीन और बरमा के सम्बन्धों में भी पथ-प्रदर्शक होने चाहिएं. यदि इन सिद्धान्तों को तमाम देश मान लें तो अलग अलग सामाजिक, राजनैतिक या आर्थिक व्यवस्था रखने वाले सब देश साथ साथ मिल कर रह सकेंगे और हमले के डर या दूसरे के अन्दरूनी मामलों में दख़ल की धमकी की जगह तसल्ली और एक दूसरे पर विश्वास की चेतना जागेगी.

"4—प्रधान मंत्रियों ने इस बात की फिर से पुष्टि की कि हर देश की जनता को यह हक़ होना चाहिए कि वह दूसरे देशों की मदाख़लत के बिना अपनी राज व्यवस्था और सामाजिक व्यवस्था को अपनी मरज़ी से तय कर सके. क्रान्ति बाहर से नहीं लादी जा सकती. पर किसी देश की जनता अपनी इच्छा से जैसी भी व्यवस्था अपने लिये क़ायम करना चाहे किसी दूसरे देश को उसमें दख़ल देने की बिलकुल इजाज़त नहीं होनी चाहिये.

"5—दोनों प्रधान मंत्री इस बात में सहमत हैं कि दोनों देशों में नज़दीकी रिश्ता क़ायम होना चाहिये ताकि दोनों देशों के बीच दोस्ताना सहयोग को और मज़बूत किया जा सके. सारी बात चीत मित्रतापूर्वक और प्रेमपूर्वक हुई है. दोनों प्रधान मंत्री एक दूसरे से मिलने के इस शुभ अवसर की सराहना करते हैं और उसे शान्ति के लिये मददगार समझते हैं." (29 जून 1954)

एशिया की एकता

पन्चशील पर चलकर ही एशिया के आज़ाद देश

منتریوں نے دونوں دیشوں کے آپسی مسئلوں پر صاف صاف بات چیت کی .

"2—دونوں پردھان منتریوں نے اِس بات کی دوبارہ پشٹی کی کہ وہ دنیا میں اور خاص طور پر دکھن پوربی ایشیا میں شانتی قائم کرنے کی پوری کوشش کرینگے . اُنہوں نے یہ اُمید ظاہر کی کہ ھند چین میں شانتی قائم کرنے کے سوال پر جنیوا میں جو بات چیت چل رہی ھے اُس کا سنتوش جنک فیصلہ ھو جائیگا .

"3—چین اور بھارت کے سمبندھوں کے بارے میں جن سدھانتوں پر سمجھوتا ھوا تھا وہ یہ ھیں :—

"(1) ایک دوسرے کے دیشوں کی اکھنڈتا اور مکمل آزادی کا آدر کرنا .

"(2) کسی دوسرے پر حملہ نہ کرنا .

"(3) کسی دوسرے کے اندرونی معاملوں میں دخل نہ دینا .

"(4) برابری اور ایک دوسرے کے ہت کا خیال رکھنا .

"(5) شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنا .

"دونو پردھان منتری اِس بات پر سہمت ھیں کہ یہ سدھانت چین اور برما کے سمبندھوں میں بھی پتھ پردرشک ھونے چاھئیں . یدی اِن سدھانتوں کو تمام دیش مان لیں تو الگ الگ سماجک، راجنیتک یا آرتھک ویوستھا رکھنے والے سب دیش ساتھ ساتھ ملکر رہ سکینگے اور حملے کے ڈر یا دوسرے کے اندرونی معاملوں میں دخل کی دھمکی کی جگہ تسلی اور ایک دوسرے پر وشواس کی چیتنا جاگے گی .

"4—پردھان منتریوں نے اِس بات کی پھر سے پشٹی کی کہ ھر دیش کی جنتا کو یہ حق ھونا چاھئے کہ وہ دوسرے دیشوں کی مداخلت کے بنا اپنی راج ویوستھا اور سماجک ویوستھا کو اپنی مرضی سے طے کرسکے . کرانتی باھر سے نہیں لادی جا سکتی . پر کسی دیش کی جنتا اپنی اِچھا سے جیسی بھی ویوستھا اپنے لئے قائم کرنا چاھے کسی دوسرے دیش کو اُس میں دخل دینے کی بالکل اجازت نہیں ھونی چاھئے .

"5—دونوں پردھان منتری اِس بات میں سہمت ھیں کہ دونوں دیشوں میں نزدیکی رشتہ قائم ھونا چاھیئے تاکہ دونوں دیشوں کے بیچ دوستانہ سہیوگ کو اور مضبوط کیا جا سکے . ساری بات چیت متروا پوروک اور پریم پوروک ھوئی ھے . دونوں پردھان منتری ایک دوسرے سے ملنے کے اِس شبھ اوسر کی سراھنا کرتے ھیں اور اُسے شانتی کے لئے مددگار سمجھتے ھیں ." (29 جون 1954)

ایشیا کی ایکتا—

پنچ شیل پر چلکر ھی ایشیا کے آزاد دیش

चाउ-नेहरू बात चीत ने दुनिया में आशा की एक नई लहर पैदा कर दी. हाल के बरसों में अन्तर्राष्ट्रीय मैदान में इतना बड़ा काम कोई नहीं हुआ था. इस निगाह से चाऊ-नेहरू सम्मेलन जनेवा में बड़ी ताक़तों के सम्मेलन से कहीं अधिक महत्वपूर्ण था.

पूरे विश्व ने इस चाउ-नेहरू मिलन की सराहना की है. इस सराहना के कारण ये हैं :—

सबसे पहले यह मिलन केवल दो प्रधान मंत्रियों का मिलन नहीं था, यह उन दो मुल्कों के प्रधान मंत्रियो का मिलन था जिनकी आबादी सारे संसार की आबादी की लगभग आधी है.

दूसरे यह मिलन ऐसे दो देशों का मिलन था जिनकी आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्थाएं अलग अलग हैं.

तीसरे इस भेंट से एक निश्चित समझौता हुआ जिसका सम्बन्ध केवल दोनों देशो की दोस्ती से ही नहीं है बल्कि जो दुनिया में अमन क़ायम करने के लिए एक बड़ा साधन हो सकता है.

चौथे और अन्त में इस समझौते ने पूरे विश्व की जनता को एक नया रास्ता दिखाया, जो रास्ता एक दूसरे पर अविश्वास और फ़ौजी गठबंधनों का रास्ता नहीं है और न दुनिया की जनता को अलग अलग अखाड़ों में बांट कर द्वेष बढ़ाने का रास्ता है. यह रास्ता सारी दुनिया की जनता को एक डोर में बांधने का रास्ता है. इससे सारे अन्तर्राष्ट्रीय झगड़े शान्ति से हल किए जा सकते हैं. यह वह रास्ता है जो राष्ट्रों की मौजूदा सीमाओं को स्वीकार करता है और सब देशों को इस बात की तसल्ली देता है कि उनके अन्दरूनी मामलों में कोई मदाख़लत नहीं कर सकता. यह वह रास्ता है जो बराबरी और परस्पर सहायता की बुनियाद पर क़ायम है और सबके शान्ति पूर्वक साथ साथ मिल कर रहने के सिद्धान्त को सर्वोच्च मानता है.

बरमा में चाउ-एन-लाई

बरमा के प्रधान मंत्री यू नू की दावत पर चीन के प्रधान मंत्री चाउ-ऐन-लाई 29 जून को बरमा की राजधानी रंगून पहुंचे. वहां उनका सरकार और जनता दोनों की तरफ़ से शानदार स्वागत हुआ. वहां भी दोनों प्रधान मंत्रियों का इन्हीं पांच सिद्धान्तों पर समझौता हुआ. 29 जून 1954 को चीन और बरमा के प्रधान मंत्रियों ने मिलकर नीचे लिखा बयान निकाला :—

"1—जनवादी चीन के प्रधान मंत्री चाउ-ऐन-लाई बरमा राज संघ के प्रधान मंत्री यू नू के बुलावे पर जनेवा से पीकिंग जाते समय रास्ते में दो दिन के लिए बरमा की राजधानी रंगून में ठहरे. इस थोड़े समय में दोनों प्रधान

چاؤ - نہرو بات چیت نے دنیا میں آشا کی ایک نئی لہر پیدا کردی . حال کے برسوں میں انتر راشٹریہ میدان میں اتنا بڑا کام کوئی نہیں ہوا تھا . اس نگاہ سے چاؤ - نہرو سمیلن جنیوا میں بڑی طاقتوں کے سمیلن سے کہیں ادھک مہتوپورن تھا .

پورے وشو نے اس چاؤ - نہرو ملن کی سراہنا کی ہے . اس سراہنا کے کارن یہ ہیں :-

سب سے پہلے یہ ملن کیول دو پردھان منتریوں کا ملن نہیں تھا یہ اُن دو ملکوں کے پردھان منتریوں کا ملن تھا جن کی آبادی سارے سنسار کی آبادی کی لگ بھگ آدھی ہے .

دوسرے یہ ملن ایسے دو دیشوں کا ملن تھا جنکی آرتھک ، سماجک اور راج نیتک ویوستھائیں الگ الگ ہیں .

تیسرے اس بھینٹ سے ایک نشچت سمجھوتا ہوا جس کا سمبندھ کیول دونوں دیشوں کی دوستی سے ہی نہیں ہے بلکہ جو دنیا میں امن قائم کرنے کے لئے ایک بڑا سادھن ہو سکتا ہے .

چوتھے اور انت میں اس سمجھوتے نے پورے وشو کی جنتا کو ایک نیا راستہ دکھایا جو راستہ ایک دوسرے پر اوشواس اور فوجی گٹھ بندھنوں کا راستہ نہیں ہے اور نہ دنیا کی جنتا کو الگ الگ اکھاڑوں میں بانٹ کر دویش بڑھانے کا راستہ ہے . یہ راستہ ساری دنیا کی جنتا کو ایک ڈور میں باندھنے کا راستہ ہے اس سے سارے انتر راشٹریہ جھگڑے شانتی سے حل کئے جا سکتے ہیں یہ وہ راستہ ہے جو راشٹروں کی موجودہ سیماؤں کو سویکار کرتا ہے اور سب دیشوں کو اس بات کی تسلی دیتا ہے کہ اُن کے اندرونی معاملوں میں کوئی مداخلت نہیں کر سکتا . یہ وہ راستہ ہے جو برابری اور پرسپر سہایتا کی بنیاد پر قائم ہے اور سب کے شانتی پوروک ساتھ ساتھ مل کر رہنے کے سدھانت کو سروواچہ مانتا ہے .

برھما میں چاؤ - این - لائی

برھما کے پردھان منتری یو نو کی دعوت پر چین کے پردھان منتری چاؤ این - لائی 29 جون کو برھما کی راجدھانی رنگون پہنچے وہاں اُن کا سرکار اور جنتا دونوں کی طرف سے شاندار سواگت ہوا . وہاں بھی دونوں پردھان منتریوں کا انہیں پانچ سدھانتوں پر سمجھوتا ہوا . 29 جون 1954 کو چین اور برھما کے پردھان منتریوں نے ملکر نیچے لکھا بیان نکالا .—

"1—جنوادی چین کے پردھان منتری چاؤ - این - لائی برھما راج سنگھ کے پردھان منتری یو نو کے بلاوے پر جنیوا سے پیکنگ جاتے سمے راستے میں دو دن کے لئے برھما کی راجدھانی رنگون میں ٹھہرے . اس تھوڑے سمے میں دونوں پردھان

5—प्रधान मंत्रियों ने खास तौर से यह आशा प्रकट की कि ये सिद्धान्त हिन्द-चीन की समस्याओं को हल करने में काम आ सकेंगे. वहां के राजकाजी समझौते का उद्देश्य यह होना चाहिये कि सब देश मिलकर आज़ाद जनतन्त्र राज्यों की तरह शान्ति और प्रेम के साथ रह सकें, जिससे वह दूसरी बाहर की शक्तियों की लड़ाइयों के लिए इस्तेमाल न किए जा सकें और विदेशी दखलन्दाज़ी के चंगुल में न फंसें. इससे इन मुल्कों में आत्म विश्वास बढ़ेगा और आपस में और अपने पड़ोसियों के साथ दोस्ताना सम्बन्ध की भावना मज़बूत होगी. इन ऊपर लिखे सिद्धान्तों को अपनाने से शान्ति का मैदान क़ायम करने में सहायता मिलेगी और परिस्थितियों के अनुसार उसके फैलाव को बढ़ाया जा सकेगा. इस तरह युद्ध के मौक़े कम हो जाएंगे और तमाम दुनिया में शान्ति को बल मिलेगा.

"6—प्रधान मंत्रियों ने भारत और चीन की दोस्ती में अपना विश्वास ज़ाहिर किया और यह विश्वास भी ज़ाहिर किया कि यह दोस्ती संसार में शान्ति क़ायम करने और अपने अपने देशों की और एशिया के दूसरे मुल्कों की शान्तिमय उन्नति में मदद देगी.

"7—दोनों प्रधान मंत्रियों की यह बात चीत एशिया की समस्याओं को अच्छी तरह समझने, शान्ति और सहयोग की कोशिशों को आगे बढ़ाने और दुनिया के दूसरे मुल्कों की इसी तरह की समस्याओं को सुलझाने के विचार को सामने रखकर की गई थी.

"8—दोनों प्रधान मंत्री इस बात पर पूरी तरह सहमत हैं कि दोनों मुल्कों में एक नज़दीकी रिश्ता क़ायम किया जाय ताकि वे एक दूसरे को पूरी तरह समझने की लगातार कोशिशें करते रहें. उन्होंने एक दूसरे से मिलने के इस शुभ अवसर की सराहना की और विचारों की अदला बदली से दोनों में विश्व शान्ति के लिए सहयोग की भावना और ठीक ठीक समझ पैदा हुई."

(28 जून सन 1954)

इस संयुक्त बयान के अलावा चीन के प्रधान मंत्री चाउ-ऐन-लाई ने आल इंडिया रेडियो पर बोलते हुए कहा था—"इन सिद्धान्तों पर हमारा यह समझौता राष्ट्रों के झगड़े आपसी बात चीत से सुलझाने का एक बहुत अच्छा उदाहरण है. प्रधान मंत्री श्री नेहरू से मेरी जो बात चीत हुई उसके दौरान में हम दोनों ने इस बात पर विचार किया कि ऊपर के सिद्धान्तों को एशिया और सारे संसार के मौजूदा अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों पर लागू करना चाहिए. मुझे पूरा विश्वास है कि भारत और चीन की मिली जुली कोशिश एशिया और तमाम दुनिया को शान्ति के लिए एक बहुत बड़ी देन होगी."

" 5—پردھان منتریوں نے خاص طور سے یہ آشا پرکٹ کی کہ یہ سدھانت هند چین کی سمسیاؤں کو حل کرنے میں کام آسکینگے. وھاں کے راج کاجی سمجھوتے کا اُدیش یہ ھونا چاھئیے کہ سب دیش ملکر آزاد جن‌تنتر راجیوں کی طرح شانتی اور پریم کے ساتھ رہ سکیں، جس سے وہ دوسری باھر کی شکتیوں کی لڑائیوں کے لئے استعمال نہ کئے جاسکیں اور ودیشی دخل اندازی کے چنگل میں نہ پھنسیں. اِس سے اِن ملکوں میں آتم‌وشواس بڑھیگا اور آپس میں اور اپنے پڑوسیوں کے ساتھ دوستانہ سمبندھ کی بھاونا مضبوط ھوگی. اِن اُوپر لکھے سدھانتوں کو اپنانے سے شانتی کا میدان قائم کرنے میں سہائتا ملےگی اور پرستھتیوں کے انوسار اُس کے پھیلاؤ کو بڑھایا جاسکےگا. اِس طرح یدھ کے موقعے کم ھوجائینگے اور تمام دنیا میں شانتی کو بل ملےگا.

" 6—پردھان منتریوں نے بھارت اور چین کی دوستی میں اپنا وشواس ظاھر کیا اور یہ وشواس بھی ظاھر کیا کہ یہ دوستی سنسار میں شانتی قائم کرنے اور اپنے اپنے دیشوں کی اور ایشیا کے دوسرے ملکوں کی شانتی مے اُنتی میں مدد دیگی.

" 7—دونوں پردھان منتریوں کی یہ بات چیت ایشیا کی سمسیاؤں کو اچھی طرح سمجھنے، شانتی اور سہیوگ کی کوششوں کو آگے بڑھانے اور دنیا کے دوسرے ملکوں کی اِسی طرح کی سمسیاؤں کو سلجھانے کے وچار کو سامنے رکھ کر کی گئی تھی.

" 8—دونوں پردھان منتری اِس بات پر پوری طرح سہمت ھیں کہ دونوں ملکوں میں ایک نزدیکی رشتہ قائم کیا جائے تاکہ وہ ایک دوسرے کو پوری طرح سمجھنے کی لگاتار کوششیں کرتے رھیں. اُنھوں نے ایک دوسرے سے ملنے کے اِس شبھ اَوسر کی سراھنا کی اور وچاروں کی اَدلا بدلی سے دونوں میں وشوشانتی کے لئے سہیوگ کی بھاونا اور ٹھیک ٹھیک سمجھ پیدا ھوئی." (28 جون سن 1954)

اِس سنیکت بیان کے علاوہ چین کے پردھان منتری چاؤ-این-لائی نے آل انڈیا ریڈیو پر بولتے ھوئے کہا تھا—"اِن سدھانتوں پر ھمارا یہ سمجھوتا راشٹروں کے جھگڑے آپسی بات چیت سے سلجھانے کا ایک بہت اچھا اُداھرن ھے. پردھان منتری شری نہرو سے میری جو بات چیت ھوئی اُس کے دوران میں ھم دونوں نے اِس بات پر وچار کیا کہ اُوپر کے سدھانتوں کو ایشیا اور سارے سنسار کے موجودہ انتر راشٹریہ سمبندھوں پر لاگو کرنا چاھئے. مجھے پورا وشواس ھے کہ بھارت اور چین کی ملی جلی کوشش ایشیا اور تمام دنیا کو شانتی کے لئے ایک بہت بڑی دین ھوگی."

लड़ाई बन्द होने के बारे में जनेवा की बात चीत में कुछ सफलता मिली है. उन्हें इस बात की पूरी उम्मीद है कि यह कोशिशें निकट भविष्य में अवश्य कामयाब होंगी, और उस इलाक़े की राजनैतिक समस्याओं का समझौता हो जायगा.

"2—दोनों प्रधान मंत्रियों की बात चीत का यह मक़सद था कि जनेवा और दूसरे स्थानों पर शान्ति पूर्ण फ़ैसलों की जो कोशिशें हो रही हैं, उन्हें जितना हो सके मदद दी जाए.

"उनका मुख्य उद्देश्य यह था कि अमन क़ायम करने के लिये एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझते हुए एक दूसरे की और दूसरे मुल्कों की मदद से किसी सही नतीजे पर पहुंचा जाय.

"3—हाल में चीन और भारत में एक समझौता हुआ है जो कुछ निश्चित सिद्धान्तों पर क़ायम है. यह सिद्धांत दोनों देशों के बीच सम्बन्धों के पथ प्रदर्शक हैं. वे सिद्धांत ये हैं :—

"1—एक दूसरे के देशों की अखंडता और मुकम्मिल आज़ादी का आदर करना.

"2—किसी दूसरे पर हमला न करना.

"3—किसी दूसरे के अंदरूनी मामलों में दख़ल न देना.

"4—बराबरी और एक दूसरे के हित का ख़्याल रखना.

"5—शांति पूर्वक साथ साथ रहना.

"दोनों प्रधान मंत्रियों ने इन सिद्धांतों की फिर से पुष्टि की और यह महसूस किया कि एशिया के और दुनिया के दूसरे मुल्कों के आपसी सम्बन्धों में भी इनको लागू किया जाय यदि अलग अलग देशों के अलावा अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में भी आम तौर पर इन सिद्धांतों को ही लागू किया जाय तो यह शांति और सुरक्षा की सबसे मज़बूत बुनियाद होंगे. तब आज जो एक दूसरे से डर और शक की भावनाएं मौजूद हैं वह विश्वास की भावना में बदल जायंगी.

"4—दोनों प्रधान मंत्रियों ने इस बात को स्वीकार किया कि एशिया और दुनिया के अलग अलग हिस्सों में अलग अलग समाजी और राजकाजी शासन व्यवस्थाएं हैं. पर यदि ऊपर लिखे सिद्धांतों को लिया जाय और उन पर अमल किया जाय और एक दूसरे के अंदरूनी मामलों में दख़ल न दिया जाय तो यह फ़रक़ अमन के रास्ते में रुकावट नहीं हो सकते. हर देश की अखण्डता और मुकम्मिल आज़ादी का आदर और एक दूसरे पर हमला न करने के सिद्धांत को मानने से देशों के बीच दोस्ताना सम्बन्ध और शांतिपूर्वक साथ साथ रहना संभव हो सकेगा. यह राष्ट्रों राष्ट्रों के बीच आपसी तनाव को कम करेगा और शांति का वातावरण क़ायम करने में मदद देगा.

لڑائی بند ہونے کے بارے میں جنیوا کی بات چیت میں کچھ سپھلتا ملی ہے . اُنہیں اِس بات کی پوری اُمید ہے کہ یہ کوششیں نکٹ بھوشیہ میں اوشیہ کامیاب ہوں گی اور اُس علاقے کی راج نیتک سمسیاؤں کا سمجھوتا ہو جائیگا .

"2—دونوں پردھان منتریوں کی بات چیت کا یہ مقصد تھا کہ جنیوا دوسرے استھانوں پر شانتی پورن فیصلوں کی جو کوششیں ہو رہی ہیں، اُنہیں جتنا ہوسکے مدد دی جائے.

"اُن کا مکھیہ اُدیش یہ تھا کہ امن قائم کرنے کے لئے ایک دوسرے کے درشٹی کون کو سمجھتے ہوئے ایک دوسرے کی اور دوسرے ملکوں کی مدد سے کسی صحیح نتیجے پر پہونچا جائے .

"3—حال میں چین اور بھارت میں ایک سمجھوتا ہوا ہے جو کچھ نشچت سدھانتوں پر قائم ہے . یہ سدھانت دونوں دیشوں کے بیچ سمبندھوں کے پتھ پردرشک ہیں . وے سدھانت یہ ہیں : —

" (1) ایک دوسرے کے دیشوں کی اکھنڈتا اور مکمل آزادی کا آدر کرنا .

" (2) کسی دوسرے پر حملہ نہ کرنا .

" (3) کسی دوسرے کے اندرونی معاملوں میں دخل نہ دینا .

" (4) برابری اور ایک دوسرے کے ہت کا خیال رکھنا .

" (5) شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنا .

"دونوں پردھان منتریوں نے اِن سدھانتوں کی پھر سے پشٹی کی اور یہ محسوس کیا کہ ایشیا کے اور دنیا کے دوسرے ملکوں کے آپسی سمبندھوں میں بھی اِن کو لاگو کیا جائے . یدی الگ الگ دیشوں کے علاوہ انترراشٹریہ سمبندھوں میں بھی عام طور پر ان سدھانتوں کو ہی لاگو کیا جائے تو یہ شانتی اور سرکشا کی سب سے مضبوط بنیاد ہونگے . تب آج جو ایک دوسرے سے ڈر اور شک کی بھاونائیں موجود ہیں وہ وشواس کی بھاونا میں بدل جائینگی .

"4—دونوں پردھان منتریوں نے اِس بات کو سویکار کیا کہ ایشیا اور دنیا کے الگ الگ حصوں میں الگ الگ سماجی اور راج کاجی شاسن ویوستھائیں ہیں . پر یدی اوپر لکھے سدھانتوں کو مان لیا جائے اور اُن پر عمل کیا جائے اور ایک دوسرے کے اندرونی معاملوں میں دخل نہ دیا جائے تو یہ فرق امن کے راستے میں رکاوٹ نہیں ہوسکتے . ہر دیش کی اکھنڈتا اور مکمل آزادی کا آدر اور ایک دوسرے پر حملہ نہ کرنے کے سدھانت کو ماننے سے دیشوں کے بیچ دوستانہ سمبندھ اور شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنا سمبھو ہوسکیگا . یہ راشٹروں راشٹروں کے بیچ آپسی تناؤ کو کم کریگا اور شانتی کا واتاورن قائم کرنے میں مدد دیگا .

कनाडा, फिलिपाइन्स, टरकी, ग्रीस, नीदरलैंड, कोलम्बिया आदि 19 देशों के प्रतिनिधियों को भी बुलाया गया था.

जनेवा कान्फरेन्स में नए चीन के प्रधान मंत्री चाऊ-ऐन-लाई ने हिन्द चीन में शान्ति क़ायम करने के लिये बेहतरीन सिद्धान्त पेश किये जिनका सब पर असर हुआ. कुछ साम्राजवादियों ने भरसक प्रयत्न किया कि जनेवा कान्फरेन्स को असफल कर दिया जाए. पर कान्फरेन्स की बाग डोर अमरीका के मंत्री जान फोस्टर डलेस की जगह ब्रिटेन के विदेश मंत्री एन्थनी ऐडन के हाथ में थी.

जनेवा कान्फरेन्स में हिन्दुस्तान से कोई प्रतिनिधि नहीं बुलाया गया था, फिर भी इसके महत्व को समझते हुए भारत सरकार ने श्री कृष्ण मेनन को वहां भेज दिया था. श्री कृष्ण मेनन जनेवा में कई बार चीन के प्रधान मंत्री चाऊ-ऐन-लाई से मिले और भारत के दृष्टिकोण से उन्हें जानकारी कराते रहे. कान्फरेन्स खूब सफल रही. हिन्द-चीन की लड़ाई बन्द हो गई. अन्त में भारत के प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने चीन के प्रधान मंत्री चाऊ-ऐन-लाई को दिल्ली आने की दावत दी. चाऊ-ऐन-लाई 25 जून को दिल्ली पहुंच गये.

भारत में चाऊ-ऐन-लाई

भारत की राजधानी में चीन के प्रधान मंत्री का जनता और सरकार की तरफ़ से जो शानदार स्वागत हुआ उसे बयान नहीं किया जा सकता. चाऊ-ऐन-लाई के स्वागत के लिये लोग सुबह 5 बजे से हवाई अड्डे पर जमा होने शुरू हो गये थे. पूरा हवाई अड्डा "हिन्द चीनी भाई भाई !!" के नारों से गूंज उठा था. जब चाऊ ताजमहल देखने के लिये आगरे पहुंचे तो वहां भी बीस हज़ार जनता ने उनका शानदार स्वागत किया.

चाऊ-ऐन-लाई और जवाहरलाल नेहरू ने भारत और चीन के आपसी मसलों पर बात चीत की. तीन दिन की बात चीत के बाद दोनों प्रधान मंत्रियों ने नीचे लिखा संयुक्त बयान निकाला :—

"1—जनवादी चीन के प्रधान मंत्री चाउ-ऐन-लाई भारत के प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू के निमंत्रण पर दिल्ली आये. वह दिल्ली में तीन दिन ठहरे. इस थोड़े से समय में दोनों प्रधान-मन्त्रियों ने चीन और भारत के आपसी मसलों पर विचार किया. ख़ास तौर पर उन्होंने दक्खिनी पूरबी एशिया की शान्ति और हिन्द चीन के विषय में जनेवा कान्फ्रेंस में जो बात चीत चल रही थी उस पर बात की. हिंद चीन की हालत एशिया और विश्व की शान्ति के लिये एक ख़ास अहमियत रखती है. दोनों प्रधान मंत्रियों की यह दिली ख़्वाहिश है कि जनेवा कांफ्रेंस में जो कोशिश हो रही है वह कामयाब हो. दोनों इस बात से संतुष्ट हैं कि

کناڈا، فلپائنس، ترکی، گریسس، نیدرلینڈ، کولمبیا آدی 19 دیشوں کے پرتیندھیوں کو بھی بلایا گیا تھا .

جنیوا کانفرنس میں نئے چین کے پردھان منتری چاؤ-این-لائی نے ھند-چین میں شانتی قائم کرنے کے لئے بہترین سدھانت پیش کئے جن کا سب پر اثر ھوا . کچھ سامراج وادیوں نے بھرسک پریتن کیا کہ جنیوا کانفرنس کو اسپھل کردیا جائے . پر کانفرنس کی باگ ڈور امریکہ کے منتری جان فاسٹر ڈلیس کی جگہ برٹین کے ودیش منتری اینتھنی ایڈن کے ھاتھ میں تھی .

جنیوا کانفرنس میں ھندستان سے کوئی پرتیندھی نہیں بلایا گیا تھا . پھر بھی اِس کے مہتو کو سمجھتے ھوئے بھارت سرکار نے شری کرشن مینن کو وھاں بھیج دیا تھا . شری کرشن مینن جنیوا میں کئی بار چین کے پردھان منتری چاؤ-این - لائی سے ملے اور بھارت کے درشٹی کون سے اُنھیں جانکاری کراتے رھے . کانفرنس خوب سپھل رھی . ھند چین کی لڑائی بند ھوگئی . انت میں بھارت کے پردھان منتری جواھر لال نہرو نے چین کے پردھان منتری چاؤ این - لائی کو دلی آنے کی دعوت دی . چاؤ این - لائی 25 جون کو دلی پہونچ گئے .

بھارت میں چاؤ این - لائی -

بھارت کی راجدھانی میں چین کے پردھان منتری کا جنتا اور سرکار کی طرف سے جو شاندار سواگت ھوا اُسے بیان نہیں کیا جاسکتا . چاؤ این - لائی کے سواگت کے لئے لوگ صبح پانچ بجے سے ھوائی اڈے پر جمع ھونے شروع ھوگئے تھے . پورا ھوائی اڈا "ھندی چینی بھائی بھائی !!" کے نعروں سے گونج اُٹھا تھا . جب چاؤ تاج محل دیکھنے کے لئے آگرہ پہونچے تو وھاں بھی بیس ھزار جنتا نے اُن کا شاندار سواگت کیا .

چاؤ-این - لائی اور جواھر لال نہرو نے بھارت اور چین کے آپسی مسلوں پر بات چیت کی . تین دن کی بات چیت کے بعد دونوں پردھان منتریوں نے نیچے لکھا سنکیت بیان نکالا :—

"1—جنوادی چین کے پردھان منتری چاؤ - این - لائی بھارت کے پردھان منتری جواھر لال نہرو کے نمنترن پر دلی آئے . وہ دلی میں تین دن ٹھہرے . اِس تھوڑے سے سمے میں دونوں پردھان منتریوں نے چین اور بھارت کے آپسی مسلوں پر وچار کیا . خاص طور پر اُنھوں نے دکھنی پوربی ایشیا کی شانتی اور ھند چین کے وشے میں جنیوا کانفرنس میں جو بات چیت چل رھی تھی اُس پر بات کی . ھند چین کی حالت ایشیا اور وشو کی شانتی کے لئے ایک خاص اھمیت رکھتی ھے . دونوں پردھان منتریوں کی یہ دلی خواھش ھے کہ جنیوا کانفرنس میں جو کوشش ھو رھی ھے وہ کامیاب ھو . دونوں اِس بات سے سنتشٹ ھیں کہ

शान्ति क़ायम रहे तो यही दौलत पिछड़े देशों के विकास के लिये काम में लाई जा सकती है.

पंचशील के समर्थन में हमारा भविष्य छिपा है. हर भारतवासी का कर्तव्य है कि वह पंचशील को सफल बनाने में पूरा सहयोग दे.

'पंचशील' हमारे देश का बहुत पुराना शब्द है. हिन्दू, जैन और बौद्ध तीनों धर्मों की किताबों में नीचे लिखी पांच नेकियों को 'पञ्च शील' का नाम दिया गया है :— (1) किसी को तकलीफ़ न देना, (2) कभी झूट न बोलना, (3) किसी दूसरे का माल न लेना, (4) अपनी इन्द्रियों पर क़ाबू रखना, और (5) धन संपत्ति जमा न करना. पञ्चशील के ये पुराने पांचों सिद्धान्त आदमी आदमी के बीच व्यवहार के लिये थे. नये 'पञ्चशील' के इन्हीं से मिलते जुलते पांचों सिद्धान्त देशों और राष्ट्रों के बीच आपसी व्यवहार के लिये हैं. इसलिये पञ्चशील का महत्व और उनका दायरा अब बढ़ गया है. चीन, इंडोनेशिया, बरमा जैसे पुराने बौद्ध देशों में भी ये शब्द भारत ही की तरह काम में आता था. भारत और चीन की दोस्ती से पञ्चशील का एक नया इतिहास प्रारम्भ होता है.

सब से पहले भारत और चीन के बीच तिब्बत को लेकर एक व्यापारी संधि हुई जो इन्हीं पांच सिद्धान्तों पर की गई. यह संधि अप्रैल 1954 में हुई. इसके दो महीने बाद ये सिद्धान्त चीन और हिन्दुस्तान की दोस्ती की बुनियाद क़रार दिये गये.

श्री नेहरू ने लोकसभा मे अपने आलोचकों को उत्तर देते हुए कहा था :—"तिब्बत के इलाक़े के बारे में हमारी सरकार ने चीन की सरकार के साथ जो व्यापारी संधि की है और जिन सिद्धान्तों पर की है उसकी मिसाल दुनिया मे अभी तक कहीं नहीं मिलती. विदेश मंत्री की हैसियत से अपने पूरे समय में मैंने इससे बेहतर काम नहीं किया. यह संधि और उसके सिद्धान्त दुनिया के सब देशों के लिये एक सबक़ हैं."

जनेवा कान्फ़रेन्स

उस समय भारत और संसार की जनता शान्ति के लिये आन्दोलन कर रही थी. हिन्द चीन की लड़ाई के ख़िलाफ़ और फ़्रान्स की सरकार के विरुद्ध जगह जगह आवाज़ उठ रही थी. जनता बड़े बड़े राष्ट्रों से यह मांग कर रही थी कि वे मिलकर बैठें और हिन्द चीन और कोरिया में लड़ाई बन्द करने का कोई उपाय निकालें. फलस्वरूप पांच बड़े राष्ट्र रूस, अमरीका, फ़्रान्स, ब्रिटेन और नए चीन की जनेवा में एक कान्फ़रेन्स हुई. इनके अलावा उत्तरी व दक्खिनी कोरिया, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड,

شانتی قائم رہے تو یہی دولت پچھڑے دیشوں کے وکاس کے لئے کام میں لائی جاسکتی ہے .

پنچ شیل کے سمرتھن میں ہمارا بھوشیہ چھپا ہے. ہر بھارت واسی کا کرتویہ ہے کہ وہ پنچ شیل کو سپھل بنانے میں پورا سہیوگ دے .

'پنچ شیل' ہمارے دیش کا بہت پرانا شبد ہے . ہندو' جین اور بودھ تینوں دھرموں کی کتابوں میں نیچے لکھی پانچ نیکیوں کو 'پنچ شیل' کا نام دیا گیا ہے :—(1) کسی کو تکلیف نہ دینا' (2) کبھی جھوٹ نہ بولنا (3) کسی دوسرے کا مال نہ لینا (4) اپنی اندریوں پر قابو رکھنا اور (5) دھن سمپتی جمع نہ کرنا . پنچ شیل کے یہ پرانے پانچوں سدھانت آدمی آدمی کے بیچ ویوہار کے لئے تھے . نئے 'پنچ شیل' کے انہیں سے ملتے جلتے پانچوں سدھانت دیشوں اور راشٹروں کے بیچ آپسی ویوہار کے لئے ہیں . اس لئے پنچ شیل کا مہتو اور ان کا دائرہ اب بڑھ گیا ہے . چین' انڈونیشیا' برما جیسے پرانے بودھ دیشوں میں بھی یہ شبد بھارت ہی کی طرح کام میں آتا تھا . بھارت اور چین کی دوستی سے پنچ شیل کا ایک نیا اتہاس پرارمبھ ہوتا ہے .

سب سے پہلے بھارت اور چین کے بیچ تبت کو لےکر ایک بیوپاری سندھی ہوئی جو انہیں پانچ سدھانتوں پر کی گئی . یہ سندھی اپریل 1954 میں ہوئی . اس کے دو مہینے بعد یہ سدھانت چین اور ہندستان کی دوستی کی بنیاد قرار دئے گئے.

شری نہرو نے لوک سبھا میں اپنے آلوچکوں کو اتر دیتے ہوئے کہا تھا :—"تبت کے علاقہ کے بارے میں ہماری سرکار نے چین کی سرکار کے ساتھ جو بیوپاری سندھی کی ہے اور جن سدھانتوں پر کی ہے اُن کی مثال دنیا میں ابھی تک کہیں نہیں ملتی . ودیش منتری کی حیثیت سے اپنے پورے سمے میں نے اس سے بہتر کام نہیں کیا . یہ سندھی اور اُس کے سدھانت دنیا کے سب دیشوں کے لئے ایک سبق ہیں ."

جنیوا کانفرنس

اس سمے بھارت اور سنسار کی جنتا شانتی کے لئے آندولن کررہی تھی . ہند چین کی لڑائی کے خلاف اور فرانس کی سرکار کے ورودھ جگہ جگہ آواز اُٹھ رہی تھی . جنتا بڑے بڑے راشٹروں سے یہ مانگ کررہی تھی کہ وہ ملکر بیٹھیں اور ہند چین اور کوریا میں لڑائی بند کرنے کا کوئی اُپائے نکالیں . پھل سروپ پانچ بڑے راشٹر روس' امریکہ' فرانس' برٹین اور نئے چین کی جنیوا میں ایک کانفرنس ہوئی . ان کے علاوہ اُتری و دکھنی کوریا' آسٹریلیا' نیوزی لینڈ'

रहने पर निर्भर है. हम स्वभाव से ही अमन पसन्द हैं. इसीलिये हम शान्ति क़ायम करने की कोशिश को बड़े से बड़े कामों में सबसे पहले रखते हैं."

यह समझना ग़लत है कि भारतवासियों को विश्व युद्ध के सम्बन्ध में चिन्ता करने की ज़रूरत नहीं है. केवल तटस्थ रहने से अब अपनी रक्षा नहीं हो सकती. ऐटम बम से निकलने वाली रेडियाई लहरों की कोई हद नहीं है और तटस्थ और लड़ाकुओं में वह कोई फ़रक़ नहीं करतीं.

भारत पर तरह तरह के एतराज़ हो रहे हैं और उसे तटस्थता (ग़ैरजानिबदारी) से डिगाने के लिये दबाव डाले जा रहे हैं. पाकिस्तान में, लंका में और भारत के उन हिस्सों में जो विदेशियों के आधीन हैं फ़ौजी अड्डे बनाकर हमारे देश को फ़ौजी जालों से घेरा जा रहा है. इन अड्डों के कारण हम पर दबाव पड़ता है और हमारे लिये डर पैदा होता है. दूसरे शक्तिशाली देशों की "आर्थिक सहायता" उस दैवी प्रकोप (क़हरे इलाही) के समान है जो सदा सर पर मंडलाता रहता है. पाकिस्तान और पुर्तगाली बस्तियां लड़ाई के लिये तैयार की जा रही हैं.

हिन्द चीन के समझौते में एक बड़ा हिस्सा लेने के लिये हम मजबूर कर दिये गये. जैसे जैसे दिन बीतेंगे भारत को एक निश्चित रुख़ तमाम अन्तर्राष्ट्रीय सवालों पर लेना पड़ेगा, उसे अगुवाई भी करनी पड़ेगी, ख़ास तौर से उन सवालों पर जो एशिया की समस्याओं और राष्ट्रों की आज़ादी से सम्बन्ध रखते हैं. उन सवालों पर तो भारत को आगे बढ़ कर भाग लेना ही पड़ेगा और एक पक्का रास्ता अपनाना होगा.

बिलकुल अलग थलग रहना अब सम्भव नहीं है. जोड़ तोड़ की लड़ाई हमारी सीमा तक आ पहुंची है. दिन प्रति दिन शान्ति स्थापना का भार भारत के कन्धों पर बढ़ता जा रहा है.

जिन लोगों के हाथों में हकूमत है उन पर ही सारा भार छोड़ देना ठीक नहीं है. हमारे देश में जनता की आवाज़ में क्या शक्ति है, इस पर ज़ोर देने की आवश्यकता है.

शान्ति के लिये जो ये पांच सिद्धान्त तय किये गये हैं उनका समर्थन हमारी अधिक से अधिक जनता करे, यही हमारे सामने आज सवाल है. इन सिद्धान्तों के समर्थन का मतलब यह है कि एशियाई देशों के बीच फूट डालने और उनको ग़ुलाम बनाने के जो प्रयत्न हो रहे हैं उन्हें विफल किया जाए और भारत की दोस्ती एशिया के दूसरे देशों और ख़ासकर हमारे सबसे बड़े पड़ोसी चीन के साथ मज़बूत की जाय, और आपस में मेल और एका बढ़ाया जाय. जनता की मेहनत से जो दौलत पैदा होती है उससे हथियार बनाकर उसका दुरुपयोग किया जाता है. यदि

رہنے پر نربھر ہے . ہم سبھاؤ سے ہی امن پسند ہیں . اِسی لئے ہم شانتی قائم کرنے کی کوشش کو بڑے سے بڑے کاموں میں سب سے پہلے رکھتے ہیں ."

یہ سمجھنا غلط ہے کہ بھارت واسیوں کو وشو یدھ کے سمبندھ میں چنتا کرنے کی ضرورت نہیں ہے . کیول تٹستھ رہنے سے اب اپنی رکشا نہیں ہوسکتی . ایٹم بم سے نکلنے والی ریڈیائی لہروں کی کوئی حد نہیں ہے اور تٹستھ اور لڑاکوں میں وہ کوئی فرق نہیں کرتیں .

بھارت پر طرح طرح کے اعتراض ہو رہے ہیں اور اسے تٹستھتا (غیر جانبداری) سے ڈگانے کے لئے دباؤ ڈالے جا رہے ہیں . پاکستان میں، لنکا میں اور بھارت کے اُن حصوں میں جو ودیشیوں کے آدھین ہیں فوجی اڈے بناکر ہمارے دیش کو فوجی جالوں سے گھیرا جا رہا ہے . اِن اڈوں کے کارن ہم پر دباؤ پڑتا ہے اور ہمارے لئے ڈر پیدا ہوتا ہے . دوسرے شکتی شالی دیشوں کی "آرتھک سہائتا" اُس دیوی پرکوپ (قہرالٰہی) کے سمان ہے جو سدا سر پر منڈلاتا رہتا ہے . پاکستان اور پرتگالی بستیاں لڑائی کے لئے تیار کی جا رہی ہیں .

ہند-چین کے سمجھوتے میں ایک بڑا حصہ لینے کے لئے ہم مجبور کردئے گئے . جیسے جیسے دن بیتینگے بھارت کو ایک نشچت رخ تمام انتر راشٹریہ سوالوں پر لینا پڑے گا، اُسے اگوائی بھی کرنی پڑے گی، خاص طور سے اُن سوالوں پر جو ایشیا کی سمسیاؤں اور راشٹروں کی آزادی سے سمبندھ رکھتے ہیں . اُن سوالوں پر تو بھارت کو آگے بڑھ کر بھاگ لینا ہی پڑے گا اور ایک پکا راستہ اپنانا ہوگا .

بالکل الگ تھلگ رہنا اب سمبھو نہیں ہے . جوڑ توڑ کی لڑائی ہماری سیما تک آپہونچی ہے . دن پرتی دن شانتی استھاپنا کا بھار بھارت کے کندھوں پر بڑھتا جا رہا ہے .

جن لوگوں کے ہاتھوں میں حکومت ہے اُن پر ہی سارا بھار چھوڑ دینا ٹھیک نہیں ہے . ہمارے دیش میں جنتا کی آواز میں کیا شکتی ہے، اِس پر زور دینے کی آوشیکتا ہے .

شانتی کے لئے جو یہ پانچ سدھانت طے کئے گئے ہیں اُن کا سمرتھن ہماری ادھک سے ادھک جنتا کرے، یہی ہمارے سامنے آج سوال ہے . اِن سدھانتوں کے سمرتھن کا مطلب یہ ہے کہ ایشیائی دیشوں کے بیچ پھوٹ ڈالنے اور اُن کو غلام بنانے کے جو پریتن ہو رہے ہیں اُنہیں وپھل کیا جائے اور بھارت کی دوستی ایشیا کے دوسرے دیشوں اور خاصکر ہمارے سب سے بڑے پڑوسی چین کے ساتھ مضبوط کی جائے، اور آپس میں میل اور ایکا بڑھایا جائے . جنتا کی محنت سے جو دولت پیدا ہوتی ہے اُس سے ہتھیار بناکر اُس کا دُرُپیوگ کیا جاتا ہے . یدی

चौथा सिद्धान्त यह है कि सब देश एक दूसरे को बराबर समझें और एक दूसरे के हित का ध्यान रखें. यह भी बहुत आवश्यक सिद्धान्त है. कुछ देश दूसरों को सहायता देने के नाम पर उनकी सारी आर्थिक व्यवस्था पर क़ब्ज़ा कर बैठते हैं, और नाजायज़ फ़ायदा उठाने के लिये तरह तरह की मदाख़लत करते हैं. जब तक सब देश एक दूसरे को बराबर नहीं समझेंगे और एक दूसरे के हित का ध्यान नहीं रखेंगे तब तक शान्ति नहीं हो सकती.

पांचवां सिद्धान्त यह है कि अलग अलग आर्थिक या राजनैतिक व्यवस्था वाले देश एक दूसरे को मिटाने की कोशिश किये बिना साथ साथ अमन से रह सकते हैं. अच्छे विचार न लड़ाई से फैले हैं, न फैलेंगे. जिनके विचार कमज़ोर होते हैं वही लड़ाई और मारपीट पर उतर आते हैं. जो विचार जिस हद तक लोगों का हित कर सकता है उसी हद तक वह बलवान होता है. विचारों का लक्ष्य आम जनता का हित करना है. फिर झगड़ा किस बात का ? समय की कसौटी पर सब विचार अपने आप झूठे, सच्चे, बलवान या कमज़ोर सिद्ध हो जाएंगे. इसलिये पंचशील तमाम उन कोशिशों को बुरा कहता है जो किसी विचार या किसी ख़ास व्यवस्था को ख़तम करने के लिये की जाती हैं.

यह पांचों सिद्धान्त एक दूसरे से मिले हुए हैं और पांचों को एक साथ मान कर ही दुनिया का भला किया जा सकता है.

प्रधान-मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने पार्लियामेन्ट में कहा था—"यह पांच सिद्धान्त विश्व को एशिया का चैलेंज हैं. हम हर देश को यह बात बता देना चाहते हैं कि उसे कहना है कि वह इन सिद्धान्तों को मानता है या नहीं. मैं चाहता हूं कि यह कहने की उनमें हिम्मत हो. मैं तो कहता हूं कि जो देश भी ईमानदारी से शान्ति चाहता है वह इन सिद्धान्तों को स्वीकार करेगा ही. इसके सिवा कोई दूसरा रास्ता नहीं है."

पंचशील एक कसौटी है जिस पर कस कर हर देश को परखा जा सकता है कि वह शान्ति के पक्ष में है या युद्ध के पक्ष में. यूं तो शान्ति क़ायम करने का दावा सभी करते हैं पर पंचशील वह मंत्र है जो सबका नक़ाब उतार देता है.

पंचशील और भारत

सवाल होता है कि आख़िर भारत को पंचशील से क्या लाभ ? यह भी कहा जा सकता है कि भारत न किसी देश पर क़ब्ज़ा जमाने का इच्छुक है और न उसका कहीं साम्राज्य है. फिर भारत अपनी शक्ति राष्ट्र निर्माण से हटाकर इस तरफ़ क्यों लगाए ? इसका जवाब पंडित जवाहरलाल ने एक जगह बहुत साफ़ दिया है—"हमारे देश की और एशिया के दूसरे देशों की उन्नति का भविष्य बुनियादन शान्ति क़ायम

چوتھا سدھانت یہ ہے کہ سب دیش دوسرے کو برابر سمجھیں اور ایک دوسرے کے ہت کا دھیان رکھیں ۔ یہ بھی بہت آوشیک سدھانت ہے ۔ کچھ دیش دوسروں کو سہائتا دینے کے نام پر اُن کی ساری آرتھک ویوستھا پر قبضہ کر بیٹھتے ہیں اور ناجائز فائدہ اُٹھانے کے لئے طرح طرح کی مداخلت کرتے ہیں ۔ جب تک سب دیش ایک دوسرے کو برابر نہیں سمجھیں گے اور ایک دوسرے کے ہت کا دھیان نہیں رکھینگے تب تک شانتی نہیں ہوسکتی ۔

پانچواں سدھانت یہ ہے کہ الگ الگ آرتھک یا راج نیتک ویوستھا والے دیش ایک دوسرے کو مٹانے کی کوشش کئے بنا ساتھ ساتھ امن سے رہ سکتے ہیں ۔ اچھے وچار نہ لڑائی سے پھیلے ہیں، نہ پھیلینگے ۔ جن کے وچار کمزور ہوتے ہیں وہی لڑائی اور مارپیٹ پر اُتر آتے ہیں ۔ جو وچار جس حد تک لوگوں کا ہت کرسکتا ہے اُسی حد تک وہ بلوان ہوتا ہے ۔ وچاروں کا لکش عام جنتا کا ہت کرنا ہے ۔ پھر جھگڑا کس بات کا ؟ سمے کی کسوٹی پر سب وچار اپنے آپ جھوٹے، سچے، بلوان یا کمزور سدھ ہوجائینگے ۔ اِس لئے پنچ شیل تمام اُن کوششوں کو برا کہتا ہے جو کسی وچار یا کسی خاص ویوستھا کو ختم کرنے کے لئے کی جاتی ہیں ۔

یہ پانچوں سدھانت ایک دوسرے سے ملے ہوئے ہیں اور پانچوں کو ایک ساتھ مان کر ہی دنیا کا بھلا کیا جاسکتا ہے ۔

پردھان منتری جواہر لال نہرو نے پارلیامینٹ میں کہا تھا— "یہ پانچ سدھانت وشو کو ایشیا کا چیلنج ہیں ۔ ہم ہر دیش کو یہ بات بتا دینا چاہتے ہیں کہ اُسے کہنا ہے کہ وہ اِن سدھانتوں کو مانتا ہے یا نہیں ۔ میں چاہتا ہوں کہ یہ کہنے کی اُن میں ہمت ہو ۔ میں تو کہتا ہوں کہ جو دیش بھی ایمانداری سے شانتی چاہتا ہے وہ اِن سدھانتوں کو سویکار کرے گا ہی ۔ اِس کے سوا کوئی دوسرا راستہ نہیں ہے ۔"

پنچ شیل ایک کسوٹی ہے جس پر کس کر ہر دیش کو پرکھا جاسکتا ہے کہ وہ شانتی کے پکش میں ہے یا یدھ کے پکش میں ۔ یوں تو شانتی قائم کرنے کا دعویٰ سبھی کرتے ہیں پر پنچ شیل وہ منتر ہے جو سب کا نقاب اُتار دیتا ہے ۔

پنچ شیل اور بھارت

سوال ہوتا ہے کہ آخر بھارت کو پنچ شیل سے کیا لابھ ؟ یہ بھی کہا جاسکتا ہے کہ بھارت نہ کسی دیش پر قبضہ جمانے کا اِچھک ہے اور نہ اُس کا کہیں سامراجیہ ہے ۔ پھر بھارت اپنی شکتی راشٹر نرمان سے ہٹاکر اِس طرف کیوں لگائے ؟ اِس کا جواب پنڈت جواہر لال نے ایک جگہ بہت صاف دیا ہے— "ہمارے دیش کی اور ایشیا کے دوسرے دیشوں کی اُنتی کا بھوشیہ بنیاداً شانتی قائم

आज के समय की प्रेरणा पञ्चशील है. साथ रहेंगे तो जिन्दा रहेंगे, अलग रहे तो मिट जाएंगे. इस एकता का नाम ही 'पंचशील' है.

एशिया से बाहर के कुछ देश 'पञ्चशील' से इस तरह डरते हैं जैसे वह कोई भयानक बम हो. पञ्चशील हथियार जरूर है किन्तु लड़ाई करने का हथियार नहीं, लड़ाई रोकने का हथियार है. 'पञ्चशील' के पांच सिद्धान्त यह हैं :—

1—एक दूसरे के देशों की अखन्डता और मुकम्मिल आज़ादी का आदर करना.

2—किसी दूसरे पर हमला न करना.

3—किसी दूसरे के अन्दूरूनी मामलों में दखल न देना.

4—बराबरी और एक दूसरे के हित का ख़याल रखना.

5—शान्तिपूर्वक साथ साथ रहना.

यह पांच सिद्धान्त सारी दुनिया को अभयदान देते हैं. यदि सारी दुनिया इन सिद्धान्तों को मान ले तो दुनिया से डर और लड़ाई खतम हो जायें.

इनमें पहला सिद्धान्त सब देशों की पूरी आज़ादी को विश्व शान्ति के लिये जरूरी मानता है. जब तक कुछ राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों पर क़ब्ज़ा जमाये रहेंगे तब तक दुनिया में शान्ति नहीं हो सकती. इसलिये पञ्चशील को मानने के लिये हर राष्ट्र को दूसरे राष्ट्रों की भूमि से अपना क़ब्ज़ा उठा लेना पड़ेगा.

दूसरा सिद्धान्त हमले के डर को राष्ट्रों के दिल से दूर करता है. डर ही लड़ाई की जड़ है. इसी के कारण सब राष्ट्र अपनी शक्ति हथियार इकट्ठा करने में लगाते हैं. यदि सारे राष्ट्र सच्चे दिल से इस तरह का ऐलान कर दें तो दुनिया में शान्ति आसानी से क़ायम हो सकती है.

तीसरा सिद्धान्त भी साफ़ है. यदि कुछ राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के मामलों में दखल देंगे तो बेचैनी बढ़ेगी. दखल देना कई तरह का होता है. किसी देश में या उसके इर्द गिर्द फ़ौजी अड्डे बनाकर उसकी नीति पर असर डालना भी दखल देना है. बाहर के देशों के साथ फ़ौजी संगठन या समझौते भी इसी तरह की मदाख़लत हैं. इसके अलावा अरबों डालर बहाकर आज दूसरे देशों में जासूस तैयार किये जा रहे हैं और उन देशों की सरकारों को अपनी नीति बदलने पर मजबूर किया जा रहा है. इस तरह की हर मदाख़लत को यह सिद्धान्त बुरा बताता है. किस देश में कैसी सरकार हो या कैसा नियम क़ानून हो, यह तय करने का अधिकार उस देश की जनता को ही है. उसमें किसी दूसरे को दखल नहीं देना चाहिये. आर्थिक या राजनैतिक व्यवस्था अलग अलग होने के कारण अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध ख़राब नहीं होने चाहियें.

آج کے سمے کی پریرنا پنچ شیل هے . ساتھ رهینگے تو زندہ رهینگے' الگ رهے تو مٹ جائینگے. اِس ایکتا کا نام هی 'پنچ شیل' هے .

ایشیا سے باهر کے کچھ دیش 'پنچ شیل' سے اِس طرح ڈرتے هیں جیسے وہ کوئی بھیانک بم هو . پنچ شیل هتیار ضرور هے کنتو لڑائی کرنے کا هتیار نهیں' لڑائی روکنے کا هتیار هے. 'پنچ شیل' کے پانچ سدهانت یہ هیں :—

1—ایک دوسرے کے دیشوں کی اکھنڈتا اور مکمل آزادی کا آدر کرنا .

2—کسی دوسرے پر حملہ نہ کرنا .

3—کسی دوسرے کے اندرونی معاملوں میں دخل نہ دینا .

4—برابری اور ایک دوسرے کے هت کا خیال رکھنا .

5—شانتی پوروک ساتھ ساتھ رهنا .

یہ پانچ سدهانت ساری دنیا کو ابھےدان دیتے هیں . یدی ساری دنیا اِن سدهانتوں کو مان لے تو دنیا سے ڈر اور لڑائی ختم هوجائیں .

اِن میں پہلا سدهانت سب دیشوں کی پوری آزادی کو وشو شانتی کے لئے ضروری مانتا هے . جب تک کچھ راشٹر دوسرے راشٹروں پر قبضہ جمائے رهینگے تب تک دنیا میں شانتی نهیں هوسکتی . اِس لئے پنچ شیل کو ماننے کے لئے هر راشٹر کو دوسرے راشٹروں کی بھومی سے اپنا قبضہ اٹھا لینا پڑےگا.

دوسرا سدهانت حملے کے ڈر کو راشٹروں کے دل سے دور کرتا هے . ڈر هی لڑائی کی جڑ هے . اِسی کے کارن سب راشٹر اپنی شکتی هتیار اِکٹھا کرنے میں لگاتے هیں . یدی سارے راشٹر سچے دل سے اِس طرح کا اعلان کردیں تو دنیا میں شانتی آسانی سے قائم هوسکتی هے .

تیسرا سدهانت بھی صاف هے . یدی کچھ راشٹر دوسرے راشٹروں کے معاملوں میں دخل دینگے تو بےچینی بڑھیگی . دخل دینا کئی طرح کا هوتا هے . کسی دیش میں یا اُس کے اِرد گرد فوجی اڈے بناکر اُس کی نیتی پر اثر ڈالنا بھی دخل دینا هے . باهر کے دیشوں کے ساتھ فوجی سنگٹھن یا سمجھوتے بھی اِسی طرح کی مداخلت هیں . اِس کے علاوہ اربوں ڈالر بہاکر آج دوسرے دیشوں میں جاسوس تیار کئے جا رهے هیں اور اُن دیشوں کی سرکاروں کو اپنی نیتی بدلنے پر مجبور کیا جا رها هے. اِس طرح کی هر مداخلت کو یہ سدهانت برا بتاتا هے . کس دیش میں کیسی سرکار هو یا کیسا نیم قانون هو' یہ طے کرنے کا ادهیکار اُس دیش کی جنتا کو هی هے. اِس میں کسی دوسرے کو دخل نهیں دینا چاهئے . آرتھک یا راج نیتک ویوستھا الگ الگ هونے کے کارن انٹرراشٹریہ سمبندھ خراب نهیں هونے چاهئیں .

का हाथ कहीं रह गया, किसी की टांग कहीं कट कर जा पड़ी. जो मर गये, अच्छे रहे. जो बचे, उनकी दशा देखी नहीं जा सकती थी. वह "तजुरबा" फिर जापान से कुछ ही दूर एक टापू पर दोहराया गया. हजारों एशियाई मछवे फिर किसी की लालसा की भेंट चढ़ गये ! इस तरह एशिया को दो बार यह भयानक मौत का नाच देखना पड़ा.

इन मौत के सौदागरों को इसीलिये एशिया ने चेतावनी दी. 'पंच शील' वही चेतावनी है.

एशिया की सरज़मीन पर अनेक सभ्यताएं जन्मीं और फूली फलीं. एशिया ने ही यूरोप को ईसा से सैकड़ों बरस पहले वह 'मित्र-धर्म' दिया था जो एक बार सारे यूरोप में फैल गया था और जिसने यूरोप को पहली बार नेकी और बदी का फ़रक़ सिखाया. एशिया ने ही दुनिया को राम, कृष्ण, ज़रतुश्त, मूसा, बुद्ध, कंगफ़ूत्से, ईसा और मुहम्मद दिये. एशिया का सितारा भी कभी हज़ारों साल चमक चुका है. एशिया ने ही यूरोप वालों को वह पतलून और हैट पहनाये जो दोनों चीन की देन हैं. एशिया ने ही सबसे पहले मनोरंजन के लिये बारूद ईजाद की. उसे उस समय क्या मालूम था कि कुछ जातियां इससे वह गोली बनाएंगी जो एशिया ही के ख़िलाफ़ चलाई जाएंगी. एशिया ने ही वह "हिन्दसे" यूरोप को दिये जिनके बिना विज्ञान की उन्नति हो ही नहीं सकती थी. फिर एक नींद का झोंका आया. एशिया सो गया, उसकी परम्परा सो गई, उसकी क़िस्मत सो गई ! उसने अपने पराये का फ़रक़ भुला दिया. बाहर की कुछ जातियों ने उसकी ज़मीन पर जगह जगह अपना क़ब्ज़ा जमा ल .

पर आज एशिया फिर से जाग रहा है. उसने आज अंगड़ाई ली है. सदियों की जंजीरें टूट रही हैं. एशिया उभर रहा है. एशिया के इस नव जागरण का अन्त करने के लिये शान्ति के दुशमन तरह तरह के जाल लेकर दौड़ रहे हैं. एशिया अब सब कुछ समझता है. उसने अपने शत्रुओं को चेतावनी दी है ! यही चेतावनी 'पंच शील' है.

पंचशील अ र उसके उसूल

'पंचशील' एशियाई देशों की एकता का चिह्न है. पंचशील हमारी दोस्ती को पक्का करता है. पंचतंत्र में एक कहानी है :—किसी शिकारी ने जाल फैलाकर उस पर दाने बिखरा दिये. चिड़ियों का एक दल उधर से गुज़रा. दानों की लालच में वह जाल पर उतरा और फंस गया. सब निराशा में डूबकर शिकारी का इन्तज़ार करने लगीं, पर एक कौवे ने उन्हें हिम्मत दिलाई. वह सब एक साथ ज़ोर लगा कर जाल समेत उड़ गईं ! शिकारी मुंह ताकता रह गया !

کا ھاتھ کہیں رہ گیا، کسی کی ٹانگ کہیں کٹ کر جا پڑی . جو مرگئے، اچھے رھے. جو بچے، اُن کی دشا دیکھی نہیں جاسکتی تھی . یہ "تجربہ" پھر جاپان سے کچھ ھی دور ایک ٹاپو پر دھرایا گیا . ھزاروں ایشیائی مچھوے پھر کسی کی لالسا کی بھینٹ چڑھ گئے ! اِس طرح ایشیا کو دو بار یہ بھیانک موت کا ناچ دیکھنا پڑا .

اِن موت کے سوداگروں کو اسی لئے ایشیا نے چیتاونی دی. 'پنچ شیل' وھی چیتاونی ھے .

ایشیا کی سر زمین پر انیک سبھیتائیں جنمیں اور پھولی پھلیں . ایشیا نے ھی یوروپ کو عیسیٰ سے سیکڑوں برس پہلے وہ "متر دھرم" دیا تھا جو ایک بار سارے یوروپ میں پھیل گیا تھا اور جس نے یوروپ کو پہلی بار نیکی اور بدی کا فرق سکھایا . ایشیا نے ھی 'دنیا کو رام' کرشن' زرتشت' موسیٰ' بدھ' کنگ فوتسے' عیسیٰ اور محمد دئے . ایشیا کا ستارا بھی کبھی ھزاروں سال چمک چکا ھے . ایشیا نے ھی یوروپ والوں کو وہ پتلون اور ھیٹ پہنائے جو دونوں چین کی دین ھیں . ایشیا نے ھی سب سے پہلے منورنجن کے لئے بارود ایجاد کی . اسے اُس سمے کیا معلوم تھا کہ کچھ جاتیاں اس سے وہ گولی بنائینگی جو ایشیا ھی کے خلاف چلائی جائینگی. ایشیا نے ھی وہ "ھندسے" یوروپ کو دئے جن کے بنا وگیان کی اُنتی ھو ھی نہیں سکتی تھی . پھر ایک نیند کا جھونکا آیا . ایشیا سو گیا، اُس کی پرمپرا سو گئی' اُس کی قسمت سو گئی ! اُس نے اپنے پرائے کا فرق بھلا دیا . باھر کی کچھ جاتیوں نے اُس کی زمین پر جگہ جگہ اپنا قبضہ جما لیا .

پر آج ایشیا پھر سے جاگ رھا ھے . اُس نے آج انگڑائی لی ھے . صدیوں کی زنجیریں ٹوٹ رھی ھیں ایشیا اُبھر رھا ھے . ایشیا کے اُس نوجاگرن کا انت کرنے کے لئے شانتی کے دشمن طرح طرح کے جال لیکر دوڑ رھے ھیں . ایشیا اب سب کچھ سمجھتا ھے . اُس نے اپنے شترؤں کو چیتاونی دی ھے ! یہی چیتاونی 'پنچ شیل' ھے .

پنچ شیل اور اُس کے اصول

'پنچ شیل' ایشیائی دیشوں کی ایکتا کا چنھ ھے . پنچ شیل ھماری دوستی کو پکا کرتا ھے. پنچ تنتر میں ایک کہانی ھے :— کسی شکاری نے جال پھیلاکر اُس پر دانے بکھرا دئے . چڑیوں کا ایک دل اُدھر سے گذرا . دانوں کی لالچ میں وہ جال پر اُترا اور پھنس گیا . سب نراشا میں ڈوب کر شکاری کا انتظار کرنے لگیں' پر ایک کوے نے اُنھیں ھمت دلائی . وہ سب ایک ساتھ زور لگاکر جال سمیت اُڑ گئیں ! شکاری منھ تاکتا رہ گیا !

पंचशील और एशिया

श्री ओम प्रकाश 'मंत्री'

एटम शक्ति और एशिया का नव जागरण

"पंचशील सारे संसार को एक चैलेंज (चुनौती) है' '
—जवाहरलाल नेहरू.

❀ ❀ ❀

जवाहरलाल नेहरू ही के शब्दों में इस युग की दो सबसे बड़ी देन ये हैं :—एक ऐटम शक्ति का आविष्कार और दूसरे एशिया का नव जागरण. यह दोनों ही अपने अपने ढंग से संसार को चैलेंज दे रहे हैं.

हर चीज़ का सदुपयोग और दुरुपयोग दोनों होते हैं, पर ऐटम शक्ति का मामला सबसे गहरा है. इसके सदुपयोग से दुनिया की हालत बदल सकती है—रेगिस्तान लहलहाते खेत बन सकते हैं, बंजर ज़मीन से अनाज पैदा हो सकता है, करोड़ों भूखों को रोटी मिल सकती है, माताओं के लिये धोतियां बुनी जा सकती हैं, बहनों के लिये सुन्दर आंचल तैयार किये जा सकते हैं, दुनिया चैन के हिंडोले में झूल सकती है, हर चीज़ असानी से मिल सकती है, हर चीज़ सस्ती हो सकती है, रोग और महामारियां नष्ट की जा सकती हैं, दुनिया का नक़्शा बदल सकता है, आदमी सच्चे अर्थों में खुद अपना भाग्य विधाता बन सकता है. दूसरी तरफ़ इस शक्ति का दुरुपयोग सारी मनुष्य जाति को ही जड़ मूल से खतम कर सकता है, संसार के बड़े से बड़े वैज्ञानिक ऐटम शक्ति के दुरुपयोग के भयानक नतीजों को समय समय पर दुनिया के सामने रखते रहे हैं. इस शक्ति का पहला दुरुपयोग जापान के नगर हीरोशीमा और फिर नागासाकी पर हुआ था, जिससे देखने वाले ही नहीं, सुनने वाले भी कांप उठे थे. जो हुआ वह थोड़े से में यह था :—

ऐटम बम गिरते ही एक विस्फोट हुआ. धूल उठ उठ कर आसमान पर छाने लगी. लाखों मील के अन्दर हर जानदार चीज़ मौत के मुंह में जा पड़ी—चौपाए, चिड़ियां, पेड़, पौधे सभी नष्ट हो गये. लोग तड़प तड़प कर मर रहे थे और कोई मुंह में पानी डालने वाला नहीं था ! बम के गिरते ही सारे वातावरण में भयंकर गरमी पैदा हो गई. लोगों के शरीर पर छाले पड़ गये. सब बेतहाशा नदी की बालू की तरफ़ भागे. एक ही जगह उन्हें तसल्ली मिल सकती थी और वह नदी की गरम बालू थी. तपती रेत पर लोग तड़प रहे थे, "पानी ! पानी !" चिल्ला रहे थे. किसी

پنچ شیل اور ایشیا

شری اُوم پرکاش 'منتری'

ایٹم شکتی اور ایشیا کا نوجاگرن

"پنچ شیل سارے سنسار کو ایک چیلینج (چنوتی) ہے!"
—جواہر لال نہرو.

❀ ❀ ❀

جواہر لال نہرو ہی کے شبدوں میں اِس یگ کی دو سب سے بڑی دین یہ ہیں :—ایک ایٹم شکتی کا آوشکار اور دوسرے ایشیا کا نوجاگرن . یہ دونوں ہی اپنے اپنے ڈھنگ سے سنسار کو چیلینج دے رہے ہیں .

ہر چیز کا سد اُپیوگ اور دراُپیوگ دونوں ہوتے ہیں' پر ایٹم شکتی کا معاملہ سب سے گہرا ہے . اِس کے سد اُپیوگ سے دنیا کی حالت بدل سکتی ہے—ریگستان لہلہاتے کھیت بن سکتے ہیں' بنجر زمین سے اناج پیدا ہوسکتا ہے' کروڑوں بھوکوں کو روٹی مل سکتی ہے' ماتاؤں کے لئے دھوتیاں بنی جاسکتی ہیں' بہنوں کے لئے سندر آنچل تیار کئے جاسکتے ہیں' دنیا چین کے ہنڈولے میں جھول سکتی ہے' ہر چیز آسانی سے مل سکتی ہے' ہر چیز سستی ہوسکتی ہے' روگ اور مہاماریاں نشٹ کی جاسکتی ہیں' 'دنیا کا نقشہ بدل سکتا ہے' آدمی سچے ارتھوں میں خود اپنا بھاگیہ ودھاتا بن سکتا ہے . دوسری طرف اِس شکتی کا دراُپیوگ ساری منشیہ جاتی کو ہی جڑ مول سے ختم کرسکتا ہے . سنسار کے بڑے سے بڑے ویگیانک ایٹم شکتی کے دراُپیوگ کے بھیانک نتیجوں کو سمے سمے پر دنیا کے سامنے رکھتے رہے ہیں . اِس شکتی کا پہلا دراُپیوگ جاپان کے نگر ہیروشما اور پھر ناگاساکی پر ہوا تھا' جس سے دیکھنے والے ہی نہیں' سننے والے بھی کانپ اُٹھے تھے . جو ہوا وہ تھوڑے سے میں یہ تھا :—

ایٹم بم گرتے ہی ایک وسپھوٹ ہوا . دھول اُٹھ اُٹھ کر آسمان پر چھانے لگی . لاکھوں میل کے اندر ہر جاندار چیز موت کے منہ میں جا پڑی—چوپائے' چڑیاں' پیڑ' پودے' سبھی نشٹ ہوگئے . لوگ تڑپ تڑپ کر مر رہے تھے اور کوئی منہ میں پانی ڈالنے والا نہیں تھا ! بم کے گرتے ہی سارے واتاورن میں بھینکر گرمی پیدا ہوگئی . لوگوں کے شریر پر چھالے پڑگئے . سب بےتحاشا ندی کی بالو کی طرف بھاگے . ایک ہی جگہ اُنہیں تسلی مل سکتی تھی اور وہ ندی کی گرم بالو تھی . تپتی ریت پہ لوگ تڑپ رہے تھے "پانی ! پانی !" چلا رہے تھے . کسی

वालों को एशिया वालों से लड़ाने का कुछ पच्छिमी राष्ट्रों का नापाक इरादा नाकाम हो जाएगा और वह अपना सा मुंह ले कर रह जाएंगे. हमें यक़ीन है कि चीनी जनता की तरह दूसरे देशों के लोग भी पूरी तरह चाहते हैं कि जापानी जनता की यह मांग पूरी हो. बरबादी के हथियारों के उपयोग के विरुद्ध आन्दोलन करने में जापानी जनता ने हाल में ज़बरदस्त कामयाबी हासिल की है. ऐसे हथियारों के उपयोग के खिलाफ़ लगभग दो करोड़ तीस लाख जापानियों ने दस्तख़त किये हैं. जापानी जनता बहादुरी से शान्ति के लिये कोशिश कर रही है. हम उसकी इस कोशिश के सम्मान में सर झुकाते हैं.

बंगकाक में अभी एक सम्मेलन हुआ था. यह सम्मेलन शान्ति क़ायम करने के लिये नहीं था, बल्कि इसका मक़सद लड़ाई की तैयारियां करना था. इस सम्मेलन की मेहमानवाज़ी का भार थाईलैंड के सर था. विदेशी गुलामी के आधीन थाईलैंड के निवासी पिस रहे हैं. उनके साथ हमारी पूरी हमदर्दी है. हमें पूरी आशा है कि थाईलैंड के नेता और वहां की जनता इस सचाई को समझ जाएगी कि अपनी ज़मीन पर विदेशियों के फ़ौजी अड्डे क़ायम कराके और विदेशी शक्तियों के बताये मार्ग पर विदेशी नीति पक्की करने से थाईलैंड की सुरक्षा नहीं हो सकती. एशियाई देशों के विशाल परिवार में शामिल होकर ही थाईलैंड की सुरक्षा हो सकती है.

ऊंचे ऊंचे पहाड़ों और गहरे समन्दरों ने अरब देशों और चीन को अलग कर रखा है. फिर भी एक समय था जब हम एक दूसरे के नज़दीकी पड़ोसी थे और एक दूसरे के बेहतरीन दोस्त थे. व्योपार, विचार, कला और विज्ञान की नई सीखों का लेन देन लगातार हमारे बीच होता रहता था. पन्द्रहवीं सदी से हमारे नाते कमज़ोर पड़ने लगे और धीरे धीरे बिलकुल ख़तम हो गए. आज नई नई और दुनिया को हिला देने वाली तबदीलियां हो रही हैं. पूरब के बहुत से देशों ने विदेशी दासता का जुआ उतार कर फेंक दिया है. बीच पूरब और निकट पूरब के लोग शान्ति, आज़ादी, राष्ट्रीय ख़ुदमुख़तारी और आपसी सहयोग के समर्थक हैं. वह आपस में भी सहयोग चाहते हैं और दूसरों से भी सहयोग करना चाहते हैं, पर अपनी आज़ादी खो कर नहीं. इसलिये चीन पूरी तरह अरब देशों की मुकम्मिल आज़ादी का समर्थक है.

एशिया की एकता ज़िन्दाबाद! यही हम सबकी प्रार्थना है.

والوں کو ایشیا والوں سے لڑانے کا کچھ پچھمی راشٹروں کا ناپاک ارادہ ناکام ہو جائیگا اور وہ اپنا سا منہ لیکر رہ جائینگے۔ ہمیں یقین ہے کہ چینی جنتا کی طرح دوسرے دیشوں کے لوگ بھی پوری طرح چاہتے ہیں کہ جاپانی جنتا کی یہ مانگ پوری ہو۔ بربادی کے ہتھیاروں کے اپیوگ کے ورودھ آندولن کرنے میں جاپانی جنتا نے حال میں زبردست کامیابی حاصل کی ہے۔ ایسے ہتھیاروں کے اپیوگ کے خلاف لگ بھگ دو کروڑ تیس لاکھ جاپانیوں نے دستخط کئے ہیں۔ جاپانی جنتا بہادری سے شانتی کے لئے کوشش کر رہی ہے۔ ہم اُس کی اِس کوشش کے سمان میں سر جھکاتے ہیں۔

بنکاک میں ابھی ایک سمیلن ہوا تھا۔ یہ سمیلن شانتی قائم کرنے کے لئے نہیں تھا، بلکہ اس کا مقصد لڑائی کی تیاریاں کرنا تھا۔ اس سمیلن کی مہمان نوازی کا بھار تھائی لینڈ کے سر تھا۔ ودیشی غلامی کے آدھین تھائی لینڈ کے نواسی پس رہے ہیں۔ اُن کے ساتھ ہماری پوری ہمدردی ہے۔ ہمیں پوری آشا ہے کہ تھائی لینڈ کے نیتا اور وہاں کی جنتا اس سچائی کو سمجھ جائیگی کہ اپنی زمین پر ودیشیوں کے فوجی اڈے قائم کراکے اور ودیشی شکتیوں کے بتائے مارگ پر ودیشی نیتی پکی کرنے سے تھائی لینڈ کی سورکشا نہیں ہوسکتی۔ ایشیائی دیشوں کے وشال پریوار میں شامل ہوکر ہی تھائی لینڈ کی سورکشا ہوسکتی ہے۔

اونچے اونچے پہاڑوں اور گہرے سمندروں نے عرب دیشوں اور چین کو الگ کر رکھا ہے۔ پھر بھی ایک سمے تھا جب ہم ایک دوسرے کے نزدیکی پڑوسی تھے اور ایک دوسرے کے بہترین دوست تھے۔ بیوپار، وچار، کلا اور وگیان کی نئی سیکھوں کا لین دین لگاتار ہمارے بیچ ہوتا رہتا تھا۔ پندرھویں صدی سے ہمارے ناتے کمزور پڑنے لگے اور دھیرے دھیرے بالکل ختم ہوگئے۔ آج نئی نئی اور دنیا کو ہلا دینے والی تبدیلیاں ہو رہی ہیں۔ پورب کے بہت سے دیشوں نے ودیشی داستا کا جوا اُتارکر پھینک دیا ہے۔ بیچ پورب اور نکٹ پورب کے لوگ شانتی، آزادی، راشٹریہ خودمختاری اور آپسی سہیوگ کے سمرتھک ہیں۔ وہ آپس میں بھی سہیوگ چاہتے ہیں اور دوسروں سے بھی سہیوگ کرنا چاہتے ہیں، پر اپنی آزادی کھوکر نہیں۔ اس لئے چین پوری طرح عرب دیشوں کی مکمل آزادی کا سمرتھک ہے۔

ایشیا کی ایکتا زندہ باد! یہی ہم سب کی پرارتھنا ہے۔

सेनाएं निकल जाएं. 6 फ़रवरी को हमारे भारती दोस्तों ने "ताइवान छोड़ो दिन" मनाया था. हम दिल से इस भावना की क़द्र करते हैं.

मैं यह भी कह दूं कि ताइवान की समस्या पर विचार करने और उसका हल ढूंढ़ने के लिये दस देशों का सम्मेलन बुलाने के सुझाव से चीनी जनता सहमत हो सकती है. यह दस देश यह होंगे :—भारत, रूस, बरमा, बरतानिया, फ़्रांस, चीन, इन्डोनीशिया, लंका, अमरीका और पाकिस्तान. सवाल उठ सकता है कि इस सम्मेलन में च्यांग-काई-शेक और उनके गुरगे क्यों शामिल नहीं हो सकते ? हमारा जवाब यह है: च्यांग-काई-शेक और उनके गुरगे अमरीकी सरकार की एक कठपुतली के सिवा कुछ नहीं हैं. फिर इनसे बात चीत क्यों की जाए ? हम सीधे सीधे अमरीकियों से ही बात क्यों न करें ? इसलिये जब कभी अमरीकी राज़ी होंगे और नेकनीयती से ऐसे सम्मेलन में आयेंगे तो हम उनसे बात कर लेंगे. हम सदा इस पक्ष के समर्थक हैं कि सारे अन्तर्राष्ट्री झगड़े आपस में बात चीत करके शान्तिपूर्ण ढंग से हल किये जाएं. यही तो हमने पांगमुमजाम और फिर जनेवा में किया है. हमें विश्वास है कि शान्तिपूर्वक साथ साथ रहने के पांच सिद्धान्तों, पंचशील, के आधार पर न केवल ताइवान की ही समस्या हल हो सकती है बल्कि सारी अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं हल की जा सकती हैं.

कुछ दिनों पहले प्रधान मंत्री नेहरू ने ठीक ही कहा था:—"पंचशील दुनिया के देशों को एशिया की एक चुनौती है और हर देश को इस चुनौती का उत्तर देना है"...... आइये हम पूछें कि अमरीकी सरकार दूसरे देशों पर आक्रमण करेगी या नहीं ? वह दूसरे राष्ट्रों के मामलो मे हस्तक्षेप करेगी या नहीं ?

जापानियों की मांग है कि चीन और जापान में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध क़ायम हों. मुझे विश्वास है कि यह भावना दिन बदिन बढ़ती जा रही है और यह मांग ज़ोर पकड़ रही है. जापानी जनता की इस मांग से चीनी जनता को पूरी हमदर्दी है और उनकी कामना है कि यह मांग पूरी हो. चीन और जापान के बीच सम्बन्ध क़ायम होने के रास्ते में रोड़ा कौन है ? निस्संदेह न तो जापान ही इस रास्ते में बाधा खड़ा करता है और न चीन ही रोड़ा अटकाता है. यह तो अमरीका की ही सरकार है जो जापानी सरकार पर दबाव डाल कर जापानी जनता की इस मांग को पूरी होने से रोकती है. चीनी जनता को पूरा विश्वास है कि जब जापान विदेशी जुए को उतार फेंकेगा, आर्थिक और राजनैतिक आज़ादी हासिल कर लेगा और तमाम एशियाई देशों से दोस्ताना सम्बन्ध क़ायम कर लेगा तो जापान में फिर से फ़ौजी शासन को जन्म देने और एशिया

سینائیں نکل جائیں . 6 فروری کو همارے بھارتی دوستوں نے "تائیوان چھوڑو دن" منایا تھا . هم دل سے اِس بھاؤنا کی قدر کرتے هیں .

میں یہ بھی کہدوں کہ تائیوان کی سمسیا پر وچار کرنے اور اُس کا حل ڈھونڈھنے کے لئے دس دیشوں کا سمیلن بلانے کے سجھاؤ سے چینی جنتا سہمت هوسکتی هے . یہ دس دیش یہ هونگے :— بھارت، روس، برما، برطانیہ، فرانس، چین، انڈونیشیا، لنکا، امریکہ اور پاکستان . سوال اُٹھ سکتا هے کہ اس سمیلن میں چیانگ کائی شیک اور ان کے گرگے کیوں شامل نہیں هوسکتے؟ همارا جواب یہ هے : چیانگ کائی شیک اور ان کے گرگے امریکی سرکار کی ایک کٹھپتلی کے سوا کچھ نہیں هے . پھر ان سے بات چیت کیوں کی جائے ؟ هم سیدھے سیدھے امریکیوں سے هی بات کیوں نہ کریں ؟ اس لئے جب کبھی امریکی راضی هونگے اور نیک نیتی سے ایسے سمیلن میں آئینگے تو هم ان سے بات کرلینگے . هم سدا اس پکش کے سمرتھک هیں کہ سارے انتر راشٹری جھگڑے آپس میں بات چیت کرکے شانتی پورن ڈھنگ سے حل کئے جائیں . یہی تو هم نے پانگ مںجام اور جنیوا میں کیا هے . همیں وشواس هے کہ شانتی پوروک ساتھ ساتھ رهنے کے پانچ سدھانتوں 'پنچ شیل' کے آدھار پر نہ کیول تائیوان کی هی سمسیا حل هوسکتی هے بلکہ ساری انتر راشٹریہ سمسیائیں حل کی جاسکتی هیں .

کچھ دنوں پہلے پردھان منتری نہرو نے ٹھیک هی کہا تھا :— "پنچ شیل دنیا کے دیشوں کو ایشیا کی ایک چنوتی هے اور هر دیش کو اس چنوتی کا اُتر دینا هے ."...... آئیے هم پوچھیں کہ امریکی سرکار دوسرے دیشوں پر آکرمن کریگی یا نہیں ؟ وہ دوسرے راشٹروں کے معاملوں میں هستکشیپ کریگی یا نہیں ؟

جاپانیوں کی مانگ هے کہ چین اور جاپان میں انتر راشٹریہ سمبندھ قائم هوں . مجھے وشواس هے کہ یہ بھاونا دن بہ دن بڑھتی جارهی هے اور یہ مانگ زور پکڑ رهی هے . جاپانی جنتا کی اس مانگ سے چینی جنتا کو پوری همدردی هے اور ان کی کامنا هے کہ یہ مانگ پوری هو . چین اور جاپان کے بیچ سمبندھ قایم هونے کے راستے میں روڑا کون هے ؟ نسندیہ نہ تو جاپان هی اس راستے میں بادھا کھڑا کرتا هے اور نہ چین هی روڑا اٹکاتا هے . یہ تو امریکہ کی هی سرکار هے جو جاپانی سرکار پر دباؤ ڈال کر جاپانی جنتا کی اس مانگ کو پوری هونے سے روکتی هے . چینی جنتا کو پورا وشواس هے کہ جب جاپان ودیشی جوئے کو اُتار پھینکیگا، آرتھک اور راجنیتک آزادی حاصل کرلیگا اورتمام ایشیائی دیشوں سے دوستانہ سمبندھ قائم کرلیگا تو جاپان میں پھر سے فوجی شاسن کو جنم دینے اور ایشیا

लगातार संघर्ष के बाद अन्त में हमने अपने देश को आज़ाद कराया है. हम अपनी क़ौमी खुद मुख़्तारी और आज़ादी को अब कभी हड़प होने नहीं देंगे.

कुछ ऐसे लोग हैं जिनकी नीयत पाक है, जो सच्चे हमदर्द हैं और अपने दोस्त हैं, लेकिन लड़ाई का ख़तरा सामने खड़ा देखकर दुशमन के सामने झुकने का जिनके मन में विचार पैदा होता है, उनके कथन के अनुसार शांति और सुरक्षा की ख़ातिर हमलावर के सामने झुक जाना अक़्लमन्दी है. उनको महसूस होता है कि ताइवान की समस्या को हल करने का आसान तरीक़ा यह है कि "दो चीन" बना दिये जाएं. मुझे ऐसा लगता है कि इन दोस्तों ने ताइवान की समस्या के असली रूप को ग़लत समझा है और इसीलिये समस्या की ख़ास कड़ी इन की आंखों से ओझल है. अमरीकी "देख रेख" में ताइवान दूसरा चीन नहीं है. ताइवान इस तरह सीधे सीधे अमरीका से मिलने के लिये एक उम्मीदवार रियासत है. चीन की ज़मीन और एशिया के महाद्वीप पर हमला करने के लिये जो तीन मोर्चे बने हैं उनमें से एक ताइवान है. अमरीका ने वहां अपने अड्डे तो बना ही लिये हैं. अगर हम डर के सामने झुक जाएं और अपने भविष्य को डर की वेदी पर चढ़ा दें तो नतीजा शीघ्र ही सामने आ जाएगा. जिस बटवारे को "दो चीन" कहा जाता है, नतीजा यह होगा कि उसकी जगह कोई भी चीन बाक़ी न रह जाएगा.

हमारे पुराने दुखद अनुभव ने हमें कोई सबक़ सिखाया है या नहीं? म्युनिच मे चैम्बरलेन ने जिस नीति पर अमल किया था उसके कारन सारा योरप नाज़ियों का गुलाम हो गया. 1931 में जापानियों के हमले के समय च्यांग-काई-शेक ने मुक़ाबला न करने की जो नीति अपनाई उसकी वजह से एक बार लगभग सारा चीन हाथ से निकल गया. इस तरह की नीति का असर एक देश या एक महाद्वीप तक ही सीमित नहीं रहा. दुनिया के कोने कोने में इस नीति का प्रभाव पड़ा है.

वाशिंगटन की लड़ाई की धमकियों के सामने इसीलिये चीनी जनता सर नहीं झुकाएगी. अपनी क़ौमी सुरक्षा के लिये ही ताइवान को हमें आज़ाद नहीं कराना है, बल्कि एशिया में और संसार में शांति क़ायम रखने के लिये ताइवान को आज़ाद कराना ज़रूरी है.

हमें आप अच्छी तरह समझ लीजिये. हम चीनी लोग लड़ाई-पसंद लोगों में से नहीं हैं. शांति पूर्ण ढंग से ताइवान की समस्या को हल करने से हम इनकार नहीं करते. 1949 में चीन की राजधानी पीकिंग शांतिपूर्ण ढंग से ही आज़ाद कराई गई थी. लेकिन इस समस्या को शान्तिपूर्ण ढंग से हल करने के लिये जो चीज़ बहुत ज़रूरी है वह यह है कि ताइवान से अमरीकी

لگاتار سنگھرش کے بعد انت میں ہم نے اپنے دیش کو آزاد کرایا ہے۔ ہم اپنی قومی خودمختاری اور آزادی کو اب کبھی ہڑپ نہیں ہونے دینگے۔

کچھ ایسے لوگ ہیں جن کی نیت پاک ہے، جو سچے ہمدرد ہیں اور اپنے دوست ہیں، لیکن لڑائی کا خطرہ سامنے کھڑا دیکھکر دشمن کے سامنے جھکنے کا جن کے من میں وچار پیدا ہوتا ہے، ان کے کتھن کے انوسار شانتی اور سورکشا کی خاطر حملہ‌آور کے سامنے جھک جانا عقلمندی ہے۔ ان کو محسوس ہوتا ہے کہ تائیوان کی سمسیا کو حل کرنے کا آسان طریقہ یہ ہے کہ "دو چین" بنا دئے جائیں۔ مجھے ایسا لگتا ہے کہ ان دوستوں نے تائیوان کی سمسیا کے اصلی روپ کو غلط سمجھا ہے اور اس لئے سمسیا کی خاص کڑی ان کی آنکھوں سے اوجھل ہے۔ امریکی "دیکھ ریکھ" میں تائیوان دوسرا "چین" نہیں ہے۔ تائیوان اس طرح سیدھے سیدھے امریکہ سے ملنے کے لئے ایک امیدوار ریاست ہے۔ چین کی زمین اور ایشیا کے مہادیپ پر حملہ کرنے کے لئے جو تین مورچے بنے ہیں ان میں سے ایک تائیوان ہے۔ امریکہ نے وہاں اپنے اڈے تو بنا ہی لئے ہیں۔ اگر ہم ڈر کے سامنے جھک جائیں اور اپنے بھوشیہ کو ڈر کی ویدی پر چڑھا دیں تو نتیجہ شیگھر ہی سامنے آجائیگا۔ جس بٹوارے کو "دو چین" کہا جاتا ہے، نتیجہ یہ ہوگا کہ اس کی جگہ کوئی بھی چین باقی نہ رہ جائیگا۔

ہمارے پرانے دکھد انوبھو نے ہمیں کوئی سبق سکھایا ہے یا نہیں؟ میونخ میں چیمبرلین نے جس نیتی پر عمل کیا تھا اس کے کارن سارا یورپ نازیوں کا غلام ہوگیا۔ 1931 میں جاپانیوں کے حملے کے سمے چیانگ کائی شیک نے مقابلہ نہ کرنے کی جو نیتی اپنائی اس کی وجہ سے ایک بار لگ بھگ سارا چین ہاتھ سے نکل گیا۔ اس طرح کی نیتی کا اثر ایک دیش یا ایک مہادیپ تک ہی سیمت نہیں رہا۔ دنیا کے کونے کونے میں اس نیتی کا پربھاو پڑا ہے۔

واشنگٹن کی لڑائی کی دھمکیوں کے سامنے اسی لئے چینی جنتا سر نہیں جھکائیگی۔ اپنی قومی سورکشا کے لئے ہی تائیوان کو ہمیں آزاد نہیں کرانا ہے، بلکہ ایشیا میں اور سنسار میں شانتی قائم رکھنے کے لئے تائیوان کو آزاد کرانا ضروری ہے۔

ہمیں آپ اچھی طرح سمجھ لیجئے۔ ہم چینی لوگ لڑائی پسند لوگوں میں سے نہیں ہیں۔ شانتی پورن ڈھنگ سے تائیوان کی سمسیا کو حل کرنے سے ہم انکار نہیں کرتے۔ 1949 میں چین کی راجدھانی پیکنگ شانتی پورن ڈھنگ سے ہی آزاد کرائی گئی تھی۔ لیکن اس سمسیا کو شانتی پورن ڈھنگ سے حل کرنے کے لئے جو چیز بہت ضروری ہے وہ یہ ہے کہ تائیوان سے امریکی

ने चीन के खिलाफ़ जाबिराना क़दम उठाए हैं. उन्होंने यह भ्रम फैलाया है कि दूर पूरब में फैले अन्तर्राष्ट्रीय तनाव का कारन यह है कि चीनियों ने ताइवान पर हमला कर दिया है. लेकिन असलियत सीधी सादी है और आसानी से समझ में आती है. दुनिया भर में फैले मौजूदा अन्तर्राष्ट्रीय तनाव का असली कारन अमरीका की औपनिवेशिक लालसा, फ़ौजी क़ब्ज़ा और लड़ाई की धमकी की नीति है.

सवाल उठता है कि एशिया और सारी दुनिया में किसने तनाव पैदा कर रखा है ? संयुक्तराज अमरीका ने यह तनाव पैदा कर रखा है. अमरीका की छत्र छाया में एशिया और दुनिया के राष्ट्रों को गुलाम बनाने का साम्राजियों का प्रयत्न ही आजकल के अन्तर्राष्ट्रीय तनाव का एक मात्र कारन है.

पुर्तगाली हुकूमत से गोआ को भारतवासी आज़ाद कराना चाहते हैं. हम उन्हें यक़ीन दिलाते हैं कि चीनी जनता पूरी तरह उनके साथ है. मुझे यह विश्वास है कि एशिया के दूसरे शान्ति प्रेमी देश भी भारतवासियों का समर्थन करते हैं. लेकिन इसके खिलाफ़ गोआ में फ़ौजी अड्डे क़ायम करने की नियत से पुर्तगाल वालों के साथ अमरीकी सरकार ने फ़ौजी गुटबन्दी का एक नया समझौता किया है. इन्डोनीशिया की जनता पच्छिमी ईरियन को डचों के चंगुल से आज़ाद कराना चाहती है. हम उन्हें यक़ीन दिलाते हैं कि चीनी जनता पूरी तरह उनके साथ है. मुझे यह विश्वास है कि एशिया के दूसरे शान्ति प्रेमी राष्ट्र इन्डोनेशिया वासियों का समर्थन करते हैं. लेकिन पच्छिमी ईरियन में फ़ौजी अड्डे बनाने देने के एवज़ में अमरीकी सरकार डच शासन का समर्थन करती है.

यह साफ़ है कि मुकम्मिल आज़ादी की हमारी मांग और साम्राजियों के नामनिहाद अधिकार एक दूसरे के विरुद्ध हैं. सवाल यह है कि साम्राजियों की ख़ातिर हम अपनी जायज़ मांग को छोड़ दें या न छोड़ें ?

हमें मालूम है कि अपने झूठे अधिकारों की रक्षा के लिये साम्राजी हम को ऐटमी लड़ाई की धमकी देने से भी नहीं चूकते. सवाल यह है कि इस डर से हम अपने सिद्धांतों को छोड़ दें या न छोड़ें ?

चीनी जनता का पक्ष थोड़े में यह है और साफ़ है. हम बेहद इच्छुक हैं कि शांति क़ायम रहे लेकिन हम अपनी ज़मीन का किसी को नज़राना देकर शांति की भीक नहीं मांगेंगे. लड़ाई का विरोध हमारा पक्का इरादा है. लेकिन लड़ाई छेड़ने की किसी की धमकियों से हम डरने वाले नहीं हैं. यह मैं बता दूं कि हमारी मौजूदा पीढ़ी और हमारे बाप दादाओं की पीढ़ी साम्राजियों की ज़ुल्म ज़्यादती और धमकियों की छाया में पली है. सौ साल के लम्बे और

نے چین کے خلاف جابرانہ قدم اٹھائے ہیں . انہوں نے یہ بھرم پھیلایا ہے کہ دور پورب میں پھیلے انتر راشٹریہ تناؤ کا کارن یہ ہے کہ چینیوں نے تائیوان پر حملہ کردیا ہے . لیکن اصلیت سیدھی سادی ہے اور آسانی سے سمجھ میں آتی ہے . دنیا بھر میں پھیلے موجودہ انتر راشٹریہ تناؤ کا اصلی کارن امریکہ کی اوپنیویشک لالسا، فوجی قبضہ اور لڑائی کی دھمکی کی نیتی ہے .

سوال اٹھتا ہے کہ ایشیا اور ساری دنیا میں کس نے تناؤ پیدا کر رکھا ہے ؟ سنیکت راج امریکہ نے یہ تناؤ پیدا کر رکھا ہے . امریکہ کی چھتر چھایا میں ایشیا اور دنیا کے راشٹروں کو غلام بنانے کا سامراجیوں کا پریتن ہی آجکل کے انتر راشٹریہ تناؤ کا ایک ماتر کارن ہے .

پرتگالی حکومت سے گوآ کو بھارت واسی آزاد کرانا چاہتے ہیں . ہم انہیں یقین دلاتے ہیں کہ چینی جنتا پوری طرح اُن کے ساتھ ہے . مجھے یہ وشواس ہے کہ ایشیا کے دوسرے شانتی پریمی دیش بھی بھارت واسیوں کا سمرتھن کرتے ہیں . لیکن اس کے خلاف گوا میں فوجی اڈے قائم کرنے کی نیت سے پرتگال والوں کے ساتھ امریکی سرکار نے فوجی گٹ بندی کا ایک نیا سمجھوتہ کیا ہے. انڈونیشیا کی جنتا پچھمی ایرین کو ڈچوں کے چنگل سے آزاد کرانا چاہتی ہے . ہم انہیں یقین دلاتے ہیں کہ چینی جنتا پوری طرح ان کے ساتھ ہے. مجھے یہ وشواس ہے کہ ایشیا کے دوسرے شانتی پریمی راشٹر انڈونیشیا واسیوں کا سمرتھن کرتے ہیں . لیکن پچھمی ایرین میں فوجی اڈے بنانے دینے کے عیوض میں، امریکی سرکار ڈچ شاسن کا سمرتھن کرتی ہے .

یہ صاف ہے کہ مکمل آزادی کی ہماری مانگ اور سامراجیوں کے نام نہاد ادھیکار ایک دوسرے کے وردھ ہیں . سوال یہ ہے کہ سامراجیوں کی خاطر ہم اپنی جائز مانگ کو چھوڑ دیں یا نہ چھوڑیں ؟

ہمیں معلوم ہے کہ اپنے جھوٹے ادھیکاروں کی رکشا کے لئے سامراجی ہم کو ایٹمی لڑائی کی دھمکی دینے سے بھی نہیں چوکتے . سوال یہ ہے کہ اس ڈر سے ہم اپنے سدھانتوں کو چھوڑ دیں یا نہ چھوڑیں ؟

چینی جنتا کا پکش تھوڑے میں یہ ہے اور صاف ہے . ہم بےحد اِچھک ہیں کہ شانتی قائم رہے لیکن ہم اپنی زمین کا کسی کو نظرانہ دیکر شانتی کی بھیک نہیں مانگیں گے . لڑائی کا وردھ ہمارا پکا اِرادہ ہے . لیکن لڑائی چھیڑنے کی کسی کی دھمکیوں سے ہم ڈرنے والے نہیں ہیں. یہ میں بتادوں کہ ہماری موجودہ پیڑھی اور ہمارے باپ داداؤں کی پیڑھی سامراجیوں کی ظلم زیادتی اور دھمکیوں کی چھایا میں پلی ہے . سو سال کے لمبے اور

चीनी जनता के लिये जरूरी है कि वह ताइवान को आजाद कराए ताकि वह अपनी प्रादेशिक अखण्डता को बाहरी हमलों से बचा सके. ताइवान को आजाद कराना हमारा ऐसा ही कर्तव्य है जैसा भारत में गोआ को मिलाना हमारे भारतीय दोस्तों का कर्तव्य है और पच्छिमी ईरियन को आजाद कराना हमारे इन्डोनिशियाई मित्रों का फ़र्ज़ है. जब हम अपना फ़र्ज़ पूरा करने के लिये उठेंगे तो हमलावरों से तो हमें टकराना ही होगा. पिछले दिसम्बर में अमरीकी सरकार ने च्यांग-काई-शेक से आपसी सुरक्षा के लिये एक समझौता किया है. ताइवान के ग़ैर क़ानूनी क़ब्ज़े को क़ानूनी बनाने का यह ढंग है. पिछली जनवरी में श्री आइज़ेनहावर ने राष्ट्र की सुरक्षा के नाम पर अमरीकी कांग्रेस से मांग की कि उन्हें अधिकार दिया जावे कि ताइवान में वह अमरीकी हित की रक्षा कर सकें! अमरीकी हित की रक्षा वह उस जगह करना चाहते हैं जो अमरीका के साहिल से दस हज़ार क़िलोमीटर दूर है! उनकी सेना जो हमले करती रहती है उसे वह कभी नहीं रोकते और चीनी जनता को ज़हरीले और बरबादी के हथियारों के उपयोग की धमकी देते हैं. 24 जनवरी को अमरीकी कांग्रेस को जो सन्देश उन्होंने भेजा था उसमें कहा है कि अगर ताइवान अमरीकी असर में नहीं रहता है तो "पच्छिमी प्रशान्त महासागर मे टापुओं की ज़ंजीर टूट जाएगी."

आइये हम पूछें कि अमीरीकी युद्ध प्रेमियों की यह ज़ालिमाना और जाबिराना हरकतें क्या दुनिया की आंखों को साफ़ दिखाई नहीं देतीं. लोकसभा के सामने 31 मार्च को भाषण देते हुए प्रधान-मंत्रि नेहरू ने इधर ठीक इशारा किया था कि यह चालें आम-समझ, दलील और नैतिकता यानी इख़लाक़ सब का बिलकुल उलंघन करती हैं.

लेकिन अमरीका के युद्ध प्रेमियों की बिलकुल दूसरी ही समझ है और वह दूसरी ही दलील मानते हैं. नैतिकता की तो उनसे बात करना ही फ़ज़ूल है. उनकी समझ और उनकी दलील को समझने के लिये सिक्के का दूसरा रुख़ देखना पड़ेगा. जो चीज़ रक्षा कही जाती है असल में वह उपद्रव है. जिसको शान्ति का नाम दिया जाता है वह लड़ाई है. जिसे सुरक्षा की संज्ञा दी जाती है असल मे वह आक्रमण है. 'तोड़ फोड़ की रोक' का नाम जिसे दिया जाता है वह दूसरे राष्ट्रों के अन्दरूनी मामलों में दख़ल देने के सिवा और कुछ नहीं है. आर्थिक सहायता भी अपने मतलब के अनुसार अन्त में आर्थिक मदाख़लत का रूप धारन कर लेती है. इस पर तुर्रा यह है कि अमरीका के युद्ध प्रेमी और भविष्य के युद्ध प्रेरक दूसरे देशों को हमलावर बताते हैं. उनकी दलील के अनुसार कोरिया वालों ने कोरिया पर हमला किया, वियतनाम वालों ने वियतनाम पर आक्रमण किया और चीनियों

چینی جنتا کے لئے ضروری ہے کہ وہ تائیوان کو آزاد کرائے تاکہ وہ اپنی پرادیشک اکھنڈتا کو باہری حملوں سے بچا سکے. تائیوان کو آزاد کرانا ہمارا ایسا ہی کرتویہ ہے جیسا بھارت میں گوا کو ملانا ہمارے بھارتیہ دوستوں کا کرتویہ ہے اور پچھمی ایرین کو آزاد کرانا ہمارے انڈونیشیائی متروں کا فرض ہے. جب ہم اپنا فرض پورا کرنے کے لئے اٹھیں گے تو حملہ آوروں سے تو ہمیں ٹکرانا ہی ہوگا. پچھلے دسمبر میں امریکی سرکار نے چیانگ کائی شیک سے آپسی سورکشا کے لئے ایک سمجھوتہ کیا ہے. تائیوان کے غیر قانونی قبضہ کو قانونی بنانے کا یہ ڈھنگ ہے. پچھلی جنوری میں شری آئزن ہاور نے راشٹر کی سورکشا کے نام پر امریکی کانگریس سے مانگ کی کہ انہیں ادھیکار دیا جاوے کہ تائیوان میں وہ امریکی ہت کی سورکشا کرسکیں! امریکی ہت کی رکشا وہ اس جگہ کرنا چاہتے ہیں جو امریکہ کے ساحل سے دس ہزار کیلومیٹر دور ہے! ان کی سینا جو حملے کرتی رہتی ہے اسے وہ کبھی نہیں روکتے اور چینی جنتا کو زہریلے اور بربادی کے ہتھیاروں کے اپیوگ کی دھمکی دیتے ہیں. 24 جنوری کو امریکی کانگریس کو جو سندیش انہوں نے بھیجا تھا اس میں کہا ہے کہ اگر تائیوان امریکی اثر میں نہیں رہتا ہے تو "پچھمی پرشانت مہاساگر میں ٹاپوؤں کی زنجیر ٹوٹ جائے گی."

آئیے ہم پوچھیں کہ امریکی یدھ پریمیوں کی یہ ظالمانہ اور جابرانہ حرکتیں کیا دنیا کی آنکھوں کو صاف دکھائی نہیں دیتیں. لوک سبھا کے سامنے 31 مارچ کو بھاشن دیتے ہوئے پردھان منتری نہرو نے ادھر ٹھیک اشارہ کیا تھا کہ یہ چالیں عام سمجھ، دلیل اور نیتکتا یعنی اخلاق سب کا بالکل اُلنگھن کرتی ہیں.

لیکن امریکہ کے یدھ پریمیوں کی بالکل دوسری ہی سمجھ ہے اور وہ دوسری ہی دلیل کو مانتے ہیں. نیتکتا کی تو ان سے بات کرنا ہی فضول ہے. ان کی سمجھ اور ان کی دلیل کو سمجھنے کے لئے سکے کا دوسرا رخ دیکھنا پڑے گا. جو چیز رکشا کہی جاتی ہے اصل میں وہ اپدرو ہے جس کو شانتی کا نام دیا جاتا ہے اصل میں وہ لڑائی ہے. جسے سورکشا کی سنگیا دی جاتی ہے اصل میں وہ آکرمن ہے. 'توڑ پھوڑ کی روک' کا نام جسے دیا جاتا ہے وہ دوسرے راشٹروں کے اندرونی معاملوں میں دخل دینے کے سوا اور کچھ نہیں ہے. آرتھک سہایتا بھی اپنے مطلب کے انوسار انت میں آرتھک مداخلت کا روپ دھارن کرلیتی ہے. اس پر طرہ یہ ہے کہ امریکہ کے یدھ پریمی اور بھوشیہ کے یدھ پریرک دوسرے دیشوں کو حملہ آور بتاتے ہیں. ان کی دلیل کے انوسار کوریا والوں نے کوریا پر حملہ کیا، ویتنام والوں نے ویتنام پر آکرمن کیا اور چینیوں

कुछ साल हुए जब जनरल मेकारथर कोरिया में अमरीकी फ़ौजों के सेनापति थे, उन्होंने ऐलान किया था कि अमरीकी सीमा के रूप में वह पच्छिमी प्रशान्त महासागर में जज़ीरों की एक दीवार खड़ी करना चाहते हैं. लेकिन अब तो उत्तर पूरब एशिया से लेकर बीच पूरब और निकट पूरब तक यह दीवार फैल गई है. इसके घेरे में बड़े बड़े फौजी अड्डे क़ायम हैं जिनकी तादाद दिन बदिन बढ़ रही है. इससे सारे एशिया को ज़बरदस्त ख़तरा पैदा हो गया है.

दुनिया को बस में करने की जिस नीति पर अमरीका चल रहा है उसका एक समझा बूझा क़दम यह है कि एशिया को जीता जाए और यहां एक नई औपनिवेशिक शक्ति क़ायम की जाए. इसलिये कोई अचरज नहीं है अगर श्री डलेस और दूसरे अमरीकी साम्राजवादी शान्ति पूर्वक राष्ट्रों के साथ साथ रहने के विचार का विरोध करते हैं.

इस सिलसिले में मेरा उस सवाल के सम्बंध में भी कुछ कहना ठीक होगा जिसने एक बड़ी हद तक दुनिया में तनाव पैदा कर रखा है. मेरा मतलब ताइवान (फ़ारमूसा) से है. इस सच्चाई का खन्डन तो किया ही नहीं जा सकता कि ताइवान चीन का एक हिस्सा है. ताइवान चीन का ऐसा ही एक हिस्सा है जैसा लांग आइलैंड अमरीका का एक हिस्सा है. इस सच्चाई को अमरीका की वह सरकार भी स्वीकार करती थी जिसने अमरीकी सेना को ताइवान पर क़बज़ा करने का हुक्म दिया था. यह दूसरी बात है कि अन्तर्राष्ट्रीय समझौतों और ख़ुद अपने वचनों से हट कर श्री चरचिल और श्री इडेन ने सर्वसत्ता (सौवरेन्टी) का प्रश्न उठाया है. अगर ताइवान चीन का हिस्सा न होता तो च्यांग-काई-शेक रूपी मिट्टी के पुतले को वहां बैठाए रखने की कौन ज़रूरत थी. हम सब जानते हैं कि च्यांग-काई-शेक अमरीकी अफ़सरों की छायामात्र है. अमरीकी सेना की सहायता के बिना वह चीन के इस बड़े टापू में एक दिन नहीं टिक सकता. ताइवान का सवाल बिलकुल सीधा सादा है. अमरीका ने चीन के इस इलाक़े पर क़बज़ा कर लिया है, यही सवाल है.

जून 1950 में जब अमरीका ने कोरिया पर हमला किया तो उस समय के अमरीकी राष्ट्रपति श्री ट्रूमैन ने अमरीका के सातवें जहाज़ी बेड़े को ताइवान पर क़बज़ा करने और आस पास के ताइवान शहर के सारे टापुओं को घेर लेने का हुक्म दिया. तब से अमरीका के साम्राजी च्यांग-काई-शेक के साथी देश द्रोहियों का उपयोग कर रहे हैं और ताइवान से हमारे साहिली इलाक़ों पर अकसर हवाई और जहाज़ी बेड़ों से हमले करते रहते हैं. अन्तर्राष्ट्रीय व्योपार के जो जहाज़ शान्ति पूर्वक तिजारत करते हैं उन पर समन्दर में डाका डाला जाता है, यह बात अब सब के कानों तक पहुंच चुकी है.

کچھ سال ہوئے جب جنرل میک آرتھر کوریا میں امریکی فوجوں کے سیناپتی تھے' انہوں نے اعلان کیا تھا کہ امریکی سیما کے روپ میں وہ پچھمی پرشانت مہاساگر میں جزیروں کی ایک دیوار کھڑی کرنا چاہتے ہیں . لیکن اب تو اُتر پورب ایشیا سے لے کر بیچ پورب اور نکٹ پورب تک یہ دیوار پھیل گئی ہے . اس کے گھیرے میں بڑے بڑے فوجی اڈے قائم ہیں جنکی تعداد دن بدن بڑھ رہی ہے . اس سے سارے ایشیا کو زبردست خطرہ پیدا ہو گیا ہے .

دنیا کو بس میں کرنے کی جس نیتی پر امریکہ چل رہا ہے اس کا ایک سمجھا بوجھا قدم یہ ہے کہ ایشیا کو جیتا جائے اور یہاں ایک نئی اُپنیویشک شکتی قائم کی جائے . اِس لئے کوئی اچرج نہیں ہے اگر شری ڈلیس اور دوسرے امریکی سامراجوادی شانتی پوروک راشٹروں کے ساتھ ساتھ رہنے کے وچار کا ورودھ کرتے ہیں .

اِس سلسلے میں میرا اس سوال کے سمبندھ میں بھی کچھ کہنا ٹھیک ہوگا جس نے ایک بڑی حد تک دنیا میں تناؤ پیدا کر رکھا ہے . میرا مطلب تائیوان (فارموسا) سے ہے. اِس سچائی کا کھنڈن تو کیا ہی نہیں جاسکتا کہ تائیوان چین کا ایک حصہ ہے . تائیوان چین کا ایسا ہی ایک حصہ ہے جیسا لانگ آئی لینڈ امریکہ کا ایک حصہ ہے . اِس سچائی کو امریکہ کی وہ سرکار بھی سوئیکار کرتی تھی جس نے امریکی سینا کو تائیوان پر قبضہ کرنے کا حکم دیا تھا یہ دوسری بات ہے کہ انتر راشٹریہ سمجھوتوں اور خود اپنے وچنوں سے ہٹ کر شری چرچل اور شری ایڈن نے سروستتا (ساورینٹی) کا پرشن اُٹھایا ہے . اگر تائیوان چین کا حصہ نہ ہوتا تو چیانگ کائی شیک روپی مٹی کے پتلے کو وہاں بٹھائے رکھنے کی کون ضرورت تھی . ہم سب جانتے ہیں کہ چیانگ کائی شیک امریکی افسروں کی چھایا ماتر ہے . امریکی سینا کی سہایتا کے بنا وہ چین کے اس بڑے ٹاپو میں ایک دن نہیں ٹک سکتا . تائیوان کا سوال بالکل سیدھا سادہ ہے . امریکہ نے چین کے اس علاقہ پر قبضہ کرلیا ہے' یہی سوال ہے .

جون 1950 میں جب امریکہ نے کوریا پر حملہ کیا تو اس سمے کے امریکی راشٹرپتی شری ٹرومین نے امریکہ کے ساتویں جہازی بیڑے کو تائیوان پر قبضہ کرنے اور آس پاس کے تائیوان شہر کے سارے ٹاپوں کو گھیر لینے کا حکم دیا . تب سے امریکہ کے سامراجی چیانگ کائی شیک کے ساتھی دیش دروہیوں کا اُپیوگ کر رہے ہیں اور تائیوان سے ہمارے ساحلی علاقوں پر اکثر ہوائی اور جہازی بیڑے سے حملے کرتے رہتے ہیں . انتر راشٹریہ بیوپار کے جو جہاز شانتی پوروک تجارت کرتے ہیں' ان پر سمندر میں ڈاکہ ڈالا جاتا ہے' یہ بات اب سب کے کانوں تک پہونچ چکی ہے .

के अन्दरूनी मामलों में दखल न देने की नीति अपनाते हैं, अमरीका दूसरे देशों के मामलों में दखल देने से किसी तरह नहीं रुकता. जबकि हम चाहते हैं कि सारे राष्ट्र बराबर समझे जावें और एक दूसरे के हित का ख़याल रखें, अमरीका अपनी इजारादारी क़ायम रखना चाहता है और दूसरे देशों के हित को साफ़ नुक़सान पहुंचाते हुए उनके चारों तरफ़ खुले घेरा डालता है. मुख़्तसर यह कि जब हम चाहते हैं कि सारे राष्ट्र शान्तिपूर्वक साथ साथ रह सकें, अमरीका एक के बाद दूसरा फ़ौजी गुट बना रहा है ताकि वह यूरप वालों को, यूरप वालों से और एशिया वालों को एशिया वालों से लड़ा सके. इस तरह राष्ट्रों राष्ट्रों के बीच दुशमनी को और हवा दी जा रही है और यह सब केवल अमरीकी इजारादारों की मुनाफ़ाख़ोरी के लिये किया जा रहा है.

इसमें कोई शक नहीं कि वाशिंगटन के युद्ध प्रेमी गिरोह प्रशान्त महासागर को एक अमरीकी झील समझते हैं. आस्ट्रेलिया, न्युज़ीलैंड और अमरीका के बीच और अमरीका और जापान के बीच परस्पर सुरक्षा के नाम पर जो समझौते 1951 में हुए हैं उनके आधार पर अमरीका ने आस्ट्रेलिया, न्युज़ीलैंड और जापान में अपने अनगिनत फ़ौजी अड्डे क़ायम कर लिये हैं. जुलाई 1953 में मजबूर होकर वाशिंगटन के युद्ध प्रेमियों ने कोरिया में लड़ाई बन्द करने के समझौते पर दस्तख़त किये. लेकिन तीन महीने भी नहीं बीते थे कि अपने कठपुतली सिंगमेन री से आपसी सुरक्षा के नाम पर उन्होंने एक अलग समझौता कर लिया. इस तरह दक्खिनी कोरिया पर अनिश्चित समय तक अपना क़ब्ज़ा जमाए रखने के लिये उन्होंने रास्ता साफ़ कर लिया. इसके बाद भी वह कोशिश कर रहे हैं कि उस कमीशन को ही तोड़ दिया जाये जिसका नाम "तटस्थ राष्ट्रों का सलाहकार कमीशन" है और जो समझौते का अमीन है.

ज़ाहिर है कि अमन पसन्द जनता के लिये जो बातें ख़ुशी की हैं अमरीका के युद्ध प्रेमियों के लिये वही बातें दुखदायी हैं.

हिन्द-चीन में लड़ाई बन्द कराने के लिये पिछली जुलाई में जनेवा में जो समझौता हुआ था उस पर दस्तख़त करने से अमरीका ने केवल इन्कार ही नहीं कर दिया बल्कि दक्खिन पूरब एशिया की रक्षा के नाम पर एक फ़ौजी संगठन खड़ा कर दिया. इस संगठन में आठ देशों ने भाग लिया पर उनमें तीन ही ऐसे देश हैं जिनका वजूद एशिया में है. अभी हाल में इस संगठन की एक बैठक बंगकाक में हुई थी. डलेस साहब ने खुल्लम खुल्ला ऐलान किया कि इस बैठक का मक़सद इस संगठन के मुंह में लड़ाई के दाँत जड़ना था.

کے اندرونی معاملوں میں دخل نہ دینے کی نیتی اپناتے ہیں، امریکہ دوسرے دیشوں کے معاملوں میں دخل دینے سے کسی طرح نہیں رکتا. جبکہ ہم چاہتے ہیں کہ سارے راشٹر برابر سمجھے جاویں اور ایک دوسرے کے ہت کا خیال رکھیں، امریکہ اپنی اجارہ داری قائم رکھنا چاہتا ہے اور دوسرے دیشوں کے ہت کو صاف نقصان پہنچاتے ہوئے ان کے چاروں طرف کھلے گھیرا ڈالتا ہے. مختصر یہ کہ جب ہم چاہتے ہیں کہ سارے راشٹر شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہ سکیں، امریکہ ایک کے بعد دوسرا فوجی گٹ بنا رہا ہے تاکہ وہ یورپ والوں کو یورپ والوں سے اور ایشیا والوں کو ایشیا والوں سے لڑا سکے. اس طرح راشٹروں راشٹروں کے بیچ دشمنی کو اور ہوا دی جا رہی ہے اور یہ سب کیول امریکی اجارہ داروں کی منافع خوری کے لئے کیا جا رہا ہے.

اس میں کوئی شک نہیں کہ واشنگٹن کے یدھ پریمی گروہ پرشانت مہا ساگر کو ایک امریکی جھیل سمجھتے ہیں. آسٹریلیا، نیوزیلینڈ اور امریکہ کے بیچ اور امریکہ اور جاپان کے بیچ پرسپر سورکشا کے نام پر جو سمجھوتے 1951 میں ہوئے ہیں ان کے آدھار پر امریکہ نے آسٹریلیا، نیوزیلینڈ اور جاپان میں اپنے ان گنت فوجی اڈے قائم کر لئے ہیں. جولائی 1953 میں مجبور ہو کر واشنگٹن کے یدھ پریمیوں نے کوریا میں لڑائی بند کرنے کے سمجھوتے پر دستخط کئے. لیکن تین مہینے بھی نہیں بیتے تھے کہ اپنے کٹھ پتلی سنگمین ری سے آپسی سورکشا کے نام پر انہوں نے ایک الگ سمجھوتہ کر لیا. اس طرح دکھنی کوریا پر انشچت سمے تک اپنا قبضہ جمائے رکھنے کے لئے انہوں نے راستہ صاف کر لیا. اس کے بعد بھی وہ کوشش کر رہے ہیں کہ اس کمیشن کو ہی توڑ دیا جائے جسکا نام "تٹستھ راشٹروں کا صلاحکار کمیشن" ہے اور جو سمجھوتے کا امین ہے.

ظاہر ہے کہ امن پسند جنتا کے لئے جو باتیں خوشی کی ہیں امریکہ کے یدھ پریمیوں کے لئے وہی باتیں دکھدائی ہیں.

ہند چین میں لڑائی بند کرانے کے لئے پچھلی جولائی میں جنیوا میں جو سمجھوتہ ہوا تھا اس پر دستخط کرنے سے امریکہ نے کیول انکار ہی نہیں کر دیا بلکہ دکھن پورب ایشیا کی رکشا کے نام پر فوجی سنگٹھن کھڑا کر دیا. اس سنگٹھن میں آٹھ دیشوں نے بھاگ لیا پر ان میں تین ہی دیش ہیں جن کا وجود ایشیا میں ہے. ابھی حال میں اس سنگٹھن کی ایک بیٹھک بنکاک میں ہوئی تھی. ڈلیس صاحب نے کھلم کھلا اعلان کیا کہ اس بیٹھک کا مقصد اس سنگٹھن کے منہ میں لڑائی کے دانت جڑنا تھا.

अमरीका के व्योपार चेम्बर की पत्रिका "नेशन्स बिज़नेस" के जनवरी अंक में श्री डलेस ने कहा है कि "शान्तिपूर्वक साथ साथ रहना (Peaceful co-existence) नए शब्दों की धोके की टट्टी है." उन्होने यह भी कहा कि "इस शब्द पर निगाह रखनी चाहिये, यह वह शब्द है जिससे होशियार रहना है." जुलाई के "यू. एस. न्युज़ एन्ड वर्ल्ड रिपोर्ट" के दूसरे अंक में यह लिखा गया था कि शान्तिपूर्वक साथ साथ रहने का विचार "अमरीकी शासकों के लिये जहर है."

आइये हम पूछें कि संसार भर की शान्ति प्रेमी जनता जिसकी मांग कर रही है उसकी श्री डलेस इस भयानक रूप से निन्दा क्यों कर रहे हैं? जवाब सीधा सादा है. शान्तिपूर्वक साथ साथ रहने का विचार उस "बल की नीति (Policy of Strength)" और "नई औपनिवेशिक नीति (New Colonial policy)" के बिलकुल ख़िलाफ़ है जिसे वाशिंगटन के सत्ताधीश चला रहे हैं. पिछले विश्व युद्ध ने अमरीका को नुक़सान नहीं पहुंचाया बल्कि इसके ख़िलाफ़ अमरीका को लड़ाई से ज़बरदस्त मुनाफ़ा हुआ जिससे अमरीका की इजारादारी बढ़ी और औद्योगिक तरक़्क़ी भी हुई, चूंकि उस समय ऐटम बम और हाइड्रोजन बम जैसे बरबादी के हथियारों का बनाना केवल अमरीका के हाथ में था, अमरीका और उसकी पिट्ठू सरकारों को अपने इन हथियारों पर भरोसा था और विश्व के नेता बनने की उनमें इच्छा थी. पच्छिमी जरमनी को हथियारों से लैस करने में वह लगे रहे. एशिया में औपनिवेशिक शासन यानी दूसरों की ग़ुलामी फिर से वापस लाने के लिये उन्होंने क़दम उठाए.

सच यह है कि आज की जैसी हालत कभी भी हमारे सामने नहीं थी. लगभग 50 देशों में अमरीका ने अपने हवाई, समन्दरी और फ़ौजी अड्डे क़ायम कर लिये हैं. यह अड्डे दुनिया भर में फैले हुए हैं. लगभग आठ सौ फ़ौजी अड्डे तो उनके केवल जापान ही में हैं. दूसरे शब्दों में हर 460 वर्ग किलोमीटर के रक़बे में एक अमरीकी अड्डा जापान में मौजूद है. फ़िलीपाइन, थाइलैंड और दूसरे एशियाई देशों में भी अमरीका ने अपने फ़ौजी अड्डे बना रखे हैं.

इसीलिये अमरीका की नीति शान्तिपूर्वक साथ साथ रहने के पांच सिद्धान्तों के ख़िलाफ़ है. जबकि हम यह मांग करते हैं कि एक दूसरे की मुकम्मिल आज़ादी का आदर हो, अमरीका अपने स्वभाव के अनुसार दूसरे राष्ट्रों की आज़ादी हड़प रहा है. जबकि हम यह मांग करते हैं कि सब देशों की अखंडता का सम्मान हो, अमरीका का दूसरे देशों की ज़मीन पर क़बज़ा जारी है. जबकि हम एक दूसरे

امریکہ کے بیوپار چیمبر کی پتریکا "نیشنس بزنیس" کے جنوری انک میں شری ڈلیس نے کہا ہے کہ "شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنا (Peaceful co-existence) نئے شبدوں کی دھوکے کی ٹٹی ہے." انہوں نے یہ بھی کہا ہے کہ "ان شبدوں پرنگاہ رکھنی چاہئے' یہ وہ شبد ہے جس سے ہوشیار رہنا ہے." جولائی کے "یو. ایس. نیوز اینڈ ورلڈ رپورٹ" کے دوسرے انک میں یہ لکھا گیا تھا کہ شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنے کا وچار "امریکہ کے شاسکوں کے لئے زہر ہے."

آئیے ہم پوچھیں کہ سنسار بھر کی شانتی پریمی جنتا جس کی مانگ کر رہی ہے اس کی شری ڈلیس اس بھیانک روپ سے نندا کیوں کر رہے ہیں؟ جواب سیدھا سادہ ہے. شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنے کا وچار اس "بل کی نیتی (Policy of Strength)" اور "نئی اپنیویشک (New Colonial Policy)" کے بالکل خلاف ہے جسے واشنگٹن کے ستادھیش چلا رہے ہیں. پچھلے وشو یدھ نے امریکہ کو نقصان نہیں پہنچایا بلکہ اس کے خلاف امریکہ کو لڑائی سے زبردست منافع ہوا جس سے امریکہ کی اجارداری بڑھی اور اودیوگک ترقی بھی ہوئی' چونکہ اس سمئے ایٹم بم اور ہائڈروجن بم جیسے بربادی کے ہتھیاروں کا بنانا کیول امریکہ کے ہاتھ میں تھا' امریکہ اور اس کی پٹھو سرکاروں کو اپنے ان ہتھیاروں پر بھروسہ تھا اور وشو کے نیتا بننے کی ان میں اچھا تھی. پچھمی جرمنی کو ہتھیاروں سے لیس کرنے میں وہ لگے رہے. ایشیا میں اپنیویشک شاسن یعنی دوسروں کی غلامی پھر سے واپس لانے کے لئے انہوں نے قدم اٹھائے.

سچ یہ ہے کہ آج کی سی جیسی حالت کبھی بھی ہمارے سامنے نہیں تھی. لگ بھگ 50 دیشوں میں امریکہ نے اپنے ہوائی' سمندری اور فوجی اڈے قائم کر لئے ہیں. یہ اڈے دنیا بھر میں پھیلے ہوئے ہیں. لگ بھگ آٹھ سو فوجی اڈے تو ان کے کیول جاپان ہی میں ہیں. دوسرے شبدوں میں ہر 460 ورگ کیلومیٹر کے رقبے میں ایک امریکی اڈا جاپان میں موجود ہے. فلپائن' تھائی لینڈ اور دوسرے ایشیائی دیشوں میں بھی امریکہ نے اپنے فوجی اڈے بنا رکھے ہیں.

اس لئے امریکہ کی نیتی شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنے کے پانچ سدھانتوں کے خلاف ہے. جب کہ ہم یہ مانگ کرتے ہیں کہ ایک دوسرے کی مکمل آزادی کا آدر ہو' امریکہ اپنے سوبھاؤ کے انوسار دوسرے راشٹروں کی آزادی ہڑپ رہا ہے. جبکہ ہم یہ مانگ کرتے ہیں کہ سب دیشوں کی اکھنڈتا کا سمان ہو' امریکہ کا دوسرے دیشوں کی زمین پر قبضہ جاری ہے. جبکہ ہم ایک دوسرے

एशिया की समस्या

भाई को. मो. जो.

[चीन के वाइस चैयरमैन श्री को. मो. जो. चीनी डेलीगेशन के नेता होकर दिल्ली एशियाई कान्फ़रेन्स में आए थे. वे जो वहां के बोले उस नीचे लिखे हिस्सों से एशिया की समस्या पर बहुत अच्छी रोशनी पड़ती है—एडीटर.]

शान्ति के साथ सब देशों के साथ साथ रहने के पांच सिद्धान्तों को चलाने वालों में एक चीन है, इसका चीनी जनता को गर्व है.

नए जनवादी चीन का जिस दिन जन्म हुआ उसी दिन एक दूसरे की मुकम्मिल आज़ादी और एक दूसरे के देश की अखंडता के आदर और सबकी भलाई और बराबरी के आधार पर दूसरे देशों से सम्बन्ध क़ायम करने का ऐलान कर दिया था. हमने अब तक तेईस देशों से परस्पर राजनैतिक सम्बन्ध क़ायम कर लिये हैं, और तीन और देशों से इसी तरह के सम्बन्ध क़ायम करने की हम तजवीज़ कर रहे हैं. इस से भी अधिक देशों से हमारे आर्थिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध क़ायम हो चुके हैं.

जून 1950 में जब जनवादी कोरिया पर हमला हुआ और अमरीकियों ने हमारे प्रान्त फ़ारमोसा पर क़ब्ज़ा जमा लिया तो सारे एशिया में जिस आग के फैल जाने का ख़तरा था उसे बुझाने के लिये और हमलावरों को पीछे हटाने के लिये, हमने कोरिया की जनता का साथ दिया.

पिछली जुलाई में और राष्ट्रों के साथ साथ जनेवा कान्फ़्रेन्स में हिन्द-चीनी समझौता करा कर अन्तर्राष्ट्री तनाव को कम करने का हमने भरसक जतन किया. एशिया के उस इलाक़े में आठ साल से जो लड़ाई हो रही थी उस का इस तरह अन्त हो गया. यह वह ठोस क़दम हैं जो हमारी शान्तिपूर्ण नीति को ज़ाहिर करते हैं.

हमारी यह उत्कट इच्छा है कि हम शान्तिपूर्वक औरों के साथ साथ रहने के लिये पंचशील की बुनियाद पर एशिया के तमाम देशों और संसार के सब राष्ट्रों से राजनैतिक सम्बन्ध क़ायम करें. हमें पूरा विश्वास है कि इन पांच सिद्धान्तों पर अमल करने से ठीक ठीक अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध क़ायम हो सकते हैं, वह ठोस बनाए जा सकते हैं और उन्हें आगे बढ़ाया जा सकता है.

लेकिन कुछ देशों के हाकिम शान्तिपूर्वक साथ साथ रहने के इन सिद्धान्तों के घोर विरोधी हैं.

ایشا کی سمسیا

بھائی کو . مو . جو

[چین کے وائس چیرمین شری کو. مو. جو. چینی ڈیلیگیشن کے نیتا ہو کر دلی ایشیائی کانفرنس میں آئے تھے. وہ جو وہاں بولے اُس کے نیچے لکھے حصوں سے ایشا کی سمسیا پر بہت اچھی روشنی پڑتی ہے —ایڈیٹر.]

شانتی کے ساتھ سب دیشوں کے ساتھ ساتھ رہنے کے پانچ سدھانتوں کو چلانے والوں میں ایک چین ہے، اِس کا چینی جنتا کو گرو ہے .

نئے جن وادی چین کا جس دن جنم ہوا اُسی دن ایک دوسرے کی مکمل آزادی اور ایک دوسرے کے دیش کی اکھنڈتا کے اور سب کی بھلائی اور برابری کے آدھار پر دوسرے دیشوں سے سمبندھ قائم کرنے کا عہد اعلان کر دیا تھا . ہم نے اب تک تئیس دیشوں سے پرسپر راج نیتک سمبندھ قائم کر لیئے ہیں، اور تین اور دیشوں سے اِسی طرح کے سمبندھ قائم کرنے کی ہم تجویز کر رہے ہیں . اس سے بھی ادھک دیشوں سے ہمارے آرتھک اور سانسکرتک سمبندھ قائم ہو چکے ہیں .

جون 1950 میں جب جن وادی کوریا پر حملہ ہوا اور امریکیوں نے ہمارے پرانت فارموسا پر قبضہ جما لیا تو سارے ایشیا میں جس آگ کے پھیل جانے کا خطرہ تھا اسے بجھانے کے لئے اور حملہ آوروں کو پیچھے ہٹانے کے لئے، ہم نے کوریا کی جنتا کا ساتھ دیا .

پچھلی جولائی میں اور راشٹروں کے ساتھ ساتھ جنیوا کانفرنس میں ہند چینی سمجھوتہ کراکر انتر راشٹری تناؤ کو کم کرنے کا ہم نے بھرسک جتن کیا . ایشیا کے اس علاقے میں آٹھ سال سے جو لڑائی ہو رہی تھی اُس کا اس طرح انت ہو گیا . یہ وہ ٹھوس قدم ہیں جو ہماری شانتی پورن نیتی کو ظاہر کرتے ہیں .

ہماری یہ اُتکٹ اچھا ہے کہ ہم شانتی پوروک اوروں کے ساتھ ساتھ رہنے کے لئے پنچ شیل کی بنیاد پر ایشیا کے تمام دیشوں اور سنسار کے سب راشٹروں سے راج نیتک سمبندھ قائم کریں . ہمیں پورا وشواس ہے کہ ان پانچ سدھانتوں پر عمل کرنے سے ٹھیک ٹھیک انتر راشٹریہ سمبندھ قائم ہو سکتے ہیں، وہ ٹھوس بنائے جا سکتے ہیں اور اُنہیں آگے بڑھایا جا سکتا ہے .

لیکن کچھ دیشوں کے حاکم شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنے کے ان سدھانتوں کے گھور ورودھی ہیں .

जून 1955 جون

नया हिन्द نیا ہند

जिल्द 19 جلد नम्बर 6 نمبر

जून 1955 جون

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

145، مٹھی گنج، الہ آباد

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-
Foreign Rs. 10/-
Single Copy As. /10/- only

Can be had from

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.

نیا ہند

इस नम्बर के ख़ास लेख / اِس نمبر کے خاص لیکھ

इस नम्बर के ख़ास लेख	اِس نمبر کے خاص لیکھ
एशिया की समस्या	ایشیا کی سمسیا
—भाई कों. मो. जो.	—بھائی کو. مو. جو.
सच्चा समाजवाद	سچا سماج واد
—डाक्टर भगवानदास	— ڈاکٹر بھگوان داس
अफ़रीक़ा	افریقہ
—डाक्टर सुनीतिकुमार चैटरजी एम. ए., डी. लिट.	—ڈاکٹر سنیت کمار چٹرجی ایم. اے. ڈی. لٹ.
पंचशील और एशिया	پنچ شیل اور ایشیا
—भाई ओमप्रकाश 'मंत्री'	—بھائی اوم پرکاش 'منتری'
चीन में पंडित नेहरू	چین میں پنڈت نہرو
—श्रीमती प्रभा प्रसाद	—شریمتی پربھا پرساد

इसके अलावा / اسکے علاوہ

कहानी, स्केच, समालोचना, हमारी राय आदि

کہانی، اسکیچ، سمالوچنا، ہماری رائے آدی

Printed and Published by [illegible], at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

ऐसी किसी भी जंगी साजिश में शामिल होने से जिसमें जंगबाज गिरोहों द्वारा एशिया और अफ़रीक़ा वाले cannon fodder की तरह इस्तेमाल किये जा सकें. आज उनकी भलाई इसी में है कि वे निर्माण या तामीरी कामों में लगें और निर्माण का काम तभी पूरा हो सकता है जब कि दुनिया में शान्ति हो और दुनिया में शान्ति तभी क़ायम रह सकती है जब एशिया और अफ़रीक़ा की क़ौमें यूरोप और अमरीका के जंगबाज साम्राज्य वादियों के लड़ाई का चारा बनने से इनकार कर दें.

इस नुक़्ते नज़र से बांडुंग सम्मेलन ने दुनिया की शान्ति को मज़बूत पैराये पर खड़ा करने की कोशिश की है. उन्होंने ग़ैर जानिबदारी यानी neutrality का नारा छोड़ कर शान्ति के नारे को militant यानी जंगी रूप दिया है. इसमें दो राय हो ही नहीं सकतीं कि बांडुंग सम्मेलन ने लड़ाई के ख़ौफ़नाक पुतले को, जिसकी आंखों के कोटर में दहकते हुये एटम और हाइड्रोजन बम जड़े हुये हैं, धक्का मार कर बरसों पीछे ढकेल दिया. दुनिया के हर शान्तिवादी का मस्तक एशिया और अफ़रीक़ा के इन शान्ति के पुजारियों के लिये इज़्ज़त के साथ झुकेगा. —विश्वम्भरनाथ पांडे

हिन्दू कोड बिल

पिछले बुधवार 18 मई को हिन्दू कोड बिल क़ानून की शक्ल में हमारे देश में लागू कर दिया गया. एक शौहर की एक बीवी के रिवाज को अब क़ानूनी रुतबा हासिल हो गया. बहुविवाह का रिवाज उस बर्बर ज़माने की यादगार है जब औरतें माले ग़नीमत समझी जाती थीं और उनकी जायदाद की तरह ख़रीद फ़रोख़्त या बदलौबदल हो सकती थी. युद्ध में पुरुषों के मारे जाने पर विजेता को पराजित की स्त्रियां भी मिल जाती थीं जो फिर अधिक से अधिक सन्तानें पैदा करके लड़ाई की दूसरी फ़स्ल तैयार करने का काम देती थीं.

आज समता के युग में पुरुष को यह हक़ हासिल नहीं कि वह स्त्रियों को उसी बर्बर युग की यादगार समझे. उन्हें समाज में बराबर का हक़ हासिल होना ही है. उन्हें आर्थिक दृष्टि से पुरुषों के समक्ष (पैराये) होना ही है. स्त्री और पुरुष समाज रूपी गाड़ी के दो पहियों की तरह हैं जिन पर समाज की प्रगति यात्रा आगे बढ़ती है. वे उस मुक्ति पक्षी के दोनों डैनों के समान हैं जिनके सहारे वह सातों आसमान के चक्कर काटता है. एक पहिया अगर कमज़ोर रहा या एक डैना अगर बेकार रहा तो समाज की प्रगति ठप रह जायेगी. यह सही है कि हमारे बुज़ुर्गों और महापुरुषों ने स्त्री के आदर करने की हिदायत दी है मगर वह हिदायत आज पोथियों में बन्द पड़ी थी इस क़ानून द्वारा उस हिदायत को आज फिर से अमली जामा पहनाने की कोशिश की गई है. —विश्वम्भरनाथ पांडे

ایسی کسی بھی جنگی سازش میں شامل ہونے سے جس میں جنگ باز گروہوں دوارا ایشیا اور افریقہ والے cannon fodder کی طرح استعمال کئے جاسکیں۔ آج اُن کی بھلائی اِسی میں ہے کہ وے نرمان یا تعمیری کاموں میں لگیں اور نرمان کا کام تبھی پورا ہوسکتا ہے جب کہ دنیا میں شانتی ہو اور دنیا میں شانتی تبھی قائم رہ سکتی ہے جب ایشیا اور افریقہ کی قومیں یورپ اور امریکہ کے جنگ باز سامراجیہ وادیوں کے لڑائی کا چارا بننے سے اِنکار کردیں۔

اِس نقطہ نظر سے بانڈنگ سمیلن نے دنیا کی شانتی کو مضبوط پیرائے پر کھڑا کرنے کی کوشش کی ہے۔ اُنھوں نے غیر جانبداری یعنی Neutrality کا نعرہ چھوڑکر شانتی کے نعرے کو militant یعنی جنگی روپ دیا ہے۔ اِس میں دو رائے ہو ہی نہیں سکتیں کہ بانڈنگ سمیلن نے لڑائی کے خوفناک پتلے کو، جس کی آنکھوں کے کوٹر میں دہکتے ہوئے ایٹم اور ہائڈروجن بم جڑے ہوئے ہیں، دھکا مارکر برسوں پیچھے ڈھکیل دیا۔ دنیا کے ہر شانتی وادی کا مستک ایشیا اور افریقہ کے اِن شانتی کے پجاریوں کے لئے عزت کے ساتھ جھکیگا۔

—وشومبھر ناتھ پانڈے

ہندو کوڈ بل

پچھلے بدھوار 18 مئی کو ہندو کوڈ بل قانون کی شکل میں ہمارے دیش میں لاگو کر دیا گیا۔ ایک شوہر کی ایک بیوی کے رواج کو اب قانونی رتبہ حاصل ہوگیا۔ بہو وواہ کا رواج اِس بربر زمانے کی یادگار ہے جب عورتیں مال غنیمت سمجھی جاتی تھیں اور اُن کی جائداد کی طرح خرید فروخت یا بدلول ہوسکتی تھی۔ یدھ میں پرشوں کے مارے جانے پر وجیتا کو پراجت کی استریاں بھی مل جاتی تھیں جو پھر ادھک سے ادھک سنتانیں پیدا کرکے لڑائی کی دوسری فصل تیار کرنے کا کام دیتی تھیں۔

آج سمتا کے یگ میں پرش کو یہ حق حاصل نہیں کہ وہ استریوں کو اُسی بربر یگ کی یادگار سمجھے۔ اُنھیں سماج میں برابر کا حق حاصل ہونا ہی ہے۔ اُنھیں آرتھک درشٹی سے پرشوں کے سمکش (پیرائے) ہونا ہی ہے۔ استری اور پرش سماج روپی گاڑی کے دو پہیوں کی طرح ہیں جن پر سماج کی پرگتی یاترا آگے بڑھتی ہے۔ وے اُس مکتی پنچھی کے دونوں پنکھوں کے سمان ہیں جن کے سہارے وہ ساتوں آسمان کے چکر کاٹتا ہے۔ ایک پہیہ اگر کمزور رہا یا ایک پنکھ اگر بیکار رہا تو سماج کی پرگتی ٹھپ رہ جائیگی۔ یہ صحیح ہے کہ ہمارے بزرگوں اور مہاپرشوں نے استری کے آدر کرنے کی ہدایت دی ہے مگر وہ ہدایت آج پوتھیوں میں بند پڑی تھی۔ اِس قانون دوارا اُس ہدایت کو آج پھر سے عملی جامہ پہنانے کی کوشش کی گئی ہے۔

—وشومبھر ناتھ پانڈے

तो फ़ौरन कर ही सकता है कि अन्धों के साहित्य पर से डाक से भेजने से टिकट लगाने की जरूरत न रहे. यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन के 91 मुल्कों में से 76 ने अन्धों को यह छूट दे रखी है जिन 15 मुल्कों ने अभी तक यह छूट नहीं दी बदक़िस्मती से एक उनमें से हिन्दुस्तान भी है" (स्टेट्स मैन)

—विश्वम्भरनाथ पांडे

बांडुंग सम्मेलन

एशिया और अफ़रीक़ा के मुल्कों का पहला सम्मेलन जिस शान और कामयाबी के साथ पूरा हुआ उसने इतिहास में एक नया वर्क़ खोला है. पूरब की तहज़ीब और कल्चर की यह ख़ासियत है कि वह विविधता में एकता के दर्शन करती है. तर तरह से अपने मुल्कों में हुकूमत करने वाले देश इस सम्मेलन में इकट्ठा हुये और बावजूद एशिया और अफ़रीक़ा के दुश्मनों की कोशिशों के उन्होने सारे .फ़ैसले एक राय से किये. उन्होंने दुनिया को यह दिखा दिया कि जहां तक साम्राज्यवाद का सवाल है एशिया और अफ़रीक़ा के मुल्क उसे सख़्त नापसन्द करते हैं और अपने अपने देश की जनता का यह अधिकार समझते हैं कि वह अपने पसन्द का हुकूमत का तरीक़ा अपने देश में चलाने के लिये आज़ाद है.

बावजूद तुर्की, पाकिस्तान, फ़िलिपाइन और लंका के प्रतिनिधियों की अमरीका-परस्ती के सम्मेलन को पूरी कामयाबी हासिल हुई और सब से बड़ी बात जो रही वह यह कि चाओ और कम्यूनिस्ट चीन के तरफ़ इन मुल्कों का भी ज़ाहिरा दोस्ताना तर्ज़े अमल. अमरीकी कूटनीति ने जो नक़शा खींचा था वह यह कि कुछ कठपुतलियों के ज़रिये हिन्दुस्तान और ख़ास कर श्री नेहरू की टोपी उछालना. मगर हिन्दुस्तान और नेहरू को नीचा दिखाने की कोशिश में उन्होने चाओ और चीन को बांसों उछाल दिया. इसी को कहते हैं—'जादू वह जो सर पे चढ़ के बोले!'

पच्छिमी साम्राज्यवादियों ने अठारहवीं सदी में जो सब से बड़ी ईजाद की थी वह भाप के इंजन की नहीं बल्कि इस बात की कि एशिया और अफ़रीक़ा की क़ौमों को अपने साम्राज्य विस्तार के लिये भाड़े के सैनिक बनाकर किस तरह न सिर्फ़ दूसरे मुल्कों के ख़िलाफ़ बल्कि .ख़ुद अपने ही मुल्क के ख़िलाफ़ इस्तेमाल किया जा सकता है. इसी ईजाद के इस्तेमाल से यूरोप और एशिया के क़रीब क़रीब सब मुल्क पच्छिमी साम्राज्यवाद की गिरिफ़्त में आ गये और अपनी आर्थिक (इक़्तसादी), राजनैतिक (सियासी) और नैतिक (इख़लाक़ी) आज़ादी खो बैठे.

अब चक्र ने उल्टा घूमना शुरू किया है. आज एशिया के मुल्क फिर से अपनी सियासी, इक़्तसादी और इख़लाक़ी आज़ादी सौ फ़ीसदी हासिल करने के लिये कमर कसता हैं. आज एशिया और अफ़रीक़ा के मुल्क इनकार कर रहे हैं

تو فوراً کر ہی سکتا ہے کہ اندھوں کے ساہتیہ پر سے ڈاک سے بھیجنے سے ٹکٹ لگانے کی ضرورت نہ رہے۔ یونیورسل پوسٹل یونین کے 91 ملکوں میں سے 76 نے اندھوں کو یہ چھوٹ دے رکھی ہے۔ جن 15 ملکوں نے ابھی تک یہ چھوٹ نہیں دی بدقسمتی سے ایک ان میں سے ہندستان بھی ہے۔" (اسٹیٹسمین)۔

—وشومبھر ناتھ پانڈے

بانڈنگ سمیلن

ایشیا اور افریقہ کے ملکوں کا پہلا سمیلن جس شان اور کامیابی کے ساتھ پورا ہوا اُس نے اِتہاس میں ایک نیا ورق کھولا ہے۔ پورب کی تہذیب اور کلچر کی یہ خاصیت ہے کہ وہ وِودھتا میں ایکتا کے درشن کرتی ہے۔ طرح طرح سے اپنے ملکوں میں حکومت کرنے والے دیش اِس سمیلن میں اِکٹھا ہوئے اور باوجود ایشیا اور افریقہ کے دشمنوں کی کوششوں کے اُنہوں نے سارے فیصلے ایک رائے سے کئے۔ اُنہوں نے دنیا کو یہ دکھا دیا کہ جہاں تک سامراجیہ واد کا سوال ہے ایشیا اور افریقہ کے ملک اُسے سخت ناپسند کرتے ہیں اور اپنے اپنے دیش کی جنتا کا یہ ادھیکار سمجھتے ہیں کہ وہ اپنے پسند کا حکومت کا طریقہ اپنے دیش میں چلانے کے لئے آزاد ہے۔

باوجود ترکی، پاکستان، فلپائن اور لنکا کے پرتیندھیوں کی امریکہ پرستی کے سمیلن کو پوری کامیابی حاصل ہوئی اور سب سے بڑی بات جو رہی وہ یہ کہ چاؤ اور کمیونسٹ چین کے طرف اِن ملکوں کی بھی ظاہرہ دوستانہ طرز عمل۔ امریکی کوٹ نیتی نے جو نقشہ کھینچا تھا وہ یہ کہ کچھ کٹھ پتلیوں کے ذریعے ہندستان اور خاص کر شری نہرو کی ٹوپی اُچھالنا۔ مگر ہندستان اور نہرو کو نیچا دکھانے کی کوشش میں اُنہوں نے چاؤ اور چین کو بانسوں اُچھال دیا۔ اِسی کو کہتے ہیں— 'جادو وہ جو سر پہ چڑھ کے بولے!'

پچھمی سامراجیہ وادیوں نے اٹھارھویں صدی میں جو سب سے بڑی ایجاد کی تھی وہ بھاپ کے انجن کی نہیں بلکہ اِس بات کی کہ ایشیا اور افریقہ کی قوموں کو اپنے سامراجیہ وستار کے لئے بھاڑے کے سینک بناکر کس طرح نہ صرف دوسرے ملکوں کے خلاف بلکہ خود اپنے ہی ملک کے خلاف استعمال کیا جا سکتا ہے۔ اِسی ایجاد کے اِستعمال سے یورپ اور ایشیا کے قریب قریب سب ملک پچھمی سامراجیہ واد کی گرفت میں آگئے اور اپنی آرتھک (اقتصادی)، راجنیتک (سیاسی) اور نیتک (اخلاقی) آزادی کھو بیٹھے۔

اب چکر نے اُلٹا گھومنا شروع کیا ہے۔ آج ایشیا کے ملک پھر سے اپنی سیاسی، اقتصادی اور اخلاقی آزادی سو فیصدی حاصل کرنے کے لئے کمر بستہ ہیں۔ آج ایشیا اور افریقہ کے ملک اِنکار کر رہے ہیں

सिहाई. इनमें से कम से कम पांच लाख अन्धों की तालीम का काम हाथ में लिया जा सकता है. बाक़ी लोग बड़ी उम्र में जाकर आंखों की रोशनी खोते हैं, 14 बरस की उम्र तक के अन्धे बालकों की तादाद क़रीब चालीस हज़ार है लेकिन हिन्दुस्तान में अन्धों के कुल स्कूलों की तादाद सिर्फ़ 50 है जहां महज़ 1500 बच्चे तालीम पाते हैं.

इस मुल्क में अन्धों की तालीम के सिलसिले में सब से उम्दा संस्था देहरादून में है जहां जवान अन्धों को काम सिखाये जाते हैं और जहां एक ब्रेली छापाखाना है, जहां अन्धों के पढ़ने की किताबें छपती हैं. इसी संस्था को मरकज़ी सरकार की मदद से बढ़ाने की योजना बन रही है. इस योजना के मुताबिक़ यहां एक माडेल स्कूल खुलेगा, अन्धी स्त्रियों का ट्रेनिंग सेंटर खुलेगा, टीचरों की ट्रेनिंग का इन्तज़ाम होगा और एक चलती फिरती ब्रेली लाइब्रेरी क़ायम की जायेगी. देहरादून इन्स्टिटयूट में मरकज़ी सरकार की दी हुई क़रीब क़रीब पूरी रक़म ख़र्च हो जाती है. सन 19 4-55 में मरकज़ी सरकार ने कुल साढ़े तीन लाख रुपया अन्धों की तालीम के लिये रखा था. यह रक़म बहुत थोड़ी थी. सूबाई सरकरें भी इस मामले में खुले हाथ नहीं हैं. बम्बई की सरकार की बेशक तारीफ़ की जा सकती है उसके इस फ़ैसले पर कि हर पढ़ने वाले अन्धे विद्यार्थी को वह तीस रुपया महीना वज़ीफ़ा देगी.

दुनिया में अन्धों का सबसे पहला स्कूल 171 बरस पहले वेलेंटिन हायु ने पेरिस में खोला था. तब से अन्धों की तालीम के तरीक़े में काफ़ी सुधार हुये हैं. इस दिशा मे सब से ज़्यादा तारीफ़ के क़ाबिल काम लुई ब्रेली ने किया जो ख़ुद अन्धा था. उसके नाम से अन्धों की पढ़ाई की किताबें ही ब्रेली किताबें कहलाने लगी जिनमें उभरी हुई छपाई होती है और जिसे उंगलियों से टटोल कर अन्धे बच्चे पढ़ते हैं. आजकल इस सम्बन्ध में पतले काग़ज़ पर प्लास्टिक स्याही से छपी किताबें या प्लास्टिक काग़ज़ पर छपी किताबों पर अन्धों की पढ़ाई के तजरुबे चल रहे हैं.

अन्धों के काम सीख जाने के बाद जो सब से बड़ी रुकावट उनके रास्ते में आती है वह यह है कि उन्हें कोई नौकर रखने को तैयार नहीं होता हालांकि आंख वालों के मुक़ाबले में वे अपने सीखे हुये काम में काफ़ी दक्ष होते हैं. जब तक उन्हें रोज़गार और नौकरी मिलने की बराबर की सुविधायें न हासिल हों तब तक उन्हें अन्धों की ही वर्कशाप जैसी रोज़गार की जगह बना कर उन्हें काम पर लगाना होगा. दूसरी पंचसाला योजना में इस क़िस्म की वर्कशापों की गुंजाइश रखनी चाहिये. "ऐसी एक तजवीज़ सन 1945 में भी की गई थी. अन्धों को पेन्शनें देने की तजवीज़ के पूरा होने में अभी काफ़ी वक़्त लगेगा लेकिन हिन्दुस्तान एक काम

تہائی . اِنمیں سے کم سے کم پانچ لاکھ اندھوں کی تعلیم کا کام ہاتھ میں لیا جاسکتا ہے . باقی لوگ بڑی عمر میں جاکر آنکھوں کی روشنی کھوتے ہیں . 14 برس کی عمر تک کے اندھے بالکوں کی تعداد قریب چالیس ہزار ہے لیکن ہندستان میں اندھوں کے کل اسکولوں کی تعداد صرف 50 ہے جہاں محض 1500 بچے تعلیم پاتے ہیں .

اِس ملک میں اندھوں کی تعلیم کے سلسلے میں سب سے عمدہ سنستھا دہرادون میں ہے جہاں جوان اندھوں کو کام سکھائے جاتے ہیں اور جہاں ایک بریلی چھاپاخانہ ہے' جہاں اندھوں کے پڑھنے کی کتابیں چھپتی ہیں . اِسی سنستھا کو مرکزی سرکار کی مدد سے بڑھانے کی یوجنا بن رہی ہے . اِس یوجنا کے مطابق یہاں ایک ماڈل اسکول کھلیگا' اندھی استریوں کا ٹریننگ سینٹر کھلیگا' ٹیچروں کی ٹریننگ کا اِنتظام ہوگا اور ایک چلتی پھرتی بریلی لائبریری قائم کی جائیگی . دہرادون اِنسٹیٹیوٹ میں مرکزی سرکار کی دی ہوئی قریب قریب پوری رقم خرچ ہو جاتی ہے . سن 55 - 1954 میں مرکزی سرکار نے کل ساڑھے تین لاکھ روپیہ اندھوں کی تعلیم کے لئے رکھا تھا . یہ رقم بہت تھوڑی تھی . صوبائی سرکاریں بھی اِس معاملے میں کھلے ہاتھ نہیں ہیں . بمبئی کی سرکار کی بےشک تعریف کی جاسکتی ہے اُس کے اِس فیصلے پر کہ ہر پڑھنے والے اندھے ودیارتھی کو وہ تیس روپیہ مہینہ وظیفہ دیگی .

دنیا میں اندھوں کا سب سے پہلا اسکول 171 برس پہلے ویلینٹن ہایو نے پیرس میں کھولا تھا . تب سے اندھوں کی تعلیم کے طریقے میں کافی سدھار ہوئے ہیں . اِس دشا میں سب سے زیادہ تعریف کے قابل کام لوئی بریلی نے کیا جو خود اندھا تھا . اُس کے نام سے اندھوں کی پڑھائی کی کتابیں ہی بریلی کتابیں کہلانے لگیں جن میں اُبھری ہوئی چھپائی ہوتی ہے اور جسے اُنگلیوں سے ٹٹول کر اندھے بچے پڑھتے ہیں. آجکل اِس سمبندھ میں پتلے کاغذ پر پلاسٹک سیاہی سے چھپی کتابیں یا پلاسٹک کاغذ پر چھپی کتابوں پر اندھوں کی پڑھائی کے تجربے چل رہے ہیں .

اندھوں کے کام سیکھ جانے کے بعد جو سب سے بڑی رکاوٹ اُن کے راستے میں آتی ہے وہ یہ ہے کہ اُنہیں کوئی نوکر رکھنے کو تیار نہیں ہوتا حالانکہ آنکھ والوں کے مقابلے میں وے اپنے سیکھے ہوئے کام میں کافی دکش ہوتے ہیں . جب تک اُنھیں روزگار اور نوکری ملنے کی برابر کی سویدھائیں نہ حاصل ہوں تب تک اُنہیں اندھوں کی ہی ورک شاپ جیسی روزگار کی جگہ بناکر اُنہیں کام پر لگانا ہوگا . دوسری پنچسالہ یوجنا میں اِس قسم کی ورک شاپوں کی گنجائش رکھنی چاہئے . "ایسی ایک تجویز سن 1945 میں بھی کی گئی تھی . اندھوں کو پینشنیں دینے کی تجویز کے پورا ہونے میں ابھی کافی وقت لگیگا لیکن ہندستان ایک کام

इस गुरु और शिष्या ने मिलकर अन्धेरे में रोशनी ढूँढी, किस तरह उन्होंने अन्धों के लिये तालीम के दरवाज़े खोले, किस तरह उन्होंने ऊंची से ऊंची विद्या को नाबीनों के लिये आसान बना दिया और किस तरह नेत्र हीनों की नाउम्मीद ज़िन्दगी को उन्होंने आशा और उम्मीदों से भर दिया.

डाक्टर हेलेन केलर ने अपनी उम्र के 75 बरस हाल ही में पूरे किये हैं. 50 बरस से ज़्यादा उन्होंने अपनी ज़बान की ख़ामोशी के साथ, अपने गूंगेपन के साथ, जद्दोजेहद किया और अपनी आवाज़ पर क़ाबू पाया. वे कहती हैं—"मेरी आवाज़ मीठी नहीं है मगर मैंने अपने सपनों को अपने स्वरों के टूटे पंखों पर बैठाकर कल्पना की उड़ानों में घुमाया है. मेरी टूटी फूटी आवाज़ ने मेरे रोम रोम में वह ताक़त भरी है जिससे मैं अपनी बेकसी के साथ कामयाब लड़ाई लड़ सकूँ और यह समझ सकूँ कि इनसान की कोशिशों में कितनी तड़प और गहराई हाती है और नाउम्मीदें कितनी मायूसियों से भरी होती हैं."

कुमारी हेलेन ने हर रुकावट को पुख़्ता इरादे और हिम्मत के साथ पार किया. अब वह नाव खेने, घुड़सवारी करने, साइकिल पर चढ़ने में होशियार हो गईं. टेनीसन और दूसरे कवियों की कवितायें वे सुना सकती थीं. बीस बरस की उम्र में वह रेडक्लिफ़ कालेज में भरती हुईं. कालेज के इतिहास में यह पहला मौक़ा था जब एक गूंगा, बहरा और अन्धा विद्यार्थी कालेज में भरती हुआ. लेकिन बावजूद इन तीनों कठिनाइयों के हेलेन ने सन 1904 में 24 बरस की उमर में कालेज से बी० ए० पास किया. अब हेलेन की कीर्ति कालेज की चहारदीवारी पार करके सारे अमरीका, यूरोप और दुनिया के कोने में पहुंचनी शुरू हुई. अन्धों, बहरों और गूँगों को एक मसीहा मिला जो कि उनकी ख़ामोश आवाज़ को चारों ओर पहुंचा सकता था, जो उनकी निराशा को आशा में बदल सकता था, जो उनकी दिल की कैफ़ियत को पुर असर लफ़्ज़ों में बयान कर सकता था, जो दुनिया को उनकी समस्याओं से वाक़िफ़ करा सकता था. डाक्टर हेलेन ने अन्धों, गूंगों और बहरों के मसले को लेकर पांच दफ़ा सारी दुनिया का दौरा किया और अब वह हिन्दुस्तान, बरमा, पाकिस्तान, फ़िलिप्पाइन और लंका के चालीस हज़ार मील के दौरे के लिये निकली हैं, जो रोशनी आज उन्होंने निरीह इन्सानियत के लिये जलाई है वह कभी बुझ नहीं सकती.

हमें हिन्दुस्तान में डाक्टर हेलेन का स्वागत समारोह देखकर बेहद ख़ुशी हुई. किन्तु डाक्टर हेलेन का वास्तविक आदर तो तब समझा जायेगा जब इस देश के अन्धों की हालत को और ज़्यादा बेहतर बनाने के अमली क़दम उठाये जायें, दस बरस पहले के अखंड हिन्दुस्तान में अन्धों की तादाद बीस लाख थी—यानी कुल दुनिया के अन्धों की एक

اِس گرو اور ششیا نے ملکر اندھیرے میں روشنی ڈھونڈھی' کس طرح اُنھوں نے اندھوں کے لئے تعلیم کے دروازے کھولے' کس طرح اُنھوں نے اُونچی سے اونچی ودیا کو نابینوں کے لئے آسان بنا دیا اور کس طرح نیتر ہینوں کی نااُمید زندگی کو اُنھوں نے آشا اور اُمیدوں سے بھر دیا .

ڈاکٹر ہیلین کیلر نے اپنی عمر کے 75 برس حال ہی میں پورے کئے ہیں . 50 برس سے زیادہ اُنھوں نے اپنی زبان کی خاموشی کے ساتھ' اپنے گونگے پن کے ساتھ' جدو جہد کیا اور اپنی آواز پر قابو پایا . وہ کہتی ہیں—"میری آواز میٹھی نہیں ہے مگر میں نے اپنے سپنوں کو اپنے سوروں کے ٹوٹے پنکھوں پر بیٹھا کر کلپنا کی اُڑانوں میں گھمایا ہے . میری ٹوٹی پھوٹی آواز نے میرے روم روم میں وہ طاقت بھری ہے جس سے میں اپنی بیکسی کے ساتھ کامیاب لڑائی لڑ سکوں اور یہ سمجھ سکوں کہ اِنسان کی کوششوں میں کتنی تڑپ اور گہرائی ہوتی ہے اور نااُمیدیں کتنی مایوسی سے بھری ہوئی ہیں ."

کماری ہیلین نے ہر رکاوٹ کو پختہ اِرادے اور ہمت کے ساتھ پار کیا . اب وہ ناؤ کھینے' گھڑ سواری کرنے' سائیکل پر چڑھنے میں ہوشیار ہو گئیں . ٹینیسن اور دوسرے کویوں کی کویتائیں وہ سنا سکتی تھیں . بیس برس کی عمر میں وہ ریڈ کلف کالج میں بھرتی ہوئیں . کالج کے اِتہاس میں یہ پہلا موقع تھا جب ایک گونگا' بہرا اور اندھا ودیارتھی کالج میں بھرتی ہوا . لیکن باوجود اِن تینوں کٹھنائیوں کے ہیلین نے سن 1904 میں 24 برس کی عمر میں کالج سے بی . اے . پاس کیا . اب ہیلین کی کیرتی کالج کی چہار دیواری پار کرکے سارے امریکہ' یورپ اور دنیا کے کونے میں پہنچنی شروع ہوئی . اندھوں' بہروں اور گونگوں کو ایک مسیحا ملا جو کہ اُنکی خاموش آواز کو چاروں اور پہونچا سکتا تھا' جو اُن کی نراشا کو آشا میں بدل سکتا تھا' جو اُن کی دل کی کیفیت کو پر اثر لفظوں میں بیان کر سکتا تھا' جو دنیا کو اُن کی سمسیاؤں سے واقف کرا سکتا تھا . ڈاکٹر ہیلین نے اندھوں' گونگوں اور بہروں کے مسئلے کو لیکر پانچ دفعہ ساری دنیا کا دورا کیا اور اب وہ ہندستان' برما' پاکستان' فلپائن اور لنکا کے چالیس ہزار میل کے دورے کے لئے نکلی ہیں . جو روشنی آج اُنھوں نے نریہ اِنسانیت کے لئے جلائی ہے وہ کبھی بجھ نہیں سکتی .

ہمیں ہندستان میں ڈاکٹر ہیلین کا سواگت سماروہ دیکھکر بیحد خوشی ہوئی . کنتو ڈاکٹر ہیلین کا واستوک آدر تو تب سمجھا جائیگا جب اِس دیش کے اندھوں کی حالت کو اور زیادہ بہتر بنانے کے عملی قدم اُٹھائے جائیں' دس برس پہلے کے اکھنڈ ہندستان میں اندھوں کی تعداد بیس لاکھ تھی—یعنی کل دنیا کے اندھوں کی ایک

को अहमियत दी जाती रहेगी तब तक दुनिया का छुटकारा इन जङ्गों से नहीं हो सकता. यह बात नामुमकिन है कि हथियारबन्दी धीरे धीरे कम करते करते खत्म की जा सकती है. या तो दुनिया से हथियार यकबारगी मिटा दिये जायँगे या फिर बिल्कुल ही न मिटेंगे. जब तक फ़ौजें बरक़रार हैं तब तक छोटी से छोटी चिनगारी भी जङ्ग की आग को भड़का सकती है. जब लोग प्रेम और शान्ति की अहमियत समझेंगे तभी दुनिया तरक़्क़ी की एक नई मंज़िल पर पहुँचेगी. तरक़्क़ी के उस शिखर पर पहुँचकर मानव सन्तान जङ्ग को अपने बुज़ुर्गों का एक हैवानी कुकृत्य समझेगी. यह सही है कि ऐसे इनसानों की तादाद आज थोड़ी है लेकिन इन्हीं की बढ़ती हुई ताक़त इस बात का फ़ैसला करेगी कि इनसानी क़ौम कब तक हिंसा और नफ़रत के उस ख़ौफ़नाक अन्धकार में धक्के खाते पड़ी रहेगी जिसे कुछ अन्धे लोग आज अपना आदर्श समझ रहे हैं."

पिछले बड़े जङ्ग के सिलसिले में पुरदर्द आवाज़ के साथ आइन्स्टीन ने कहा था—"आज हमारा आत्मबल काफ़ी साबित नहीं हुआ. आज करोड़ों इनसान मौन होकर जंग के भयंकर तमाशे को देख रहे हैं. जो लोग शान्तिमय तरीक़ों को दुनिया के लिये कल्यानकारी समझते हैं वे भी हिंसा के साथ समझौते को एक सियासी दूरन्देशी समझ रहे हैं. लेकिन उनकी यह दूरन्देशी इन्सानियत के साथ 'किया हुआ एक ऐसा भयंकर जुर्म है जो नाक़ाबिले माफ़ी है. लेकिन चूँकि हम ख़ुद इनसान हैं; इसलिये मानवता से मायूस होने में हमारा कल्यान नहीं. आज भी यह बड़ी आशा की बात है कि गान्धी जैसा व्यक्ति मानवता को ख़ून के दलदल से बाहर निकालने की अनथक कोशिशें कर रहा है."

आइन्स्टीन की मौत से न सिर्फ़ दुनिया का सबसे बड़ा वैज्ञानिक उठ गया बल्कि शान्ति और प्रेम का एक ज़बर्दस्त पुजारी चल बसा. मौत ने आइन्स्टीन की जो जगह ख़ाली की है उसके आसानी से भरने की कोई उम्मीद दिखाई नहीं देती.

—विश्वम्भरनाथ पांडे

अन्धों की मसीहा—हेलेन केलर

पिछले तीन महीने से डाक्टर हेलेन केलर हिन्दुस्तान में घूम घूम कर इस देश के अन्धों को उम्मीद का एक पैग़ाम दे रही हैं. वह इनसान की लामहदूद (अपरिमित) अहमियत अपनी निजी ज़िन्दगी को सामने रखकर बयान कर रही हैं. अपने जन्म के बाद 19 महीनों तक वह एक साधारण शिशु की तरह थीं फिर उन्हें एकाएक तेज़ बुख़ार आया और वे अन्धी, बहरी और गूंगी बन गईं. माँ-बाप को सख़्त सदमा पहुंचा. सन 1887 में छै बरस की उम्र में उन्होंने हेलेन को एक अन्धी शिक्षक मिस सलीवान के सुपुर्द कर दिया. इनसानियत के लिये यह एक दिलचस्प कहानी है कि किस तरह

کو اهمیت دی جاتی رهے گی تب تک دنیا کا چھٹکارا اِن جنگوں سے نہیں هو سکتا . یہ بات ناممکن هے که هتھیار بندی دهیرے دهیرے کم کرتے کرتے ختم کی جا سکتی هے . یا تو دنیا سے هتھیار یکبارگی مٹا دیئے جائیں گے یا پھر بالکل هی نه مٹیں گے . جب تک فوجیں برقرار هیں تب تک چھوٹی سے چھوٹی چنگاری بھی جنگ کی آگ کو بھڑکا سکتی هے . جب لوگ پریم اور شانتی کی اهمیت سمجھیں گے تبھی دنیا ترقی کی ایک نئی منزل پر پہونچے گی . ترقی کے اُس شکھر پر پہونچ کر مانو سنتان جنگ کو اپنے بزرگوں کا ایک حیوانی کُکرتیہ سمجھیں گی . یہ صحیح هے که ایسے اِنسانوں کی تعداد آج تھوڑی هے لیکن اِنھیں کی بڑھتی هوئی طاقت اِس بات کا فیصلہ کرے گی که اِنسانی قوم کب تک هنسا اور نفرت کے اُس خوفناک اندھکار میں دھکے کھاتے پڑی رهے گی جسے کچھ اندھے لوگ آج اپنا آدرش سمجھ رهے هیں ."

پچھلے بڑے جنگ کے سلسلے میں پردرد آواز کے ساتھ آئنسٹین نے کہا تھا—" آج همارا آتم بل کافی ثابت نہیں هوا . آج کروڑوں اِنسان مون هو کر جنگ کے بھینکر تماشے کو دیکھ رهے هیں . جو لوگ شانتی مئے طریقوں کو دنیا کے لئے کلیان کاری سمجھتے هیں وے بھی هنسا کے ساتھ سمجھوتے کو ایک سیاسی دور اندیشی سمجھ رهے هیں . لیکن اُن کی یہ دوراندیشی اِنسانیت کے ساتھ کیا هوا ایک ایسا بھینکر جرم هے جو ناقابل معافی هے . لیکن چونکہ هم خود اِنسان هیں اِس لئے مانوتا سے مایوس هونے میں همارا کلیان نہیں . آج بھی یہ بڑی آشا کی بات هے که گاندھی جیسا ویکتی مانوتا کو خون کے دلدل سے باهر نکالنے کی اَنتھک کوششیں کر رها هے ."

آئنسٹین کی موت سے نه صرف دنیا کا سب سے بڑا ویگیانک اٹھ گیا بلکه شانتی اور پریم کا ایک زبردست پجاری چل بسا . موت نے آئنسٹین کی جو جگه خالی کی هے اُس کے آسانی سے بھرنے کی کوئی اُمید دکھائی نہیں دیتی .

—وشومبھر ناتھ پانڈے

اندھوں کی مسیحا—هیلین کیلر

پچھلے تین مہینے سے ڈاکٹر هیلین کیلر هندستان میں گھوم گھوم کر اِس دیش کے اندھوں کو اُمید کا ایک پیغام دے رهی هیں . وہ اِنسان کی لامحدود (اپری مت) اهمیت اپنی نجی زندگی کو سامنے رکھکر بیان کر رهی هیں . اپنے جنم کے بعد 19 مہینوں تک وہ ایک سادھارن شِشو کی طرح تھیں . پھر اُنھیں یکایک تیز بخار آیا اور وے اندھی، بہری اور گونگی بن گئیں. ماں باپ کو سخت صدمہ پہونچا . سن 1887 میں چھ برس کی عمر میں اُنھوں نے هیلین کو ایک اندھی شکشک مس سلیوان کے سپرد کر دیا . اِنسانیت کے لئے یہ ایک دلچسپ کہانی هے که کس طرح

लेकिन आइन्स्टीन का आत्मबल के ऊपर बेहद विश्वास था. उन्होंने लिखा था—"दुनिया की सारी दौलत और उसकी भौतिक तरक़्क़ी उसे इस बरबादी से नहीं बचा सकती. सिर्फ़ महात्माओं की साधनायें और उनकी रूहानी क़ुरबानियां ही उसकी हिफ़ाज़त कर सकती हैं. दौलत और दुनयवी तरक़्क़ी हमेशा इनसानी ख़ुदग़र्ज़ियों को बढ़ाती है. बुद्ध, ईसा और गान्धी ने जो रूहानी इनक़लाब किये क्या यह वे रुपयों की थैलियों के बल कर सकते थे ? उनका चमत्कार तो आत्मबल का ही चमत्कार है और दुनिया के कल्यान का रास्ता दौलत की चाह नहीं बल्कि अपरिग्रह है."

मज़हब और साइन्स की कशमकश के बारे में आइन्स्टीन ने लिखा था—"जब कि साइन्स नैतिक सदाचरण को इनसानी बरताव की कसौटी मानता है मज़हब डर की भावना पैदा करके, इस दुनिया में और आने वाली दुनिया में, इनसानों के आचरण का नियंत्रण करता है. इसी साफ़ ऐलान की वजह से मज़हब के साथ साइन्स की बराबर लड़ाई होती रही है. नैतिक सदाचरण की भावना ने ही वैज्ञानिक अनुसन्धान को बेहद प्रोत्साहन दिया. केपलर और न्यूटन ने जाने कितने बरसो तक साधना की होगी तब कहीं वे अपनी खोजों में कामयाब हुये. सच पूछा जाय तो आज की इस माद्दापरस्त दुनिया में साइन्सदां ही सच्चे मानों में मज़हबी आदमी हैं. इनसान अपने आपे को मांझकर ही महान बनता है. गान्धी जैसे महात्मा तो कलचरी मंझन से ही पैदा होते हैं."

वैज्ञानिक के धर्म के सम्बन्ध में आइन्स्टीन ने लिखा है—'वैज्ञानिक क़ुदरत की अलग अलग सिफ़तों के बीच जो समन्वयात्मक एका है उसको साक्षात करके हैरान रह जाता है. प्रकृति का यह साक्षात्कार ही वैज्ञानिक का अपना धर्म है. यही साक्षात्कार उसके अन्दर आध्यात्मिक भावना भरता है. आज इनसानी क़ौम की क़िस्मत का फ़ैसला इस आध्यात्मिक शक्ति पर है. आज दुनिया विरोधी विचारों के चौराहे पर खड़ी है. आज उसे फ़ैसला करना है कि वह त्याग, शांति और कलचर के रास्ते पर चलेगी अथवा हिंसा, एटम और हाइड्रोजन बम और बरबादी के रास्ते पर चलेगी. पहला रास्ता व्यक्ति की आज़ादी और समाज के कल्याण का रास्ता है और दूसरा रास्ता व्यक्ति की ग़ुलामी और सभ्यता की बरबादी का रास्ता है. जो भी रास्ता हम पकड़ेंगे उसी के मुताबिक़ हमारी क़िस्मत का फ़ैसला होगा ?"

विश्वशान्ति और युद्धों के बारे में आइन्स्टीन ने लिखा है—"आज दुनिया का क़रीब क़रीब हर मुल्क संसार व्यापी जंग की तैयारी में लगा है. एक बड़ी जङ्ग ख़त्म होती है और दूसरी की तैयारी शुरू हो जाती है. जब तक चन्द राजनीतिज्ञ दुनिया की क़िस्मत की रहनुमाई करते रहेंगे, जब तक क़ौमी ग़ुरूर की परिस्तिश होती रहेगी, जब तक जङ्ग की भावना

لیکن آئنسٹین کا آتم بل کے اوپر بےحد وشواس تھا. انہوں نے لکھا تھا—" دنیا کی ساری دولت اور اس کی بھوتک ترقی اسے اس بربادی سے نہیں بچا سکتی. صرف مہاتماؤں کی سادھنائیں اور ان کی روحانی قربانیاں ہی اس کی حفاظت کر سکتی ہیں. دولت اور دنیوی ترقی ہمیشہ انسانی خودغرضیوں کو بڑھاتی ہے. بدھ، عیسیٰ اور گاندھی نے جو روحانی انقلاب کئے کیا یہ وے روپیوں کی تھیلیوں کے بل پر کر سکتے تھے ؟ ان کا چمتکار تو آتم بل کا ہی چمتکار ہے اور دنیا کے کلیان کا راستہ دولت کی چاہ نہیں بلکہ اپریگرہ ہے."

مذہب اور سائنس کی کشمکش کے بارے میں آئنسٹین نے لکھا تھا—" جب کہ سائنس نیتک سداچرن کو انسانی برتاؤ کی کسوٹی مانتا ہے مذہب ڈر کی بھاونا پیدا کر کے، اس دنیا میں اور آنے والی دنیا میں، انسانوں کے آچرن کا نینترن کرتا ہے. اسی صاف اعلان کی وجہ سے مذہب کے ساتھ سائنس کی برابر لڑائی ہوتی رہی ہے. نیتک سداچرن کی بھاونا نے ہی ویگیانک انوسندھان کو بےحد پروتساہن دیا. کیپلر اور نیوٹن نے جانے کتنے برسوں تک سادھنا کی ہوگی تب کہیں وہ اپنی کھوجوں میں کامیاب ہوئے. سچ پوچھا جائے تو آج کی مادہ‌پرست دنیا میں سائنسداں ہی سچے معنوں میں مذہبی آدمی ہیں. انسان اپنے آپے کو مانجھ کر ہی مہان بنتا ہے. گاندھی جیسے مہاتما تو کلچری مانجھن سے ہی پیدا ہوتے ہیں."

ویگیانک کے دھرم کے سمبندھ میں آئنسٹین نے لکھا ہے—" ویگیانک قدرت کی الگ الگ صفتوں کے بیچ جو سمنوياتمک ایکا ہے اس کو ساکشات کر کے حیران رہ جاتا ہے. پرکرتی کا یہ ساکشاتکار ہی ویگیانک کا اپنا دھرم ہے. یہی ساکشاتکار اس کے اندر ادھیاتمک بھاونا بھرتا ہے. آج انسانی قوم کی قسمت کا فیصلہ اس ادھیاتمک شکتی پر ہے. آج دنیا ورودھی وچاروں کے چوراہے پر کھڑی ہے. آج اسے فیصلہ کرنا ہے کہ وہ تیاگ، شانتی اور کلچر کے راستے پر چلے گی اتھوا ہنسا، ایٹم اور ہائیڈروجن بم اور بربادی کے راستے پر چلے گی. پہلا راستہ ویکتی کی آزادی اور سماج کے کلیان کا راستہ ہے اور دوسرا راستہ ویکتی کی غلامی اور سبھیتا کی بربادی کا راستہ ہے. جو بھی راستہ ہم پکڑیں گے اسی کے مطابق ہماری قسمت کا فیصلہ ہوگا."

وشو شانتی اور یدھوں کے بارے میں آئنسٹین نے لکھا ہے—" آج دنیا کا قریب قریب ہر ملک سنسار ویاپی جنگ کی تیاری میں لگا ہے. ایک بڑی جنگ ختم ہوتی ہے اور دوسری کی تیاری شروع ہو جاتی ہے، جب تک چند راجنیتگیہ دنیا کی قسمت کی رہنمائی کرتے رہیں گے، جب تک قومی غرور کی پرستش ہوتی رہے گی، جب تک جنگ کی بھاونا

हमारी राय / ہماری رائے

अल्बर्ट आइन्स्टीन

18 अप्रैल सन 55 को रेडियो ने सारी दुनिया को यह पुरदर्द इत्तला दी कि क़रीब 76 बरस की उम्र में उस दिन दुनिया के मशहूर वैज्ञानिक (साइन्सदां) डाक्टर अल्बर्ट आइन्स्टीन की मौत हो गई. डाक्टर आइन्स्टीन की मौत से जो जगह ख़ाली हुई उसे आसानी से नहीं भरा जा सकता. वे महज़ एक साइन्सदां ही नहीं थे बल्कि यह बात कही जा सकती है कि आजकल की साइन्स की खोजों के वे सबसे बड़े स्रोत थे. गणित में सापेक्षवाद (Theory of Relativity) की खोज उन्हीं की की हुई है. एटामिक खोजों को मूर्त रूप देने में उनका बहुत बड़ा हाथ था. उन्हें 1921 में भौतिक विज्ञान पर नोबुल पुरस्कार मिला. साइन्सदांओं का ख़्याल है कि दुनिया में साइन्स की तरक़्क़ी पर जिन दो वैज्ञानिकों में इनक़लाबी असर डाला उनमें एक कापर्निकस था और दूसरा आइन्स्टीन.

आइन्स्टीन का जनम 14 मार्च 1879 ईसवी में उल्म, वुटेनबर्ग, आस्ट्रिया में हुआ था. क़ौमियत से वह जर्मन यहूदी थे. सन 1933 में नाज़ीवाद के फैलाव के साथ साथ आइन्स्टीन को अपने पद से इस्तीफ़ा देना पड़ा. उनकी क़ौमियत ज़ब्त कर ली गई. इस पर दुनिया के 34 देशों ने उन्हें अपने देश की क़ौमियत और शरण देने की दावत दी. आइन्स्टीन पहले आक्सफ़ोर्ड में जाकर रहे और बाद में अमरीका चले गये. सन् 1940 में वे प्रिन्स्टन में साइन्स के प्रोफ़ेसर के पद पर मुक़र्रर हुये.

जैसा हम ऊपर लिख चुके हैं आइन्स्टीन जर्मन थे. किन्तु अपने देश की जर्मन जनता की गिरावट देखकर जनता के ऊपर से उनका विश्वास सा उठ गया था. सन् 1941 में उन्होंने लिखा था—"भेड़ जैसी जनता को 15 दिन के अन्दर अख़बारों के ज़रिये इतना उकसाया जा सकता है कि वह राजनैतिक गिरोहों की घटियल ख़ुदग़र्ज़ियों के लिये अपना और दूसरों का ख़ून बहाने को तैयार हो सकती है. ज़ाती पतन की इससे बड़ी दूसरी मिसाल और कौन हो सकती है कि लोग जबरिया फ़ौजी तालीम के आगे सर झुकायें. ऐसी हालत में अगर कोई इस सभ्यता के नाश की पेशीनगोई करे तो इसमें ताज्जुब की कौनसी बात है ?"

البرٹ آئنسٹین

18 اپریل سن 55' کو ریڈیو نے ساری دنیا کو یہ پردرد اطلاع دی کہ قریب 76 برس کی عمر میں اُس دن دنیا کے مشہور ویگیانک (سائنسداں) ڈاکٹر البرٹ آئنسٹین کی موت ہوگئی ۔ ڈاکٹر آئنسٹین کی موت سے جو جگہ خالی ہوئی اُسے آسانی سے نہیں بھرا جا سکتا وے محض ایک سائنسداں ہی نہیں تھے بلکہ یہ بات کہی جا سکتی ہے کہ آجکل کی سائنس کی کھوجوں کے وے سب سے بڑے سروت تھے ۔ گنت میں ساپیکش واد (Theory of Relativity) کی کھوج اُنہیں کی کی ہوئی ہے ۔ ایٹامک کھوجوں کو مورت روپ دینے میں اُن کا بہت بڑا ہاتھ تھا ۔ اُنہیں سن 1921 میں بھوتک وگیان پر نوبل پرسکار ملا ۔ سائنسداؤں کا خیال ہے کہ دنیا میں سائنس کی ترقی پر جن دو ویگیانکوں میں اِنقلابی اثر ڈالا اُن میں ایک کاپرنیکس تھا اور دوسرا آئنسٹین

آئنسٹین کا جنم 14 مارچ سن 1879 عیسوی میں اُلم' برٹن برگ' آسٹریا میں ہوا تھا ۔ قومیت سے وہ جرمن یہودی تھے ۔ سن 1933 میں نازی واد کے پھیلاؤ کے ساتھ ساتھ آئنسٹین کو اپنے پد سے استعفیٰ دینا پڑا ۔ اُن کی قومیت ضبط کرلی گئی ۔ اِس پر دنیا کے 34 دیشوں نے اُنہیں اپنے دیش کی قومیت اور شرن دینے کی دعوت دی ۔ آئنسٹین پہلے آکسفورڈ میں جا کر رہے اور بعد میں امریکہ چلے گئے ۔ سن 1940 میں وے پرنسٹن میں سائنس کے پروفیسر کے پد پر مقرر ہوئے ۔

جیسا ہم اوپر چکے ہیں آئنسٹین جرمن تھے ۔ کنتو اپنے دیش کی جرمن جنتا کی گراوٹ دیکھ کر جنتا کے اوپر سے اُن کا وشواس سا اُٹھ گیا تھا ۔ سن 1941 میں اُنہوں نے لکھا تھا۔۔" بھیڑ جیسی جنتا کو 15 دن کے اندر اخباروں کے ذریعے اِتنا اُکسایا جا سکتا ہے کہ وہ راجنیتک گروہوں کی ذلیل خودغرضیوں کے لئے اپنا اور دوسروں کا خون بہانے کو تیار ہو سکتی ہے ۔ ذاتی پتن کی اِس سے بڑی دوسری مثال اور کون ہو سکتی ہے کہ لوگ جبریا فوجی تعلیم کے آگے سر جھکائیں ۔ ایسی حالت میں اگر کوئی اِس سبھیتا کے ناش کی پیشینگوئی کرے تو اِس میں تعجب کی کون سی بات ہے ؟"

लेखक के मुताबिक़ हिन्दी और उर्दू दोनों की एक ही शुरूआत थी. लेखक के शब्द हैं—"लगभग 18वीं सदी के अन्त तक 'उर्दू', शब्द का प्रयोग (इस्तेमाल) भाषा (ज़बान) के अर्थ में नहीं मिलता, उसकी जगह 'रेख़्ता' या 'हिन्दी' दो ही शब्द कवियों की ज़बान पर चढ़े थे...19वीं शताब्दी के आरम्भ से. कुछ पहले उर्दू का शब्द भी भाषा के अर्थ में बोला जाने लगा. उसी समय से यूरोपिनय लेखकों ने इसे हिन्दुस्तानी कहना भी आरम्भ किया."

दूसरे अध्याय में लेखक ने दक्षिण भारत में उर्दू ज़बान की तरक़्क़ी की तारीख़ दी है. जिस तरह उत्तर में ख़ुसरो का नाम मशहूर है उसी तरह दक्षिण में बन्दा नवाज़ गेसू दराज़ का नाम मशहूर है. उनकी शायरी का एक नमूना देखें:—

"नबी कहे तहक़ीक़ के दरमियान ते सत्रह हज़ार पर्दे, उजियाले के, हौर अंधियारे के, अगर उसमें ते एक पर्दा उठ जाये तो उसकी आंच ते मैं जलूं."

15वीं सदी में दक्खिन भारत के शाह मीरान जी के एक उर्दू पद का नमूना देखें—

केते ज्ञान भगत बैरागी केते मूर्ख गंवार,
एक जिन एक मानस कीता एक पुरुष एक नार.

मीरान जी के पुत्र बुरहानुद्दीन का एक उर्दू पद है—

यह रूप प्रगट आप छिपाया कोई न पाया अन्त,
माया मोह में सब जग बांधया क्योंकर सूझे पन्त.

लेखक वली को उर्दू का पहला कवि नहीं मानता, वह उन्हें दक्खिन भारत का एक बड़ा कवि मानता है जिनकी ज़बान बोल चाल की ज़बान के क़रीब थी.

तीसरे अध्याय में 18वीं सदी में दिल्ली के उर्दू शायरों के हालात लेखक ने बयान किये हैं. चौथे अध्याय में अवधी और उर्दू साहित्य का चर्चा है. पांचवें अध्याय में नज़ीर अकबराबादी की ख़ास तौर पर चर्चा की गई है. अध्याय छै में दिल्ली के शायरों के आख़री दौर की चर्चा है. इनमें ज़ौक़, ग़ालिब और बहादुर शाह 'ज़फ़र' का नाम ख़ास तौर पर लिया गया है. सातवें अध्याय में उर्दू गद्य (नस्र) के विकास पर रोशनी डाली गई है. इनमें शुरूर की मशहूर रचना 'फ़िसानए अजायब' की ख़ास तौर पर चर्चा की गई है. आठवां अध्याय इस ज़माने की शुरूआत से पहले के गद्य और पद्य का ज़िक्र करता है. फिर लेखक ने पचास सफ़ों में नये उर्दू अदब का तज़किरा किया है. आख़री अध्याय में उर्दू के भविष्य की चर्चा की गई है. इसमें मौजूदा नये उर्दू शायरों और गद्य लेखकों का संक्षिप्त चर्चा है. आख़ीर में कुछ पारिभाषिक शब्द और किताबों की फ़ेहरिस्त दी है जिनसे इस किताब के लिखने में मदद ली गई है.

—विश्वम्भरनाथ पांडे

لیکھک کے مطابق هندی اور اردو دونوں کی ایک هی شروعات تھی. لیکھک کے شبد هیں—" لگ بھگ 18ویں صدی کے انت تک ' اردو ' شبد کا پریوگ (استعمال) بھاشا (زبان) کے ارتھ میں نہیں ملتا' اُس کی جگہ ' ریختہ ' یا ' هندی ' دو هی شبد کویوں کی زبان پر چڑھے تھے......19ویں شتابدی کے آرمبھ سے. کچھ پہلے اردو کا شبد بھی بھاشا کے ارتھ میں بولا جانے لگا. اُسی سمے سے یوروپین لیکھکوں نے اِسے هندستانی کہنا بھی آرمبھ کیا."

دوسرے ادھیائے میں لیکھک نے دکشن بھارت میں اردو زبان کی ترقی کی تاریخ دی هے. جس طرح اُتر میں خسرو کا نام مشہور هے اُسی طرح دکھن میں بندہ نواز گیسو دراز کا نام مشہور هے. اُن کی شاعری کا ایک نمونہ دیکھیں—

" نبی کہے تحقیق کے درمیان تے ستر هزار پردے' اُجیالے کے' هور اندھیارے کے' اگر اُس میں تے ایک پردا اُٹھ جائے تو اُس کی آنچ تے میں جلوں."

15ویں صدی میں دکھن بھارت کے شاہ میراں جی کے ایک اُردو پد کا نمونہ دیکھیں—

کیتے گیان بھگت ویراگی کیتے مورکھ گنوار'
ایک جن ایک مانس کیتا ایک پروش ایک نار.

میراں جی کے پتر برهان الدین کا ایک اُردو پد هے—

یہ روپ پرگٹ آپ چھپایا کوئی نہ پایا انت'
مایا موہ میں سب جگ باندھیا کیونکر سوجھے پنت.

لیکھک ولی کو اُردو کا پہلا کوی نہیں مانتا' وہ اُنہیں دکھن بھارت کا ایک بڑا کوی مانتا هے جن کی زبان بول چال کی زبان کے قریب تھی.

تیسرے ادھیائے میں 18ویں صدی میں دلی کے اُردو شاعروں کے حالات لیکھک نے بیان کئے هیں. چوتھے ادھیائے میں اودھی اور اُردو ساهتیہ کا چرچا هے. پانچویں ادھیائے میں نظیر اکبرآبادی کی خاص طور پر چرچا کی گئی هے. ادھیائے چھ میں دلی کے شاعروں کے آخری دور کی چرچا هے. ان میں ذوق' غالب اور بہادر شاہ ' ظفر ' کا نام خاص طور پر لیا گیا هے. ساتویں ادھیائے میں اردو گدیہ (نثر) کے وکاس پر روشنی ڈالی گئی هے. اِن میں شرور کی مشہور رچنا ' فسانۂ عجائب ' کی خاص طور پر چرچا کی گئی هے. آٹھواں ادھیائے اِس زمانے کی شروعات سے پہلے کے گدیہ اور پدیہ کا ذکر کرتا هے. پھر لیکھک نے پچاس صفحوں میں نئے اُردو ادب کا تذکرہ کیا هے. آخری ادھیائے میں اُردو کے بھوشیہ کی چرچا کی گئی هے. اِس میں موجودہ نئے اُردو شاعروں' اور گدیہ لیکھکوں کا سنچھپت چرچا هے. آخر میں کچھ پریبھاشک شبد اور اُن کتابوں کی فہرست دی هے جن سے اِس کتاب کے لکھنے میں مدد لی گئی هے.

— وشومبھر ناتھ پانڈے

कस्तूरबा गान्धी ट्रस्ट का सारा काम उनके सुपुर्द हो गया जिसका मक़सद था गांव की बहिनों के लिये ग्राम सेविकायें तैयार करना.

बापा का असली नाम था अमृतलाल ठक्कर, लेकिन आदर और प्यार से लोग उन्हें ठक्कर बापा कहा करते थे. अपने काम के सिलसिले में ठक्कर बापा को पूर्वी अफरीक़ा में भी रहना पड़ा और वहां के लोगों के रहन सहन और रस्म रिवाजों को उन्हें नज़दीक से देखने का मौक़ा मिला. हिन्दुस्तान में रह कर उनके मन में सेवा की तड़प उठी तो वह स्वर्गीय गोखले के सम्पर्क में आये.

ठक्कर बापा ने लोहाणा जाति की घोघारी शाखा में जन्म लिया था. सन 1910 मे वे ऐसे प्रीति भोज में शामिल हुये जिसमें दो हरिजन भी थे. जाति पंचायत ने उन्हें जवाब देने के लिये तलब किया. दन्ड स्वरूप उन्हें 150 रुपया जुर्माना देना पड़ा और अनिवार्य प्रायश्चित्त करना पड़ा. उस घटना ने उनके दिल को खूब मथा और नतीजा यह हुआ कि वे भीलों, आदिवासियों और हरिजनों के महान सेवक बन गये.

अकाल पीड़ितों, हरिजनों और आदिवासियों की सेवा में समाज सेवकों के सामने जो कठिनाइयां आती हैं बापा के इस जीवन प्रसंग से उनपर काफ़ी रोशनी पड़ती है. बापा का यह जीवन चरित बहुत ही दिलचस्प और शिक्षाप्रद है. प्रत्येक समाज सेवी को यह पुस्तक ज़रूर पढ़नी चाहिये.

पांचवीं किताब 'हरिजन सेवकों के लिये' गांधी जी के लेखों का संग्रह है. ये उन समाज सेवकों को रास्ता दिखाने के लिये हैं जिन्होंने हरिजन सेवा को अपनी ज़िन्दगी का मक़सद बना लिया है. गान्धी जी के लेखों का यह संग्रह बड़े महत्व का है.

उर्दू साहित्य का इतिहास

लिखने वाले—सैयद एहतिशाम हुसेन, शाया करने वाले—अन्जुमने तरक़्क़ीए-उर्दू (हिन्द) अलीगढ़; सफ़े—360 (डिमाइ); हिन्दी लिपि; क़ीमत सात रुपये चार आने.

पुस्तक संस्कृताई हिन्दी में लिखी गई है और 11 अध्यायों में बटी है. पहले अध्याय में उर्दू ज़बान के जनम और बचपन का हाल है. लेखक के मुताबिक़ उर्दू को पहले 'हिन्दवी', हिन्दुई', 'दकनी' या 'दखनी' नाम से पुकारा जाता था. लेखक के मुताबिक़ इस ज़बान की दाग़बेल खिलजियों और तुग़लकों के वक़्त में पड़ी. यही ज़माना अमीर ख़ुसरो का ज़माना था. और अमीर ख़ुसरो की यह ज़बान उस वक़्त की उर्दू थी—

गोरी सोवे सेज पर, और मुख पर डारे केस,
चल ख़ुसरो घर आपने, रैन भई सब देस.

کستوربا گاندھی ٹرسٹ کا سارا کام اُنکے سپرد ہوگیا جس کا مقصد تھا گاؤں کی بہنوں کے لئے گرام سیوکائیں تیار کرنا .

باپا کا اصلی نام تھا امرت لعل ٹھکر' لیکن آدر اور پیار سے لوگ اُنھیں ٹھکر باپا کہا کرتے تھے . اپنے کام کے سلسلے میں ٹھکر باپا کو پوربی افریقہ میں بھی رہنا پڑا اور وہاں کے لوگوں کے رہن‌سہن اور رسم رواجوں کو اُنھیں نزدیک سے دیکھنے کا موقعہ ملا . ہندستان میں رہ کر اُن کے من میں سیوا کی تڑپ اُٹھی تو وہ سورگیہ گوکھلے کے سمپرک میں آئے .

ٹھکر باپا کے لوہانا جاتی کی گھوگھاری شاکھا میں جنم لیا تھا . سن 1910 میں وے ایسے پرتی‌بھوج میں شامل ہوئے جس میں دو ہریجن بھی تھے . جاتیہ پنچایت نے اُنھیں جواب دینے کے لئے طلب کیا . دنڈ سروپ اُنھیں 150 روپیہ جرمانہ دینا پڑا اور انیواریہ پراشچت کرنا پڑا . اُس گھٹنا نے اُن کے دل کو خوب متھا اور نتیجہ یہ ہوا کہ وے بھیلوں' آدی‌واسیوں اور ہریجنوں کے مہان سیوک بن گئے .

اکال پیڑتوں' ہریجنوں اور آدی‌واسیوں کی سیوا میں سماج سیوکوں کے سامنے جو کٹھنائیاں آتی ہیں باپا کے اِس جیون پرسنگ سے اُن پر کافی روشنی پڑتی ہے . باپا کا یہ جیون چرت بہت ہی دلچسپ اور شکشا پرد ہے . پرتیک سماج سیوی کو یہ پستک ضرور پڑھنی چاہئے .

پانچویں کتاب ' ہریجن سیوکوں کے لئے ' گاندھی جی کے لیکھوں کا سنگرہ ہے . یہ اُن سماج سیوکوں کو راستہ دکھانے کے لئے ہیں جنھوں‌نے ہریجن سیوا کو اپنی زندگی کا مقصد بنا لیا ہے . گاندھی جی کے لیکھوں کا یہ سنگرہ بڑے مہتو کا ہے .

اُردو ساہتیہ کا اِتہاس

لکھنے والے—سید احتشام حسین؛ شائع کرنے والے—انجمن ترقئی اُردو (ہند) علیگڑھ؛ صفحے—360 (ڈیمائی)؛ ہندی لپی؛ قیمت سات روپئے چار آنے .

پستک سنسکرتائی ہندی میں لکھی گئی ہے اور 11 ادھیایوں میں بٹی ہے . پہلے ادھیائے میں اُردو زبان کے جنم اور بچپن کا حال ہے . لیکھک کے مطابق اردو کو پہلے 'ہندوی' ' ہندوئی ' ' دکنی ' یا ' دکھنی ' نام سے پکارا جاتا تھا . لیکھک کے مطابق اِس زبان کی داغ بیل خلجیوں اور تغلقوں کے وقت میں پڑی . یہی زمانہ امیر خسرو کا زمانہ تھا . اور امیر خسرو کی یہ زبان اُس وقت کی اردو تھی—

گوری سووے سیج پر' اور مکھ پر ڈارے کیس'
چل خسرو گھر آپنے' رین بھئی سب دیس .

ज़िन्दगी पर क्या तामीरी असर डाला उसकी झांकी हमें इस किताब में खुद गान्धी जी के शब्दों में मिलती है. इस नुक़्ते नज़र से यह किताब सियासत के विद्यार्थी के लिये अपनी अहम जगह रखती है.

दूसरी किताब 'बा और बापू की शीतल छाया में' मनु बहन की लिखी हुई है. कुमारी मनु की यह तीसरी किताब है. इसके पहले 'बापू—मेरी मां' और 'कलकत्ते का चमत्कार' नाम की दो किताबें छप चुकी हैं. मनु रिश्ते में गान्धी जी की पोती हैं और 1942 से गान्धी जी के बलिदान के दिन तक उनके साथ रहीं. इस किताब में मनु ने बड़े सरल और स्वाभाविक तरीक़े से बा और बापू के साथ अपने संस्मरणों की झांकियां पेश की हैं. इतने स्वाभाविक रूप से बोल चाल की तरह पुस्तक लिखी गई है कि एक बार उठा कर बिना पूरा किये रखने का मन नहीं करता. बापू और बा के बारे में इस किताब के पन्नों में बड़े सुन्दर संस्मरण हमें पढ़ने को मिलते हैं.

तीसरी किताब 'बापू' गान्धी भक्त श्री रामनारायन चौधरी की लिखी है. श्री चौधरी राजस्थान के प्रसिद्ध कार्यकर्ता रहे हैं और अनेकों बरस तक चौधरी दम्पति बापू के साथ रहे हैं, साबरमती में और सेवा ग्राम मे भी. इस किताब में श्री रामनारायण चौधरी ने बापू के साथ अपने लम्बे साथ की 288 यादें दर्ज की हैं. उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अंजना देवी ने बापू और बा के साथ की 14 दिलचस्प और शिक्षाप्रद झांकियां पेश की हैं. गान्धी जी के जीवन प्रसंग पर, उनके जीवन अमल पर, उनके विचारों पर, उनके उसूलों और आदर्शों पर, उनके साधनों और साधना पर बड़ी सुन्दर रोशनी पड़ती है. पुस्तक गान्धी जी के जीवन परिचय की दृष्टि से क़ीमती है.

चौथी किताब कान्तिलाल शाह की लिखी हुई 'ठक्कर बापा' है. ठक्कर बापा का यह जीवन चरित हिन्दी साहित्यक जीवन चरित भाग को बड़े हद तक पूरा करता है. ठक्कर बापा ने लम्बी 81 बरस की ज़िन्दगी पाई. 45 बरस से बाद का उनका सारा जीवन सेवा और ख़िदमत का जीवन था. 34 बरस तक उन्होंने समाज की अनवरत सेवा की और 81 बरस की उम्र में दुनिया से बिदा ली.

ठक्कर बापा का जन्म भावनगर (सौराष्ट्र) में हुआ था. पेशे से वह इञ्जीनियर थे. कई जगह रहने के बाद बम्बई कार्पोरेशन में वह सैनेटरी इञ्जीनियर के पद पर नियुक्त हुए. वहीं से नौकरी छोड़ कर सेवा के काम में लग गये. भीलों की सेवा पहले चुनी. बाद में समस्त आदिबासियों तक उनकी सेवा का क्षेत्र फैल गया. गान्धी जी के वह गहरे दोस्तों में से थे. इसलिये क़ुदरती तौर पर हरिजन सेवा के काम की बड़ी ज़िम्मेवारी ठक्कर बापा ने सम्भाली. बाद में

زندگی پر کیا تعمیری اثر ڈالا اُس کی جھانکی ہمیں اِس کتاب میں خود گاندھی جی کے شبدوں میں ملتی ہے. اِس نقطہ نظر سے یہ کتاب سیاست کے ودیارتھی کے لئے اپنی اہم جگہ رکھتی ہے.

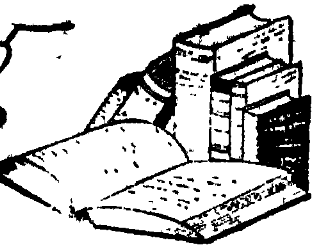
دوسری کتاب 'با اور باپو کی شیتل چھایا میں' منو بہن کی لکھی ہوئی ہے. کماری منو کی یہ تیسری کتاب ہے. اِس کے پہلے 'باپو—میری ماں' اور 'کلکتے کا چمتکار' نام کی دو کتابیں چھپ چکی ہیں. منو رشتے میں گاندھی جی کی پوتی ہیں اور 1942 سے گاندھی جی کے بلیدان کے دن تک ان کے ساتھ رہیں. اِس کتاب میں منو نے بڑے سرل اور سوابھاوک طریقے سے با اور باپو کے ساتھ اپنے سنسمرنوں کی جھانکیاں پیش کی ہیں. اِتنے سوابھاوک روپ سے بول چال کی طرح پستک لکھی گئی ہے کہ ایک بار اُٹھاکر بنا پورا کئے رکھنے کا من نہیں کرتا. باپو اور با کے بارے میں اِس کتاب کے پنوں میں بڑے سندر سنسمرن ہمیں پڑھنے کو ملتے ہیں.

تیسری کتاب 'باپو' گاندھی بھکت شری رام نارائن چودھری کی لکھی ہے. شری چودھری راجستھان کے پرسدھ کاریہ کرتا رہے ہیں اور انیکوں برس تک چودھری دمپتی باپو کے ساتھ رہے ہیں، سابرمتی میں اور سیوا گرام میں بھی. اِس کتاب میں شری رام نارائن چودھری نے باپو کے ساتھ اپنے لمبے ساتھ کی 288 یادیں درج کی ہیں. اُن کی دھرم پتنی شریمتی انجنا دیوی نے باپو اور با کے ساتھ کی 14 دلچسپ اور شکشاپرد جھانکیاں پیش کی ہیں. گاندھی جی کے جیون پرسنگ پر، اُن کے جیون عمل پر، اُن کے وچاروں پر، اُن کے اصولوں اور آدرشوں پر، اُن کے سادھنوں اور سادھنا پر بڑی سندر روشنی پڑتی ہے. پستک گاندھی جی کے جیون پریچے کی درشٹی سے قیمتی ہے.

چوتھی کتاب کانتی لال شاہ کی لکھی ہوئی 'ٹھکر باپا' ہے. ٹھکر باپا کا یہ جیون چرت ہندی ساہتیک جیون چرت بھاگ کو بڑے حد تک پورا کرتا ہے. ٹھکر باپا نے لمبی 81 برس کی زندگی پائی. 47 برس سے بعد کا اُن کا سارا جیون سیوا اور خدمت کا جیون تھا. 34 برس تک اُنہوں نے سماج کی انورت سیوا کی اور 81 برس کی عمر میں دنیا سے بدا لی.

ٹھکر باپا کا جنم بھاؤنگر (سوراشٹر) میں ہوا تھا. پیشے سے وہ انجینیر تھے. کئی جگہ رہنے کے بعد بمبئی کارپوریشن میں وہ سینیٹری انجینیر کے پد پر نیکت ہوئے. وہیں سے نوکری چھوڑکر سیوا کے کام میں لگ گئے. بھیلوں کی سیوا پہلے چنی. بعد میں سمست آدواسیوں تک اُنکی سیوا کا چھیتر پھیل گیا. گاندھی جی کے وہ گہرے دوستوں میں سے تھے. اِس لئے قدرتی طور پر ہریجن سیوا کے کام کی بڑی ذمہ داری ٹھکر باپا نے سنبھالی. بعد میں

कुछ किताबें



(1) गोखले (मेरे राजनैतिक गुरु)

लिखने वाले—गान्धी जी; छापने वाले—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद; सफ़े—64; दाम—एक रुपया.

(2) बा और बापू की शीतल छाया में

लिखने वाली—कुमारी मनु बहन गान्धी; छापने वाले—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद; सफ़े—242; दाम—ढाई रुपया.

(3) बापू (मैंने क्या देखा और क्या समझा ?)

लिखने वाले—रामनारायन चौधरी; छापने वाले—नव जीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद; सफ़े--224; डिमाई साइज़; दाम—तीन रुपये.

(4) ठक्कर बापा

लिखने वाले—कान्तिलाल शाह; छापने वाले—ठक्कर बापा स्मारक समिति, दिल्ली; मिलने का पता—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद; सफ़े—456; डिमाई साइज़ जिल्द वाली; दाम—पांच रुपया.

(5) हरिजन सेवकों के लिये

लिखने वाले—गान्धी जी; छापने वाले—नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद; दाम—छै आने.

गान्धी साहित्य से तात्लुक़ रखने वाली ये पांच क़ीमती किताबें हाल में छपकर निकली हैं. छपाई, सफ़ाई इन सबकी बहुत अच्छी है. पहली किताब गोखले ख़ुद गान्धी जी के लेखों का संग्रह (मजमुआ) है. इसका पहला, दूसरा, पांचवां, आठवां और नवां मज़मून गान्धी जी की 'आत्म कथा' से लिया गया है. तीसरा, चौथा, छठा और सातवां मज़मून 'दक्षिण अफ़रीक़ा का सत्याग्रह' से लिया गया है. किताब की शक्ल में यह मज़मून पहली दफ़ा गुजराती में सन '50 में निकल चुके हैं. यह उसका हिन्दी तरजुमा है.

गोखले की न सिर्फ़ हिन्दुस्तान की सियासी ज़िन्दगी में बड़ी जगह थी बल्कि उनकी शख़्सियत ने गान्धी जी की

کچھ کتابیں

(1) گوکھلے (میرے راجنیتک گرو)

لکھنے والے—گاندھی جی؛ چھاپنے والے—نوجیون پرکاشن مندر، احمدآباد؛ صفحے—64؛ دام - ایک روپیہ .

(2) با اور باپو کی شیتل چھایا میں

لکھنے والی—کماری منو بہن گاندھی؛ چھاپنے والے—نوجیون پرکاشن مندر، احمدآباد؛ صفحے—242؛ دام—ڈھائی روپیہ .

(3) باپو (میں نے کیا دیکھا اور کیا سمجھا ؟)

لکھنے والے—رام ناراین چودھری؛ چھاپنے والے—نوجیون پرکاشن مندر، احمدآباد؛ صفحے—224؛ ڈمائی سائز؛ دام—تین روپیہ .

(4) ٹھکر باپا

لکھنے والے—کانتی لال شاہ؛ چھاپنے والے—ٹھکر باپا اسمارک سمیتی دلی؛ ملنے کا پتہ—نوجیون پرکاشن مندر احمدآباد؛ صفحے—456 ڈمائی سائز جلد والی، دام—پانچ روپیہ .

(5) ہریجن سیوکوں کے لئے

لکھنے والے—گاندھی جی؛ چھاپنے والے—نوجیون پرکاشن مندر، احمدآباد؛ دام—چھ آنے .

گاندھی ساہتیہ سے تعلق رکھنے والی یہ پانچ قیمتی کتابیں حال میں چھپ کر نکلی ہیں . چھپائی، صفائی اِن سب کی بہت اچھی ہے . پہلی کتاب گوکھلے خود گاندھی جی کے لیکھوں کا سنگرہ (مجموعہ) ہے . اِس کا پہلا، دوسرا، پانچواں، آٹھواں اور نواں مضمون گاندھی جی کی 'آتم کتھا' سے لیا گیا ہے . تیسرا، چوتھا، چھٹا اور ساتواں مضمون 'دکھن افریقہ کا ستیاگرہ' سے لیا گیا ہے . کتاب کی شکل میں یہ مضمون پہلی دفعہ گجراتی میں سن '50 میں نکل چکے ہیں . یہ اُس کا ہندی ترجمہ ہے .

گوکھلے کی نہ صرف ہندستان کی سیاسی زندگی میں بڑی جگہ تھی بلکہ اُن کی شخصیت نے گاندھی جی کی

सौंदर्य के सामने प्रभुत्व तो भीगी बिल्ली बन जाता है. आसुरी शक्ति भी सौंदर्य के सामने सिर झुका देती है." (काया कल्प)

"नौका पर बैठे हुए जल विहार करते समय हम जिन चट्टानों को घातक समझते हैं, और चाहते हैं कि कोई इन्हें खोदकर फेंक देता, उन्हीं से नौका टूट जाने पर हम चिमट जाते हैं." (गोदान)

"सत्य की एक चिनगारी असत्य के एक पहाड़ को भस्म कर सकती है." (गोदान)

भाषा सौंदर्य—

"वातावरण में षड्यंत्र की-सी कुंठा भरी हुई थी." (गोदान)

"मालती बाहर से तितली है, भीतर से मधुमक्खी." (गोदान)

"सूर्य के तेज से अभिभूत होकर वृक्षों ने अपना पसार समेट लिया था." (गोदान)

"शंकर के कपड़े पहले भी त्याग की चरम सीमा तक पहुंच चुके थे अब वह प्रकृति की न्यूनतम रेखाओं में आबद्ध हो गये." (सवा सेर गेहूं)

सरल वर्णन शैली का नमूना—

"......तीनों आदमी भीड़ चीरते हुए मिल के सामने जा पहुंचे. देखा तो अग्नि का एक सागर आकाश में उमड़ रहा था. अग्नि की उन्मत्त लहरें एक पर एक, दांत पीसती थीं, जीभ लपकाती थीं, जैसे आकाश को भी निगल जायेंगी. उस अग्नि समुद्र के नीचे ऐसा धुआं छाया था, मानो सावन की घटा कालिख में नहाकर नीचे उतर आई हो. उसके ऊपर जैसे आग का थरथराता हुआ, उबलता हुआ, हिमालय खड़ा था. अहाते में लाखों आदमियों की भीड़ थी, पुलिस भी थी, फ़ायर ब्रिगेड भी, सेवा समितियों के सेवक भी, पर सबके सब आग की भीषणता से मानो शिथिल हो गये हों. फ़ायर ब्रिगेड के छींटे उस अग्नि सागर में जाकर जैसे बुझ जाते थे. ईंटें जल रही थीं, लोहे के गर्डर जल रहे थे और पिघली हुई शक्कर के परनाले चारों तरफ़ बह रहे थे. और तो और ज़मीन से भी ज्वाला निकल रही थी." (गोदान)

इस प्रकार सरल भाषा में, जनता की भाषा में, सरल और प्रवाह पूर्ण शैली में लिखा गया साहित्य—जैसा प्रेमचन्द ने लिखा—बहुत कम दिखाई देता है. हम चाहते हैं कि लोग अधिक से अधिक प्रेमचन्द साहित्य को पढ़ें और उसकी सरलता व स्वाभाविकता को अपनायें.

"سوندریہ کے سامنے پربھتو تو بھیگی بلی بن جاتا ہے. آسوری شکتی بھی سوندریہ کے سامنے سر جھکا دیتی ہے." (کایا کلپ)

"نوکا پر بیٹھے ہوئے جل وہار کرتے سمے ہم جن چٹانوں کو گھاتک سمجھتے ہیں، اور چاہتے ہیں کہ کوئی انہیں کھود کر پھینک دیتا، انہیں سے نوکا ٹوٹ جانے پر ہم چمٹ جاتے ہیں." (گودان)

"ستیہ کی ایک چنگاری استیہ کے ایک پہاڑ کو بھسم کر سکتی ہے." (گودان)

بھاشا سوندریہ—

"واتاورن میں شڑینتر کی سی کونٹھا بھری ہوئی تھی." (گودان)

"مالتی باہر سے تتلی ہے، بھیتر سے مدھو مکھی." (گودان)

"سوریہ کے تیج سے ابھیبھوت ہوکر ورکشوں نے اپنا پسار سمیٹ لیا تھا." (گودان)

"شنکر کے کپڑے پہلے ہی تیاگ کی چرم سیما تک پہونچ چکے ہے اب وہ پرکرتی کی نیونتم ریکھاؤں میں آبدھ ہوگئے." (سوا سیر گیہوں)

سرل ورنن شیلی کا نمونہ—

"......تینوں آدمی بھیڑ چیرتے ہوئے مل کے سامنے جا پہونچے. دیکھا تو اگنی کا ایک ساگر آکاش میں امڈ رہا تھا. اگنی کی انمت لہریں ایک پر ایک دانت پیستی تھیں، جیبھ لپکاتی تھیں، جیسے آکاش کو بھی نگل جائیں گی. اس اگنی سمندر کے نیچے ایسا دھواں چھایا تھا، مانو ساون کی گھٹا کالکھ میں نہاکر نیچے اتر آئی ہو. اس کے اوپر جیسے آگ کا تھرتھراتا ہوا، ابلتا ہوا ہمالیہ کھڑا تھا. احاطے میں لاکھوں آدمیوں کی بھیڑ تھی، پولس بھی تھی، فائر برگیڈ بھی، سیوا سمیتیوں کے سیوک بھی، پر سب کے سب آگ کی بھیشنتا سے مانو شیتھل ہوگئے ہوں. فائر برگیڈ کے چھینٹے اس اگنی ساگر میں جاکر جیسے بجھ جاتے تھے. اینٹیں جل رہی تھیں، لوہے کے گارڈر جل رہے تھے اور پگھلی ہوئی شکر کے پرنالے چاروں طرف بہہ رہے تھے. اور تو اور زمین سے بھی جوالا نکل رہی تھی." (گودان)

اس پرکار سرل بھاشا میں، جنتا کی بھاشا میں، سرل اور پرواہ پورن شیلی میں لکھا گیا ساہتیہ—جیسا پریم چند نے لکھا—بہت کم دکھائی دیتا ہے. ہم چاہتے ہیں کہ لوگ ادھک سے ادھک پریم چند ساہتیہ کو پڑھیں اور اس کی سرلتا و سوابھاوکتا کو اپنائیں.

आ सकता था. पण्डित जी की यही क्या कम कृपा थी कि वह झुनगी को अपने गांव में बसाये हुए थे !"

व्यंग के और नमूने देखिये :—

"उनके मन के ऊंचे संस्कारों का ध्वंस न हुआ था. पर पीड़ा मक्कारी, निर्लज्जता और अत्याचार को वह ताल्लुकेदारी की शोभा और रोब दाब का नाम देकर अपनी आत्मा को सन्तुष्ट न कर सकते थे. और यही उनकी सबसे बड़ी हार थी." (गोदान)

"मातादीन को कई सौ रुपये खर्च करने के बाद अन्त में काशी के पंडितों ने फिर से ब्राह्मण बना दिया था...... मातादीन को शुद्ध गोबर और गोमूत्र खाना पीना पड़ा. गोबर से उसका मन पवित्र हो गया. मूत्र से उसकी आत्मा में अशुचिता के कीटाणु मर गये.' (गोदान)

"सभ्यता केवल हुनर के साथ ऐब करने का नाम है. आप बुरे से बुरा काम करें, लेकिन अगर आप उस पर पर्दा डाल सकते हैं, तो आप सभ्य हैं, सज्जन हैं, जेंटिलमैन हैं. अगर आपमें यह सिफ़त नहीं, तो आप असभ्य हैं, गंवार हैं, बदमाश हैं. यही सभ्यता का रहस्य है."

(सभ्यता का रहस्य)

'बौड़म' कहानी में बौड़म महाशय आगे चलकर कहते हैं:-

"मेरे चाचा साहब को जवानी में एक चमारिन से ताल्लुक़ हो गया था. उससे दो बच्चे, एक लड़का और एक लड़की पैदा हुए. चमारिन लड़की को गोद मे छोड़कर मर गई. तब से इन दोनों बच्चों की मेरे यहां वही हालत थी, जो यतीमों की होती है. कोई बात न पूछता था. उनको खाने पीने को भी न मिलता. बेचारे नौकरों के साथ खाते और बाहर झोंपड़े में पड़े रहते थे. जनाब, मुझसे यह न देखा गया. मैंने उन्हें अपने दस्तरख़ान पर खिलाया और अब भी खिलाता हूं. घर में कुहराम मच गया. जिसे देखिये मुझ पर त्यौरियां बदल रहा है; मगर मैंने परवाह न की. आख़िर है वह भी तो हमारा ही ख़ून. इसीलिए मैं बौड़म कहलाता हूं." (बौड़म)

'गोदान' में होरी की पत्नी धनिया कहती है—"ये हत्यारे गांव के मुखिया हैं, गरीबों का खून चूसने वाले. सूद-ब्याज, डेढ़ी-सवाई, नजर नजराना, घूस-घास जैसे भी हो, गरीबों को लूटो. उसपर सुराज चाहिए. जेहल जाने से सुराज न मिलेगा. सुराज मिलेगा धरम से, न्याय से."

प्रेमचन्द-साहित्य में सैकड़ों सुन्दर-सुन्दर सुयुक्तियां मिलती हैं. नमूने के लिए हम तीन-चार ही नीचे दे रहे हैं—

"पाप अग्नि का वह कुन्ड है, जो आदर और मान, साहस और धैर्य को क्षण-भर में जलाकर भस्म कर देता है." (वरदान)

جاسکتا تھا ۔ پنڈت جی کی یہی کیا کم کرپا تھی کہ وہ جھونگی کو اپنے گاؤں میں بسائے ہوئے تھے !"

وینگ کے اور نمونے دیکھئے—

"اُن کے من کے اُونچے سنسکاروں کا دھونس نہ ہوا تھا. پریھوا، مکاری، نرلجتا اور اتیاچار کو وہ تعلقداری کی شوبھا اور رعب داب کا نام دےکر اپنی آتما کو سنتشٹ نہ کرسکتے تھے. اور یہی اُن کی سب سے بڑی ہار تھی ." (گودان)

"ماتا دین کو کئی سو روپئے خرچ کرنے کے بعد انت میں کاشی کے پنڈتوں نے پھر سے براھمن بنا دیا تھا......ماتا دین کو شدہ گوبر اور گو موتر کھانا پینا پڑا ۔ گوبر سے اس کا من پوتر ہوگیا. موتر سے اُس کی آتما میں اشوچتا کے کٹانو مرگئے ." (گودان)

سبھیتا کیول ھنر کے ساتھ عیب کرنے کا نام ھے . آپ برے سے برا کام کریں، لیکن اگر آپ اُس پر پردہ ڈال سکتے ھیں، تو آپ سبھیہ ھیں، سجن ھیں، جنٹلمین ھیں . اگر آپ میں یہ صفت نہیں، تو آپ اسبھیہ ھیں، گنوار ھیں، بدمعاش ھیں . یہی سبھیتا کا رھسیہ ھے . (سبھیتا کا رھسیہ)

بوڑم' کہانی میں بوڑم مہاشے آگے چل کر کہتے ھیں :—

"میرے چاچا صاحب کو جوانی میں ایک چمارن سے تعلق ھوگیا تھا . اس سے دو بچے، ایک لڑکا اور ایک لڑکی پیدا ھوئے . چمارن لڑکی کو گود میں چھوڑکر مرگئی . تب سے اُن دونوں بچوں کی میرے یہاں وھی حالت تھی، جو یتیموں کی ھوتی ھے . کوئی بات نہ پوچھتا تھا . انکو کھانے پینے کو بھی نہ ملتا . بیچارے نوکروں کے ساتھ کھاتے اور باھر جھونپڑے میں پڑے رھتے تھے . جناب، مجھسے یہ نہ دیکھا گیا . میں نے انھیں اپنے دسترخوان پر کھلایا اور اب بھی کھلاتا ھوں . گھر میں کہرام مچ گیا . جسے دیکھئے مجھ پر تیوریاں بدل رھا ھے؛ مگر میں نے پرواہ نہ کی . آخر ھیں وہ بھی تو ھمارا ھی خون. اِس لئے میں بوڑم کہلاتا ھوں ." (بوڑم)

'گودان' میں ھوری کی پتنی دھنیا کہتی ھے—"یہ ہتیارے گاؤں کے مکھیا ھیں، غریبوں کے خون چوسنے والے . سود بیاج، ڈیڑھی سوائی، نذر نذرانہ، گھوس گھاس جیسے بھی ھو، غریبوں کو لوٹو . اُس پر سوراج چاھئے . جیل جانے سے سوراج نہ ملیگا. سوراج ملیگا دھرم سے، نیائے سے ."

پریم چند ساھتیہ میں سیکڑوں سندر سندر سویکتیاں ملتی ھیں . نمونے کے لئے ھم تین چار ھی نیچے دے رھے ھیں .

"پاپ اگنی کا وہ کنڈ ھے، جو آدر اور مان، ساھس اور دھیریہ کو چھن بھر میں جلاکر بھسم کردیتا ھے ." (وردان)

डाइरेक्टर, मेडल, एप्रैकरान, पालिसी, फार्म, हाल, पबलिक, मिनिस्टर, लीग, डेपुटेशन, प्रेक्टिस, एकेडेमी, बैंकर, बजट, इंचार्ज आदि.

एक इक्के वाले की भाषा देखिये—

"घर कहां है हुजूर; जहां पड़ रहूं, वहीं घर है. जब घर था, तब था. अब तो बेघर, बेजर, बेदर हूं और सबसे बड़ी बात यह कि बेपर हूं. तक़दीर ने पर काट लिए. लंडूरा बनाकर छोड़ दिया. मेरे दादा नवाबी में चकलेदार थे, हुजूर, सात जिले के मालिक, जिसे चाहें तोपदम कर दें, फांसी पर लटका दें. सूरज निकलने के पहले लाखों की थैलियां नजर चढ़ जाती थी हुजूर !......" (तगादा)

मुसलमान पात्रों के मुख से क्या सुन्दर और चलती हुई उर्दू बुलवाई है—

"......मैं जिन्दगी को कुछ और समझता हूं, पर मुझे इजाजत नहीं है कि पांचों वक्त की नमाज पढ़ सकूं. मेरे वालिद हैं. चचा हैं. दोनों साहब पहर रात से पहर रात तक काम में मसरूफ़ रहते हैं. रात दिन हिसाब-किताब, नफ़ा नुक़सान, मन्दी तेजी के सिवाय और कोई जिक्र ही नहीं होता, गोया खुदा के बन्दे न हुए इस दौलत के बन्दे हुए." ......(बौड़म)

प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में यहां वहां व्यंग का भी अच्छा पुट दिया है. देखिये—

"......चौधरी साहब के तीन सुयोग्य पुत्र थे. बड़े लड़के बितान एक सुशिक्षित मनुष्य थे. डाकिये के रजिस्टर पर दस्तख़त कर लेते थे......कभी कभी सिगरेट भी पीते, जिससे उनका गौरव बढ़ता था." (शंखनाद)

"......गांव के जमींदार पंडित उदयभानु पान्डे के दाने भूनने पड़ते उस दिन उसे भूखे ही सो रहना पड़ता था. पंडित जी उससे बेगार में दाने ही न भुनवाते थे, उसे उनके घर का पानी भी भरना पड़ता था और कभी-कभी इस हेतु से भी भाड़ बन्द रहता था. वह पन्डित जी के गांव में रहती थी, इसलिए उन्हें उससे सभी प्रकार की बेगार लेने का पूरा अधिकार था. इसे अन्याय नहीं कहा जा सकता. अन्याय केवल इतना था कि वह सूखी बेगार लेते थे. उनकी धारणा थी कि जब खाने ही को दिया गया, तो बेगार कैसी. किसान को पूरा अधिकार है कि बैलों को दिन भर जोतने के बाद शाम को खूंटे से भूखा बांध दे. यदि वह ऐसा नहीं करता, तो यह उसकी दयालुता नहीं है. केवल अपनी हितचिन्ता है. पन्डित जी को इसकी बहुत चिन्ता न थी क्योंकि एक तो भुनगी दो एक दिन भूखी रहने से मर नहीं सकती थी; और यदि दैवयोग से मर भी जाती, तो उसकी जगह दूसरा गोंड बड़ी आसानी से बसाया

ڈائریکٹر، میڈل، ایگریمنٹ، پالیسی، فارم، ہال، پبلک، منسٹر، لیگ، ڈیپوٹیشن، پریکٹس، اکیڈمی، بینکر، بجٹ، اِنچارج آدی

ایک یکے والے کی بھاشا دیکھئے—

"گھر کہاں ہے حضور؛ جہاں پڑ رہوں، وہیں گھر ہے. جب گھر تھا تب تھا. اب تو بے گھر، بے زر، بے در ہوں اور سب سے بڑی بات یہ ہے کہ بے پر ہوں. تقدیر نے پر کاٹ لئے. لنڈورا بنا کر چھوڑ دیا. میرے دادا نوابی میں چکلےدار تھے، حضور، سات ضلے کے مالک، جسے چاہیں توپ دم کر دیں، پھانسی پر لٹکا دیں، سورج نکلنے کے پہلے لاکھوں کی تھیلیاں نذر چڑھ جاتی تھیں حضور !......" (تگادا)

مسلمان پاتروں کے مکھ سے کیا سندر اور چلتی ہوئی اردو بلوائی ہے—

"......میں زندگی کو کچھ سمجھتا ہوں، پر مجھے اجازت نہیں ہے کہ پانچوں وقت کی نماز پڑھ سکوں. میرے والد ہیں. چچا ہیں. دونوں صاحب پہر رات سے پہر رات تک کام میں مصروف رہتے ہیں. رات دن حساب کتاب، نفع نقصان، مندی تیزی کے سوائے اور کوئی ذکر ہی نہیں ہوتا، گویا خدا کے بندے نہ ہوئے اس دولت کے بندے ہوئے."

......(بوڑم)

پریم چند نے اپنی رچناؤں میں یہاں وہاں ویَنگ کا بھی اچھا پٹ دیا ہے.

"......چودھری صاحب کے تین سیوگ پتر تھے. بڑے لڑکے بتان ایک سوشکشت منشیہ تھے. ڈاکئے کے رجسٹر پر دستخط کر لیتے تھے......کبھی کبھی سگریٹ بھی پیتے، جس سے ان کا گورو بڑھتا تھا." (شنکھ ناد)

"......گاؤں کے زمیندار پنڈت اُدئے بھان پانڈے کے دانے بھونے پڑتے اُس دن اُسے بھوکے ہی سو رہنا پڑتا تھا. پنڈت جی اُس سے بیگار میں دانے ہی نہ بھنواتے تھے، اُسے ان کے گھر کا پانی بھی بھرنا پڑتا تھا اور کبھی کبھی اِس ہیتو سے بھی بھاڑ بند رہتا تھا. وہ پنڈت جی کے گاؤں میں رہتی تھی، اس لئے انہیں اس سے سبھی پرکار کی بیگار لینے کا پورا ادھیکار تھا. اُسے انیائے نہیں کہا جاسکتا. انیائے کیول اتنا تھا کہ وہ سوکھی بیگار لیتے تھے. ان کی دھارنا تھی کہ جب کھانے ہی کو دیا گیا، تو بیگار کیسی؟ کسان کو پورا ادھیکار ہے کہ بیل کو دن بھر جوتنے کے بعد شام کو کھونٹے سے بھوکا باندھ دے. یدی یہ ایسا نہیں کرتا، تو یہ اُس کی دیالوتا نہیں ہے، کیول اپنی ہِت چنتا ہے. پنڈت جی کو اس کی بہت چنتا نہ تھی کیونکہ ایک تو بھنگی دو ایک دن بھوکی رہنے سے مر نہیں سکتی تھی؛ اور یدی دیویوگ سے مر بھی جاتی، تو اُس کی جگہ دوسرا گونڈ بڑی آسانی سے بسایا

प्रेमचन्द ने अपनी भाषा को "हिन्दुस्तानी" भाषा कहा है. श्रीमती शिवरानी प्रेमचन्द ने अपनी पुस्तक "प्रेमचन्द: घर में" में उनसे इस विषय में हुई बातचीत का इस प्रकार ब्यौरा दिया है. प्रेमचंद महात्मा गांधी से बातचीत कर वर्धा से लौटे थे. बोले—महात्मा गांधी हिन्दू-मुसलमानों की एकता चाहते हैं, तो मैं भी हिन्दी और उर्दू को मिला कर हिन्दुस्तानी बनाना चाहता हूं.

शिवरानी—आप कैसे बनाते हैं हिन्दुस्तानी ?

आप बोले—जो कुछ मैं लिखता हूं, वह हिन्दुस्तानी में लिखता हूं.

शिवरानी—तो आपके लिखने से हिन्दुस्तानी हो गई ?

आप बोले—जिसको हिन्दू मुसलमान दोनों मानें, जिसको आम जनता समझे, वह है हिन्दुस्तानी. और मेरा ख्याल है कि राष्ट्रभाषा जब कभी बनेगी, तो वह हिन्दी-उर्दू को मिलाकर.

प्रेमचंद जनता के साहित्यिक थे, जनता के लिए और जनता की ही भाषा में लिखते थे. स्वाभाविक रूप से गांव, क़सबे और शहर के लोग जिस भाषा को बोलते और समझते हैं, उसी भाषा में उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों में वार्तालाप बताया है. जिस प्रकार उन्होंने अपनी रचनाओं में साम्प्रदायिक भावना का विरोध किया है, वैसे ही अपनी भाषा को भी साम्प्रदायिक भावना से दूर रखा है. उनका हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं पर अधिकार था; किन्तु उन्होंने अपनी भाषा में फ़ारसी, अरबी या संस्कृत के भारी भरकम शब्दों को स्थान नहीं दिया. इससे उलटे गँवारू शब्दों और कहावतों को, जो कि जनता में व्याप्त हो हो गये हैं, उन्होंने बड़ी स्वाभाविकता और प्रेम से स्थान दिया है.

कुछ उदाहरण देखिये—"गोरू आते होंगे."

"सांझ की बेला है......(अलग्योझा).

"उसी बांह गहे की लाज तो निभा रहे हो." (घासवाली).

"लेखा जौ-जौ, बखसीस सौ-सौ". (सवा सेर गेहूं)

प्रेमचंद ने अनेक घरेलू और ठेठ शब्दों का भी उपयोग किया है. जैसे—जस (यश), हेठी, पहलौठी लड़का, बूढ़ी बातें, मुंह जोहेंगे, अठवारा, बरौठा, गोंई, अँतरे दिन, दोनों जून, बखा, रजा, हेटा, बौड़ा, मनावन, उड़कू हकनाहक, पुचकार, झक्कड़ (झक्की) आदि. खल्वाट, असनान-पूजा, चोंचाल, पुरवा, चरनी, पवित्तर ब्राह्मन, चमरवा, गोंई (बैल-जोड़ी), ताने-मेहने, थुक्का-फजीहत, नियाव (न्याय).

उन्होंने हिन्दी में चल-निकले अंग्रेजी शब्दों का भी काफ़ी प्रयोग किया है. जैसे—स्पीच, चार्ज, अपील, सेक्रेटरी, प्रोग्राम, वोटिंग, एजेंट; कौंसिल, फ़ीस, नोट, कम्पनी,

پریم چند نے اپنی بھاشا کو " ہندستانی " بھاشا کہا ہے . شریمتی شیورانی پریم چند نے اپنی پستک " پریم چند : گھر میں " میں اُن سے اُس وشے میں ہوئی بات چیت کا اِس پرکار بیورا دیا ہے . پریم چند مہاتما گاندھی سے بات چیت کر وردھا سے لوٹے تھے . بولے—مہاتما گاندھی ہندو مسلمانوں کی ایکتا چاہتے ہیں، تو میں بھی ہندی اور اردو کو ملا کر ہندستانی بنانا چاہتا ہوں .

شیورانی—آپ کیسے بناتے ہیں ہندستانی ؟

آپ بولے—جو کچھ میں لکھتا ہوں، وہ ہندستانی میں لکھتا ہوں .

شیورانی—تو آپ کے لکھنے سے ہندستانی ہوگئی؟

آپ بولے—جس کو ہندو مسلمان دونوں مانیں، جس کو عام جنتا سمجھے، وہ ہے ہندستانی . اور میرا خیال ہے کہ راشٹر بھاشا جب کبھی بنے گی، تو وہ ہندی اردو کو ملا کر .

پریم چند جنتا کے ساہتک تھے، جنتا کے لئے اور جنتا کی ہی بھاشا میں لکھتے تھے . سوابھاوک روپ سے گاؤں، قصبے اور شہر کے لوگ جس بھاشا کو بولتے اور سمجھتے ہیں، اُسی بھاشا میں اُنھوں نے اپنی کہانیوں اور اُپنیاسوں میں وارتالاپ بتایا ہے . جس پرکار اُنھوں نے اپنی رچناؤں میں سامپردائک بھاؤنا کا وِرودھ کیا ہے، ویسے ہی اپنی بھاشا کو بھی سامپردائک بھاؤنا سے دور رکھا ہے اور اِن کا ہندی اور اردو دونوں بھاشاؤں پر ادھیکار تھا؛ کنتو اُنھوں نے اپنی بھاشا میں فارسی، عربی یا سنسکرت کے بھاری بھرکم شبدوں کو استھان نہیں دیا . اِس سے اُلٹے گنوارو شبدوں اور کہاوتوں کو، جو کہ جنتا میں ویاپت ہوگئے ہیں، اُنھوں نے بڑی سوابھاوکتا اور پریم سے استھان دیا ہے .

کچھ اُداہرن دیکھئے—"گورو آتے ہونگے "

" سانجھ کی بیلا ہے . (الگیوجھا)

" اُسی بانہہ گہے کی لاج تو نبھا رہے ہو ." (گھاس والی).

" لیکھا جو جو، بخشیس سو سو ." (سواسیر گیہوں) .

پریم چند نے انیک گھریلو اور ٹھیٹھ شبدوں کا بھی اُپیوگ کیا ہے . جیسے—جس (یش)، ہیٹھی، پہلونٹھی لڑکا، بوڑھی باتیں، منہ جوہیں گے، اٹھوارا، بروٹھا، گوئی، انترے دن، دونوں جون، بکھا . رجا، ہیٹا، بوڑا، مناون، اُڑنکو، ہک ناحک، پچکار، جھکڑ (جھکی) آدی . کھلواٹ، اسنان پوجا، چونچال، پروا، چرنی، پوتر براہمن، چمروا، گوئیں (بیل جوڑی)، تانے مہنے، تھکا فضیحت، نیاؤ (نیائے) .

اُنھوں نے ہندی میں چل نکلے انگریزی شبدوں کا بھی کافی پریوگ کیا ہے (جیسے—اسپیچ، چارج، اپیل، سکریٹری، پروگرام، ووٹنگ، ایجنٹ، کونسل، فیس، نوٹ، کمپنی،

प्रेमचन्द की भाषा

राम किशोर 'पाशा'

प्रेमचन्द की रचनाओं की एक बड़ी खूबी यह है कि कम पढ़ी-लिखी साधारण जनता भी उन्हें पढ़कर समझ सकती है. उनकी भाषा में उर्दू और हिन्दी के प्रचलित शब्दों का उपयोग ही अधिक किया गया है, और कहावतें, मुहावरों का भी उपयुक्त स्थान पर उपयोग किया गया है. यह वह भाषा है जो उत्तर-भारत, बिहार, मध्यभारत, अजमेर-मारवाड़, विंध्य-प्रदेश, मध्यप्रदेश तथा राजपूताने के अधिकांश भागों में अधिकांशत: बोली या समझी जाती है. छोटे-छोटे और सरल वाक्यों में अपनी बात कह देना उनकी विशेषता है. अपनी रचनाओं में मानव-सम्बन्धों, प्रकृति, समाज, राजनीति आदि के बारे में कई जगह उन्होंने महत्वपूर्ण उक्तियां कही हैं, जो स्पष्ट ही उनके अनुभवों के आधार पर उनके दिमाग़ की उपज हैं. ये कथन चिरकाल तक के लिए सत्य हैं; मानव के सुख-दुखों के साथ लगे हुए हैं. जब तक मानव-समाज की स्थापना नये आदर्शों, नये मूल्यों पर नहीं होगी—जिसमें सबका भला, सब का उदय होगा—तब तक प्रेमचन्द की उक्तियां सच्ची बनी रहेंगी. कुछ उक्तियां दर्शन के और मानव-हृदय के रहस्यों को सरल व सीधे शब्दों में पाठकों के सामने खोल देने वाली हैं.

प्रेमचन्द ने जिस समय हिन्दी-साहित्य-क्षेत्र में प्रवेश किया था, उस समय हिन्दी भाषा बन रही थी. उसके प्राकृत रूप में तेज़ी के साथ परिवर्तन और सुधार हो रहे थे. नये नये प्रभाव हिन्दी पर पड़ रहे थे, उसका क्षेत्र बढ़ रहा था और उसे अपना कर्तव्य पूरा करने में कठिनाई प्रतीत हो रही थी.

प्रेमचन्द की प्रारंभिक रचनाओं में भाषा का एक अजीब सम्मिश्रण दिखाई पड़ता है—जोकि आगे आने वाली मिली जुली भाषा-शैली की सूचना देता है. यह शैली लोकप्रिय हुई और इसने हिन्दी भाषा के भावी विकास की राह दिखाई. हिन्दी-उर्दू की इस मिश्रित शैली को सन 1921 के आंदोलन से बल मिला, क्योंकि उस समय यह महसूस किया जाने लगा था कि जन-समाज के साथ साहित्य का संपर्क स्थापित करने के लिए ऐसी ही चलती हुई भाषा की आवश्यकता है. हिन्दी भाषा का क्षेत्र अब संकुचित न रहा और इस नव-युग का प्रतिनिधित्व प्रेमचन्द को मिला. वे ज्यों-ज्यों लिखते गये, त्यों-त्यों यह शैली अधिकाधिक परिमार्जित, सरल और स्वाभाविक होती गई.

پریم چند کی بھاشا

رام کشور 'پاشا'

پریم چند کی رچناؤں کی ایک بڑی خوبی یہ ہے کہ کم پڑھی لکھی سادھارن جنتا بھی انہیں پڑھ کر سمجھ سکتی ہے. اُن کی بھاشا میں اردو اور ہندی کے پرچلت شبدوں کا اُپیوگ ہی ادھک کیا گیا ہے' اور کہاوتیں' محاوروں کا بھی اُپیکت استھان پر اُپیوگ کیا گیا ہے. یہ وہ بھاشا ہے جو اُتر بھارت' بہار' مدھیہ بھارت' اجمیر مارواڑ' وندھیہ پردیش' مدھیہ پردیش تتھا راجپوتانہ کے ادھیکانش بھاگوں میں ادھیکانشتہ بولی یا سمجھی جاتی ہے. چھوٹے چھوٹے اور سرل واکیوں میں اپنی بات کہہ دینا ان کی وشیشتا ہے. اپنی رچناؤں میں مانو سمبندھوں' پرکرتی' سماج' راج نیتی آدی کے بارے میں کئی جگہ انہوں نے مہتو پورن اُکتیاں کہی ہیں' جو اسپشٹ ہی ان کے انوبھووں کے آدھار پر اِن کے دماغ کی اپج ہیں. یہ کتھن چرکال تک کے لئے ستیہ ہیں؛ مانو کے سکھ دکھوں کے ساتھ لگے ہوئے ہیں. جب تک مانو سماج کی استھاپنا نئے آدرشوں' نئے مولیوں پر نہیں ہوگی—جس میں سب کا بھلا' سب کا اُدے ہوگا—تب تک پریم چند کی اُکتیاں سچی بنی رہیں گی. کچھ اُکتیاں درشن کے اور مانو ہردیے کے رہسیوں کو سرل و سیدھے شبدوں میں پاٹھکوں کے سامنے کھول دینے والی ہیں.

پریم چند نے جس سمے ہندی ساہتیہ چھیتر میں پرویش کیا تھا' اُس سمے ہندی بھاشا بن رہی تھی. اِس کے پراکرت روپ میں تیزی کے ساتھ پریورتن اور سدھار ہو رہے تھے. نئے نئے پربھاؤ ہندی پر پڑ رہے تھے' اُس کا چھیتر بڑھ رہا تھا اور اُسے اپنا کرتویہ پورا کرنے میں کٹھنائی پرتیت ہو رہی تھی.

پریم چند کی پرارمبھک رچناؤں میں بھاشا کا ایک عجیب سمشرن دکھائی پڑتا ہے—جو کہ آگے آنے والی ملی جلی بھاشا شیلی کی سوچنا دیتا ہے. یہ شیلی لوک پریہ ہوئی اور اِس نے ہندی بھاشا کے بھاوی وکاس کی راہ دکھائی. ہندی اردو کی اِس مشرت شیلی کو سن 1921 کے آندولن سے بل ملا' کیونکہ اُس سمے یہ محسوس کیا جانے لگا تھا کہ جن سماج کے ساتھ ساہتیہ کا سمپرک استھاپت کرنے کے لئے ایسی ہی چلتی ہوئی بھاشا کی آوشیکتا ہے. ہندی بھاشا کا چھیتر اب سنکوچت نہ رہا اور اِس نویگ کا پرتندھتو پریم چند کو ملا. وے جیوں جیوں لکھتے گئے' تیوں تیوں یہ شیلی ادھیکادھک پریمارجت سرل اور سوابھاوک ہوتی گئی.

उसे पकड़ने की सब ने कोशिश की. उन्होंने उसे घेर लिया. लेकिन जितने लोग वहां बढ़ते जाते थे उतना ही उस भैंसे का क्रोध बढ़ता जाता था. अपने सींगों से उसने लोगों पर हमला किया. कई लोग घायल हुए फिर भी उसे क़ाबू में न ला सके.

ख़ुशक़िस्मती से उसी समय एक चरवाहा दौड़ता हुआ आया. लोगों ने देखा कि वह बिलकुल नौजवान है, लेकिन बड़े बूढ़ों की तरह बात करता है. उसने कहा—"तुम सब बुद्धू हो." पूरे आत्म विश्वास के साथ, जैसे कुछ हुआ ही न हो, वह मुस्कराता हुआ भैंसे की तरफ़ बढ़ा. एक मूठ घास उसके हाथ में थी पहले उसने सामने से उसे घास दिखाई. फिर पीछे जाकर उसके पुट्ठे पर हाथ फेरा. शीघ्र ही वह सीधा साधा बन गया. चरवाहा उसकी पीठ पर चढ़ गया और ख़ुशी से चिल्ला चिल्ला कर धीरे धीरे वह उसे घर हंका ले गया. लोगों ने इतमीनान का सांस लिया और शरमा कर स्वीकार किया—"यह सच है कि हम सब के सब बुद्धू थे!"

दूसरों को क़ाबू में करने के लिये जितने साधन हैं उनमें एक सब से असरदार ख़ुशामद है. मैं यह नहीं चाहता कि आप ख़ुशामद करना शुरू कर दें बल्कि कहने का मतलब यह है कि आप ख़ुद ख़ुशामद से बचे रहें.

اسے پکڑنے کی سب نے کوشش کی . انہوں نے اسے گھیر لیا . لیکن جتنے لوگ وہاں بڑھتے جاتے تھے اتنا ہی اس بھینسے کا کرودھ بڑھتا جاتا تھا . اپنے سینگوں سے اس نے لوگوں پر حملہ کیا . کئی لوگ گھائل ہوئے . پھر بھی اسے قابو میں نہ لاسکے .

خوش قسمتی سے اسی سمے ایک چرواہا دوڑتا ہوا آیا . لوگوں نے دیکھا کہ وہ بالکل نوجوان ہے' لیکن بڑے بوڑھوں کی طرح بات کرتا ہے. اس نے کہا—"تم سب بدھو ہو." پورے آتم وشواس کے ساتھ' جیسے کچھ ہوا ہی نہ ہو' وہ مسکراتا ہوا بھینسے کی طرف بڑھا . ایک موٹھ گھاس اس کے ہاتھ میں تھی . پہلے اس نے اسے گھاس دکھائی . پھر پیچھے جاکر اس کے پٹھے پر ہاتھ پھیرا . شیگھر ہی وہ سیدھا سادہ بن گیا . چرواہا اس کی پیٹھ پر چڑھ گیا اور خوشی سے چلا چلاکر دھیرے دھیرے وہ اسے گھر ہنکالے گیا . لوگوں نے اطمینان کا سانس لیا اور شرما کر سویکار کیا—"یہ سچ ہے کہ ہم سب کے سب بدھو تھے!"

دوسروں کو قابو میں کرنے کے جتنے سادھن ہیں ان میں ایک سب سے اثردار خوشامد ہے . میں یہ نہیں چاہتا کہ آپ خوشامد کرنا شروع کردیں بلکہ کہنے کا مطلب ہے یہ ہے کہ آپ خود خوشامد سے بچے رہیں .

जिस तरह बबूल के पेड़ पर आम नहीं लग सकते; मिर्च के पौधे पर गुलाब के फूल नहीं आ सकते; उसी तरह बुरे कामों का नतीजा कभी सुखकर नहीं हो सकता.

—अज्ञात

جس طرح ببول کے پیڑ پر آم نہیں لگ سکتے؛ مرچ کے پودھے پر گلاب کے پھول نہیں آسکتے؛ اسی طرح برے کاموں کا نتیجہ کبھی سکھ کر نہیں ہوسکتا .

—اگیات

इजाज़त न दे इसके लिये सांप ने एक क़ानून बनाया और खुद ख़रगोश के पास उसका ऐलान करने गया.

उसने कहा—"सुनो ! यदि बिना खटखटाए और इजाज़त लिये मैं तुम्हारे घर में घुस पड़ूं तो तुम्हें अधिकार है कि तुम मुझसे आकर शिकायत करो."

सांप ने इस क़ानून का ऐलान कर दिया, पर उसे शंका बनी रही कि ख़रगोश में क़ानून की इतनी समझ है या नहीं, और उसे यह भी डर था कि ख़रगोश इतनी जल्दी अपने में आत्म विश्वास पैदा कर सकेगा या नहीं. इसलिये उसने निश्चय किया कि वह ख़रगोश की परीक्षा ले.

जान बूझ कर बिना खटखटाए सांप तेज़ी से ख़रगोश के बिल में घुस पड़ा और एक बच्चे को काट खाया. फिर जल्दी ही बाहर निकल आया और दरवाज़े पर बैठकर इस बात की प्रतीक्षा करने लगा कि ख़रगोश आकर उससे शिकायत करे.

बहुत देर तक सांप राह जोहता रहा. ख़रगोश नहीं आया. हर मिनट सांप का ग़ुस्सा बढ़ रहा था. वह दोबारा ख़रगोश के घर में घुसा. वहां ख़रगोश उसे मिल गया. सांप ने उसे ख़ूब डांटा और कहा—"तुमने क़ानून का पालन क्यों नहीं किया ?"

ख़रगोश ने जवाब दिया—"महाशय ! आप मुझसे किस क़ानून का पालन चाहते हैं ? मैं किसकी किससे शिकायत करूं ?

सांप ने कहा—"मेरे ख़िलाफ़ मुझसे शिकायत न करने का साहस तुमने कैसे किया ?"

ख़रगोश ने जवाब दिया—"अभी आप ही मुजरिम थे और अब आप ही जज भी हैं. आप ही बताइये कि किस मुलज़िम को मैं पकड़ूं और किस जज से न्याय की अपील करूं ?"

सांप का ग़ुस्सा क़ाबू से बाहर हो गया. उसने फुंकारा और एक दफ़ा में ही सांप ख़रगोश को निगल गया.

ख़रगोश को हड़प करजाने के बाद सांप ने एक आम ऐलान किया—"जिस तरह से मैंने इस बार ख़रगोश को मारा है वह उन तरीक़ों से बिलकुल अलग है जिनसे मैं पहले ख़रगोशों को मारा करता था. इस बार क़ानून के अनुसार मैंने उसे मारा है. गिरफ़्तारी से लेकर सज़ा तक सारी कार्रवाई पूरे क़ानूनी ढंग से की गई है."

(5)

ग़ुस्सैल भैंसा और नौजवान चरवाहा

एक भैंसा अपने ग़ुस्से के लिये बदनाम था. एक दफ़ा भड़क जाने पर वह जो न कर डाले थोड़ा था. एक दिन वह सनक गया और रस्सी तुड़ाकर खेत में चारों तरफ़ पागल की तरह दौड़ने लगा. उसने फ़सल का सत्यानाश कर दिया.

اجازت نہ دے اس کے لئے سانپ نے ایک قانون بنایا اور خود خرگوش کے پاس اُس کا اعلان کرنے گیا.

اُس نے کہا—"سنو! یدی بنا کھٹکھٹائے اور اجازت لئے میں تمہارے گھر میں گھس پڑوں تو تمہیں ادھیکار ہے کہ تم مجھ سے آکر شکایت کرو."

سانپ نے اِس قانون کا اعلان کردیا. پر اُسے شنکا بنی رہی کہ خرگوش میں قانون کی اتنی سمجھ ہے یا نہیں' اور اُسے یہ بھی ڈر تھا کہ خرگوش اتنی جلدی اپنے میں آتم وشواس پیدا کرسکے گا یا نہیں. اِس لئے اُس نے نشچے کیا کہ وہ خرگوش کی پریکشا لے.

جان بوجھ کر بنا کھٹکھٹائے سانپ تیزی سے خرگوش کے بل میں گھس پڑا اور ایک بچے کو کاٹ کھایا. پھر جلدی ہی باہر نکل آیا اور دروازے پر بیٹھ کر اِس بات کی پرتیکشا کرنے لگا کہ خرگوش آکر اُس سے شکایت کرے.

بہت دیر تک سانپ راہ جوہتا رہا. خرگوش نہیں آیا. ہر منٹ سانپ کا غصہ بڑھ رہا تھا. وہ دوبارہ خرگوش کے گھر میں گھسا. وہاں خرگوش اُسے مل گیا. سانپ نے اُسے خوب ڈانٹا اور کہا—"تم نے قانون کا پالن کیوں نہیں کیا؟"

خرگوش نے جواب دیا—"مہاشے! آپ مجھ سے کس قانون کا پالن چاہتے ہیں؟ میں کس کی کس سے شکایت کروں؟"

سانپ نے کہا—"میرے خلاف مجھ سے شکایت نہ کرنے کا ساہس تم نے کیسے کیا؟"

خرگوش نے جواب دیا—"ابھی آپ ہی مجرم تھے اور اب آپ ہی جج بھی ہیں. آپ ہی بتائیے کہ کس ملزم کو میں پکڑوں اور کس جج سے نیائے کی اپیل کروں؟"

سانپ کا غصہ قابو سے باہر ہوگیا. اُس نے پھنکارا اور ایک دفعہ میں ہی سانپ خرگوش کو نگل گیا.

خرگوش کو ہڑپ کرجانے کے بعد سانپ نے ایک عام اعلان کیا—"جس طرح سے میں نے اِس بار خرگوش کو مارا ہے وہ اُن طریقوں سے بالکل الگ ہے جن سے میں پہلے خرگوشوں کو مارا کرتا تھا. اِس بار قانون کے انوسار میں نے اُسے مارا ہے. گرفتاری سے لیکر سزا تک ساری کارروائی پورے قانونی ڈھنگ سے کی گئی ہے."

(5)

غصیل بھینسا اور نوجوان چرواہا

ایک بھینسا اپنے غصے کے لئے بدنام تھا. ایک دفعہ بھڑک جانے پر وہ جو نہ کرڈالے تھوڑا تھا. ایک دن وہ سنک گیا اور رسی تڑاکر کھیت میں چاروں طرف پاگل کی طرح دوڑنے لگا. اُس نے فصل کا ستیاناس کردیا.

उस औरत ने कहा—"मैं आपका स्वागत करती हूं, अन्दर आजाइये. कभी कभार ही भद्र जन इधर आ निकलते हैं. ऐसे मेहमानों का सत्कार हमारे भाग्य में कहां !"

उसके घर पहुंच कर लोमड़ी और भेड़िये ने एक एक चूज़ा उड़ाया. बन्दर ने एक थाली भर कर छीमिया खाई, लेकिन उनकी तसल्ली नहीं हुई.

लोमड़ी और भेड़िये ने पूछा—"क्या आप के घर में कोई भेड़ भी है ? एक भेड़ चार चूज़ों के बराबर है."

बन्दर ने कहा—"क्या कुछ मूंगफली होंगी ? मुझे इसी तरह की सस्ती चीज़ें पसन्द हैं."

देहाती औरत ने कहा—"मेरे पास एक भेड़ भी है और मूंगफली भी हैं. आप लोग ख़ुशी से उन्हें ले सकते हैं."

लोमड़ी और भेड़िया मिल कर पूरी भेड़ खा गये. बन्दर ने आधी टोकरी मूंगफली साफ़ कर दी. बाक़ी आधी टोकरी उसने अपने झोले में उड़ेल ली. इस पर भी लोमड़ी और भेड़िये की तसल्ली नहीं हुई. वह बोले—"क्या कोई सूअर भी तुम्हारे पास है ? हम ज़रा मज़ा बदलना चाहते हैं."

बन्दर ने कहा—"कुछ चेस्ट नट हों तो लाओ."

देहातिन बोली—"मेरे पास एक सूअर है. उस पर ख़ूब चरबी लदी है ! मैं ख़ुद ही पूछने जा रही थी कि आप लोग उसका आनन्द लें. मेरे पास चेस्ट नट भी हैं."

लोमड़ी और भेड़िया मिलकर पूरा सूअर चट कर गए. चेस्ट नट बन्दर को बहुत अच्छे लगे. आधे वह खा गया और आधे उसने अपने झोले में डाल लिये. भेड़िये और लोमड़ी का पेट फिर भी नहीं भरा. इससे वह नाक भौं चढ़ा रहे थे. उन्होंने हुक्म दिया—"हमारे खाने के लिये अपनी गाय हाज़िर करो."

बन्दर ने कहा—"मेरे लिये कुछ अखरोट लाओ."

गाय लेने के लिये देहातिन गई और साथ में कुछ अखरोट भी लाई. लेकिन गाय चट कर जाने के बाद भी लोमड़ी और भेड़िये का पेट नहीं भरा. बन्दर ने भी कुछ और चीज़ें खाने की इच्छा प्रकट की.

उन्होंने पूछा—"अब इसके अलावा तुम्हारे पास और क्या क्या है ?"

देहातिन ने कहा—"मेरे पास एक चीज़ और बाक़ी है." उसके हाथ में लकड़ी फाड़ने की कुल्हाड़ी थी. उसका मज़ा भी उसने उन तीनों को चखा दिया.

भेड़िया, लोमड़ी और बन्दर देहातिन के घर से जिन्दा वापिस नहीं गए.

(4)

सांप और ख़रगोश

ख़रगोश अपने घर में आज़ादी से रह सके और कोई

اُس عورت نے کہا—" میں آپ کا سواگت کرتی ہوں، اندر آجائیے. کبھی کبھار ہی بھدرجن اِدھر آ نکلتے ہیں. ایسے مہمانوں کا ستکار ہمارے بھاگیہ میں کہاں !"

اُس کے گھر پہونچ کر لومڑی اور بھیڑیئے نے ایک ایک چوزہ اُڑایا. بندر نے ایک تھالی بھر کر چھیمیاں کھائیں، لیکن اُن کی تسلی نہیں ہوئی.

لومڑی اور بھیڑیئے نے پوچھا—" کیا آپ کے گھر میں کوئی بھیڑ بھی ہے ؟ ایک بھیڑ چار چوزوں کے برابر ہے."

بندر نے کہا—" کیا کچھ مونگ پھلی ہونگی ؟ مجھے اِسی طرح کی سستی چیزیں پسند ہیں."

دیہاتی عورت نے کہا—" میرے پاس ایک بھیڑ بھی ہے اور مونگ پھلی بھی ہیں آپ لوگ خوشی سے انہیں لے سکتے ہیں."

لومڑی اور بھیڑیا مل کر پوری بھیڑ کھا گئے. بندر نے آدھی ٹوکری مونگ پھلی صاف کر دیں. باقی آدھی ٹوکری اُس نے اپنے جھولے میں اُنڈیل لی. اِس پر بھی لومڑی اور بھیڑیئے کی تسلی نہیں ہوئی وہ بولے :

"کیا کوئی سور بھی تمہارے پاس ہے ؟ ذرا مزہ بدلنا چاہتے ہیں."

بندر نے کہا—"کچھ چسٹ نٹ ہوں تو لاؤ."

دیہاتن بولی—"میرے پاس ایک سور ہے. اُس پر خوب چربی لدی ہے ! میں خود ہی پوچھنے جا رہی تھی کہ آپ لوگ اُس کا آنند لیں. میرے پاس چسٹ نٹ بھی ہیں."

لومڑی اور بھیڑیا مل کر پورا سور چٹ کر گئے. چسٹ نٹ بندر کو بہت اچھے لگے. آدھے وہ کھا گیا اور آدھے اُس نے اپنے جھولے میں ڈال لئے. بھیڑیئے اور لومڑی کا پیٹ پھر بھی نہیں بھرا. اِس سے وہ ناک بھوں چڑھا رہے تھے. اُنہوں نے حکم دیا—"ہمارے کھانے کے لئے اپنی گائے حاضر کرو."

بندر نے کہا—"میرے لئے کچھ اخروٹ لاؤ."

گائے لینے کے لئے دیہاتن گئی اور ساتھ میں کچھ اخروٹ بھی لائی. لیکن گائے چٹ کر جانے کے بعد بھی لومڑی اور بھیڑیئے کا پیٹ نہیں بھرا. بندر نے بھی کچھ اور چیزیں کھانے کی اِچھا پرگٹ کی.

اُنہوں نے پوچھا—"اب اِس کے علاوہ تمہارے پاس اور کیا ہے ؟"

دیہاتن نے کہا—"میرے پاس ایک چیز اور باقی ہے." اُس کے ہاتھ میں لکڑی پھاڑنے کی کلہاڑی تھی. اُس کا مزا بھی اُس نے اُن تینوں کو چکھا دیا.

بھیڑیا، لومڑی اور بندر دیہاتن کے گھر سے زندہ واپس نہیں گئے.

(4)

سانپ اور خرگوش

خرگوش اپنے گھر میں آزادی سے رہ سکے اور کوئی

लेकिन मासूम बछड़ा अपनी मां से बहुत प्रेम करता था. उस ने सर हिलाया और कहा—"नहीं मां ! मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा. तुम्हें कष्ट झेलना पड़ेगा. मां, मुझे इसी तरह अपने पीछे चलने दो. मुझे विश्वास है कि मुझे देख देखकर तुम दुख के भार को कम महसूस करोगी."

उसकी मां बहुत खुश हुई और उसने उसे साथ रहने की इजाज़त दे दी. लेकिन बार बार गाय उसे ताकती रही. गाय को डर था कि कहीं बछड़ा गिर न पड़े, या बहुत तेज़ न दौड़ने लगे, या पीछे न छूट जाय. इसलिये वह तेज़ न चल सकी और हमेशा के मुक़ाबले में काम में ढिलाई हुई. किसान इससे बहुत असन्तुष्ट हुआ और तेज़ चलाने के लिये वह बार बार उसे मारता था. इस तरह पहले से कहीं ज्यादा गाय को मार खानी पड़ी. आखिर उसने फिर बछड़े से कहा—"मेरे लाडले बेटे ! अगर तुझे सचमुच अपनी मां से प्यार है तो तू यहां से चला जा ताकि मुझे इतनी मार न खानी पड़े. तेरी वजह से जितनी ज्यादा मार मुझ पर पड़ी है उसकी गिनती नहीं हो सकती !"

दोस्तो ! जज़बात यानी भावनाओं के बहुत से बेकार रूप हैं. वह रूप हमें बहुत प्यारे हो सकते हैं लेकिन उनसे पीछा छुड़ाना हमारे लिये बहुत अच्छा है.

(3)

भेड़िया, लोमड़ी, बन्दर और एक देहातिन

एक भेड़िये और एक लोमड़ी ने दो ऊंचे सरकारी अफ़सरों का रूप धारण किया और एक बन्दर वर्दी पहन कर उनका अरदली बन गया. लोगों में अभी तक पुरानी नेक आदतें हैं या नहीं, यह देखने के लिये तीनों एक साथ चल पड़े.

मुश्किल से अभी उन्होंने जंगल छोड़ा होगा कि घाटी में उन्हें एक देहातिन दिखाई पड़ी. भेड़िये ने कहा—"हमें अपनी जांच पड़ताल शुरू कर देनी चाहिये. मैं पूरे विश्वास से कह सकता हूं कि यह औरत ईमानदार है. यह हमें धोका नहीं देगी."

लोमड़ी बोली—"जब कभी मैं लेख लिखती हूं तो सदा इस बात पर ज़ोर देती हूं कि ईमानदारी एक ऐसा गुण है जिसका हर किसी में होना बहुत ज़रूरी है."

बन्दर ने आवाज़ लगाई—"बहुत खूब ! बहुत खूब !"

भेड़िया और बन्दर आगे बढ़े और बोले—"ऐ नेक महिला ! क्या तुम्हारे घर में मुर्ग़ी के बच्चे हैं ? अधिक मात्रा में हमें उनकी ज़रूरत नहीं है, बस हममें हर एक को एक एक चूज़ा दे दो."

बन्दर ने कहा—"मैं शाकाहारी हूं. थोड़ी सी फलियों से मेरा काम चल जायेगा."

لیکن معصوم بچھڑا اپنی ماں سے بہت پریم کرتا تھا۔ اس نے سر ہلایا اور کہا—"نہیں ماں! میں تمہیں نہیں چھوڑوں گا۔ تمہیں کشٹ جھیلنا پڑے گا۔ ماں، مجھے اسی طرح اپنے پیچھے چلنے دو۔ مجھے وشواس ہے کہ مجھے دیکھ دیکھ کر تم دکھ کے بھار کو کم محسوس کروگی۔"

اس کی ماں بہت خوش ہوئی اور اس نے اسے ساتھ رہنے کی اجازت دے دی۔ لیکن بار بار گائے اسے تاکتی رہی۔ گائے کو ڈر تھا کہ کہیں بچھڑا گر نہ پڑے، یا بہت تیز نہ دوڑنے لگے، یا پیچھے نہ چھوٹ جائے۔ اس لئے وہ تیز نہ چل سکی اور ہمیشہ کے مقابلے میں کام میں ڈھلائی ہوئی۔ کسان اس سے بہت اسنتشٹ ہوا اور تیز چلانے کے لئے وہ بار بار اسے مارتا تھا۔ اس طرح پہلے سے کہیں زیادہ گائے کو مار کھانی پڑی۔ آخر اس نے پھر بچھڑے سے کہا:—"میرے لاڈلے بیٹے! اگر تجھے سچ مچ اپنی ماں سے پیار ہے تو تو یہاں سے چلا جا تاکہ مجھے اتنی مار نہ کھانی پڑے۔ تیری وجہ سے جتنی زیادہ مار مجھ پر پڑی ہے اس کی گنتی نہیں ہو سکتی!"

دوستو! جذبات یعنی بھاؤناؤں کے بہت سے بیکار روپ ہیں۔ وہ روپ ہمیں بہت پیارے ہو سکتے ہیں لیکن ان سے پیچھا چھڑانا ہمارے لئے بہت اچھا ہے۔

(3)

بھیڑیا، لومڑی، بندر اور ایک دیہاتن

ایک بھیڑئیے اور ایک لومڑی نے دو اونچے سرکاری افسروں کا روپ دھارن کیا اور ایک بندر وردی پہن کر ان کا اردلی بن گیا۔ لوگوں میں ابھی تک پرانی نیک عادتیں ہیں یا نہیں، یہ دیکھنے کے لئے تینوں ایک ساتھ چل پڑے۔

مشکل سے ابھی انہوں نے جنگل چھوڑا ہوگا کہ گھاٹی میں انہیں ایک دیہاتن دکھائی پڑی۔ بھیڑئیے نے کہا—"ہمیں اپنی جانچ پڑتال شروع کر دینی چاہئے۔ میں پورے وشواس سے کہہ سکتا ہوں کہ یہ عورت ایماندار ہے۔ یہ ہمیں دھوکا نہیں دے گی۔"

لومڑی بولی—"جب کبھی میں لیکھ لکھتی ہوں تو سدا اس بات پر زور دیتی ہوں کہ ایمانداری ایک ایسا گن ہے جس کا ہر کسی میں ہونا بہت ضروری ہے۔"

بندر نے آواز لگائی..."بہت خوب! بہت خوب!"

بھیڑیا اور بندر آگے بڑھے اور بولے—"اے نیک مہیلا! کیا تمہارے گھر میں مرغی کے بچے ہیں؟ ادھک ماترا میں ہمیں ان کی ضرورت نہیں ہے، بس ہم میں ہر ایک کو ایک ایک چوزہ دے دو۔"

بندر نے کہا—"میں شاکاہاری ہوں۔ تھوڑی سی پھلیوں سے میرا کام چل جائے گا۔"

आजकल की कुछ छोटी चीनी कहानियां

آجکل کی کچھ چھوٹی چینی کہانیاں

अनुवादक – मुजीब रिज़वी

(1)

गाय और उसकी रस्सी

एक आदमी के घर एक गाय और एक कुत्ता दोनों पले हुए थे. एक दिन उन्होंने सलाह की कि शाम का दोनों इकट्ठे घर से भाग निकलें. उनका विचार था कि बहुत दूर पहाड़ों में चले जायें और वहां आज़ादी से रहें.

समझौते के अनुसार शाम को कुत्ता आया और अपने तेज़ दांतों से जल्दी जल्दी उसने रस्सी के उस हिस्से को काटना शुरू किया जो गाय के नथने में बंधा हुआ था. लेकिन गाय ने उसे फ़ौरन रोक दिया और बोली—"यहां से मेरी रस्सी न काटो. इसके बजाय खूंटे से इसे खोल दो, क्योंकि यह बहुत अच्छी रस्सी है. मेरे पास कोई दूसरी सम्पत्ति नहीं है. मैं इस रस्सी को साथ ले जाना चाहती हूं." जैसा गाय ने चाहा वैसा ही कुत्ते ने किया और खूंटे से रस्सी खोलने की कोशिश शुरू कर दी ताकि रस्सी गाय के नथने में बंधी लटकती रहे और वह उसे अपने साथ ले जा सके. फिर दोनों दरवाज़े की तरफ़ झपटे और साथ साथ भाग निकले.

कुत्ता काफ़ी दूर निकल गया, लेकिन गाय की रस्सी सड़क के किनारे के एक पत्थर से अटक गई और गाय को बीच में ही रुक जाना पड़ा. मालिक दोनों का पीछा कर रहा था. गाय को पकड़ना उसके लिये आसान हो गया, और वह उसे पकड़ कर घर वापिस ले गया.

गाय ने अब मन ही मन कहा—"मेरा एक ही दोष था कि मैं इस रस्सी को साथ रखना चाहती थी. सम्पत्ति से चिपटने के कारण ही मेरे सारे किये कराए पर पानी फिर गया."

(2)

गाय और उसका बछड़ा

बसन्त के एक सुहावने दिन एक किसान अपनी गाय को हल जोतने के लिये खेत में ले गया. पीछे पीछे भकरता हुआ गाय का बछड़ा भी चला आया. जब गाय हल में जुत गई और काम शुरू करने का समय आया तो उसने बछड़े से कहा—"जा मेरे मुन्ने ! जा. पास वाली चरागाह में जाकर कुलेल कर."

انوادک—مجیب رضوی

(1)

گائے اور اُس کی رسی

ایک آدمی کے گھر ایک گائے اور ایک کتا دونوں پلے ہوئے تھے . ایک دن اُنہوں نے صلاح کی کہ شام کو دونوں اکٹھے گھر سے بھاگ نکلیں . اُن کا وچار تھا کہ بہت دور پہاڑوں میں چلے جائیں اور وہاں آزادی سے رہیں .

سمجھوتے کے انوسار شام کو کتا آیا اور اپنے تیز دانتوں سے جلدی جلدی اُس نے رسی کے اُس حصے کو کاٹنا شروع کیا جو گائے کے نتھنے میں بندھا ہوا تھا . لیکن گائے نے اُسے فوراً روک دیا اور بولی—" یہاں سے میری رسی نہ کاٹو . اِس کے بجائے کھونٹے سے اِسے کھول دو' کیونکہ یہ بہت اچھی رسی ہے . میرے پاس کوئی دوسری سمپتی نہیں ہے. میں اِس رسی کو ساتھ لے جانا چاہتی ہوں ." جیسا گائے نے چاہا ویسا ہی کتے نے کیا اور کھونٹے سے رسی کھولنے کی کوشش شروع کر دی' تاکہ رسی گائے کے نتھنے میں بندھی لٹکتی رہے اور وہ اُسے اپنے ساتھ لے جا سکے . پھر دونوں دروازے کی طرف جھپٹے اور ساتھ ساتھ بھاگ نکلے .

کتا کافی دور نکل گیا' لیکن گائے کی رسی سڑک کے کنارے کے ایک پتھر سے اٹک گئی اور گائے کو بیچ میں ہی رک جانا پڑا . مالک دونوں کا پیچھا کر رہا تھا . گائے کو پکڑنا اُس کے لئے آسان ہوگیا' اور وہ اُسے پکڑ کر گھر واپس لے گیا .

گائے نے اب من ہی من کہا—" میرا ایک ہی دوش تھا کہ میں اِس رسی کو ساتھ رکھنا چاہتی تھی . سمپتی سے چپٹنے کے کارن ہی میرے سارے کئے کرائے پر پانی پھر گیا ."

(2)

گائے اور اُس کا بچھڑا

بسنت کے ایک سہاونے دن ایک کسان اپنی گائے کو ہل جوتنے کے لئے کھیت میں لے گیا . پیچھے پیچھے پھدکتا ہوا گائے کا بچھڑا بھی چلا آیا . جب گائے ہل میں جت گئی اور کام شروع کرنے کا سمے آیا تو اُس نے بچھڑے سے کہا—" جا میرے منے ! جا . پاس والی چراگاہ میں جا کر کلیل کر ."

पैग़म्बर से लोगों ने पूछा—"किस चीज़ का दान आपको सब से अधिक पसन्द है ?" उन्होंने जवाब दिया—"पानी का."

(इब्ने मुसय्यब, अबूदाऊद)

❀ ❀ ❀

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"ख़ैरात देकर तुम्हें ख़ुश होना चाहिये, क्योंकि मुसीबत ख़ैरात की दीवार को कभी नहीं फाँदती."

(अली, रज़ीन)

❀ ❀ ❀

मुहम्मद साहब ने कहा कि—"जो आदमी तुम से मांगता है, चाहे वह घोड़े पर ही सवार होकर क्यो न आया हो, उसकी बात को तुम सुनो क्योंकि इसका उसे हक़ है."

(अली, अबूदाऊद)

❀ ❀ ❀

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"जब ख़ुदा ने ज़मीन बनाई तो वह हिल रही थी और कांप रही थी. तब ख़ुदा ने उस पर अटल पहाड़ पैदा कर दिये और ज़मीन स्थिर हो गई. पहाड़ की ताक़त से फ़रिश्ते चकित रह गये और बोले—'ऐ मालिक ! क्या तूने पहाड़ से भी अधिक शक्ति वाली कोई चीज़ पैदा की है ?' अल्लाह ने जवाब दिया—'हां, लोहा, क्योंकि वह पहाड़ को तोड़ डालता है.' फ़रिश्तों ने कहा—'क्या तूने लोहे से भी अधिक मज़बूत कोई चीज़ पैदा की है ?' ख़ुदा ने कहा—'हां, आग, क्योंकि वह लोहे को गला देती है.' उन्होंने फिर पूछा—'क्या तूने आग से भी अधिक शक्ति वाली कोई चीज़ पैदा की है ?' ख़ुदा ने कहा—'हां ! पानी, क्योंकि वह आग को ठन्डा कर देता है.' फ़रिश्तों ने पूछा—'क्या पानी से भी अधिक शक्ति वाली कोई चीज़ तूने पैदा की है ?' ख़ुदा ने कहा—'हां ! हवा, क्योंकि वह पानी में बहाव पैदा कर देती है.' उन लोगों ने पूछा—'क्या तूने हवा से भी अधिक शक्ति वाली कोई चीज़ पैदा की है ?' ख़ुदा ने कहा—'हां, इनसान, उस समय हवा से भी अधिक शक्तिशाली होता है जब वह दाहने हाथ से ख़ैरात देता है और अपने बाएं हाथ को ख़बर तक नहीं होने देता."

(अनस, तिरमिज़ी)

❀ ❀ ❀

پیغمبر سے لوگوں نے پوچھا—" کس چیز کا دان آپ کو سب سے ادھک پسند ہے؟" انہوں نے جواب دیا—"پانی کا."

(ابن مسیب، ابوداؤد)

❀ ❀ ❀

محمد صاحب نے کہا کہ :—" خیرات دے کر تمہیں خوش ہونا چاہئے، کیونکہ مصیبت خیرات کی دیوار کو کبھی نہیں پھاندتی."

(علی، رزین)

❀ ❀ ❀

محمد صاحب نے کہا کہ :—" جو آدمی تم سے مانگتا ہے، چاہے وہ گھوڑے پر ہی سوار ہو کر کیوں نہ آیا ہو، اس کی بات کو تم سنو کیونکہ اس کا اسے حق ہے."

(علی، ابوداؤد)

❀ ❀ ❀

محمد صاحب نے کہا کہ :—" جب خدا نے زمین بنائی تو وہ ہل رہی تھی اور کانپ رہی تھی. تب خدا نے اس پر اٹل پہاڑ پیدا کر دیئے اور زمین استھر ہو گئی. پہاڑ کی طاقت سے فرشتے چکت رہ گئے اور بولے—"اے مالک ! کیا تو نے پہاڑ سے بھی ادھک شکتی والی کوئی چیز پیدا کی ہے؟' اللہ نے جواب دیا—' ہاں، لوہا، کیونکہ وہ پہاڑ کو توڑ ڈالتا ہے.' فرشتوں نے کہا—' کیا تو نے لوہے سے بھی ادھک مضبوط کوئی چیز پیدا کی ہے؟' خدا نے کہا—'ہاں، آگ، کیونکہ وہ لوہے کو گلا دیتی ہے.' انہوں نے پھر پوچھا—' کیا تو نے آگ سے بھی ادھک شکتی والی کوئی چیز پیدا کی ہے؟' خدا نے کہا—' ہاں پانی، کیونکہ وہ آگ کو ٹھنڈا کر دیتا ہے.' فرشتوں نے پوچھا—' کیا پانی سے بھی ادھک شکتی والی کوئی چیز تو نے پیدا کی ہے؟' خدا نے کہا—'ہاں، ہوا، کیونکہ وہ پانی میں بہاؤ پیدا کر دیتی ہے.' ان لوگوں نے پوچھا—' کیا تو نے ہوا سے بھی ادھک شکتی والی کوئی چیز پیدا کی ہے؟' خدا نے کہا—'ہاں، انسان، اس سمے ہوا سے بھی ادھک شکتی شالی ہوتا ہے جب وہ داہنے ہاتھ سے خیرات دیتا ہے اور بائیں ہاتھ کو خبر تک نہیں ہونے دیتا."

(انس، ترمذی)

❀ ❀ ❀

"इन साधनों का ख़ैरात करना सब से अच्छा है जिन से ग़रीबों की रोज़ी चलती है; यह ख़ैरात तुम्हें उससे शुरू करनी चाहिये जो तुम्हारे रिश्तेदारों में से हो."

(अबू हुरैरा, अबू दाऊद)

❀ ❀ ❀

पैग़म्बर से लोगों ने पूछा कि :—सब से अच्छी ख़ैरात कौन सी है ?" मुहम्मद साहब ने कहा :—"उस समय ख़ैरात करना सब से अच्छा है जब तुम तन्दुरुस्त हो और धन को चिपटना चाहते हो, जब तुम धनी बनने के अभिलाषी हो और ग़रीबी से डर रहे हो; ख़ैरात करने का काम उस समय के लिये उठा न रक्खो जब तुम दम तोड़ रहे हो और तुम्हें यह कहना पड़े कि—फ़लां फ़लां आदमियों के लिये मैं यह छोड़े जा रहा हूं; जबकि बहुत पहले ही फ़लां फ़लां आदमी उसके हक़दार हो चुके हैं !"

(अबू हुरैरा, बुख़ारी, मुसलिम, अबू दाऊद, निसाई)

❀ ❀ ❀

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"ज़िन्दगी में एक दिरम ख़ैरात करना मौत के समय सौ दिरम ख़ैरात करने से कहीं बेहतर है."

(अबू सईद, अबू दाऊद)

❀ ❀ ❀

मुहम्मद साहब ने कहा है कि :—"अगर कोई मुसलिम किसी दूसरे मुसलिम को कपड़ा पैहनाता है तो जब तक उस कपड़े का कोई भी हिस्सा उसके बदन पर रहता है तब तक कपड़ा पहनाने वाले की अल्लाह हिफ़ाज़त करता है."

(इब्ने अब्बास, तिरमिज़ी)

❀ ❀ ❀

किसी आदमी ने कहा कि :—"ऐ अल्लाह के रसूल ! मेरी मां मर गई है; अगर मैं उसके लिये ख़ैरात दूं तो क्या उसे फ़ायदा होगा ?" पैग़म्बर ने कहा—"हां." उस आदमी ने कहा कि :—"मेरे पास एक बाग़ है, और आपको गवाह बना कर मैं उसे ख़ैरात करता हूं ताकि उसका सवाब मेरी मां को मिले."

(इब्ने अब्बास, बुख़ारी, तिरमिज़ी, अबू दाऊद, निसाई)

❀ ❀ ❀

मैंने कहा कि :—"ऐ अल्लाह के रसूल ! मेरी मां मर गई है, उसके लिये सब से अच्छा दान कौन सा होगा ?" पैग़म्बर ने कहा—"रेगिस्तान की भयानक गरमी की याद करके पानी दान करना सब से अच्छी ख़ैरात है."

(साद बिन उबैदा, अबूदाऊद, निसाई)

❀ ❀ ❀

"اُن سادھنوں کا خیرات کرنا سب سے اچھا ہے جن سے غریبوں کی روزی چلتی ہے؛ یہ خیرات تمہیں اُس سے شروع کرنی چاہئے جو تمہارے رشتہداروں میں سے ہو."

(ابوہریرہ، ابوداؤد)

❀ ❀ ❀

پیغمبر سے لوگوں نے پوچھا کہ :—" سب سے اچھی خیرات کون سی ہے؟ "محمد صاحب نے کہا :—"اُس سمے خیرات کرنا سب سے اچھا ہے جب تم تندرست ہو اور دھن کو چپٹنا چاہتے ہو، جب تم دھنی بننے کے ابھلاشی ہو اور غریبی سے ڈر رہے ہو؛ خیرات کرنے کا کام اُس سمے کے لئے اُٹھا نہ رکھو جب تم دم توڑ رہے ہو اور تمہیں یہ کہنا پڑے کہ—فلاں فلاں آدمیوں کے لئے میں یہ چھوڑے جا رہا ہوں؛ جبکہ بہت پہلے ہی فلاں فلاں آدمی اُس کے حقدار ہوچکے ہیں !"

(ابوہریرہ، بخاری، مسلم، ابوداؤد، نسائی)

❀ ❀ ❀

محمد صاحب نے کہا کہ :—" زندگی میں ایک درم خیرات کرنا موت کے سمے سو درم خیرات کرنے سے کہیں بہتر ہے ."

(ابوسعید، ابوداؤد)

❀ ❀ ❀

محمد صاحب نے کہا کہ :—" اگر کوئی مسلم کسی دوسرے مسلم کو کپڑا پہناتا ہے تو جب تک اُس کپڑے کا کوئی بھی حصہ اُس کے بدن پر رہتا ہے تب تک کپڑا پہنانے والے کی اللہ حفاظت کرتا ہے ."

(ابن عباس، ترمذی)

❀ ❀ ❀

کسی آدمی نے کہا کہ :—" اے اللہ کے رسول ! میری ماں مر گئی ہے؛ اگر میں اُس کے لئے خیرات دوں تو کیا اُسے فائدہ ہوگا ؟" پیغمبر نے کہا—" ہاں ." اُس آدمی نے کہا کہ :—"میرے پاس ایک باغ ہے، اور آپ کو گواہ بنا کر میں اُسے خیرات کرتا ہوں تاکہ اِس کا ثواب میری ماں کو ملے ."

(ابن عباس، بخاری، ترمذی، ابوداؤد، نسائی)

❀ ❀ ❀

میں نے کہا کہ :—" اے اللہ کے رسول ! میری ماں مر گئی ہے . اُس کے لئے سب سے اچھا دان کونسا ہوگا ؟" پیغمبر نے کہا—" ریگستان کی بھیانک گرمی کی یاد کر کے پانی دان کرنا سب سے اچھی خیرات ہے ."

(سعید بن عبیدہ، ابوداؤد، نسائی)

❀ ❀ ❀

यह है कि तुम्हारे हर अमल का नेक बदला भगवान तुम्हें जरूर देगा."

(अबू सईद, बुखारी, मुसलिम, अबूदाऊद, निसाई)

❁ ❁ ❁

मुहम्मद साहब ने कहा कि:-खुदा कहता है कि "तुम खैरात में खर्च करो और मैं तुम को और दूगा." खुदा के दोनों हाथ धन से भरे हैं, दिन रात खर्च करने पर भी उसके धन में कोई कमी नहीं आती, कभी तुमने इस पर सोचा है? जब से उस ने जमीन और आसमान को बनाया है तब से उसने कितना खर्च किया होगा? फिर भी असलियत यह है कि जो कुछ खुदा के हाथ में है उसपर कोई असर नहीं पड़ा."

(अबुहुरैरा, बुखारी, मुसलिम, तिरमिज़ी)

❁ ❁ ❁

मुहम्मद साहब ने एक बार कहा :—"अल्लाह तुम से कहता है कि ऐ आदम की औलाद! तुम्हारी जरूरत से ज्यादा जो धन तुम्हारे पास है उसे अपने हाथ से दूसरों को दे डालना तुम्हारे लिये बेहतर होगा, और उस धन को अपने पास रखना तुम्हारे लिये बुरा है अगर खाने पीने के लिये तुम्हें जरूरत भर मिल जाता है तो वह तुम्हारे लिये काफी है;-देते समय उस आदमी से शुरू करो जो तुम्हारा रिश्तेदार है."

(अबू उमैया, मुसलिम, तिरमिज़ी)

❁ ❁ ❁

किसी ने कहा—"ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे पास एक दीनार है." पैग़म्बर ने कहा—"तो उसे अपने ऊपर खर्च कर डालो." उस आदमी ने कहा—"मेरे पास इसके अलावा एक दीनार और है." पैग़म्बर ने कहा—"उसे अपने बच्चों को दे दो." उसने फिर कहा—"मेरे पास एक दीनार और भी है." मुहम्मद साहब ने कहा :—"उसे अपनी बीवी को दे दो." उसने कहा :—मेरे पास अभी एक और दीनार है." पैग़म्बर ने कहा :—"उसे उन लोगों को दे दो जो तुम्हारे सहारे हैं." उस आदमी ने कहा—"मेरे पास फिर भी एक दीनार बचता है." पैग़म्बर ने कहा—"अब जिसे तुम ठीक समझो यह दीनार उसे दे दो."

(अबू हुरैरा, अबू दाऊद, निसाई)

❁ ❁ ❁

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"खैरात से खुदा का गुस्सा ठन्डा हो जाता है."

(अबू हुरैरा, तिरमिज़ी)

❁ ❁ ❁

पैग़म्बर से किसी ने पूछा कि :—"किस तरह की खैरात अच्छी होती है?" मुहम्मद साहब ने जवाब दिया :—

یہ ہے کہ تمہارے ہر عمل کا نیک بدلہ بھگوان تمہیں ضرور دے گا.

(ابو سعید، بخاری، مسلم، ابوداؤد، نسائی)

❁ ❁ ❁

محمد صاحب نے کہا کہ :—"خدا کہتا ہے کہ " تم خیرات میں خرچ کرو اور میں تم کو اور دونگا - خدا کے دونوں ہاتھ دھن سے بھرے ہیں، دن رات خرچ کرنے پر بھی اُس کے دھن میں کوئی کمی نہیں آتی، کبھی تم نے اِس پر سوچا ہے؟ جب سے اُس نے زمین اور آسمان کو بنایا ہے تب سے اُس نے کتنا خرچ کیا ہوگا؟ پھر بھی اصلیت یہ ہے کہ جو کچھ خدا کے ہاتھ میں ہے اُس پر کوئی اثر نہیں پڑا."

(ابو ہریرہ، بخاری، مسلم، ترمذی)

❁ ❁ ❁

محمد صاحب نے ایک بار کہا :—"اللہ تم سے کہتا ہے کہ اے آدم کی اولاد! تمہاری ضرورت سے زیادہ جو دھن تمہارے پاس ہے اُسے اپنے ہاتھ سے دوسروں کو دے ڈالنا تمہارے لئے بہتر ہوگا، اور اُس دھن کو اپنے پاس رکھنا تمہارے لئے برا ہے! اگر کھانے پینے کے لئے تمہیں ضرورت بھر مل جاتا ہے تو وہ تمہارے لئے کافی ہے:—دیتے سمے اُس آدمی سے شروع کرو جو تمہارا رشتہ دار ہے."

(ابو اُمیہ، مسلم ترمذی)

❁ ❁ ❁

کسی نے کہا—" اے اللہ کے رسول! میرے پاس ایک دینار ہے." پیغمبر نے کہا—" تو اُسے اپنے اوپر خرچ کر ڈالو." اُس آدمی نے کہا—"میرے پاس اِس کے علاوہ ایک دینار اور ہے." پیغمبر نے کہا :—" اُسے اپنے بچوں کو دے دو." اُس نے پھر کہا—" میرے پاس ایک دینار اور بھی ہے." محمد صاحب نے کہا :—" اُسے اپنی بیوی کو دے دو " اُس نے کہا :—" میرے پاس ابھی ایک اور دینار ہے." پیغمبر نے کہا—" اُسے اُن لوگوں کو دے دو جو تمہارے سہارے ہیں " اُس آدمی نے کہا :—" میرے پاس پھر بھی ایک دینار بچتا ہے." پیغمبر نے کہا—" اب جسے تم ٹھیک سمجھو یہ دینار اُسے دے دو."

(ابوہریرہ، ابوداؤد، نسائی)

❁ ❁ ❁

محمد صاحب نے کہا کہ :—" خیرات سے خدا کا غصہ ٹھنڈا ہوجاتا ہے."

(ابوہریرہ، ترمذی)

❁ ❁ ❁

پیغمبر سے کسی نے پوچھا کہ :—" کس طرح کی خیرات اچھی ہوتی ہے؟" محمد صاحب نے جواب دیا :—

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"हर उस दिन के लिये जब सूरज निकलता है आदमी के जोड़ जोड़ पर जो चीज़ फ़र्ज़ की गई है वह ख़ैरात है; दो आदमियों के बीच इनसाफ़ करना ख़ैरात है; अपने जानवर पर सामान लादने वाले की सहायता करना ख़ैरात है; सामान लादना या किसी आदमी को उसका सामान उठाकर देना ख़ैरात है; मीठी और प्यारी बात कहना ख़ैरात है; ईश्वर से प्रार्थना करने के लिये जितने क़दम उठते हैं वह सब ख़ैरात हैं; चोट पहुंचाने वाली चीज़ों को सड़क पर से हटाना ख़ैरात है."

(अबू हुरैरा, बुख़ारी, मुसलिम)

❀ ❀ ❀

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"हर वह मुसलिम जो पेड़ लगाता है या खेत बोता है और उसके पेड़ या खेत में से चिड़ियां, आदमी और जानवर खाते हैं तो यह उसकी ख़ैरात होती है."

(अनस, बुख़ारी, तिरमिज़ी)

❀ ❀ ❀

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"अच्छी चीज़ों में से लोग ख़ैरात नहीं करते, लेकिन अल्लाह केवल अच्छी चीज़ें ही स्वीकार करता है. फिर भी चाहे दान मे सूखे खजूर ही क्यों न दिये गए हों ख़ुदावन्द करीम उस दान को अपने दाहने हाथ से लेता है. यह चीज़ अल्लाह के हाथ में बढ़ती रहती है. यहां तक कि यह पहाड़ से भी बड़ी बन जाती है. अल्लाह उस चीज़ की हिफ़ाज़त ऐसे करता है जैसे तुम अपने दूध पीते बछड़े या अपने दूध छूटे बच्चे की हिफ़ाज़त करते हो."

(अबू हुरैरा, बुख़ारी, मुसलिम, तिरमिज़ी, अबूदाऊद, निसाई, मालिक)

❀ ❀ ❀

एक बद्दू ने पूछा :—"ऐ अल्लाह के रसूल ! हिजरत के सन्बन्ध में मुझे कुछ बताइये." पैग़म्बर ने कहा–"हिजरत करना बहुत कठिन काम है. क्या तुम्हारे पास कोई ऊंट है ?" उस आदमी ने कहा—"हां." मुहम्मद साहब ने पूछा :—"क्या तुम उस पर ज़कात (क़ीमत के चालीसवें हिस्से का हर साल दान) भी निकालते हो ?" उस आदमी ने कहा—"हां." मुहम्मद साहब ने फिर पूछा:—"क्या तुम उसका दूध लोगों को अपनी तरफ़ से पीने के लिये देते हो?" उसने कहा—"हां." मुहम्मद साहब ने फिर पूछा:—"और क्या जिस दिन तुम उसको पानी पिलाते हो तो उसका दूध ग़रीबों में बांटते हो ?" उसने कहा—"हां". पैग़म्बर ने कहा—"तब हिजरत का कष्ट भोगने के बजाय तुम समन्दर के इसी पार अपना काम धंधा करो क्योंकि सच

محمد صاحب نے کہا کہ :—"ہر اُس دن کے لئے جب سورج نکلتا ہے آدمی کے جوڑ جوڑ پر جو چیز فرض کی گئی ہے وہ خیرات ہے؛ دو آدمیوں کے بیچ انصاف کرنا خیرات ہے؛ اپنے جانور پر سامان لادنے والے کی سہائتا کرنا خیرات ہے؛ سامان لادنا یا کسی آدمی کو اُس کا سامان اُٹھاکر دینا خیرات ہے؛ میٹھی اور پیاری بات کہنا خیرات ہے؛ ایشور سے پرارتھنا کرنے کے لئے جتنے قدم اُٹھتے ہیں وہ سب خیرات ہیں؛ چوٹ پہونچانے والی چیزوں کو سڑک پر سے ہٹانا خیرات ہے."

(ابوہریرہ، بخاری، مسلم)

❀ ❀ ❀

محمد صاحب نے کہا کہ :—ہر وہ مسلم جو پیڑ لگاتا ہے یا کھیت بوتا ہے اور اُس کے پیڑ یا کھیت میں سے چڑیاں، آدمی اور جانور کھاتے ہیں تو یہ اُس کی خیرات ہوتی ہے."

(انس، بخاری، ترمذی)

❀ ❀ ❀

محمد صاحب نے کہا کہ :—"اچھی چیزوں میں سے لوگ خیرات نہیں کرتے، لیکن اللہ کیول اچھی چیزیں ہی سویکار کرتا ہے. پھر بھی چاہے دان میں سوکھے کھجور ہی کیوں نہ دئے گئے ہوں خداوندکریم اُس دان کو اپنے داھنے ہاتھ سے لیتا ہے. یہ چیز اللہ کے ہاتھ میں بڑھتی رہتی ہے. یہاں تک کہ یہ پہاڑ سے بھی بڑی بن جاتی ہے. اللہ اُس چیز کی حفاظت ایسے کرتا ہے جیسے تم اپنے دودھ پیتے بچھڑے یا اپنے دودھ چھوٹے بچے کی حفاظت کرتے ہو."

(ابو ہریرہ، بخاری، مسلم، ترمذی، ابوداود، نسائی، مالک)

❀ ❀ ❀

ایک بدو نے پوچھا :—"اے اللہ کے رسول ! ہجرت کے سمبندھ میں مجھے کچھ بتائیے." پیغمبر نے کہا—"ہجرت کرنا بہت کٹھن کام ہے. کیا تمہارے پاس کوئی اُونٹ ہے؟" اُس آدمی نے کہا—"ہاں." محمد صاحب نے پوچھا :—"کیا تم اس پر زکاۃ (قیمت کے چالیسویں حصے کا ہر سال دان) بھی نکالتے ہو؟" اُس آدمی نے کہا—"ہاں." محمد صاحب نے پھر پوچھا :—"کیا تم اُس کا دودھ لوگوں کو اپنی طرف سے پینے کے لئے دیتے ہو؟" اُس نے کہا—"ہاں." محمد صاحب نے پھر پوچھا:—"اور کیا جس دن تم اُس کو پانی پلاتے ہو تو اُس کا دودھ غریبوں بانٹتے ہو؟" اُس نے کہا—"ہاں." پیغمبر نے کہا—"تب ہجرت کا کشٹ بھوگنے کے بجائے تم سمندر کے اسی پار اپنا کام دھندا کرو کیونکہ سچ

ख़ैरात (दान) के बारे में मुहम्मद साहब की कुछ हदीसें

خیرات (دان) کے بارے میں محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

अनुवादक—मुजीब रिज़वी

मुहम्मद साहब ने कहा :—"ख़ैरात देना हर मुसलमान का फ़र्ज़ है." लोगों ने पूछा—"अगर इस फ़र्ज़ को पूरा करने के लिये किसी के पास साधन न हों तो ?" पैग़म्बर ने जवाब दिया—"ऐसे आदमी को अपने दोनों हाथों से काम करके अपना भी काम चलाना चाहिये और उसी में से ख़ैरात भी करनी चाहिये." फिर किसी ने पूछा—"अगर वह ऐसा न कर सके या काम करने के क़ाबिल ही न हो ता ?" मुहम्मद साहब ने जवाब दिया—"तब उसे ज़रूरतमन्दों और दुखियों की जिस तरह हो सहायता करनी चाहिये." लोगों ने फिर पूछा—"अगर वह यह भी न कर सके तो ?" मुहम्मद साहब ने जवाब दिया—"तब उसे दूसरों को नेकी करने की नसीहत करनी चाहिये." लोगों ने कहा—"अगर वह यह भी न कर सके तो ?" मुहम्मद साहब ने जवाब दिया—"तब उसे ख़ुद हर बुराई से बचना चाहिये, क्योंकि सचमुच बुराई से बचना ही उसका ख़ैरात करना है."

(अबू मूसा अलअशरी, बुख़ारी, मुसलिम)

❀ ❀ ❀

मुहम्मद साहब ने एक बार कहा कि :—"हर नेक काम ख़ैरात है."

(बुख़ारी, मुसलिम अबूदाऊद, तिरमिज़ी)

❀ ❀ ❀

पैग़म्बर ने कहा कि :—"अपने किसी भाई को देखकर मुस्कराना ख़ैरात है; नेकी करने की नसीहत करना ख़ैरात है; बुराई से मना करना ख़ैरात है; किसी नई जगह पर किसी को सही रास्ता बता देना ख़ैरात है; उस आदमी की सहायता करना जिसकी आंखों में ख़राबी है ख़ैरात है; रास्ते से पत्थर, कांटे, हड्डियां वग़ैरा हटाना ख़ैरात है; अपनी बाल्टी का पानी अपने भाई की बाल्टी में उंडेलना ख़ैरात है."

(अबूज़र, तिरमिज़ी)

❀ ❀ ❀

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—"नेक काम के लिये नसीहत करना और बुरे कामों से मना करना ख़ैरात है."

(अबूज़र, मुसलिम)

❀ ❀ ❀

انوادک—مجیب رضوی

محمد صاحب نے کہا :—"خیرات دینا ہر مسلمان کا فرض ہے." لوگوں نے پوچھا—"اگر اِس فرض کو پورا کرنے کے لئے کسی کے پاس سادھن نہ ہوں تو ؟" پیغمبر نے جواب دیا—"ایسے آدمی کو اپنے دونوں ہاتھوں سے کام کرکے اپنا بھی کام چلانا چاہئے اور اسی میں سے خیرات بھی کرنی چاہئے." پھر کسی نے پوچھا—"اگر وہ ایسا نہ کرسکے یا کام کرنے کے قابل ہی نہ ہو ؟" محمد صاحب نے جواب دیا :—"تب اُسے ضرورتمندوں اور دکھیوں کی جس طرح ہو سہائتا کرنی چاہئے." لوگوں نے پوچھا—"اگر وہ یہ بھی نہ کرسکے تو ؟" محمد صاحب نے جواب دیا—"تب اُسے دوسروں کو نیکی کرنے کی نصیحت کرنی چاہئے." لوگوں نے کہا—"اگر وہ یہ بھی نہ کرسکے تو ؟" محمد صاحب نے جواب دیا—"تب اُسے خود ہر برائی سے بچنا چاہئے، کیونکہ سچ مچ برائی سے بچنا ہی اُس کا خیرات کرنا ہے."

(ابو موسیٰ الاشعری، بخاری، مسلم)

❀ ❀ ❀

محمد صاحب نے ایک بار کہا کہ :—"ہر نیک کام خیرات ہے."

(بخاری، مسلم، ابوداؤد، ترمذی)

❀ ❀ ❀

پیغمبر نے کہا کہ :—"اپنے کسی بھائی کو دیکھ کر مسکرانا خیرات ہے؛ نیکی کرنے کی نصیحت کرنا خیرات ہے؛ برائی سے منع کرنا خیرات ہے؛ کسی نئی جگہ پر کسی کو صحیح راستہ بتا دینا خیرات ہے؛ اُس آدمی کی سہائتا کرنا جس کی آنکھوں میں خرابی ہے خیرات ہے؛ راستے سے پتھر، کانٹے، ہڈیاں وغیرہ ہٹانا خیرات ہے؛ اپنی بالٹی کا پانی اپنے بھائی کی بالٹی میں اُنڈیلنا خیرات ہے."

(ابوذر، ترمذی)

❀ ❀ ❀

"محمد صاحب نے کہا کہ :—"نیک کام کے لئے نصیحت کرنا اور برے کاموں سے منع کرنا خیرات ہے."

(ابوذر، مسلم)

❀ ❀ ❀

क्या राग है क्या लेकारी है एक वज्द का आलम तारी है
जो सूर है प्रेम कटारी है जो ज़ख़्म है ज़ख़्मेकारी है
एहसासे ख़ुदी काफ़ूर हुआ इरफ़ान से दिल मामूर हुआ
यकरंग प्रेमी प्रीतम हैं अब परदए हायल दूर हुआ.

नज़्म 'अछूत उद्धार' में कहते हैं, जबकि रामचन्द्र जी बनवास की हालत में घूमते हुए सबरी के झोंपड़े में पहुंचते हैं और सबरी प्रेम के साथ उनके सामने जूठे बेर रखती है :—

भगवान ने इख़लासो मुदारात को देखा
वारफ़्तए दीदार के जज़्बात को देखा
कुछ ज़ात को देखा न कुछ औक़ात को देखा
देखा तो फ़क़त प्रेम की सौग़ात को देखा

डूबे हुए थे बेर मुहब्बत के जो रस में
ख़ुद प्रेम के सागर भी हुए प्रेम के बस में
है रस्म मुहब्बत की ज़माने में निराली
भक्ति कभी तासीर से रहती नहीं ख़ाली

मन्ज़ूर किया राम ने यह तुहफ़ए आली
बुनियाद जहां में पतित उद्धार की डाली
ऐ क़ौम! अछूतों को गले हम भी लगा लें
इस प्रेम के अफ़साने को आदर्श बना लें.

———

मसकन = निवासस्थान. असलाफ़ = पूर्वज. दौरे क़ुहन = प्राचीन काल. फ़िरदौस = स्वर्ग. अज़मते गुज़िश्ता = बीता हुआ बड़प्पन. अमीं = रक्षक. धरोहर = रखने वाला. जाहो जलाल = शानो शौकत. तहनशीं = छुपा हुआ. एजाज़े हक़नुमाई = सच्चाई को दिखाने का चमत्कार. रंगे मजाज़ = ऊपरी रंग. महवे सना = स्तुति में लगी हुई. दस्तेनाज़ुक = कोमल हाथ. नग़मा आराई = गीत गाना. तारी = छाया हुआ. एहसासे ख़ुदी = अहम्भाव. इर्फ़ान = ज्ञान. मामूर = भरा हुआ. हायल = बीच का. इख़लास = हृदय की शुद्धता. मुदारात = सज्जनता. वारफ़्तए दीदार = दर्शन में डूबा हुआ. सौग़ात = भेंट. तुहफ़ए आली = अच्छी भेंट. पतित उद्धार = गिरे हुओं को ऊपर उठाना.

کیا راگ ہے کیا لے کاری ہے اک وجد کا عالم طاری ہے
جو سر ہے پریم کٹاری ہے جو زخم ہے زخم کاری ہے
احساسِ خودی کافور ہوا عرفان سے دل معمور ہوا
یک رنگ پریمی پریتم ہیں اب پردۂ حائل دور ہوا

نظم 'اچھوت اُدھار' میں کہتے ہیں، جبکہ رام چندر جی بن باس کی حالت میں گھومتے ہوئے سبری کے جھونپڑے میں پہونچتے ہیں اور سبری پریم کے ساتھ اُن کے سامنے جھوٹے بیر رکھتی ہے :—

بھگوان نے اخلاص و مدارات کو دیکھا
وارفتۂ دیدار کے جذبات کو دیکھا
کچھ ذات کو دیکھا نہ کچھ اوقات کو دیکھا
دیکھا تو فقط پریم کی سوغات کو دیکھا

ڈوبے ہوئے تھے بیر محبت کے جو رس میں
خود پریم کے ساگر بھی ہوئے پریم کے بس میں
ہے رسم محبت کی زمانے میں نرالی
بھکتی کبھی تاثیر سے رہتی نہیں خالی

منظور کیا رام نے یہ تحفۂ عالی
بنیاد جہاں میں پتت اُدھار کی ڈالی
اے قوم! اچھوتوں کو گلے ہم بھی لگا لیں
اِس پریم کے افسانے کو آدرش بنا لیں

———

مسکن = نواس استھان. اسلاف = پوروج . دورِ کہن = پراچین کال. فردوس = سورگ. عظمتِ گذشتہ = بیتا ہوا بڑپن. امین = رکشک، دھروہر = رکھنے والا . جاہ و جلال = شان و شوکت . تہ نشیں = چھپا ہوا. اعجازِ حق نمائی = سچائی کو دکھانے کا چمتکار. رنگِ مجاز = اوپری رنگ. محوِ ثنا = اِستتی میں لگی ہوئی. دستِ نازک = کومل ہاتھ. نغمہ آرائی = گیت گانا . طاری = چھایا ہوا . احساسِ خودی = اہم بھاؤ . عرفان = گیان . معمور = بھرا ہوا . حائل = بیچ کا . اخلاص = ہردے کی شدھتا . مدارات = سجنتا. وارفتۂ دیدار = درشن میں ڈوبا ہوا. سوغات = بھینٹ. تحفۂ عالی = اچھی بھینٹ . پتت اُدھار = گرے ہوؤں کو اوپر اٹھانا .

इनके कुछ शेर मुलाहिज़ा हों, ज़िन्दगी के मुतअल्लिक़ एक रुबाई में कहते हैं :—

कहता हूं बयां सुनिये बयाने हस्ती
कुछ भी नहीं कुछ भी नहीं शाने हस्ती
इस सांस की बुनियाद ही क्या है, बिसमिल
कन्धे पे हवा के है मकाने हस्ती

शाहिदे मुतलक़ की तलाश का बयान इन शेरों में कैसे हसीन पैराये में किया है :—

मुद्दत से सुनते आए हैं वह खानए दिल में रहते हैं
आजांय नज़र तो हम जानें कहने के लिये सब कहते हैं.
नज़रों को नज़र आते जो नहीं तो हम यही दिल से कहते हैं
इस पर्दे में कुछ पर्दा है वह पर्दे में क्यों रहते हैं.
इस सोच में हैं इस चक्कर में इस फ़िक्र में हैं दुनियावाले
वह आलम कैसा आलम है जिस आलम में वह रहते हैं.
छिपने को छिपें सौ पर्दों में इस छिपने से क्या होता है
वह ढूंढ निकालेंगे उनको जो खोज में उनके रहते हैं.

मुन्शी महाराज बहादुर 'बर्क़' देहलवी उर्दू के चोटी के शायरों में गुज़रे हैं. वह चकबस्त की तरह आलमे जवानी में ही चल बसे. उनकी नज़्मों के मजमुए 'मतलए अनवार' में समाजी, तारीख़ी और मज़हबी नज़्में हिन्दुस्तानी रिवायतों की लाजवाब मिसालें हैं. गो इनकी ज़बान सादा नहीं है फिर भी इनके मौज़ू ऐसे बुलन्द हैं कि वह सब नज़्में उर्दू अदब के बेहतरीन सरमाए में जगह पाएंगी. आज का हिन्दी साहित्य अगर इन्हें अपना लेगा तो उसमें और वसअत पैदा होगी और उसका हुस्न दोबाला होगा. इनकी नज़्मों में से चन्द शेर यहां दिये जाते हैं. नज़्म 'गंगा' के चन्द शेर सुनिये :—

मसकन है तू क़दीमी असलाफ़ का हमारे
डाले रहे हैं डेरे सदियों तेरे किनारे
था शानदार कैसा दौरे कुहन हमारा
फ़िरदौस बर ज़मीं था गोया वतन हमारा
है तुझको याद अब तक वह दास्तां हमारी
लहरें तेरी वरक़ हैं तारीख़ की हमारी
तू अज़मते गुज़िश्ता की आज तक अमीं है
जाहो जलाल तेरे पहलू में तहनशीं है
वहदानियत का नग़मा मौजों के साज़ में है
एजाज़े हक़ नुमाई रंगे मजाज़ में है

नज़्म मीरा बाई में भक्ति और प्रेम मुलाहिज़ा कीजिये :—

भगवान कृष्ण के मन्दिर में है महे सना मीरा बाई
इक बीन है दस्ते नाज़ुक में लब वक़्फ़े नग़मा आराई

اِن کے کچھ شعر ملاحظہ ہوں، زندگی کے متعلق ایک رباعی میں کہتے ہیں :—

کہتا ہوں بیاں سنئے بیانِ ہستی
کچھ بھی نہیں، کچھ بھی نہیں شانِ ہستی
اِس سانس کی بنیاد ہی کیا ہے، بسمل
کاندھے پہ ہوا کے ہے مکانِ ہستی

شاہد مطلق کی تلاش کا بیان اِن شعروں میں کیسے حسین پیرائے میں کیا ہے :—

مدت سے سنتے آئے ہیں وہ خانۂ دل میں رہتے ہیں
آجائیں نظر تو ہم جانیں کہنے کے لئے سب کہتے ہیں۔
نظروں کو نظر آتے جو نہیں تو ہم یہی دل سے کہتے ہیں
اِس پردے میں کچھ پردہ ہے وہ پردے میں کیوں رہتے ہیں۔
اِس سوچ میں ہیں اِس چکر میں اِس فکر میں ہیں دنیا والے
وہ عالم کیسا عالم ہے جس عالم میں وہ رہتے ہیں۔
چھپنے کو چھپیں سو پردوں میں اس چھپنے سے کیا ہوتا ہے
وہ ڈھونڈھ نکالیں گے اُن کو جو کھوج میں اُن کے رہتے ہیں۔

منشی مہاراج بہادر 'برق' دہلوی اردو کے چوٹی کے شاعروں میں گذرے ہیں۔ وہ چکبست کی طرح عالم جوانی میں ہی چل بسے۔ اُن کی نظموں کے مجموعہ 'مطلع انوار' میں سماجی، تاریخی اور مذہبی نظمیں ہندستانی روایتوں کی لاجواب مثالیں ہیں۔ گو اِن کی زبان سادہ نہیں ہے پھر بھی اِن کے موضوع ایسے بلند ہیں کہ وہ سب نظمیں اردو ادب کے بہترین سرمایہ میں جگہ پائیں گی۔ آج کا ہندی ساہتیہ اگر اِنھیں اپنا لے گا تو اُس میں اور وسعت پیدا ہوگی اور اُس کا حسن دوبالا ہوگا۔ اِن کی نظموں میں سے چند شعر یہاں دیئے جاتے ہیں۔ نظم 'گنگا' کے چند شعر سنئے :—

مسکن ہے تو قدیمی اسلاف کا ہمارے
ڈالے رہے ہیں ڈیرے صدیوں ترے کنارے
تھا شاندار کیسا دورِ کہن ہمارا
فردوس بر زمیں تھا گویا وطن ہمارا
ہے تجھ کو یاد اب تک وہ داستاں ہماری
لہریں تری ورق ہیں تاریخ کی ہماری
تو عظمت گذشتہ کی آج تک امیں ہے
جاہ و جلال تیرے پہلو میں تہ نشیں ہے
وحدانیت کا نغمہ موجوں کے ساز میں ہے
اعجاز حق نمائی رنگ مجاز میں ہے

نظم میرا بائی میں بھکتی اور پریم ملاحظہ کیجئے :—

بھگوان کرشن کے مندر میں ہے محو ثنا میرا بائی
اک بین ہے دست نازک میں لب وقف نغمہ آرائی

भी हिन्दी के विद्यार्थियों और अदीबों को शाने कलाम (ओज) ज़ोरेबयान (बल), सलासत (सरलता) की तहसील (प्राप्ति) के लिये उर्दू शायरों और मुसन्निफ़ों के आस्ताने पर जाना होगा……हिंदी के विद्यार्थी और अहले क़लम हिंदी के उस हिस्से में जो सिर्फ़ उर्दू ही मे पाया जाता है दर्जे कमाल हासिल करेंगे तब जाकर हिंदी अपने सारे हितचिंतकों की शुभ आशाएं पूरी कर सकेगी."

अब मैं उर्दू शायरों के कलाम के चन्द नमूने पेश करता हूं जिसमें हिन्दी रस्म रिवाज और ख़यालात की तसवीर मिलती हैं और ज़बान भी सादा है. उर्दू शायरी के हर एक दौर में हिन्दुस्तानी रिवायतों और रहन सहन की नक़्क़ाशी उर्दू शायरों ने की है. नज़ीर अकबराबादी ने तो ख़ालिस हिन्दुस्तानी रहन सहन और कलचर पर लम्बी नज़्में लिखी हैं जो उनकी कुल्लियात में भरी पड़ी हैं. कुछ शेर पुराने दौर के शायरों के नीचे दिये जाते हैं जिनमें हिन्दी के शब्द और विचार मुलाहिज़ा कीजिये :—

जुदाई के ज़माने की, सजन ! क्या ज़ियादती कहिये
कि उस ज़ालिम की हम पर जो घड़ी गुज़री सो जुग बीती.
(आबरू)

सांवरा मुखड़ा, रसीले नयन, अलबेली है चाल
ऐसे प्यारे पर 'फ़ुग़ां' क्योंकर न दीवाना बनूं.
(फ़ुग़ां)

भरे मांगों में सेंदुर और सन्दल
गुलाबी मद भरी आंखों में काजल
नुमायां पान की होंटों पै सुर्ख़ी
महावर पांव में हाथों में मेंहदी.

मौजूदा ज़माने के उर्दू शायरों में मज़हबी रिवायतों का ज़्यादा गहरा असर है. यह बात इससे ज़ाहिर होती है कि बहुत से शाइरों ने रामायण, महाभारत, गीता वग़ैरा मज़हबी किताबों के तरजुमे उर्दू नज़्म में किये और मज़हबी शख़्सियतों पर नज़्में लिखीं. इस सिलसिले में मेहर, सुरूर, तालिब इलाहाबादी, नानक लखनवी के कारनामे ख़ास तौर पर चरचा के क़ाबिल हैं. चकबस्त की ऐसी ही नज़्मों में 'रामायण का सीन' बहुत कामयाब नज़्म है. अलावा इसके हफ़ीज़ जालंधरी, इन्द्रजीत शर्मा, मक़बूल हुसेन अहमदपुरी, शौक़ क़िदवाई, अज़मतुल्ला की नज़्में जो उर्दू रिसालों में शाया हो चुकी हैं या होती हैं अकसर हिन्दुस्तानी कलचर, माहौल (वातावरण) और विचारों की तर्जुमान और सादा ज़बान रखती हैं. इसी सिलसिले में बिसमिल इलाहाबादी की शायरी भी ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र है. उन्होंने ख़ुद भी अपनी ज़बान की बाबत कहा है :—

सहल लिख लिखके यह क्या अच्छा तमाशा कर दिया
हज़रते बिसमिल ने तो उर्दू को भाषा कर दिया.

بھی ھندی کے ودیارتھیوں اور ادیبوں کو شان کلام (اوج) زور بیان (بل) سلاست (سرلتا) کی تحصیل (پراپتی) کے لئے اردو شاعروں اور مصنفوں کے آستانہ پر جانا ھوگا......ھندی کے ودیارتھی اور اھل قلم ھندی کے اس حصے میں جو صرف اردو ھی میں پایا جاتا ھے درجہ کمال حاصل کرینگے تب جاکر ھندی اپنے سارے ھتچنتکوں کی شبھ آشائیں پوری کرسکے گی۔"

اب میں اردو شاعروں کے کلام کے چند نمونے پیش کرتا ھوں جس میں ھندی رسم و رواج اور خیالات کی تصویریں ملتی ھیں اور زبان بھی سادہ ھے ۔ اردو شاعری کے ھر ایک دور میں ھندستانی روائتوں اور رھن سھن کی نقاشی اردو شاعروں نے کی ھے ۔ نظیر اکبرآبادی نے تو خالص ھندستانی رھن سھن اور کلچر پر لمبی نظمیں لکھی ھیں جو ان کی کلیات میں بھری پڑی ھیں ۔ کچھ شعر پرانے دور کے شاعروں کے نیچے دیئے جاتے ھیں جن میں ھندی کے شبد اور وچار ملاحظہ کیجئے :—

جدائی کے زمانے کی، سجن ! کیا زیادتی کہئے
کہ اس ظالم کی ھم پر جو گھڑی گذری سو جگ بیتی
(آبرو)

سانورا مکھڑا، رسیلے نین، البیلی ھے چال
ایسے پیارے پر 'فغاں' کیوں کر نہ دیوانہ بنوں ۔
(فغاں)

بھرے مانگوں میں سیندر اور صندل
گلابی مدبھری آنکھوں میں کاجل
نمایاں پان کی ھونٹھوں پہ سرخی
مہاور پاؤں میں ھاتھوں میں منہدی ۔

موجودہ زمانے کے اردو شاعروں میں مذھبی روائتوں کا زیادہ گہرا اثر ھے ۔ یہ بات اس سے ظاھر ھوتی ھے کہ بہت سے شاعروں نے رامائن، مہابھارت، گیتا وغیرہ مذھبی کتابوں کے ترجمے اردو نظم میں کئے اور مذھبی شخصیتوں پر نظمیں لکھیں ۔ اس سلسلے میں مہر، سرور، طالب الہ آبادی، نانک لکھنوی کے کارنامے خاص طور پر چرچا کے قابل ھیں ۔ چکبست کی ایسی ھی نظموں میں 'رامائن کا سین' بہت کامیاب نظم ھے ۔ علاوہ اس کے حفیظ جالندھری، اندرجیت شرما، مقبول حسین احمد پوری، شوق قدوائی، عظمت اللہ کی نظمیں جو اردو رسالوں میں شائع ھو چکی ھیں یا ھوتی ھیں اکثر ھندستانی کلچر، ماحول (واتاورن) اور وچاروں کی ترجمان اور سادہ زبان رکھتی ھیں ۔ اس سلسلے میں بسمل الہ آبادی کی شاعری بھی خاص طور پر قابل ذکر ھے ۔ انہوں نے خود بھی اپنی زبان کی بابت کہا ھے :—

سہل لکھ لکھ کے یہ کیا اچھا تماشا کر دیا
حضرت بسمل نے تو اردو کو بھاشا کر دیا۔

उन्होंने इसमें खूबसूरती, जोर, और फैलाव पैदा किया है. उर्दू हिन्दुस्तान ही में बनी और इस मुल्क के कलचर के बनाने में इसका बड़ा हिस्सा है. वह न किसी एक गरोह की ही जबान है और न किसी एक जगह की ही. वह जबान हमेशा आम लोगों के विचारों और भावों को प्रकट करती रही और मुल्की धारों से सेराब होती रही. इसकी रगों में जनता की जिन्दगी का खून बहता है. यही कारण है कि हिन्दुस्तान के लगभग सभी हिस्सों में वह समझी और बोली जाती है. इसकी फुलवारी में सैर करने से ही यह साबित हो सकता है कि जहां उसने चन्द विदेशी जेवर अपनाए हैं वहां मुल्की मोतियों से भी बनी संवरी है. यह इसी जबान का शानदार कारनामा है कि उसने बाजारी शब्दों, मुहावरों, औरतों की जबान के बहुत से नरम व नाजुक अस्लूब (शैलियों), कहावतों को अदब का लिबास पहनाया और उनको अच्छी सोसाइटी में रिवाज दिया.

यहां हम उर्दू के मशहूर अदीब बाबू रघुपति सहाय फ़िराक़ के उस खत का कुछ हिस्सा पेश करते हैं जो उन्होंने अंग्रेजी में अखबार 'लीडर', 8 नवम्बर, सन' 38 में शाया कराया था. वह कहते हैं :—

"उर्दू की अहमियत तो इस से जाहिर होती है कि हम उर्दू अदब की किसी मशहूर किताब को चाहे वह नज़्म की हो या नस्र की जुज़न, या कुल्लियन (किसी हिस्से को या कुल को) सामने रखकर उससे ग़ैर मुल्की शब्दों का खारिज कर दें तो उसमें हम को ठेठ हिन्दी के शब्द उतनी बड़ी हिन्दी की किताब के बराबर ही नहीं दुगने बल्कि चार या पांच गुने ज्यादा मिलेंगे. यही वजह है कि हिन्दी के मुक़ाबले में उर्दू जनता की बोली से अधिक निकट है बावजूद इसके कि उसमें बहुत से फ़ारसी और अरबी के शब्द शामिल हैं. इसके खिलाफ़ हिंदी में आम तौर पर 60 से लेकर 90 फ़ीसदी तक शुद्ध संस्कृत के शब्द होते हैं और 40 से लेकर 10 फ़ीसदी तक ठेठ हिंदी के. दूसरे शब्दों में यूं समझिये कि उर्दू मुरक्कब होती है 75 फ़ीसदी ठेठ हिन्दी शब्दों से और हिंदी सिर्फ़ 25 फ़ीसदी ठेठ हिन्दी शब्दों से."

आगे चलकर वह लिखते हैं :—"उर्दू जबान के बानियों की दूरअंदेशी ने शुद्ध हिंदी के हजारों शब्द, फ़िक़रे, मुहावरे, कहावतें, अक़वाल वग़ैरा बड़ी खूबी से बना डाले क्योंकि वह यह समझते थे कि इसके बग़ैर जबान मुर्दा रहेगी. इसका नतीजा है कि उर्दू की असली, अदबी. खूबियां हिन्दी के उन्हीं मुहावरों और तर्जेहाय अदा (शैलियों) से जाहिर होती हैं. अरबी व फ़ारसी शब्दों का दखल इसमें नाम को ही है."

आखीर में वह हिंदी वालों को मशविरा देते हैं :—
"जुमलों की तरकीब का सवाल एक अहम सवाल है. यहां

اُنھوں نے اِس میں خوبصورتی' زور اور پھیلاؤ پیدا کیا هے . اُردو هندستان هی میں بنی اور اِس ملک کے کلچر کے بنانے میں اِس کا بڑا حصہ هے . وہ نہ کسی ایک گروہ کی هی زبان هے اور نہ کسی ایک جگہ کی هی. یہ زبان همیشہ عام لوگوں کے وچاروں اور بھاؤں کو پرگٹ کرتی رهی اور ملکی دھاروں سے سیراب هوتی رهی . اِس کی رگوں میں جنتا کی زندگی کا خون بہتا هے . یہی کارن هے کہ هندستان کے لگ بھگ سبھی حصوں میں یہ سمجھی اور بولی جاتی هے . اِس کی پھلواری میں سیر کرنے سے هی یہ ثابت هوسکتا هے کہ جہاں اُس نے چند ودیشی زیور اپنائے هیں وهاں ملکی موتیوں سے بھی بنی سنوری هے . یہ اِسی زبان کا شاندار کارنامہ هے کہ اُس نے بازاری شبدوں' محاوروں' عورتوں کی زبان کے بہت سے نرم و نازک اسلوب (شیلیوں)' کہاوتوں کو ادب کا لباس پہنایا اور اُن کو اچھی سوسائٹی میں رواج دیا.

یہاں هم اُردو کے مشہور ادیب بابو رگھوپتی سہائے فراق کے اُس خط کا کچھ حصہ پیش کرتے هیں جو اُنھوں نے انگریزی میں اخبار 'لیڈر' 8 نومبر' سن '38 میں شائع کرایا تھا . وہ کہتے هیں :—

"اُردو کی اهمیت تو اِس سے ظاهر هوتی هے کہ هم اُردو ادب کی کسی مشہور کتاب کو چاهے وہ نظم کی هو یا نثر کی جزواً یا کلیاً (کسی حصے کو یا کل کو) سامنے رکھ کر اُس سے غیر ملکی شبدوں کو خارج کردیں تو اُس میں هم کو ٹھیٹھ هندی کے شبد اُتنی بڑی هندی کی کتاب کے برابر هی نہیں دوگنے بلکہ چار یا پانچ گنے زیادہ ملیں گے . یہی وجہ هے کہ هندی کے مقابلے میں اُردو جنتا کی بولی سے ادھک نکٹ هے باوجود اِس کے کہ اُس میں بہت سے فارسی اور عربی کے شبد شامل هیں . اِس کے خلاف هندی میں عام طور پر 60 سے لیکر 90 فیصدی تک شدھ سنسکرت کے شبد هوتے هیں اور 40 سے لیکر 10 فیصدی تک ٹھیٹھ هندی کے . دوسرے شبدوں میں یوں سمجھئے کہ اُردو مرکب هوتی هے 75 فیصدی ٹھیٹھ هندی شبدوں سے اور هندی صرف 25 فیصدی ٹھیٹھ هندی شبدوں سے ."

آگے چلکر وہ لکھتے هیں :—"اُردو زبان کے بانیوں کی دور اندیشی نے شدھ هندی کے هزاروں شبد' فقرے' محاورے' کہاوتیں' اقوال وغیرہ بڑی خوبی سے بنا ڈالے کیونکہ وہ یہ سمجھتے تھے کہ اِس کے بغیر زبان مردہ رهیگی . اِس کا نتیجہ هے کہ اُردو کی اصلی' ادبی خوبیاں هندی کے اُنھیں محاوروں اور طرز هائے ادا (شیلیوں) سے ظاهر هوتی هیں. عربی و فارسی شبدوں کا دخل اِس میں نام کو هی هے ."

آخر میں وہ هندی والوں کو مشورہ دیتے هیں :—
"جملوں کی ترکیب کا سوال بھی ایک اهم سوال هے . یہاں

उर्दू हिन्दी को क्या कुछ दे सकती है

श्री नज्मुद्दीन अहमद एम० ए०

इस लेख की ग़रज़ उर्दू की कुछ ख़सूसियतों की तरफ़ ध्यान दिलाना है. वैसे तो जो चीज़ जितना ही नज़दीक होती है उसकी तरफ़ से उतनी ही लापरवाही बरती जाती है. ज़बान की तरफ़ भी हमारा यही रवैया है. हम इसके ज़रिये ज़िन्दगी के बहुत अहम काम अन्जाम देते हैं. ख़याल व जज़बात (भावों) की परवरिश और इल्म व इरफ़ान (ज्ञान) की बुलन्दी तय करते हैं. मगर यह नहीं जानते कि ज़बान किस तरह बनती और तरक़्क़ी करती है. और हमारी ज़िन्दगी और कलचर को किस तरह बनाती और संवारती है. उर्दू ज़बान की पैदाइश हिन्दुस्तान की तारीख़ का एक यादगार कारनामा है. पर इस समय सिर्फ़ इस ज़बान की चन्द ख़ुसूसियतों का ज़िक्र किया जायेगा.

सब से पहला सवाल उर्दू ज़बान में फ़ारसी या अरबी लफ़्ज़ों की मिलावट का है. यह सब के तजरबे की बात है कि जब हम अंग्रेज़ी ज़बान सीखते और उसमें महारत पैदा करना चाहते हैं तो अपनी निजी बातचीत में भी अंग्रेज़ी शब्द लाने लगते हैं क्योंकि वह हमारे नए विचारों को आसानी से ज़ाहिर कर देते हैं. कभी कभी इसमें अपनी इल्मियत दिखाने का ख़याल भी छुपा रहता है, क्योंकि यह भी इनसान की तबियत का तक़ाज़ा है. इसी तरह उस ज़माने में जब फ़ारसी ज़बान सरकार और दफ़्तर की ज़बान थी और उसका जानना बड़ी बात समझा जाता था, इस देश के निवासी जब फ़ारसी को अपनाने लगे तो अपनी निजी बात चीत में फ़ारसी के शब्द लाने लगे. उस वक़्त के हालात के लिए ऐसा होना क़ुदरती और ज़रूरी भी था.

फ़ारसी अरबी शब्दों के अलावा दूसरी विदेशी ज़बानों के शब्द भी उर्दू में मौजूद हैं. जब यह ज़बान बनी देशी विदेशी का सवाल ही न था. मसलन पुर्तगाल के लोग तिजारत के सिलसिले में कितनी ही चीज़ें लाए जो हिन्दुस्तानी ज़िन्दगी का हिस्सा बन गईं. उनके नाम हमारी ज़बान में इस तरह घुल मिल गए कि आज वह विदेशी मालूम ही नहीं होते. कुछ ऐसे नाम यह हैं:—तम्बाकू, साबूदाना, फ़ीता, साया, मेज़, नीलाम, अंग्रेज़, गुन्डा, तौलिया, साबुन, सन्तरा पुर्तगाली ज़बान के शब्द हैं.

उर्दू प्राकृत भाषा से ही बनी और उसका ढांचा हिन्दी ज़बान ही है, जो फ़ारसी अरबी के शब्द इसमें शामिल हैं

اُردو هندی کو کیا کچھ دے سکتی ھے

شری نجم‌الدین احمد ایم . اے

اِس لیکھ کی غرض اُردو کی کچھ خصوصیتوں کی طرف دھیان دلانا ھے . ویسے تو جو چیز جتنا ھی نزدیک ھوتی ھے اُس کی طرف سے اُتنی ھی لاپرواھی برتی جاتی ھے . زبان کی طرف بھی ھمارا یہی رویہ ھے. ھم اِس کے ذریعہ زندگی کے بہت اھم کام انجام دیتے ھیں. خیال و جذبات (بھاؤں) کی پرورش اور علم و عرفان (گیان) کی بلندی طے کرتے ھیں . مگر یہ نہیں جانتے کہ زبان کس طرح بنتی اور ترقی کرتی ھے . اور ھماری زندگی اور کلچر کو کس طرح بناتی اور سنوارتی ھے. اُردو زبان کی پیدائش ھندستان کی تاریخ کا ایک یادگار کارنامہ ھے . پر اِس سمے صرف اِس زبان کی چند خصوصیتوں کا ذکر کیا جائیگا .

سب سے پہلا سوال اُردو زبان میں فارسی یا عربی لفظوں کی ملاوٹ کا ھے . یہ سب کے تجربے کی بات ھے کہ جب ھم انگریزی زبان سیکھتے اور اُس میں مہارت پیدا کرنا چاھتے ھیں تو اپنی نجی بات چیت میں بھی انگریزی شبد لانے لگتے ھیں کیونکہ وہ ھمارے نئے وچاروں کو آسانی سے ظاھر کردیتے ھیں . کبھی کبھی اِس میں اپنی عالمیت دکھانے کا خیال بھی چھپا رھتا ھے' کیونکہ یہ بھی انسان کی طبیعت کا تقاضا ھے . اِسی طرح اُس زمانے میں جب فارسی زبان سرکار اور دفتر کی زبان تھی اور اُس کا جاننا بڑی بات سمجھا جاتا تھا' اِس دیش کے نواسی جب فارسی کو اپنانے لگے تو اپنی نجی بات چیت میں فارسی کے شبد لانے لگے . اُس وقت کے حالات کے لئے ایسا ھونا قدرتی اور ضروری بھی تھا .

فارسی عربی شبدوں کے علاوہ دوسری بدیشی زبانوں کے شبد بھی اُردو میں موجود ھیں . جب یہ زبان بنی دیشی ودیشی کا سوال ھی نہ تھا . مثلاً پرتگال کے لوگ تجارت کے سلسلے میں کتنی ھی چیزیں لائے جو ھندستانی زندگی کا حصہ بن گئیں . اُن کے نام ھماری زبان میں اِس طرح گھل مل گئے کہ آج وہ ودیشی معلوم ھی نہیں ھوتے . کچھ ایسے نام یہ ھیں:— تمباکو' سابودانہ' فیتہ' سایہ' میز' نیلام' انگریز' غنڈا' تولیہ' صابن' سنترہ پرتگالی زبان کے شبد ھیں .

اُردو پراکرت بھاشا سے ھی بنی اور اُس کا ڈھانچہ ھندی زبان ھی ھے . جو فارسی عربی کے شبد اِس میں شامل ھیں

से संबंध रखने वाली. जब वहां दिक़्क़त नहीं हुई तो यहां दिक़्क़त क्यों होती ?

यह कहकर पुरानी बात का रोना नहीं रोना है. जो हो चुका, वह हो चुका. लोग उससे सबक़ लें, उससे पाठ सीखें और अपने हृदय को मजबूत बनायें और राष्ट्रीय स्वरूप वाली हिन्दी को अपनाकर वही क्रांति कर डालें जो अब तक नहीं हो पाई. राष्ट्र शब्द में भी नेशन शब्द का पूरा भाव नहीं आता. राष्ट्र की जगह नेशन शब्द अपना लिया जाय तो बुरा नहीं. उर्दू का क़ौम शब्द जात के मानी में आने लगा. वह भी कमज़ोर पड़ गया. इएटरनेशनल की जगह अंतर क़ौमी शब्द खासा जम जाता है पर इतने से काम नहीं चलता. नेशन शब्द के लिए कोई ज़ोरदार शब्द देना ही पड़ेगा. अगर 'जनमन' शब्द अपनालिया जाय तो कैसा हो—इस पर विचार किया जा सकता है. इससे जनमनी, जनमना, जनमनीयत, जनमनीयता आदि अनेक शब्द बन सकते हैं. मुश्किल सिर्फ़ यही है कि हिन्दुस्तान की जनता न कभी नेशन थी और न आज नेशन है. यह जनता हिन्दू मुसलमान तो हो सकती है, नेशन बनना इसके लिए अभी भी दुष्कर है. इसका कोई नेशनल त्यौहार ही नहीं. यह किसी नेशनल काम के लिए मरना ही नहीं जानती. यह तो भारत का सौभाग्य ही है कि इने गिने मनचलों ने हिन्दुस्तान को आज़ाद करा दिया. नेशन बनने के लिए नेशनल भाषा ज़रूरी है. हिन्दी अगर राष्ट्रीय भाषा होने का दावा रखती है तो वह उस समय तक पक्की दावेदार नहीं हो सकती जब तक हर भाषाभाषी उसके लिए प्राणदान न दे, फिर चाहे उनकी तादाद कितनी ही कम क्यों न हो.

इस बलिदान के बिना हिन्दी का स्वरूप न तय हो सकेगा, न समझ में आ सकेगा, न खिल सकेगा. नेशन बनने के लिए राष्ट्रभाषा का स्वरूप खिल उठना बहुत ज़रूरी है और राष्ट्रभाषा का स्वरूप खिल उठने के लिए उसे वही असीम और खुला मैदान देना ज़रूरी है जो उसे वर्तमान स्वरूप के पहले मिला हुआ था.

समझ में न आनेवाली भाषा, बिना रोशनी की लॉलटेन है.

—अज्ञात

سے سمبندھ رکھنے والی ۔ جب وہاں دقت نہیں ہوئی تو یہاں دقت کیوں ہوتی ؟

یہ کہکر پرانی بات کا رونا نہیں رونا ہے ۔ جو ہو چکا' وہ ہو چکا ۔ لوگ اُس سے سبق لیں' اُس سے پاٹھ سیکھیں اور اپنے ہردے کو مضبوط بنائیں اور راشٹریہ سروپ والی ھندی کو اپناکر وہی کرانتی کر ڈالیں جو اب تک نہیں ہو پائی. راشٹر شبد میں بھی نیشن شبد کا پورا بھاؤ نہیں آتا. راشٹر کی جگہ نیشن شبد اپنا لیا جائے تو برا نہیں. اُردو کا قوم شبد جات کے معنی میں آنے لگا. وہ بھی کمزور پڑگیا ۔ انٹرنیشنل کی جگہ انتر قومی شبد خاصہ جم جاتا ہے پر اتنے سے کام نہیں چلتا ۔ نیشن شبد کے لئے کوئی زوردار شبد دینا ہی پڑیگا ۔ اگر 'جن من' شبد اپنا لیا جائے تو کیسا ہو—اس پر وچار کیا جاسکتا ہے ۔ اِس سے جن منی' جنمنا جن منیت' جن منیتا آدی انیک شبد بن سکتے ھیں ۔ مشکل صرف یہی ہے کہ ھندستان کی جنتا نہ کبھی نیشن تھی' اور نہ آج نیشن ہے ۔ یہ جنتا ھندو مسلمان تو ھوسکتی ہے' نیشن بننا اس کے لئے اب بھی دشکر ہے ۔ اِس کا کوئی نیشنل تہوار ہی نہیں ۔ یہ کسی نیشنل کام کے لئے مرنا ہی نہیں جانتی ۔ یہ تو بھارت کا سوبھاگیہ ہی ہے کہ اِنے گنے منچلوں نے ھندستان کو آزاد کرادیا ۔ نیشن بننے کے لئے نیشنل بھاشا ضروری ہے ۔ ھندی اگر راشٹریہ بھاشا ہونے کا دعوی رکھتی ہے تو وہ اُس سمے تک پکی دعویدار نہیں ہوسکتی جب تک ہر بھاشا بھاشی اُس کے لئے پران دان نہ دے' پھر چاہے اُن کی تعداد کتنی ہی کم کیوں نہ ہو ۔

اِس بلیدان کے بنا ھندی کا سروپ نہ طے ہوسکیگا' نہ سمجھ میں آسکیگا' نہ کھل سکیگا. نیشن بننے کے لئے راشٹر بھاشا کا سروپ کھل اُٹھنا بہت ضروری ہے ۔ اور راشٹر بھاشا کا سروپ کھل اُٹھنے کے لئے اُسے وہی اسیم اور کھلا میدان دینا ضروری ہے جو اُسے ورتمان سروپ کے پہلے ملا ہوا تھا ۔

سمجھ میں نہ آنے والی بھاشا' بنا روشنی کی لالٹین ہے ۔

—اگیات

झगड़े खड़े कर दिये. कोई कोई तो हिन्दी की जगह संस्कृत की आवाज़ उठाने लगे !! इधर पाकिस्तान में भी अरबी की बात चल पड़ी. इससे अंग्रेजी ने फ़ायदा उठाया और वह पाकिस्तान तथा हिंदुस्तान के सिर पर आज दिन तक लदी हुई है.

संविधान में दरवाज़ा खुला है. आज भी हिन्दी अगर अपने 'स्वरूप' को अपनाले तो अंग्रेज़ी से कई गुनी बलवाली बन सकती है, उसे आसानी से ऐसे उड़ा सकती है जिस तरह से बच्चा साबुन के बुलबुले को. इसके लिए उसे शब्द गढ़ने की भी ज़रूरत नहीं. आंख बंद करके सब पारिभाषिक अंग्रेज़ी शब्द अपनालेने से ही काम बन जाता है. पर उन शब्दों को उन्हीं बने बनाए रूप में अपनाना चाहिये जो रूप उन्हें कारख़ानों में मज़दूरों ने दिया है. उसे वह सब उर्दू शब्द भी अपनालेने चाहियें जो गांव गांव में फैल चुके हैं जैसे—पुलिस, टिकट, सिंगल (सिगनल), टेसन (स्टेशन), रेल, मजदूर, डाकघर, रेवेन्यू, ऐरिंग (इयर रिंग), फ़ारम (फ़ॉर्म), आबकारी, कचहरी, मुन्शी, तहसीलदार, दीवान, नमूना, बाज़ार, किताब, लायक, लगान सालाना, सरकारी, हिस्सा, जेल, रेडियो, मनीआर्डर (मनीऑर्डर), इंजन (ऐंजिन) गार्ड, क्लोरिन, प्रोटीन, ऐसेटिक ऐसिड, पोटेंशियल, कैलोरी, कारट (कार्ड), प्रोटोन, ऐम्पीयर, वोल्ट आदि आदि.

व्याकरण के मामले में सब सूबों या राज्यों को छूट दे देनी चाहिये कि वह ख़ास ख़ास मामलों को छोड़कर बाक़ी मामलों में लिंग की परवाह बिलकुल न करें. व्याकरण की झंझट में न पड़ें. जहां उन्हें हिन्दी शब्द न सूझे फट प्रांतीय शब्द लिख दें. इसी तरह के कुछ और नियमों के साथ कल से ही हिन्दी अंग्रेज़ी की जगह ले सकती है. अंग्रेज़ी जो हमारे सिर पर लदी हुई है उसमें आपसी झगड़ा तो कारण है ही, एक कारण और भी हुआ. हिन्दुस्तान आज़ाद तो हो गया, अंग्रेज़ चले गये, हुकूमत भारतियों के हाथ में आ गई पर हुआ यह सब समझौते से. क्रांति कहां हुई ? कारण यह है कि क्रांति का प्रणेता गांधी आज़ादी मिलने के बाद बहुत जल्द चल बसा और उसके अभाव में हम और क्रांति ख़ुद अंधेरे में भटक गये. अगर क्रांति का प्रणेता ज़िंदा रहता तो अब तक क्रांति हो गई होती और अंग्रेज़ी हिन्दुस्तान में न रह सकती और अपने आप हिन्दी यानी हिन्दुस्तानी हुकूमत के सब काम संभाल लेती और इस तरह राष्ट्रभाषा के स्वरूप के झगड़े खड़े न होते.

नेता जी की आज़ाद हिन्द फ़ौज में देश भर के आदमी थे. उनका काम अगर हिन्दुस्तानी से चल गया तो हमारा क्यों नहीं चल सकता ? आज़ाद हिन्द फ़ौजें तो ऐसे देश में भी काम कर रही थीं जहां की बोली न हिन्दी थी न हिन्दी

جھگڑے کھڑے کردئے. کوئی کوئی تو ھندی کی جگہ سنسکرت کی آواز اُٹھانے لگے !! اِدھر پاکستان میں بھی عربی کی بات چل پڑی. اس سے انگریزی نے فائدہ اُٹھایا اور وہ پاکستان تتھا ھندستان کے سر پر آج دن تک لدی ہوئی ہے.

سمودھان میں دروازہ کھلا ہے. آج بھی ھندی اگر اپنے 'سروپ' کو اپنا لے تو انگریزی سے کئی گنی بل والی بن سکتی ہے، اُسے آسانی سے ایسے اُڑا سکتی ہے جس طرح سے بچہ صابن کے بلبلے کو. اس کے لئے اُسے شبد گڑھنے کی بھی ضرورت نہیں. آنکھ بند کرکے سب پریبھاشک انگریزی شبد اپنالینے سے ہی کام بن جاتا ہے. پر اُن شبدوں کو اُنھیں بنے بنائے روپ میں اپنانا چاھئے جو روپ اُنھیں کارخانوں میں مزدوروں نے دیا ہے. اُسے وہ سب اُردو شبد بھی اپنا لینے چاھئیں جو گاؤں گاؤں میں پھیل چکے ہیں جیسے—پولیس' ٹکٹ' سنگل (سگنل)' ٹیسن (اسٹیشن)' ریل' مزدور' ڈاک گھر' ریونیو' ایرنگ (ایر رنگ) فارم (فارم) آبکاری' کچہری' منشی' تحصیلدار' دیوان' نمونہ' بازار' کتاب' لایق' لگان' سالانہ' سرکاری' حصہ' جیل' ریڈیو' منی آڈر' (منی آرڈر) انجن' (اینجن) گارڈ' کلورن' پروٹین' اسٹیک ایسڈ پوٹینشیل' کلوری کارٹ (کارڈ) پروتون' امپیر' وولٹ آدی آدی.

ویاکرن کے معاملے میں سب صوبوں یا راجیوں کو چھوٹ دے دینی چاھئے کہ وہ خاص خاص معاملوں کو چھوڑکر باقی معاملوں میں لنگ کی پرواہ بالکل نہ کریں. ویاکرن کی جھنجھٹ میں نہ پڑیں. جہاں اُنھیں ھندی شبد انھیں نہ سوجھے جھٹ پرانتیہ شبد لکھ دیں. اسی طرح کے کچھ اور نیموں کے ساتھ کل سے ہی ھندی انگریزی کی جگہ لے سکتی ہے. انگریزی جو ھمارے سر پر لدی ہوئی ہے اُس میں آپسی جھگڑا تو کارن ہے ہی' ایک کارن اور بھی ہوا. ھندستان آزاد تو ہوگیا' انگریز چلے گئے' حکومت بھارتیوں کے ھاتھ میں آگئی پر ہوا یہ سب سمجھوتے سے. کرانتی کہاں ہوئی ؟ کارن یہ ہے کرانتی کا پرنیتا گاندھی آزادی ملنے کے بعد بہت جلد چل بسا اور اس کے ابھاؤ میں ہم اور کرانتی خود اندھیرے میں بھٹک گئے. اگر کرانتی کا پرنیتا زندہ رہتا تو اب تک کرانتی ہوگئی ہوتی اور انگریزی ھندستان میں نہ رہسکتی اور اپنے آپ ھندی یعنی ھندستانی حکومت کے سب کام سنبھال لیتی اور اس طرح راشٹر بھاشا کے سروپ کے جھگڑے کھڑے نہ ہوتے.

نیتا جی کی آزاد ھند فوج میں دیش بھر کے آدمی تھے. اُن کا کام اگر ھندستانی سے چل گیا تو ھمارا کیوں نہیں چل سکتا ؟ آزاد ھند فوجیں تو ایسے دیش میں بھی کام کر رہی تھیں جہاں کی بولی نہ ھندی تھی نہ ھندی

जब कोई भाषा एक शब्द अपना लेती है तब उसे यह कहना कि वह दूसरी भाषा का शब्द है, उस शब्द के साथ अन्याय करना है. टोपी और रोटी को पुर्तगाली शब्द बताना भूल नहीं तो और क्या है ? आज तो वह ठेठ हिंदी शब्द हैं, कभी रहे होंगे पुर्तगाली. मेंगो शब्द को हम अंग्रेजी शब्द कहते हैं और अंग्रेजी डिक्शनरी बताती है कि यह हिंदुस्तानी शब्द है. दक्खिन में आम को मंगूक्कम् कहते हैं. यही मंगू अंग्रेजी डिक्शनरी में मेंगो बन गया. जो जो विदेशी शब्द हिंदी ने अपना लिए उनको आत्मसात कर लिया वह अब हिंदी के हो गये. जिसको इन शब्दों के बाइकाट की सूझती है उसकी बुद्धि पर हमें तरस आता है.

अंग्रेजी के अंक 1, 2, 3, 4......9,0 सब अंग्रेजी में अरबी अंक माने जाते हैं, क्योंकि अंग्रेजों ने उनको अरब वालों से सीखा. अरब में यही एक, दो, तीन......हिंदसे कहलाते हैं, क्योंकि अरबों ने इन्हें हिंद से सीखा. हिंदुस्तान की यह देन मामूली देन नहीं है. अब अंग्रेजी के 1, 2, 3, ...सारी दुनिया में फैलकर अंतर्राष्ट्रीय बन गए हैं. विधान ने यह पास भी कर दिया है कि इन अंतर्राष्ट्रीय अंकों को अंतर्राष्ट्रीय रूप के साथ सारा हिंदुस्तान अपनाले. पर हिंदी भाषाभाषी हैं कि अड़े हैं अपनी जिद पर. एक तरह से ये अंक हिंदुस्तान के कोने कोने में पहुंच चुके. गणित की किताबों में हिंदी अंक न रहकर यह अंतर्राष्ट्रीय अंक ही रहने लगे हैं फिर भी इस पर वाद विवाद चल रहा है. भाषा का 'स्वरूप' भी उस समय तक अपना सच्चा रूप न ले पायेगा जब तक यह छोटी मोटी कमियां हिंदी भाषाभाषियों से दूर नहीं होतीं.

हिंदी भाषाभाषी अगर थोड़े उदार होते तो स्वराज्य के साथ ही साथ अंग्रेजों के साथ अंग्रेजी भी लद गई होती और उसकी जगह आज हिंदुस्तानी होती. पर हिंदी-हिंदुस्तानी और उर्दू-हिंदुस्तानी के झगड़े ने अंग्रेजी को हमारे सिर पर लादे रखा और इन झगड़ों टंटों के साथ न जाने यह कब तक लदी रहेगी.

हिंदुस्तान में बहुत कम समझी जाने वाली और नाम मात्र के लिए लिखने में काम आनेवाली अंग्रेजी अगर मुग़लों की बादशाही खत्म होने के दूसरे दिन से ही हिंदुस्तानी सरकार की दफ्तरी भाषा बनकर हिंदुस्तान पर राज कर सकती है और चैन की बंसी बजा सकती है तो वही काम 16 अगस्त सन 1947 को हिंदी क्यों नहीं कर सकती थी, जबकि वह सारे देश में समझी जाती थी और हिंदुस्तान की आधी आबादी उसकी लिखावट को भी जानती थी ? यह सिर्फ इसी वजह से न हो सका कि हम उस समय आपस में सिर फोड़ने में लगे थे और महात्मा गांधी की बात सुनने के लिए तैयार न थे. जब ज़रा दम लिया तब भाषा के दूसरे

جب کوئی بھاشا ایک شبد اپنا لیتی ھے تب اُسے یہ کہنا کہ وہ دوسری بھاشا شبد ھے، اُس شبد کے ساتھ انیائے کرنا ھے. ٹوپی اور روٹی کو پرتگالی شبد بتانا بھول نہیں تو اور کیا ھے ؟ آج تو وہ ٹھیٹھ ھندی شبد ھیں، کبھی رھیں ھوں گے پرتگالی. مینگو شبد کو ھم انگریزی شبد کہتے ھیں اور انگریزی ڈکشنری بتاتی ھے کہ یہ ھندستانی شبد ھے. دکھن میں آم کو منگوپھلم کہتے ھیں . یہی منگو انگریزی ڈکشنری میں مینگو بن گیا . جو جو ودیشی شبد ھندی میں اپنا لئے اور اُن کو آتمسات کرلیا وہ اب ھندی کے ھوگئے . جس کو اِن شبدوں کے بائیکاٹ کی سوجھتی ھے اُس کی بدھی پر ھمیں ترس آتا ھے .

انگریزی کے انک 1,2,3,4.....9,0 سب انگریزی میں عربی انک مانے جاتے ھیں، کیونکہ انگریزوں نے اُن کو عرب والوں سے سیکھا . عرب میں یہی ایک، دو، تین.....ھندسے کہلاتے ھیں، کیونکہ عربوں نے انھیں ھند سے سیکھا . ھندستان کی یہ دین معمولی دین نہیں ھے. اب انگریزی کے 1,2,3, ... ساری دنیا میں پھیل کر انتر راشٹریہ بن گئے ھیں . ودھان نے یہ پاس بھی کردیا ھے کہ ان انتر راشٹریہ انکوں کو انتر راشٹریہ روپ کے ساتھ سارا ھندستان اپنا لے . پر ھندی بھاشا بھاشی ھیں کہ اڑے ھیں اپنی ضد پر . ایک طرح سے یہ انک ھندستان کے کونے کونے میں پہونچ چکے . گنت کی کتابوں میں ھندی انک نہ رہ کر یہ انتر راشٹریہ انک ھی رھنے لگے ھیں پھر بھی اس پر واد وواد چل رھا ھے . بھاشا کا 'سروپ' بھی اُس سمے تک اپنا سچا روپ نہ لے پائیگا جب تک یہ چھوٹی موٹی کمیاں ھندی بھاشا بھاشیوں سے دور نہیں ھوتیں .

ھندی بھاشا بھاشی اگر تھوڑے اُدار ھوتے تو سوراج کے ساتھ ھی ساتھ انگریزوں کے ساتھ انگریزی بھی لدگئی ھوتی اور اُس کی جگہ آج ھندستانی ھوتی . پر ھندی ھندستانی اور اُردو ھندستانی کے جھگڑے نے انگریزی کو ھمارے سر پر لادے رکھا اور اِن جھگڑوں ٹنٹوں کے ساتھ نہ جانے یہ کب تک لدی رھیگی .

ھندستان میں بہت کم سمجھی جانے والی اور نام ماتر کے لئے لکھنے میں کام آنے والی انگریزی اگر مغلوں کی بادشاھی ختم ھونے کے دوسرے دن سے ھی ھندستانی سرکار کی دفتری بھاشا بن کر ھندستان پر راج کرسکتی ھے اور چین کی بنسی بجا سکتی ھے تو وھی کام 16 اگست سن 1947 کو ھندی کیوں نہیں کرسکتی تھی، جب کہ وہ سارے دیش میں سمجھی جاتی تھی اور ھندستان کی آدھی آبادی اُس کی لکھاوٹ کو بھی جانتی تھی ؟ یہ صرف اسی وجہ سے نہ ھوسکا کہ ھم اُس سمے آپس میں سر پھوڑنے لگے تھے اور مہاتما گاندھی کی بات سننے کے لئے تیار نہ تھے. جب ذرا دم لیا تب بھاشا کے دوسرے

एक बार एयरकन्डीशन्ड डब्बे में बैठे हुए कुछ पंडित 'एयरकन्डीशन्ड' के लिए हिन्दी शब्द ढूंढ रहे थे. घंटों मगज़ मारने पर भी वे ऐसा शब्द न खोज पाये जिस पर सब सहमत हो जाते. पर जैसे ही वह गाड़ी से नीचे उतरे और जैसे ही उन्होंने अपने चार बरस के बच्चे से किसी मामूली चीज़ के लिए पूछा कि वह कहां गई तो वह जवाब देता है— "वह तो ठंडीगाड़ी में वहीं गिर गई." पंडित एक दूसरे का मुंह ताकने लगे. बच्चे के पास उस 'एयरकन्डीशन्ड डब्बे' का शब्द हिन्दी के स्वरूप के अनुसार बना बनाया तैयार था.

जिस तरह आदमी पूरा बना है वैसे ही हर भाषा अपने आप में पूरी है. बंद करने से वही भाषा अधूरी हो जाती है. अंग्रेज़ी की डिक्शनरी का शायद ही कोई ऐसा सफ़ा मिले जिसमें दो चार हिन्दुस्तानी शब्द न हों. मगर होंगे वही जो अंग्रेज़ों को बोलने में आसान पड़ें और जो उसी के मुक़ाबले के अंग्रेज़ी शब्द से हर तरह छोटे और सुगम हों.

हिन्दी का 'स्वरूप' अंग्रेज़ी राज्य के समय की बनी हुई किताबों में बहुत कम देखने को मिलेगा. इसका कारण यह है कि हिन्दी में उन दिनों जितनी किताबें लिखीं गईं वह अधिकतर उर्दू को बाइकाट करके लिखी गईं. बाइकाट पॉलिसी का यह नतीजा हुआ कि हिन्दी के सब मुहावरे उर्दू वालों के हिस्से में आगये और हिन्दी वालों के लिए कुछ न बच रहे. अब हिन्दी का 'स्वरूप' कहां गया ? हिन्दी का स्वरूप देखने को मिलेगा उर्दू में, पर वहां वह मौलवियों की मदद से अरबी फ़ारसी शब्दों के ढेर में छिप गया. हिन्दी में भी हिन्दी के स्वरूप के दर्शन हो सकते हैं पर वह सब मिलेगा पद्य पुस्तकों में. जितने हिंदी कवि हुए हैं उनमें से किसी को पढ़ जाइये. और तो और मुसलमान कवि रसखान को ले लीजिये. उसके कवित्त में जो 'स्वरूप' लिए हुए हिंदी मिलेगी वह अंग्रेज़ों के ज़माने की हिंदी की गद्य पुस्तकों में नहीं मिलेगी. फ़ारसी अरबी का आवरण हटाकर अगर उर्दू की गद्य पुस्तकें पढ़ी जांय तो हिंदी का स्वरूप वहां भी देखने को मिल जायेगा. रसखान के ये रस भरे शब्द देखिये—

कहालौं सयानी चंद हाथन छिपायबो
आजहीं निहारो बीर, निपट कलिंदी तीर
दोऊनको दोऊन ते मुख मुसकायबो
दोनों परैं पइयां, दोऊ लेत हैं बलैया
इन्हें भूल गई गइयां, उन गागर उठायबो ॥

चांद को हाथ से छिपाना मुहावरा है. बलैयां लेना मुहावरा है. भूल गईं गइयां, मुहावरा है. यह सब मुहावरे उर्दू में मिलेंगे. और तो और, मुहावरा शब्द के लिए विशुद्ध हिंदी की दुहाई देने वालों के पास दूसरा शब्द भी नहीं है. आश्चर्य है इन्होंने "मुहावरा" का बाइकाट नहीं किया !! मुहावरा तो अरबी शब्द है.

ایک بار ایر کنڈیشنڈ ڈبے میں بیٹھے ہوئے کچھ پنڈت 'ایر کنڈیشنڈ' کے لئے ہندی شبد ڈھونڈھ رہے تھے . گھنٹوں مغز مارنے پر بھی وے ایسا شبد وہ نہ کھوج پائے جس پر سب سہمت ہو جاتے . پر جیسے ہی وہ گاڑی سے نیچے اُترے اور جیسے ہی انہوں نے اپنے چار برس کے بچے سے کسی معمولی چیز کے لئے پوچھا کہ وہ کہاں گئی تو وہ جواب دیتا ہے—"وہ تو ٹھنڈی گاڑی میں وہیں گر گئی." پنڈت ایک دوسرے کا منھ تاکنے لگے. بچے کے پاس اُس 'ایر کنڈیشنڈ ڈبے' کا شبد ہندی کے سروپ کے انوسار بنا بنایا تیار تھا .

جس طرح آدمی پورا بنا ہے ویسے ہی ہر بھاشا اپنے آپ میں پوری ہے . بند کرنے سے وہی بھاشا ادھوری ہو جاتی ہے . انگریزی کی ڈکشنری کا شاید ہی کوئی ایسا صفحہ ملے جس میں دو چار ہندستانی شبد نہ ہوں . مگر ہوں گے وہی جو انگریزوں کو بولنے میں آسان پڑیں اور جو اُسی کے مقابلے کے انگریزی شبد سے ہر طرح چھوٹے اور سگم ہوں .

ہندی کا سروپ انگریزی راجیہ کے سمے کی بنی ہوئی کتابوں میں بہت کم دیکھنے کو ملیگا . اِس کا کارن یہ ہے کہ ہندی میں اُن دنوں جتنی کتابیں لکھی گئیں وہ ادھکتر اُردو کو بائیکاٹ کرکے لکھی گئیں . بائیکاٹ پالیسی کا یہ نتیجہ ہوا کہ ہندی کے سب محاورے اُردو والوں کے حصے میں آگئے اور ہندی والوں کے لئے کچھ نہ بچ رہے. اب ہندی کا 'سروپ' کہاں گیا ؟ ہندی کا سروپ دیکھنے کو ملیگا اُردو میں' پر وہاں وہ مولویوں کی مدد سے عربی فارسی کے ڈھیر میں چھپ گیا. ہندی میں بھی ہندی کے سروپ کے درشن ہوسکتے ہیں پر وہ سب ملیگا پدیہ پستکوں میں . جتنے ہندی کوی ہوئے ہیں اُن میں سے کسی کو پڑھ جائیے . اور تو اور مسلمان کوی رسکھان کو لے لیجئے . اُس کے کبت میں جو 'سروپ' لئے ہوئے ہندی ملے گی وہ انگریزوں کے زمانے کی ہندی کی گدیہ پستکوں میں نہیں ملے گی . فارسی عربی کا آورن ہٹاکر اگر اُردو کی گدیہ پستکیں پڑھی جائیں تو ہندی کا سروپ وہاں بھی دیکھنے کو مل جائیگا . رسکھان کے یہ رس بھرے شبد دیکھئے—

کہالوں سیانی چند ہاتھن چھپائبو;
آج ہوں نہارو ویر' نپٹ کلندی تیر
دوؤن کو دوؤن تے مکھ مسکایبو
دونوں پریں پیاں' دوؤ لیت ہیں بلیاں
انہیں بھول گئی گئیاں' اُن گاگر اُٹھائبو.

چاند کو ہاتھ سے چھپانا محاورہ ہے . بلیاں لینا محاورہ ہے . بھول گئی گئیاں' محاورہ ہے . یہ سب محاورے اُردو میں ملیں گے . اور تو اور' محاورہ شبد کے لئے وشدھ ہندی کی دوہائی دینے والوں کے پاس دوسرا شبد ہی نہیں ہے . آشچریہ ہے اِنہوں نے "محاورہ" کا بائیکاٹ نہیں کیا !! محاورہ تو عربی شبد ہے .

लिये फ़ारसी पढ़ना ज़रूरी हो गया; अरबी की जानकारी ज़रूरी हो गई. इधर हिन्दी को वह रूप दिया जिसके लिये संस्कृत पढ़ना ज़रूरी हो गया. आज जिस तरह की हिन्दी चल रही है और राष्ट्रभाषा का जो रूप हमारे सामने आ रहा है वह ऐसा ही है जो बग़ैर दूसरी भाषा को सीखे पूरा पूरा नहीं समझा जा सकता और यही कहलाता है भाषा के स्वरूप को बिगाड़ना.

भाषा के स्वरूप के बने रहने में सब से बड़ा फ़ायदा यह है कि वह सरल बनी रहेगी, लोकशाही के काम की होगी. उसके फैलने में सुभीता होगा. नेताओं के पैदा करने में तो वह पूरी तरह ऐसी फलदायक सिद्ध होगी, जैसे हरियाली के पैदा करने में बरसात. सन 1921 में कांग्रेस ने जैसे ही अंगरेज़ी की जकड़ को ढीला किया वैसे ही हिन्दी ने सारे हिन्दुस्तान पर अपनी हुकूमत जमा दी और तीन महीने के अन्दर बारह बारह बरस के लड़के जगह जगह नेता बन बैठे और राजनीतिक मामलों में ऐसे ऊंचे दर्जे के व्याख्यान देने लगे जितने ऊंचे दर्जे के व्याख्यान वह ग्रेजुएट भी नहीं दे सकते थे जो बरसों से कांग्रेस की सेवा करते आ रहे थे. अगर गांधी जी ने हिन्दी को यह छूट न दी होती तो क्या कुछ ही महीनों में देश के कोने कोने में स्वराज की बात फैलाई जा सकती थी? सन 1921 मे साल भर में स्वराज देने की प्रतिज्ञा गांधी जी ने की थी. इसके लिये ज़रूरी था कि हिन्दी का 'स्वरूप' क़ायम रखा जाये, नहीं तो साल भर में किसी और दूसरी भाषा के ज़रिये से स्वराज शब्द भी हिन्दुस्तान के कोने कोने में नहीं पहुंचाया जा सकता था.

पंजाबियों ने टाइपिस्ट के लिए शब्द बनाया है— टपटपिया. यह है पंजाबी भाषा का स्वरूप. कितना छोटा और मीठा शब्द बना! गहरा सोचने पर यह तरीक़ा यह भी बताता है कि हमारे ऋषि मुनि इसी तरह शब्द बनाते थे. संस्कृत की बहुत सी धातुएं इसी तरह बनीं. यही हाल लेटिन और ग्रीक का है और यही हाल हिन्दी का है. हिन्दी के शब्द काका, बाबा, चाचा, दादा, नाना कितने आसान और प्यारे शब्द हैं. ऐसे मालूम होते हैं मानों किसी बच्चे ने बनाए हों और अजब नहीं ये बच्चों ही के बनाए हुए हों. हमारे बच्चे बिना सिखाये पानी को पापा कहने ही तो लगते हैं! पंजाबी का 'टपटपिया' शब्द भी हिन्दी वाले अपनालें तो कितना अच्छा हो. पर जिन पंडितों के सिरों में पंडिताऊ शब्दों ने ही जगह ले रखी है वह इस 'टपटपिया' शब्द को कब पास फटकने देंगे?

पंजाबियों का 'शॉर्ट हैन्ड' के लिये शब्द है 'खिचिमिचि'. पर हिन्दी में शॉर्टहैन्ड के लिए है संस्कृत से उधार लिया शीघ्रलिपि, आशुलिपि, हस्तलाघव इत्यादि!

لئے فارسی پڑھنا ضروری ہوگیا؛ عربی کی جانکاری ضروری ہوگئی. ادھر ہندی کو وہ روپ دیا جس کے لئے سنسکرت پڑھنا ضروری ہو گیا. آج جسطرح کی ہندی چل رہی ہے اور راشٹر بھاشا کا جو روپ ہمارے سامنے آ رہا ہے وہ ایسا ہی ہے جو بغیر دوسری بھاشا کو سیکھے پورا پورا نہیں سمجھا جاسکتا اور یہی کہلاتا ہے بھاشا کے سروپ کو بگاڑنا.

بھاشا کے سروپ کے بنے رہنے میں سب سے بڑا فائدہ یہ ہے کہ وہ سرل بنی رہے گی، لوک شاہی کے کام کی ہوگی. اس کے پھیلنے میں سوبھیتا ہوگا. نیتاؤں کے پیدا کرنے میں تو وہ پوری طرح ایسی پھل دائک سدھ ہوگی، جیسے ہریالی کے پیدا کرنے میں برسات. سن 1921 میں کانگریس نے جیسے ہی انگریزی کے جکڑ کو ڈھیلا کیا ویسے ہی ہندی نے سارے ہندستان پر اپنی حکومت جما دی اور تین مہینے کے اندر بارہ بارہ برس کے لڑکے جگہ جگہ نیتا بن بیٹھے اور راجنیتک معاملوں میں ایسے اونچے درجے کے ویکھیان دینے لگے جتنے اونچے درجے کے ویاکھیان وہ گریجویٹ بھی نہیں دے سکتے تھے جو برسوں سے کانگریس کی سیوا کرتے آ رہے تھے. اگر گاندھی جی نے ہندی کو یہ چھوٹ نہ دی ہوتی تو کیا کچھ ہی مہینوں میں دیش کے کونے کونے میں سوراج کی بات پھیلائی جا سکتی تھی؟ سن 1921 میں سال بھر میں سوراج دینے کی پرتگیا گاندھی جی نے کی تھی. اس کے لئے ضروری تھا کہ ہندی کا 'سروپ' قائم رکھا جائے، نہیں تو سال بھر میں کسی اور دوسری بھاشا کے ذریعہ سے سوراج شبد بھی ہندستان کے کونے کونے میں نہیں پہونچایا جا سکتا تھا.

پنجابیوں نے ٹائپسٹ کے لئے شبد بنایا ہے— ٹپ ٹپیا. یہ ہے پنجابی بھاشا کا سروپ. کتنا چھوٹا اور میٹھا شبد بنا! گہرا سوچنے پر یہ طریقہ یہ بھی بتاتا ہے کہ ہمارے رشی منی اسی طرح شبد بناتے تھے. سنسکرت کی بہت سی دھاتوئیں اسی طرح بنیں. یہی حال لیٹن اور گریک کا ہے اور یہی حال ہندی کا ہے. ہندی کے شبد کاکا، بابا، چاچا، دادا، نانا کیسے آسان اور پیارے شبد ہیں. ایسے معلوم ہوتے ہیں مانو کسی بچے نے بنائے ہوں اور عجب نہیں یہ بچوں ہی کے بنائے ہوئے ہوں. ہمارے بچے بنا سکھائے پانی کو پاپا کہنے ہی تو لگتے ہیں! پنجابی کا 'ٹپ ٹپیا' شبد بھی ہندی والے اپنالیں تو کتنا اچھا ہو. پر جن پنڈتوں کے سروں میں پنڈتاؤ شبدوں نے ہی جگہ لے رکھی ہے وہ اس 'ٹپ ٹپیا' شبد کو کب پاس پھٹکنے دیںگے؟

پنجابیوں کا 'شارٹ ہینڈ' کے لئے شبد ہے 'کھچی مچی'. پر ہندی میں شارٹ ہینڈ کے لئے ہے سنسکرت سے ادھار لیا شیگھرلپی، آشولپی، ہست لاگھو اتیادی!

(प्रत्यय) की मदद से अनेक मानों में मिल जाते हैं और मूल शब्द के रूप को बिगड़ने नहीं देते. ऐसी सिफ़त संस्कृत भाषा को प्राप्त है. बस वे संस्कृत पर मुग्ध हो गये और उन्होंने उसकी मदद से संविधान गढ़ डाला. उन्हें यह तक याद न रहा कि संविधान में ही एक ऐसी धारा मौजूद है जो उन्हें ऐसा करने से रोकती है !! अनुवादकों से उस हिन्दी में अनुवाद चाहा गया था जो उत्तर भारत में बोली और समझी जाती है और अनुवाद हुआ उस भाषा में जो कहीं भी बोली समझी नहीं जाती !!

यह पंडिताऊ भाषा अगर संविधान तक ही सीमित रहती तो कुछ बुरा न होता. यह तो प्लेग की तरह हर क्षेत्र में अपने पांव बढ़ाने लगी और जो संविधान में ही ठीक ठीक न समा पाई थी वह राष्ट्रभाषा बनकर देश भर में समाने की सोचने लगी. यह एक तरह से हिन्दी भाषा के स्वरूप पर ही आघात करना था.

पाणिनी ने संस्कृत के लिये व्याकरण रचा है, शब्द नहीं गढ़े हैं. वैयाकरण शब्द नहीं गढ़ा करते. वह तो सिर्फ़ उन नियमों को इकट्ठा कर देते हैं जो किसी भाषा में काम आ रहे हों. अनुवादक वैसा नहीं करता. उसे कहीं कहीं शब्द बनाने भी पड़ते हैं. उसे चाहिये कि वह उसी भाषा के शब्द भंडार और नियमों से काम ले जिस भाषा में उसे अनुवाद करने के लिये कहा जाये. संविधान के बारे में ऐसा नहीं हुआ. अनुवाद हिन्दी में किया गया, मदद संस्कृत शब्दों और संस्कृत व्याकरण से ली गई. यह भाषा के साथ जबरदस्त अन्याय हो गया. हो गया तो हो गया, पर इससे भी बड़ी मुश्किल यह हो गई कि अन्याय खुद समय का नियम बन बैठा और अब हिन्दी भाषा 'स्वरूप' को ही छोड़, 'पर रूप' लेकर कुरूप बनने पर उतर आई. फिर तो भाषा के स्वरूप का सवाल छिड़ना ही था.

किसी भाषा के स्वरूप को बनाये रखने के लिये यह बहुत जरूरी है कि जो विदेशी शब्द अपनाये जायें या जो भी शब्द बाहर से लिये जायें वह सब के सब आकार प्रकार और ध्वनि में ऐसे तो हो ही जायें जो उस भाषा में पराये होकर न चमकें, नहीं तो वह कांटे की तरह खटकेंगे. दूसरे यह भी खयाल रखना पड़ेगा कि विदेशी शब्द विदेशी व्याकरण लेकर तो नहीं घुस गये ? क्योंकि ऐसा होने से भाषा का स्वरूप तो बिगड़ेगा ही, भाषा क्लिष्ट भी हो जायेगी.

राष्ट्रभाषा का स्वरूप बनाये रखने के लिये यह भी जरूरी है कि भाषा ऐसी न होने पाये जिसे सीखने के लिये कोई दूसरी भाषा और सीखनी पड़े. अंगरेज़ों ने हिन्दुस्तानी भाषा के साथ यही तो जुल्म किया. एक ओर उन्होंने उर्दू छोड़ी और उसको वह रूप दिया जिसको समझने के

(پرتیہ) کی مدد سے انیک معنوں میں مل جاتے ھیں اور مول شبد کے روپ کو بگڑنے نہیں دیتے . ایسی صفت سنسکرت بھاشا کو پراپت ھے . بس وہ سنسکرت پر مگدھ ھوگئے اور انھوں نے اُس کی مدد سے سمودھان گڑھ ڈالا . انھیں یہ تک یاد نہ رہا کہ سمودھان میں ھی ایک ایسی دھارا موجود ھے جو انھیں ایسا کرنے سے روکتی ھے !! انوادکوں سے اُس ھندی میں انواد چاھا گیا تھا جو اُتر بھارت میں بولی اور سمجھی جاتی ھے اور انواد ھوا اس بھاشا میں جو کہیں بھی بولی، سمجھی نہیں جاتی !!

یہ پنڈتاؤ بھاشا اگر سمودھان تک ھی سیمت رھتی تو کچھ برا نہ ھوتا . یہ تو پلیگ کی طرح ھر چھیتر میں اپنے پاؤں بڑھانے لگی اور جو سمودھان میں ھی ٹھیک ٹھیک نہ سما پائی تھی وہ راشٹر بھاشا بن کر دیش بھر میں سمانے کی سوچنے لگی . یہ ایک طرح سے ھندی بھاشا کے سروپ پر ھی آگھات کرنا تھا .

پانِنی نے سنسکرت کے لئے ویاکرن رچا ھے' شبد نہیں گڑھے ھیں . ویاکرن شبد نہیں گڑھا کرتے . وہ تو صرف اُن نیموں کو اکٹھا کر دیتے ھیں جو کسی بھاشا میں کام آ رھے ھوں . انوادک ویسا نہیں کرتا . اُسے کہیں کہیں شبد بنانے بھی پڑتے ھیں . اُسے چاھئے کہ وہ اُسی بھاشا کے شبد بھنڈار اور نیموں سے کام لے جس بھاشا میں اُسے انواد کرنے کے لئے کہا جائے. سمودھان کے بارے میں ایسا نہیں ھوا . انواد ھندی میں کیا گیا' مدد سنسکرت شبدوں اور سنسکرت ویاکرن سے لی گئی . یہ بھاشا کے ساتھ زبردست انیائے ھوگیا . ھوگیا تو ھوگیا' پر اُس سے بھی بڑی مشکل یہ ھوگئی کہ انیائے خود سمے کا نیم بن بیٹھا اور اب ھندی بھاشا ' سروپ ' کو ھی چھوڑ ' پرروپ ' لے کر کوروپ بننے پر اتر آئی. پھر تو بھاشا کے سروپ کا سوال چھڑنا ھی تھا .

کسی بھاشا کے سروپ کو بنائے رکھنے کے لئے یہ بہت ضروری ھے کہ جو ودیشی شبد اپنائے جائیں یا جو بھی شبد باھر سے لئے جائیں وہ سب کے سب آکار پرکار اور دھونی میں ایسے تو ھو ھی جائیں جو اس بھاشا میں پرائے ھو کر نہ چمکیں' نہیں تو وہ کانٹے کی طرح کھٹکیں گے . دوسرے یہ بھی خیال رکھنا پڑے گا کہ ودیشی شبد ودیشی ویاکرن لیکر تو نہیں گھس گئے ؟ کیونکہ ایسا ھونے سے بھاشا کا سروپ تو بگڑے گا ھی' بھاشا کلشٹ بھی ھو جائیگی .

راشٹر بھاشا کا سروپ بنائے رکھنے کے لئے یہ بھی ضروری ھے کہ بھاشا ایسی نہ ھونے پائے جسے سیکھنے کے لئے کوئی دوسری بھاشا اور سیکھنی پڑے . انگریزوں نے ھندستانی بھاشا کے ساتھ یہی تو ظلم کیا . ایک اور اُنھوں نے اردو چھوڑی اور اُس کو وہ روپ دیا جسکو سمجھنے کے

संविधान बेवक्त बना. यही हाल पार्लिमेन्ट का हुआ. वह भी बेवक्त बनी पर ऐसा हुये बिना हिन्दुस्तान आजाद भी नहीं हो सकता था. जिस तरह दांत साफ करने के लिये दांतों को और काला करना पड़ता है, जिस तरह बरतनों को साफ़ करने के लिये उनको मटियाना पड़ता है उसी तरह हिन्दुस्तानियों को अंगरेजों के राज की गन्दगी दूर करने के लिये इन संविधान और पार्लियामेन्ट से काम लेना पड़ा. हिन्दुस्तान का संविधान यानी हिन्दुस्तान की जनता का संविधान अंगरेजी में कैसा ? हिन्दुस्तान की किसी भाषा में होना चाहिये था. हिन्दुस्तान में एक भाषा ऐसी थी जो थोड़ी बहुत हर जगह समझी जाती थी. पार्लिमेन्ट के उन इने गिने लोगों के लिये, जो उस भाषा को नहीं समझते थे, अंगरेजी में अनुवाद करके समझाया जा सकता था. पर यह सीधा रास्ता न अपनाकर अंगरेजी में संविधान रचकर टेढ़ा रास्ता क्यों अपनाया गया ? इसका जवाब सीधा- सादा है. हम भारतवासियों की गर्दन बर्तानिया के पंजे में फंसी हुई थी. संविधान उतना हमें समझाने के लिये नहीं बना जितना उस बर्तानिया के समझाने के लिये जिसके पंजे में हमारी गर्दन थी.

अगर हमारा संविधान हिन्दी में तैयार हुआ होता तो भाषा के स्वरूप का सवाल ही न उठता. यह सवाल तो उठाया उस अनुवाद ने जो अंगरेजी के कांस्टीट्यूशन का सरकार की तरफ़ से किया गया. अंगरेजी का कांस्टीट्यूशन सामने आते ही पंडितों की बाछें खिल गयीं और उन्होंने ऐसी तरकीब निकाल ली कि वह ग़लत सलत जो कुछ भी लिख दें वेद वाक्य की तरह प्रमाण माना जाये. इसलिये उन्होंने ऐसी भाषा का सहारा लिया जिसे पार्लिमेन्ट का शायद ही कोई मेम्बर ठीक ठीक समझता हो. कुछ लोगों का यह कहना है कि जिसने संविधान हिन्दी मे अनुवाद किया है वह अगर उसी अनुवादित हिन्दी से फिर से अंगरेजी में अनुवाद करके दिखला दे तो वह हजारों की शर्त लगाने के लिये तैयार हैं ! हमारा यह ख़याल है कि उनकी इस चुनौती को अनुवादक स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं.

बी०बी०सी० से एक बार किसी फ़्रान्सीसी ड्रामा का हिन्दी अनुवाद ब्राडकास्ट हुआ था. अनुवादक का दावा था कि वह उस ड्रामा के सब रूपों को हिन्दुस्तानी में निभायेगा. यहां तक कि अनुप्रास की सुन्दरता को भी हाथ से नहीं जाने देगा. दो एक हफ़्ते उसने अच्छा निभाया पर आगे उसे हार माननी पड़ी और ख़ालिस हिन्दुस्तानी का सहारा लेना पड़ा. संविधान के अनुवादकों के सामने भी एक ऐसी ही टेढ़ी बात आ गई और वह थी अंगरेजी शब्दों की यह ख़ूबी कि वह प्रिफ़िक्स (उपसर्ग) और सफ़िक्स

سمودھان بے وقت بنا ۔ یہی حال پارلیمنٹ کا ہوا ۔ وہ بھی بے وقت بنی ۔ پر ایسا ہوئے بنا ہندستان آزاد بھی نہیں ہو سکتا تھا ۔ جسطرح دانت صاف کرنے کے لئے دانتوں کو اور کالا کرنا پڑتا ہے' جسطرح برتنوں کو صاف کرنے کے لئے اُن کو مٹیانا پڑتا ہے اِسی طرح ہندستانیوں کو انگریزوں کے راج کی گندگی دور کرنے کے لئے اِن سمودھان اور پارلیمنٹ سے کام لینا پڑا ۔ ہندستان کا سمودھان یعنی ہندستان کی جنتا کا سمودھان انگریزی میں کیسا ؟ ہندستان کی کسی بھاشا میں ہونا چاہئے تھا ۔ ہندستان میں ایک بھاشا ایسی تھی جو تھوڑی بہت ہر جگہ سمجھی جاتی تھی ۔ پارلیمنٹ کے اُن اِنے گنے لوگوں کے لئے' جو اُس بھاشا کو نہیں سمجھتے تھے' انگریزی میں انواد کر کے سمجھایا جا سکتا تھا ۔ پر یہ سیدھا راستہ نہ اپنا کر انگریزی میں سمودھان رچ کر ٹیڑھا راستہ کیوں اپنایا گیا ؟ اِس کا جواب سیدھا سادہ ہے ۔ ہم بھارت واسیوں کی گردن برطانیہ کے پنجے میں پھنسی ہوئی تھی ۔ سمودھان اتنا ہمیں سمجھانے کے لئے نہیں بنا جتنا اُس برطانیہ کے لئے جس کے پنجے میں ہماری گردن تھی ۔

اگر ہمارا سمودھان ہندی میں تیار ہوا ہوتا تو بھاشا کے سروپ کا سوال ہی نہ اُٹھتا ۔ یہ سوال تو اُٹھایا اُس انواد نے جو انگریزی کے کانسٹیٹیوشن کا سرکار کی طرف سے کیا گیا ۔ انگریزی کا کانسٹیٹیوشن سامنے آتے ہی پنڈتوں کی باچھیں کھل گئیں ۔ اور اُنہوں نے ایسی ترکیب نکالی کہ وہ غلط سلط جو کچھ بھی لکھ دیں وید واکیہ کی طرح پرمان مانا جائے ۔ اِس لئے اُنہوں نے ایسی بھاشا کا سہارا لیا جسے پارلیمنٹ کا شاید ہی کوئی ممبر ٹھیک ٹھیک سمجھتا ہو ۔ کچھ لوگوں کا یہ کہنا ہے کہ جس نے سمودھان ہندی میں انواد کیا ہے وہ اگر اسی انوادت ہندی سے پھر سے انگریزی میں انواد کر کے دکھلا دے تو وہ ہزاروں کی شرط لگانے کے لئے تیار ہیں ! ہمارا یہ خیال ہے کہ اُن کی اِس چنوتی کو انوادک سویکار کرنے کے لئے تیار نہیں ۔

بی ۔ بی ۔ سی ۔ سے ایک بار کسی فرانسیسی ڈرامہ کا ہندی انواد براڈکاسٹ ہوا تھا ۔ انوادک کا دعویٰ تھا کہ وہ اُس ڈرامہ کے سب روپوں کو ہندستانی میں نبھائے گا ۔ یہاں تک کہ انوپراس کی سندرتا کو بھی ہاتھ سے نہیں جانے دے گا ۔ دو ایک ہفتے اس نے اچھا نبھایا پر آگے اُسے ہار ماننی پڑی اور خالص ہندستانی کا سہارا لینا پڑا ۔ سمودھان کے انوادکوں کے سامنے بھی ایک ایسی ہی ٹیڑھی بات آگئی اور وہ تھی انگریزی شبدوں کی خوبی کہ وہ پریفکس (اُپسرگ) اور سافکس

जितनी वह मराठी में चमकती है उतनी औरों में नहीं. हिन्दी में भी यह ख़ासियत थी तभी तो रामायण में दो सौ पचास फ़ारसी शब्द इस तरह समा गये जिस तरह आटे में नमक, कि वह रस देते हैं पर अपना अस्तित्व खोये हुये हैं. हिन्दी की यह ख़ासियत उन लोगों ने खो दी जो शब्द और उच्चारण की शुद्धता पर जोर देने लगे. जब भाई को 'भ्राता', भानजे को 'भगनिज' और देवर को 'द्विवर' कहने की बीमारी चल पड़ेगी तो हिन्दी न जाने क्या रूप ले लेगी !

राष्ट्र भाषा का जो स्वरूप सारे हिन्दुस्तान में फैला वह यूं ही नहीं फैल गया. हिन्दी में लिखी अगर सब किताबें इकट्ठा की जायें और उनके आधार पर कोई व्याकरण तैयार किया जाये तो हज़ार पंडित भी हज़ार बरस की उमर लेकर हज़ार बरस में तैयार नहीं कर सकते. हिन्दी का लिंग भेद और हिन्दी के विशेषण बनाने की रीतियां कुछ ऐसी हैं जो व्याकरण बनाते समय क़ाबू से बाहर हो जाती हैं. यह हमारे शब्द नहीं हैं. उन व्याकरण बनाने वालों के शब्द हैं जिन्होंने इस काम में अपनी उम्र बिता दी है. हिन्दी की यह, चाहे इसे आज़ादी कहो, चाहे उच्छृंखलता, ऐसी चीज़ है जो हिन्दी के फैलने में बड़ी सहायक साबित हुई. ताश के पत्तों को ले लीजिये. इक्का, दुरी, तिरी, चौवा, पंजा, छक्का, सत्ता, अट्ठा, नहला, दहला—दस तक का कोई पत्ता व्याकरण के क़ायदे से नहीं बना. नहला, दहला साफ़ फ़ारसी शब्द हैं. इसे छोड़िये, इन्हीं के दूसरे रूप लीजिये—इक्की, दुक्की, तिक्की, चौका, पंजी, छक्की, सत्ती, अट्ठी, नहली, दहली. इसके और भी कई रूप हैं. छक्की चौसर में जाकर छकड़ी बन गई है. इक्का 'पौ' बन गया है. कहीं कहीं नहला, नौवा बोला जाता है और फिर लुत्फ़ यह कि इन सब रूपों को भी बिना सिखाये बच्चे इतनी जल्दी सीख लेते हैं कि सब दांत तले उंगली दबाते रह जाते हैं. विदेशी जहां हिन्दी का व्याकरण देखकर घबराता है वहां हिन्दी भाषियों में रहकर हिन्दी सीखने में सुख मानता है और बड़ी जल्दी सीख जाता है. यह हम अन्दाज़े से नहीं कह रहे. यह कुछ चीनियों, अमरीकियों और रूसियों के शब्द हैं और हैं कुछ यूरपवासियों के शब्द. उन्हीं का कहना है कि हिन्दी बोली तो है आसान पर हिन्दी व्याकरण मुश्किल.

असल में राष्ट्रभाषा की लोकशाही सिफ़त बनाये रखने के लिये हर एक आदमी का यह धर्म होना चाहिये कि वह उसके स्वरूप का ध्यान रखे. वह किसी तरह भी उसके "अपने रूप" को न बिगड़ने दे.

भाषा के स्वरूप को लेकर जो एक बड़ा तूफ़ान खड़ा हो गया है उसका कारण है हिन्दुस्तान का संविधान और उससे भी बढ़कर दूसरा कारण है हिन्दुस्तान की पार्लिमेन्ट.

جتنی وہ مراٹھی میں چمکتی ھے اتنی اوروں میں نہیں . ھندی میں بھی یہ خاصیت تھی تبھی تو رامائن میں دو سو پچاس فارسی شبد اِس طرح سما گئے جسطرح آٹے میں نمک' کہ وہ رس دیتے ھیں پر اپنا استتو کھوئے ھوئے ھیں . ھندی کی یہ خاصیت اُن لوگوں نے کھو دی جو شبد اور اچارن کی شدھتا پر زور دینے لگے . جب بھائی کو' بھراتا' بھانجے کو ' بھگ نج' اور دیور کو ' دوئیور ' کہنے کی بیماری چل پڑے گی تو ھندی نہ جانے کیا روپ لے لیگی !

راشٹر بھاشا کا جو سروپ سارے ھندستان میں پھیلا وہ یونہی نہیں پھیل گیا . ھندی میں لکھی اگر سب کتابیں اکٹھا کی جائیں اور اُن کے آدھار پر کوئی ویاکرن تیار کیا جائے تو ھزار پنڈت بھی ھزار برس کی عمر لیکر ھزار برس میں تیار نہیں کر سکتے . ھندی کا لنگ بھید اور ھندی کے وشیشن بنانے کی ریتیاں کچھ ایسی ھیں جو ویاکرن بناتے سمے قابو سے باھر ھو جاتی ھیں . یہ ھمارے شبد نہیں ھیں . ان ویاکرن بنانے والوں کے شبد ھیں جنھوں نے اس کام میں اپنی عمر بتا دی ھے . ھندی کی یہ' چاھے اِسے آزادی کہو' چاھے اُچھرنکھلتا' ایسی چیز ھے جو ھندی کے پھیلنے میں بڑی سہائک ثابت ھوئی . تاش کے پتوں کو لے لیجئے . اِکا' دری' تری' چوا' پنجہ' چھکا' ستا' اٹھا' نہلا' دھلا — دس تک کا کوئی پتہ ویاکرن کے قاعدے سے نہیں بنا . نہلا' دھلا' صاف فارسی شبد ھیں . اِسے چھوڑیے' انہیں کے دوسرے روپ لیجئے — اکی' دوکی' تکی' چوکی' پنجی' چھکی' ستی' اٹھی' نہلی' دھلی . اس کے اور بھی کئی روپ ھیں . چھکی چوسر میں جاکر چھکڑی بن گئی ھے . اِکا ' پو ' بن گیا ھے . کہیں کہیں نہلا' نوا بولا جاتا ھے اور پھر لطف یہ ھے کہ اِن سب روپوں کو بھی بنا سکھائے بچے اسی جلدی سیکھ لیتے ھیں کہ سب دانت تلے انگلی دباتے رہ جاتے ھیں . ودیشی جہاں ھندی کا ویاکرن دیکھ کر گھبراتا ھے وھاں ھندی بھاشیوں میں رہ کر ھندی سیکھنے میں سکھ مانتا ھے اور بڑی جلدی سیکھ جاتا ھے . یہ ھم اندازہ سے نہیں کہہ رھے . یہ کچھ چینیوں' امریکیوں اور روسیوں کے شبد ھیں اور ھیں کچھ یورپ واسیوں کے شبد . اِنھیں کا کہنا ھے کہ ھندی بولی تو ھے آسان پر ھندی ویاکرن مشکل .

اصل میں راشٹر بھاشا کی لوک شاھی صفت بنائے رکھنے کے لئے ھر ایک آدمی کا یہ دھرم ھونا چاھئیے کہ وہ اُس کے سروپ کا دھیان رکھے . وہ کسی طرح بھی اُس کے " اپنے روپ " کو نہ بگڑنے دے .

بھاشا کے سروپ کو لیکر جو ایک بڑا طوفان کھڑا ھو گیا ھے اس کا کارن ھے ھندستان کا سمودھان اور اس سے بھی بڑھ کر دوسرا کارن ھے ھندستان کی پارلیمنٹ .

मानते हैं. किसी भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों का बाहुल्य देखकर यह कह बैठना भी ग़लत है कि वह भाषा उस भाषा से निकली है. जिस तरह आदमियों के हाथ पांव जानवरों से न मिलने की वजह से हम उनको अलग मानते हैं वैसे ही भाषा का व्याकरण यह तय कर देता है कि उसका उस भाषा से निकास है या नहीं है जिस भाषा के शब्दों का बाहुल्य उसमें है.

हिन्दी भाषा का व्याकरण संस्कृत भाषा से मेल नहीं खाता-हिन्दी में दो लिंग, संस्कृत में तीन, हिन्दी में दो वचन संस्कृत में तीन, हिन्दी कर्तृ वाच्य प्रधान, संस्कृत कर्मवाच्य प्रधान, हिन्दी असमास प्रधान, संस्कृत समास प्रधान और समास विशेषता वाली. हिन्दी की क्रिया में लिंग विचार, संस्कृत की लिंग रहित. इत्यादि, इत्यादि.

थोड़े शब्दों में हिन्दी का व्याकरण संस्कृत से मेल नहीं खाता. इसलिए हिन्दी संस्कृत से निकली हुई भाषा नहीं. यह स्वतंत्र भाषा है. यह कितनी पुरानी है—यह शोध का विषय है. उस भाषा का क्या नाम था जो इस तरह का रूप लेकर हिन्दुस्तानी हिन्दी बन गई—सब्र के साथ खोज करने से पता लग सकता है. हमारी यह बात अगर साफ़ हो जाये तो हिन्दी को संस्कृतमय बनाने की बात लोगों को फिर न सूझे और राष्ट्रभाषा के स्वरूप का बखेड़ा एकदम कम हो जाये.

आज अगर किसी तरह हिन्दी भाषा का वह रूप जो अंग्रेज़ों के न आने की सूरत में हिन्दुस्तानी जनता अपने आप तैयार करती, सामने रखा जा सके तो वह इतना भोंडा जंचे कि आज के हिन्दी भक्त एक स्वर से चिल्ला उठें— "रोको, रोको; यह गंवारू भाषा है." पर इस लोकशाही के युग में राष्ट्रभाषा ऐसा रूप लेकर रहेगी जिससे बहुतों को नाक भौं सिकोड़ने पड़ेंगे. तभी तो वह अपनी सच्ची जगह ले सकेगी. दबे छिपे क्या आज इस बात पर नाक भौं नहीं सिकुड़ते कि अमीरों के साथ ग़रीब भी संसद की कुरसी पर बैठे होते हैं और विद्वानों के साथ अपढ़ भी विराजमान रहते हैं, कुलीनों के साथ इतर लोग, कुलीनों की अकड़ लेकर बैठते हैं? जिस तरह और विभागों में लोकशाही की ज़रूरत है ठीक उसी तरह और उससे कहीं ज़्यादा, भाषा के मामले में लोकशाही ज़रूरी है. लोकशाही का अर्थ ही है—सरलता, सादगी, ईमानदारी, भलमनसी, भाईबंदी. भाषा में यही सब बातें सुगमता, व्याकरण की सरलता, रिजुता, देश-भर के शब्दों का मेल—नाम पाते हैं.

मराठी में एक विशेषता है कि वह दूसरी भाषा के शब्दों को अपनाकर ऐसा रूप दे लेती है कि हर एक के लिये यह आसान काम नहीं रह जाता कि वह जल्दी से उस विदेशी शब्द को पकड़ सके. यह ख़ासियत हिन्दुस्तान की गुजराती, पंजाबी इत्यादि और भाषाओं में भी है. पर

مانتے ھیں . کسی بھاشا دوسری بھاشا کے شبدوں کا باھولیہ دیکھ کر یہ کہ بیٹھنا بھی غلط ھی کہ وہ بھاشا اس بھاشا سے نکلی ھے . جس طرح آدمیوں کے ھاتھ پاؤں جانوروں سے نہ ملنے کی وجہ سے ھم اُن کو الگ مانتے ھیں ویسے ھی بھاشا کا ویاکرن یہ طے کردیتا ھے کہ اُس کا اُس بھاشا سے نکاس ھے یا نہیں ھے جس بھاشا کے شبدوں کا باھولیہ اس میں ھے .

ھندی بھاشا کا ویاکرن سنسکرت بھاشا سے میل نہیں کھاتا —ھندی میں دو لنگ، سنسکرت میں تین، ھندی میں دو وچن سنسکرت میں تین، ھندی کرتریہ واچیہ پردھان، سنسکرت کرم واچیہ پردھان، ھندی اسماس پردھان، سنسکرت سماس پردھان اور سماس وشیشتا والی، ھندی کی کریا میں لنگ وچار، سنسکرت کی کریا لنگ رھت، اتیادی اتیادی .

تھوڑے شبدوں میں ھندی کا ویاکرن سنسکرت سے میل نہیں کھاتا . اس لئے ھندی سنسکرت سے نکلی ھوئی بھاشا نہیں . یہ سوتنتر بھاشا ھے . یہ کتنی پرانی ھے—یہ شودھ کا وشئے ھے . اُس بھاشا کا کیا نام تھا جو اِس طرح کا روپ لیکر ھندستانی یا ھندی بن گئی—صبر کے ساتھ کھوج کرنے سے پتہ لگ سکتا ھے . ھماری یہ بات اگر صاف ھوجائے تو ھندی کو سنسکرتمئے بنانے کی بات لوگوں کو پھر نہ سوجھے اور راشٹر بھاشا کے سروپ کا بکھیڑا ایکدم کم ھوجائے .

آج کسی طرح ھندی بھاشا کا وہ روپ جو انگریزوں کے نہ آنے کی صورت میں ھندستانی جنتا اپنے آپ تیار کرتی، سامنے رکھا جاسکے تو وہ اتنا بھوندا جنچے کہ آج کے ھندی بھکت ایک سور سے چلا اُٹھیں—"روکو، روکو، یہ گنوارو بھاشا ھے ." پر اِس لوک شاھی کے یگ میں راشٹر بھاشا ایسا روپ لیکر رھےگی جس سے بہتوں کو ناک بھوں سکوڑنے پڑیں گے . تبھی تو وہ اپنی سچی جگہ لے سکےگی . دبے چھپے کیا آج اِس بات پر ناک بھوں نہیں سکوڑتے کہ امیروں کے ساتھ غریب بھی سنسد کی کرسی پر بیٹھے ھوتے ھیں اور ودوانوں کے ساتھ اپڑھ بھی براجمان رھتے ھیں، کلینوں کے ساتھ اتر لوگ کلینوں کی اکڑ لےکر بیٹھتے ھیں ؟ جس طرح اور وبھاگوں میں لوک شاھی کی ضرورت ھے ٹھیک اُسی طرح اور اُس سے کہیں زیادہ، بھاشا کے معاملے میں لوک شاھی ضروری ھے . لوک شاھی کا ارتھ ھی ھے— سرلتا، سادگی، ایمانداری، بھلمنسی، بھائی بندی . بھاشا میں یہی سب باتیں سگمتا، ویاکرن کی سرلتا، رجوتا، دیش بھر کے شبدوں کا میل—نام پاتے ھیں .

مراٹھی میں ایک وشیشتا ھے کہ وہ دوسری بھاشا کے شبدوں کو اپنا کر ایسا روپ دے لیتی ھے کہ ھر ایک کے لئے یہ آسان کام نہیں رہ جاتا کہ وہ جلدی سے اُس ودیشی شبد کو پکڑ سکے . یہ خاصیت ھندستان کی گجراتی، پنجابی، اتیادی اور بھاشاؤں میں بھی ھے . پر

स्वरूप के साथ तो अन्याय करते ही हैं, संस्कृत, फ़ारसी, अरबी, अंग्रेज़ी के साथ भी अन्याय करते हैं.

आज जनता का एक हिस्सा राष्ट्रभाषा के स्वरूप को संस्कृत मिश्रित बनाना चाहता है. पर संस्कृत के बहुत से विद्वान संस्कृत मिश्रित हिंदी को नापसंद करते हैं. पटना में तुलसी-जयंती के अवसर पर संस्कृत के एक प्रोफ़ेसर ने एक निमंत्रण पत्र की खिल्ली उड़ाते हुए कहा—"उस निमंत्रण पत्र में लिखा था—'आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है.' इसका तो यह मतलब हुआ कि मेरी उपस्थिति इस योग्य है कि मुझसे उपस्थित रहने की प्राथना की जाये. बताइये मुझे बुलाया कहां गया ?" इस तरह की शिकायतें दक्षिणी पंडितों को तो बेहद हैं. उनका कहना है—'उपन्यास' का अर्थ 'Novel' कहां से बन गया ? ऐसे ही मराठी वालों से कोई यदि यह पूछ बैठे कि आपकी कितनी 'शिक्षा' हुई है तो वह चिढ़कर यही कहेगा कि—'मैं बीस बार जेल गया हूं, आपको मतलब ?' मराठी में 'शिक्षा' के मानी हैं 'सज़ा' या दंड.

हिन्दी भाषा का स्वरूप एक है और एक ही रहेगा. वही सुरूप समझा जायेगा. स्वरूप को बिगाड़ना ही कुरूप समझा जायेगा. हम ऊपर कह आये हैं कि हिन्दी भाषा-भाषी जब कोई ऐसी भाषा सीख लेते हैं जो हिन्दी के स्वरूप से मेल नहीं खाती तो वह हिन्दी के स्वरूप को ऐसा रूप देते हैं कि वह सुरूप नहीं रह जाता. उनके कान भी ऐसे हो जाते हैं कि उनको हर शब्द गंवारू जंचने लगता है. अंग्रेज़ों के ज़माने में हर अंग्रेज़ी पढ़े लिखे को हिन्दी का पंडित गंवार ही जंचता था. उनकी नज़रों में तो वेद का मर्मज्ञ पंडित भी कुछ नहीं जंचता था और यही हाल था अरबी फ़ारसी के आलिमों का. वह भी अंग्रेज़ी पढ़े की नज़रों में अपढ़ ही समझे जाते थे. कभी कभी तो कुपढ़ भी मान लिए जाते थे. आज भी एक हवा चल पड़ी है कि संस्कृत का पंडित हिन्दी पढ़े लिखों को अपढ़ ही समझता है और जब जब मौक़ा मिलता है वह हिन्दी के स्वरूप को संस्कृत का जामा पहनाकर बिगाड़ता रहता है. उसी के बल पर वह कन्हैया के वज़न पर बने शब्द 'लिखैया' की खिल्ली उड़ाता है और 'लेखक' को बहुत महत्व पूर्ण शब्द समझता है. उसे यह मालूम ही नहीं कि जबलपुर की एक तरकारी बेचनेवाली औरत ने एक पंडित जी को उसे 'बहन' की जगह 'भगिनी' कहने पर इतनी बुरी तरह फटकारा था कि वह अपने को संभाल न सके. पंडितों को यह नहीं मालूम कि जो 'पूज्यपाद' शब्द उन्हें सुहाता है वह गांववालों को 'पंडिताऊ' जंचता है. यह याद रहे कि जिस तरह भोंडे शब्दों के लिए पंडितों ने 'गंवारू' शब्द गढ़ रखा है वैसे ही गांव वालों ने भोंडे शब्द के लिए 'पंडिताऊ' शब्द गढ़ रखा है. गांववाले 'पूज्यपाद' शब्द को भोंडा शब्द

سروپ کے ساتھ تو انیائے کرتے ہی ہیں، سنسکرت، فارسی، عربی، انگریزی کے ساتھ بھی انیائے کرتے ہیں۔

آج جنتا کا ایک حصہ راشٹر بھاشا کے سروپ کو سنسکرت مشرت بنانا چاہتا ہے پر سنسکرت کے بہت سے ودوان سنسکرت مشرت ہندی کو ناپسند کرتے ہیں۔ پٹنہ میں تلسی جینتی کے اوسر پر سنسکرت کے ایک پروفیسر نے ایک نیمنترن پتر کی کھلی اڑاتے ہوئے کہا—اس نیمنترن پتر میں لکھا تھا—"آپ کی اُپستھتی پراتھنیہ ہے۔" اس کا تو یہ مطلب ہوا کہ میری اُپستھتی اس یوگیہ ہے کہ مجھسے اُپستھت رہنے کی پرارتھنا کی جائے۔ بتائیے مجھے بلایا کہاں گیا؟" اس طرح کی شکائتیں دکھنی پنڈتوں کو تو بےحد ہیں۔ ان کا کہنا ہے—'اُپنیاس' کا ارتھ 'Novel' کہاں سے بن گیا؟ ایسے ہی مراٹھی والوں سے کوئی یدی یہ پوچھ بیٹھے کہ آپ کی کتنی 'سکھشا' ہوئی ہے تو وہ چڑھ کر یہی کہیگا کہ—'میں بیس بار جیل گیا ہوں آپ کو مطلب؟' مراٹھی میں 'سکھشا' کے معنی ہیں 'سزا' یا دنڈ۔

ہندی بھاشا کا سروپ ایک ہے اور ایک ہی رہیگا۔ وہی سوروپ سمجھا جائیگا۔ سروپ کو بگاڑنا ہی کوروپ سمجھا جائیگا۔ ہم اوپر کہ آئے ہیں کہ ہندی بھاشا بھاشی جب کوئی ایسی بھاشا سیکھ لیتے ہیں جو ہندی کے سروپ سے میل نہیں کھاتی ہو وہ ہندی کے سروپ کو ایسا روپ دیتے ہیں کہ وہ سوروپ نہیں رہ جاتا۔ ان کے کان بھی ایسے ہو جاتے ہیں کہ اُن کو ہر شبد گنوارو جنچنے لگتا ہے۔ انگریزوں کے زمانے میں ہر انگریزی پڑھے لکھے کو ہندی کا پنڈت گنوار ہی جنچتا تھا۔ اُن کی نظروں میں تو وید کا مرمگیہ پنڈت بھی کچھ نہیں جنچتا تھا اور یہی حال تھا عربی، فارسی کے عالموں کا۔ وہ بھی انگریزی پڑھے کی نظروں میں اپڑھ ہی سمجھے جاتے تھے۔ کبھی کبھی تو کوپڑھ بھی مان لئے جاتے تھے۔ آج بھی ایک ہوا چل پڑی ہے کہ سنسکرت کا پنڈت ہندی پڑھے لکھوں کو اپڑھ ہی سمجھتا ہے اور جب جب موقع ملتا ہے وہ ہندی کے سروپ کو سنسکرت کا جامہ پہناکر بگاڑتا رہتا ہے۔ اُسی کے بل پر وہ کنہیا کے وزن پر بنے شبد 'لکھیا' کی کھلی اڑاتا ہے اور 'لیکھک' کو بہت مہتوپورن شبد سمجھتا ہے۔ اُسے یہ معلوم ہی نہیں کہ جبلپور کی ایک ترکاری بیچنے والی عورت نے ایک پنڈت جی کو اُسے 'بہن' کی جگہ 'بھگنی' کہنے پر اتنی بری طرح پھٹکارا تھا کہ وہ اپنے کو سنبھال نہ سکے۔ پنڈت جی کو یہ نہیں معلوم کی جو پوجیہ پاد شبد انہیں سہاتا ہے وہ گاؤں والوں کو 'پنڈتاؤ' جنچتا ہے۔ یہ یاد ہے جس طرح بھونڈے شبدوں کے لئے پنڈتوں نے 'گنوارو' شبد گڑھ رکھا ہے ویسے ہی گاؤں والوں نے بھونڈے شبد کے لئے پنڈتاؤ شبد گڑھ رکھا ہے۔ گاؤں والے 'پوجیہ پاد' شبد کو بھونڈا شبد

जायेंगे कृष्ण और गृहस्थी, पढ़े जायेंगे 'क्रिश्ण, ग्रहस्थी' और 'गिरस्थी, ग्रहस्थी' और जनता बोलेगी इन्हें करशन और गरस्थी या गिरस्थी. इसी तरह इ, ई, उ, ऊ पर भी अब कुछ विद्वानों का मत है कि वे इ, ई, उ, ऊ के रूप में लिखे जांय. Basic English की तरह यदि Basic Hindi तैयार करना हो तो इ, ई, उ, ऊ सचमुच अक्षरों की संख्या बढ़ाने के सिवाय किसी काम के नहीं.

गांव वालों को घिसे घिसाये पत्थर सुघड़ मालूम होते हैं. तभी तो वह शालिगराम की बटिया पूजते हैं. पंडितों को नुकीले पत्थर पसंद आते हैं तभी तो वह तरह तरह की मूर्तियां गढ़ते हैं. शब्दों के उच्चारण में जितना मुँह को तोड़ना मोड़ना पड़ेगा उतना ही पंडित को पसंद आयेगा और उतना ही वह साधारण आदमी को नापसंद होगा और जो शब्द जितना सीधा सादा होगा उतना ही पंडित को अरुचिकर होगा. थोड़े से शब्दों में पंडित क्लिष्टता प्रिय है और साधारण मनुष्य सरलता प्रिय. पंडित की क्लिष्टता प्रियता एरिस्टोक्रेसी को जन्म देती है जिसको उच्चकुलशाही या कुलीनशाही कहा जा सकता है. पंडित चाहे या न चाहे उससे भाषा में जो सुधार होगा वह ऐसा ही होगा जो भाषा में कुलीनशाही का महल खड़ा कर दे. उसे शब्द भी क्लिष्ट ही सूझेंगे. वह इसी में भाषा का उत्थान समझता है. वह यह समझता ही नहीं कि वह जाने अनजाने भाषा के स्वरूप की गर्दन मरोड़ रहा है.

किसी भाषा में दूसरी भाषा के व्याकरण का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रवेश कर देना भाषा की गर्दन मरोड़ना ही है. पंजाबी भाषा ने किताब के लिए अंग्रेजी भाषा का 'बुक' शब्द अपनाया पर उसका बहुवचन वह 'बुक्कां' कहते हैं. अगर वह बुक का बहुवचन 'बुक्स' अपना लें तो पंजाबी भाषा की गर्दन मरोड़ने के गुनाहगार समझे जायेंगे

गांववाले सब भाषाओं से शब्द लेते हैं पर उसकी नोकें घिस डालते हैं. उन्होंने 'कलक्टर' को अपनाया पर कर दिया उसे 'कलट्टर'. अब यह हो गया शुद्ध हिन्दी शब्द. उन्होंने अपनाया सुपरिनटेंडेंट' और कर दिया उसे 'सुपरडेंट' या सिपिंडंट और बना लिया उसे ठेठ हिंदी शब्द. असल में गांववाले भाषा के स्वरूप को नहीं बिगड़ने देते. वे भाषा के स्वरूप को मांजकर दुगुना चमका देते हैं, जबकि पंडित लोग भाषा के स्वरूप को और बिगाड़ देते हैं. उस पर दूसरी भाषा के परत जमाकर लोगों के सामने पेश करते हैं, जिससे वह 'स्वरूप' लिए हुए हिन्दी नहीं रह जाती बल्कि पर रूप लिए हुए वह भाषा बन जाती है जिसका रूप हिन्दी पर चढ़ाया गया होता है. तब वह भाषा भी स्वयं शुद्ध न रहकर भोंडी बन जाती है. पंडित लोग हिंदी को अंग्रेजी, संस्कृत, फारसी, अरबी या और कोई जामा पहनाकर हिंदी के

جائینگے 'کرشن' اور گرہستی پڑھے جائینگے 'کرشن' 'کروشن' اور 'گرہستی' 'گرھستی' اور جنتا بولیگی انہیں کرشن اور گرستھی یا گرھستی. اِسی طرح اِی' ای' اُو' پر بھی اب کچھ ودوانوں کا مت ہے کہ وے اِی' ائی' اُو' او کے روپ میں لکھے جائیں. Basic English کی طرح یدی Basic Hindi تیار کرنا ہو تو اِی' ائی' اُو' اؤ سچ مچ اکچھروں کی سنکھیا بڑھانے کے سوائے کسی کام کے نہیں ۔

گاؤں والوں کو گھسے گھسائے پتھر سگھڑ معلوم ہوتے ہیں. تبھی تو وہ شالگ رام کی بٹیا پوجتے ہیں ۔ پنڈتوں کو نوکیلے پتھر پسند آتے ہیں تبھی تو وہ طرح طرح کی مورتیاں گڑھتے ہیں ۔ شبدوں کے اچارن میں جتنا منھ کو توڑنا موڑنا پڑیگا اتنا ہی پنڈت کو پسند آئیگا اور اتنا ہی وہ سادھارن آدمی کو ناپسند ہوگا اور جو شبد جتنا سیدھا سادا ہوگا اتنا ہی پنڈت کو اروچیکر ہوگا ۔ تھوڑے سے شبدوں میں پنڈت کلشٹا پریہ ہیں اور سادھارن منشیہ سرلتا پریہ ۔ پنڈت کی کلشٹتا پریتا ایرسٹو کریسی کو جنم دیتی ہے جس کو اُوچ کل شاہی یا کلین شاہی کہا جاسکتا ہے ۔ پنڈت چاہے یا نہ چاہے اُس سے بھاشا میں جو سدھار ہوگا وہ ایسا ہی ہوگا جو بھاشا میں کلین شاہی کا محل کھڑا کردے ۔ اُسے شبد بھی کلشٹ ہی سوجھیں گے ۔ وہ اِسی میں بھاشا کا اُتھان سمجھتا ہے ۔ وہ یہ سمجھتا ہی نہیں کہ وہ جانے انجانے بھاشا کے سروپ کی گردن مروڑ رہا ہے ۔

کسی بھاشا میں دوسری بھاشا کے ویاکرن کا پرتیکچھ یا اَپرتیکچھ روپ سے پرویش کردینا بھاشا کی گردن مروڑنا ہی ہے. پنجابی بھاشا نے کتاب کے لئے انگریزی بھاشا کا 'بک' شبد اپنایا پر اُس کا بہووچن وہ 'بکاں' کہتے ہیں ۔ اگر وہ بک کا بہووچن 'بکس' اپنالیں تو پنجابی بھاشا کی گردن مروڑ نے کے گناہگار سمجھے جائیں گے ۔

گاؤں والے سب بھاشاؤں سے شبد لیتے ہیں پر اُن کی نوکیں گھس ڈالتے ہیں. انہوں نے 'کلکٹر' کو اپنایا پر کردیا اُسے 'کلٹٹر'. اب یہ ہوگیا شدھ ہندی شبد ۔ انہوں نے اپنایا 'سپرنٹینڈینٹ' اور کردیا اُسے 'سوپرڈنٹ' یا سیپنڈنٹ اور بنالیا اُسے ٹھیٹ ہندی شبد ۔ اصل میں گاؤں والے بھاشا کے سروپ کو نہیں بگڑنے دیتے. وے بھاشا کے سروپ کو مانجھ کر دوگنا چمکا دیتے ہیں ' جب کہ پنڈت لوگ بھاشا کے سروپ کو اور بگاڑ دیتے ہیں ۔ اُس پر دوسری بھاشا کے پرت جماکر لوگوں کے سامنے پیش کرتے ہیں' جس سے وہ 'سروپ' لئے ہوئے ہندی نہیں رہ جاتی بلکہ 'پرروپ' لئے ہوئے وہ بھاشا بن جاتی ہے جس کا روپ ہندی پر چڑھایا گیا ہوتا ہے ۔ تب وہ بھاشا بھی سویم شدھ نہ رہ کر بھونڈی بن جاتی ہے ۔ پنڈت لوگ ہندی کو انگریزی' سنسکرت' فارسی' عربی یا اور کوئی جامہ پہناکر ہندی کے

से दांयीं तरफ़ चलने लगते हैं तो उनकी भाषा अपने आप संस्कृत की तरफ़ मुंह कर बैठती है. रोमन में हिन्दी लिखते समय अंगरेज़ी के शब्द जितना शुद्ध रूप लेंगे उतना शुद्ध रूप वह उस समय नहीं लेंगे जब हिन्दी, उर्दू या नागरी लिखावट में लिखे जायेंगे.

इस से पता चलता है कि लिखावट किस तरह भाषा के स्वरूप को फैलाने और बदलने में मददगार होती है और कब क्यों वही लिखावट उसके प्रचार को रोक रखने का काम करने लगती है. हां, यह ठीक है कि अभ्यास मे इस असर को बहुत कम किया जा सकता है और बिलकुल ख़त्म भी किया जा सकता है.

राष्ट्रभाषा का स्वरूप कैसा है और कैसा हो—

स्वरूप शब्द का अर्थ है "अपना रूप". अपने रूप दो नहीं हो सकते. हाँ, किसी चीज़ के रूप रंग को दो आदमी दो अलग अलग शब्दों से पुकार सकते हैं, जिस तरह पानी को एक जल कह सकता है और दूसरा नीर. इससे स्वरूप में कोई भेद नहीं आता. राष्ट्रभाषा के स्वरूप में कोई मतभेद है ही नहीं. मतभेद है शब्दों के रूप में. शब्दों के रूप के आधार पर भाषा का स्वरूप बदल जाने का भय है. तब राष्ट्रभाषा का स्वरूप सुरूप, न रहकर कुरूप भी हो सकता है. सुरूप कुरूप सापेक्ष शब्द हैं. हो सकता है जिसे एक सुरूप कहता है उसे दूसरा सुरूप कहे और जिसे दूसरा सुरूप कहता है उसे पहला कुरूप कहे.

कुछ शब्द हैं जो पंडितों की नज़र में गंवारू यानी कुरूप जंचते हैं, पर वही गँवारू और कुरूप शब्द गांव वालों को बड़े भले और सुन्दर मालूम होते हैं. कृष्ण का नाम कन्हैया गांव वालों को जितना शिष्ट, सुन्दर और प्यारा मालूम होता है उतना कृष्ण नहीं.

कृष्ण का तो वे उच्चारण भी ठीक ठीक नहीं कर सकते. मूर्धन्य ष का उच्चारण तो अब पंडित भी भूल गये हैं. वह बोला कहीं नहीं जाता, लिखा भर जाता है. बालकों को उसका उच्चारण समझाने के लिए किसी के पास कोई साधन नहीं है. बालक से इसके उच्चारण के बारे में पिंड छुड़ाने के लिये 'पेट चिरा ष' कहने के सिवाय कोई उपाय नहीं. यही हाल 'ञ' का है और यही 'ङ, का है. ऌ, ॡ तो वेद की पोथियों में खड़ी खड़ी हिंदी का तमाशा देख रही हैं. ऋ का भी कुछ यही हाल है. बच रही ऋ. वह ऋषि और ऋण जैसे शब्दों के साथ जुड़ी है. विंध्या के उत्तर में पंडितों के लिए वह 'रि' हो गई है और विंध्या के दक्षिण में पंडितों के लिए 'रु' बन गई है. काशी में लिखा जाता है ऋषि, पढ़ा जाता है रिशि. यही महाराष्ट्र और त्रिवेंद्रम में लिखा जायगा ऋषि पर पढ़ा जायगा रुशि. "कृष्ण" का तो इससे भी अजीब हाल है और यही हाल है "गृहस्थी" का. यह लिखे

سے دائیں طرف چلنے لگتے ہیں تو اُن کی بھاشا اپنے آپ سنسکرت کی طرف منھ کر بیٹھتی ہے۔ رومن میں لکھتے سمے انگریزی کے شبد جتنے شدھ روپ لیں گے اتنا شدھ روپ وہ اُس سمے نہیں لینگے جب ہندی، اردو یا ناگری لکھاوٹ میں لکھے جائیں گے۔

اِس سے پتہ چلتا ہے کہ لکھاوٹ کس طرح بھاشا کے سروپ کو پھیلانے اور بدلنے میں مددگار ہوتی ہے اور کب کیوں وہی لکھاوٹ اُس کے پرچار کو روک رکھنے کا کام کرنے لگتی ہے۔ ہاں، یہ ٹھیک ہے کہ ابھیاس سے اس اثر کو بہت کم کیا جا سکتا ہے اور بالکل ختم بھی کیا جا سکتا ہے۔

راشٹر بھاشا کا سروپ کیسا ہے اور کیسا ہو—

سروپ شبد کا ارتھ ہے "اپنا روپ." اپنے روپ دو نہیں ہوسکتے. ہاں، کسی چیز کے روپ رنگ کو دو آدمی دو الگ الگ شبدوں سے پکار سکتے ہیں، جس طرح پانی کو ایک جل کہ سکتا ہے اور دوسرا نیر۔ اس سے سروپ میں کوئی بھید نہیں آتا۔ راشٹر بھاشا کے سروپ میں کوئی مت بھید ہے ہی نہیں۔ مت بھید ہے شبدوں کے روپ میں۔ شبدوں کے روپ کے آدھار پر بھاشا کا سروپ بدل جانے کا بھئے ہے۔ تب راشٹر بھاشا کا سروپ سوروپ نہ رہ کر کوروپ بھی ہوسکتا ہے۔ سوروپ کوروپ ساپیکش شبد ہیں۔ ہوسکتا ہے جسے ایک سوروپ کہتا ہے اسے دوسرا کوروپ کہے اور جسے دوسرا سروپ کہتا ہے اُسے پہلا کوروپ کہے۔

کچھ شبد ہیں جو پنڈتوں کی نظر میں گنوارو یعنی کوروپ جنچتے ہیں، پر وہی گنوارو اور کوروپ شبد گاؤں والوں کو بڑے بھلے اور سندر معلوم ہوتے ہیں. کرشن کا نام کنھیا گاؤں والوں کو جتنا شِشٹ، سندر اور پیارا معلوم ہوتا ہے اتنا کرشن نہیں۔

کرشن کا تو وے اُچارن بھی ٹھیک ٹھیک نہیں کرسکتے۔ مورھنیہ 'شا' کا اچارن تو اب پنڈت بھی بھول گئے ہیں۔ وہ بولا کہیں نہیں جاتا، لکھا بھر جاتا ہے۔ بالکوں کو اُس کا اُچارن سمجھانے کے لئے کسی کے پاس کوئی سادھن نہیں ہے۔ بالک سے اِس کے اُچارن کے بارے میں پنڈ چھڑانے کے لئے 'پیٹ چرا شا' کہنے کے سوائے کوئی اُپائے نہیں۔ یہی حال 'یاں' کا ہے اور یہی 'گیاں' کا ہے۔ لر - لری تو وید کی پوتھیوں میں کھڑی کھڑی ہندی کا تماشہ دیکھ رہی ہیں۔ رری کا بھی کچھ یہی حال ہے۔ بچ رہی رر۔ وہ رشی اور رنر جیسے شبدوں کے ساتھ جڑی ہے۔ وندھیا کے اُتر میں پنڈتوں کے لئے وہ 'ری' ہوگئی ہے اور وندھیا کے دکھن میں پنڈتوں کے لئے 'رو' بن گئی ہے۔ کاشی میں لکھا جاتا ہے رشی، پڑھا جاتا ہے ریشی۔ یہی مہاراشٹر اور تریوندرم میں لکھا جائیگا رشی پر پڑھا جائیگا روشی۔ "کرشن" کا تو اِس سے بھی عجیب حال ہے اور یہی حال "گرھستھی" کا۔ یہ لکھے

पवित्र ग्रन्थ वेद नागरी अक्षरों में कम और मुश्किल से मिलेगा पर रोमन अक्षरों में चाहे जितना मिल सकता है. सभी धर्मों के धर्मग्रन्थ रोमन अक्षरों में मौजूद हैं और भी तरह तरह की किताबें रोमन अक्षरों में मौजूद हैं. नागरी लिखावट इस कमी को सैकड़ों बरस में भी पूरा नहीं कर सकती. इसकी वजह यह नहीं कि नागरी अक्षरों में कुछ अयोग्यता है. वजह यह है कि जो अपने आप को नागरी लिपि का मालिक मानते हैं उनमें इतना उत्साह ही नहीं है. उनको इतनी ज़रूरत ही नहीं है कि वह रोमन अक्षरों में मिलती हुई चीज़ को नागरी अक्षरों में बदलने की कोशिश करें.

आज कोई यह सोच भी नहीं सकता कि कोई अंगरेज़ी हिन्दी ऐसी डिक्शनरी बनाई जाये जिसमें अंगरेज़ी हिन्दी डिक्शनरी की तरह सारे अंगरेज़ी शब्द नागरी अक्षरों मे दिये हुये हों. अगर कोई जोश में आकर ऐसा कर भी डाले तो अपनी तिजौरी के नोटों का स्वाहा कर सकता है. मुफ़्त बांटने पर भी उस डिक्शनरी के पढ़ने वाले तो एक ओर, घर की अलमारी में रखने वाले भी न मिलेंगे.

अंगरेज़ों का राज रहते रहते नागरी लिखावट का थोड़ा बहुत जोश रहा और 'नागर' नाम की एक पत्रिका भी निकली जिसमें हिन्दुस्तान की दूसरी भाषाओं के लेख भी नागरी लिपि में रहा करते थे. पर वैसा जोश टिक न पाया और अंगरेज़ों के चले जाने के बाद तो वह बिलकुल गूलर का फूल बन गया.

नागरी अक्षर और अक्षरों से किसी तरह कम नहीं; पर नागरी प्रचारिणी सभा इन्डियन नेशनल कांग्रेस की तरह वैसी ही नीयत से गढ़ी गई थी. कांग्रेस के पिता थे ह्यूम तो नागरी प्रचारिणी सभा के पिता थे सर चार्ल्स मेकडा-नल्ड, जो एन० डब्ल्यू० पी० (यू० पी० का पुराना नाम) के लेफ़्टेनेन्ट गवर्नर थे. मेकडानल्ड की नागरी फैलाने की इतनी इच्छा नहीं थी जितनी हिन्दू मुसलमानों को एक दूसरे से अलग करने की. इसलिये नागरी प्रचारिणी सभा इतनी सफल न हो पाई जितनी होनी चाहिये थी. जो काम नागरी प्रचारिणी सभा बीस बरस में न कर पाई वह सन 1920 के बाद दो बरस में हो गया. नागरी अक्षर कैलाश से कुमारी तक और द्वारका से डिब्रूगढ़ तक अपने आप फैल गये क्योंकि इसकी जड़ में हिन्दू मुसलिम एकता थी, देश भक्ति थी, देश प्रेम था, गांधी जी का त्याग और तपस्या थी.

जो लोग हिन्दी और उर्दू दोनों अच्छी तरह जानते हैं वे जब उर्दू का क़लम उठाते हैं और दांयें से बांईं तरफ़ चलते हैं तो उनकी भाषा अपने आप फ़ारसी की तरफ़ चल देती है और जब हिन्दी पर क़लम उठाते हैं और बाएँ

پوتر گرنتھ وید ناگری اکچھروں میں کم اور مشکل سے ملے گا پر رومن اکچھروں میں چاہے جتنا مل سکتا ہے. سبھی دھرموں کے دھرم گرنتھ رومن اکچھروں میں موجود ہیں اور بھی طرح طرح کی کتابیں رومن اکچھروں میں موجود ہیں. ناگری لکھاوٹ اس کمی کو سیکڑوں برس میں بھی پورا نہیں کر سکتی. اس کی وجہ یہ نہیں کہ ناگری اکچھروں میں کچھ ایوگیتا ہے. وجہ یہ ہے کہ جو اپنے آپ کو ناگری لپی کا مالک مانتے ہیں اُن میں اتنا اتساہ ہی نہیں ہے. ان کو اتنی ضرورت ہی نہیں ہے کہ وہ رومن اکچھروں میں ملتی ہوئی چیز کو ناگری اکچھروں میں بدلنے کی کوشش کریں.

آج کوئی یہ سوچ بھی نہیں سکتا کہ کوئی انگریزی ہندی ایسی ڈکشنری بنائی جائے جس میں انگریزی ہندی ڈکشنری کی طرح سارے انگریزی شبد ناگری اکچھروں میں دئے ہوئے ہوں. اگر کوئی جوش میں آ کر ایسا کر بھی ڈالے تو اپنی تجوری کے نوٹوں کا سواہا کر سکتا ہے. مفت بانٹنے پر بھی اُس ڈکشنری کے پڑھنے والے تو ایک اور، گھر کی الماری میں رکھنے والے بھی نہ ملیں گے.

انگریزوں کا راج رہتے رہتے ناگری لکھاوٹ کا تھوڑا بہت جوش رہا اور 'ناگر' نام کی ایک پتریکا بھی نکلی جس میں ہندستان کی دوسری بھاشاؤں کے لیکھ بھی ناگری لپی میں رہا کرتے تھے. پر ویسا جوش ٹک نہ پایا اور انگریزوں کے چلے جانے کے بعد تو وہ بالکل گولر کا پھول بن گیا.

ناگری اکچھر اور اکچھروں سے کسی طرح کم نہیں؛ پر ناگری پرچارنی سبھا انڈین نیشنل کانگریس کی طرح ویسی ہی نیت سے گڑھی گئی تھی. کانگریس کے پتا تھے ہیوم تو ناگری پرچارنی سبھا کے پتا تھے سر چارلس میکڈونلڈ، جو این. ڈبلیو. پی. (یو. پی. کا پرانا نام) کے لیفٹیننٹ گورنر تھے.

میکڈونلڈ کی ناگری پھیلانے کی اتنی اچھا نہیں تھی جتنی ہندو مسلمانوں کو ایک دوسرے سے الگ کرنے کی. اس لئے ناگری پرچارنی سبھا اتنی سپھل نہ ہو پائی جتنی ہونی چاہئے تھی. جو کام ناگری پرچارنی سبھا بیس برس میں نہ کر پائی وہ سن 1920 کے بعد دو برس میں ہو گیا. ناگری اکچھر کیلاش سے کماری تک اور دوارکا سے ڈبروگڑھ تک اپنے آپ پھیل گئے کیونکہ اس کی جڑ میں ہندو مسلم ایکتا تھی، دیش بھکتی تھی، دیش پریم تھا، گاندھی جی کا تیاگ اور تپسیا تھی.

جو لوگ ہندی اور اردو دونوں اچھی طرح جانتے ہیں وہ جب اردو کا قلم اٹھاتے ہیں اور داہنے سے بائیں طرف چلتے ہیں تو ان کی بھاشا اپنے آپ فارسی کی طرف چل دیتی ہے اور جب ہندی پر قلم اٹھاتے ہیں اور بائیں

आज की हालत देख कर हमारी यह कहने की हिम्मत नहीं होती कि रोमन लिखावट अपनालेने से हिन्दुस्तान पर बहुत बड़ी आफ़त आ जायेगी या हिन्दुस्तान उन्नति की दौड़ में बहुत पीछे पड़ जायेगा. तुरकी, जहां रोमन लिखावट गांव तक इतनी नहीं पहुंची थी जितनी पहुंचनी चाहिये, उसे अपनाकर उन्नति की दौड़ में कुछ आगे ही बढ़ गया तब फिर हिन्दुस्तान उसे अपनाकर कैसे पीछे रह सकता है जबकि अंगरेजी के छब्बीसों अक्षर और दसों अंक हिन्दुस्तान के कोने कोने में पहुंच चुके हैं और उन अक्षरों व अंकों पर बच्चों से बूढ़ों तक की नज़र सुबह से शाम तक अनेक बार पड़ती रहती है? अंगरेजी प्रभाव को हम कोसें या सराहें उसने यह तो किया ही है कि हमारे बच्चों की रुचि अंगरेजी अक्षरों की तरफ़ नागरी अक्षरों से कुछ ज़ियादा नहीं है तो कम भी नहीं है. उसी तरह अंगरेजी प्रभाव ने एक विष यह भी बोया है कि हिन्दू बच्चे की रुचि उर्दू अक्षरों की तरफ़ दिन ब दिन कम होती जा रही है और नागरी अक्षरों की तरफ़ बढ़ती जा रही है और मुसलमान बच्चों की रुचि उर्दू अक्षरों की तरफ़ बढ़ती जा रही है और नागरी अक्षरों की ओर से घटती जा रही है. इसका नतीजा यह हो रहा है कि हिन्दू बच्चे हिन्दी की फ़िक्र में ठेठ संस्कृत को अपना रहे हैं और मुसलमान बच्चे उर्दू की फ़िक्र में ठेठ फ़ारसी को, और यह दोनों बातें राष्ट्रभाषा के लिये घातक हैं. हिन्दू बच्चों की तरह मुसलमान बच्चे भी अंगरेजी अक्षरों में अपना नाम लिख कर जितना अभिमान अनुभव करते हैं उतना उर्दू अक्षरों में लिख कर नहीं. हमारे बच्चे करें भी क्या? वह जिस वातावरण में पले हैं वहां अंगरेजी अक्षरों का राज था.

लिखावट राष्ट्रभाषा के स्वरूप के फैलाने में बड़ी मददगार होती है. अंगरेजी फैलाने मे रोमन अक्षर बड़े काम के साबित हो रहे हैं. हिन्दुस्तान की हर भाषा की किताब रोमन अक्षरों में मिल सकती है. हिन्दुस्तान ही नहीं, दुनिया की हर भाषा की किताब रोमन अक्षरों में मिल सकती है. फिर अंगरेजी भाषा क्यों न फैले?

पचास बरस पहले की एक किताब हमारे देखने में आई जो हिन्दी भाषा और नागरी लिपि में छपी हुई है, और पद्यात्मक है. यह अङ्गरेजी कोष की किताब अलीगढ़ के किसी छापेख़ाने में छपी है. उसमें से कुछ पद्य हम नीचे दे रहे हैं :—

फ़ादर बाप, मदर है माई,
सिस्टर बहन, ब्रदर है भाई.
डाटर बेटी, सन है बेटा,
यंगर छोटा, एल्डर जेठा.

इस ढंग की अंगरेजी किताबें बहुत मिलेंगी. हिन्दुओं का

آج کی حالت دیکھ کر ہماری یہ کہنے کی ہمت نہیں ہوتی کہ رومن لکھاوٹ اپنالینے سے ہندستان پر بہت بڑی آفت آجائے گی یا ہندستان اُنتی کے دوڑ میں بہت پیچھے پڑ جائےگا . ترکی، جہاں رومن لکھاوٹ گاؤں تک اتنی نہیں پہنچی تھی جتنی پہنچنی چاہئے، اُسے اپنا کر اُنتی کی دوڑ میں کچھ آگے ہی بڑھ گیا تب پھر ہندستان اُسے اپنا کر کیسے پیچھے رہ سکتا ہے جب کہ انگریزی کے چھبیسوں اکچھر اور دسوں انک ہندستان کے کونے کونے میں پہنچ چکے ہیں اور ان اکچھروں و انکوں پر بچوں سے بوڑھوں تک کی نظر صبح سے شام تک انیک بار پڑتی رہتی ہے ؟ انگریزی پربھاؤ کو ہم کوسیں یا سراہیں اُس نے یہ تو کیا ہی ہے کہ ہمارے بچوں کی روچی انگریزی اکچھروں کی طرف ناگری اکچھروں سے کچھ زیادہ نہیں ہے تو کم بھی نہیں ہے . اُسی طرح انگریزی پربھاؤ نے ایک وِش یہ بھی بویا ہے کہ ہندو بچے کی روچی اردو اکچھروں کی طرف دن بہ دن کم ہوتی جا رہی ہے اور ناگری اکچھروں کی طرف بڑھتی جا رہی ہے اور مسلمان بچوں کی روچی اردو اکچھروں کی طرف بڑھتی جا رہی ہے اور ناگری اکچھروں کی اور سے گھٹتی جا رہی ہے . اِس کا نتیجہ یہ ہو رہا ہے کہ ہندو بچے ہندی کی فکر میں ٹھیٹ سنسکرت کو اپنا رہے ہیں اور مسلمان بچے اردو کی فکر میں ٹھیٹ فارسی کو، اور یہ دونوں باتیں راشٹر بھاشا کے لئے گھاتک ہیں . ہندو بچوں کی طرح مسلمان بچے بھی انگریزی اکچھروں میں اپنا نام لکھ کر جتنا ابھیمان انبھو کرتے ہیں اتنا اردو اکچھروں میں لکھ کر نہیں . ہمارے بچے کریں بھی کیا ؟ وہ جس واتاورن میں پلے ہیں، وہاں انگریزی اکچھروں کا راج تھا .

لکھاوٹ راشٹر بھاشا کے سروپ کے پھیلانے میں بڑی مددگار ہوتی ہے . انگریزی پھیلانے میں رومن اکچھر بڑے کام کے ثابت ہو رہے ہیں. ہندستان کی ہر بھاشا کی کتاب رومن اکچھروں میں مل سکتی ہے . ہندستان ہی نہیں، دنیا کی ہر بھاشا کی کتاب رومن اکچھروں میں مل سکتی ہے . پھر انگریزی بھاشا کیوں نہ پھیلے ؟

پچاس برس پہلے کی ایک کتاب ہمارے دیکھنے میں آئی جو ہندی بھاشا اور ناگری لپی میں چھپی ہوئی ہے، اور پدیاتمک ہے . یہ انگریزی کوش کی کتاب علی گڑھ کے کسی چھاپے خانے میں چھپی ہے . اُس میں سے کچھ پدیہ ہم نیچے دے رہے ہیں :—

فادر باپ، مدر ہے مائی،
سسٹر بہن، بردر ہے بھائی .
ڈاٹر بیٹی، سن ہے بیٹا،
ینگر چھوٹا، ایلڈر جیٹھا .

اِسی ڈھنگ کی انگریزی کتابیں بہت ملیں گی . ہندوؤں کا

कर हममें से कुछ को एक कैंप में और कुछ को दूसरे कैंप में फेंक रहे हैं.

तीस चौंतीस बरस के बाद उन्हीं अंगरेज़ों ने चालाक ह्यूम की मदद से देश भर के लिये एक राजनीतिक संगठन की नींव डाली और उसका नाम रखा—"इन्डियन नेशनल कांग्रेस." यह न तो सारे हिन्दुस्तानियों के लिये बनाई गयी थी और न इसलिये बनाई गई थी कि हिन्दुस्तानी कोई ऐसी ताक़त हासिल करें जिससे वह अपने देश को अंगरेज़ों के पंजों से छुड़ा सकें. तभी तो इस कांग्रेस का सब काम अंगरेज़ी में होता था और सन 1920 की दिसम्बर तक अंगरेज़ी में होता रहा.

अंगरेज़ी कुधात की बनी इन्डियन नेशनल कांग्रेस हिन्दुस्तानी पारस महात्मा गांधी को छूकर सन 1921 में मध्य प्रदेश के शहर नागपूर में सुधात बन गई और फिर इसका बहुत सा काम उस भाषा में होने लगा जिसे राष्ट्र भाषा कहा जा रहा है. यह भाषा सन 1921 में उसी असली रूप में दुनिया के सामने आई जिसका बचपन यूरापवासियों ने उस वक़्त देखा था जब वह हिन्दुस्तान के किनारे लगे थे.

राष्ट्रभाषा स्वरूप और लिखावट—

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जीते जी हिन्दी उर्दू दोनों लिखावटों पर ज़ोर देते रहे. उनके सामने रोमन लिपि अपनाने का सवाल भी आया था पर उन्होने उसको कुछ इस तरह दुतकारा मानों ऐसा सवाल रखने वाला कोई गुनाह कर रहा हो. यह बात हम उनसे सुनी हुई कह रहे हैं जिन्होंने उस दुतकार को अपने कानों सुना. उन्हीं का यह कहना है कि यह ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता कि जो राष्ट्रपिता रोमन को दुतकार रहे थे वह उसे अपनाने के लिये कभी राज़ी न होते. हो सकता है राज़ी हो जाते. दो लिखावटों पर ज़ोर दे कर गांधी जी राष्ट्रभाषा हिन्दी की नदी के दो मज़बूत किनारे बना देना चाहते थे जिससे उस नदी में वह पानी तो आ न पाये जिसे नदी में नहीं आना चाहिये और बाढ़ का वह पानी सबका सब आ जाये या ज़ियादा से ज़ियादा आ जाये जिसे नदी में आना चाहिये. यही वह दो किनारे हैं जो राष्ट्रभाषा हिन्दी को एक तरफ़ संस्कृत की ओर भटकने से रोकते हैं और दूसरी तरफ़ फ़ारसी अरबी की ओर भटकने से. सभव है आगे चलकर यह दोनो किनारे एक ही लिखावट के बनने लगें.

रोमन लिखावट अगर तुरकी में अपने पांव जमा सकती है और फल फूल सकती है तो हिन्दुस्तान में फल फूल न सके यह तो नहीं कहा जा सकता. हां, यह हो सकता है कि इमली के पेड़ की तरह फल देने में बहुत बरस लगा दे जिस जोखम के लिये देश इस समय तैयार नहीं है.

کر ہم میں سےکچھ کو ایک کیمپ میں اور کچھ کو دوسرے کیمپ میں پھینک رہے ہیں .

تیس چونتیس برس کے بعد انہیں انگریزوں نے چالاک ہیوم کی مدد سے دیش بھر کے لئے ایک راجنیتک سنگٹھن کی نیو ڈالی اور اس کا نام رکھا —" اِنڈین نیشنل کانگریس ." یہ نہ تو سارے ہندستانیوں کے لئے بنائی گئی تھی اور نہ اس لئے بنائی گئی تھی کہ ہندستانی کوئی ایسی طاقت حاصل کریں جس سے وہ اپنے دیش کو انگریزوں کے پنجوں سے چھڑا سکیں . تبھی تو اس کانگریس کا سب کام انگریزی میں ہوتا تھا اور سن 1920 کی دسمبر تک انگریزی میں ہوتا رہا .

انگریزی کودھات کی بنی انڈین نیشنل کانگریس ہندستانی پارس مہاتما گاندھی کو چھو کر سن 1921 میں مدھیہ پردیش کے شہر ناگپور میں سودھات بن گئی اور پھر اس کا بہت سا کام اُس بھاشا میں ہونے لگا جسے راشٹر بھاشا کہا جا رہا ہے . یہ بھاشا سن 1921 میں اسی اصلی روپ میں دنیا کے سامنے آئی جسکا بچپن یورپ واسیوں نے اُس وقت دیکھا تھا جب وہ ہندستان کے کنارے لگے تھے .

راشٹر بھاشا سروپ اور لکھاوٹ

راشٹر پتا مہاتما گاندھی جیتے جی ہندی اردو دونوں لکھاوٹوں پر زور دیتے رہے . اِن کے سامنے رومن لپی اپنانے کا سوال بھی آیا تھا پر اُنہوں نے اُس کو کچھ اِس طرح دتکارا مانو ایسا سوال رکھنے والا کوئی گناہ کر رہا ہو . یہ بات ہم اُن سے سنی ہوئی کہ رہے ہیں جنہوں نے اُس دتکار کو اپنے کانوں سنا . اِنہوں کا یہ کہنا ہے کہ یہ ٹھیک ٹھیک نہیں کہا جا سکتا کہ جو راشٹر پتا رومن کو دتکار رہے تھے وہ اُسے اپنانے کے لئے کبھی راضی نہ ہوتے . ہو سکتا ہے راضی ہوجاتے . دو لکھاوٹوں پر زور دے کر گاندھی جی راشٹر بھاشا ہندی کی ندی کے دو مضبوط کنارے بنا دینا چاہتے تھے جس سے اُس ندی میں وہ پانی تو آ نہ پائے جسے ندی میں نہیں آنا چاہئے اور باڑھ کا وہ پانی سب کا سب آ جائے یا زیادہ سے زیادہ آ جائے جسے ندی میں آنا چاہئے . یہی وہ دو کنارے ہیں جو راشٹر بھاشا ہندی کو ایک طرف سنسکرت کی اُور بھٹکنے سے روکتے ہیں اور دوسری طرف فارسی عربی کی اُور بھٹکنے سے . سمبھو ہے آگے چل کر یہ دونوں کنارے ایک ہی لکھاوٹ کے بننے لگیں .

رومن لکھاوٹ اگر ترکی میں اپنے پاؤں جما سکتی ہے اور پھل پھول سکتی ہے تو ہندستان میں پھل پھول نہ سکے یہ تو نہیں کہا جا سکتا . ہاں' یہ ہو سکتا ہے کہ املی کے پیڑ کی طرح پھل دینے میں بہت برس لگا دے جس جوکھم کے لئے دیش اِس سمے تیار نہیں ہے .

समझा जाता था. किताबघर शब्द उस हिन्दुस्तानी बोली का है जो हिन्दी और उर्दू के समुचित मेल से बनी थी और हर जगह समझी और बोली जाती थी, और पुस्तकालय संस्कृत का तत्सम शब्द है.

कलकत्ते के फ़ोर्ट विलियम कालेज में जो जो भाषाएं पढ़ाई जाती थीं उनमें हिन्दी उर्दू नाम की कोई भाषा नहीं मिलती. हां, बंगला इत्यादि भाषा के साथ साथ इस देश की एक भाषा और पढ़ाई जाती थी जिसका नाम था 'हिन्दुस्तानी'. यह भाषा हर अंगरेज़ के लिये या हर विदेशी के लिये ज़रूरी होनी चाहिये थी और ज़रूरी थी भी. हिन्दुस्तानी जाने बिना हिन्दुस्तान भर में विदेशियों का काम नहीं चल सकता था. यह वही भाषा थी जिसका सारा शब्द भंडार आज भी "शब्द सागर" में मौजूद है. यही वह हिन्दुस्तानी थी जो नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में आसानी से लिखी और पढ़ी जा सकती थी. यही हिन्दुस्तानी विदेशी राज्य की फूटनीति से बचकर जहां जहां जीती रही और रूखा सूखा खाकर बढ़ती रही, वहां वहां वह आज तक अपना पुराना शब्द भंडार तो लिये है ही, हज़ारों नये शब्द भी उसने अपना लिये हैं. उन शब्दों में—अंगरेज़ी, फ्रेन्च, पुर्तगाली, यूनानी, तुरकी इत्यादि के शब्द और वह शब्द भी शामिल हैं जो उसने बड़े प्यार से हिन्दुस्तान के उन प्रान्तों से अपनाये जिन्होंने उसका स्वागत किया.

ऊपर हमने एक वाक्य इस्तेमाल किया है—"विदेशी राज की फूटनीति." सचमुच अंगरेज़ों ने हिन्दुस्तान में फूट डालने की ग़रज़ से संस्कृत और अरबी के अलग अलग कालेज खोले और हिन्दी उर्दू नाम से दो भाषायें चलाईं जिनमें से एक मुसलमानों के सिर मढ़कर उसको उनकी धर्म भाषा मनवाया और दूसरी हिन्दुओं के सिर मढ़कर उसको उनकी धर्म भाषा. इतना ही नहीं, उन्होंने कुछ ऐसी जादू की लकड़ी कट्टर हिन्दुओं और कट्टर मुसलमानों के सिर पर फेरी कि हिन्दुस्तान से अंगरेज़ी राज उठ जाने के बाद आज भी उसका असर उनके सिर से उतर नहीं पा रहा है.

जिस फ़ोर्ट विलियम कालेज ने एक भाषा हिन्दुस्तानी का प्रचार किया उसी ने फूटनीतिज्ञ लार्ड मेकाले के इशारे पर लल्लू लाल मिश्र से उस हिन्दी में "प्रेमसागर" लिखवाया और उस उर्दू में इन्शा अल्ला ख़ां से "चहार दरवेश" लिखवाई जो हिन्दी और उर्दू इस देश भर में कहीं भी बोली नहीं जाती थी. अंगरेज़ों की यह फूटनीति सफल हुई. उर्दू मुसलमानों की धर्म भाषा बन बैठी और हिन्दी हिन्दुओं की. "हिन्दू, हिन्दी, हिन्दुस्तान" के नारे चल पड़े! राष्ट्रभाषा हिन्दी का असली और एक रूप हिन्दुस्तानी, दो रूप लेकर हर जगह खड़ा हो गया और साफ़ मालूम होने लगा कि यह दोनों रूप हम हिन्दुस्तानियों को पकड़ पकड़

سمجھا جاتا تھا . کتاب گھر شبد اُس هندستانی بولی کا هے جو هندی اور اردو کے سموچت میل سے بنی تھی اور هر جگه سمجھی اور بولی جاتی تھی' اور پستکالیه سنسکرت کا تتسم شبد هے .

کلکتے کے فورٹ ولیم کالج میں جو جو بھاشائیں پڑھائی جاتی تھیں اُن میں هندی اردو نام کی کوئی بھاشا نهیں ملتی. هاں' بنگلا اتیادی بھاشا کے ساتھ ساتھ اِس دیش کی ایک بھاشا اور پڑھائی جاتی تھی جس کا نام تھا ' هندستانی .' یه بھاشا هر انگریز کے لئے یا هر ودیشی کے لئے ضروری هونی چاهئے تھی اور ضروری تھی بھی . هندستانی جانے بنا هندستان بھر میں ودیشیوں کا کام نهیں چل سکتا تھا . یه وهی بھاشا تھی جس کا سارا شبد بھنڈار آج بھی " شبد ساگر " میں موجود هے . یهی وه هندستانی تھی جو ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں آسانی سے لکھی اور پڑھی جا سکتی تھی . یهی هندستانی ودیشی راجیه کی پھوٹ نیتی سے بچ کر جهاں جهاں جیتی رهی اور روکھا سوکھا کھا کر بڑھتی رهی' وهاں وهاں وه آج تک اپنا پرانا شبد بھنڈار تو لئے هے هی' هزاروں نئے شبد بھی اِس نے اپنا لئے هیں. اِن شبدوں میں—انگریزی' فرینچ' پرتگالی' یونانی' ترکی اتیادی کے شبد اور وه شبد بھی شامل هیں جو اُس نے بڑے پیار سے هندستان کے اُن پرانتوں سے اپنائے جنهوں نے اُس کا سواگت کیا .

اوپر هم نے ایک واکیه استعمال کیا هے—" ودیشی راج کی پھوٹ نیتی ." هندستان میں پھوٹ ڈالنے کی غرض سے سنسکرت اور عربی الگ الگ کالج کھولے اور هندی اردو نام سے دو بھاشائیں چلائیں جس میں سے ایک مسلمانوں کے سر مڑھ کر اُس کو اُن کی دھرم بھاشا منوایا اور دوسری هندؤں کے سر مڑھ کر اُس کو اُن کی دھرم بھاشا . اِتنا هی نهیں' اُنهوں نے کچھ ایسی جادو کی لکڑی کٹر هندؤں اور کٹر مسلمانوں کے سر پر پھیری که هندستان سے انگریزی راج اُٹھ جانے کے بعد آج بھی اُس کا اثر اُن کے سر سے اُتر نهیں پا رها هے .

جس فورٹ ولیم کالج نے ایک بھاشا هندستانی کا پرچار کیا اُسی نے کوٹ نیتگیه لارڈ میکالے کے اِشارے پر للو لال مصر سے اُس هندی میں " پریم ساگر " لکھوایا اور اُس اردو میں انشا الله خاں سے " چهاردرویش " لکھوائی جو هندی اور اردو اِس دیش بھر میں کهیں بھی بولی نهیں جاتی تھیں. انگریزوں کی یه پھوٹ نیتی سپھل هوئی . اردو مسلمانوں کی دھرم بھاشا بن بیٹھی اور هندی هندؤں کی. "هندو' هندی' هندستان " کے نعرے چل پڑے ! راشٹر بھاشا هندی کا اصلی اور ایک روپ هندستانی' دو روپ لیکر هر جگه کھڑا هوگیا اور صاف معلوم هونے لگا که وه دونوں روپ' هم هندستانیوں کو پکڑ پکڑ

हिन्द के साथ ही साथ इस देश को ईरान वाले हिन्दुस्तान कहने लगे. ईरान की बोली ईरानी या फ़ारसी में "स्तान", के मानी हैं "स्थान". "हिन्दुओं का स्थान" यहां हिन्दुस्तान बन गया और यहां की बोली हिन्दुस्तानी बन गई. यहां के निवासी हिन्दुस्तानी हो गये. इसी हिन्द से हिन्द के निवासी हिन्दू हो गये. इसी से हिन्दुस्तान के सब धर्मों का नाम विदेशियों की नजरों में एक 'हिन्दू धर्म' से पुकारा जाने लगा.

कुछ हिन्दी लेखकों को हिन्दुस्तान शब्द में विदेशीपन की गंध आती है. इसलिये वे हिन्दुस्तान न लिख कर हिन्दु-स्थान लिखते हैं और कहते हैं. किसी किसी को हिन्द शब्द में भी अरबियत की गंध आती है इसलिये वह हिन्दी भाषा को हिन्दी नहीं कहना चाहते. वह उसे भारत के नाम पर भारती नाम देना चाहते हैं. पर उनके रास्ते में हिन्दुस्तान का संविधान आ खड़ा होता है. उसने जिस भाषा को सरकार की दफ़्तरी भाषा बताया है उसका नाम हिन्दी माना है और संविधान में वेद-वाक्य से कम बदलाव करना हमा-शुमा का काम नहीं, इसलिये हिन्दी नाम टिका हुआ है.

दो शब्दों में हमारी राष्ट्रभाषा का हिन्दी नाम अरबी भाषा का है और अगर उसे हिन्दुस्तानी कहें तो वह फ़ारसी का हो जायगा, रहेगा फिर भी विदेशी. हम केवल यह कहना चाहते हैं कि नाम भेद काम के सुभीते भर के लिये होता है. व्याकरण ने नाम की परिभाषा करते वक़्त साफ़ बताया है कि नामकरण मे अर्थ पर ध्यान नहीं दिया जाता. नाम पूनमचंद और हैं काले, नाम भूपतिशाह और हैं भिखमंगे, नाम नारंगी और है रंगी हुई. फिर भी भाषा का नाम देश के नाम पर होने से सुभीता होता है. नाम पर वाद विवाद ही न चलता अगर हमारे सिरों में भड़काने वालों ने भड़क पैदा न की होती. आये दिन घर घर में बच्चे पैदा होते हैं और उनके नाम आसानी से रख लिये जाते हैं.

अब हम इस राष्ट्रभाषा का स्वरूप क्या था इसे गहराई से देखें. अंगरेज या अंगरेजों से पहले जितने यूरप वाले हिन्दुस्तान के किनारे लगे उन्हें यहां एक भाषा ऐसी जरूर मिली जो थोड़ी बहुत हर जगह समझी जाती थी, उसका कुछ नाम भी मिला और नाम वही मिला जिस से यह देश अंकित था. वह नाम था हिन्दुस्तान और देश भर की जो एक बोली मिली वह थी हिन्दुस्तानी. इस बात का लिखित प्रमाण फ़ोर्ट विलियम कालेज की वह मोहर है जो कालेज के पुस्तकालय की पुस्तकों पर छापी जाती थी. उस मोहर पर बंगला लिपि में लिखा था—पुस्तकालय. लेकिन नागरी और फ़ारसी दोनों लिपियों में लिखा था "किताब घर" इससे मालूम होता है कि "किताब घर" हिन्दुस्तान के कोने कोने में उस समय कम से कम "पुस्तकालय" से कहीं ज़्यादा

ہند کے ساتھ ہی ساتھ اِس دیش کو ایران والے ہندستان کہنے لگے ۔ ایران کی بولی ایرانی یا فارسی میں "ستان" کے معنی ہیں "استھان"۔ "ہندؤں کا استھان" وہاں ہندستان بن گیا اور یہاں کی بولی ہندستانی بن گئی ۔ یہاں کے نواسی ہندستانی ہوگئے ۔ اِسی ہند سے ہند کے نواسی ہندو ہوگئے ۔ اِسی سے ہندستان کے سب دھرموں کا نام ودیشیوں کی نظروں میں ایک "ہندو دھرم" سے پکارا جانے لگا ۔

کچھ ہندی لیکھکوں کو ہندستان شبد میں ودیشی پن کی گندھ آتی ہے ۔ اس لئے وے ہندستان نہ لکھ کر ہندو استھان لکھتے ہیں اور کہتے ہیں ۔ کسی کسی کو ہند شبد میں بھی عربیت کی گندھ آتی ہے اِس لئے وہ ہندی بھاشا کو ہندی نہیں کہنا چاہتے۔ وہ اُسے بھارت کے نام پر بھارتی نام دینا چاہتے ہیں ۔ پر اُن کے راستے میں ہندستان کا سمودھان آ کھڑا ہوتا ہے ۔ اس نے جس بھاشا کو سرکار کی دفتری بھاشا بتایا ہے اس کا نام ہندی مانا ہے اور سمودھان میں وید واکیہ سے کم بدلاؤ کرنا ہما شما کا کام نہیں' اس لئے ہندی نام ٹکا ہوا ہے ۔

دو شبدوں میں ہماری راشٹر بھاشا کا ہندی نام عربی بھاشا کا ہے اور اگر اُسے ہندستانی کہیں تو وہ فارسی کا ہوجائے گا' رہے گا پھر بھی ودیشی ۔ ہم کیول یہ کہنا چاہتے ہیں کہ نام بھید کام کے سوبھیتے بھر کے لئے ہوتا ہے ۔ ویاکرن نے نام کی پری بھاشا کرتے وقت صاف بتایا ہے کہ نام کرن میں ارتھ پر دھیان نہیں دیا جاتا ۔ نام پونم چند اور ہیں کالے' نام بھوپتی شاہ اور ہیں بھکمنگے' نام نارنگی اور ہے رنگی ہوئی ۔ پھر بھی بھاشا کا نام دیش کے نام پر ہونے سے سوبھیتا ہوتا ہے ۔ نام پر واد وواد ہی نہ چلتا اگر ہمارے سروں میں بھڑکانے والوں نے بھڑک پیدا نہ کی ہوتی ۔ آئے دن گھر گھر میں بچے پیدا ہوتے ہیں اور اُن کے نام آسانی سے رکھ لئے جاتے ہیں ۔

اب ہم اِس راشٹر بھاشا کا سروپ کیا تھا اِسے گہرائی سے دیکھیں ۔ انگریز یا انگریزوں سے پہلے جتنے یورپ والے ہندستان کے کنارے لگے اِنہیں یہاں ایک بھاشا ایسی ضرور ملی جو تھوڑی بہت ہر جگہ سمجھی جاتی تھی' اُس کا کچھ نام بھی ملا اور نام وہی ملا جس سے یہ دیش انکت تھا ۔ وہ نام تھا ہندستان اور دیش بھر کی جو ایک بولی ملی وہ تھی ہندستانی۔ اِس بات کا لکھت پرمان فورٹ ولیم کالج کی وہ مہر ہے جو کالج کے پستکالیہ کی پستکوں پر چھاپی جاتی تھی۔ اس مہر پر بنگلا لپی میں لکھا تھا— پستکالیہ۔ لیکن ناگری اور فارسی دونوں لپیوں میں لکھا تھا "کتاب گھر" اِس سے معلوم ہوتا ہے کہ ہندستان کے کونے کونے "کتاب گھر" اُس سمے کم سے کم "پستکالیہ" سے کہیں زیادہ

प्रदेश के नाम पर नहीं हैं जैसे—उर्दू, संस्कृत, गुरुमुखी इत्यादि. जिन भाषाओं का देश पर नाम नहीं है उनके बारे में यदि यह कहा जाय कि यह कभी किसी देश या प्रदेश की भाषा नहीं रहीं तो ऐसा कहना असत्य नहीं होगा. उर्दू शब्द का अर्थ है-लश्करी यानी फ़ौजी. उर्दू नाम उस बोली या भाषा को दिया गया जो मुस्लिम राजकाल में उस समय के बादशाहों की फ़ौज में बोली जाती थी. यह दूसरी बात है कि उर्दू का व्याकरण और शब्द-भंडार बहुत सा उस भाषा से मिलता है जिसे हम हिंदी कहकर बोलते हैं, जिसे आज राष्ट्रभाषा कहा जाता है और जिसे भारत की सरकार ने अपनी दफ़्तरी भाषा भी मान लिया है. यह भी एक मार्के की बात है कि हिंदी से ही मिलती जुलती उर्दू पाकिस्तान की राष्ट्रभाषा बनी हुई है और वहां की सरकार की दफ़्तरी भाषा भी. अगर कभी यह दोनों देश मिलकर एक हुए तो इनकी राष्ट्रभाषा और सरकार की दफ़्तरी भाषा में कोई अधिक अंतर नहीं पड़ेगा. हमारे इस पड़ौसी देश पाकिस्तान में यह भी एक आन्दोलन चल रहा है कि बंगला एक दूसरी राष्ट्रभाषा मान ली जाय. अगर ऐसा हो गया तो बंगला का नाम बंगला ही रहेगा या कुछ और हो जायगा यह नहीं कहा जा सकता. यहां इतना और जान लेना है कि उर्दू में लश्करी होने के नाते अनेक भाषाओं के शब्द आ गये हैं जैसे—तुर्की, अरबी, फ़ारसी; और उन भाषाओं के भी जो हिन्दुस्तान में जगह जगह बोली जाती हैं. उर्दू और हिंदी का व्याकरण एक है—यह हम पहले कह चुके हैं. इसमें इतना और जोड़ लेना चाहिये कि उर्दू का सब शब्द-भंडार हिंदी के पेट में समाया हुआ है. "हिंदी शब्द सागर" (डिक्शनरी) में वह सब शब्द मिल सकते हैं जो उर्दू बोली में काम आते हैं.

राष्ट्रभाषा हिन्दी को जो हिंदी नाम मिला हुआ है इसमें यह ख़ूबी अपने आप आगई है जो भाषाओं में होना बहुत ज़रूरी है, यानी यह कि भाषा का नाम देश पर ही होना चाहिये. हमारे देश का नाम हिन्द है इसलिए उसकी बोली हिन्दी होनी चाहिये और हमारी राष्ट्रभाषा को वही हिन्दी नाम मिल गया है.

अरब वाले आम तौर से 'स' को 'ह' में बदल देते हैं. यही हाल यूनानियों का है. इसलिये हमारे देश में बहनेवाली सिंधु नदी के नाम पर हमारा देश यूनानियों और अरबों के लिए "हिंधु" देश हुआ, फिर "हिंदु" देश हुआ. वही "हिंद" हो गया. पश्चिम में कहीं कहीं यह इंडु और इंडिया है. यही नाम उन अंगरेज़ों ने अपनाया जो सन 1947 तक इस देश के राजा थे. आज भी हमारे विधान में हमारे देश का सिर्फ़ भारत नहीं लिखा गया, वहां लिखा गया है "भारत यानी इंडिया."

پردیش کے نام پر نہیں ہیں جیسے—اُردو، سنسکرت، گرمکھی اتیادی۔ جن بھاشاؤں کا دیش پر نام نہیں ہے اُن کے بارے میں یدی یہ کہا جائے کہ یہ کبھی کسی دیش یا پردیش کی بھاشا نہیں رہیں تو ایسا کہنا استیہ نہیں ہوگا۔ اُردو شبد کا ارتھ ہے—لشکری یعنی فوجی۔ اُردو نام اُس بولی یا بھاشا کو دیا گیا ہے جو مسلم راج کال میں اُس سمے کے بادشاہوں کی فوج میں بولی جاتی تھی۔ یہ دوسری بات ہے کہ اُردو کا ویاکرن اور شبد بھنڈار بہت سا اُس بھاشا سے ملتا ہے جسے ہم ہندی کہہ کر بولتے ہیں، جسے آج راشٹر بھاشا کہا جاتا ہے اور جسے بھارت کی سرکار نے اپنی دفتری بھاشا بھی مان لیا ہے۔ یہ بھی ایک معرکے کی بات ہے کہ ہندی سے ہی ملتی جلتی اُردو پاکستان کی راشٹر بھاشا بنی ہوئی ہے اور وہاں کی سرکار کی دفتری بھاشا بھی۔ اگر کبھی یہ دونوں دیش مل کر ایک ہوئے تو ان کی راشٹر بھاشا اور سرکار کی دفتری بھاشا میں کوئی ادھک انتر نہیں پڑیگا۔ ہمارے اِس پڑوسی دیش پاکستان میں یہ بھی ایک آندولن چل رہا ہے کہ بنگلا ایک دوسری راشٹر بھاشا مان لی جائے۔ اگر ایسا ہوگیا تو بنگلا کا نام بنگلا ہی رہےگا یا کچھ اور ہو جائےگا یہ نہیں کہا جاسکتا۔ یہاں اتنا اور جان لینا ہے کہ اُردو میں لشکری ہونے کے ناتے انیک بھاشاؤں کے شبد آگئے ہیں جیسے—ترکی، عربی، فارسی؛ اور اُن بھاشاؤں کے بھی جو ہندستان میں جگہ جگہ بولی جاتی ہیں۔ اُردو اور ہندی کا ویاکرن ایک ہے—یہ ہم پہلے کہہ چکے ہیں۔ اِس میں اتنا اور جوڑ لینا چاہئے کہ اُردو کا سب شبد بھنڈار ہندی کے پیٹ میں سمایا ہوا ہے۔ "ہندی شبد ساگر" (ڈکشنری) میں وہ سب شبد مل سکتے ہیں جو اُردو بولی میں کام آتے ہیں۔

راشٹر بھاشا ہندی کو جو ہندی نام ملا ہوا ہے اُس میں یہ خوبی اپنے آپ آگئی ہے جو بھاشاؤں میں ہونا بہت ضروری ہے، یعنی یہ کہ بھاشا کا نام دیش پر ہی ہونا چاہئے۔ ہمارے دیش کا نام ہند ہے اس لئے اُس کی بولی ہندی ہونی چاہئے اور ہماری راشٹر بھاشا کو وہی ہندی نام مل گیا ہے۔

عرب والے عام طور سے 'س' کو 'ہ' میں بدل دیتے ہیں۔ یہی حال یونانیوں کا ہے۔ اِس لئے ہمارے دیش میں بہنے والی سندھ ندی کے نام پر ہمارا دیش یونانیوں اور عربوں کے لئے "ہندھو" دیش ہوا، پھر "ہندو" دیش ہوا۔ وہی "ہند" ہوگیا۔ پچھم میں کہیں کہیں یہ انڈو اور انڈیا ہے۔ یہی نام اُن انگریزوں نے اپنایا جو سن 1947 تک اِس دیش کے راجہ تھے۔ آج بھی ہمارے ودھان میں ہمارے دیش کو صرف بھارت نہیں لکھا گیا، وہاں لکھا گیا ہے "بھارت یعنی انڈیا۔"

राष्ट्रभाषा का स्वरूप

भाई मिश्रीलाल जैन

[नीचे के निबन्ध पर श्री मिश्रीलाल जैन को मध्य प्रदेश इंटर कालीजिएट ऐसे कम्पीटीशन में सरकार से पहला इनाम २५०) रु० का मिला है—एडीटर]

❀ ❀ ❀

राष्ट्रभाषा का स्वरूप क्या था—

यदि राष्ट्र शब्द का अर्थ किसी देश की वह जनता है जो एक राज्य के नीचे अपना जीवन बिता रही हो तो इन अर्थों में भारत यानी हिन्दुस्तान कभी राष्ट्र नहीं रहा.

यदि राष्ट्र शब्द का अर्थ किसी देश की वह जनता है जो सब रूप से एक हो और अपने ही प्रतिनिधियों द्वारा शासित की जा रही हो तो इन अर्थों में भी हिन्दुस्तान कभी राष्ट्र नहीं रहा.

हिन्दुस्तान बहुत बड़ा देश है. इसे उपमहाद्वीप कहा जाता है. आज भी हिन्दुस्तान हुकूमत के लिहाज़ से भारत और पाकिस्तान दो हिस्सों में बंटा हुआ है. ऐसी हालत भी हिन्दुस्तान की अब से पहले कभी नहीं रही. जब यह देश किसी तरह राष्ट्र नहीं रहा तब इसकी कोई राष्ट्रभाषा कैसे होती? फिर भी आज इसमें एक ऐसी भाषा मौजूद है जो थोड़ी बहुत देश के कोने कोने में समझी जाती है. अगर कोई विदेशी यहां आ जाय तो वह उस एक भाषा के सहारे सारे देश में घूम सकता है, भारत और पाकिस्तान दोनों में आसानी से उसी एक भाषा से काम चल सकता है.

इस देश में राष्ट्रभाषा रही हो या न रही हो, ऐसी एक भाषा ज़रूर थी और आज भी है जो सब जगह समझी जाती थी. यह कब से थी और इसने कब क्या क्या रूप लिए यह ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता. हो सकता है कि रूप के साथ इसके नाम भी बदले हों. आज जिस भाषा को राष्ट्रभाषा होने का सौभाग्य प्राप्त है उसके भी दो सौ बरस के अन्दर अन्दर कई नाम रह चुके हैं, जैसे—हिन्दवी, हिंदुस्तानी, हिंदुस्थानी इत्यादि.

भाषाओं के नाम ज़्यादातर देश के नाम पर होते हैं जैसे—रूसी, चीनी, जापानी, जर्मन, फ्रेंच, इत्यादि. भारत में भी अनेक भाषाओं के नाम देशों या प्रदेशों के नाम पर पड़े हैं जैसे—बंगाली, उड़िया, मद्रासी, गुजराती, मराठी इत्यादि. कुछ ऐसी भाषाएं भी हैं जिनके नाम देश या

راشٹر بھاشا کا سروپ

بھائی مشری لعل جین

[نیچے کے نبندھ پر شری مشری لعل جین کو مدھیہ پردیش انٹر کالیجئیٹ ایسے کمپٹیشن میں سرکار سے پہلا انعام 250 روپئے کا ملا ہے—ایڈیٹر]

❀ ❀ ❀

راشٹر بھاشا کا سروپ کیا تھا—

یدی راشٹر شبد کا ارتھ کسی دیش کی وہ جنتا ہے جو ایک راجیہ کے نیچے جیون بتا رہی ہو تو اِن ارتھوں میں بھارت یعنی ہندستان کبھی راشٹر نہیں رہا .

یدی راشٹر شبد کا ارتھ کسی دیش کی وہ جنتا ہے جو سب روپ سے ایک ہو اور اپنے ہی پرتی ندھیوں دوارا شاست کی جا رہی ہو تو اِن ارتھوں میں بھی ہندستان کبھی راشٹر نہیں رہا .

ہندستان بہت بڑا دیش ہے . اِسے اُپ مہادیپ کہا جاتا ہے . آج بھی ہندستان حکومت کے لحاظ سے بھارت اور پاکستان دو حصوں میں بٹا ہوا ہے . ایسی حالت بھی ہندستان کی اب سے پہلے کبھی نہیں رہی. جب یہ دیش کسی طرح راشٹر نہیں رہا تب اِس کی کوئی راشٹر بھاشا کیسے ہوتی ؟ پھر بھی آج اِس میں ایک ایسی بھاشا موجود ہے جو تھوڑی بہت دیش کے کونے کونے میں سمجھی جاتی ہے . اگر کوئی ودیشی یہاں آجائے تو وہ اُس ایک بھاشا کے سہارے سارے دیش میں گھوم سکتا ہے' بھارت اور پاکستان دونوں میں آسانی سے اُسی ایک بھاشا سے کام چل سکتا ہے .

اِس دیش میں راشٹر بھاشا رہی ہو یا نہ رہی ہو' ایسی ایک بھاشا ضرور تھی اور آج بھی ہے جو سب جگہ سمجھی جاتی تھی . یہ کب سے تھی اور اِس نے کب کیا کیا روپ لئے یہ ٹھیک ٹھیک نہیں کہا جاسکتا . ہوسکتا ہے کہ روپ کے ساتھ اُس کے نام بھی بدلے ہوں . آج جس بھاشا کو راشٹر بھاشا ہونے کا سوبھاگیہ پراپت ہے اُس کے بھی دو سو برس کے اندر اندر کئی نام رہ چکے ہیں' جیسے—ہندوی' ہندستانی' ہندستھانی اتیادی .

بھاشاؤں کے نام زیادہ‌تر دیش کے نام پر ہوتے ہیں جیسے—روسی' چینی' جاپانی' جرمن' فرینچ اتیادی . بھارت میں بھی انیک بھاشاؤں کے نام دیشوں یا پردیشوں کے نام پر پڑے ہیں جیسے—بنگالی' اُڑیا' مدراسی' گجراتی' مراٹھی اتیادی . کچھ ایسی بھاشائیں بھی ہیں جن کے نام دیش یا

अच्छी चीजों को सबके साथ मिलकर अपनाने के बीच से होकर यह रास्ता जाता है. दूसरे से नाजायज़ फ़ायदा उठा कर मौज उड़ाने के पुराने तरीक़े ने आज हमें इस नौबत तक पहुंचा दिया है. हम अगर वक़्त पर न चेते तो हम खड्डे के नीचे होंगे. अगर हम दीवार की लिखावट नहीं पढ़ सकते और अपने तरीक़ों को समय की मांग के अनुसार नहीं ढालते तो मानव सभ्यता पांच साल भी ज़िन्दा नहीं रह सकती. आजकल की स्थिति ने जो डर पैदा किया है उसकी रौ में हमें नहीं बहना चाहिये. ठन्डे दिल और दिमाग़ से हमें इस पर सोचना चाहिये. इनसानियत को और ख़ुद अपने को बचाने का अब भी समय है. हाइड्रोजन बम बनाने वाले राष्ट्र जब तक अपने आर्थिक ढांचे को जड़ से बदलने को तैयार नहीं होते तब तक दूसरे उन राष्ट्रों को जो इन भयानक हथियारों के इस्तेमाल के सचमुच विरोधी हैं, इन ज़िद्दी राष्ट्रों के साथ असहयोग करना चाहिये और पूरे ज़ोर से अपने विरोध का प्रदर्शन करना चाहिये.

क्या हम भारत में यह नहीं कर सकते, क्या अपनी दूसरी पंचसाला योजना को इस आधार पर नहीं बना सकते कि जिसमें युद्ध और झगड़े टंटे की सम्भावना न रहे और हम एक मिले जुले परिवार में एक साथ रहने वाले भाइयों की तरह साथ साथ रह सकें ? भगवान हमें इस स्थिति से लड़ने के लिये रोशनी, आध्यात्मिक ताक़त और बुद्धि प्रदान करें. क्या हमारे सामने कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिससे उम्मीद की एक किरन मिल सके ?

मैं जानता हूं कि मेरे अन्दर बहुत से प्रेम है. पर प्रेम की तो सीमा ही नहीं होती. मैं यह भी जानता हूं कि मेरा प्रेम असीम नहीं है. मैं सांप के साथ कहां खेल सकता हूं ? जो अहिंसा-मूर्ति हो उसके सामने सांप भी ठन्डा हो जाता है. मुझे इस पर पूरा पूरा विश्वास है.

—गांधी

اچھی چیزوں کو سب کے ساتھ مل کر اپنانے کے بیچ سے ہو کر یہ راستہ جاتا ھے. دوسرے سے ناجائز فائدہ اُٹھا کر موج اُڑانے کے پرانے طریقے نے آج ھمیں اِس نوبت تک پہونچا دیا ھے . ہم اگر وقت پر نہ چیتے تو ہم کھڈ کے نیچے ھوں گے . اگر ہم دیوار کی لکھاوٹ نہیں پڑھ سکتے اور اپنے طریقوں کو سمے کی مانگ کے انوسار نہیں ڈھالتے تو مانو سبھیتا پانچ سال بھی زندہ نہیں رہ سکتی . آجکل کی استھتی نے جو ڈر پیدا کیا ھے اُس کی رو میں ھمیں نہیں بہنا چاھئے . ٹھنڈے دل اور دماغ سے ھمیں اِس پر سوچنا چاھئے . اِنسانیت کو اور خود اپنے کو بچانے کا اب بھی سمے ھے . ھائڈروجن بم بنانے والے راشٹر جب تک اپنے آرتھک ڈھانچے کو جڑ سے بدلنے کو تیار نہیں ھوتے تب تک دوسرے اُن راشٹروں کو جو اِن بھیانک ھتھیاروں کے استعمال کے سچ مچ ورودھی ھیں' اِن ضدی راشٹروں کے ساتھ اسہیوگ کرنا چاھئے اور پورے زور سے اپنے ورودھ کا پردرشن کرنا چاھئے .

کیا ہم بھارت میں یہ نہیں کر سکتے' کیا اپنی دوسری پانچسالہ یوجنا کو اِس آدھار پر نہیں بنا سکتے کہ جس میں یدھ اور جھگڑے ٹنٹے کی سمبھاونا نہ رھے اور ہم ایک ملے جلے پریوار میں ایک ساتھ رھنے والے بھائیوں کی طرح ساتھ ساتھ رہ سکیں ؟ بھگوان ھمیں اِس استھتی سے لڑنے کے لئے روشنی' آدھیاتمک طاقت اور بدھی پردان کریں . کیا ھمارے سامنے کوئی ایسی چیز نہیں ھے . جس سے اُمید کی ایک کرن مل سکے؟

میں جانتا ھوں کہ میرے اندر بہت سے پریم ھیں . پر پریم کی تو سیما ھی نہیں ھوتی . میں یہ بھی جانتا ھوں کہ میرا پریم اسیم نہیں ھے . میں سانپ کے ساتھ کہاں کھیل سکتا ھوں ؟ جو اھنسا مورتی ھو اُس کے سامنے سانپ بھی ٹھنڈا ھو جاتا ھے . مجھے اِس پر پورا پورا وشواس ھے .

—گاندھی

हमें उस कारन को हटाना पड़ेगा जिससे यह डर पैदा होता है. इस सारे डर की जड़ उस आर्थिक ढांचे में है जिसे अभी तक दोनों दलों ने अपना रखा है. पूंजीवादी व्यवस्था तो हिंसा पर क़ायम ही है. पर पूंजीवाद ही की एक क़िस्म आजकल का रूसी कम्युनिज़्म भी है. वह है मुल्की पूंजीवाद (State Capitalism). रूस ख़ुद कहता है कि आजकल की समाजी स्थिति से निकल कर वह कम्युनिज़्म की तरफ़ बढ़ेगा. हमारे देश के कर्णधार भी कुछ कुछ इसी राष्ट्री पूंजीवाद की तरफ़ बढ़ते दिखाई देते हैं. बदी से हम नेकी नहीं पा सकते. साम्राज की हिंसा का रुख़ उनकी तरफ़ होता है जिनको वह चूसता है, जबकि राष्ट्री पूंजीवाद की हिंसा का हमला पूंजी वाले व्यक्तियों और उद्योग पतियों पर होता है. इस तरह के पूंजीवाद को राजकीय या सरकारी पूंजीवाद भी कह सकते हैं और जब सरकारी पूंजी पतियों में जो अपने को राष्ट्रीय कहते हैं वह सब दोष पैदा हो जाते हैं जो मामूली पूंजीपतियों में और इसका आभास हम अभी से अपने देश में भी देख सकते हैं तो देश की मामूली जनता के लिये यह पूंजीवाद वैसा ही नाशकर हो जाता है जैसा दूसरा पूंजीवाद. आजकल की इन दोनों व्यवस्थाओं में जो हिंसा छिपी हुई है वह आज हाइडरोजन बमों के रूप में पराकाष्ठा को पहुंच चुकी है. ऊपर से काट छांट करके हम इस तरह के रोग को अच्छा नहीं कर सकते. यह सुझाव रखा गया है कि किसी तरह कोई एक आगे बढ़े, अपने हथियार कम कर दे और अपने हाइडरोजन बम ख़तम कर दे. यह सुझाव बड़ी नेक नियती से किया गया है पर इस तत्व पर यह ध्यान नहीं देता कि हाइडरोजन बम हवा में अपने आप पैदा नहीं हो गया है बल्कि वह आजकल के आर्थिक ढांचे के विकास का एक ज़रूरी रूप और उसका एक अंग है. यह सारी व्यवस्था ही अधार्मिक है और हाइडरोजन बम उसी की पैदावार है. ऊपरी इलाज बुराई को दूर नहीं करेगा. हमारे आर्थिक ढांचे के पीछे जो मनोवृत्ति काम करती है उसे जड़ मूल से उखाड़ना पड़ेगा.

इसके लिये गांधी जी ने हमें रास्ता दिखाया है. वह है सर्वोदय का रास्ता. इस रास्ते को केवल शब्दों में नहीं बताया जा सकता. हमारा देश उस पर अमल करे, तब ही हम दुनिया को यह रास्ता दिखा सकते हैं. यह रास्ता राजशक्ति और धनशक्ति दोनों को कुछ हाथों में जमा होने देने (centralisation) के बजाय उन्हें अधिक से अधिक और सब में बांट देने (decentralisation) का रास्ता है. अन्त में यह पूंजीवाद और राज दोनों को ख़तम करने का रास्ता है. यही जनता का सच्चा राज हो सकता है. यही सच्चा कम्युनिज़्म कहा जा सकता है और यही असली गांधीवाद है. स्वावलम्बन, अपने पर क़ाबू और ज़िन्दगी की

ہمیں اُس کارن کو ہٹانا پڑے گا جس سے یہ ڈر پیدا ہوتا ہے۔ اِس سارے ڈر کی جڑ اُس آرتھک ڈھانچے میں ہے جسے ابھی تک دونوں دلوں نے اپنا رکھا ہے۔ پونجی‌وادی ویوستھا تو ہنسا پر قائم ہی ہے۔ پر پونجی‌واد ہی کی ایک قسم آجکل کا روسی کمیونزم بھی ہے۔ وہ ہے ملکی پونجی‌واد (State Capitalism) روس خود کہتا ہے کہ آجکل کی سماجی استھتی سے نکل کر وہ کمیونزم کی طرف بڑھے گا۔ ہمارے دیش کے کرن دھار بھی کچھ کچھ اِسی راشٹری پونجی‌واد کی طرف بڑھتے دکھائی دیتے ہیں۔ بدی سے ہم نیکی نہیں پا سکتے۔ سامراج کی ہنسا کا رخ اُن کی طرف ہوتا ہے جن کو وہ چوستا ہے، جبکہ راشٹری پونجی‌واد کی ہنسا کا حملہ پونجی والے ویکتیوں اور اُدیوگ پتیوں پر ہوتا ہے۔ اِس طرح کے پونجی‌واد کو راجکیہ یا سرکاری پونجی‌واد بھی کہہ سکتے ہیں اور جب سرکاری پونجی پتیوں میں جو اپنے کو راشٹریہ کہتے ہیں وہ سب دوش پیدا ہو جاتے ہیں جو معمولی پونجی پتیوں میں اور اِس کا آبھاس ہم ابھی سے اپنے دیش میں بھی دیکھ سکتے ہیں تو دیش کی معمولی جنتا کے لئے یہ پونجی‌واد ویسا ہی ناشکر ہو جاتا ہے جیسا دوسرا پونجی‌واد۔ آجکل کی اِن دونوں ویوستھاؤں میں جو ہنسا چھپی ہوئی ہے وہ آج ہائیڈروجن بموں کے روپ میں پراکاشٹھا کو پہونچ چکی ہے۔ اوپر سے کاٹ چھانٹ کر کے ہم اِس طرح کے روگ کو اچھا نہیں کر سکتے۔ یہ سجھاؤ رکھا گیا ہے کہ کسی طرح کوئی ایک آگے بڑھے، اپنے ہتھیار کم کر دے اور اپنے ہائیڈروجن بم ختم کر دے۔ یہ سجھاؤ بڑی نیک نیتی سے کیا گیا ہے پر اِس تتو پر یہ دھیان نہیں دیتا کہ ہائیڈروجن بم ہوا میں اپنے آپ پیدا نہیں ہو گیا ہے بلکہ وہ آجکل کے آرتھک ڈھانچے کے وکاس کا ایک ضروری روپ اور اُس کا ایک انگ ہے۔ یہ ساری ویوستھا ہی ادھارمک ہے اور ہائیڈروجن بم اُسی کی پیداوار ہے۔ اوپری علاج برائی کو دور نہیں کرے گا۔ ہمارے آرتھک ڈھانچے کے پیچھے جو منوورتی کام کرتی ہے اسے جڑ مول سے اُکھاڑنا پڑے گا۔

اس کے لئے گاندھی جی نے راستہ دکھایا ہے۔ وہ ہے سروودے کا راستہ۔ اِس راستے کو کیول شبدوں میں نہیں بتایا جا سکتا۔ ہمارا دیش اُس پر عمل کرے، تب ہی ہم دنیا کو یہ راستہ دکھا سکتے ہیں۔ یہ راستہ راج شکتی اور دھن شکتی دونوں کو کچھ ہاتھوں میں جمع ہونے دینے (centralization) کے بجائے اُنہیں ادھک سے ادھک اور سب میں بانٹ دینے (decentralisation) کا راستہ ہے۔ انت میں یہ پونجی واد اور راج دونوں کو ختم کرنے کا راستہ ہے۔ یہی جنتا کا سچا راج ہو سکتا ہے۔ یہی سچا کمیونزم کہا جا سکتا ہے اور یہی اصلی گاندھی‌واد ہے۔ سواولمبن، اپنے پر قابو اور زندگی کی

है जो केवल अमरीकी नीति को आगे बढ़ाती है. इस तरह इसका असर भी दुनिया से खतम हो गया है.

कम्युनिज़्म आम जनता को ऊपर उठाना चाहता है और जोंकशाहों पर बड़ी बेरहमी से चोट करता है. कम्युनिज़्म के तेज़ी से बढ़ते हुए असर के घेरे के चारों तरफ़ अमरीका एक हिंसक बांध संगठित करने के लिये खुल्लम खुल्ला मैदान में उतर आया है.

अमरीका और रूस दोनों ने आपसी झगड़ों का निपटारा करने के शान्ति के तरीक़ों को छोड़ रखा है और अब दोनों हिंसा के लिये तैयार बैठे हैं. अमरीका ने कोरिया से लेकर, जापान से होते हुए फारमूसा तक और उसके आगे तमाम दक्खिन पूरब एशिया, पाकिस्तान, इराक़, तुर्की, आस्ट्रिया, पच्छमी जरमनी और बर्तानिया तक एक जाल फैला रखा है और अभूतपूर्व हिंसा के लिये एक दीवार खड़ी कर ली है. अपने इस जाल की रक्षा के लिये वह जापान और पच्छमी जरमनी को नए नए ज़हरीले हथियारों से लैस करने की कोशिश कर रहा है और घेरे के चारों तरफ़ अपने फ़ौजी अड्डे क़ायम कर रहा है. बर्तानिया डर रहा है कि जब लड़ाई पूरे ज़ोर शोर से आगे बढ़ेगी तो इंगलैन्ड असहाय रह जाएगा. इसीलिये अपने जज़ीरे की सुरक्षा के लिये अमरीका की नेक नियती पर निर्भर रहने के बजाए बर्तानिया अपनी सुरक्षा का भार खुद संभालना चाहता है. उसने तै कर लिया है कि वह खुद हाइडरोजन बमों से पूरी तरह लैस होकर मैदान में कूदेगा. एशिया में अमरीका ने फ़ारमूसा को अपने आगे बढ़ने का साधन बनाया है. च्यांग-काई-शेक तो केवल एक कठपुतली है. उसे एक मिनट के लिये भी अमरीकी सहायता न मिले अगर अमरीकी हित के लिये वह फ़ायदेमन्द सिद्ध न हो. यही नहीं कि यह गठबन्धन एक दूसरे के लिये सुविधाजनक है बल्कि यह कि न एक को और न दूसरे को ठौर. इसी लिये एक बेतुके और बेमानी आधार पर अमरीका यू. एन. ओ. में फ़ारमूसा की मेम्बरी का समर्थन कर रहा है.

दुनिया को पूरी तरह मिटा डालने वाले नए नए हथियारों के यह तीनों मालिक एक दूसरे से डरे हुए हैं और उस डर के वातावरन के कारन दुनिया हिंसा की बाढ़ में गोते खा रही है. जिन लोगों पर डर का यह भूत सवार है उनके हाथों में दुनिया की सभ्यता की क़िस्मत सुरक्षित समझना एक बड़ी भूल है. ज़रूरत के वक़्त वह क्या कर बैठेंगे यह कोई नहीं कह सकता. एक दूसरे से बात-चीत करने और एक दूसरे के पक्ष को समझने का समय बीत चुका. एक ही रास्ता अब बाक़ी है. ऐसे देश जिनमें किसी का पक्षपात नहीं है बीच बचाव करें और वह देश मिसाल पेश करें जो खुद डर से बौखला नहीं गया है.

هے جو کیول امریکی نیتی کو آگے بڑھاتی هے . اِس طرح اِس کا اثر بھی دنیا سے ختم هوگیا هے .

کمیونزم عام جنتا کو اُوپر اُٹھانا چاهتا هے اور جونک شاهوں پر بڑی بےرحمی سے چوٹ کرتا هے . کمیونزم کے تیزی سے بڑھتے هوئے اثر کے گھیرے کے چاروں طرف امریکہ ایک هنسک باندھ سنگٹھت کرنے کے لئے کھلم‌کھلا میدان میں اتر آیا هے .

امریکہ اور روس دونوں نے آپسی جھگڑوں کا نپٹارا کرنے کے شانتی کے طریقوں کو چھوڑ رکھا هے اور اب دونوں هنسا کے لئے تیار بیٹھے هیں . امریکہ نے کوریا سے لے کر، جاپان سے هوتے هوئے فارموسا تک اور اُس کے آگے دکھن پورب ایشیا، پاکستان، عراق، ترکی، آسٹریا، پچھمی جرمنی اور برطانیہ تک ایک جال پھیلا رکھا هے اور ابھوت‌پورو هنسا کے لئے ایک دیوار کھڑی کر لی هے . اپنے اِس جال کی رکشا کے لئے وہ جاپان اور پچھمی جرمنی کو نئے نئے زهریلے هتیاروں سے لیس کرنے کی کوشش کر رها هے اور گھیرے کے چاروں طرف اپنے فوجی اڈے قائم کر رها هے . برطانیہ ڈر رها هے کہ جب لڑائی پورے زور شور سے آگے بڑھے گی تو انگلینڈ اسهائے رہ جائے گا . اس لئے اپنے جزیرے کی سرکشا کے لئے امریکہ کی نیک نیتی پر نربھر رهنے کے بجائے برطانیہ اپنی سرکشا کا بھار خود سنبھالنا چاهتا هے . اُس نے طے کر لیا هے کہ وہ خود هائڈروجن بموں سے پوری طرح لیس هو کر میدان میں کودے گا . ایشیا میں امریکہ نے فارموسا کو اپنے آگے بڑھنے کا سادھن بنایا هے . چیانگ - کائی - شیک تو کیول ایک کٹھپتلی هے . اُسے ایک منٹ کے لئے بھی امریکی سہایتا نہ ملے اگر امریکی هت کے لئے وہ فائدے مند سدھ نہ هو . یہی نہیں کہ یہ گٹھ بندھن ایک دوسرے کے لئے سودھاجنک هے بلکہ یہ کہ نہ ایک کو اور نہ دوسرے کو ٹھور . اِسی لئے ایک بے تکے اور بے معنی آدھار پر امریکہ یو - این - او . میں فارموسا کی ممبری کا سمرتھن کر رها هے .

دنیا کو پوری طرح مٹا ڈالنے والے نئے نئے هتیاروں کے یہ تینوں مالک ایک دوسرے سے ڈرے هوئے هیں اور اِس ڈر کے واتاورن کے کارن دنیا هنسا کی باڑھ میں غوطے کھا رهی هے . جن لوگوں پر ڈر کا یہ بھوت سوار هے اُن کے هاتھوں میں دنیا کی سبھیتا کی قسمت سرکشت سمجھنا ایک بڑی بھول هے . ضرورت کے وقت وہ کیا کر بیٹھیں گے یہ کوئی نہیں کہہ سکتا . ایک دوسرے سے بات چیت کرنے اور ایک دوسرے کے پکش کو سمجھنے کا سمے بیت چکا . ایک هی راستہ اب باقی هے . ایسے دیش جن میں کسی کا پکشپات نہیں هے بیچ بچاؤ کریں اور وہ دیش مثال پیش کرے جو خود ڈر سے بوکھلا نہیں گیا هے .

का कुछ हिस्सा लेकर "कल्याणकारी राज" (Welfare State) के रूप में इंगलैंड में इसे लागू कर दिया. कुछ हद तक इस तूफ़ान को रोकने में वह सफल रहे. अमरीका ने अपनी पूंजी के बल पर जो सिक्का और क़ब्ज़ा दुनिया पर जमा रक्खा है उसे खो बैठने के डर के कारन अमरीका की सोचने समझने की सारी ताक़त जाती रही है. वह बिना किसी समझौते के और पूरी तरह डट कर इस तूफ़ान से टक्कर लेने की कोशिश कर रहा है. वह बिलकुल घबरा गया है जिससे एक हद दरजे की नाज़ुक और खतरनाक परिस्थिति पैदा हो गई है. चीज़ों के उचित रूप को वह देख ही नहीं पा रहा है. डर ने उसकी आंखों पर परदा डाल दिया है. वह इतना नाउम्मीद हो गया है कि इस नई शक्ति को खतम करने की कोशिश में वह अपनी सारी ताक़त लगा देने को तैयार है. इस विश्व व्यापी हिंसा से जो स्थिति पैदा होगी उससे ख़ुद अमरीका को भी लाचार होना पड़ेगा, इसकी उसे चिन्ता ही नहीं.

सामंतवाद को ज़िन्दा रखने के लिये कुछ दशाब्दियों पहले ज़ार अलेक्ज़ेंडर ने योरप के 'सब राजाओं का वियाना धार्मिक गठबन्धन' नाम से एक सगठन बनाया था. लेकिन एक तो वह राजा एक दूसरे पर भरासा नहीं करते थे और एक दूसरे के खिलाफ़ साज़िश करते रहते थे, दूसरे इस संगठन के पीछे योरप की जनता नहीं थी, इसलिये बिना कुछ करे धरे ही वह संगठन मर गया.

उसके बाद अमरीका के प्रेसीडेन्ट वुडरो विलसन आए. राष्ट्र संघ के नाम से तमाम राष्ट्रों का एक सूत मे बांधने का उन्होंने सपना देखा. उनके देश की जनता ने भी उनका समर्थन नहीं किया. अंगरेज़ों ने राष्ट्र सघ की मशीनरी के ज़रिये दुनिया की नीति पर क़ाबू रखने और उस सगठन को अपने मतलब के लिये इस्तेमाल करने का आसान रास्ता निकाल लिया. दुनिया की जनता को भुला दिया गया. वह संगठन ऊंची कूटनीति का शतरंज बन गया. जनता का समर्थन न होने के कारण उसका भी वही अन्त हुआ जो होना चाहिये था.

उस कोशिश के विफल होने पर अमरीका ने बात चीत के ज़रिये दुनिया में समझौता कराने और इस तरह सब झगड़े टंटे ख़तम करने की नई कोशिश यू. एन. ओ. नाम से शुरू की. यहां छोटे राष्ट्रों की राय को या तो महत्व ही नहीं दिया गया और या बड़े राष्ट्रों ने उन पर अपनी राय थोप दी. अमल में वह नई संस्था सोवियत कम्युनिज़्म की बाढ़ को रोकने के लिये अमरीकी साम्राज का एक साधन बन कर रह गई. प्रोग्राम बनाते समय अमरीका के हित पर ही अधिक ध्यान दिया जाने लगा. धीरे धीरे बरतानिया का असर इस संस्था पर से जाता रहा. आजकल यह एक ऐसी संस्था

کا کچھ حصہ لیکر "کلیان کاری راج" (Welfare State) کے روپ میں انگلینڈ میں اِسے لاگو کردیا. کچھ حد تک اِس طوفان کو روکنے میں وہ سپھل رہے. امریکہ نے اپنی پونجی کے بل پر جو سکہ اور قبضہ دنیا پر جما رکھا ہے اُسے کھو بیٹھنے کے ڈر کے کارن امریکہ کی سوچنے سمجھنے کی ساری طاقت جاتی رہی ہے. وہ بنا کسی سمجھوتے کے اور پوری طرح ڈٹ کر اِس طوفان سے ٹکر لینے کی کوشش کر رہا ہے. وہ بالکل گھبرا گیا ہے جس سے ایک حد درجہ کی نازک اور خطرناک پرستھتی پیدا ہوگئی ہے. چیزوں کے اُچت روپ کو وہ دیکھ ہی نہیں پا رہا ہے. ڈر نے اُس کی آنکھوں پر پردہ ڈال دیا ہے. وہ اتنا نااُمید ہوگیا ہے کہ اِس نئی شکتی کو ختم کرنے کی کوشش میں وہ اپنی ساری طاقت لگا دینے کو تیار ہے. اِس وشوویاپی ہنسا سے جو استھتی پیدا ہوگی اُس سے خود امریکہ کو بھی لاچار ہونا پڑےگا، اِس کی اُسے چنتا ہی نہیں.

سامنت واد کو زندہ رکھنے کے لئے کچھ دشابدیوں پہلے زار الکزنڈر نے یورپ کے 'سب راجاؤں کا ویانا دھارمک گٹھ بندھن' نام سے ایک سنگٹھن بنایا تھا. لیکن ایک تو وہ راجا ایک دوسرے پر بھروسہ نہیں کرتے تھے اور ایک دوسرے کے خلاف سازش کرتے رہتے تھے، دوسرے اِس سنگٹھن کے پیچھے یورپ کی جنتا نہیں تھی اِس لئے بنا کچھ کرے دھرے ہی وہ سنگٹھن مر گیا.

اُس کے بعد امریکہ کے پریسیڈنٹ وڈرو ولسن آئے. راشٹر سنگھ کے نام سے تمام راشٹروں کو ایک سوت میں باندھنے کا اُنہوں نے سپنا دیکھا. اُن کے دیش کی جنتا نے بھی اُن کا سمرتھن نہیں کیا. انگریزوں نے راشٹر سنگھ کی مشینری کے ذریعے دنیا کی نیتی پر قابو رکھنے اور اِس سنگٹھن کو اپنے مطلب کے لئے استعمال کرنے کا آسان راستہ نکال لیا. دنیا کی جنتا کو بھلا دیا گیا. وہ سنگٹھن اُونچی کوٹ نیتی کا شطرنج بن گیا. جنتا کا سمرتھن نہ ہونے کے کارن اُس کا بھی وہی انت ہوا جو ہونا چاہئے تھا.

اُس کوشش کے وپھل ہونے پر امریکہ نے بات چیت کے ذریعہ دنیا میں سمجھوتہ کرانے اور اِس طرح سب جھگڑے ٹنٹے ختم کرنے کی نئی کوشش یو. این. او. نام سے شروع کی. یہاں چھوٹے راشٹروں کی رائے کو یا تو مہتو ہی نہیں دیا گیا اور یا بڑے راشٹروں نے اُن پر اپنی رائے تھوپ دی. عمل میں یہ نئی سنستھا سوویت کمیونزم کی باڑھ کو روکنے کے لئے امریکی سامراج کا ایک سادھن بن کر رہ گئی. پروگرام بناتے سمے امریکہ کے ہت پر ہی ادھک دھیان دیا جانے لگا. دھیرے دھیرے برطانیہ کا اثر اِس سنستھا پر سے جاتا رہا. آجکل یہ ایک ایسی سنستھا

डर की छाया और आशा की एक किरन

डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा

जीवन की अलग अलग मंज़िलों पर हमें अपने अन्दर की कोई न कोई ऐसी अच्छी या बुरी शक्ति रास्ता बताती रहती है जो हमारे सब कामों पर क़ाबू रखती है. कभी प्रेम हमें अन्धा करके आगे ले चलता है, कभी किसी महान शक्ति की भक्ति के कारन हम अपने को पूरी तरह उसके हाथ में दे देते हैं, और कभी घृणा और ग़ुस्से की ज़बर्दस्त प्रवृत्तियों से हर काम में हम प्रभावित रहते हैं. आज जो चीज़ दुनिया पर छाई हुई है वह है डर. अमरीका में जो ज़बर्दस्त शक्ति अमरीका की विदेश नीति का संचालन कर रही है वह है रूस का डर. दूसरों को मिटाने वाली चीज़ों पर वह बिना सोचे समझे धन गंवा रहे हैं. अमरीकी पूंजीपतियों की अनन्त धनलालसा तक को इस डर ने एक बार दबा दिया है.

हर किसी के साथ "बेरोक और मनमानी तिजारत" के पिटे पिटाए सिद्धान्त पर अमरीका ने अमल किया और उसी का नाम "आज़ादी" रखा. अमरीका की आर्थिक व्यवस्था का आधार ही इस पर है कि नतीजों की चिन्ता किये बिना दूसरों से बेरोक जायज़ नाजायज़ फ़ायदा उठाया जावे और उन्हें जिस तरह हो सके चूसा जावे. जब तक रूस मार्क्स-वादी प्रोग्राम लेकर दुनिया के सामने नहीं आया और उसने "समाजिक न्याय" क़ायम करने की तरफ़ दुनिया को मोड़ने की कोशिश नहीं की तब तक इस मामले में अमरीका की मौज थी. रूस की नई विचारधारा का ज़ोर विरोधी शक्तियों को ख़तम करने पर था. इससे पहले दुनिया ग़रीब-चूस पूंजीपतियों या जोंकशाहों के रहम करम पर थी. अब एक ताक़त पैदा हो गई जिसने अपनी ज़रूरत की हर चीज़ को मनमानी शर्तों पर दूसरों से हासिल करने के पूंजीपतियों के अधिकार को चैलेंज दिया. सब से बड़ी बात यह हुई कि दुनिया को "उलट पलट करने वाली" इस नई विचारधारा ने 'सोवियत कम्युनिज़्म' के रूप में अमली जामा पहन लिया. यह नए ढंग की सामाजिक व्यवस्था रूस की सीमाओं को पार कर चारों तरफ़ फैलने लगी. एक के बाद दूसरे देशों ने इसे अपनाया. अंगरेज़ कूटनीति की शतरंज के पुराने खिलाड़ी थे. जब उन्होंने इस शक्ति को बढ़ते देखा तो इस नई नाव के पाल से हवा निकाल देने के लिये और अपने यहां के मज़दूरों की तसल्ली के लिये उन्होंने इस प्रोग्राम

ڈرکی چھایا اور آشا کی ایک کرن

ڈاکٹر جے . سی . کمارپا

جیون کی الگ الگ منزلوں پر ہمیں اپنے اندر کی کوئی نہ کوئی ایسی اچھی یا بری شکتی راستہ بتاتی رہتی ہے جو ہمارے سب کاموں پر قابو رکھتی ہے . کبھی پریم ہمیں اندھا کرکے آگے لے چلتا ہے' کبھی کسی مہان شکتی کی بھکتی کے کارن ہم اپنے کو پوری طرح اُس کے ہاتھ میں دے دیتے ہیں' اور کبھی گھرنا اور غصے کی زبردست پرورتیوں سے ہر کام میں ہم پربھاوت رہتے ہیں. آج جو چیز دنیا پرچھائی ہوئی ہے وہ ہے ڈر . امریکہ میں جو زبردست شکتی امریکہ کی ودیش نیتی کا سنچالن کر رہی ہے وہ ہے روس کا ڈر . دوسروں کو مٹانے والی چیزوں پر وہ بنا سوچے سمجھے دھن گنوا رہے ہیں . امریکی پونجی پتیوں کی اننت دھن لالسا تک کو اِس ڈر نے ایک بار دبا دیا ہے .

ہر کسی کے ساتھ "بےروک اور من مانی تجارت" کے پٹے پٹائے سدھانت پر امریکہ نے عمل کیا اور اُسی کا نام "آزادی" رکھا . امریکہ کی آرتھک ویوستھا کا آدھار ہی اُس پر ہے کہ نتیجوں کی چنتا کئے بنا دوسروں سے بےروک جائز ناجائز فائدہ اُٹھایا جاوے اور اُنہیں جس طرح ہوسکے چوسا جاوے . جب تک روس مارکس وادی پروگرام لے کر دنیا کے سامنے نہیں آیا اور اُس نے "سماجک نیائے" قائم کرنے کی طرف دنیا کو موڑنے کی کوشش نہیں کی تب تک اِس معاملے میں امریکہ کی موج تھی . روس کی نئی وچار دھارا کا زور ورودھی شکتیوں کو ختم کرنے پر تھا . اِس سے پہلے دنیا غریب چوس پونجی پتیوں یا جونک شاہوں کے رحم کرم پر تھی . اب ایک طاقت پیدا ہوگئی جس نے اپنی ضرورت کی ہر چیز کو من مانی شرطوں پر دوسروں سے حاصل کرنے کے پونجی پتیوں کے ادھیکار کو چیلنج دیا . سب سے بڑی بات یہ ہوئی کہ دنیا کو "اُلٹ پلٹ کردینے والی" اِس نئی وچار دھارا نے سوویت کمیونزم کے روپ میں عملی جامہ پہن لیا . یہ نئے ڈھنگ کی سماجک ویوستھا روس کی سیماؤں کو پار کر چاروں طرف پھیلنے لگی . ایک کے بعد دوسرے دیشوں نے اِسے اپنایا . انگریز کوٹ نیتی کے شطرنج کے پرانے کھلاڑی تھے . جب اُنہوں نے اِس شکتی کو بڑھتے دیکھا تو اِس نئی ناؤ کے پال سے ہوا نکال دینے کے لئے اور اپنے یہاں کے مزدوروں کی تسلی کے لئے اُنہوں نے اِس پروگرام

इंजील में लिखा है :—

"ईश्वर ने आदमी को अपनी ही सूरत पर बनाया."

उपनिषद् में लिखा है :—

"यह जीव ब्रह्म ही है कोई ग़ैर नहीं."

क़ुरआन में लिखा है :—

"खुद अल्लाह की फ़ितरत पर आदमी की फ़ितरत बनाई गई है."

आज से लगभग तीस बरस पहले जब हमारे अंगरेज़ हाकिमों की चालों और हमारी अपनी नादानी के कारण देश में हिन्दू मुसलिम झगड़े जगह जगह हो रहे थे उस समय एक सच्चे दिलवाले मुसलमान शायर ने एक बड़ी सुन्दर नज़्म हिन्दुओं, मुसलमानों और सब के लिये लिखी थी. हमारी राय है कि हर हिन्दुस्तानी स्कूल और कालेज की पढ़ाई की किताबों में यह प्यारी और सच्ची नज़्म होनी चाहिये और देश के सब बच्चों को याद कराई जानी चाहिये. वह नज़्म यह है :—

तुम राम कहो या रहीम कहो, दोनों की ग़रज़ अल्लाह से है,
तुम इश्क़ कहो या प्रेम कहो, मतलब तो उसी की चाह से है.
तुम धर्म कहो या दीन कहो, मक़सद तो उसी की राह से है,
तुम सालिक हो या योगी हो, मंशा तो दिले आगाह से है.
क्यों लड़ता है मूरख बन्दे, यह तेरी ख़ाम ख़याली है,
है पेड़ की जड़ तो एक वही, हर मज़हब एक एक डाली है !

बनवाओ शिवाला या मसजिद, है ईंट वही चूना है वही,
मेमार वही मज़दूर वही, मिट्टी है वही गारा है वही.
तकबीर का जो कुछ मतलब है, नाक़ूस का भी मशा है वही,
तुम जिनको नमाज़ें कहते हो, हिन्दू के लिये पूजा है वही.
फिर लड़ने से क्या हासिल है, ज़ीफ़हम हो तुम नादान नहीं,
जो भाई पे दौड़े ग़ुर्रा कर वह हो सकता इनसान नहीं !

क्या क़त्ल व ग़ारत ख़ूँरेज़ी, तारीफ़ यही ईमान की है ?
क्या आपस में लड़कर मरना, तालीम यही क़ुरआन की है ?
इन्साफ़ करो तफ़सीर यही, क्या वेदों के फ़रमान की है ?
क्या सचमुच यह ख़ूख़ारी ही, आला ख़सलत इन्सान की है ?
तुम ऐसे बुरे आमाल पे अपने, कुछ तो ख़ुदा से शर्म करो !
पत्थर जो बना रक्खा तुमने, इस दिल को ज़रा तो नर्म करो !

انجیل میں لکھا ہے :—

"ایشور نے آدمی کو اپنی ہی صورت پر بنایا ."

اپنشد میں لکھا ہے :—

"یہ جیو برہمہ ہی ہے کوئی غیر نہیں ."

قرآن میں لکھا ہے :—

"خود اللہ کی فطرت پر آدمی کی فطرت بنائی گئی ہے ."

آج سے لگ بھگ تیس برس پہلے جب ہمارے انگریز حاکموں کی چالوں اور ہماری اپنی نادانی کے کارن دیش میں ہندو مسلم جھگڑے جگہ جگہ ہو رہے تھے اُس سمے ایک سچے دل والے مسلمان شاعر نے ایک بڑی سندر نظم ہندوؤں، مسلمانوں اور سب کے لئے لکھی تھی . ہماری رائے ہے کہ ہر ہندوستانی اسکول اور کالج کی پڑھائی کی کتابوں میں یہ پیاری اور سچی نظم ہونی چاہئے اور دیش کے سب بچوں کو یاد کرائی جانی چاہئے . وہ نظم یہ ہے :—

تم رام کہو یا رحیم کہو، دونوں کی غرض اللہ سے ہے،
تم عشق کہو یا پریم کہو، مطلب تو اُسی کی چاہ سے ہے .
تم دھرم کہو یا دین کہو، مقصد تو اُسی کی راہ سے ہے،
تم سالک ہو یا یوگی ہو، منشا تو دلِ آگاہ سے ہے
کیوں لڑتا ہے مورکھ بندے، یہ تیری خام خیالی ہے،
ہے پیڑ کی جڑ تو ایک وہی، ہر مذہب ایک ایک ڈالی ہے !

بنواؤ شوالہ یا مسجد ہے اینٹ وہی چونا ہے وہی،
معمار وہی مزدور وہی، مٹی ہے وہی گارا ہے وہی .
تکبیر کا جو کچھ مطلب ہے، ناقوس کا بھی منشا ہے وہی،
تم جن کو نمازیں کہتے ہو، ہے ہندو کے لئے پوجا ہے وہی .
پھر لڑنے سے کیا حاصل ہے، ذی فہم ہو تم نادان نہیں،
جو بھائی پہ دوڑے غرا کر وہ ہوسکتا انسان نہیں !

کیا قتل و غارت خونریزی، تعریف یہی ایمان کی ہے ؟
کیا آپس میں لڑ کر مرنا، تعلیم یہی قرآن کی ہے ؟
انصاف کرو تفسیر یہی، کیا ویدوں کے فرمان کی ہے ؟
کیا سچ مچ یہ خونخواری ہی، اعلیٰ خصلت انسان کی ہے ؟
تم ایسے برے اعمال پہ اپنے، کچھ تو خدا سے شرم کرو !
پتھر جو بنا رکھا تم نے، اِس دل کو ذرا تو نرم کرو !

मेमार = राज, तकबीर = अल्लाहो अकबर, नाक़ूस = शंख, ज़ीफ़हम = समझदार, तफ़सीर = भाष्य, आलाख़सलत = अच्छी आदत, आमाल = काम.

यानी—रूह के लिये न कोई हिन्दू है न कोई मुस्लिम, न कोई तुर्क न कोई अरब, न कोई ईरानी और न कोई ईसाई, न कोई नस्ल, न कोई जात और न कोई फिरक़ा. रूह के लिये बस समझ है और नेकी.

हमारा धर्म या मज़हब हमारे चेहरों पर उस मुस्कराहट की शकल में दिखाई देना चाहिये जो दूसरों के दिलों को जीत ले. हमारे बदन पर वह सुन्दर गहने की तरह चमकना चाहिये. मज़हब का असर यह होना चाहिये कि हमारा अपना दिल खुशी से भरा हुआ हो और हमें देखते ही आस पास के सब लोगों के दिल खुशी से भर जावें. यह नहीं होना चाहिये कि धर्म मज़हब के नाम पर हमारी नाक भौं चढ़ी हुई हो और जो हमें देखे हम से बचकर भागे. धर्म या मज़हब दूसरों को डराने वाला हथियार नहीं होना चाहिये. उससे न हमारे अन्दर डर या बेरहमी पैदा हो और न हम देखकर दूसरों के अन्दर डर या बेरहमी पैदा हो. मज़हब दिल की चीज़ है. दिल ही में उसकी खास जगह होनी चाहिये. सब की सेवा, प्रेम और नेकी उसके रूप होने चाहियें. मज़हब माथे पर या चेहरे पर साइनबोर्डों या नाम-पट्टियों की तरह दिखावे के लिये नहीं होना चाहिये. सिर पर, होंठों पर या ठोड़ी पर बाल रखने या काटने के तरह तरह के ढंगों या अलग अलग तरह के छापों, बिल्लों या कपड़ों में मज़हब का वह दिखावा नहीं होना चाहिये जिस से केवल अपना इश्तहार हो और एक दूसरे से जुदाई और अधिक चमके. प्रकृति यानी क़ुदरत हर नए पैदा हुए बच्चे के चेहरे पर इन्सानियत बल्कि उलूहियत (ब्रह्मत्व) की मुहर लगाकर पैदा करती है. कोई बच्चा हिन्दू, मुस्लिम, पारसी या ईसाई निशानी लेकर पैदा नहीं होता. यह अलग अलग निशान बाद में हम लोग गढ़ कर हर बच्चे पर चिपका देते हैं. हो सकता है कि किसी खास ज़माने में, खास हालत में और खास जगहों पर इनकी ज़रूरत और इनसे फ़ायदा रहा हो. पर आज इन चीज़ों पर ज़िद करना अदूरदर्शिता यानी कोताह-अन्देशी भी है और सब की बरबादी का कारण भी.

मुहम्मद साहब ने कहा है :—

'जितने बच्चे पैदा होते हैं वह सब केवल एक उसी अल्लाह को तसलीम करते हुए पैदा होते हैं."

महाभारत में लिखा है :—

"ब्रह्म ने शुरू में इस सारी दुनिया को बनाया था इसलिये सब जानदार उसी ब्रह्म की औलाद हैं."

मुहम्मद साहब की मशहूर हदीस है :—

"इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह ने आदम को अपनी सूरत पर बनाया है. हर इन्सान की सूरत रहमान की ही सूरत है."

یعنی—روح کے لئے نہ کوئی ھندو ھے نہ کوئی مسلم' نہ کوئی ترک نہ کوئی عرب' نہ کوئی ایرانی اور نہ کوئی عیسائی' نہ کوئی نسل' نہ کوئی جات اور نہ کوئی فرقہ ۔ روح کے لئے بس سمجھ ھے اور نیکی ۔

ھمارا دھرم یا مذھب ھمارے چہروں پر اُس مسکراھٹ کی شکل میں دکھائی دینا چاھئے جو دوسروں کے دلوں کو جیت لے ۔ ھمارے بدن پر وہ سندر گہنے کی طرح چمکنا چاھئے ۔ مذھب کا اثر یہ ھونا چاھئے کہ ھمارا اپنا دل خوشی سے بھرا ھوا ھو اور ھمیں دیکھتے ھی آس پاس کے سب لوگوں کے دل خوشی سے بھر جاویں ۔ یہ نہیں ھونا چاھئے کہ دھرم مذھب کے نام پر ھماری ناک بھوں چڑھی ھوئی ھو اور جو ھمیں دیکھے ھم سے بچ کر بھاگے ۔ دھرم یا مذھب دوسروں کو ڈرانے والا ھتیار نہیں ھونا چاھئے۔ اُس سے نہ ھمارے اندر ڈر یا بےرحمی پیدا ھو اور نہ ھمیں دیکھ کر دوسروں کے اندر ڈر یا بےرحمی پیدا ھو ۔ مذھب دل کی چیز ھے ۔ دل ھی میں اُس کی خاص جگہ ھونی چاھئے ۔ سب کی سیوا' پریم اور نیکی اُس کے روپ ھونے چاھئیں ۔ مذھب ماتھے پر یا چہرے پر سائن بورڈوں یا نام پٹیوں کی طرح دکھاوے کے لئے نہیں ھونا چاھئے ۔ سر پر' ھونٹھوں پر یا ٹھوڑی پر' بال رکھنے یا کٹانے کے طرح طرح کے ڈھنگوں یا الگ الگ طرح کے چھاپوں' بلوں یا کپڑوں میں مذھب کا وہ دکھاوا نہیں ھونا چاھئے جس سے کیول اپنا اشتہار ھو اور ایک دوسرے سے جدائی اور ادھک چمکے ۔ پرکرتی یعنی قدرت ھر نئے پیدا ھوئے بچے کے چہرے پر اِنسانیت بلکہ الوھیت (برھمتو) کی مہر لگا کر پیدا کرتی ھے ۔ کوئی بچہ ھندو' مسلم' پارسی یا عیسائی نشانی لے کر پیدا نہیں ھوتا ۔ یہ الگ الگ نشان بعد میں ھم لوگ گڑھ کر ھر بچے پر چپکا دیتے ھیں ۔ ھو سکتا ھے کہ کسی خاص زمانے میں' خاص حالت میں اور خاص جگہوں پر اِن کی ضرورت اور اِن سے فائدہ رھا ھو ۔ پر آج اِن چیزوں پر ضد کرنا ادوردرشتا یعنی کوتاہ اندیشی بھی ھے اور سب کی بربادی کا کارن بھی ۔

محمد صاحب نے کہا ھے :—

"جتنے بچے پیدا ھوتے ھیں وہ سب کیول اُسی ایک اللہ کو تسلیم کرتے ھوئے پیدا ھوتے ھیں ۔"

مہابھارت میں لکھا ھے :—

"برھمہ نے شروع میں اِس ساری دنیا کو بنایا تھا اِس لئے سب جاندار اُسی برھمہ کی اولاد ھیں ۔"

محمد صاحب کی مشہور حدیث ھے :—

"اِس میں کوئی شک نہیں کہ اللہ نے آدم کو اپنی صورت پر بنایا ھے ۔ ھر انسان کی صورت رحمان کی صورت ھے ۔"

सनातन धर्म' यानी उसी पुराने 'इसलाम' का एक नया रूप होगा जिसे वेदों में 'सनातन धर्म' और क़ुरान में 'दीनुल-क़ैयमा' कहा गया है. अन्दर की रूह वही पुरानी और ऊपर की शकल ज़माने की ज़रूरत के अनुसार नई. उस नए मज़हब में साइन्स और मज़हब दोनों मिलकर एक हो जायेंगे. साइन्स फिर मज़हबी साइन्स होगी और मज़हब साइन्सी मज़हब होगा. जड़ और चेतन, रूह और माद्दा फिर एक ही हक़ीक़त के दो पहलू दिखाई देंगे. तब जाकर हम इन्सानी ज़िन्दगी की एकता और भरपूरता का आनन्द ले सकेंगे. यह एक बुनियादी सचाई है जिसे दुनिया के सब लोगों को और ख़ासकर हिन्दुस्तान के हिन्दुओं और मुसलमानों को अच्छी तरह समझ लेना है.

श्री कृष्ण ने गीता में कहा है :—

"ऐ पार्थ (यानी अर्जुन !) दुनिया में लोग चारों तरफ़ से जितने रास्तों पर चलते हैं वह सब रास्ते आख़ीर में मुझ तक ही पहुंच जाते हैं."

मुहम्मद साहब की एक हदीस है :—

'दुनिया में जितनी रूहें हैं अल्लाह तक पहुंचने के उतने ही रास्ते हैं.'

इन्जील में लिखा है :—

"न कोई यहूदी है न कोई यूनानी, न कोई ग़ुलाम है न कोई आज़ाद, न कोई पुरुष है न कोई स्त्री, ईसा मसीह में तुम सब एक हो."

शंकराचार्य ने लिखा है :—

"आत्मा का न कोई वर्ण है, न कोई उसकी जात है, न कोई उसका आश्रम, आचार या धर्म है. वह एक ही है. वही सब में है. वही शिव है. वही मैं हूं."

हकीम सनाई ने कहा है :—

"रूह की ज़िन्दगी अक़्ल और इल्म से है, रूह में न कोई पारसी है और न कोई ताज़ी."

इसी ख़याल को मौलाना जलालुद्दीन रूमी ने इस तरह कहा है :—

"रूह बा अक़्ल अस्त बा इल्म अस्त या
रूह रा बा ताज़ी ओ तुरकी चे कार."

दुनिया भर के मुसलमान मौलाना रूम को बड़ी इज़्ज़त की निगाह से देखते हैं. उनकी ख़ास किताब मसनवी 'पहलवी यानी फ़ारसी ज़बान में क़ुरआन' कही जाती है. हमारे देश के मशहूर शायर सर मुहम्मद इक़बाल ने मौलाना रूम का ज़िक्र करते हुए कहा है :—"उन्होंने पहलवी हरफ़ों में क़ुरान लिख डाला." हम मौलाना रूम के शब्दों को थोड़ा सा बदल कर कह सकते हैं :—

"रूह रा बा हिन्दुओ मुस्लिम चे कार."

سناتن دھرم' یعنی اُسی پرانے 'اسلام' کا ایک نیا روپ ہوگا جسے ویدوں میں 'سناتن دھرم' اور قرآن میں 'دین القیمہ' کہا گیا ہے . اندر کی روح وہی پرانی اور اوپر کی شکل زمانے کی ضرورت کے انوسار نئی . اُس نئے مذہب میں سائنس اور مذہب دونوں ملکر ایک ہوجائینگے . سائنس پھر مذہبی سائنس ہوگی اور مذہب سائنسی مذہب ہوگا . جڑ اور چیتن' روح اور مادہ پھر ایک ہی حقیقت کے دو پہلو دکھائی دینگے . تب جاکر ہم انسانی زندگی کی ایکتا اور بھرپورتا کا آنند لے سکینگے . یہ ایک بنیادی سچائی ہے جسے دنیا کے سب لوگوں کو اور خاص کر ہندستان کے ہندؤں اور مسلمانوں کو اچھی طرح سمجھ لینا ہے .

شری کرشن نے گیتا میں کہا ہے :—

" اے پارتھ (یعنی ارجن !) دنیا میں لوگ چاروں طرف سے جتنے راستوں پر چلتے ہیں وہ سب راستے آخیر میں مجھ تک ہی پہنچ جاتے ہیں ."

محمد صاحب کی ایک حدیث ہے :—

" دنیا میں جتنی روحیں ہیں اللہ تک پہنچنے کے اتنے ہی راستے ہیں ."

انجیل میں لکھا ہے :—

" نہ کوئی یہودی ہے نہ کوئی یونانی نہ کوئی غلام ہے' نہ کوئی آزاد . نہ کوئی پرش ہے نہ کوئی استری . عیسی مسیح میں تم سب ایک ہو ."

شنکراچاریہ نے لکھا ہے :—

" آتما کا نہ کوئی ورن ہے' نہ کوئی اُس کی جات ہے' نہ کوئی اُس کا آشرم' آچار یا دھرم ہے . وہ ایک ہی ہے . وہی سب میں ہے . وہی شو ہے . وہی میں ہوں ."

حکیم سنائی نے کہا ہے :—

" روح کی زندگی عقل اور علم سے ہے' روح میں نہ کوئی پارسی ہے اور نہ کوئی تازی ."

اسی خیال کو مولانا جلال الدین رومی نے اس طرح کہا ہے :—

" روح با عقل است با علم است یار
روح را با تازی و ترکی چہ کار ."

دنیا بھر کے مسلمان مولانا روم کو بڑی عزت کی نگاہ سے دیکھتے ہیں . اُن کی خاص کتاب مثنوی 'پہلوی یعنی فارسی زبان میں قرآن' کہی جاتی ہے . ہمارے دیش کے مشہور شاعر سر محمد اقبال نے مولانا روم کا ذکر کرتے ہوئے کہا ہے :— " اُنھوں نے پہلوی حرفوں میں قرآن لکھ ڈالا ." ہم مولانا روم کے شبدوں کو تھوڑا سا بدل کر کہہ سکتے ہیں :—

" روح را با ہندو و مسلم چہ کار ."

अफ़ग़ानिस्तान, ईरान, तुरकी, अरब, मिस्र और अफ़रीका को अपनी छाती से लगाए हुए है. यहूदी धर्म और ईसाई धर्म के मानने वाले फ़िलस्तीन और यूरप को भी वह साथ लिये हुए है. इसके एक कन्धे पर बौद्ध तिब्बत है तो दूसरे कंधे पर मुसलिम तुरकिस्तान. ज़रतुश्ती धर्म के मानने वाले पारसी अब दुनिया में बहुत ही कम रह गए हैं और जो रह गए हैं उनमें से अधिकतर तेरह सौ बरस से इसी देश के दक्खिन पच्छिम को अपना घर बनाए हुए हैं. ज़रतुश्ती धर्म की किताब "गाथाएं" वेद ही की एक शाख़ है और ऐसी भाषा में लिखी हुई है जो वैदिक संस्कृत का एक दूसरा रूप है. हिन्दुस्तान के दक्खिन में हिन्दुस्तानी यहूदियों की भी एक बहुत अच्छी बस्ती है जिसकी आबादी अब कई हज़ार रह गई है. जहां तक ईसाई धर्म का सम्बन्ध है कहा जाता है कि हज़रत ईसा के परलोक सिधारने के थोड़े ही दिनों बाद उनके बारह मशहूर चेलों में से एक सेन्ट टामस ख़ुद हिन्दुस्तान आए थे और उन्होंने इस देश के दक्खिन पूर्वी किनारे पर ईसाई धर्म का बीज बोया था. आज हिन्दुस्तान की ईसाई आबादी पौन करोड़ के लगभग है. मुट्ठी भर ऐसे लोगों को छोड़ कर, जो कहीं बाहर जाकर बस गए हैं, बाक़ी हिन्दुओं, जैनियों और सिक्खों का दुनिया में हिन्दुस्तान के सिवा और कोई घर है ही नहीं. यह देश सात करोड़ से ऊपर मुसलमानों की जन्म भूमि है. बौद्ध धर्म यहीं पैदा हुआ और उसके शुरू के सब तीर्थ इसी देश में हैं. कनफ़्यूशियस धर्म, ताओ धर्म और शिन्तो धर्म तीनों बौद्ध धर्म के अन्दर मिलकर लगभग उसी में समा गए हैं.

बनारस के पास सारनाथ में, जहां महात्मा बुद्ध ने आज से ढाई हज़ार बरस पहले अपने धर्म का उपदेश देना शुरू किया था, पिछले कुछ बरसों के अन्दर पुराने अशोक स्तूप के पास एक बहुत बड़ा नया बौद्ध मन्दिर तामीर किया गया है. जापानी चित्रकारों ने उसकी दीवारों को चित्रों से सजाया है. एक और बड़ा मन्दिर वहां पर ही एक चीनी सज्जन ने बनवाया है. भारत के हिन्दू और बरमा के बौद्ध दोनों ने वहां धर्मशालाएं बनवाई हैं जहां सब जाकर ठहर सकते हैं. इस तरह की और भी धर्मशालाएं बनती जा रही हैं. बौद्ध भिक्खुओं और विद्यार्थियों की एक पूरी बस्ती वहां आबाद हो गई है और बढ़ती जा रही है. बनारस में, जो हिन्दू धर्म का ख़ास गहवारा है, पुराने हिन्दू मन्दिरों के साथ साथ बहुत सी मुस्लिम मसजिदें, जैन मन्दिर, ईसाई गिरजे और सिख संगत पास पास मौजूद हैं. इस तरह दुनिया के सब मज़हब इस देश के अन्दर एक जगह जमा हैं. मालूम होता है कि एक नए आलमगीर वैज्ञानिक यानी साइन्सी मज़हब को जन्म देना और रूप देना भी हिन्दुस्तान ही के लिये बदा है. वह नया धर्म उसी पुराने 'सत्य

افغانستان' ایران' ترکی' عرب' مصر اور افریقہ کو اپنی چھاتی سے لگائے ہوئے ھے. یہودی دھرم اور عیسائی دھرم کے ماننے والے فلسطین اور یورپ کو بھی وہ ساتھ لئے ہوئے ھے. اِس کے ایک کندھے پر بودھ تبت ھے تو دوسرے کندھے پر مسلم ترکستان. زرتشتی دھرم کے ماننے والے پارسی اب دنیا میں بہت ھی کم رہ گئے ھیں اور جو رہ گئے ھیں اُن میں سے ادھکتر تیرہ سو برس سے اِسی دیش کے دکھن پچھم کو اپنا گھر بنائے ہوئے ھیں. زرتشتی دھرم کی کتاب "گاتھائیں" وید ھی کی ایک شاخ ھے اور ایسی بھاشا میں لکھی ہوئی ھے جو ویدک سنسکرت کا ایک دوسرا روپ ھے. ھندستان کے دکھن میں ھندستانی یہودیوں کی بھی ایک بہت اچھی بستی ھے جس کی آبادی اب کئی ہزار رہ گئی ھے. جہاں تک عیسائی دھرم کا سمبندھ ھے کہا جاتا ھے کہ حضرت عیسیٰ کے پرلوک سدھارنے کے تھوڑے ھی دنوں بعد اُن کے بارہ مشہور چیلوں میں سے ایک سینٹ ٹامس خود ھندستان آئے تھے اور اُنھوں نے اِس دیش کے دکھن پوربی کنارے پر عیسائی دھرم کا بیج بویا تھا. آج ھندستان کی عیسائی آبادی پون کروڑ کے لگ بھگ ھے. مٹھی بھر ایسے لوگوں کو چھوڑکر' جو کہیں باھر جاکر بس گئے ھیں' باقی ھندؤں' جینیوں اور سکھوں کا دنیا میں ھندستان کے سوا اور کوئی گھر ھے ھی نہیں. یہ دیش سات کروڑ سے اُوپر مسلمانوں کی جنم بھومی ھے. بودھ دھرم یہیں پیدا ہوا اور اُس کے شروع کے سب تیرتھ اِسی دیش میں ھیں. کنفیوشیس دھرم' تاؤ دھرم اور شنتو دھرم تینوں بودھ دھرم کے اندر ملکر لگ بھگ اُسی میں سما گئے ھیں.

بنارس کے پاس سارناتھ میں' جہاں مہاتما بدھ نے آج سے ڈھائی ہزار برس پہلے اپنے دھرم کا اُپدیش دینا شروع کیا تھا' پچھلے کچھ برسوں کے اندر پرانے اشوک استوپ کے پاس ایک بہت بڑا نیا بودھ مندر تعمیر کیا گیا ھے. جاپانی چترکاروں نے اُس کی دیواروں کو چتروں سے سجایا ھے. ایک اور بڑا مندر وھاں پر ھی ایک چینی سجن نے بنوایا ھے. بھارت کے ھندو اور برما کے بودھ دونوں نے وھاں دھرمشالائیں بنوائی ھیں جہاں سب جاکر ٹھہر سکتے ھیں. اِس طرح کی اور بھی دھرم شالائیں بنتی جارھی ھیں. بودھ بھکشوؤں اور ودیارتھیوں کی ایک پوری بستی وھاں آباد ھوگئی ھے اور بڑھتی جارھی ھے. بنارس میں' جو ھندو دھرم کا خاص گہوارا ھے' پرانے ھندو مندروں کے ساتھ ساتھ بہت سی مسلم مسجدیں' جین مندر' عیسائی گرجے اور سکھ سنگت پاس پاس موجود ھیں. اِس طرح دنیا کے سب مذھب اِس دیش کے اندر ایک جگہ جمع ھیں. معلوم ھوتا ھے کہ ایک نئے عالمگیر ویگیانک یعنی سائنسی مذھب کو جنم دینا اور روپ دینا بھی ھندستان ھی کے لئے بدا ھے. یہ نیا دھرم اُسی پرانے 'ستیہ

की राजनीति और अर्थनीति के नाम पर लड़ाइयां उस समय की मज़हब के नाम पर लड़ाइयों से कहीं ज़्यादा ख़ौफ़नाक हैं. इन लड़ाई झगड़ों के अन्दर अन्दर एक दूसरे से नफ़रतों की जो आग धधक रही है वह वैसी की वैसी ही है. आजकल की इन लड़ाइयों में एक तरफ़ हद दरजे धन का लोभ, दूसरों को नेस्त नाबूद कर देने की तैयारी और जिस्मानी ऐश की वह चाह है जो देश भक्ति और क़ौम-परस्ती का जामा पहने हुए है. और अपने को 'इन्डिविजुअलइज़्म' यानी व्यक्तिवाद कहती है. और दूसरी तरफ़ वह साम्यवाद (कम्यूनिज़्म) या समाजवाद (सोशलइज़्म) है जो दुनिया के धन दौलत में सब के साथ मिलकर बराबर का हिस्सा बटाना चाहता है. इस निगाह से इस साम्यवाद या समाजवाद की जड़ें सचमुच रूहानी और धार्मिक हैं. लेकिन अभी तक उसे खुद अपने इस रूप का ठीक ठीक पता नहीं है. अभी तक वह अंधेरे में टटोल रहा है, तजुर्बे कर रहा है और ग़ल्तियां कर रहा है. इन ग़ल्तियों का कारण यह है कि अभी तक उसकी निगाहें ग़लत तरफ़ हैं. उसे अभी तक सच्चे और टिकाऊ समाज संगठन का भेद नहीं मिला. वह यह नहीं समझा कि राजनीति (पालिटिक्स) की जड़ें अर्थनीति (इकोनॉमिक्स) में होती हैं, अर्थनीति की जड़ें हमारे घरेलू रहन सहन में होती हैं, इस घरेलू रहन सहन की जड़ें हमारे दिल के भावों और दिमाग़ के विचारों और आदर्शों में होती हैं, और इन सब की जड़ें दर्शन शास्त्र यानी ज़िन्दगी के फ़लसफ़े में होती हैं. और यह दर्शन शास्त्र जब पक्का और पूरा होता है तो यही रूहानी मज़हब यानी उस अनन्त जीवन की अध्यात्म विद्या होता है जिसके अन्दर सब साइन्सें, सब विद्याएं और सब हुनर समा जाते हैं.

लेकिन हिन्दुस्तान के अन्दर मज़हबी और ग़ैर मज़हबी, दीनी और दुनियावी, साम्प्रदायिक, राजनैतिक और आर्थिक सब तरह के झगड़े और सब तरह की समस्याएं एक दूसरे में गुथी हुई हैं. मालूम होता है हिन्दुस्तान के लिये ही यह बदा है कि वह इन सब समस्याओं के लिये या तो एक ऐसा हल निकाले जिस से यह सब हल हो जावें और या इस कोशिश में मिट जावे. आज दुनिया में जितने बड़े बड़े मज़हब ज़िन्दा हैं वह सब एशिया ही में ही पैदा हुए. पूरब और पच्छिम का, नए ज़माने और पुराने ज़माने का, एशिया एक ख़ास संगम है. सन 1930 और सन 1931 ईसवी के दिसम्बर-जनवरी में हिन्दुस्तान के अन्दर बनारस में पहली कुल एशियाई एजूकेशन कान्फ़रेन्स हुई थी. यह देश एशिया के ठीक बीचों बीच है. यह अपने एक हाथ से बौद्ध धर्म, शिन्तो धर्म, ताओ धर्म और कनफ़्यूशियस धर्म के मानने वाले बरमा, चीन और जापान को अपने साथ चिपटाए हुए है और दूसरे हाथ से इस्लाम धर्म के मानने वाले

کی راج نیتی اور ارتھ نیتی کے نام پر لڑائیاں اُس سمے کی مذہب کے نام پر لڑائیوں سے کہیں زیادہ خوفناک ہیں . اِن لڑائی جھگڑوں کے اندر اندر ایک دوسرے سے نفرتوں کی جو آگ دھدھک رہی ہے وہ ویسی کی ویسی ہی ہے. آجکل کی ان لڑائیوں میں ایک طرف حد درجے دھن کا لوبھ' دوسروں کو نیست نابود کر دینے کی تیاری اور جسمانی عیش کی وہ چاہ ہے جو دیش بھکتی اور قوم پرستی کا جامہ پہنے ہوئے ہے اور اپنے کو 'انڈیویجیولزم' یعنی ویکتی واد کہتی ہے . اور دوسری طرف وہ سامیہ واد (کمیونزم) یا سماج واد (سوشلزم) ہے جو دنیا کے دھن دولت میں سب کے ساتھ ملکر برابر کا حصہ بٹانا چاہتا ہے . اِس نگاہ سے اِس سامیہ واد یا سماج واد کی جڑیں سچ مچ روحانی اور دھارمک ہیں . لیکن ابھی تک اُسے خود اپنے اِس روپ کا ٹھیک ٹھیک پتہ نہیں ہے . ابھی تک وہ اندھیرے میں ٹٹول رہا ہے' تجربے کر رہا ہے اور غلطیاں کر رہا ہے . اِن غلطیوں کا کارن یہ ہے کہ ابھی تک اُس کی نگاہیں غلط طرف ہیں . اُسے ابھی تک سچے اور ٹکاؤ سماج سنگٹھن کا بھید نہیں ملا . وہ یہ نہیں سمجھا کہ راج نیتی (پالٹکس) کی جڑیں ارتھ نیتی (ایکونومکس) میں ہوتی ہیں' ارتھ نیتی کی جڑیں ہمارے گھریلو رہن سہن میں ہوتی ہیں' اِس گھریلو رہن سہن کی جڑیں ہمارے دل کے بھاؤں اور دماغ کے وچاروں اور آدرشوں میں ہوتی ہیں' اور ان سب کی جڑیں درشن شاستر یعنی زندگی کے فلسفے میں ہوتی ہیں . اور یہ درشن شاستر جب پکا اور پورا ہوتا ہے تو یہی روحانی مذہب یعنی اُس اننت جیون کی ادھیاتم ودیا ہوتا ہے جس کے اندر سب سائنسیں' سب ودیائیں اور سب ہنر سما جاتے ہیں .

لیکن ہندستان کے اندر مذہبی' اور غیر مذہبی دینی اور دنیاوی' سامپردائک' راج نیتک اور آرتھک سب طرح کے جھگڑے اور سب طرح کی سمسیائیں ایک دوسرے میں گتھی ہوئی ہیں. معلوم ہوتا ہے ہندستان کے لئے ہی یہ بدا ہے کہ وہ ان سب سمسیاؤں کے لئے یا تو ایک ایسا حل نکالے جس سے یہ سب حل ہوجاویں اور یا اِس کوشش میں مٹ جاوے . آج دنیا میں جتنے بڑے بڑے مذہب زندہ ہیں وہ سب ایشیا ہی میں پیدا ہوئے . پورب اور پچھم کا' نئے زمانے اور پرانے زمانے کا' ایشیا ایک خاص سنگم ہے. سن 1930 اور سن 1931 عیسوی کے دسمبر جنوری میں ہندستان کے اندر بنارس میں پہلی کل ایشیائی ایجوکیشن کانفرنس ہوئی تھی . یہ دیش ایشیا کے ٹھیک بیچوں بیچ ہے . یہ اپنے ایک ہاتھ سے بودھ دھرم' شنتو دھرم' تاؤ دھرم اور کنفیوشس دھرم کے ماننے والے برما' چین اور جاپان کو اپنے ساتھ چپٹائے ہوئے ہے اور دوسرے ہاتھ سے اسلام دھرم کے ماننے والے

बनावट जरूरी हैं. रंज और खुशी, नफरत और प्रेम, मग़रूर शैतान और रहमदिल ईश्वर का बेटा. इसी तरह पारसी धर्म में अहरमन और स्पीतम, देवता और दैत्य, सुर और असुर, पापात्मा और पुन्यात्मा, शैतान और फ़रिश्ते, ज़िन्दगी और मौत, अपना और पराया, यह सब दुनिया में लाज़िम मलज़ूम हैं. एक के साथ दूसरे का होना ज़रूरी है. इसी उसूल पर मज़हब भी अपने ऊंचे मुक़ाम से नीचे गिरता है. असली और ज़रूरी बातों से हट कर वह बनावटी और ग़ैर ज़रूरी चीज़ों में फंस जाता है. यहां तक कि गन्दे अंध-बिश्वास और ज़ालिमाना रीति रिवाज उसमें दाख़िल हो जाते हैं. लोगों के दिलों को मिलाने के बजाय वह उन्हें और फाड़ने लगता है. धरती पर अमन क़ायम करने और लोगों में एक दूसरे से प्रेम पैदा करने की जगह मज़हब एक दूसरे को क़त्ल करने और तकलीफ़ पहुंचाने पर उतर आता है. कुछ दिनों तक यही होता रहता है. फिर हालत पलटती है. आदमी का दिल बदलता है. उसमें पछतावा जागता है. मज़हब में सुधार होता है. रूह वही रहती है पर ऊपर का रूप या जिस्म बदल जाता है. इनसान फिर से पैदा होता है. वह ऊपर उठता है, आदम गुनाह करता है, असीरी यानी बन्धन में पड़ता है, अहंकार की बेड़ियां अपने ऊपर लेता है, ख़ुदी, गुस्सा और शहवत के क़ाबू में आजाता है, और यह सब इसीलिये होता है कि अपनी इस छोटी ख़ुदी को मार कर वह फिर ऊपर उठे और निजात यानी मोक्ष हासिल करे. इसी को फ़ना फ़िल्लाह होजाना यानी ब्रह्म निर्वाण कहते हैं. तब रूह को वह रुतबा हासिल होता है, वह शान्ति प्राप्त होती है जो सुख और दुख, नफ़रत और प्रेम जैसी हर तरह की दुई से अलग और ऊपर है.

जहां तक हमें दुनिया का, ख़ास कर बीच के ज़माने का, इतिहास मालूम है वहां तक पूरब में और पच्छिम में दोनों जगह मज़हब के नाम पर लड़ाई झगड़े होते रहे हैं. ईसाइयों और मुसलमानों के बीच सलीबी लड़ाइयों (क्रूसेड्स) के ज़माने में और उसके बाद और ख़ुद ईसाई धर्म के अन्दर अलग अलग सम्प्रदायों के बीच उन मज़हबी कचहरियों ने, जो 'इनक्वीज़ीशन' कहलाती थीं, केवल धार्मिक मतभेद के कारण लाखों इनसानों को मौत के घाट उतार दिया या ज़िन्दा जला दिया. मज़हब के नाम पर वह सब कारनामे याद करके आदमी कांप उठता है. यूरप में अब कुछ दिनों से कैथलिक, प्रोटेस्टेन्ट झगड़े नहीं हो रहे हैं. लेकिन यूरप अभी तक उन झगड़ों से पूरी तरह आज़ाद भी नहीं है. सन 1921 ई० में आज़ाद आयरिश हुकूमत (आयरिश फ़्री स्टेट) के इंगलैन्ड से टूट कर अलग होजाने का कारण एक बड़े दरजे तक यही मज़हबी फ़रक़ था. इंगलैन्ड प्रोटेस्टेन्ट है और आयरलैन्ड कैथलिक. सारे यूरप के अन्दर वह बुराई पहले धार्मिक या साम्प्रदायिक थी तो अब राजनैतिक और आर्थिक है, और आजकल

بناوٹ ضروری ہیں ۔ رنج اور خوشی، نفرت اور پریم، مغرور شیطان اور رحمدل ایشور کا بیٹا ۔ اسی طرح پارسی دھرم میں اہرمن اور اسپیتم، دیوتا اور دیتیہ، سر اور اسر، پاپ آتما اور پن آتما، شیطان اور فرشتے، زندگی اور موت، اپنا اور پرایا، یہ سب دنیا میں لازم ملزوم ہیں ۔ ایک کے ساتھ دوسرے کا ہونا ضروری ہے ۔ اسی اصول پر مذہب بھی اپنے اونچے مقام سے نیچے گرتا ہے ۔ اصلی اور ضروری باتوں سے ہٹ کر وہ بناوٹی اور غیر ضروری چیزوں میں پھنس جاتا ہے ۔ یہاں تک کہ گندے اندھ وشواس اور ظالمانہ ریت رواج اس میں داخل ہو جاتے ہیں ۔ لوگوں کے دلوں کو ملانے کے بجائے وہ انہیں اور پھاڑنے لگتا ہے ۔ دھرتی پر امن قائم کرنے اور لوگوں میں ایک دوسرے سے پریم پیدا کرنے کی جگہ مذہب ایک دوسرے کو قتل کرنے اور تکلیف پہونچانے پر اتر آتا ہے ۔ کچھ دنوں تک یہی ہوتا رہتا ہے ۔ پھر حالت پلٹتی ہے ۔ آدمی کا دل بدلتا ہے ۔ اس میں پچھتاوا جاگتا ہے ۔ مذہب میں سدھار ہوتا ہے ۔ روح وہی رہتی ہے پر اوپر کا روپ یا جسم بدل جاتا ہے. انسان پھر سے پیدا ہوتا ہے وہ اوپر اٹھتا ہے ۔ آدم گناہ کرتا ہے، اسیری یعنی بندھن میں پڑتا ہے، اہنکار کی بیڑیاں اپنے اوپر لیتا ہے، خودی، غصہ اور شہوت کے قابو میں آ جاتا ہے اور یہ سب اسی لئے ہوتا ہے کہ اپنی اس چھوٹی خودی کو مار کر وہ پھر اوپر اٹھے اور نجات یعنی موکش حاصل کرے ۔ اسی کو فنا فی اللہ ہو جانا یعنی برہمہ نروان کہتے ہیں ۔ تب روح کو وہ رتبہ حاصل ہوتا ہے، وہ شانتی پراپت ہوتی ہے جو سکھ اور دکھ، نفرت اور پریم جیسی ہر طرح کی دوئی سے الگ اور اوپر ہے ۔

جہاں تک ہمیں دنیا کا، خاص کر بیچ کے زمانے کا، اتہاس معلوم ہے وہاں تک پورب میں اور پچھم میں دونوں جگہ مذہب کے نام پر لڑائی جھگڑے ہوتے رہے ہیں ۔ عیسائیوں اور مسلمانوں کے بیچ سلیبی لڑائیوں (کروسیڈس) کے زمانے میں اور اس کے بعد اور خود عیسائی دھرم کے اندر الگ الگ سمپردایوں کے بیچ ان مذہبی کچہریوں نے، جو انکوئیزیشن کہلاتی تھیں ۔ کیول دھارمک مت بھید کے کارن لاکھوں انسانوں کو موت کے گھاٹ اتار دیا یا زندہ جلا دیا ۔ مذہب کے نام پر وہ سب کارنامے یاد کر کے آدمی کانپ اٹھتا ہے ۔ یورپ میں اب کچھ دنوں سے کیتھلک، پروٹسٹنٹ جھگڑے نہیں ہو رہے ہیں ۔ لیکن یورپ ابھی تک ان جھگڑوں سے پوری طرح آزاد بھی نہیں ہے. سن 1921 عیسوی میں آزاد آئرش حکومت (آئرش فری سٹیٹ) کے انگلینڈ سے ٹوٹ کر الگ ہو جانے کا کارن ایک بڑے درجے تک یہی مذہبی فرق تھا، انگلینڈ پروٹسٹنٹ ہے اور آئرلینڈ کیتھلک ۔ سارے یورپ کے اندر وہ برائی پہلے دھارمک یا سامپردائک تھی تو اب راجنیتک اور آرتھک ہے اور آجکل

ये दोनों जानवर उस स्थान के कुछ आदिम जातियों के कुल-देवता थे. लेकिन वे लोग जो वहां के ज़मींदार थे अपने को परम्परागत क्षत्रिय श्रेनी का कहते थे और उन्होंने नया "जाति" सूचक शब्द भी अपना लिया. ठीक इसी तरह बङ्गाल की पूर्वी पहाड़ियों में टिपरा और मनीपूर के राजवंश हैं, जो अपने को क्षत्रिय कहते हैं और आजकल राजपूतों से ही अपना नाता गोता रखते हैं. इसी सबब आज के हिन्दुस्तान में राजपूत और क्षत्रिय (बोलने में छत्री) एक ही माइनों में इस्तेमाल होते हैं.

یه دونوں جانور اُس استهان کے کچھ آدم جاتیوں کے کل دیوتا تھے . لیکن وے لوگ جو وهاں کے زمیندار تھے اپنے کو پرمپراگت چھتریه شرینی کا کہتے تھے اور انہوں نے نیا "جاتی" سوچک شبد بھی اپنا لیا . ٹھیک اِسی طرح بنگال کی پوروی پہاڑیوں میں ٹپرا اور منی پور کے راج ونش هیں' جو اپنے کو چھتریه کہتے هیں اور آجکل راجپوتوں سے هی اپنا ناتا گوتا رکھتے هیں . اسی سبب آج کے هندستان میں راجپوت اور چھتریه (بولنے میں چھتری) ایک هی معنوں میں استعمال هوتے هیں

अमन और प्रेम का एक ही रास्ता

امن اور پریم کا ایک هی راسته

डाक्टर भगवानदास

(ڈاکٹر بھگوان داس)

धर्म या मजहब की एक ही ग़रज़ है और वह यह है कि लोगों के दिलों को एक दूसरे के साथ और अल्लाह के साथ मिलाया जावे. धर्म का कमाल यानी पूरापन इस बात के समझ लेने में है कि एक ही आत्मा सब के अन्दर है और वही अल्लाह है, और इसीलिये सब की सेवा ही अल्लाह की इबादत है.

इन्जील में लिखा है :—"पूरे दिल के साथ ईश्वर से प्रेम करो और अपनी ही तरह अपने पड़ोसी से प्रेम करो." इसमें यह शामिल है कि अपने अन्दर मौजूद आत्मा ही परम आत्मा यानी ईश्वर है.

पर यह सारी कायनात यानी सृष्टि दुई पर क़ायम है और दो-दो विरोधी चीज़ों से बनी है. वजूद की सुई बराबर दोनों तरफ़ के दो सिरों के बीच में चक्कर काटती रहती है. इसीलिये हमें अनेक में एक यानी कसरत में वहदत की झलक मिलती रहती है. इसी को 'वहदत दर ज़ात' यानी परम तत्व में एकता और 'कसरत दर सिफ़ात' यानी गुणों और धर्मों में अनेकता कहते हैं. हक़ीक़त एक है और उसके गुण यानी सिफ़ात अनगिनत हैं. ऊपरी धर्म बहुत से हैं, धर्मी एक है. अनेकता के अन्दर बिगाड़ का होना भी लाज़िमी है. व्यापकता और हक़ीक़त को चमकाने के लिये ख़ुदी और

دھرم یا مذهب کی ایک هی غرض هے اور وہ یه هے که لوگوں کے دلوں کو ایک دوسرے کے ساتھ اور اللہ کے ساتھ ملایا جاوے . دھرم کا کمال یعنی پوراپن اِس بات کے سمجھ لینے میں هے که ایک هی آتما سب کے اندر هے اور وهی اللہ هے' اور اِسی لئے سب کی سیوا هی اللہ کی عبادت هے .

اِنجیل میں لکھا هے :—" پورے دل کے ساتھ ایشور سے پریم کرو اور اپنی هی طرح اپنے پڑوسی سے پریم کرو ." اِس میں یه شامل هے که اپنے اندر موجود آتما هی پرم آتما یعنی ایشور هے .

پر یه ساری کائنات یعنی سرشٹی دوئی پر قائم هے اور دو دو ورودھی چیزوں سے بنی هے . وجود کی سوئی برابر دونوں طرف کے دو سروں کے بیچ میں چکر کاٹتی رهتی هے . اِسی لئے همیں انیک میں ایک یعنی کثرت میں وحدت کی جھلک ملتی رهتی هے . اِسی کو 'وحدت در ذات' یعنی پرم تتو میں ایکتا اور 'کثرت در صفات' یعنی گنوں اور دھرموں میں انیکتا کہتے هیں . حقیقت ایک هے اور اُس کے گن یعنی صفات اَنگنت هیں . اُوپری دھرم بہت سے هیں' دھرمی ایک هے . انیکتا کے اندر بگاڑ کا هونا بھی لازمی هے . ویاپکتا اور حقیقت کو چمکانے کے لئے خودی اور

ब्राह्मणों ने ब्राह्मणवाद के नाम पर तमाम लड़ाकू जातियों को एक नये क्षत्रिय वर्ण में शामिल करने के लिये शुद्धि आन्दोलन चलाया, क्योंकि उन्हें अपने काम के लिये मददगारों की जरूरत थी. इसलिये जब तक ब्राह्मणवादी धर्म का बोलबाला रहा, जितने भी विदेशी या आदिम निवासी थे सभी क्षत्री वर्ण में शामिल कर लिये गये और उनके लिये नई नई वंशावलियां बना ली गईं. इस तरह उन नये क्षत्रियों ने अपनी जाति को पश्चिमी और मध्य भारत की सरहदों तक महदूद रखा. श्री वैद्य ने खुद इस बात को माना है कि पंजाब राजपूत क़बीलों की फ़ेहरिस्त से अलग था, क्योंकि इस पर मुसलमानों का क़ब्ज़ा हो चुका था, या ऐसा भी हो सकता है कि उस समय बौद्ध राजे उस सूबे में राज कर रहे थे. वहां कोई न कोई ऐसी अड़चन जरूर रही होगी, जिससे पंजाब के नये क्षत्रिय इस संगठन आन्दोलन में शामिल न हो सके. पूरब में मगध और बंगाल में बौद्ध पालों का उस समय राज था,※ इसलिये यह आन्दोलन उन प्रदेशों में न घुस सका. दक्षिण में राजू और बल्लाल पहिले से ही उस पद तक पहुंच चुके थे. इस प्रकार इस क्षेत्र में रहने वाली लड़ाकू लोगों की शासक श्रेणी क्षत्रिय बन गई और उन्हें "राजपूत" का नया नाम मिला. इसी कारन गुर्जर, जाट और अहीर जनता, जो कि शासक श्रेनी में नहीं थी, क्षत्रिय वर्न में शामिल न हो सकी, हालांकि इनसानी नस्ल के जानकार आलिम इनमें और राजपूतों में बहुत नज़दीकीपन पाते हैं.

जब राजपूत नाम बाइज़्ज़त हो गया और राजपूतों की बहादुरी के सबब उस नाम में बड़प्पन और इज़्ज़त होने लगी तो दूसरे लोगों ने भी, जो धीरे-धीरे क्षत्रिय वर्न में शामिल होना चाहते थे, अपने नाम के आगे राजपूत लफ़्ज़ जोड़ लिया. इस प्रकार छोटा नागपूर में हम नाग-वंशी और गो-वंशी राजपूतों को पाते हैं. ये लोग अपने को सांप (नाग) और गाय (गो)* के वंश का कहते हैं. यह साफ़ है कि

براھمنوں نے براھمن واد کے نام پر تمام لڑاکو جاتیوں کو ایک نئے چھتریہ ورن میں شامل کرنے کے لئے شدھی آندولن چلایا' کیونکہ انھیں اپنے کام کے لئے مددگاروں کی ضرورت تھی . اِس لئے جب تک براھمن‌وادی دھرم کا بول بالا رہا' جتنے بھی ودیشی یا آدم نواسی تھے سبھی چھتری ورن میں شامل کر لئے گئے اور اِن کے لئے نئی نئی ونشاولیاں بنا لی گئیں . اس طرح اُن نئے چھتریوں نے اپنی جاتی کو پچھمی اور مدھیہ بھارت کی سرحدوں تک محدود رکھا . شری ویدیہ نے خود اس بات کو مانا ھے کہ پنجاب راجپوت قبیلوں کی فہرست سے الگ تھا' کیونکہ اِس پر مسلمانوں کا قبضہ ھو چکا تھا' یا ایسا بھی ھو سکتا ھے کہ اُس سمے بودھ راجے اس صوبے میں راج کر رھے تھے . وھاں کوئی نہ کوئی ایسی اڑچن ضرور رھی‌ھوگی جس سے پنجاب کے نئے چھتری اِس سنگٹھن آندولن میں شامل نہ ھو سکے . پورب میں مگدھ اور بنگال میں بودھ پالوں کا اُس سمے راج تھا.※ اِس لئے یہ آندولن اُن پردیشوں میں نہ گھس سکا . دکھن میں راجو اور بلال پہلے سے ھی اِس پد پر پہونچ چکے تھے . اِس پرکار اِس چھیتر میں رھنے والی لڑاکو لوگوں کی شاسک شرینی چھتری بن گئی اور اِنھیں " راجپوت " کا نیا نام ملا . اِسی کارن گرجر' جاٹ اور اھیر جنتا' جو کہ شاسک شرینی میں نہیں تھی' چھتریہ ورن میں شامل نہ ھوسکی' حالانکہ انسانی نسل کے جانکار عالم اِن میں اور راجپوتوں میں بہت نزدیکی‌پن پاتے ھیں .

جب راجپوت نام باعزت ھوگیا اور راجپوتوں کی بہادری کے سبب اُس نام میں بڑپن اور عزت ھونے لگی تو دوسرے لوگوں نے بھی' جو دھیرے دھیرے چھتری‌ورن میں شامل ھونا چاھتے تھے' اپنے نام کے آگے راجپوت لفظ جوڑ لیا . اس پرکار چھوٹا ناگپور میں ھم ناگ ونشی اور گوونشی راجپوتوں کو پاتے ھیں . یہ لوگ اپنے کو سانپ (ناگ) گائے (گئو) * کے ونش کا کہتے ھیں . یہ صاف ھے کہ

※—पञ्जाब के मैदानों के राजपूतों के जाति नाम, जो ज़्यादातर मुसलमान हो गये हैं, वही हैं जोकि राजपूताना और गंगा के द्वाबे के राजपूतों के हैं. इसका मतलब यह हुआ कि इन जगहों से लोग पञ्जाब में चले आये थे. इस सूबे की पूरबी पहाड़ियों के राजपूत राजपूताना के राजपूतों से नीची श्रेनी के समझे जाते हैं. यानी वे दूसरी जाति के हैं. उनकी जाति का ठीक ठीक पता अभी तक नहीं चला है, क्योंकि अभी तक उनकी खोज नहीं हो पायी है. इबेटसन कहता है कि इस स्थान का राजपूत शब्द पेशे का सूचक है (P. 362).

※ پنجاب کے میدانوں کے راجپوتوں کے جاتی نام' جو زیادہ‌تر مسلمان ھو گئے ھیں' وھی ھیں جو کہ راجپوتانہ اور گنگا کے دوآبے کے راجپوتوں کے ھیں . اِسکا مطلب یہ ھوا کہ اِن جگہوں سے لوگ پنجاب میں چلے آئے تھے . اِس صوبے کی پوربی پہاڑیوں کے راجپوت راجپوتانہ راجپوتوں سے نیچے شرینی کے سمجھے جاتے ھیں . یعنی وہ دوسری جاتی کے ھیں . اُن کی جاتی کا ٹھیک ٹھیک پتہ ابھی تک نہیں چلا ھے' کیونکہ ابھی تک اُن کا کھوج نہیں ھو پایا ھے. ابیٹسن کہتا ھے کہ اِس استھان کا راجپوت شبد پیشے کا سوچک ھے (P. 362).

*—Risley—Tribes and castes of Bengal—Ethnographic glossary, Vol I. PP. 184—185.

हुए हिन्दुस्तान में बसे, वे पूरी तरह से हिन्दुस्तानी हो गये. क्षत्रिय राजाओं से उन लोगों के विवाहों से यह बात साफ़ हो जाती है कि उनके भी शासक क्षत्रिय राजाओं के बराबरी के हुआ करते थे. इसलिये अगर वे ब्राह्मणों द्वारा संपादित धार्मिक शुद्धि-क्रिया के बाद क्षत्रिय वर्ण की हैसियत से हिन्दुओं में शामिल कर लिये गये, तो हमें ताज्जुब नहीं होना चाहिये.

इन तमाम बातों पर विचार कर लेने के बाद, यह कहा जा सकता है कि ऐसा हो सकता है कि शक, हूण और दूसरे विदेशी जो कि हिन्दुस्तान में बस गये, वे हिन्दू व्यवस्था के भीतर शामिल कर लिये गये और जिस जिस वर्ण में गये उसी में विभिन्न टुकड़ियों की हैसियत से समा गये.† ब्राह्मण धर्माचार्यों ने उसूली नुक़्ते नज़र से उन्हें शूद्र की श्रेणी में रखा था,s लेकिन हम तो उन्हें ब्राह्मण और क्षत्रिय राजाओं के यहां शादी करते हुए पाते हैं! इस प्रकार कट्टरपन्थी ब्राह्मणों द्वारा बनाये हुए काग़ज़ी धार्मिक नियमों और जीवन के व्यवहार में हम अन्तर पाते हैं.

इन बातों को देखकर यह मुमकिन मालूम पड़ता है कि

ہن ہندستان میں بسے' وے پوری طرح سے ہندستانی ہوگئے چھتریہ راجاؤں سے اُن لوگوں کے ویواہوں سے یہ بات صاف ہو جاتی ہے کہ اِن کے بھی شاسک چھتریہ راجاؤں کے برابری کے ہوا کرتے تھے . اِس لئے اگر وے براہمنوں دوارا سمپادت دھارمک شدھ کریا کے بعد چھتریہ ورن کی حیثیت سے ہندؤں میں شامل کر لئے گئے' تو ہمیں تعجب نہیں ہونا چاہئے .

اِن تمام باتوں پر وچار کر لینے کے بعد' یہ کہا جاسکتا ہے کہ ایسا ہوسکتا ہے کہ شک' ہن اور دوسرے ودیشی جو کہ ہندستان میں بس گئے' وے ہندو ویوستھا کے بھیتر شامل کر لئے گئے اور جس جس ورن میں گئے اِسی میں وبھن ٹکڑیوں کی حیثیت سے سما گئے .† براہمن دھرما چاریوں نے اصولی نقطۂ نظر سے انہیں شودر کی شرینی میں رکھا تھا' s لیکن ہم تو انہیں براہمن اور چھتریہ راجاؤں کے یہاں شادی کرتے ہوئے پاتے ہیں ! اِس پرکار کٹر پنتھی دوارا بنائے ہوئے کاغذی دھارمک نیموں اور جیون کے ویوہار میں ہم انتر پاتے ہیں .

اِن باتوں کو دیکھ کر یہ ممکن معلوم پڑتا ہے کہ

†—विष्णु पुराण में [4 | 3 | 18—21] उन विदेशियो की चर्चा है जो अयोध्या में बस गये और क्षत्रिय बन गये और जिन्होंने ब्राह्मणों से ब्राह्मन्यवादी पूजा विधियां संपादित करवाईं. (Bd iii, 48, 29-47, J. R. A. S. 1919 pp. 358—6) बाद में सगर ने, तालजंघ हैहयों को हराया और आयोध्या को फिर से जीता (Bd. iii, 48-49,10) उन्होंने विदेशी क़बीलों को ख़त्म करने का पक्का इरादा कर लिया लेकिन इनकी प्रार्थना पर वशिष्ठ मध्यस्थ बने और सगर ने उनकी जान बख़्श दी. लेकिन सगर ने धार्मिक और राजनीतिक नज़र से उन्हें नीचे गिराया." (Pargiter, pp. 269-270)

† وشنو پران میں [21—18-3-1] اُن ودیشیوں کی چرچا ہے جو ایودھیا میں بس گئے اور چھتریہ بن گئے اور جنہوں نے براہمنوں سے براہمنیہ وادی پوجا ودھیاں سمپادت کروائیں .(Bd iii, 48, 29-47, J. R. A .S. '919 pp. 358—6) بعد میں سگر نے' تال جنگھ ہیہیوں کو ہرایا اور ایودھیا کو پھر سے جیتا (Bd. iii, 48, 49, 10) اُنہوں نے ودیشی قبیلوں کو ختم کرنے کا پکا اِرادہ کر لیا . لیکن اِن کی پرارتھنا پر وششٹھ مدھیستھ بنے اور سگر نے اُن کی جان بخش دی. لیکن سگر نے دھارمک اور راجنیتک نظر سے اُنہیں نیچے گرایا ." (Pargiter, pp 269-270)

श्रीजायसवाल ने भी बनारस के सिदियन क्षत्रप बनसफर के उन वंशजों की चर्चा की है, जो बुन्देलखन्ड में रहते थे. वे कहते हैं, "उनको नीच कुल का समझा जाता था. वे राजपूत घरानों में मुश्किल से शादी कर पाते थे और आज भी वे नीची श्रेणी के समझे जाते हैं. उन्हीं के नाम से बुन्देलखन्ड में बनाफरी बोली बोली जाती है. "History of India" in J. B. O R. S. Vol. XIX मध्य भारत में एक राजपूत जाति बनफाड़ है, जो लेखक की खोजों के अनुसार राजपूतों से अन्तर-विवाह मुश्किल से कर पाते थे। महोबा के मध्यकालीन राजपूत वीर—आल्हा और ऊदल बनाफर राजपूत थे लेकिन उनका नीचा स्थान किन्हीं और वजहों से है.

شری جیسوال نے بھی بنارس کے سدین چھترپ بنسپھر کے اُن ونشجوں کی چرچا کی ہے' جو بندیلکھنڈ میں رہتے تھے . وہ کہتے ہیں' "اُن کو نیچ کل کا سمجھا جاتا تھا . وے راجپوت گھرانوں میں مشکل سے شادی کر پاتے تھے اور آج بھی وے نیچی شرینی کے سمجھے جاتے ہیں . اُنہیں کے نام سے بندیلکھنڈ میں بناپھری بولی جاتی ہے . "History of India " in J. B. O. R. S. Vol. XIX مدھیہ بھارت میں ایک راجپوت جاتی بن پھوڑ ہے' جو لیکھک کی کھوجوں کے انوسار راجپوتوں سے انتر وواہ مشکل سے کر پاتے تھے . مہوبا کے مدھیہ کالین راجپوت ویر—آلہا اور اودل بناپھر راجپوت تھے . لیکن اُن کا نیچا استھان کنہیں اور وجہوں سے ہے .

s—Vide Manu X—43-44, Patanjali 2. 4. 10.

पुराने क्षत्रियों से बिलकुल अलग कर देता है.* तमाशा यह है कि ये तमाम नये क्षत्रिय अपने नाम के आगे सिंह (बोलने में सिंघ) शब्द को जोड़ते हैं. इसलिये क्षत्रप रुद्र सिंह और उनके सजातीय लोगों के राजपूत सिंहों के पूर्वज होने में कोई आश्चर्य की बात नहीं है.

अब हम कुछ राजपूतों के "हूण" संसर्ग के सवाल पर विचार करेंगे. जैसा कि पहिले कहा जा चुका है टाड ने ही पहिले यह बताया कि राजपूतों में "हूण" नाम का एक क़बीला है. लेकिन श्री वैद्य इस बात को यह कह कर काट देते हैं कि राजपूत क़बीलों की सूची में "हूण" नहीं "हूल" है.❀ आगे वे कहते हैं, "मुसलमानों के विरुद्ध हूणों और हूलों का नाम आता है (देखो Tod's Rajasthan by Crooke, Vol. 1, P. 290) हूल हूण से अलग क्षत्रियों में एक क़बीला था.S आगे फिर वे कहते हैं, "कुमार पाल चरित में (इसकी रचना चन्द्र गहरवाला ने 1080-1130 ईसवी में की थी) क्षत्रियों के कुछ राजकुलों की सूची में हूण भी हैं.† रासो की सूची में इसे हूल कहा गया है."‡ आगे चलकर वे कहते हैं, "लेखों से क्षत्रिय राजाओं का हूण राजकुमारियों से ब्याह होने का पता चलता है.☫ ग्यारहवीं सदी में कलचुरियों के शासक कर्णदेव ने हूण राजकुमारी अवल्ला देवी से शादी की (विक्रम देव चरित).

इस तरह सन् 530 ईसवी में पश्चिमी भारत से यशोधर्मन द्वारा मिहिरकुल के हरा दिये जाने और निकाल दिये जाने के बाद भी हूणों की मौजूदगी का पता चलता है. 9-10 सदियों में हम बंगाल के पाल राजाओं के भाड़े के सिपाहियों के रूप में हूणों का नाम पाते हैं.*

ऐसा लगता है कि वे हिन्दुस्तान भर में घूमते रहते थे और विभिन्न राजाओं के यहां फ़ौजों में काम किया करते थे. इन रचनाओं में यह बात तो मान ही ली गई है कि जो

پرانے چھتریوں سے بالکل الگ کر دیتا ھے .* تماشہ یہ ھے کہ یہ تمام نئے چھتریہ اپنے نام کے آگے سنہ (بولنے میں سنگھ) شبد کو جوڑتے ھیں . اس لئے چھترپ رودر سنگھ اور اُن کے سجاتیہ لوگوں کے راجپوت سنگھوں کے پوروج ھونے میں کوئی آشچریہ کی بات نہیں ھے .

اب ھم کچھ راجپوتوں کے " ھن " سنسرگ کے سوال پر بچار کریں گے . جیسا کہ پہلے کہا جا چکا ھے ٹاڈ نے ھی پہلے یہ بتایا کہ راجپوتوں میں " ھن " نام کا ایک قبیلہ ھے . لیکن شری ویدیہ اس بات کو یہ کہکر کاٹ دیتے ھیں کہ راجپوت قبیلے کی سوچی میں " ھن " نہیں " ھول " ھے . ❀ آگے وے کہتے ھیں' مسلمانوں کے وِرودھ ھنوں اور ھولوں کا نام آتا ھے . (دیکھو Tod's Rajasthan by Crooke, Vol. 1, P.290) ھول ھن سے الگ چھتریوں میں ایک قبیلہ تھا . S آگے پھر وے کہتے ھیں' " کمار پال چرت میں (اِس کی رچنا چندر گھر والا نے 1008-1130 عیسوی میں کی تھی) چھتریوں کے کچھ راج کلوں کی سوچی میں ھن بھی ھیں .† راسو کی سوچی میں اِسے ھول کہا گیا ھے ." ‡ آگے چل کر وے کہتے ھیں' " لیکھوں سے چھتریہ راجاؤں کا ھن راج کماریوں سے بیاہ ھونے کا پتہ چلتا ھے. ☫ گیارھویں صدی میں کل چریوں کے شاسک کرن دیو نے ھن راج کماری اولا دیوی سے شادی کی (وکرم دیو چرت) .

اِس طرح سن 530 عیسوی میں پچھمی بھارت سے یشو دھرمن دوارا مہرکل کے ھرا دیئے جانے اور نکال دیئے جانے کے بعد بھی ھنوں کی موجودگی کا پتہ چلتا ھے . 9-10 صدیوں میں ھم بنگال کے پال راجاؤں کے بھاڑے کے سپاھیوں کے روپ میں ھن کا نام پاتے ھیں .*

ایسا لگتا ھے کہ وے ھندستان بھر میں گھومتے رھتے تھے اور وبھن راجاؤں کے یہاں فوجوں میں کام کیا کرتے تھے . اِن رچناؤں میں یہ بات تو مان ھی لی گئی ھے کہ جو

---

*—उत्तर बंगाल के कोंच क़बीले ने हिन्दू होने के बाद राजवंशी-शासक कुलों से सम्बन्धित नाम धारण कर लिया. आजकल वे अपने को क्षत्रिय कहते हैं. राजन्य शब्द प्राचीन और राजपूत वर्तमान इतिहास के शब्द हैं. इसलिये उन्हें नये शब्द की जरूरत थी. सच तो यह है कि इस नये नाम का वही अर्थ है जो कि दूसरे शब्दों का है.

* اُتر بنگال کے کونچ قبیلے نے ھندو ھونے کے بعد راج ونشی شاسک کلوں سے سمبندھت نام دھارن کر لیا . آجکل وے اپنے کو چھتریہ کہتے ھیں . راجنیہ شبد پراچین اور راجپوت ورتمان اِتہاس کے شبد ھیں . اِس لئے اُنہیں نئے شبد کی ضرورت تھی . سچ تو یہ کہ اِس نئے نام کا وھی ارتھ ھے جو کہ دوسرے شبدوں کا ھے .

❀—Vaidya, Vol. IV, 23-26.

S—Ibid.

†—मल्लिनाथ, कालिदास के रघुवंशम् की टीका के चौदहवें अध्याय में इन्हें क्षत्रिय बताते हैं.

† ملی ناتھ' کالی داس کے رگھوونشم کی ٹیکا کے چودھویں ادھیائے میں اِنھیں چھتریہ بتاتے ھیں .

‡ Vaidya. Vol. 111, P. 37.

☫—Ibid Vol. 11, P. 26.

*—Vide Pala inscriptions published in Epigraphica Indica.

हमेशा कहता है कि वर्ण गुणों के अनुसार बनते हैं (गीता). वर्ण की बुनियाद कर्म है, इसलिये हिन्दू समाज में ऐसी कोई चीज़ नहीं है, जिससे कि परम्परागत वर्णों में एक नया दल समाज के लिये किये हुये कर्म के आधार पर तैयार किया जाये.

अब हम राजपूतों के विदेशी होने के सवाल पर आते हैं. हमने कहा है कि मानवतत्व वेत्ता यह नहीं मानते कि राजपूतों का निकास सिथियनों से हुआ. लेकिन हम यह देखते हैं कि ब्राह्मनों ने पश्चिमी भारत में दूसरी जातियों के लोगों को क्षत्री बनाया था और इन क्षत्रियों के खानदानी पार्थियन या शक हिन्दू नाम के थे.‡ इस कुल के आखरी लोग रुद्र सिंह तीसरे थे. खन्डहरों की खोजों से पता चलता है कि शकों और बहुत से यवनों ने ब्राह्मन्यवाद स्वीकार कर लिया था.* यह साफ़ है कि शक क्षत्रियों ने ब्राह्मन्यवाद स्वीकार कर लिया क्योंकि ब्राह्मण राजा पुलमई ने चस्तन के पोते क्षत्रप रुद्र दामां की लड़की से शादी की.† इतिहास बताता है कि चन्द्रगुप्त दूसरे ने 388 ईसवी में इस शाही खानदान को खत्म किया. लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि दो सौ बरसों से जितने भी शक इस साम्राज्य में रहते थे सभी खत्म कर दिये गये. इतिहास भी इसकी गवाही नहीं देता. रुद्र सिंह तीसरे तो ज़रूर खत्म कर दिये गये, लेकिन बहुत से पुराने बसने वालों के सिंह नामधारी ब्राह्मण वंशज रह गये थे. उसी शक साम्राज्य की सीमा के ठीक भीतर वह यज्ञ हुआ था. फिर बाद में हम देखते हैं कि गुर्जर प्रतिहारों ने भी अपनी राजधानी उसी ख़ित्ते में बनाई. तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी कि ब्राह्मणों ने, जैनों और बौद्धों के खिलाफ़ अपने लिये लड़ने वालों को कट्टर हिन्दू व्यवस्था के दूसरे वर्ण में पहुंचाने के लिये एक आधार के रूप में मज़हबी इजाज़त दे दी ! इसलिये यह कोई नामुमकिन बात नहीं है कि बहुत से शक और गुर्जर क़बीले की शासक श्रेणी के लोग क्षत्रिय बन गये और उन्हें "राजपूत" की नई उपाधि मिली. यह नया नाम उन्हें

کہتا ہے کہ ورن گنوں کے انوسار بنتے ہیں (گیتا) . ورن کی بنیاد کرم ہے' اس لئے ہندو سماج میں ایسی کوئی چیز نہیں ہے' جس سے کہ پرمپراگت ورنوں میں ایک نیا دل سماج کے لئے کئے ہوئے کرم کے آدھار پر تیار کیا جائے .

اب ہم راجپوتوں کے ودیشی ہونے کے سوال پر آتے ہیں . ہم نے کہا ہے کہ مانو تتو ویتا یہ نہیں مانتے کہ راجپوتوں کا نکاس سدھیوں سے ہوا. لیکن ہم یہ دیکھتے ہیں کہ براہمنوں نے پچھمی بھارت میں دوسری جاتیوں کے لوگوں کو چھتری بنایا تھا اور ان چھتریوں کے خاندانی پارتھین یا شک ہندو نام کے تھے .‡ اِس کل کے آخری لوگ رودر سنگھ تیسرے تھے . کھنڈروں کی کھوجوں سے پتہ چلتا ہے کہ شکوں اور بہت سے یونوں نے براہمن واد سویکار کر لیا تھا .* یہ صاف ہے کہ شک چھتریوں نے براہمن واد سویکار کر لیا کیونکہ براہمن راجا پل مئی نے چستن کے پوتے چھترپ رودر داماں کی لڑکی سے شادی کی .† اتہاس بتاتا ہے کہ چندرگپت دوسرے نے 388 عیسوی میں اِس شاہی خاندان کو ختم کیا . لیکن اِس کا ارتھ یہ نہیں کہ دو سو برسوں سے جتنے بھی شک اِس سامراجیہ میں رہتے تھے سبھی ختم کر دیئے گئے . اتہاس بھی اِس کی گواہی نہیں دیتا. رودر سنگھ تیسرے تو ضرور ختم کر دیئے گئے' لیکن بہت سے پرانے بسنے والوں کے سنگھ نام دھاری براہمن ونشج رہ گئے تھے . اُسی شک سامراجیہ کی سیما کے ٹھیک بھیتر وہ یگیہ ہوا تھا . پھر بعد میں ہم دیکھتے ہیں کہ گرجر پرتیہاروں نے بھی اپنی راجدھانی اُسی خطے میں بنائی . تو یہ کوئی اشچریہ کی بات نہیں ہوگی کہ براہمنوں نے' جینوں اور بدھوں کے خلاف اپنے لئے لڑنے والوں کو' کٹر ہندو ویوستھا کے دوسرے ورن میں پہنچانے کے لئے ایک آدھار کے روپ میں مذہبی اجازت دے دی ! اس لئے یہ کوئی ناممکن بات نہیں ہے کہ بہت سے شک اور گرجر قبیلے کی شاسک شرینی کے لوگ چھتریہ بن گئے اور انہیں "راجپوت" کی نئی اپادھی ملی. یہ نیا نام انہیں

---

‡—H. C. Rai Chaudhari: Political History of ancient India, pp. 389, 388-389.

*—देखिये—हेलेनिस्टिक राज्य के हेलेनिस्टिक राजदूत-जिसने कि अपना नाम "परम भागवत हेलियोदोरा" रखा था—का बनाया गौरोरा स्तम्भ

(دیکھئے—ہلینسٹک راجیہ کے ہلینسٹک راجدوت جس نے کہ اپنا نام "پرم بھاگوت ہیلیودورا" رکھا تھا—کا بنایا گوروا استمبھ)

Vincent Smith, Early History of India;—also vide Ep. Indica Vol. VIII 'The Inscriptions in the Caves of Nasik' No. 10, 15, 18.

†—H. C. Rai Chaudhari ap, cit, pp. 339, 388-389.

है. B जो इस धरा धाम पर उस समय अवतरित हुआ जब सूर्य कुल लुप्त हो गया. C कहा जाता है कि परमार वशिष्ठ मुनि के क्रोध से पैदा हुये. D चहुमान या चौहान राजा सामन्त 'बिज्योलिया' के अभिलेख में वत्स गोत्र के विप्र अथवा ब्राह्मण कहे गये हैं. E आबू पहाड़ के लूंगित देव अभिलेख में यह कहा गया है कि सूर्य कुल और चन्द्र कुल खत्म हो जाने पर वत्स ऋषि ने एक फ़ौजी जाति का निर्माण किया—यह था चहुमान कुल ! F इन लेखों से यह साफ़ मालूम होता है कि प्राचीन क्षत्रिय वर्ण के अन्दर मध्य युग में नई भर्ती हुई है. इस तरह यह साफ़ है कि पुराने ज़माने में एक 'संगठन' और शुद्धि आन्दोलन ज़रूर हुआ, जिससे क्षत्रिय राजाओं की एक नई धारा निकली, जिन्हें राजपूत कहते हैं. फिर इब्बेट्सन, फुलकियन स्टेट्स गज़ेटियर (Phulkian States Gazetteer) से एक उद्धरण देते हैं, जिसमें कहा गया है कि "चन्द्रवंश की मुख्तलिफ़ शाखायें—बड़ गूजर (बड़ गूजर), कछवाहे, शेखावट, खांप* एक ही जगह से निकले हैं. फिर उन्हीं महाशय ने मि० विल्सन का हवाला दिया है, जो कहते हैं कि राजपूतों की गूजर, बड़ गूजर जाति अक्सर साथ ही पाई जाती है, इससे यह मालूम पड़ता है कि बड़ गूजरों का सम्बन्ध गूजरों से वही है, जो खानज़ादों का मेयों से है, और जो ज़्यादातर राजपूतों का जाटों से है."‡ यानी शासक श्रेणी में पहुंच जाने के कारण ये आम जनता से अलग हो गये और उनसे किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं मानते. और भी, पंजाब में नाभा में, विभिन्न गूजर जातियां अपने को अस्पष्ट तौर से राजपूत कुल का कहती हैं.§

इस प्रकार मुख्तलिफ़ जांच पड़ताल करने वाले इसी नतीजे पर पहुंचते हैं कि गुर्जरों (आजकल के गूजर) और मुख्तलिफ़ राजपूत जातियों में नसली ताल्लुक़ है. इसलिये ब्राह्मणों द्वारा यज्ञ के ज़रिये शुद्धि और शुद्ध वर्गों का परम्परागत क्षत्रिय वर्ण में शामिल होना मनगढ़न्त कहानी नहीं है, ख़ास तौर से जब हम यह देखते हैं कि हिन्दू समाज आज के हिन्दुस्तान में विभिन्न स्थानों पर वही काम कर रहा है.❀ हिन्दू धर्म

هے. B جو اِس دھرا دھام پر اُس سمے اوترت ہوا جب سوریہ کل لپت ہو گیا. C کہا جاتا هے کہ پرمار وششٹھ منی کے کرودھ سے پیدا ہوئے. D چہومان یا چوہان راجہ سامنت 'بجولیا' کے ابھیلیکھ میں وتس گوتر کے وپر اتھوا براهمن کہے گئے هیں. E آبو پہاڑ کے لونگت دیو کے ابھیلیکھ میں یہ کہا گیا هے کہ سوریہ کل اور چندر کل نشٹ ہوجانے پر وتس رشی نے ایک فوجی جاتی کا نرمان کیا—یہ تھا چوهومان کل! F اِن لیکھوں سے یہ صاف معلوم ہوتا هے کہ پراچین چھتری ورن کے اندر مدھیہ یگ میں نئی بھرتی ہوئی هے. اِس طرح یہ صاف هے کہ پرانے زمانے میں ایک 'سنگٹھن' اور شدھی آندولن ضرور ہوا جس سے چھتریہ راجاؤں کی ایک نئی دھارا نکلی' جنھیں راجپوت کہتے هیں. ابیٹسن' پلکین اسٹیٹس گزیٹیر (Pulkian States Gazetteer) سے ایک ادھرن دیتے هیں' جس میں کہا گیا هے کہ "چندر ونش کی مختلف شاکھائیں—بڑ گوجر (بڑ گوجر)' کچھواہے' شیکھاوت' کھانپ* ایک ہی جگہ سے نکلے هیں. پھر اُنھوں مہاشے نے مسٹر ولسن کا حوالہ دیا هے' جو کہتے هیں کہ راجپوتوں کی گوجر' بڑگوجر جاتی اکثر ساتھ ہی پائی جاتی هے' اِس سے یہ معلوم پڑتا هے کہ بڑگوجروں کا سمبندھ گوجروں سے وہی هے' جو خانزادوں کا میوں سے هے' اور جو زیادہ تر راجپوتوں کا جاٹوں سے هے."‡ یعنی شاسک شرینی میں پہونچ جانے کے کارن یہ عام جنتا سے الگ ہوگئے اور اُن سے کسی پرکار کا سمبندھ نہیں مانتے. اور بھی' پنجاب میں نابھا میں' وبھن گوجر جاتیاں اپنے کو اسپشٹ طور سے راجپوت کل کا کہتی هیں.§

اِس پرکار مختلف جانچ پڑتال کرنے والے اِسی نتیجے پر پہونچتے هیں کہ گرجروں (آجکل کے گوجر) اور مختلف راجپوت جاتیوں میں نسلی تعلق هے. اِس لئے براهمنوں دوارا یگیہ کے ذریعے شدھی اور شدھ ورگوں کا پرمپراگت چھتریہ ورن میں شامل ہونا من گڑھنت کہانی نہیں هے' خاص طور سے جب هم یہ دیکھتے هیں کہ هندو سماج آج کے هندستان میں وبھن استھانوں پر وہی کام کر رہا هے.‡ هندو دھرم همیشہ

B—Ep. Ind. Vol. XII PP. 10 FF.
C—Indian antiquary Vol. XVIV P. 11.
D—Ep. Ind. Vol. IX, No. 2 P. 11.
E—I. R. A. S. B. Vol. Lv Pt i 1, P. 4'.
F—Ep. Ind. Vol IX No. 44-D-p.F.

*—"पंजाब और सीमा प्रांत की जातियों और क़बीलों का कोश." परलोकवासी सर डी० इबेटसन के पंजाब की मर्दुमशुमारी की रिपोर्ट के आधार पर.

* "پنجاب اور سیما پرانت کی جاتیوں اور قبیلوں کا کوش." پرلوک واسی سر ڈی. ابیٹسن کے پنجاب کی مردم شماری کی رپورٹ کے آدھار پر.

‡—Ibid. PP. 310, 312. §—Ibid.

❀—यहां हमें बौद्धदार्शनिक आर्यदेव की बात याद आ जाती है कि ब्राह्मण तो किसी को भी क्षत्रिय में बदल देते हैं.

❀ یہاں همیں بودھ دارشنک آریہ دیو کی بات یاد آجاتی کہ براهمن تو کسی کو بھی چھتریہ میں بدل دیتے هیں.

जबकि उत्तरी भारत ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथों में चला गया और राजपूतों ने भी उसकी प्रभुता स्वीकार कर ली तब कर्नल टाड राजदूत की हैसियत से राजपूत रियासतों में भेजे गये. उन्होंने अपने राजपूताना के इस प्रवास में मुख़्तलिफ़ राजपूत क़बीलों की कहानियों और परम्पराओं का अध्ययन किया और इसके फलस्वरूप संसार को अजीबो-ग़रीब समाचार दिया कि राजपूत प्राचीन हमलावरों सिदियनों और हूनों के ख़ानदान से हैं. इसके साथ ही उन्होंने दुनिया को यह भी बताया कि आबू पहाड़ पर ब्राह्मणवाद के नायकों का निर्माण करने के लिये ब्राह्मणों ने एक यज्ञ भी किया था. यही "अग्निकुल" के राजपूतों के जन्म की प्रसिद्ध कहानी है. तभी यह कहानी बार-बार हर जगह दोहराई जाती है और राजपूतों के विदेशी होने के हक़ या ख़िलाफ़ तर्क भी पेश किये जाने लगे हैं.❀

श्री वैद्य कहते हैं "यज्ञ की यह कथा, चन्दबरदाई द्वारा लिखे पृथ्वीराजरासो में सिर्फ़ शायराना उड़ान है." लेकिन इस कथा का वर्णन हमें नेमिरथ मन्दिर के जैन अभिलेखों में मिलता है.‡ इस परम्परागत कथा की सचाई पर और बाहरी गवाहियां भी मिल सकती हैं.

अग्निकुल राजपूतों में एक परिहार जाति भी है और श्री भण्डारकर ने साबित किया है§ कि परिहार और प्रतिहार एक ही हैं, और हमने प्रतिहारों को गुजरों की एक शाखा माना है. इसलिये सवाल उठता है कि कब से गुर्जर क़बीला वैदिक क्षत्रिय बन गया? यही इतिहासकार आगे कहते हैं † कि सोलंकी (चालुक्य), चौहान (चहुमान) और परमार जो अग्निकुल वालों की सूची पूरी करते हैं, मूल रूप से गुर्जरों की ही शाखा हैं. इसमें हायसल (Hoesule) तोमर और कछवाहों‡ को भी जोड़ना चाहते हैं.

पुरानी लिखावट (पुरा-लिपि) सम्बन्धी (epigraphy) A खोजों से यह पता चलता है कि मेवाड़ के गहलौत आनन्दीपुर के नागर ब्राह्मण गुहदत्त के वंशज थे. अतपुरे (Atpure) के अभिलेख में उसे 'महिदेव' और 'विप्रकुल नन्दन' कहा गया है. उनका वैजयाप (Vaijayope) गोत्र है. यह गोत्र नागर ब्राह्मणों में मिलता है. चात्सु (chatsu) अभिलेख में गुहिला बालादित्य को ब्रह्म-क्षत्रवित कहा गया

جب کہ اُتری بھارت برٹش ایسٹ انڈیا کمپنی کے ہاتھوں میں چلا گیا اور راجپوتوں نے بھی اُس کی پربھوتا سویکار کر لی تب کرنل ٹاڈ راج دوت کی حیثیت سے راجپوت ریاستوں میں بھیجے گئے۔ اُنھوں نے اپنے راجپوتانہ کے اِس پرواس میں مختلف راجپوت قبیلوں کی کہانیوں اور پرمپراؤں کا ادھین کیا اور اِس کے پھل سروپ سنسار کو عجیب و غریب سماچار دیا کہ راجپوت پراچین حملہ آوروں سدینوں اور ہونوں کے خاندان سے ہیں۔ اِس کے ساتھ ہی اُنھوں نے دنیا کو یہ بھی بتایا کہ آبو پہاڑ پر براہمن واد کے نایکوں کا نرمان کرنے کے لئے براہمنوں نے ایک یگیہ بھی کیا تھا۔ یہی "اگنی کل" کے راجپوتوں کے جنم کی پرسدھ کہانی ہے۔ تبھی یہ کہانی بار بار ہر جگہ دوہرائی جاتی ہے اور راجپوتوں کے ودیشی ہونے کا حق یا خلاف ترک بھی پیش کئے جانے لگے ہیں۔❀

شری ویدیہ کہتے ہیں "یگیہ کی یہ کتھا چند بردائی دوارا لکھے پرتھوی راج راسو میں صرف شاعرانہ اُڑان ہے۔" لیکن اس کتھا کا ورنن ہمیں نیمرتھ مندر کے جین ابھیلیکھوں میں ملتا ہے‡ اِس پرمپراگت کتھا کی سچائی پر اور باہری گواہیاں بھی مل سکتی ہیں۔

اگنی کل راجپوتوں میں ایک پری ہار جاتی بھی ہے اور شری بھنڈارکر نے ثابت کیا ہے§ کہ پری ہار اور پرتی ہار ایک ہی ہیں، اور ہم نے پرتی ہاروں کو گرجروں کی ایک شاکھا مانا ہے۔ اِس لئے سوال اُٹھتا ہے کہ کب سے گرجر قبیلہ ویدک چھتریہ بن گیا؟ یہی اتہاسکار آگے کہتے ہیں۔ † کہ سولنکی (چالوکیہ)، چوہان (چہومان) اور پرمار جو اگنی کل والوں کی سوچی پوری کرتے ہیں، مول روپ سے گرجروں کی ہی شاکھا ہیں۔ اس میں ہوئسل (Hoesule) تومر اور کچھواہوں‡ کو بھی جوڑنا چاہتے ہیں۔

پرانی لکھاوٹ (پورا - لپی) سمبندھی (epigraphy) A کھوجوں سے یہ پتہ چلتا ہے کہ میواڑ کے گہلوت آنندی پور کے ناگر براہمن گوہدت کے ونشج تھے۔ اتپورے (Atpure) کے ابھیلیکھ میں اُسے 'مہیدیو' اور 'وپرکل نندن' کہا گیا ہے۔ اُن کا ویجیوپ (Vaijayope) گوتر ہے۔ یہ گوتر ناگر براہمنوں میں ملتا ہے۔ چاتسو (Chatsu) ابھیلیکھ میں گوہلا بالادتیہ کو برہم - چھتروت کہا گیا

❀—देखिये विन्सेन्ट स्मिथ, भण्डारकर, वैद्य आदि. मानव तत्व शास्त्री इस मामले में ऐतिहासिकों से भिन्न विचार रखते हैं.

❀—دیکھئے ونسینٹ اسمتھ۔ بھنڈارکر ویدیہ آدی۔ مانوتتو شاستری اِس معاملے میں اتہاسکوں سے بھن وچار رکھتے ہیں۔

‡—Vide Epi. Ind Vol. VIII P. 201.

§—Bhandarkar, J. R. A. S. 1905 PP. 1-4, 31-32.

†—Ibid.

‡—Bhandarkar I. R. A. S. 1905 PP. 1-4,31-32.

A—N. C. Vasu, History of kawsupa.

क्षत्रिय बना दिया†." लेकिन अब भी मरहठा जाति का सामाजिक स्थान क्या हिन्दू वर्णाश्रम व्यवस्थाके भीतर है यह सवाल बहस तलब है. अब भी मरहठों को ब्राह्मणों ने जाति की हैसियत से क्षत्रिय नहीं माना है. क्षत्रीपन के दावे का सवाल तब उठा जब कि शिवाजी के नीचे मरहठे एक आज़ाद क़ौम की तरह तरक़्क़ी कर चुके. कुनबी‡ खेतिहर जो कि शूद्र माना जाता है, जब लड़ाकू मरहठा बन गया और उसने शिवाजी की नेताशाही में एक आज़ाद राज्य की स्थापना की, तब उसने प्राचीन क्षत्रिय जाति का सदस्य होने का दावा किया. लेकिन दक्षिण के ब्राह्मण शिवाजी के उत्थान के पहिले उसी प्रदेश में बहुत शक्तिशाली थे और शिवाजी के मरने के बाद इन्होंने ही राजनीतिक अधिकारों को हड़प लिया.

इस तरह हम देखते हैं कि एक कशमकश के बाद ही मरहठे ऊंचा दरजा पा सके थे. लेकिन शिवाजी के बाद के ज़माने में उन्हें शासक और लड़ाकू ब्राह्मणों से सामाजिक संघर्श (जद्दोजेहद) करना पड़ा, जिसके फलस्वरूप उनकी सामाजिक स्थिति कमज़ोर पड़ गई. उधर जहां तक राजपूतों का मामला है, उनकी सामाजिक स्थिति उनकी राजनीतिक शक्ति के कारन बनी रही. इसलिये ब्राह्मणों ने उसे स्वीकार भी किया.

अब हम राजपूतों की तरक़्क़ी के सवाल को लेंगे. शरीर (जिस्म) विज्ञान की नज़र से (Somatologically) हमने यह देख लिया है कि ये एक ही कुल के नहीं हैं. यह साफ़ है कि अलग अलग जातियों ने मिल कर राजपूत जाति का निर्माण किया; इनमें सब से अधिक संख्या उन लोगों की है, जो आजकल दूसरी जातियों में पाये जाते हैं. इसी कारन वे दूसरे हिन्दुस्तानियों से अलग नहीं किये जा सकते.* इसलिये यह नहीं कहा जा सकता कि वे अलग से एक ख़ास गिरोह हैं. अगर ऐसा है तो हमें उनके बारे में और अधिक विस्तार (तफ़सील) से छान बीन करनी चाहिये.

چھتری بنا دیا†." لیکن اب بھی مرھٹہ جاتی کا سماجک استھان کیا ھندو ورناشرم ویوستھا کے بھیتر ھے یہ سوال بحث طلب ھے. اب بھی مرھٹوں کو براھمنوں نے جاتی کی حیثیت سے چھتری نہیں مانا ھے. چھتری پن کے دعوے کا سوال تب اُٹھا جب کہ شیوا جی کے نیچے مرھٹے ایک آزاد قوم کی طرح ترقی کرچکے. کنبی‡ کھیتہر جو کی شودر مانا جاتا ھے' جب لڑاکو مرھٹہ بن گیا اور اُس نے شیوا جی کی نیتا شاھی میں ایک آزاد راجیہ کی استھاپنا کی' تب اُس نے پراچین چھتری جاتی کا سدسیہ ھونے کا دعویٰ کیا. لیکن دکھن کے براھمن شیوا جی کے اتھان کے پہلے اُسی پردیش میں بہت شکتی شالی تھے اور شیوا جی کے مرنے کے بعد اُنھوں نے ھی سارے راج نیتک ادھیکاروں کو ھڑپ لیا.

اِس طرح ھم دیکھتے ھیں کہ ایک کشمکش کے بعد ھی مرھٹے اونچی درجہ پا سکے تھے. لیکن شیوا جی کے بعد کے زمانے میں اُنھیں شاسک اور لڑاکو براھمنوں سے سماجک سنگھرش (جدوجہد) کرنا پڑا' جس کے پھل سروپ ان کی سماجک استھتی کمزور پڑ گئی. ادھر جہاں تک راجپوتوں کا معاملہ ھے' اُن کی سماجک استھتی اِن کی راجنیتک شکتی کے کارن بنی رھی. اِس لئے براھمنوں نے اُسے سویکار بھی کیا.

اب ھم راجپوتوں کی ترقی کے سوال کو لیں گے. (جسم) شریر وگیان کی نظر سے (Somatologically) ھم نے یہ دیکھ لیا ھے کہ یہ ایک ھی کل کے نہیں ھیں. یہ صاف ھے کہ مختلف جاتیوں نے مل کر راجپوت جاتی کا نرمان کیا؛ اِن میں سب سے ادھک سنکھیا اِن لوگوں کی ھے' جو آجکل دوسری جاتیوں میں پائے جاتے ھیں. اِسی کارن وے دوسرے ھندستانیوں سے الگ نہیں کئے جا سکتے.* اِس لئے یہ نہیں کہا جا سکتا کہ وہ الگ سے ایک خاص گروہ ھیں. اگر ایسا ھے تو ھمیں اُن کے بارے میں اور ادھک وستار (تفصیل) سے چھان بین کرنی چاھئے.

---

†—J. N. Sarkar, 'Shivaji and his times." pp. 84-85. शिवाजी की वंशावली के विवाद के बारे में पाठकों को मि. सरकार, वैद्य, एस. एन. सेन., वी. के. राजवाड़े और सरदेसाई के लेखों को पढ़ना चाहिये.

† J. N. Sarkar, "Shivaji and his times." pp 84-85 شیوا جی کی ونشاولی کے وواد کے بارے میں پاٹھکوں کو مسٹر سرکار' ویدیہ' ایس. این. سین.' وی. کے. راجواڑے اور سردیسائی کے لیکھوں کو پڑھنا چاھئے.

‡- ऐसा लगता है कि यू० पी० के कुनबी खेतिहरों, दक्षिण के कुनबियों और लड़ाकू मरहठा कुनबियों में जातिगत सम्बन्ध है. देखिये Risley—'People of India.'

‡ ایسا لگتا ھے کہ یو. پی. کے کنبی کھیتہروں' دکھن کے کنبیوں اور لڑاکو مرھٹا کنبیوں میں جاتیہ گت سمبندھ ھے. دیکھئے Risley—'People of India.'

*—डाक्टर गुहा "हिन्दुस्तान के लोगों की जातिगत समता" के बारे में 1931 की मर्दुमशुमारी बताते हुये कहते हैं कि बंगाल के पोदों का बंगाल के बाहर की दूसरी जातियों में मरहठों और राजपूतों से ज्यादा गहरा सम्बन्ध है. पृष्ठ 7.

* ڈاکٹر گوھا "ھندستان کے لوگوں کی جاتی گت سمتا" کے بارے میں سن 1931 کی مردم شماری بتاتے ھوئے کہتے ھیں کہ بنگال کے پودوں کا بنگال کے باھر کی دوسری جاتیوں میں مرھٹوں اور راجپوتوں سے زیادہ گہرا سمبندھ ھے. پرشٹھ 7

यह नहीं कहा जा सकता कि वे दोनों एक ही नस्ल के (Biotypes) हैं और जैसा कि हम कहीं कह चुके हैं इन्डो-आर्यन् नस्ल की बात कहना ग़लत है. इसलिये प्राचीन क्षत्रिय, आज के राजपूत और मरहठे एक ही जाति के नहीं कहे जा सकते. गोत्रों और प्रवरों के एक हो जाने से जाति भी एक नहीं हो जाती, क्योंकि दूसरी जातियों के गोत्र भी वही होते हैं.‡ गोत्र बदले जा सकते हैं और नये गोत्र अपनाये भी जा सकते हैं.❀ आज दिन भी हिन्दुस्तान में ऐसा होता है.

दक्षिण के मरहठे हमेशा शूद्र माने गये हैं, हालांकि कुछ अमीर कुलों ने अपने को राजपूतों का ख़ानदानी कहने का गर्व दिखाया है. चूंकि वे राजपूतों के ख़ानदानी हैं, इसलिये वे प्राचीन क्षत्रियों में गिने जा सकते हैं अथवा उनके वंशज माने जा सकते हैं. वैद्य भी चाहते हैं कि हम उनकी इस बात पर विश्वास कर लें.* यह सवाल मरहठा साम्राज्य के संस्थापक शिवाजी की राजगद्दी के समय सामने आया था. जैसा कि श्री यदुनाथ सरकार कहते हैं, "शिवाजी और उनके ससुर गायकवाड़ मरहठे अथवा नीची जाति के लोग थे...... शिवाजी को उन ब्राह्मणों के ज़रिये अपनी यह बेइज़्ज़ती बहुत अखरती थी, जिनकी रक्षा और बढ़ती के लिये उन्होंने अपनी सारी ज़िन्दगी लगा दी थी. चूंकि ब्राह्मणों ने शिवाजी को शूद्र ही मानने की ज़िद की, इसलिये मजबूर होकर उन्हें कायस्थों के नेता और ब्राह्मणों के घमण्ड के शिकार बालाजी आवाजी के हाथों में चला जाना पड़ा. बाला जी क़ुदरती तौर पर अपने मालिक के साथ हमदर्दी रखते थे और उन्होंने शिवाजी को सामाजिक नज़र में ऊंचा उठाने के लिये गागा भट्ट को रखा, जिसने शिवाजी को शुद्ध

یہ نہیں کہا جاسکتا کہ وے دونوں ایک ہی نسل کے (Biotypes) ہیں اور جیسا کہ ہم کہیں کہ چکے ہیں انڈوآرین نسل کی بات کہنا غلط ہے۔ اس لئے پراچین چھتریہ' آج کے راجپوت اور مرہٹے ایک ہی جاتی کے نہیں کہے جاسکتے۔ گوتروں اور پرووروں کے ایک ہوجانے سے جاتی بھی ایک نہیں ہو جاتی' کیونکہ دوسری جاتیوں کے گوتر بھی وہی ہوتے ہیں .‡ گوتر بدلے جاسکتے ہیں اور نئے گوتر اپنائے بھی جاسکتے ہیں ❀ آج دن بھی ہندستان میں ایسا ہوتا ہے .

دکھن کے مرہٹے ہمیشہ شودر مانے گئے ہیں' حالانکہ کچھ امیر کلوں نے اپنے کو راجپوتوں کا خاندانی کہنے کا گرو دکھایا ہے. چونکہ وے راجپوتوں کے خاندانی ہیں' اس لئے وے پراچین چھتریوں میں گنے جاسکتے ہیں اتھوا اُن کے ونشج مانے جاسکتے ہیں. ویدیہ بھی چاہتے ہیں کہ ہم اِن کی اِس بات پر وشواس کرلیں .* یہ سوال مرہٹہ سامراجیہ کے سنستھاپک شیوا جی کی راج گدی کے سمے سامنے آیا تھا . جیسا کہ شری یدوناتھ سرکار کہتے ہیں' "شیوا جی اور اُن کے سسر گائیکواڑ مرہٹے اتھوا نیچی جاتی کے لوگ تھے......شیوا جی کو اُن براہمنوں کے ذریعہ اپنی یہ بےعزتی بہت اکھرتی تھی' جن کی رکچھا اور بڑھتی کے لئے انہوں نے اپنی ساری زندگی لگادی تھی. چونکہ براہمنوں نے شیوا جی کو شودر ہی ماننے کی ضد کی' اس لئے مجبور ہوکر انہیں کائستھوں کے نیتا اور براہمنوں کے گھمنڈ کے شکار بالاجی آواجی کے ہاتھوں میں چلا جانا پڑا . بالاجی قدرتی طور پر اپنے مالک کے ساتھ ہمدردی رکھتے تھے اور انہوں نے شیواجی کو سماجک نظر سے اُونچا اُٹھانے کے لئے گاگا بھٹ کو رکھا' جس نے شیوا جی کو شدھ

‡—बंगाल की तमाम हिन्दू जातियों के ब्राह्मण गोत्र और उसके साथ के प्रवर होते हैं. लेकिन इससे वे ब्राह्मण नहीं हो जाते.

‡—بنگال کی تمام ہندو جاتیوں کے براہمن گوتر اور اُس کے ساتھ کے پرور ہوتے ہیں . لیکن اِس سے وے براہمن نہیں ہوجاتے .

❀—सुनसेप की वैदिक कहानी को देखिये. जिसे विश्वामित्र ने गोद लिया था तब उसने विश्वामित्र के गोत्र को भी ग्रहण कर लिया. इसी प्रकार हर रोज़ हिन्दुस्तान में लोग अपने गोत्र बदल रहे हैं. फिर सामाजिक और धार्मिक परिवर्तनों द्वारा भी अपने गोत्र बदलते हैं, जैसा कि दक्षिण भारत के लिंगायतों ने किया है.

❀—سنسیپ کی ویدک کہانی کو دیکھئے . جسے وشوامتر نے گود لیا تھا تب اُسے وشوامتر کے گوتر کو بھی گرہن کر لیا . اِسی پرکار ہر روز ہندستان میں لوگ اپنے گوتر بدل رہے ہیں . پھر سماجک اور دھارمک پریورتنوں دوارا بھی اپنے گوتر بدلتے ہیں' جیسا کہ دکھن بھارت کے لنگائتوں نے کیا ہے .

*—ऐसा हो सकता है कि कुछ पुराने मरहठा राज वंश राजपूतों से आये हों, लेकिन इससे वे अथवा सारी जाति क्षत्रिय नहीं हो जायगी.

*—ایسا ہوسکتا ہے کہ کچھ پرانے مرہٹا راج ونش راجپوتوں سے آئے ہوں' لیکن اِس سے وے اتھوا ساری جاتی چھتریہ نہیں ہوجائیگی .

इजाज़त नहीं थी. वैद्य के मुताबिक़ ऐसा इसलिये हुआ कि वे "आर्य जाति" के शुद्ध क्षत्रिय थे. तो अब हम इन क्षत्रियों के निकास की छानबीन करें.

राजपूतों का असली निकास

श्री वैद्य की राय है कि 'हम आसानी से यह मान सकते हैं कि राजपूत वैदिक क्षत्रियों के ख़ानदान से हैं"‡ और उन्होंने वेदों के गोत्र और प्रवरों को क़ायम रखा है."§ इसी तरह से वे सोचते हैं कि मराठा जाति भी प्राचीन वैदिक वंशी हैं. मरहठों के बारे में बताते हुये श्री वैद्य कहते हैं, "ये बरार और दक्षिण में बसने वाले आर्य चन्द्र कुल के हैं.$

क़दीम और पाक ख़ानदानी होने के दावे को सही मानने के लिये इन जातियों के स्त्री पुरुषों के जिस्म की बनावट की परीक्षा करनी होगी. राजपूतों के बारे में हमने जो आंकड़े इकट्ठा किये हैं उसका नतीजा हम देख चुके हैं. जहां तक मरहठों का सवाल है, हडन् ☫ कहता है कि मराठा क्षत्रियों का आम तौर से मस्तक-मान 78.3 और नाक मान 81.0 रहता है और सुकुमसले मराठों का औसतन् 82.2 कपाल-मान और 74.0 नासिका मान रखता है. यानी पहिले वाले मझौले माथे और मझौली नाक वाले होते हैं. (mesocephalmesorhinian) और दूसरे गोल-माथे और मझौली नाक वाले (brachycephal-mesorrhiniar) होते हैं.

इस तरह हम एक ही जाति के भीतर फ़र्क़ पाते हैं. इससे यह साफ़ हो जाता है कि वे एक वंश के नहीं हैं. आजकल के इनसानी नस्लों के जानकार विद्वान बताते हैं कि बम्बई अहाते में रहने वालों में गोल खोपड़ी वाले "युरेशीयाटिक" या "आरमेनाइग" ख़ून वाले लोग, मिलते हैं.❀ फिर अभी हाल में हिन्दुस्तान की इनसानी नस्लों के बारे मे जो रिपोर्ट निकली है, उसमें मुख्तलिफ़ सूबों की जातियों के अन्तर-सम्बन्धों की चर्चा है. उसमें कहा गया है कि पश्चिमी हिन्दुस्तान और उत्तरी हिन्दुस्तान के लोगों की मिलावट के बहुत कम सबूत मिलते हैं.* आगे चलकर उसी रिपोर्ट में कहा गया है कि, मरहठों और बंगाल के पोदों (एक अछूत जाति) में बहुत गहरा ताल्लुक़ है.†

इस तरह हम यह नहीं कह सकते कि जिस्म की बनावट के नुक़्ते नज़र से राजपूत और मरहठे एक हैं. उनके लिये

اِجازت نہیں تھی ۔ ویدیہ کے مطابق ایسا اِس لئے ہوا کہ وے "آریہ جاتی" کے شدھ چھتریہ تھے ۔ تو اب ہم اِن چھتریوں کے نکاس کی چھان بین کریں ۔

راجپوتوں کا اصلی نکاس

شری ویدیہ کی رائے ہے کہ "ہم آسانی سے یہ مان سکتے ہیں کہ راجپوت ویدک چھتریوں کے خاندان سے ہیں ۔"‡ اور انہوں نے ویدوں کے گوتر اور پرووروں کو قایم رکھا ہے ۔"§ اِسی طرح سے وے سوچتے ہیں کہ مرہٹا جاتی بھی پراچین ویدک ونشی ہیں ۔ مرہٹوں کے بارے میں بتاتے ہوئے شری ویدیہ کہتے ہیں، "یہ برار اور دکھن میں بسنے والے آریہ چندر کل کے ہیں $

قدیم اور پاک خاندانی ہونے کے دعوے کو سہی ماننے کے لئے اِن جاتیوں کے استری پرشوں کے جسم کی بناوٹ کی پریکچھا کرنی ہوگی ۔ راجپوتوں کے بارے میں ہم نے جو آنکڑے اکٹھے کئے ہیں اس کا نتیجہ ہم دیکھ چکے ہیں ۔ جہاں تک مرہٹوں کا سوال ہے، ہڈن☫ کہتا ہے کہ مرہٹا چھتریوں کا عام طور سے مستک-مان 78.3 اور ناک مان 81·0 رہتا ہے اور سکوم‌سلے مرہٹوں کا اوسطاً 82·2 کپال-مان اور 74·0 ناسکا مان رکھتا ہے. یعنی پہلے والے مجھولے ماتھے - اور مجھولی ناک والے ہوتے ہیں. (mesocephal-mesorhinian) اور دوسرے گول ماتھے اور مجھولی ناک والے (brachycephal-mesorrhiniar) ہوتے ہیں ۔

اِس طرح ہم ایک ہی جاتی کے بھیتر فرق پاتے ہیں ۔ اِس سے یہ صاف ہوجاتا ہے کہ وے ایک ونش کے نہیں ہیں. آجکل کے اِنسانی نسلوں کے جانکار ودوان مانو تتو ویتا بتاتے ہیں کہ بمبئی احاطے میں رہنے والوں میں گول کھوپڑی والے "یوریشیاٹک" یا "آرمیناٹک" خون والے لوگ ملتے ہیں.❀ پھر ابھی حال میں ہندستان کی اِنسانی نسلوں کے بارے میں جو رپورٹ نکلی ہے، اُس میں مختلف صوبوں کی جاتیوں کے انتر سمبندھوں کی چرچا ہے ۔ اُس میں کہا گیا ہے کہ پچھمی ہندستان اور اُتری ہندستان کے لوگوں کی ملاوٹ کے بہت کم ثبوت ملتے ہیں ۔* آگے چل کر اُسی رپورٹ میں کہا گیا ہے کہ، مرہٹوں اور بنگال کے پودوں (ایک اچھوت جاتی) میں بہت گہرا تعلق ہے ۔†

اِس طرح ہم یہ نہیں کہہ سکتے کہ جسم کی بناوٹ کے نقطۂ نظر سے راجپوت اور مرہٹے ایک ہیں ۔ ان کے لئے

‡—Vaidya Vol. IV, PP. 49-50.

§—Ibid.

$—Vol. I, P. 80.

☫-❀—Haddon—The Races of Man, PP. 107-111.

*—Census of India 1931, Vol. 1, India, Pr. III Ethnographical by B. S. Guha.

†—Ibid.

भारत के क्षत्री शासक कुलों के साथ लगातार उनका विवाह-सम्बन्ध रहा है." आगे चलकर श्री वैद्य कहते हैं कि बंगाल के सेन इस सूची के बाहर हैं क्योंकि, जैसा कि उनका विचार है, उस समय तक सेनों का असर बंगाल में क़ायम नहीं हुआ था; लेकिन वह समय आया जब कि इन लोगों ने अपना सम्बन्ध मरहठों से तोड़ लिया. नतीजे में इस काल के बाद, मरहठा क्षत्रिय जिसमें शिलाहारस भी शामिल थे—(रासो के 36 राज्य कुलों में इनकी चर्चा है)—अलग से एक समुदाय अथवा उपजाति बन गये और इनमें भी 96 मरहठा कुलों की गिनती हुई. इन लोगों का शादी ब्याह अब इन्हीं 96 कुलों में ही सकता था."❀

इस तरह प्राचीन (क़दीम) आन्ध्रों में भी क्षत्रिय है जो 'राजू' और 'बेल्लाल' कहे जाते हैं. उनका अपना एक समुदाय है. फिर हिन्दुस्तान के दूर दक्खिन में कुछ खान्दान हैं, जो अपने को क्षत्रिय तो कहते हैं, लेकिन रहते सब से अलग हैं. बङ्गाल में, ग्यारहवीं अथवा बारहवीं सदी के आख़ीर में हमे ऐसे सेन मिलते हैं, जो अपने को 'करनाट ब्रह्म-क्षत्रिय'* कहते हैं. इसका अर्थ यह हुआ कि मूल रूप से ये लोग कर्नाट (दक्षिण भारत) से सम्बन्ध रखते थे. ये लोग ब्राह्मण थे और इन्होने क्षत्रियो का पेशा अख़्तियार कर लिया था. इन्होने चालुक्यो से शादी-ब्याह भी किया था.† आनन्द भट्ट के 'बल्लाल चरित' में, जो 16वीं सदी में लिखा गया था, बङ्गाल के ब्रह्म-क्षत्रियों और राजपुत्रों की चर्चा मिलती है. 'शेख़ शुभोदय' एक नई खोजी हुई संस्कृत किताब है, जिसका लेखक लक्ष्मण सेन का प्रसिद्ध मन्त्री हलायुध माना जाता है. लेकिन आलोचक इसे उस वक़्त का मानते हैं जब कि टोडरमल ने बंगाल की भूमि की जांच पड़ताल की थी. इस ग्रन्थ में "राजपुत्र" जाति का ज़िक्र मिलता है. फिर, "प्रेम बिलास" में, जो 17वीं सदी में लिखे हुये बंगाल के वैष्णव साहित्य का एक जुज़ है, ऐसे ब्रह्म-क्षत्रियों की चर्चा मिलती है, जो पद्मा नदी के किनारे रहा करते थे. उन पालों की भी चर्चा नहीं मिलती, जो मगध (बिहार) में उस समय राज करते थे और जो बहुत अर्से से क्षत्रियों से ब्याह-शादी करते आये हैं.

इस तरह यह साफ़ है कि राजपूतों ने अपना एक ऐसा गिरोह बना लिया था, जिसमें बाहर वालों के आने की

بھارت کے چھتری شاسک کلوں کے ساتھ لگاتار ان کا وواہ سمبندھ رہا ہے." آگے چل کر شری ویدیہ کہتے ہیں کہ بنگال کے سین اس سوچی کے باہر ہیں کیونکہ جیسا کہ ان کا وچار ہے، اس سمے تک سینوں کا اثر بنگال میں قائم نہیں ہوا تھا؛ لیکن وہ سمے آیا جب کہ ان لوگوں نے اپنا سمبندھ مرہٹوں سے توڑ لیا. نتیجے میں اس کال کے بعد، مرہٹا چھتری جس میں شلاہارس بھی شامل تھے—(راسو کے 36 راج کلوں میں ان کی چرچا ہے)—الگ سے ایک سموادائے اتھوا اپجاتی بن گئے اور ان میں بھی 96 مرہٹا کلوں کی گنتی ہوئی. ان لوگوں کا شادی بیاہ اب انہیں 36 کلوں میں ہو سکتا تھا."❀

اسی طرح پراچین (قدیم) آندھروں میں بھی چھتریہ ہیں جو 'راجو' اور 'بیلال' کہے جاتے ہیں. ان کا اپنا ایک سموادائے ہے. پھر ہندوستان کے دور دکھن میں کچھ خاندان ہیں، جو اپنے کو چھتریہ تو کہتے ہیں، لیکن رہتے سب سے الگ ہیں. آخیر میں بنگال میں، گیارھویں اتھوا بارھویں صدی کے آخیر میں ہمیں ایسے سین ملتے ہیں، جو اپنے کو 'کرناٹ برہم چھتریہ'* کہتے ہیں. اس کا ارتھ یہ ہوا کہ مول روپ سے یہ لوگ کرناٹ (دکھن بھارت) سے سمبندھ رکھتے تھے. یہ لوگ براہمن تھے اور انہوں نے چھتریوں کا پیشہ اختیار کر لیا تھا. انہوں نے چالوکیوں سے شادی بیاہ بھی کیا تھا.† آنند بھٹ کے 'بلال چرت' میں، جو 16 ویں صدی میں لکھا گیا تھا، بنگال کے برہم چھتریوں اور راجپتروں کی چرچا ملتی ہے. 'شیخ شوبھودیہ' ایک نئی کھوجی ہوئی سنسکرت کتاب ہے، جس کا لیکھک لچھمن سین کا پرسدھ منتری ہلایدھ مانا جاتا ہے. لیکن آلوچک اسے اس وقت کا مانتے ہیں جب کہ ٹوڈرمل نے بنگال کی بھومی کی جانچ پڑتال کی تھی. اس گرنتھ میں "راج پتر" جاتی کا ذکر ملتا ہے. پھر "پریم بلاس" میں، جو 17 ویں صدی میں لکھے ہوئے بنگال کے ویشنو ساہتیہ کا ایک جز ہے، ایسے برہم چھتریوں کی چرچا ملتی ہے، جو پدما ندی کے کنارے رہا کرتے تھے. ان پالوں کی بھی چرچا نہیں ملتی، جو مگدھ (بہار) میں اس سمے راج کرتے تھے اور جو بہت عرصے سے چھتریوں سے بیاہ شادی کرتے آئے ہیں.

اس طرح یہ صاف ہے کہ راجپوتوں نے اپنا ایک ایسا گروہ بنا لیا تھا، جس میں باہر والوں کے آنے کی

❀—Vaidya, Vol. III, PP. 383–384, 385.

*—N. G. Mazumdar—"Inscription of Bengal," Vol. III vide Madhainagar grant of Samant Sena," P. 44.

†—लक्ष्मण सेन की मां चालुक्य राजकुमारी थी لچھمن سین کی ماں چالوکیہ راجکماری تھی —†
(Tarpandighi plate), Vide Mazumdar, P. 144.

से गिरोह हिन्दुस्तान के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में हैं, जो अपने को ऊंचे क्षत्रिय कहते हैं और समाज में ये लोग भी वही काम करते हैं, यानी वे भी फ़ौजी पेशे के हैं, फिर भी वे राजपूत नहीं हैं. इसलिये हमें राजपूतों के बारे में छान-बीन करनी चाहिये.

हर्षवर्द्धन की मौत के बाद के काल में हमें बहुत से ऐसे लेख मिलते हैं, जिसमें अफ़सरों की सूची में "राजपुत्र" शब्द का प्रयोग है. लेकिन ऐसा लगता है कि यह किसी पद की उपाधि है, किसी जाति का सूचक नहीं है. नहीं तो यह शब्द बङ्गाल और दक्षिण भारत के शिलालेखों में न मिलता. इस शब्द का अर्थ 'राजा का लड़का' भी है. देशी बोली में, उत्तरी बिहार में इस शब्द को ख़राब मायनों में इस्तेमाल किया जाता है और "ब्रह्मवैवर्त पुराण" तथा "बल्लाल चरित" में राजपूत अथवा छत्री को ब्राह्मण और क्षत्रियों का वर्ण-संकर कहा गया है. लेकिन यह शब्द शुरू चाहे जैसे भी हुआ हो, रियासतों के शासक होने के नाते इनका आदर बहुत था. श्री वैद्य कहते हैं, "शुरू में तो वे ब्राह्मणों से भी ऊंचे माने जाते थे. इसके पहिले की सदी के अरब यात्रियों ने जिन राजपूतों के ऊंचे स्थान का ज़िक्र किया है उसकी चर्चा अलबेरूनी—जो देखी हुई बातों से अधिक हिन्दू शास्त्रों की बात कहता है, नहीं करता. लेकिन वे हर तरह से ब्राह्मणों के बराबर माने जाते थे, जैसा कि अलबेरूनी ख़ुद मानता है "उनका स्थान ब्राह्मणों से बहुत नीचे नहीं है."† आजकल के जानकार यह जानते हैं कि राजपूताना में, जहां अब भी राजपूत सामन्तवादी ढंग से राज करते हैं, राजपूत सबसे ऊंची जाति है.

यह पहिले ही कहा जा चुका है कि राजपूतों के समाज में बाहरी लोग पैठ नहीं सकते. इन 36 कुलों अथवा क़बीलों का एक ऐसा समाज था, जिसमें बाहर वालों के घुसने की गुंजाइश नहीं थी, और ये लोग आपस में ही ब्याह-शादी कर सकते थे. श्री वैद्य कहते हैं, "साधारण तौर से राजपूत या हिन्दुस्तान के शासक कुलों‡ ने (1100 ई० के क़रीब) जो शुद्ध क्षत्रिय थे, उन राज्य घरानों को मिला कर अपने को एक उपजाति में बांट लिया. पंजाब चूंकि उस समय मुसलमान हुकूमत में था, इसलिये क़ुदरती था कि वह इस श्रेणी में शामिल न किया जाता. दूसरी वजहों से हिमालय-वर्ती कुल ......इसमें शामिल नहीं किये गये. दक्षिण भारत के शासक कुल भी इसमें शामिल नहीं किये गये, क्योंकि वे शुद्ध आर्य जाति और क्षत्रिय घराने के नहीं माने जाते थे. महाराष्ट्र के क्षत्रिय घराने शामिल कर लिये गये, क्योंकि उत्तरी

سے گروہ ہندستان کے مختلف حصوں میں ہیں، جو اپنے کو اونچے چھتریہ کہتے ہیں اور سماج میں یہ لوگ بھی وہی کام کرتے ہیں، یعنی وے بھی فوجی پیشے کے ہیں، پھر بھی وے راجپوت نہیں ہیں۔ اس لئے ہمیں راجپوتوں کے بارے میں چھان بین کرنی چاہئے۔

ہرش وردھن کی موت کے بعد کے کال میں ہمیں بہت سے ایسے لیکھ ملتے ہیں، جس میں افسروں کی سوچی میں "راج پتر" شبد کا پریوگ ہے۔ لیکن ایسا لگتا ہے کہ یہ کسی پد کی اپادھی ہے، کسی جاتی کا سوچک نہیں ہے۔ نہیں تو یہ شبد بنگال اور دکھن بھارت کے شلالیکھوں میں نہ ملتا۔ اس شبد کا ارتھ 'راجہ کا لڑکا' بھی ہے۔ دیشی بولی میں، اتری بہار میں اس شبد کو خراب معنوں میں استعمال کیا جاتا ہے اور "برہم ویورت پران" تتھا "بلال چرت" میں راجپوت اتھوا چھتری کو براہمن اور چھتریوں کا ورن سنکر کہا گیا ہے۔ لیکن یہ شبد شروع چاہے جیسے بھی ہوا ہو، ریاستوں کے شاسک ہونے کے ناتے ان کا آدر بہت تھا۔ شری ویدیہ کہتے ہیں، "شروع میں تو وے براہمنوں سے بھی اونچے مانے جاتے تھے۔ اس کے پہلے کی صدی کے عرب یاتریوں نے جن راجپوتوں کے اونچے استھان کا ذکر کیا ہے اس کی چرچا البیرونی—جو دیکھی ہوئی باتوں سے ادھک ہندو شاستروں کی بات کہتا ہے، نہیں کرتا۔ لیکن وے ہر طرح سے براہمنوں کے برابر مانے جاتے تھے، جیسا کہ البیرونی خود مانتا ہے "انکا استھان براہمنوں سے بہت نیچے نہیں ہے۔"† آجکل کے جانکار یہ جانتے ہیں کہ راجپوتانہ میں، جہاں اب بھی راجپوت سامنتوادی ڈھنگ سے راج کرتے ہیں، راجپوت سب سے اونچی جاتی ہے۔

یہ پہلے ہی کہا جا چکا ہے کہ راجپوتوں کے سماج میں باہری لوگ پیٹھ نہیں سکتے۔ ان 36 کلوں اتھوا قبیلوں کا ایک ایسا سماج تھا، جس میں باہر والوں کے گھسنے کی گنجائش نہیں تھی، اور یہ لوگ آپس میں ہی بیاہ شادی کر سکتے تھے۔ شری ویدیہ کہتے ہیں، "سادھارن طور سے راجپوت یا ہندستان کے شاسک کلوں‡ نے (1100 عیسوی کے قریب) جو شدھ چھتریہ تھے، ان راجیہ گھرانوں کو ملاکر اپنے کو ایک اپجاتی میں بانٹ لیا۔ پنجاب چونکہ اس سمے مسلمان حکومت میں تھا، اس لئے قدرتی تھا کہ وہ اس شرینی میں شامل نہ کیا جاتا۔ دوسری وجہوں سے ہمالیہ ورتی کل......اس میں شامل نہیں کئے گئے۔ دکھن بھارت کے شاسک کل بھی اس میں شامل نہیں کئے گئے، کیونکہ وے شدھ آریہ جاتی اور چھتریہ گھرانے کے نہیں مانے جاتے تھے۔ مہاراشٹر کے چھتریہ گھرانے شامل کر لئے گئے، کیونکہ اتری

†—Vaidya—History of Mediaeval Hindu India, Vol. III PP. 383–384.

‡—Vaidya, Vol. III PP. 383–384, 385.

राजपूतों का दौर

डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त

हर्षवर्धन की मौत के बाद के ज़माने से मुहम्मद बिन ग़ोरी के सन 1192 ई० के हमले तक, राजपूतों का दौर हिन्दुस्तान के सामाजिक इतिहास का एक दिलचस्प अध्याय है. पालों, गुर्जर-प्रतिहारों और राष्ट्रकूटों की शक्ति के कमज़ोर होने के बाद हमें बहुत से ऐसे क़बीले मिलते हैं, जो अपने को क्षत्रिय कहते थे. ये सारे उत्तरी हिन्दुस्तान में छोटे छोटे राज क़ायम कर रहे थे. ये क़बीले नस्ली झगड़ों और नस्ली सम्बन्धों के रिवाज को मानते थे. सम्मान, पद और उपाधियों को इनमें ख़ास गुन माना जाता था, फिर—जन्म और जाति के गर्व की भावना भी उनके अन्दर बहुत मज़बूत थी. एक तानाशाह शासक क़बीले का राजा होता था और हर एक सिपाही लुटेरों की तरह का होता था और हर एक क़बीले के ख़ान्दानी भांट-घराने हुआ करते थे, जो उनकी वीरता के गीत गाया करते. थोड़े में प्राचीन क़बीलों का ज़माना वापस आ गया था. आगे चलकर राजपूत अपने साथ निखरा हुआ सामन्तवाद भी ले आये.* उनकी सामन्तवादी राजनीति और उनके लगातार क़बाइली झगड़ों ने उनका एक हो जाना और एक क़ौम बन जाना नामुमकिन कर दिया. इसलिये मुसलमानों के हमले के साथ-साथ एक एक करके राजपूत रियासतों का ख़ात्मा हो गया. उनके ख़ात्मे के साथ ही उत्तरी हिन्दुस्तान के हिन्दुओं की आज़ादी भी चली गई.

प्राचीन भारतीय साहित्य (अदब) में राजपूत नाम नहीं मिलता. हमने देखा है कि वैदिक काल में "राजन्य' लफ़्ज़ का प्रयोग होता था. बाद में वर्ण बनाने के लिये क्षत्रिय शब्द का इस्तेमाल होने लगा था. लेकिन इसी समय से हम राजपूतों का नाम सुनने लगते हैं. "राजपूत" संस्कृत के "राजपुत्र"—राजा का लड़का—लफ़्ज़ का बोला जाने वाला रूप है. इसलिये इसका भी अर्थ वही है जो वैदिक शब्द "राजन्य" का है. लेकिन यह और "क्षत्रिय" के लिये बोला जाने वाला "क्षत्री" शब्द एक नहीं हैं. एक राजपूत क्षत्री अथवा "क्षत्रिय" तो है, लेकिन साथ ही वह कुछ और भी है. वह बिल्कुल साफ़ और दूसरों से अलग एक समाज का सदस्य भी है. वह चन्द्रराजरासौ में वर्णित 36 कुलों का है. इसका मतलब यह हुआ कि इस पुस्तक में जिन 36 कुलों को गिनाया गया है वही सच्चे राजपूत हैं और उन्हीं में आपस में शादी-ब्याह हो सकता है. इन कुलों के बाहर भी बहुत

راجپوتوں کا دور

ڈاکٹر بھوپیندر ناتھ دت

ھرش وردھن کی موت کے بعد کے زمانے سے محمد بن غوری کے سن 1192 عیسوی کے حملے تک، راجپوتوں کا دور ھندستان کے سماجک اِتہاس کا ایک دلچسپ ادھیائے ھے. پالوں، گوجرپرتی‌هاروں اور راشٹرکوٹوں کی شکتی کے کمزور ھونے کے بعد ھمیں بہت سے ایسے قبیلے ملتے ھیں، جو اپنے کو چھتریہ کہتے تھے. یہ سارے اُتری ھندستان میں چھوٹے چھوٹے راج قایم کررھے تھے. یہ قبیلے نسلی جھگڑوں اور نسلی سمبندھوں کے رواج کو مانتے تھے. سمان، پد اور اُپادھیوں کو ان میں خاص گن مانا جاتا تھا، پھر—جنم اور جاتی کے گرو کی بھاونا بھی اُن کے اندر بہت مضبوط تھی. ایک تانا شاہ شاسک قبیلے کا راجہ ھوتا تھا اور ھر ایک سپاھی لٹیروں کی طرح کا ھوتا تھا اور ھر ایک قبیلے کے خاندانی بھانٹ - گھرانے ھوا کرتے تھے، جو اُن کی ویرتا کے گیت گایا کرتے. تھوڑے میں پراچین قبیلوں کا زمانہ واپس آگیا تھا. آگے چل‌کر راجپوت اپنے ساتھ نکھرا ھوا سامنت‌واد بھی لے آئے.* اُن کی سامنت‌وادی راج‌نیتی اور ان کے لگاتار قبایلی جھگڑوں نے ان کا ایک ھوجانا اور ایک قوم بن جانا ناممکن کردیا. اس لئے مسلمانوں کے حملے کے ساتھ ساتھ ایک ایک کرکے راجپوت ریاستوں کا خاتمہ ھوگیا. اُن کے خاتمے کے ساتھ ھی اُتری ھندستان کے ھندوؤں کی آزادی بھی چلی گئی.

پراچین بھارتیہ ساھتیہ (ادب) میں راجپوت نام نہیں ملتا. ھم نے دیکھا ھے کہ ویدک کال میں "راجنیہ" لفظ کا پریوگ ھوتا تھا. بعد میں ورن بنانے کے لئے چھتریہ شبد کا استعمال ھونے لگا تھا. لیکن اِسی سمے سے ھم راجپوتوں کا نام سننے لگتے ھیں. "راجپوت" سنسکرت کے "راج پتر"—راجہ کا لڑکا—لفظ کا بولا جانے والا روپ ھے. اس لئے اِس کا بھی ارتھ وھی ھے جو ویدک شبد "راجنیہ" کا ھے. لیکن یہ اور "چھتریہ" کے لئے بولا جانے والا "چھتریہ" شبد ایک نہیں ھے. ایک راجپوت چھتری اتھوا "چھتریہ" تو ھے، لیکن ساتھ ھی وہ کچھ اور بھی ھے. وہ بالکل صاف اور دوسروں سے الگ ایک سماج کا سدسیہ بھی ھے. وہ چندراج‌راسو میں ورنت 36 کلوں کا ھے. اس کا مطلب یہ ھوا کہ اِس پستک میں جن 36 کلوں کو گنایا گیا ھے وھی سچے راجپوت ھیں اور انھیں میں آپس میں شادی بیاہ ھوسکتا ھے. ان کلوں کے باھر بھی بہت

*—P. N. Banerjee-'Public Administration in Ancient India,' P. 52

मई 1955 مئی

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द 19 جلد — नम्बर 5 نمبر

मई 1955 مئی

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی
145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद — 145، مٹھی گنج، الہ آباد

نیا ہند

इस नम्बर के ख़ास लेख | **اِس نمبر کے خاص لیکھ**

इसके अलावा | اسکے علاوہ

कहानी, स्केच, समालोचना, हमारी राय आदि

کہانی، اسکیچ، سمالوچنا، ہماری رائے آدی

...नी कल्चर सोसाइटी, इलाहाबाद | ...کلچر سوسائٹی الہ آباد

हिन्दी घर

कलचर पर हर तरह की किताबें मिलने का एक बड़ा केन्द्र—पाठक हिन्दी, उर्दू, अंग्रेज़ी की अपनी मन-पसन्द किताबों के लिये हमें लिखें।

हमारी नई किताबें

महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी और उर्दू में)
लेखक—गान्धीवाद के माने जाने
विद्वान, श्री मंज़र अली सोख़्ता
सफ़े 225, क़ीमत दो रुपया

—:o:—

गान्धी बाबा

(बच्चों के लिये बहुत दिलचस्प किताब)
लेखिका—क़ुदसिया ज़ैदी
भूमिका—पण्डित जवाहरलाल नेहरू
मोटा काग़ज़, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें.
दाम दो रुपया

—:o:—

पण्डित सुन्दरलाल जी की लिखी किताब

गीता और क़ुरान

275 सफ़े, दाम ढाई रुपया

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सफ़े, दाम बारह आने

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक़

क़ीमत बारह आने

पंजाब हमें क्या सिखाता है

क़ीमत चार आने

बंगाल और उससे सबक़

क़ीमत दो आने

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुट्ठीगंज इलाहाबाद

ہندی گھر

کلچر پر ہر طرح کی کتابیں ملنے کا ایک بڑا کیندر—پاٹھک ہندی، اردو، انگریزی کی من پسند کتابوں کے لئے ہمیں لکھیں۔

ہماری نئی کتابیں

مہاتما گاندھی کی وصیت

(ہندی اور اردو میں)
لیکھک—گاندھی واد کے مانے جانے
ودوان: شری منظر علی سوختہ
صفحے 225 قیمت دو روپیہ

—:o:—

گاندھی بابا

(بچوں کے لئے بہت دلچسپ کتاب)
لیکھکا—قدسیہ زیدی
بھومکا—پنڈت جواہر لال نہرو
موٹا کاغذ، موٹا ٹائپ، بہت سی رنگین تصویریں
دام دو روپیہ

—:o:—

پنڈت سندر لال جی کی لکھی کتاب

گیتا اور قرآن

275 صفحے، دام ڈھائی روپیہ

ہندو مسلم ایکتا

100 صفحے دام بارہ آنے

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

قیمت بارہ آنے

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

قیمت چار آنے

بنگال اور اس سے سبق

قیمت دو آنے

ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 مٹھی گنج الہ آباد

Printed and Published by Suresh Ramabhai at the Naya Hind Press 145 Muthiganj, Allahabad.

हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें — ھمارے یہاں ملنےوالی کچھ اور کتابیں

नोटः—यह किताबें सिर्फ हिन्दी में हैं. — نوٹ :—یہ کتابیں صرف هندی میں هیں ۔

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1 शेर-ओ-शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئلیہ	1. شعر و شاعری
2. शेर-ओ-सुखन	,,	8	0	0	,,	2. شعر و سخن
3. गहरे पानी पैठ	,,	2	8	0	,,	3. گہرے پانی پیٹھ
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	4. همارے آرادھیہ
5 संस्मरण	,,	3	0	0	,,	5 سنسمرن
6. दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	6. دو هزار ورش پرانی کہانیاں
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	7. گیان گنگا
8. पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	8. پتھ چنہ
9 पंच प्रदीप	शान्ति एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم . اے	9. پنچ پردیپ
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنھیالال مشر پربھاکر	10. آکاش کے تارے دھرتی کے پھول
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम ए.		0	0	شری ویریندر کمار جین ایم . اے	11. مکتی دوت
12 मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	12. ملن یامنی
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	13. رجت رشمی
14 मेरे बापू	श्री तन्मय बुखारिया	2	8	0	شری تنمے بخاریا	14. میرے باپو
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال' بھگوان داس کیلا	15. وشو سنگھ کی اور
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला		0	0	شری بھگوان داس کیلا'	16. بھارتیہ ارتھ شاستر
17. भारतीय शासन	,,	3	0	0	,,	17. بھارتیہ شاسن
18. नागरिक शास्त्र	,,	2	4	0	,,	18. ناگرک شاستر
19. साम्राज्य और उनका पतन	,,	2	8	0	,,	19. سامراج اور اُن کا پتن
20. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन	,,	1	4	0	,,	20. بھارتیہ سوادھینتا آندولن
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	,,	1	6	0	,,	21. سروودے ارتھ ویوستھا
22 हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل وِنے	22. هماری آدم جاتیاں
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी. श्री गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, श्री भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم . اے. ایل ایل ۰ بی ۰ گجادھر پرساد' امبشٹ' بھگوان داس کیلا	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	श्री भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	24. ناگرک شکشا
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	25. راشٹر منڈل شاسن
26 जवानो	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	26. جوانو
27. मरने की हिम्मत !	,,	1	0	0	,,	27. مارنے کی همت !
28. सलोना सच	,	0	8	0	,,	28. سلونا سچ
29. मेरे साथी	,,	1	0	0	,,	29. میرے ساتھی

मिलने का पता— — ملنے کا پتہ—

मैनेजर 'नया हिन्द' — مینیجر 'نیا هند'

145, मुट्ठीगंज, इलाहाबाद-3. — 145، مٹھی گنج، الہ آباد-3

अपनी भूल की सज़ा कभी कभी खुद ही दे लेता है. शीर्षासन में सिर नीचे होता है और पांव ऊपर.

'सर्वोदयवादी' जब यह कहता है कि वह राजा और रंक दोनों का उदय चाहता है, तब वह यही बताता है कि उसका राजा, रंक में से ही एक हुआ करता है, फिर 'सर्वोदय समाज' वर्गहीन हुआ या नहीं ?

'सर्वोदयवादी' उस वक्त वर्ग सहित भी है जब वह राजा का जलूस निकालता है और रंक के कंधों पर उसके सिंहासन का भार रखता है. पर वह क्या करे ? प्रकृति ने आदमी का सिर, आदमी के कन्धों पर बनाया है.

रही शासन की बात. तो वह शासन, शासन नहीं, जो शासितों को अखरता न हो. सिर का शासन किसी अंग को नहीं अखरता. आदमी जब सिर से कोई भूल कर बैठता है तो अपने हाथों से अपना सिर पीट लेता है.

सर्वोदय वादियों का आध्यात्मिक शासन ऐसा ही होगा. वह किसी को अखरेगा नहीं.

'कुमारी जी' ने भगवान को लेकर अनोखी बातें कह डाली हैं. बेचारा भगवान आजकल सभी का शिकार बना हुआ है. भगवान को समझदारों का शिकार बनने की जरूरत नहीं. भगवान के हजारों नाम पहिले से ही हैं. बीसवीं सदी ने उसी भगवान को कुछ और नाम दिये हैं. बीसवीं सदी कहती है, गर्मी ईश्वर है, गति ईश्वर है, आकार ईश्वर है, शून्य तो बहुत पहिले से ही ईश्वर है. बीसवीं सदी के विचारक कहते हैं, ईमानदारी ईश्वर है. सर्वोदयवादियों के गुरु जी का कहना है, सत्य ही 'ईश्वर' है. अब अगर भगवान की जगह 'सत्य' लिख दिया जाये तो 'कुमारी जी' को कोई शिकायत नहीं रहनी चाहिये.

मार कर खा जाते हैं

शङ्का :—लाल बुझक्कड़, राज-पुरोहित, राजगद्दी, यह सब 'कुमारी जी' की अपनी सूझ है. हम इन्हें ठीक माने लेते हैं.

समाधान :—राजगद्दी का दिया जाना कोई बड़ी बात नहीं और सरकार के दृष्टिकोण से बहुत अच्छी चीज़ और जरूरी चीज है. पर यह गद्दी विनोबा जी ने स्वीकार कब की ? कर भी लेते तो बुरा क्या था ? गिरी जी अब तक 'लेबर' की गद्दी सम्भाले हुए थे. जब देखा कि वे 'लेबर' का भला नहीं कर सकते तब गद्दी छोड़ दी. उनके साथी अब तक गद्दी से चिपके हुए हैं. जो चिपके हुए हैं वे बुरा कर रहे हैं. अहिंसावादी और सर्वोदयवादी उसूल ही यह है कि हर एक से मदद ले लेना अगर वह उसके उसूलों के अनुसार मदद दें. कम्युनिस्ट बेरिया से मदद लेते रहे. उसे गद्दी भी दे रखी थी. पर जब उसूलों से गिरा तब गद्दी छीन ली गई और वहां भेज दिया गया जहां से लौट कर आना नहीं होता. —म. भगवानदीन

اپنی بھول کی سزا کبھی کبھی خود ہی دے لیتا ہے . شیرشاسن میں سر نیچے ہوتا ہے اور پاؤں اوپر .

' سرووده وادی ' جب یہ کہتا ہے کہ وہ راجا اور رنک دونوں کا اودے چاہتا ہے' تب وہ یہی بتاتا ہے کہ اس کا راجا' رنک میں سے ہی ایک ہوا کرتا ہے' پھر 'سرووده سماج' ورگ ہین ہوا یا نہیں ؟

'سرودئے وادی' اس وقت ورگ سہت بھی ہے جب وہ راجا کا جلوس نکالتا ہے اور رنک کے کندھوں پر اس کے سنگھاسن کا بھار رکھتا ہے . پر وہ کیا کرے ؟ پرکرتی نے آدمی کا سر' آدمی کے کندھوں پر بنایا ہے .

رہی شاسن کی بات . تو وہ شاسن' شاسن نہیں' جو شاسکوں کو اکھرتا نہ ہو. سر کا شاسن کسی انگ کو نہیں اکھرتا. آدمی جب سر سے کوئی بھول کر بیٹھتا ہے تو اپنے ہاتھوں سے اپنا سر پیٹ لیتا ہے .

سرودئے وادیوں کا آدھیاتمک شاسن ایسا ہی ہوگا . وہ کسی کو اکھریگا نہیں .

'کماری جی' نے بھگوان کو لیکر انوکھی باتیں کہ ڈالی ہیں . بیچارہ بھگوان آجکل سبھی کا شکار بنا ہوا ہے . بھگوان کو سمجھداروں کا شکار بننے کی ضرورت نہیں . بھگوان کے ہزاروں نام پہلے سے ہی ہیں . بیسویں صدی نے اسی بھگوان کو کچھ اور نام دئے ہیں . بیسویں صدی کہتی ہے' گرمی ایشور ہے' گتی ایشور ہے' آکار ایشور ہے' شونیہ تو بہت پہلے سے ہی ایشور ہے . بیسویں صدی کے وچارک کہتے ہیں' ایمانداری ایشور ہے . سرودئے وادیوں کے گروجی کا کہنا ہے' ستیہ ہی 'ایشور' ہے . اب اگر بھگوان کی جگہ 'ستیہ' لکھ دیا جائے تو 'کماری جی' کو کوئی شکایت نہیں رہنی چاہئے .

مارکر کھا جاتے ہیں

شنکا :—'لال بجھکڑ' راج پروہت' راج گدی' یہ سب 'کماری جی' کی اپنی سوجھ ہے . ہم انہیں ٹھیک مانے لیتے ہیں .

سمادھان :—راج گدی کا دیا جانا کوئی بڑی بات نہیں اور سرکار کے درشٹی کونڑ سے بہت اچھی چیز اور ضروری چیز ہے. پر یہ گدی ونوباجی نے سویکار کب کی کر بھی لیتے تو برا کیا تھا ؟ گری جی اب تک 'لیبر' کی گدی سنبھالے ہوئے تھے . جب دیکھا کہ وے 'لیبر' کا بھلا نہیں کرسکتے تب گدی چھوڑ دی . ان کے ساتھی اب تک گدی سے چپکے ہوئے ہیں . جو چپکے ہوئے ہیں وے برا کر رہے ہیں . اہنساوادی اور سرودئے وادی اصول ہی یہ ہے کہ ہر ایک سے مدد لے لینا اگر وہ ان کے اصولوں کے انوسار مدد دیں . کمیونسٹ بیریا سے مدد لیتے رہے . اسے گدی بھی دے رکھی تھی . پر جب اصولوں سے گرا تب گدی چھین لی گئی اور وہاں بھیج دیا گیا جہاں سے لوٹ کر آنا نہیں ہوتا .

—ایم . بھگوان دین

लिये कमरबस्ता है. अगर फ़ारमोसा से अमरीका अपनी फ़ौजें हटा ले तो सब संकट आज ही दूर हो सकते हैं.

पंडित नेहरू कोरिया और इन्डो-चाइना में विराम संधि क़ायम करने का यश कमा चुके हैं. आशा है कि इस मामले में वे बहुत सोच समझ कर क़दम उठायेंगे और कोई बात ऐसी न होने देंगे जिससे फ़ारमोसा पर अमरीकी सेनाओं का क़ब्ज़ा क़ुबूल कर लिया जाये.—डाक्टर जगदीश चन्द्र जैन

'सर्वोदय, भूदान और हृदय परिवर्तन'

सितम्बर के 'नया हिन्द' मे 'कुमारी सरोज अग्रवाल' के नाम से एक लेख था जिसका शीर्षक यही था जो ऊपर दिया हुआ है. इस लेख का .ख़ुलासा देते हुए संगम के एडीटर ने अपनी तरफ़ से कुछ शब्द जोड़े हैं. 'नया हिन्द' का हम से सम्बन्ध है, इसलिये इस सिलसिले में हमें कुछ लिखना पड़ रहा है.

'कुमारी जी' का कहना है, 'सर्वोदय दर्शन वाले सबका उदय चाहते हैं. सब में 'राजा' 'रंक' दोनों शामिल हैं. उन्हीं का यह कहना है कि 'सर्वोदय' वाले कहते हैं, कि उनके समाज में न कोई वर्ग होगा न शासन, ये पूर्वापरविरोध कैसा ?

पूर्वापरविरोध को तक शास्त्र ने 'दूषण' माना है. पर गांधी जी उसे भूषण मानते थे. गांधी जी की तरह हम भी इसे 'भूषण' मानते हैं.

इन दो बातों में (1) हम राजा और रंक सब का उदय चाहते हैं, (2) हमारे समाज मे न वर्ग होगा न शासन, हमें कोई ऐसी बात नहीं मालूम होती, जो एक दूसरे से बेमेल हो.

'कुमारी जी' का लेख कहता है कि उनका झुकाव 'कम्युनिज़्म' की तरफ़ है. 'सर्वोदय' की तरह 'कम्युनिज़्म' भी यही कहता है कि न उसमे वर्ग होगे न शासन. पर क्या 'रूस' और 'चीन' का राज्य 'वर्ग' और 'शासन' नहीं है ?

इस प्रतिशंका का जवाब 'समाजवादी' यानी 'कम्युनिस्ट इस प्रकार देता है कि यह उनका 'आदर्श' है. वह अभी बीच की अवस्था में से गुज़र रहे हैं, इसलिये वहां वर्ग और शासन हैं. कम्युनिस्ट यही जवाब 'विनोबा जी' की तरफ़ से क्यों नहीं सोच लेता कि 'सर्वोदय' भी अभी बीच की अवस्था से गुज़र रहा है. बीच की क्या वह शुरू की अवस्था से गुज़र रहा है. फिर उसमें यह कमी रहना ही चाहिये.

राजा, रंक, राजकाजी देह के दो अंग हैं. सिर पैर आदमी की देह के दो अंग हैं. जैसे सिर पैर में वर्ग की कल्पना थोथी है, वैसे ही राजा और रंक की कल्पना थोथी है.

सिर अगर पैर की ओर से बेपरवाही करता है और पैर को कुछ हो जाता है, तो सिर को भी तकलीफ़ उठानी पड़ती है. राजा भी रंक की तरफ़ से बेपरवाह होकर तकलीफ़ से नहीं बच सकता. समय समय पर राजा अपने किये का दन्ड भोगते रहे हैं. ठोकर पांव खाता है, फूटता है सिर. सिर

لئے کمربستہ ہے . اگر فارموسا سے امریکہ اپنی فوجیں ہٹالے تو سب سنکٹ آج ہی دور ہو سکتے ہیں .

پنڈت نہرو کوریا اور انڈو - چائنا میں ورام سندھی قائم کرنے کا یش کما چکے ہیں. آشا ہے کہ اِس معاملے میں وے بہت سوچ سمجھکر قدم اُٹھائیں گے اور کوئی بات ایسی نہ ہونے دیں گے جس سے فارموسا پر امریکی سیناؤں کا قبضہ قبول کر لیا جائے . —ڈاکٹر جگدیش چندر جین

'سروودے' بھودان اور ہردے پریورتن'

ستمبر کے 'نیا ہند' میں 'کماری سروج اگروال' کے نام سے ایک لیکھ تھا جس کا شیرشک بھی تھا جو اوپر دیا ہوا ہے . اِس لیکھ کا خلاصہ دیتے ہوئے سنگم کے ایڈیٹر نے اپنی طرف سے کچھ شبد جوڑے ہیں . 'نیا ہند' کا ہم سے سمبندھ ہے' اِس لئے اِس سلسلے میں ہمیں کچھ لکھنا پڑ رہا ہے .

'کماری جی' کا کہنا ہے' 'سروودے درشن والے سب کا اُدے چاہتے ہیں . سب میں 'راجا' 'رنک' دونوں شامل ہیں . اُنھیں کا یہ کہنا ہے کہ 'سروودے' والے کہتے ہیں' کہ اُن کے سماج میں نہ کوئی ورگ ہوگا نہ شاسن' یہ پوروا پر ورودھ کیسا ؟

پوروا پرورودھ کو ترک شاستر نے 'دوشن' مانا ہے . پر گاندھی جی اُسے بھوشن مانتے تھے . گاندھی جی کی طرح ہم بھی اِسے 'بھوشن' مانتے ہیں .

اِن دو باتوں میں (1) 'ہم راجا اور رنک سب کا اُدے چاہتے ہیں' (2) 'ہمارے سماج میں نہ ورگ ہوگا نہ شاسن' ہمیں کوئی ایسی بات نہیں معلوم ہوتی جو ایک دوسرے سے بے میل ہو .

'کماری جی' کا لیکھ کہتا ہے کہ اُن کا جھکاؤ 'کمیونزم' کی طرف ہے 'سروودے' کی طرح 'کمیونزم' بھی یہی کہتا ہے کہ نہ اُس میں ورگ ہونگے نہ شاسن پر کیا 'روس' اور 'چین' کا راجیہ 'ورگ' اور شاسن نہیں ہے ؟

اِس پرتی شنکا کا جواب 'سماج وادی' یعنی 'کمیونسٹ' اِس پرکار دیتا ہے کہ یہ اُن کا 'آدرش' ہے . وہ ابھی بیچ کی اوستھا میں سے گذر رہے ہیں' اِس لئے وہاں ورگ اور شاسن ہیں . کمیونسٹ یہی جواب 'ونوباجی' کی طرف سے کیوں نہیں سوچ لیتا کہ 'سروودے' بھی ابھی بیچ کی اوستھا سے گذر رہا ہے . بیچ کی کیا وہ شروع کی اوستھا گذر رہا ہے. پھر اس میں یہ کمی رہنا ہی چاہئے .

راجا' رنک' راجکاجی دیہہ کے دوانگ ہیں . سر پیر آدمی کے دیہہ کے دوانگ ہیں . جیسے سر' پیر میں ورگ کی کلپنا تھوتھی ہے' ویسے ہی راجا اور رنک کی کلپنا تھوتھی ہے .

سر اگر پیر کی اور سے بے پروائی کرتا ہے اور پیر کو کچھ ہو جاتا ہے' تو سر کو بھی تکلیف اُٹھانی پڑتی ہے . راجا بھی رنک کی طرف سے بےپرواہ ہو کر تکلیف سے نہیں بچ سکتا . سمئے سمئے پر راجا اپنے کئے کا دنڈ بھوگتے رہے ہیں . ٹھوکر پاؤں کھاتا ہے' پھوٹتا ہے سر . سر

को चीन से अलग मानने का ऐलान कर दिया है. ब्रिटिश विदेश मंत्री ईडेन ने पार्लिमेन्ट में कह दिया कि इस सदी में फ़ारमूसा पर चीन का अधिकार कभी नहीं रहा. प्रधान-मंत्री चर्चिल ने भी ऐलान किया है कि इन टापुओं पर चीन का असर कभी नहीं माना गया. यह भी समाचार प्रकाशित हुआ है कि ब्रिटेन चीन से आग्रह कर रहा है कि अगर वह सुरक्षा परिषद् की दावत क़बूल कर ले और युद्ध बन्द कर दे तो अमरीका से कह सुनकर वह उसे क्वेमाय और मात्सु आदि तटवर्ती द्वीपों को दिलाने की कोशिश करेगा. इस प्रकार ब्रिटेन अपने सभी दाव-पेंच खेल रहा है.

अन्दरूनी मामले में दख़ल

चीन का कहना है कि अमरीकी सैनिकों की छत्र छाया में जो आये दिन कुमिंग-तांग की फ़ौज चीन की मुख्य भूमि पर हमले करती रहती है, तथा फ़ारमूसा में अपनी सेनाओं को तैनात करके अमरीका जो चीन के आन्तरिक मामलों में दख़ल दे रहा है उसके बारे में यू. एन. ओ. उंगली तक नहीं उठाता, जबकि अपनी भूमि की हिफ़ाज़त के लिये यदि चीनी सेनायें फ़ारमूसा की ओर क़दम रखती हैं तो चीन को हमलावर ऐलान करने की कोशिश की जाती है. 6 हज़ार मील दूर के टापुओं पर चीन का क़ब्ज़ा हो जाने से अगर अमरीका अपनी सुरक्षा ख़तरे में समझता है तो चीन की मुख्य भूमि से कुछ ही मील दूर के टापुओं पर अमरीका का क़ब्ज़ा होना क्या चीन के लिये ख़तरनाक नहीं कहा जायेगा?

अमरीका विषम स्थिति में

दरअसल फ़ारमोसा के सबब ख़ुद अमरीका बड़े संकट में फंस गया है. उसे उम्मीद थी कि उसके मित्र राष्ट्र इस सिलसिले में उसकी मदद करेंगे, लेकिन वह सफल नहीं हुई, और अकेले युद्ध करने के लिये वह किसी हालत में तैयार नहीं. फ़ारमूसा के सम्बन्ध में अमरीका की इस ढुलमुल नीति को देखकर ही शायद फ़ारमूसा की कुमिंगतांग पार्टी के पत्र ने यहां तक लिख दिया है—"हम अमरीकियों पर बहुत ज़्यादा ऐतबार नहीं करना चाहिये."

फ़ारमोसा चीन का अंग

पिछले दिनों जेनेवा में जो कान्फ़रेन्स हुई थी उससे साफ़ हो चुका है कि चीन शान्ति चाहता है, जंग नहीं. अगर वह युद्ध के लिये लालायित होता तो वह किसी भी हालत में अमरीका की फ़ौजों को अपने समुद्री तट के पास नहीं आने देता—चाहे फिर वह कुमिंग तांग सेना को स्थानान्तरित करने के बहाने ही हो, फ़ारमोसा पर चीन का उतना ही हक़ है जितना कि गोआ पर हिन्दुस्तान का. जैसे हिन्दुस्तान की जनता गोआ को आज़ाद करने का फ़ैसला कर चुकी है, उसी प्रकार चीनी जनता फ़ारमोसा को मुक्त करने के

کو چین سے الگ ماننے کا اعلان کر دیا ہے۔ برٹش ودیش منتری ایڈن نے پارلیمینٹ میں کہہ دیا کہ اِس صدی میں فارموسا پر چین کا ادھیکار کبھی نہیں رہا۔ پردھان منتری چرچل نے بھی اعلان کیا ہے کہ اِن ٹاپوؤں پر چین کا اثر کبھی نہیں مانا گیا۔ یہ بھی سماچار پرکاشت ہوا ہے کہ برٹین چین سے آگرہ کر رہا ہے کہ اگر وہ سورکشا پریشد کی دعوت قبول کر لے اور یدھ بند کر دے تو امریکہ سے کہہ سن کر وہ اُسے کوئیموئے اور ماتسو آدی تٹ ورتی دیپوں کو دلانے کی کوشش کرے گا۔ اِس پرکار برٹین اپنے سبھی داؤں پیچ کھیل رہا ہے۔

اندرونی معاملوں میں دخل

چین کا کہنا ہے کہ امریکی سینکوں کی چھتر چھایا میں جو آئے دن کومنگتانگ کی فوجیں چین کی مکھیہ بھومی پر حملے کرتی رہتی ہیں، تتھا فارموسا میں اپنی سیناؤں کو تعینات کر کے امریکہ جو چین کے آنترک معاملوں میں دخل دے رہا ہے اِس کے بارے میں یو۔ این۔ او انگلی تک نہیں اُٹھاتا، جب کہ اپنی بھومی کی حفاظت کے لئے یدی چینی سینائیں فارموسا کی اور قدم رکھتی ہیں تو چین کو حملہ آور اعلان کرنے کی کوشش کی جاتی ہے۔ 6 ہزار میل دور کے ٹاپوؤں پر چین کا قبضہ ہو جانے سے اگر امریکہ اپنی سورکشا خطرے میں سمجھتا ہے تو چین کی مکھیہ بھومی سے کچھ ہی میل دور کے ٹاپوؤں پر امریکہ کا قبضہ ہونا کیا چین کے لئے خطرناک نہیں کہا جائیگا؟

امریکہ وشم استھتی میں

دراصل فارموسا کے سبب خود امریکہ بڑے سنکٹ میں پھنس گیا ہے۔ اُسے امید تھی کہ اُس کے متر راشٹر اِس سلسلے میں اُس کی مدد کریں گے، لیکن وہ سپھل نہیں ہوئیں اور اکیلے یدھ کرنے کے لئے وہ کسی حالت میں تیار نہیں۔ فارموسا کے سمبندھ میں امریکہ کی اِس ڈھل مل نیتی کو دیکھ کر ہی شاید فارموسا کی کومنگتانگ پارٹی کے پتر نے یہاں تک لکھ دیا ہے—"ہمیں امریکیوں پر بہت زیادہ اعتبار نہیں کرنا چاہئے۔"

فارموسا چین کا انگ

پچھلے دنوں جنیوا میں جو کانفرنس ہوئی تھی اُس سے صاف ہو چکا ہے کہ چین شانتی چاہتا ہے، جنگ نہیں۔ اگر وہ یدھ کے لئے لالائت ہوتا تو وہ کسی بھی حالت میں امریکہ کی فوجوں کو اپنے سمدری تٹ کے پاس نہیں آنے دیتا—چاہئے پھر وہ کومنتانگ سینا کو استھانانترت کرنے کے بہانے ہی ہو۔ فارموسا پر چین کا اتنا ہی حق ہے جتنا کہ گوا پر ہندستان کا۔ جیسے ہندستان کی جنتا گوا کو آزاد کرانے کا فیصلہ کر چکی ہے اُسی پرکار چینی جنتا فارموسا کو مکت کرانے کے

संयुक्त राष्ट्र संघ में चीन की 60 करोड़ जनता का प्रतिनिधित्व फ़ारमूसा की मुट्ठी भर सरकार कर रही है !

मित्र राष्ट्रों से आशा

अमरीका को यह भी उम्मीद थी कि ज़रूरत पड़ने पर ब्रिटेन, फ्रान्स आदि मित्र राष्ट्र फ़ारमूसा की रक्षा में उसकी मदद करेंगे, लेकिन चीनी तट के नज़दीकी टापुओं की ओर चीन को बढ़ता देख जब चांग ने अमरीका से ख़ास मदद की अपील की तो ब्रिटेन आदि अमरीका के दोस्त मुल्कों ने साफ़ इन्कार कर दिया कि कोरिया की भांति अब वे अपनी सेनाओं को युद्ध में कटने के लिये नहीं भेजेंगे. अभी हाल में अमरीका के ज्वाइन्ट चीफ़ स्टाफ़ के सदर एडमिरल आर्थर रेडफ़ोर्ड तथा अमरीका के दूर पूर्व के कमान्डर जनरल जान हल को ब्रिटेन ने कह दिया है कि फ़ारमूसा में लड़ाई छिड़ जाने पर सातवें बेड़े को युद्ध-सामग्री आदि के लिये हांग-कांग पर निर्भर नहीं रहना चाहिये. हांग-कांग के "मार्निंग पोस्ट" ने लिखा है - "अमरीका की निगाह कम्युनिज़्म पर नहीं बल्कि एशिया पर है", तथा "समुद्री तटों के द्वीपों और फ़ारमूसा पर चीनी हमले का ऐलान करना अमरीका का एक भद्दा प्रोपेगेन्डा है." इन सब बातों से पता चलता है कि ब्रिटेन अमरीका की नीयत पर शुबहा करने लगा है. अभी हाल में चांग-काई-शेक ने जो फ़ारमूसा में 'युद्ध स्थिति' का ऐलान किया है उसकी नुक्ता-चीनी करते हुए हांग-कांग के ब्रिटिश अधिकारियों ने कहा है—"फ़ारमूसा को तटस्थ घोषित करने से पहले अमरीका को चाहिये कि चांग-काई-शेक को तटस्थ घोषित करे." (टाइम्स आफ़ इन्डिया, न्यू सर्विस, हांग-कांग' 5 फ़रवरी 1955 का समाचार).

'सीटो' सम्मेलन

दक्षिण-पूर्वी एशिया को उपनिवेश बनाये रखने के तौर-तरीक़ों के बारे में साम्राजियों में जो मतभेद हो गये हैं उन्हें सुलझाने के लिये 23 फ़रवरी, 1955 को बैंकाक में 'सीटो' सम्मेलन बुलाया गया है. इसी प्रकार 'नीटो' सम्मेलन का भी आयोजन किया जा रहा है जिससे दक्षिण वियतनाम, लाओस, कम्बोडिया, थाईलैन्ड आदि देशों के साथ जापान और दक्षिण कोरिया को भी शामिल करके चीन के ख़िलाफ़ कोई संयुक्त मोरचा तैयार किया जा सके. शायद इसीलिये अमरीका फ़ारमोसा युद्ध सम्बन्धी मामले को टलाता जा रहा है.

ब्रिटेन की दुरंगी चाल

ब्रिटेन हमेशा की तरह अपनी दुरंगी चाल चल रहा है. वह युद्ध में अमरीका का साथ देने से डरता है, लेकिन साथ ही अमरीका को ख़ुश करने के लिये उसने फ़ारमूसा

سنیکت راشٹر سنگھ میں چین کی 60 کروڑ جنتا کا پرتی-ندھتو فارموسا کی مٹھی بھر سرکار کر رہی ہے !

متر راشٹروں سے آشا

امریکہ کو یہ بھی امید تھی کہ ضرورت پڑنے پر برٹین' فرانس آدی متر راشٹر فارموسا کی رکچھا میں اُس کی مدد کریں گے' لیکن چینی تٹ کے نزدیکی ٹاپوؤں کی اور چین کو بڑھتے دیکھ جب چانگ نے امریکہ سے خاص مدد کی اپیل کی تو برٹین آدی امریکہ کے دوست ملکوں نے صاف انکار کر دیا کہ کوریا کی بھانتی اب وے اپنے سینائوں کو یدھ میں کٹنے کے لئے نہیں بھیجیں گے . ابھی حال میں امریکہ کے جوائنٹ چیف اسٹاف کے صدر ایڈمرل آرتھر ریڈ فورڈ تتھا امریکہ کے دور پورو کے کمانڈر جنرل جان ہل کو برٹین نے کہہ دیا ہے کہ فارموسا میں لڑائی چھڑ جانے پر ساتویں بیڑے کو یدھ سامگری آدی کے لئے ہانگ کانگ پر نربھر نہیں رہنا چاہئے . ہانگ کانگ کے "مارننگ پوسٹ" نے لکھا ہے — "امریکہ کی نگاہ کمیونزم پر نہیں بلکہ ایشیا پر ہے" تتھا "سمدری تٹوں کے دیپوں اور فارموسا پر چینی حملے کا اعلان کرنا امریکہ کا ایک بھدا پروپیگنڈا ہے ." اِن سب باتوں سے پتہ چلتا ہے کہ برٹین امریکہ کی نیت پر شبہ کرنے لگا ہے . ابھی حال میں چانگ کائی-شیک نے جو فارموسا میں 'یدھ استھتی' کا اعلان کیا ہے اُس کی نکتہ چینی کرتے ہوئے ہانگ کانگ کے برٹش ادھیکاریوں نے کہا ہے—"فارموسا کو تٹستھ گھوشت کرنے سے پہلے امریکہ کو چاہئے کہ چانگ - کائی - شیک کو تٹستھ گھوشت کرے" (ٹائمس آف انڈیا نیوز سروس' ہانگ کانگ' 5 فروری 1955 کا سماچار) .

'سیٹو' سمیلن

دکھن - پوربی ایشیا کو اپنیویش بنائے رکھنے کے طور طریقوں کے بارے میں سامراجیوں میں جو مت بھید ہو گئے ہیں انہیں سلجھانے کے لئے 23 فروری' 1955 کو بینکاک میں 'سیٹو' سمیلن بلایا گیا ہے اِسی پرکار 'نیٹو' سمیلن کا بھی آیوجن کیا جا رہا ہے جس سے دکھن ویت نام' لاؤس' کمبوڈیا' تھائی لینڈ آدی دیشوں کے ساتھ جاپان اور دکھن کوریا کو بھی شامل کر کے چین کے خلاف کوئی سنیکت مورچہ تیار کیا جا سکے . شاید اِسی لئے امریکہ فارموسا یدھ سمبندھی معاملے کو ٹالتا جا رہا ہے .

برٹین کی دورنگی چال

برٹین ہمیشہ کی طرح اپنی دورنگی چال چل رہا ہے . وہ یدھ میں امریکہ کا ساتھ دینے سے ڈرتا ہے' لیکن ساتھ ہی امریکہ کو خوش کرنے کے لئے اس نے فارموسا

पर जा पहुंचा है और इस तरह चांग की सेनाओं को हटाने में मदद देने के बहाने वह काफी समय तक चीनी समुद्र तट पर चक्कर काट सकता है !

क्वेमोय की रक्षा

अभी हाल में चांग-काई-शेक ने चीन की मुख्य भूमि पर हमला करने की फिर से धमकी देते हुए ताचेन से हटाई हुई सेनाओं को क्वेमोय और मात्सु में लाकर रखने की जो ख़ाहिश ज़ाहिर की है उससे हालत और भी गंभीर हो जाती है. उस हालत में अमरीका की फ़ौजें चीन की मुख्य भूमि से सिर्फ़ पांच मील के फ़ासले पर रह जायेंगी (क्वेमाय द्वीप समूह अमोय प्रान्त से सिर्फ़ पांच मील दूर है). नानची द्वीप समूह की रक्षा के लिये भी चांग ने अमरीका से मांग की है. राष्ट्रपति आइज़न हावर ने इतमीनान दिलाया है कि यदि ताचेन, नानची और मात्सु द्वीप समूहों की नहीं तो कुछ ख़ास हालतों में अमरीका को क्वेमोय की हिफ़ाज़त तो करनी होगी.

विराम-संधि की मांग

ईच्यागशान नामक द्वीप पर चीनियों के अधिकार हो जाने से वाशिंगटन में काफ़ी प्रतिक्रिया हुई जान पड़ती है. डलेस और आइज़न हावर ने अपने बयानों में यू. एन. ओ. के मातहत फ़ारमूसा युद्ध में विराम-संधि की मांग की है. इस सम्बन्ध में न्यूज़ीलैन्ड ने सुरक्षा परिषद में प्रस्ताव रखा है कि चीन और फ़ारमूसा में युद्ध बन्द कराने पर विचार किया जाये और इस विचार विनिमय में भाग लेने के लिये चीन को भी दावत दी जाये. लेकिन सोवियत रूस ने इस प्रस्ताव का विरोध करते हुए कहा है कि चीन ने जो अपनी भूमि पर अमरीकी हमले की शिकायत की है, पहले उसकी सुनवाई की जाय. अपने प्रति-प्रस्ताव में उसने बताया है कि चीनी समुद्र में से चीनी सेनाओं के अतिरिक्त अन्य सब सेनायें हटा ली जायें. चीन के प्रधान-मंत्री चाऊ-एन-लाई ने न्यूज़ीलैन्ड के प्रस्ताव पर विचार-विनिमय के लिये अपना प्रतिनिधि भेजने से इन्कार कर सोवियत रूस के ही प्रस्ताव का समर्थन किया है और वह भी तब जबकि चांग-काई-शेक के प्रतिनिधि को सुरक्षा परिषद में से हटा दिया जाये.

चीन का प्रतिनिधित्व क्यों नहीं ?

दरअसल चीन से चांग-काई-शेक के भाग कर आने पर भी अमरीका समझता रहा कि फ़ारमूसा में बैठे बैठे चांग अमरीकी सहायता से चीन पर फिर से क़ब्ज़ा कर सकेगा. इसी आशा से अमरीका उसे काफ़ी मदद देता रहा और उसने चीन की पीकिंग सरकार को मान्यता नहीं दी. अन्य राष्ट्रों से भी उसने यही अनुरोध किया कि वे चांग की सरकार को ही 'क़ानून द्वारा स्थापित' सरकार मानें. इसीलिए

پر جا پہونچا ھے اور اِس طرح چانگ کی سیناؤں کو ھٹانے میں مدد دینے کے بہانے وہ کافی سمے تک چینی سمدر تٹ پر چکر کاٹ سکتا ھے !

کوئیموے کی رکچھا

ابھی حال میں چانگ-کائی-شیک نے چین کی مکھیہ بھومی پر حملہ کرنے کی پھر سے دھمکی دیتے ھوئے تاچین سے ھٹائی ھوئی سیناؤں کو کوئیموے اور ماتسو میں لا کر رکھنے کی جو خواھش ظاھر کی ھے اُس سے حالت اور بھی گمبھیر ھو جاتی ھے. اُس حالت میں امریکہ کی فوجیں چین کی مکھیہ بھومی سے صرف پانچ میل کے فاصلے پر رہ جائیں گی (کوئیموے دیپ سموہ اموئے پرانت سے صرف پانچ میل دور ھے). نانچی دیپ سموہ کی رکچھا کے لئے بھی چانگ نے امریکہ سے مانگ کی ھے. راشٹرپتی آئزن ھاور نے اطمینان دلایا ھے کہ یدی تاچین، نانچی اور ماتسو دیپ سموھوں کی نہیں تو کچھ خاص حالتوں میں امریکہ کوئیموے کی حفاظت تو کرنی ھوگی.

وِرام سندھی کی مانگ

ایچیانگ شان نامک دیپ پر چینیوں کے ادھیکار ھو جانے سے واشنگٹن میں کافی پرتی کریا ھوئی جان پڑتی ھے. ڈلیس اور آئزن ھاور نے اپنے بیانوں میں یو. این. او. کے ماتحت فارموسا یدھ میں وِرام سندھی کی مانگ کی ھے. اِس سمبندھ میں نیوزی لینڈ نے سورکچھا پریشد میں پرستاؤ رکھا ھے کہ چین اور فارموسا میں یدھ بند کرانے پر وچار کیا جائے اور اس وچار ونمے میں بھاگ لینے کے لئے چین کو بھی دعوت دی جائے. لیکن سوویت روس نے اس پرستاؤ کا ورودھ کرتے ھوئے کہا ھے کہ چین نے جو اپنی بھومی پر امریکی حملے کی شکایت کی ھے، پہلے اُس کی سنوائی کی جائے. اپنے پرتی پرستاؤ میں اس نے بتایا ھے کہ چینی سمدر میں سے چینی سیناؤں کے اتیرکت انیہ سب سینائیں ھٹائی جائیں. چین کے پردھان منتری چاؤ-این-لائی نے نیوزی لینڈ کے پرستاؤ پر وچار ونمے کے لئے اپنا پرتی ندھی بھیجنے سے اِنکار کر سوویت روس کے ھی پرستاؤ کا سمرتھن کیا ھے اور وہ بھی تب جب کہ چانگ-کائی-شیک کے پرتی ندھی کو سورکچھا پریشد میں سے ھٹا دیا جائے.

چین کا پرتی ندھتو کیوں نہیں ؟

دراصل چین سے چانگ کائی-شیک کے بھاگ کر آنے پر بھی امریکہ سمجھتا رھا کہ فارموسا میں بیٹھے بیٹھے چانگ امریکی سہائتا سے چین پر پھر سے قبضہ کر سکے گا. اِسی آشا سے امریکہ اُسے کافی مدد دیتا رھا ھے اور اُس نے چین کی پیکنگ سرکار کو مانیتا نہیں دی. انیہ راشٹروں سے بھی اُس نے یہی انورودھ کیا کہ وہ چانگ کی سرکار کو ھی 'قانون دوارا استھاپت سرکار' مانیں. اِسی لئے

लोगों का चीन में स्वागत किया जायेगा जो उसके साथ तैवान चले गये थे. चीन इस बात को बार-बार कहता आया है कि अमरीका 'एशिया एशिया के खिलाफ़' अपनी युद्ध नीति को अमल में लाने के लिये फ़ारमोसा को अड्डा बनाकर दूर पूरब के देशों पर हमला करके एशिया की शान्ति को खतरे में डालना चाहता है, इसीलिये उसने चीनी समुद्र तट पर अपना सातवां बेड़ा तैनात किया है.1950 से लेकर अब तक वह युद्ध-विमान जलपोत आदि फौजी सहायता के रूप में चांग-काई-शेक को 1 अरब डालर की मदद दे चुका है. इसके सिवाय अमरीकी हवाई जहाजों ने चीन के खिलाफ़ बमबारियां की हैं; फूकिन, क्वांग तुंग और चेकियांग प्रान्तों में कोमिंगतांग सेनाओं ने कई हमले किये हैं. इसी प्रकार अमरीकी जल सेना ने ग़ैर क़ानूनी ढंग से ब्रिटेन, डेनमार्क, नार्वे आदि देशों के जहाजों को पकड़ लिया है.

अन्य द्वीप समूह

फ़ारमोसा (तैवान) और पैसकाडोर्स (पेंगहु) द्वीपों के अलावा चीनी समुद्र तट के पास और भी छोटे-मोटे द्वीप समूह हैं. इनमें ताचेन, नानची, मात्सु और क्वेमाय द्वीप समूहों की मौजूदा जंगी खतरे के नुक़्ते नजर से खास अहमियत है. चीनी समुद्र तट से सटे हुए ये द्वीप समूह 400 मील में फैले हुए हैं. फ़ारमोसा की हिफ़ाज़त के लिये इनका कोई खास महत्व नहीं है लेकिन इन प्रदेशों से चीन की मुख्य भूमि पर बड़ी आसानी से हमला किया जा सकता है.

ताचेन द्वीप समूह

18 जनवरी, 1955 को चीनी सेनाओं ने जिस ईक्यांग शान द्वीप पर क़ब्ज़ा किया है वह ताचेन द्वीप समूहों का ही एक अंग है. ताचेन सात छोटे-छोटे द्वीपों का समूह है जो चेकियांग प्रान्त से 12-15 मील के फ़ासले पर है. यहां कुमिंगतांग की फ़ौजें तैनात हैं और अमरीकी रैडर लगे हुए हैं जिससे कि शंघाई और हैंगचौ की चीनी सेनाओं की गतिविधि का अन्दाज़ा लगाया जा सके. लेकिन ईक्यांग शान, जो ताचेन से सिर्फ़ सात मील की दूरी पर है, की विजय के बाद कुमिंगतांग फ़ौजों का ताचेन पर दख़ल बनाये रखना नामुमकिन हो गया है. इसलिये जैसा कि अभी हाल के समाचारों से मालूम होता है इस द्वीप समूह को अमरीकी बेड़े की संरक्षता में खाली किया जा रहा है. आपसी सुरक्षा संधि के मुताबिक़ देखा जाय तो अमरीका सिर्फ़ फ़ारमूसा और पैसकाडोर्स द्वीपों की रक्षा का ही जिम्मेवार है, लेकिन अब इस तरह वह अपने बेड़े को चीनी समुद्र में उतार कर चीन की मुख्य भूमि के इतने नजदीक पहुंच चीन को चुनौती दे रहा है. अब तक तो वह डालर तथा अस्त्र शस्त्रों से ही चांग की मदद करता आया है लेकिन अब वह खुद अपनी सेनाओं से सज्जित हो, चीनी समुद्र तट

لوگوں کا چین میں سواگت کیا جائیگا جو اُس کے ساتھ تیوان چلے گئے تھے۔ چین اِس بات کو بار بار کہتا آیا ہے کہ امریکہ 'ایشیا ایشیا کے خلاف' اپنی یدھ نیتی کو عمل میں لانے کے لئے فارموسا کو اڈا بناکر دور پورب کے دیشوں پر حملہ کرکے ایشیا کی شانتی کو خطرے میں ڈالنا چاہتا ہے' اسی لئے اس نے چینی سمندر تٹ پر اپنا ساتواں بیڑا تعینات کیا ہے۔ 1950 سے لیکر اب تک وہ یدھ ومان جل پوت آدی فوجی سہائتا کے روپ میں چانگ۔کائی۔شیک کو 1 ارب ڈالر کی مدد دے چکا ہے۔ اِس کے سوائے امریکی ہوائی جہازوں نے چین کے خلاف بمباریاں کی ہیں؛ فوکن' کوانگ چین اور چیکیانگ پرانتوں میں کومنگتانگ سیناؤں نے کئی حملے کئے ہیں۔ اِس پرکار امریکی جل سیناؤں نے غیر قانونی ڈھنگ سے برٹین' ڈنمارک' ناروے آدی دیشوں کے جہازوں کو پکڑ لیا ہے۔

انیہ دیپ سموہ

فارموسا (تیوان) اور پیکاڈورس کومنگتانگ (پینگھو) دیپوں کے علاوہ چینی سمندر تٹ کے پاس اور بھی چھوٹے موٹے دیپ سموہ ہیں۔ اِن میں تاچین' نان‌چی' ماتسو اور کوماے دیپ سموہوں کی موجودہ جنگی خطرے کے نقطۂ نظر سے خاص اہمیت ہے۔ چینی سمندر تٹ سے سٹے ہوئے یہ دیپ سموہ 400 میل میں پھیلے ہوئے ہیں۔ فارموسا کی حفاظت کے لئے اِن کا کوئی خاص مہتو نہیں ہے۔ لیکن اُن پردیشوں سے چین کی مکھیہ بھومی پر بڑی آسانی سے حملہ کیا جاسکتا ہے۔

تاچین دیپ سموہ

18 جنوری سن 1955 کو چینی سیناؤں نے جس ایکیانگ شان دیپ پر قبضہ کیا ہے وہ تاچین دیپ سموہوں کا ہی ایک انگ ہے۔ تاچین سات چھوٹے چھوٹے دیپوں کا سموہ ہے جو چیکیانگ پرانت سے 12-15 میل کے فاصلے پر ہے۔ یہاں کومنتانگ کی فوجیں تعینات ہیں اور امریکی ریڈر لگے ہوئے ہیں جس سے کہ شنگھائی اور ہینگ چو کی چینی سیناؤں کی گتی ودھی کا اندازہ لگایا جا سکے۔ لیکن ایکیانگ شان' جو تاچین سے صرف سات میل کی دوری پر ہے' کی وجئے کے بعد کومنگتانگ فوجوں کا تاچین پر دخل بنائے رکھنا ناممکن ہوگیا ہے۔ اِس لئے جیسا کہ ابھی حال کے سماچاروں سے معلوم ہوتا ہے اِس دیپ سموہ کو امریکی بیڑے کی سنرکچھتا میں خالی کیا جا رہا ہے۔ آپسی سورکچھا سندھی کے مطابق دیکھا جائے تو امریکہ صرف فارموسا اور پیکاڈورس دیپوں کی رکچھا کا ہی ذمہ وار ہے' لیکن اب اِس طرح وہ اپنے بیڑے کو چینی سمندر میں اُتار کر چین کی مکھیہ بھومی کے اتنے نزدیک پہونچ چین کو چنوتی دے رہا ہے۔ اب تک تو وہ ڈالر تتھا استر-شستروں سے ہی چانگ کی مدد کرتا آیا ہے لیکن اب وہ خود اپنی سیناؤں سے سجت ہو چینی سمندر تٹ

मंचूरिया, तैवान और पैसका डोस टापू—उनको चीन को लौटा दिया जायगा. सन 1945 में पोट्सडम-ऐलान पर दस्तखत करते हुए सोवियत संघ ने भी इस समझौते को माना.

चांग फ़ारमोसा में

1949 में चीन को मुक्ति-युद्ध (जंगे निजात) में कामयाबी मिलने के बाद दुनिया का नक्शा ही बदल गया. चांग-काई-शेक को भागकर फ़ारमोसा में शरन लेनी पड़ी. यहां की जनता को वह विश्वास दिलाता रहा कि शीघ्र ही वह चीन की मुख्य भूमि पर फ़तह हासिल कर उसका स्वामी बनेगा.

अमरीका का फ़ारमोसा पर अधिकार

5जनवरी, 1950 को अमरीकी राष्ट्रपति ट्रूमन ने बयान दिया था—"26 जुलाई, 1945 के पोट्सडम ऐलान पर अमरीका ने भी दस्तखत किये थे जिसमे यह ऐलान किया गया था कि क़ाहिरा के ऐलान की शर्तों पर अमल किया जायेगा. इस ऐलान की शर्तों को जापान ने हथियार रखने के समय माना था.......गत चार वर्षों से अमरीका और मित्र राष्ट्र इस द्वीप पर चीन की सत्ता को मंज़ूर करते आये हैं." लेकिन फिर भी 27 जून, 1950 को फ़ारमोसा की रक्षा के बहाने अमरीका ने वहाँ अपना सातवां बेड़ा उतार दिया. मैक आर्थर ने तो साफ़ कह दिया—तैवान एक न डूबनेवाला हवाई जहाज़ों और पनडुब्बियो का अड्डा है, जिसके बल पर अमरीका अपनी जल और हवाई सेनाओं की मदद से व्लाडीवास्टक से लेकर सिंगापुर तक एशिया के हर एक बन्दरगाह पर अपना असर क़ायम कर सकता है." आगे चलकर 1953 के शुरू में अमरीकी राष्ट्रपति आइज़न हावर ने यहां तक कह दिया कि अमरीका चांग-काई-शेक के चीन की मुख्य भूमि पर हमला करने में कोई बाधा न डालेगा. अमरीका मानता है—

ताइवान को संयुक्तराष्ट्र के हवाले कर दिया जाय; या

उसे तटस्थ रखा जाय; या

उसकी आज़ाद हस्ती मंज़ूर कर ली जाये.

साफ़ है कि अमरीका अब फ़ारमोसा पर चीन की सत्ता मंज़ूर नहीं करना चाहता जिसको वह अब तक मानता आया है. दर असल फ़ारमोसा का सवाल चीन का निजी सवाल है, उसमें राष्ट्र संघ या किसी दूसरे मुल्क को दखल देने का क्या हक़ है ?

फ़ारमोसा की आज़ादी का ऐलान

22 अगस्त, 1954 को चीन के सभी राजनीतिक दलों, जन-संगठनों और जनता की सलाहकार समिति ने फ़ारमोसा को आज़ाद करने का ऐलान किया है. इस ऐलान में कहा गया है कि 'सिर्फ एक चांग-काई-शेक को छोड़कर' उन सभी

منچوریا، تیوان اور پیکا ڈورس ٹاپو—ان کو چین کو لوٹا دیا جائیگا. سن 1945 میں پوٹسڈم - اعلان پر دستخط کرتے ہوئے سوویت سنگھ نے بھی اِس سمجھوتے کو مانا .

چانگ فارموسا میں

سن 1949 میں چین کو مکتی یدھ (جنگ نجات) میں کامیابی ملنے کے بعد دنیا کا نقشہ ہی بدل گیا . چانگ - کائی - شیک کو بھاگ کر فارموسا میں شرن لینی پڑی. یہاں کی جنتا کو وہ وشواس دلاتا رہا کہ شیگھر ہی وہ چین کی مکھیہ بھومی پر فتح حاصل کر اُس کا سوامی بنے گا .

امریکہ کا فارموسا پر ادھیکار

5 جنوری، 1950 کو امریکی راشٹرپتی ٹرومن نے بیان دیا تھا—"26 جولائی 1945 کی پوٹسڈم اعلان پر امریکہ نے بھی دستخط کئے تھے جس میں یہ اعلان کیا گیا تھا کہ قاہرہ کے اعلان کی شرطوں پر عمل کیا جائیگا . اِس اعلان کی شرطوں کو جاپان نے ہتھیار رکھنے کے سمے مانا تھا. گت چار ورشوں سے امریکہ اور مِتر راشٹر اس دیپ پر چین کی ستہ کو منظور کرتے آئے ہیں ." لیکن پھر بھی 27 جون، 1950 کو فارموسا کی رکشا کے بہانے امریکہ نے وہاں اپنا ساتواں بیڑا اُتار دیا . میک آرتھر نے صاف کہہ دیا—تیوان ایک نہ ڈوبنے والا ہوائی جہازوں اور پنڈبیوں کا اڈا ہے، جس کے بل پر امریکہ اپنی جل اور ہوائی سیناؤں کی مدد سے ولادی واسٹک سے لیکر سنگاپور تک ایشیا کے ہر ایک بندرگاہ پر اپنا اثر قائم کرسکتا ہے." آگے چل کر 1953 کے شروع میں امریکی راشٹرپتی آئزن ہاور نے یہاں تک کہہ دیا کہ امریکہ چانگ - کائی - شیک کے چین کی مکھیہ بھومی پر حملہ کرنے میں کوئی بادھا نہ ڈالے گا . امریکہ مانتا ہے—

تائیوان کو سنیوکت راشٹر کے حوالے کردیا جائے؛ یا،

اُسے تٹستھ رکھا جائے؛ یا،

اُس کی آزاد ہستی منظور کرلی جائے .

صاف ہے کہ امریکہ اب فارموسا پر چین کی ستہ منظور نہیں کرنا چاہتا جس کو وہ اب تک مانتا آیا ہے . دراصل فارموسا کا سوال چین کا نجی سوال ہے، اس میں راشٹر سنگھ یا کسی دوسرے ملک کو دخل دینے کا کیا حق ہے ؟

فارموسا کی آزادی کا اعلان

22 اگست 1954 کو چین کے سبھی راجنیتک دلوں، جن سنگٹھنوں اور جنتا کی صلاحکار سمیتی نے فارموسا کو آزاد کرنے کا اعلان کیا ہے . اس اعلان میں کہا گیا ہے کہ صرف ایک چانگ کائی - شیک کو چھوڑ کر، اُن سبھی

और कपूर के तेल की मांग यहां से पूरी होती है. इसके सिवाय, यहां कोयला, तेल, गंधक सोने आदि की खानें हैं. कीलुंग और काओशिंग यहां के बन्दरगाह हैं जो व्यापार के बड़े केन्द्र हैं.

जनसंख्या

फ़ारमोसा की जनसंख्या 80 लाख है. इनमें 90 चीनी हैं जिनके पूर्वज समय समय पर फूकिन और क्वांगतुंग प्रान्तों से यहां आते रहे हैं. बाक़ी 3% काशोआन नामक अल्प-संख्यक जातियों के लोग बसते हैं जो क्वांगतुंग, हैनान, सुमात्रा, बोरनिओ, फ़िलिपाइन्स आदि स्थानों से आकर यहां बस गये थे.

प्राचीन इतिहास

इतिहास से मालूम होता है कि ईसवी सन की तीसरी सदी में चीन के लोग फ़ारमोसा पहुंच चुके थे. थांग काल (सन 618-705) का मशहूर विद्वान् शिह् धीयेन वू अपने समस्त परिवार के साथ यहां आकर रहने लगा था. इस विद्वान् ने अपने काव्य में फ़ारमोसा का सुन्दर वर्नन किया है.

सत्रहवीं सदी के शुरू में योरप वालों की निगाह इस द्वीप पर पड़ी. सन 1626 में स्पेन की सेनाओं ने उत्तर पूर्वी फ़ारमोसा पर क़ब्ज़ा कर लिया और 16 वर्ष तक उनका राज्य क़ायम रहा. इस समय से फ़ारमोसा तैवान के नाम से पुकारा जाने लगा. इन्हीं दिनों फूकिन का निवासी छेंग-चीह-लुंग अपने 3,000 सगे संबंधियों को लेकर यहां रहने लगा. आगे चलकर जब मंचु राजाओं ने चीन पर हमला किया तो उसके पुत्र ने बड़ी वीरता से शत्रु सेनाओं का समाना किया.

जापानी हमला

सन 1874 में फ़ारमोसा पर जापानी सेना का हमला हुआ. उसके बाद सन 1894 में जब जापान ने चीन पर धावा किया तो चीन के युद्ध में हार जाने के कारन फ़ारमोसा जापानियों के हाथ में पहुंच गया. धीरे-धीरे इस द्वीप पर जापानियों का असर बढ़ता गया और सन 1895 से 1945 के बीच जापानियों की तादाद यहां 3,20,000 तक पहुंच गई! पचास वर्ष के इस लम्बे दौर में फ़ारमोसा की जनता ने जापानी हाकिमों के ख़िलाफ़ कई बग़ावतें कीं लेकिन सब को कुचल दिया गया.

दूसरे युद्ध के बाद

दूसरे युद्ध के बाद अन्तर्राष्ट्रीय हालतें बदल गईं. 3 सितम्बर, 1943 को जापान के आत्म समर्पण के बाद 1 दिसम्बर 1946 के काहिरा के ऐलान में-जिस पर चीन, अमरीका और ब्रिटेन ने दस्तख़त किये थे—यह मंज़ूर किया गया कि चीन के जिन हिस्सों को जापान ने हड़प लिया है—यानी

اور کپور کے تیل کی مانگ یہاں سے پوری ہوتی ہے۔ اِس کے سوائے، یہاں کوئلہ، تیل، گندھک، سونے آدی کی کھانیں ہیں۔ کلنگ اور کاؤشنگ یہاں کے بندرگاہ ہیں جو ویاپار کے بڑے کیندر ہیں۔

جن سنکھیا

فارموسا کی جن سنکھیا 80 لاکھ ہے۔ اِن میں 90% چینی ہیں جن کے پوروج سمے سمے پر فوکن اور کوانگ تنگ پرانتوں سے یہاں آتے رہے ہیں۔ باقی 3% کاشوآن نامک الپ سنکھیک جاتیوں کے لوگ بستے ہیں جو کوان تنگ، ہینان، سوماترا، بورنیو، فلپائن آدی استھانوں سے آکر یہاں بس گئے تھے۔

پراچین اتیہاس

اتیہاس سے معلوم ہوتا ہے کہ عیسوی سن کی تیسری صدی میں چین کے لوگ فارموسا پہونچ چکے تھے۔ تھانگ کال (سن 618-705) کا مشہور ودوان شِہہ چھیین وو اپنے سمست پریوار کے ساتھ یہاں آکر رہنے لگا تھا۔ اِس ودوان نے اپنے کاویہ میں فارموسا کا سندر ورنن کیا ہے۔

سترھویں صدی کے شروع میں یورپ والوں کی نگاہ اس دیپ پر پڑی۔ سن 1626 میں اسپین سیناؤں نے اُتر پوربی فارموسا پر قبضہ کرلیا اور 16 ورش تک اُن کا راجیہ قائم رہا۔ اس سمے سے فارموسا تیوان کے نام سے پکارا جانے لگا۔ انہی دنوں فوکن کا نواسی چھنگ چیہہ لونگ اپنے 3,000 سگے سمبدھیوں کو لیکر یہاں رہنے لگا۔ آگے چل کر جب منچو راجاؤں نے چین پر حملہ کیا تو اُس کے پتر نے بڑی ویرتا سے شترو سیناؤں کا سامنا کیا۔

جاپانی حملہ

سن 1874 میں فارموسا پر جاپانی سینا کا حملہ ہوا۔ اُس کے بعد سن 1894 میں جب جاپان نے چین پر دھاوا کیا تو چین کے یدھ میں ہار جانے کے کارن فارموسا جاپانیوں کے ہاتھ میں پہونچ گیا۔ دھیرے دھیرے اس دیپ پر جاپانیوں کا اثر بڑھتا گیا اور سن 1895 سے 1945 کے بیچ جاپانیوں کی تعداد یہاں 3,20,000 تک پہونچ گئی! پچاس ورش کے اِس لمبے دور میں فارموسا کی جنتا نے جاپانی حاکموں کے خلاف کئی بغاوتیں کیں لیکن سب کو کچل دیا گیا۔

دوسرے یدھ کے بعد

دوسرے یدھ کے بعد انتر راشٹریہ حالتیں بدل گئیں۔ 3 ستمبر 1945 کو جاپان کے آتم سمپرن کے بعد 1 دسمبر، 1946 کو قاہرہ کے اعلان میں—جس پر چین، امریکہ اور برٹن نے دستخط کئے تھے—یہ منظور کیا گیا کہ چین کے جن حصوں کو جاپان نے ہڑپ لیا ہے—یعنی

फ़ारमोसा में जंगी घटायें

सारी दुनिया की आंखें आज फ़ारमोसा पर लगी हुई हैं. सैगांव, हांगकांग, मनीला वग़ैरा दूर पूरब के नगरों में जंगी घटायें उमड़ रही हैं. गली-मुहल्लों और सड़कों पर इकट्ठा डरी हुई जनता सोच रही है—क्या तीसरा विश्व युद्ध होगा? क्या इस युद्ध में एटम बमों का इस्तेमाल किया जायेगा? क्या इस विश्व संहारकारी युद्ध-संकट को किसी प्रकार टाला नहीं जा सकता? इस संकट के लिये कौन ज़िम्मेवार है?

अमरीका की तैयारियां

पिछले साल इन्डो-चाइना के डीन-बीन-फू-जंग को फ़तह करने के लिये संयुक्तराष्ट्र अमरीका ने बड़े बड़े जंगी जहाज़ टांगकिंग की खाड़ी में उतार दिये थे. लेकिन इस बार और भी भयंकर तैयारियां की जा रही हैं. हांगकांग के 'टाइम्स ऑफ़ इन्डिया' के संवाददाता के मुताबिक़ अनुशक्ति तथा जंग के दूसरे ख़ौफ़नाक हथियारों से लैस 100 अमरीकी जंगी जहाज़ों का विशाल बेड़ा फ़ारमोसा की हिफ़ाज़त के लिये चीन के समुद्र तट पर आ पहुंचा है. इसके सिवाय पांच विमानवाही पोत 400 से अधिक बममार हवाई जहाज़, 6 क्रूज़र, 500 ध्वंसक जहाज़ तथा अनेकों तारपीडो नौकायें और पनडुब्बियां आदि बहुत-सी सामग्री एकत्रित की जा चुकी हैं. ओकिनावा और फ़िलिपाइन्स से जल और हवाई सेनायें भी फ़ारमोसा आ गई हैं.

अवसरवादी चांग-काई-शेक

अमरीकी फ़ौजी ताक़त पर जीवित रहने वाला चांग इस अवसर की ताक में है कि किसी तरह अमरीका और कम्युनिस्ट चीन की सेनाओं में किसी तरह ठन जाये, लेकिन अमरीकी सेनापति कोरिया युद्ध में चीनी सिपाहियों का रण-कौशल देख चुके हैं, इसलिये अब की बार वे इतनी जल्दी उनसे उलझना नहीं चाहते.

फ़ारमोसा का महत्व

फ़ारमोसा (तैवान) दक्षिण-पूर्वी चीन में मुख्य भूमि से 150 मील दूर पर चीन का सबसे बड़ा द्वीप और सब से छोटा प्रान्त है. फ़ूकिन प्रान्त से यहां की सुन्दर पर्वत शृङ्खलायें दिखाई देती हैं जो उत्तर से दक्षिण तक 236 मील तक फैली हुई हैं. 14,000 वर्ग मील में फैला हुआ यह टापू अपने क़ुदरती रूप और हरे-भरे प्रदेशों के सबब मशहूर है. इसीलिये सन 1590 में पोर्चुगीज़ लोगों ने इसे इल्हा फ़ारमोसा (सुन्दर द्वीप) नाम दिया था. यहां की भूमि में चावल, गन्ना, चाय, अनन्नास, केला और शकरक़न्द बहुतायत से पैदा होते हैं. यहां के जंगलों में कपूर और देवदार आदि के वृक्ष उगते हैं. दुनिया की 70% कपूर

فارموسا میں جنگی گھٹائیں

ساری دنیا کی آنکھیں آج فارموسا پر لگی ہوئی ہیں. سیگاؤں، ھانگ کانگ، منیلا وغیرہ دور پورب کے نگروں میں جنگی گھٹائیں اُمڑ رہی ہیں. گلی محلوں اور سڑکوں پر اکٹھا ڈری ہوئی جنتا سوچ رہی ہے—کیا تیسرا وشویدھ ہوگا؟ کیا اِس یدھ میں ایٹم بموں کا استعمال کیا جائیگا؟ کیا اِس وشو سنگھارکاری یدھ سنکٹ کو کسی پرکار ٹالا نہیں جاسکتا؟ اِس سنکٹ کے لئے کون ذمہوار ہے؟

امریکہ کی تیاریاں

پچھلے سال انڈو چائنا کے ڈین-بین-فو جنگ کو فتح کرنے لئے سنیکت راشٹر امریکہ نے بڑے بڑے جنگی جہاز ٹانگ کنگ کی کھاڑی میں اُتار دیئے تھے. لیکن اِس بار اور بھی بھینکر تیاریاں کی جا رہی ہیں. ھانگ کانگ کے 'ٹائمس آف انڈیا' کے سنوادداتا کے مطابق انوشکتی تتھا جنگ کے دوسرے خوفناک ہتھیاروں سے لیس 100 امریکی جنگی جہازوں کا وشال بیڑا فارموسا کی حفاظت کے لئے چین کے سمدر تٹ پر آپہونچا ہے. اِس کے سوائے پانچ ویمان واہی پوت، 400 سے ادھک بمبار ہوائی جہاز، 6 کروزر، 500 دھونسک جہاز تتھا انیکوں تارپیڈو نوکائیں اور پنڈبیاں آدی بہت سی سامگری ایکترت کی جا چکی ہیں. اوکیناوا اور فلپائنس سے جل اور ہوائی سینائیں بھی فارموسا آ گئی ہیں.

اوسروادی چانگ کائی شیک

امریکی فوجی طاقت پر جیوت رہنے والا چانگ اِس اوسر کی تاک میں ہے کہ کسی طرح امریکہ اور کمیونسٹ چین کی سیناؤں میں کسی طرح ٹھن جائے، لیکن امریکی سیناپتی کوریا یدھ میں چینی سپاہیوں کا رن کوشل دیکھ چکے ہیں، اس لئے اب کی بار وے اتنی جلدی ان سے اُلجھنا نہیں چاہتے.

فارموسا کا مہتو

فارموسا (تیوان) دکچھنی پوربی چین میں مکھیہ بھومی سے 150 میل دور پر چین کا سب سے بڑا دیپ اور سب سے چھوٹا پرانت ہے. فوکن پرانت سے یہاں کی سندر پربت شرنکھلائیں دکھائی دیتی ہیں جو اُتر سے دکچھن تک 236 میل تک پھیلی ہوئی ہیں. 14,000 ورگ میل میں پھیلا ہوا یہ ٹاپو اپنے قدرتی روپ اور ہرے بھرے پردیشوں کے سبب مشہور ہے. اسی لئے سن 1590 میں پرتگیز لوگوں نے اِسے الہا فارموسا (سندر دیپ) نام دیا تھا. یہاں کی بھومی میں چاول، گنا، چائے، اناناس، کیلا اور شکرقند بہتایت سے پیدا ہوتے ہیں. یہاں کے جنگلوں میں کپور اور دیودار آدی کے ورکچھ اُگتے ہیں. دنیا کی 70% کپور

पर मुझे कितनी चोट लगती है जब मैं देखता हूं कि मेरे लिये लोगों की जानें जाती हैं ! जब मैं यह देखता हूं कि जो लोग मुझे प्यार करते हैं वह उसी प्यार के नाम पर जंग के लिये हथियार तैयार करते हैं तो मैं शरमा जाता हूं और मुझे महसूस होता है कि मैं कितना तुच्छ और निकम्मा हूं !

अभी बहुत सी बातें हैं जिन्हें देखकर मुझे अंदाजा होता है कि अभी कितना काम करने को बाक़ी है—स्कूलों में सब लड़कों लड़कियों के लिये काफ़ी जगह तक नहीं है ! गिरजे खाली और सूने पड़े हुए हैं ! घरेलू जीवन टुकड़े टुकड़े है !

जब मैं किसी जगह पर यह साइनबोर्ड देखता हूं कि—"केवल गोरे रंग के लोगों के लिये" या जब मैं किसी घर में घर की इन्जील पर गर्द जमी हुई देखता हूं तो मैं कांप उठता हूं !

तब मैं हैरान हो जाता हूं कि मैं लोगों को यह किस तरह समझाऊं कि मैं कोई दस्ताना नहीं हूं जिसे ठंडे हाथ पर पहना जा सके. या मैं कोई बिजली का सुइच नहीं हूं जिसे आदमी जब चाहे दबा कर बुझा दे और फिर जब चाहे जला ले. इसके खिलाफ़ मैं तभी तक जिन्दा रह सकता हूं जब तक कि आदमियों में यह सच्ची लगन हो कि वह अपने सब पड़ोसियों के साथ सुख और शान्ति से रह सकें !

फिर भी मैं बार बार ख़ुशी और आशा से भर जाता हूं !

लाखों नौजवान रोज खड़े होकर अपने क़ौमी झंडे, अपने देश और अपने भगवान की वफ़ादारी की प्रतिज्ञा करते हैं.

गलियों के कोनों में, नाई की दूकानों पर और मकानों के पिछवाड़े लोग दो दो, तीन तीन के गिरोहों में जमा होकर आजादी के साथ मुल्क की राजनीति पर और हकूमत के बारे में अपने विचार प्रगट करते हैं और खुली बहसें करते हैं.

छै करोड़ दस लाख आदमी चुनाव के दिनों में जमा होते हैं और अपने विचारों और अपनी राय के अनुसार वोट देते हैं.

तब मैं महसूस करता हूं कि अभी निराश होने का कोई कारन नहीं. मैं देखता हूं कि दुनिया का भविष्य धरती के ऊपर एक काले बादल की तरह नहीं छा रहा है. मैं जानता हूं कि लोग अमन और ख़ुशहाली के साथ मिलकर रहेंगे और एक न एक दिन यह दुनिया सचमुच 'एक' होगी.

क्योंकि मैं लोगों की जिन्दगी का एक हिस्सा बन गया हूं, और जब तक लोगों के दिल हैं, दिमाग़ हैं और उनमें रूहें हैं तब तक मैं जिन्दा रहूंगा, क्योंकि मैं जन राज हूं !

सोलह बरस के अमरीकी लड़के फ़िलिप एम. मैकाय की इस आवाज़ को हम अमरीकी क़ौम के दिल की आवाज़ समझते हैं, और उस पर ख़ुशी से 'तथास्तु !' कहते हैं. ओश्म् ! ऐमन ! आमीन !

14. 3. '55 —सुन्दरलाल

پر مجھے کتنی چوٹ لگتی ہے جب میں دیکھتا ہوں کہ میرے لئے لوگوں کی جانیں جاتی ہیں ! جب میں یہ دیکھتا ہوں کہ جو لوگ مجھے پیار کرتے ہیں وہ اُسی پیار کے نام پر جنگ کے لئے ہتھیار تیار کرتے ہیں تو میں شرما جاتا ہوں اور مجھے محسوس ہوتا ہے کہ میں کتنا تچھ اور نکما ہوں !

ابھی بہت سی باتیں ہیں جنھیں دیکھ کر مجھے اندازہ ہوتا ہے کہ ابھی کتنا کام کرنے کو باقی ہے—اسکولوں میں سب لڑکوں لڑکیوں کے لئے کافی جگہ تک نہیں ہے! گرجے خالی اور سونے پڑے ہوئے ہیں ! گھریلو جیون ٹکڑے ٹکڑے ہے !

جب میں کسی جگہ پر یہ سائنبورڈ دیکھتا ہوں کہ—"کیول گورے رنگ کے لوگوں کے لئے" یا جب میں کسی گھر میں گھر کی انجیل پر گرد جمی ہوئی دیکھتا ہوں تو میں کانپ اُٹھتا ہوں !

تب میں حیران ہو جاتا ہوں کہ میں لوگوں کو یہ کس طرح سمجھاؤں کہ میں کوئی دستانہ نہیں ہوں جسے ٹھنڈے ہاتھ پر پہنا جاسکے. یا میں کوئی بجلی کا سوئچ نہیں ہوں جسے آدمی جب چاہے دباکر بجھادے اور پھر جب چاہے جلا لے . اِس کے خلاف میں تبھی تک زندہ رہ سکتا ہوں جب تک کہ آدمیوں میں یہ سچی لگن ہو کہ وہ اپنے سب پڑوسیوں کے ساتھ سکھ اور شانتی سے رہ سکیں !

پھر بھی میں بار بار خوشی اور آشا سے بھر جاتا ہوں !

لاکھوں نوجوان روز کھڑے ہوکر اپنے قومی جھنڈے، اپنے دیش اور اپنے بھگوان کی وفاداری کی پرتگیا کرتے ہیں .

گلیوں کے کونوں میں، نائی کی دوکانوں پر اور مکانوں کے پچھواڑے لوگ دو دو، تین تین کے گروہوں میں جمع ہوکر آزادی کے ساتھ ملک کی راج‌نیتی پر اور حکومت کے بارے میں اپنے وچار پرکٹ کرتے ہیں اور کھلی بحثیں کرتے ہیں .

چھ کروڑ دس لاکھ آدمی چناؤ کے دنوں میں جمع ہوتے ہیں اور اپنے وچاروں اور اپنی رائے کے انوسار ووٹ دیتے ہیں .

تب میں محسوس کرتا ہوں کہ ابھی نراش ہونے کا کوئی کارن نہیں . میں دیکھتا ہوں کہ دنیا کا بھوشیہ دھرتی کے اُوپر ایک کالے بادل کی طرح نہیں چھا رہا ہے . میں جانتا ہوں کہ لوگ اَمن اور خوشحالی کے ساتھ ملکر رہینگے اور ایک نہ ایک دن یہ دنیا سچ مچ 'ایک' ہوگی .

کیونکہ میں لوگوں کی زندگی کا ایک حصہ بن گیا ہوں، اور جب تک لوگوں کے دل ہیں، دماغ ہیں اور اُن میں روحیں ہیں تب تک میں زندہ رہونگا، کیونکہ میں جن راج ہوں !

سولہ برس کے امریکی لڑکے فلپ ایم. میکائے کی اِس آواز کو ہم امریکی قوم کے دل کی آواز سمجھتے ہیں، اور اُس پر خوشی سے 'تتھاستو !' کہتے ہیں . اوم ! ایمن ! آمین !

—سندر لال 14 . 3 . '55

अहिंसा, एकता, सच्ची आज़ादी और सबकी खुशहाली की तरफ़ बढ़ रही है.

अमरीकी लड़के का लेख यह है :—

मैं जनराज (डेमाक्रेसी) यानी जनता राज की तरफ़ से बाल रहा हूं.

मैं जनराज यानी जनता का राज हूं. स्वयं भगवान ने लोगों के दिलों में मेरा बीज बाया था. धीरे धीरे मुझ मे अकुवा फूटा. दुनिया में जब ज़ुल्म और दुःख फैले हुए थे तब मुझ में शाखें निकलीं.

कुछ लोगों ने मुझे केवल एक थोड़े दिनों का वहम समझा. लेकिन दूसरों के दिमाग़ों में मैं एक सपना बन गया. उन्हें मेरी धुन लग गई.

यूनान में एथेन्स के लोगों ने मुझे परखा. अफ़लातून और अरस्तू ने मुझ पर अपनी अक़ल दौड़ाई. राम के सम्राटों (सीज़र्स) ने मुझे मिटाना चाहा. यूराप के बीच के ज़माने के बादशाहों और सामन्ती सरदारों ने मुझे पैरा तले रौंदा !

अठारहवीं सदी ईस्वी में एक नौआबाद नौजवान देश (अमरीका) में, जहां लाग सच्ची आज़ादी की खाज मे थे और उसके लिये हाथ पैर मार रहे थे, मैं अमली शकल में दिखाई देने लगा.

पौने दो सौ बरस से यह देश मेरा गहवारा है.

वाशिंगटन (डी० सी०) की ऊंची ऊंची शानदार इमारतों में और मिसिसिपी नदी के किनारे किनारे उन छाटी छाटी किश्तियों में जिनमें से हर एक में एक एक कुनबा रहता है मैं रह रहा हूं. हर अमरीकी स्कूल के कमरों मे मैं फूलता फलता रहा हूं. मैं उन सुन्दर हरे भरे पार्कों में रहता हूं जिन मे कुनबे के कुनबे आज़ादी के साथ आराम करते हैं और खेलते हैं. मैं अख़बारों के उन दफ़्तरों में रहता हूं जहां एडिटर लाग अपने आए दिन के सम्पादकी लेख तैयार करते हैं. मैं चुनावों के उन स्थानों में रहता हूं जहां लाग वाट देकर ख़ुद अपने नेता चुनते हैं.

मैं पुरानी बदबूदार किताबों के पन्नों के अन्दर बन्द नहीं रह सका, और न मैं किसी बन्द शीशे के केस के अन्दर फीके पड़े हुए काग़ज़ पर चिपटकर रह सका.

जहां कहीं वह इनसान हैं जो मुझे खोजते हैं वहां मैं अवश्य होता हूं.

लेकिन जिन लोगों की मैं सेवा करता हूं उनकी अमली ज़िन्दगियों का अगर मैं अंग न बन सकूं ता मैं केवल एक निकम्मा शब्द बनकर रह जाऊंगा !

दुनिया भर में लोग आए दिन मेरे लिये बड़ी बड़ी क़ुरबानियां करते हैं, बहुत बार लोगों ने अपनी जानें क़ुरबान कर दी हैं इसलिये कि मैं ज़िन्दा रह सकूं.

اہنسا، ایکتا، سچی آزادی اور سب کی خوشحالی کی طرف بڑھ رہی ہے .

امریکی لڑکے کا لیکھ یہ ہے :—

میں جن راج (ڈیموکریسی) یعنی جنتا راج کی طرف سے بول رہا ہوں .

میں جن راج یعنی جنتا کا راج ہوں . سویم بھگوان نے لوگوں کے دلوں میں میرا بیج بویا تھا . دھیرے دھیرے مجھ میں انکوا پھوٹا . دنیا میں جب ظلم اور دکھ پھیلے ہوئے تھے تب مجھ میں شاخیں نکلیں .

کچھ لوگوں نے مجھے کیول ایک تھوڑے دنوں کا وہم سمجھا . لیکن دوسروں کے دماغوں میں میں ایک سپنا بن گیا . انہیں میری دھن لگ گئی .

یونان میں ایتھنس کے لوگوں نے مجھے پرکھا . افلاطون اور ارسطو نے مجھ پر اپنی عقل دوڑائی . روم کے سمراٹوں (سیزرس) نے مجھے مٹانا چاہا . یورپ کے بیچ کے زمانے کے بادشاہوں اور سامنتی سرداروں نے مجھے پیروں تلے روندا !

اٹھارہویں صدی عیسوی میں ایک نوآباد نوجوان دیش (امریکہ) میں، جہاں لوگ سچی آزادی کی کھوج میں تھے اور اس کے لئے ہاتھ پیر مار رہے تھے، میں عملی شکل میں دکھائی دینے لگا .

پونے دو سو برس سے یہ دیش میرا گہوارہ ہے .

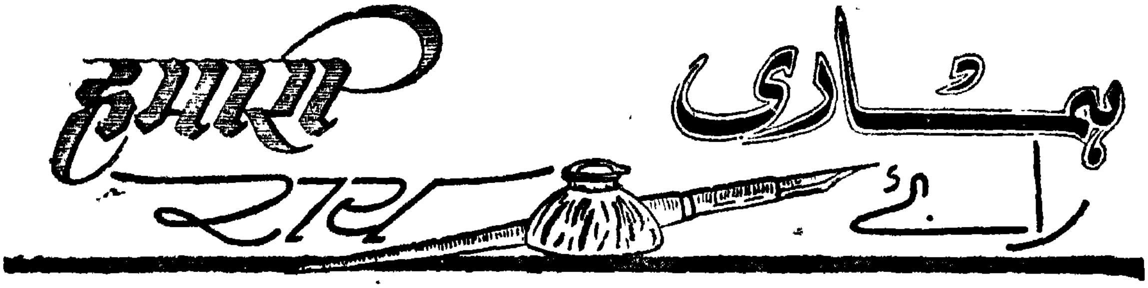
واشنگٹن (ڈی. سی.) کی اونچی اونچی شاندار عمارتوں میں اور مسی سپی ندی کے کنارے کنارے ان چھوٹی چھوٹی کشتیوں میں جن میں سے ہر ایک میں ایک ایک کنبہ رہتا ہے میں رہ رہا ہوں. ہر امریکی اسکول کے کمروں میں میں پھولتا پھلتا رہا ہوں. میں ان سندر ہرے بھرے پارکوں میں رہتا ہوں جن میں کنبے کے کنبے آزادی کے ساتھ آرام کرتے ہیں اور کھیلتے ہیں . میں اخباروں کے ان دفتروں میں رہتا ہوں جہاں ایڈیٹر لوگ اپنے آئے دن کے سمپادکی لیکھ تیار کرتے ہیں . میں چناؤں کے ان استھانوں میں رہتا ہوں جہاں لوگ ووٹ دےکر خود اپنے نیتا چنتے ہیں .

میں پرانی بدبودار کتابوں کے پنوں کے اندر بند نہیں رہ سکا، اور نہ میں کسی بند شیشے کے کیس کے اندر پھیکے پڑے ہوئے کاغذ پر چپٹ کر رہ سکا .

جہاں کہیں وہ انسان ہیں جو مجھے کھوجتے ہیں وہاں میں اوشیہ ہوتا ہوں .

لیکن جن لوگوں کی میں سیوا کرتا ہوں ان کی عملی زندگیوں کا اگر میں انگ نہ بن سکوں تو میں کیول ایک نکما شبد بن کر رہ جاؤنگا !

دنیا بھر میں لوگ آئے دن میرے لئے بڑی بڑی قربانیاں کرتے ہیں . بہت بار لوگوں نے اپنی جانیں قربان کردی ہیں اس لئے کہ میں زندہ رہ سکوں .



अमरीकी जनता का दिल

अमरीका में देश भर के हाई स्कूलों के लड़कों और लड़कियों का हर साल एक 'मुक़ाबला' होता है, जिस में लाखों लड़के और लड़कियां निबन्ध लिख कर भेजते हैं और सबसे अच्छे निबन्ध लिखने वालों को इनाम दिये जाते हैं. यह 'मुक़ाबला' उस देश की कुछ सार्वजनिक संस्थाओं की ओर से कराया जाता है. सन 1954 में इस मुक़ाबले में दस लाख से ऊपर लड़कों और लड़कियों ने निबन्ध लिखकर भेजे थे. उनमें से चार को पांच पांच सौ डालर का इनाम दिया गया था. मज़मून था—"मैं जनराज (डेमोक्रैसी) की तरफ़ से बोलता हूं." जिन चार निबन्धों पर इनाम दिया गया उनमें से एक का हिन्दी में अनुवाद हम नीचे दे रहे हैं. अनुवाद जहां तक हो सका लफ़्ज़ी किया गया है. यह लेख अमरीका की कनसास रियासत के किसी हाई स्कूल के एक सोलह बरस के लड़के 'फ़िलिप एम० मेकाय' का लिखा हुआ है. इस निबन्ध को हम बड़ी खुशी के साथ "नया हिन्द" में केवल इसलिये दे रहे हैं क्योंकि इस से पता चलता है कि अमरीकी सरकार के नेता कुछ भी कहें या करें अमरीकी जनता का दिल वैसा ही साफ़, बड़ा और मानव प्रेम से भरा हुआ है जैसा दुनिया के दूसरे देशों की जनता का दिल. दुनिया के साम्राज प्रेमी समझे जाने वाले देशों में भी—और ऐसे देश एक दो उंगलियों पर गिने जा सकते हैं—ऐसे लोगों की गिनती बहुत ही कम है और घटती जा रही है जो ठीक बेठीक यह समझते हैं कि उनका नफ़ा नुक़सान दूसरे देशों के नफ़े नुक़सान से बिलकुल अलग है और दोनों में वह टक्कर है जिसे दूर नहीं किया जा सकता. दुनिया भर के अन्दर आम जनता अपनी एकता को तेज़ी के साथ अनुभव करती जा रही है. उसे सबके फ़ायदे में अपना फ़ायदा और सबके नुक़सान में अपना नुक़सान दिखाई देने लगा है. उसे काले गोरे का भेद बुरा लगता है, वह जंग और जंग की तैयारियों के खिलाफ़ है. इसमें कोई संदेह नहीं कि आजकल के काले बादल छटने वाले हैं और दुनिया काफ़ी तेज़ी के साथ और पक्के तौर पर अमन,

امریکی جنتا کا دل

امریکہ میں دیش بھر کے ہائی اسکولوں کے لڑکوں اور لڑکیوں کا ہر سال ایک ' مقابلہ ' ہوتا ہے' جس میں لاکھوں لڑکے اور لڑکیاں نبندھ لکھکر بھیجتے ہیں اور سب سے اچھے نبندھ لکھنے والوں کو انعام دیئے جاتے ہیں ۔ یہ ' مقابلہ ' اُس دیش کی کچھ سارو جنک سنستھاؤں کی اور سے کرایا جاتا ہے ۔ سن 1954 میں اس مقابلے میں دس لاکھ سے اوپر لڑکوں اور لڑکیوں نے نبندھ لکھ کر بھیجے تھے ۔ اُن میں سے چار کو پانچ پانچ سو ڈالر کا انعام دیا گیا تھا ۔ مضمون تھا—" میں جن راج (ڈیموکریسی) کی طرف سے بولتا ہوں ۔" جن چار نبندھوں پر انعام دیا گیا اُن میں سے ایک کا ہندی انوواد ہم نیچے دے رہے ہیں ۔ انوواد جہاں تک ہو سکا لفظی کیا گیا ہے ۔ یہ لیکھ امریکہ کی کنساس ریاست کے کسی ہائی اسکول کے ایک سولہ برس کے لڑکے ' فلپ ایم ۔ میکاے ' کا لکھا ہوا ہے ۔ اِس نبندھ کو ہم بڑی خوشی کے ساتھ " نیا ہند " میں کیول اِس لئے دے رہے ہیں کیونکہ اِس سے پتہ چلتا ہے کہ امریکی سرکار کے نیتا کچھ بھی کہیں یا کریں امریکی جنتا کا دل ویسا ہی صاف' بڑا اور مانو پریم سے بھرا ہوا ہے جیسا دنیا کے دوسرے دیشوں کی جنتا کا دل ۔ دنیا کے سامراج پریمی سمجھے جانے والے دیشوں میں بھی—اور ایسے دیش ایک دو انگلیوں پر گنے جا سکتے ہیں—ایسے لوگوں کی گنتی بہت ہی کم ہے اور گھٹتی جا رہی ہے جو ٹھیک بے ٹھیک سمجھتے ہیں کہ اُن کا نفع نقصان دوسرے دیشوں کے لوگوں کے نفع نقصان سے بالکل الگ ہے اور دونوں میں وہ ٹکر ہے جسے دور نہیں کیا جا سکتا ۔ دنیا بھر کے اندر عام جنتا اپنی ایکتا کو تیزی کے ساتھ انوبھو کرتی جا رہی ہے ۔ اُسے سب کے فائدے میں اپنا فائدہ اور سب کے نقصان میں اپنا نقصان دکھائی دینے لگا ہے ۔ اُسے کالے گورے کا بھید برا لگتا ہے' وہ جنگ اور جنگ کی تیاریوں کے خلاف ہے ۔ اِس میں کوئی سندیہ نہیں کہ آجکل کے کالے بادل چھٹنے والے ہیں اور دنیا کافی تیزی کے ساتھ اور پکے طور پر امن'

कुछ किताबें

देश की आजादी के लिये उनकी कोशिशों, हिन्दुओं को मुसलमानों से और मुसलमानों को हिन्दुओं से लड़ाने, हिन्दुस्तानियों के कैरेक्टर को बरबाद करने और सारी हिन्दुस्तानी क़ौम को नीचा दिखाने की अंगरेजी चालों, अंगरेजों के जरिये हिन्दुस्तान की खुली लूट, ईस्ट इन्डिया कम्पनी का असली रूप, अंगरेजों के आने से पहले हिन्दुस्तान की सनअती, माली, तिजारती, राजकाजी, समाजी, मजहबी और तालीमी हालत, और डेढ़ सौ बरस की अंगरेजी हकूमत में एक प्लैन के साथ इन सब चीजों की बरबादी, क़दम क़दम पर अंगरेजों का अपनी संधियों और अहदनामों को तोड़ना, इस देश में आजादी की तहरीक का श्रीगणेश और शुरू से आख़ीर तक उस तहरीक का इतिहास, सन 1857 के स्वाधीन्ता संग्राम के दिलचस्प पहलू, इन्डियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना, दूसरे देशों में अंगरेजों की साजिशें, ख़िलाफ़त की तहरीक, रेशमी ख़तों की तहरीक, रूस, तुरकी अफ़ग़ानिस्तान और हिन्दुस्तान के पुराने सम्बन्ध, हिन्दुस्तानी देश भक्तों के दूसरे देशों में कारनामे, अमीर अमानुल्ला का असली कैरेक्टर, रौलट रिपोर्ट, महात्मा गांधी की तहरीक के अजीब अजीब पहलू, अंगरेजी ख़ुफ़िया पुलिस की करतूतें वग़ैरा वग़ैरा सैकड़ों अत्यन्त दिलचस्प और शिक्षाप्रद विषयों पर एक किताब के अन्दर सामग्री चाहते हैं तो शायद इससे बढ़कर किताब नहीं मिल सकती. बीस अलग अलग किताबों के पढ़ने से आपको जो जानकारी मिल सकती है वह इस एक किताब के पढ़ने से मिल जायगी. इस पर तारीफ़ यह कि हर बात बेलाग होकर, सचाई, इन्साफ़ और सनद के साथ कही गई है. हमारी राय मे कोई ऐसा उर्दू पढ़ा हिन्दुस्तानी नही होना चाहिये जो अपने देश के बारे में कुछ भी जानना चाहता हो और जो इस किताब को न पढ़े. देश की कोई लाइब्रेरी नहीं होनी चाहिये जिसमें यह किताब न हो. भाषा अगर इससे आसान और आम फ़हम होती तो किताब कहीं अधिक लोगों को फ़ायदा पहुंचा सकती थी.

मिलने का पता :—अलजमीयत बुक डिपो—दफ़्तर जमीयत उलमाए हिन्द, गली क़ासिम जान; देहली-6 या क़ौमी किताब घर देवबन्द, जिला सहारनपुर.

17. 3. '55 सुन्दरलाल

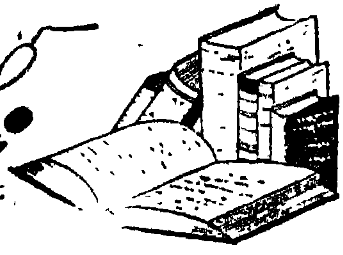
کچھ کتابیں

دیش کی آزادی کے لئے اُن کی کوششیں، ہندوؤں کو مسلمانوں سے اور مسلمانوں کو ہندوؤں سے لڑانے، ہندستانیوں کے کیریکٹر کو برباد کرنے اور ساری ہندستانی قوم کو نیچا دکھانے کی انگریزی چالوں، انگریزوں کے ذریعہ ہندستان کی کھلی لوٹ، ایسٹ انڈیا کمپنی کا اصلی روپ، انگریزوں کے آنے سے پہلے ہندستان کی صنعتی، مالی، تجارتی، راجکاجی، سماجی، مذہبی اور تعلیمی حالت، اور ڈیڑھ سو برس کی انگریزی حکومت میں ایک پلین کے ساتھ اِن سب چیزوں کی بربادی، قدم قدم پر انگریزوں کا اپنی سندھیوں اور عہد ناموں کو توڑنا، اِس دیش میں آزادی کی تحریک کا شری گنیش اور شروع سے آخر تک اُس تحریک کا اتہاس، سن 1857 کے سوادھینتا سنگرام کے دلچسپ پہلو، انڈین نیشنل کانگریس کی استھاپنا، دوسرے دیشوں میں انگریزوں کی سازشیں، خلافت کی تحریک، ریشمی خطوں کی تحریک، روس، ترکی، افغانستان اور ہندستان کے پرانے سمبندھ، ہندستانی دیش بھکتوں کے دوسرے دیشوں میں کارنامے، امیر امان اللہ کا اصلی کیریکٹر، رولٹ رپورٹ، مہاتما گاندھی کی تحریک کے عجیب عجیب پہلو، انگریزی خفیہ پولیس کی کرتوتیں وغیرہ وغیرہ سیکڑوں اتیت دلچسپ اور شکشا پرد وشیوں پر ایک کتاب کے اندر سامگری چاہتے ہیں تو شاید اِس سے بڑھ کر کتاب نہیں مل سکتی۔ بیس الگ الگ کتابوں کے پڑھنے سے آپ کو جو جانکاری مل سکتی ہے وہ اِس ایک کتاب کے پڑھنے سے مل جائے گی۔ اِس پر تعریف یہ کہ ہر بات بےلاگ ہو کر، سچائی، انصاف اور سند کے ساتھ کہی گئی ہے۔ ہماری رائے میں کوئی ایسا اُردو پڑھا ہندستانی نہیں ہونا چاہئے جو اپنے دیش کے بارے میں کچھ بھی جاننا چاہتا ہو اور جو اِس کتاب کو نہ پڑھے۔ دیش کی کوئی لائبریری نہیں ہونی چاہئے جس میں یہ کتاب نہ ہو۔ بھاشا اگر اِس سے آسان اور عام فہم ہوتی تو کتاب کہیں ادھک لوگوں کو فائدہ پہونچا سکتی تھی۔

ملنے کا پتہ :— الجمعیۃ بک ڈپو۔ دفتر جمعیۃ علماء ہند، گلی قاسم جان دہلی - 6 یا قومی کتاب گھر دیو بند، ضلع سہارن پور۔

17 . 3 . '55 —سندر لال

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

"नक़्शे हयात"

लेखक—मौलाना हुसैन अहमद मदनी; लिपि और भाषा—उरदू; दो जिल्द; रायल अठपेजी; कुल सफ़े—लगभग सात सौ; जिल्दें कपड़े की सुन्दर और मजबूत; कागज़, लिखाई, छपाई बहुत अच्छी; क़ीमत दोनों जिल्दों की-साढ़े दस रुपया.

जमीयत उलमा के सदर मौलाना हुसैन अहमद मदनी का नाम देश भर में मशहूर है. हिन्दुस्तान की आज़ादी की जंग में शुरू से आख़ीर तक उन्होंने आगे आगे हिस्सा लिया और हर तरह की मुसीबतें झेलीं. सन 1942 में नैनी सेन्ट्रल जेल के अन्दर वह और हम साथ साथ थे. वह आज़ादी के उन परखे हुए बहादुर सिपाहियों में से हैं जो जितनी बार आग में डाले गए उतनी बार ही खरे सोने की तरह दमकते हुए बाहर आए. फ़िरक़ेवाराना ज़हनियत के ज़बरदस्त दुश्मन, हिन्दू मुसलिम इत्तहाद के पक्के हामी, सच्चे मुहिब्बे वतन, देश की आज़ादी के दिलदादा मौलाना हुसैन अहमद मदनी ने जब से होश संभाला तब से लेकर देश के आज़ाद होने तक उनके जीवन की एक एक घड़ी मानवता की सेवा और देश की आज़ादी की कोशिशों में ही बीती. यह किताब उनके अपने हाथ से लिखी अब तक की जीवन कहानी है. ऐसे आदमी की जीवन कहानी का यूं भी दिलचस्प और शिक्षाप्रद होना लाज़मी था. पर इस किताब का इस से भी बढ़कर पहलू यह है कि जैसा जमीयत उलमा के सेक्रेटरी मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान ने किताब के शुरू में लिखा है—"यह किताब केवल विद्वान लेखक की जीवन कहानी ही नहीं है बल्कि हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ों के आने से लेकर अंग्रेज़ी राज के अन्त होने तक सब ख़ास ख़ास घटनाओं का संग्रह है. अंग्रेज़ी राज की उन पोलीटिकल चालों और राजकाजी छल फ़रेबों का यह इनसाइक्लोपीडिया है जिन्होंने इस देश को एक बार तबाह कर डाला था."

अगर आप एक सच्चे, विश्वासी मुसलमान घराने में पैदा हुए आदमी की शुरू से शिक्षा दीक्षा, इसलाम की असली रूह, मक्के और मदीने के दिलचस्प हालात, मुसलमान आलिमों का शुरू से अंगरेज़ी राज की तरफ़ रुख़,

"نقش حیات"

لیکھک—مولانا حسین احمد مدنی؛ لپی اور بھاشا—اُردو. دو جلد؛ رایل آٹھ پیجی؛ کل صفحے—لگ بھگ سات سو؛ جلدیں کپڑے کی سندر اور مضبوط؛ کاغذ، لکھائی، چھپائی بہت اچھی؛ قیمت دونوں جلدوں کی—ساڑھے دس روپیہ.

جمعیۃ علماء کے صدر مولانا حسین احمد مدنی کا نام دیش بھر میں مشہور ہے. ہندستان کی آزادی کی جنگ میں شروع سے آخیر تک اُنھوں نے آگے آگے حصہ لیا اور ہر طرح کی مصیبتیں جھیلیں. سن 1942 میں نینی سنٹرل جیل کے اندر وہ اور ہم ساتھ ساتھ تھے. وہ آزادی کے اُن پرکھے ہوئے بہادر سپاہیوں میں سے ہیں جو جتنی بار آگ میں ڈالے گئے اُتنی بار ہی کھرے سونے کی طرح دمکتے ہوئے باہر آئے. فرقہ‌وارانہ ذہنیت کے زبردست دشمن، ہندو مسلم اِتحاد کے پکے حامی، سچے محب وطن، دیش کی آزادی کے دلدادہ مولانا حسین احمد مدنی نے جب سے ہوش سنبھالا تب سے لیکر دیش کے آزاد ہونے تک اُن کے جیون کی ایک ایک گھڑی مانوتا کی سیوا اور دیش کی آزادی کی کوششوں میں ہی بیتی. یہ کتاب اُن کے اپنے ہاتھ سے لکھی اب تک کی جیون کہانی ہے. ایسے آدمی کی جیون کہانی کا یوں بھی دلچسپ اور شکشا پرد ہونا لازمی تھا. پر اِس کتاب کا اِس سے بھی بڑھ کر پہلو یہ ہے کہ جیسا جمعیۃ علماء کے سکریٹری مولانا حفظ الرحمان نے کتاب کے شروع میں لکھا ہے—"یہ کتاب کیول ودوان لیکھک کی جیون کہانی ہی نہیں ہے بلکہ ہندستان میں انگریزوں کے آنے سے لیکر انگریزی راج کے انت ہونے تک سب خاص خاص گھٹناؤں کا سنگرہ ہے. انگریزی راج کی اُن پولیٹیکل چالوں اور راج کاجی چھل فریبوں کا یہ اِنسائیکلو پیڈیا ہے جنھوں نے اِس دیش کو ایک بار تباہ کر ڈالا تھا."

اگر آپ ایک سچے، وشواسی مسلمان گھرانے میں پیدا ہوئے آدمی کی شروع سے شکشا دیکشا، اِسلام کی اصلی روح، مکہ اور مدینہ کے دلچسپ حالات، مسلمان عالموں کا شروع سے انگریزی راج کی طرف رخ،

व आखिर में कैसी खतरनाक साबित हुई, उस नुक्ते नज़र से भी यह एक समझने जैसी तारीखी घटना है. उस समय तो सर सैयद अहमद के मन में सिर्फ़ अपनी धर्मजाति की पिछड़ी हुई दशा दूर करने का सेवा भाव था. लेकिन बाद के ज़माने में नई पीढ़ी के नये भाव आये, नये कारण मिले, नई नीतियां चलीं. इनके साथ सारा चित्र पलट गया. यह बात आज आज़ादी के दौर में कई तरह से महसूस हो रही है. लेकिन यह सब असर 1857-युग के दौर में नहीं आता. लेकिन यह लिखना चाहिये कि उसके जन्माक्षर इस समय लिखे गये.

राज्यक्षेत्र विचार

आख़िर में राज्यक्षेत्र भी नये असर के नीचे आया. मुग़लों के दरबारी ढंग की राज्य प्रणाली के बदले नये अंग्रेजी ढंग की राज्यनीति निखरने लगी. पार्लियामेन्ट, लोकमत इत्यादि विचार पैदा हुये.

सरकारी नौकरियों में देश के लोग समान दर्जे से जायेंगे तो बड़ा भारी फ़ायदा होगा, और हमारे लोगों के राज्य सम्बन्धी कार्य अच्छे और अधिक ज्ञान पूर्वक और प्रेम से कर सकेंगे ऐसा ख़्याल उत्पन्न हुआ. नौकरियों का स्वदेशी-करन—एक ज्ञान पूर्वक मांगने जैसी राजकीय बात प्रतीत हुई. उस समय आई. सी. एस. होना यह भी एक देश भक्ति जैसी चीज़ महसूस हुई हो तो उसमें ताज्जुब की बात नहीं है.

क़ौमियत का एक नया मज़हब बना. लोगों की शिक्षा देश के प्रश्नों के बारे में होनी चाहिये, अंग्रेज़ों को उसके बारे में समझाकर राज्य कारोबार में सुधार कराने चाहियें, ये ख़याल नये अंग्रेजी पढ़े हुये देश प्रेमी युवकों में पैदा हुए. राज्यकारोबार पर नज़र रखने का कार्य वे देश सेवा समझ कर अपने आप करने लगे. यह सब चिंतन प्रजा के सामने रखने के लिये भिन्न भिन्न संस्थाओं और अख़बार वग़ैरा की स्थापना होने लगी. संक्षेप में कहे तो नये राजकीय दौर को समझने की कोशिशें अपने आप शुरू हुईं.

1857 से 1885 के युग की इन सब बातों को समग्र रूप से देखते हुए, एक बात यह साबित होती है कि देश में नया दौर शुरू हुआ. उसके साथ क़दम मिलाने के लिये प्रजा ने भी नया नज़रिया और नई ताक़त हासिल की. क़ौमियत के नये बीज लगे और फ़ौरन इन बीजों ने दरख़्तों का रूप ले लिया. 1857 से 1885 के युग की अव्यवस्था तथा नीति ऐक्य का अभाव दूर हुआ और नई नीति के पहलुओं को क़बूल किया जाने लगा.

इस दौर की छानबीन और अध्ययन का विचार अब हमारे देश में खड़ा होना चाहिये. देश की नई ज़िन्दगी का यह सवेरा था. उसके संविधायक बल और उसके पुरस्कर्ता हमारे लिये बड़ी भारी पूंजी हैं. नई पीढ़ी के लिये वह शक्ति का सोता है. इसकी छानबीन और अध्ययन की दृष्टि शुद्ध एवं सात्विक ज़रूर होनी चाहिये.

وہ آخر میں کیسی خطرناک ثابت ہوئیں؛ اُس نقطۂ نظر سے بھی یہ ایک سمجھنے جیسی تاریخی گھٹنا ہے. اُس سمے تو سر سید احمد کے من میں صرف اپنی دھرم جاتی کی پچھڑی ہوئی دشا دور کرنے کا سیوا بھاؤ تھا. لیکن بعد کے زمانے میں نئی پیڑھی کے نئے بھاؤ آئے، نئے کارن ملے، نئی نیتیاں چلیں. اِن کے ساتھ سارا چتر پلٹ گیا. یہ بات آج آزادی کے دور میں کئی طرح سے محسوس ہو رہی ہے. لیکن یہ سب اثر 1857 یگ کے دور میں نہیں آتا. لیکن یہ لکھنا چاہئے کہ اُس کے جنماکچھر اِس سمے لکھے گئے.

راجیہ چھیتر وچار

آخر میں راجیہ چھیتر بھی نئے اثر کے نیچے آیا. مغلوں کے درباری ڈھنگ کی راجیہ پرنالی کے بدلے نئے انگریزی ڈھنگ کی راجیہ نیتی نکھرنے لگی. پارلیامنٹ، لوک مت اتیادی وچار پیدا ہوئے.

سرکاری نوکریوں میں دیش کے لوگ سمان درجے سے جائینگے تو بڑا بھاری فائدہ ہوگا، اور ہمارے لوگوں کے راجیہ سمبندھی کاریہ اچھے اور ادھک گیان پوروک اور پریم سے کرسکیں گے ایسا خیال اُتپن ہوا. نوکریوں کا سودیشی کرن—ایک گیان پوروک مانگنے جیسی راجکیہ بات پرتیت ہوئی. اُس سمے آئی. سی. ایس. ہونا یہ بھی ایک دیش بھکتی جیسی چیز محسوس ہوئی ہو تو اُس میں تعجب کی بات نہیں ہے.

قومیت کا ایک نیا مذہب بنا. لوگوں کی شکشا دیش کے پرشنوں کے بارے میں ہونی چاہئے، انگریزوں کو اُس کے بارے میں سمجھا کر راجیہ کاروبار میں سدھار کرانے چاہئیں، یہ خیال نئے انگریزی پڑھے ہوئے دیش پریمی یوکوں میں پیدا ہوئے. راجیہ کاروبار پر نظر رکھنے کا کاریہ وے دیش سیوا سمجھ کر اپنے آپ کرنے لگے. یہ سب چنتن پرجا کے سامنے رکھنے کے لئے بھن بھن سنستھاؤں اور اخبار وغیرہ کی استھاپنا ہونے لگی. سنکچھیپ میں کہیں تو نئے راجکیہ دور کو سمجھنے کی کوششیں اپنے آپ شروع ہوئیں.

1857 سے 1885 کے یگ کی اِن سب باتوں کو سمگر روپ سے دیکھتے ہوئے، ایک بات یہ ثابت ہوتی ہے کہ دیش میں نیا دور شروع ہوا. اُس کے ساتھ قدم ملانے کے لئے پرجا نے بھی نیا نظریہ اور نئی طاقت حاصل کی. قومیت کے نئے بیج لگے اور فوراً اِن بیجوں نے درختوں کا روپ لے لیا. 1857 سے 1885 کے یگ کی اوِیوستھا تتھا نیتی ایکیہ کا ابھاؤ دور ہوا اور نئی نیتی کے پہلوؤں کو قبول کیا جانے لگا.

اِس دور کی چھان بین اور ادھین کا وچار اب ہمارے دیش میں کھڑا ہونا چاہئے. دیش کی نئی زندگی کا یہ سویرا تھا. اس کے سمودھایک بل اور اس کے پرسکرتا ہمارے لئے بڑی بھاری پونجی ہیں. نئی پیڑھی کے لئے وہ شکتی کا سوتا ہے. اِس کی چھان بین اور ادھین کی درشٹی شدھ ایوم ساتوک ضرور ہونی چاہئے.

जाति पांति के भेद भावों का त्याग, इत्यादि अनेक चीज़ें इस महापुरुष के जीवन में सहज गंगा के समान पैदा हुई; और उनकी महान शक्ति और तेज इतना ज्यादा था कि जिन्होंने आधुनिक शिक्षा प्राप्त की थी ऐसे विवेकानन्द को भी परमहंस ने अपनी तरफ़ खींचा. बंगाल में केशवचन्द्र सेन, देवेन्द्र नाथ वग़ैरा ब्रह्म समाजवादियों के ज़माने में भी इस महा गंगा का प्रवाह पूर्ण रूप से आगे बढ़ा, और देश में सब जगह उसके जल से सिंचाई होने लगी. इन दिनों प्रवाहों का असर समाज क्षेत्र में भारी था.

उद्योग और आर्थिक क्षेत्र के मुआफ़िक़, इस क्षेत्र में भी 1885 के बाद के युग में, अखिल भारतीय सामाजिक परिषद् जैसी सस्था ने जन्म लिया.

विद्या क्षेत्र

विद्या क्षेत्र में भी ध्यान देने योग्य सुधार होते जाते थे. युनिवर्सिटियों में अंग्रेजी की पढ़ाई तो होती थी. उसके साथ प्राचीन भाषाओं का अभ्यास भी शुरू हुआ. संस्कृत, फ़ारसी अरबी नये ढंग से पढ़ी जाने लगीं. पुरानी शास्त्रीपद्धति और पाठशालाओं का महत्त्व कम होने लगा. इसका असर देश की भाषाओं पर पड़ने लगा. सादी देशी भाषाओं में इन प्राचीन भाषाओं के शब्दों और प्रयोगों की भरमार होने लगी. दूसरी ओर अंग्रेजी ने भी असर डालना शुरू किया.

पढ़ाई से नौकरियां हासिल करने की क़ाबलियत भी आने लगी. विद्याभ्यास करने के लिये विलायत जाना शुरू हुआ. नई विद्याओं के पंडित भी तैयार होने लगे. उनकी नामावली भी देखनी चाहिये. ख़ास तौर पर तीन प्रांत— बम्बई, मद्रास, बंगाल—जहां पहली युनिवर्सिटियां क़ायम हुई, वहां यह ख़ास तौर पर देखने को मिलता है.

अलीगढ़ की मुसलिम हलचल

ज़माने के इस दौर में सर सैयद अहमद ख़ां ने अलीगढ़ को मरकज़ बनाकर मुसलमानों की तालीम में एक नई धारा बहाई. बलवे में मुसलमानों पर अंग्रेज़ों को शुबहा हुआ कि यह क़ौम तूफ़ानी है. इस शुबहे को दूर करने के लिये सर सैयद ने ख़ास कोशिश की. दूसरी ओर उन्होंने मुसलमानों की क़दीम जड़ प्रथाओं को दूर किया, और नई अंग्रेज़ी तालीम दाख़िल करने की कोशिश शुरू की. अलीगढ़ युनिवर्सिटी उसी का नतीजा है.

इस तख़य्युल के आजू-बाजू उर्दू ज़बान का भी विकास होता गया. हाली, इक़बाल, शिबली आदि लेखक इस सिलसिले में याद आते हैं. इस विचारधारा का अध्ययन और उसकी छानबीन करनी चाहिये.

इस दौर में फ़िरक़ेवाराना ख़याल का ज़हरीला बीज नहीं था यह ठीक है; लेकिन एक छोटी सी भिन्नता को लेकर आगे बढ़ने से, एक सोते से जो दो अलग अलग धारायें निकलीं

جاتی پانتی کے بھید بھاؤں کا تیاگ، اتیادی انیک چیزیں ان اس مہاپرش کے جیون میں سہج گنگا کے سمان پیدا ہوئیں؛ اور اُن کی مہان شکتی اور تیج اتنا زیادہ تھا کہ جنہوں نے آدھونک شکشا پراپت کی تھی ایسے وویکانند کو بھی پرمھنس نے اپنی طرف کھینچا. بنگال میں کیشو چندر سین، دیویندر ناتھ وغیرہ برھم سماج وادیوں کے زمانے میں بھی اِس مہا گنگا کا پرواہ پورن روپ سے آگے بڑھا، اور دیش میں سب جگہ اُس کے جل سے سنچائی ہونے لگی. اِن دونوں پرواھوں کا اثر سماج چھیتر میں بھاری تھا.

اُدیوگ اور آرتھک چھیتر کے موافق اِس چھیتر میں بھی 1885 کے بعد کے یگ میں، اکھل بھارتیہ ساماجک پریشد جیسی سنستھا نے جنم لیا.

ودیا چھیتر

ودیا چھیتر میں بھی دھیان دینے یوگیہ سدھار ہوتے جاتے تھے. یونیورسٹیوں میں انگریزی کی پڑھائی تو ہوتی تھی. اُس کے ساتھ پراچین بھاشاؤں کا ابھیاس بھی شروع ہوا. سنسکرت، فارسی، عربی نئے ڈھنگ سے پڑھائی جانے لگیں. پرانی شاستری پدھتی اور پاٹھ شالاؤں کا مہتو کم ہونے لگا. اِس کا اثر دیش کی بھاشاؤں پر پڑنے لگا. سادی دیشی بھاشاؤں میں اِن پراچین بھاشاؤں کے شبدوں اور پریوگوں کی بھرمار ہونے لگی. دوسری اُور انگریزی نے بھی اثر ڈالنا شروع کیا.

پڑھائی سے نوکریاں حاصل کرنے کی قابلیت بھی آنے لگی. ودیابھیاس کرنے کے لئے ولایت جانا شروع ہوا. نئی ودیاؤں کے پنڈت بھی تیار ہونے لگے. اُن کی ناماولی بھی دیکھنی چاھئے. خاص طور پر تین پرانت—بمبئی، مدراس، بنگال—جہاں پہلی یونیورسٹیاں قائم ہوئیں، وھاں یہ خاص طور پر دیکھنے کو ملتا ھے.

علیگڑھ کی مسلم ھلچل

زمانے کے اُس دور میں سر سید احمد خاں نے علیگڑھ کو مرکز بناکر مسلمانوں میں تعلیم کی ایک نئی دھارا بہائی. بلوے میں مسلمانوں پر انگریزوں کو شبہ ہوا کہ یہ قوم طوفانی ھے. اُس شبھے کو دور کرنے کے لئے سر سید نے خاص کوشش کی. دوسری اُور انھوں نے مسلمانوں کی قدیم جڑ پرتھاؤں کو دور کیا، اور نئی انگریزی تعلیم داخل کرنے کی کوشش شروع کی. علیگڑھ یونیورسٹی اُسی کا نتیجہ ھے.

اِس تخیل کے آزوبازو اُردو زبان کا بھی وکاس ہوتا گیا. حالی، اقبال، شبلی آدی لیکھک اس سلسلہ میں یاد آتے ھیں، اُس وچار دھارا کا ادھین اور اُس کی چھان بین کرنی چاھئے.

اِس دور میں فرقہ وارانہ خیال کا زہریلا بیج نہیں تھا یہ ٹھیک ھے؛ لیکن ایک چھوٹی سی بھنتا کو لیکر آگے بڑھنے سے، ایک سوتے سے جو دو الگ الگ دھارائیں نکلیں

इस महाप्रयाण का असर जीवन के सभी अंगों पर पहुंचा. किसी नये रास्ते पर जाना है, ऐसा भाव प्रजा की ऊच्च श्रेणी के लोगों में पैदा होने लगा. उनके ज़रिये अपनी रुचि, क़ाबलियत और ताक़त के मुताबिक़ नये विचारों को सेया जाने लगा. जैसा कि—

आर्थिक क्षेत्र में नये विचार

आर्थिक क्षेत्र में देखें. श्री रमेशचंद्र दत्त, दादाभाई नवरोजी, तथा न्यायमूर्ति रानाडे ने इसके बारे में गहराई से सोचना शुरू किया. 'ड्रेईन' वाद—अपने देश की संपत्ति अंग्रेज़ राज्यनीति के कारन कम होती जा रही है, और उसकी उल्टी धारा बह रही है—यह विचार इस युग में हमारे नेताओं ने पेश किया रेल आयी. लेकिन खेती और क़हत के बारे में दुख का अनुभव हुआ.

देश के उद्योग धन्दे मरने लगे और भुखमरी तथा ग़रीबी अपने पैर जमाने लगी.

ये ख़याल लम्बे और गहरे सोच विचार के नतीजे की शक्ल मे पेश हुए और आज वे पुस्तकाकार में देखने को मिलते हैं. ख़ास बात तो यह है कि नये ज़माने के नये उद्योगो की नींव डालने वाले हिम्मत वाले उद्योगवादी भी पैदा हुए. देश का वस्त्र-उद्योग इस काल में शुरू हुआ. श्री जमशेद जी टाटा, और रणछोड़ भाई 'रेंटियावाला' इस युग के मशहूर और नुमायां हस्तियां हैं.

इन विचारों से ही इस युग के अन्त मे ईसवी 1885 के बाद कुल हिन्द उद्योग और आर्थिक परिषद जैसी संस्था की रचना हुई.

समाज सुधार क्षेत्र

इस फेहरिस्त में लेने के क़ाबिल एक और सामाजिक क्षेत्र है. नये मज़हबी विचार ने हिन्दू समाज मे कई एक उदार भावो को प्रेरणा दी. जैसे कि जाति प्रथा की कूप मंडूकता, छुआछूत की अधार्मिकता, औरतों की इज्ज़त का भाव, विवाह-शादी आदि प्रथाओं में सुधार की भावना वग़ैरा. परदेश गमन, विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा, छुआछूत का नाश, जातियों का त्याग, इत्यादि समाज सुधार इस युग मे पैदा हुए. इस क्षेत्र में आर्य समाज ने बहुत काम किया.

देश का हित सोचने वाले हर एक महान पुरुष ने इस युग मे ऐसा महसूस किया कि हिन्दुस्तान में नये विचारों को दाख़िल करने की जरूरत है. यह विचार ख़ास तौर पर अंग्रेजी विद्याओं से पैदा हुआ. लेकिन आ 'समाज ने हिन्दू धर्म से प्रेरना ली यह ध्यान देने योग्य बात है. परमहंस की बात भी ऐसी ही थी. दयानन्द सरस्वती के मुक़ाबले में परमहंस कुछ पढ़े नहीं थे. हमारे देश की जनता में जो परम उदार धर्म दृष्टि और जीवन भावना थी, वह उनके द्वारा प्रगट हुई. सर्वधर्म समभाव, सेवा के ज़रिये साधना, स्त्री सम्मान,

اِس مہاپریان کا اثر جیون کے سبھی انگوں پر پہونچا. کسی نئے راستے پر جانا ھے' ایسا بھاؤ پرجا کی اُوچ شرینی کے لوگوں میں پیدا ہونے لگا. ان کے ذریعہ اپنی رچی' قابلیت اور طاقت کے مطابق نئے وچاروں کو سیبا جانے لگا. جیسا کہ—

آرتھک چھیتر میں نئے وچار

آرتھک چھیتر میں دیکھیں. شری رمیش چندر دت' دادا بھائی نوروجی' تتھا نیائےمورتی راناڈے نے اس کے بارے میں گہرائی سے سوچنا شروع کیا. ڈرینیں واد—اپنے دیش کی سمپتی انگریز راج نیتی کے کارن کم ہوتی جارہی ھے' اور اُس کی اُلٹی دھارا بہ رہی ھے—یہ وچار اُس یگ میں ہمارے نیتاؤں نے پیش کیا. ریل آئی لیکن کھیتی اور قحط کے بارے میں دکھ کا انوبھو ہوا.

دیش کے اُدیوگ دھندے مرنے لگے اور بھکمری تتھا غریبی اپنے پیر جمانے لگی.

یہ خیال لمبے اور گہرے سوچ وچار کے نتیجے کی شکل میں پیش ہوئے اور آج وے پستکاکار دیکھنے کو ملتے ہیں. خاص بات تو یہ ھے کہ نئے زمانے کے نئے اُدیوگوں کی نیو ڈالنے والے ہمت والے ادیوگ وادی بھی پیدا ہوئے. دیش کا وستر اُدیوگ اِس کال میں شروع ہوا. شری جمشید جی ٹاٹا' اور رنچھوڑ بھائی رینٹھیا والا' اِس یگ کے مشہور اور نمایاں ہستیاں ہیں.

اِن وچاروں سے ہی اِس یگ کے انت میں عیسوی 1885 کے بعد کل ہند اُدیوگ اور آرتھک پریشد جیسی سنستھا کی رچنا ہوئی تھی.

سماج سدھار چھیتر

اِس فہرست میں لینے کے قابل ایک اور سماجک چھیتر ھے. نئے مذہبی وچار نے ہندو سماج میں کئی ایک اُدار بھاؤں کو پریرنا دی. جیسے کہ جاتی پرتھا کی کوپ منڈوکتا' چھوا چھوت کی ادھارمکتا' عورتوں کی عزت کا بھاؤ' وواہ-شادی آدی پرتھاؤں میں سدھار کی بھاؤنا وغیرہ. پردیش گمن' ودھوا وواہ' استری شکشا' چھوا چھوت کا ناش' جاتیوں کا تیاگ اتیادی سماج سدھار اِس یگ میں پیدا ہوئے. اِس چھیتر میں آریہ سماج نے بہت کام کیا.

دیش کا ہت سوچنے والے ہر ایک مہان پرش نے اِس یگ میں ایسا محسوس کیا کہ ہندستان میں نئے وچاروں کو داخل کرنے کی ضرورت ھے. یہ وچار خاص طور پر انگریزی ودیاؤں سے پیدا ہوئے. لیکن آریہ سماج نے ہندو دھرم سے پریرنا لی یہ دھیان دینے یوگیہ بات ھے. پرمہنس کی بات بھی ایسی ہی تھی. دیانند سرسوتی کے مقابلے میں پرمہنس کچھ پڑھے نہیں تھے. ہمارے دیش کی جنتا میں جو پرم اُدار دھرم درشٹی اور جیون بھاؤنا تھی' وہ اُن کے دوارا پرگٹ ہوئی. سروَدھرم سم بھاؤ' سیوا کے ذریعے سادھنا' استری سمان'

इन सब प्रवृत्तियों में नया तत्व यह था कि ये ज़िन्दगी के मज़हबी नज़रिये का पुनरुद्धार करके, उसके ज़रिये पूरी ज़िन्दगी में नयी शक्ति को संचारित करके इनक़लाब पैदा करना चाहती थीं और उसका स्वरूप व्यक्तिगत नहीं बल्कि सामुदायिक और सामाजिक था. सिर्फ़ स्वर्ग या मोक्ष की परंपरागत दृष्टि गौण होती जाती थी. और सामुदायिक जीवन के तरफ़ भी व्यक्ति की ज़िम्मेदारी है, और वह भी सेवा की पात्र है, यह भाव मुख्य होता जाता था.

और दूसरी बात यह है कि ख़ास करके अमुक विस्तार में ही पैदा हुईं और वहीं शक्तिशाली हुईं, फिर भी वे स्थानिक नहीं थीं, बल्कि समग्र भारतीय प्रजा में उनका विस्तार हो ऐसी संकल्प वाली थीं.

इनमें अमुक ख़ास प्रकार के भाव ज़रूर थे. जैसे कि ये सब प्रवृत्तियां विशेषतया हिन्दू धर्म के बारे में होने से, हिन्दू जाति से—जो कि अधिक सख्या में थी—सम्बन्धित थीं; लेकिन बाद के समय में जिस धार्मिक कर्मवाद को पैदा होते हमने देखा वह ज्ञानपूर्वक उसमें नहीं था. आर्य-समाज को इनमें से अपवाद स्वरूप मानना चाहिये. उसमें कट्टर हिन्दूवाद—और वह भी वेदवाद के रूप में—था. तत्कालीन हिन्दू समाज में धार्मिक और सामाजिक सुधार करने के लिये उसका जन्म हुआ, लेकिन साथ साथ ईसाई या मुसलिम धर्म के प्रति ख़ास कट्टर भाव को लेकर उसने जन्म लिया. धर्मवाद उग्र राष्ट्रवाद के लक्षण उसमें थे, जो कि बाद के युग में और आज भी राजकीय हिन्दूवाद के पोशक बने हैं.

प्रार्थना समाज, ब्रह्म समाज, थियोसोफ़ी इत्यादि प्रवृत्तियों में अंग्रेज़ी युग के असर का एक ख़ास भाव था. उनका माध्यम अंग्रेज़ी भाशा थी, जबकि आर्यसमाज ने ज्ञानपूर्वक हिन्दी को अपना माध्यम रखा था. यहां यह लिखना चाहिये कि प्रार्थना समाज में श्री भंडारकर ने मराठी को और गुजरात में श्री महीपतराम ने गुजराती को अपनाया था. इस वजह से ये प्रवृत्तियां नये, अंग्रेज़ी पढ़े हुए लोगों तक ही महदूद रहीं. वह उन लोगों के सिवा बाहर न फैल सकीं.

इस क्षेत्र के ज्योतिधर ये हैं :—

केशवचंद्र सेन	(1838—1884)
देवेन्द्रनाथ ठाकुर	(1818—1905)
दयानंद सरस्वती	(1824—1883)
रामकृष्ण परमहंस	(1834—1886)
महादेव गोविन्द रानाडे	(1842—1901)
रामकृष्ण गोपाल भंडारकर	(1837—1925)
ब्लेवेट्स्की	(1831—1891)
कर्नल आल्कोट	(1832—1907)
मिसेज़ बेसेंट	(1874—1933)

اِن سب پرورتیوں میں نیا تتو یہ تھا کہ یہ زندگی کے مذہبی نظریہ کا پنردھار کر کے' اُس کے ذریعے پوری زندگی میں نئی شکتی کو سنچارت کر کے انقلاب پیدا کرنا چاھتی تھیں اور اُس کا سوروپ ویکتی گت نہیں بلکہ سامودائک اور ساماجک تھا . صرف سورگ یا موکچھ کی پرمپراگت درشٹی گونڑ ھوتی جاتی تھی اور سامودائک جیون کے طرف بھی ویکتی کی ذمہ‌داری ھے' اور وہ بھی سیوا کی پاتر ھے' یہ بھاؤ مکھیہ ھوتا جاتا تھا .

اور دوسری بات یہ ھے کہ خاص کر کے امک وستار میں ھی پیدا ھوئیں اور وھیں شکتشالی ھوئیں . پھر بھی وے استھانک نہیں تھیں' بلکہ سمگر بھارتیہ پرجا میں اُن کا وستار ھو ایسی سنکلپ والی تھیں .

اِن میں امک خاص پرکار کے بھاؤ ضرور تھے جیسے کہ یہ سب پرورتیاں وشیشتیا ھندو دھرم کے بارے میں ھونے سے' ھندو جاتی سے—جو کہ ادھک سنکھیا میں تھی—سمبندھت تھیں؛ لیکن بعد کے سمے میں جس دھارمک کرمواد کو پیدا ھوتے ھم نے دیکھا وہ گیان پوروک اُس میں نہیں تھا . آریہ سماج کو ان میں سے اپواد سوروپ ماننا چاھئے . اُس میں کٹر ھندو واد—اور وہ بھی ویدواد کے روپ میں—تھا . تتکالین ھندو سماج میں دھارمک اور ساماجک سدھار کرنے کے لئے اُس کا جنم ھوا' لیکن ساتھ ساتھ عیسائی یا مسلم دھرم کے پرتی خاص کٹر بھاؤ لے کر اُس نے جنم لیا . دھرم واد اُگر راشٹرواد کے لچھن اُس میں تھے' کہ جو بعد کے یگ میں اور آج بھی راجکیہ ھندو واد کے پوشک بنے ھیں .

پرارتھنا سماج' برھم سماج' تھیوسوفی اِتیادی پرورتیوں میں انگریزی یگ کے اثر کا ایک خاص بھاؤ تھا. اُن کا مادھیم انگریزی بھاشا تھی' جبکہ آریہ سماج نے گیان پوروک ھندی کو اپنا مادھیم رکھا تھا. یہاں یہ لکھنا چاھئے کہ پرارتھنا سماج میں شری بھنڈارکر نے مراٹھی کو اور گجرات میں شری مہیپت رام نے گجراتی کو اپنایا تھا . اِس وجہ سے یہ پرورتیاں نئے' انگریزی پڑھے ھوئے لوگوں تک ھی محدود رھیں . وہ اُن لوگوں کے سوا باھر نہ پھیل سکیں .

اِس چھیتر کے جیوتی دھر یہ ھیں :—

کیشو چندر سین	(1838 - 1884)
دیوندر ناتھ ٹھاکر	(1818—1905)
دیانند سرسوتی	(1824—1883)
رام کرشن پرمھنس	(1834—1886)
مہادیو گووند رانا ڈے	(1842—1901)
رام کرشن گوپال بھنڈارکر	(1837—1925)
بلیوٹسکی	(1831—1891)
کرنل آل کوٹ	(1832—1907)
مسیز بیسنٹ	(1874—1933)

राजा राममोहन राय से गांधी जी
(1857-1885)

श्री मगनभाई देसाई

अनुवादक—श्री कनुभाई ना. पटेल

नई ज़िन्दगी का सवेरा

एक तरह से देखें तो यह ज़माना आज़ादी की बुनियादी नींव का ज़माना माना जा सकता है. उस समय जो मनोमंथन हुआ, उसके नवनीत स्वरूप सन 1885 में राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस का जन्म हुआ. हमारी क़ौमी ज़िन्दगी के सब सीग़ों में यह मनोमंथन हुए थे, और उसके मंथन कारों के नाम हमारे मौजूदा ज़माने के महान राष्ट्र पुरुषों की हैसियत से इतिहास मे दर्ज हैं.

इस युग की शुरूआत अंग्रेज़ हुक्मरानों ने एक ओर से हथियारबन्दी का क़ानून बनाकर और दूसरी ओर से अंग्रेज़ी विश्वविद्यालयों को क़ायम करके किया. नये कर लगाये गये और नयी राज्य व्यवस्था भी क़ायम की गई. और उसके साथ साथ—कौन जानता है कि रियाया हिन्द कब क्या कर बैठे—ऐसा एक डर भी अपने मन में जमा लिया. इस वजह से बेऐतबारी और बंदोबस्त का राज्य-मानस नयी नीति की तमहीद की शक्ल में बना ऐसा कहा जा सकता है.

रचनात्मक (तामीरी) सुधारवाद का जन्म

फ़ौरन उस समय के लिये तो क्रान्ति की बलवती भावना दब गई. दबी हुई आग जैसा हुआ होगा उसे भी उभरने में समय लगा. हिंसक क्रान्ति के इस मानस को 1885 के युग में साफ़ गिनने की ज़रूरत हो, ऐसा ज़ाहिर नहीं होता.

लेकिन जिसे रचनात्मक सुधारवाद कहा जा सके वह नवविधान देश के विविध क्षेत्रों में पैदा हुआ. उसके पराक्रमी पुरस्कर्ता इस ज़माने के मशहूर नेता हैं, जिनकी समग्र विचार सृष्टि इस रचनात्मक सुधारवाद को जन्म देने वाली साबित हुई.

मज़हबी दायरे में नई तामीर

मज़हबी दायरे में देखें तो (1) ब्रह्म समाज का विकास तथा प्रार्थना समाज का उदय (ईसवी 18 0), (2) आर्य समाज का उदय (ईसवी 1875) तथा विकास, (3) थियोसाफ़ी और हिन्दू धर्म की तरफ़ नया नज़रिया, तथा (4) रामकृष्ण परमहंस की जीवन दृष्टि. ये सब ज़ोरदार कोशिशें उस ज़माने की हैं.

راجا رام موھن رائے سے گاندھی جی
(1857-1885)

شری مگن بھائی دیسائی

انوواد‌ک—شری کنو بھائی نا . پٹیل

نئی زندگی کا سویرا

ایک طرح سے دیکھیں تو یہ زمانہ زندگی کی بنیادی نیو کا زمانہ مانا جا سکتا ھے . اُس سمے جو منومنتھن ھوا اس کے نونیت سروپ سن 1885 میں راشٹریہ مہاسبھا کانگریس کا جنم ھوا . ھماری قومی زندگی کے سب صیغوں میں یہ منومنتھن ھوئے تھے اور اُس کے منتھن کاروں کے نام ھمارے موجودہ زمانے کے مہان راشٹر پرشوں کی حیثیت سے اِتہاس میں درج ھیں .

اِس یگ کی شروعات انگریز حکمرانوں نے ایک اُور سے ھتھیار بندی کا قانون بنا کر اور دوسری اُور سے انگریزی وشووِدیالیوں کو قائم کر کے کیا . نئے کر لگائے گئے اور نئی راج ویوستھا بھی قائم کی گئی . اور اُس کے ساتھ ساتھ—کون جانتا ھے کہ رعایا ھند کب کیا کر بیٹھے—ایسا ایک ڈر بھی اپنے من میں جما لیا . اس وجہ سے بےاعتباری اور بندوبست کا راجیہ مانس نئی نیتی کی تمہید کی شکل میں بنا ایسا کہا جا سکتا ھے .

رچناتمک (تعمیری) سدھار واد کا جنم

فوراً اُس سمے کے لئے تو کرانتی کی بلوتی بھاونا دب گئی . دبی ھوئی آگ جیسا کچھ ھوا ھوگا اسے بھی ابھرنے میں سمے لگا . ھنسک کرانتی کے اس مانس کو سن 1885 کے یگ میں صاف گننے کی ضرورت ھو ایسا ظاھر نہیں ھوتا .

لیکن جسے رچناتمک سدھارواد کہا جا سکے وہ نوودھان دیش کے وِوِدھ چھیتروں میں پیدا ھوا . اُس کے پراکرمی پرسکرتا اِس زمانے کے مشہور نیتا ھیں جن کی سمگر وچار سرشٹی اِس رچناتمک سدھار واد کو جنم دینے والی ثابت ھوئی .

مذھبی دائرے میں نئی تعمیر

مذھبی دائرے میں دیکھیں تو (1) برھم سماج کا وکاس تتھا پرارتھنا سماج کا اُدے (عیسوی 1860) (2) آریہ سماج کا اُدے (عیسوی 1875) تتھا وکاس (3) تھیوسفی اور ھندو دھرم کی طرف نیا نظریہ تتھا (4) رام کرشن پرم ھنس کی جیون درشٹی یہ سب زوردار کوششیں اُس زمانے کی ھیں .

हो सके और आला अफ़सरों में उनकी रसाई हो सके. कुछ लोग परदे के गुणों के क़ायल नहीं हैं लेकिन परदादारों से वे डरते हैं और महज़ ऐसी जगह परदा हटाते हैं जहां उनकी ज़्यादा नुक़्ताचीनी न हो. नये और पुराने विचारों में सामञ्जस्य पैदा करने में जो झिझक होती है वही झिझक आज परदे का आधार बनी हुई है. पुरानी हालतों में परवरिश पाये हुये मर्द और औरतें आज अपने को नई विचार-धारा में मजबूरन बहते पा रहे हैं. नई आज़ादी के फ़र्ज़ों से नावाक़िफ़ वे अपने को अजीब-ओ-ग़रीब कैफ़ियत में पाते हैं. नये विचारों के लिये उनके पास शिक्षा-दीक्षा की तय्यारी नहीं है. नतीजा यह है कि बाज़ वक़्त नये सुधारों के प्रयोग नाकाम और विफल हो जाते हैं, घर में प्रेम का धागा टूट जाता है और पति-पत्नी में मनोमालिन्य की रेखा खिंच जाती है.

जहां तक मर्दों और औरतों का साधारण सम्बन्ध है उस पर इन असफल प्रयोगों का और भी बुरा असर पड़ता है. ऐसे मर्द, जिनकी औरतें पर्दे में रहती हैं और जिनका यह विश्वास है कि पर्दे के भीतर ही स्त्री का सतीत्व सुरक्षित रह सकता है, जिन मर्दों के अपने अन्दर आत्म-सयम का कोई निश्चित स्टैन्डर्ड नहीं है, जब वे ऐसी औरतों से मिलते हैं जिन्होंने पर्दे से बाहर निकल कर अपनी आज़ादी हासिल कर ली है, तो वे उनके सम्बन्ध में अपने शक और शुबहे की कहानियां हज़ार कानों में दुहराते फिरते हैं. अपनी बीवियों को पर्दे में रखनेवाले मर्द कभी भी आज़ाद औरतों की सच्ची इज़्ज़त नहीं कर सकते. बहरहाल औरतों को इस तरह के मर्दों की आलोचना और उनकी फैलाई हुई बद-नामियों का मुक़ाबला करना पड़ेगा. हर सूरत में आज़ादी अपनी क़ीमत तो मांगती ही है.

एक गुलाम जिसे अपनी गुलामी का इल्म है और वह अपनी गुलामी की जंजीरों के तोड़ने की कोशिश नहीं करता तो वह जानवर के समान है.

—गांधी

ہوسکے اور اعلیٰ افسروں میں ان کی رسائی ہو سکے. کچھ لوگ پردے کے گنوں کے قائل نہیں ہیں لیکن پردہ داروں سے وے ڈرتے ہیں اور محض ایسی جگہ وے پردہ ہٹاتے ہیں جہاں اُن کی زیادہ نقطہ چینی نہ ہو . نئے اور پرانے وچاروں میں سامنجسیہ پیدا کرنے میں جو جھجک ہوتی ہے وہی جھجک آج پردے کا آدھار بنی ہوئی ہے . پرانی حالتوں میں پرورش پائے ہوئے مرد اور عورتیں آج اپنے کو نئی وچار دھارا میں مجبوراً بہتے پا رہے ہیں . نئی آزادی کے فرضوں سے ناواقف وے اپنے کو عجیب و غریب کیفیت میں پاتے ہیں . نئے وچاروں کے لئے اِن کے پاس شکشا - دیکشا کی تیاری نہیں ہے . نتیجہ یہ ہے کہ بعض وقت نئے سدھاروں کے پریوگ ناکام اور وپھل ہوجاتے ہیں، گھر میں پریم کا دھاگا ٹوٹ جاتا ہے اور پتی پتنی میں منومالنیہ کی ریکھا کھنچ جاتی ہے .

جہاں تک مردوں اور عورتوں کا سادھارن سمبندھ ہے اِس پر اِن اسپھل پریوگوں کا اور بھی برا اثر پڑتا ہے . ایسے مرد، جن کی عورتیں پردے میں رہتی ہیں اور جن کا یہ وشواس ہے کہ پردے کے بھیتر ہی استری کا ستیتو سورکشت رہ سکتا ہے، جن مردوں میں اپنے اندر آتم سیئم کا کوئی نشچت اسٹینڈرڈ نہیں ہے، جب وے ایسی عورتوں سے ملتے ہیں جنھوں نے پردے سے باہر نکل کر اپنی آزادی حاصل کر لی ہے، تو وے ان کے سمبندھ میں اپنے شک اور شبہے کی کہانیاں ہزار کانوں میں دہراتے پھرتے ہیں . اپنی بیویوں کو پردے میں رکھنے والے مرد کبھی بھی آزاد عورتوں کی سچی عزت نہیں کر سکتے . بہر حال عورتوں کو اِس طرح کے مردوں کی آلوچنا اور اُن کی پھیلائی ہوئی بدنامیوں کا مقابلہ کرنا پڑے گا . ہر صورت میں آزادی اپنی قیمت تو مانگتی ہی ہے .

ایک غلام جسے اپنی غلامی کا علم ہے اور وہ اپنی غلامی کی زنجیروں کو توڑنے کی کوشش نہیں کرتا تو وہ جانور کے سمان ہے .

— گاندھی

के लिये ठोस विश्वासों की जरूरत है. बाहरी बचाव के ऐसे साधन पैदा करने चाहियें जिसमें यह कह सकना मुमकिन हो—"मरदों की इस पीढ़ी ने अपनी सामाजिक सत्ता से अपने पैसों के जोर पर अपनी जिन्दगी में किसी औरत को अपनी असमत बेचने के लिये मजबूर नहीं किया और औरतों की यह पीढ़ी है जिसने सिवाय प्रेम के और किसी कारन वश किसी मर्द के निकट कभी भी अपने जीवन मे आत्म समर्पण नहीं किया."

परदा प्रथा के जारी रहने की चाहे जो वजह हों, रिवाज और मजहब चाहे जितना उसका समर्थन करते हों, सवाल उठता है कि क्या उसका किसी भी शक्ल मे जारी रखना मुनासिब और जायज है ? परदे से चूंकि नैतिक समस्याएं हल नहीं हुई हैं लिहाज वह नैतिक दृष्टि से किसी तरह जायज नहीं हो सकता. परदे ने समाज की दुनियावी तरक्क़ी को भी रोका है, लिहाजा वह दुनियावी नुक़्ते नजर से भी जायज नहीं है. हमें यह बताया जाता है कि बाज समाजो में जहां परदा नहीं है वहां के व्यक्तियों का कितना भयंकर पतन हुआ है. मगर हमें यह नहीं बताया जाता कि अधिकांश परदा-रहित समाजों मे लोगों ने अभूतपूर्व उन्नति की है जो परदे के सबब मुमकिन न हो सकती थी.

सभ्य दुनिया ने परदे की सख्त मुखालफत की है. हिन्दुस्तान के अन्दर की फ़िज़ा भी परदे के खिलाफ़ है. आज-कल की दुनिया में कोई मुल्क अपने को और अपने विचारो को दुनिया से अलग करके नहीं रह सकता.

हिन्दुस्तान के मर्दों के दिमाग़ों ने यहां की औरतो की निस्बत बाहरी दुनिया के आन्दोलनों से कहीं ज्यादा असर क़ुबूल किया है. मर्द ही एक तरह से औरतो की आजादी के प्रचारक हैं. चाहे पच्छिम हो और चाहे पूरब हो जब तक औरतें रोटी-कपड़ों के लिये मरदों पर निर्भर हैं तब तक उन्हें मर्दों के स्टैन्डर्ड से ही रहना पड़ेगा. मौजूदा जमाने के मर्दों को महज इस बात मे सन्तोश नहीं है कि उनकी बीवियां उनकी पाशविक वासनाओं को तृप्त करती हैं और उनकी जायज औलादों की मां बनती हैं. लिहाजा औरतो को ज्यादा उदार शिक्षा दी जा रही है कि वे बेहतर क़िस्म की बीवियां बन सकें और उनके अन्दर आकर्षण भी हो और वे लाजशीला भी हों और साथ ही साथ वे बेहतर मांयें भी बन सकें. कुछ बहादुर बहनों ने शिक्षा की वास्तविक भावना से प्रेरित होकर अपने अन्दर व्यक्तिगत क्षमता पैदा की है और आज वे स्त्री-पुरुष के अन्दर सच्ची समता का प्रचार और संगठन कर रही हैं.

इन बाहरी हमलों से परदे का नैतिक ढांचा खस्ता हो रहा है. परदे के कुछ बहुत बड़े हामी इसलिये परदा छोड़ रहे हैं ताकि नये समाज में उन्हें महत्व और रुतबा हासिल

کے لئے ٹھوس وشواسوں کی ضرورت ہے. باہری بچاؤ کے ایسے سادھن پیدا کرنے چاہئے جس میں یہ کہہ سکنا مشکل ہو—"مردوں کی اِس پیڑھی نے اپنی ساماجک ستا سے اپنے پیسوں کے زور پر اپنی زندگی میں کسی عورت کو اپنی عصمت بیچنے کے لئے مجبور نہیں کیا اور عورتوں کی یہ پیڑھی ہے جس نے سوائے پریم کے اور کسی کارن وش کسی مرد کے نکٹ کبھی بھی اپنے جیون میں آتم سمرپن نہیں کیا ."

پردہ پرتھا کی جاری رہنے کی چاہے جو وجہ ہوں' رواج اور مذہب چاہے جتنا اِس کا سمرتھن کرتے ہوں' سوال اُٹھتا ہے کہ کیا اس کا کسی بھی شکل میں جاری رکھنا مناسب اور جائز ہے ؟ پردے سے چونکہ نیتک سمسیائیں حل نہیں ہوئی ہیں لہذا وہ نیتک درشٹی سے کسی طرح جائز نہیں ہوسکتا . پردے نے سماج کی دنیاوی ترقی کو بھی روکا ہے' لہذا وہ دنیاوی نقطہ نظر سے بھی جائز نہیں ہے . ہمیں یہ بتایا جاتا ہے کہ بعض سماجوں میں جہاں پردہ نہیں ہے وہاں کے ویکتیوں کا کتنا بھینکر پتن ہوا ہے . مگر ہمیں یہ نہیں بتایا جاتا کہ ادھیکانش پردہ - رہت سماجوں میں لوگوں نے ابھوت پوروا انتی کی ہے جو پردے کے سبب ممکن نہ ہو سکتی تھی .

سبھیہ دنیا نے پردے کی سخت مخالفت کی ہے . ہندستان کے اندر کی فضا بھی پردے کے خلاف ہے . آجکل کی دنیا میں کوئی ملک اپنے کو اور اپنے وچاروں کو دنیا سے الگ کر کے نہیں رہ سکتا .

ہندستان کے مردوں کے دماغوں نے یہاں کی عورتوں کی نسبت باہری دنیا کے آندولنوں سے کہیں زیادہ اثر قبول کیا ہے . مرد ہی ایک طرح سے عورتوں کی آزادی کے پرچارک ہیں . چاہے پچھم ہو اور چاہے پورب ہو جب تک عورتیں روٹی کپڑوں کے لئے مردوں پر نربھر ہیں تب تک انہیں مردوں کے اسٹینڈرڈ سے ہی رہنا پڑے گا . موجودہ زمانے کے مردوں کو محض اِس بات سے سنتوش نہیں ہے کہ اُن کی بیویاں پاشوک واسناؤں کو ترپت کرتی ہیں اور اِن کی جائز اولادوں کی ماں بنتی ہیں . لہذا عورتوں کو زیادہ اُدار شکشا دی جا رہی ہے کہ وہ بہتر قسم کی بیویاں بن سکیں اور ان کے اندر آکرشن بھی ہو اور وے لجّ شیلا بھی ہوں اور ساتھ ہی ساتھ وے بہتر مائیں بھی بن سکیں . کچھ بہادر بہنوں نے شکشا کی واستوک بھاؤنا سے پریرت ہو کر اپنے اندر ویکتی گت شمتا پیدا کی ہے اور آج وے استری پورش کے اندر سچی سمتا کا پرچار اور سنگٹھن کر رہی ہیں .

اِن باہری حملوں سے پردے کا نیتک ڈھانچہ خستہ ہو رہا ہے . پردے کے کچھ بہت بڑے حامی اِس لئے پردا چھوڑ رہے ہیں تاکہ نئے سماج میں انہیں مہتو اور رتبہ حاصل

में चढ़ सकें. फिर शादियों में लड़कियों की अपनी पसन्द का कोई सवाल नहीं. शादी को तो वालदैन एक ज़रूरी गुनाह समझते हैं. जिनका परदे में एतक़ाद है वे औरतों को यदि गुनाहे मुजस्समा न समझेंगे तो और क्या समझेंगे? औरतों के साथ जो भी सम्पर्क हो और चाहे जिस शक्ल में हो ख़ुदापरस्त मर्दों के नज़दीक वह शर्मनाक है. शरीफ़ मर्द कहीं अपने मुंह से शादी की बात कह सकते हैं और शादी के बाद उनके गुनाहों का नतीजा जो औलाद होती हैं, कहीं उनका ज़िक्र कर सकते हैं!

इनसानी जज़बात का कहां तक ख़ून किया जा सकता है? औरतों को ज़बरदस्ती इस तरह दबाने का नतीजा यह है कि हमारी सन्तानें दिमाग़ी तौर पर आज कमज़ोर हैं, जिस्मानी तौर पर बीमारियों का घर हैं, न उनके अन्दर कोई अनुशासन है, न बच्चों का लालन-पालन ही वैज्ञानिक ढंग से होता है, और न घरों के अन्दर सौन्दर्य और एकरसता है. आजकल के घर तो भद्दे रिवाजों और दक़ियानूसी परम्पराओं के अड्डे हैं.

नतीजा यह है कि सारे वातावरण में फ़ालिज का सा असर है. मरदों के हाथ में पैसा है, लिहाज़ा उन्होंने इस ज़हरीली हवा से अपने को बचाने का रास्ता निकाल लिया है. उन्होंने औरतों को दो वर्गों में बांट दिया है. एक वर्ग में उनकी बीवियां, माएं और बेटियां हैं जिनकी हुर्मत की पहरेदारी करना वे अपना पाक फ़र्ज़ समझते हैं. और दूसरे वर्ग में ज़माने की ठुकराई हुई वे ग़रीब अबलाएं हैं, जिनके मर्द पैसों से हुस्न और अस्मत ख़रीदते हैं और जिनसे अपने पाप की ज्वाला को सुलगाते हैं. यह परदे का कितना भीषण रूप है जिसने वेश्याओं को समाज के मरदों की संस्कृति का पैमाना बना रखा है.

मरदों की इस घोर अनैतिकता, उनके पाप और उनके गुनाहों पर तहज़ीब का मुलम्मा फेर दिया गया है. मरदों के गुनाहों को—"ऊंह! इसमें क्या रखा है, यह तो सब मर्द करते ही हैं" कहकर टाल दिया जाता है, या बर्दाश्त किया जाता है लेकिन औरतें यदि वही गुनाह करती हैं तो उनके लिये वह एक भयंकर जुर्म हो जाता है; जिसके लिये न सिर्फ़ उन्हें क़ानूनी सज़ा मिलनी चाहिये बल्कि समाज का फ़र्ज़ है कि वह उन्हें लात मारकर बाहर निकाल दे. मरदों को किसी "नतीजे" से डरने की ज़रूरत नहीं है और दुनिया उसी गुनाह को गुनाह समझती है जिस गुनाह का कोई 'नतीजा' होता है.

सदाचार के इसी झूठे रवय्ये ने परदे के झन्डे को ऊंचा खड़ा कर रखा है और यही परदा प्रथा की नैतिक कमज़ोरी है. झूठे विश्वास सदाचार का आधार नहीं बन सकते, न नकारात्मक विश्वास ही उसका आधार बन सकते हैं. सदाचार

میں چڑھ سکیں. پھر شادیوں میں لڑکیوں کی اپنی پسند کا کوئی سوال نہیں . شادی کو تو والدین ایک ضروری گناہ سمجھتے ہیں . جن کا پردے میں اعتقاد ہے وے عورتوں کو یدی گناہ مجسمہ نہ سمجھیں گے تو اور کیا سمجھیں گے ؟ عورتوں کے ساتھ جو بھی سمپرک ہو اور چاہے جس شکل میں ہو خدا پرست مردوں کے نزدیک وہ شرمناک ہے . شریف مرد کہیں اپنے منہ سے شادی کی بات کہہ سکتے ہیں اور شادی کے بعد ان کے گناہوں کا نتیجہ جو اولاد ہوتی ہے' کہیں اِن کا ذکر کر سکتے ہیں !

اِنسانی جذبات کا کہاں تک خون کیا جا سکتا ہے ؟ عورتوں کو زبردستی اِس طرح دبانے کا نتیجہ یہ ہے کہ ہماری سنتانیں دماغی طور پر آج کمزور ہیں' جسمانی طور پر بیماریوں کا گھر ہیں' نہ اِن کے اندر کوئی انوشاسن ہے' نہ بچوں کا لالن پالن ہی ویگیانک ڈھنگ سے ہوتا ہے' اور نہ گھروں کے اندر سوندریہ اور ایک ایکرستا ہے . آجکل کے گھر تو بھدے رواجوں اور دقیانوسی پرمپراؤں کے اڈے ہیں .

نتیجہ یہ ہے کہ سارے واتاورن میں فالج کا سا اثر ہے . مردوں کے ہاتھ میں پیسہ ہے' لہذا اُنہوں نے اِس زہریلی ہوا سے اپنے کو بچانے کا راستہ نکال لیا ہے . اُنہوں نے عورتوں کو دو ورگوں میں بانٹ دیا ہے . ایک ورگ میں اُن کی بیویاں' مائیں اور بیٹیاں ہیں جن کی حرمت کی پہریداری کرنا وے اپنا پاک فرض سمجھتے ہیں . اور دوسرے ورگ میں زمانے کی ٹھکرائی ہوئی وے غریب ابلائیں ہیں' جن کے مرد پیسوں سے حسن اور عصمت خریدتے ہیں اور جن سے اپنے پاپ کی جوالا سلگاتے ہیں . یہ پردے کا کتنا بھیشن روپ ہے جس نے ویشیاؤں کو سماج کے مردوں کی سنسکرتی کا پیمانہ بنا رکھا ہے .

مردوں کی اِس گھور انیتکتا' اُن کے پاپ اور ان کے گناہوں پر تہذیب کا ملمع پھیر دیا گیا ہے . مردوں کے گناہوں کو — " اونہہ ! اس میں کیا رکھا ہے' یہ تو سب مرد کرتے ہی ہیں " کہہ کر ٹال دیا جاتا ہے' یا برداشت کیا جاتا ہے لیکن عورتیں یدی وہی گناہ کرتی ہیں تو اِن کے لئے وہ ایک بھینکر جرم ہو جاتا ہے؛ جس کے لئے نہ صرف انہیں قانونی سزا ملنی چاہئے بلکہ سماج کا فرض ہے کہ وہ اِنہیں لات مار کر باہر نکال دے . مردوں کو کسی " نتیجے " سے ڈرنے کی ضرورت نہیں ہے اور دنیا اُسی گناہ کو گناہ سمجھتی ہے جس گناہ کا کوئی نتیجہ ہوتا ہے .

سداچار کے اِسی جھوٹے رویے نے پردے کے جھنڈے کو اونچا کھڑا کر رکھا ہے اور یہی پردہ پرتھا کی نیتک کمزوری ہے . جھوٹے وشواس سداچار کا آدھار نہیں بن سکتے نہ نکاراتمک وشواس ہی اِس کا آدھار بن سکتے ہیں . سداچار

भी उस वक़्त तक मां बाप पर भार होती हैं जब तक उन्हें किसी ख़ाविन्द के सुपुर्द नहीं कर दिया जाता.

बहुत से लोग इस बात की मुख़ालिफ़त करते हैं कि औरतें आर्थिक क्षेत्र में मरदों के साथ होड़ लगायें. इसकी जो कुछ प्रतिक्रिया पच्छिम के मुल्कों में हुई है उसकी हमारे सामने वे मिसाल पेश करते हैं. हिन्दुस्तान में अभी अरसए-दराज़ तक इस होड़ की गुंजाइश नहीं है चूंकि यहां औरतों और मरदों के कार्य क्षेत्र अलग अलग हैं. पच्छिम में भी इस होड़ के कोई मानी नहीं हैं क्योंकि वहां औरतों और मरदों की मजदूरी में बेहद फ़र्क़ है. हां इससे वहां औरतों और मर्द मज़दूरों के बीच मे काफ़ी ईर्षा और लड़ाई झगड़े रहते हैं. औरतों के काम करने के विरोधी सदियों पुरानी और सड़ी हुई दक़ियानूसी दलीलों को निकाल कर हमारे सामने पेश करते हैं कि औरतें तो जनानख़ाने की शोभा हैं और उनका कार्य-क्षेत्र घर-गिरस्ती है. फ़ासिस्ट इटली और नात्सी जर्मनी ने तो औरतों को जबर्दस्ती घर के अन्दर ढकेल दिया था लेकिन इससे इन मुल्कों में भी बेकारी की समस्या हल नहीं हुई. इससे कोई बड़ा फ़र्क़ नहीं पड़ता कि बेकारों में औरतें हैं या मर्द.

ग़रीबी और मुफ़लिसी ने परदे की बुराइयों को और ज़्यादा नुमायां कर दिया है. अमीर अपनी औरतों को जनानख़ाने में बन्द रखकर भी उन्हें ताज़ा हवा खिला सकते हैं मगर उन शरीफ़ ग़रीबों का क्या हो जो बिलों मे रहते हैं ? हिन्दुस्तानी शहरों की तंग गलियों की अंधेरी कोठरियों मे रहना और फिर ऊपर से परदे की सज़ा ! अमीरों की नक़ल करने में इन ग़रीब औरतों को अपनी सेहत, अपनी तन्दुरुस्ती और अपनी ज़िन्दगी तक क़ीमतन देनी पड़ती है. परदे की इस दर्दनाक क़ीमत का तख़मीना सरकारी रिपोर्टों में आप देख लीजिये. अमीरों और ग़रीबों के लिये ज़िन्दगी यकसां नहीं है. यहां तक कि दोनों के लिये नेकचलनी तक के क़ायदे भी दो तरह के हैं.

परदे की वजह से राजनीति और आर्थिक क्षेत्र में औरतों का कोई महत्व नहीं रह गया. उनकी चहल-पहल का दायरा महज़ घर गिरस्ती ही रह गया है. लेकिन घर गिरस्ती में भी औरतें अपने आपको ख़ुद मुख़्तार नहीं समझ सकतीं. इसकी दो वजहें हैं—(1) औरतें आर्थिक नज़र से मरदों का मुंह जोहती हैं और (2) पूरबी विचार-धारा के अनुसार हर मर्द अपने आपको औरतों से कहीं ज़्यादा बेहतर समझता है. बचपन से ही औरतों के दिमाग़ में यह चीज़ भर दी जाती है कि उन्हें मर्द तभी अच्छा समझेंगे जब वे अपने आपको नेक बेटी, नेक बीवी और नेक मां साबित करेंगी. लड़कियों को महज़ इसलिये अहमियत दी जाती है जिसमें वे आसानी से शादी के बाज़ार

بھی اُس وقت تک ماں باپ پر بھار ہوتی ہیں جب تک اُنہیں کسی خاوند کے سپرد نہیں کردیا جاتا .

بہت سے لوگ اِس بات کی مخالفت کرتے ہیں کہ عورتیں آرتھک چھیتر میں مردوں کے ساتھ ہوڑ لگائیں . اِس کی جو کچھ پرتیکریا پچھم کے ملکوں میں ہوئی ہے اُس کی ہمارے سامنے وے مثال پیش کرتے ہیں۔ ہندستان میں ابھی عرصۂ دراز تک اِس ہوڑ کی گنجائش نہیں ہے چونکہ یہاں عورتوں اور مردوں کے کاریہ چھیتر الگ الگ ہیں . پچھم میں بھی اِس ہوڑ کے کوئی معنی نہیں ہیں کیونکہ وہاں عورتوں اور مردوں کی مزدوری میں بےحد فرق ہے۔ ہاں اِس سے وہاں عورتوں اور مرد مزدوروں کے بیچ میں کافی ایرشا اور لڑائی جھگڑے رہتے ہیں . عورتوں کے کام کرنے کے ورودھی صدیوں پرانی اور سڑی ہوئی دقیانوسی دلیلوں کو نکال کر ہمارے سامنے پیش کرتے ہیں کہ عورتیں تو زنانخانے کی شوبھا ہیں اور ان کا کاریہ چھیتر گھر گرہستی ہے . فاسسٹ اِٹلی اور نازیسی جرمنی نے تو عورتوں کو زبردستی گھر کے اندر ڈھکیل دیا تھا، لیکن اس سے اِن ملکوں میں بھی بےکاری کی سمسیا حل نہیں ہوئی . اس سے کوئی بڑا فرق نہیں پڑتا کہ بےکاروں میں عورتیں ہیں یا مرد .

غریبی اور مفلسی نے پردے کی برائیوں کو اور زیادہ نمایاں کر دیا ہے . امیر اپنی عورتوں کو زنانخانے میں بند رکھ کر بھی تازہ ہوا کھلا سکتے ہیں مگر اُن شریف غریبوں کا کیا ہو جو بلوں میں رہتے ہیں ؟ ہندستانی شہروں کی تنگ گلیوں کی اندھیری کوٹھریوں میں رہنا اور پھر اوپر سے پردے کی سزا ! امیروں کی نقل کرنے میں ان غریب عورتوں کو اپنی صحت، اپنی تندرستی اور اپنی زندگی تک قیمتاً دینی پڑتی ہے . پردے کی اِس دردناک قیمت کا تخمینہ سرکاری رپورٹوں میں آپ دیکھ لیجئے . امیروں اور غریبوں کے لئے زندگی یکساں نہیں ہے . یہاں تک کہ دونوں کے لئے نیک چلنی تک کے قاعدے بھی دو طرح کے ہیں .

پردے کی وجہ سے راج نیتی اور آرتھک چھیتر میں عورتوں کا کوئی مہتو نہیں رہ گیا . اُن کی چہل پہل کا دائرہ محض گھر گرہستی ہی رہ گیا ہے . لیکن گھر گرہستی میں بھی عورتیں اپنے کو خود مختار نہیں سمجھ سکتیں . اِس کی دو وجہیں ہیں—(1) عورتیں آرتھک نظر سے مردوں کا منہ جوہتی ہیں اور (2) پوربی وچار دھارا کے انوسار ہر مرد اپنے آپ کو عورتوں سے کہیں زیادہ بہتر سمجھتا ہے . بچپن سے ہی عورتوں کے دماغ میں یہ چیز بھر دی جاتی ہے کہ اُنہیں مرد تب ہی اچھا سمجھیں گے جب وہ اپنے آپ کو نیک بیٹی، نیک بیوی اور نیک ماں ثابت کرینگی . لڑکیوں کو محض اس لئے اہمیت دی جاتی ہے جس میں وے آسانی سے شادی کے بازار

परदा हिन्दुस्तान की औरतों की राजनैतिक तरक़्क़ी में सब में बड़ी रुकावट रहा है. नये विधान में उन्हें मरदों के बराबर राजनैतिक अधिकार दिये गये हैं. इन अधिकारों की उस समय तक कोई क़ीमत नहीं जब तक औरतें अमली राजनीति से अलहदा हैं और जब तक वे नागरिकता के फ़र्ज़ और अपने हुक़ूक़ से बेख़बर हैं. महज़ वोट देने का हक़ मिल जाने से उन्हें राजनैतिक अधिकार नहीं मिल गये. वोट की अहमियत तब है जब उसे ख़ुदमुख़्तार तरीक़े से और आज़ादी से इस्तेमाल किया जाय. जनतन्त्र राजनैतिक तालीम को ज़रूरी समझता है और परदे में रहने वाली औरतों को राजनैतिक तालीम नहीं मिल सकती. परदे की वजह से महज़ चन्द औरतें राजनैतिक संस्थाओं और धारा सभाओं में करोड़ों औरतों की नुमाइन्दगी का तमाशा कर रही हैं.

पर्दानशीन औरतों के वोट का तरीक़ा भी ऐसा है जिसमें बेहद वक़्त और रुपया ख़राब होता है. चारों तरफ़ की आबो-हवा और वोट के तरीक़े का नतीजा यह होता है कि औरतें संकुचित राजनैतिक वातावरण में फंस जाती हैं और स्थानीय और ज़ाती मामलों से ऊपर नहीं उठ पातीं. आजकल के ज़माने में इससे ज़्यादा बदतर चीज़ और क्या हो सकती है ? वैज्ञानिक खोजों और यातायात के साधनों के सबब आजकल छोटी से छोटी बात भी विश्वव्यापी अहमियत अख़्तियार कर लेती है. इसीलिये आजकल के राजनैतिक उसूलों में एक अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण होता है और आजकल की राजनीति समाज के समूचे ढांचे को फिर से गढ़ने का प्रोग्राम लेकर चलती है.

औरतों की हाल की जाग्रति ने परदे को और उनकी अलहदगी को बहुत कुछ कम किया है. सत्याग्रह आन्दोलनों का सब में नुमायां नज़्ज़ारा यह रहा है कि हिन्दुस्तानी औरतों ने ज़नानख़ाने से बाहर निकल कर अपने मरदों के साथ उसमें साहसपूर्ण हिस्सा लिया है. इन बहनों ने दुनिया को यह दिखा दिया कि औरतें भी अमली राजनीति में कितनी पुरअसर हो सकती हैं.

आर्थिक नुक़्ते-नज़र से परदे ने हिन्दुस्तानी ज़िन्दगी का स्तर काफ़ी नीचा कर रखा है. परदे की वजह से एक बहुत बड़ी जनसंख्या, जो मरदों को कमाने में मदद दे सकती थी, बेकार और निकम्मी है. मज़दूर औरतों को छोड़कर, जो परदा नहीं रखतीं, औरतों को अपनी रोज़ी कमाने का कोई ज़रिया नहीं, सिवाय इसके कि वे या तो घरेलू नौकरानी का काम करें, या धायों का काम करें और या शिक्षिकाओं का काम करें. फिर इन पेशों के अन्दर बेशुमार गुंजाइश भी नहीं है. इसलिये ज़्यादातर औरतें अपने मरदों के ऊपर एक आर्थिक भार हैं. ख़ानदानी औरतें, अगर वे अमीर हैं तो काम करने को हिक़ारत की नज़र से देखती हैं. वे

پردہ ہندستان کی عورتوں کی راج‌نیتک ترقی میں سب میں بڑی رکاوٹ رہا ہے ۔ نئے ودھان میں انہیں مردوں کے برابر راج‌نیتک ادھیکار دیئے گئے ہیں ۔ ان ادھیکاروں کی اُس سمے تک کوئی قیمت نہیں جب تک عورتیں عملی راج‌نیتی سے علیحدہ ہیں اور جب تک وے ناگرکتا کے فرض اور اپنے حقوق سے بےخبر ہیں ۔ محض ووٹ دینے کا حق مل جانے سے اُنہیں راج‌نیتک ادھیکار نہیں مل گئے ۔ ووٹ کی اہمیت تب ہے جب اُسے خود مختار طریقے سے اور آزادی سے استعمال کیا جائے ۔ جن‌تنتر راج‌نیتک تعلیم کو ضروری سمجھتا ہے اور پردے میں رہنے والی عورتوں کو راج‌نیتک تعلیم نہیں مل سکتی ۔ پردے کی وجہ سے محض چند عورتیں راج‌نیتک سنستھاؤں اور دھارا سبھاؤں میں کروڑوں عورتوں کی نمائندگی کا تماشہ کر رہی ہیں۔

پردہ‌نشین عورتوں کے ووٹ کا طریقہ بھی ایسا ہے جس میں بےحد وقت اور روپیہ خراب ہوتا ہے۔ چاروں طرف کی آب و ہوا اور ووٹ کے طریقے کا نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ عورتیں سنکوچت راج‌نیتک وتاورن میں پھنس جاتی ہیں اور استھانیہ اور ذاتی معاملوں سے اُوپر نہیں اُٹھ پاتیں ۔ آجکل کے زمانے میں اس سے زیادہ بدتر چیز اور کیا ہوسکتی ہے ؟ ویگیانک کھوجوں اور یاتایات کے سادھنوں کے سبب آجکل چھوٹی سے چھوٹی بات بھی وشوویاپی اہمیت اختیار کرلیتی ہے۔ اسی لئے آجکل کے راج‌نیتک اصولوں میں ایک انترراشٹریہ درشٹی کون ہوتا ہے اور آجکل کی راج‌نیتی سماج کے سموچے ڈھانچے کو پھر سے گڑھنے کا پروگرام لیکر چلتی ہے ۔

عورتوں کی حال کی جاگرتی نے پردے کو اور اُن کی علیحدگی کو بہت کچھ کم کیا ہے ۔ ستیاگرہ آندولنوں کا سب میں نمایاں نظارہ یہ رہا ہے کہ ہندستانی عورتوں نے زنانخانے سے باہر نکل‌کر اپنے مردوں کے ساتھ اُس میں ساہس پورن حصہ لیا ہے ۔ اِن بہنوں نے دنیا کو یہ دکھا دیا کہ عورتیں بھی عملی راج‌نیتی میں کتنی پراثر ہوسکتی ہیں ۔

آرتھک نقطہ نظر سے پردے نے ہندستانی زندگی کا استر کافی نیچا کر رکھا ہے ۔ پردے کی وجہ سے ایک بہت بڑی جن‌سنکھیا، جو مردوں کو کمانے میں مدد دے سکتی تھی، بےکار اور نکمی ہے ۔ مزدور عورتوں کو چھوڑکر، جو پردہ نہیں رکھتیں، عورتوں کو اپنی روزی کمانے کا کوئی ذریعہ نہیں، سوائے اِس کے کہ وے یا تو گھریلو نوکرانی کا کام کریں، یا دھائیوں کا کام کریں اور یا شکشکاؤں کا کام کریں۔ پھر اِن پیشوں کے اندر بےشمار گنجائش بھی نہیں ہے ۔ اس لئے زیادہ‌تر عورتیں اپنے مردوں کے اُوپر ایک آرتھک بھار ہیں ۔ خاندانی عورتیں، اگر وے امیر ہیں تو کام کرنے کو حقارت کی نظر سے دیکھتی ہیں ۔ وے

उसी तरह मंझले ज़माने के केन्द्र बने हुये हैं. नतीजा यह है कि समाज में आज भी कोई औरत अपने को महफ़ूज़ नहीं समझती. जो समाज क़ानून की बन्दिशों में चलता है उसमें इस बात की ज़रूरत ही क्या कि औरत की ख़ास तौर पर हिफ़ाज़त की जाय. ज़माने की आबोहवा में लोगों की चेतना परवरिश पाती है. इस चेतना के अन्दर जितना भी नैतिक (इख़लाक़ी) और अध्यात्मिक (रूहानी) अंश है उसी के बल पर समाज में औरतों की सब में अच्छी हिफ़ाज़त हो सकती है.

इसलाम के जिन सामाजिक और धार्मिक क़ायदों ने परदे को मज़हबन् जायज़ क़रार दिया वे इस मध्य कालीन ज़माने के क़ायदे हैं जब समाज की समस्याएं दूसरे क़िस्म की थीं. ज़माने की रविश को देखते हुए वक़्तन-फ़-वक़्तन मुख़्तलिफ़ उलमाओं ने इसलामी हिदायतों पर अपनी अपनी राय दी है. नतीजा यह है कि क़ुरान की एक ही आयत पर एक दूसरे के ख़िलाफ़ अनेक रायें हैं. सब में ज़्यादा दक़ियानूसी राय के मुताबिक़ परदे का अर्थ है मरदों और औरतों की क़तई अलहदगी. इन लोगों की राय के मुताबिक़ औरतो का महज़ उन्हीं मर्द रिश्तेदारों के आगे निकलना जायज़ है जिनसे शरीयत की रू से उनकी शादी क़तई नामुमकिन है. कुछ लोगों की राय में औरतें जनानख़ाने से बाहर निकल सकती हैं बशर्तेकि वे पूरी तरह से ढकी मुंदी हों. कुछ मौलवी साहबान उन्हें हाथ पैर और मुंह खुला रखने की इजाज़त देते हैं. ये मुख़्तलिफ़ रायें यह ज़ाहिर करती हैं कि वक़्तन-फ़वक़्तन औरतों की तरफ़ मरदों के कमोबेश कितने बुराई के भाव रहे हैं. ये मरदों की नैतिक शक्ति (इख़लाक़ी ताक़त) के पैमाने हैं.

लेकिन परदे के चलन में आर्थिक (इक़्तसादी) स्थिति का भी निर्णायक हाथ रहा है. जहां जहां यह महसूस हुआ है कि औरतें मरदों की तरह ही आर्थिक लाभ की हेतु बन सकती हैं वहां वहां उनमें परदे का रिवाज नहीं है. औरतें बाहर निकल कर कमाई करती हैं और घर गिरस्ती का आधा भार बंटाती हैं। लेकिन परदे का रिवाज उन औरतें के बावजूद प्रचलित हुआ. ग़रीब मज़दूर औरतों का समाज में कोई ख़ास असर तो होता नहीं.

सामन्तशाही समाज में परदे का रिवाज क्यों फैला यह बात समझी जा सकती है. औरतों की समाज में कोई अहमियत न थी और न जनता की राय की ही कोई क़द्र थी. लेकिन जो मुल्क जनतन्त्र (जम्हूरियत) का दावा करते हैं उनमें परदे का रिवाज एक मुअम्मा है. परदा मानव समाज के आधे हिस्से की आज़ादी और उनके हक़ूक़ छीन लेता है. मौजूदा हुकूमतें नागरिकों से बनती हैं, वे जुदागाना हितों वाली औरतों और मरदों से नहीं बनतीं.

اسی طرح ملجھلے زمانے کے کیندر بنے ہوئے ہیں ۔ نتیجہ یہ ہے کہ سماج میں آج بھی کوئی عورت اپنے کو محفوظ نہیں سمجھتی۔ جو سماج قانون کی بندشوں میں چلتا ہے اُس میں اِس بات کی ضرورت ہی کیا کہ عورتوں کی خاص طور پر حفاظت کی جائے ۔ زمانے کی آب و ہوا میں لوگوں کی چیتنا پرورش پاتی ہے ۔ اِس چیتنا کے اندر جتنا بھی نیتک (اخلاقی) اور ادھیاتمک (روحانی) انش ہے اُسی کے بل پر سماج میں عورتوں کی سب میں اچھی حفاظت ہوسکتی ہے ۔

اِسلام کے جن سماجک اور دھارمک قاعدوں نے پردے کو مذہباً جائز قرار دیا وے اِس مدھیہ کالین زمانے کے قاعدے ہیں جب سماج کی سمسیائیں دوسرے قسم کی تھیں۔ زمانے کی روش کو دیکھتے ہوئے وقتاً فوقتاً مختلف علماؤں نے اِسلامی ہدایتوں پر اپنی اپنی رائے دی ہے ۔ نتیجہ یہ ہے کہ قرآن کی ایک ہی آیت پر ایک دوسرے کے خلاف انیک رایں ہیں ۔ سب میں زیادہ دقیانوسی رائے کے مطابق پردے کا ارتھ ہے مردوں اور عورتوں کی قطعی علیحدگی ۔ اِن لوگوں کی رائے کے مطابق عورتوں کا محض انہیں مرد رشتہداروں کے آگے نکلنا جائز ہے جن سے شریعت کی رو سے اُن کی شادی قطعی ناممکن ہے ۔ کچھ لوگوں کی رائے میں عورتیں زنانخانے سے باہر نکل سکتی ہیں بشرطیکہ وے پوری طرح سے ڈھکی مندی ہوں کچھ مولوی صاحبان اُنہیں ہاتھ پیر اور منھ کھلا رکھنے کی اجازت دیتے ہیں ۔ یہ مختلف رائیں یہ ظاہر کرتی ہیں کہ وقتاً فوقتاً عورتوں کی طرف مردوں کے کم و بیش کتنے برائی کے بھاؤ رہے ہیں ۔ یہ مردوں کی نیتک شکتی (اخلاقی طاقت) کے پیمانے ہیں ۔

لیکن پردے کے چلن میں آرتھک (اقتصادی) استھتی کا بھی نرنایک ہاتھ رہا ہے ۔ جہاں جہاں یہ محسوس ہوا ہے کہ عورتیں مردوں کی طرح ہی آرتھک لابھ کی ہیتو بن سکتی ہیں وہاں وہاں اُن میں پردے کا رواج نہیں ہے ۔ عورتیں باہر نکل کر کمائی کرتی ہیں اور گھر گرہستی کا آدھا بار بٹاتی ہیں ۔ لیکن پردے کا رواج اُن عورتوں کے باوجود پرچلت ہوا ۔ غریب مزدور عورتوں کا سماج میں کوئی خاص اثر تو ہوتا نہیں ۔

سامنت شاہی سماج میں پردے کا رواج کیوں پھیلا یہ بات سمجھی جاسکتی ہے ۔ عورتوں کی سماج میں کوئی اہمیت نہ تھی اور نہ جنتا کی رائے کی ہی کوئی قدر تھی ۔ لیکن جو ملک جن‌تنتر (جمہوریت) کا دعویٰ کرتے ہیں اُس میں پردے کا رواج ایک معمہ ہے ۔ پردہ مانو سماج کے آدھے حصے کی آزادی اور اُن کے حقوق چھین لیتا ہے ۔ موجودہ حکومتیں ناگرکوں سے بنتی ہیں، وے جداگانہ ہتوں والی عورتوں اور مردوں سے نہیں بنتیں ۔

हैं. अरब लय पर ज़ोर देते हैं, तुर्क और ईरानी स्वरमाधुर्य पर ज़ोर देते हैं और प्रोफ़ैसर शूस्तरी के अनुसार—"उत्तर भारत की हिन्दू संगीत प्रणाली इन सब पर ज़ोर देती है और वह अरब, ईरानी और मध्य एशियाई संगीत प्रणालियों की समन्वय है. वह व्यापक भारतीय संस्कृति की ज़बर्दस्त मेल करने वाली प्रवृत्ति की परिचायक है. अल-ग़ज़ाली के मुताबिक़ संगीत अपने स्पर्श से इनसान की दिली ख़्वाहिशों और सोती हुई भावनाओं को जगा देता है. वह थके हुये दिमाग़ को चेतना और मुरझाई हुई नसों को उत्तेजना देता है और यही कैफ़ियत इन्सान का ग़ैब से परिचय कराती है और अज्ञेय को उसके निकट ज्ञेय बनाती है.*

ھیں۔ عرب لے پر زور دیتے ھیں' ترک اور ایرانی سور مادھوریہ پر زور دیتے ھیں اور پروفیسر شوستری کے انوسار—"اُتر بھارت کی هندو سنگیت پرنالی اِن سب پر زور دیتی ھے اور وہ عرب' ایرانی اور مدھیہ ایشیائی سنگیت پرنالیوں کی سمنوئے ھے. وہ ویاپک بھارتیہ سنسکرتی کی زبردست میل کرنے والی پرورتی کی پریچایک ھے. الغزالی کے مطابق سنگیت اپنے اسپرش سے اِنسان کی دلی خواھشوں اور سوتی ھوئی بھاوناؤں کو جگا دیتا ھے. وہ تھکے ھوئے دماغ کو چیتنا اور مرجھائی ھوئی نسوں کو اُتیجنا دیتا ھے اور یہی کیفیت اِنسان کا غیب سے پریچے کراتی ھے اور اگیئیہ کو اُس کے نکٹ گیئیہ بناتی ھے."*

जनानख़ाने की .कैदी

زنانخانے کی قیدی

श्रीमती अतिया हबीबुल्ला

شریمتی عطیہ حبیب اللہ

चारों ओर इस बात की कोशिशें हो रही हैं कि हिन्दुस्तान को मंझले ज़माने की हालतों से निकाल कर यहां नये ज़माने की फ़िज़ा पैदा की जाय. इस कैफ़ियत को पैदा करने में सब में बड़ी रुकावट औरतों का परदा और अलहदगी है.

शिकारियों, लड़ाकुओं और ख़ानाबदोश क़बीलों में औरतों की अहमियत सिर्फ़ इतनी थी कि वे ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में लड़कों को पैदा करें और अपने मरदों के आराम आसाइश का ख़याल रखें. वे क़ीमती असबाब की तरह समझी जाती थीं और डाकुओं से उनकी होशियारी से हिफ़ाज़त की जाती थी. बाद में पूरब के मुल्कों में स्वेच्छाचारी शासकों और सामन्तशाही समाज के सबब एक से ज़्यादा शादियों का रिवाज पड़ा. शादियों के अलावा औरतों को रखैल बनाकर रखने का भी रिवाज चला. इन दोनों वजहों से इस बात की ज़रूरत महसूस हुई कि औरतों को हिफ़ाज़तन कहीं अलग रखा जाय. औरतों की इसी अलहदगी की भावना ने बाद में परदे की वह कठोर सूरत अख़्तियार की जो आज हमारे सामने है.

बावजूद नये ज़माने की तालीम के मरदों के अन्दर से वह स्वेच्छाचारी वृत्ति कम नहीं हुई है. वे दिमाग़ी तौर से

چاروں اور اِس بات کی کوششیں ھو رھی ھیں کہ هندستان کو منجھلے زمانے کی حالتوں سے نکال کر یہاں نئے زمانے کی فضا پیدا کی جائے۔ اِس کیفیت کو پیدا کرنے میں سب میں بڑی رکاوٹ عورتوں کا پردہ اور علیحدگی ھے۔

شکاریوں' لڑاکوں اور خانہبدوش قبیلوں میں عورتوں کی اھمیت صرف اتنی تھی کہ وے زیادہ سے زیادہ تعداد میں لڑکوں کو پیدا کریں اور اپنے مردوں کی آرام آسایش کا خیال رکھیں۔ وے قیمتی اسباب کی طرح سمجھی جاتی تھیں اور ڈاکوؤں سے اُن کی ھوشیاری سے حفاظت کی جاتی تھی۔ بعد میں پورب کے ملکوں میں سویچھاچاری شاسکوں اور سامنت شاھی سماج کے سبب ایک سے زیادہ شادیوں کا رواج پڑا۔ شادیوں کے علاوہ عورتوں کو رکھیل بناکر رکھنے کا بھی رواج چلا۔ اِن دونوں وجہوں سے اِس بات کی ضرورت محسوس ھوئی کہ عورتوں کو حفاظتاً کہیں الگ رکھا جائے۔ عورتوں کی اِسی علیحدگی کی بھاونا نے بعد میں پردے کی وہ کٹھور صورت اختیار کی جو آج ھمارے سامنے ھے۔

باوجود نئے زمانے کی تعلیم کے مردوں کے اندر سے وہ سویچھاچاری ورتی کم نہیں ھوئی ھے۔ وے دماغی طور سے

*—Ibid, Vol. 1.

रागों की दवा बताया है और संगीत के तिब्बी पहलू पर विस्तार से लिखा है.‡

यूरोपीय संगीत पर अरबी संगीत ने काफी असर डाला है. अरबी में संगीत का वैज्ञानिक नाम 'म्यूज़िकी' है और इसी से अंग्रेज़ी का 'म्यूज़िक' लफ़्ज़ बना है. मशहूर दार्शनिक राजर बेकन (मौत 1280 ईस्वी) ने यूरोपीय संगीत पर अरब संगीत का क़र्ज़ स्वीकार किया है.*

संगीत की ईरानी, अरबी और तूरानी मिलावट मुसलमानो के साथ साथ भारत आयी. मुसलिम काल मे भारतीय संगीत पर इस नये आये हुये संगीत का काफी असर पड़ा. के दरबार में विविध रागों का क्रम और स्थान मुक़र्रर हुआ. 'भैरों', 'सरस राग', 'भैरवी', 'परच', 'कलंगड़ा', 'साहनी', 'सिन्ध', 'पीलू', आदि राग धार्मिक भजनों के लिये बरते जाने लगे और 'दरबारी', 'मालकोष', 'सहामा', 'मल्हार' 'दुर्गा', आदि राग दरबार में गाये जाने लगे. अरबी ईरानी और भारतीय संगीत के समन्वय से ही मौजूदा भारतीय संगीत का जन्म हुआ. मुग़लो के समय में ही उत्तर और दक्षिण भारत के संगीत का मेल हुआ. सम्राट अकबर और बीजापुर के सुलतान इब्राहीम आदिल शाह दानो संगीत के धनी थे और दानों का संगीत की बारीकियो का खूब ज्ञान था. अकबर ने क़रीब 200 ईरानी रागों का तालबद्ध करवाया और आदिलशाह ने कई नये राग निकाले. संगीत पर लिखी हुई आदिलशाह की 'नौरस' नामक पुस्तक प्रसिद्ध है. कर्नाटकी संगीत पर आदिलशाह का बेहद असर पड़ा. उसके अनेक रागों को कर्नाटक के संगीतज्ञो ने अपना लिया. ग्वालियर का रहने वाला प्रसिद्ध गायक तानसेन अकबर के नौरत्नो मे से था. तानसेन और सूरदास गहरे दोस्तों मे से थे. अकबर के दरबार में अनेक अरब, ईरानी, तुर्क और हिन्दू गवय्ये थे. अकबर और आदिलशाह दाना के दरबार भारतीय दरबार थे. आदिलशाह खुद विद्यादायिनी मां सरस्वती का पुजारी था.❈

विविध देशों के सप्तकों या Notations पर इन दरबारों में अनेक रागों का तरतीब देने की कोशिश की गई. ये विविध सप्तक इस प्रकार हैं—

भारतीय—स, रे, ग, म, प, ध, नी,
यूरोपीय—डो, रे, मी, फ, साल, ला, सि,
ईरानी—यक, दो, से, चार, पंज, शश, हफ़्त,
अरबी—मीम, फ़े, साद, लाम, सीन, दाल, रे.

अरबी संगीत में अलाप के तीव्र स्वर को 'आली', मध्यम स्वर को 'वस्ति' और मन्द स्वर को 'सफ़लि' कहते

راگوں کی دوا بتایا ھے اور سنگیت کے طبی پہلو پر وستار سے لکھا ھے.‡

یوروپیہ سنگیت پر عربی سنگیت نے کافی اثر ڈالا ھے۔ عربی میں سنگیت کا ویگیانک نام 'میوزکی' ھے اور اِسی سے انگریزی کا 'میوزک' لفظ بنا ھے۔ مشہور دارشنک راجر بیکن (موت 1280 عیسوی) نے یوروپیہ سنگیت پر عرب سنگیت کا قرض سوئیکار کیا ھے.*

سنگیت کی ایرانی، عربی اور تورانی ملاوٹ مسلمانوں کے ساتھ ساتھ بھارت آئی۔ مسلم کال میں بھارتیہ سنگیت پر اِس نئے آئے ھوئے سنگیت کا کافی اثر پڑا۔ اکبر کے دربار میں وودھ راگوں کا کرم اور استھان مقرر ھوا۔ 'بھیروں' 'سرس راگ' 'بھیروی' 'پرچ' 'کلنگڑا' 'سوھنی' 'سندھ' 'پیلو' آدی راگ دھارمک بھجنوں کے لئے برتے جانے لگے اور 'درباری' 'مالکوش' 'سہاما' 'ملہار'، 'درگا' آدی راگ دربار میں گائے جانے لگے۔ عربی، ایرانی اور بھارتیہ سنگیت کے سمنوئے سے ھی موجودہ بھارتیہ سنگیت کا جنم ھوا۔ مغلوں کے سمے میں ھی اُتر اور دکشن بھارت کے سنگیت کا میل ھوا۔ سمراٹ اکبر اور بیجاپور کے سلطان ابراھیم عادل شاہ دونوں سنگیت کے دھنی تھے اور دونوں کو سنگیت کی باریکیوں کا خوب گیان تھا۔ اکبر نے قریب 200 ایرانی راگوں کو تال بدھ کروایا اور عادل شاہ نے کئی نئے راگ نکالے۔ سنگیت پر لکھی ھوئی عادل شاہ کی 'نورس' نامک پستک پرسدھ ھے۔ کرناٹکی سنگیت پر عادل شاہ کا بے حد اثر پڑا۔ اُس کے انیک راگوں کو کرناٹک کے سنگیتگیوں نے اپنا لیا۔ گوالیر کا رھنے والا پرسدھ گایک تان سین اکبر کے نورتنوں میں سے تھا۔ تان سین اور سورداس گہرے دوستوں میں سے تھے۔ اکبر کے دربار میں انیک عرب، ایرانی، ترک اور ھندو گویئے تھے۔ اکبر اور عادل شاہ دونوں کے دربار بھارتیہ دربار تھے۔ عادل شاہ خود ودیا دایِنی ماں سرسوتی کا پجاری تھا.❈

وودھ دیشوں کے سپتکوں یا Notations پر اِن درباروں میں انیک راگوں کو ترتیب دینے کی کوشش کی گئی۔ یہ وودھ سپتک اس پرکار ھیں—

بھارتیہ—سا - رے - گا - ما - پا - دھا - نی'
یوروپیہ—ڈو - رے - می - پھا - سول - لا - سی'
ایرانی—یک - دو - سہ - چہار - پنج - شش - ھفت'
عربی—م - ف - ص - ل - س - د - ر.

عربی سنگیت میں الاپ کے تیور سور کو 'عالی' مدھیم سور کو 'وسطی' اور مند سور کو صفیل کہتے

‡—The Extreme Need, by Al-Nuwairi (Translation).
*—History of Islamic Culture, p. 390.
❈—Outlines of Islamic Culture, by A. M. A. Shushtery, Vol. 1.

पांचवीं या आठवीं टूट पर लय को दोहराते थे और इस तरीक़े को वे 'तक़रीब' कहते थे. गाने के साथ साथ जो बाजे होते थे, उनमें 'अल-ऊद' (सितार के क़िस्म का एक बाजा), 'तंबूर' (तम्बूरे की तरह का बाजा), 'क़ानून' (सरोद की तरह का बाजा, जो अंगुश्त मिज़राब से बजाया जाता था), 'क़सबा' (बांसुरी), 'तब्ल', 'डफ़' और 'क़दीब' ख़ास थे. इनके अलावा और भी बहुत से बाजे होते थे, लेकिन वे गाने के पहले या गाने के बाद बजाये जाते थे. अरबी ज़बान में बेशुमार बाजों का ज़िक्र है. उनमें से थोड़ों की भी चर्चा यहां मुमकिन नहीं. बाजों के बनाने में अरबों की योग्यता कला की सीमा तक पहुंच गई थी. इस सम्बन्ध में अरबी में बहुत से ग्रन्थ हैं. सबील जैसे कई शहर अपने बाजों के लिये मशहूर थे.❁

इसलाम से पहले हिरा और ग़स्सान के दरबारों में अरबी संगीत पर ईरानी और यूनानी संगीत की छाप साफ़ दिखाई देती है. यूनान के मशहूर वैज्ञानिक पाइथागोर का बनाया हुआ 'स्वरलय' इ दरबारों में और अल-हिजाज़ में इस्तेमाल किया जाता था. सातवीं सदी के आख़ीर में अरबों ने प्रसिद्ध संगीतज्ञ इब्न मिसजाह की बनाई हुई संगीत की नई प्रणाली अमल में लानी शुरू की. इस प्रणाली में अरब, यूनानी और ईरानी, तीनों, प्रणालियों का सम्मिश्रण था. इसके सम्बन्ध में डाक्टर जे० पी० एन० लैन्ड लिखते हैं—"ईरानी और यूनानी संगीत प्रणालियों ने अरबों की राष्ट्रीय संगीत प्रणाली को नष्ट नहीं किया, बल्कि अरब संगीत की ख़ासियत को क़ायम रखकर ये उस पर क़लम की तरह लग गईं. संगीत की यह प्रणाली बग़दाद के पतन तक बराबर चलती रही. दूसरी ओर अरब संगीत ने यूनानी और ईरानी संगीत प्रणालियों पर असर डाला."*

कट्टर मुसलमान 'गीत को शरई लिहाज़ से अनुचित समझते हैं, लेकिन सूफ़ियों और दरवेशों की सम्प्रदायें संगीत को ध्यान का साधन समझती हैं. संगीत से ही 'हाल' (भक्ति-उन्माद) पैदा होता है और 'हाल' अगम्य में गति देता है. प्रसिद्ध अरब दार्शनिक अल-ग़ज़ाली लिखता है—"हाल मन की वह हालत है जो संगीत सुनकर पैदा होती है."‡ ग़ज़ाली ने लिखा है कि क़ुरान पढ़कर नहीं बल्कि संगीत से 'हाल' पैदा होता है और इसके लिये उसने सात वजहें गिनाई हैं.‡‡ अलकिन्दी लिखता है—"कुछ लोगों के लिये संगीत शराब की तरह है और कुछ के लिये ग़िज़ा की तरह."† विश्वविख्यात हकीम इब्न सीना ने संगीत को अनेक

پانچویں یا آٹھویں ٹوٹ پر لے کو دوہراتے تھے اور اس طریقے کو وے ' تقریب ' کہتے تھے . گانے کے ساتھ ساتھ جو باجے ہوتے تھے' اُن میں ' العود ' (ستار کے قسم کا ایک باجا)' 'طنبور' (تمبورے کی طرح کا باجا)' 'قانون' (سرود کی طرح کا باجا' جو انگشت مضراب سے بجایا جاتا تھا)' 'قصبہ' (بانسری)' 'طبل' 'دف' اور 'قدیب' خاص تھے . اِن کے علاوہ اور بھی بہت سے باجے ہوتے تھے' لیکن وے گانے کے پہلے یا گانے کے بعد بجائے جاتے تھے . عربی زبان میں بےشمار باجوں کا ذکر ہے . اُن میں سے تھوڑوں کی بھی چرچا یہاں ممکن نہیں . باجوں کے بنانے میں عربوں کی یوگتا کلا کی سیما تک پہونچ گئی تھی . اِس سمبندھ میں عربی میں بہت سے گرنتھ ہیں . صبیل جیسے کئی شہر اپنے باجوں کے لئے مشہور تھے . ❁

اسلام سے پہلے ھیرا اور غسان کے درباروں میں عربی سنگیت پر ایرانی اور یونانی سنگیت کی چھاپ صاف دکھائی دیتی ہے . یونان کے مشہور ویگیانک پائیتھا گور کا بنایا ہوا 'سور لے' ان درباروں میں اور الحجاز میں استعمال کیا جاتا تھا . ساتویں صدی کے آخیر میں عربوں نے پرسدھ سنگیتگیہ ابن مسجاہ کی بنائی ہوئی سنگیت کی نئی پرنالی عمل میں لانی شروع کی . اِس پرنالی میں عرب' یونانی اور ایرانی' تینوں پرنالیوں کا سمشرن تھا . اس کے سمبندھ میں ڈاکٹر جے . پی . این . لینڈ لکھتے ہیں—" ایرانی اور یونانی سنگیت پرنالیوں نے عربوں کی راشٹریہ سنگیت پرنالی کو نشٹ نہیں کیا' بلکہ عرب سنگیت کی خاصیت کو قائم رکھکر یہ اُس پر قلم کی طرح لگ گئیں . سنگیت کی یہ پرنالی بغداد کے پتن تک برابر چلتی رہی . دوسری اور عرب سنگیت نے یونانی اور ایرانی سنگیت پرنالیوں پر اثر ڈالا ." *

کٹر مسلمان سنگیت کو شرعی لحاظ سے انوچت سمجھتے ہیں' لیکن صوفیوں اور درویشوں کی سمپردائیں سنگیت کو دھیان کا سادھن سمجھتی ہیں . سنگیت سے ہی 'حال' (بھکتی اُنماد) پیدا ہوتا ہے اور 'حال' اگمیہ میں گتی دیتا ہے. پرسدھ عرب دارشنک الغزالی لکھتا ہے—"حال من کی وہ حالت ہے جو سنگیت سنکر پیدا ہوتی ہے ."‡ غزالی نے لکھا ہے کہ قرآن پڑھکر نہیں بلکہ سنگیت سے 'حال' پیدا ہوتا ہے اور اس کے لئے اُس نے سات وجہیں گنائی ہیں.‡‡ الکندی لکھتا ہے—"کچھ لوگوں کے لئے سنگیت شراب کی طرح ہے اور کچھ کے لئے غذا کی طرح ."† وشووکھیات حکیم ابن سینا نے سنگیت کو انیک

❁—Meadows of Gold—Al-Isfahani (Translation).
*—Arab Music—Dr G. P. N. Land, P. 169.
‡—Al-Ghazzali, Vol. II.
‡‡—Ibid, Vol. II.
†—The Essentials of Knowledge in Music, P. 384.

अरबी गान-विद्या और हिन्दुस्तान

विश्वम्भरनाथ पांडे

गान-विद्या पर अरबी भाशा में सैकड़ों ही किताबें लिखी गई हैं. अरबी किताबों में संगीत के हर पहलू पर रोशनी डाली गई है-संगीत का इतिहास, गीतों का संकलन (मजमुश्रा), बाजो की क़िस्में, संगीत का शरई पहलू, संगीत का रूहानी पहलू, मशहूर गवैयों के जीवन चरित आदि.* संगीत पर अरबी के सब से महान लेखकों में अलमसूदी (मौत 957 ईसवी) और अल-इस्फ़हानी (मौत 967 ईसवी) समझे जाते हैं. अलमसूदी ने अरब संगीत की शुरू की हालत और दूसरे देशों के संगीत के इतिहास पर अपने ग्रन्थों में काफी रोशनी डाली है और अल-इस्फ़हानी ने 21 जिल्दों में अरबी गीतों का संग्रह निकाला है. इब्न ख़ालदून इन जिल्दों को अरबों का 'दीवान' (कविता संग्रह) कहता है. इस्फ़हानी ने इस संग्रह के अलावा संगीत पर और कई किताबें लिखी हैं.❀ एक दूसरे लेखक मुहम्मद इब्न इसहाक़ अल-बराक़ (मौत 995 ईसवी) ने संगीत के उसूलों और अमल, संगीतकी वैज्ञानिकता और संगीत के सर्वप्रिय (सबको पसन्द) पहलुओं पर विस्तार से लेख लिखा है. सन 1258 में बग़दाद के पतन के बाद संगीत पर फिर कोई अच्छा लिखने वाला पैदा नहीं हुआ. आठवीं से लेकर दसवीं सदी तक संगीत पर कई यूनानी ग्रन्थों का अरबी में तरजुमा किया गया.†

यूं तो अरब में गाने और बजाने दोनों ही का प्रचार था, लेकिन अरब जनता ख़ाली बाजे से गाने को ज्यादा पसन्द करती थी और समझ सकती थी. इसकी एक वजह यह भी हो सकती है कि कविता से उन्हें सदा से जबर्दस्त प्रेम था और बाजे शरई नुक़्ते नज़र से ज्यादा इज्जत से नहीं देखे जाते थे. गानों में 'क़सीदा' बहुत आम फ़हम था. क़सीदे के छोटे छोटे रूप भी थे, जिन्हें 'क़िता' कहा जाता था. क़िता के अलावा 'ग़ज़ल' (प्रेम-गीत) और 'मवाल' भी थे. बाद में 'ज़ज्ल' और 'मुवाश शाह' का भी प्रचार हुआ.‡ गीत के स्वरों को लय के साथ सप्तक में गूंथा जाता था. इस सप्तक को अरबी में 'आइक़ा' कहा जाता था. लेकिन आजकल संगीत में जो स्वर और ताल की एकता है, उससे अरब गवैये वाक़िफ़ न थे. तालैक्य की जगह वे चौथी,

عربی گان ودیا اور ہندستان

وشومبھر ناتھ پانڈے

گان ودیا پر عربی بھاشا میں سیکڑوں ہی کتابیں لکھی گئی ہیں. عربی کتابوں میں سنگیت کے ہر پہلو پر روشنی ڈالی گئی ہے. سنگیت کا اِتہاس، گیتوں کا سنکلن (مجموعہ)، باجوں کی قسمیں، سنگیت کا شرعی پہلو، سنگیت کا روحانی پہلو، مشہور گویوں کے جیون چرت آدی. * سنگیت پر عربی کے سب سے مہان لیکھکوں میں المسعودی (موت 957 عیسوی) اور الاصفہانی (موت 967 عیسوی) سمجھے جاتے ہیں. المسعودی نے عرب سنگیت کی شروع کی حالت اور دوسرے دیشوں کے سنگیت کے اِتہاس پر اپنے گرنتھوں میں کافی روشنی ڈالی ہے اور الاصفہانی نے 21 جلدوں میں عربی گیتوں کا سنگرہ نکالا ہے. ابن خالدون ان جلدوں کو عربوں کا 'دیوان' (کویتا سنگرہ) کہتا ہے. اصفہانی نے اس سنگرہ کے علاوہ سنگیت پر اور کئی کتابیں لکھی ہیں. ❀ ایک دوسرے لیکھک محمد ابن اسحاق البراق (موت 995 عیسوی) نے سنگیت کے اصولوں اور عمل، سنگیت کی ویگیانکتا اور سنگیت کے سرو پریہ (سب کو پسند) پہلوؤں پر وستار سے لیکھ لکھا ہے. سن 1258 میں بغداد کے پتن کے بعد سنگیت پر پھر کوئی اچھا لکھنے والا پیدا نہیں ہوا. آٹھویں سے لے کر دسویں صدی تک سنگیت پر کئی یونانی گرنتھوں کا عربی میں ترجمہ کیا گیا. †

یوں تو عرب میں گانے اور بجانے دونوں ہی کا پرچار تھا، لیکن عرب جنتا خالی باجے سے گانے کو زیادہ پسند کرتی تھی اور سمجھ سکتی تھی. اس کی ایک وجہ یہ بھی ہو سکتی ہے کہ کویتا سے انہیں سدا سے زبردست پریم تھا اور باجے شرعی نقطہ نظر سے زیادہ عزت سے نہیں دیکھے جاتے تھے. گانوں میں 'قصیدہ' بہت عام فہم تھا. قصیدے کے چھوٹے چھوٹے روپ تھے، جنہیں 'قطعہ' کہا جاتا تھا. قطعہ کے علاوہ 'غزل' (پریم گیت) اور 'موال' بھی تھے. بعد میں 'زجل' اور 'مواش شاہ' کا بھی پرچار ہوا. ‡ گیت کے سوروں کو لے کے ساتھ سپتک میں گوندھا جاتا تھا. اس سپتک کو عربی میں 'عائقہ' کہا جاتا تھا. لیکن آجکل سنگیت میں جو سور اور تال کی ایکتا ہے، اس سے عرب گویئے واقف نہ تھے. تالیکیہ کی جگہ وے چوتھی،

*—Music—by H. G. Farmer, P. 7.
❀—Great Book of Songs, (Translation) Al-Isfahani (Introduction).
†—Unique Necklace—Ibn Abd Rabbihi.
‡—Legacy of Islam—Edited by Sir T. W. Arnold; p 358-59.

कारण थे, जिनमें 550-600 ईस्वी के बीच में तुर्कों और सासानियों के हाथों सफ़ेद हूणों की हार, श्री हर्ष के पिता प्रभाकर वर्धन की वे जो फ़तहें उन्होंने हूणों, गान्धार, सिन्ध, गुर्जर और मालवा के राजाओं पर हासिल कीं और ख़ुद श्री हर्ष के 20 बरस के सैनिक हमले थे, जिनसे बौद्ध सक प्रवासियों की एक भीड़ जावा पहुंची. अगर इन कारनों में हम नीचे लिखे कारन और जोड़ दें, तो सिन्ध और गुजरात से जावा प्रवास की बात और ज़्यादा साफ़ हो जाती है—

(1) सातवीं सदी के दौरान में तुर्कों और अरबों के हमले.※

(2) मगध से बामियां तक सन् 645-650 में तिब्बती और नैपाली फ़ौजों की कामयाबी.

(3) सिन्ध के बौद्ध सहराई को गद्दी से उतारकर उसके ब्राह्मन मन्त्री छछ का गद्दी पर बैठना और जाटों के साथ उसका ज़ालिमाना बर्ताव.

आठवीं सदी ईसवी में बंगाल से भी प्रवासियों की एक बहुत बड़ी तादाद इसलिये जावा पहुंची चूंकि तिब्बती सेना ने बंगाल को विजय कर लिया था. नवीं सदी में बहुत से भारतीय बौद्धों ने भी जावा में जाकर शरन ली. जावा के प्रवासी भारतीयों की कहानी जावा-भारतीय कलाकारों ने संगतराश की छेनी की मदद से पत्थरों पर नक़्श कर दी है, जो हमेशा ज़िन्दा रहेगी और हम में आत्माभिमान पैदा करती रहेगी. पत्थर की इन रेखाओं में गुजराती राजकुमार के जहाज़ी सफ़र के बड़े सुन्दर और साफ़ चित्र ख़ुदे हुये हैं. सिंहल से चलनेवाले एक भारतीय जहाज़ में ही चौथी सदी के अन्त और पांचवीं सदी ईसवी के शुरू में मशहूर चीनी यात्री फ़ाहियान ने दूसरे 200 यात्रियों के साथ जावा तक यात्रा की थी.* फ़िलेडेल्फ़िया के म्यूज़िअम में भी जावा के भारतीय जहाज़ों के बड़े सुन्दर चित्र मौजूद हैं.

کارن تھے' جن میں 550-600 عیسوی کے بیچ میں ترکوں اور ساسانیوں کے ہاتھوں سفید ہنوں کی ہار' شری ہرش کے پتا پربھاکر وردھن کی وے فتحیں جو انہوں نے ہنوں' گندھار' سندھ' گرجر اور مالوہ کے راجاؤں پر حاصل کیں اور خود شری ہرش کے 20 برس کے سینک حملے تھے' جن سے بودھ سک پرواسیوں کی ایک بھیڑ جاوا پہونچی . اگر ان کارنوں میں ہم نیچے لکھے کارن اور جوڑ دیں' تو سندھ اور گجرات سے جاوا پرواس کی بات اور زیادہ صاف ہوجاتی ہے—

(1) ساتویں صدی کے دوران میں ترکوں اور عربوں کے حملے.※

(2) مگدھ سے بامیاں تک سن 645-650 میں تبتی اور نیپالی فوجوں کی کامیابی .

(3) سندھ کے بودھ صحرائی کو گدی سے اُتارکر اس کے براہمن منتری چھچھ کا گدی پر بیٹھنا اور جاٹوں کے ساتھ اُس کا ظالمانہ برتاو .

آٹھویں صدی عیسوی میں بنگال سے بھی پرواسیوں کی ایک بہت بڑی تعداد اس لئے جاوا پہونچی چونکہ تبتی سینا نے بنگال کو فتح کرلیا تھا . نویں صدی میں بہت سے بھارتیہ بودھوں نے بھی جاوا میں جاکر شرن لی . جاوا کے پرواسی بھارتیوں کی کہانی جاوا - بھارتیہ کلاکاروں نے سنگتراش کی چھینی کی مدد سے پتھروں پر نقش کردی ہے' جو ہمیشہ زندہ رہیگی اور ہم میں آتمابھیمان پیدا کرتی رہےگی . پتھر کی ان ریکھاؤں میں گجراتی راجکمار کے جہازی سفر کے بڑے سندر اور صاف چتر کھدے ہوئے ہیں . سنگھل سے چلنے والے ایک بھارتیہ جہاز میں ہی چوتھی صدی کے انت اور پانچویں صدی عیسوی کے شروع میں مشہور چینی یاتری فاہیان نے دوسرے 200 یاتریوں کے ساتھ جاوا تک یاترا کی تھی.* فلیڈلفیا کے میوزیم میں بھی جاوا کے بھارتیہ جہازوں کے بڑے سندر چتر موجود ہیں .

※—Reinand's-Memoire Sur L' Inde, 170, 176.

*—Beal, Buddhist Records, Vol. II, p. 269.

बसाया."❋ टैवर्नियर लिखता है—"बंगाल की खाड़ी में मछलीपटनम् ही ऐसी जगह है जहां से भारतीय जहाज़ पूर्व की ओर बंगाल, अराकान, पगु, सियाम, सुमात्रा, कोचिन, चीन और मनिल्ला और पश्चिम की ओर होरमुज़, मोखा और मडागास्कर जाते थे."† जावा के उल्लेखों से भी कलिंग और जावा के सम्बन्ध का पता चलता है.‡ डाक्टर भन्डारकर भी इसकी तसदीक़ करते हैं.*

जावा की प्राचीन किंवदन्तियों के मुताबिक़ भारत के पश्चिमी तट से यानी गुजरात से भी लोग वहां जाकर बसे. इस किंवदन्ति के अनुसार अजीसक नामक गुजरात का एक शक्तिशाली राजा सन 75 ईसवी में जावा पहुंचा, लेकिन किसी महामारी के सबब उसे शीघ्र ही वापस लौट आना पड़ा. सम्भव है यह कहानी उत्तर भारत के सक राजाओं के साथ जावा के प्राचीन राजवंश का सम्बन्ध जोड़ने के लिये गढ़ी गई हो. जावा के इतिहास में एक दूसरी कामयाब गुजराती कोशिश का ज़िक्र मिलता है, जब सन 603 ईसवी में गुजरात के एक राजा ने अपने बेटे को 5000 लोगों के साथ जिनमें किसान, कारीगर, वैद्य और लेखक शामिल थे, 6 बड़े जहाज़ों और 100 छोटे जहाज़ों में भरकर जावा भेजा.** यह गुजराती बेड़ा जावा के पश्चिमी तट पर उतरा और वहां उन्होंने 'मेंदांग कामुलन' नामक नगर बसाया. बेटे ने और आदमी भेजने के लिये लिखा. इस बार राजा ने 2000 आदमी भेजे, जिनमें संगतराश और पीतल का काम करने वाले शामिल थे. शीघ्र ही गुजरात और दूसरे देशों के साथ जावा की ज़बरदस्त तिजारत शुरू हो गयी. इन गुजरातियों ने वहां मन्दिरों की नींव रखी, जो बाद में 'प्राम्बानम' और 'बोरोबुदुर' मन्दिर के नाम से मशहूर हुये. एशियाई बौद्ध कला के ये सुन्दरतम नमूने हैं.

गुजरात के ये बौद्ध सक, ज़ाहिर है, उस समय गुजरात छोड़कर जावा में जाकर बसे जब चन्द्रगुप्त दूसरे ने सौराष्ट्र और काठियावाड़ पर क़ब्ज़ा करके बौद्ध धर्म की जगह ब्राह्मण धर्म की स्थापना की.†† सक प्रवासियों के साथ बौद्ध-कला भी अपनी ख़ूबियां लेकर जावा पहुंची, जहां बोरोबुदुर की तामीरीकला में वह अपने सुन्दरतम रूप में ज़ाहिर हुई.‡‡ उत्तर भारतीयों के इस जावा प्रवास की और भी कई

بسایا."❋ ٹیورنیر لکھتا ھے—"بنگال کی کھاڑی میں مچھلی‌پٹنم ھی ایسی جگہ ھے جہاں سے بھارتیہ جہاز پورو کی اور بنگال، اراکان، پگو، سیام، سوماترا، کوچین، چین اور منیلا اور پچھم کی اور ھورموز، موکھا اور مڈاگاسکر جاتے تھے."† جاوا کے اُلیکھوں سے بھی کلنگ اور جاوا کے سمبندھ کا پتہ چلتا ھے.‡ ڈاکٹر بھنڈارکر بھی اس کی تصدیق کرتے ھیں.*

جاوا کی پراچین کِمدنتیوں کے مطابق بھارت کے پچھمی تٹ سے یعنی گجرات سے بھی لوگ وھاں جا کر بسے. اس کِمدنتی کے انوسار اجیسک نامک گجرات کا ایک شکتشالی راجا سن 75 عیسوی میں جاوا پہونچا، لیکن کسی مہاماری کے سبب اسے شیگھر ھی واپس لوٹ آنا پڑا. سمبھو ھے یہ کہانی اُتر بھارت کے سک راجاؤں کے ساتھ جاوا کے پراچین راج‌ونش کا سمبندھ جوڑنے کے لئے گڑھی گئی ھو. جاوا کے اتہاس میں ایک دوسری کامیاب گجراتی کوشش کا ذکر ملتا ھے، جب سن 603 عیسوی میں گجرات کے ایک راجہ نے اپنے بیٹے کو 5000 لوگوں کے ساتھ جن میں کسان، کاریگر، ویدیہ اور لیکھک شامل تھے، 6 بڑے جہازوں اور 100 چھوٹے جہازوں میں بھر کر جاوا بھیجا.** یہ گجراتی بیڑا جاوا کے پچھمی تٹ پر اُترا اور وھاں انھوں نے 'مینڈانگ کامولن' نامک نگر بسایا. بیٹے نے اور آدمی بھیجنے کے لئے لکھا. اِس بار راجہ نے 2000 آدمی بھیجے، جن میں سنگتراش اور پیتل کا کام کرنے والے شامل تھے. جلد ھی گجرات اور دوسرے دیشوں کے ساتھ جاوا کی زبردست تجارت شروع ھوگئی. اِن گجراتیوں نے وھاں مندروں کی نیو رکھی، جو بعد میں 'پرامبانم' اور 'بوروبودور' مندر کے نام سے مشہور ھوئے. ایشیائی بودھ کلا کے یہ سندرتم نمونے ھیں.

گجرات کے یہ بودھ سک، ظاھر ھے، اس سمے گجرات چھوڑ کر جاوا میں جاکر بسے جب چندرگپت دوسرے نے سوراشٹر اور کاٹھیاواڑ پر قبضہ کر کے بودھ دھرم کی جگہ براھمن دھرم کی استھاپنا کی.†† سک پرواسیوں کے ساتھ بودھ کلا بھی اپنی خوبیاں لے کر جاوا پہونچی، جہاں بوروبودور کی تعمیری کلا میں وہ اپنے سندرتم روپ میں ظاھر ھوئی.‡‡ اُتر بھارتیوں کے اس جاوا پرواس کی اور بھی کئی

❋—Indian Architecture, p. 103.

†—Ball's Translation, 1, 174.

‡—Indian Antiquary, V. 314; VI, 356.

*—Journal of Bombay Branch of R. A. S. XVII.

**—History of Java—by Sir Stamford Raffles, Vol. II, p. 82.

†† Early History of India—by V.A. Smith pp. 186-87.

‡‡—Indian Sculpture and Painting—by E. B. Havell, p. 113.

जावा : प्राचीन भारत का उपनिवेश

डाक्टर राधाकुमुद मुकर्जी, एम० ए०, पी-एच० डी०

बंगाल की खाड़ी से परे बृहत्तर (वसीअ) भारत के फैलाव का श्रेय छोटे से कलिंग देश को है. कलिंग के प्राचीन इतिहास को बहुत कम लोग जानते हैं. वास्तव में भारत के क़ौमी कारनामों में जावा का उपनिवेश (नवाबादी) एक बड़ी अहम घटना है और यह कितने दुख की बात है कि भारतीय इतिहास में इस महत्वपूर्ण घटना की कोई चर्चा नहीं मिलती.

ईस्वी सदी के 75 वें बरस में कलिंग देश से हिन्दू मल्लाहों का एक जत्था निकला और बंगाल की खाड़ी को पार कर हिम्मत के साथ बेअन्त हिन्द महासागर को चीरता हुआ जावा के टापू पर जा लगा. वहां इन नाविकों ने भारतीय उपनिवेश की स्थापना की, नगर और शहर बसाये और अपनी मातृभूमि के साथ व्यापार सम्बन्ध क़ायम किया, जो सदियों तक चलता रहा. जावा के इस भारतीय उपनिवेश के सम्बन्ध में इतिहास लेखक एलफिन्सटन लिखता है—

"जावा का इतिहास इस बात की साफ़ गवाही देता है कि कलिंग देश के हिन्दू इस द्वीप में आकर उतरे, यहां के निवासियों को सभ्य बनाया और ईसा के 75 वें साल से अपना पहला सम्वत् सन शुरू करके अपने आने की तिथि निश्चित की. जावा के असंख्य खन्डहर इस घटना की तसदीक़ करते हैं. हालांकि जावा की बोलचाल की ज़बान मलाया है, फिर भी धार्मिक, राजनैतिक और ऐतिहासिक ग्रन्थ और अनेक उल्लेखों की ज़बान संस्कृत की ही एक बेटी है. चौथी सदी ईसवी के एक प्रसिद्ध चीनी यात्री फ़ाहियान ने लिखा है कि उस समय जावा के निवासी सब हिन्दू थे और यह यात्री जिन जहाज़ों से गंगा से सिंहल और सिंहल से जावा और जावा से चीन गया, उसके सब मल्लाह हिन्दू धर्म के अनुयायी थे.*"

फ़र्ग्यूसन लिखता है—"अमरावती के शानदार खन्डहरों से यह ज़ाहिर होता है कि कृष्णा और गोदावरी के मुहानों से आकर उत्तर और पश्चिमोत्तर भारत के बौद्धों ने पगु, कम्बोज और आखिर में जावा के टापू को आ कर

جاوا: پراچین بھارت کا اپنیویش

ڈاکٹر رادھا کمد مکرجی، ایم ۔ اے ۔، پی ایچ ۔ ڈی۔

بنگال کی کھاڑی سے پرے ورھتر (وسیع) بھارت کے پھیلاؤ کا شریہ چھوٹے سے کلنگ دیش کو ہے ۔ کلنگ کے پراچین اتہاس کو بہت کم لوگ جانتے ہیں ۔ واستو میں بھارت کے قومی کارناموں میں جاوا کا اپنیویش ایک بڑی اہم گھٹنا ہے اور یہ کتنے دکھ کی بات ہے کہ بھارتیہ اتہاس میں اس مہتوپورن گھٹنا کی کوئی چرچا نہیں ملتی ۔

عیسوی صدی کے 75 ویں برس میں کلنگ دیش سے ہندو ملاحوں کا ایک جتھا نکلا اور بنگال کی کھاڑی کو پار کر ہمت کے ساتھ بے انت ہند مہا ساگر کو چیرتا ہوا جاوا کے ٹاپو پر جا لگا ۔ وہاں ان ناوکوں نے بھارتیہ اپنیویش کی استھاپنا کی، نگر اور شہر بسائے اور اپنی ماتربھومی کے ساتھ ویاپار سمبندھ قائم کیا، جو صدیوں تک چلتا رہا ۔ جاوا کے اس بھارتیہ اپنیویش کے سمبندھ میں اتہاس لیکھک ایلفنسٹن لکھتا ہے—

" جاوا کا اتہاس اس بات کی صاف گواہی دیتا ہے کہ کلنگ دیش کے ہندو اس دویپ میں آ کر اترے، یہاں کے نواسیوں کو سبھیہ بنایا اور عیسوی کے 75ویں سال سے اپنا پہلا سمبت سن شروع کر کے اپنے آنے کی تتھی نشچت کی ۔ جاوا کے اسنکھیہ کھنڈر اس گھٹنا کی تصدیق کرتے ہیں ۔ حالانکہ جاوا کی بول چال کی زبان ملایا ہے، پھر بھی دھارمک، راجنیتک اور ایتہاسک گرنتھ اور انیک الیکھوں کی زبان سنسکرت کی ہی ایک بیٹی ہے ۔ چوتھی صدی عیسوی کے ایک پرسدھ چینی یاتری فاہیان نے لکھا ہے کہ اس سمے جاوا کے نواسی سب ہندو تھے اور یہ یاتری جن جہازوں سے گنگا سے سنگھل اور سنگھل سے جاوا اور جاوا سے چین گیا، اس کے سب ملاح ہندو دھرم کے انویائی تھے۔"*

فرگیوسن لکھتا ہے—" امراوتی کے شاندار کھنڈروں سے یہ ظاہر ہوتا ہے کہ کرشنا اور گوداوری کے موہانوں سے آ کر اتر اور پشچم اتر بھارت کے بودھوں نے پگو، کمبوج اور آخر میں جاوا کے ٹاپو کو آ کر

*—History of India—Cowells edition, p. 185.

अनुसार ग़लत है. टाड के समय से यह ग़लतफ़हमी चली आती है. भूरी आंखों वाले और लाल डाढ़ी वाले आर्सी या यूएची लोग जो तुखारियों के शासक वर्ग थे सांवले रंग के जाटों के बाप दादा नहीं थे. हम ऊपर देख चुके हैं कि नामों के उच्चारन में भी किस तरह ग़लतियां हुई हैं. जाट लोग आर्सी क़ौम से नहीं हैं, न लम्बी खोपड़ी वाले, छोटी नाक वाले और गेहुआं रंग वाले गूजर तातार खुजरों की औलाद हैं, और न राजपूत लोगों का निकास शक क़ौम से है. इन क़ौमों के निकास की खोज हमें हिन्दुस्तान ही में करनी होगी. इसमें शक नहीं कि मध्य एशिया से इनसनों के जो गिरोह हिन्दुस्तान में आकर बसते गये वे यहां की हिन्दू आबादी में रल-मिल कर एक हो गये. लेकिन इनकी तादाद यहां के लोगों के मुक़ाबले में बहुत ही कम थी. दरअस्ल शक और कुशन क़ौम के लोग शकस्तान यानी शीस्तान और अफ़ग़ानिस्तान में ही बस गये थे. आजकल के अफ़ग़ानों में से बहुतों के चेहरे मोहरे ज़ाहिर करते हैं कि वे शक और कुशन क़ौमों से हैं. मशहूर विद्वान हालोमी ने शक क़ौम के एक हिस्से को बलीताई नाम दिया है. अन्दाज़ा लगाया जाता है कि बलतिस्तान के बल्ती लोग वही बलताई क़ौम के हैं.❀

انوسار غلط ھے. ٹاڈ کے سمے سے یہ غلط فہمی چلی آتی ھے. بھوری آنکھوں والے اور لال ڈاڑھی والے ارسی یا یوایچی لوگ جو تکھاریوں کے شاسک ورگ تھے سانولے رنگ کے جاٹوں کے باپ دادا نہیں تھے. ھم اوپر دیکھ چکے ھیں کہ ناموں کے اُچارن میں بھی کس طرح غلطیاں ھوئی ھیں. جاٹ لوگ ارسی قوم سے نہیں ھیں، نہ لمبی کھوپڑی والے، چھوٹی ناک والے اور گیہواں رنگ والے گوجر تاتار خوجروں کی اولاد ھیں، اور نہ راجپوت لوگوں کا نکاس شک قوم سے ھے. ان قوموں کے نکاس کی کھوج ھمیں ھندستان ھی میں کرنی ھوگی. اس میں شک نہیں کہ مدھیہ ایشیا سے انسانوں کے جو گروہ ھندستان میں آکر بستے گئے وے یہاں کی ھندو آبادی میں رل مل کر ایک ھوگئے. لیکن ان کی تعداد یہاں کے لوگوں کے مقابلے میں بہت ھی کم تھی. دراصل شک اور کشن قوم کے لوگ شکستان یعنی شیستان اور افغانستان میں ھی بس گئے تھے. آجکل کے افغانوں میں سے بہتوں کے چہرے مہرے ظاھر کرتے ھیں کہ وے شک اور کشن قوموں سے ھیں. مشہور ودوان ھالومی نے شک قوم کے ایک حصے کو بلی تونی نام دیا ھے. اندازہ لگایا جاتا ھے کہ بلتستان کے بلتی لوگ وھی بلتونی قوم کے ھیں.❀

❀—Haddon, Races of Man, pp. 114-1 .

फैले.‡ गिफ़रीडा रगेरी ने यह भी लिखा है कि "आजकल के पामीर इलाक़े के चौड़ी खोपड़ी वाले लोगों में यूरोपियन चेहरे मोहरे के लोग काफ़ी मिलते हैं और तक्ल मकन के रेगिस्तान में जो पुराने बाशिन्दे अभी तक मौजूद हैं उनमें भी इसी ढंग के लोग हैं" और आगे चल कर वही विद्वान लिखता है कि "इन चीज़ों को अगर ग़ैरजानिब हो कर देखा जाये तो कहना पड़ता है कि एशिया के गोरे रंग के लोग वैसे ही पूरे पूरे आर्य नसल के हैं जैसे यूरोप के गोरे लोग और प्राचीन समय में शायद इससे भी ज्यादह थे."¶

इस तरह यह बात साफ़ ज़ाहिर है कि मध्य एशिया के सब से पुराने बाशिन्दे उसी नसल के थे जिस नसल की दूसरी इन्डो-यूरोपियन क़ौमें हैं. मशहूर विद्वान ज्वायस (Joyce) ने लिखा है कि पूर्वी तुर्किस्तान में तक्ल की मकन में रहने वाली क़ौम यानी वहां के पुराने बाशिन्दे अभी तक ईरानी नसल के हैं. इसके बाद पूरब से तातारियों का हमला हुआ. उइजर (Uiger) तुर्कों ने सब से पहले एशिया के इस हिस्से पर तुर्कों का प्रभाव जमाया. उसके बाद मुसलमान अरबों ने इस देश पर हमला किया. तुर्क लोग मुसलमान हो गये. तुर्कों का असर और ज्यादा बढ़ गया. नतीजा यह हुआ कि पुराने लोग जो मिली हुई यूनानी भारतीय सभ्यता को मानने वाले थे और जो आर्य भाषा बोलते थे मिटते चले गये. सब से अन्त में चंगेज़ खां का हमला हुआ जिसने एक बार इस सारे देश को वीरान कर दिया.

सारांश यह कि मानव जाति विज्ञान के अधिकांश विद्वानों की यह राय है कि मध्य एशिया ही इन्डो-यूरोपियन भाषायें या आर्य भाषायें बोलने वाली क़ौमों का आदि स्थान है. यहीं से पैदा होकर ये लोग सब देशों में फैले. हम यह भी देख चुके हैं कि इस इलाक़े के सब से पुराने बाशिन्दे लम्बी खोपड़ी वाले थे और बाद में पूरब से आकर चौड़ी खोपड़ी वाले लोग यहां बसने लगे और पुराने बाशिन्दों में रल मिल गये. आजकल एशिया के इस हिस्से में ज्यादह-तर चौड़ी खोपड़ी वाले लोग ही रहते हैं, जिनमें कुछ ईरानी हैं और कुछ तुर्कोमान यानी तुर्क हैं. फिर उजवालफ़ी और फ़िचेन्को इन दोनों विद्वानों ने नाप कर बताया है कि ईरानी भाषा बोलने वाले ताजिक लोगों में भी अभी तक लम्बी खोपड़ी वाले लोग मौजूद हैं. लेकिन उइजर तुर्कों के समय में मध्य एशिया में तुर्की क़ौम का असर ही ज्यादा है.

अन्त में हम यह कह देना चाहते हैं कि कुछ लोगों का यह कहना कि "हिन्दुस्तान के राजपूतों, गूजरों और जाटों का निकास मध्य एशिया से है" मानव जाति-विज्ञान के

پھیلے.‡ گفریدا رگیری نے یہ بھی لکھا ھے کہ "آجکل کے پامیر علاقے کے چوڑی کھوپڑی والے لوگوں میں یوروپین چہرے مہرے کے لوگ کافی ملتے ھیں اور تکل مکن کے ریگستان میں جو پرانے باشندے ابھی تک موجود ھیں اُن میں بھی اِسی ڈھنگ کے لوگ ھیں" اور آگے چل کر وھی ودوان لکھتا ھے کہ "اِن چیزوں کو اگر غیر جانب ھوکر دیکھا جائے تو کہنا پڑتا ھے کہ ایشیا کے گورے رنگ کے لوگ ویسے ھی پورے پورے آریہ نسل کے ھیں جیسے یورپ کے گورے لوگ اور پراچین سمے میں شاید اِس سے بھی زیادہ تھے."¶

اِس طرح یہ بات صاف ظاھر ھے کہ مدھیہ ایشیا کے سب سے پرانے باشندے اُسی نسل کے تھے جس نسل کی دوسری اِنڈوروپین قومیں ھیں. مشہور ودوان جوایس (Joyce) نے لکھا ھے کہ پوربی ترکستان میں تکل کی مکن میں رھنے والی قوم یعنی وھاں کے پرانے باشندے ابھی تک ایرانی نسل کے ھیں. اِس کے بعد پورب سے تاتاریوں کا حملہ ھوا. یوئیجر (Uiger) ترکوں نے سب سے پہلے ایشیا کے اِس حصے پر ترکوں کا پربھاؤ جمایا. اُس کے بعد مسلمان عربوں نے اِس دیش پر حملہ کیا. ترک لوگ مسلمان ھوگئے. ترکوں کا اثر اور زیادہ بڑھ گیا. نتیجہ یہ ھوا کہ پرانے لوگ جو ملی ھوئی یونانی بھارتیہ سبھیتا کو ماننے والے تھے اور جو آریہ بھاشا بولتے تھے مٹتے چلے گئے. سب سے انت میں چنگیز خاں کا حملہ ھوا جس نے ایک بار اِس سارے دیش کو ویران کردیا.

سارانش یہ کہ مانو جاتی وگیان کے اِدھیکانش ودوانوں کی یہ رائے ھے کہ مدھیہ ایشیا ھی اِنڈویوروپین بھاشائیں یا آریہ بھاشائیں بولنے والی قوموں کا آدی استھان ھے. یہیں سے پیدا ھوکر یہ لوگ سب دیشوں میں پھیلے. ھم یہ بھی دیکھ چکے ھیں کہ اِس علاقے کے سب سے پرانے باشندے لمبی کھوپڑی والے تھے اور بعد میں پورب سے آکر چوڑی کھوپڑی والے لوگ یہاں بسنے لگے اور پرانے باشندوں میں رل مل گئے' آجکل ایشیا کے اِس حصے میں زیادہ‌تر چوڑی کھوپڑی والے لوگ ھی رھتے ھیں' جن میں کچھ ایرانی ھیں اور کچھ ترکمان یعنی ترک ھیں. پھر آزوالفی اور فچینکو اِن دونوں ودوانوں نے ناپ کر بتایا ھے کہ ایرانی بھاشا بولنے والے تاجک لوگوں میں بھی ابھی تک لمبی کھوپڑی والے لوگ موجود ھیں. لیکن اوئیجر ترکوں کے سمے میں مدھیہ ایشیا میں ترکی قوم کا اثر ھی زیادہ ھے.

انت میں ھم یہ کہ دینا چاھتے ھیں کہ کچھ لوگوں کا یہ کہنا کہ "ھندستان کے راجپوتوں' گوجروں اور جاٹوں کا نکاس مدھیہ ایشیا سے ھے" مانو جاتی وگیان کے

‡—Eickstedt, op. cit., Gulffrida Ruggeri, The First Outline of a Systematic Anthropology translated by H. Chakladar.

¶—Gulffrida Ruggeri, op. cit., pp. 33-35, Ibid, op. cit.

लेकिन इन सब विद्वानों का जवाब एक ही बात से दिया जा सकता है. वह यह कि इतिहास में कहीं भी इसका ज़िक्र नहीं मिलता कि यूरोप के कोई लोग कभी मध्य एशिया में आकर बसे हों. न इस ओर उनकी किसी यात्रा का कहीं हाल मिलता है. इसके ख़िलाफ़ इतिहास में बार बार इस बात का ज़िक्र आता है कि समय समय पर इनसानों के गिरोहों ने एशिया से जा जाकर यूरोप के मुख़तलिफ़ देशों पर हमला किया और उन्हें आबाद किया. मशहूर इतिहास लेखक एडवर्ड मेयर, मानव जाति विज्ञान विशारद ईक्सटेट और भाषा विज्ञान शास्त्री फ़ीस्ट सब इस बात पर एक राय हैं.❀

क़ुदरती तौर पर अब यह सवाल पैदा होता है कि मध्य एशिया में यह गोरे रंग के लोग यानी गोरे रंग के सुनहरी या बहुत हलके रंग के बालों वाले और भूरी या नीली आंखों वाले लोग कहां से आकर बसे ? यूआन्‌ च्वांग ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि उसे अपनी यात्रा मे मध्य एशया में इस तरह के लोग मिले थे. आजकल के विद्वान यात्री भी लिखते हैं कि ठीक यूरोपियन चेहरे मोहरे वाले इसी तरह के लोग मध्य एशिया के इस इलाक़े में अब भी रहते हैं. जर्मन वैज्ञानिक श्वार्ज़ ने लिखा है कि इस इलाक़े के ईरानी बोलने वाले लोग ठीक इसी तरह के गोरे हैं. इसी बिना पर श्वार्ज़ ने यह राय ज़ाहिर की है कि मध्य एशिया आर्य नसल के लोगो का आदि स्थान यानी असली वतन है.

इसके अलावा उज़वाल्की, औरेलस्टीन इत्यादि बहुत से विद्वान खोजियों ने बयान किया है कि इस तरह के रंग और इसी तरह के बालों और आंखों वाले लोग तमाम मध्य एशिया में मिलते हैं, और साइबेरिया की कुछ तातार क़ौमों मे भी इसी तरह के लोग पाये जाते हैं. पिछले महायुद्ध के बाद जाकेल्सन ब्राडस्की ने जो बड़ी बड़ी खोजे की हैं उनसे मालूम हुआ है कि दक्खिन पच्छमी साइबीरिया मे भी इसी रंग ढंग की एक तातारी क़ौम रहती है. येनुस्सी तातारी भी इसी रंग ढंग और चेहरे मोहरे के हैं. डेनिकर ने लिखा है कि साइबीरिया के सब से शुरू के बाशिन्दे लम्बी खोपड़ी वाले यूरोपियन चेहरे मोहरे के थे.† इस सब से ईक्सटेड और गिफ़ीडा रगेरी जैसे विद्वान वैज्ञानिकों ने यह नतीजा निकाला है कि इस तरह के गोरे रंग के आदमी शुरू में उत्तर पच्छमी एशिया ही में पैदा हुए और वहां से सब जगह

لیکن اِن سب ودوانوں کا جواب ایک هی بات سے دیا جا سکتا هے . وہ یہ کہ اِتہاس میں کہیں بھی اِس کا ذکر نہیں ملتا کہ یورپ کے کوئی لوگ کبھی مدھیہ ایشیا میں آکر بسے هوں. نہ اِس اور اُن کی کسی یاترا کا کہیں حال ملتا هے. اِس کے خلاف اتہاس میں بار بار اِس بات کا ذکر آتا هے کہ سمے سمے پر اِنسانوں کے گروہ نے ایشیا سے جا جاکر یورپ کے مختلف دیشوں پر حملہ کیا اور اُنہیں آباد کیا . مشہور اتہاس لیکھک ایڈورڈ میئر، مانوجاتی وگیان وشارد ایکسٹیٹ اور بھاشا وگیان شاستری فیسٹ سب اِس بات پر ایک رائے هیں .❀

قدرتی طور پر اب یہ سوال پیدا هوتا هے کہ مدھیہ ایشیا میں یہ گورے رنگ کے لوگ یعنی گورے رنگ کے سنہری یا بہت هلکے رنگ کے بالوں والے اور بھوری یا نیلی آنکھوں والے لوگ کہاں سے آکر بسے؟ یوان چوانگ نے اپنی پستک میں لکھا هے کہ اُسے اپنی یاترا میں مدھیہ ایشیا میں اِس طرح کے لوگ ملے تھے . آجکل کے ودوان یاتری بھی لکھتے هیں کہ ٹھیک یوروپین چہرے مہرے والے اِسی طرح کے لوگ مدھیہ ایشیا کے اِس علاقے میں اب بھی رہتے هیں . جرمن ویگیانک شوارز نے لکھا هے کہ اِس علاقے کے ایرانی بولنے والے لوگ ٹھیک اِسی طرح کے گورے هیں . اِسی بنا پر شوارز نے یہ رائے ظاهر کی هے کہ مدھیہ ایشیا آریہ نسل کے لوگوں کا آدی استھان یعنی اصل وطن هے .*

اِس کے علاوہ اُزوالسکی، اوریلسٹین اِتیادی بہت سے ودوان کھوجیوں نے بیان کیا هے کہ اِس طرح کے رنگ اور اِسی طرح کے بالوں اور آنکھوں والے لوگ تمام مدھیہ ایشیا میں ملتے هیں، اور سائبیریا کی کچھ تاتار قوموں میں بھی اِسی طرح کے لوگ پائے جاتے هیں . پچھلے مہایدھ کے بعد جاکیلسن براڈسکی نے جو بڑی بڑی کھوجیں کی هیں اُن سے معلوم هوا هے کہ دکن پچھمی سائبیریا میں بھی اِسی رنگ ڈھنگ کی ایک تاتاری قوم رہتی هے . ینیسی تاتاری بھی اِسی رنگ ڈھنگ اور چہرے مہرے کے هیں. ڈینکر نے لکھا هے کہ سائبیریا کے سب سے شروع کے باشندے لمبی کھوپڑی والے یوروپین چہرے مہرے کے تھے .† اِس سب سے ایکسٹیڈ اور گیفڈا رگوری جیسے ودوان ویگیانکوں نے یہ نتیجہ نکالا هے کہ اِس طرح کے گورے رنگ کے آدمی شروع میں اُتر پچھمی ایشیا هی میں پیدا هوئے اور وهیں سے سب جگہ

❀—Mayer, Geschichtedes, Altertums, pp. 861-890 Eickstedt, Rassenkunde und Rassengeschichte der Menschheit, pp. -67-281 Feist, Indo-Germanon und Germanen, p. 1 1.

*—F. O. Schwarz, "Turkesten", die wiege der Indo-germanen voelker.

†—Deniker, Les Races etles Puples de la Terre, p. 424.

पच्छिमी सरहद से खदेड़ कर बाहर कर दिया और ये लोग वहां से निकल कर अन्त में फ़रग़ाना में आकर बसे और वहां इन्होंने तहिया क़ौम के लोगों पर फ़तह हासिल की.

ये तहिया ही तुखारी क़ौम के लोग थे. इनमें से थोड़े सैकियांग के इलाक़े में बस गये और छोटी यूएची क़ौम कहलाए. हो सकता है कि तुखारिस्तान में सब से पुराना राज्य इन्हीं का क़ायम हुआ हो. इसके अलावा मालूम होता है कि कुशान लोग गान्धार और काबुल के इलाक़े में रहते थे. ये कुशान ही क्युशान या कुशी या कुशू भी कहलाते थे. तहिया या तुखारी लोगों ने इन्हें पूरबी तुरकिस्तान के उत्तर से खदेड़ कर निकाल दिया. वहां से निकल कर ये लोग उत्तर पच्छमी भारत में घुस आए. इस तरह गिरोह के गिरोह पीछे से खदेड़े जाते रहे और हिन्दुस्तान की उत्तर पच्छमी सरहद के अन्दर या खुरासान के रास्ते ईरान में और या यूरोप की तरफ़ बढ़ते रहे. इस तरह एक दूसरे के बाद अलग अलग क़ौमें तेज़ी के साथ हिन्दुस्तान की सरहद के अन्दर घुसती गईं. हिन्दुस्तानी विद्वानों को उनकी असल नसल की छान बीन का मौक़ा न मिल सका. कोई आश्चर्य नहीं कि आगे चल कर हिन्दुस्तान के लोगों ने मध्य एशिया की सभी क़ौमों को एक 'तुरुस्क' (Turusk) नाम से पुकारना शुरू कर दिया.

कुशी या कुशू क़ौम की बाबत अभी तक कुछ ठीक ठीक पता नहीं चल सका. भारतीय पुराणों में 'शक द्वीप' और 'कुश द्वीप' दोनों का ज़िक्र आता है. मुमकिन है यह वही कुशी हो.

एक यह सवाल उठता है कि इस भूरी आंखों वाली और लाल डाढ़ियों वाली यूएची या अरसी क़ौम का निकास कहां से है यानी वे किस नसल के थे? ओ० फ़्रेन्के का कहना है कि मध्य एशिया के कुशान या कुसन लोग जिनका चीनी किताबों में ज़िक्र आता है गोरे रंग के न थे. चीनी किताबों में यह नहीं लिखा कि उनकी आंखें भूरी थीं और उनके बाल लाल या सुनहरे थे. लेकिन कुछ यूरोपियन विद्वानों का कहना है कि ये कुशान लोग गोरे रंग के थे और उत्तर यूरोप ही से आये थे, और यही यूएची कहलाते थे. उपसला यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर कारपेन्टियर का कहना है कि ये कुशान लोग चौड़ी खोपड़ी वाले सेल्ट्स थे जो गाल लोगों के हमले के वक़्त यूरोप से भाग कर इधर चले आए थे. पोकोरनी का कहना है कि ये लोग थरेसा (यूनान) और फ़्रीजिया की क़ौमों में से थे.$ कारपेन्टियर का यह भी ख़याल है कि पामीर की वह पहाड़ी क़ौमें जिनकी रूसी विद्वानों ने खोज की है असल में 'यूरोप' के एल्प्स पहाड़ की रहने वाली थीं.

پچھمی سرحد سے کھدیڑ کر باہر کردیا اور یہ لوگ وہاں سے نکل کر انت میں فرغانہ میں آکر بسے اور وہاں اِنہوں نے تہیا قوم کے لوگوں پر فتح حاصل کی .

یہ تہیا ہی تخاری قوم کے لوگ تھے . اِن میں سے تھوڑے سے کیانگ کے علاقے میں بس گئے اور چھوٹی یوایچی قوم کہلائے . ہوسکتا ہے کہ تخارستان میں سب سے پرانا راجیہ اِنہیں کا قایم ہوا ہو . اِس کے علاوہ معلوم ہوتا ہے کہ کشن لوگ گندھار اور کابل کے علاقے میں رہتے تھے . یہ کشن ہی کیوشن یا کوشی یا کوشو بھی کہلاتے تھے . تہیا یا تخاری لوگوں نے اِنہیں پوربی ترکستان کے اُتر سے کھدیڑ کر نکال دیا . وہاں سے نکل کر یہ لوگ اُتر پچھمی بھارت میں گھس آئے . اِس طرح گروہ کے گروہ پیچھے سے کھدیڑے جاتے رہے اور ہندستان کی اُتر پچھمی سرحد کے اندر یا خراسان کے راستے ایران میں اور یا یورپ کی طرف بڑھتے رہے . اِس طرح ایک دوسرے کے بعد الگ الگ قومیں تیزی کے ساتھ ہندستان کی سرحد کے اندر گھستی گئیں . ہندستانی ودوانوں کو اُن کی اصل نسل کی چھان بین کا موقع نہ مل سکا . کوئی آشچریہ نہیں کہ آگے چل کر ہندستان کے لوگوں نے مدھیہ ایشیا کی سبھی قوموں کو ایک 'تورسک' (Tursuk) نام سے پکارنا شروع کردیا .

کوشی یا کوشو قوم کی بابت ابھی تک کچھ ٹھیک ٹھیک پتہ نہیں چل سکا . بھارتیہ پرانوں میں 'شک دویپ' اور 'کش دویپ' دونوں کا ذکر آتا ہے . ممکن ہے یہ وہی کوشی ہو .

ایک یہ سوال اُٹھتا ہے کہ اِس بھوری آنکھوں والی اور لال ڈاڑھیوں والی یوایچی یا ارسی قوم کا نکاس کہاں سے ہے یعنی وے کس نسل کے تھے ؟ او . فرینکے کا کہنا ہے کہ مدھیہ ایشیا کے کشن یا کسن لوگ جن کا چینی کتابوں میں ذکر آتا ہے گورے رنگ کے نہ تھے . چینی کتابوں میں یہ نہیں لکھا کہ اُن کی آنکھیں بھوری تھیں اور اُن کے بال لال یا سنہرے تھے . لیکن کچھ یورپین ودوانوں کا کہنا ہے کہ یہ کشن لوگ گورے رنگ کے تھے اور اُتر یورپ ہی سے آئے تھے اور یہی یوایچی کہلاتے تھے . اُپسلا یونیورسٹی کے پروفیسر کارپینٹیر کا کہنا ہے کہ یہ کشن لوگ چوڑی کھوپڑی والے سیلٹس تھے جو گال لوگوں کے حملے کے وقت یورپ سے بھاگ کر اِدھر چلے آئے تھے . پوکورنی کا کہنا ہے کہ یہ لوگ تھریسا (یونان) اور فریزیا کی قوموں میں سے تھے .$ کارپینٹیر کا یہ بھی خیال ہے کہ پامیر کی وہ پہاڑی قومیں جنکی روسی ودوانوں نے کھوج کی ہے اصل میں 'یورپ' کے ایلپس پہاڑ کی رہنے والی تھیں .

$—J. Charpentier in F. D. M. G., Vol. Lxxi, p.347.

आजकल की चीन की राजधानी पीकिंग के अन्दर 'यूएची' पढ़ा जाता है, दो हज़ार साल पहले उसी शब्द-चिन्ह का उच्चारन (तलफ़्फ़ुज़) बिलकुल दूसरा था. जे० मारकार्ट की राय है कि इस शब्द-चिन्ह का सब से पुराना उच्चारन 'जेतसी' या 'ज्योयतसी' था. उसका यह भी ख़्याल है कि इसी नाम को स्ट्रेबो‡ ने 'असी ओई' और पाम्पियसट्रागस ने 'असिअन' लिखा है. जापानी उसे जेतसु या ज्वात्सु कहते थे. ओ फ्रेन्के की राय है कि इसका पुराना उच्चारन 'नेज़ुएत्सी था. इसी तरह बदलते बदलते यह विद्वान आजकल के यूएची लफ़्ज़ को यूनानी 'सीदियन' के साथ जा मिलाते हैं. यह लफ़्ज़ आम तौर पर मध्य एशिया की उस ज़माने की सब जातियों के लिए इस्तेमाल किया जाता है.

असि नाम का पता हाल में प्रोफ़ेसर सीज ने लगाया है. एफ़० डबल्यू० म्यूलर की राय है कि जिस चीनी शब्द को आजकल 'यूएची' पढ़ा जाता है उसे ही दो हज़ार साल पहले असी पढ़ा जाता था. ओटो फ्रेन्के चीनी ज़बान के एक दूसरे बहुत बड़े विद्वान हैं. उनकी भी यही राय है कि यूएची और असी एक ही शब्द हैं और एक ही क़ौम को ज़ाहिर करते हैं.§ अगर हम चीनी भाषा के इन विद्वानों की बात ठीक मान लें तो इससे तुख़ारियो की समस्या, इन्डो-यूरोपियन समस्या, और एक दर्जे तक भारतीय समस्या को हल करने में बड़ी मदद मिलती है और उस पर नई रोशनी पड़ जाती है.

अब सवाल यह रह जाता है कि तुख़ारी क़ौम और क्यूसन क़ौम मे क्या ताल्लुक़ है? चीनी इतिहासज्ञ म्यूलर का कहना है कि पुराने तुर्क जिस भाषा को तौक्सरी भाषा कहा करते थे उसी को आजकल के विद्वान तुख़ारी 'अ' कहते हैं. इन पुराने तुर्कों को डईजर भी कहते हैं. तुर्फ़ान में डईजर क़ौम की एक हाथ की लिखी चीज़ मिली है जिस में एक दूसरी किताब 'दस कर्म बुद्ध अवदान माला' के बारे में लिखा है कि उसका क्युसन भाषा से तुख़ारी में अनुवाद किया गया और तुख़ारी से तुर्की में. इससे पता चलता है कि यह किताब क्यूसन सरहद से तुख़ारिस्तान गई, और वहां से तुर्कों के पास गई. यहां पर यह साफ़ दिखाई देता है कि तुख़ारी लोग दूसरे थे और क्यूसन लोग दूसरे थे. इन क्यूसन लोगो को ही भारत में 'कुशन' कहा गया है. म्यूलर का कहना है कि कुशन लोगो के देश का नाम क्यूसन था और वह देश गान्धार और काबुल का इलाक़ा था. स्टैनलीनो की यह भी राय है कि गान्धार ही कुशन क़ौम की राजधानी थी. इस सब से हमें पता चलता है कि हूण लोगों ने यूएची क़ौम के लोगों को चीन की

آجکل کی چین کی راجدھانی پیکنگ کے اندر 'یوایچی' پڑھا جاتا ھے' دو ھزار سال پہلے اُسی شبد چِنھ کا اُچارن بالکل دوسرا تھا. جے مارکارٹ کی رائے ھے کہ اس شبد چنھ کا سب سے پرانا اُچارن (تلفظ) 'جیتسی' یا 'جیویتسی' تھا. اُس کا یہ بھی خیال ھے کہ اِسی نام کو اِسٹریبو‡ نے 'اسی اُوئی' اور پامپیسٹراگس نے 'اسیین' لکھا ھے. جاپانی اُسے جیتسو یا جواتسو کہتے تھے. اُو فرینکو کی رائے ھے کہ اِس کا پرانا اُچارن 'نیجویتسی' تھا. اسی طرح بدلتے بدلتے یہ ودوان آجکل کے یوایچی لفظ کو یونانی 'سیدین' کے ساتھ جا ملاتے ھیں. یہ لفظ عام طور پر مدھیہ ایشیا کی اُس زمانے کی سب جاتیوں کے لئے اِستعمال کیا جاتا ھے.

اسی نام کا پتہ حال میں پروفیسر سیج نے لگایا ھے. ایف. ڈبلیو. میولر کی رائے ھے کہ جس چینی شبد کو آجکل یوایچی پڑھا جاتا ھے اُسے ھی دو ھزار سال پہلے ارسی پڑھا جاتا تھا. اوٹو فرینکے چینی زبان کے ایک دوسرے بہت بڑے ودوان ھیں. اُن کی بھی یہی رائے ھے کہ یوایچی اور ارسی ایک ھی شبد ھیں اور ایک ھی قوم کو ظاھر کرتے ھیں.§ اگر ھم چینی بھاشا کے اِن ودوانوں کی بات ٹھیک مان لیں تو اِس سے تخاریوں کی سمسیا' اندو یوروپین سمسیا' اور ایک درجے تک بھارتیہ سمسیا کو حل کرنے میں بڑی مدد ملتی ھے اور اُس پر نئی روشنی پڑ جاتی ھے.

اب سوال یہ رہ جاتا ھے کہ تخاری قوم اور کیوسن قوم میں کیا تعلق ھے؟ چینی اتہاسگیہ میولر کا کہنا ھے کہ پرانے ترک جس بھاشا کو توکسری بھاشا کہا کرتے تھے اُسی کو آجکل کے ودوان تخاری 'الف' کہتے ھیں. ان پرانے ترکوں کو ڈئیجر بھی کہتے ھیں. ترفان میں ڈئیجر قوم کی ایک ھاتھ کی لکھی چیز ملی ھے جس میں ایک دوسری کتاب 'دس کرم بدھ اودان مالا' کے بارے میں لکھا ھے کہ اُس کا کیوسن بھاشا سے تخاری میں انوواد کیا گیا اور تخاری سے ترکی میں. اِس سے پتہ چلتا ھے کہ یہ کتاب کیوسن سرحد سے تخارستان گئی' اور وھاں سے ترکوں کے پاس گئی. یہاں پر یہ صاف دکھائی دیتا ھے کہ تخاری لوگ دوسرے تھے اور کیوسن لوگ دوسرے تھے. ان کیوسن لوگوں کو ھی بھارت میں 'کشن' کہا گیا ھے. میولر کا کہنا ھے کہ کشن لوگوں کے دیش کا نام کیوسن تھا اور وہ دیش گاندھار اور کابل کا علاقہ تھا. اسٹینلینو کی یہ بھی رائے ھے کہ گاندھار ھی کشن قوم کی راجدھانی تھی. اِس سب سے ھمیں پتہ چلتا ھے کہ ھن لوگوں نے یوایچی قوم کے لوگوں کو چین کی

†—**Eranshahr**, p. 206.

§—**O. Francke**, op. cit, p. 23 f.

हम बयान कर चुके हैं. अब हम उनके शासक वर्ग की कुछ खोज करना चाहते हैं. उनके शासक वर्ग के लोग अर्सी (Arsi) कहलाते थे. मालूम होता है इन्हीं को यूनानी इतिहास लेखक स्ट्रैबो असियानी या असीई कह कर पुकारता है. जर्मनी के कुछ विद्वानों का ख़याल है कि यह अर्सी लोग इन्डो-यूरोपियन थे. चीनी इतिहास की पुस्तकों में जिस क़ौम को यूएची कहा गया है बहुत दिनों तक वे और तुखारी एक ही क़ौम समझे जाते रहे. चीनी ग्रन्थ शीकी (Schike)‡ में लिखा है "हियुङ्गनु (हूण) क़ौम के राजा मोदुक (मकतुर) ने सन ɔ79 ईसवी पूर्व में चीन के सम्राट को सूचना दी कि मैंने यूएची क़ौम को मिटा दिया है. हूण राजा लौश्वाङ्ग ने यूएची क़ौम के राजा को मार कर उसकी खोपड़ी का पीने का प्याला बना रक्खा था. शुरू में यूएची क़ौम के लोग चीन की पच्छमी सरहद पर तुनहुआङ्ग और कीलीन पहाड़ों के बीच में रहते थे. हियुङ्गनु की इस विजय के बाद ये लोग आजकल रूसी तुर्किस्तान में फ़र्ग़ाना नामक इलाक़े के उस पार जाकर बस गये और अधिक पच्छिम मे बढ़ कर उन्होंने तहिया क़ौम के लोगों का विजय किया और उन्हें अपनी प्रजा बना लिया. इस समय से वे आक्सस नदी के उत्तर मे रहते रहे और वहीं उनकी राजधानी थी. इनमें से थोड़े से लोग जो आगे न बढ़ पाए थे दक्खिन के पहाड़ो मे कि-आङ्ग इलाक़े में बस गये थे. ये लोग बाद मे 'छोटी यूएची' के नाम से मशहूर हुए. ये लोग तुनहुआङ्ग के दक्खिन से लेकर पामीर तक की पहाड़ियों में दूसरी तिब्बती क़ौमों के साथ रहते थे. मालूम होता है कि ज्यादा क़दीम तुखारी राज्य के क़ायम करने वाले यही लोग थे.§ विन्सेन्ट स्मिथ और स्टेनकोनो के अनुसार इस छोटी यूएची क़ौम के लोगों ने ही गन्धार देश के अन्दर जिसे आजकल क़न्धार कहते हैं पुरुषपुर मे अपनी राजधानी क़ायम की थी. पुरुषपुर ही आजकल पेशावर कहलाता है.

कुछ विद्वानों का यह ख़याल है कि तुखारी लोग और तहिया क़ौम के लोग जिन्हें यूएची ने विजय किया एक ही थे. अगर यह बात सच है तो यूएची क़ौम की बाबत हमें कुछ नई खोज करनी पड़ेगी.† इसके लिए हमें चीनी भाशा की ख़ासियत को ध्यान में रखना होगा. वह यह कि चीनी लिपी में अक्षर नहीं हैं बल्कि कई हज़ार शब्द-चिन्ह हैं. इसलिए अभी तक एक ही चीनी लिखावट को चीन के अलग अलग सूबों में अलग अलग तरह पढ़ा जाता है. चीनी लिपि के विद्वान हमें बताते हैं कि जिस चिन्ह को

هم بیان کرچکے هیں۔ اب هم اُن کے شاسک ورگ کی کچھ کھوج کرنا چاهتے هیں۔ اُن کے شاسک ورگ کے لوگ ارسی (Arsi) کہلاتے تھے ۔ معلوم هوتا هے اِنهیں کو یونانی اِتہاس لیکھک استریبو اسیانی یا اسیئی کہکر پکارتا هے ۔ جرمنی کے کچھ ودوانوں کا خیال هے کہ یہ ارسی لوگ انڈو یوروپین تھے ۔ چینی اِتہاس کی پستکوں میں جس قوم کو یوایچی کہا گیا هے بہت دنوں تک وے اور تخاری ایک هی قوم سمجھے جاتے رهے ۔ چینی گرنتھ شیکی (Schike ‡ میں لکھا هے—هیونگنو (هن) قوم کے راجا مودک (مکتور) نے سن 379 عیسوی پورو میں چین کے سمراٹ کو سوچنا دی کہ میں نے یوایچی قوم کو مٹا دیا هے ۔ هن راجہ لوشوانگ نے یوایچی قوم کے راجہ کو مارکر اُس کی کھوپڑی کا پینے کا پیالہ بنا رکھا تھا ۔ شروع میں یوایچی قوم کے لوگ چین کی پچھمی سرحد پر تنہوآنگ اور کیلین پہاڑوں کے بیچ میں رهتے تھے۔ هیونگنو کی اِس وجئے کے بعد یہ لوگ آجکل روسی ترکستان میں فرغانہ نامک علاقے کے اُس پار جاکر بس گئے اور ادهک پچھم میں بڑھ کر اُنهوں نے تہیا قوم کے لوگوں کو وجئے کیا اور اُنهیں اپنی پرجا بنا لیا۔ اِس سمے سے وے آکسس ندی کے اُتر میں رهتے رهے اور وهیں اُن کی راجدهانی تھی ۔ اِن میں سے تھوڑے سے لوگ جو آگے نہ بڑھ پائے تھے دکھن کے پہاڑوں میں کیانگ علاقے میں بس گئے تھے۔ یہ لوگ بعد میں 'چھوٹی یوایچی' کے نام سے مشہور هوئے ۔ یہ لوگ تنہوانگ کے دکھن سے لیکر پامیر تک کی پہاڑیوں میں دوسری تبتی قوموں کے ساتھ رهتے تھے ۔ معلوم هوتا هے کہ زیادہ قدیم تخاری راجیہ کے قایم کرنے والے یہی لوگ تھے ۔§ ونسینٹ اِسمتھ اور استین کونو کے انوسار اِس چھوٹی یوایچی قوم کے لوگوں نے هی گندهار دیش کے اندر جسے آجکل قندهار کہتے هیں پروشپور میں اپنی راجدهانی قایم کی تھی۔ پرشپور هی آجکل پیشاور کہلاتا هے۔

کچھ ودوانوں کا یہ خیال هے کہ تخاری لوگ اور تہیا قوم کے لوگ جنهیں یوایچی نے وجئے کیا ایک هی تھے ۔ اگر یہ بات سچ هے تو یوایچی قوم کی بابت همیں کچھ نئی کھوج کرنی پڑیگی ۔† اِس کے لئے همیں چینی بھاشا کی خاصیت کو دهیان میں رکھنا هوگا۔ وہ یہ کہ چینی لپی میں اکشر نہیں هیں بلکہ کئی هزار شبد چنھ هیں۔ اِس لئے ابھی تک ایک هی چینی لکھاوٹ کو چین کے الگ الگ صوبوں میں الگ الگ طرح پڑھا جاتا هے ۔ چینی لپی کے ودوان همیں بتاتے هیں کہ جس چنھ کو

‡—F. W. K. Mueller द्वारा अनुवादित دوارا انووادت Toxri and Kuisan p. ɔ71.

§—Feist, op. cit., p. 119.

†—Smith E 1'1 4, 264 Know Corpus 11, 1 lxxvi.

हैं, इसलिए तुखारी क़ौम के लोग मध्य यूरोप या उत्तर यूरोप से चलकर कारपेथियन पहाड़ को पार करके मध्य एशिया में पहुंचे होंगे. लेकिन हमें यह याद रखना चाहिये कि तुखारी भाषा में एक बहुत बड़ी तादाद ऐसी भाषाओं के शब्दों की भी है, जिनका इन्डो-यूरोपियन भाषाओं से सम्बन्ध नहीं है.$ यह बात थोड़ी बहुत सब इन्डो-यूरोपियन भाषाओं के बारे में कही जा सकती है. इससे लोगों ने यह नतीजा निकाला है कि तुखारी लोगों के सफ़र के दिनों मे तक्ल मकान (Takla Makan) के रेगिस्तान में उनके आबाद होने से पहिले बहुत सी दूसरी क़ौमों के लोग उनमे रल मिल कर खप गये होंगे, क्योंकि इस सफ़र में भी उन्हे बहुत बड़ा समय बीत गया होगा. चीनी इतिहास मे तुखारी लोगों का ज़िक्र पहले पहल 'वेई' (Wei) राजकुल के दिनो में छठी सदी ईसवी में मिलता है.* चीनी भाषा में इन लोगों को तू-हुक-लो (Tu-Huc-Lo), कोरियन भाषा में तोहोरा (Tohora) और जापानी मे तोकारा (Tokara) कहते थे. उनका मुल्क तुखारिस्तान त्यानशान पहाड़ के ऊपर तारिम नामक जगह के उत्तर में चीन से पच्छिम की ओर था. इसी पहाड़ के पास यूरोप के खोजिओं को तुखारी ज़बान की हाथ की लिखी किताबें मिली है. लेकिन उससे भी पहले का तुखारिस्तान तारिम के दक्खिन मे था और उस खोतन नामक जगह के पूरब मे था, जिसमें होकर चीनी यात्री यूआन च्वाङ्ग वहा पहुंचा था. यूआन च्वाङ्ग ने अपनी किताब 'सी-जुए-की' (दिनचर्या की रिपोर्ट) मे लिखा है कि कभी पहले जबकि रेगिस्तान इन लोगो के शहरों की दीवारों तक बढ़ता चला गया तो ये लोग उस इलाक़े को छोड़कर पास के दूसरे इलाके मे जा बसे.❀ मालूम होता है कि पानी के सूख जाने की वजह से ये लोग कई सौ साल पहले ठेठ उत्तर की तरफ़ चले गये थे. पुरानी चीनी किताबों में इन लोगों का ज़िक्र ताहिआ या ताहा क़ौम के साथ किया जाता है. चीनिओं के मुताबिक़ ताहिया क़ौम के लोग डरपोक और व्यापारी लोग थे और उनके शहरों के अलग अलग सरदार या राजा होते थे जो उन पर हकूमत करते थे. पूर्वी तुर्किस्तान के उत्तर मे इन लोगों ने वहां के ज़्यादह पुराने बाशिन्दों 'कुशी' या 'कुशू' को वहां से खदेड़कर उनकी जगह ले ली थी.†

तुखारी क़ौम की एक शाख़ की जीवन यात्रा का हाल

ہیں' اِس لئے تخاری قوم کے لوگ مدھیہ یورپ یا اُتر یورپ سے چلکر کارپیتھین پہاڑ کو پار کر کے مدھیہ ایشیا میں پہونچے ہونگے. لیکن ہمیں یہ یاد رکھنا چاہئے کہ تخاری بھاشا میں ایک بہت بڑی تعداد ایسی بھاشاؤں کے شبدوں کی بھی ہے' جن کا انڈویوروپین بھاشاؤں سے سمبندھ نہیں ہے. $ یہ بات تھوڑی بہت سب انڈو یوروپین بھاشاؤں کے بارے میں کہی جا سکتی ہے. اِس سے لوگوں نے یہ نتیجہ نکالا ہے کہ تخاری لوگوں کے سفر کے دنوں میں تکل مکان (Takla Makan) کے ریگستان میں اُن کے آباد ہونے سے پہلے بہت سی دوسری قوموں کے لوگ اُن میں رل مل کر کھپ گئے ہونگے' کیونکہ اِس سفر میں بھی اُنہیں بہت بڑا سمے بیت گیا ہوگا. چینی اتہاس میں تخاری لوگوں کا ذکر پہلے پہل 'ویئی' (Wei) راج کل کے دنوں میں چھٹی صدی عیسوی میں ملتا ہے.* چینی بھاشا میں اِن لوگوں کو تو-ہک-لو (Tu-Huc-Lo)' کورین بھاشا میں تہورا (Tohora) اور جاپانی میں توکارا (Tokora) کہتے تھے. اُن کا ملک تخارستان تیانشان پہاڑ کے اوپر تارم نامک جگہ کے اُتر میں چین سے پچھم کی اور تھا. اِسی پہاڑ کے پاس یورپ کے کھوجیوں کو تخاری زباں کی ہاتھ کی لکھی کتابیں ملی ہیں. لیکن اُس سے بھی پہلے کا تخارستان تارم کے دکھن میں تھا اور اُس ختن نامی جگہ کے پورب میں تھا' جس سے ہوکر چینی یاتری یوآن چوانگ وہاں پہونچا تھا. یوآن چوانگ نے اپنی کتاب 'سی - جوئے - کی' (دن چریا کی رپورٹ) میں لکھا ہے کہ کبھی پہلے جبکہ ریگستان اِن لوگوں کے شہروں کی دیواروں تک بڑھتا چلا گیا تو یہ لوگ اُس علاقہ کو چھوڑکر پاس کے دوسرے علاقے میں جا بسے.❀ معلوم ہوتا ہے کہ پانی کے سوکھ جانے کی وجہ سے یہ لوگ کئی سو سال پہلے ٹھیٹھ اُتر کی طرف چلے گئے تھے. پرانی چینی کتابوں میں اِن لوگوں کا ذکر تاہیا یا تاہا قوم کے ساتھ کیا جاتا ہے چینیوں کے مطابق تاہیا قوم کے لوگ ڈرپوک اور بیوپاری لوگ تھے اور اُن کے شہروں کے الگ الگ سردار یا راجا ہوتے تھے جو اُن پر حکومت کرتے تھے. پوربی ترکستان کے اُتر میں اِن لوگوں نے وہاں کے زیادہ پرانے باشندوں 'کوشی' یا 'کوشو' کو وہاں سے کھدیڑ کر اُن کی جگہ لے لی تھی.†

تخاری قوم کی ایک شاخ کی جیون یاترا کا حال

$—Feist, op. cit.

*—J. Marquart, Eranshahr p. 200.

❀—O. Francke, Zur Kenntnis der Tuerkvoelker und Skythen Zentralasiens p. 28.

†—J. Marquart, Voelkstum der Komanen, p. 641 f.

जो खोतान में बोली जाती थी. जर्मनी के कुछ खोजियों को वहां पर संस्कृत के तन्त्र व्याकरण का एक पन्ना तक मिला है जो इस समय बरलिन के एथनालाजिकल अजायब घर में रक्खा हुआ है. उसकी लिपि बंगला लिपि से बहुत मिलती हुई है. बौद्ध धर्म के अलावा 'मानी' धर्म और ईसाई धर्मके मानने वालेभी वहां मौजूद थे. यहूदी धर्म के मानने वाले भी थे. रूसी मध्य एशिया में अभी तक बहुत से यहूदी मौजूद हैं. उस इलाक़े की खुदाई में जो चीजें मिली हैं उनसे साबित है कि वे लोग चित्रकला इत्यादि में बहुत ऊंचे दर्जे की तरक़्क़ी कर चुके थे (The publications of Professor Gruenwede of Berlin). भारतीय किताबों से पता चलता है कि सम्राट अशोक ने अपने यहां के उन विद्रोहियों को, जिन्होंने अशोक के पुत्र कुनाल की आंखें निकाल ली थीं, जलावतन करके मध्य एशिया भेज दिया था.† यूआन च्वांग के सफ़रनामा‡ में लिखा है कि सातवीं सदी ईसवी में साक्य कुल के राजा उस देश के कुछ हिस्सों में शासन करते थे. इन सब से जाहिर है कि पुराने जमाने में एशिया के उस हिस्से में हिन्दुस्तानियों की काफ़ी बड़ी बस्ती आबाद थी.❀ पूर्वीय तुर्किस्तान के इन बेहद तहज़ीबयाफ़्ता लोगों के बारे में अभी बहुत खोज की जरूरत है. तुर्फ़ान में उनकी कुछ हाथ की लिखी किताबें भी मिली हैं. यूरोप के विद्वान इन किताबों की छान बीन कर रहे हैं. उम्मीद है कि एक न एक दिन इन किताबों से एशिया के हिस्से की खोई हुई संस्कृति और उसके साथ ही साथ तिब्बत के लामा धर्म दोनों पर नई रोशनी पड़ेगी.

हम ऊपर कह चुके हैं कि एशिया के बीच के इस हिस्से को तौक्सरिस्तान या तुखारिस्तान कहा जाता था और वहीं के लोगों को तौक्सरी क़ौम या तुखारिस्तानी क़ौम या तुखारी कहते थे. हम यह भी कह चुके हैं कि तौक्सरी भाषा पच्छमी यूरोप की भाषाओं से या इन्डो यूरोपियन भाषाओं से मिलती हुई है. इस भाषा के दो रूप हैं—तुखारी अ, तुखारी ब. इनके कुछ शब्द हम यहां देते हैं. तुखारी उन में सौ को कौन्त (Koont) कहते हैं, और तुखारी ब में कैन्त (Kaent) लातीनी में सेन्तम (Centum) यूनानी में हक्सातीन और पुरानी हिन्दुस्तानी जबान में शतम. सालमन मछली को तुखारी बमी लक्स (Laks) कहते हैं और जर्मन भाषा में लैक्स (Lacks). इससे जर्मनी के कुछ विद्वानों ने, जैसे पोकोनी और एफ़० डब्ल्यू० के० म्यूलर, यह राय क़ायम की है कि चूंकि सालमन मछली उन नदियों में मिलती है जो यूरोप के उत्तरी समुद्र में गिरती

جو ختن میں بولی جاتی تھی. جرمنی کے کچھ کھوجیوں کو وهاں پر سنسکرت کے تنتر ویاکرن کا ایک پنا تک ملا هے جو اِس سمے برلن کے ایتھنالجیکل عجائب گھر میں رکھا هوا هے . اُس کی لپی بنگلا لپی سے بہت ملتی هوئی هے . بودھ دھرم کے علاوہ ' مانی ' دھرم اور عیسائی دھرم کے ماننے والے بھی وهاں موجود تھے . یہودی دھرم کے ماننے والے بھی تھے . روسی مدھیہ ایشیا میں ابھی تک بہت سے یہودی موجود ھیں. اُس علاقے کی کھدائی میں جو چیزیں ملی ھیں اُن سے ثابت ھے کہ وے لوگ چترکلا اِتیادی میں بہت اونچے درجے کی ترقی کر چکے تھے (The publications of Professor Gruenwede of Berlin)· بھارتیہ کتابوں سے پتہ چلتا ھے کہ سمراٹ اشوک نے اپنے یہاں کے اُن ودروھیوں کو' جنھوں نے اشوک کے پتر کونال کی آنکھیں نکال لی تھیں' جلا وطن کرکے مدھیہ ایشیا بھیج دیا تھا . † یوآن چوانگ کے سفرنامہ ‡ میں لکھا ھے کہ ساتویں صدی عیسوی میں ساکیہ کل کے راجہ اُس دیش کے کچھ حصوں میں شاسن کرتے تھے . اِن سب سے ظاهر ھے کہ پرانے زمانے میں ایشیا کے اُس حصے میں هندستانیوں کی کافی بڑی بستی آباد تھی . ❀ پوروِیہ ترکستان کے اِن بےحد تہذیب یافتہ لوگوں کے بارے میں ابھی بہت کھوج کی ضرورت ھے . ترفان میں اُن کی کچھ هاتھ کی لکھی کتابیں بھی ملی ھیں . یورپ کے ودوان اِن کتابوں کی چھان بین کر رہے ھیں . اُمید ھے کہ ایک نہ ایک دن اِن کتابوں سے ایشیا کے حصے کی کھوئی هوئی سنسکرتی اور اُس کے ساتھ ھی ساتھ تبت کے لاما دھرم دونوں پر نئی روشنی پڑے گی .

هم اوپر کہ چکے ھیں کہ ایشیا کے بیچ کے اِس حصے کو توکسرستان یا تخارستان کہا جاتا تھا اور وهیں کےلوگوں کو توکسری قوم یا تخارستانی قوم یا تخاری کہتے تھے . هم یہ بھی کہ چکے ھیں کہ توکسری بھاشا پچھمی یورپ کی بھاشاؤں سے یا اِنڈو یوروپین بھاشاؤں سے ملتی هوئی ھے . اِس بھاشا کے دو روپ ھیں — تخاری الف' تخاری ب . اِن کے کچھ شبد هم یہاں دیتے ھیں . تخاری اُن میں سو کو کونت (Koont) کہتے ھیں' اور تخاری ب میں کینت (Kaent) لاطانی میں سینتم (Centum) یونانی میں اِکساتین اور پرانی هندستانی زبان میں شتم . سالمن مچھلی کو تخاری بھی لکس (Laks) کہتے ھیں اور جرمن بھاشا میں لیکس (Lacks) . اِس سے جرمنی کے کچھ ودوانوں نے' جیسے پوکونی اور ایف . ڈبلیو . کے . میولر' یہ رائے قائم کی ھے کہ چونکہ سالمن مچھلی اُن ندیوں میں ملتی ھے جو یورپ کے اُتری سمندر میں گرتی

†—श्री जयचन्द्र नारङ्ग, भारतीय इतिहास की रूप रेखा जिल्द 2 सफ़े 132-561.

شری جے چندر نارنگ' بھارتیہ اِتہاس کی روپ ریکھا جلد 2 صفحے 132-561.

‡—Yuan-chwang's travels, translated by Watters, 1905.

❀—Jayachandra Narong, Ibid.

थे और इसी बात का साफ़ साफ़ समर्थन तुर्फ़ान की उन ज्यादहतर खोपड़ियों से भी होता है, जो साफ़ मिली जुली नसल की खोपड़ियां हैं.† बरलिन के एथनालाजिकल अजायब घर में यूएची क़ौम के लोगों के जो चित्र रक्खे हैं उनसे पता चलता है कि वे लोग मोटे ताज़े शरीर के और तोते की सी लम्बी नाक वाले थे.

उनकी आंखें भूरी थीं लेकिन आंखों की बनावट मंगोलियन थी और डाढ़ी के बाल लाल रंग के थे. गर्ग संहिता के गोलक खंड में कालयवन की बाबत लिखा है कि उसकी डाढ़ी के बाल लाल थे. इस तरह हमें, सीथियन क़ौम और यूएची क़ौम दोनों की खोपड़ियों आदि से यही पता चलता है कि ये सब लोग मिली जुली नसल के लोग थे.

लेकिन इन लोगों की बोली इन्डो-यूरोपियन बोली थी, यानी उसी तरह की बोली थी जिस तरह की यूनानी, लातीनी, सेल्टिक और प्यूटनिक भाषाएं हैं, और जिन्हे सेन्टम ग्रुप की (Centum group) भाषाएं कहा जाता है. इससे धोके में पड़कर कुछ विद्वानों ने, जो इस बात के पक्षपाती हैं कि आर्य लोग पूर्व ऐतिहासिक समय में जर्मनी और उसके आस पास के प्रदेश से निकल कर सारे यूरोप और एशिया में फैले, यह अनुमान कर लिया कि ताक्सरी क़ौम के लोग भी शुरू में जर्मनी ही के रहने वाले थे जो किसी बहुत प्राचीन समय में यूरोप से आकर चीन की सरहद पर मध्य एशिया में बस गये थे. लेकिन बाद की खोजों से पता चलता है कि यद्यपि ताक्सरी भाषा और सेन्टम ग्रुप की भाषाओं की बुनियाद एक ही थी, फिर भी ताक्सरी लोगों की भाषा उनकी नसल की तरह एक बहुत ही मिली जुली भाषा थी और बहुत सी भाषाओं के मेल से बनी थी.❀

इन लोगों की बाबत और जिन जिन बातों का पता चला है उनमें एक यह है कि उनमें शासक वर्ग के लोग अर्सी (Arsi) कहलाते थे (संस्कृत किताबों में उन्हें रिसिक कहा गया है*) और उनका मज़हब बौद्ध था. वे बौद्ध धर्म की महायान सम्प्रदाय के मानने वाले थे. भारतीय, चीनी, और ईरानी-यूनानी संस्कृतियों का यह देश संगम स्थान था. इसीलिए उस ज़माने के ताक्सरिस्तान (मध्य एशिया) के रहने वाले बहुत ही ऊंचे दर्जे के सुसभ्य और संस्कृत लोग थे. पता चला है कि इस देश में उस ज़माने में बहुत सी भाषायें बोली जाती थीं, जिनमें एक ख़ास हिन्दुस्तानी भाषा भी थी,

تھے اور اِسی بات کا صاف صاف سمرتھن ترفان کی اُن زیادہ تر کھوپڑیوں سے بھی ھوتا ھے' جو صاف ملی جلی نسل کی کھوپڑیاں ھیں۔ † برلن کے ایتھنالجیکل عجائب گھر میں یوایچی قوم کے لوگوں کے جو چتر رکھے ھیں اُن سے پتہ چلتا ھے کہ یہ لوگ موٹے تازے شریر کے اور طوطے کی سی لمبی ناک والے تھے۔

اُن کی آنکھیں بھوری تھیں لیکن آنکھوں کی بناوٹ منگولین تھی اور داڑھی کے بال لال رنگ کے تھے۔ گرگ سنہتا کے گولک کھنڈ میں کال یون کی بابت لکھا ھے کہ اُس کی داڑھی کے بال لال تھے۔ اِس طرح ھمیں' سیتھین قوم اور یوایچی قوم دونوں کی کھوپڑیوں آدی سے یہی پتہ چلتا ھے کہ سب لوگ ملی جلی نسل کے لوگ تھے۔

لیکن اِن لوگوں کی بولی انڈو یوروپین بولی تھی' یعنی اُسی طرح کی بولی تھی جس طرح کی یونانی' لاطونی' سیلٹک اور پیوٹنک بھاشائیں ھیں' اور جنھیں سینٹم گروپ کی (Centum group) بھاشائیں کہا جاتا ھے۔ اِس سے دھوکے میں پڑ کر کچھ ودوانوں نے' جو اِس بات کے پکشپاتی ھیں کہ آریہ لوگ پوروایتہاسک سمے میں جرمنی اور اُس کے آس پاس کے دیش سے نکل کر سارے یورپ اور ایشیا میں پھیلے' یہ انومان کر لیا کہ تاکسری قوم کے لوگ بھی شروع میں جرمنی ھی کے رھنے والے تھے جو کسی بہت پراچین سمے میں یورپ سے آ کر چین کی سرحد پر مدھیہ ایشیا میں بس گئے تھے۔ لیکن بعد کی کھوجوں سے پتہ چلتا ھے کہ یدپی تاکسری بھاشا اور سینٹم گروپ کی بھاشاؤں کی بنیاد ایک ھی تھی' پھر بھی تاکسری لوگوں کی بھاشا اُن کی نسل کی طرح ایک بہت ھی ملی جلی بھاشا تھی اور بہت سی بھاشاؤں کے میل سے بنی تھی۔ ❀

اِن لوگوں کی بابت اور جن جن باتوں کا پتہ چلا ھے اُن میں ایک یہ ھے کہ اُن میں شاسک ورگ کے لوگ ارسی (Arsi) کہلاتے تھے (سنسکرت کتابوں میں اُنھیں رسک کہا گیا ھے *) اور اُن کا مذھب بودھ تھا۔ وے بودھ دھرم کی مہایان سمپردائے کے ماننے والے تھے۔ بھارتیہ' چینی' اور ایرانی یونانی سنسکرتیوں کا یہ دیش سنگم استھان تھا۔ اِسی لئے اُس زمانے کے تاکسرستان (مدھیہ ایشیا) کے رھنے والے بہت ھی اونچے درجے کے سوسبھیہ اور سنسکرت لوگ تھے۔ پتہ چلا ھے کہ اس دیش میں اُس زمانے میں بہت سی بھاشائیں بولی جاتی تھیں' جن میں ایک خاص ھندستانی بھاشا بھی تھی'

†—Klaatsch, Morphologische, Studien zur Rassen Diagnistik der Turfan Schsedel pp. 1-47.

❀—Peist, Indermanund Germanen.

*—श्री जयचन्द्र नारङ्ग, भारतीय इतिहास की रूप रेखा जिल्द हिन्दी.

شری جے چند نارنگ' بھارتیہ اتہاس کی روپ ریکھا جلد ھندی۔

II, 1895, P. 5).§ इस तरह जिस्म की बनावट के लिहाज से पुराने जमाने की सीथियन क़ौम के लोग एक मिली जुली क़ौम थे. लेकिन उनकी बोली के बारे में सब विद्वानों की यही राय है कि वे ईरानी जबान ही बोलते थे.$ ईरान के सभ्य और स्थाई बाशिन्दे इन खानाबदोश ईरानियों को ही 'शक' कहते थे, ठीक उसी तरह जिस तरह वैदिक साहित्य में उन खानाबदोश लोगों को जो ब्राह्मणों के आचार विचार का पालन न करते थे 'व्रात्य' (Vratya) कहा जाता था.

इसी इलाक़े में पच्छमी त्यानशान के अन्दर 'इस्सीकुल' के पास पुराने जमाने की कुछ और खोपड़ियां मिली हैं, जो पहली सदी ईसा पूर्व या दूसरी सदी ईसा पूर्व की समझी जाती हैं. आईबेनोव्सकी ने सन 1890 में इन खोपड़ियों का हाल लिखा है. यह खोपड़ियां ज्यादातर चौड़े ढांचे की हैं.

इसके बाद उन क़ौमों का जमाना आता है जिन्हें हम ताक्सीस्तान के ऐतिहासिक बाशिन्दे कह सकते हैं. पूर्वी तुर्किस्तान में, जिसे आजकल सिन्क्याङ्ग कहते हैं, एक जगह तुर्फ़ान (Turfan) है. किसी जमाने में इस इलाक़े के लोग बौद्ध थे. जर्मनी के कुछ इतिहासखोजी उन पुरानी बौद्ध बस्तियों के खंडहरों और बचे खुचे निशानों की खोज में वहां पहुंचे. ये लोग वहां से बहुत सी चीजें लाये जिनमे कुछ आदमियों की खोपड़ियां भी हैं. ब्रेस्लौ विश्वविद्यालय के स्वर्गीय प्रोफ़ेसर क्लाश ने इन खोपड़ियों का इम्तहान किया है. उन्होंने लिखा है कि—"भावों से भरे हुये जो खजाने हमें यहां मिले हैं उनके चहरे मोहरे और ढांचे से साफ़ मालूम होता है कि उस जमाने की यहां की आबादी मिली जुली नसलों और क़ौमों की आबादी थी. इनमें कहीं कहीं साफ़ मंगोल क़ौम के से चेहरे मोहरे मिलते हैं, और कहीं कहीं उन्हीं के पास और उन्हीं में हिले मिले सुन्दर सुहावने गोरे रंग और सुनहरे बालों वाले लोगों के चेहरे मोहरे मिलते हैं, जिनकी लम्बी नाकें थीं और जिनकी आंखों मे चिन्तन की गम्भीरता मौजूद थी. ......तुर्फ़ान में जो चीजें मिली हैं उनकी वैज्ञानिक परीक्षा से साफ़ पता चलता है कि यहां की आबादी में और लोगों की नसल में तरह तरह का मेल था. इनमें कई तरह की अलामतें बिलकुल साफ़ अलग अलग दिखाई देती हैं और कुछ एक दूसरे में मिल जुल गई हैं." अन्त में उन्होंने लिखा है कि "ऐतिहासिक चीजों की खोज से मुझे यह पता चलता है कि यहां के लोग मिली जुली नसल के

('II 1395 P. 5) § اِس طرح جسم کی بناوٹ کے لحاظ سے پرانے زمانے کی سیدین قوم کے لوگ ایک ملی جلی قوم تھے. لیکن اُن کی بولی کے بارے میں سب ودوانوں کی یہی رائے ہے کہ وے ایرانی زبان ہی بولتے تھے. $ ایران کے سبھیہ اور استھائی باشندے اِن خانہ بدوش ایرانیوں کو ہی 'شک' کہتے تھے، ٹھیک اُسی طرح جس طرح ویدک ساہتیہ میں اُن خانہ بدوش لوگوں کو جو براہمنوں کے آچار وچار کا پالن نہ کرتے تھے 'ورانیہ' (Vratya) کہا جاتا تھا.

اِسی علاقے میں پچھمی تیانشان کے اندر 'اِسی‌کل' کے پاس پرانے زمانے کی کچھ اور کھوپڑیاں ملی ہیں، جو پہلی صدی عیسیٰ پورو یا دوسری صدی عیسیٰ پورو کی سمجھی جاتی ہیں. آئبینوبسکی نے سن 1890 میں اِن کھوپڑیوں کا حال لکھا ہے. یہ کھوپڑیاں زیادہ تر چوڑے ڈھانچے کی ہیں.

اِس کے بعد اُن قوموں کا زمانہ آتا ہے جنہیں ہم تاکسیستان کے ایتہاسک باشندے کہہ سکتے ہیں. پوروی ترکستان میں، جسے آجکل سنکیانگ کہتے ہیں، ایک جگہ ترفان (Turfan) ہے. کسی زمانے میں اس علاقے کے لوگ بودھ تھے. جرمنی کے کچھ اِتہاس کھوجی اُن پرانی بودھ بستیوں کے کھنڈروں اور بچے کھچے نشانوں کی کھوج میں وہاں پہونچے. یہ لوگ وہاں سے بہت سی چیزیں لائے جن میں کچھ آدمیوں کی کھوپڑیاں بھی ہیں. بیسلو وشودیالیہ کے سورگیہ پروفیسر کلاش نے اِن کھوپڑیوں کا امتحان کیا ہے. اُنہوں نے لکھا ہے کہ— "بھاؤں سے بھرے ہوئے جو خزانے ہمیں یہاں ملے ہیں اُن کے چہرے مہرے اور ڈھانچے سے صاف معلوم ہوتا ہے کہ اُس زمانے کی یہاں کی آبادی ملی جلی نسلوں اور قوموں کی آبادی تھی. اِن میں کہیں کہیں صاف منگول قوم کے سے چہرے مہرے ملتے ہیں، اور کہیں کہیں اُنھیں کے پاس اور اُنھیں میں ہلے ملے سندر سہاونے گورے رنگ اور سنہرے بالوں والے لوگوں کے چہرے مہرے ملتے ہیں، جن کی لمبی ناکیں تھیں اور جن کی آنکھوں میں چنتن کی گمبھیرتا موجود تھی. . . . ترفان میں جو چیزیں ملی ہیں اُن کی ویگیانک پریکشا سے صاف پتہ چلتا ہے کہ وہاں کی آبادی میں اور لوگوں کی نسل میں طرح طرح کا میل تھا. اِن میں کئی طرح کی علامتیں بالکل صاف الگ الگ دکھائی دیتی ہیں اور کچھ ایک دوسرے میں مل جل گئی ہیں." انت میں انہوں نے لکھا ہے کہ "ایتہاسک چیزوں کی کھوج سے مجھے یہ پتہ چلتا ہے کہ یہاں کے لوگ ملی جلی نسل کے

§—G. Nagy, The Nationality of the Scyths; E. H. Minns, Scythians and Greeks, pp. 46-47.

$—Encyclopaedia Britanica, Vol. XVII, p. 565, 1929.

प्रोफ़ेसर सरगी के मुताबिक़ लम्बी खोपड़ियां हैं. लम्बी खोपड़ियां पुराने जमाने में उन क़ौमों की होती थीं, जो बहरेरूम यानी भूमध्य सागर के आस पास रहती थीं. इससे मालूम होता है कि उसी बहरेरूम वाली और लम्बी खोपड़ी वाली नसल के लोग बहुत पुराने जमाने में मध्य एशिया के इस इलाक़े में रहते थे. बच्चों के घड़े में बन्द करके दफ़न किये जाने का रिवाज भी बहरेरूम के आस पास कई पुरानी क़ौमों में मिलता है, मसलन मिनावन‡ क़ौम के लोगो मे और पुराने यूनानियो यानी एथेन्स के लोगो में. इस मजमून का लेखक सन 1914 में खुद यूनान मे मौजूद था और उसके सामने एथेन्स नगर मे एक पुराने शहर की खुदाई के समय एक घड़े के अन्दर दफ़न किया हुआ बच्चे का पिंजर मिला था. हिन्दुस्तान के कुछ हिस्सों में भी हमे हिन्दुओं मे यह रिवाज मिलता है कि छै बरस तक की उम्र के बच्चे जलाए नहीं जाते, बल्कि या तो जमीन में दफ़न कर दिये जाते हैं और या घड़े में बन्द करके गाड़ दिये जाते हैं.

इसके बाद वह जमाना आता है जिसे हम एशिया का ऐतिहासिक जमाना कह सकते हैं. मध्य एशिया में रहने वाले खानाबदोश लोगों को उस जमाने के ईरानी 'शक' कहते थे और यूनानी 'सीदियन' कहते थे. इन शुरू के सीदियन लोगो की खोपड़ियों के बारे में ई० एच० मिन्स लिखता है कि उनमे अलग अलग लोगों की अलग अलग तरह की खोपड़ियां मिलती हैं. और ये सब सीदियन क़ौम ही के थे. सब से आखिर के दिनों मे चरतौम्बिक नामक जगह पर पांच खोपड़ियां मिली हैं, जिन पर के० ई० वौन बेयर (K.E. Von Beer in A. S. H.) ने बहस की है. इन पांच खोपड़ियों में से दो चौड़ी क़िस्म की हैं, दो लम्बी क़िस्म की और एक मंझाले क़िस्म की है. इसी तरह काउन्ट बावरिन्स कोज ने अपनी किताब 'स्मीला' मे कुछ खोपड़ियो की तसवीरें दी हैं, जो मंगोलियन शकल की मालूम होती हैं, और कुछ ऐसी हैं, जो साफ़ यूरोपियन क़ौमो की सी खोपड़िया हैं. (Som II brig XXVI,XXX) प्रोफ़ेसर अनातान बोगदानो भी इसी नतीजे पर पहुचे हैं. उनका कहना है कि सीदियन क़ौम की क़ब्रों में ज्यादातर खोपड़ियां लम्बे ढङ्ग की मिलती हैं और कभी कभी कोई कोई खोपड़ी मंगोलियन ढङ्ग की मिलता है. उनकी यह भी राय है कि शक क़ौम के जमाने में वहां के लोगों की खोपड़ियां दिन पर दिन आम तौर पर छोटी और चौड़ी होती जा रही थीं यानी उनकी लम्बाई और चौड़ाई क़रीब क़रीब बराबर होती जा रही थी (Congress International Anthropologic,

پروفیسر سرگی کے مطابق لمبی کھوپڑیاں ہیں۔ لمبی کھوپڑیاں پرانے زمانے میں اُن قوموں کی ہوتی تھیں، جو بحیرۂ روم یعنی بھو مدھیہ ساگر کے آس پاس رہتی تھیں۔ اِس سے معلوم ہوتا ہے کہ اُسی بحیرۂ روم والی اور لمبی کھوپڑی والی نسل کے لوگ بہت پرانے زمانے میں مدھیہ ایشیا کے اِس علاقے میں رہتے تھے۔ بچوں کے گھڑے میں بند کر کے دفن کئے جانے کا رواج بھی بحیرۂ روم کے آس پاس کئی پرانی قوموں میں ملتا ہے، مثلاً مِنوَبن ‡ قوم کے لوگوں میں اور پرانے یونانیوں یعنی ایتھنس کے لوگوں میں۔ اس مضمون کا لیکھک سن 1914 میں خود یونان میں موجود تھا اور اس کے سامنے ایتھنس نگر میں ایک پرانے شہر کی کھدائی کے سمے ایک گھڑے کے اندر دفن کیا ہوا بچے کا پنجر ملا تھا۔ ہندستان کے کچھ حصوں میں بھی ہمیں ہندؤں میں یہ رواج ملتا ہے کہ چھ برس تک کی عمر کے بچے جلائے نہیں جاتے، بلکہ یا تو زمین میں دفن کر دئے جاتے ہیں اور یا گھڑے میں بند کر کے گاڑ دئے جاتے ہیں۔

اِس کے بعد وہ زمانہ آتا ہے جسے ہم ایشیا کا ایتہاسک زمانہ کہہ سکتے ہیں۔ مدھیہ ایشیا میں رہنے والے خانہ بدوش لوگوں کو اُس زمانے کے ایرانی 'شک' کہتے تھے اور یونانی 'سیدین' کہتے تھے۔ اِن شروع کے سیدین لوگوں کی کھوپڑیوں کے بارے میں ای۔ ایچ۔ منس لکھتا ہے کہ اُن میں الگ الگ لوگوں کی الگ الگ طرح کی کھوپڑیاں ملتی ہیں۔ اور یہ سب سیدین قوم ہی کے تھے۔ سب سے آخر کے دنوں میں چرتومبک نامک جگہ پر پانچ کھوپڑیاں ملی ہیں، جن پر کے۔ ای۔ وون بیئر (K. E. Von Beer in A.S.H.) نے بحث کی ہے۔ اِن پانچ کھوپڑیوں میں سے دو چوڑی قسم کی ہیں، دو لمبی قسم کی اور ایک منجھولے قسم کی ہے۔ اِسی طرح کاؤنٹ باورنس کوز نے اپنی کتاب 'اسمیلا' میں کچھ کھوپڑیوں کی تصویریں دی ہیں، جو منگولین شکل کی معلوم ہوتی ہیں، اور کچھ ایسی ہیں، جو صاف یوروپین قوموں کی سی کھوپڑیاں ہیں۔ (Som II brig XXVI, XXX) پروفیسر اناتون بوگدانوں بھی اِسی نتیجے پر پہونچے ہیں۔ اِن کا کہنا ہے کہ سیدین قوم کی قبروں میں زیادہ تر کھوپڑیاں لمبے ڈھنگ کی ملتی ہیں اور کبھی کبھی کوئی کوئی کھوپڑی منگولین ڈھنگ کی ملتی ہے۔ اُن کی یہ بھی رائے ہے کہ شک قوم کے زمانے میں وہاں کے لوگوں کی کھوپڑیاں دن پر دن عام طور پر چھوٹی اور چوڑی ہوتی جا رہی تھیں یعنی اُن کی لمبائی اور چوڑائی قریب قریب برابر ہوتی جا رہی تھی۔ (Congress International Anthropologie,

‡—Burroughs' Discoveries in Crete, P. 168.

मुसलिम संसार आज तक नहीं पनप पाया. सब से अन्त में मध्य एशिया पर रूसियों का हमला हुआ. इस हमले की वजह से उस देश के रहने वालों के विचारों और तरीक़ों में इस समय भी फिर एक ख़ास तरह का परिवर्तन हो रहा है. इन सब नई नई क़ौमों के आने, बसने और हमलों की पूरी छाप मध्य एशिया के बाशिन्दों की ज़िन्दगी पर पड़ती रही है.

हाल के ज़माने तक यह एक फ़ैशन रहा है कि मध्य एशिया के सब लोगों को 'तुर्क' कहा जाता है और समझा जाता है कि ये सब लोग तातारी क़ौम के हैं. बीच के ज़माने में हमारे देश में एशिया के इस हिस्से के हर बाशिन्दे को 'तुरुक' कहा जाता था. उन्नीसवीं सदी ईसवी के शुरू के यूरोपियन विद्वानों ने भी यही ग़लती की. इन लोगों ने सीथियन यानी शक क़ौम के लोगों को, यूएची क़ौम के लोगों को, ऐतिहासिक यानी असली तुर्कों को, और मुग़लों को, सब को ही तुर्क समझा, और इसी ग़लतफ़हमी मे हिन्दुस्तान के बाशिन्दों की नसल और निकास का भी फ़ैसला कर डाला. इसी ग़लतफ़हमी में वे राजपूतों को 'शक' समझे, जाटों को 'यूएची समझे, और गूजरों को 'हज़र' समझे. यही ग़लती हिन्दुस्तानियों के दिमाग़ों में भी घर कर गई है और हमारे देश के विद्वान वेद-वाक्य समझकर इसे तोते की तरह दोहराते रहे हैं.

मध्य एशिया की क़ौमों की असल नसल को ठीक ठीक समझने के लिए हमें उनके जिस्मों की बनावट और पुराने इतिहास की खोज दोनों से मदद लेनी होगी. इस सिलसिले में अभी तक बहुत ही कम खोज हुई है, फिर भी जो कुछ हुई है उसका सार हम यहां दे देते हैं. मध्य एशिया के अनाऊ इलाक़े में कई पुराने शहरों के खंडहर मिले हैं, जो शायद ईसा से दो या तीन हज़ार साल पहले के हैं. इन खंडहरों की डाक्टर पम्पेली ने बहुत खोज की है और उस पर "एक्सप्लोरेशन्स इन तुर्किस्तान" नाम की किताबें लिखी हैं. इन खोजों और किताबों की मदद से विद्वानों ने यह अन्दाज़ा लगाया है कि जो सभ्यताएं उस देश में फल फूल चुकी हैं उनमें सब से पुरानी सभ्यता उस ज़माने की है जबकि आदमी लोहे की जगह पत्थर के औज़ार इस्तेमाल किया करता था. इस पुरानी सभ्यता का सम्बन्ध एशिया कोचक की ऐतिहासिक समय से पहले की कोबन, तैरेक, और कुबन की सभ्यता से था. अनाऊ में जो चीज़ें मिली हैं, उनमें प्रोफ़ेसर सरगी को एक दुधमुंहे बच्चे का पिंजर मिला है जिसे घड़े में बन्द करके दफ़न किया गया था.† इसी के साथ कुछ और बच्चों की खोपड़ियां मिली हैं जो

مسلم سنسار آج تک نہیں پنپ پایا ۔ سب سے انت میں مدھیہ ایشیا پر روسیوں کا حملہ ہوا ۔ اس حملے کی وجہ سے اُس دیش کے رہنے والوں کے وچاروں اور طریقوں میں اس سمے بھی پھر ایک خاص طرح کا پریورتن ہو رہا ہے ۔ اِن سب نئی نئی قوموں کے آنے' بسنے اور حملوں کی پوری چھاپ مدھیہ ایشیا کے باشندوں کی زندگی پر پڑتی رہی ہے ۔

حال کے زمانے تک یہ ایک فیشن رہا ہے کہ مدھیہ ایشیا کے سب لوگوں کو ' ترک ' کہا جاتا ہے اور سمجھا جاتا ہے کہ یہ سب لوگ تاتاری قوم کے ہیں ۔ بیچ کے زمانے میں ہمارے دیش میں ایشیا کے اِس حصے کے ہر باشندے کو ' ترک ' کہا جاتا تھا. اُنیسویں صدی عیسوی کے شروع کے یوروپین ودوانوں نے بھی یہی غلطی کی ۔ ان لوگوں نے سیدین یعنی شک قوم کے لوگوں کو' یوایچی قوم کے لوگوں کو' ایتہاسک یعنی اصلی ترکوں کو' اور مغلوں کو' سب کو ہی ترک سمجھا' اور اِسی غلط فہمی میں ہندستان کے باشندوں کی نسل اور نکاس کا بھی فیصلہ کر ڈالا ۔ اِسی غلط فہمی میں وے راجپوتوں کو ' شک ' سمجھے' جاٹوں کو ' یوایچی ' سمجھے' اور گوجروں کو ' حضر ' سمجھے ۔ یہی غلطی ہندستانیوں کے دماغوں میں بھی گھر کر گئی ہے اور ہمارے دیش کے ودوان ویدواکیہ سمجھکر اِسے طوطے کی طرح دوہراتے رہے ہیں ۔

مدھیہ ایشیا کی قوموں کی اصل نسل کو ٹھیک ٹھیک سمجھنے کے لئے ہمیں اُن کے جسموں کی بناوٹ اور پرانے اتہاس کی کھوج دونوں سے مدد لینی ہوگی ۔ اس سلسلے میں ابھی تک بہت ہی کم کھوج ہوئی ہے' پھر بھی جو کچھ ہوئی ہے اُس کا سار ہم یہاں دے دیتے ہیں. مدھیہ ایشیا کے عناؤ علاقے میں کئی پرانے شہروں کے کھنڈر ملے ہیں' جو شاید عیسیٰ سے دو یا تین ہزار سال پہلے کے ہیں ۔ اِن کھنڈروں کی ڈاکٹر پمپیلی نے بہت کھوج کی ہے اور اُس پر " ایکسپلوریشنس اِن ترکستان " نام کی کتابیں لکھی ہیں ۔ اِن کھوجوں اور کتابوں کی مدد سے ودوانوں نے یہ اندازہ لگایا ہے کہ جو سبھیتائیں اس دیش میں پھل پھول چکی ہیں اُن میں سب سے پرانی سبھیتا اُس زمانے کی ہے جبکہ آدمی لوہے کی جگہ پتھر کے اوزار استعمال کیا کرتا تھا ۔ اِس پرانی سبھیتا کا سمبندھ ایشیا کوچک کی ایتہاسک سمے سے پہلے کی کوبن' تیریک' اور کبن کی سبھیتا سے تھا ۔ عناؤ میں جو چیزیں ملی ہیں' اُن میں پروفیسر سرگی کو ایک دودھ مونہے بچے کا پنجر ملا ہے جسے گھڑے میں بند کرکے دفن کیا گیا تھا.† اُسی کے ساتھ کچھ اور بچوں کی کھوپڑیاں ملی ہیں جو

†—Sergi in Pumpelly's Explorations in Turkistan, Carnegie Publications, No. 73.

हिन्दुस्तान के बाशिन्दों का निकास

डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त

जब तक हम यह न समझलें कि एशिया के बीच के और पच्छमी हिस्से की रहने वाली क़ौमों का निकास कहां से है तब तक हम हिन्दुस्तान के रहन वालों की नसलों और निकास को ठीक ठीक न समझ सकेंगे. इसलिए हम पहले मध्य एशिया की बात करते हैं. मध्य एशिया की आबादी हमेशा बदलती रही है. एशिया के इस हिस्से का नाम भी समय समय पर बदलता रहा है. प्राचीन हख़ामनीषी (Achaemenidan) काल के ईरानी इसे शक लोगों की भूमि कहते थे. यह 'शक' ईरानी ज़बान बोलते थे और उठाऊ चूल्हा यानी ख़ानाबदोश लोग थे. वे ईरान ख़ास से बाहर रहते थे. ईरानी इन्हें 'दाहा' भी कहते थे. बाज़ विद्वानों का ख़याल है कि इस 'दाहा' ही से वैदिक शब्द 'दस्यु' और 'दास' बने हैं और ये शब्द आर्यों के साथ साथ भारत में आए.* बहुत दिनों बाद जब पूरब से आकर यूची क़ौम (Yuechi) के लोग मध्य एशिया के इस हिस्से में बसने और हुकूमत करने लगे, तो इस इलाक़े के पूरबी हिस्से का नाम ताक्सरिस्तान पड़ गया. संस्कृत में यहां के लोगों को 'तुख़ार' या 'तुषार' कहते थे. उस वक़्त से लेकर जब तक कि पूरब ही से आकर तुरकों ने इस देश पर हमला नहीं किया, तब तक इस देश का यही नाम रहा. महमूद ग़ज़नवी के समय में भी इसका यही नाम था. महमूद अपने ताक्सरी दुश्मनों को क़ाबू में करने के लिए यहां से अपनी फ़ौज के हिन्दुस्तानी सिपाही भेजा करता था. पन्द्रहवीं सदी ईसवी तक इस ताक्सरी क़ौम के लोगों का पूरबी तुर्किस्तान में अपना अलग अस्तित्व (वजूद) था और अपनी अलग संस्कृति थी. पूरबी तुर्किस्तान के तुर्फ़ान नामक शहर में बौद्ध चित्रकारी और बौद्ध कला के बहुत से नमूने मिले हैं, जो इस समय जर्मनी में बरलिन के ऐथनालाजिकल अजायबघर और यूरप के कुछ और अजायबघरों में रख दिये गये हैं. इसके बाद मुसलमान अरबों ने ईरान से आकर इस देश पर हमला किया. तुर्क मुसलमान हो गये और मध्य एशिया और वहां के रहने वालों का सारा रंग ढङ्ग बदल गया. तब से ये सब लोग तुर्क कहलाने लगे और इनकी पुरानी सभ्यता बरबाद हो गई. इसके बाद मुग़ल चंगेज़ ख़ां का वह भयंकर हमला हुआ जिसकी लूटमार और बरबादियों से

*—Fimmer, Alt-Indisches Leben.

ہندستان کے باشندوں کا نکاس

ڈاکٹر بھوپیندر ناتھ دت

جب تک ہم یہ نہ سمجھ لیں کہ ایشیا کے بیچ کے اور پچھمی حصے کی رہنے والی قوموں کا نکاس کہاں سے ہے تب تک ہم ہندستان کے رہنے والوں کی نسلوں اور نکاس کو ٹھیک ٹھیک نہ سمجھ سکیں گے۔ اس لئے ہم پہلے مدھیہ ایشیا کی بات کرتے ہیں۔ مدھیہ ایشیائی آبادی ہمیشہ بدلتی رہی ہے۔ ایشیا کے اس حصے کا نام بھی سمے سمے پر بدلتا رہا ہے۔ پراچین ہکامنشی (Achaemenidan) کال کے ایرانی اسے شک لوگوں کی بھومی کہتے تھے۔ یہ 'شک' ایرانی زبان بولتے تھے اور اٹھاؤ چولہا یعنی خانہ بدوش لوگ تھے۔ وہ ایران خاص سے باہر رہتے تھے۔ ایرانی انہیں 'داہا' بھی کہتے تھے۔ بعض ودوانوں کا خیال ہے کہ اس 'داہا' ہی سے ویدک شبد 'دسیو' اور 'داس' بنے ہیں اور یہ شبد آریوں کے ساتھ ساتھ بھارت میں آئے۔ بہت دنوں بعد جب پورب سے آکر یوچی قوم (Yuechi) کے لوگ مدھیہ ایشیا کے اس حصے میں بسنے اور حکومت کرنے لگے تو اس علاقے کے پوربی حصے کا نام تاکسرستان پڑ گیا۔ سنسکرت میں یہاں کے لوگوں کو 'تکھار' یا 'توشار' کہتے تھے۔ اس وقت سے لے کر جب تک کہ پورب ہی سے آکر ترکوں نے اس دیش پر حملہ نہیں کیا تب تک اس دیش کا یہی نام رہا۔ محمود غزنوی کے سمے میں بھی اس کا یہی نام تھا۔ محمود اپنے تاکسری دشمنوں کو قابو میں کرنے کے لئے یہاں سے اپنی فوج کے ہندستانی سپاہی بھیجا کرتا تھا۔ 15 ویں صدی عیسوی تک اس تاکسری قوم کے لوگوں کا پوربی ترکستان میں اپنا الگ استتو (وجود) تھا اور اپنی الگ سنسکرتی تھی۔ پوربی ترکستان کے ترفان نامک شہر میں بودھ چترکاری اور بودھ کلا کے بہت سے نمونے ملے ہیں جو اس سمے جرمنی میں برلن کے ایتھنالاجیکل عجائب گھر اور یورپ کے کچھ اور عجائب گھروں میں رکھ دئے گئے ہیں۔ اس کے بعد مسلمان عربوں نے ایران سے آکر اس دیش پر حملہ کیا۔ ترک مسلمان ہو گئے اور مدھیہ ایشیا اور وہاں کے رہنے والوں کا سارا رنگ ڈھنگ بدل گیا۔ تب سے یہ سب لوگ ترک کہلانے لگے اور ان کی پرانی سبھیتا برباد ہو گئی۔ اس کے بعد مغل چنگیز خاں کا وہ بھینکر حملہ ہوا جس کی لوٹ مار اور بربادیوں سے

गुलाब जल की सुराहियां आदि. ईरान की कुदरती फ्रेस्को तसवीरों को ताज और शाहजहांनी महलों में पच्चीकारी के रूप में ज्यों का त्यों उतार दिया गया है. पच्चीकारी की ईरानी और अरबी स्टाइल यहां पहले से जारी थीं और इटालियनों से हिन्दुस्तानियों को पच्चीकारी का तरीक़ा सीखने की कोई ज़रूरत न थी. रहा दिल्ली के दीवान-ए-आम में फ्लोरेन्स की पच्चीकारी का नमूना—हैवेल की राय में वह पेनल पूरा का पूरा इटली से बनकर आया और स्थानीय कारीगरों ने उसे ज्यों का त्यों दीवार में बैठा दिया. आरफिअस की अकेली तसवीर अपने आप कोई बात साबित नहीं करती. मुमकिन है वह सम्राट ने ख़रीदी हो. फिर पच्चीकारी की डिज़ाइन हरगिज़ इटालियन नहीं है. वह साफ़ ईरानी है. ये हो सकता है कि विदेशी कारीगर पच्चीकारी के लिये क़ीमती पत्थर काटने के वास्ते मुक़र्रर किये गये हों. लेकिन इससे यह साबित नही होता कि इटालियनों ने कोई नई कला दाख़िल की हो. इटालियन संगतराशों का जड़िया होना जरूरी नहीं है. जब तक इस बात के कोई निश्चित उल्लेख न हों इसे स्वीकार करना तर्कपूर्ण नहीं है.

शाहजहां के वक़्त में पच्चीकारी की कला ख़ास तौर पर आगरा, दिल्ली और लाहौर में इतने व्यापक रूप में फैली हुई थी कि यह विश्वास करना कठिन है कि मुट्ठी भर इटालियनों ने भारत भर में फैली हुई पच्चीकारी की उस सब कला को डिज़ाइन किया हो और अपनी देखरेख में बनवाया हो. अंगूरी बाग़ की डिज़ाइन भी ईरानी है. ईरान में भी अंगूर बहुतायत से होते हैं. मुग़लों के ज़माने में ईरानी कला का बेहद प्रचार भी था.

शाहजहां सार्वभौमिक रुचि का था. यह हो सकता है कि इटालियन कलाकारों ने भी पच्चीकारी की कुछ डिज़ाइनें बनाई हों और वे इसलिये बुरी नहीं समझी गई होंगी कि वे यूरोपीय डिज़ाइनें हैं. यह सम्भव है कि इनमे से कुछ डिज़ाइनों को भारतीय कारीगरों ने भी पसन्द कर लिया हो. हैवेल भी इस सम्बन्ध में इसी दलील को स्वीकार करता है.

उपयोगी कलाओं की जननी है आवश्यकता, ललित कलाओं की है विलासिता. पहली पैदा हुई बुद्धि से और दूसरी प्रतिभा से.

—शोपेनहोर

گلاب جل کی صراحیاں آدی۔ ایران کی قدرتی فریسکو تصویروں کو تاج اور شاہجہانی محلوں میں پچی کاری کے روپ میں جیوں کا تیوں اتار دیا گیا ہے۔ پچی کاری کی ایرانی اور عربی اِستائل یہاں پہلے سے جاری تھیں اور اِٹالینوں سے ہندستانیوں کو پچی کاری کا طریقہ سیکھنے کی کوئی ضرورت نہ تھی۔ رہا دلی کے دیوان عام میں فلورینس کی پچی کاری کا نمونہ—ہیویل کی رائے میں وہ پینل پورا کا پورا اِٹلی سے بنکر آیا اور استھانیہ کاریگروں نے اُسے جیوں کا تیوں دیوار میں بیٹھا دیا۔ عارفیس کی اکیلی تصویر اپنے آپ کوئی بات ثابت نہیں کرتی۔ ممکن ہے وہ سمراٹ نے خریدی ہو۔ پھر پچی کاری کی ڈیزائن ہرگز اِٹالین نہیں ہے۔ وہ صاف ایرانی ہے۔ یہ ہو سکتا ہے کہ ودیشی کاریگر پچی کاری کے لئے قیمتی پتھر کاٹنے کے واسطے مقرر کئے گئے ہوں۔ لیکن اس سے یہ ثابت نہیں ہوتا کہ اِٹالینوں نے کوئی نئی کلا داخل کی ہو۔ اِٹالین سنگتراشوں کا جڑیا ہونا ضروری نہیں ہے۔ جب تک اس بات کے کوئی نشچت اُلیکھ نہ ہوں اِسے سوئیکار کرنا ترک پورن نہیں ہے۔

شاہجہاں کے وقت میں پچی کاری کی کلا خاص طور پر آگرہ، دلی اور لاہور میں اِتنے ویاپک روپ میں پھیلی ہوئی تھی کہ یہ وشواس کرنا کٹھن ہے کہ مٹھی بھر اِٹالینوں نے بھارت بھر میں پھیلی ہوئی پچی کاری کی اُس سب کلا کو ڈیزائن کیا ہو اور اپنی دیکھ ریکھ میں بنوایا ہو۔ انگوری باغ کی ڈیزائن بھی ایرانی ہے۔ ایران میں بھی انگور بہتایت سے ہوتے ہیں۔ مغلوں کے زمانے میں ایرانی کلا کا بےحد پرچار بھی تھا۔

شاہجہاں سارو بھومک روچی کا تھا۔ یہ ہوسکتا ہے کہ اِٹالین کلاکاروں نے بھی پچی کاری کی کچھ ڈیزائنیں بنائی ہوں اور وے اِس لئے بری نہیں سمجھی گئی ہونگی کہ وے یوروپیہ ڈیزائنیں ہیں۔ یہ سمبھو ہے کہ اِن میں سے کچھ ڈیزائنوں کو بھارتیہ کاریگروں نے بھی پسند کر لیا ہو۔ ہیویل بھی اِس سمبندھ میں اِسی دلیل کو سوئیکار کرتا ہے۔

اُپیوگی کلاؤں کی جننی ہے آوشیکتا، للت کلاؤں کی ہے ولستا۔ پہلی پیدا ہوئی بدھی سے اور دوسری پرتبھا سے۔

—شوپین ہور

का कहना है कि 'अंगूरी बाग़' की कल्पना इटालियन कल्पना है और वह लिखता है—"दिल्ली में शाहजहां की अंगूरी बाग़ की पच्चीकारी और आगरा और लाहौर की इसी तरह की पच्चीकारी का ताल्लुक़ इटली के अंगूरों के साथ कौन नहीं जोड़ना चाहेगा ?"* यह भी कहा जाता है कि यदि पच्चीकारी भारत की पुरानी कला होती तो इस पर कुछ पुरानी हिदायतें होतीं. इन हिदायतों का अभाव यह जाहिर करता है कि यह विदेशी कला है. यह दलील दी जाती है कि पच्चीकारी की कला भारत में यकायक ईजाद होकर इतनी जल्द इतनी तरक़्क़ी नहीं कर सकती थी.

बर्नियर ताज के बारे में लिखता है कि शाहजहां फ़्लोरेन्स की कला को मात करना चाहता था.§ टैवर्नियर लिखता है कि शाहजहां की मन्शा थी कि दिल्ली के दीवाने ख़ास का मोज़ेक का काम उतना ही क़ीमती और ख़ूबसूरत हो जितना इटली में ग्रैन्ड ड्यूक के गिरजे का है.‡

जाहिरा सुनने में ये दलीलें, जो यहां सक्षेप में दी गई हैं, बड़ी ज़ोरदार मालूम होती हैं और इस बात को जाहिर करती हैं कि पच्चीकारी की कला इटालियनों द्वारा भारत में शुरू की गई. लेकिन इन दलीलों का एक दूसरा पहलू भी है.

मुग़ल काल का जो ऐतिहासिक लेखा मौजूद है उसमें कहीं इस बात का ज़िक्र नहीं है कि ताज और दूसरी जगहों का पच्चीकारी का काम विदेशियों के ज़रिये कराया गया है. इसके ख़िलाफ़ चिरञ्जीलील, छोटेलाल, मन्नूलाल, मनोहर-सिंह आदि हिन्दू पच्चीकारों, जड़ियों और कारीगरों के नाम मुग़ल उल्लेखों में दर्ज हैं जो बड़ी बड़ी तनख़्वाहों पर ताज बनाने के लिये मुक़र्रर थे.

यह फ़र्ज़ करना बिलकुल ग़लत होगा कि पच्चीकारी और पत्थरों की नक़्क़ाशी मुग़लों से पहले भारत में थी ही नहीं. हैवल 15वीं सदी के चित्तौड़ के एक जैन मन्दिर का ज़िक्र करता है जिसमें अक़ीक़ की पच्चीकारी का काम मौजूद था. सर जान मार्शल मांडो में इससे भी पहले की पच्चीकारी का ज़िक्र करते हैं.❀ उदयपुर में शाहज़ादे ख़ुर्रम के लिये सन 1623 में जो जगमन्दिर महल बनाया गया उसमें भी ख़ूबसूरत पच्चीकारी का काम किया गया था.

मुग़ल तामीरी कला में पच्चीकारी का काम दरअस्ल मूल रूप से ईरानी है. उसमें इटालियन असर की बात ढूंढ़ना एक दूर की सूझ है. इस नक़्क़ाशी की पार्श्वभूमि सब ईरानी है—सरो के पेड़, फूलों के गमले, फल, शराब के प्याले,

کا کہنا ھے کہ 'انگوری باغ' کی کلپنا اِٹالین کلپنا ھے اور وہ لکھتا ھے—" دلی میں شاہجہاں کی انگوری باغ کی پچیکاری اور آگرہ اور لاھور کی اِسی طرح کی پچی کاری کا تعلق اِٹلی کے انگوروں کے ساتھ کون نہیں جوڑنا چاھے گا ؟"* یہ بھی کہا جاتا ھے کہ یدی پچی‌کاری بھارت کی پرانی کلا ھوتی تو اِس پر کچھ پرانی ھدائتیں ھوتیں . اِن ھدائتوں کا ابھاؤ یہ ظاھر کرتا ھے کہ یہ ودیشی کلا ھے . یہ دلیل دی جاتی ھے کہ پچی‌کاری کی کلا بھارت میں یکایک ایجاد ھو کر اِتنی جلد اِتنی ترقی نہیں کر سکتی تھی .

برنیئر تاج کے بارے میں لکھتا ھے کہ شاھجہاں فلورینس کی کلا کو مات کرنا چاھتا تھا .§ ٹیورنیئر لکھتا ھے کہ شاھجہاں کی منشا تھی کہ دلی کے دیوان خاص کا موزیک کا کام اُتنا ھی قیمتی اور خوبصورت ھو جتنا اِٹلی میں گرینڈ ڈیوک کے گرجے کا ھے .‡

ظاھرا سننے میں یہ دلیلیں' جو یہاں سنکچھیپ میں دی گئی ھیں' بڑی زوردار معلوم ھوتی ھیں اور اِس بات کو ظاھر کرتی ھیں کہ پچی‌کاری کی کلا اِٹالینوں دوارا بھارت میں شروع کی گئی . لیکن اِن دلیلوں کا ایک دوسرا پہلو بھی ھے .

مغل کال کا جو ایتہاسک لیکھا موجود ھے اُس میں کہیں اِس بات کا ذکر نہیں ھے کہ تاج اور دوسری جگہوں کا پچی‌کاری کا کام ودیشیوں کے ذریعہ کرایا گیا ھے . اس کے خلاف چرنجی لال' چھوٹے لال' منو لال' منوہر سنگھ آدی ھندو پچی‌کاروں' جڑیوں اور کاریگروں کے نام مغل اُلیکھوں میں درج ھیں جو بڑی بڑی تنخواھوں پر تاج بنانے کے لئے مقرر تھے .

یہ فرض کرنا بالکل غلط ھوگا کہ پچی‌کاری اور پتھروں کی نقاشی مغلوں سے پہلے بھارت میں تھی ھی نہیں . ھیول 15ویں صدی کے چتوڑ کے ایک جین مندر کا ذکر کرتا ھے جس میں عقیق کی پچی‌کاری کا کام موجود تھا . سر جان مارشل مانڈو میں اِس سے بھی پہلے کی پچی‌کاری کا ذکر کرتے ھیں .❀ اُودے‌پور میں شہزادہ خرم کے لئے سن 16-3 میں جو جگ مندر محل بنایا گیا اُس میں بھی خوبصورت پچی‌کاری کا کام کیا گیا تھا .

مغل تعمیری کلا میں پچی‌کاری کا کام دراصل مول روپ سے ایرانی ھے . اُس میں اِٹالین اثر کی بات ڈھونڈھنا ایک دور کی سوجھ ھے . اِس نقاشی کی پاشرو بھومی سب ایرانی ھے—سرو کے پیڑ' پھولوں کے گملے' پھل' شراب کے پیالے'

*—J. U. P. H. S. 111, p. 157.

§—Bernier : Travels, p. 298.

‡—Tavernier : Travels, 1, 98-99.

❀—Annual Report A. S. India 1904-05, p. 5.

कारीगरी है उसके बारे में सर सैयद लिखते हैं—"यह मोज़ेक कारीगरी इस बात को साबित करती है कि इसकी तामीर में होशियार इटालियन कारीगरों को तैनात किया गया होगा."

ताज में कई जगह जो पत्थर के कटे हुये गमले हैं वे युट्रस्कन कला के नमूने हैं और कहा जाता है कि वे इस बात को साबित करते हैं कि इनकी डिज़ाइन बनाने वाले इटालियन कारीगर थे.

इसके अलावा यह भी एक तय शुदा सचाई की तरह कहा जाता है कि मुग़ल काल में आगरा और दिल्ली मे मुग़ल बादशाहों के यहां अनेक इटालियन कलाकार और कारीगर नौकर थे. यह हो सकता है कि इन लोगों ने इटली की फ्लोरेन्टाइन कला टेकनीक हिन्दुस्तानी कारीगरों को सिखाई हो. रेवरेन्ड ई॰ टेरी, जो सर टामस रो के साथ क़रीब तीन बरस तक जहांगीर के दरबार मे रहा है, लिखता है—"इस मुल्क में जेज़ुएट ईसाई बहुत थोड़े हैं. इनमे कुछ इटालियन हैं जो मुग़ल दरबार मे बड़ी बड़ी तनखाहो पर हीरे और क़ीमती पत्थर काटने के लिये मुक़र्रर हैं."* टेरी के इस बयान को लेकर दलील दी जाती है कि यहां इटालियन जवाहरात-तराश पच्चीकारी करने वाले भी थे.

मनूशी लिखता है कि मुग़ल दरबार में बहुत बड़ी तादाद में यूरोपियन संगतराश, इनैमेल करने वाले, सुनार, मर्जन और तोपची थे.† होस्टन का कहना है कि इनैमेल करने वालों की सूची में ही इटालियन पच्चीकार शामिल थे. होस्टन के मुताबिक़ पुर्तगाली शब्द 'एस्मेल्टर' का अर्थ 'इनैमेल करने वाले' और 'रंग बिरंगी पच्चीकारी करने वाले' होता है.

होस्टन के मुताबिक़ मुग़ल दरबार में हीरा काटने वाले और इनैमेल करने वाले इटालियन ठीक उस समय मौजूद थे जब भारत में पच्चकारी की कला खूब फैल रही थी और इससे पच्चकारी पर इटैलियन असर की ताईद होती है.‡

कात्रू दिल्ली की जिस सब से ख़ूबसूरत पच्चकारी की मिसाल देता है बदक़िस्मती से अब वह मौजूद नहीं है. उसके बयान से यह मालूम होता है कि यह पच्चीकारी एक अंगूरीबेल की थी जिसमे बड़ी साइज़ के क़ीमती पत्थर लगाये गये थे. इसमें पत्तियां मरकत की थीं और गुच्छों में लटके हुये अंगूर हीरों और लालों के थे.❀ कात्रू के इस बयान का समर्थन जेन्टिल ने भी किया है.♆ होस्टन

کاریگری ہے اُس کے بارے میں سر سید لکھتے ہیں—"یہ موزیک کاریگری اِس بات کو ثابت کرتی ہے کہ اِس کی تعمیر میں ہوشیار اِٹالین کاریگروں کو تعنات کیا گیا ہوگا."

تاج میں کئی جگہ جو پتھر کے کٹے ہوئے گملے ہیں وے یوٹرسکن کلا کے نمونے ہیں اور کہا جاتا ہے کہ وے اِس بات کو ثابت کرتے ہیں کہ اِن کی ڈیزائن بنانے والے اِٹالین کاریگر تھے.

اِس کے علاوہ یہ بھی ایک طےشدہ سچائی کی طرح کہا جاتا ہے کہ مغل کال میں آگرہ اور دلی میں مغل بادشاہوں کے یہاں انیک اِٹالین کلاکار اور کاریگر نوکر تھے یہ ہوسکتا ہے کہ اِن لوگوں نے اِٹلی کی فلورینٹائن کلا ٹیکنیک ہندستانی کاریگروں کو سکھائی ہو. ریورینڈ ای. ٹیری، جو سر ٹامس رو کے ساتھ قریب تین برس تک جہانگیر کے دربار میں رہا ہے، لکھتا ہے—"اِس ملک میں جیزوئٹ عیسائی بہت تھوڑے ہیں. اِن میں کچھ اِٹالین ہیں جو مغل دربار میں بڑی بڑی تنخواہوں پر ہیرے اور قیمتی پتھر کاٹنے کے لئے مقرر ہیں."* ٹیری کے اِس بیان کو لیکر دلیل دی جاتی ہے کہ یہاں اِٹالین جواہرات-تراش پچی کاری کرنے والے بھی تھے.

منوشی لکھتا ہے کہ مغل دربار میں بہت بڑی تعداد میں یوروپین سنگتراش، اینمل کرنے والے، سونار، مرجن اور توپچی تھے.† ہوسٹن کا کہنا ہے کہ اینمل کرنے والوں کی سوچی میں ہی اِٹالین پچی کار شامل تھے. ہوسٹن کے مطابق پرتگالی شبد 'اسملٹر' کا ارتھ 'اینمل کرنے والے' اور 'رنگ برنگی پچی کاری کرنے والے' ہوتا ہے.

ہوسٹن کے مطابق مغل دربار میں ہیرا کاٹنے والے اور اینمل کرنے والے اِٹالین ٹھیک اُس سمے موجود تھے جب بھارت میں پچی کاری کی کلا خوب پھیل رہی تھی اور اس سے پچی کاری پر اِٹالین اثر کی تائید ہوتی ہے.‡

کاترو دلی کی جس سب سے خوبصورت پچی کاری کی مثال دیتا ہے بدقسمتی سے اب وہ موجود نہیں ہے. اُس کے بیان سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ یہ پچی کاری ایک انگوری بیل کی تھی جس میں بڑی سائز کے قیمتی پتھر لگائے گئے تھے. اس میں پتیاں مرکت کی تھیں اور گچھوں میں لٹکے ہوئے انگور ہیروں اور لالوں کے تھے.❀ کاترو کے اِس بیان کا سمرتھن جینٹل نے بھی کیا ہے♆ ہوسٹن

---

*—Terry : A Voyage to East Indies.

†—Manucci : Storia de Mogor.

‡—Annual Report of the Jesuits for 1 97 J. A. S. B. 1896.

❀—Catrou: The General History of the Mogal Empire, pp. 22 -28.

♆—Gentil : Memoirs, pp. 173-74.

मुग़लों की इमारत बनाने की कला

डाक्टर नन्दलाल चैटर्जी, एम० ए०, पी-एच० डी०, डी० लिट०

'क्या मुग़ल निर्माण (तामीर) कला पर इटली का असर पड़ा था?' इसके पक्ष और विपक्ष में अकसर ऐतिहासिक बहस उठाई जाती है. स्मिथ, बर्गेस, फ़र्गुसन, रेवरेन्ड एच० होस्टेन और कई दूसरे इतिहासज्ञों का कहना है कि मुग़ल इमारतों में पच्चीकारी की कला की शुरूआत मुग़ल दरबार में रहने वाले इटालियन कलाकारों ने की.

कहा जाता है कि आगरा और दिल्ली की पच्चीकारी की कुछ डिजाइनें उस ज़माने की फ्लोरेन्स की कला से मिलती जुलती हैं. इसलिये यह अन्दाज़ा लगाया जाता है कि इन्हें फ्लोरेन्स के कलाकारों ने बनाया होगा. विनसेन्ट ए० स्मिथ लिखता है—"ताजमहल के अन्दर जो जालीदार रेलिंग है (ऊपर की नक़ली क़ब्र के चारों तरफ़) वह शाहजहां के समय की कला का सबसे उम्दा नमूना है. इस कला का पैटर्न एशियाई कला के मुकाबले में इटली की नवजागरण-कला से ज़्यादा मिलता है."[1] सर जान मार्शल भी, जो इस दलील के ख़िलाफ़ हैं कि ताज का नक़्शा इटालियनों का बनाया हुआ है, इस राय के हैं कि इस जालीदार रेलिंग की पैटर्न पर फ्लोरेन्टाइन कला का असर दिखाई देता है.

दिल्ली में (दीवाने आम में) आरफ़िअस (प्राचीन यूनान का एक अद्भुत गायक) की वायलेन बजाती हुई और पशु पक्षियों से घिरी हुई जो तसवीर है, वह भी इटालियन चित्रकार की बनाई हुई बताई जाती है और यह समझा जाता है कि अमर इटालियन चित्रकार रफ़ाएल की इस अपूर्व तसवीर को चित्रित करने के लिये कुछ इटालियन कलाकार मुक़र्रर किये गये थे. चित्रों के इस पेनल में आरफ़िअस की यूनानी और रोमी कहानी चित्रित है. इसलिये इसे भारतीय निर्माण कला पर इटालियन असर का ज़बरदस्त सबूत कहकर पेश किया जाता है यहां तक कि सर सय्यद अहमद ख़ां ने भी अपनी किताब 'असारे सनादीद' में यह क़ुबूल किया है—"चूंकि सिर्फ़ यूरोपियन ही इस चित्र से परिचित थे इसलिये बिलाशक इस बात को कहा जा सकता है कि शाहजहानी क़िले के तय्यार करने में जो कारीगर लगे हुए थे उनमें इटली से आये हुए यूरोपियन कारीगर भी थे." महल के अन्दर हमामों में जो मोज़ेक

مغلوں کی عمارت بنانے کی کلا

ڈاکٹر نندلال چٹرجی، ایم. اے.، پی. ایچ. ڈی.، ڈی. لٹ.

'کیا مغل نرمان (تعمیر) کلا پر اٹلی کا اثر پڑا تھا؟' اِس کے پکش اور وپکش میں اکثر ایتہاسک بحث اُٹھائی جاتی ہے. اِسمتھ، برگیس، فرگوسن، ریورینڈ ایچ. ہوسٹین اور کئی دوسرے اِتہاسکوں کا کہنا ہے کہ مغل عمارتوں میں پچی کاری کی کلا کی شروعات مغل دربار میں رہنے والے اٹالین کلاکاروں نے کی.

کہا جاتا ہے کہ آگرہ اور دلی کی پچی کاری کی کچھ ڈیزائنیں اُس زمانے کی فلورینس کی کلا سے ملتی جلتی ہیں. اِس لئے یہ اندازہ لگایا جاتا ہے کہ انہیں فلورینس کے کلاکاروں نے بنایا ہوگا. ونسینٹ اے. اِسمتھ لکھتا ہے—"تاج محل کے اندر جو جالیدار ریلنگ ہے (اُوپر کی نقلی قبر کے چاروں طرف) وہ شاہجہاں کے سمے کی کلا کا سب سے عمدہ نمونہ ہے. اس کلا کا پیٹرن ایشیائی کلا کے مقابلے میں اٹلی کی نوجاگرن کلا سے زیادہ ملتا ہے."[1] سر جان مارشل بھی، جو اس دلیل کے خلاف ہیں کہ تاج کا نقشہ اٹالینوں کا بنایا ہوا ہے، اس رائے کے ہیں کہ اس جالیدار ریلنگ کی پیٹرن پر فلورینٹائن کلا کا اثر دکھائی دیتا ہے.

دلی میں (دیوان عام میں) آرفیئس (پراچین یونان کا ایک ادبھت گایک) کی وائلن بجاتی ہوئی اور پشوپکشیوں سے گھری ہوئی جو تصویر ہے، وہ بھی اٹالین چترکار کی بنائی ہوئی بتائی جاتی ہے اور یہ سمجھا جاتا ہے کہ امر اٹالین چترکار ریفائل کی اس اپورو تصویر کو چترت کرنے کے لئے کچھ اٹالین کلاکار مقرر کئے گئے تھے. چتروں کے اس پینل میں آرفیئس کی یونانی اور رومی کہانی چترت ہے. اس لئے اسے بھارتیہ نرمان کلا پر اٹالین اثر کا زبردست ثبوت کہکر پیش کیا جاتا ہے یہاں تک کہ سر سید احمد خاں نے بھی اپنی کتاب 'آثار الصنادید' میں یہ قبول کیا ہے—"چونکہ صرف یوروپین ہی اس چتر سے پریچت تھے اس لئے بلاشک اس بات کو کہا جاسکتا ہے کہ شاہجہانی قلعہ کے تیار کرنے میں جو کاریگر لگے ہوئے تھے اُن میں اٹلی سے آئے ہوئے یوروپین کاریگر بھی تھے." محل کے اندر حماموں میں جو موزیک

[1] -History of Art in India and Ceylon, p. 437.

हमारे परशुरामों को इस नई आवाज़ की क़द्र करनी चाहिये. अगर यह उनकी समझ में नहीं आती तो भृगुराज परशुराम की तरह मैदान से कृपापूर्वक हट जायें और राम को मौक़ा दें कि वह नया समाज रचे. न लक्ष्मणों को ही यह शोभा देगा कि दूसरों पर सदा उंगली उठाते रहें. उन्हें समझना होगा कि परशुरामों ने बहुत ही शानदार और लाजवाब काम किया है. यह काम इतिहास भूल नहीं सकता. उसी के आधार पर हम आगे का नक़शा बना सकते हैं. श्रद्धापूर्वक हमें उनके आगे नत-मस्तक होना चाहिये और जो भी वह दें ख़ुशी ख़ुशी लेना चाहिये. लेकिन उनसे कोई लालसा नहीं रखनी चाहिये. जो भी वह दें सो सर आंखों पर क़बूल हो. जो न दें, उसकी शिकायत कैसी? और हमको अपना काम ईमानदारी से, लगातार, सच्चाई से करते रहना है. जिन मान्यताओं को हम सही समझते हैं उन पर सीधे बढ़ते ही जाना है.

अपने मां-बाप की और बाबा-दादी की बलिहारी जिन्होंने अंग्रेज़ी राज को हिन्दुस्तान से साफ़ कर दिया. उनको हमारे बार-बार प्रणाम हैं. उनका जो गहरा अनुभव है वह हमारे लिये अनमोल धरोहर है. उसे हम संभालें. वह धनुष का काम देगा. और हमारी जवानी, हमारा उत्साह, हमारा ज़ोर काम देगा तीर का. इन दोनों के मेल से ही हम ऊंचे से ऊंचा, दूर से दूर का निशाना पा सकेंगे.

बुज़ुर्गों का अनुभव और जवानों का ख़ून, इन दोनों से मिलकर ही हिन्दुस्तान का सांचा बदलेगा. तभी नया देश बनेगा. तभी नया इन्सान बनेगा.

ھمارے پرشراموں کو اِس نئی آواز کی قدر کرنی چاھئے. اگر یہ اُن کی سمجھ میں نہیں آتی تو بھریگوراج پرشرام کی طرح میدان سے کرپا پوروک ھٹ جائیں اور رام کو موقعہ دیں کہ وہ نیا سماج رچے. نہ لکشمنوں کو ھی یہ شوبھا دیگا کہ دوسروں پر سدا اُنگلی اُٹھاتے رھیں. اُنھیں سمجھنا ھوگا کہ پرشراموں نے بہت ھی جاندار اور لاجواب کام کیا ھے. یہ کام اتیہاس بھول نہیں سکتے. اُسی کے آدھار پر ھم آگے کا نقشہ بنا سکتے ھیں. شردھا پوروک ھمیں اُن کے آگے نت مستک ھونا چاھئے اور جو بھی وہ دیں خوشی خوشی لینا چاھئے. لیکن اُن سے کوئی لالسا نہیں رکھنی چاھئے. جو بھی وہ دیں سو سر آنکھوں پر قبول ھو. جو نہ دیں، اُس کی شکایت کیسی؟ اور ھمکو اپنا کام ایمانداری سے، لگاتار، سچائی سے کرتے رھنا ھے. جن مانیتاؤں کو ھم صحیح سمجھتے ھیں اُن پر سیدھے بڑھتے ھی جانا ھے.

اپنے ماں باپ کی اور بابا دادی کی بلہاری جنھوں نے انگریزی راج کو ھندستان سے صاف کردیا. اُن کو ھمارے بار بار پرنام ھیں. اُن کا جو گہرا انوبھو ھے وہ ھمارے لئے انمول دھروھر ھے. اُسے ھم سنبھالیں. وہ دھنشیہ کا کام دیگا. اور ھماری جوانی، ھمارا اُتساہ، ھمارا زور کام دیگا تیر کا. اِن دونوں کے میل سے ھی ھم اُونچے سے اُونچا، دور سے دور کا نشانہ پاسکینگے.

بزرگوں کا انوبھو اور جوانوں کا خون، اِن دونوں سے ملکر ھی ھندستان کا سانچہ بدلیگا. تبھی نیا دیش بنیگا. تبھی نیا اِنسان بنیگا.

एक कर्मकान्डी यात्री को चलते चलते चमारों के गांव में रात हो गई. भूक के मारे पेट में चूहे कबड्डी खेल रहे थे मगर चमारों के यहां खाने से हिचकते थे. आख़िर चमारों के अनुरोध पर दलिया स्वयं पका कर खा लेना मंज़ूर कर लिया. दलिया पका कर एक लकड़ी की झीपटी से खाने लगे तो किसी ने पूछा—

"महाराज! हाथ से न खाकर झीपटी से क्यों खा रहे हैं?"

कर्मकान्डी गरम होकर बोले—"अरे अन्धे, जानता नहीं कि यह दलिया चमारिन के हाथ का कूटा हुआ है. इसे हाथ से छूकर धर्म भ्रष्ट थोड़े ही होना है!"

—गहरे पानी पैठ से

ایک کرم‌کانڈی یاتری کو چلتے چلتے چماروں کے گاؤں میں رات ھوگئی. بھوک کے مارے پیٹ میں چوھے کبڈی کھیل رھے تھے مگر چماروں کے یہاں کھانے سے ھچکتے تھے. آخر چماروں کے انورودھ پر دلیا سویم پکاکر کھالینا منظور کرلیا. دلیا پکاکر ایک لکڑی کی چھیپٹی سے کھانے لگے تو کسی نے پوچھا—

"مہاراج! ھاتھ سے نہ کھا کر چھیپٹی سے کیوں کھا رھے ھیں؟"

کرم‌کانڈی گرم ھوکر بولے—"ارے، اندھے، جانتا نہیں کہ یہ دلیا چمارن کے ھاتھ کا کوٹا ھوا ھے. اِسے ھاتھ سے چھوکر دھرم بھرشٹ تھوڑے ھی ھونا ھے!"

—گہرے پانی پیٹھ سے

में जितना कम झगड़ते हैं उतना ही पुलिस और वकील लोग अपना सिर पीटते हैं. दफ़्तर का बाबू जितनी ज्यादा सच्चाई और आज़ादी से काम करता है, साहब उतना ही उसको निकालने की सोचता है. काश्तकार जितना ही ज़मीन का अपना हक़ मांगता है, हल तक नहीं छूने वाला ज़मींदार उतना ही उसे दबाता है.

इस सब की वजह से दिल से दिल हट रहा है. घर घर में बंटवारा हो रहा है. चूल्हा-पानी अलग हो रहा है. जितना ज्यादा 'पढ़ा-लिखा' या 'सभ्य' घर, उतनी ही ज़ोरदार तनातनी. नुक़सान दुखिया का होता है. तबाही देश की होती है.

पुरानी मान्यताओं को क़ायम करने की हर कोशिश बेकार साबित होगी. उत्पादन के साधन उत्पादक के पास पहुंचना चाहियें. जैसे इक्के वाले को और दर्ज़ी को सिंगर मशीन मिलना चाहिये (हम इक्के वालों को तो सिंगर मशीन या दरज़ी को घोड़ा नहीं देंगे), उसी तरह जो भी जोते, उसे ज़मीन मिलनी चाहिये. अब नये युग में पैदावार के औज़ार या उसकी सुविधा पैदा करने वाले को मिलनी चाहिये. उत्पादन के साधन वह लोग अपने पास रख कर नहीं बैठ सकते जो ख़ुद उन साधनों से चोटी का पसीना एड़ी तक बहाने को तैयार नहीं हैं. ज़मीन हो या सम्पत्ति—उस पर अब निजी मिलकियत किसी व्यक्ति की नहीं हो सकती, हरगिज़ नहीं हो सकती.

लोगों के साथ भेड़-बकरी का-सा व्यवहार नहीं किया जा सकता. राजनीतिक पार्टी वाले समझते हैं कि हम गड़रिये हैं और जैसे चाहेंगे जनता को चरायेंगे. जनता तो अब सत्ता बांट कर रहेगी. दिल्ली में उसको ताले में बन्द करके नहीं रखा जा सकता. इसका विकेन्द्रीकरण करना होगा. इसको व्यापक करना होगा. यह किसी एक आदमी या पार्टी की मिलकियत न रह कर हर एक की होगी. मिल के कामगार या खेत के मजदूरों को महज़ "हाथ" (हैन्ड) समझ कर "हाथ" की तरह नहीं बरता जा सकता. उनके भी सिर है और उसे भी काम करने और बढ़ने की आज़ादी मिलनी चाहिये. और यह जो 'सिर' या 'साब' लोग हैं हमेशा तक 'साहब' नहीं बने रह सकते. उन्हें भी अपने हाथ-पैरों से काम लेना होगा जिनके ऊपर साहब साहिबी करते हैं. शरीर-श्रम और मानसिक काम का भेद मिट जाना चाहिये. साथ ही साथ, नैतिक गुणों का भी समान बटवारा होना चाहिये. यह नहीं कि साधु का काम है त्याग, सन्यासी का काम है प्रेम और योगी का काम है संयम. त्याग या प्रेम या संयम को हर एक के जीवन का हिस्सा बन जाना चाहिये, ठीक उसी तरह जैसे सफ़ाई और 'बायें-चलो' आदि बन गये हैं.

इस तरह नया युग डंके की चोट पर बोल रहा है.

میں جتنا کم جھگڑتے ہیں اُتنا ہی پولس اور وکیل لوگ اپنا سر پیٹتے ہیں۔ دفتر کا بابو جتنی زیادہ سچائی اور آزادی سے کام کرتا ہے، صاحب اُتنا ہی اُس کو نکالنے کی سوچتا ہے۔ کاشتکار جتنا ہی زمین کا اپنا حق مانگتا ہے، ہل تک نہیں چھونے والا زمیندار اُتنا ہی اُسے دباتا ہے۔

اِس سبکی وجہ سے دل سے دل ہٹ رہا ہے۔ گھر گھر میں بٹوارا ہو رہا ہے۔ چولہا پانی الگ ہو رہا ہے۔ جتنا زیادہ 'پڑھا لکھا' یا 'سبھیہ' گھر، اُتنی ہی زوردار تناتنی۔ نقصان دکھیا کا ہوتا ہے۔ تباہی دیش کی ہوتی ہے۔

پرانی مانیتاؤں کو قائم کرنے کی ہر کوشش بیکار ثابت ہوگی۔ اُتپادن کے سادھن اُتپادک کے پاس پہونچنا چاہئیں۔ جیسے یکے والے کو اور درزی کو سنگر مشین ملنا چاہئے (ہم یکے والے کو تو سنگر مشین یا درزی کو گھوڑا نہیں دینگے)، اُسی طرح جو بھی جوتے، اُسے زمین ملنی چاہئے۔ اب نئے یگ میں پیداوار کے اوزار یا اُس کی سویدھا پیدا کرنے والے کو ملنی چاہئے۔ اُتپادن کے سادھن وہ لوگ اپنے پاس رکھ کر نہیں بیٹھ سکتے جو خود اُن سادھنوں سے چوٹی کا پسینہ ایڑی تک بہانے کو تیار نہیں ہیں۔ زمین ہو یا سمپتی—اُس پر اب نجی ملکیت کسی ویکتی کی نہیں ہوسکتی، ہرگز نہیں ہوسکتی۔

لوگوں کے ساتھ بھیڑ بکری کا سا بیوہار نہیں کیا جاسکتا۔ راجنیتک پارٹی والے سمجھتے ہیں کہ ہم گڈرئے ہیں اور جیسے چاہینگے جنتا کو چرائینگے۔ جنتا تو اب ستا بانٹ کر رہیگی۔ دلی میں اُس کو تالے میں بند کرکے نہیں رکھا جاسکتا۔ اِس کا وکیندری کرن کرنا ہوگا۔ اِس کو ویاپک کرنا ہوگا۔ یہ کسی ایک آدمی یا پارٹی کی ملکیت نہ رہ کر ہر ایک کی ہوگی۔ مل کے کامگار یا کھیت کے مزدوروں کو محض "ہاتھ" (ہینڈ) سمجھ کر "ہاتھ" کی طرح نہیں برتا جا سکتا۔ اُن کے بھی سر ہے اور اُسے بھی کام کرنے اور بڑھنے کی آزادی ملنی چاہئے۔ اور یہ جو 'سر' یا 'ساب' لوگ ہیں ہمیشہ تک 'صاحب' نہیں بنے رہ سکتے۔ اُنہیں بھی اپنے ہاتھ پیروں سے کام لینا ہوگا جن کے اوپر صاحب صاحبی کرتے ہیں۔ شریرشرم اور مانسک کام کا بھید مٹ جانا چاہئے۔ ساتھ ہی ساتھ، نیتک گنوں کا بھی سمان بٹوارا ہونا چاہئے۔ یہ نہیں کہ سادھو کا کام ہے تیاگ، سنیاسی کا کام ہے پریم اور یوگی کا کام ہے سنیم۔ تیاگ یا پریم یا سنیم کو ہر ایک کے جیون کا حصہ بن جانا چاہئے، ٹھیک اُسی طرح جیسے صفائی اور 'بائیں چلو' آدی بن گئے ہیں۔

اِس طرح نیا یگ ڈنکے کی چوٹ پر بول رہا ہے۔

याद भी नहीं आती. 1948-49 के तिलंगाना किसान विद्रोह ने सिखाया: हर काश्तकार का जमीन पर हक़ है. लेकिन हमारे परशुराम पड़े हैं सीलिंगें बनाने के फेर में—वह भी बीस-बीस एकड़ की—सो भी ऐसे उपजाऊ इलाक़े में जैसे गोदावरी और कृष्णा का डेल्टा—जिससे कि बे-जमीन को तो तिल भर भी जमीन नहीं मिल सकती. इस तरह पर सब परशुराम—चाहे वह किसी भी ख्याल के क्यों न हों—अपना ही रंग जमाना चाहते हैं, और हमेशा के लिये गद्दी पर बरक़रार रहना चाहते हैं.

भला लक्ष्मणों को यह कैसे बर्दाश्त हो ? जरा देखिये तो हमारी यूनिवर्सिटियों को. अगर हमारे वाइस चांसलरों और प्रोफ़ेसरों का बस चले तो जन्म जन्म तक अंग्रेजी मे ही पढ़ें पढ़ायें, ज्यादा से ज्यादा तनख्वाह लेकर कम से कम घंटे लेक्चर दें और शरीर श्रम के तौर पर सुई में डोरा भी न डालें. 1947 के बाद से देश का पटवारी, पुलिस सिपाही और किसान पहले के मुक़ाबले आगे बढ़ा है, लेकिन यह विद्वान मंडली इंच भर भी खिसकने को राजी नहीं है. देश के जीवन में दक़ियानूसी और लकीर की फ़क़ीरी करने वाले हिस्से का अजीब नमूना हैं. वह पढ़ायेंगे गुलीवर्ज़ ट्रैविल्स और बासवैल्ज़ जानसन, लेकिन न कबीर, न बंकिमचंद्र, न ज्ञानदेव, न तिरूकुरल. अंग्रेजी साहित्य के महत्व को हम कम नहीं करते, उसकी क़द्र हम खूब करते हैं, लेकिन क्या वह मातृभाषा के साहित्य की जगह ले सकता है ? न लेना चाहिये, न ले ही सकता है.

आजकल के जमाने में जब सारे आलम मे शरीर-श्रम की इज्जत पर जोर दिया जा रहा है, तब भी हमारी यूनिवर्सिटियों और कालिजों में शरीर-श्रम ही नहीं सिखलाया जाता. फिर वाइस चांसलर हो या प्रिंसपिल-चाहे वह कुंवारा है या उस पर थोड़ा ही बोझ है—ऐसे हर प्रोफ़ेसर या टीचर से—चाहे प्रोफ़ेसरों और टीचरों के बड़े बड़े कुटुम्ब हो और कितनी भी जिम्मेदारी उन पर क्यों न हो—ऊंची तलब दी जाती है. हमारे यह ऊंचे ऊंचे विद्यालय क्या हैं ?—माना आर्थिक विषमता के, शरीर-श्रम-हीनता के और मातृ-भाषा-वैर के सनातन अड्डे हैं. ऐसी हालत में अगर हमारे लक्ष्मणों को तैश आजाये और यह सब बर्दाश्त न हो सके तो क्या ताज्जुब है ? हमें ताज्जुब तो सचमुच यह है कि किस धीरज से वह पेश आ रहे हैं. किसी और देश की बात होती तो या तो शिक्षकों को रास्ता दिखाते या शिक्षा संस्था को ही आग लगा देते. लेकिन वह ऐसा नहीं करके, जब्त खा रहे हैं. यह देश की पुरानी आध्यात्मिक संस्कृति का, अपनी खानदानी का नतीजा है जो इन पर ब्रेक लगाये हुए है.

यही रंग दूसरे दायरों में है. लोगों की सेहत जितनी ज्यादा सुधरती है, डाक्टर उतना ही घबड़ाते हैं. लोग आपस

یاد بھی نہیں آتی . 1948-49 کے تیلنگانا کسان ودروہ نے سکھایا : ھر کاشتکار کا زمین پر حق ھے . لیکن ھمارے پرشرام پڑے ھیں سیلنگیں بنانے کے پھیر میں—وہ بھی بیس بیس ایکڑ کی—سو بھی ایسے اُپجاؤ علاقے میں جیسے گوداوری اور کرشنا کا ڈیلٹا—جس سے کہ بےزمین کو تو تل بھر بھی زمین نہیں مل سکتی . اِس طرح پر سب پرشرام—چاھے وہ کسی بھی خیال کے کیوں نہ ھوں—اپنا ھی رنگ جمانا چاھتے ھیں' اور ھمیشہ کے لئے گدی پر برقرار رھنا چاھتے ھیں .

بھلا لکشمنوں کو یہ کیسے برداشت ھو ؟ ذرا دیکھئے تو ھماری یونیورسٹیوں کو . اگر ھمارے وائس چانسلروں اور پروفیسروں کا بس چلے تو جنم جنم تک انگریزی میں ھی پڑھیں پڑھائیں' زیادہ سے زیادہ تنخواہ لے کر کم سے کم گھنٹے لیکچر دیں اور شریر شرم کے طور پر سوئی میں ڈورا بھی نہ ڈالیں . 19 7 سے بعد سے دیش کا پٹواری' پولس' سپاھی اور کسان پہلے کے مقابلے آگے بڑھا ھے' لیکن یہ ودوان منڈلی انچ بھر بھی کھسکنے کو راضی نہیں ھے . دیش کے جیون میں دقیانوسی اور لکیر کی فقیری کرنے والے حصے کا عجیب نمونہ ھیں . وہ پڑھائینگے گلیورز ٹریولس اور باسویلز جانسن' لیکن نہ کبیر' نہ بنکم چندر' نہ گیان دیو' نہ تروکورل. انگریزی ساھتیہ کے مہتو کو ھم کم نہیں کرتے' اُس کی قدر ھم خوب کرتے ھیں' لیکن کیا وہ ماتر بھاشا کے ساھتیہ کی جگہ لے سکتا ھے ؟ نہ لینا چاھئے' نہ لے ھی سکتا ھے .

آجکل کے زمانے میں جب سارے عالم میں شریر شرم کی عزت پر زور دیا جا رھا ھے' تب بھی ھماری یونیورسٹیوں اور کالجوں میں شریر شرم ھی نہیں سکھلایا جاتا. پھر وائس چانسلر ھو یا پرنسپل--چاھے وہ کنوارا ھے یا اُس پر تھوڑا ھی بوجھ ھے --اُسے ھر پروفیسر یا ٹیچر سے - چاھے پروفیسروں اور ٹیچروں کے بڑے بڑے کٹمب ھوں اور کتنی بھی ذمہداری اُن پر کیوں نہ ھو - اُونچی طلب دی جاتی ھے . ھمارے یہ اُونچے اُونچے ودیالیہ کیا ھیں ؟—مانو آرتھک وشمتا کے' شریر شرم ھینتا کے اور ماتر بھاشا بیر کے سناتن اڈے ھیں . ایسی حالت میں اگر ھمارے لکشمنوں کو طیش آجائے اور یہ سب برداشت نہ ھوسکے تو کیا تعجب ھے ؟ ھمیں تعجب تو سچ مچ یہ ھے کہ کس دھیرج سے وہ پیش آرھے ھیں . کسی اور دیش کی بات ھوتی تو یا تو شکشکوں کو راستہ دکھاتے یا شکشا سنستھا کو ھی آگ لگا دیتے . لیکن وہ ایسا نہیں کرکے' ضبط کھا رھے ھیں. یہ دیش کی پرانی ادھیاتمک سنسکرتی کا' اپنی خاندانی کا نتیجہ ھے جو اُن پر بریک لگائے ھوئے ھے .

یہی رنگ دوسرے دایروں میں ھے . لوگوں کی صحت جتنی زیادہ سدھرتی ھے' ڈاکٹر اُتنا ھی گھبراتے ھیں. لوگ آپس

एक सच्चे क्रान्ति दर्शी की तरह. तुलसीदास राम से कहलाते हैं :

राम मात्र लघु नाम हमारा
परसु सहित बड़ नाम तोहारा

यह तो हद हो गई. परशुराम दोनों का मानो खात्मा ही कर देंगे. राम को दया आती है और ठंडे वचन कह कर परशुराम का गुस्सा शान्त किया. एकदम से परशुराम की आंखें खुल गईं. वह राम को प्रणाम करते हैं और चुपचाप चले जाते हैं.

अब यह परशुराम कौन ? बीते युग या जाने वाले ज़माने के नेता या अवतार ! यह लक्ष्मण कौन ? आधुनिक विश्वविद्यालय का एक नौजवान जिसे मौजूदा हालत से भयानक असंतोष है ! और राम कौन ? नये युग या आने वाले ज़माने के नेता या अवतार ! परशुराम के गुस्से का कारण यह था कि वह नये युग या नये नेता को नहीं पहचान रहे थे. वह इसी घमंड में थे कि मेरा ही ज़माना सतत चल रहा है. लेकिन जिस पल पर उन्हें होश आया, उनका लक्ष्मण के साथ व्यवहार बदल गया और वह नौ-दो-ग्यारह हो गये.

ठीक यही सूरत आज है. हमारे नेता, पदाधिकारी, राज्यकर्त्ता या सत्ताधारी अभी अपनी पुरानी दुनिया मे ही हैं. वह यह नहीं देख रहे हैं कि वह ज़माना खत्म हुआ और नया आया है. इसी वजह से वह पुरानी, गई-गुज़री और निकम्मी मान्यताओं से चिपके हुए हैं. ऊपर से यह भी चाहते हैं कि हमारे लक्ष्मण भी उन्हीं से चिपके रहें. मगर ज़माने की धारा तो तेज़ी से आगे बढ़ती जा रही है, और उस धारा के साथ लक्ष्मणों को बहना चाहिये, और वह बह भी रहे हैं. इस पर हमारे परशुराम बुज़ुर्ग और भी नाराज़ होते हैं और ऐसी आंखें दिखाते हैं मानो सब लक्ष्मणों को ही नेस्त नाबूद कर देंगे.

कौन कौन सी हैं वह मान्यतायें जिनको हमारे पुराने परशुराम छोड़ते नहीं ?—चाहे वह कांग्रेस मे हो या प्रजा समाजवादी पार्टी में या कम्यूनिस्ट या जनसंघ या किसी भी पार्टी में ? हम यह ज़ाहिर करना चाहेंगे कि यह परशुराम हमें हर एक पार्टी में मिलते हैं. फ़्रांस की क्रान्ति ने एक मंत्र सिखाया: भाईचारा, बराबरी और आज़ादी. लेकिन इन परशुरामों के जीवन में यह तीनों ही ग़ायब हैं. रूस की क्रान्ति ने दूसरा मंत्र सिखाया: मज़दूरों का हो राज. लेकिन यह परशुराम अपनी ही तानाशाही बघारते हैं और अपनी पार्टी या देश पर अपना ही रोब जमाना चाहते हैं. हिन्दुस्तान का इतिहास ज़रा लें. कराची कांग्रेस ने एक मंत्र दिया: बुनियादी अधिकार सबको और ऊंची से ऊंची तनख्वाह पांच सौ. लेकिन हमारे परशुरामों को इसकी मानो

ایک سچے کرانتی درشی کی طرح . تلسی داس رام سے کہلاتے ہیں :

رام ماتر لگھو نام ہمارا
پرسو سہت بڑنام تہارا

یہ تو حد ہوگئی . پرشرام دونوں کا مانو خاتمہ ہی کر دینگے . رام کو دیا آتی ہے اور ٹھنڈے وچن کہکر پرشرام کا غصہ شانت کیا . ایکدم سے پرشرام کی آنکھیں کھل گئیں . وہ رام کو پرنام کرتے ہیں اور چپ چاپ چلے جاتے ہیں .

اب یہ پرشرام کون ؟ بیتے یگ یا جانے والے زمانے کے نیتا یا اوتار ! یہ لکشمن کون ؟ آدھونک وشوودیالیہ کا ایک نوجوان جسے موجودہ حالت سے بھیانک اسنتوش ہے ! اور رام کون ؟ نئے یگ یا آنے والے زمانے کے نیتا یا اوتار ! پرشرام کے غصے کا کارن یہ تھا کہ وہ نئے یگ یا نئے نیتا کو نہیں پہچان رہے تھے . وہ اسی گھمنڈ میں ہے کہ میرا ہی زمانہ ستت چل رہا ہے . لیکن جس پل پر انہیں ہوش آیا' اُن کا لکشمن کے ساتھ ویوہار بدل گیا اور وہ نو دو گیارہ ہوگئے .

ٹھیک یہی صورت آج ہے . ہمارے نیتا' پدادھیکاری' راجیہ کرتا یا ستادھاری ابھی اپنی پرانی دنیا میں ہی ہیں . وہ یہ نہیں دیکھ رہے ہیں کہ وہ زمانہ ختم ہوا اور نیا آیا ہے. اِسی وجہ سے وہ پرانی' گئی گذری اور نکمی مانیتاؤں سے چپکے ہوئے ہیں. اوپر سے یہ بھی چاہتے ہیں کہ ہمارے لکشمن بھی انہیں سے چپکے رہیں . مگر زمانے کی دھارا تو تیزی سے آگے بڑھتی جا رہی ہے' اور اُس دھارا کے ساتھ لکشمنوں کو بہنا چاہئے' اور وہ بہ بھی رہے ہیں . اِس پر ہمارے پرشرام بزرگ اور بھی ناراض ہوتے ہیں اور ایسی آنکھیں دکھاتے ہیں مانو سب لکشمنوں کو ہی نیست نابود کر دینگے .

کون کون سی ہیں وہ مانیتائیں جن کو ہمارے پرانے پرشرام چھوڑتے نہیں ؟ — چاہے وہ کانگریس میں ہوں یا پرجا سماجوادی پارٹی میں یا کمیونسٹ یا جن سنگھ یا کسی بھی پارٹی میں ؟ ہم یہ ظاہر کرنا چاہینگے کہ یہ پرشرام ہمیں ہر ایک پارٹی میں ملتے ہیں . فرانس کی کرانتی نے ایک منتر سکھایا : بھائی چارا' برابری اور آزادی . لیکن ان پرشراموں کے جیون میں یہ تینوں ہی غائب ہیں . روس کی کرانتی نے دوسرا منتر سکھایا : مزدوروں کا ہو راج . لیکن یہ پرشرام اپنی ہی تاناشاہی بگھارتے ہیں اور اپنی پارٹی یا دیش پر اپنا ہی رعب جمانا چاہتے ہیں . ہندستان کا اتہاس ذرا لیں. کراچی کانگریس نے ایک منتر دیا : بنیادی ادھیکار سب کو اور اونچی سے اونچی تنخواہ پانچ سو . لیکن ہمارے پرشراموں کو اس کی مانو

नौजवान और बुज़ुर्ग

सुरेश रामभाई

जब से हमारे देश से अंग्रेज़ गये, हमारे बुज़ुर्ग लोग हमारे नौजवान भाई बहनों पर बहुत ख़फ़ा रहते हैं. कहते हैं कि इनमें कोई 'व्यवस्था' नहीं है, कोई 'संयम' नहीं है और कोई 'अनुशासन' नहीं है. शिक्षा विभाग के ऊँचे से ऊँचे अधिकारी भी इस तरह का लांछन लगाया करते हैं. शायद इनकी बातों से ऐसा झलकता है कि कोई जादू नौजवानों पर चढ़ गया है. 15 अगस्त सन 1947 तक जो नेक, सीधे सादे, आज्ञाकारी थे, 16 अगस्त सन 1947 से वह ऐसे बदल गये कि पहचाने नहीं जाते. नतीजा यह है कि हमारे बुज़ुर्गों की अज्ञानता बढ़ रही है. उन्हें तकलीफ़ भी ज्यादा होती है. नौजवान उनसे दूर भगाता है. और दोनों के बीच एक खाई सी बनती चली जा रही है. कुल मिला कर परिणाम यह होता है कि देश की तरक़्क़ी रुकती है. ज़िन्दगी का मज़ा और शान ख़तम हो रही है. भारत की शकल भयानक लगती है.

लेकिन इस हालत के लिये ज़िम्मेदार कौन है -- नौजवान या बुज़ुर्ग ? पर हम इस सवाल को इस तरह से देखना ग़लत मानते हैं, क्योंकि आज के बुज़ुर्ग कल के नौजवान हैं और आज के नौजवान कल के बुज़ुर्ग हैं. अपने ही साथ खिलवाड़ करना कौन पसन्द करेगा ? दूसरे, यह चीज़ कोई नई या अनोखी नहीं है.

एक मिसाल लें. राजा जनक के उस मन्डप में शिव जी का धनुश टूटा पड़ा है. अचानक पहुंचे परशुराम. धनुष पर निगाह पड़ी कि आपे से बाहर हो गये. लक्ष्मण लगा बनाने उनका मज़ाक़ :

बहु धनुहीं तोरी लरिकाईं ।
कबहुं न असि रिस कीन्हि गोसाईं ॥

तब तो परशुराम के ग़ुस्से का ठिकाना नहीं रहा. लक्ष्मण हंसे और बोले :

पुनि पुनि मोहि देखाय कुठारू
चहत उड़ावन फूंकि पहारू

अब तो लक्ष्मण की ख़ैरियत नहीं है. परशुराम मानो उसका काम ही तमाम कर देंगे. लेकिन जितना ही परशुराम बिगड़ते हैं उतना ही लक्ष्मण उनको तंग करता है और राम भी मन ही मन मुस्कराते हुए यह नाटक देख रहे हैं. आख़िर उनसे भी न रहा गया और उन्होंने भी चुटकी ली

نوجوان اور بزرگ

سریش رام‌بھائی

جب سے ہمارے دیش سے انگریز گئے' ہمارے بزرگ لوگ ہمارے نوجوان بھائی بہنوں پر بہت خفا رہتے ہیں . کہتے ہیں کہ اِن میں کوئی ' ویوستھا ' نہیں ہے ' کوئی ' سنیم ' نہیں ہے ' اور کوئی ' انوشاسن ' نہیں ہے . شکشا وبھاگ کے اُونچے سے اُونچے ادھیکاری بھی اِس طرح کا لانچھن لگایا کرتے ہیں . شاید انکی باتوں سے ایسا جھلکتا ہے کہ کوئی جادو نوجوانوں پر چڑھ گیا ہے. 15 اگست سن 1947 تک جو نیک' سیدھے سادے' آگیاں کاری تھے' 16 اگست سن 1947 سے وہ ایسے بدل گئے کہ پہچانے نہیں جاتے . نتیجہ یہ ہے کہ ہمارے بزرگوں کی اگیانتا بڑھ رہی ہے . اُنہیں تکلیف بھی زیادہ ہوتی ہے . نوجوان اُن سے دور بھاگتا ہے' اور دونوں کے بیچ ایک کھائی سی بنتی چلی جا رہی ہے . کل ملا کر پریڼام یہ ہوتا ہے کہ دیش کی ترقی رکتی ہے. زندگی کا مزا اور شان ختم ہو رہی ہے . بھارت کی شکل بھیانک لگتی ہے .

لیکن اس حالت کے لئے ذمہ دار کون ہیں—نوجوان یا بزرگ ؟ پر ہم اِس سوال کو اس طرح سے دیکھنا غلط مانتے ہیں' کیونکہ آج کے بزرگ کل کے نوجوان ہیں اور آج کے نوجوان کل کے بزرگ ہیں . اپنے ہی ساتھ کھلواڑ کرنا کون پسند کرے گا ؟ دوسرے' یہ چیز کوئی نئی یا انوکھی نہیں ہے .

ایک مثال لیں . راجہ جنک کے اُس منڈپ میں شیوجی کا دھنش ٹوٹا پڑا ہے . اچانک پہونچے پرشرام . دھنش پر نگاہ پڑی کہ آپے سے باہر ہوگئے . لکشمن لگا بنانے اُن کا مذاق :

بہو دھنوہیں توریں لرکائیں
کبہوں نہ اسی رس کینہہ گوسائیں

تب تو پرشرام کے غصے کا ٹھکانہ نہیں رہا . لکشمن ہنسے اور بولے :

پونی پونی موہی دکھایہ کوٹھارو
چہت اُڑاون پھونک پہارو

اب تو لکشمن کی خیریت نہیں ہے . پرشرام مانو اُس کا کام ہی تمام کر دینگے . لیکن جتنا ہی پرشرام بگڑتے ہیں اُتنا ہی لکشمن اُن کو تنگ کرتا ہے اور رام بھی من ہی من مسکراتے ہوئے یہ ناٹک دیکھ رہے ہیں . آخر اُن سے بھی نہ رہا گیا اور اُنہوں نے بھی چٹکی لی

वह है 'खुद शनासी' यानी अपने को पहचानना. हम भंवर की तरह उसकी तलाश में अपने चारों तरफ़ चक्कर लगाते रहते हैं."

"यह जिस्म एक दरिया है. इसके अन्दर दिल एक सीपी है. हक़ उस सीपी के अन्दर का मोती है. बहादुर वही है जो इस दरिया में गोता लगाकर उसमें से उस मोती को निकाल लावे."

"अपने होंटों को बन्द करो, अपनी आंखों को बन्द करो, अपने कानों को बन्द करो, अगर फिर भी तुम्हें अपने अन्दर हक़ की सूरत दिखाई न दे तो हम पर हंस लेना."

दुनिया के शोर गुल से अपने को अन्दर खींचना ही अपने दिल की गुफाओं में अल्लाह को खोजना और उसका दीदार हासिल करना है.

योग सूत्रों मे लिखा है :--

"जब आदमी की सब इन्द्रियां यानी उसके सब हवास बाहर की तमाम चीज़ों से अपने को खींच लेते हैं तब इन सब इन्द्रियों के पीछे आदमी का जो चित्त यानी होश है वह अपने अन्दर की तरफ़ मुड़ता है, यानी जब आदमी के मन की सब हरकतें बन्द हो जाती हैं और मन पूरी तरह शान्त और निश्चल हो जाता है तब उसकी आत्मा अपने को देख पाती है. तब वह देखती है कि सब कुछ वही वह है और कुछ कहीं है ही नहीं. देश और काल यानी मकान और ज़मान सब मिट जाते हैं, हरकत ख़त्म हो जाती है, और आदमी की आत्मा सब की आत्मा यानी परम आत्मा या रूहेकुल के साथ मिलकर एक हो जाती है. तब कोई ग़ैर नहीं रह जाता."

وہ ہے ' خود شناسی ' یعنی اپنے کو پہچاننا . ہم بھنور کی طرح اُس کی تلاش میں اپنے چاروں طرف چکر لگاتے رہتے ہیں ."

" یہ جسم ایک دریا ہے. اِس کے اندر دل ایک سیپی ہے. حق اُس سیپی کے اندر کا موتی ہے . بہادر وہی ہے جو اِس دریا میں غوطہ لگا کر اُس میں سے اُس موتی کو نکال لاوے ."

" اپنے ہونٹوں کو بند کرو' اپنی آنکھوں کو بند کرو ' اپنے کانوں کو بند کرو' اگر پھر بھی تمہیں اپنے اندر حق کی صورت دکھائی نہ دے تو ہم پر ہنس لینا ."

دنیا کے شور و غل سے اپنے کو اندر کھینچنا ہی اپنے دل کی گپھاؤں میں اللہ کو کھوجنا اور اُس کا دیدار حاصل کرنا ہے .

یوگ سوتروں میں لکھا ہے :—

" جب آدمی کی سب اندریاں یعنی اُس کے سب حواس باہر کی تمام چیزوں سے اپنے کو کھینچ لیتے ہیں تب ان سب اندریوں کے پیچھے آدمی کا جو چت یعنی ہوش ہے وہ اپنے اندر کی طرف مڑتا ہے' یعنی جب آدمی کے من کی سب حرکتیں بند ہو جاتی ہیں اور من پوری طرح شانت اور نشچل ہو جاتا ہے تب اُس کی آتما اپنے کو دیکھ پاتی ہے . تب وہ دیکھتی ہے کہ سب کچھ وہی وہ ہے اور کچھ کہیں ہے ہی نہیں . دیش اور کال یعنی مکان اور زمان سب مٹ جاتے ہیں' حرکت ختم ہو جاتی ہے' اور آدمی کی آتما سب کی آتما یعنی پرم آتما یا روحِ کل کے ساتھ ملکر ایک ہو جاتی ہے . تب کوئی غیر نہیں رہ جاتا."

इनसान धर्म के लिये ज़ोर शोर की चर्चा करेगा, गीत गायेगा, नाचेगा, धर्म पर बड़ी बड़ी पुस्तकें लिखेगा, लेख लिखेगा, धर्म के लिये जनूनी लड़ाइयां लड़ेगा, मरेगा, मारेगा, सब कुछ करेगा मगर जीवन में धर्म उतार कर स्वयं धार्मिक पुरुष—धर्मात्मा—न बनेगा !

—सत्यभक्त

اِنسان دھرم کے لئے زور شور کی چرچا کرے گا' گیت گائے گا' ناچے گا' دھرم پر بڑی بڑی پستکیں لکھے گا' لیکھ لکھیگا دھرم کے لئے جنونی لڑائیاں لڑے گا' مرے گا' مارے گا' سب کچھ کرے گا مگر جیون میں دھرم اُتار کر سویم دھارمک پورش— دھرماتما—نہ بنے گا !

—ستیہ بھگت

मकाशफ़ा, मुशाहेदा, हाल, दीदार, वज्द, मुआयना वग़ैरा. जिसे हम ध्यान या मुराक़बा कहते हैं उसी को चीनी बौद्ध मज़हब में 'चान' और जापान में 'ज़ेन' कहते हैं.

योग सूत्रों में लिखा है कि आदमी जिस चीज़ का ध्यान करता है, जिस पर दिल लगाता है, वही वह हो जाता है.

आख़ीर में सब मज़हब यही कहते हैं कि जो कुछ है वही है. 'हमा ओस्त' और 'सर्वम् खलु इदम् ब्रह्म' दोनों के यही मानी हैं. अब चूंकि इन्सान अपनी असल हक़ीक़त में उसी अल्लाह से है और वही है इसीलिये इन्सानी समाज की ख़िदमत ही भगवान की सेवा है और यही अल्लाह की इबादत है.

इन्जील में लिखा है :—

"जो नेकी तुमने किसी छोटे से छोटे जानदार के साथ की है वह तुम ने अल्लाह के साथ की.

भागवत में लिखा है :—

"जो नेक इन्सान हैं वह हमेशा दूसरे प्राणियों के दुख से दुखी रहते हैं, उनके दुख को अपना दुख समझते हैं. यही उनकी ईश्वर आराधना है. यही उस ईश्वर की सबसे अच्छी पूजा है जो सब के घट के अन्दर मौजूद है."

"येन केन प्रकारेण—यस्य कस्यापि जन्तुन:
"सन्तोषम् जनयेत् धीमान्—तदेव ईश्वर पूजनम्"

यानी—जिस तरह भी हो सके समझदार आदमी को चाहिये कि जिस प्राणी के भी दिल को हो सके संतोष यानी तसल्ली पहुंचावे. यही ईश्वर की पूजा है.

सूफ़ी कहता है :—

"अगर तू अल्लाह का दीदार हासिल करना चाहता है तो इन्सान की सूरत को देख, उसके अन्दर तुझे अल्लाह यानी हक़ की ज़ात साफ़ हंसती हुई दिखाई देगी."

एक और सूफ़ी कहता है :—

"शक्ले इन्सां में ख़ुदा था मुझे मालूम न था
चांद बादल में छिपा था मुझे मालूम न था"

भागवत में लिखा है :—

"ईश्वर ने अपने रहने के लिये एक दूसरे के बाद बहुत से घर बनाए जैसे धात, पत्थर, पौदे, कीड़े, मछली, रेंगने वाले जानदार, उड़ने वाले पंछी और बड़े बड़े दरिन्दे. पर ईश्वर के लिये यह काफ़ी न हुआ. आख़िरकार उसने आदमी का रूप बनाया. इस रूप में आकर उसने ख़ुद अपने को जाना. इन्सान का जिस्म ही ईश्वर का सबसे बड़ा घर है."

सूफ़ी कहता है :—

"वजूद के इस समन्दर में सिर्फ़ एक ही मोती है और

مکاشفہ، مشاھدہ، حال، دیدار، وجد، معائنہ وغیرہ ۔ جسے ھم دھیان یا مراقبہ کہتے ھیں اُسی کو چینی بودھ مذھب میں 'چان' اور جاپان میں 'زین' کہتے ھیں ۔

یوگ سوتروں میں لکھا ھے کہ آدمی جس چیز کا دھیان کرتا ھے، جس پر دل لگاتا ھے، وھی وہ ھوجاتا ھے ۔

آخیر میں سب مذھب یہی کہتے ھیں کہ جو کچھ ھے وھی ھے، 'ھمہ اوست' اور 'سروم کھلو ادم برھمہ' دونوں کے یہی معنی ھیں ۔ اب چونکہ اِنسان اپنی اصل حقیقت میں اُسی اللہ سے ھے اور وھی ھے اِسی لئے انسانی سماج کی خدمت ھی بھگوان کی سیوا ھے اور یہی اللہ کی عبادت ھے ۔

اِنجیل میں لکھا ھے :—

" جو نیکی تم نے کسی چھوٹے سے چھوٹے جاندار کے ساتھ کی ھے وہ تم نے اللہ کے ساتھ کی ۔"

بھاگوت میں لکھا ھے :—

' جو نیک اِنسان ھیں وہ ھمیشہ دوسرے پرانیوں کے دکھ سے دکھی رھتے ھیں، اُن کے دکھ کو اپنا دکھ سمجھتے ھیں ۔ یہی اُن کی ایشور آرادھنا ھے ۔ یہی اُس ایشور کی سب سے اچھی پوجا ھے جو سب کے گھٹ کے اندر موجود ھے ۔"

" ین کین پرکارین—یسیہ کسیاپی جنتنہ
"سنتوشم جنییت دھیمان—تدیو ایشور پوجنم "

یعنی—جس طرح بھی ھوسکے سمجھدار آدمی کو چاھیئے کہ جس پرانی کے بھی دل کو ھوسکے سنتوش یعنی تسلی پہنچاوے یہی ایشور کی پوجا ھے ۔

صوفی کہتا ھے :—

" اگر تو اللہ کا دیدار حاصل کرنا چاھتا ھے تو انسان کی صورت کو دیکھ، اُس کے اندر تجھے اللہ یعنی حق کی ذات صاف ھنستی ھوئی دکھائی دے گی ۔"

ایک اور صوفی کہتا ھے :—

' شکل اِنسان میں خدا تھا مجھے معلوم نہ تھا
چاند بادل میں چھپا تھا مجھے معلوم نہ تھا "

بھاگوت میں لکھا ھے :—

" ایشور نے اپنے رھنے کے لئے ایک دوسرے کے بعد بہت سے گھر بنائے جیسے دھات، پتھر، پودے، کیڑے، مچھلی، رینگنے والے جاندار، اُڑنے والے پنچھی، اور بڑے بڑے درندے ۔ پر ایشور کے لئے یہ کافی نہ ھوا ۔ آخرکار اُس نے آدمی کا روپ بنایا ۔ اِس روپ میں آکر اُس نے خود اپنے کو جانا ۔ انسان کا جسم ھی ایشور کا سب سے بڑا گھر ھے ۔"

صوفی کہتا ھے :—

" وجود کے اِس سمندر میں صرف ایک ھی موتی ھے اور

पर अपने फ़र्ज़ से इनसान ग़ाफ़िल नहीं हो सकता. मुहम्मद साहब की एक हदीस है :—

"कोशिश करना मेरा काम है, कामयाबी नाकामयाबी अल्लाह के हाथ है."

सूफ़ी कहता है :—

"तेरे कामों का असल करने वाला तेरे इस कारख़ाने के अन्दर छिपा हुआ है, तू अगर कारख़ाने के अन्दर जाए तो उसे साफ़ देख लेगा. वही तेरे काम बनाने वाला है. वह तेरे सब कामों में मौजूद है. इसलिये अपने कामों के नतीजों की बाबत तेरा फ़िक्र करना केवल तेरी एक बीमारी है."

गीता में लिखा है :—

"बेलाग होकर तू हमेशा अपने फ़र्ज़ को पूरा करने में लगा रह. इस तरह अगर तू ईश्वर के हाथों में केवल एक औज़ार का काम देता रहेगा तो तू उस परम पुरुष परम आत्मा को पाजायगा."

सब मज़हब हमें यह बताते हैं कि वह ईश्वर जो सब आत्माओं की आत्मा है और जो सब के घट मे मौजूद है वही हक़ है, वही सुन्दर और प्यारा है और वही सारी नेकी है. हिन्दू किताबों में 'सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्' के यही मानी हैं. उस 'हक़' को हमें जानना और पहचानना चाहिये. उस 'सुन्दर' और प्यारे की तरफ़ हमें अपने दिल को लगाना चाहिये. उसके नज़दीक पहुंचने के लिये हमें हर तरह से दूसरो के साथ 'नेकी' करनी चाहिये. सत्यम्, शिवम्, और सुन्दरम्, को ही सत्यम्, हितम् और प्रियम् भी कहते हैं. सूफ़ी लोग इन ही तीनों को 'मौजूद' माबूद और मक़सूद' कहते हैं. सूफ़ी कहता है—"ला मौजूद, इल्लाहू, ला माबूद इल्लाहू, ला मक़सूद इल्लाहू." यानी उस एक के सिवा न कोई हक़ है न कोई प्यारा है और न कोई पूजा इबादत का हक़दार है.

इस तरह हम देखते हैं कि सब मज़हबों का सार यानी सब की असल हक़ीक़त एक है. वह हक़ीक़त उसी एक ईश्वर अल्लाह से है और उसके मुताबिक़ चलकर ही इन्सान फिर अल्लाह तक पहुंच सकता है. इसी रास्ते का नाम "योग" यानी "सलूक" है. अलग अलग मज़हबों में इस रास्ते को अलग अलग नाम दिये गए हैं. पर रास्ता एक है. हिन्दुओं की सन्ध्या और उपासना में, मुसलमानों की नमाज़ में और ईसाइयों की दुआ में सबमें इस रास्ते के बीज मौजूद हैं. इस रास्ते के बहुत से निशान हैं. इन निशानों को मुक़ाम भी कहते हैं. इन में कुछ यह हैं :—यम, नियम, तप, चित्त प्रसादन, चित्त परिक्रम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, निर्विकल्प, समाधी—या सूफ़ी शब्दों में तहज़ीबुन्नफ़्स, तसफ़ीयए दिल, नफ़्स कुशी, रियाज़त, तनक़ीयए क़ल्ब, ज़िक्र, फ़िक्र, मुजाहेदा, अशग़ाल, हब्सदम, मुराक़बा,

پر اپنے فرض سے اِنسان غافل نہیں ہوسکتا . محمد صاحب کی ایک حدیث ہے :—

" کوشش کرنا میرا کام ہے' کامیابی ناکامیابی اللہ کے ہاتھ ہے ."

صوفی کہتا ہے :—

" تیرے کاموں کا اصل کرنے والا تیرے اس کارخانے کے اندر چھپا ہوا ہے' تو اگر کارخانے کے اندر جائے تو اُسے صاف دیکھ لے گا . وہی تیرے کام بنانے والا ہے . وہ تیرے سب کاموں میں موجود ہے . اِس لئے اپنے کاموں کے نتیجوں کی بابت تیرا فکر کرنا کیول تیری ایک بیماری ہے ."

گیتا میں لکھا ہے :—

" بےلاگ ہو کر تو ہمیشہ اپنے فرض کو پورا کرنے میں لگا رہ . اِس طرح اگر تو ایشور کے ہاتھوں میں کیول ایک اوزار کا کام دیتا رہے گا تو تو اُس پرم پرش پرم آتما کو پاجائیگا ."

سب مذہب ہمیں یہ بتاتے ہیں کہ وہ ایشور جو سب آتماؤں کی آتما ہے اور جو سب کے گھٹ میں موجود ہے وہی حق ہے' وہی سندر اور پیارا ہے اور وہی ساری نیکی ہے . ہندو کتابوں میں ' ستیم ' ' شیوم ' ' سندرم ' کے یہی معنی ہیں . اُس ' حق ' کو ہمیں جاننا اور پہچاننا چاہئے . اُس ' سندر ' اور پیارے کی طرف ہمیں اپنے دل کو لگانا چاہئے . اُس کے نزدیک پہونچنے کے لئے ہمیں ہر طرح سے دوسروں کے ساتھ ' نیکی ' کرنی چاہئے . ستیم' شیوم اور سندرم کو ہی ستیم' ہتم اور پریم بھی کہتے ہیں . صوفی لوگ ان ہی تینوں کو ' موجود' ,معبود' اور ' مقصود ' کہتے ہیں. صوفی کہتا ہے کہ—" لا موجود اللہ ہو' لامعبود اللہ ہو' لامقصود اللہ ہو." یعنی اُس ایک کے سوا نہ کوئی حق ہے نہ کوئی پیارا ہے اور نہ کوئی پوجا عبادت کا حقدار ہے .

اِسی طرح ہم دیکھتے ہیں کہ سب مذہبوں کا سار یعنی سب کی اصل حقیقت ایک ہے . وہ حقیقت اُسی ایک ایشور اللہ سے ہے اور اُس کے مطابق چل کر ہی اِنسان پھر اللہ تک پہونچ سکتا ہے . اِسی راستے کا نام " یوگ " یعنی " سلوک " ہے . الگ الگ مذہبوں میں اِس راستے کو الگ الگ نام دیئے گئے ہیں . پر راستہ ایک ہے . ہندوؤں کی سندھیا اور اُپاسنا میں' مسلمانوں کی نماز میں اور عیسائیوں کی دعا میں سب میں اِس راستے کے بیج موجود ہیں . اس راستے کے بہت سے نشان ہیں . اِن نشانوں کو مقام بھی کہتے ہیں . اِن میں کچھ یہ ہیں :—یم' نیم' تپ' چت پرسادن' چت پریکرم' آسن' پرانایام' پرتیاہار' دھیان' دھارنا' نروکلپ' سمادھی— یا صوفی شبدوں میں تہذیب النفس' تصفیۂ دل' نفس کشی' ریاضت' تنقیۂ قلب' ذکر' فکر' مجاہدہ' اشغال' حبس دم' مراقبہ'

सूफ़ी कहता है :—

"जो अपने को जागा हुआ समझता है वह सचमुच सोया हुआ है. उसका जागना उसके सोने से बदतर है. अपनी छोटी ख़ुदी से सोना ही असली जागना और असली होशियारी है. इस होश का समझने वाला वही हो सकता है जो अपनी ख़ुदी की तरफ़ से बेहोश है. लेकिन ज़बान की बात समझे वह जिसके कान हों."

"बरसों मेरा दिल मुझ से ज्ञान के प्याले की मांग करता रहा. ग़ैर से उस चीज़ की ख़्वाहिश करता रहा जो ख़ुद उसके अन्दर मौजूद थी."

"इन्साने कामिल वही है जो मालिक होते हुए सबकी ग़ुलामी करता है और सब की सेवा में लगा रहता है. इसी में आदमी का कमाल है."

मुहम्मद साहब की एक हदीस है :—

"अफ़ज़लुल अशग़ाल ख़िदमतुन्नास."

यानी—सब से बढ़कर शग़ल (योग) आदमी की सेवा है.

सब धर्मों के मानने वाले कभी कभी यह समझ कर अपने को धोका देते रहते हैं कि हमने अपने को पूरी तरह ईश्वर अल्लाह पर छोड़ रक्खा है, जो कुछ करता है वही करता है, हम ईश्वर के हाथ में केवल एक कठपुतली हैं. यह समझकर वह बुरे से बुरे कामों में पड़े रहते हैं. अपने असली फ़र्ज़ और असली दीन धर्म की तरफ़ से बेपरवाह और ग़ाफ़िल रहते हैं. यह धोका बड़ा ज़बरदस्त धोका है. हर काम एक कारण यानी सबब है और हर कारण का कार्य यानी हर सबब का नतीजा होना लाज़मी है. हम में से कोई अपने कामों के नतीजे से नहीं बच सकता. अगर हम कोई काम करने पर मजबूर हैं तो हमें उस काम का नतीजा भुगतने के लिये भी मजबूर होना पड़ेगा. सब धर्मों ने हमें इस धोके से बचाने की कोशिश की है. जब किसी काम के करते समय हमें पल भर के लिये भी यह महसूस हो कि हम वह करें या न करें या यह करें या वह करें तो हमें अपने फ़ैसले के नतीजे को भुगतने के लिये भी तैयार रहना चाहिये.

इन्जील में लिखा है :—

"कल की मत सोचो, जो फ़र्ज़ आज इस समय तुम्हारे सामने है उसे अपनी पूरी शक्ति लगाकर पूरा करो."

गीता में लिखा है :—

"ईश्वर सब जानदारों के दिलों के अन्दर बैठा हुआ है. वही सब को चला रहा है ......ऐ अर्जुन ! तू अपने किसी फ़र्ज़ से ग़ाफ़िल न हो. केवल अपने कामों के नतीजे की परवाह न कर."

लगभग इन्हीं शब्दों में क़ुरान में कहा गया है :—

"सब जानदारों के दिल उस रहमान की उंगलियों पर हैं."

صوفی کہتا ھے :—

" جو اپنے کو جاگا ھوا سمجھتا ھے وہ سچ مچ سویا ھوا ھے . اُس کا جاگنا اُس کے سونے سے بدتر ھے . اپنی چھوٹی خودی سے سونا ھی اصلی جاگنا اور اصلی ھوشیاری ھے . اِس ھوش کا سمجھنے والا وھی ھو سکتا ھے جو اپنی خودی کی طرف سے بےھوش ھے . لیکن زبان کی بات سمجھے وہ جس کے کان ھوں ."

" برسوں میرا دل مجھ سے گیان کے پیالے کی مانگ کرتا رہا . غیر سے اُس چیز کی خواھش کرتا رھا جو خود اُس کے اندر موجود تھی ."

" اِنسان کامل وھی ھے جو مالک ھوتے ھوئے سب کی غلامی کرتا ھے اور سب کی سیوا میں لگا رھتا ھے . اِسی میں آدمی کا کمال ھے ."

محمد صاحب کی ایک حدیث ھے :—

" افضل الاشغال خدمت الناس "

یعنی سب سے بڑھ کر شغل (یوگ) آدمی کی سیوا ھے .

سب دھرموں کے ماننے والے کبھی کبھی یہ سمجھکر اپنے کو دھوکہ دیتے رھتے ھیں کہ ھم نے اپنے کو پوری طرح ایشور اللہ پر چھوڑ رکھا ھے، جو کچھ کرتا ھے وھی کرتا ھے، ھم ایشور کے ھاتھ میں کیول ایک کٹھ پتلی ھیں. یہ سمجھکر وہ برے سے برے کاموں میں پڑے رھتے ھیں . اپنے اصلی فرض اور اصلی دین دھرم کی طرف سے بےپرواہ اور غافل رھتے ھیں . یہ دھوکہ بڑا زبردست دھوکہ ھے . ھر کام ایک کارن یعنی سبب ھے اور ھر کارن کا کاریہ یعنی ھر سبب کا نتیجہ ھونا لازمی ھے . ھم میں سے کوئی اپنے کاموں کے نتیجے سے نہیں بچ سکتا . اگر ھم کوئی کام کرنے پر مجبور ھیں تو ھمیں اُس کام کا نتیجہ بھگتنے کے لئے بھی مجبور ھونا پڑے گا . سب دھرموں نے ھمیں اِس دھوکے سے بچانے کی کوشش کی ھے . جب کسی کام کے کرتے سمے ھمیں پل بھر کے لئے بھی یہ محسوس ھو کہ ھم وہ کریں یا نہ کریں یا وہ کریں تو ھمیں اپنے فیصلہ کے نتیجہ کو بھگتنے کے لئے بھی تیار رھنا چاھئے .

اِنجیل میں لکھا ھے :—

"کل کی مت سوچو، جو فرض آج اس سمے تمہارے سامنے ھے اُسے اپنی پوری شکتی لگا کر پورا کرو ."

گیتا میں لکھا ھے :—

" ایشور سب جانداروں کے دلوں کے اندر بیٹھا ھوا ھے . وھی سب کو چلا رھا ھے ..... اے ارجن ! تو اپنے کسی فرض سے غافل نہ ھو . کیول اپنے کاموں کے نتیجے کی پرواہ نہ کر ."

لگ بھگ اِنھیں شبدوں میں قرآن میں کہا گیا ھے :—

" سب جانداروں کے دل اُس رحمان کی اُنگلیوں پر ھیں ."

"हुज्ज को जाना क्या है ? अपनी खुदी से दूर भागना. और जाना कहां है ? उस रूहेकुल की तरफ जो सबके अन्दर और सब रहनुमाओं की रहनुमा है."

भागवत में लिखा है :—

"दरियाओं के पानी से तीर्थ नहीं होता और न मिट्टी पत्थर के देवता देवता हैं. इनके जरिये तेरे दिल की सफ़ाई में एक जमाना बीत जायगा. पर जो नेक लोग हैं उनके दर्शन करने से ही तू पाक हो जायगा क्योंकि उनका दिल ही भगवान का सिंहासन है."

बौद्ध किताब धम्मपद में लिखा है :—

"आत्मा ही आत्मा का मालिक और रक्षक है, और कोई रक्षक नहीं है. जिस किसी ने अपनी आत्मा को पा लिया उसे वह रक्षक मिल गया जिससे बढ़कर फिर कोई रक्षक नहीं."

गीता में ईश्वर कहता है :—

"नासमझ लोग मेरे उस वजूद की तरफ से बेपरवाही करते हैं जो सब आदमियों के जिस्म के अन्दर है. वह यह नहीं जानते कि मैं ही सब प्राणियां के अन्दर और सबकी जान हूं"

"आदमी को चाहिये कि अपनी आत्मा से अपनी आत्मा का उद्धार करे यानी अपनी छोटी खुदी को ऊपर उठाकर सर्व आत्मा यानी सबके आपे में फना कर दे. अपनी आत्मा को गिरने न दे. सबका आपा ही सारे देवता हैं. जो कुछ है सब इसी बड़े आपे के अन्दर है." (गीता और मनुस्मृति)

कहा जाता है कि बुद्ध भगवान के मुंह से जो आखरी शब्द निकले वह यह थे :—

"तुम्हारी आत्मा के अन्दर जो रोशनी है उसी रोशनी में चलो. अपने से बाहर कोई और रोशनी तलाश न करो. आत्मा की ही शरण में आओ और किसी की शरण न ढूंढ़ो. और जितने बाहर के देवता आदि हैं वह सब आने जाने हैं. अमर केवल तुम्हारे अन्दर का सर्वआत्मा है. इसे याद रक्खो और होशियारी और सावधानी के साथ अपने अन्दर के उस अमर रहनुमा के पीछे चलो."

कबीर साहब ने इसी ख्याल को अपने शब्दों में यूं प्रकट किया है :—

"घट घट रमता राम रमैया, कटुक बचन मत बोल रे ! तोहे राम मिलेंगे.

"रंग महल में (यानी अपने अन्दर) दीप बरत है. आसन से मत डोल रे तोहे राम मिलेंगे."

गीता में कहा गया है :—

"और सब प्राणियों के लिये जो रात है संयमी यानी बाहोश आदमी उसी में जागता है और जिसमें सब प्राणी जागते हैं वह साहबे नज़र मुनि के लिये रात है."

"حبج کو جانا کیا ہے ؟ اپنی خودی سے دور بھاگنا . اور جانا کہاں ہے ؟ اس روح کل کی طرف جو سب کے اندر اور سب رہنماؤں کی رہنما ہے ."

بھاگوت میں لکھا ہے :—

"دریاؤں کے پانی سے تیرتھ نہیں ہوتا اور نہ مٹی پتھر کے دیوتا دیوتا ہیں . ان کے ذریعہ تیرے دل کی صفائی میں ایک زمانہ بیت جائیگا . پر جو نیک لوگ ہیں اُن کے درشن کرنے سے ہی تو پاک ہوجائیگا کیونکہ اُنکا دل ہی بھگوان کا سنگھاسن ہے ."

بودھ کتاب دھمپد میں لکھا ہے :—

"آتما ہی آتما کا مالک اور رکشک ہے اور کوئی رکشک نہیں ہے . جس کسی نے اپنی آتما کو پالیا اُسے وہ رکشک مل گیا جس سے بڑھ کر اور کوئی رکشک نہیں ."

گیتا میں ایشور کہتا ہے :—

"ناسمجھ لوگ میرے اس وجود کی طرف سے بے پرواہی کرتے ہیں جو سب آدمیوں کے جسم کے اندر ہے . وہ یہ نہیں جانتے کہ میں ہی سب پرانیوں کے اندر اور سب کی جان ہوں ."

" آدمی کو چاہئیے کہ اپنی آتما سے اپنی آتما کا اُدھار کرے یعنی اپنی چھوٹی خودی کو اوپر اٹھا کر سرو آتما یعنی سب کے آپے میں فنا کر دے . اپنی آتما کو گرنے نہ دے . سب کا آپا ہی سارے دیوتا ہیں . جو کچھ ہے سب اسی بڑے آپے کے اندر ہے ." (گیتا اور منوسمرتی) .

کہا جاتا ہے کہ بدھ بھگوان کے منہ سے جو آخری شبد نکلے وہ یہ ہے :—

" تمہاری آتما کے اندر جو روشنی ہے اُسی روشنی میں چلو . اپنے سے باہر کوئی اور روشنی تلاش نہ کرو . آتما کی ہی شرن میں آؤ اور کسی کی شرن نہ ڈھونڈھو . اور جتنے باہر کے دیوتا ادی ہیں وہ سب آنے جانے ہیں . امر کیول تمہارے اندر کا سرو آتما ہے . اسے یاد رکھو اور ہوشیاری اور ساودھانی کے ساتھ اپنے اندر کے اُس امر رہنما کے پیچھے چلو ."

کبیر صاحب نے اسی خیال کو اپنے شبدوں میں یوں پرگٹ کیا ہے :—

" گھٹ گھٹ رمتا رام رمیا . کٹک بچن مت بول رے ! توہے رام ملیں گے .

رنگ محل میں (یعنی اپنے اندر) دیپ برت ہے . آسن سے مت ڈول رے تو ہے رام ملیں گے ."

گیتا میں کہا گیا ہے :—

" اور سب پرانیوں کے لئے جو رات ہے سنیمی یعنی باہوش آدمی اسی میں جاگتا ہے اور جس میں سب پرانی جاگتے ہیں وہ صاحب نظر منی کے لئے رات ہے ."

मनुस्मृति में लिखा है :—

"जो आदमी दुनिया के मोह को छोड़ देता है और वह अहद कर लेता है कि वह किसी के दिल में अपने से डर पैदा होने नहीं देगा, उसको भी फिर किसी चीज़ का डर नहीं रह सकता. सब लोक यानी सारे आलम फिर अपनी पूरी शान के साथ उसके सामने खुल जाते हैं."

गीता में लिखा है :—

"जिस आदमी से दुनिया में कोई डर नहीं खाता और जो खुद किसी से डर नहीं खाता, जो घमंड, डर, घबराहट तीनों से ऊपर है वही भगवान को प्यारा है."

प्राचीन मिस्र के मज़हब का अब कोई मानने वाला नहीं रहा. उस पुराने मज़हब की पाक किताब "परलोक वासियों की किताब" (दि बुक आफ़ दी डेड) में लिखा है कि आदमी के मरने के बाद जब उसकी रूह यमराज के सामने जाती है तो उसे यह कहने के क़ाबिल होना चाहिये कि— "मैंने कभी किसी को नहीं रुलाया.'

सूफ़ी कहता है :—

"नमाज़े ज़ाहिदां क़द्दो सुजूद अस्त
नमाज़े आशिक़ां तरके वजूद अस्त."

यानी—ज़ाहिदों (रीत रिवाज के मानने वालों) की नमाज़ खड़े होना और सिजदे में गिरना है, और आशिक़ों की नमाज़ अपनी खुदी को मिटाना है.

इन्जील में लिखा है :—

"और जब तुम दुआ मांगो तो उन पाखन्डियों की तरह न करो जो आम पूजा घरों में और गलियों के कोनों में खड़े होकर दुआ मांगना पसन्द करते हैं ताकि लोग उन्हें देखें.. ...तुम जब दुआ मांगो तो नासमझ लोगों की तरह फ़िज़ूल के फ़िक़रे न दुहराओ. वह लोग समझते हैं कि वह अगर बहुत बोलेंगे तो उनकी बात ज़रूर सुनी जायगी........तुम अपनी कोठरी में जाओ और जब दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर लो तब अकेले में उस परम पिता परमात्मा से दुआ मांगो जो दिलों के अन्दर रहता है......."

"न कुछ खतना कराने में है और न कुछ खतना न कराने में है. सब कुछ इसी में है कि दूसरों के साथ बरताव करने में तुम ईश्वर की आज्ञाओं को मानो."

सूफ़ी कहता है :—

"ऐ दिल ! दूसरों के दिलों का तवाफ़ (परिक्रमा) कर क्योंकि इन दिलों के अन्दर एक काबा छिपा हुआ है. वह जो पत्थर का काबा है उसे तो हज़रत इब्राहीम ने बनाया था और यह जो दिलों के अन्दर का काबा है इसे खुद खुदा ने बनाया है."

منوسمرتی میں لکھا ہے :—

"جو آدمی دنیا کے موہ کو چھوڑ دیتا ہے اور یہ عہد کر لیتا ہے کہ وہ کسی کے دل میں اپنے سے ڈر پیدا ہونے نہیں دیگا، اُس کو بھی پھر کسی چیز کا ڈر نہیں رہ سکتا. سب لوک یعنی سارے عالم پھر اپنی پوری شان کے ساتھ اُس کے سامنے کھل جاتے ہیں."

گیتا میں لکھا ہے :—

"جس آدمی سے دنیا میں کوئی ڈر نہیں کھاتا اور جو خود کسی سے ڈر نہیں کھاتا، جو گھمنڈ، ڈر، گھبراہٹ تینوں سے اُوپر ہے وہی بھگوان کو پیارا ہے."

پراچین مصر کے مذہب کا اب کوئی ماننے والا نہیں رہا. اُس پرانے مذہب کی پاک کتاب "پرلوک واسیوں کی کتاب" (دی بک آف دی ڈیڈ) میں لکھا ہے کہ آدمی کے مرنے کے بعد جب اس کی روح یم راج کے سامنے جاتی ہے تو اُسے یہ کہنے کے قابل ہونا چاہئے کہ "میں نے کبھی کسی کو نہیں رلایا."

صوفی کہتا ہے :—

"نماز زاہداں قد و سجود است
نماز عاشقاں ترک وجود است"

یعنی—زاہدوں (ریت رواج کے ماننے والوں) کی نماز کھڑے ہونا اور سجدے میں گرنا ہے، اور عاشقوں کی نماز اپنی خودی کو مٹانا ہے.

انجیل میں لکھا ہے :—

"اور جب تم دعا مانگو تو اُن پاکھنڈیوں کی طرح نہ کرو جو عام پوجا گھروں میں اور گلیوں کے کونوں میں کھڑے ہو کر دعا مانگنا پسند کرتے ہیں تاکہ لوگ اُنہیں دیکھیں.... تم جب دعا مانگو تو ناسمجھ لوگوں کی طرح فضول کے فقرے نہ دہراؤ. وہ لوگ سمجھتے ہیں وہ اگر بہت بولیں گے تو اُن کی بات ضرور سنی جائیگی.... تم اپنی کوٹھری میں جاؤ اور جب دروازہ اندر سے بند کر لو تب اکیلے میں اُس پرم پتا پرماتما سے دعا مانگو جو دلوں کے اندر رہتا ہے......"

"نہ کچھ ختنہ کرانے میں ہے اور نہ کچھ ختنہ نہ کرانے میں ہے. سب کچھ اِسی میں ہے کہ دوسروں کے ساتھ برتاؤ کرنے میں تم ایشور کی آگیاؤں کو مانو."

صوفی کہتا ہے :—

"اَے دل! دوسروں کے دلوں کا طواف (پریکرما) کر کیونکہ اِن دلوں کے اندر ایک کعبہ چھپا ہوا ہے. وہ جو پتھر کا کعبہ ہے اُسے تو حضرت ابراہیم نے بنایا تھا اور یہ جو دلوں کے اندر کا کعبہ ہے اِسے خود خدا نے بنایا ہے."

"सैकड़ों किताबों और सैकड़ों वरक़ों को आग में डाल दे और अपनी जान और अपने दिल को अपने दिलदार यानी प्रीतम की तरफ़ लगा दे."

"सच यह है कि खुद तू ही सब किताबों की मां है, अपने अन्दर की आयतों को खुद अपने अन्दर पढ़. तेरा दिल खुद एक मानी से भरी हुई 'लौहे महफ़ूज़' (सुरक्षित पाटी) है जो कुछ भी तू चाहता है वह तुझे उस पाटी से मिल सकता है."

उपनिषद् में लिखा है :—

"सब विद्याओं का भंडार आदमी का दिल है."

मनुस्मृति में लिखा है :—

"अपने अन्दर ध्यान से देखो ! सब दुरुस्ती और सब ग़लती तुम्हारे ही अन्दर है. जो आदमी सब कुछ अपने ही अन्दर देख लेता है वह फिर अधर्म यानी बुराई नहीं करता. सब देवता तुम्हारे ही अन्दर हैं. जो कुछ हो तुम ही हो. सब तुम में है."

"जो आदमी सब प्राणियों की सेवा करके सबकी आत्मा को अपनी आत्मा, अपने अन्दर सबको और सबके अन्दर अपने को देख लेता है, उसका दुई का परदा हट जाता है और वह शुद्ध अद्वैत (यानी तौहीदे ज़ाती), भाव अद्वैत (यानी तौहीदे सिफ़ाती) और क्रिया अद्वैत (यानी तौहीदे अफ़आली) तीनों तरह की तौहीद की हक़ीक़त को जान जाता है."

'लौहेमहफ़ूज़' अल्लाह का वह हाफ़ज़ा यानी स्मृति है जिस में भूत, भविश्य, और वर्तमान तीनों हमेशा के लिये मौजूद हैं. इसी को संस्कृत में चित्रगुप्त कहते हैं. जो अल्क़ाबिज़ है वही यम है. जो अल्शकूर है वही अन्तरयामी है. महत् बुद्धि के जो मानी हैं वही अक़्लेकुल के हैं. नए नए इल्म हम इसीलिये ईजाद कर सकते हैं क्योंकि हमारी आत्मा के अन्दर वह सब पहले से और हमेशा से मौजूद हैं. अपने अन्दर के उसी समन्दर में से हम कंकरियां और जवाहर निकाल निकाल कर बाहर फेंकते रहते हैं. इसीलिये ज्ञान यानी मारफ़त का रास्ता और भक्ति यानी इश्क़ का रास्ता और कर्म (नेक आमाल) यानी खिदमते खल्क़ का रास्ता सब एक दूसरे में बन्धे हुए हैं और सब एक हैं.

क़ुरआन में लिखा है :—

"सब से बढ़कर 'ईमान' यह है कि सब आदमी तुम्हारे हाथों में अपने को सुरक्षित (महफ़ूज़) महसूस करें. सब से आला 'इसलाम' यह है कि तुम्हारी ज़बान और तुम्हारे हाथों से सब बे खटके और सलामत रहें."

इन्जील में लिखा है :—

"सच्चा और कामिल प्रेम डर को दिल से निकाल कर बाहर फेंक देता है."

"سیکڑوں کتابوں اور سیکڑوں ورقوں کو آگ میں ڈال دے اور اپنی جان اور اپنے دل کو اپنے دلدار یعنی پریتم کی طرف لگا دے."

"سچ یہ ہے کہ خود تو ہی سب کتابوں کی ماں ہے' اپنے اندر کی آیتوں کو خود اپنے اندر پڑھ. تیرا دل خود ایک معنی سے بھری ہوئی 'لوح محفوظ' (سرکشت پاٹی) ہے. جو کچھ بھی تو چاہتا ہے وہ تجھے اُس پاٹی سے مل سکتا ہے."

اُپنشد میں لکھا ہے :—

"سب ودیاؤں کا بھنڈار آدمی کا دل ہے."

منوسمرتی میں لکھا ہے :—

"اپنے اندر دھیان سے دیکھو ! سب درستی اور سب غلطی تمہارے ہی اندر ہے. جو آدمی سب کچھ اپنے ہی اندر دیکھ لیتا ہے وہ پھر ادھرم یعنی برائی نہیں کرتا. سب دیوتا تمہارے ہی اندر ہیں. جو کچھ ہو تم ہی ہو. سب تم میں ہے."

"جو آدمی سب پرانیوں کی سیوا کرکے سب کی آتما کو اپنی آتما' اپنے اندر سب کو اور سب کے اندر اپنے کو دیکھ لیتا ہے' اُس کا دوئی کا پردہ ہٹ جاتا ہے اور وہ شدھ ادویت (یعنی توحید ذاتی)' بھاؤ ادویت (یعنی توحید صفاتی) اور کریا ادویت (یعنی توحید افعالی) تینوں طرح کی توحید کی حقیقت کو جان جاتا ہے."

'لوح محفوظ' اللہ کا وہ حافظہ یعنی سمرتی ہے جس میں بھوت' بھوشیہ اور ورتمان تینوں ہمیشہ کے لئے موجود ہیں. اِسی کو سنسکرت میں چترگپت کہتے ہیں. جو القابض ہے وہی یم ہے. جو الشکور ہے وہی انترجامی ہے. مہت بدھی کے جو معنی ہیں وہی عقل کل کے ہیں. نئے نئے علم ہم اِسی لئے ایجاد کرسکتے ہیں کیونکہ ہماری آتما کے اندر وہ سب پہلے سے اور ہمیشہ سے موجود ہیں. اپنے اندر کے اُسی سمندر میں سے ہم کنکریاں اور جواہر نکال نکال کر باہر پھینکتے رہتے ہیں. اسی لئے گیان یعنی معرفت کا راستہ اور بھکتی یعنی عشق کا راستہ اور کرم (نیک اعمال) یعنی خدمت خلق کا راستہ سب ایک دوسرے میں بندھے ہوئے ہیں اور سب ایک ہیں.

قرآن میں لکھا ہے :—

"سب سے بڑھکر 'ایمان' یہ ہے کہ سب آدمی تمہارے ہاتھوں میں اپنے کو سرکشت (محفوظ) محسوس کریں. سب سے اعلی 'اِسلام' یہ ہے کہ تمہاری زبان اور تمہارے ہاتھوں سے سب بے کھٹکے اور سلامت رہیں."

اِنجیل میں لکھا ہے :—

"سچا اور کامل پریم ڈر کو دل سے نکال کر باہر پھینک دیتا ہے."

होता है दाने को भूसे से अलग करके भूसे को दूर फेंक देता है."

मौलाना रूम ने कहा है :—

"अगर तू मारफ़त यानी ज्ञान के राज़ (रहस्य) को जानना चाहता है तो तुझे चाहिये कि लफ़्ज़ों को छोड़ कर मानी की तरफ़ जा."

एक और जगह मौलाना रूम ने कहा है :—

"तू अगर क़ुरआन को इसी तरह पढ़ता रहेगा और इसी तरह मतलब करता रहेगा तो तू इसलाम की सारी रौनक़ को मिटा डालेगा."

मौलाना रूम का एक और मशहूर शेर है :—

"मैंने क़ुरआन में से मग्ज़ निकाल लिया है और हड्डियां कुत्तों के सामने फेंक दी हैं."

महाभारत में लिखा है :—

"वेदों को दुनिया के इतिहास और पुराण यानी अब तक के परम्परागत ज्ञान की रोशनी में पढ़ना चाहिये. कम-समझ आदमी से वेद भी यह सोचकर डरता है कि यह आदमी मेरे असली मतलब को ख़ब्त कर देगा."

"व्याकरण यानी (ग्रामर) जानने वालों को चाहिये कि समझदार बड़े लोगों की बातों का बहुत बारीकी के साथ अर्थ न करें. जो लोग समझदार हैं वह शब्दों पर इतना ध्यान नहीं देते जितना उनके अन्दर छिपे हुए विचार और अर्थ पर."

हमें यह भी बार बार बताया गया है कि सब सच्चे ज्ञान का असली सोता हमारे अपने अन्दर है. धर्म की किताबों को वही ठीक ठीक समझ सकता है जिसे अपने अन्दर का वह सोता मिल गया हो. इस अन्दर के सोते को अलग अलग मज़हबों ने अलग अलग शब्दों में बयान किया है, जैसे—प्रतिभा यानी इशराक़, दिव्य दृष्टि यानी चश्मेबातिनी, योगिकज्ञान यानी इल्मेहुज़ूरी, अन्तरप्रकाश यानी रोशनज़मीरी, मन्त्रदर्शन यानी कश्फ़, वग़ैरा वग़ैरा. जो आदमी शब्दों में फंसा हुआ है वह इसके ख़िलाफ़ तर्क यानी दलील और अनुमान यानी इल्मेहुसूली की तरफ़ जाता है.

एक सूफ़ी कहता है :—

"है अपने सीने में उससे ज़ायद
जो बात वाइज़ किताब में है."

दूसरे सूफ़ियों का कहना है :—

"तू किताबों और रसमों में ख़ुदा को नहीं पा सकता. अपने दिल की किताब को पढ़ क्योंकि इससे बढ़कर कोई किताब नहीं है."

ہوتا ہے دانے کو بھوسے سے الگ کرکے بھوسے کو دور پھینک دیتا ہے ."

مولانا روم نے کہا ہے :—

"اگر تو معرفت یعنی گیان کے راز (رہسیہ) کو جاننا چاہتا ہے تو تجھے چاہئیے کہ لفظوں کو چھوڑ کر معنی کی طرف جا ."

ایک اور جگہ مولانا روم نے کہا ہے :—

"تو اگر قرآن کو اِسی طرح پڑھتا رہےگا اور اِسی طرح مطلب کرتا رہےگا تو تو اِسلام کی ساری رونق کو مٹا ڈالےگا ."

مولانا روم کا ایک اور مشہور شعر ہے :—

"میں نے قرآن میں سے مغز نکال لیا ہے اور ہڈیاں کتوں کے سامنے پھینک دی ہیں ."

مہابھارت میں لکھا ہے :—

"ویدوں کو دنیا کے اتہاس اور پرانوں یعنی اب تک کے پرمپراگت گیان کی روشنی میں پڑھنا چاہئیے . کم سمجھ آدمی سے وید بھی یہ سوچ کر ڈرتا ہے کہ یہ آدمی میرے اصلی مطلب کو خبط کردےگا ."

"ویاکرن یعنی (گرامر) جاننے والوں کو چاہئیے کہ سمجھدار بڑے لوگوں کی باتوں کا بہت باریکی کے ساتھ ارتھ نہ کریں . جو لوگ سمجھدار ہیں وہ شبدوں پر اِتنا دھیان نہیں دیتے جتنا اُن کے اندر چھپے ہوئے وچار اور ارتھ پر ."

ہمیں یہ بھی بار بار بتایا گیا ہے کہ سب سچے گیان کا اصلی سوتا ہمارے اپنے اندر ہے . دھرم کی کتابوں کو وہی ٹھیک ٹھیک سمجھ سکتا ہے جسے اپنے اندر کا وہ سوتا مل گیا ہو . اِس اندر کے سوتے کو الگ الگ مذہبوں نے الگ الگ شبدوں میں بیان کیا ہے' جیسے—پرتبھا یعنی اشراق' دویہ درشٹی یعنی چشم باطنی' یوگک گیان یعنی علم حضوری' انتر پرکاش یعنی روشن ضمیری' منتردرشن یعنی کشف' وغیرہ وغیرہ . جو آدمی شبدوں میں پھنسا ہوا ہے وہ اس کے خلاف ترک یعنی دلیل اور انومان یعنی علم حصولی کی طرف جاتا ہے .

ایک صوفی کہتا ہے :—

"ہے اپنے سینے میں اُس سے زائد
جو بات واعظ کتاب میں ہے."

دوسرے صوفیوں کا کہنا ہے :—

"تو کتابوں اور رسموں میں خدا کو نہیں پاسکتا . اپنے دل کی کتاب کو پڑھ کیونکہ اِس سے بڑھکر کوئی کتاب نہیں ہے ."

किताबों के शब्दों में न उलझो, असल मतलब की तरफ़ जाओ

डाक्टर भगवानदास

हर मजहब में कम-समझ और स्वार्थी आदमी हमेशा ऊपरी रीत रिवाजों और तरह तरह की रसमों पर ही जोर देते रहते हैं और इन्हें बढ़ाते रहते हैं. यह लोग अपनी मज़हबी किताबों का भी इसी तरह मतलब लगाते हैं और उनके अजीब अजीब मानी करते हैं. दुनिया के सब महा-पुरुषों और मज़हबी रहनुमाओं ने इस तरह के ग़लत मानी करने वालों और ग़लत मतलब निकालने वालो से लोगों को आगाह किया है और कहा है कि हमें किसी भी किताब के केवल शब्दों की तरफ़ नहीं उसकी रूह की तरफ़ जाना चाहिये. क़ुरआन में लिखा है :—

"इस किताब में कुछ आयतें ऐसी हैं जो 'मोहकमात' यानी बुनियादी और साफ़ साफ़ हुकुम हैं. वही इस किताब की जड़ हैं. बाक़ी आयतें 'मुतशाबेहात' यानी बतौर तशबीह या मिसाल के कही गई हैं. लेकिन जिन लोगों के दिलो मे कजी है वह उसी हिस्से पर चलते हैं जो तशबीह के तौर पर कहा गया है, उससे फ़ितने यानी झगड़े खड़े करते हैं और तरह तरह से उसकी तावील करते हैं, यानी उसके छिपे हुए मानी निकालते हैं. लेकिन उसके छिपे हुए मानी सिवा अल्लाह के और कोई नहीं जानता." (3-7)

गीता में लिखा है :—

"जो लोग वेदों के रीत रिवाजों और रसमो मे ही लगे रहते हैं, उसी की बात करते हैं और कहते हैं कि यही सब कुछ है और इसके सिवा कुछ है ही नहीं वह सचमुच कुछ नहीं जानते."

उपनिषद् में लिखा है :—

"समझदार आदमी को चाहिये कि उस एक सच्चाई की खोज करे जिससे असली ज्ञान मिलता है, और बहुत से शब्दों के जन्जाल में न पड़े क्योंकि यह शब्दों का जन्जाल केवल अपनी ज़बान को थकाना है."

एक और जगह उपनिशद में लिखा है :—

"जो आदमी सच्चे ज्ञान विज्ञान की खोज में हो उसको चाहिये कि समझ के साथ शास्त्रों को पढ़े. लेकिन एक बार शास्त्रों को पढ़कर और उनके असली मतलब को समझकर उनके गुथे हुए शब्दों को इस तरह एक एक कर दूर फेंक दे जिस तरह वह आदमी जो नाज के दाने की तलाश में

کتابوں کے شبدوں میں نہ اُلجھو، اصل مطلب کی طرف جاؤ

ڈاکٹر بھگوان داس

ہر مذہب میں کم سمجھ اور سوارتھی آدمی ہمیشہ اوپری ریت رواجوں اور طرح طرح کی رسموں پر ہی زور دیتے رہتے ہیں اور انہیں بڑھاتے رہتے ہیں۔ یہ لوگ اپنی مذہبی کتابوں کا بھی اسی طرح مطلب لگاتے ہیں اور اُن کے عجیب عجیب معنی کرتے ہیں۔ دنیا کے سب مہاپرشوں اور مذہبی رہنماؤں نے اِس طرح کے غلط معنی کرنے والوں اور غلط مطلب نکالنے والوں سے لوگوں کو آگاہ کیا ہے اور کہا ہے کہ ہمیں کسی بھی کتاب کے کیول شبدوں کی طرف نہیں اُس کی روح کی طرف جانا چاہئے۔ قرآن میں لکھا ہے :—

"اِس کتاب میں کچھ آیتیں ایسی ہیں جو 'محکمات' یعنی بنیادی اور صاف صاف حکم ہیں۔ وہی اِس کتاب کی جڑ ہیں۔ باقی آیتیں 'متشابہات' یعنی بطور تشبیہ یا مثال کے کہی گئی ہیں۔ لیکن جن لوگوں کے دلوں میں کجی ہے وہ اُسی حصے پر چلتے ہیں جو تشبیہ کے طور پر کہا گیا ہے، اُس سے فتنے یعنی جھگڑے کھڑے کرتے ہیں اور طرح طرح سے اُس کی تاویل کرتے ہیں، یعنی اُس کے چھپے ہوئے معنی نکالتے ہیں۔ لیکن اُس کے چھپے ہوئے معنی سوا اللہ کے اور کوئی نہیں جانتا۔" (3-7)

گیتا میں لکھا ہے :—

"جو لوگ ویدوں کے ریت رواجوں اور رسموں میں ہی لگے رہتے ہیں، اُسی کی بات کرتے ہیں اور کہتے ہیں کہ یہی سب کچھ ہے اور اس کے سوا کچھ ہے ہی نہیں وہ سچ مچ کچھ نہیں جانتے۔"

اُپنشد میں لکھا ہے :—

"سمجھدار آدمی کو چاہئے کہ اُس ایک سچائی کی کھوج کرے جس سے اصلی گیان ملتا ہے، اور بہت سے شبدوں کے جنجال میں نہ پڑے کیونکہ یہ شبدوں کا جنجال کیول اپنی زبان کو تھکانا ہے۔"

ایک اور جگہ اُپنشد میں لکھا ہے :—

"جو آدمی سچے گیان وگیان کی کھوج میں ہو اُس کو چاہئے کہ سمجھ کے ساتھ شاستروں کو پڑھے۔ لیکن ایک بار شاستروں کو پڑھکر اور اُن کے اصلی مطلب کو سمجھ کر اُن کے گتھے ہوئے شبدوں کو اِس طرح ایک ایک کر دور پھینک دے جس طرح وہ آدمی جو اناج کے دانے کی تلاش میں

अप्रैल 1955 اپریل

क्या किस से

کیا کس سے

नया हिन्द نیا ہند

जिल्द 19 جلد   नम्बर 4 نمبر

अप्रैल 1955 اپریل

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

145، مٹھی گنج، الہ آباد

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-
Foreign Rs. 10/-
Single Copy As. /10/- only

Can be had from

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.

नया हिन्द
نیا ہند

इस नम्बर के ख़ास लेख	اِس نمبر کے خاص لیکھ
किताबों के शब्दों मे ..	کتابوں کے شبدوں میں
—डाक्टर भगवान दास	—ڈاکٹر بھگوان داس
मुग़लों की इमारत बनाने की कला	مغلوں کی عمارت بنانے کی کلا
—डाक्टर नन्दलाल चैटर्जी	—ڈاکٹر نند لال چیٹر جی
जावा : प्राचीन भारत का उपनिवेश	جاوا : پراچین بھارت کا اُپنویش
—डाक्टर राधाकुमुद मुकर्जी	—ڈاکٹر رادھا کمد مکر جی
अरबी गान-विद्या और हिन्दुस्तान	عربی گان ودیا اور ہندستان
—विश्वम्भरनाथ पांडे	—وشومبھر ناتھ پانڈے
राजा राम मोहन राय से गांधी जी	راجا رام موہن رائے سے گاندھی جی
—श्री मगन भाई देसाई	—شری مگن بھائی دیسائی

इसके अलावा — اِسکے علاوہ

कहानी, स्केच, समालोचना, हमारी राय आदि

کہانی، اسکیچ، سمالوچنا، ہماری رائے آدی

...नी कल्चर सोसाइटी, इलाहाबाद

[illegible] 1955 اپریل

हिन्दी घर

कलचर पर हर तरह की किताबें मिलने का एक बड़ा केन्द्र—पाठक हिन्दी, उर्दू, अंग्रेज़ी की अपनी मन-पसन्द किताबों के लिये हमें लिखें।

हमारी नई किताबें

महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी और उर्दू में)
लेखक—गान्धीवाद के माने जाने
विद्वान : श्री मंज़र अली, सोख्ता
सफ़े 225, क़ीमत दो रुपया

—:o:—

गान्धी बाबा

(बच्चों के लिये बहुत दिलचस्प किताब)
लेखिका—क़ुदसिया ज़ैदी
भूमिका—पन्डित जवाहरलाल नेहरू
मोटा काग़ज़, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें
दाम दो रुपया

—:o:—

पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किताबें

गीता और क़ुरान

275 सफ़े, दाम ढाई रुपया

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सफ़े, दाम बारह आने

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक़

क़ीमत बारह आने

पंजाब हमें क्या सिखाता है

क़ीमत चार आने

बंगाल और उससे सबक़

क़ीमत दो आने

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुट्ठीगंज इलाहाबाद

ھندی گھر

کلچر پر ھر طرح کی کتابیں ملنے کا ایک بڑا کیندر—پاٹھک ھندی، اُردو، انگریزی کی من پسند کتابوں کے لئے ھمیں لکھیں۔

ھماری نئی کتابیں

مہاتما گاندھی کی وصیت

(ھندی اور اُردو میں)
لیکھک—گاندھی واد کے مانے جانے
ودوان: شری منظر علی سوختہ
صفحے 225 قیمت دو روپیہ

—:o:—

گاندھی بابا

(بچوں کے لئے بہت دلچسپ کتاب)
لیکھکا—قدسیہ زیدی
بھومکا—پنڈت جواہر لال نہرو
موٹا کاغذ، موٹا ٹائپ، بہت سی رنگین تصویریں
دام دو روپیہ

—:o:—

پنڈت سندرلال جی کی لکھی کتابیں

گیتا اور قران

275 صفحے، دام ڈھائی روپیہ

ھندو مسلم ایکتا

100 صفحے دام بارہ آنے

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

قیمت بارہ آنے

پنجاب ھمیں کیا سکھاتا ھے

قیمت چار آنے

بنگال اور اُس سے سبق

قیمت دو آنے۔

ھندستانی کلچر سوسائٹی

145 مٹھی گنج الہ آباد

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

रेलवे बजट के आंकड़ों और दूसरी बातों में हम नहीं जायेंगे. इतना साफ़ है कि अगर रेलवे की आमदनी जिस रफ़्तार से बढ़ रही है, ख़र्च उससे कहीं ज़्यादा रफ़्तार से बढ़ रहा है. यानी रेलवे का बजट बनाने वाले उसके इन्तज़ाम पर पूरी तरह हावी नहीं हैं और चीज़ उनके क़ाबू के बाहर खिसक रही है. 1952-53 में रेलवे की आमदनी और ख़र्च में जहां 5.5 का अनुपात था, 1953-54 में वह घटकर 4.2 रह गया. यह एक ख़तरनाक पहलू है जिसपर सरकार को ध्यान देना चाहिये.

जैसा हमने शुरू में ही कहा हम नहीं जानते कि "सोशलिस्टिक पैटर्न" का पूरा मतलब क्या है. लेकिन ऊपर जो कहा है उससे यह ज़रूर साफ़ है कि श्री लालबहादुर शास्त्री जैसे कोमल-दिल और तरक़्क़ी-पसन्द मिनिस्टर के बजट से दुखिया और भुखिया को नुक़सान होगा और फ़ायदा होगा सुखिया का. और सुखिया को जो फ़ायदा होगा सो हवा में से नहीं दुखिया और भुखिया के पेट काट काट कर. क्या हमारी सरकार समाजवादी ढांचे ऐसे ही आधार पर—ग़रीबों को नोच-नोच कर और अमीरों को सहला-सहला कर—खड़ा करने जा रही है?

7. 3. '55 —सुरेश रामभाई

ریلوے بجٹ کے آنکڑوں اور دوسری باتوں میں ہم نہیں جائینگے. اتنا صاف ہے کہ اگر ریلوے کی آمدنی جس رفتار سے بڑھ رہی ہے، خرچ اس سے کہیں زیادہ رفتار سے بڑھ رہا ہے. یعنی ریلوے کا بجٹ بنانے والے اس کے انتظام پر پوری طرح حاوی نہیں ہیں اور چیز ان کے قابو کے باہر کھسک رہی ہے. 1952-53 میں ریلوے کے آمدنی اور خرچ میں جہاں 5.5 کا انوپات تھا، 1953-54 میں وہ گھٹکر 4.2 رہ گیا. یہ ایک خطرناک پہلو ہے جس پر سرکار کو دھیان دینا چاہئے.

جیسا ہم نے شروع میں ہی کہا ہم نہیں جانتے کہ "سوشلسٹک پیٹرن" کا پورا مطلب کیا ہے. لیکن اوپر جو کہا ہے اس سے یہ ضرور صاف ہے کہ شری لال بہادر شاستری جیسے کومل دل اور ترقی پسند منسٹر کے بجٹ سے دکھیا اور بھکھیا کو نقصان ہوگا اور فائدہ ہوگا سکھیا کا. اور سکھیا کو جو فائدہ ہوگا سو ہوا میں سے نہیں دکھیا اور بھکھیا کے پیٹ کاٹ کاٹ کر. کیا ہماری سرکار سماجوادی ڈھانچے ایسے ہی آدھار پر—غریبوں کو نوچ نوچ کر اور امیروں کو سہلا سہلا کر—کھڑا کرنے جا رہی ہے؟

—سریش رام بھائی 7.3.'55

ठेट पूंजीवादी मनोवृत्ति है. इससे जबरदस्त चोट पहुंचेगी छोटे छोटे उद्योग धन्धों पर छोटे कारीगरों या कारखानों या व्यापारियों पर.

सवारी गाड़ी के किराये पर हम फिर आयें. ऐसा बहुत कम होता है कि लम्बे मुसाफ़िर को पूरा टिकट शुरू में ही मिल जाये. हां, अगर कलकत्ता, बम्बई, मद्रास या दिल्ली जाना हो या इन शहरों से जाना हो तब तो बात दूसरी है. लेकिन हमें यक़ीन है कि बिहार के चेम्पारन ज़िले के चकिया स्टेशन से कोई आदमी ट्रावनकोर के क्वीलन ज़िले में पोनेलूर का टिकट मांगे तो बाबू इन्कार कर देगा. मुज़फ़्फ़र का ही टिकट देगा या बहुत हुआ तो मद्रास का. इसके माने हैं कि मुसाफ़िर को दूसरा टिकट फिर आगे ख़रीदना होगा और लम्बे फ़ासले की जो रियायत है उससे वह महरूम रह जायेगा.

इस सिलसिले में हम एक आपबीती सुनाते हैं. इसी फ़र्वरी के चौथे हफ़्ते में हमें इलाहाबाद से जाना था जाजपुर रोड जो उड़ीसा के कटक ज़िले में है. बाबू ने कहा कि खड़गपुर तक का टिकट मिलेगा. हमने कहा कि हमारे पास ईस्टर्न रेलवे टाइमटेबिल है, आप उससे फ़ासला देखकर जाजपुर रोड तक का टिकट बना दीजिये. इस पर उन्होंने कहा कि रेलवे टाइमटेबिल के मीलों में हमें यक़ीन नहीं. हम यह सुनकर दंग रह गये. पर हमने इसरार जारी रक्खा. बाबू ने एक न सुनी. झक मारकर हमको खड़गपुर तक का टिकट लेना पड़ा वरना गाड़ी भी नहीं मिलने वाली थी. जब यह हालत हमको भुगतनी पड़ी तो मामूली लम्बे मुसाफ़िर की क्या दुर्गत होगी, हम अच्छी तरह समझ सकते हैं.

रेलवे मिनिस्टर ने यह भी कहा बताया जाता है कि किराये पर महसूल में जो यह फ़र्क़ उन्होंने किया तो विशिष्ठ डेलीगेशन के सुझाव पर जो रूस आदि गया था. कहां रूस और अमरीका और कहां हम! इन दोनों मुल्कों में ही ज़मीन ज़्यादा है और आबादी कम. हिन्दुस्तान में ठीक उल्टी सूरत है—ज़मीन कम और आबादी ज़्यादा. लेकिन हमारे विशेषज्ञ लोग इस बुनियादी बात को ही भूल जाते हैं और रूस या अमरीका का तर्ज़ या वहां का अर्थशास्त्र हम पर लादना चाहते हैं. बजाये इसके कि पश्चिम की नक़ल करें, रेलवे मिनिस्टर सीधा-साधा रास्ता इख़्तियार कर सकते हैं कि मील मील का किराया एक. हम जानते हैं कि वह रेलवे मिनिस्टर बड़ा दूरदर्शी और हिम्मतवाला होगा जो यह कह सके कि अब तीसरे दर्जे के किराये में कमी कर दी गई है और किराये की दर एकसी रहेगी. हमारा ख़्याल है कि उससे आमदरफ़्त भी बढ़ेगी और आमदनी भी बढ़ेगी. लेकिन हमारे रेलवे मिनिस्टर ने यह कुछ न करके वही पुराना दक़ियानूसी, पूंजीवादी तरीक़ा अपनाया कि दुखिया और सुखिया पर ही चोट करो.

ٹھیٹھ پونجی‌وادی منوورتی ہے ۔ اِس سے زبردست چوٹ پہونچیگی چھوٹے چھوٹے اُدیوگ دھندھوں پر اور چھوٹے کاریگروں یا کارخانوں یا ویاپاریوں پر ۔

سواری گاڑی کے کرائے پر ہم پھر آئیں ۔ ایسا بہت کم ہوتا ہے کہ لمبے مسافر کو پورا ٹکٹ شروع میں ہی مل جائے ۔ ہاں، اگر کلکتہ، بمبئی، مدراس یا دلی جانا ہو یا اِن شہروں سے جانا ہو تب تو بات دوسری ہے ۔ لیکن ہمیں یقین ہے کہ بہار کے چمپارن ضلعے کے چکیہ اسٹیشن سے کوئی آدمی ٹراونکور کے کولن ضلعے میں پونےلور کا ٹکٹ مانگے تو بابو اِنکار کر دیگا. مظفر کا ہی ٹکٹ دیگا یا بہت ہوا تو مدراس کا ۔ اِس کے معنی ہیں کہ مسافر کو دوسرا ٹکٹ پھر آگے خریدنا ہوگا اور لمبے فاصلے کی جو رعایت ہے اُس سے وہ محروم رہ جائیگا ۔

اِس سلسلے میں ہم ایک آپ بیتی سناتے ہیں ۔ اِسی فروری کے چوتھے ہفتے میں ہمیں الہ‌آباد سے جانا تھا جاجپور روڈ جو اُڑیسہ کے کٹک ضلع میں ہے ۔ بابو نے کہا کہ کھڑگپور تک کا ٹکٹ ملیگا ۔ ہم نے کہا کہ ہمارے پاس ایسٹرن ریلوے ٹائم ٹیبل ہے، آپ اُس سے فاصلہ دیکھکر جاجپور روڈ تک کا ٹکٹ بنا دیجئے ۔ اِس پر اُنھوں نے کہا کہ ریلوے ٹائم ٹیبل کے میلوں میں ہمیں یقین نہیں ۔ ہم یہ سن کر دنگ رہ گئے ۔ پر ہم نے اِسرار جاری رکھا. بابو نے ایک نہ سنی ۔ جھک مارکر ہمکو کھڑگپور تک کا ٹکٹ لینا پڑا ورنہ گاڑی بھی نہیں ملنے والی تھی. جب یہ حالت ہم کو بھگتنی پڑی تو معمولی لمبے مسافر کی کیا درگت ہوگی، ہم اچھی طرح سمجھ سکتے ہیں ۔

ریلوے منسٹر نے یہ بھی کہا بتایا جاتا ہے کہ کرائے پر محصول میں جو یہ فرق اُنھوں نے کیا تو وششٹھ ڈیلیگیشن کے سجھاؤ پر جو روس آدی گیا تھا. کہاں روس اور امریکہ اور کہاں ہم! اِن دونوں ملکوں میں ہی زمین زیادہ ہے اور آبادی کم ۔ ہندستان میں ٹھیک اُلٹی صورت ہے—زمین کم اور آبادی زیادہ ۔ لیکن ہمارے وشیشگیہ لوگ اِس بنیادی بات کو ہی بھول جاتے ہیں اور روس یا امریکہ کا طرز یا وہاں کا اَرتھ‌شاستر ہم پر لادنا چاہتے ہیں ۔ بجائے اِس کے کہ پچھم کی نقل کریں، ریلوے منسٹر سیدھا سادا راستہ اختیار کرسکتے ہیں کہ میل میل کا کرایہ ایک ۔ ہم جانتے ہیں کہ وہ ریلوے منسٹر بڑا دوردرشی اور ہمت والا ہوگا جو یہ کہ سکے کہ اب تیسرے درجے کے کرائے میں کمی کردی گئی ہے اور کرائے کی در ایکسی رہیگی ۔ ہمارا خیال ہے کہ اُس سے آمدرفت بھی بڑھیگی اور آمدنی بھی بڑھیگی ۔ لیکن ہمارے ریلوے منسٹر نے یہ کچھ نہ کرکے وہی پرانا، دقیانوسی، پونجی وادی طریقہ اپنایا کہ دکھیا اور سکھیا پر ہی چوٹ کرو ۔

तीसरे दर्जे वाले मुसाफ़िर लाखों ऐसे हैं जो 'स्वागत' या 'विदाई' के बिलास में नहीं पड़ते. हमारे कहने का मतलब यह है कि अपने नये सुझाव सोचते वक़्त रेलवे मिनिस्टर ने भुखिया और दुखिया का ध्यान नहीं रखकर सुखिया का ज़्यादा ध्यान रखा.

जब हम मालगाड़ी के नये किरायों को देखते हैं तब तो हमारा यह ख़्याल एकदम पक्का हो जाता है. कौन नहीं जानता कि मामूली काश्तकार या कारीगर या छोटे व्यापारी को अपना माल नज़दीक ही भेजना रहता है—तीन सौ मील से कम. सो अब उसे ज़्यादा किराया चुकाना पड़ेगा. मिसाल के तौर पर फ़ैज़ाबाद में जुलाहे लोग कपड़ा बुनते हैं. वह कपड़ा आस पास बिका करता है—इलाहाबाद, कानपुर, लखनऊ, बनारस, वग़ैरा. यह सब जगहें फ़ैज़ाबाद से तीन सौ मील से कम पर हैं. लिहाज़ा महसूल ज़्यादा लगेगा और बुनकर का माल मंहगा हो जायेगा. मिल के मुक़ाबले में आज वह वैसे ही नहीं टिक पाता है कल और नहीं ठहर सकेगा. यही नहीं, रेलवे मिनिस्टर ने एक कमाल यह किया है कि बीस मन से कम के बोझ पर सरचार्ज दो आना रुपया बढ़ा दिया! और कम से कम महसूल एक रुपये की बजाये डेढ़ रुपया कर दिया!! ज़ाहिर है कि मिलें या बड़े व्यापारी जब अपना माल भेजते हैं तो टनों में होता है, लेकिन छोटे लोगों का तो मन, पांच मन, दस मन, हद बीस मन. पर इनके ऊपर ही सरचार्ज लगा दिया गया. अगर कुल माल पर—चाहे वह बीस मन का हो या बीस टन का—सरचार्ज लगता तब तो समझ में कुछ आता कि भाई! रेलवे आमदनी बढ़ाने की ग़रज़ से ऐसा कर रही है. लेकिन बीस मन से कम पर सरचार्ज लगाना एकदम ज़्यादती है, नाइन्साफ़ी है.

इस तरह हम देखते हैं कि अगर नज़दीक—300 मील के अन्दर—कहीं जाना हो तो सवारी गाड़ी का किराया ज़्यादा हो गया, मालगाड़ी का महसूल भी ज़्यादा हो गया. इसे हम सरकार का पक्षपात के अलावा क्या समझ सकते हैं? इसका मतलब यही होता है कि चुनार के आदमी को अपने बरतन मिर्ज़ापुर—अपने ज़िले में ही—भेजना है तो ज़्यादा ख़र्च करना पड़ेगा, लेकिन अहमदाबाद की मिल वालों को अपना कपड़ा चुनार भेजना हो तो कम ख़र्च पड़ेगा. रईस के साथ तरफ़दारी और ग़रीब के साथ यह बैर क्यों? फिर, यह तो स्वदेशी धर्म की भावना के भी ख़िलाफ़ है कि मैं पड़ोसी की ख़िदमत करना चाहूं तो घाटा उठाना पड़े और दूर—बहुत दूर—रहने वाले की ख़िदमत करूं तो नफ़ा रहे! दूसरा लाज़मी नतीजा यह होगा कि जो चीज़ जहां पैदा होती है उसके आस पास में वह महंगी होगी, दूर सस्ती होगी. यह

تیسرے درجے والے مسافر لاکھوں ایسے ہیں جو 'سواگت' یا 'ودائی' کے ولاس میں نہیں پڑتے۔ ہمارے کہنے کا مطلب یہ ہے کہ اپنے نئے سجھاؤ سوچتے وقت ریلوے منسٹر نے بھوکھیا اور دکھیا کا دھیان نہیں رکھ کر سکھیا کا زیادہ دھیان رکھا۔

جب ہم مال گاڑی کے نئے کرایوں کو دیکھتے ہیں تب تو ہمارا یہ خیال ایک دم پکا ہو جاتا ہے۔ کون نہیں جانتا کہ معمولی کاشتکار یا کاریگر یا چھوٹے بیوپاری کو اپنا مال نزدیک ہی بھیجنا رہتا ہے—تین سو میل سے کم۔ سو اب اُسے زیادہ کرایہ چکانا پڑیگا۔ مثال کے طور پر فیض آباد میں جلاہے لوگ کپڑا بنتے ہیں۔ وہ کپڑا آس پاس بکا کرتا ہے—الہ آباد، کانپور، لکھنؤ، بنارس، وغیرہ۔ یہ سب جگہیں فیض آباد سے تین سو میل سے کم پر ہیں۔ لہذا محصول زیادہ لگیگا اور بنکر کا مال مہنگا ہو جائیگا۔ مل کے مقابلے میں آج وہ ویسے ہی نہیں ٹک پاتا ہے کل اور نہیں ٹھہر سکیگا۔ یہی نہیں، ریلوے منسٹر نے ایک کمال یہ کیا ہے کہ بیس من سے کم کے بوجھ پر سرچارج دو آنہ روپیہ بڑھا دیا! اور کم سے کم محصول ایک روپئے کی بجائے ڈیڑھ روپیہ کر دیا!! ظاہر ہے کہ ملیں یا بڑے بیوپاری جب اپنا مال بھیجتے ہیں تو ٹنوں میں ہوتا ہے، لیکن چھوٹے لوگوں کا تو من، پانچ من، دس من، حد بیس من! پر اِن کے اُوپر ہی سرچارج لگا دیا گیا۔ اگر کل مال پر—چاہے وہ بیس من کا ہو یا بیس ٹن کا—سرچارج لگتا تب تو سمجھ میں کچھ آتا کہ بھائی! ریلوے آمدنی بڑھانے کی غرض سے ایسا کر رہی ہے۔ لیکن بیس من سے کم پر سرچارج لگانا ایک دم زیادتی ہے، ناانصافی ہے۔

اِس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ اگر نزدیک—300 میل کے اندر—کہیں جانا ہو تو سواری گاڑی کا کرایہ زیادہ ہو گیا، مال گاڑی کا محصول بھی زیادہ ہو گیا۔ اِسے ہم سرکار کا پکشپات کے علاوہ کیا سمجھ سکتے ہیں؟ اِس کا مطلب یہی ہوتا ہے کہ چنار کے آدمی کو اپنے برتن مرزاپور—اپنے ضلعے میں ہی—بھیجنا ہے تو زیادہ خرچ کرنا پڑیگا، لیکن احمد آباد کی مل والوں کو اپنا کپڑا چنار بھیجنا ہو تو کم خرچ پڑیگا۔ رئیس کے ساتھ طرفداری اور غریب کے ساتھ یہ بیر کیوں؟ پھر، یہ تو سودیشی دھرم کی بھاونا کے بھی خلاف ہے کہ میں پڑوسی کی خدمت کرنا چاہوں تو گھاٹا اٹھانا پڑے اور دور—بہت دور—رہنے والے کی خدمت کروں تو نفع رہے! دوسرا لازمی نتیجہ یہ ہوگا کہ جو چیز یہاں پیدا ہوتی ہے اُس کے آس پاس میں وہ مہنگی ہوگی، دور سستی ہوگی! یہ

है. इस लम्बाई के आगे फिर ठीक दीखता है. रेलवे मिनिस्टर का यह फ़ोकस डेढ़ मील लम्बा है. इसलिये डेढ़ सौ मील से कम सफ़र करने वाले को ज़्यादा किराया देना पड़ेगा. 150 से 300 मील तक जो जायेगा उससे कोई बेशी किराया नहीं लिया जायगा लेकिन डेढ़ सौ मील का किराया तो ज़्यादा देना ही होगा. मगर 300 मील से ऊपर जो सफ़र करेंगे उन्हें मामूली सवारी गाड़ी पर किराये में आधे पाई फ़ी मील की और डाक गाड़ी पर एक पाई फ़ी मील की छूट दी जायेगी. लेकिन चूंकि डेढ़ सौ मील का बेशी दाम देना ही होगा, इसलिये किराये में कमी 340 मील (डाक या एक्सप्रेस गाड़ी) या 310 मील (मामूली गाड़ी) से मिल सकेगी.

रेलवे के काग़ज़ ख़ुद बताते हैं कि रेलवे के मुसाफ़िरों का औसत सफ़र तीस मील का होता है. आज 30 मील के पंद्रह-सोला आने देना पड़ते हैं. लेकिन पहली अप्रैल से आठ पाई यानी तीन पैसे और देना पड़ेगा. दूसरे लफ़्ज़ों में तीन पैसे रुपये के सेल-टैक्स की बजाय रेल-टैक्स लग गया! और इस बेशी किराये का असर लगभग नब्बे प्रतिशत मुसाफ़िरों पर पड़ेगा. इस तरह रेलवे मिनिस्टर ने भुखिया और दुखिया को सहूलियत देने के बजाय उल्टे नई चोट की.

अब ज़रा सुखिया को लें. यह बड़े लोग या तो हवा-फांस डब्बे में चला करते हैं या पहले दूसरे दर्जों में. बताया गया है कि हवा-फांस डब्बे वालों को अब 300 मील तक के सफ़र के लिये चार पाई फ़ी मील और 300 मील के ऊपर दो पाई फ़ी मील बेशी देना पड़ेगा. लेकिन सोने वाली सीट के जो पांच रुपये लिये जाते थे वह छोड़ दिये गये. यानी 300 मील के सफ़र के लिये 1200 पाई बेशी न लेकर महज़ 240 पाई ज़्यादा ली जायेगी—यानी एक पाई फ़ी मील भी बढ़ोत्तरी सुखिया पर नहीं की गई. फिर, यह कौन नहीं जानता कि हवा-फांस और पहले दर्जे के डिब्बों में सफ़र करने वाले ज़्यादातर लोग ऐसे होते हैं जिनको सफ़र का ख़र्चा या तो सरकार से मिलता है, या किसी कम्पनी से या किसी सार्वजनिक संस्था से. हमें शुब्हा है कि पांच फ़ी सदी से भी ज़्यादा लोग इन ऊंचे वाले दर्जों में अपने निजी ख़र्चे से चलते हैं. हमें यह यक़ीन है कि अगर रेलवे इन हवा-फांस और पहले दर्जे का किराया दुगना कर दे, तब भी वह लोग इनमें चलेंगे ही. अगर रेलवे मिनिस्टर ऐसा करने की हिम्मत करें तो सहज उनकी आमदनी बहुत काफ़ी बढ़ सकती है. हां, हो सकता है कि हवा-बांध डब्बे में न चलकर कुछ लोग हवाई जहाज़ से चलने लगें. लेकिन उसके दाम में भी तो फ़र्क़ की काफ़ी गुंजाइश है.

प्लैटफ़ार्म टिकट का दाम दो आने से घटकर एक आना हुआ करेगा. कहने की ज़रूरत नहीं कि प्लैटफ़ार्म टिकट एक शग़ल है सुखिया लोगों का या कुछ लोगों का फ़ैशन है.

ھے . اُس لمبائی کے آگے پھر ٹھیک دیکھتا ھے . ریلوے منسٹر کا یہ فوکس ڈیڑھ میل لمبا ھے . اِس لئے ڈیڑھ سو میل سے کم سفر کرنے والے کو زیادہ کرایہ دینا پڑیگا . 150 سے 300 میل تک جو جائیگا اُس سے کوئی بیشی کرایہ نہیں لیا جائیگا لیکن ڈیڑھ سو میل کا کرایہ تو زیادہ دینا ھی ھوگا . مگر 300 میل سے اُوپر جو سفر کرینگے اُنھیں معمولی سواری گاڑی پر کرائے میں آدھی پائی فی میل کی اور ڈاک گاڑی پر ایک پائی فی میل کی چھوٹ دی جائیگی . لیکن چونکہ ڈیڑھ سو میل کا بیشی دام دینا ھی ھوگا' اِس لئے کرائے میں کمی 340 میل (ڈاک یا ایکسپریس گاڑی) یا 310 میل (معمولی گاڑی) سے مل سکیگی .

ریلوے کے کاغذ خود بتاتے ھیں کہ ریلوے کے مسافروں کا اوسط سفر تیس میل کا ھوتا ھے . آج 30 میل کے پندرہ سولہ آنے دینا پڑتے ھیں . لیکن پہلی اپریل سے آٹھ پائی یعنی تین پیسے اور دینا پڑیگا . دوسرے لفظوں میں تین پیسے روپئے کے سیل ٹیکس کی بجائے ریل ٹیکس لگ گیا ! اور اِس بیشی کرائے کا اثر لگ بھگ نوے پرتی شت مسافروں پر پڑیگا . اِس طرح ریلوے منسٹر نے بھوکھیا اور دکھیا کو سہولیت دینے کے بجائے اُلٹے نئی چوٹ کی .

اب ذرا سکھیا کو لیں . یہ بڑے لوگ یا تو ھوا پھانس ڈبے میں چلا کرتے ھیں یا پہلے دوسرے درجوں میں . بتایا گیا ھے کہ ھوا پھانس ڈبے والوں کو اب 300 میل تک کے سفر کے لئے چار پائی فی میل اور 300 میل کے اُوپر دو پائی فی میل بیشی دینا پڑیگا . لیکن سونے والی سیٹ کے جو پانچ روپے لئے جاتے تھے وہ چھوڑ دئے گئے . یعنی 300 میل کے سفر کے لئے 1200 پائی بیشی نہ لیکر محض 240 پائی زیادہ لی جائیگی — یعنی ایک پائی فی میل بھی بڑھوتری سکھیا پر نہیں کی گئی . پھر' یہ کون نہیں جانتا کہ ھوا پھانس اور پہلے درجے کے ڈبوں میں سفر کرنے والے زیادہتر لوگ ایسے ھوتے ھیں جن کو سفر کا خرچا یا تو سرکار سے ملتا ھے' یا کسی کمپنی سے یا کسی سارو جنک سنستھا سے . ھمیں شبہ ھے کہ پانچ فیصدی سے بھی زیادہ لوگ اِن اُونچے والے درجوں میں اپنے نجی خرچ سے چلتے ھیں . ھمیں یہ یقین ھے کہ اگر ریلوے اِن ھوا پھانس اور پہلے درجے کا کرایہ دگنا کردے' تب بھی یہ لوگ اِن میں چلیں گے ہی . اگر ریلوے منسٹر ایسا کرنے کی ھمت کریں تو سہج اُن کی آمدنی بہت کافی بڑھ سکتی ھے . ھاں' ھوسکتا ھے کہ ھوا باندھ ڈبے میں نہ چلکر کچھ لوگ ھوائی جہاز سے چلنے لگیں . لیکن اُس کے دام میں بھی تو فرق کی کافی گنجائش ھے .

پلیٹفارم ٹکٹ کا دام دو آنے سے گھٹکر ایک آنہ ھوا کریگا . کہنے کی ضرورت نہیں کہ پلیٹفارم ٹکٹ ایک شغل ھے سکھیا لوگوں کا یا کچھ لوگوں کا فیشن ھے .

रूस के साथ साथ भी ऐटमी हथियारों को ख़त्म करने पर तैयार नहीं है. आज अमरीका की सारी पालिसी का आधार ऐटम बम है. वह ऐटम बम को ही अपनी शक्ति समझता है और समझता है कि ऐटम बम के बल बूते पर वह रूस को झुका लेगा. दुनिया की मासूम जनता का क्या हाल होगा इसकी उसे परवाह नहीं. योरप में यह ख़याल भी ज़ोर पकड़ रहा है कि ऐटमी लड़ाई में रूस का नुक़सान कम होगा लेकिन बरतानिया, फ्रांस, हालैंड और बेलजियम जैसे देशों का तख़्ता उलट जाएगा. इंगलैंड के वैज्ञानिकों का कहना है कि दो नहीं तो ज़्यादा से ज़्यादा छै ऐटम बम इंगलैंड को सदा के लिये ख़त्म कर देंगे. योरप की जनता इसीलिये बहुत बेचैन है. आशा है कि अमरीकी जनता भी ऐटम बम की भयानकता को महसूस करेगी और हर सूरत से अपनी सरकार को मजबूर करेगी कि वह ऐटमी हथियारों को बिलकुल ख़त्म कर दे, दूसरे हथियारो में कमी करे, दुनिया भर मे फैले अपनी फ़ौजी अड्डों को तोड़ दे, और संसार में फैली अपनी फ़ौजों का वापस बुला ले. इसीमें दुनिया का कल्यान है और ख़ुद अमरीका का भी भला है.

1-3-'55 —मुजीब रिज़वी

रेलवे बजट पर एक नज़र

आजकल सरकारी हलक़ों में अंग्रेज़ी के तीन लफ़्ज़ बहुत चले है: development यानी विकास, Welfare State यानी कल्यानकारी राज्य और socialistic pattern यानी समाजवादी ढांचा. अब यह लफ़्ज़ अंग्रेज़ी के हैं इसलिये बारीकी के साथ इनका सोलह आना और सही मतलब वही समझ सकते हैं जिनकी मात्र भाषा अंग्रेज़ी है या बहुत हद तक अंग्रेज़ी है. हम जैसे लोग तो महज़ अन्दाज़ा लगा सकते हैं. लेकिन एक बात हम अच्छी तरह जानते हैं. वह यह कि जैसे मकान जब बनता है तो बुनियाद यानी नीचे से ही बनाता है, उसी तरह 'विकास' हो या कल्यानकारी राज्य' हो या 'समाजवादि ढांचा' हो, उसमें पहली परवाह नीचे के लोगों की यानी ग़रीबों की होनी चाहिये. हमारे यहां कहावत भी है—पहले भुखिया, फिर दुखिया और पाछे सुखिया. इस नज़र से हम ज़रा रेलवे बजट को देखना चाहते हैं जो 19 फ़रवरी को पार्लियामेन्ट में रेलवे मिनिस्टर श्री लालबहादुर शास्त्री ने पेश किया.

अपनी बजट स्पीच में रेलवे मिनिस्टर ने कहा कि आज जो चालू किराया मुसाफ़िर-गाड़ी और माल-गाड़ी का है उसमें दूरबीन के ढंग पर फ़र्क़ किया जायेगा. दूरबीन की ख़ूबी है कि बहुत नज़दीक का उसे नहीं दीखता. एक ख़ास लम्बाई होती है—जिसे फ़ोकस कहते हैं—जब उसे साफ़ दीखता

روس کے ساتھ ساتھ بھی ایٹمی ہتھیاروں کو ختم کرنے پر تیار نہیں ہے. آج امریکہ کی ساری پالیسی کا آدھار ایٹم بم ہے. وہ ایٹم بم کو ہی اپنی شکتی سمجھتا ہے اور سمجھتا ہے کہ ایٹم بم کے بل بوتے پر وہ روس کو جھکا لے گا. دنیا کی معصوم جنتا کا کیا حال ہوگا اِس کی اُسے پرواہ نہیں. یورپ میں یہ خیال بھی زور پکڑ رہا ہے کہ ایٹمی لڑائی میں روس کا نقصان کم ہوگا لیکن برطانیہ، فرانس، ہالینڈ اور بلجیم جیسے دیشوں کا تختہ اُلٹ جائے گا. انگلینڈ کے ویگیانکوں کا کہنا ہے کہ دو نہیں تو زیادہ سے زیادہ چھ ایٹم بم انگلینڈ کو سدا کے لئے ختم کر دینگے. یورپ کی جنتا اِسی لئے بہت بےچین ہے. آشا ہے کہ امریکی جنتا بھی ایٹم بم کی بھیانکتا کو محسوس کرے گی اور ہر صورت سے اپنی سرکار کو مجبور کرے گی کہ وہ ایٹمی ہتھیاروں کو بالکل ختم کر دے، دوسرے ہتھیاروں میں کمی کرے، دنیا بھر میں پھیلے اپنے فوجی اڈوں کو توڑ دے، اور سنسار میں پھیلی اپنی فوجوں کو واپس بلا لے. اِسی میں دنیا کا کلیان ہے اور خود امریکہ کا بھی بھلا ہے.

—مجیب رضوی .1 .3 '55

ریلوے بجٹ پر ایک نظر

آجکل سرکاری حلقوں میں انگریزی کے تین لفظ بہت چلے ہیں: development یعنی وکاس، Welfare State یعنی کلیان کاری راجیہ اور socialistic pattern یعنی سماج وادی ڈھانچہ. اب یہ لفظ انگریزی کے ہیں اِس لئے باریکی کے ساتھ اِنکا سولہ آنا اور صحیح مطلب وہی سمجھ سکتے ہیں جنکی ماتر بھاشا انگریزی ہے یا بہت حد تک انگریزی ہے. ہم جیسے لوگ تو محض اندازہ لگا سکتے ہیں. لیکن ایک بات ہم اچھی طرح جانتے ہیں. وہ یہ کہ جیسے مکان جب بنتا ہے تو بنیاد سے یعنی نیچے سے ہی بنتا ہے، اُسی طرح 'وکاس' ہو یا 'کلیان کاری راجیہ' ہو یا 'سماج وادی ڈھانچہ' ہو، اُس میں پہلی پرواہ نیچے کے لوگوں کی یعنی غریبوں کی ہونی چاہئے. ہمارے یہاں کہاوت بھی ہے—پہلے بھوکھیا، پھر دکھیا اور پاچھے سکھیا. اِس نظر سے ہم ذرا ریلوے بجٹ کو دیکھنا چاہتے ہیں جو 19 فروری کو پارلیامنٹ میں ریلوے منسٹر شری لال بہادر شاستری نے پیش کیا.

اپنی بجٹ اسپیچ میں ریلوے منسٹر نے کہا کہ آج جو چالو کرایہ مسافر گاڑی اور مال گاڑی کا ہے اُس میں دوربین کے ڈھنگ پر فرق کیا جائیگا. دوربین کی خوبی ہے کہ بہت نزدیک کا اُسے نہیں دیکھتا. ایک خاص لمبائی ہوتی ہے—جسے فوکس کہتے ہیں—جب اُسے صاف دیکھتا

इतना मिला जुला है कि उनको अलग अलग करना बहुत मुशकिल है. जो हथियार मारने के काम आते हैं वह ज़्यादातर बचाव के काम भी आ जाते हैं. सवाल उठता है कि ऐटमी हथियार किस तरह के हथियार हैं? बचाव के हो ही नहीं सकते, क्योंकि अगर रूस के जहाज़ वाशिंगटन पर हमला कर दें तो अमरीकी सरकार अपनी रक्षा के लिये उनपर ऐटम बम नहीं बरसाएगी. ऐटमी हथियार सिर्फ़ मारने के काम ही आते हैं, हिफ़ाज़त का काम उनसे नहीं होता. ऐटमी हथियारों को दूसरे हथियारों के बराबर मानना अमरीका की हट धर्मी के सिवा कुछ नहीं है.

लन्दन की बैठक

यू. ऐन. ओ. की पिछली बैठक में रूस ने ऐटमी हथियारों पर रोक लगाने का सुझाव रखा था. लेकिन अमरीका और उसके साथियों ने रूस की बात नहीं सुनी. इंगलैन्ड और फ़्रांस ने अपने अपने सुझाव रखे. उनके सुझाव का सार था कि हम निश्चय कर लें कि ऐटमी हथियारों का इस्तेमाल उस समय तक नहीं करेंगे जब तक हम पर हमला न हो. रूस का कहना था कि बिना किसी शर्त के ऐटमी हथियारों के इस्तेमाल की मुमानिअत कर दी जाए. जब रूस की बात नहीं मानी गई तो उसने फ़्रांस और इंगलैंड की बात को यह कह कर मान लिया कि ऐटमी हथियारों पर रोक लगाने की तरफ़ यह कम से कम एक क़दम है. यू. ऐन. ओ. ने तब एक सब-कमेटी बनादी ताकि वह तमाम सुझावों को नज़र में रखकर एक ऐसा सुझाव यू. ऐन. ओ. के सामने रख सके जिसे सब मान लें. इस कमेटी के मेम्बर अमरीका, रूस, इंगलैंड, फ़्रांस और कनाडा हैं. रूस ने चाहा कि इस कमेटी में हिन्दुस्तान, चैकोसलावेकिया और चीन को भी शामिल कर लिया जाए. लेकिन यह सुझाव नहीं माना गया. इन हथियारों से एशिया ही को ज़्यादा ख़तरा है और एशिया का कोई प्रतिनिधि इस कमेटी में नहीं है.

इस कमेटी की बैठक लन्दन में मई जून में हो चुकी है. 26 फ़रवरी से फिर इस कमेटी की बैठक इंगलैंड की राजधानी में हो रही है. दुनिया की नज़रें लन्दन की तरफ़ लगी हैं. लेकिन अख़बारों की ख़बर पढ़ पढ़ कर ऐसा लगता है कि कोई नतीजा निकलने वाला नहीं है.

श्री राजागोपालाचारी की अमरीका को सलाह

श्री राजागोपालाचारी हमारे देश के जाने माने नेता हैं. वह अमरीका का बुरा चाहते हैं, यह दोष उनपर नहीं लगाया जा सकता. उन्होंने अमरीका को ठीक राय दी है कि एक बार वह आगे बढ़कर एलान कर दे कि उसने अपने ऐटमी हथियार समुन्दर में फेंक दिये हैं. आगे बढ़कर समुन्दर में ऐटमी हथियार डबोने की कौन कहे अमरीका तो

اتنا ملا جلا ہے کہ اُن کو الگ کرنا بہت مشکل ہے. جو ہتھیار مارنے کے کام آتے ہیں وہ زیادہ تر بچاؤ کے کام بھی آجاتے ہیں. سوال اُٹھتا ہے کہ ایٹمی ہتھیار کس طرح کے ہتھیار ہیں؟ بچاؤ کے ہو ہی نہیں سکتے' کیونکہ اگر روس کے جہاز واشنگٹن پر حملہ کر دیں تو امریکی سرکار اپنی رکشا کے لئے اُن پر ایٹم بم نہیں برسائے گی. ایٹمی ہتھیار صرف مارنے کے کام ہی آتے ہیں' حفاظت کا کام اُن سے نہیں ہوتا. ایٹمی ہتھیاروں کو دوسرے ہتھیاروں کے برابر ماننا امریکہ کی ہٹ دھرمی کے سوا کچھ نہیں ہے.

لندن کی بیٹھک

یو. این. او کی پچھلی بیٹھک میں روس نے ایٹمی ہتھیاروں پر روک لگانے کا سجھاؤ رکھا تھا. لیکن امریکہ اور اُس کے ساتھیوں نے روس کی بات نہیں سنی. اِنگلینڈ اور فرانس نے اپنے اپنے سجھاؤ رکھے. اُن کے سجھاؤ کا سار تھا کہ ہم نشچے کر لیں کہ ایٹمی ہتھیاروں کا استعمال اُس سمے تک نہیں کریں گے جب تک ہم پر حملہ نہ ہو. روس کا کہنا تھا کہ بنا کسی شرط کے ایٹمی ہتھیاروں کے استعمال کی ممانعت کر دی جائے. جب روس کی بات نہیں مانی گئی تو اُس نے فرانس اور انگلینڈ کی بات کو یہ کہہ کر مان لیا کہ ایٹمی ہتھیاروں پر روک لگانے کی طرف یہ کم سے کم ایک قدم ہے. یو. این. او نے تب ایک سب-کمیٹی بنا دی تاکہ وہ تمام سجھاؤں کو نظر میں رکھ کر ایک ایسا سجھاؤ یو-نو کے سامنے رکھ سکے جسے سب مان لیں. اِس کمیٹی کے ممبر امریکہ' روس' اِنگلینڈ' فرانس اور کناڈا ہیں. روس نے چاہا کہ اِس کمیٹی میں ہندستان' چیکوسلاویکیا اور چین کو بھی شامل کر لیا جائے. لیکن یہ سجھاؤ نہیں مانا گیا. اِن ہتھیاروں سے ایشیا ہی کو زیادہ خطرہ ہے اور ایشیا کا کوئی پرتیندھی اِس کمیٹی میں نہیں ہے.

اِس کمیٹی کی بیٹھک لندن میں مئی جون میں ہو چکی ہے. 26 فروری سے پھر اِس کمیٹی کی بیٹھک انگلینڈ کی راجدھانی میں ہو رہی ہے. دنیا کی نظریں لندن کی طرف لگی ہیں. لیکن اخباروں کی خبر پڑھ پڑھ کر ایسا لگتا ہے کہ کوئی نتیجہ نکلنے والا نہیں ہے.

شری راجہ گوپالاچاری کی امریکہ کو صلاح

شری راجاگوپالاچاری ہمارے دیش کے جانے مانے نیتا ہیں. وہ امریکہ کا برا چاہتے ہیں' یہ دوش اُن پر نہیں لگایا جا سکتا. اُنہوں نے امریکہ کو ٹھیک رائے دی ہے کہ ایک بار وہ آگے بڑھ کر اعلان کر دے کہ اُس نے اپنے ایٹمی ہتھیار سمندر میں پھینک دیئے ہیں. آگے بڑھ کر سمندر میں ایٹمی ہتھیار ڈبونے کی کون کہے امریکہ تو

उसमें अमरीकी सरकार की पालिसी को हर तरह मदद देगा और उसके लिये काम करेगा.

दूर पूरब और अमरीका

26 फ़रवरी को डलेस साहब ने स्याम की राजधानी बंगकाक में कहा है कि :—

"दूर पूरब में अमरीका के चार सौ समुन्दरी बेड़े हैं, तीन लाख समुन्दरी फ़ौज है, तीन लाख थल सेना है और हवाई जहाज़ के तीस स्क्वाडरन हैं."

28 फ़रवरी के अख़बारों मे ख़बर छपी है कि दूर पूरब की अपनी फ़ौजों को अमरीका ने ऐटमी हथियारों से लैस कर दिया है. अब वह ऐटमी हथियारों को तोप बन्दूक़, मामूली गोलों जैसा ही हथियार समझता है.

साथ ही यह ख़बर आई है :—वाशिंगटन में आइज़न हावर से अख़बार वालों ने पूछा कि ऐटमी हथियार के तजरुबे क्या बन्द कर दिये जाएंगे ? उन्होने साफ़ कहा कि "हरगिज़ नहीं." ऐटमी हथियारों और दूसरे हथियारों में हम कोई फ़रक़ नहीं करते. अगर पूरे हथियारों पर रोक लगाई जाएगी तो ऐटमी हथियार पर भी रोक लगेगी, नहीं तो नहीं.

ऐसी सूरत में ऐटमी हथियारों का मसला कैसे हल होगा ? इसके हल न होने की ज़िम्मेदारी किस पर होगी, यह दुनिया के सामने साफ़ है.

क्या ऐटमी हथियार मामूली हथियारों जैसे ही हैं ?

क्या ऐटमी हथियारों और दूसरे हथियारों में सचमुच फ़रक़ नहीं है ? यू. एन. ओ. में अमरीकी नुमाइन्दे लाज साहब का यह तर्क क्या ठीक है कि आदमी चाहे बन्दूक़ की गोली से मरे और चाहे ऐटम बम से, बात एक ही है ? वैज्ञानिकों की बात अगर सही है और जिन ख़तरों की तरफ़ वह जनता का ध्यान दिलाते हैं अगर वह सही हैं तो फिर यह मानना ही पड़ेगा कि ऐटम बम दूसरे हथियारों से बिलकुल अलग है. ऐसे भी ऐटमी हथियार और दूसरे हथियारों का फ़रक़ साफ़ है. दूसरे हथियारों का काम थोड़े से लोगों की जान लेने पर ख़त्म हो जाता है लेकिन ऐटमी हथियार अनगिनत बेगुनाह लोगों की जान भी लेते हैं और अपना असर पीढ़ियों तक के लिये छोड़ जाते हैं.

हथियार तीन तरह के होते हैं. एक वह जो सिर्फ़ बचाव के काम आते हैं जैसे ढाल वग़ैरा, दूसरे वह जो मारने के काम आते हैं जैसे तारपीडो या बन्दूक़ वग़ैरा और तीसरे वह हथियार जो मारने के काम भी आते हैं और बचाव के काम भी आते हैं जैसे तलवार, जहाज़ या और दूसरे इसी तरह के हथियार. मारने और बचाव के हथियारों का काम

اُس میں امریکی سرکار کی پالیسی کو ہر طرح مدد دے گا اور اُس کے لئے کام کرے گا .

دور پورب اور امریکہ

26 فروری کو ڈلس صاحب نے سیام کی راجدھانی بنککاک میں کہا ہے کہ :—

" دور پورب میں امریکہ کے چار سو سمندری بیڑے ہیں، تین لاکھ سمندری فوج ہے، تین لاکھ تھل سینا ہے اور ہوائی جہاز کے تیس اسکویڈرن ہیں ."

28 فروری کے اخباروں میں خبر چھپی ہے کہ دور پورب کی اپنی فوجوں کو امریکہ نے ایٹمی ہتھیاروں سے لیس کر دیا ہے . اب وہ ایٹمی ہتھیاروں کو توپ بندوق، معمولی گولوں جیسا ہی ہتھیار سمجھتا ہے .

ساتھ ہی یہ خبر آئی ہے :—واشنگٹن میں آئزن ہاور سے اخبار والوں نے پوچھا ہے کہ ایٹمی ہتھیار کے تجربے کیا بند کر دئے جائیں گے ؟ اُنہوں نے صاف کہا کہ " ہرگز نہیں ." ایٹمی ہتھیاروں اور دوسرے ہتھیاروں میں ہم کوئی فرق نہیں کرتے . اگر پورے ہتھیاروں پر روک لگائی جائے گی تو ایٹمی ہتھیار پر بھی روک لگے گی، نہیں تو نہیں .

ایسی صورت میں ایٹمی ہتھیاروں کا مسئلہ کیسے حل ہوگا ؟ اِس کے حل نہ ہونے کی ذمہ داری کس پر ہوگی، یہ دنیا کے سامنے صاف ہے .

کیا ایٹمی ہتھیار معمولی ہتھیاروں جیسے ہی ہیں

کیا ایٹمی ہتھیاروں اور دوسرے ہتھیاروں میں سچ مچ فرق نہیں ہے ؟ یو . این . او میں امریکی نمائندے لاج صاحب کا یہ ترک کیا ٹھیک ہے کہ آدمی چاہے بندوق کی گولی سے مرے اور چاہے ایٹم بم سے، بات ایک ہی ہے ؟ وگیانکوں کی بات اگر صحیح ہے اور جن خطروں کی طرف وہ جنتا کا دھیان دلاتے ہیں اگر وہ صحیح ہیں تو پھر یہ ماننا ہی پڑے گا کہ ایٹم بم دوسرے ہتھیاروں سے بالکل الگ ہے . ایسے بھی ایٹمی ہتھیار اور دوسرے ہتھیاروں کا فرق صاف ہے . دوسرے ہتھیاروں کا کام تھوڑے سے لوگوں کی جان لینے پر ختم ہو جاتا ہے لیکن ایٹمی ہتھیار انگنت بےگناہ لوگوں کی جان بھی لیتے ہیں اور اپنا اثر پیڑھیوں تک کے لئے چھوڑ جاتے ہیں .

ہتھیار تین طرح کے ہوتے ہیں . ایک وہ جو صرف بچاؤ کے کام آتے ہیں جیسے ڈھال وغیرہ، دوسرے وہ جو مارنے کے کام آتے ہیں جیسے تارپیڈو یا بندوق وغیرہ اور تیسرے وہ ہتھیار جو مارنے کے کام بھی آتے ہیں اور بچاؤ کے کام بھی آتے ہیں جیسے تلوار، جہاز یا اور دوسرے اسی طرح کے ہتھیار . مارنے اور بچاؤ کے ہتھیاروں کا کام

निन्नानबे हजार डालर सालाना अमरीका खर्च करता है. इन अड्डों पर अमरीका की तेरह लाख सत्तर हजार फ़ौज मौजूद है. अमरीका के अन्दर भी सोलह लाख दो हजार फ़ौज मौजूद है. इन दोनों गिनतियों का फ़रक़ ध्यान देने की चीज है. फ़ौजी सिपाहियों के अलावा एक लाख सरसठ हजार ग़ैर फ़ौजी अमरीकन दूसरे मुलकों में काम करते हैं. इनके अलावा दो लाख अट्ठारह हजार ऐसे अमरीकन हैं जो दूसरी सरकारों के अधीन विदेशों में काम करते हैं. अमरीका एक लाख चौबीस हजार जरमनों को जरमन सिक्के में तनख्वाह देता है. इस तरह हम देखते हैं कि घर से ज्यादा बाहर अपने देश की "रक्षा" के लिये अमरीकन काम कर रहे हैं.

विदेशों में अमरीकी जासूस

आखिर यह ग़ैर फ़ौजी अमरीकी विदेशों में क्या करते हैं ? ऐसे तो ब्योपार, धर्म प्रचार, शिक्षा विस्तार वग़ैरा का बाना यह धारन किये रहते हैं पर इनमें से ज्यादातर का खास काम जासूसी है. इंगलैंड में एक "आबजरवर सरविस" है. उसकी एक खबर 27 फ़रवरी के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में छपी है. फ़ारमूसा में "वेस्टर्न इन्टर प्राइज इनकारपोरेशन" नाम की एक संस्था है. इसके मालिक अमरीकी हैं और इस का दफ़्तर चियांग-काई-शेक के निवास स्थान से मिला हुआ है. कहा जाता है कि यहां से चियांग-काई-शेक पर नजर रखी जाती है कि कहीं वह कम्युनिस्टों से मिल न जाएं. इस संस्था को हाल में दो सौ पियानो लाने का लाइसेंस मिला था. एक चीनी अफ़सर की समझ में यह बात नहीं आई. वह जानता था कि पूरे फ़ारमूसा में भी दो सौ पियानो नहीं हैं, फिर इसने पियानों के लाने की इजाजत क्यों दी गई ? उसने कुछ शोर मचाया. नतीजा यह हुआ कि एक दिन चुपके से वह नौकरी से अलग कर दिया गया. इस संस्था ने तामसुई नामी जगह पर 'सबोताज' यानी तोड़ फोड़ सिखाने के लिये एक स्कूल खोल रखा है. अब इस संस्था का भेद खुल गया है. अमरीकी जासूसी जाल का यह एक हिस्सा है. कहते हैं इसको अमरीकी पूंजीपतियों से इस सारे काम के लिये रुपया मिलता था. अब यह संस्था खुल्लम खुल्ला अमरीकी नेवी कमांड के अधीन कर ली गई है.

दूसरे देशों में अमरीकी सरकार की जासूसी की हद यहां तक पहुंच गई है कि ईसाई धर्म प्रचार के माथे पर भी वह एक कलंक का टीका बन गई है. पंडित सुन्दरलाल जी की हाल की योरप यात्रा में एक बहुत ही जिम्मेदार अमरीकी ईसाई पादरी ने उनसे कहा कि आजकल किसी अमरीकी ईसाई मिशनरी को विदेश जाने के लिये पासपोर्ट उस वक़्त तक नहीं दिया जाता जब तक कि वह इस मजमून के अहदनामे पर दस्तखत न कर दे कि जिस मुल्क में वह जाएगा

ننانوے ہزار ڈالر سالانہ امریکہ خرچ کرتا ھے ۔ اِن اڈوں پر امریکہ کی تیرہ لاکھ ستر ہزار فوج موجود ھے۔ امریکہ کے اندر بھی سولہ لاکھ دو ہزار فوج موجود ھے۔ اِن دونوں گنتیوں کا فرق دھیان دینے کی چیز ھے۔ فوجی سپاھیوں کے علاوہ ایک لاکھ سرسٹھ ہزار غیر فوجی امریکن دوسرے ملکوں میں کام کرتے ھیں ۔ اِن کے علاوہ دو لاکھ اٹھارہ ہزار ایسے امریکن ھیں جو دوسری سرکاروں کے ادھین ودیشوں میں کام کرتے ھیں ۔ امریکہ ایک لاکھ چوبیس ہزار جرمنوں کو جرمن سکے میں تنخواہ دیتا ھے ۔ اِس طرح ہم دیکھتے ھیں کہ گھر سے زیادہ باہر اپنے دیش کی "رکشا" کے لئے امریکن کام کر رھے ھیں ۔

ودیشوں میں امریکی جاسوس

آخر یہ غیر فوجی امریکی ودیشوں میں کیا کرتے ھیں ؟ ایسے تو بیوپار، دھرم پرچار، شکشا وستار وغیرہ کا بانا یہ دھارن کئے رہتے ھیں پر اِن میں سے زیادہ تر کا خاص کام جاسوسی ھے ۔ انگلینڈ میں ایک " آبزرور سروس " ھے ۔ اُس کی ایک خبر 27 فروری کے ' ھندستان ٹائمس ' میں چھپی ھے ۔ فارموسا میں " وسٹرن انٹر پرائز انکارپوریشن " نام کی ایک سنستھا ھے ۔ اِس کے مالک امریکی ھیں اور اُس کا دفتر چانگ - کائی - شیک کے نواس استھان سے ملا ہوا ھے ۔ کہا جاتا ھے کہ یہاں سے چانگ - کائی - شیک پر نظر رکھی جاتی ھے کہ کہیں وہ کمیونسٹوں سے مل نہ جائیں ۔ اِس سنستھا کو حال میں دو سو پیانو لانے کا لائیسنس ملا تھا۔ ایک چینی افسر کی سمجھ میں یہ بات نہیں آئی۔ وہ جانتا تھا کہ پورے فارموسا میں بھی دو سو پیانو نہیں ھیں، پھر اتنے پیانو کی لانے کی اِجازت کیوں دی گئی ؟ اُس نے کچھ شور مچایا ۔ نتیجہ یہ ہوا کہ ایک دن چپکے سے وہ نوکری سے الگ کر دیا گیا ۔ اِس سنستھا نے تام سوئی نامی جگہ پر ' سبوتاج ' یعنی توڑ پھوڑ سکھانے کے لئے ایک اسکول کھول رکھا ھے ۔ اب اِس سنستھا کا بھید کھل گیا ھے ۔ امریکی جاسوسی جال کا یہ ایک حصہ ھے ۔ کہتے ھیں اِس کو امریکی پونجی پتیوں سے اِس سارے کام کے لئے روپیہ ملتا تھا ۔ اب یہ سنستھا کھلم کھلا امریکی نیوی کمانڈ کے ادھین کر لی گئی ھے ۔

دوسرے دیشوں میں امریکی سرکار کی جاسوسی کی حد یہاں تک پہونچ گئی ھے کہ عیسائی دھرم پرچار کے ماتھے پر بھی وہ ایک کلنک کا ٹیکا بن گئی ھے ۔ پنڈت سندر لال جی کی حال کی یورپ یاترا میں ایک بہت ہی ذمہ دار امریکی عیسائی پادری نے اُن سے کہا کہ آجکل کسی امریکی عیسائی مشنری کو ودیش جانے کے لئے پاسپورٹ اُس وقت تک نہیں دیا جاتا جب تک کہ وہ اِس مضمون کے عہدنامے پر دستخط نہ کر دے کہ جس ملک میں وہ جائے گا

सोवियत रूस के सुझाव पर तरह तरह की बातें कही गई हैं. बरतानिया वालों ने कहा कि इस सुझाव में कोई नई बात नहीं कही गई. रूस यह सब बातें पहले भी कह चुका है. सिर्फ एक नई बात है और वह यह कि इस बार एक खास तारीख दे दी गई है कि उस दिन जितनी फ़ौज और जितने हथियार हैं वह आखिरी माने जायं.

रूस के सुझाव पर अमरीकियों की राय

अमरीका के बड़े बड़े राजकाजियों और बड़े बड़े अखबारों की राय का निचोड़ यह है :

1—रूस का यह केवल प्रोपेगेन्डा है. इसमें कोई जान नहीं है.

2—अमरीका के पास ऐटमी हथियार बहुत ज्यादा हैं. इसीलिये रूस डरता है. अगर लड़ाई अब तक नहीं छिड़ी तो इसका कारन यह है कि अमरीका के पास ऐटमी हथियारों की ताक़त है. अगर यह हथियार खत्म हुए तो रूस हमला कर देगा.

3—रूस चाहता है कि पच्छिमी जरमनी की फ़ौजी ताक़त न बढ़ने पाए. अगर हमने रूस के सुझाव को मान लिया तो हम जरमनी को हथियार से लैस नहीं कर पाएंगे. इसीलिये रूस ने आखरी तारीख पहली जनवरी रखी है क्योंकि अभी तक पेरिस समझौते को सब राष्ट्रों ने मान्यता नहीं दी और जरमनी को हथियार मुहैया नहीं किये जा सके.

4—ऐटम हथियार खत्म होने पर हम कमज़ोर हो जाएंगे. और ऐटमी लड़ाई में जीत या हार बहुत कुछ फ़ौजों की तादाद पर निरभर होती है. उस में हम रूस और चीन का मुक़ाबला नहीं कर सकते.

प्रश्न उठता है कि किस को किस से खतरा है. अमरीकी सरकार कहती है कि रूस योरप और अमरीका को हड़प कर जाएगा. इस डर से हम अपने हथियार बढ़ा रहे हैं. रूस वाले कहते हैं कि अमरीका वाले हमारे चारों तरफ़ फ़ौजी जाल बिछाए हुए हैं, हमें इनसे खतरा है. अगर यह फ़ौजी जाल हट जाएं तो हम इतमीनान से रचनात्मक कामों में लग सकें. क्या रूस की फ़ौजें अमरीका और इंगलैंड या फ़्रांस के चारों तरफ़ पड़ी हैं? क्या रूस ने चारों तरफ़ फ़ौजी अड्डे क़ायम कर रखे हैं?

विदेशों में अमरीकी फ़ौजी जाल

कोई भी अमरीकी रूस पर यह दोष नहीं लगाता. लेकिन दूसरी तरफ़ अमरीका वाले खुद अपनी फ़ौजी ताक़त का प्रचार करते हैं और रूस के खतरे को सच साबित करते हैं. अभी हाल में 'न्यूयार्क टाइम्स' में नीचे दिया ब्योरा छपा है :—

अपने देश से बाहर दुनिया भर में अमरीका के 950 फ़ौजी अड्डे हैं. इन अड्डों पर साठ करोड़, सोलह लाख,

سوویٹ روس کے سجھاؤ پر طرح طرح کی باتیں کہی گئی ہیں ۔ برطانیہ والوں نے کہا کہ اِس سجھاؤ میں کوئی نئی بات نہیں کہی گئی ۔ روس یہ سب باتیں پہلے ہی کہہ چکا ہے ۔ صرف ایک نئی بات ہے اور وہ یہ کہ اِس بار ایک خاص تاریخ دے دی گئی ہے کہ اُس دن جتنی فوج اور جتنے ہتیار ہیں وہ آخری مانے جائیں ۔

روس کے سجھاؤ پر امریکیوں کی رائے

امریکہ کے بڑے بڑے راجکاجیوں اور بڑے بڑے اخباروں کی رائے کا نچوڑ یہ ہے :

1—روس کا یہ کیول پروپگنڈہ ہے ۔ اس میں کوئی جان نہیں ہے ۔

2—امریکہ کے پاس ایٹمی ہتیار بہت زیادہ ہیں ۔ اِسی لئے روس ڈرتا ہے ۔ اگر لڑائی اب تک نہیں چھڑی تو اُس کا کارن یہ ہے کہ امریکہ کے پاس ایٹمی ہتیاروں کی طاقت ہے ۔ اگر یہ ہتیار ختم ہوئے تو روس حملہ کردےگا ۔

3—روس چاہتا ہے کہ پچھمی جرمنی کی فوجی طاقت نہ بڑھنے پائے ۔ اگر ہم نے روس کے سجھاؤ کو مان لیا تو ہم جرمنی کو ہتیار سے لیس نہیں کرپائیںگے ۔ اسی لئے روس نے آخری تاریخ پہلی جنوری رکھی ہے کیونکہ ابھی تک پیرس سمجھوتے کو سب راشٹروں نے مانتا نہیں دی اور جرمنی کو ہتیار مہیا نہیں کئے جاسکے ۔

4—ایٹمی ہتیار ختم ہونے پر ہم کمزور ہوجاوینگے ۔ اور ایٹمی لڑائی میں جیت یا ہار بہت کچھ فوجوں کی تعداد پر نربھر ہوتی ہے اُس میں ہم روس اور چین کا مقابلہ نہیں کرسکتے ۔

پرشن اُٹھتا ہے کہ کس کو کس سے خطرہ ہے ۔ امریکی سرکار کہتی ہے کہ روس یورپ اور امریکہ کو ہڑپ کرجائےگا ۔ اِس ڈر سے ہم اپنے ہتیار بڑھا رہے ہیں ۔ روس والے کہتے ہیں کہ امریکہ والے ہمارے چاروں طرف فوجی جال بچھائے ہوئے ہیں ' ہمیں اِن سے خطرہ ہے ۔ اگر یہ فوجی جال ہٹ جائیں تو ہم اطمینان سے رچناتمک کاموں میں لگ سکیں ۔ کیا روس کی فوجیں امریکہ اور انگلینڈ یا فرانس کے چاروں طرف پڑی ہیں ؟ کیا روس نے چاروں طرف فوجی اڈے قائم کر رکھے ہیں ؟

ودیشوں میں امریکی فوجی جال

کوئی بھی امریکی روس پر یہ دوش نہیں لگاتا ۔ لیکن دوسری طرف امریکہ والے خود اپنی فوجی طاقت کا پرچار کرتے ہیں اور روس کے خطرے کو سچ ثابت کرتے ہیں ۔ ابھی حال میں 'نیویارک ٹائمس' میں نیچے دیا بیورا چھپا ہے :—

اپنے دیش سے باہر دنیا بھر میں امریکہ کے 950 فوجی اڈے ہیں ۔ ان اڈوں پر ساٹھ کروڑ' سولہ لاکھ'

सात हजार वर्ग मील में रेडियो-ऐकटिव लहरें फैल जाती हैं. यही नहीं, बल्कि रेडियो ऐकटिव लहरें हवा में मिलकर विस्फोट की जगह से हजारों मील की यात्रा ते करती हैं और सारे वायुमन्डल को विषैला बनाती हैं. दूसरी तरफ़ कहा गया है कि एक इनसान जितनी रेडियो ऐकटिव लहरें बर्दाश्त कर सकता है उससे कम रेडियो ऐकटिव लहरें इन तजुरबों से पैदा होती हैं. पता नहीं कि अमरीकी सरकार के हाथ के यह कठपुतली वैज्ञानिक खुद धोके में हैं या जान बूझ कर जनता को धोके में रखना चाहते हैं !

एक तरफ़ ऐटमी हथियारों को खतम करने की बात हो रही है और दूसरी तरफ़ बरतानिया ने 17 फ़रवरी को ऐलान किया है कि वह भी ऐटम और हाइडरोजन बम तैयार कराएगा. रही सही उम्मीद को एक ठेस और लगी.

ऐटम बम के ख़ातमे के लिये रूस का सुझाव

19 फ़रवरी को रूसी रेडियो ने रूसी सरकार की तरफ़ से नीचे लिखे सुझाव रखे :

1—जितने भी ऐटम या हाइडरोजन बम किसी भी राष्ट्र के पास हों, उन सबको बरबाद कर दिया जाए. ऐटमी शक्ति सिर्फ़ रचनात्मक कामों में लगाई जाए.

2—1 जनवरी सन 1955 को जिस राष्ट्र के पास जितनी फ़ौज थी और उसके पास जितने हथियार थे, उससे ज्यादा फ़ौज या हथियार किसी देश में न बढ़ाए जाएं. सन 1955 के फ़ौजी बजट को आख़िरी मान लिया जाए और फ़ौजी ख़र्च कहीं भी इस से ज्यादा न किया जाए.

3—इन फ़ैसलों पर देख रेख करने और अमल कराने का काम एक अन्तर्राष्ट्री कमीशन के सुपुर्द किया जाए.

4—दुनिया की तमाम जनता को ऐटमी हथियारों से ख़तरा है. दुनिया के सब लोग चाहते हैं कि हथियारों और फ़ौजों में कमी हो. इसलिये दुनिया भर के राष्ट्रों की एक कानफ़रेन्स की जाए जिसका उद्देश्य हो सब तरह के हथियारों में कमी करना और उनपर रोक लगाना. इस कानफ़रेन्स को यू. एन. ओ. के मेम्बर राष्ट्रों तक ही सीमित न रखा जाए बल्कि दुनिया के हर राष्ट्र को इसमें बुलाया जाए.

एक तरफ़ रूस के यह सुझाव हैं और दूसरी तरफ़ अमरीका के सेक्रेटरी डलेस साहब को संधियों और अहदनामों पर विश्वास ही नहीं है. 17 फ़रवरी को एक सभा में उन्होंने कहा :—

"यह समझ लेना ख़तरनाक है कि सिर्फ़ संधियां और अहदनामे ही हमारी उस भारी ज़िम्मेदारी को हलका कर देंगे जो शान्ति क़ायम करने के सम्बन्ध में हमारे कन्धों पर आ पड़ी है."

سات هزار ورگ میل میں ریڈیو ایکٹو لہریں پھیل جاتی هیں۔ یہی نہیں' بلکہ ریڈیو ایکٹو لہریں هوا میں مل کر وسپھوٹ کی جگہ سے هزاروں میل کی یاترا طے کرتی هیں اور سارے وایو منڈل کو وشیلا بناتی هیں۔ دوسری طرف کہا گیا هے کہ ایک انسان جتنی ریڈیو ایکٹو لہریں برداشت کرسکتا هے اُس سے کم ریڈیو ایکٹو لہریں اِن تجربوں سے پیدا هوتی هیں ۔ پتہ نہیں کہ امریکی سرکار کے هاتھ کے یہ کٹھپتلی ویگیانک خود دھوکے میں هیں یا جان بوجھ کر جنتا کو دھوکے میں رکھنا چاهتے هیں !

ایک طرف ایٹمی هتیاروں کو ختم کرنے کی بات هو رهی هے اور دوسری طرف برطانیہ نے 17 فروری کو اعلان کیا هے کہ وہ بھی ایٹم اور هائڈ روجن بم تیار کرائے گا ۔ رهی سہی اُمید کو ایک ٹھیس اور لگی ۔

ایٹم بم کے خاتمے کے لئے روس کا سجھاؤ

19 فروری کو روسی ریڈیو نے روسی سرکار کی طرف سے نیچے لکھے سجھاؤ رکھے :

1—جتنے بھی ایٹم یا هائڈ روجن بم کسی بھی راشٹر کے پاس هوں' اُن سب کو برباد کردیا جائے ۔ ایٹمی شکتی صرف رچناتمک کاموں میں لگائی جائے ۔

2—پہلی جنوری سن 1955 کو جس راشٹر کے پاس جتنی فوج تھی اور اُس کے پاس جتنے هتیار تھے' اُس سے زیادہ فوج یا هتیار کسی دیش میں نہ بڑھائے جائیں۔ سن 1955 کے فوجی بجٹ کو آخری مان لیا جائے اور فوجی خرچ کہیں بھی اِس سے زیادہ نہ کیا جائے ۔

3—ان فیصلوں پر دیکھ ریکھ کرنے اور عمل کرانے کا کام ایک انتر راشٹری کمیشن کے سپرد کیا جائے ۔

4—دنیا کی تمام جنتا کو ایٹمی هتیاروں سے خطرہ هے ۔ دنیا کے سب لوگ چاهتے هیں کہ هتیاروں اور فوجوں میں کمی هو ۔ اِس لئے دنیا بھر کے راشٹروں کی ایک کانفرنس کی جائے جس کا اُدیش هو سب طرح کے هتیاروں میں کمی کرنا اور اُن پر روک لگانا ۔ اِس کانفرنس کو یو ۔ این ۔ او ۔ کے ممبر راشٹروں تک هی سیمت نہ رکھا جائے بلکہ دنیا کے هر راشٹر کو اِس میں بلایا جائے ۔

ایک طرف روس کے یہ سجھاؤ هیں اور دوسری طرف امریکہ کے سکریٹری ڈلس صاحب کو سندھیوں اور عہدناموں پر وشواس هی نہیں هے ۔ 17 فروری کو ایک سبھا میں اُنھوں نے کہا :—

"یہ سمجھ لینا خطرناک هے کہ صرف سندھیاں اور عہدنامے هی هماری اُس بھاری ذمہداری کو هلکا کردیں گے جو شانتی قائم کرنے کے سمبندھ میں همارے کندھوں پر آپڑی هے ۔"

अमरीका और ऐटमी हथियार

9 फ़रवरी सन 1955 को रूस की सुप्रीम सोवियत ने अपनी सरकार को आदेश दिया कि वह ऐटमी हथियारों पर उन्हें रोक लगाने, फ़ौजी ताक़त को कम करने और ऐटमी शक्ति को रचनात्मक कामों में लगाने के सम्बन्ध में दूसरे राष्ट्रों से बात चीत करे और इस मामले में समझौता करने पर उन्हें राज़ी करे. रूस की तरफ़ से इस तरह के सुझाव पहले भी आते रहे हैं. यू. एन. ओ. की नवीं जनरल असम्बली के सामने भी रूस ने इस तरह के सुझाव रखे थे लेकिन उनका कोई नतीजा नहीं निकला.

अमरीका में ऐटम बम के तजुरबे

दुनिया की जनता आशा भरी निगाहों से बड़े राष्ट्रों की तरफ़ देखने लगी. उम्मीद थी कि इस बार ज़रूर कोई न कोई समझौता हो जाएगा. लेकिन 13 रवरी को अमरीका ने ऐलान किया कि वह नवादा में नए ऐटमी तजुरबे करने जा रहा है. इसी बयान में कहा गया कि अमरीका अब तक 32 ऐटम बम तजुरबे के तौर पर फेंक चुका है. तैंतीसवां बम निवादा में फेंका जाएगा और चार महीने तक यह तजुरबे चलते रहेंगे. इन चार महीने में ग्यारा दफ़ा तजुरबा किया जाएगा.

दुनिया की जनता में आम तौर से और अमरीकी जनता में ख़ास तौर से इस ऐलान से बेचैनी की लहर दौड़ गई. इसी ऐलान के साथ साथ अमरीका के ऐटमी शक्ति कमीशन के अध्यक्ष की रिपोर्ट भी जनता के सामने आई. इस रिपोर्ट के अनुसार तजुरबे के तौर पर जो ऐटम और हाइडरोजन बम छुड़ाए जाते हैं उनका इनसान और जानवरों दोनों पर भयानक असर पड़ता है. ख़ास तौर से नए पैदा होने वाले बच्चों की तन्दुरुस्ती और उनके जिस्मों पर इसका प्रभाव गहरा होता है. इस तरह की रिपोर्टें जनता के लिये नहीं होतीं और न ही इन्हें जनता की जानकारी के लिये छापा जाता है. लेकिन जनता के अन्दर बेचैनी इस हद तक बढ़ गई कि अमरीकी सरकार के स ने दो ही रास्ते रह गए. एक यह कि ऐटम बम का तजुरबा बन्द कर दिया जाए, या दूसरे यह कि किसी तरह जनता की बेचैनी और डर ख़तम किया जाए. ऐटम बम के तजुरबे को छोड़ना सरकार' को उचित नहीं मालूम हुआ. उसने जनता को बहलाने की कोशिश शुरू की. आइज़न हावर ने अपने बयान में कहा कि हम इस रिपोर्ट को इसलिये छपवा रहे हैं ताकि जनता के दिल में जो डर बैठ गया है वह दूर हो जाए. इस रिपोर्ट में एक तरफ़ भयानक असरों का ज़िक्र है और दूसरी तरफ़ जनता को न डरने का उपदेश दिया गया है. एक तरफ़ यह कहा गया है कि एक ऐटम बम के फटने से

امریکہ اور ایٹمی ھتیار

9 فروری سن 1955 کو روس کی سوپریم سوویٹ نے اپنی سرکار کو آدیش دیا کہ وہ ایٹمی ھتیاروں پر روک لگائے' فوجی طاقت کو کم کرنے اور ایٹمی شکتی کو رچناتمک کاموں میں لگانے کے سمبندھ میں دوسرے راشٹروں سے بات چیت کرے اور اِس معاملے میں سمجھوتہ کرنے پر اُنھیں راضی کرے. روس کی طرف سے اِس طرح کے سجھاؤ پہلے بھی آتے رھے ھیں. یو. این. او. کی نویں جنرل اسمبلی کے سامنے بھی روس نے اِس طرح کے سجھاؤ رکھے تھے لیکن اُن کا کوئی نتیجہ نہیں نکلا.

امریکہ میں ایٹم بم کے تجربے

دنیا کی جنتا آشا بھری نگاھوں سے بڑے راشٹروں کی طرف دیکھنے لگی. اُمید تھی کہ اس بار ضرور کوئی نہ کوئی سمجھوتہ ھو جائےگا. لیکن 13 فروری کو امریکہ نے اعلان کیا کہ وہ نوادا میں نئے ایٹمی تجربے کرنے جا رھا ھے. اِسی بیان میں کہا گیا کہ امریکہ اب تک 32 ایٹم بم تجربے کے طور پر پھینک چکا ھے. تینتیسواں بم نوادا میں پھینکا جائےگا اور چار مہینے تک یہ تجربے چلتے رھیں گے. اِن چار مہینے میں گیارہ دفعہ تجربہ کیا جائےگا.

دنیا کی جنتا میں عام طور سے اور امریکی جنتا میں خاص طور سے اس اعلان سے بےچینی کی لہر دوڑ گئی. اُسی اعلان کے ساتھ ساتھ امریکہ کے ایٹمی شکتی کمیشن کے ادھیکش کی رپورٹ بھی جنتا کے سامنے آئی. اِسی رپورٹ کے انوسار تجربے کے طور پر جو ایٹم اور ھائڈروجن بم چھوڑائے جاتے ھیں اُن کا انسان اور جانوروں دونوں پر بھیانک اثر پڑتا ھے. خاص طور سے نئے پیدا ھونے والے بچوں کی تندرستی اور اُن کے جسموں پر اِس کا پربھاؤ گہرا ھوتا ھے. اِس طرح کی رپورٹیں جنتا کے لئے نہیں ھوتیں اور نہ ھی انھیں جنتا کی جانکاری کے لئے چھاپا جاتا ھے. لیکن جنتا کے اندر بےچینی اِس حد تک بڑھ گئی کہ امریکی سرکار کے سامنے دو ھی راستے رہ گئے. ایک یہ کہ ایٹم بم کا تجربہ بند کردیا جائے' یا دوسرے یہ کہ کسی طرح جنتا کی بےچینی اور ڈر ختم کیا جائے. ایٹم بم کے تجربہ کو چھوڑنا سرکار کو اُچت نہیں معلوم ھوا. اُس نے جنتا کو بہلانے کی کوشش شروع کی. آئزنھاور نے اپنے بیان میں کہا کہ ھم اِس رپورٹ کو اِس لئے چھپوا رھے ھیں تاکہ جنتا کے دل میں جو ڈر بیٹھ گیا ھے وہ دور ھو جائے. اس رپورٹ میں ایک طرف بھیانک اثروں کا ذکر ھے اور دوسری طرف جنتا کو نہ ڈرنے کا اُپدیش دیا گیا ھے. ایک طرف یہ کہا گیا ھے کہ ایک ایٹم بم کے پھٹنے سے

और रंग रोग़न पर उनकी क़ीमत के हिसाब से 10 फ़ीसदी पैदावार टैक्स लगाया गया है. सस्ती सिगरेटों को छूट देकर मंहगी सिगरेटों को और भी मंहगा बनाया गया है. कपड़े के बाहर जाने के टैक्स को कम करके चाय का महसूल बढ़ा दिया गया है. विवाहितों को राहत दी गई है तो अविवाहितों पर टैक्स का भार बढ़ाया गया है, चार आदमियों के परिवार को राहत देकर 7500 रुपैया सालाना से अधिक आमदनी वालों पर टैक्स का भार बढ़ाया गया है. इस तरह कतरब्योंत करके आम जनता की आंखों में धूल झोंकने की कोशिश की गई है.

टैक्सों की यह बढ़ती इस बजट के साथ समाप्त होने वाली नहीं है. श्री देशमुख ने ये बहुत साफ़ शब्दों में कह दिया है कि इन्हें इतना समय नहीं मिल सका कि वे मथाई कमीशन की सारी सिफ़ारिशों पर ग़ौर करके टैक्सों के बढ़ाने का पूरा इन्तज़ाम कर सकते. जल्दी ही उन पर ग़ौर करके, इन पर अमल करने और टैक्सों को और अधिक बढ़ाने की बात भी साफ़ शब्दों में कह दी गई है. इसलिये ग़रीब लोगों को और अधिक टैक्सों के नये भार को उठाने के लिये अभी से तैयार रहना चाहिये. सारे बजट को देखने से यह साफ़ हो जाता है कि बजट जनता बजट नहीं पूंजीपति बजट है. बजट तैयार करने वालों की निगाह में गांव के लोगों या आम ग़रीब जनता का हित इतना नहीं है जितना बड़े लोगों, पूंजीपतियों और मिल मालिकों का हित और सरकार की आमदनी बढ़ाना.

समाजवादी आदर्श की हत्या

आवडी में कांग्रेस ने जिस समाजवादी आदर्श को इतने अधिक उत्साह के साथ मंज़ूर किया है उसकी इन दोनों ही बजटों में और सूबों के बजटों में कहीं गन्ध भी दीख नहीं पड़ती. समाजवादी आदर्श का मतलब जो भी किया जाता हो, लेकिन यह माना जाता है कि इसमें ग़रीब और आम जनता को टैक्सों के भार से अधिक से अधिक राहत दी जानी चाहिये और राष्ट्र की सम्पत्ति का उसको अधिक से अधिक लाभ मिलना चाहिये. ऐसा इनमें से किसी भी बजट में नहीं किया गया है. दोनों ही बजटों में ग़रीब की झुकी हुई पीठ पर और भी अधिक भार लाद दिया गया है.

श्री देशमुख ने माना है कि खेती और कारख़ानों की पैदावार बढ़ने से भी पहली पंचसाला योजना से बेरोज़गारी पर कुछ भी क़ाबू नहीं पाया जा सका है. उन्होंने कहा है कि उसके लिये दूसरी पंचसाला योजना में कोशिश की जायगी. इतनी ही ग़नीमत है कि इस नाकामयाबी को अपने मुंह से ख़ुद ही स्वीकार कर लिया गया है. यदि कांग्रेस ने सचाई और ईमानदारी से इस आदर्श को स्वीकार किया है तो उसका कुछ तो आभास सूबों के और केन्द्र के इन बजटों से अवश्य मिलना चाहिये था.

2-3-'55 सत्यदेव विद्यालंकार

اور رنگ روغن پر اُن کی قیمت کے حساب سے 10 فی صدی پیداوار ٹیکس لگایا گیا ہے. سستی سگریٹوں کو چھوٹ دے کر مہنگی سگریٹوں کو اور بھی مہنگا بنایا گیا ہے . کپڑے کے باہر جانے کے ٹیکس کو کم کرکے چائے کا محصول بڑھا دیا گیا ہے . وواہتوں کو راحت دی گئی ہے تو اَوواہتوں پر ٹیکس کا بھار بڑھایا گیا ہے . چار آدمیوں کے پریوار کو راحت دے کر 7500 روپیہ سالانہ سے ادھک آمدنی والوں پر ٹیکس کا بھار بڑھایا گیا ہے . اِس طرح کتربیونت کرکے عام جنتا کی آنکھوں میں دھول جھونکنے کی کوشش کی گئی ہے .

ٹیکسوں کی یہ بڑھتی اِس بجٹ کے ساتھ سماپت ہونے والی نہیں ہے . شری دیش مکھ نے یہ بہت صاف شبدوں میں کہہ دیا ہے کہ اُنہیں اتنا سمے نہیں مل سکا کہ وہ متھائی کمیشن کی ساری سفارشوں پر غور کرکے ٹیکسوں کے بڑھانے کا پورا انتظام کرسکتے. جلدی ہی اُن پر غور کرکے، اِن پر عمل کرنے اور ٹیکسوں کو اور ادھک بڑھانے کی بات بھی صاف شبدوں میں کہہ دی گئی ہے . اس لئے غریب لوگوں کو اور ادھک ٹیکسوں کے نئے بھار کو اُٹھانے کے لئے ابھی سے تیار رہنا چاہئے . سارے بجٹ کو دیکھنے سے یہ صاف ہو جاتا ہے کہ بجٹ جنتا بجٹ نہیں پونجی پتی بجٹ ہے. بجٹ تیار کرنے والوں کی نگاہ میں گاؤں کے لوگوں یا عام غریب جنتا کا ہت اتنا نہیں ہے جتنا بڑے لوگوں، پونجی پتیوں اور مل مالکوں کا ہت اور سرکار کی آمدنی بڑھانا .

سماج وادی آدرش کی ہتیا

آودی میں کانگریس نے جس سماج وادی آدرش کو اتنے ادھک اُتساہ کے ساتھ منظور کیا ہے اس کی ان دونوں ہی بجٹوں میں اور صوبوں کے بجٹوں میں کہیں گندھ بھی دیکھ نہیں پڑتی . سماج وادی آدرش کا مطلب جو بھی کیا جاتا ہو، لیکن یہ مانا جاتا ہے کہ اِس میں غریب اور عام جنتا کو ٹیکسوں کے بھار سے ادھک سے ادھک راحت دی جانی چاہئے اور راشٹر کی سمپتی کا اُس کو ادھک سے ادھک لابھ ملنا چاہئے . ایسا اِن میں سے کسی بھی بجٹ میں نہیں کیا گیا ہے . دونوں ہی بجٹوں میں غریب کی جھکی ہوئی پیٹھ پر اور بھی ادھک بھار لاد دیا گیا ہے .

شری دیش مکھ نے مانا ہے کہ کھیتی اور کارخانوں کی پیداوار بڑھنے سے بھی پہلی پنچسالہ یوجنا سے بےروزگاری پر کچھ بھی قابو نہیں پایا جاسکا ہے . انھوں نے کہا ہے کہ اُس کے لئے دوسری پنچسالہ یوجنا میں کوشش کی جائےگی . اتنی ہی غنیمت ہے کہ اِس ناکامیابی کو اپنے منھ سے خود ہی سویکار کرلیا گیا ہے . یدی کانگریس نے سچائی اور ایمانداری سے اِس آدرش کو سویکار کیا ہے تو اُس کا کچھ تو آبھاس صوبوں کے اور کیندر کے اِن بجٹوں سے اوشیہ ملنا چاہئے تھا .

2.3.'55 ستیہ دیو ودیالنکار

करते होंगे. अधिकतर ग़रीब जनता छोटे सफ़र करने वाली ही होती है. 161 से 300 मील तक या अधिक सफ़र करने वाले ज़्यादातर मध्य वर्ग के और धनी वर्ग के ही लोग होते हैं. इस तरह राहत तो मिलेगी बड़े लोगों को और धनी वर्ग को और किराये की दर में बढ़ती का भार पड़ेगा ग़रीब जनता पर. इसी तरह माल की ढुलाई में पूरे वैगन पर खाने के सामान और केमिकल खादों पर और लम्बी दूरी पर छूट का फ़ायदा भी किसी ग़रीब किसान या मज़दूर को न मिलकर अमीर और मिल मालिकों या व्यापारियों को ही मिलेगा. आम जनता के लिये छोटे पारसलों पर कम से कम महसूल एक रुपये से डेढ़ रुपया कर दिया गया है और मामूली दर में दो आना रुपया बढ़ा दिया गया है. इस बढ़ौती का सारा बोझ भी आम ग़रीब जनता पर ही अधिक पड़ेगा.

प्लेटफ़ार्म टिकट दो आने से एक आना कर दिया गया है. उसका चलन आम तौर पर उन बड़े स्टेशनों पर ही है जहां पढ़े लिखे लोग या बड़े लोग अधिक रहते हैं. छोटे स्टेशनों पर इनका चलन नहीं है. इसलिये इस छूट का लाभ भी पढ़े लिखे लोगों या बड़े लोगों को ही अधिक मिलेगा. गांव की जनता को इससे कोई लाभ नहीं. रेलवे बजट की दूसरी रियायतें भी इसी तरह की हैं. ये बिल्कुल साफ़ है कि रेलवे का बजट आम जनता को सामने न रखकर केवल शहरियों, बड़े लोगों और पूंजीपतियों को सामने रखकर, उनके ख़र्च को कम करने और सरकार की आमदनी को बढ़ाने के विचार से ही तैयार किया गया है.

आम बजट में भी ऐसा ही किया गया है और आड़ ली गई है उस कमीशन की जो पिछले अर्थमंत्री डाक्टर जान मथाई की सदारत में टैक्सो के बारे मे छानबीन करने के लिये क़ायम किया गया था, उसकी रिपोर्ट बजट के साथ ही शाया की गई है. उसने जो रास्ता बना दिया उसपर श्री चिन्तामणि देशमुख ने पैर बढ़ाया है. इस यही जाहिर होता है कि कमीशन टैक्स बढ़ाने की तजवीजें सोचने के मतलब से ही बिठलाया गया था और जो कुछ भी किया गया है वह सोच विचार कर बनाई हुई योजना के तहत किया गया है.

कृषिमंत्री ने दो ही दिन पहले चीनी के भाव घटाने की आशा दिलाई थी, पर अर्थमंत्री ने विदेशी चीनी पर महसूल बढ़ाकर और देशी चीनी की पैदावार पर नया टैक्स बिठाकर चीनी का भाव दो पैसे सेर बढ़ा दिया. इसी तरह टैक्स बढ़ाकर कपड़े की क़ीमत भी दो पैसा गज बढ़ा दी. कुछ चीज़ों पर से टैक्सों में कमी करके ऊनी कपड़े, सीने की मशीनें, बिजली के पंखे, बिजली के लट्टू, बिजली की ट्यूब, बिजली की स्टोरज बेटरियां, बिजली की ड्राई बेटरियां, अख़बारी काग़ज़ के अलावा दूसरे काग़ज़, गत्ते

کرتے ہونگے. ادھک تر غریب جنتا چھوٹے سفر کرنے والی ہی ہوتی ہے. 161 سے 300 میل تک یا ادھک سفر کرنے والے زیادہ تر مدھیہ ورگ کے اور دھنی ورگ کے ہی لوگ ہوتے ہیں. اِس طرح راحت تو ملے گی بڑے لوگوں کو اور دھنی ورگ کو اور کرائے کی در میں بڑھتی کا بھار پڑے گا غریب جنتا پر. اِسی طرح مال کی ڈھلائی میں پورے ویگن پر کھانے کے سامان اور کیمیکل کھادوں پر اور لمبی دوری پر چھوٹ کا فائدہ بھی کسی غریب کسان یا مزدور کو نہ مل کر امیر اور مل مالکوں یا بیوپاریوں کو ہی ملے گا. عام جنتا کے لئے چھوٹے پارسلوں پر کم سے کم محصول ایک روپیہ سے ڈیڑھ روپیہ کر دیا گیا ہے اور معمولی در میں دو آنہ روپیہ بڑھا دیا گیا ہے. اس بڑھوتی کا سارا بوجھ بھی عام غریب جنتا پر ہی ادھک پڑیگا.

پلیٹ فارم ٹکٹ دو آنے سے ایک آنہ کر دیا گیا ہے. اُس کا چلن عام طور پر اُن بڑے اسٹیشنوں پر ہی ہے جہاں پڑھے لکھے لوگ یا بڑے لوگ ادھک رہتے ہیں. چھوٹے اسٹیشنوں پر اِن کا چلن نہیں ہے. اس لئے اس چھوٹ کا لابھ بھی پڑھے لکھے لوگوں یا بڑے لوگوں کو ہی ادھک ملیگا. گاؤں کی جنتا کو اِس سے کوئی لابھ نہیں. ریلوے بجٹ کی دوسری رعائتیں بھی اسی طرح کی ہیں. یہ بالکل صاف ہے کہ ریلوے کا بجٹ عام جنتا کو سامنے نہ رکھکر کیول شہریوں، بڑے لوگوں اور پونجی پتیوں کو سامنے رکھکر، اُن کے خرچ کو کم کرنے اور سرکار کی آمدنی کو بڑھانے کے وچار سے ہی تیار کیا گیا ہے.

عام بجٹ میں بھی ایسا ہی کیا گیا ہے اور آڑ لی گئی ہے اُس کمیشن کی جو پچھلے ارتھ منتری ڈاکٹر جان متھائی کی صدارت میں ٹیکسوں کے بارے میں چھان بین کرنے کے لئے قائم کیا گیا تھا، اُس کی رپورٹ بجٹ کے ساتھ ہی شائع کی گئی ہے. اُس نے جو راستہ بنا دیا اُس پر شری چنتامنی دیشمکھ نے پیر بڑھایا ہے. اِس سے یہی ظاہر ہوتا ہے کہ کمیشن ٹیکس بڑھانے کی تجویزیں سوچنے کے مطلب سے ہی بٹھلایا گیا تھا اور جو کچھ بھی کیا گیا ہے وہ سوچ وچار کر بنائی ہوئی یوجنا کے تحت کیا گیا ہے.

کرشی منتری نے دو ہی دن پہلے چینی کے بھاؤ گھٹانے کی آشا دلائی تھی، پر ارتھ منتری نے ودیشی چینی پر محصول بڑھاکر اور دیشی چینی کی پیداوار پر نیا ٹیکس بٹھاکر چینی کا بھاؤ دو پیسے سیر بڑھا دیا. اسی طرح ٹیکس بڑھاکر کپڑے کی قیمت بھی دو پیسہ گز بڑھا دی. کچھ چیزوں پر سے ٹیکسوں میں کمی کرکے اُونی کپڑے، سینے کی مشینیں، بجلی کے پنکھے، بجلی کے لٹو، بجلی کی ٹیوب، بجلی کی اسٹوریج بیٹریاں، بجلی کی ڈرائی بیٹریاں، اخباری کاغذ کے علاوہ دوسرے کاغذ، گتے

घाटा ही घाटा दिखायाग या है. सब सूबों को मिला कर इस साल में विकास योजनाओं पर दो अरब से कुछ ज्यादा खर्च किया जा रहा है.

भारत सरकार के रेलवे बजट में साल की कुल आमदनी 292 करोड़ से ऊपर कूती गई है. इसमें से रेलवे का कुल खर्च 214 करोड़ निकाल कर और बाक़ी में से 35 करोड़ टूट फूट फंड में डालकर रेलवे को 43 करोड़ से ऊपर की बचत होती है. इस 43 करोड़ में से 36 करोड़ भारत सरकार के खर्च के लिये देने के बाद भी रेलवे के पास लगभग 8 करोड़ फ़ालतू बचे रहते हैं. खर्च जो बेतहाशा बढ़ा है वह अलग रहा.

आम बजट में 30 करोड़ का घाटा दिखाकर इक्कीस बाईस करोड़ का घाटा नये टैक्स लगा कर पूरा कर लिया गया है. 54-55 के बजट में आमदनी चार अरब, इक्यावन करोड़, तिहत्तर लाख; खर्च चार अरब सरसठ करोड़ नौ लाख, घाटा पन्द्रह करोड़ छत्तीस लाख कूता गया था. उसमें अब पन्द्रह करोड़ की जगह केवल पांच करोड़ घाटा होने की उम्मीद है. एक ही साल में चार अरब सरसठ करोड़ का खर्च क़रीब क़रीब पांच अरब तक पहुंच गया. 55-56 के बजट में आमदनी चार अरब इक्यावन करोड़ से बढ़कर चार अरब अड़सठ करोड़ तक पहुंच गई है. लेकिन खर्च के बढ़ जाने से तीस करोड़ सत्तरह लाख का घाटा रह जाने का अन्दाज़ा किया गया है. उसके लिये नये टैक्स लगा कर लगभग बाईस करोड़ की नई आमदनी का इन्तज़ाम कर लिया गया है. फिर भी आठ करोड़ सैंतालीस लाख का घाटा पूरा किये बिना ही बजट को छोड़ दिया गया है.

नये टैक्स

रेलवे बजट और आम बजट दोनों में ही नये टैक्स लगाये गये हैं और पुराने टैक्सों में कतरब्योंत भी की गई है. इस कतरब्योंत की वजह से ही दोनों बजटों को जादूगरों का खेल कहना चाहिये. रेलवे बजट यदि छोटे जादूगर का छोटा खेल है, तो आम बजट बड़े जादूगर का बड़ा खेल. अफ़सोस तो यह है कि रेलवे बजट में रेलवे के टिकट और भाड़े की दरों में बढ़ती करके भी यह दिखाने की कोशिश की गई है कि जनता पर कोई भार नहीं डाला गया. रेलवे सफ़र और माल भेजने की दूरी को तीन भागों में बांटा गया है. 150 मील तक सफ़र करने वालों के लिये रेलवे के टिकट की दर बढ़ा दी गई है. 151 से 300 मील तक सफ़र करने वालों के लिये किराये की दर पुरानी ही रहने दी गई है. 300 मील से ऊपर सफ़र करने वालों के लिये किराये की दर कम कर दी गई है. हम यह नहीं भूल सकते कि हमारे ग़रीब मुल्क में ज्यादातर रोज़ाना सफ़र करने वाले वे ग़रीब लोग हैं जो मुश्किल से कभी डेढ़ सौ या उससे अधिक मील का सफ़र

گھاٹا ھی گھاٹا دکھایا گیا ھے ۔ سب صوبوں کو ملا کر اِس سال میں وکاس یوجناؤں پر دو ارب سے کچھ زیادہ خرچ کیا جا رہا ھے ۔

بھارت سرکار کے ریلوے بجٹ میں سال کی کل آمدنی 292 کروڑ سے اوپر کوتی گئی ھے. اِس میں سے ریلوے کا کل خرچ 214 کروڑ نکال کر اور باقی میں سے 35 کروڑ ٹوٹ پھوٹ فنڈ میں ڈال کر ریلوے کو 43 کروڑ سے اوپر کی بچت ہوتی ھے . اِس 43 کروڑ میں سے 36 کروڑ بھارت سرکار کے خرچ کے لئے دینے کے بعد بھی ریلوے کے پاس لگ بھگ 8 کروڑ فالتو بچے رہتے ھیں ۔ خرچ جو بےتحاشا بڑھا ھے وہ الگ رہا ۔

عام بجٹ میں 30 کروڑ کا گھاٹا دکھا کر اکیس بائیس کروڑ کا گھاٹا نئے ٹیکس لگا کر پورا کر لیا گیا ھے ۔ 54-55 کے بجٹ میں آمدنی چار ارب، اکیاون کروڑ، تہتر لاکھ؛ خرچ چار ارب سرسٹھ کروڑ، نو لاکھ؛ گھاٹا پندرہ کروڑ چھتیس لاکھ کوتا گیا تھا ۔ اُس میں اب پندرہ کروڑ کی جگہ کیول پانچ کروڑ گھاٹا ہونے کی اُمید ھے ۔ ایک ھی سال میں چار ارب سرسٹھ کروڑ کا خرچ قریب قریب پانچ ارب تک پہونچ گیا ۔ 55-56 کے بجٹ میں آمدنی چار ارب اکیاون کروڑ سے بڑھ کر چار ارب اڑسٹھ کروڑ تک پہونچ گئی ھے ۔ لیکن خرچ کے بڑھ جانے سے تیس کروڑ سترہ لاکھ کا گھاٹا رہ جانے کا اندازہ کیا گیا ھے ۔ اُس کے لئے نئے ٹیکس لگا کر لگ بھگ بائیس کروڑ کی نئی آمدنی کا اِنتظام کر لیا گیا ھے ۔ پھر بھی آٹھ کروڑ سینتالیس لاکھ کا گھاٹا پورا کئے بنا ھی بجٹ کو چھوڑ دیا گیا ھے ۔

نئے ٹیکس

ریلوے بجٹ اور عام بجٹ دونوں میں ھی نئے ٹیکس لگائے گئے ھیں اور پرانے ٹیکسوں میں کتربیونت بھی کی گئی ھے ۔ اِس کتربیونت کی وجہ سے ھی دونوں بجٹوں کو جادوگروں کا کھیل کہنا چاھئے ۔ ریلوے بجٹ یدی چھوٹے جادوگر کا چھوٹا کھیل ھے، تو عام بجٹ بڑے جادوگر کا بڑا کھیل ۔ افسوس تو یہ ھے کہ ریلوے بجٹ میں ریلوے کے ٹکٹ اور بھاڑے کی دروں میں بڑھتی کر کے بھی یہ دکھانے کی کوشش کی گئی ھے کہ جنتا پر کوئی بھار نہیں ڈالا گیا ۔ ریلوے سفر اور مال بھیجنے کی دوری کو تین بھاگوں میں بانٹا گیا ھے ۔ 150 میل تک سفر کرنے والوں کے لئے ریلوے کے ٹکٹ کی در بڑھا دی گئی ھے ۔ 151 سے 300 میل تک سفر کرنے والوں کے لئے کرائے کی در پرانی ھی رہنے دی گئی ھے ۔ 300 میل سے اوپر سفر کرنے والوں کے لئے کرائے کی در کم کر دی گئی ھے ۔ ہم یہ نہیں بھول سکتے کہ ھمارے غریب ملک میں زیادہ تر روزانہ سفر کرنے والے وے غریب لوگ ھیں جو مشکل سے کبھی ڈیڑھ سو یا اُس سے ادھک میل کا سفر

हमारी राय

ہماری رائے

घाटे के बजट

फ़रवरी के महीने में सूबों की सरकारों और भारत सरकार के बजट पेश किये जाते हैं. बहुत से सूबों के और भारत सरकार के बजट पेश किये जा चुके हैं. बाक़ी बजट भी अगले 15 दिनों में पेश कर दिये जायेंगे. अब तक के बजटों में बम्बई सूबे के अलावा बाक़ी सभी सूबों के और केन्द्र के बजट में भी घाटा दिखाया गया है. घाटा जिस शकल में दिखाया गया है, उससे ऐसा मालूम होता है जैसे कि वह किसी ख़ास मक़सद से दिखलाया गया हो. यह घाटा इतना भी नहीं है जिसको आसानी से पूरा नहीं किया जा सकता था. अधिकतर सूबों में घाटे को पूरा करने की कोई ख़ास कोशिश नहीं की गई है और यह यक़ीन दिलाया गया है कि ख़र्च में कमी करके उसको साल के आख़िर में बराबर कर दिया जायगा. किसी भी सूबे में इसी वजह से कोई नये टैक्स नहीं लगाये गये. केवल मद्रास में घाटे को पूरा करने के लिये लगान पर दो आना रुपया सरचार्ज, तम्बाकू पर बिक्री टैक्स और इनके सिवा कुछ दूसरे टैक्स भी लगाये गये हैं. किसी भी सूबे में जनता को कोई रिआयत या राहत नहीं दी गई है, सिवाय इसके कि मद्रास में मिडल तक की पढ़ाई उन बच्चों के लिये मुफ़्त कर दी गई है जिनके मां बाप की आमदनी सालाना 1200 रुपया या इससे कम है और मध्य भारत में लड़कियों की पढ़ाई हाई स्कूल तक मुफ़्त कर दी गई है. मध्य भारत में रोडवेज़ के किराये में भी डेढ़ पाई फ़ी मील की कमी की गई है.

आजकल के अर्थशास्त्री घाटे का बजट पेश करने में ही कामयाबी मानते हैं. हमारे देश में पंचसाला योजना के कारन भी घाटे का बजट पेश करना अधिक मुनासिब समझा गया है. इसकी एक वजह यह भी है कि बजट में घाटा दिखाकर ही विकास योजनाओं पर अधिक से अधिक ख़र्च किया जा सकता है और उस ख़र्च की आलोचना करने वालों का मुंह बन्द किया जा सकता है. यह पंचसाला योजना का पांचवा साल है. इसलिये भी सब बजटों में

گھاٹے کے بجٹ

فروری کے مہینے میں صوبوں کی سرکاروں اور بھارت سرکار کے بجٹ پیش کئے جاتے ہیں . بہت سے صوبوں کے اور بھارت سرکار کے بجٹ پیش کئے جا چکے ہیں . باقی بجٹ بھی اگلے 15 دنوں میں پیش کر دیئے جائیں گے . اب تک کے بجٹوں میں بمبئی صوبے کے علاوہ باقی سبھی صوبوں کے اور کیندر کے بجٹ میں بھی گھاٹا دکھایا گیا ہے . گھاٹا جس شکل میں دکھایا گیا ہے، اس سے ایسا معلوم ہوتا ہے جیسے کہ وہ کسی خاص مقصد سے دکھلایا گیا ہو . یہ گھاٹا اتنا بھی نہیں ہے جس کو آسانی سے پورا نہیں کیا جا سکتا تھا . ادھک تر صوبوں میں گھاٹے کو پورا کرنے کی کوئی خاص کوشش نہیں کی گئی ہے اور یہ یقین دلایا گیا ہے کہ خرچ میں کمی کر کے اس کو سال کے آخر میں برابر کر دیا جائے گا . کسی بھی صوبے میں اسی وجہ سے کوئی نئے ٹیکس نہیں لگائے گئے . کیول مدراس میں گھاٹے کو پورا کرنے کے لئے لگان پر دو آنہ روپیہ سرچارج، تمباکو پر بکری ٹیکس اور ان کے سوا کچھ دوسرے ٹیکس بھی لگائے گئے ہیں . کسی بھی صوبے میں جنتا کو کوئی رعایت یا راحت نہیں دی گئی ہے، سوائے اس کے کہ مدراس میں مڈل تک کی پڑھائی ان بچوں کے لئے مفت کر دی گئی ہے جن کے ماں باپ کی آمدنی سالانہ 1200 روپیہ یا اس سے کم ہے . اور مدھیہ بھارت میں لڑکیوں کی پڑھائی ہائی اسکول تک مفت کر دی گئی ہے . مدھیہ بھارت میں روڈویز کے کرائے میں بھی ڈیڑھ پائی فی میل کی کمی کی گئی ہے .

آجکل کے ارتھ شاستری گھاٹے کا بجٹ پیش کرنے میں ہی کامیابی مانتے ہیں . ہمارے دیش میں پنچسالہ یوجنا کے کارن بھی گھاٹے کا بجٹ پیش کرنا ادھک مناسب سمجھا گیا ہے . اس کی ایک وجہ یہ بھی ہے کہ بجٹ میں گھاٹا دکھا کر ہی وکاس یوجناؤں پر ادھک سے ادھک خرچ کیا جاسکتا ہے اور اس خرچ کی آلوچنا کرنے والوں کا منہ بند کیا جا سکتا ہے . یہ پنچسالہ یوجنا کا پانچواں سال ہے . اس لئے بھی سب بجٹوں میں

पास आया. उसके पास एक दरी थी और उसके हाथ में कोई चीज़ थी जिसे उसने दरी से ढक रक्खा था. उसने कहा—'ऐ अल्लाह के रसूल ! जब मैं आपके पास आ रहा था तो पेड़ों के एक झुन्ड के बीच से मैं गुज़रा. मुझे वहां चिड़ियों के बच्चों की आवाज़ सुनाई दी. मैंने उन्हें पकड़ लिया. बच्चों की मां मेरे चारों तरफ़ फड़फड़ाने लगी. मैंने बच्चों पर से दरी हटा दी और मां उनके पास आकर बैठ गई. तब मैंने उन सब को अपनी दरी में लपेट लिया. जिन बच्चों को मैंने पकड़ा है वह यह हैं.' पैग़म्बर ने कहा—'इन्हें तुम नीचे उतारो.' उसने उन बच्चों को नीचे रख दिया. मां बच्चों के साथ रही और किसी तरह उनसे अलग न हुई. पैग़म्बर ने अपने सहाबियों से कहा—'अपने बच्चों के साथ मां का यह प्रेम देखकर क्या तुम लोगों को आश्चर्य हो रहा है ?' उन्होंने कहा—'हां ऐ अल्लाह के रसूल !' पैग़म्बर ने कहा—'क़सम उस ज़ात पाक की जिसने मेरे घट में सच्चाई को जगह दी है ! इन बच्चों की मां से कहीं ज़्यादा अल्लाह अपने बन्दों से प्रेम करता है. इन सबको लेकर तुम उसी जगह वापिस जाओ और उन्हें वहीं छोड़ दो जहां से तुमने उन्हें पकड़ा है. इनकी मां को भी साथ ले जाओ और वहीं छोड़ दो.' तब वह आदमी उन सबको लेकर वापिस चला गया." (अबूदाऊद)

एक और हदीस है कि :—

"एक चिड़िया के घोंसले से किसी ने कुछ अन्डे चुरा लिये. इस पर मुहम्मद साहब ने उन अन्डों को घोंसले में वापिस रखवा दिया." (बुख़ारी)

बुख़ारी, मुसलिम, अबूदाऊद और नसाई में अबू हुरैरा के हवाले से यह हदीस दर्ज है, मुहम्मद साहब ने एक बार कहा कि :—

"पिछले पैग़म्बरों में से एक को किसी चींटी ने काट लिया. इस पर उस पैग़म्बर ने उन चींटियों के घर यानी बिल को जला देने का हुकुम दे दिया. अल्लाह ने उस पैग़म्बर पर 'वही' भेजी यानी उसे अपने घट में अल्लाह की यह आवाज़ सुनाई दी कि—'अगर एक चींटी ने तुम्हें काट लिया तो तुम ने उनकी क़ौम की क़ौम को जला डाला ! उनमें भी तुम्हारी ही तरह जान थी. वह भी तुम्हारी ही तरह अपने अल्लाह की हम्द यानी स्तुति गाते थे !"

जाबिर ने बयान किया है कि :—

"मुहम्मद साहब के पास से एक आदमी एक गधा लिये गुज़रा. उस गधे का मुंह दग़ा हुआ था. पैग़म्बर ने यह देख कर कहा—'ख़ुदा का क़हर (शाप) उस पर जिसने इस गधे को दाग़ा है !' मुहम्मद साहब ने किसी भी जानवर के मुंह पर मारने या उसे दाग़ने से मना किया है." (मुसलिम, अबूदाऊद, तिरमिज़ी)

پاس آیا . اُس کے پاس ایک دری تھی اور اُس کے ہاتھ میں کوئی چیز تھی جسے اُس نے دری سے ڈھک رکھا تھا . اُس نے کہا —'اے اللہ کے رسول ! جب میں آپ کے پاس آ رہا تھا تو پیڑوں کے ایک جھنڈ کے بیچ سے میں گزرا . مجھے وہاں چڑیوں کے بچوں کی آواز سنائی دی . میں نے اُنہیں پکڑ لیا . بچوں کی ماں میرے چاروں طرف پھڑپھڑانے لگی . میں نے بچوں پر سے دری ہٹا دی اور ماں اُن کے پاس آ کر بیٹھ گئی . تب میں نے اُن سب کو اپنی دری میں لپیٹ لیا . جن بچوں کو میں نے پکڑا ہے وہ یہ ہیں .' پیغمبر نے کہا —' اِنہیں تم نیچے اُتارو .' اُس نے اُن بچوں کو نیچے رکھ دیا . ماں بچوں کے ساتھ رہی اور کسی طرح اُن سے الگ نہ ہوئی . پیغمبر نے اپنے صحابیوں سے کہا —' اپنے بچوں کے ساتھ ماں کا یہ پریم دیکھکر کیا تم لوگوں کو آشچریہ ہو رہا ہے ؟' اُنہوں نے کہا —' ہاں اے اللہ کے رسول !' پیغمبر نے کہا —' قسم اُس ذات پاک کی جس نے میرے گھٹ میں سچائی کو جگہ دی ہے ! اِن بچوں کی ماں سے کہیں زیادہ اللہ اپنے بندوں سے پریم کرتا ہے . اِن سب کو لے کر تم اُسی جگہ واپس جاؤ اور اُنہیں وہیں چھوڑ دو جہاں سے تم نے اُنہیں پکڑا ہے . اِن کی ماں کو بھی ساتھ لے جاؤ اور وہیں چھوڑ دو' . تب وہ آدمی اُن سب کو لے کر واپس چلا گیا ." (ابوداؤد)

ایک اور حدیث ہے کہ :—

" ایک چڑیا کے گھونسلے سے کسی نے کچھ انڈے چرا لئے . اِس پر محمد صاحب نے اُن انڈوں کو گھونسلے میں واپس رکھوا دیا ." (بخاری)

' بخاری ' مسلم ' ابوداؤد اور نسائی میں ابو ہریرہ کے حوالے سے یہ حدیث درج ہے ' محمد صاحب نے ایک بار کہا کہ :—

" پچھلے پیغمبروں میں سے ایک کو کسی چیونٹی نے کاٹ لیا . اِس پر اُس پیغمبر نے اُن چیونٹیوں کے گھر یعنی بل کو جلا دینے کا حکم دے دیا . اللہ نے اُس پیغمبر پر وحی بھیجی یعنی اُسے اپنے گھٹ میں اللہ کی یہ آواز سنائی دی کہ —'اگر ایک چیونٹی نے تمہیں کاٹ لیا تو تم نے اُن کی قوم کی قوم کو جلا ڈالا ! اُن میں بھی تمہاری ہی طرح جان تھی . وہ بھی تمہاری ہی طرح اپنے اللہ کی حمد یعنی اِستتی گاتے تھے !' "

جابر نے بیان کیا ہے کہ :—

" محمد صاحب کے پاس سے ایک آدمی ایک گدھا لئے گزرا . اُس گدھے کا منہ دغا ہوا تھا . پیغمبر نے یہ دیکھکر کہا — ' خدا کا قہر (شاپ) اُس پر جس نے اِس گدھے کو داغا ہے !' محمد صاحب نے کسی بھی جانور کے منہ پر مارنے یا اُسے داغنے سے منع کیا ہے ." (مسلم ' ابوداؤد ' ترمذی)

मुहम्मद साहब ने फिर कहा कि :—'इस जानवर के साथ जिसका खुदा ने तुम्हें मालिक बनाया है बुरा सलूक करते हुए क्या तुम खुदा के खौफ़ से नहीं डरते ? यह ऊंट मुझसे शिकायत कर रहा है कि तुम इसको सताते हो और इतना काम लेते हो कि इसे थका देते हो." (अबूदाऊद)

यात्रा में जानवरों को आराम पहुंचाने और उनके खाने पीने का ठीक ठीक प्रबन्ध करने पर मुहम्मद साहब बहुत जोर दिया करते थे. खालिद बिन मदन का बयान है कि मुहम्मद साहब ने एक दिन लोगों से कहा :—

"सचमुच अल्लाह दयालू है और वह उससे प्रेम करता है जो दूसरों पर दया करता है, अल्लाह ऐसे ही आदमी से खुश होता है और उसी की सहायता करता है. अल्लाह जुल्म करने वालों की मदद नहीं करता. इसलिये जब तुम बेजबान जानवरों पर सवारी करो तो जहां वह रुकना चाहें वहां ही उन्हें रोक दो. और अगर तुम्हारा रास्ता कंकरीली और बंजर जमीन पर से हो तो अपने साथ जानवरों के लिये काफ़ी चारा लेकर चलो. और तुम्हें चाहिये कि रात को सफ़र करो क्योंकि दिन के मुक़ाबले रात को तुम दोनों ज्यादा आराम से सफर कर सकते हो." (मालिक)

अबू हुरैरा का बयान है कि मुहम्मद साहब ने एक बार लोगों से कहा कि—"अपने जानवरों की पीठ को खड़ा होने के लिये चबूतरा न बनाओ. अल्लाह ने उन्हें तुम्हारी मदद के लिये पैदा किया है ताकि तुम दूर दूर के देशों में जा सको जहां बग़ैर इन जानवरों की सहायता के पहुंचने में तुम्हें बड़ी मुशकिलें झेलनी पड़तीं." (अबूदाऊद)

चिड़ियों के पकड़ने, उनको सताने, उनके अन्डे घोंसलों मे उठाने और उनके बच्चों को पकड़ने को मुहम्मद साहब ने मना किया है. अबदुर्रहमान का बयान है कि उसका बाप अबदुल्ला कहा करता था कि :—

"हम लोग एक दिन मुहम्मद साहब के साथ सफ़र कर रहे थे. एक छोटी सी चिड़िया पर हमारी निगाह गई. उसके साथ दो बच्चे थे. हमने दोनों बच्चों को पकड़ लिया. उनकी मां चारों तरफ़ फड़फड़ाने लगी. इतने में मुहम्मद साहब आ गए. उन्होंने यह देखकर कहा :—'इसके बच्चों को पकड़ कर इसे किसने दुख पहुंचाया है ? इसके बच्चों को इसे लौटा दो.' हमने चींटियों के एक बिल को भी आग लगा दी थी. मुहम्मद साहब ने जब उसे देखा तो पूछा कि :— 'इसे किसने जलाया है ?' हमने कहा :—'यह काम हम लोगों ने किया है.' पैग़म्बर ने कहा :—'उस अल्लाह के सिवा जो आग का मालिक है किसी को यह हक़ नहीं है कि किसी दूसरे को आग में जलने की सजा दे." (अबूदाऊद)

आमिर का एक बयान है जो अबूदाऊद में मुहम्मद बिन इसहाक़ की जबानी दर्ज है. आमिर कहता है कि :—

"हम लोग पैग़म्बर के साथ थे जब एक आदमी उनके

محمد صاحب نے پھر کہا کہ :—' اِس جانور کے ساتھ جس کا خدا نے تمھیں مالک بنایا ہے برا سلوک کرتے ہوئے کیا تم خدا کے خوف سے نہیں ڈرتے ؟ یہ اونٹ مجھ سے شکایت کر رہا ہے کہ تم اِس کو ستاتے ہو اور اتنا کام لیتے ہو کہ اِسے تھکا دیتے ہو." (ابوداؤد)

یاترا میں جانوروں کو آرام پہونچانے اور اُن کے کھانے پینے کا ٹھیک ٹھیک پربندھ کرنے پر محمد صاحب بہت زور دیا کرتے تھے. خالد بن معدن کا بیان ہے کہ محمد صاحب نے ایک دن لوگوں سے کہا :—

" سچ مچ اللہ دیالو ہے اور وہ اُس سے پریم کرتا ہے جو دوسروں پر دیا کرتا ہے' اللہ ایسے ہی آدمی سے خوش ہوتا ہے اور اُسی کی سہائتا کرتا ہے . اللہ ظلم کرنے والوں کی مدد نہیں کرتا . اِس لئے جب تم بے زبان جانوروں پر سواری کرو تو جہاں وہ رکنا چاہیں وہاں ہی اُنہیں روک دو . اور اگر تمہارا راستہ کنکریلی اور بنجر زمین پر سے ہو تو اپنے ساتھ جانوروں کے لئے کافی چارا لے کر چلو . اور تمہیں چاہئے کہ رات کو سفر کرو کیونکہ دن کے مقابلے رات کو تم دونوں زیادہ آرام سے سفر کر سکتے ہو." (مالک)

ابو ہریرہ کا بیان ہے کہ محمد صاحب نے ایک بار لوگوں سے کہا کہ :—" اپنے جانوروں کی پیٹھ کو کھڑا ہونے کے لئے چبوترہ نہ بناؤ . اللہ نے اُنہیں تمہاری مدد کے لئے پیدا کیا ہے تاکہ تم دور دور کے دیشوں میں جا سکو جہاں بغیر اِن جانوروں کی سہائتا کے پہونچنے میں تمہیں بڑی مشکلیں جھیلنی پڑتیں ." (ابو داؤد) .

چڑیوں کے پکڑنے' اُن کو ستانے' اُن کے انڈے گھونسلوں سے اُٹھانے اور اُن کے بچوں کو پکڑنے کو محمد صاحب نے منع کیا ہے. عبدالرحمن کا بیان ہے کہ اُس کا باپ عبداللہ کہا کرتا تھا کہ :—

" ہم لوگ ایک دن محمد صاحب کے ساتھ سفر کر رہے تھے . ایک چھوٹی سی چڑیا پر ہماری نگاہ گئی . اُس کے ساتھ دو بچے تھے . ہم نے دونوں بچوں کو پکڑ لیا . اُن کی ماں چاروں طرف پھڑ پھڑانے لگی . اتنے میں محمد صاحب آ گئے . اُنہوں نے یہ دیکھ کر کہا :—' اِس کے بچوں کو پکڑ کر اِسے کس نے دکھ پہونچایا ہے ؟ اِس کے بچوں کو اِسے لوٹا دو .' ہم نے چیونٹیوں کے ایک بل کو بھی آگ لگا دی تھی . محمد صاحب نے جب اُسے دیکھا تو پوچھا کہ :—' اِسے کس نے جلایا ہے ؟' ہم نے کہا :—' یہ کام ہم لوگوں نے کیا ہے .' پیغمبر نے کہا :— ' اُس اللہ کے سوا جو آگ کا مالک ہے کسی کو یہ حق نہیں ہے کہ وہ کسی دوسرے کو آگ میں جلنے کی سزا دے ." (ابو داؤد)

عامر کا ایک بیان ہے جو ابوداؤد میں محمد بن اسحاق کی زبانی درج ہے . عامر کہتا ہے کہ :—

" ہم لوگ پیغمبر کے ساتھ تھے جب ایک آدمی اُن کے

अपने मन में कहा—'जिस तरह की प्यास मुझे सता रही थी उसी तरह की प्यास से बेचैन होकर यह कुत्ता भी पानी के इस सोते के पास आया है'. वह आदमी दोबारा कुवें में घुसा और अपने जूते में पानी भरकर जूते को मुंह से थामे हुए बाहर निकला और उसने उस कुत्ते को पानी पिलाया. मुहम्मद साहब ने यह सुनकर कहा कि—'उस आदमी के इस काम से खुश होकर अल्लाह ने उसके गुनाह माफ़ कर दिये.' लोगों ने पूछा कि—'ऐ रसूल ! क्या हमारे उस सलूक का भी इनाम मिलेगा जो हम पशुओं के साथ करते हैं ?' पैग़म्बर ने कहा कि—'हमारी हर उस नेकी का इनाम मिलेगा जो हम किसी भी जानदार के साथ करते हैं'." ('बुखारी' 'मुसलिम' 'अबूदाऊद' 'मालिक')

मुहम्मद साहब घोड़ों से बहुत प्यार करते थे. अबू हुरैरा की एक हदीस है कि :—

"घोड़ियों को भी मुहम्मद साहब प्यार से घोड़ा कहा करते थे." (अबू दाऊद)

उतबा बिन अब्दुस्सलमी ने लिखा है कि मुहम्मद साहब ने लोगों से कहा कि :—

"घोड़े की चोटी मत काटो क्योंकि उससे घोड़े की शोभा है, और न उसकी अयाल काटो क्योंकि इस से घोड़ा अपनी रक्षा करता है, न उसकी दुम काटो क्योंकि उससे वह अपनी मक्खियां उड़ाता है." (अबू दाऊद)

यहिया बिन सईद का कहना है कि :—

"एक दिन लोगों ने देखा कि मुहम्मद साहब अपनी चादर से अपने घोड़े का मुंह पोंछ रहे हैं. जब लोगों ने उनसे वजह पूछी तो वह कहने लगे कि :—'अल्लाह ने रात मेरे घोड़े के सम्बन्ध में मुझे तंबीह की है'." (मालिक)

अरब में घोड़ा कम लोग रखते थे लेकिन ऊंट आम तरीक़े से सब लोगों के पास होते थे. मुहम्मद साहब की पत्नी आयशा का बयान है :—

"मैं एक दिन एक अड़ियल ऊंट पर सवार थी. उसे क़ाबू में करने के लिये मैंने उसकी नकेल ज़ोर से खींची. इस पर पैग़म्बर ने मुझसे कहा कि—'तुम्हारा फ़र्ज़ है कि तुम जानवर के साथ मुहब्बत से पेश आओ."

अबदुल्ला बिन जाफ़र ने बयान किया है कि :—

"एक बार मुहम्मद साहब एक अनसारी के बाग़ में ठहरे हुए थे. एक ऊंट मुहम्मद साहब के पास आकर बुरी तरह सिसकने लगा. ऊंट की आंखों से आंसू टपक रहे थे. मुहम्मद साहब ऊंट के पास गए और उन्होंने उसके सर को थपथपाया. ऊंट को ढारस हुई. पैग़म्बर ने पूछा कि—'इस ऊंट का मालिक कौन है ?' एक नौजवान अनसारी ने जवाब दिया—'ऐ अल्लाह के रसूल ! यह ऊंट मेरा है.'

اپنے من میں کہا :—'جس طرح کی پیاس مجھے ستا رہی تھی اُسی طرح کی پیاس سے بےچین ہوکر یہ کتا بھی پانی کے اِس سوتے کے پاس آیا ہے.' وہ آدمی دوبارہ کنویں میں گھسا اور اپنے جوتے میں پانی بھرکر جوتے کو منھ سے تھامے ہوئے باہر نکلا اور اُس نے اُس کتے کو پانی پلایا . محمد صاحب نے یہ سن‌کر کہا کہ—'اُس آدمی کے اِس کام سے خوش ہوکر اللہ نے اُس کے گناہ معاف کردیئے.' لوگوں نے پوچھا کہ—'اے رسول ! کیا ہمارے اُس سلوک کا بھی انعام ملےگا جو ہم پشوؤں کے ساتھ کرتے ہیں ؟' پیغمبر نے کہا کہ—'ہماری ہر اُس نیکی کا اِنعام ملے گا جو ہم کسی بھی جاندار کے ساتھ کرتے ہیں ." ('بخاری' 'مسلم' 'ابوداؤد' 'مالک')

محمد صاحب گھوڑوں سے بہت پیار کرتے تھے . ابو ہریرہ کی ایک حدیث ہے کہ :—

"گھوڑیوں کو بھی محمد صاحب پیار سے گھوڑا کہا کرتے تھے." (ابوداؤد)

اتبہ بن عبدالسلمی نے لکھا ہے کہ محمد صاحب نے لوگوں سے کہا کہ :—

"گھوڑے کی چوٹی مت کاٹو کیونکہ اُس سے گھوڑے کی شوبھا ہے' اور نہ اُس کی ایال کاٹو کیونکہ اِس سے گھوڑا اپنی رکشا کرتا ہے' نہ اُس کی دم کاٹو کیونکہ اُس سے وہ اپنی مکھیاں اُڑاتا ہے ." (ابوداؤد)

یحییٰ بن سعید کا کہنا ہے کہ :—

"ایک دن لوگوں نے دیکھا کہ محمد صاحب اپنی چادر سے اپنے گھوڑے کا منھ پونچھ رہے ہیں . جب لوگوں نے اُن سے وجہ پوچھی تو وہ کہنے لگے کہ :—'اللہ نے رات میرے گھوڑے کے سمبندھ میں مجھے تنبیہ کی ہے ." (مالک)

عرب میں گھوڑا کم لوگ رکھتے تھے لیکن اُونٹ عام طریقہ سے سب لوگوں کے پاس ہوتے تھے . محمد صاحب کی پتنی عائشہ کا بیان ہے :—

" میں ایک دن ایک اڑیل اونٹ پر سوار تھی . اُسے قابو میں کرنے کے لئے میں نے اُس کی نکیل زور سے کھینچی . اِس پر پیغمبر نے مجھ سے کہا کہ—' تمہارا فرض ہے کہ تم جانور کے ساتھ محبت سے پیش آؤ . "

عبداللہ بن جعفر نے بیان کیا ہے کہ :—

" ایک بار محمد صاحب ایک انصاری کے باغ میں ٹھہرے ہوئے تھے . ایک اونٹ محمد صاحب کے پاس آ کر بری طرح سسکنے لگا . اونٹ کی آنکھوں سے آنسو ٹپک رہے تھے . محمد صاحب اونٹ کے پاس گئے اور اُنہوں نے اُس کے سر کو تھپتھپایا. اونٹ کو ڈھارس ہوئی . پیغمبر نے پوچھا کہ—'اِس اونٹ کا مالک کون ہے ؟' ایک نوجوان انصاری نے جواب دیا—' اے اللہ کے رسول ! یہ اونٹ میرا ہے'

यह देखकर उनसे कहा—'बेजबान पशुओं को घायल मत करो."

इब्न अब्बास का बयान है कि मुहम्मद साहब ने एक जगह कहा कि :—

"उन चीजों को अपने तीरों का निशाना न बनाओ जो जानदार हैं." (मुसलिम, तिरमिजी, नसाई)

इब्न उमर और अबू हुरैरा का बयान है कि :—

"किसी औरत ने एक बिल्ली को बांध दिया यहां तक कि वह बंधे बंधे भूक से मर गई. न तो उसने उसे खाना दिया और न ही उसे खोला कि वह कीड़े मकोड़े खाकर अपना पेट भर सकती. मुहम्मद साहब को जब यह मालूम हुआ तो उन्होंने उस औरत को अल्लाह के अजाब से डराया." (बुखारी, मुसलिम)

जाबिर ने बयान किया है कि :—

"किसी भी जानदार को बांध कर मारने से मुहम्मद साहब ने मना किया है." (मुसलिम)

इब्न अब्बास का बयान है कि :—

"बेजबान पशुओं को एक दूसरे से लड़ाना मुहम्मद साहब ने सख्त मना किया है." (अबूदाऊद और तिरमजी)

अबू हुरैरा के हवाले से मुहम्मद साहब की एक हदीस है कि :—

"एक औरत बदचलनी में पकड़ी गई. उसे सजा मिलने वाली थी. इतने में वह एक कुवें के पास से जा रही थी. वहां उसने एक कुत्ते को देखा. कुत्ता प्यास से तड़प रहा था. उसकी जबान बाहर निकल आई थी. मारे प्यास के वह मरने के क़रीब था. यह देखकर उस औरत ने अपना छोटा सा जूता उतारा और उसे अपनी चादर से बांधकर कुवें में लटकाया. इस तरह कुवें से पानी निकाल कर उसने उस कुत्ते को पिलाया और उस की जान बचाई. मुहम्मद साहब को जब यह मालूम हुआ तो उन्होंने उस का पहला क़सूर माफ़ कर दिया. किसी ने पूछा—'ऐ पैग़म्बर! तो क्या जानवरों के साथ जो हम सलूक करेंगे उसका भी बदला हमें मिलेगा?' मुहम्मद साहब ने जवाब दिया—'उन सब के साथ नेकी करने का हमें बदला मिलेगा जिन में दिल है और जो सुख दुख महसूस करते हैं'." (बुख़ारी, मुसलिम)

इसी तरह की एक दूसरी हदीस अबू हुरैरा की जबानी यह मिलती है :—

"एक बार एक आदमी को चलते चलते सख्त प्यास लगी. उसको एक कुवां मिला जिस में उतर कर उसने अपनी प्यास बुझाई. बाहर आने पर उसने देखा कि एक कुत्ता जबान निकाले प्यास से मिट्टी चाट रहा है. उस आदमी ने

یہ دیکھکر اُن سے کہا—'بے زبان پشوؤں کو گھائل مت کرو ."

ابن عباس کا بیان ہے کہ محمد صاحب نے ایک جگہ کہا کہ :—

"اُن چیزوں کو اپنے تیروں کا نشانہ نہ بناؤ جو جاندار ہیں ." (مسلم، ترمذی، نسائی)

ابن عمر اور ابو ہریرہ کا بیان ہے کہ :—

"کسی عورت نے ایک بلی کو باندھ دیا یہاں تک کہ وہ بندھے بندھے بھوک سے مر گئی . نہ تو اُس نے اُسے کھانا دیا اور نہ ہی اُسے کھولا کہ وہ کیڑے مکوڑے کھا کر اپنا پیٹ بھر سکتی . محمد صاحب کو جب یہ معلوم ہوا تو اُنھوں نے اُس عورت کو اللہ کے عذاب سے ڈرایا ." (بخاری، مسلم)

جابر نے بیان کیا ہے کہ :—

"کسی بھی جاندار کو باندھ کر مارنے سے محمد صاحب نے منع کیا ہے ." (مسلم)

ابن عباس کا بیان ہے کہ :—

"بے زبان پشوؤں کو ایک دوسرے سے لڑانا محمد صاحب نے سخت منع کیا ہے ." (ابوداؤد اور ترمذی)

ابو ہریرہ کے حوالے سے محمد صاحب کی ایک حدیث ہے کہ :—

"ایک عورت بدچلنی میں پکڑی گئی . اُسے سزا ملنے والی تھی . اِتنے میں وہ ایک کنویں کے پاس سے جا رہی تھی . وہاں اُس نے ایک کتے کو دیکھا . کتا پیاس سے تڑپ رہا تھا . اُس کی زبان باہر نکل آئی تھی . مارے پیاس کے وہ مرنے کے قریب تھا . یہ دیکھکر اس عورت نے اپنا چھوٹا سا جوتا اُتارا اور اُسے اپنی چادر سے باندھ کر کنویں میں لٹکایا . اِس طرح کنویں سے پانی نکال کر اُس نے اُس کتے کو پلایا اور اُس کی جان بچائی . محمد صاحب کو جب یہ معلوم ہوا تو اُنھوں نے اُس کا پہلا قصور معاف کر دیا . کسی نے پوچھا—'اے پیغمبر! تو کیا جانوروں کے ساتھ جو ہم سلوک کریں گے اُس کا بھی بدلہ ہمیں ملے گا ؟' محمد صاحب نے جواب دیا—'اُن سب کے ساتھ نیکی کرنے کا ہمیں بدلہ ملے گا جن میں دل ہے اور جو سکھ دکھ محسوس کرتے ہیں ." (بخاری، مسلم)

اِسی طرح کی ایک دوسری حدیث ابو ہریرہ کی زبانی یہ ملتی ہے :—

"ایک بار ایک آدمی کو چلتے چلتے سخت پیاس لگی . اُس کو ایک کنواں ملا جس میں اُتر کر اُس نے اپنی پیاس بجھائی . باہر آنے پر اُس نے دیکھا کہ ایک کتا زبان نکالے پیاس سے مٹی چاٹ رہا ہے . اُس آدمی نے

मुहम्मद साहब का जानवरों से प्रेम

श्री मुजीब रिज़वी

मुहम्मद साहब के जीवन की घटनाएं जो किताबों में लिखी हुई मिलती हैं हदीसें कहलाती हैं. इन किताबों में छै ख़ास तौर पर मुस्तनद यानी प्रमाणिक मानी जाती हैं :— बुख़ारी, मुसलिम, अबूदाऊद, तिरमिज़ी, नसाई और अबू अब्दुल्ला. नीचे की हदीसें अधिकतर इन्हीं में से ली गई हैं.

अबुहुरैरा का बयान है कि :—

"लोगों ने एक दिन मुहम्मद साहब से पूछा—'ऐ रसूल! क्या हमारे उस सलूक का हमें कोई बदला मिलेगा जो हम पशुओं के साथ करते हैं ?' पैग़म्बर ने जवाब दिया—'हां! हमारी हर उस नेकी का बदला हमको मिलता है जो हम किसी भी जानदार के साथ करते हैं'" ('बुख़ारी', 'मुसलिम', 'अबूदाऊद', 'मालिक')

बार बार मुहम्मद साहब से पूछा जाता था और बार बार वह लोगों को समझाते थे कि आदमी को सब जानदारों के साथ प्रेम का बरताव करना चाहिये. अबुहुरैरा ही से एक दूसरी हदीस है :—

"किसी ने पूछा कि—'जानवरों के साथ अच्छा सलूक करने का क्या हमें बदला मिलेगा ?' पैग़म्बर ने कहा :— 'हमारे हर उस सलूक का बदला मिलता है जो हम किसी भी उस चीज़ के साथ करते हैं जिसमें जान है." ('बुख़ारी' 'मुसलिम')

शुरैद बिन सुवैद का बयान है कि मुहम्मद साहब ने एक मरतबा कहा कि :—

"जो आदमी ख़ाह मख़ाह किसी गौरैया को मारता है, क़यामत के दिन गौरैया ख़ुदा के सामने ऊंची आवाज़ से इन शब्दों में उसकी शिकायत करेगी :—'ऐ मेरे मालिक! इस आदमी ने ख़ाहमख़ाह मुझे मार डाला. मुझे मारने से इसे कोई फ़ायदा नहीं हुआ'." (नसाई)

इब्न उमर का बयान है कि मुहम्मद साहब ने एक मर्तबा कहा कि :—

"जो आदमी किसी गौरैया को मारता है या किसी उससे भी छोटे जानदार को मारता है, अल्लाह उस से जवाब तलब करेगा !"

अब्दुल्ला बिन जाफ़र से रिवायत है कि :—

"कुछ लोग एक दुम्बे को निशाना बनाकर उस पर तीर चला रहे थे. मुहम्मद साहब पास से निकले. उन्होंने

محمد صاحب کا جانوروں سے پریم

شری مجیب رضوی

محمد صاحب کے جیون کی گھٹنائیں جو کتابوں میں لکھی ہوئی ملتی ہیں حدیثیں کہلاتی ہیں ۔ ان کتابوں میں چھ خاص طور پر مستند یعنی پرمانک مانی جاتی ہیں :— بخاری، مسلم، ابوداؤد، ترمذی، نسائی اور ابو عبداللہ ۔ نیچے کی حدیثیں ادھک‌تر انہیں میں سے لی گئی ہیں ۔

ابوہریرہ کا بیان ہے کہ :—

"لوگوں نے ایک دن محمد صاحب سے پوچھا—'اے رسول! کیا ہمارے اس سلوک کا ہمیں کوئی بدلہ ملے گا جو ہم پشوؤں کے ساتھ کرتے ہیں ؟' پیغمبر نے جواب دیا—'ہاں! ہماری ہر اس نیکی کا بدلہ ہم کو ملتا ہے جو ہم کسی بھی جاندار کے ساتھ کرتے ہیں ۔'" ('بخاری' 'مسلم' 'ابوداؤد' 'مالک')

بار بار محمد صاحب سے پوچھا جاتا تھا اور بار بار وہ لوگوں کو سمجھاتے تھے کہ آدمی کو سب جانداروں کے ساتھ پریم کا برتاؤ کرنا چاہئے ۔ ابوہریرہ ہی سے ایک دوسری حدیث ہے :—

"کسی نے پوچھا کہ—'جانوروں کے ساتھ اچھا سلوک کرنے کا کیا ہمیں بدلہ ملے گا؟' پیغمبر نے کہا :—'ہمارے ہر اس سلوک کا بدلہ ملتا ہے جو ہم کسی بھی اس چیز کے ساتھ کرتے ہیں جس میں جان ہے ۔'" ('بخاری' 'مسلم')

شرید بن سوید کا بیان ہے کہ محمد صاحب نے ایک مرتبہ کہا کہ :—

"جو آدمی خواہ‌مخواہ کسی گوریا کو مارتا ہے، قیامت کے دن وہ گوریا خدا کے سامنے اونچی آواز سے ان شبدوں میں اس کی شکایت کرے گی :—'اے میرے مالک! اس آدمی نے خواہ‌مخواہ مجھے مار ڈالا ۔ مجھے مارنے سے اسے کوئی فائدہ نہیں ہوا ۔'" (نسائی)

ابن عمر کا بیان ہے کہ محمد صاحب نے ایک مرتبہ کہا کہ :—

"جو آدمی کسی گوریا کو مارتا ہے یا کسی اس سے بھی چھوٹے جاندار کو مارتا ہے، اللہ اس سے جواب طلب کرے گا!"

عبداللہ بن جعفر سے روایت ہے کہ :—

"کچھ لوگ ایک دنبے کو نشانہ بناکر اس پر تیر چلا رہے تھے ۔ محمد صاحب پاس سے نکلے ۔ انہوں نے

जब कोई आस पास न रहा तो बन्दर ने एक तखता लेकर दरिया में बहा दिया और उसके पीछे खुद पानी में कूद पड़ा. लेकिन दरिया बहुत गहरा था और धारा भी तेज़ थी, और वह कोई अच्छा तैराक भी न था. वह तखते से चिपट गया और किनारे लगने की कोशिश में हाथ पैर मारने लगा. बीच धारे में पड़कर तखता और वह दोनों साथ साथ बहने लगे. कभी वह ऊपर होता और कभी तखता ऊपर होता. दोनों बारी बारी डूबते उतराते रहे. सारी कोशिशों के बाद भी किनारे तक पहुंचने का उसे कोई रास्ता न मिला. चूंकि वह पानी बहुत पी गया था इसलिये अन्त में उसने तखते को छोड़ दिया. वह तह में बैठ गया और मर गया.

इससे मुझे याद आ गया कि सारे साम्राजवादी अपनी चालबाज़ियों पर जबरदस्त भरोसा रखते हैं. जिस देश में वह घुसने का इरादा करते हैं उसे पानी में ढकेल देते हैं और फिर पानी से निकाल लाने के लिये कोशिश शुरू करते हैं. वह सोचते हैं कि इस चाल से वह उस देश पर क़बज़ा कर लेंगे. पर बहुत सी ज़बरदस्त और कठिन कोशिशों के बाद उन्हें उस देश को छोड़ना पड़ता है और कभी कभी वह उसे खुद छोड़ भी नहीं पाते बल्कि खुद ही फंसकर डूब मरते हैं.

(5)

भेड़िया और लकड़हारा

एक भेड़िये ने सुना कि कोई लकड़हारा पहाड़ पर आ रहा है. उसने एक कविता बनाई जिसमें उसने अपनी नीति का वर्नन किया :—

"इस बार मैं दिमाग़ी लड़ाई लड़ूंगा, केवल ताक़त के बल पर युद्ध नहीं करूंगा.

"क्योंकि मैं विद्वान भेड़िया हूं,

"पहले मैं उसके हथियार रखवा लूंगा,

"और फिर मैं उसका सफ़ाया कर दूंगा."

इसलिये वह अपने कूल्हों के बल मूर्ति बनकर इस तरह बैठ गया जैसे कोई लकड़ी का बड़ा कुन्दा हो और मौक़े की ताक में रहा.

जल्दी ही लकड़हारा वहां आ पहुंचा. उसने पहाड़ पर एक निगाह डाली और एक फ़िलबदीह गीत यानी अशु कविता रच डाली :—

"अहा हा ! वहां जो एक लकड़ी का कुन्दा है

"दूर से वह कुन्दे जैसा मालूम होता है

"और नज़दीक से भी कुन्दा दिखाई पड़ता है

"क्या अच्छा हो कि अपनी कुल्हाड़ी से मैं इसे चीर डालूं !

"और उसकी चैलियों को इधर उधर छिटकने दूं !"

जब भेड़िये ने यह गीत सुना तो वह भाग निकला.

दुशमन की चाल का भांडा फोड़ देना ही उसकी चालों को निकम्मा कर देना है.

جب کوئی آس پاس نہ رہا تو بندر نے ایک تختہ لیکر دریا میں بہا دیا اور اُس کے پیچھے خود پانی میں کود پڑا ۔ لیکن دریا بہت گہرا تھا اور دھارا بھی تیز تھی' اور وہ کوئی اچھا تیراک بھی نہ تھا ۔ وہ تختے سے چمٹ گیا اور کنارے لگنے کی کوشش میں ہاتھ پیر مارنے لگا. بیچ دھارے میں پڑکر تختہ اور وہ دونوں ساتھ ساتھ بہنے لگے ۔ کبھی وہ اوپر ہوتا اور کبھی تختہ اوپر ہوتا ۔ دونوں باری باری ڈوبتے اُبراتے رہے ۔ ساری کوششوں کے بعد بھی کنارے تک پہونچنے کا اُسے کوئی راستہ نہ ملا ۔ چونکہ وہ پانی بہت پی گیا تھا اِس لئے انت میں اُس نے تختے کو چھوڑ دیا وہ تہ میں بیٹھ گیا اور مرگیا ۔

اِس سے مجھے یاد آگیا کہ سارے سامراجوادی اپنی چالبازیوں پر زبردست بھروسہ رکھتے ھیں ۔ جس دیش میں وہ گھسنے کا ارادہ کرتے ھیں اُسے پانی میں دھکیل دیتے ھیں اور پھر پانی سے نکال لانے کے لئے کوشش شروع کرتے ھیں ۔ وہ سوچتے ھیں کہ اِس چال سے وہ اُس دیش پر قبضہ کرلیں گے ۔ پر بہت سی زبردست اور کٹھن کوششوں کے بعد اُنہیں اُس دیش کو چھوڑنا پڑتا ھے اور کبھی کبھی وہ اُسے خود چھوڑ بھی نہیں پاتے بلکہ خود ھی پھنسکر ڈوب مرتے ھیں ۔

(5)

بھیڑیا اور لکڑھارا

ایک بھیڑیئے نے سنا کہ کوئی لکڑھارا پہاڑ پر آرھا ھے ۔ اُس نے ایک کویتا بنائی جس میں اُس نے اپنی نیتی کا ورنن کیا :—

"اِس بار میں دماغی لڑائی لڑوں گا' کیول طاقت کے بل پر یدھ نہیں کروں گا ۔

"کیونکہ میں ودوان بھیڑیا ہوں'

"پہلے میں اُس کے ہتھیار رکھوا لوں گا'

"اور پھر میں اُس کا صفایا کردونگا ۔"

اِس لئے وہ اپنے کولھوں کے بل مورتی بنکر اِس طرح بیٹھ گیا جیسے کوئی لکڑی کا بڑا کندہ ھو اور موقعہ کی تاک میں رھا.

جلدی ھی لکڑھارا وھاں آ پہونچا ۔ اُس نے پہاڑ پر ایک نگاہ ڈالی اور ایک فی البدیہہ گیت یعنی آشو کویتا رچ ڈالی :—

"ھا ھا ! وھاں جو ایک لکڑی کا کندا ھے

"دور سے وہ کندے جیسا معلوم ھوتا ھے

"اور نزدیک سے بھی کندہ دکھائی پڑتا ھے

"کیا اچھا ھو کہ اپنی کلہاڑی سے میں اِسے چیر ڈالوں !

"اور اُس کی چیلیوں کو اِدھر اُدھر چھٹکنے دوں !"

جب بھیڑئے نے یہ گیت سنا تو وہ بھاگ نکلا ۔

دشمن کی چال کا بھانڈا پھوڑ دینا ھی اُس کی چالوں کو نکما کردینا ھے ۔

शुरू कर दिया और बेगार करके राजा की सेवा की. भेड़ियों का राजा अपने साथ बिस्तरा भी नहीं लाया था. और न ही उसके पास बदलने के लिये कपड़े थे, इसलिये खरगोशों ने भारी मात्रा में खाले' और समूर इकट्ठा करके राजा को भेंट कीं. खाने पीने का भी कोई प्रबन्ध करके राजा वहां नहीं आए थे. लेकिन खुशक़िस्मती से खरगोशों के मांस की वहां हर साल बहुतायत रहती थी. खड़े खड़े वहीं मांस भी हासिल कर लिया गया. पैसा देने की ज़रूरत नहीं थी, ढुलाई का खर्च भी बच गया.

थोड़े ही दिनों में हालत बदल गई. स्वागत के नारों की जगह दिल को छूने वाली सिसकियां सुनाई पड़ने लगीं. खरगोशों की तादाद भयानक रूप से कम होने लगी, और उनकी नसल के मिट जाने का खतरा पैदा हो गया. नौबत यहां तक पहुंची कि उनके बड़े बड़े क़ाबिल प्रतिनिधि भी न बच सके. लेकिन थे यह लोग बहुत सूझ बूझ के. उन्होंने अपने अपने कान खड़े किये और बहुत तोबा तिल्ला कर के कहा :—

"इतने होशियार होकर भी हम लोगों ने पहले से समझ से क्यों न काम लिया ?"

मुझे सचमुच इन क़ाबिल खरगोशों से हमदर्दी है. वास्तव में यह बदक़िस्मती थी कि यह पुराना और सीधा सादा असूल वक़्त पर उनकी समझ में न आया :—

जो मान और प्रतिष्ठा ज़ालिमों और हमलावरों से मिलती है उसके बदले जनता को दुख ही दुख भोगना पड़ता है.

(4)

बन्दर और तख़्ता

किसी दरिया के किनारे तख़्तों का ढेर लगा हुआ था. उन्हें बिकरी के लिये शहर तक ले जाने के वास्ते एक नाव की प्रतीक्षा हो रही थी. एक बन्दर के दिल में उमंग उठी कि एक तख़्ता हथियाकर उसे तरह तरह से काम में लाऊं. उसने सोचा कि एक तख़्ता किसी तरह उड़ाया जाय. वह बोला—"मैं एक तख़्ता तो नहीं चुराऊंगा, क्योंकि उसके लिये खतरा मोल लेना ठीक नहीं. मैं आसानी से एक तख़्ता उड़ा सकता हूं लेकिन लोग मुझे चोर कहेंगे, और यह कुछ अच्छा नहीं मालूम होता. अच्छा यह होगा कि मैं उस समय की प्रतीक्षा करूं जब इधर उधर कोई आदमी न रह जाय, और तब एक तख़्ता खींचकर दरया में फेंक दूं. फिर उसे पकड़ने के लिये पानी में कूद पड़ूं और निकाल लाऊं. ज़ाहिर है कि इस तरह तख़्ता एक ऐसी चीज़ समझी जायगी जिसे मैंने खुद दरिया से निकाला है और कोई भी कुछ कह सुन न सकेगा. ऐसा करना आसान भी होगा और उचित भी !"

شروع کر دیا اور بیگار کر کے راجا کی سیوا کی ۔ بھیڑیوں کا راجا اپنے ساتھ بسترہ بھی نہیں لایا تھا. اور نہ ھی اُس کے پلس بدلنے کے لئے کپڑے تھے' اِس لئے خرگوشوں نے بھاری ماترا میں کھالیں اور سمور اکٹھا کر کے راجا کو بھینٹ کیں ۔ کھانے پینے کا بھی کوئی پربندھ کر کے راجا وھاں نہیں آئے تھے ۔ لیکن خوش‌قسمتی سے خرگوشوں کے مانس کی وھاں ھر سال بہوتائت رھتی تھی ۔ کھڑے کھڑے وھیں مانس بھی حاصل کر لیا گیا ۔ پیسہ دینے کی ضرورت نہیں تھی' ڈھلائی کا خرچ بھی بچ گیا ۔

تھوڑے ھی دنوں میں حالت بدل گئی ۔ سواگت کے نعروں کی جگہ دل کو چھونے والی سسکیاں سنائی پڑنے لگیں. خرگوشوں کی تعداد بھیانک روپ سے کم ھونے لگی' اور اُن کی نسل کے مٹ جانے کا خطرہ پیدا ھوگیا ۔ نوبت یہاں تک پہونچی کہ اُن کے بڑے بڑے قابل پرتینیدھی بھی نہ بچ سکے ۔ لیکن تھے یہ لوگ بہت سوجھ بوجھ کے ۔ اُنہوں نے اپنے اپنے کان کھڑے کئے اور بہت توبہ تلا کر کے کہا :—

"اِتنے ھوشیار ھوکر بھی ھم لوگوں نے پہلے سے سمجھ سے کیوں نہ کام لیا ؟"

مجھے سچ مچ اِن قابل خرگوشوں سے ھمدردی ھے ۔ واستو میں یہ بدقسمتی تھی کہ یہ پرانا اور سیدھا سادا اُصول وقت پر اُن کی سمجھ میں نہ آیا :—

جو مان اور پرتشٹھا ظالموں اور حملہ آوروں سے ملتی ھے اُس کے بدلے جنتا کو دکھ ھی دکھ بھوگنا پڑتا ھے ۔

(4)

بندر اور تختہ

کسی دریا کے کنارے تختوں کا ڈھیر لگا ھوا تھا ۔ اُنہیں بکری کے لئے شہر تک لے جانے کے واسطے ایک ناؤ کی پرتیکشا ھو رھی تھی ۔ ایک بندر کے دل میں اُمنگ اُٹھی کہ ایک تختہ ھتیاکر اُسے طرح طرح سے کام میں لاؤں ۔ اُس نے سوچا کہ ایک تختہ کسی طرح اُڑایا جائے ۔ وہ بولا—"میں ایک تختہ تو نہیں چراؤں گا' کیونکہ اُس کے لئے خطرہ مول لینا ٹھیک نہیں. میں آسانی سے ایک تختہ اُڑا سکتا ھوں لیکن لوگ مجھے چور کہیں گے' اور یہ کچھ اچھا نہیں معلوم ھوتا ۔ اچھا یہ ھوگا کہ میں اُس سمے کی پرتیکشا کروں جب اِدھر اُدھر کوئی آدمی نہ رہ جائے' اور تب ایک تختہ کھینچ کر دریا میں پھینک دوں ۔ پھر اُسے پکڑنے کے لئے پانی میں کود پڑوں اور نکال لاؤں ۔ ظاھر ھے کہ اِس طرح تختہ ایک ایسی چیز سمجھی جائے گی جسے میں نے خود دریا سے نکالا ھے اور کوئی بھی کچھ کہ سن نہ سکے گا ۔ ایسا کرنا آسان بھی ھوگا اور اُچت بھی !"

और पूरी ताक़त से टर टर करने लगा. मेंढक की टर टर से सांप की हिम्मत बंधी, ग़ुस्से से तमतमाकर वह आगे बढ़ा और बीच सड़क पर लेट गया ताकि गाड़ी का रास्ता रोक ले और उसे बढ़ने न दे. बदक़िस्मती से देखते देखते सांप गाड़ी के नीचे आ गया और कुचल कर मर गया. लेकिन मेंढक को इसका पता न चला और वह पूरी ताक़त से टर टर करता ही रहा.

यहां तक कि चिड़ियों का एक झुन्ड वहां उतरा और सांप को चट कर गया. रन भूमि साफ़ हो गई. फिर भी मेंढक टर टर करता ही रहा. चिड़ियां जितना जितना इस टर टर को सुनती थीं उतना ही उनका ग़ुस्सा बढ़ता था. उन्होंने सोचा—"आओ अब इसे भी हड़प कर जायं, यह शैतान ख़ाहमख़ाह शोर मचा रहा है !" चिड़ियां मेंडक को ज़िन्दा ही खा गईं. उन्होंने मेंडक को कोई जंगी मुजरिम ठहरा कर ऐसा नहीं किया. बल्कि केवल इस क़ुदरती उसूल पर अमल किया कि :—

इन्साफ़ को ठुकरा कर चलने वाले ज़ालिमों के साथ साथ सब शैतानी शोर ग़ौग़ो और उनकी तारीफ़ी शायरी का भी अन्त होना चाहिये.

(3)

ख़रगोश

एक पहाड़ी पर कुछ ख़रगोश रहते थे. उन्होंने एक दिन सुना कि भेड़ियों के पहाड़ का राजा उनके यहां आने वाला है. वह ख़ुशी से नाचने लगे. किसी राजा का उनके यहां आना उनके लिये बड़ी इज़्ज़त की बात थी.

वह अपने अपने बिलों से निकल आए ताकि यह ख़ुशख़बरी एक दूसरे को सुनाएं, राजा के लिये शाहाना स्वागत की तैयारी करें और उसकी शान में ऐसा उत्सव करें जैसा इससे पहले कभी न हुआ हो. उनका कहना था कि—"यह इतिहासिक अवसर है, और हमारे बाल बच्चों के लिये यह अनन्त आनन्द के द्वार खोल देगा !"

सचमुच भेड़ियों का राजा वहां आया. अपने बूढ़ों को सहारा दिये और बच्चों को गोद में लिये सबके सब ख़रगोश रास्ते के दोनों तरफ़ पैर जमा कर खड़े हो गए. उन्होने राजा को दुआयें दीं और ख़ुशी के आंसुओं से छलछलाती आंखें उन्होंने राजा के रास्ते में बिछा दीं. राजा ने भी सर के इशारे से उनका अभिवादन किया और उनका डर दूर करने के लिये एक ऐलान जारी किया.

पर जब स्वागत की सारी रसमें अदा हो चुकीं तो भेड़ियों के राजा ने ऐलान किया कि "मैं यहां अपने ठहरने के लिये एक बंगला बनवाना चाहता हूं क्योंकि यह जगह बहुत अच्छी है." फ़ौरन ख़रगोशों ने अपने घरों को उजाड़ना

اور پوری طاقت سے ٹر ٹر کرنے لگا. مینڈک کی ٹر ٹر سے سانپ کی ہمت بندھی، غصے سے تمتما کر وہ آگے بڑھا اور بیچ سڑک پر لیٹ گیا تاکہ گاڑی کا راستہ روک لے اور اُسے بڑھنے نہ دے . بدقسمتی سے دیکھتے دیکھتے سانپ گاڑی کے نیچے آگیا اور کچل کر مر گیا . لیکن مینڈک کو اِس کا پتہ نہ چلا اور وہ پوری طاقت سے ٹرٹر کرتا ہی رہا .

یہاں تک کہ چڑیوں کا ایک جھنڈ وہاں اُترا اور سانپ کو چٹ کر گیا . رن بھومی صاف ہوگئی . پھر بھی مینڈک ٹرٹر کرتا ہی رہا . چڑیاں جتنا جتنا اِس ٹرٹر کو سنتی تھیں اتنا ہی اُن کا غصہ بڑھتا تھا . اُنھوں نے سوچا—" آؤ اب اِسے بھی ہڑپ کر جائیں، یہ شیطان خواہ مخواہ شور مچا رہا ہے !"
چڑیاں مینڈک کو زندہ ہی کھا گئیں . اُنھوں نے مینڈک کو کوئی جنگی مجرم ٹھہرا کر ایسا نہیں کیا. بلکہ کیول اِس قدرتی اصول پر عمل کیا کہ :—

اِنصاف کو ٹھکرا کر چلنے والے ظالموں کے ساتھ ساتھ سب شیطانی شور غوغے اور اُن کی تعریفی شاعری کا بھی انت ہونا چاہئے .

(3)

خرگوش

ایک پہاڑی پر کچھ خرگوش رہتے تھے . اُنھوں نے ایک دن سنا کہ بھیڑیوں کے پہاڑ کا راجا اُن کے یہاں آنے والا ہے . وہ خوشی سے ناچنے لگے . کسی راجا کا اُن کے یہاں آنا اُن کے لئے بڑی عزت کی بات تھی .

وہ اپنے اپنے بلوں سے نکل آئے تاکہ یہ خوشخبری ایک دوسرے کو سنائیں، راجا کے لئے شاہانہ سواگت کی تیاری کریں اور اُس کی شان میں ایسا اُتسو کریں جیسا اِس سے پہلے کبھی نہ ہوا ہو . اُن کا کہنا تھا کہ—" یہ اِتہاسک اوسر ہے، اور ہمارے بال بچوں کے لئے یہ اننت آنند کے دوار کھول دیگا !"

سچ مچ بھیڑیوں کا راجا وہاں آیا . اپنے بوڑھوں کو سہارا دئے اور بچوں کو گود میں لئے سب کے سب خرگوش راستے کے دونوں طرف پیر جما کر کھڑے ہوگئے . اُنھوں نے راجا کو دعائیں دیں اور خوشی کے آنسوؤں سے چھلچھلاتی آنکھیں اُنھوں نے راجا کے راستے میں بچھا دیں . راجا نے بھی سر کے اِشارے سے اُن کا ابھیوادن کیا اور اُن کا ڈر دور کرنے کے لئے ایک اعلان جاری کیا .

پر جب سواگت کی ساری رسمیں ادا ہو چکیں تو بھیڑیوں کے راجا نے اعلان کیا کہ " میں یہاں اپنے ٹھہرنے کے لئے ایک بنگلہ بنوانا چاہتا ہوں کیونکہ یہ جگہ بہت اچھی ہے ." فوراً خرگوشوں نے اپنے گھروں کو اُجاڑنا

आजकल की कुछ छोटी चीनी कहानियां

آجکل کی کچھ چھوٹی چینی کہانیاں

★●★

अनुवादक—मुजीब रिज़वी

(1)

कुंआ और दरिया

वह दिन लद गए जब कुंवां दरिया के मामलों में दख़ल नहीं दे सकता था ! एक दरिया के पास ही एक कुंवा था. कुवें ने दरिया पर बोली कसनी शुरू की :

"तुम इधर से उधर तक कीचड़ में लतपत हो और तुम्हारे जीवन की बाग तुम्हारे हाथों में नहीं है, दिन भर बड़बड़ाते रहते हो, और बहते चले जाते हो—यह भी कोई ज़िन्दगी है ! मेरी तरह तुम्हें गम्भीर, अचल और रेत कीचड़ से बिलकुल पाक होना चाहिये. मैं सारे दिन एक खिड़की से नीले आकाश पर आंखें जमाए रहता हूं और दुनिया के रहस्य का ज्ञान परापत किया करता हूं—जीवन का यही एक ठीक मार्ग है."

अब वह दिन भी नहीं रहे जब दरिया कुंवें के मामलों में दख़ल नहीं दे सकता था. कीचड़ भरे दरिया ने सर उठाया और आकाश की तरफ़ ऊपर बढ़ता चला गया. यहां तक कि गरज गरज कर उसने किनारों को तोड़ दिया और आस पास के सारे इलाक़े को पानी से भर दिया. कुंवें की लकड़ी की जुगत को भी वह बहा ले गया. बस, कुवां अपने गम्भीर और अडिग वजूद को लेकर दरिया की बढ़ती हुई बाढ़ की भेंट चढ़ गया.

(2)

नक़्क़ारची मेंडक

माल से लदी एक गाड़ी सड़क से गुज़रने वाली थी. एक सांप ने उसका रास्ता रोकना चाहा. पर लदी गाड़ी को रोकना कोई आसान काम न था. इसलिये सांप ने एक मेंडक से सहयोग की प्राथना की और कहा :—"यह मोरचा ज़बरदस्त है, चुप चाप इसका सर कर लेना मुमकिन नहीं है. इसलिये तुम जैसे एक होशियार नक़्क़ारची की मुझे ज़रूरत है."

मेंडक बहुत ख़ुश हुआ. जब गाड़ी नज़दीक पहुंची तो मेंडक जितना अपने को फुला सकता था उसने फुला लिया

انوواد‌ک—مجیب رضوی

(۱)

کنواں اور دریا

وہ دن لد گئے جب کنواں دریا کے معاملوں میں دخل نہیں دے سکتا تھا ! ایک دریا کے پاس ہی ایک کنواں تھا . کنویں نے دریا پر بولی کسنی شروع کی :

" تم اِدھر سے اُدھر تک کیچڑ میں لت پت ہو اور تمہارے جیون کی باگ تمہارے ہاتھوں میں نہیں ہے، دن بھر بڑبڑاتے رہتے ہو، بہتے چلے جاتے ہو—یہ بھی کوئی زندگی ہے ! میری طرح تمہیں گمبھیر، اچل اور ریت کیچڑ سے بالکل پاک ہونا چاہئے . میں سارے دن ایک کھڑکی سے نیلے آکاش پر آنکھیں جمائے رہتا ہوں اور دنیا کے رہسیہ کا گیان پراپت کیا کرتا ہوں —جیون کا یہی ایک ٹھیک مارگ ہے ."

اب وہ دن بھی نہیں رہے جب دریا کنویں کے معاملوں میں دخل نہیں دے سکتا تھا . کیچڑ بھرے دریا نے سر اُٹھایا اور آکاش کی طرف اوپر کو بڑھتا چلا گیا . یہاں تک کہ گرج گرج کر اُس نے کناروں کو توڑ دیا اور آس پاس کے سارے علاقے کو پانی سے بھر دیا . کنویں کی لکڑی کی جگت کو بھی وہ بہالے گیا . بس کنواں اپنے گمبھیر اور اڈگ وجود کو لے کر دریا کی بڑھتی ہوئی باڑھ کی بھینٹ چڑھ گیا .

(2)

نقارچی مینڈک

مال سے لدی ایک گاڑی سڑک سے گذرنے والی تھی . ایک سانپ نے اُس کا راستہ روکنا چاہا . پر لدی گاڑی کو روکنا کوئی آسان کام نہ تھا . اِس لئے سانپ نے ایک مینڈک سے سہیوگ کی پرارتھنا کی اور کہا :—" یہ مورچہ زبردست ہے، چپ چاپ اِس کا سر کر لینا ممکن نہیں ہے . اِس لئے تم جیسے ایک ہوشیار نقارچی کی مجھے ضرورت ہے ."

مینڈک بہت خوش ہوا . جب گاڑی نزدیک پہونچی تو مینڈک جتنا اپنے کو پھلا سکتا تھا اس نے پھلا لیا

थी और वह यह है कि चीनी हर छोटी बड़ी चीज का इस्तेमाल अपनी दस्तकारियों में करते हैं. अगर यह कहा जाए कि वह मिट्टी को अपनी कला से सोना बना देते हैं तो बेजा न होगा.

चीन में भारी उद्योग धन्दे बढ़ रहे हैं. हाथ की जगह मशीन ले रही है. लेकिन खुशी की बात है कि चीन की सरकार अपनी पुरानी दस्तकारियो की तरफ भी पूरा ध्यान दे रही है. सरकार कला और शिल्प को बढ़ाने में तरह तरह से सहायता देती है :—

(1) बड़े उद्योगो में जो चित्र और रग इस्तेमाल होते हैं उनके जानकार इन कलावन्तों और दस्तकारो को सलाह मशविरा देते हैं जिससे हाथ की कला का रग रूप निखरता है और नई नई तकनीक और नए नए चित्रो का इस्तेमाल होने लगता है.

(2) चीन की नई सरकार अपने कलावन्तो और दस्कारो की धन से भी सहायता करती है.

(3) सरकार इस बात की व्यवस्था करती है कि जरूरत का कच्चा माल इन कारीगरो और कलावन्तो को आसानी से मिल सके.

(4) इन कलावन्तो और दस्तकारो की बनाई हुई चीजों को बढ़ाने और उनके लिये बाजार पैदा करने की जिम्मेदारी भी सरकार पर है और वह उसे हर तरह से पूरा करती है. कलावन्तो ने अब जगह जगह अपने कोआपरेटिव भी खोल लिये हैं. सरकार इस तरह की संस्थाओं को दिल खोल कर मदद देती है.

नुमाइश छै फरवरी से पन्दरह फरवरी तक रही. रोज मर्द औरतों की भीड़ लगी रहती थी. एक एक दिन मे चार हजार आदमी तक इस नुमाइश को देखने आए. इस भीड़ को देखकर एक बात जरूर खटकती थी : वाह वाह करने वाले तो बहुत थे, लेकिन हमारे देश के उन कारीगरो का वहा पता नही था जो खुद ऐसी चीजें बनाते हैं और जो इन चीजों को देखकर बहुत कुछ सीख सकते थे. हमारी सरकार को चाहिये कि वह अपने यहां के कारीगरों को बुलावा कर ऐसी नुमाइशें दिखलाए और ऐसी नुमाइशें उन इलाक़ों में अकसर करवाती रहे जहां पर हमारे कारीगर अच्छी खासी तादाद मे बसते हो.

تھی اور وہ یہ ہے کہ چینی ہر چھوٹی بڑی چیز کا استعمال اپنی دستکاریوں میں کرتے ہیں. اگر یہ کہا جائے کہ وہ مٹی کو اپنی کلا سے سونا بنا دیتے ہیں تو بیجا نہ ہوگا.

چین میں بھاری اُدیوگ دھندے بڑھ رہے ہیں. ہاتھ کی جگہ مشین لے رہی ہے. لیکن خوشی کی بات ہے کہ چین کی سرکار اپنی پرانی دستکاریوں کی طرف بھی پورا دھیان دے رہی ہے. سرکار کلا اور شلپ کو بڑھانے میں طرح طرح سے سہائتا دیتی ہے :—

(1) بڑے اُدیوگوں میں جو چتر اور رنگ استعمال ہوتے ہیں اُن کے جانکار ان کلاونتوں اور دستکاروں کو صلاح مشورہ دیتے ہیں جس سے ہاتھ کی کلا کا رنگ روپ نکھرتا ہے اور نئی نئی ٹکنیک اور نئے نئے چتروں کا استعمال ہونے لگتا ہے.

(2) چین کی نئی سرکار اپنے کلاونتوں اور دستکاروں کی دھن سے بھی سہائتا کرتی ہے.

(3) سرکار اس بات کی ویوستھا کرتی ہے کہ ضرورت کا کچا مال ان کاریگروں اور کلاونتوں کو آسانی سے مل سکے.

(4) ان کلاونتوں اور دستکاروں کی بنائی ہوئی چیزوں کو بڑھانے اور اُس کے لئے بازار پیدا کرنے کی ذمہ داری بھی سرکار پر ہے اور وہ اُسے ہر طرح سے پورا کرتی ہے. کلاونتوں نے اب جگہ جگہ اپنے کوآپریٹو بھی کھول لئے ہیں. سرکار اس طرح کی سنستھاؤں کو دل کھول کر مدد دیتی ہے.

نمائش چھ فروری سے پندرہ فروری تک رہی. روز مرد عورتوں کی بھیڑ لگی رہتی تھی. ایک ایک دن میں چار ہزار آدمی تک اس نمائش کو دیکھنے آئے. اس بھیڑ کو دیکھکر ایک بات ضرور کھٹکتی تھی : واہ واہ کرنے والے تو بہت تھے لیکن ہمارے دیش کے اُن کاریگروں کا وہاں پتہ نہ تھا جو خود ایسی چیزیں بناتے ہیں اور جو اُن چیزوں کو دیکھکر بہت کچھ سیکھ سکتے تھے. ہماری سرکار کو چاہئے کہ وہ اپنے یہاں کے کاریگروں کو بلواکر ایسی نمائشیں دکھلائے اور ایسی نمائش اُن علاقوں میں اکثر کرواتی رہے جہاں پر ہمارے کاریگر اچھی خاصی تعداد میں بستے ہوں.

सदी में चीन की यह कला बहुत मशहूर हुई. हाथीदांत पर नक़्क़ाशी अपनी नज़ाकत और तफ़सील के लिये मशहूर है. छोटी छोटी तफ़सील पर नक़्क़ाश का ध्यान रहता है. नुमाइश में हाथीदांत की एक किश्ती थी. इस किश्ती में छोटी से छोटी तफ़सील दिखाई गई है. क़रीब ढाई फ़ुट की लम्बी किश्ती पर 108 आदमी बैठे दिखाई पड़ते हैं. नक़्क़ाशी बेहद बारीक है. पीकिंग, केन्टन और शंघाई इस तरह की नक़्क़ाशी के केन्द्र हैं. हाथीदांत की नक़्क़ाशी पर चीनी रंग भी भरते हैं. रंग और पालिश का ऐसा मेल बैठाते हैं कि बिलकुल असल मालूम होते हैं.

मिट्टी के खिलौने

गावों में किसान जब काम से ख़ाली होते हैं तो मिट्टी के खिलौने बनाते हैं. इन खिलौनों को वह रंगते भी हैं. क़ुदरत से रंग मिला देना चीनियों का ही हिस्सा है. मिट्टी के खिलौने हमारे यहां भी बनते हैं लेकिन उनका रंग शायद इतना अच्छा नहीं हो पाता. खिलौनों को देखकर चीनी जनता की चेतना का पता चलता है. वह अपने पुराने कवियों, अपने वीरों और देश-भक्तों की मूर्तियां मिट्टी से बनाते हैं. नुमाइश में एक लड़की की मूर्ति थी जिसका नाम 'ली-हो-लान' है. इसे जापानियों ने मौत के घाट उतार दिया था. इस मूर्ति के भाव को देखकर लगता है कि वह मौत से बिल्कुल नहीं डरी.

नुमाइश में मिट्टी की बनी एक कवि की भी मूर्ति थी जिसका नाम 'ली-पाई' था. यह रोमानी कवि था लेकिन देश भक्ति उसमें कूट कूट कर भरी थी. उसकी कविता की कुछ पंक्तियों का अनुवाद यह है :

"चांद को इशारा करके, मैं शराब के प्याले को उसकी तरफ़ बढ़ाता हूं. यहां हम तीन हैं जो साथ साथ इसका आनन्द ले रहे हैं—चांद, कवि और प्याले में कवि की परछाईं"

और चीज़ें

आटे और चावल से गुड़िया बनाने का चीन में बहुत रिवाज है. इन गुड़ियों को तरह तरह से सजाया जाता है. इन गुड़ियों का आधार कोई न कोई लोक कथा होती है. इन गुड़ियों को बनाने के लिये हड्डी के एक पिन और एक छोटे से बुरुश की ज़रूरत पड़ती है. बच्चों के खेलने के लिये यह गुड्डे गुड़ियां तैयार किये जाते हैं.

सोने चांदी के बरतनों पर नक़्क़ाशी होती है. लेकिन नुमाइश में जड़ाई का काम दिखाई नहीं पड़ा.

इन चीज़ों को बनाने वाले दो तरह के हैं. एक वह जो पीढ़ियों से यही काम करते आए हैं. उनकी जीविका केवल दस्तकारी पर निरभर है. दूसरे वह मर्द और औरतें जो गांव में रहते हैं और फ़ुरसत के समय ऐसी चीज़ें बनाया करते हैं. नुमाइश देखकर एक बात साफ़ दिखाई पड़ती

صدی میں چین کی یہ کلا بہت مشہور ہوئی ۔ ھاتھی دانت پر نقاشی اپنی نزاکت اور تفصیل کے لئے مشہور ھے ۔ چھوٹی چھوٹی تفصیل پر نقاش کا دھیان رھتا ھے۔ نمائش میں ھاتھی دانت کی ایک کشتی تھی ۔ اِس کشتی میں چھوٹی سے چھوٹی تفصیل دکھائی گئی ھے ۔ قریب ڈھائی فٹ لمبی کشتی پر 108 آدمی بیٹھے دکھائی پڑتے ھیں ۔ نقاشی بےحد باریک ھے ۔ پیکنگ' کینٹن اور شنگھائی اِس طرح کی نقاشی کے کیندر ھیں ۔ ھاتھی دانت کی نقاشی پر چینی رنگ بھی بھرتے ھیں ۔ رنگ اور پالش کا ایسا میل بیٹھاتے ھیں کہ بالکل اصل معلوم ھوتے ھیں ۔

متی کے کھلونے

گاؤں میں کسان جب کام سے خالی ھوتے ھیں تو متی کے کھلونے بناتے ھیں ۔ اِن کھلونوں کو وہ رنگتے بھی ھیں ۔ قدرت سے رنگ ملا دینا چینیوں کا ھی حصہ ھے ۔ متی کے کھلونے ھمارے یہاں بھی بنتے ھیں لیکن اُن کا رنگ شاید اتنا اچھا نہیں ھو پاتا ۔ کھلونوں کو دیکھکر چینی جنتا کی چیتنا کا پتہ چلتا ھے ۔ وہ اپنے پرانے کویوں' اپنے ویروں اور دیش بھکتوں کی مورتیاں متی سے بناتے ھیں ۔ نمائش میں ایک لڑکی کی مورتی تھی جس کا نام 'لی ہو لان ھے' اِسے جاپانیوں نے موت کے گھاٹ اُتار دیا تھا ۔ اِس مورتی کے بھاؤ کو دیکھکر لگتا ھے کہ وہ موت سے بالکل نہیں ڈری ۔

نمائش میں متی کی بنی ایک کوی کی بھی مورتی تھی جس کا نام 'لی - پائی' تھا ۔ یہ رومانی کوی تھا لیکن دیش بھکتی اُس میں کوٹ کوٹ کر بھری تھی ۔ اُس کی کویتا کی کچھ پنکتیوں کا انوواد یہ ھے :

"چاند کو اشارہ کرکے میں' شراب کے پیالے کو اُس کی طرف بڑھاتا ھوں ۔ یہاں ھم تین ھیں جو ساتھ ساتھ اِس کا آنند لے رھے ھیں—چاند' کوی اور پیالے میں کوی کی پرچھائیں ۔"

اور چیزیں

آٹے اور چاول سے گڑیا بنانے کا چین میں بہت رواج ھے ۔ اِن گڑیوں کو طرح طرح سے سجایا جاتا ھے ۔ ان گڑیوں کا آدھار کوئی نہ کوئی لوک کتھا ھوتی ھے ۔ اِن گڑیوں کو بنانے کے لئے ھڈی کے ایک پن اور ایک چھوٹے سے برش کی ضرورت پڑتی ھے ۔ بچوں کے کھیلنے کے لئے یہ گڈے گڑیاں تیار کئے جاتے ھیں ۔

سونے چاندی کے برتنوں پر نقاشی ھوتی ھے ۔ لیکن نمائش میں جڑائی کا کام دکھائی نہیں پڑا ۔

اِن چیزوں کو بنانے والے دو طرح کے ھیں ۔ ایک وہ جو پیڑھیوں سے یہی کام کرتے آئے ھیں ۔ اُن کی جیوکا کیول دستکاری پر نربھر ھے ۔ دوسرے وہ مرد اور عورتیں جو گاؤں میں رھتے ھیں اور فرصت کے سمے ایسی چیزیں بنایا کرتے ھیں ۔ نمائش دیکھکر ایک بات صاف دکھائی پڑتی

प्रदर्शन हर जगह और हर तरह से करते हैं. नुमाइश में इस तरह की बुनाई के बहुत से नमूने थे. यह चीजें रोजमर्रा के इस्तेमाल की थीं. इन की बारीक बुनाई और इन पर तरह तरह के रंग सुन्दरता को बढ़ा देते हैं और देखते ही मन चाहने लगता है कि आदमी इन मामूली चीजों से घर सजा ले. टोकरियां थीं, थैले थे, डलवे थे और बहुत सी चीजें थी. उन सब चीजों के बीच पंखों की कमी खलती थी. हिन्दुस्तान में पंखे बहुत अच्छे अच्छे बुने जाते हैं. चीन में पंखे का रिवाज न हो यह बात नहीं है. हाथी दांत और सन्दल के बारीक कारीगरी के चीनी पंखे दुनिया भर में मशहूर हैं, फिर न जाने चीन में हमारे यहां की तरह के पंखे बुने क्यो नही जाते ?

इस नुमाइश में एक चीज नई थी. हिन्दुस्तान में सींकों से चप्पलें नही बुनी जातीं. यह कला चीनियो से सीखने की है. यह सुन्दर की सुन्दर होती हैं और मजबूत की मजबूत.

खुदाई

चीन में लकड़ी पर खुदाई होती है, फीरोजे पर खुदाई होती है, पत्थर पर खुदाई होती है और हाथी दांत पर खुदाई होती है. लकड़ी पर खुदाई करके लोग अपने घरो को सजाते हैं. लकड़ी पर बहुत बारीक खुदाई होती है. आम तौर पर चिड़ियों, जानवरो और आदमियों की शकलें लकड़ी पर खोदी जाती हैं, घर भी बनाए जाते हैं और कभी कभी किसी लोक कथा को भी लकड़ी की छाती पर खोद दिया जाता है. नुमाइश मे इस तरह की खुदाई का एक बड़ा अच्छा नमूना मौजूद था. इसकी तफ़सील और जिस खूबी से खुदाई की गई थी उसका सम्बन्ध देखने से ही है.

फीरोजे पर खुदाई करने का खास केन्द्र पीकिंग है. नरम और उम्दा पत्थर की छाती पर कलाकार अपनी कल्पना उतार के रख देता है. खुदाई बहुत बारीक की जाती है. इस पर ज्यादातर फूल पत्तियां बनाई जाती है.

ईसा से हजार साल पहले से चीन मे पत्थर पर खुदाई की जाती है. तरह तरह के पत्थरो पर खुदाई करने में चीनी बहुत होशियार हैं. तीन तरह की नक़्क़ाशी पत्थरों पर की जाती है—एक पत्थर की तह के अन्दर, दूसरी कुछ पत्थर के बाहर कुछ पत्थर के अन्दर, तीसरी केवल ऊपर उभरी हुई. पत्थरों पर भी शक़लें और फूल पत्ती बनाने का रिवाज है. नुमाइश में एक फूलदान था जो समूचा एक पत्थर का टुकड़ा था. इसको गोला करके बरतन की शकल दी गई थी. उस बरतन पर नक़्क़ाशी की गई थी. पत्थर पर नक़्क़ाशी करते समय प्रकृति से मिलते जुलते रंग वाले पत्थरो को काम में लाया जाता है.

ईसा से पन्द्रह सोलह सौ साल पहले से चीन में हाथी-दांत और हड्डी पर नक़्क़ाशी करने का रिवाज है. अठारहवीं

پردرشن ہرجگہ اور ہر طرح سے کرتے ہیں. نمائش میں اِس طرح کی بُنائی کے بہت سے نمونے تھے. یہ چیزیں روزمرہ کے استعمال کی تھیں۔ اِن کی باریک بُنائی اور اِن پر طرح طرح کے رنگ سندرتا کو بڑھا دیتے ہیں اور دیکھتے ہی من چاہنے لگتا ہے کہ آدمی اِن معمولی چیزوں سے گھر سجا لے۔ ٹوکریاں تھیں، تھیلے تھے، ڈلوے تھے اور بہت سی چیزیں تھیں۔ اِن سب چیزوں کے بیچ پنکھوں کی کمی کھلتی تھی۔ ہندستان میں پنکھے بہت اچھے اچھے بُنے جاتے ہیں، چین میں پنکھے کا رواج نہ ہو یہ بات نہیں ہے۔ ہاتھی دانت اور صندل کے باریک کاریگری کے چینی پنکھے دنیا بھر میں مشہور ہیں، پھر نہ جانے چین میں ہمارے یہاں کی طرح کے پنکھے کیوں نہیں جاتے ؟

اِس نمائش میں ایک چیز نئی تھی۔ ہندستان میں سینکوں سے چپلیں نہیں بُنی جاتیں۔ یہ کلا چینیوں سے سیکھنے کی ہے۔ یہ سندر کی سندر ہوتی ہیں اور مضبوط کی مضبوط۔

کھدائی

چین میں لکڑی پر کھدائی ہوتی ہے، فیروزے پر کھدائی ہوتی ہے، پتھر پر کھدائی ہوتی ہے اور ہاتھی دانت پر کھدائی ہوتی ہے. لکڑی پر کھدائی کرکے لوگ اپنے گھروں کو سجاتے ہیں لکڑی پر بہت باریک کھدائی ہوتی ہے۔ عام طور پر چڑیوں، جانوروں اور آدمیوں کی شکلیں لکڑی پر کھودی جاتی ہیں، گھر بھی بنائے جاتے ہیں اور کبھی کبھی کسی لوک کتھا کو بھی لکڑی کی چھاتی پر کھود دیا جاتا ہے نمائش میں اِس طرح کی کھدائی کا ایک بڑا اچھا نمونہ موجود تھا۔ اس کی تفصیل اور جس خوبی سے کھدائی کی گئی تھی اُس کا سمبندھ دیکھنے سے ہی ہے۔

فیروزے پر کھدائی کرنے کا خاص کیندر پیکنگ ہے نرم اور عمدہ پتھر کی چھاتی پر کلاکار اپنی کلپنا اُتار کے رکھ دیتا ہے۔ کھدائی بہت باریک کی جاتی ہے اس پر زیادہ تر پھول پتیاں بنائی جاتی ہیں۔

عیسیٰ سے ہزار سال پہلے سے چین میں پتھر پر کھدائی کی جاتی ہے. طرح طرح کے پتھروں پر کھدائی کرنے میں چینی بہت ہوشیار ہیں۔ تین طرح کی نقاشی پتھروں پر کی جاتی ہے— ایک پتھر کی تہ کے اندر، دوسری کچھ پتھر کے باہر کچھ پتھر کے اندر، تیسری کیول اُوپر اُبھری ہوئی۔ پتھروں پر بھی شکلیں اور پھول پتی بنانے کا رواج ہے۔ نمائش میں ایک پھول دان تھا جو سموچا ایک پتھر کا ٹکڑا تھا۔ اس کو گولا کرکے برتن کی شکل دی گئی تھی۔ اُس برتن پر نقاشی کی گئی تھی۔ پتھر پر نقاشی کرتے سمے پرکرتی سے ملتے جلتے رنگ والے پتھروں کو کام میں لایا جاتا ہے۔

عیسیٰ سے پندرہ سولہ سو سال پہلے سے چین میں ہاتھی دانت اور ہڈی پر نقاشی کرنے کا رواج ہے۔ اٹھارھویں

था कि शायद हिन्दुस्तान इस मैदान में चीन से आगे है. मक्खी, मछली, चिड़ियां और रोज़मर्रा दिखाई पड़ने वाली चीज़ों के ठप्पे छपाई के लिये इस्तेमाल होते हैं. रज़ाई और सर पर बांधने के लिये परखन्डों वग़ैरा के लिये यह कपड़े काम में आते हैं.

क़ालीन

पीकिंग और तेन्तसिन में बहुत अच्छे क़ालीन बनते हैं. इन दो जगहों के अलावा शेन्शी, सिन्कियांग, मंगोलिया और तिब्बत में भी क़ालीन बनते हैं. क़ालीन दो तरह से बुने जाते हैं—एक हाथ के करघे से और दूसरे क़ुशिया से. करघे से जो क़ालीन बनते हैं वह ज़्यादा चलते हैं, उनकी बुनाई बहुत गठी होती है. क़ुशिया से जो क़ालीन बनते हैं उनमें मेहनत कम लगती है और कच्चा माल कम ख़र्च होता है.

लाख और मुलम्मे का काम

23 सौ साल पहले भी चीन में लाख से ख़ूबसूरत चीज़ें बनती थीं. इनमें आम तौर पर काले पर लाल रंग से नक़्क़ाशी की जाती है और लाल पर काले रंग से. पहले लाख से महात्मा बुद्ध की मूर्तियां बनाई जाती थीं. बारहवीं और सोलहवीं सदी के बीच लाख पर सोने चांदी के तारों से नक़्क़ाशी करने का रिवाज ज़ोर पकड़ गया. लाख की चीज़ें इस तरह बनती हैं—पहले एक ढांचा तैयार किया जाता है. ढांचा मिट्टी का, या लकड़ी का, या लोहे का, या पीतल का होता है. इस ढांचे पर लाख की कई तह चढ़ाई जाती हैं. उसके बाद इस पर बारीक नक़्क़ाशी की जाती है. नक़्क़ाशी उस समय की जाती है जब लाख पूरी तरह सूखी न हो. नुमाइश में एक लम्बा चौड़ा फूलदान था. उस पर लाल रंग से नक़्क़ाशी की गई थी. नक़्क़ाशी इतनी बारीक थी कि देखकर ताज्जुब होता था.

नुमाइश में एक टी सेट भी था. यह लाख का और इसीलिये बहुत ही हलका था. यह टी सेट देखने की चीज़ थी. इसके बनाने का तरीक़ा यह है: पहले मिट्टी का ढांचा बनाया जाता है, उस ढांचे पर लाख पोती जाती है. फिर इस पर रेशम या पेटवे के कपड़े लपेटे जाते हैं. कपड़े तब तक लपेटते जाते हैं जब तक कि लाख में कड़ाई नहीं आ जाती और वह ढांचे के रूप को अपना नहीं लेती. तब ढांचे को निकाल लिया जाता है और फिर लाख की कई तह उसके अन्दर और बाहर चढ़ाई जाती हैं. आख़ीर में इस पर नक़्क़ाशी की जाती है और पालिश चढ़ाई जाती है. यह काम बहुत मेहनत का और बहुत नाज़ुक है.

बुनाई

चीनियों के हाथ जो चीज़ भी लग जाती है उससे वह सुन्दर चीज़ें बना लेते हैं, चाहे बांस हो और चाहे फूस, चाहे घास के तिनके हों और चाहे मूंज, वह अपनी कला का

تھا کہ شاید ہندستان اِس میدان میں چین سے آگے ہے۔ مکھی، مچھلی، چڑیاں اور روزمرہ دکھائی پڑنے والی چیزوں کے ٹھپے چھپائی کے لئے استعمال ہوتے ہیں۔ رضائی اور سر پر باندھنے کے لئے پرکھنڈوں وغیرہ کے لئے یہ کپڑے کام میں آتے ہیں۔

قالین

پیکنگ اور تینت-سن میں بہت اچھے قالین بنتے ہیں۔ اِن دونوں جگہوں کے علاوہ شینشی، سن-کیانگ، منگولیا اور تبت میں بھی قالین بنتے ہیں۔ قالین دو طرح سے بنے جاتے ہیں— ایک ہاتھ کے کرگھے سے اور دوسرے کروشیا سے۔ کرگھے سے جو قالین بنتے ہیں وہ زیادہ چلتے ہیں۔ اُن کی بنائی بہت گھنی ہوتی ہے۔ کروشیا سے جو قالین بنتے ہیں اُن میں محنت کم لگتی ہے اور کچا مال کم خرچ ہوتا ہے۔

لاکھ اور ملمع کا کام

تیئیس سو سال پہلے بھی چین میں لاکھ سے خوبصورت چیزیں بنتی تھیں۔ ان میں عام طور پر کالے پر لال رنگ سے نقاشی کی جاتی ہے اور لال پر کالے رنگ سے۔ پہلے لاکھ سے مہاتما بدھ کی مورتیاں بنائی جاتی تھیں۔ بارھویں اور سولھویں صدی کے بیچ لاکھ پر سونے چاندی کے تاروں سے نقاشی کرنے کا رواج زور پکڑ گیا۔ لاکھ کی چیزیں اِس طرح بنتی ہیں— پہلے ایک ڈھانچہ تیار کیا جاتا ہے۔ ڈھانچہ مٹی کا، یا لکڑی کا، یا لوہے کا، یا پیتل کا ہوتا ہے۔ اِس ڈھانچہ پر لاکھ کی کئی تہ چڑھائی جاتی ہیں۔ اُس کے بعد اِس پر باریک نقاشی کی جاتی ہے۔ نقاشی اُس سمے کی جاتی ہے جب لاکھ پوری طرح سوکھی نہ ہو۔ نمائش میں ایک لمبا چوڑا پھول دان تھا۔ اِس پر لال رنگ سے نقاشی کی گئی تھی۔ نقاشی اتنی باریک تھی کہ دیکھ کر تعجب ہوتا تھا۔

نمائش میں ٹی سیٹ بھی تھا۔ یہ لاکھ کا تھا اور اِسی لئے بہت ہی ہلکا تھا۔ یہ ٹی سیٹ دیکھنے کی چیز تھی۔ اِس کے بنانے کا طریقہ یہ ہے: پہلے مٹی کا ڈھانچہ بنایا جاتا ہے، اُس ڈھانچہ پر لاکھ پوتی جاتی ہے۔ پھر اِس پر ریشم یا پٹوے کے کپڑے لپیٹے جاتے ہیں۔ کپڑے تب تک لپیٹے جاتے ہیں جب تک کہ لاکھ میں کڑائی نہیں آ جاتی اور وہ ڈھانچہ کے روپ کو اپنا نہیں لیتی۔ تب ڈھانچے کو نکال لیا جاتا ہے اور پھر لاکھ کی کئی تہ اُس کے اندر اور باہر چڑھائی جاتی ہیں۔ آخیر میں اِس پر نقاشی کی جاتی ہے اور پالش چڑھائی جاتی ہے۔ یہ کام بہت محنت کا اور بہت نازک ہے۔

بنائی

چینیوں کے ہاتھ جو چیز بھی لگ جاتی ہے اُس سے وہ سندر چیزیں بنالیتے ہیں۔ چاہے بانس ہو اور چاہے پھوس، چاہے گھاس کے تنکے ہوں اور چاہے مونج، وہ اپنی کلا کا

हरा रंग यहां की बनी चीजों में सुन्दरता पैदा कर देता है. फूलदान और शीशे की दूसरी चीजें भी बनती हैं और उन पर खूबसूरत नक़्क़ाशी की जाती है.

रेशम

माना जाता है कि चीन दुनिया का पहला देश है जहां रेशम के कीड़े पाले गए और रेशम के धागों की घुन्डी बनाई गई. पुरानी खुदाइयों में कमख़ाब के टुकड़े अकसर मिलते हैं. हांगचाव, सुचाव, नानकिन, चेंगतु ऐसे इलाक़े हैं जहां कमख़ाब तैयार किया जाता है. यहां के रंग बिरंगे रेशमी थान नुमाइश की शोभा बढ़ा रहे थे.

रेशमी ग़ालीचे

चीनी ग़ालीचे हाथ के बुने रेशम के छोटे छोटे टुकड़े मालूम होते हैं. इन ग़ालीचों में ताने की जगह सफ़ेद रेशम के धागे इस्तेमाल होते हैं, बाने में कई कई रंग के धागे लगाए जाते हैं. छोटी छोटी खिड़कियों की मदद से तरह तरह के छाप बुने जाते हैं. इस ग़ालीचों की एक विशेषता यह है कि ये दोनों तरफ़ से एक ही से दिखाई देते हैं. इनमें उलटा सीधा नहीं होता. ग़ालीचे पहले पहल होपी प्रान्त के तिंगशेन नामी स्थान पर बनने शुरू हुए थे. आजकल सुचाव ग़ालीचे की बुनाई का सब से बड़ा केन्द्र है. इन ग़ालीचो पर बने चित्र और उनका रंग आंखों को आकर्शित किये बिना नहीं रहता. यह चित्र रोज़मर्रा के जीवन के होते हैं और उनमें क़ुदरती रंग भरे जाते हैं.

कशीदाकारी

चीनी महिलाएं कशीदाकारी में बहुत होशियार होती हैं. सातवीं सदी में ही कपड़ों पर कढ़ाई का रिवाज शुरू हो गया था. गयारहवीं सदी के बाद कशीदाकारी दो तरह से बढ़ी—एक तो तोशकों, लिहाफ़ों, पहेनने के कपड़ों, तकिये के गिलाफ़ों पर कढ़ाई के रूप में और दूसरे मशहूर आदमियो वग़ैरा के चित्रों को धागे और सुई की मदद से कपड़े पर उतारने के रूप में. इस तरह का काम चांगशा और सुचाव मे होता है. सुचाव में कशीदाकारों की बहुत बड़ी आबादी है और वहां इस तरह की चीजें बेहद बनती हैं. इस नुमाइश मे कई तसवीरें थी जो हाथ से काढ़ी गई थीं. यह कला शायद अभी हमारे देश में नहीं है.

ठप्पे का काम

हमारे देश में हज़ारों कारीगर ठप्पे से छपाई करते हैं, वह छीपे कहलाते हैं. इसी तरह चीन में भी होता है. पहले लकड़ी पर ख़ाका खोदा जाता है और फिर उस ठप्पे से कपड़ा छापा जाता है. चीन में दो तरह की छपाई होती है—एक सफ़ेद कपड़े पर नीली छपाई और दूसरे नीले कपड़े पर सफ़ेद छपाई. हिन्दुस्तान में तरह तरह की छपाई की जाती है. इस नुमाइश में ठप्पों के कामों को देखकर मालूम होता

ہرا رنگ یہاں کی بنی چیزوں میں سندرتا پیدا کر دیتا ہے۔ پھول دان اور شیشے کی دوسری چیزیں بھی بنتی ہیں اور ان پر خوبصورت نقاشی کی جاتی ہے۔

ریشم

مانا جاتا ہے کہ چین دنیا کا پہلا دیش ہے جہاں ریشم کے کیڑے پالے گئے اور ریشم کے دھاگوں کی گھنڈی بنائی گئی۔ پرانی کھدائیوں میں کمخواب کے ٹکڑے اکثر ملتے ہیں۔ ہانگ-چاؤ، سوچاؤ، نانکن، چینگتو ایسے علاقے ہیں جہاں کمخواب تیار کیا جاتا ہے۔ یہاں کے رنگ برنگے ریشمی تھان نمائش کی شوبھا بڑھا رہے تھے۔

ریشمی غالیچے

چینی غالیچے ہاتھ کے بنے ریشم کے چھوٹے چھوٹے ٹکڑے معلوم ہوتے ہیں۔ ان غالیچوں میں تانے کی جگہ سفید ریشم کے دھاگے استعمال ہوتے ہیں۔ بانے میں کئی کئی رنگ کے دھاگے لگائے جاتے ہیں۔ چھوٹی چھوٹی کھڑکیوں کی مدد سے طرح طرح کے چھاپ بنے جاتے ہیں۔ ان غالیچوں کی ایک وشیشتا یہ ہے کہ یہ دونوں طرف سے ایک ہی سے دکھائی دیتے ہیں۔ ان میں الٹا سیدھا نہیں ہوتا۔ غالیچے پہلے پہل ہوپی پرانت کے تنگ شین نامی استھان پر بننے شروع ہوئے تھے۔ آجکل سوچاؤ غالیچے کی بنائی کا سب سے بڑا کیندر ہے۔ ان غالیچوں پر بنے چتر اور ان کا رنگ آنکھوں کو آکرشت کئے بنا نہیں رہتا۔ یہ چتر روزمرہ کے جیون کے ہوتے ہیں اور ان میں قدرتی رنگ بھرے جاتے ہیں۔

کشیدہ کاری

چینی مہلائیں کشیدہ کاری میں بہت ہوشیار ہوتی ہیں۔ ساتویں صدی میں ہی کپڑوں پر کڑھائی کا رواج شروع ہو گیا تھا۔ گیارہویں صدی کے بعد کشیدہ کاری دو طرح سے بڑھی—ایک تو توشکوں، لحافوں، پہننے کے کپڑوں، تکیے کے غلافوں پر کڑھائی کے روپ میں اور دوسرے مشہور آدمیوں وغیرہ کے چتروں کو دھاگے اور سوئی کی مدد سے کپڑے پر اتارنے کے روپ میں۔ اس طرح کا کام چانگ-شا اور سوچاؤ میں ہوتا ہے۔ سوچاؤ میں کشیدہ کاروں کی بہت بڑی آبادی ہے اور وہاں اس طرح کی چیزیں بے حد بنتی ہیں۔ اس نمائش میں کئی تصویریں تھیں جو ہاتھ سے کاڑھی گئی تھیں۔ یہ کلا شاید ابھی ہمارے دیش میں نہیں ہے۔

ٹھپے کا کام

ہمارے دیش میں ہزاروں کاریگر ٹھپے سے چھپائی کرتے ہیں، وہ چھیپے کہلاتے ہیں۔ اسی طرح چین میں بھی ہوتا ہے۔ پہلے لکڑی پر خاکہ کھودا جاتا ہے اور پھر اس ٹھپے سے کپڑا چھاپا جاتا ہے۔ چین میں دو طرح کی چھپائی ہوتی ہے—ایک سفید کپڑے پر نیلی چھپائی اور دوسری نیلے کپڑے پر سفید چھپائی۔ ہندوستان میں طرح طرح کی چھپائی کی جاتی ہے۔ اس نمائش میں ٹھپوں کے کاموں کو دیکھ کر معلوم ہوتا

से इस मिट्टी की चीजें बन रही हैं. चौदहवीं सदी से यह जगह मूर्ति कला के लिये बहुत मशहूर है. इन मूर्तियों में बेश भूशा और भाव भंगिमा जिस खूबी से दिखाए जाते हैं उसकी जितनी सराहना की जाए कम है. नजाकत के साथ शान भी इन मूर्तियों से टपकती है. यहां की मूर्तियों पर रंग नहीं होता, यह बिल्कुल सफेद होती हैं, लेकिन इन पर पालिश बहुत अच्छी होती है. नुमाइश में कई मूर्तियों के बीच एक मूर्ति "देव कन्या" की थी. देव कन्या हाथों में फूल लेकर चारों तरफ बिखरा रही है. उसके कपड़ों के एक एक मोड़ को बहुत सफाई से जाहिर किया गया है. इस तरह की खूबसूरत मूर्तियां हिन्दुस्तान में कम मिलती हैं. यहां भी नई चीनी सरकार ने दो सरकारी फ़ैक्टरियां खोल दी हैं ताकि कलाकारों को काम मिले और कला की तरक़्क़ी हो.

बीच चीन के हुनान प्रान्त में योशीन नामी जगह पर भी चीनी मिट्टी की चीजें बनती हैं. आसमानी रंग पर लाल रंग के चित्र यहां की चीजों पर दिखाई पड़ते हैं. नुमाइश में यहां की छोटी छोटी मूर्तियां, खिलौने, मिट्टी के जानवर और चिड़ियां मौजूद थीं. कला के लिये यह जगह बारहवीं सदी से मशहूर है.

कुम्भकारी

नुमाइश में मिट्टी के बरतनों को देखकर दो बातें दर्शकों का ध्यान अपनी तरफ खींचती थीं: एक रंग, दूसरे चित्रकारी. चित्र, फूल पत्ती और जानवरों के हैं, रंग इस खूबी से भरे गए हैं कि चीजें हू बहू क़ुदरती मालूम होती हैं. बटेरों का एक जोड़ा इस नुमाइश में प्रदर्शित किया गया था जिसके रूप और रंग को देखकर ऐसा लगता था जैसे सचमुच के बटेरों की ममी बना कर रख दी गई हो. घड़ों पर लकीरों से चित्र बनाने और खास कर पौराणिक कथाओं के चित्र बनाने का भी रिवाज है.

शेन-शुई नाम की जगह पर जरा सख्त मिट्टी मिलती है. यह जगह दक्खिन चीन में है. इस मिट्टी के बने बरतनों को ठोंकने पर धात की सी झंकार पैदा होती है. यहां बरतनों पर चित्र उतारने का तरीक़ा यह है: पहले तरह तरह के रंगों के बरतन बना लिये जाते हैं, फिर उन पर चित्र बनाए जाते हैं और ऊपर से पालिश कर दी जाती है. पालिश से चित्रों में चमक आजाती है.

दक्खिन चीन के शान्तुंग प्रान्त में एक जगह पोशान है. यहां की कुम्भकारी सदियों से मशहूर है. यहां ज्यादातर रोजमर्रा के इस्तेमाल के बरतन बनते हैं. यहां के रंगों में बड़ी चमक होती है. पन्द्रहवीं सदी से यहां शीशे की चीजें बन रही हैं. खिलौने और छोटी बड़ी मूर्तियां भी बनती हैं. उन पर रंग भी किया जाता है. गहरा बादामी, नीला और

سے اُس مٹی کی چیزیں بن رہی ہیں. چودھویں صدی سے یہ جگہ مورتی کلا کے لئے بہت مشہور ہے. اِن مورتیوں میں ویش بھوشا اور بھاؤ بھنگما جس خوبی سے دکھائے جاتے ہیں اُس کی جتنی سراہنا کی جائے کم ہے. نزاکت کے ساتھ شان بھی اِن مورتیوں سے ٹپکتی ہے. یہاں کی مورتیوں پر رنگ نہیں ہوتا. یہ بالکل سفید ہوتی ہیں. لیکن ان پر پالش بہت اچھی ہوتی ہے. نمائش میں کئی مورتیوں کے بیچ ایک مورتی "دیوکنیا" کی تھی. دیوکنیا ہاتھوں میں پھول لیکر چاروں طرف بکھرا رہی ہے. اُس کے کپڑوں کے ایک ایک موڑ کو بہت صفائی سے ظاہر کیا گیا ہے. اِس طرح کی خوبصورت مورتیاں ہندستان میں کم ملتی ہیں. یہاں بھی نئی چینی سرکار نے دو سرکاری فیکٹریاں کھول دی ہیں تاکہ کلاکاروں کو کام ملے اور کلا کی ترقی ہو.

بیچ چین کے ہونان پرانت میں یوشین نامی جگہ پر بھی چینی مٹی کی چیزیں بنتی ہیں. آسمانی رنگ پر لال رنگ کے چتر یہاں کی چیزوں پر دکھائی پڑتے ہیں. نمائش میں یہاں کی چھوٹی چھوٹی مورتیاں، کھلونے، مٹی کے جانور اور چڑیاں موجود تھیں. کلا کے لئے یہ جگہ بارھویں صدی سے مشہور ہے.

کمبھ کاری

نمائش میں مٹی کے برتنوں کو دیکھکر دو باتیں درشکوں کا دھیان اپنی طرف کھینچتی تھیں: ایک رنگ دوسرے چترکاری. چتر، پھول پتی اور جانوروں کے ہیں. رنگ اِس خوبی سے بھرے گئے ہیں کہ چیزیں ہو بہو قدرتی معلوم ہوتی ہیں. بٹیروں کا ایک جوڑا اس نمائش میں پردرشت کیا گیا تھا جس کے روپ اور رنگ کو دیکھکر ایسا لگتا تھا جیسے سچ مچ کے بٹیروں کی ممی بنا کر رکھ دی گئی ہو. گھڑوں پر لکیروں سے چتر بنانے اور خاص کر پورانک کتھاؤں کے چتر بنانے کا بھی رواج ہے.

شین - شوئی نام کی جگہ پر ذرا سخت مٹی ملتی ہے. یہ جگہ دکھن چین میں ہے. اِس مٹی کے بنے برتنوں کو ٹھونکنے پر دھات کی سی جھنکار پیدا ہوتی ہے. یہاں برتنوں پر چتر اتارنے کا طریقہ یہ ہے: پہلے طرح طرح کے رنگوں کے برتن بنا لئے جاتے ہیں، پھر اُن پر چتر بنائے جاتے ہیں اور اوپر سے پالش کر دی جاتی ہے. پالش سے چتروں میں چمک آ جاتی ہے.

دکھن چین کے شانتنگ پرانت میں ایک جگہ پوشان ہے. یہاں کی کمبھکاری صدیوں سے مشہور ہے. یہاں زیادہ تر روزمرہ کے استعمال کے برتن بنتے ہیں. یہاں کے رنگوں میں بڑی چمک ہوتی ہے. پندرھویں صدی سے یہاں شیشہ کی چیزیں بن رہی ہیں. کھلونے اور چھوٹی بڑی مورتیاں بھی بنتی ہیں. اُن پر رنگ بھی کیا جاتا ہے. گہرا بادامی، نیلا اور

सब नई यानी हाल की बनी हुई थीं पर उनमें वही पुरानी आत्मा झलक रही थीं. चीन ने दूसरे देशों से सीखा जरूर है लेकिन अपनी परम्परा में उस सीख को ढाल लिया है. सारी नुमाइश को देखकर यह असर पड़ता था कि शिल्प के मैदान में चीन और हिन्दुस्तान बहुत मिलते जुलते हैं. दोनों की कला में पौरानिक कथाओं का पुट साफ़ दिखाई पड़ता है. जंगल, पहाड़, दरिया और जंगली जानवरों को रंगों और तागों की मदद से तरह तरह के रूप में ढालना दोनों जगह की कला का प्रधान अंग है. दोनों में इतना मेल है कि हंगरी की एक महिला दरशक को दिल्ली में यह कहना पड़ा :—"अगर मुझे यह पता न होता कि यह चीनी नुमाइश है और यहां दो एक मूर्तियां चीनी शकल सूरत की दिखाई न पड़ती तो मैं इस नुमाइश को यक़ीनन हिन्दुस्तानी शिल्प कला की नुमाइश समझ बैठती."

चीनी मिट्टी की चीज़ें

चार हज़ार साल पहले चीन में चीनी मिट्टी के ऐसे बरतन बनते थे जिनपर रंग किया जाता था और फिर काले और लाल रंग से लकीरें खींचकर उनको ख़ूबसूरत बनाया जाता था. ईसा से डेढ़ हज़ार बरस पहले चीन में ऐसे बरतन बनने लगे थे जिनका रंग हरयाली लिये या हलका पीला होता था. इसके बाद बरतन बनाने की कला में और तरक़्क़ी हुई. सेवर ताव के बजाए बरतनों को ख़र ताव देकर कड़ा बनाया जाने लगा. ईसा के जन्म के बाद बरतनों पर नीले रंग का रिवाज चला. सातवीं सदी ईसवी के बाद सफ़ेद पालिश के बरतन बनने लगे. चीनी मिट्टी की चीज़ों की तिजारत दसवीं सदी ईसवी में बहुत बढ़ी. चीन से यह सामान ईरान, हिन्दुस्तान, जापान और कुछ योरपी देशों को भी भेजा जाता था.

चीन के अलग अलग हिस्सों में अलग अलग तरह की चीज़ें बनती हैं. बीच चीन के क्यांगसी सूबे में एक जगह चिंग-ते-चिन है. यहां सन 1004 ईसवी में चीनी मिट्टी की चीज़ें बननी शुरू हुईं. किसी ज़माने में चीन में सब से अच्छा चीनी मिट्टी का सामान यहीं बनता था. यहां तरह तरह की पालिशें ईजाद हुईं और तरह तरह के रंग एक साथ इस्तेमाल किये जाने लगे. आजकल की सरकार ने यहां दो नई फ़ैक्टरियां खोली हैं जिन में कलावन्तों और कारीगरों को बुला बुला कर एक साथ रखा गया जिस में उन्हें एक दूसरे से सलाह करने और अपनी अपनी कला को तरक़्क़ी देने का एक नया और अनोखा मौक़ा मिला. ज्ञान और काम मिल कर ही आगे बढ़ते हैं और दुनिया का भला करते हैं. इस पर चीन में काफ़ी ध्यान दिया जाता है.

दक्खिन चीन के फ़ोकिन प्रान्त में एक जगह थांवा है. यहां तीन तरह की चीनी मिट्टी होती है. यहां नौ सौ साल

سب نئی یعنی حال کی بنی ہوئی تھیں پر اُن میں وہی پرانی آتما جھلک رہی تھی. چین نے دوسرے دیشوں سے سیکھا ضرور ہے لیکن اپنی پرمپرا میں اُس سیکھ کو ڈھال لیا ہے . ساری نمائش کو دیکھ کر یہ اثر پڑتا تھا کہ شلپ کے میدان میں چین اور ہندستان بہت ملتے جلتے ہیں. دونوں کی کلا میں پورانک کتھاؤں کا پٹ صاف دکھائی پڑتا ہے . جنگل' پہاڑ' دریا اور جنگلی جانوروں کو رنگوں اور تاگوں کی مدد سے طرح طرح کے روپ میں ڈھالنا دونوں جگہ کی کلا کا پردھان انگ ہے . دونوں میں اتنا میل ہے کہ ہنگری کی ایک مہیلا درشک کو دلی میں یہ کہنا پڑا :—"اگر مجھے یہ پتہ نہ ہوتا کہ یہ چینی نمائش ہے اور یہاں دو ایک مورتیاں چینی شکل صورت کی دکھائی نہ پڑتیں تو میں اِس نمائش کو یقیناً ہندستانی شلپ کلا کی نمائش سمجھ بیٹھتی ."

چینی مٹی کی چیزیں

چار ہزار سال پہلے چین میں چینی مٹی کے ایسے برتن بنتے تھے جن پر رنگ کیا جاتا تھا اور پھر کالے اور لال رنگ سے لکیریں کھینچ کر اُن کو خوبصورت بنایا جاتا تھا . عیسیٰ سے ڈیڑھ ہزار برس پہلے چین میں ایسے برتن بننے لگے تھے جن کا رنگ ہریالی لئے یا ہلکا پیلا ہوتا تھا . اس کے بعد برتن بنانے کی کلا میں اور ترقی ہوئی . سیورتاؤ کے بجائے برتنوں کو کھرتاؤ دے کر کڑا بنایا جانے لگا . عیسیٰ کے جنم کے بعد برتنوں پر نیلے رنگ کا رواج چلا . ساتویں صدی عیسوی کے بعد سفید پالش کے برتن بننے لگے. چینی مٹی کی چیزوں کی تجارت دسویں صدی عیسوی میں بہت بڑھی . چین سے یہ سامان ایران' ہندستان' جاپان اور کچھ یورپی دیشوں کو بھی بھیجا جاتا تھا .

چین کے الگ الگ حصوں میں الگ الگ طرح کی چیزیں بنتی ہیں. بیچ چین کے کیانگسی صوبے میں ایک جگہ چنگ - تے - چن ہے. یہاں سن 1004 عیسوی میں چینی مٹی کی چیزیں بننی شروع ہوئیں . کسی زمانے میں چین میں سب سے اچھا چینی مٹی کا سامان یہیں بنتا تھا . یہاں طرح طرح کی پالشیں ایجاد ہوئیں اور طرح طرح کے رنگ ایک ساتھ استعمال کئے جانے لگے . آجکل کی سرکار نے یہاں دو نئی فیکٹریاں کھولی ہیں جن میں کلاونتوں اور کاریگروں کو بلا بلا کر ایک ساتھ رکھا گیا جس سے انہیں ایک دوسرے سے صلاح کرنے اور اپنی اپنی کلا کو ترقی دینے کا ایک نیا اور انوکھا موقعہ ملا . گیان اور کام مل کر ہی آگے بڑھتے ہیں اور دنیا کا بھلا کرتے ہیں . اِس پر چین میں کافی دھیان دیا جاتا ہے .

دکھن چین کے فوکن پرانت میں ایک جگہ تھووا ہے . یہاں تین طرح کی چینی مٹی ہوتی ہے . یہاں نو سو سال

सोसायटी) की दावत पर की थी. आल इन्डिया फ़ाइन आर्ट ऐन्ड क्राफ़्ट्स सोसायटी ने अपने मकान में इसका इन्तज़ाम किया. प्रदर्शनी में सजावट का काम चीनी दूतावास के कर्मचारियों ने किया. बाहर रंग बिरंगे रेशमी झंडे लकड़ी की सफ़ेद बल्लियों पर लहरा रहे थे. उनमें सुनहरी किरचें लगी हुई थीं जो उनकी शोभा बढ़ाती थीं. हवा में जब यह झंडे अपनी बल्लियों की धुरी पर फड़फड़ाते थे तो रंगों का मेल देखकर आंखें हंस पड़ती थीं. सामने एक प्लेटफ़ार्म था जिसकी छत चीनी ढंग से बनी थी. इस प्लेटफ़ार्म के एक तरफ़ लाल कपड़े पर पांच सितारे चमक रहे थे और दूसरी तरफ़ केसरी, सफ़ेद और हरी पट्टियों पर अशोक चक्र था. रात को बिजली की रोशनी यहां समां बांध देती थी.

अन्दर घुसते ही मोटे मोटे सुनहरे अक्षरों में पंडित जवाहरलाल नेहरू का यह शुभ सन्देश पढ़ने को मिलता था :—"मुझे यह जानकर ख़ुशी हुई कि आल इन्डिया फ़ाइन आर्ट ऐन्ड क्राफ़्ट्स सोसायटी चीनी कला और शिल्प की प्रदर्शनी कर रही है. बहुत पहलुओं से इसका स्वागत होना चाहिये. चीनी कला की परम्परा बड़ी महान है. चीन की बहुत सी कलाकृतियों को देखकर बेहद ख़ुशी होती है और हम उनसे बहुत कुछ सीख सकते हैं. यह जानकर ख़ास तौर से दिलचस्पी बढ़ जाती है कि पिछले बरसों में चीनी सरकार ने वहां की कला और शिल्प को बहुत प्रोत्साहन दिया है. इस तरह की नुमाइश के कलात्मक मूल्य के अलावा इसका स्वागत हम इसलिये भी करते हैं क्योंकि इससे भारत और चीन की जनता के बीच दोस्ती बढ़ती है. मेरी कामना है कि यह नुमाइश पूरी तरह कामयाब हो और मुझे आशा है कि बहुत से लोग उसे देखने जाएंगे."

चार बड़े बड़े कमरों में लगभग एक हज़ार चीज़ें सजी हुई थीं. चीनी मिट्टी के बरतन, चीनी मिट्टी की दूसरी चीज़ें मूर्तियां, आटे की बहुरंगी गुड़ियां, मिट्टी के पुतले, घड़े, फूलदान, शीशे के खिलौने, रेशम के रंग बिरंगे फूल, चिड़ियां और जानवर, सुन्दर रेशमी कपड़े, हाथ के कशीदे, क्रूशिया की बुनाई, झालर, ठप्पे का काम, क़ालीन, मुलम्मा और लाख का काम, बांस, मूंज और सींकों से बनी रोज़मर्रा के इस्तेमाल की चीज़ें, लकड़ी, फ़ीरोज़े, पत्थर और हाथी-दान्त की खुदाई, चान्दी सोने के बरतन और गहने, लकड़ी पर सोने चांदी के तारों का काम वग़ैरह वग़ैरह: यह सारी चीज़ें एक साथ देखने को मिलती थीं. चीज़ें चीन के अलग अलग भागों से इकट्ठा की गई थीं और सब मिलकर चीनी कला और शिल्प की तसवीर पूरी कर देती थीं.

चीनी कला और शिल्प का इतिहास बहुत पुराना है. लगभग चार हज़ार साल से चीन में कला तरक़्क़ी करती आ रही है. इस नुमाइश में जो चीज़ें दिखाई गई थीं वह

سوسائٹی) کی دعوت پر کی تھی . آل انڈیا فائن آرٹ اینڈ کرافٹس سوسائٹی نے اپنے مکان میں اِس کا انتظام کیا . پردرشنی میں سجاوٹ کا کام چینی دوتاواس کے کرمچاریوں نے کیا . باہر رنگ برنگے ریشمی جھنڈے لکڑی کی سفید بلیوں پر لہرا رہے تھے . اُن میں سنہری کرچیں لگی ہوئی تھیں جو اُن کی شوبھا بڑھاتی تھیں . ہوا میں جب یہ جھنڈے اپنی بلیوں کی دھری پر پھڑپھڑاتے تھے تو رنگوں کا میل دیکھکر آنکھیں ہنس پڑتی تھیں . سامنے ایک پلیٹ فارم تھا جس کی چھت چینی ڈھنگ سے بنی تھی . اِس پلیٹ فارم کے ایک طرف لال کپڑے پر پانچ ستارے چمک رہے تھے اور دوسری طرف کیسری، سفید اور ہری پٹیوں پر اشوک چکر تھا . رات کو بجلی کی روشنی یہاں سماں باندھ دیتی تھی .

اندر گھستے ہی موٹے موٹے سنہرے اکشروں میں پنڈت جواہر لال نہرو کا یہ شبھ سندیش پڑھنے کو ملتا تھا :—"مجھے یہ جان کر خوشی ہوئی کہ آل اِنڈیا فائن آرٹ اینڈ کرافٹس سوسائٹی چینی کلا اور شلپ کی پردرشنی کر رہی ہے . بہت پہلوؤں سے اُس کا سواگت ہونا چاہئے . چینی کلا کی پرمپرا بڑی مہان ہے . چین کی بہت سی کلا کرتیوں کو دیکھ کر بے حد خوشی ہوتی ہے اور ہم ان سے بہت کچھ سیکھ سکتے ہیں . یہ جان کر خاص طور سے دلچسپی بڑھ جاتی ہے کہ پچھلے برسوں میں چینی سرکار نے وہاں کی کلا اور شلپ کو بہت پروتساہن دیا ہے . اِس طرح کی نمائش کے کلاتمک مولیہ کے علاوہ اِس کا سواگت ہم اِس لئے بھی کرتے ہیں کیونکہ اِس سے بھارت اور چین کی جنتا کے بیچ دوستی بڑھتی ہے . میری کامنا ہے کہ یہ نمائش پوری طرح کامیاب ہو اور مجھے آشا ہے کہ بہت سے لوگ اُسے دیکھنے جائینگے ."

چار بڑے بڑے کمروں میں لگ بھگ ایک ہزار چیزیں سجی ہوئی تھیں . چینی مٹی کے برتن، چینی مٹی کی دوسری چیزیں، مورتیاں، آٹے کی بہورنگی گڑیاں، مٹی کے پتلے، گھڑے، پھولدان، شیشے کے کھلونے، ریشم کے رنگ برنگے پھول، چڑیاں اور جانور، سندر ریشمی کپڑے، ہاتھ کے کشیدے، کروشیا کی بنائی، جھالر، ٹھپے کا کام، قالین، ملمع اور لاکھ کا کام، بانس، مونج اور سینکوں سے بنی روزمرہ کے استعمال کی چیزیں، لکڑی، فیروزے، پتھر اور ہاتھی دانت کی کھدائی، چاندی سونے کے برتن اور گہنے، لکڑی پر سونے چاندی کے تاروں کا کام وغیرہ وغیرہ : یہ ساری چیزیں ایک ساتھ دیکھنے کو ملتی تھیں : چیزیں چین کے الگ الگ بھاگوں سے اِکٹھا کی گئی تھیں اور سب مل کر چینی کلا اور شلپ کی تصویر پوری کردیتی تھیں .

چینی کلا اور شلپ کا اِتہاس بہت پرانا ہے . لگ بھگ چار ہزار سال سے چین میں کلا ترقی کرتی جارہی ہے . اِس نمائش میں جو چیزیں دکھائی گئی تھیں وہ

दिल्ली में चीनी कला की नुमाइश

श्री मुजीब रिज़वी

पांच फ़रवरी की शाम को दिल्ली में चीनी कला और शिल्प की नुमाइश का उद्घाटन करते हुए उपराष्ट्रपति डाक्टर राधाकृश्नन ने कहा—"विद्या की क़द्र, कला से प्रेम, और आज़ादी की चाह : यह तीनों संस्कृति का निचोड़ हैं. फ़ौजी और राजकाजी ढांचे और शासन व्यवस्था इसी बुनियादी और असल 'संस्कृति' की केवल रक्षा के लिये होते हैं." उन्होंने इस विचार का समर्थन करते हुए बताया—"पहली लड़ाई के समय आक्सफ़ोर्ड यूनीवर्सिटी के एक प्रोफ़ेसर से लोगों ने पूछा—"आक्सफ़ोर्ड मे बैठे आप क्या कर रहे हैं जब कि कला और संस्कृति के लिये फ्रांस मे लोग लड़ रहे हैं?" उसने जवाब दिया: 'मैं ही वह संस्कृति हूं जिस के लिये वह वहां लड़ रहे हैं और जाने दे रहे हैं." अपने अन्दर और बाहर दोनो को सुन्दर बनाना संस्कृति है. अगर मनुश्य को अन्दर से सुन्दर बनाने का सेहरा धर्मों, पैग़म्बरों और औतारों को दिया जा सकता है तो जीवन के बाहरी रूप को सुघड़ और सुन्दर बनाने का श्रेय कला और कलावन्तों को है. जब हम दुनिया के कलावन्तों की देन को आंकेंगे तो चीनी कलावन्त कला के हर मैदान मे हमे पश पेश दिखाई पड़ेंगे. चीनी कला की परम्परा बहुत पुरानी है. उसका आधार है: जीवन रूपी गुलदस्ते को नए नए खूबसूरत फूलो से सजाना और मनुश्य की बुद्धि का निरंतर विकास करना. चीन ने अपनी इस परम्परा को बहुत से तूफ़ानो से बचाया है और आज यह देखकर खुशी होती है कि चीनी कला का टिमटिमाता हुआ दिया नई चीनी सरकार की छत्र छाया में फिर पूरी शान से जगमगाने लगा है.

राजकाजी और फ़ौजी दोस्ती एक बुलबुला है. आज के दोस्त कल के दुशमन हो जाते हैं. लेकिन जो दोस्ती कला और संस्कृति के आदान प्रदान पर क़ायम होती है वह बहुत देर मे टूटती है. डाक्टर राधाकृश्नन ने कहा—"लोग उन तरीक़ों की चरचा करते हैं जिन पर अमरीका और कनाडा जैसे दो आज़ाद मुल्कों का सम्बन्ध क़ायम है. पर यहां दोस्ती की उससे कहीं बड़ी मिसाल मौजूद है. यह दोस्ती सदियों से चली आ रही है."

दूसरे देशों से कलचरी सम्बन्ध क़ायम करने के लिये चीन में एक सोसायटी है जिसने यह नुमाइश आल इन्डिया फ़ाइन आर्ट्स ऐन्ड क्राफ्ट्स सोसायटी (कुल हिन्द कला शिल्प

دلی میں چینی کلا کی نمائش

شری مجیب رضوی

پانچ فروری کی شام کو دلی میں چینی کلا اور شلپ کی نمائش کا اُدگھاٹن کرتے ہوئے اُپ راشٹر پتی ڈاکٹر رادھا کرشنن نے کہا— "ودیا کی قدر، کلا سے پریم اور آزادی کی چاہ: یہ تینوں سنسکرتی کا نچوڑ ہیں۔ فوجی اور راج کاجی ڈھانچے اور شاسن ویوستھا اِسی بنیادی اور اصل 'سنسکرتی' کی کیول رکشا کے لئے ہوتے ہیں۔" انہوں نے اس وچار کا سمرتھن کرتے ہوئے بتایا— "پہلی لڑائی کے سمے آکسفورڈ یونیورسٹی کے ایک پروفیسر سے لوگوں نے پوچھا— "آکسفورڈ میں بیٹھے آپ کیا کر رہے ہیں جبکہ کلا اور سنسکرتی کے لئے فرانس میں لوگ لڑ رہے ہیں؟" اس نے جواب دیا: "میں ہی وہ سنسکرتی ہوں جس کے لئے وہ وہاں لڑ رہے ہیں اور جانیں دے رہے ہیں۔" اپنے اندر اور باہر دونوں کو سندر بنانا سنسکرتی ہے۔ اگر منشیہ کو اندر سے سندر بنانے کا سہرا دھرموں، پیغمبروں اور اوتاروں کو دیا جا سکتا ہے تو جیون کے باہری روپ کو سگھڑ اور سندر بنانے کا شریہ کلا اور کلاونتوں کو ہے۔ جب ہم دنیا کے کلاونتوں کی دین کو آنکیں گے تو چینی کلاونت کلا کے ہر میدان میں ہمیں پیش پیش دکھائی پڑیں گے۔ چینی کلا کی پرمپرا بہت پرانی ہے۔ اس کا آدھار ہے: جیون روپی گلدستے کو نئے نئے خوبصورت پھولوں سے سجانا اور منشیہ کی بدھی کا نرنتر وکاس کرنا۔ چین نے اپنی اس پرمپرا کو بہت سے طوفانوں سے بچایا ہے اور آج یہ دیکھ کر خوشی ہوتی ہے کہ چینی کلا کا ٹمٹماتا ہوا دیا نئی چینی سرکار کی چھتر چھایا میں پھر پوری شان سے جگمگانے لگا ہے۔

راج کاجی اور فوجی دوستی ایک بلبلا ہے۔ آج کے دوست کل کے دشمن ہو جاتے ہیں۔ لیکن جو دوستی کلا اور سنسکرتی کے آدان پردان پر قائم ہوتی ہے وہ بہت دیر میں ٹوٹتی ہے۔ ڈاکٹر رادھا کرشنن نے کہا ہے— "لوگ اُن طریقوں کی چرچا کرتے ہیں جن پر امریکہ اور کناڈا جیسے دو آزاد ملکوں کا سمبندھ قائم ہے۔ پر یہاں دوستی کی اس سے کہیں بڑی مثال موجود ہے۔ یہ دوستی صدیوں سے چلی آ رہی ہے۔"

دوسرے دیشوں سے کلچری سمبندھ قائم کرنے کے لئے چین میں ایک سوسائٹی ہے جس نے یہ نمائش آل انڈیا فائن آرٹس اینڈ کرافٹس سوسائٹی (کل ہند کلا شلپ

के परिमानों की दृष्टि से श्रेष्ठ मीनारें हैं. चीन में मसजिदों में केवल मुअज़्ज़िन के लिये एक छोटी मीनार होती है. चौदहवीं और पन्द्रहवीं सदी की क़ाहिरा की मीनारों ने इटली की रेनासां डिज़ाइनों को और यूरोप के, बाद में निर्मित टावरों और रैम्पर्टो पर काफ़ी असर डाला.

एलिज़बेथ के समय से और उसके बाद भी इङ्गलिस्तान की इमारतों में कार्निस के पास या कमरों के निचले हिस्सों में जो लेस की पैटर्न के बेल-बूटों का इस्तेमाल शुरू हुआ, अङ्गरेज़ी में उसे 'अरेबेस्क' (Arabesque) कहते हैं. इस एक चीज़ से पता चलता है कि मध्य युग के अरबों ने इङ्गलिस्तान की निर्मान-कला को सुन्दर बनाने मे ज़ाहिरा हिस्सा लिया.

यूरोप में और दुनिया के दूसरे हिस्सों में जिस नोकीली मेहराब (Pointed arch) का रिवाज शुरू हुआ यह कहने के लिये काफ़ी प्रमान हैं कि इसका उद्गम शाम और दूसरे मुल्कों की इसलामी इमारतों से है. यूरोप की 'ओगी' मेहराबें और 'ट्यूडर' मेहराबें तो साफ़ साफ़ मुसलिम मेहराबों की नक़लें हैं. अर्ध चन्द्राकार और पंखुड़ियांदार मेहराबें गो इसलाम को भारत की देन हैं ताहम यूरोप ने इनकी नक़ल इसलामी इमारतों से ही की. खिड़कियों के आस पास और फ़र्श पर ज्यामिति की रेखायें बनाने का रिवाज भी यूरोप में इसलामी निर्मान-कला के प्रभाव से फैला. आधुनिक इमारतों मे कमरो की सीलिंग में जो थालीनुमा गोल डिज़ाइन होती है और ज्योमिति की शकलों के रूप मे जो कटी हुई जालियां बनाई जाती हैं वे भी शुरू की मसजिदों की यादगार हैं. गाथिक इमारतों मे स्तम्भों के कोनों के पास जो जुड़े हुये बान के आकार की धज्जियां इस्तेमाल की जाती हैं और जो गाथिक निर्मान कला के इतिहास मे अत्यन्त महत्वपूर्न समझी जाती हैं आठवीं और नवीं सदी की मुसलिम इमारतों की नक़ल हैं.❀ दीवारों पर बेल बूटे और उभरी हुई कोर्निस का रिवाज इराक़ मे प्रचलित था. यही चीज़ें बाद में गाथिक निर्मान कला का एक ख़ास अङ्ग बन गईं.

लकड़ी के जालीदार परदे जिन्हें अरबी मे 'मशराबिया' कहते हैं, मकानों में जनानख़ाने के परदे के काम मे या मसजिदों में परदे के तौर पर इस्तेमाल किये जाते थे. बाद में इङ्गलिस्तान में इनकी ख़ूब नक़लें शुरू हुईं.

अरबों ने ज्यामिति के अपने अथाह ज्ञान के कारन, दुनिया के अनेक प्राचीन देशों के संसर्ग में आने के कारन और अपनी जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारन निर्मान-कला का एक ऐसा सुन्दर और उपयोगी समन्वय तैयार किया जिसकी छाप आम तौर पर आधुनिक निर्मान-कला पर और विशेशकर यूरोप की निर्मान-कला पर हमें स्पष्ट दिखाई देती है.

کے پریمانوں کی درشٹی سے شریشٹھ میناریں ھیں ۔ چین میں مسجدوں میں کیول موذن کے لئے ایک چھوٹی مینار ھوتی ھے. چودھویں اور پندرھویں صدی کی قاھرہ کی میناروں نے اٹلی کی ریناساں ڈیزائنوں کو اور یورپ کے، بعد میں نرمت ٹاوروں اور ریمپرٹو پر کافی اثر ڈالا ۔

ایلیزبیتھ کے سمے سے اور اُس کے بعد بھی انگلستان کی عمارتوں میں کورنس کے پاس یا کمروں کے نچلے حصوں میں جو لیس کی پیٹرن کے بیل بوٹوں کا استعمال شروع ھوا، انگریزی میں اُسے ' اریبیسق ' (Arabesque) کہتے ھیں. اس ایک چیز سے پتہ چلتا ھے کہ مدھیہ یگ کے عربوں نے انگلستان کی نرمان کلا کو سندر بنانے میں ظاھرا حصہ لیا ۔

یورپ میں اور دنیا کے دوسرے حصوں میں جس نوکیلی محراب (Pointed arch) کا رواج شروع ھوا یہ کہنے کے لئے کافی پرمان ھیں کہ اس کا اُدگم شام اور دوسرے ملکوں کی اسلامی عمارتوں سے ھے ۔ یورپ کی ' اوگی ' محرابیں اور 'ٹیوڈر' محرابیں تو صاف صاف مسلم محرابوں کی نقلیں ھیں ۔ اردھ چندراکار اور پنکھڑیاں دار محرابیں گو اسلام کو بھارت کی دین ھیں تاھم یورپ نے اِن کی نقل اسلامی عمارتوں سے ھی کی ۔ کھڑکیوں کے آس پاس اور فرش پر جیامتی کی ریکھائیں بنانے کا رواج بھی یورپ میں اسلامی نرمان کلا کے پربھاؤ سے پھیلا آدھونک عمارتوں میں کمروں کی سیلنگ میں جو تھالی نما گول ڈزائن ھوتی ھے اور جیامتی کی شکلوں کے روپ میں جو کٹی ھوئی جالیاں بنائی جاتی ھیں وے بھی شروع کی مسجدوں کی یادگار ھیں گاتھک عمارتوں میں استمبھوں کے کونوں کے پاس جو جڑے ھوئے بان کے آکار کی دھجیاں استعمال کی جاتی ھیں اور جو گاتھک نرمان کلا کے اتہاس میں اتینت مہتو پورن سمجھی جاتی ھیں آٹھویں اور نویں صدی کی مسلم عمارتوں کی نقل ھیں ۔ ❀ دیواروں پر بیل بوٹے اور اُبھری ھوئی کورنس کا رواج عراق میں پرچلت تھا ۔ یہی چیزیں بعد میں گاتھک نرمان کلا کا ایک خاص انگ بن گئیں ۔

لکڑی کے جالی دار پردے جنھیں عربی میں 'مشرابیہ' کہتے ھیں، مکانوں میں زنانخانے کے پردے کے کام میں یا مسجدوں میں پردے کے طور پر استعمال کئے جاتے تھے. بعد میں انگلستان میں اِن کی خوب نقلیں شروع ھوئیں ۔

عربوں نے جیامتی کے اپنے اتھاہ گیان کے کارن، دنیا کے انیک پراچین دیشوں کے سنسرگ میں آنے کے کارن اور اپنی جگیاسو پرورتی کے کارن نرمان کلا کا ایک ایسا سندر اور اُپیوگی سمنوے تیار کیا جس کی چھاپ عام طور پر آدھونک نرمان کلا پر اور وشیش کر یورپ کی نرمان کلا پر ھمیں اسپشٹ دکھائی دیتی ھے ۔

❀ Martin S. Briggs' European Architecture.

(4) तुर्की तामीर-कला और
(5) भारतीय पठान-मुग़ल तामीर-कला.

किसी भी देश की भौगोलिक हालतों से निर्मान-कला का रूहानी ताल्लुक़ होता है. धर्म एक हद तक ही उसपर असर डालता है. उसमें जीवन और रूप रंग भरने वाली देश की .क़ुदरती हालत ही है. भारत घने बनों, फूल-पत्तियों, पर्वतों, नदियों, घाटियों और वादियों का देश है, इसीलिये यहां की निर्मान-कला में विशालता के साथ साथ बाहुल्यता और विविधता भी है. मन्दिर का कोना कोना आपको मूर्तियों, फूल पत्तियों और कंगूरे से लदा मिलेगा. इसके विपरीत अरब एक रेगिस्तान है, जिधर देखो उधर विस्तृत नीला आसमान और असीम रेगिस्तान. मसजिदों की निर्मान-कल्पना पर भी इसी भौगोलिक स्थिति का असर साफ दिखाई देता है. मरुस्थल की छाप मसजिद की साफ सपाट लेकिन व्यापक असर डालने वाली बनावट पर आपको मिलेगी.

इसलाम दुनिया के अनेकों सभ्य से सभ्य और उन्नत देशों में गया. अपने साथ साथ वह निर्मान-कला के बुनियादी उसूल भी ले गया. यह भी सही है कि दुनिया के विविध देशों में इसलामी तामीरों में एक व्यापक एकता और साम्य भी दिखाई देता है; किन्तु यह सब होते हुए भी मिस्र की इसलामी निर्मान-कला, ईरान की इसलामी निर्मान-कला और भारत की इसलामी निर्मान-कला मूल रूप से मिस्री, ईरानी, स्पेनी, चीनी और भारतीय है. इन समस्त देशों की बुनियादी निर्मान-कलाओं ने इसलामी निर्मान-कला पर बेहद असर डाला. निर्मान-कला की स्थानीय परम्परायें इसलामी तामीरों पर पूरी तरह हावी हो गईं.

शुरू शुरू में सीधी सादी जामा मसजिदों का रिवाज चला. उसके बाद गुम्बद वाली मसजिदें बननी शुरू हुईं. इसके बाद बारहवीं सदी में क्यूनिफ़ार्म शकल की मदरसा मसजिदों का काफ़ी प्रचार हुआ. बाद में गुम्बद मुसलिम निर्मान-कला का एक दिलचस्प और जरूरी अङ्ग बन गया. क़ाहिरा में उभरे हुये गुम्बद, ईरान और तुर्किस्तान में गोल गुम्बद और क़ुस्तुनतुनिया की मसजिदों में बाइज़नटाइन शकल के नीचे गुम्बदों का रिवाज था. गुम्बदों की बाहरी सजावट का तरीक़ा भी जगह जगह भिन्न भिन्न प्रकार का था. 15वीं सदी में मिस्र की पत्थर की गुम्बदों पर लेस के पैटर्न की खुदाई और पच्चीकारी होती थी. ईरानी गुम्बदों के ऊपर चमकदार टाइलें लगाई जाती थीं.

इसलामी मीनारों की बनावट में भी बेहद ख़ूबसूरती बढ़ी. क़ुतुब मीनार भारतीय निर्मान कला के समन्वय के कारन संसार की सब से शानदार मीनार समझी जाती है. लाहौर की शाही मसजिद की मीनारें, दिल्ली की जामा मसजिद की मीनारें, औरङ्गाबाद की मीनारें और आगरे की मोती मसजिद की मीनारें कला, सौन्दर्य और ज्यामिति

4) ترکی تعمیر کلا اور

(5) بھارتیہ پٹھان مغل تعمیر کلا

کسی بھی دیش کی بھوگولک حالتوں سے نرمان کلا کا روحانی تعلق ہوتا ہے ۔ دھرم ایک حد تک ہی اس پر اثر ڈالتا ہے ۔ اس میں جیون اور روپ رنگ بھرنے والی دیش کی قدرتی حالت ہی ہے ۔ بھارت گھنے بنوں، پھول پتیوں، پربتوں، ندیوں، گھاٹیوں اور وادیوں کا دیش ہے، اسی لئے یہاں کی نرمان کلا میں وشالتا کے ساتھ ساتھ باہولیتا اور وودھتا بھی ہے ۔ مندر کا کونہ کونہ آپ کو مورتیوں، پھول پتیوں اور کنگورے سے لدا ملے گا ۔ اس کے وپریت عرب ایک ریگستان ہے، جدھر دیکھو ادھر وسترت نیلا آسمان اور اسیم ریگستان ۔ مسجدوں کی نرمان کلپنا پر بھی اسی بھوگولک استھتی کا اثر صاف دکھائی دیتا ہے ۔ مروستھل کی چھاپ مسجد کی صاف سپاٹ لیکن ویاپک اثر ڈالنے والی بناوٹ پر آپ کو ملے گی ۔

اسلام دنیا کے انیکوں سبھیہ سے سبھیہ اور اُنت دیشوں میں گیا ۔ اپنے ساتھ ساتھ وہ نرمان کلا کے بنیادی اصول بھی لے گیا ۔ یہ بھی صحیح ہے کہ دنیا کے وودھ دیشوں میں اسلامی تعمیروں میں ایک ویاپک ایکتا اور سامیہ بھی دکھائی دیتا ہے، کنتو یہ سب ہوتے ہوئے بھی مصر کی اسلامی نرمان کلا، ایران کی اسلامی نرمان کلا اور بھارت کی اسلامی نرمان کلا مول روپ سے مصری، ایرانی، اسپینی، چینی اور بھارتیہ ہے ۔ ان سمست دیشوں کی بنیادی نرمان کلاؤں نے اسلامی نرمان کلا پر بے حد اثر ڈالا ۔ نرمان کلا کی استھانیہ پرمپرائیں اسلامی تعمیروں پر پوری طرح حاوی ہو گئیں ۔

شروع شروع میں سیدھی سادی جامع مسجدوں کا رواج چلا ۔ اس کے بعد گنبد والی مسجدیں بننی شروع ہوئیں ۔ اس کے بعد بارھویں صدی میں کیونی فارم شکل کی مدرسہ مسجدوں کا کافی پرچار ہوا ۔ بعد میں گنبد مسلم نرمان کلا کا ایک دلچسپ اور ضروری انگ بن گیا ۔ قاہرہ میں ابھرے ہوئے گنبد، ایران اور ترکستان میں گول گنبد اور قسطنطنیہ کی مسجدوں میں بائزنٹائن شکل کے نیچے گنبدوں کا رواج تھا ۔ گنبدوں کی باہری سجاوٹ کا طریقہ بھی جگہ جگہ بھن بھن پرکار کا تھا ۔ 15ویں صدی میں مصر کی پتھر کی گنبدوں پر لیس کے پیٹرن کی کھدائی اور پچیکاری ہوتی تھی ۔ ایرانی گنبدوں کے اوپر چمکدار ٹائلیں لگائی جاتی تھیں ۔

اسلامی میناروں کی بناوٹ میں بھی بے حد خوبصورتی بڑھی ۔ قطب مینار بھارتیہ نرمان کلا کے سمنوے کے کارن سنسار کی سب سے شاندار مینار سمجھی جاتی ہے ۔ لاہور کی شاہی مسجد کی میناریں، دلی کی جامع مسجد کی میناریں، اورنگ آباد کی میناریں اور آگرہ کی موتی مسجد کی میناریں کلا، سوندریہ اور جیومتی

में तामीर हुई. यूं तो इसलाम के पहले की इमारतों में भी नाल नुमा मेहराबों का रिवाज था लेकिन बाद में वह खास इसलामी चीज़ बन गई.

मसजिद में पहले पहल मीनार की तामीर मुअज्ज़िन के ऊंची जगह से अज़ान देने के ख़याल से शुरू हुई. शुरू शुरू की मसजिदों में सिर्फ़ एक ही छोटी मीनार होती थी. ऊंची ऊंची चार मीनारों का रिवाज तो बहुत बाद में पड़ा. सबसे पुरानी मीनार ट्यूनस के क़रीब 'क़यरवान' की मसजिद की मीनार है. यह मसजिद ख़लीफ़ा हिशाम (सन 724-743) के वक़्त में बनी थी. स्पेन में कारडोवा की बड़ी मीनारों वाली मसजिद की तामीर सन 786 में शुरू हुई.

सामरा की मसजिद भी बहुत बड़ी और तारीख़ी अहमियत रखती है. इसमें बहुत बड़ा सहन, मक्के की तरफ़ क़िबला और एक बहुत चौड़ा बरामदा है. सहन के तीनों ओर काफ़ी चौड़े पोर्टिको हैं. मसजिद के बाहर, चारों तरफ़ जो ईंटों का घेरा है, उसमें चारों कोनों मे गोल टावर हैं. मसजिद की दक्खिनी दीवार में छोटी छोटी खिड़कियों की एक क़तार है. इन खिड़कियों के ऊपर का हिस्सा आधे चांद की शकल का है. कई खिड़कियां फूल की पंखुड़ियों की शकल की हैं. निर्मान-कला के यह नमूने कारडोवा की मसजिद मे भी मिलते हैं. मशहूर कला-पारखी ई. बी. हैवल के मुताबिक़ इसलाम को यह कला के नमूने बौद्ध भारत की देन हैं.*

तुलन की मसजिद की तामीर सन 876 मे शुरू हुई. मसजिद की बाहर की दीवारें बहुत ऊंची और बेहद चौड़ी हैं. ये दीवारें असुरियन क़िले की दीवारों से बहुत मिलती जुलती हैं. 1500 बरस बाद असुरियन निर्मान-कला के इस असर को देखकर इनसान हैरत मे पड़ जाता है.

शाम और मिस्र की सैनिक निर्मान-कला ने भी इसलामी निर्मान-कला पर काफ़ी असर डाला. इनमे क़िले का समकोन प्रवेश मार्ग मुख्य था. दुशमन के फाटक के भीतर घुस आने पर भी समकोन प्रवेश मार्ग होने के सबब वह क़िले के भीतरी हिस्से मे सीधा गोलाबारी न कर सकता था. रोमन या बाइज़नटाइन सैनिक विशेशज्ञों को इस तरह के प्रवेश मार्गों का ज्ञान न था. इन दिनों के क़िलों के तमाम फाटक एक ही सीध में होते थे. इन फाटकों के बीच की ज़मीन 'प्रापुगनाकुलम' कहलाती थी. इस तरह के प्रवेश मार्गों की तामीर पहले पहले बग़दाद में आठवीं सदी में शुरू हुई. बग़दाद के क़िलों की दीवारों और प्रवेश मार्गों की नक़ल बाद मे वैनिस के महलों में भी हुई.

इसलामी तामीर-कला को हम पांच ख़ास हिस्सों में बांट सकते हैं—

(1) शाम और मिस्री तामीर-कला,
(2) स्पेन और मोरक्को की तामीर-कला,
(3) ईरानी तामीर-कला,

میں تعمیر ھوئی ۔ یوں تو اسلام کے پہلے کی عمارتوں میں بھی نال نما محرابوں کا رواج تھا لیکن بعد میں وہ خاص اِسلامی چیز بن گئی ۔

مسجد میں پہلے پہل مینار کی تعمیر موذن کے اُونچی جگہ سے اذان دینے کے خیال سے شروع ھوئی ۔ شروع شروع کی مسجدوں میں صرف ایک ھی چھوٹی مینار ھوتی تھی ۔ اُونچی اُونچی چار میناروں کا رواج تو بہت بعد میں پڑا ۔ سب میں پرانی مینار ٹیونس کے قریب 'قیروان' کی مسجد کی مینار ھے ۔ یہ مسجد خلیفہ ھشام (سن 743-724) کے وقت میں بنی تھی ۔ اسپین میں کارڈوبا کی بڑی میناروں والی مسجد کی تعمیر سن 786 میں شروع ھوئی ۔

سامرا کی مسجد بھی بہت بڑی اور تاریخی اھمیت رکھتی ھے ۔ اس میں بہت بڑا صحن' مکے کی طرف قبلہ اور ایک بہت چوڑا برآمدہ ھے ۔ صحن کے تینوں اور کافی چوڑے پورٹیکو ھیں مسجد کے باھر' چاروں طرف جو اینٹوں کا گھیرا ھے' اُس میں چاروں کونوں میں گول ٹاور ھیں ۔ مسجد کی دکھنی دیوار میں چھوٹی چھوٹی کھڑکیوں کی ایک قطار ھے ۔ ان کھڑکیوں کے اوپر کا حصہ آدھے چاند کی شکل کا ھے ۔ کئی کھڑکیاں پھول کی پنکھڑیوں کی شکل کی ھیں ۔ نرمان کلا کے یہ نمونے کارڈوبا کی مسجد میں بھی ملتے ھیں ۔ مشہور کلا پارکھی ای - بی - ھیول کے مطابق اسلام کو کلا کے یہ نمونے بودھ بھارت کی دین ھیں ۔ *

طولن کی مسجد کی تعمیر سن 876 میں شروع ھوئی ۔ مسجد کی باھر کی دیواریں بہت اُونچی اور بے حد چوڑی ھیں ۔ یہ دیواریں اسورین قلعے کی دیواروں سے بہت ملتی جلتی ھیں ۔ 1500 برس بعد اسورین نرمان کلا کے اس اثر کو دیکھ کر اِنسان حیرت میں پڑ جاتا ھے ۔

شام اور مصر کی سینک نرمان کلا نے بھی اِسلامی نرمان کلا پر کافی اثر ڈالا ۔ اِن میں قلعے کا سمکون پرویش مارگ مکھیہ تھا ۔ دشمن کے پھاٹک کے بھیتر گھس آنے پر بھی سمکون پرویش مارگ ھونے کے سبب وہ قلعے کے بھیتری حصے میں سیدھا گولہ باری نہ کر سکتا تھا ۔ روم یا بائیزنٹائن سینک وشیشگیوں کو اِس طرح کے پرویش مارگوں کا گیان نہ تھا ۔ اِن دنوں کے قلعوں کے تمام پھاٹک ایک ھی سیدھ میں ھوتے تھے ۔ اِن پھاٹکوں کے بیچ کی زمین 'پراپوگنا کلم' کہلاتی تھی اس طرح کے پرویش مارگوں کی تعمیر پہلے پہلے بغداد میں آٹھویں صدی میں شروع ھوئی ۔ بغداد کے قلعوں کی دیواروں اور پرویش مارگوں کی نقل بعد میں وینس کے محلوں میں بھی ھوئی ۔

اِسلامی تعمیر کلا کو ھم پانچ خاص حصوں میں بانٹ سکتے ھیں—

(1) شام اور مصری تعمیر کلا'
(2) اسپین اور مراکو کی تعمیر کلا'
(3) ایرانی تعمیر کلا'

* E. B. Havell—Indian Architecture, 2 nd. Edition, London 1927, pp. 85—6.

सीढ़ियों के ऊपर एक चौकोर चबूतरा बनाया गया जो तीनों ओर से लकड़ी के कटघरे से घिरा हुआ था. यही मिम्बर था. अब तक इमाम क़तार के पास ही खड़ा होकर नमाज़ पढ़ाया करता था. मिम्बर के ऊपर उसके सब से ऊंचा खड़े होने पर नुक्ताचीनियां हुईं. यह खबर मदीने में खलीफ़ा हज़रत उमर के पास पहुंची. अम्र से जवाब तलबी हुई. अम्र ने अपनी वकालत में कहा कि दुश्मनो के मुल्क मे क़ातिलों के खंजर से अपनी हिफ़ाज़त के लिये ही यह कटघरा बनाया गया है और अगर खलीफ़ा को नामंजूर हो तो इसे गिरा दिया जाय. बात उमर की समझ में आगई और उसने मिम्बर की इजाज़त दे दी. और अब तो मिम्बर हिफ़ाज़त के लिये खास चीज़ नहीं बल्कि मसजिदो का एक जरूरी जुज़ बन गया है.

शुरू की मसजिदों में मीनारें न होती थीं. कहा जाता है मीनारों का रिवाज सातवीं सदी के आखीर मे शुरू हुआ. शुरू शुरू में मसजिद में क़िबले को खास तौर पर इंगित करने वाली मेहराब भी न होती थी. मेहराब का रिवाज भी बहुत बाद मे पड़ा. इस तरह मदीने की पहली मसजिद की तामीर के 80-90 बरस के अन्दर अनेको चीजें जुड़कर मसजिदो का जरूरी जुज़ बन गई. इसी समय के करीब अल-ईवान का भी निर्मान होने लगा. सहन के पास वुज़ू करने के लिये जो पानी की जगह होती है उसे अल-ईवान कहते हैं. सातवीं सदी से लेकर अब तक मसजिद की निर्मान-कला की यही चन्द जरूरी चीज़ें रही हैं.

सन 639 ईसवी में फ़िलस्तीन पर अरबो का कब्ज़ा हुआ. यरूसलम के ईसाई पादरी की प्रार्थना पर खुद उमर के नेतृत्व मे अरब फ़ौजें यरूसलम मे दाखिल हुईं. इस खास काम के लिये उमर मदीने से चलकर यरूसलम आये थे. यरूसलम में उमर ने जिस जगह नमाज़ पढ़ी थी उमर की यादगार में उस जगह बाद में एक मसजिद बन गई. सातवीं सदी के आखरी बरसो में इसी मसजिद के पास एक नई शानदार मसजिद बनाई गई. अब तक की बनी हुई तमाम मसजिदों में यह मसजिद सब में आलीशान और सब मे विशाल थी. इसे लोग 'चट्टानी गुम्बद' (Dome of the Rock) भी कहते थे. अरबी में इस मसजिद को 'क़ुब्बत-उल-सखराह' कहा जाता था. यह ठोस पत्थर की बनी हुई एक महान इमारत थी. इसलामी इतिहास के मुताबिक़ यह मसजिद 'मशहद' यानी सक्षी की जगह है. अपनी पैग़म्बरी के दिनों में इसी जगह से हज़रत मुहम्मद ने 'मेराज' यानी स्वर्ग की सदेह यात्रा की थी. श्रद्धालु यात्री यहां आकर इस मसजिद की परिक्रमा करते हैं.

इसलामी तामीरी कला के इतिहास में इस मसजिद के बाद ही गुम्बदों और घोड़े की नाल की शक्ल की मेहराबो का रिवाज चला. 'क़ुब्बत-उल-सखराह' की मसिजिद के बाद आठवीं सदी के शुरू में एक दूसरी विशाल मसजिद दमिश्क़

سیڑھیوں کے اوپر ایک چوکور چبوترہ بنایا گیا جو تینوں اور سے لکڑی کے کٹگھرے سے گھرا ہوا تھا. یہی ممبر تھا. اب تک امام قطار کے پاس ہی کھڑا ہوکر نماز پڑھایا کرتا تھا. ممبر کے اوپر اُس کے سب سے اونچا کھڑے ہونے پر نکتہ‌چینیاں ہوئیں. یہ خبر مدینے میں خلیفہ حضرت عمر کے پاس پہونچی. امرسے جواب طلبی ہوئی. امر نے اپنی وکالت میں کہا کہ دشمنوں کے ملک میں قاتلوں کے خنجر سے اپنی حفاظت کے لئے ہی یہ کٹگھرا بنایا گیا ہے اور اگر خلیفہ کو نامنظور ہو تو اِسے گرا دیا جائے. بات عمر کی سمجھ میں آگئی اور اس نے ممبر کی اجازت دے دی. اور اب تو ممبر حفاظت کے لئے خاص چیز نہیں بلکہ مسجدوں کا ایک ضروری جز بن گیا ہے.

شروع کی مسجدوں میں میناریں نہ ہوتی تھیں. کہا جاتا ہے میناروں کا رواج ساتویں صدی کے آخیر میں شروع ہوا. شروع شروع میں مسجد میں قبلہ کو خاص طور پر انگت کرنے والی محراب بھی نہ ہوتی تھی. محراب کا رواج بھی بہت بعد میں پڑا. اس طرح مدینے کی پہلی مسجد کی تعمیر کے 80-90 برس کے اندر انیکوں چیزیں جڑ کر مسجدوں کا ضروری جز بن گئیں. اِسی سمے کے قریب الایوان کا بھی نرمان ہونے لگا. صحن کے پاس وضو کرنے کے لئے جو پانی کی جگہ ہوتی ہے اُسے الایوان کہتے ہیں. ساتویں صدی سے لےکر اب تک مسجد کی نرمان کلا کی یہی چند ضروری چیزیں رہی ہیں.

سن 639 عیسوی میں فلسطین پر عربوں کا قبضہ ہوا. یروسلم کے عیسائی پادری کی پرارتھنا پر خود عمر کے نیترتو میں عرب فوجیں یروسلم میں داخل ہوئیں. اس خاص کام کے لئے عمر مدینے سے چل‌کر یروسلم آئے تھے. یروسلم میں عمر نے جس جگہ نماز پڑھی تھی عمر کی یادگار میں اُس جگہ بعد میں ایک مسجد بن گئی. ساتویں صدی کے آخری برسوں میں اِسی مسجد کے پاس ایک نئی شاندار مسجد بنائی گئی. اب تک کی بنی ہوئی تمام مسجدوں میں یہ مسجد سب میں عالیشان اور سب میں وشال تھی. اسے لوگ 'چٹانی گنبد' (Dome of the Rock) بھی کہتے تھے. عربی میں اِس مسجد کو 'قبۃالصخراہ' کہا جاتا تھا. یہ ٹھوس پتھر کی بنی ہوئی ایک مہان عمارت تھی. اِسلامی اتہاس کے مطابق یہ مسجد 'مشہد' یعنی ساکشی کی جگہ ہے. اپنی پیغمبری کے دنوں میں اِسی جگہ سے حضرت محمد نے 'معراج' یعنی سورگ کی سدیہ یاترا کی تھی. شردھالو یاتری یہاں آکر اس مسجد کی پریکرما کرتے ہیں.

اِسلامی تعمیری کلا کے اتہاس میں اِس مسجد کے بعد ہی گنبدوں اور گھوڑے کی نال کی شکل کی محرابوں کا رواج چلا. 'قبۃالصخراہ' کی مسجد کے بعد آٹھویں صدی کے شروع میں ایک دوسری وشال مسجد دمشق

इसलामी तामीरी कला के उसूल

विश्वम्भरनाथ पांडे

इसलाम के नाम पर निर्मान-कला का सब में पहला नमूना वह मसजिद थी जो सन 622 ईस्वी में हज़रत मुहम्मद ने मदीने में बनवाई थी. यही मसजिद दुनिया की सब से पहली मसजिद मानी जाती है और इसी को नमूना मानकर बाद में सारी मसजिदें बनीं. यह मसजिद क्या थी एक चौकोर घिरा हुआ सहन था जिसकी दीवारें ईंट और पत्थर की बनी हुई थीं. इसकी छत खजूर के तनों और टहनियों पर मिट्टी पाट कर बनाई गई थी. जब तक मुहम्मद साहब ज़िन्दा रहे उन्होंने मदीने के आस-पास कोई मसजिद नहीं बनने दी. उन्हें बिना इत्तला दिये मदीने शहर के बाहर लोगों ने जब एक मसजिद बना ली तो वे नाराज़ हुये और उस मसजिद को गिरवा दिया. उनका हुक्म था कि एक मसजिद के होते हुये आस-पास दूसरी मसजिद नहीं बननी चाहिये.

इराक़ में कूफ़ा का शहर अरब मुसलमानों की नौआबादी था. वहां के मुसलमानों को जमाअत की नमाज़ के लिये एक मसजिद की ज़रूरत महसूस हुई. इस समय तक अरबों ने ईरान में ख़ुसरो की बादशाहत को उलट-पलट दिया था. ईरानी सम्राटों के संगमरमर के महल विजेताओं के क़दमों पर दुज़ानू पड़े थे. लोगों का ख़याल हुआ कि कूफ़ा की मसजिद विजेताओं की शान के मुताबिक़ ही बननी चाहिये. फिर मसजिद महज़ नमाज़ अदा करने की ही जगह न थी, वह हुकूमत करने का केन्द्र होती थी; राजनैतिक मामलों का वहीं बैठकर फ़ैसला किया जाता था; बच्चों के पढ़ने का मदरसा भी वहीं होता था और नैतिक और इख़लाक़ी विषयों की चर्चा भी वहीं हुआ करती थी. ग़रज़ यह कि मसजिद इसलामी जीवन का केन्द्र होती थी. जब सन 639 ईस्वी में कूफ़ा की मसजिद बनी तो इसकी छत धवल संगमरमर के सतूनों पर खड़ी की गई. यह संगमरमर हिरा शहर के ईरानी राजाओं के महलों से लाया गया था.

इसी ज़रूरत को पूरा करने के ख़याल से एक मसजिद सन 642 ईस्वी में फ़ुस्तात (मिस्र) में बनाई गई. विजेता अरबों की अपराजित सेनाओं ने अम्र के सेनापतित्व में मिस्र से रोमन सत्ता को उखाड़ कर वहां अरब झन्डा फहराया था. यह मसजिद चौकोर थी मगर इसमें सहन न था. अब तक किसी मसजिद में इमाम के लिये मिम्बर न होता था. पहली दफ़ा फ़ुस्तात की मसजिद में मिम्बर बनाया गया. नमाज़ियों की क़तारों से थोड़ा आगे छोटा-सा तीन

اسلامی تعمیری کلا کے اُصول

وشومبھر ناتھ پانڈے

اِسلام کے نام پر نرمان کلا کا سب میں پہلا نمونہ وہ مسجد تھی جو سن 622 عیسوی میں حضرت محمد نے مدینے میں بنوائی تھی. یہی مسجد دنیا کی سب سے پہلی مسجد مانی جاتی ہے اور اِسی کو نمونہ مان کر بعد میں ساری مسجدیں بنیں. یہ مسجد کیا تھی ایک چوکور گھِرا ہوا صحن تھا جس کی دیواریں اینٹ اور پتھر کی بنی ہوئی تھیں. اِس کی چھت کھجور کے تنوں اور ٹہنیوں پر مٹی پاٹ کر بنائی گئی تھی. جب تک محمد صاحب زندہ رہے انہوں نے مدینے کے آس پاس کوئی مسجد نہیں بننے دی. انہیں بنا اطلاع دیئے مدینے شہر کے باہر لوگوں نے جب ایک مسجد بنا لی تو وے ناراض ہوئے اور اس مسجد کو گروا دیا. ان کا حکم تھا کہ ایک مسجد کے ہوتے ہوئے آس پاس دوسری مسجد نہیں بننی چاہئے.

عراق میں کوفہ کا شہر عرب مسلمانوں کی نوآبادی تھا. وہاں کے مسلمانوں کو جماعت کی نماز کے لئے ایک مسجد کی ضرورت محسوس ہوئی. اِس سمے تک عربوں نے ایران میں خسرو کی بادشاہت کو اُلٹ پلٹ دیا تھا. ایرانی سمراٹ کے سنگ مرمر کے محل وجیتاؤں کے قدموں پر دوزانو پڑے تھے. لوگوں کا خیال ہوا کہ کوفہ کی مسجد وجیتاؤں کی شان کے مطابق ہی بننی چاہئے. پھر مسجد محض نماز ادا کرنے ہی کی جگہ نہ تھی، وہ حکومت کرنے کا کیندر ہوتی تھی؛ راجنیتک معاملوں کا وہیں بیٹھ کر فیصلہ کیا جاتا تھا؛ بچوں کے پڑھنے کا مدرسہ بھی وہیں ہوتا تھا اور نیتک اور اخلاقی وشیوں کی چرچا بھی وہیں ہوا کرتی تھی. غرض یہ کہ مسجد اِسلامی جیون کا کیندر ہوتی تھی. جب سن 639 عیسوی میں کوفہ کی مسجد بنی تو اس کی چھت دھول سنگ مرمر کے ستونوں پر کھڑی کی گئی. یہ سنگ مرمر ہِرا شہر کے ایرانی راجاؤں کے محلوں سے لایا گیا تھا.

اسی ضرورت کو پورا کرنے کے خیال سے ایک مسجد سن 642 عیسوی میں فُسطاط (مصر) میں بنائی گئی. وجیتا عربوں کی اپراجت سیناؤں نے امر کے سیناپتتو میں مصر سے روم سَتّہ کو اُکھاڑ کر وہاں عرب جھنڈا پھہرایا تھا. یہ مسجد چوکور تھی مگر اِس میں صحن نہ تھا. اب تک کسی مسجد میں امام کے لئے منبر نہ ہوتا تھا. پہلی دفعہ فسطاط کی مسجد میں منبر بنایا گیا. نمازیوں کی قطاروں سے تھوڑا آگے چھوٹا سا تین

जिनकी कुल सम्पत्ति दो सौ दिरहम या इससे कम हो कोई जजिया नहीं लिया जाता था. एक दिरहम क़रीब पांच आने के बराबर होता था.

हिन्दुस्तान में भी जो ग़ैर मुसलिम मुसलमान बादशाहों की फ़ौजों मे भरती हो जाते थे उनसे कभी जजिया नहीं लिया जाता था.

[किताबुलखिराज के अनुसार जजिया आम तौर पर इस हिसाब से लिया जाता था—अमीरों से 48 दिरहम, यानी क़रीब 15 रुपया सालाना, औसत दरजे के लोगो से 24 दिरहम, यानी क़रीब साढ़े सात रुपया और बाक़ी लोगो मे जैसे कारीगर वग़ैरा से 12 दिरहम, यानी पौने चार रुपया सालाना. जजिया में नक़द के बजाय तिजारत का सामान, मवेशी और सुइयां जैसी चीजें भी ली जा सकती थीं, सिर्फ़ सूअर, शराब और मुरदा जानवर देने की मुमानियत थी. किसी भी धर्म के पुरोहितों और महन्तों से जजिया नहीं लिया जाता था. अबु यूसुफ लिखता है कि जजिया जमा करने वाले अफ़सरों का खास हिदायत थी कि उसकी वसूली मे किसी से किसी क़िस्म की सख्ती न करें. इसके अलावा यद्यपि आम तौर पर जजिया मुसलमानो से नहीं लिया जाता था लेकिन फिर भी मुसलिम इतिहास मे दोनो तरह की मिसालें काफ़ी मिलती हैं—एक इस बात की जो ग़ैर मुसलिम फ़ौजी खिदमत से इनकार नहीं करते थे उनसे कभी जजिया नहीं लिया जाता था और दूसरी इस बात की कि जो मुसलमान फ़ौजी खिदमत से इनकार करते थे उनसे भी उसी तरह जजिया वसूल किया जाता था जिस तरह ग़ैर मुसलमानो से. मिसाल के तौर पर मिस्र में वहां के मुसलमानों ने फ़ौजी खिदमत से बरी किये जाने की दरख्वास्त की तो उनसे बजाय फ़ौजी खिदमत के जजिया वसूल किया जाने लगा. इस तरह की मिसालें भी मिलती हैं जिनमें ग़ैर मुसलमानों ने मुसलिम फ़ौज की सिर्फ़ इस तरह की कोई खिदमत की, जैसे उन्हे पानी पहुंचाना, तो उनसे जजिया नहीं लिया जाता था.

हमें यह भी याद रखना चाहिये कि इस वक्त तक संयुक्त राष्ट्र अमरीका की कई रियासतें ऐसी हैं जिनमें सब बालिग़ मरदों के लिये फ़ौजी खिदमत लाज़मी है, और जो लोग इस खिदमत से बरी होना चाहते हैं उनसे फ़ौज के खर्च के लिये फ़ी आदमी कुछ सालाना टैक्स ले लिया जाता है.

—सम्पादक]

جن کی کل سمپتی دو سو درہم یا اس سے کم ہو کوئی جزیہ نہیں لیا جاتا تھا . ایک درہم قریب پانچ آنے کے برابر ہوتا تھا .

ہندستان میں بھی جو غیر مسلم مسلمان بادشاہوں کی فوجوں میں بھرتی ہو جاتے تھے اُن سے کبھی جزیہ نہیں لیا جاتا تھا .

[کتاب الخراج کے انوسار جزیہ عام طور پر اِس حساب سے لیا جاتا تھا—امیروں سے 48 درہم، یعنی قریب 15 روپیہ سالانہ، اوسط درجے کے لوگوں سے 24 درہم، یعنی قریب ساڑھے سات روپے اور باقی لوگوں سے جیسے کاریگر وغیرہ سے 12 درہم، یعنی پونے چار روپیہ سالانہ. جزیہ میں نقد کے بدلے تجارت کا سامان، مویشی اور سوئیاں جیسی چیزیں بھی لی جا سکتی تھیں، صرف سور، شراب اور مردہ جانور دینے کی ممانعت تھی . کسی بھی دھرم کے پروہتوں اور مہنتوں سے جزیہ نہیں لیا جاتا تھا . ابو یوسف لکھتا ہے کہ جزیہ جمع کرنے والے افسروں کو خاص ہدایت تھی کہ اُس کی وصولی میں کسی سے کسی قسم کی سختی نہ کریں . اس کے علاوہ اگرچہ عام طور پر جزیہ مسلمانوں سے نہیں لیا جاتا تھا لیکن پھر بھی مسلم اتہاس میں دونوں طرح کی مثالیں کافی ملتی ہیں—ایک اس بات کی جو غیر مسلم فوجی خدمت سے انکار نہیں کرتے تھے اُن سے کبھی جزیہ نہیں لیا جاتا تھا اور دوسری اس بات کی کہ جو مسلمان فوجی خدمت سے اِنکار کرتے تھے اُن سے بھی اُسی طرح جزیہ وصول کیا جاتا تھا جس طرح غیر مسلمانوں سے . مثال کے طور پر مصر میں وہاں کے مسلمانوں نے فوجی خدمت سے بری کئے جانے کی درخواست کی تو اُن سے بجائے فوجی خدمت کے جزیہ وصول کیا جانے لگا . اس طرح کی مثالیں بھی ملتی ہیں کہ جن میں غیر مسلمانوں نے مسلم فوج کی صرف اِس طرح کی کوئی خدمت کی، جیسے انہیں پانی پہونچانا تو اُن سے جزیہ نہیں لیا جاتا تھا .

ہمیں یہ بھی یاد رکھنا چاہئیے کہ اس وقت تک سمیوکت راشٹر امریکہ کی کئی ریاستیں ایسی ہیں جن میں سب بالغ مردوں کے لئے فوجی خدمت لازمی ہے، اور جو لوگ اِس خدمت سے بری ہونا چاہتے ہیں اُن سے فوج کے خرچ کے لئے فی آدمی کچھ سالانہ ٹیکس لے لیا جاتا ہے .

—سمپادک]

* De La gonquiere-p. 14.

बहुत दिनों बाद खलीफा वासिक बिल्ला अब्बासी के जमाने में ग़लती से उन पर जज़िया लगा दिया गया. उन्होंने खलीफा से शिकायत की. फिर से फ़ौरन उनका जज़िया हटा दिया गया. खलीफा उमर के जमाने में भी जो ज़िम्मी यानी ग़ैर मुसलिम फ़ौज में काम करना मंजूर कर लेते थे उनसे जज़िया नहीं लिया जाता था. खलीफा उमर ही के जमाने में आरमीनिया के ग़ैर मुसलिम सेनापति के साथ यह सन्धि की गई थी—"इस शर्त के ऊपर सुलह की जाती है—जब कभी किसी से जंग होगी या और कोई ज़रूरत होगी तो आप मुसलमानों का साथ देंगे. इस शर्त पर आप से जज़िया नहीं लिया जायगा. लेकिन जो कोई भी घर पर रहना चाहे वह आज़रबाइजान के लोगों की तरह अपने घर पर रहे और और जज़िया दे दे." जार्जिया और दूसरे देशों के ग़ैर मुसलमानों के साथ जो सन्धियां की गईं उनमें लिखा है—"अगर हम किसी ज़िम्मी (ग़ैर मुसलिम) से लड़ाई में मदद लेंगे तो उससे जज़िया नहीं लिया जायगा......जिनसे जज़िया लिया जाता है उसके बदले में हम उनकी भीतर और बाहर के शत्रुओं से हिफ़ाज़त करने के लिये ज़िम्मेवार होंगे. अगर हम तुम्हारी हिफ़ाज़त नहीं कर सकेंगे तो जज़िया का धन तुम्हें वापस कर दिया जावेगा. जो लोग फ़ौज में भरती होने को तय्यार हैं वे हमेशा जज़िया देने से बरी रहेंगे."

अल्लामा शिबली ने लिखा है कि जज़िये से जो कुछ रुपया वसूल होता था वह फ़ौज के लिये सामान ख़रीदने में, सरहदों की हिफ़ाज़त में और क़िलेबन्दी करने में ख़र्च होता था. अगर कुछ इनसे बचता तो वह पुलों, नहरों और मदरसों पर ख़र्च होता था.

जज़िये की बाबत एक और टैक्स था जिसे 'सदक़ा' कहते थे. 'सदक़ा' सिर्फ़ मुसलमानों से लिया जाता था, ग़ैर मुसलमानों से नहीं. इसके सदक़े का रुपया ग़रीबों और मुहताजों पर ख़र्च किया जाता था. इन ग़रीबों और मुहताजों में मुसलिम और ग़ैर मुसलिम का फ़र्क़ नहीं किया जाता था.*

हज़रत शिबली ने दिखाया है कि जज़िया आम तौर पर हर आदमी से ढाई फ़्रैंक सालाना से लेकर नौ फ़्रैंक सालाना तक लिया जाता और मुसलिम इतिहास भर में कभी भी किसी से तीस फ़्रैंक सालाना से ज्यादा जज़िया नहीं लिया गया. किसी भी लखपती या करोड़पति से भी कभी इससे ज्यादा नहीं लिया जाता था. एक फ़्रैंक आजकल के क़रीब क़रीब दस आने के बराबर होता है. औरतों से, 20 बरस से नीची उम्र के और 50 बरस से ऊपर उम्र के आदमियों से, अपाहिजों, लंगड़ों, लूलों, पागलों, अन्धों और उन ग़रीब लोगों से

* 'किताबुल-ख़िराज'—लेखक इमाम अबु यूसुफ़; पृष्ठ 72.

بہت دنوں بعد خلیفہ واثق باللہ عباسی کے زمانے میں غلطی سے اُن پر جزیہ لگا دیا گیا. اُنھوں نے خلیفہ سے شکایت کی. پھر سے فوراً اِن کا جزیہ ہٹا دیا گیا. خلیفہ عمر کے زمانے میں بھی جو ذمی یعنی غیر مسلم فوج میں کام کرنا منظور کر لیتے تھے اُن سے جزیہ نہیں لیا جاتا تھا. خلیفہ عمر ہی کے زمانے میں آرمینیہ کے غیر مسلم سیناپتی کے ساتھ یہ سندھی کی گئی تھی—" اِس شرط کے اوپر صلح کی جاتی ہے—جب کبھی کسی سے جنگ ہوگی یا اور کوئی ضرورت ہوگی تو آپ مسلمانوں کا ساتھ دینگے. اِس شرط پر آپ سے جزیہ نہیں لیا جائے گا. لیکن جو کوئی بھی گھر پر رہنا چاہے وہ آذربائیجان کے لوگوں کی طرح اپنے گھر پر رہے اور جزیہ دیدے." جارجیہ اور دوسرے دیشوں کے غیر مسلمانوں کے ساتھ جو سندھیاں کی گئیں اُن میں لکھا ہے—" اگر ہم کسی ذمی (غیر مسلم) سے لڑائی میں مدد لینگے تو اس سے جزیہ نہیں لیا جائے گا .....جن سے جزیہ لیا جاتا ہے اس کے بدلے میں ہم اُن کی بھیتر اور باہر کے شتروؤں سے حفاظت کرنے کے لئے ذمہ وار ہونگے. اگر ہم تمہاری حفاظت نہیں کر سکیں گے تو جزیہ کا دھن تمہیں واپس کر دیا جاوے گا. جو لوگ فوج میں بھرتی ہونے کو تیار ہیں وے ہمیشہ جزیہ دینے سے بری رہینگے."

علامہ شبلی نے لکھا ہے کہ جزیے سے جو کچھ روپیہ وصول ہوتا تھا وہ فوج کے لئے سامان خریدنے میں، سرحدوں کی حفاظت میں اور قلعہ بندی کرنے میں خرچ ہوتا تھا. اگر کچھ اِن سے بچتا تھا تو وہ پلوں، نہروں اور مدرسوں پر خرچ ہوتا تھا.

جزیے کی بابت ایک اور ٹیکس تھا جسے 'صدقہ' کہتے ہے. 'صدقہ' صرف مسلمانوں سے لیا جاتا تھا، غیر مسلمانوں سے نہیں. اِس کے صدقے کا روپیہ غریبوں اور محتاجوں پر خرچ کیا جاتا تھا. اِن غریبوں اور محتاجوں میں مسلم اور غیر مسلم کا فرق نہیں کیا جاتا تھا. *

حضرت شبلی نے دکھایا ہے کہ جزیہ عام طور پر ہر آدمی سے ڈھائی فرینک سالانہ سے لے کر نو فرینک سالانہ تک لیا جاتا تھا اور مسلم اتہاس بھر میں کبھی بھی کسی سے تیس فرینک سالانہ سے زیادہ جزیہ نہیں لیا گیا. کسی بھی لکھپتی یا کروڑ پتی سے بھی کبھی اِس سے زیادہ نہیں لیا جاتا تھا. ایک فرینک آجکل کے قریب قریب دس آنے کے برابر ہوتا ہے. عورتوں سے، 20 برس سے نیچی عمر کے اور 50 برس سے اوپر عمر کے آدمیوں سے، اپاہجوں، لنگڑوں، لولوں، پاگلوں، اندھوں اور اُن غریب لوگوں سے

* 'کتاب الخراج'—لیکھک اِمام ابو یوسف؛ پرشٹھ 72.

एक सन्धि में इराक़ के लोगों ने लिखा है—"हमने ख़ालिद से जिस जज़िये को देने का वादा किया था उसे हमने अदा कर दिया है इस शर्त पर कि अगर कोई मुसलमान भी या किसी दूसरी क़ौम के लोग हमें किसी तरह का नुक़सान पहुंचाना चाहेंगे तो मुसलमान जमात और उनके अफ़सर हमारी इस सलामती के लिये ज़िम्मेवार होंगे."

ये अहदनामे और समझौते बिलकुल साफ़ हैं. उस ज़माने के इतिहास से साफ़ पता चलता है कि इस तरह के अहदनामे और आपसी समझौते महज़ रद्दी के टोकरे की चीज़ें नहीं समझे जाते थे बल्कि दोनों पक्ष उन पर सच्चाई से अमल करते थे.

इस सच्चाई की शाम (सीरिया) के इतिहास में एक बड़ी सुन्दर मिसाल मिलती है. दो मुसलमान सेनापति अबु ओबैदा और जर्राह रोमी सेनाओं के मुक़ाबले में मुल्क पर मुल्क जीतते चले जा रहे थे. रोम के सम्राट् हरकुल ने एक बहुत बड़ी नई सेना जमा करके मुसलमानों पर हमला किया. दोनों मुसलमान सेनापतियों ने रोम की इस नई सेना का मुक़ाबला करने में अपने को असमर्थ पाया. उन्होंने जितना धन उस वक़्त तक वहां के ग़ैर मुसलमानों से बतौर जज़िये के वसूल किया था उसकी एक एक पाई उन्हें वापस कर दी. मुसलमान सेनापतियों के फ़रमानों में ये शब्द आते हैं—"जब कभी जो कुछ जज़िया और ख़िराज वसूल किया गया है वह जिनसे लिया गया है उन्हें तुरन्त वापस कर दिया जावेगा. उन्हें कह दिया जावे कि हमने यह धन तुमसे इस शर्त पर लिया था कि हम तुम्हारे शत्रुओं से तुम्हारी हिफ़ाज़त करेंगे. लेकिन अब हालात ऐसे हैं कि हम तुम्हारी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेवारी अपने ऊपर नहीं ले सकते."

उस देश के ग़ैर मुसलमान, जो अधिकतर ईसाई थे बहुत ख़ुश थे और उन्होंने अपने इन मुसलिम हाकिमों को आशीर्वाद देते हुये उनसे कहा—"ईश्वर करे कि हमारे नगरों का शासन फिर से आप ही के हाथों में आजावे. अगर आपकी जगह रोम वाले होते तो वे कभी हमें एक पैसा भी वापस न देते, बल्कि जो कुछ हमारे पास रहा सहा है वह उसे भी हमसे छीन लेते."

यह बात भी याद रखनी चाहिये कि जो ग़ैर मुसलमान अपने मुसलिम शासकों के मातहत फ़ौज में भरती होना स्वीकार कर लेते थे उन्हें जज़िये से उसी तरह बरी रखा जाता था जिस तरह मुसलमानों को. इसकी कुछ मिसालें यहां दी जाती हैं. ख़लीफ़ा हज़रत उसमान के ज़माने में हबीब बिन मुसलेमा ने जरा जिमाह् के देश को फ़तह किया. वहां की ग़ैर मुसलिम रिआया ने फ़ौज में भरती होना स्वीकार कर लिया. उनसे किसी तरह का जज़िया नहीं लिया गया.

ایک سندھی میں عراق کے لوگوں نے لکھا ھے—"ہم نے خالد سے جس جزیے کو دینے کا وعدہ کیا تھا اُسے ہم نے ادا کردیا ھے اِس شرط پر کہ اگر کوئی مسلمان بھی یا کسی دوسری قوم کے لوگ ھمیں کسی طرح کا نقصان پہونچانا چاھینگے تو مسلمان جماعت اور اُن کے افسر ھماری اِس سلامتی کے لئے ذمہوار ھونگے."

یہ عہدنامے اور سمجھوتے بالکل صاف ھیں . اُس زمانے کے اِتہاس سے صاف پتہ چلتا ھے کہ اِس طرح کے عہدنامے اور آپسی سمجھوتے محض ردی کے ٹوکرے کی چیزیں نہیں سمجھے جاتے تھے بلکہ دونوں پکش ان پر سچائی سے عمل کرتے تھے .

اِس سچائی کی شام (سیریا) کے اِتہاس میں ایک بڑی سندر مثال ملتی ھے. دو مسلمان سیناپتی ابو ابیدہ اور جراح رومی سیناؤں کے مقابلے میں ملک پر ملک جیتتے چلے جا رھے تھے . روم کے سمراٹ ھرکل نے ایک بہت بڑی نئی سینا جمع کر کے مسلمانوں پر حملہ کیا . دونوں مسلمان سیناپتیوں نے روم کی اِس نئی سینا کا مقابلہ کرنے میں اپنے کو اسمرتھ پایا . انہوں نے جتنا دھن اس وقت تک وھاں کے غیر مسلمانوں سے بطور جزیہ کے وصول کیا تھا اس کی ایک ایک پائی انھیں واپس کر دی . مسلمان سیناپتیوں کے فرمانوں میں یہ شبد آتے ھیں—" جب کبھی جو کچھ جزیہ اور خراج وصول کیا گیا ھے وہ جن سے لیا گیا ھے انہیں ترنت واپس کر دیا جاوے گا . اِنھیں کہ دیا جاوے کہ ھم نے یہ دھن تم سے اِس شرط پر لیا تھا کہ ھم تمہارے شترؤں سے تمہاری حفاظت کریں گے . لیکن اب حالات ایسے ھیں کہ ھم تمہاری حفاظت کی ذمہواری اپنے اوپر نہیں لے سکتے ."

اُس دیش کے غیر مسلمان، جو ادھکتر عیسائی تھے بہت خوش تھے اور انھوں نے اپنے اِن مسلم حاکموں کو آشیرواد دیتے ھوئے ان سے کہا—" ایشور کرے کہ ھمارے نگروں کا شاسن پھر سے آپ ھی کے ھاتھوں میں آجاوے . اگر آپ کی جگہ روم والے ھوتے تو وے کبھی ھمیں ایک پیسہ بھی واپس نہ دیتے، بلکہ جو کچھ ھمارے پاس رھا سہا ھے وہ اُسے بھی ھم سے چھین لیتے ."

یہ بات بھی یاد رکھنی چاھئے کہ جو غیر مسلمان اپنے مسلم شاسکوں کے ماتحت فوج میں بھرتی ھونا سویکار کر لیتے تھے انھیں جزیے سے اُسی طرح بری رکھا جاتا تھا جس طرح مسلمانوں کو . اِس کی کچھ مثالیں یہاں دی جاتی ھیں . خلیفہ حضرت عثمان کے زمانے میں حبیب بن مسلمہ نے جراجماح کے دیش کو فتح کیا . وھاں کی غیر مسلم رعایا نے فوج میں بھرتی ھونا سویکار کر لیا . اُن سے کسی طرح کا جزیہ نہیں لیا گیا.

पकड़ने पर .फ़ौज में भरती होने के लिये तय्यार हो जाते थे उनसे जज़िया नाम का कोई टैक्स नहीं लिया जाता था. मशहूर मुसलिम विद्वान शिबली ने जज़िये पर एक छोटी सी किताब लिखी है जिस में उन्होंने जज़िया शब्द की व्युत्पत्ति और उसके इतिहास पर ख़ासी अच्छी बहस की है.

हज़रत मुहम्मद और पहले चार ख़लीफ़ाओं ने जिन्हें 'ख़ुलफ़ाये राशिदीन' कहा जाता है ग़ैर मुसलिम रियासतों के साथ जो जो सन्धियां कीं उनमें यह साफ़ लिखा है कि ग़ैर मुसलिम रिआया या ग़ैर मुसलिम रियासतों से उनके जान माल की हिफ़ाज़त के बदले में जज़िया लिया जावेगा. हज़रत मुहम्मद ने मुसलमान बादशाहों को ग़ैर मुसलिम रिआया के बारे में जो .फ़रमान लिखे हैं, उनमें ये शब्द साफ़ आते हैं—"उनकी हिफ़ाज़त करना मुसलमानों का .फ़र्ज़ है. उनके दुश्मनों से उन्हें बचाना हमारा .फ़र्ज़ है." ख़लीफ़ा उमर ने अपनी मृत्यु से पहले जो हिदायतें मुसलमानों को दीं उनमें एक यह थी कि ग़ैर मुसलिम रिआया के जान माल की हिफ़ाज़त मुसलमानों का फ़र्ज़ है. अल्लामा शिबली ने अपनी किताब में मुसलमानों और ग़ैर मुसलमानों के बीच इस तरह की बहुत सी सन्धियों की नक़ल दी है जिनमें मुसलमानों के इस फ़र्ज़ और उसके बदले में उनके जज़िया वसूल करने के हक़ इन दोनों का ज़िक्र है. सन 12 हिजरी में ख़ालिद इब्न वलीद ने ग़ैर मुसलमानों के साथ जो सन्धि की उसमें ये शब्द आते हैं—"सलूबा बिन नस्तोमा और आपके क़बीले वालों के साथ मैंने जज़िया लेने और आपकी हिफ़ाज़त करने का अहदनामा किया है. इसलिये आपकी हिफ़ाज़त करना और आपके जान माल की सलामती हमारा फ़र्ज़ है. जब तक हम अपने इस फ़र्ज़ को पूरा करेंगे तब तक ही हमें जज़िया लेने का हक़ है. अगर हम यह फ़र्ज़ पूरा न कर सकेंगे तो हमें जज़िया लेने का कोई हक़ न होगा."*

अरब और इराक़ के बहुत से मुसलिम हाकिमों ने वहां के ग़ैर मुसलमानों के साथ समय समय पर बहुत से अहदनामे किये. पैग़म्बर-ए-इसलाम के कई एक साथियों ने भी जो सहाबी कहलाते हैं इस तरह के अहदनामों पर दस्तख़त किये. इन अहदनामों में साफ़ लिखा है, 'जब तक जज़िया बराबर लिया जाता रहेगा ग़ैर मुसलमानों की हर तरह से हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी मुसलमानों पर होगी.' इन अहदनामों में एक बात और भी बढ़कर है. इनमें लिखा है कि अगर वहां के ग़ैर मुसलमान बाहर की किसी क़ौम के साथ कोई समझौता करेंगे तो मुसलमान हाकिम उन समझौतों को मानेंगे और बाहर की जिन क़ौमों को भी यह ग़ैर मुसलमान मदद देना चाहेंगे या उनकी रक्षा करना चाहेंगे मुसलिम हाकिम अपने देश में उन्हें पनाह देंगे.

پڑنے پر فوج میں بھرتی ہونے کے لئے تیار ہو جاتے تھے اُن سے جزیہ نام کا کوئی ٹیکس نہیں لیا جاتا تھا۔ مشہور مسلم ودوان شبلی نے جزیے پر ایک چھوٹی سی کتاب لکھی ہے جس میں انہوں نے جزیہ شبد کی ویتپتی اور اس کے اتہاس پر خاصی اچھی بحث کی ہے۔

حضرت محمد اور پہلے چار خلیفاؤں نے جنہیں 'خلفاء راشدین' کہا جاتا ہے غیر مسلم ریاستوں کے ساتھ جو جو سندھیاں کیں اُن میں یہ صاف لکھا ہے کہ غیر مسلم رعایا یا غیر مسلم ریاستوں سے ان کے جان مال کی حفاظت کے بدلے میں جزیہ لیا جاوے گا۔ حضرت محمد نے مسلمان بادشاہوں کی غیر مسلم رعایا کے بارے میں جو فرمان لکھے ہیں اُن میں یہ شبد صاف آتے ہیں—"اُن کی حفاظت کرنا مسلمانوں کا فرض ہے۔" اُن کے دشمنوں سے اُنہیں بچانا ہمارا فرض ہے۔" خلیفہ عمر نے اپنی مرتیو سے پہلے جو ہدائتیں مسلمانوں کو دیں ان میں ایک یہ تھی کہ غیر مسلم رعایا کے جان مال کی حفاظت مسلمانوں کا فرض ہے۔ علامہ شبلی نے اپنی کتاب میں مسلمانوں اور غیر مسلمانوں کے بیچ اِس طرح کی بہت سی سندھیوں کی نقل دی ہے جن میں مسلمانوں کے اِس فرض اور اُس کے بدلے میں اُن کے جزیہ وصول کرنے کے حق ان دونوں کا ذکر ہے۔ سن 12 ہجری میں خالد ابن ولید نے غیر مسلمانوں کے ساتھ جو سندھی کی اُس میں یہ شبد آتے ہیں—"سلوبابن نستوما اور آپ کے قبیلے والوں کے ساتھ میں نے جزیہ لینے اور آپ کی حفاظت کرنے کا عہدنامہ کیا ہے۔ اِس لئے آپ کی حفاظت کرنا اور آپ کے جان و مال کی سلامتی ہمارا فرض ہے۔ جب تک ہم اپنے اِس فرض کو پورا کرینگے تب تک ہی ہمیں جزیہ لینے کا حق ہے۔ اگر ہم یہ فرض پورا نہ کرسکینگے تو ہمیں جزیہ لینے کا کوئی حق نہ ہوگا۔"*

عرب اور عراق کے بہت سے مسلم حاکموں نے وہاں کے غیر مسلمانوں کے ساتھ سمے سمے پر بہت سے عہدنامے کئے۔ پیغمبر اِسلام کے کئی ایک ساتھیوں نے بھی جو صحابہ کہلاتے ہیں اس طرح کے عہدناموں پر دستخط کئے۔ ان عہدناموں میں صاف لکھا ہے' 'جب تک جزیہ برابر لیا جاتا رہیگا غیر مسلمانوں کی ہر طرح سے حفاظت کی ذمہ واری مسلمانوں پر ہوگی۔' ان عہدناموں میں ایک بات اور بھی بڑھکر ہے۔ ان میں لکھا ہے کہ اگر وہاں کے غیر مسلمان باہر کی کسی قوم کے ساتھ کوئی سمجھوتا کریں گے تو مسلمان حاکم اُن سمجھوتوں کو مانیں گے اور باہر کی جن قوموں کو بھی یہ غیر مسلمان مدد دینا چاہینگے یا ان کی رکشا کرنا چاہیں گے مسلم حاکم اپنے دیش میں انہیں پناہ دیں گے۔

* Vide Tabain Annals—Edited by Rosegarten Vol. II. P. 48.

जज़िया : इतिहास और असलियत

श्री हमीद हसन बी० ए० एल-एल० बी०

आम तौर पर समझा जाता है कि जज़िया एक जाबिराना टैक्स था जो मुसलिम राज में ग़ैर मुसलमानों से ज़बरदस्ती लिया जाता था. ग़ैर मुसलमानों के ऊपर इस्लाम का यह एक अन्याय था. लेकिन न परदे का रिवाज, जिसे आजकल इतना बुरा भला कहा जाता है, इसलाम के साथ दुनिया में आया और न जज़िया पहले पहल इसलाम ने वसूल किया.

इसलाम की पैदायश से बहुत पहले ईरान की उन्नति के दिनों में जज़िया नाम का टैक्स उस देश में मौजूद था. ईरान के मशहूर बादशाह नौशेरवां आदिल के ज़माने में जो ज़रतुश्तरी धर्म का मानने वाला था और उससे पहले भी जज़िये का ईरान में आम रिवाज था. नौशेरवां ने अपनी फ़ौज के अफ़सरों और सिपाहियों को जज़िया माफ़ कर दिया था. जज़िया अरबी शब्द नहीं है. यह एक ईरानी शब्द है जो बाद में अरबी भाषा में भी शामिल हो गया. इसका मतलब यह था कि ज़रूरत पड़ने पर अपने देश की रक्षा के लिये फ़ौज में भरती होना हर मज़बूत जिस्म वाले आदमी का फ़र्ज़ है. जो .फ़ौज में भरती हो जाते थे उनसे जज़िया नहीं लिया जाता था. लेकिन जो भरती होने से इनकार करते थे उनसे इस सेवा के बदले में कुछ नियत सालाना टैक्स ले लिया जाता था. इसी टैक्स का नाम ईरान में जज़िया था. इसलाम की पैदाइश के दिनों में मुहम्मद साहब ने यह नियम बना दिया कि देश की रक्षा के लिये कभी भी ज़रूरत पड़ने पर .फ़ौज में भरती होना हर मुसलमान का .फ़र्ज़ है. सिर्फ़ मुसलिम मदरसों के अध्यापक और कुछ ख़ास ख़ास पेशेवाले इससे बरी थे. जो ग़ैर मुसलिम लोग मुसलमानों के राज में रहते थे उनकी जान माल की हिफ़ाज़त करना मुसलिम बादशाह का .फ़र्ज़ माना जाता था. लेकिन उन्हें ज़बरदस्ती .फ़ौज में भरती करने की इसलाम ने कभी इजाज़त नहीं दी. अक्सर ग़ैर मुसलिम क़बीलों के लोग मुसलमान बादशाहों की .फ़ौजों में भरती होना पसन्द भी नहीं करते थे. इसलिये क़ुदरती तौर पर जो ग़ैर मुसलिम ज़रूरत पड़ने पर भी .फ़ौज में भरती होने से इनकार करते थे उनसे उनकी रक्षा के बदले में थोड़ा सा मुक़र्ररा टैक्स ले लिया जाता था जिसे जज़िया कहते थे. मुसलमान बादशाहों ने जज़िये का शब्द और उसका रिवाज दोनों ज़रतुश्तरी ईरानियों से सीखे. इसके साथ ही जो ग़ैर मुसलिम क़बीले भी ज़रूरत

جزیہ : اتہاس اور اصلیت

شری حمید حسن بی . اے . ایل ایل . بی .

عام طور پر سمجھا جاتا ہے کہ جزیہ ایک جابرانہ ٹیکس تھا جو مسلم راج میں غیر مسلمانوں سے زبردستی لیا جاتا تھا . غیر مسلمانوں کے اوپر اسلام کا یہ ایک انیائے تھا . لیکن نہ پردے کا رواج، جسے آجکل اتنا برا بھلا کہا جاتا ہے، اسلام کے ساتھ دنیا میں آیا اور نہ جزیہ پہلے پہل اسلام نے وصول کیا .

اسلام کی پیدائش سے بہت پہلے ایران کی اُنتی کے دنوں میں جزیہ نام کا ٹیکس اُس دیش میں موجود تھا . ایران کے مشہور بادشاہ نوشیرواں عادل کے زمانے میں جو زرتشتری دھرم کا ماننے والا تھا اور اُس سے پہلے بھی جزیے کا ایران میں عام رواج تھا . نوشیرواں نے اپنی فوج کے افسروں اور سپاہیوں کو جزیہ معاف کردیا تھا . جزیہ عربی شبد نہیں ہے . یہ ایک ایرانی شبد ہے جو بعد میں عربی بھاشا میں بھی شامل ہوگیا . اس کا مطلب یہ تھا کہ ضرورت پڑنے پر اپنے دیش کی رکشا کے لئے فوج میں بھرتی ہونا ہر مضبوط جسم والے آدمی کا فرض ہے. جو فوج میں بھرتی ہو جاتے تھے اُن سے جزیہ نہیں لیا جاتا تھا . لیکن جو بھرتی ہونے سے انکار کرتے تھے اُن سے اِس سیوا کے بدلے میں کچھ نیت سالانہ ٹیکس لے لیا جاتا تھا . اِسی ٹیکس کا نام ایران میں جزیہ تھا. اسلام کی پیدائش کے دنوں میں محمد صاحب نے یہ نیم بنا دیا کہ دیش کی رکشا کے لئے کبھی بھی ضرورت پڑنے پر فوج میں بھرتی ہونا ہر مسلمان کا فرض ہے . صرف مسلم مدرسوں کے ادھیاپک اور کچھ خاص خاص پیشے والے اس سے بری تھے. جو غیر مسلم لوگ مسلمانوں کے راج میں رہتے تھے ان کی جان مال کی حفاظت کرنا مسلم بادشاہ کا فرض مانا جاتا تھا . لیکن انہیں زبردستی فوج میں بھرتی کرنے کی اسلام نے کبھی اجازت نہیں دی . اکثر غیر مسلم قبیلوں کے لوگ مسلمان بادشاہوں کی فوجوں میں بھرتی ہونا پسند بھی نہیں کرتے تھے . اس لئے قدرتی طور پر جو غیر مسلم ضرورت پڑنے پر بھی فوج میں بھرتی ہونے سے انکار کرتے تھے اُن سے ان کی رکشا کے بدلے میں تھوڑا سا مقررہ ٹیکس لے لیا جاتا تھا جسے جزیہ کہتے تھے . مسلمان بادشاہوں نے جزیہ کا شبد اور اُس کا رواج دونوں زرتشتری ایرانیوں سے سیکھے . اِس کے ساتھ ہی جو غیر مسلم قبیلے بھی ضرورت

ने रूहानी इत्तहाद के विचार ज़ाहिर किए. मिसाल के तौर पर हम उनमें से कुछ यहां देते हैं. 'गुलशने-राज़' के लेखक शहाबुद्दीन मुहम्मद शबिस्तरी, जिनकी 1320 ईस्वी में मौत हुई, मूर्तिपूजा और इसलाम के फ़र्क़ को बतलाते हुए कहते हैं :—

बुत ईंजा मज़हरे इश्क़ अस्तो वहदत,
बूवद ज़ुन्नार बस्तन अक़्दे ख़िदमत।
चूं कुफ़्रो दीं बुवद क़ायम ब हस्ती,
शवद तौहीद ऐने बुत परस्ती।
चूं अशिया हस्त हस्ती रा मज़ाहिर
अज़ां जुमला यके बुत बाशद आख़िर।
मुसलमां गर बिदानिस्ते कि बुत चीस्त,
बिदानिस्ते कि दीं दर बुत परस्तीस्त।
वगर मुश्रिक ज़बुत आगाह गश्ते
कुजा दर दीने ख़ुद गुमराह गुश्ते।
नदीद ऊ अज़ बुत इल्ला ख़ल्क़े ज़ाहिर,
बदीं इल्लत शुद अन्दर शिर्क काफ़िर।
तू हम गर अज़ू न बीनी हक़्क़े पिनहां,
बा शरअ अन्दर न ख़्वानंदत मुसलमां।

मूर्ति इस दुनिया में प्रेम और अद्वैत को प्रगट करने वाली है. और जनेऊ बांधने का मतलब सेवा का प्रन करना है. चूंकि कुफ़्र और दीन (हिन्दू और मुसलिम धर्म) दोनों ही दुनिया के अस्तित्व धर्म पर क़ायम हैं इसलिए तौहीद (अद्वैत धर्म) मूर्तिपूजन का असली तत्व है. चूंकि 'जगत की सारी वस्तुएं अस्तित्व को प्रगट करती हैं, इन सब ही वस्तुओं में मूर्ति भी एक वस्तु है. अगर मुसलमान जानता कि मूर्ति सचमुच क्या है, तो समझ जाता कि मूर्तिपूजा ही धर्म है. और अगर मूर्ति पूजने वाला मूर्ति की असलियत जानता तो वह अपने धर्म से न बिचलता. उसने मूर्ति में केवल बाहरी क़ुदरत को देखा और इस सबब उसने ईश्वर को न पहचाना और काफ़िर हुआ. तू भी अगर उसमें सत्य को छिपा हुआ नहीं देखता तो तुझे भी शरअ (धर्म शास्त्र) के हिसाब से मुसलमान नहीं कहेंगे.

मिर्ज़ा जान जानान मज़हर जिनका जन्म 1699 ईस्वी में हुआ अपने एक पत्र में हिन्दू धर्म के बारे में यूं लिखते हैं :—

बुत परस्ती व ईं अमल मुशाबहत ब ज़िक्रे राब्ता दारद कि मा ले सूफ़िया अस्त, व ईं मानी मुनासिबत. ब अक़ीदए कुफ़्फ़ार अरब न दारद कि आंहा बुतां रा मुतसर्रिफ़ बिलज़ात गुफ़्तन्द न आला-ए-तसर्रुफ़े इलाही.

मूर्तिपूजा उस प्रयोग से समानता रखती है जिसे ज़िक्रे राब्ता (मिलाने वाला ध्यान) कहते हैं. यह प्रयोग सूफ़ियों का मामूल (अभ्यास) है. इस अर्थ में मूर्तिपूजा का कोई सम्बन्ध काफ़िर अरबों के मत से नहीं है क्योंकि अरब मूर्तियों को ख़ुद शक्तिमान मानते थे न कि ईश्वर की शक्ति के ज़रिये.

نے روحانی اتحاد کے وچار ظاہر کئے . مثال کے طور پر ہم ان میں سے کچھ یہاں دیتے ہیں. 'گلشن راز' کے لیکھک شہاب‌الدین محمد شبستری' جن کی 1320 عیسوی میں موت ہوئی' مورتی پوجا اور اسلام کے فرق کو بتلاتے ہوئے کہتے ہیں :—

بت اینجا مظہر عشق اوست وحدت
بود زنار بستن عقد خدمت
چوں کفر و دیں بود قائم بہ ہستی
شود توحید عین بت پرستی
چوں اشیا ہست ہستی را مظاہر
ازاں جملہ یکے بت باشد آخر
مسلماں گر بدانستے کہ بت چیست
بدانستے کہ دیں در بت پرستیست
وگر مشرک ز بت آگاہ گشتے
کجا در دین خود گمراہ گشتے
ندید او از بت الا خلق ظاہر
بدیں علت شد اندر شرک کافر
تو ہم گر از و نہ بینی حق پنہاں
با شرع اندر نہ خوانندت مسلماں

مورتی اِس دنیا میں پریم اور ادویت کو پرگٹ کرنے والی ہے . اور جنیؤ باندھنے کا مطلب سیوا کا پرن کرنا ہے . چونکہ کفر اور دین (ہندو اور مسلم دھرم) دونوں ہی دنیا کے استتو دھرم پر قائم ہیں اِس لئے توحید (ادویت دھرم) مورتی پوجن کا اصلی تتو ہے . چونکہ جگت کی ساری وستوئیں استتو کو پرگٹ کرتی ہیں' اِن سب ہی وستوؤں میں مورتی بھی ایک وستو ہے . اگر مسلمان جانتا کہ مورتی سچ مچ کیا ہے' تو سمجھ جاتا کہ مورتی پوجا ہی دھرم ہے . اور اگر مورتی پوجنے والا مورتی کی اصلیت جانتا تو وہ اپنے دھرم سے نہ بچلتا . اُس نے مورتی میں کیول باہری قدرت کو دیکھا اور اِس سبب اُس نے ایشور کو نہ پہچانا اور کافر ہوا . تو بھی اگر اُس میں ستیہ کو چھپا ہوا نہیں دیکھتا تو تجھے بھی شرع (دھرم شاستر) کے حساب سے مسلمان نہیں کہیں گے .

مرزا جان جاناں مظہر جن کا جنم 1699 عیسوی میں ہوا اپنے ایک پتر میں ہندو دھرم کے بارے میں یوں لکھتے ہیں :—

بت پرستی و ایں عمل مشابہت بہ ذکر رابطہ دارد کہ معمول صوفیہ است' و ایں معنی مناسبت . بہ عقیدۂ کفار عرب نہ دارد کہ آنہا بتاں را متصرف بلذات گفتند نہ آلائے تصرف الٰہی .

مورتی پوجا اُس پریوگ سے سمانتا رکھتی ہے جسے ذکر رابطہ (ملانے والا دھیان) کہتے ہیں . یہ پریوگ صوفیوں کا معمول (ابھیاس) ہے . اِس ارتھ میں مورتی پوجا کا کوئی سمبندھ کافر عربوں کے مت سے نہیں ہے کیونکہ عرب مورتیوں کو خود شکتیمان مانتے تھے نہ کہ ایشور کی شکتی کے ذریعہ .

फ़रमाते हैं 'परम प्रकाशित सत्य का तत्व न इल्म से पाया जा सकता है और न दृष्टि से.'

"हक़ीक़ते हक़्क़े सुबहान न दर इल्म गुंजद व न दर अयान."

दोनों ही ब्रह्म के जगत-रूप में बदलने को विकार कहते हैं और इसकी कई सीढ़ियां मानते हैं. इस क्रम का लक्षण उस गूढ़ अद्वैत में नाम और रूप या इस्म और सिफ़ात का पैदा हो जाना है. दोनों ही मानते हैं कि जगत का बाहुल्य उसकी इच्छा का फल है. उपनिशद में आया है:—

'उसने सोचा कि अब मुझे जगत की रचना करना चाहिए.'

हदीस में आया है, "कुन्तो कनज़न मख़्फ़ीयन फ़ाहबबतो अन उरिफ़ो फ़ख़लक़्तो अल ख़ल्क़ो."

'मैं एक छिपा हुआ ख़ज़ाना था, फिर मैंने इच्छा की कि लोग मुझे जानें. इसलिये मैंने सृश्टि की रचना की.'

वेदान्त और तसव्वुफ़ दोनों ही इनसान को परमेश्वर का ख़ास कृपापात्र मानते हैं, क्योंकि उन दोनों के मुताबिक़ इनसान की बुद्धि या क़ल्ब चेतन (ख़ुदा) और जड़ (प्रकृति, दुनिया) के मिलने की जगह है. जहां हिन्दू मनोवैज्ञानिक इस प्रकृति में सत्व, रजस और तमस तीन गुन पाते हैं वहां ग़ज़ाली भी उसमें इद्राक (सत्व), क़ुदरत (रजस्), और शहवत-ओ-ग़ज़ब (तमस) यह तीन तत्व बतलाते हैं.

इसी तरह रूह के फिर ख़ुदा में फ़ना हो जाने के बारे में दोनों सम्प्रदायों के एक से विचार हैं. एक ही रास्ते से दोनों एक ही मंज़िल पर पहुंचते हैं. दोनों ही में समान संयम है, समान गुनों की ज़रूरत है, और दोनों के अनुभव एकसां हैं. रास्ते की मंज़िलें और अवस्थाएं एक ही हैं. सिर्फ़ नामों का फ़र्क़ है. मामूली से मामूली आदमी से यह बात नहीं छिप सकती कि दोनों सम्प्रदायों के विचार और मक़सद एक हैं. अगर परमात्मा की कृपा और प्रसाद की एक तरफ़ ज़रूरत है तो दूसरी तरफ़ भी उतना ही ज़रूरी है कि उसका फ़ैज़ और लुत्फ़ हो. न तो हिन्दू बिना गुरू के इस पवित्र यात्रा को पूरा कर सकता है और न मुसलिम पीर या मुरशिद के बग़ैर; और दोनों ही दशाओं में शिश्य या मुरीद का गुरू पर पूरा पूरा आसरा होना चाहिये. परमार्थतः प्रेम या इश्क़े हक़ीक़ी की ताक़त ही दोनों को रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करती है.

जब तसव्वुफ़ और वेदान्त हिन्दुस्तान की ज़मीन पर मिले तो इन्होंने दोनों हिन्दू और मुसलमानों में, ईश्वर की तलाश करने वाले लोगों के दिलों में जोश भरा. दोनों में इतनी साफ़ साफ़ समानताएं थीं कि दोनों ही ने उन्हें पहिचान कर अपना लिया. दोनों सूफ़ी और सन्तों ने मालूम कर लिया कि उनके मक़सद और साधन एकसां हैं. आपस के इसी मिलाप से विचार की वह गहरी धारा बह निकली, जो मंझले ज़माने के हिन्दुस्तान की कलचर की बुनियाद बनी. इस ज़माने के अनेकों मज़हबी नेताओं और सुधारकों

فرماتے ہیں ' پرم پرکاشت ستیہ کا تتو نہ علم سے پایا جا سکتا ہے اور نہ درشٹی سے .'

" حقیقت حق سبحان نہ در علم گنجد و نہ در عیان ."

دونوں ہی برہم کے جگت روپ میں بدلنے کو وکار کہتے ہیں اور اس کی کئی سیڑھیاں مانتے ہیں . اِس کرم کا لکشن اُس گوڑھ ادویت میں نام اور روپ یا اِسم اور صفات کا پیدا ہو جانا ہے . دونوں ہی مانتے ہیں کہ جگت کا باھولیہ اُسکی اِچھا کا پھل ہے . اُپنشد میں آیا ہے :—

' اُس نے سوچا کہ اب مجھے جگت کی رچنا کرنا چاہئے .'

حدیث میں آیا ہے " کنتو کنزن مخفین فاحببتو عن اورفو فاخلقتو عم خلقو ."

'میں ایک چھپا ہوا خزانہ تھا' پھر میں نے اِچھا کی کہ لوگ مجھے جانیں . اِسی لئے میں نے سرشٹی کی رچنا کی '

ویدانت اور تصوف دونوں ہی اِنسان کو پرمیشور کا خاص کرپا پاتر مانتے ہیں' کیونکہ اُن دونوں کے مطابق اِنسان کی بدھی یا قلب چیتن' (خدا) اور جڑ (پرکرتی' دنیا) کے ملنے کی جگہ ہے . جہاں ہندو منو ویگیانک اِس پرکرتی میں ستو' رجس اور تمس تین گن پاتے ہیں وہاں غزالی بھی اُس میں اِدراک (ستو)' قدرت (رجس)' اور شہوت و غضب (تمس) یہ تین تتو بتلاتے ہیں .

اِسی طرح روح کے پھر خدا میں فنا ہو جانے کے بارے میں دونوں سمپردایوں کے ایک سے وچار ہیں . ایک ہی راستے سے دونوں ایک ہی منزل پر پہونچتے ہیں . دونوں ہی میں سمان سنیم ہے' سمان گنوں کی ضرورت ہے' اور دونوں کے انوبھو یکساں ہیں . راستے کی منزلیں اور اوستھائیں ایک ہی ہیں صرف ناموں کا فرق ہے . معمولی سے معمولی آدمی سے یہ بات نہیں چھپ سکتی کہ دونوں سمپردایوں کے وچار اور مقصد ایک ہیں . اگر پرماتما کی کرپا اور پرساد کی ایک طرف ضرورت ہے تو دوسری طرف بھی اُتنا ہی ضروری ہے کہ اُس کا فیض اور لطف ہو . نہ تو ہندو بنا گرو کے اِس پوتر یاترا کو پورا کر سکتا ہے اور نہ مسلم پیر یا مرشد کے بغیر ؛ اور دونوں ہی دشاؤں میں ششیہ یا مرید کا گرو پر پورا پورا آسرا ہونا چاہئے . پرمارتھتہ پریم یا عشق حقیقی کی طاقت ہی دونوں کو راستے پر چلنے کے لئے پریرت کرتی ہے .

جب تصوف اور ویدانت ہندستان کی زمین پر ملے تو انہوں نے دونوں ہندو اور مسلمانوں میں' ایشور کی تلاش کرنے والے لوگوں کے دلوں میں جوش بھرا . دونوں میں اِتنی صاف صاف سمانتائیں تھیں کہ دونوں ہی نے اُنھیں پہچان کر اپنا لیا . دونوں صوفی اور سنتوں نے معلوم کر لیا کہ اُن کے مقصد اور سادھن یکساں ہیں . آپس کے اِسی ملاپ سے وچار کی وہ گہری دھارا بہ نکلی' جو منجھلے زمانے کے ہندستان کی کلچر کی بنیاد بنی . اِس زمانے کے انیکوں مذہبی نیتاؤں اور سدھارکوں

वह परमात्मा को पहुंच जाती है और उसकी यात्रा पूरी हो जाती है.

यही यात्रा जिसे 'तरीक़ा' कहते हैं एक संयम है, जिसके दो हिस्से हैं. पहिले हिस्से को 'मुजाहिदा' (अभ्यास) और दूसरे को 'मराक़बा' (ध्यान) कहते हैं. मुजाहिदा या अभ्यास का ध्येय दिल की सफ़ाई (तज़किया-ए नफ़्स) है और इसमें शरियत के नियमों, विधि और निशेधों को मानना है. दूसरे हिस्से के अन्दर जिस्मानी और दिमाग़ी क्रियायें हैं जिन्हें ज़िक्र (ध्यान) कहते हैं. ज़िक्र (ध्यान) की कई क़िस्में हैं, इनमें जली ख़फ़ी बहुत मशहूर हैं. इन क्रियाओं के लिए ख़ास ख़ास आसन हैं और इनके साथ साथ प्राणायाम (हब्से दम) भी किया जाता है जिसमें ईश्वर का परम नाम 'ला इला इल-अल्लाह' जपा जाता है. यह क्रियाएं एक गूढ़ प्रभाव पैदा करती हैं जिसमें अन-देखे रङ्ग और अनसुने शब्द दिखाई और सुनाई देते हैं. मौलाना रूम इसी की तरफ़ इशारा करते हैं और कहते हैं—"दर लबश क़ुफ़लस्त व दर दिल आवाज़ए. लब ख़मोश व दिल पुर अज़ आवाज़ए" होंट पर ताला लगा है, और दिल में एक नाद है, होंट चुपचाप हैं लेकिन दिल नाद से भरा है.

इसलामी रहस्यवाद के विकास का बयान यहीं ख़त्म हो जाना चाहिये. 'क्योंकि इसके बाद वाले इतिहास में हमें इससे आगे और कोई नए विचार नहीं मिलते. इसलिए अब यहां पर वेदान्त और तसव्वुफ़ दोनों में क्या समानता है यह जानने के लिये दोनों की तुलना करना चाहिये. सब से पहिले हम ज्ञान के उसूलों को लें. वेदान्त और तसव्वुफ़ दोनों ही मानते हैं कि विद्या दो प्रकार की होती है, एक का विषय सत्य है दूसरी का जगत. एक अपरा है और दूसरी परा, एक दीनी और दूसरी दुनियावी. पहली तरह की विद्या का मक़सद अपने को जानना, आत्म-प्राप्ति है यानी 'साक्षात्कार' या 'मुशाहदा,' 'अनुभव'—'समाधि' 'वज्द' 'जमा-उल-जमा'—यानी परमानन्दमय अनुभव इसके साधन हैं. 'अभ्यास' या 'रियाज़त' 'योग' या 'ज़िक्र' 'संयम' और 'ध्यान' या 'मुजाहदा' और 'मराक़बा' आदि दिमाग़ी साधन इसके रास्ते हैं.

दोनों ही मत उस पूर्ण 'तद्' 'हू' 'धातु' 'ज़ात' को एकसां मानते हैं. हिन्दू और मुसलमान दोनों की दृष्टि से वह दूर से दूर और पास से पास है. वह परम या मुतलक़; सत्यस्य सत्यम या हक़ीक़त-उल-हक़ायक़, ज्योतिषम-ज्योति या नूरुल-अनवार; सर्व व्यापी या मुहीत है. दोनों मानते हैं कि सिर्फ़ बुद्धि या अक़्ल के ज़रिए इसका बोध नहीं हो सकता. जहां एक ओर उपनिषद् कहते हैं कि "वह न मन से, न वाणी से और न आंखों से पाया जा सकता है, 'न [illegible] चक्षुषा [illegible]' वहां जामी साहब

روح پرماتما کو پہونچ جاتی ہے اور اُسکی یاترا پوری ہوجاتی ہے .

یہی یاترا جیسے 'طریقہ' کہتے ہیں ایک سنیم ہے' جس کے دو حصے ہیں . پہلے حصے کو 'مجاہدہ' (ابھیاس) اور دوسرے کو 'مراقبہ' (دھیان) کہتے ہیں . مجاہدہ یا ابھیاس کا دھییئہ دل کی صفائی (تذکیائے نفس) ہے اور اِس میں شریعت کے نیموں' ودھی اور نشیدھوں' کو ماننا ہے . دوسرے حصے کے اندر جسمانی اور دماغی کریائیں ہیں جنہیں ذکر (دھیان) کہتے ہیں . ذکر (دھیان) کی کئی قسمیں ہیں' اِن میں جلی خفی بہت مشہور ہیں. اِن کریاؤں کے لئے خاص خاص آسن ہیں اور اِن کے ساتھ ساتھ پرانایام (حبس دم) بھی کیا جاتا ہے جس میں ایشور کا پرم نام 'لا الٰہ الا اللہ' جپا جاتا ہے . یہ کریائیں ایک گوڑھ پربھاؤ پیدا کرتی ہیں جس میں اَن دیکھے رنگ اور اَن سنے شبد دکھائی اور سنائی دیتے ہیں . مولانا روم اِسی کی طرف اِشارہ کرتے ہیں اور کہتے ہیں—" در لبش قفل است و دردل آوازئے . لب خموش و دل پر از آوازئے " ہونٹ پر تالا لگا ہے' اور دل میں ایک ناد ہے' ہونٹ چپ چاپ ہیں لیکن دل ناد سے بھرا ہے .

اِسلامی رہسیہ واد کے وکاس کا بیان یہیں ختم ہوجانا چاہئیے. کیونکہ اِس کے بعد والے اِتہاس میں ہمیں اِس سے آگے اور کوئی نئے وچار نہیں ملتے . اِس لئے اب یہاں پر ویدانت اور تصوف دونوں میں کیا سمانتا ہے یہ جاننے کے لئے دونوں کی تلنا کرنا چاہئیے . سب سے پہلے ہم گیان کے اُصولوں کو لیں . ویدانت اور تصوف دونوں ہی مانتے ہیں کہ ودیا دو پرکار کی ہوتی ہے' ایک کا وشئے ستیہ ہے دوسری کا جگت . ایک اپرا ہے' اور دوسری پرا' ایک دینی اور دوسری دنیاوی . پہلی طرح کی ودیا کا مقصد اپنے کو جاننا' آتم پراپتی ہے یعنی 'ساکشا تکار' یا 'مشاہدہ' 'انوبھو'—'سمادھی' 'وجد' 'جمع الجمع'—یعنی پرمانند میئے انوبھو اِس کے سادھن ہیں . 'ابھیاس' یا 'ریاضت' 'یوگ' یا 'ذکر' 'سنیم' اور 'دھیان' یا 'مجاہدہ' اور 'مراقبہ' آدی دماغی سادھن اِس کے راستے ہیں .

دونوں ہی مت اُس پورن 'تد' 'ہو' 'دھاتو' 'ذات' کو یکساں مانتے ہیں . ہندو اور مسلمان دونوں کی درشٹی سے وہ دور سے دور اور پاس سے پاس ہے . وہ پرم یا مطلق؛ ستسیہ ستیم یا حقیقت الحقائق' جیوتشم جیوتی یا نورن الانوار؛ سرووپاپی یا محیط ہے . دونوں مانتے ہیں کہ صرف بدھی یا عقل کے ذریعے اِس کا بودھ نہیں ہو سکتا . جہاں ایک اور اُپنشد کہتے ہیں کہ " وہ نہ من سے' نہ وانی سے اور نہ آنکھوں سے پایا جا سکتا ہے' نہ تکر چکشور گچھتی نہ واکگچھتی نو منا' وہاں جامی صاحب

का था, 14 वीं सदी के आख़री हिस्से में फ़ारस में रहता था. ऐसा मालूम होता है कि उसने जवानी में हिन्दुस्तान की यात्रा की थी. उसका फ़लसफ़ा ज़्यादातर इब्न अरबी के ही उसूलों से मिलता जुलता है, इसलिए उसके यहां बयान करने की कोई ज़रूरत नहीं. जहां तक पूर्न ब्रह्म का अपने शुद्ध अन्तर्जगत से जिसे जीली काला बादल (अल-अमा) कहता है, बाहरी दुनिया के अनगिनत रूपों में बदलने (अवतरण) का विशय है, जीली और इब्न अरबी के मत यकसां हैं. लेकिन गुनों वाली दुनिया किस तरह फिर शुद्ध और सरल तत्व में लौट जाती है—इस पर भी जीली विचार प्रकट करता है, और सत असत के चक्र को पूरा करता है. इस चक्र के बीचों बीच आदमी की जगह है, क्योंकि उसकी आत्मा एक ओर ब्रह्म और दूसरी ओर क़ुदरत से मिल जाती है.

आदमी सत और असत के बीच में पुल बांधता है. आत्मा में सत्ता के सारे गुन एक हो जाते हैं इसीलिए उसके ज़रिये बहुत्व में फंसा हुआ एक अपने एकत्व के बारे में सचेत हो जाता है. जिस मनुश्य में इस एकत्व के ज्ञान का उदय हो जाता है वह इन्साने कामिल, पूर्न पुरुश (परम हंस) कहलाता है. इस ज्ञान के उदय की तीन अवस्थाएं हैं—नाम की ज्योति, गुनों की ज्योति और तत्व की ज्योति. यह अवस्थाएं ब्रह्म के प्रकृति में उतरने की तीन मंज़िलें हैं. इन्हें अहदिय्यत (एकता), हुविय्यत (तदीयता) और अनिय्यत (अस्मदीयता) के नामों से पुकारते हैं.

बाद के सूफ़ी लेखकों ने इन अवस्थाओं के दूसरे नाम रखे हैं. जैसे साधारन चेतना की अवस्था को नासूत कहते हैं और इससे आगे वाली तीन अवस्थाओं को मलकूत, जबरूत और लाहूत नाम देते हैं. मलकूत अवस्था में जो चेतना होती है उसकी सपने से तुलना की गई है. इसको सूक्ष्म जगत और अमिट रूपों का जगत भी मानते हैं. दूसरी अवस्था बेख़ुदी या तल्लीनता की है जो सुषुप्ति के समान है. यह वह गहरी नींद है जिसमें सपने नहीं दिखाई देते. सब से ऊंची अवस्था सत्य, तत्व और एकत्व की अवस्था है. इन हालतों की मनोवैज्ञानिक विशेशताओं की जांच करें तो मालूम होता है कि मन के विशयों का धीरे धीरे इस तरह नाश होता है कि आख़िर में एक हालत ऐसी आ जाती है जब चेतना में कोई भी दूसरी वस्तु न रहकर वह अकेली रह जाती है. पहली अवस्था वह है जिसमें विशयी, विशय और उन दोनों के आपस के सम्बन्ध मौजूद रहते हैं; दूसरी वह है जिसमें विशयी और विशय रह जाते हैं, सम्बन्ध टूट जाते हैं, और आख़िरी वह है जिसमें सिर्फ़ विशयी ही रह जाता है, विशयों का अन्त हो जाता है. यह फ़ना (मोक्ष) की मुख़्तलिफ़ सीढ़ियां हैं जिन पर चढ़कर

کا تھا' 14 ویں صدی کے آخری حصے میں فارس میں رہتا تھا ۔ ایسا معلوم ہوتا ہے کہ اُس نے جوانی میں ہندستان کی یاترا کی تھی ۔ اُس کا فلسفہ زیادہ تر ابن عربی کے ہی اُصولوں سے ملتا جلتا ہے' اِسی لئے اُس کے یہاں بیان کرنے کی کوئی ضرورت نہیں ۔ جہاں تک پورن برہم کا اپنے شدھ انتر جگت سے جسے جیلی کالا بادل (العماء) کہتا ہے' باہری دنیا کے انگنت روپوں میں بدلنے (اوترن) کا وشئے ہے' جیلی اور ابن عربی کے مت یکساں ہیں ۔ لیکن گنوں والی دنیا کس طرح پھر شدھ اور سرل تتو میں لوٹ جاتی ہے—اِس پر بھی جیلی وچار پرکٹ کرتا ہے' اور ست است کے چکر کو پورا کرتا ہے ۔ اِس چکر کے بیچوں بیچ آدمی کی جگہ ہے کیونکہ' اُس کی آتما ایک اور برہم اور دوسری اور قدرت سے مل جاتی ہے ۔

آدمی ست اور است کے بیچ میں پل باندھتا ہے ۔ آتما میں ستا کے سارے گن ایک ہو جاتے ہیں اِس لئے اُسی کے ذریعہ بہتو میں پھنسا ہوا ایک اپنے ایکتو کے بارے میں سچیت ہو جاتا ہے ۔ جس منشیہ میں اِس ایکتو کے گیان کا اُودے ہو جاتا ہے وہ اِنسان کامل' پورن پُرش (پرم ہنس) کہلاتا ہے ۔ اِس گیان کے اُودے کی تین اوستھائیں ہیں—نام کی جیوتی' گنوں کی جیوتی اور تتو کی جیوتی ۔ یہ اوستھائیں برہم کے پرکرتی میں اُترنے کی تین منزلیں ہیں ۔ اِنہیں احدیت (ایکتا)' ہویت (تدیتا) اور انیئت (اسمدیتا) کے ناموں سے پکارتے ہیں ۔

بعد کے صوفی لیکھکوں نے اِن اوستھاؤں کے دوسرے نام رکھے ہیں ۔ جیسے سادھارن چیتنا کی اوستھا کو ناسوت کہتے ہیں اور اِس سے آگے والی تین اوستھاؤں کو ملکوت' جبروت اور لاہوت نام دیتے ہیں ۔ ملکوت اوستھا میں جو چیتنا ہوتی ہے اُس کی سپنے سے تولنا کی گئی ہے ۔ اُس کو سوکشم جگت اور امٹ روپوں کا جگت بھی مانتے ہیں ۔ دوسری اوستھا بےخودی یا تلینتا کی ہے جو سوشپتی کے سمان ہے ۔ یہ وہ گہری نیند ہے جس میں سپنے نہیں دکھائی دیتے ۔ سب سے اونچی اوستھا ستیہ' تتو اور ایکتو کی اوستھا ہے ۔ اِن حالتوں کی منوویگیانک وشیشتاؤں کی جانچ کریں تو معلوم ہوتا ہے کہ من کے وشیوں کا دھیرے دھیرے اِس طرح ناش ہوتا ہے کہ آخر میں ایک حالت ایسی آجاتی ہے جب چیتنا میں کوئی بھی دوسری وستو نہ رہ کر وہ اکیلی رہ جاتی ہے ۔ پہلی اوستھا وہ ہے جس میں وشئی' وشئے اور اُن دونوں کے آپس کے سمبندھ موجود رہتے ہیں' دوسری وہ ہے جس میں وشئی اور وشئے رہ جاتے ہیں' سمبندھ ٹوٹ جاتے ہیں' اور آخری وہ ہے جس میں صرف وشئی ہی رہ جاتا ہے' وشیوں کا انت ہو جاتا ہے ۔ یہ فنا (موکش) کی مختلف سیڑھیاں ہیں جن پر چڑھکر

मालूम हो जाए कि वही सत्य है.' जबकि यह कहा जाता है कि "उसके समान कोई चीज़ नहीं है", तो उसके तन्ज़ीह या परा रूप से मतलब है, और जब कहा जाता है कि 'वही सुनने और देखने वाला है' 'हू उल उस्समी हू उल बसीर' तो उसकी 'तशबीह' या अन्तर्व्यापी अवस्था से मतलब है. जहां एक ओर वह अक़ल के परे है वहां दूसरी ओर वह अपने को हब्ल्-उल-वरीद यानी गरदन की नाड़ी से भी पास बताता है.

इसीलिए परम सत का बयान सिर्फ़ ऐसे ही लफ़्ज़ों में किया जा सकता है जो आपस में विरोधी (मुतज़ाद) हों. लेकिन अगर वह परम सत संपूर्न है तो उसका मुक़र्रर (नियत) रूप भी होना चाहिये. ब्रह्मांड का विकास इसी नियत रूप से सम्बन्ध रखता है.

प्रकृति का सिद्धान्त ईश्वर के नियत रूप से बंधा है. इससे सृष्टि के विकास-क्रम का पता चलता है. इस विकास की पांच हालतें हैं. पहली हालत वहदत यानी पूर्न ऐक्य या अद्वैत की है जिसमें बाह्य जगत और अन्तर्जगत बिलकुल एक होते हैं. दूसरी हालत वह है जिसमें ऐक्य टूट जाता है और अन्तर्जगत (बुतून) और एकत्व का सामना होता है. इसको वहदियत कहते हैं. इसके बाद अहदियत यानी बहुत्व में एकत्व वाली हालत आती है, इस हालत में गुनों (सिफ़ात) में तत्व और तत्व में गुन प्रकट हो जाते हैं. चौथी हालत वह है जब विचार (एयान) उत्पन्न होते हैं और आख़िरी वह जबकि रूप (अजसाम) पैदा होते हैं. मनुष्यों, चीज़ों और जगत के इस बहुत्व के पीछे, दर असल, एक ही तत्व है, जैसा कि क़ुरान में कहा गया है, "ऐ लोगो अपने रब का आदर करो, जिसने एक प्रान से सारी ख़लक़त को पैदा किया." "या ऐयहा उन्नास उत्तिक़ू रब्बिकुं अल्लज़ी ख़लक़कुं मन नफ़सहि वाहिदतुन."

बाहरी जगत के स्वभाव के बारे में इब्न अरबी ने अजीब विचार ज़ाहिर किए हैं. 'फ़ुसूस्-उल-हिकम' में वह कहते हैं कि इनसान और ख़ुदा का ताल्लुक़ पदार्थ और उसकी परछाईं का सा है, और इनसान की ज़िन्दगी सपने के समान है. और भी कई विशयों पर इब्न अरबी के विचार बिलकुल मौलिक थे. मिसाल के तौर पर मूर्ति पूजा के बारे में उनका विरोध साधारन रूप से कहे जाने वाले मतों से भिन्न विचारों पर मुनहसर था. वह कहते थे कि हर पूजा की चीज़ में, चाहे वह पत्थर, पेड़ या कुछ भी क्यों न हो, ईश्वर या उसके गुनों का प्रकाश होता है, लेकिन उपासना के यह साधन ईश्वर को एक ही वस्तु में महदूद कर देते हैं और उसकी असली सम्पूर्नता और एकत्व निकाल देते हैं जो ठीक नहीं. (फ़ुसूसे-ख़ातमी)

अब्दुल करीम जीली जो इब्न अरबी के ही सम्प्रदाय

معلوم ہوجائے کہ وہی ستیہ ہے' جبکہ یہ کہا جاتا ہے کہ "اُس کے سمان کوئی چیز نہیں ہے" تو اُس کے تنزیہہ یا پرا روپ سے مطلب ہے' اور جب کہا جاتا ہے کہ وہی سننے اور دیکھنے والا ہے' ہوالسمی ہوالبصیر' تو اس کی 'تشبیہ' یا انتر ویاپی اوستھا سے مطلب ہے جہاں ایک اور وہ عقل کے پرے ہے وہاں دوسری اور وہ اپنے کو حبل الورید یعنی گردن کی ناڑی سے بھی پاس بتاتا ہے۔

اِس لئے پرم ست کا بیان صرف ایسے ہی لفظوں میں کیا جا سکتا ہے جو آپس میں وِرودھی (متزاد) ہوں۔ لیکن اگر وہ پرم ست سمپورن ہے تو اُس کا مقرر (نیت) روپ بھی ہونا چاہئے۔ برہما نڈ کا وکاس اِسی نیت روپ سے سمبندھ رکھتا ہے۔

پرورتی کا سدھانت ایشور کے نیت روپ سے بندھا ہے۔ اس سے سرشٹی کے وکاس کرم کا پتہ چلتا ہے۔ اِس وکاس کی پانچ حالتیں ہیں۔ پہلی حالت وحدت یعنی پورن ایکیہ یا ادویت کی ہے جس میں باہیہ جگت اور انترجگت بالکل ایک ہوتے ہیں۔ دوسری حالت وہ ہے جس میں ایکیہ ٹوٹ جاتا ہے اور انتر جگت (بطون) اور ایکتو کا سامنا ہوتا ہے۔ اِس کو وحدیت کہتے ہیں۔ اِس کے بعد عہدیت یعنی بہتو میں ایکتو والی حالت آتی ہے' اس حالت میں گنوں (صفات) میں تتو اور تتو میں گن پرکٹ ہو جاتے ہیں۔ چوتھی حالت وہ ہے جب وچار (عیان) اُتپن ہوتے ہیں اور آخری وہ جبکہ روپ (اجسام) پیدا ہوتے ہیں۔ منشیوں' چیزوں اور جگت کے اِس بہتو کے پیچھے' دراصل' ایک ہی تتو ہے' جیسا کہ قرآن میں کہا گیا ہے' "اے لوگو اپنے رب کا آدر کرو' جس نے ایک پران سے ساری خلقت کو پیدا کیا۔" "یا ایہاالناس اتقوا ربکم الذی خلقکم من نفس واحدۃ۔"

باہری جگت کے سوبھاؤ کے بارے میں ابن عربی نے عجیب وچار ظاہر کئے ہیں۔ 'فصوص الحکم' میں وہ کہتے ہیں کہ اِنسان اور خدا کا تعلق پدارتھ اور اس کی پرچھائیں کا سا ہے' اور اِنسان کی زندگی سپنے کے سمان ہے۔ اور بھی کئی وشیوں پر ابن عربی کے وچار بالکل مولک تھے۔ مثال کے طور پر مورتی پوجا کے بارے میں اُن کا وِرودھ سادھارن روپ سے کہے جانے والے متوں سے بھن وچاروں پر منحصر تھا۔ وہ کہتے تھے کہ ہر پوجا کی چیز میں' چاہے وہ پتھر' پیڑ یا کچھ بھی کیوں نہ ہو' ایشور یا اُس کے گنوں کا پرکاش ہوتا ہے' لیکن اُپاسنا کے یہ سادھن ایشور کو ایک ہی وستو میں محدود کر دیتے ہیں اور اُس کی اصلی سمپورنتا اور ایکتو نکال دیتے ہیں جو ٹھیک نہیں۔ (فص [illegible])۔

عبدالکریم جیلی جو ابن عربی کے ہی سمپردائے

'इन्सानी गुणों के बादलों को हटा कर, ऊंचे और विशुद्ध ईश्वर के परम सत्य रूपी सूरज को प्रकाश करना ही तजल्ली (आत्मा की ज्योति) है. यह प्रकाश तीन प्रकार का है—(1)—तजल्ली-ए-ज़ात—ईश्वर के तत्व का प्रकाश—(2)—तजल्ली-ए-सिफ़ात—उसके गुनों का प्रकाश और (3)—तजल्ली-ए-अफ़आल-उसके कार्यों का प्रकाश. पहली अवस्था को मुशाहदा, दूसरी को मुकाशफ़ा, और तीसरी को मुहाज़रा कहते हैं. मुशाहदा की सबसे ऊंची अवस्था वह है जब कि देखने वाला (द्रष्टा) देखी गई वस्तु (दृष्ट) में अपने को मिला देता है.

परमात्मा और मनुश्य के सम्बन्ध को बतला कर सुहरावर्दी सूफ़ियों के रीति रिवाज, शिश्टाचार और आदर सत्कार पर अपने विचार ज़ाहिर करते हैं. इसके बाद वह उनके फ़रायज़ों और सद्गुण को बतलाते हैं, अख़ीर में आख़री मक़सद तक पहुंचने के लिये रास्ते की मंज़िलें और अवस्थाएं बयान करते हैं. उनके मत के मुताबिक़ यह बहुत ज़रूरी है कि शरियत (धर्म) में बताए गए नियत कर्म (विधि) किए जाएं और जिन कामों को करने से मना किया गया है (निषेध) वे न किए जाएं. मसलन पांच फ़र्ज़ अवश्य करने चाहिये. सद्गुणों में वे सच, धीरज, विनय, उदारता, मित्रता, क्षमा, स्नेह और प्रेम पर ज़ोर देते हैं. पश्चात्ताप, तप, त्याग, दीनता, समर्पण, कृतज्ञता, भय, आशा, ईश्वर में विश्वास और उसकी इच्छा का पालन—यह सब उस राह की मंज़िलें हैं. इन सब सिफ़ातों से युक्त सूफ़ी ईश्वर प्रेम और आकर्षण की मुख़्तलिफ़ अवस्थाओं का तजरुबा करता है और आख़ीर में फ़ना व बक़ा (मोक्ष) के मंज़िले मक़सूद पर पहुंच जाता है.

इब्न अरबी जो 'शेख़-उल-अकबर' के नाम से मशहूर हैं, सुहरावर्दी से छोटे लेकिन उनके समकालीन थे. उनका जन्म स्पेन देश के मुरचिया स्थान में सन 1165 ईस्वी में हुआ लेकिन वह अपने जीवन को बिताने के लिये पूर्वी देशों में आये और कई मुल्कों का सफ़र करते हुए दमिश्क़ में बस गए. सन 1240 ईस्वी में उन्होंने चोला छोड़ा.

ईश्वरी तत्त्व की खोज के साथ उनका फ़लसफ़ा शुरू होता है. उनका विचार है कि ईश्वर को न तो केवल सबके परे (तन्ज़ीह) और न सिर्फ़ सबके अन्दर (तशबीह) माना जा सकता है, क्योंकि वह दोनों ही है. क़ुरान का कहना है "हुवल अव्वल हुवल आख़िर हुवल बातिन हुवल ज़ाहिर."

'वह सबसे पहिला और सब के आख़िर है; वह अन्दर वाला है, और बाहर वाला भी. यह भी कहा गया है "सनरीहुम आयतना फ़िलाफ़ाक़ि व अन्फ़ुसहुं हत्ता यतबीन लहुं इन्नहुलहक़्क़े" 'मैं आसमान में और उनके प्रानों में अपने चिह्नों को ज़ाहिर करूंगा ताकि उनको साफ़ साफ़

'انسانی گنوں کے بادلوں کو ہٹاکر' اونچے اور شدھ ایشور کے پرم ستیہ روپی سورج کو پرکاش کرنا ھی تجلی (آتما کی جیوتی) ھے. یہ پرکاش تین پرکار کا ھے—(1)—تجلی ذات—ایشور کے تتو کا پرکاش—(2)—تجلی صفات—اس کے گنوں کا پرکاش اور (3)—تجلی افعال—اُس کے کاریوں کا پرکاش. پہلی اوستھا کو مشاھدہ' دوسری کو مکاشفہ' اور تیسری کو محاضرا کہتے ھیں. مشاھدہ کی سب سے اونچی اوستھا وہ ھے جب کہ دیکھنے والا (درشٹا) دیکھی گئی وستو (درشٹ) میں اپنے کو ملا دیتا ھے.

پرماتما اور منشیہ کے سمبندھ کو بتلاکر سہروردی صوفیوں کے ریتی رواج' ششٹاچار اور آدر ستکار پر اپنے وچار ظاھر کرتے ھیں. اِس کے بعد وہ اُن کے فرایضوں اور سدگن کو بتلاتے ھیں' آخیر میں آخری مقصد تک پہونچنے کے لئے راستے کی منزلیں اور اوستھائیں بیان کرتے ھیں. اُن کے مت کے مطابق یہ بہت ضروری ھے کہ شریعت (دھرم) میں بتائے گئے نیت کرم (ودھی) کئے جائیں اور جن کاموں کو کرنے سے منع کیا گیا ھے (نشیدھ) وے نہ کئے جائیں. مثلاً پانچ فرض اوشیہ کرنے چاھئیے. سدگنوں میں وے سچ' دھیرج' ونئے' اُدارتا' مترتا' چھما' سنیہ اور پریم پر زور دیتے ھیں. پشچاتاپ' تپ' تیاگ' دینتا' سمرپن' کرتگیتا' بھئے' آشا' ایشور میں وشواس اور اُس کی اچھا کا پالن—یہ سب راہ کی منزلیں ھیں. اِن سب صفاتوں سے یکت صوفی ایشور پریم اور آکرشن کی مختلف اوستھاؤں کا تجربہ کرتا ھے اور آخیر میں فنا و بقا (موکش) کے منزل مقصود پر پہونچ جاتا ھے.

ابن عربی جو 'شیخ الاکبر' کے نام سے مشہور ھیں' سہروردی سے چھوٹے لیکن اُن کے سمکالین تھے. اُن کا جنم اسپین دیش کے مرچیا استھان میں سن 1165 عیسوی میں ھوا لیکن وہ اپنے جیون کو بتانے کے لئے پوروی دیشوں میں آئے اور کئی ملکوں کا سفر کرتے ھوئے دمشق میں بس گئے. سن 1240 عیسوی میں اُنھوں نے چولا چھوڑا.

ایشوری تتو کی کھوج کے ساتھ اُن کا فلسفہ شروع ھوتا ھے. اُن کا وچار ھے کہ ایشور کو نہ تو کیول سب کے پرے (تنزیہ) اور نہ صرف سب کے اندر (تشبیہ) مانا جاسکتا ھے' کیونکہ وہ دونوں ھی ھے' قرآن کا کہنا ھے "ھوالاول ھوالاخر ھوالباطن ھوالظاھر."

'وہ سب سے پہلا اور سب کے آخر ھے؛ وہ اندر والا ھے' اور باھر والا بھی. یہ بھی کہا گیا ھے سنریہم آیاتنا فی الآفاق و انفسہم حتیٰ یتبین لہم انہ الحق' 'میں آسمان میں اور اُن کے پرانوں میں اپنے چنھوں کو ظاھر کرونگا تاکہ اُن کو صاف صاف

है कि इन्द्रियों और अक़्ल से हासिल (इद्राकी, हिस्सी, अक़्ली) तजरुबा इल्म या ज्ञान से जुदा है. इस अनुभव के दो पहलू हैं—एक अक़्ले हिदायत यानी बनाने वाले के बारे में जानकारी और दूसरा अक़्ले मआश, बनाई हुई चीज़ों की जानकारी. इल्म तीन तरह का है—(1)—इल्मे-तौहीद, यह ज्ञान कि ईश्वर एक है, (2)—इल्मे मआरिफ़त—ख़ुदा के कामों का ज्ञान; और (3)—इल्मे-शरियत—ख़ुदा के हुक्मों का ज्ञान. लेकिन इस इल्म के भी परे एक भीतरी दीठ है जिसे मआरिफ़त कहते हैं "मआरिफ़त इबादत अज़ बाज़ शिनाख़तने उलूमे मुजमिल दर सूरते तफ़ासील." (दीठ उस जानने का नाम है जो ज्ञानों में मामूली और ग़ैर मामूली की पहचान से हासिल होती है). वह बतलाते हैं कि भीतरी दीठ (मारिफ़त) समाधि (वज्द) से मिलती है, और इसीलिये ज़बान में ताक़त नहीं कि वह इसे बयान कर सके. तजरुबा और ज्ञान इसके लिये केवल भूमिका (दीबाचे) के समान हैं. इसलिए इल्म के बग़ैर दीठ (मारिफ़त) नामुमकिन है, और इल्म दीठ के बिना एक बोझा है. सबसे ऊंची दीठ (मारिफ़त), मारिफ़ते इलाही (ईश्वर की दीठ) है, जो आत्मा की पहचान पर निर्भर करती है. कहा है—"मन अरफ़ा नफ़सहि अरफ़ा रब्बिहि."

"जो आत्मा में दीठ रखता है वही परमात्मा को पहचानता है."

ईश्वर क्या है, उसका मनुश्य से क्या सम्बन्ध है—इस पर सुहरावर्दी के विचार उनके इल्म और मारिफ़त (ज्ञान और दीठ) के सिद्धान्तों में शामिल हैं. उनके विचार से ख़ुदा पूर्न सत् और शुद्ध तत्व है जो गुन और तारीफ़ों से परे है. "अल्लाह, अहद, समद, मुनज़्ज़ा अज़ वालिदो वलद, व मऊनतो मदद, व मुक़द्दस अज़ शबीहो नज़ीरो वज़ीरो मशीर."

ख़ुदा एक और सनातन है. उसका न कोई पैदा करने वाला है और न ख़ुद उससे ही कोई पैदा होता है. उसको न कोई मदद देता है और न वह किसी की मदद चाहता है. न उसका कोई सानी है, न कोई उसके समान है, न कोई उसका सहायता देने वाला वज़ीर है और न कोई सलाह देने वाला मन्त्री! देश, काल, गुण, आकार, संख्या, परिमाण वग़ैरा से उसे कोई सम्बन्ध नहीं. वह दलील, तजुरबे इन्द्रिय-ज्ञान, और क़यास आदि से अप्राप्य उनसे दूर और आज़ाद है. "हरचि दर अक़्लो फ़हमो हवासो क़यास गुंजद ज़ाते ख़ुदावन्दे सुबहान अज़ाँ मुनज़्ज़हो मुक़द्दस अस्त."

लेकिन यह पूर्न चेतना वह चमकता दमकता तेज है जो हमेशा के लिये छिप नहीं रह सकता. सुहरावर्दी का बयान है—"मुराद अज़ तजल्ली इन्कशाफ़े शम्से हक़ीक़ते हक़ अस्त, तआला व तक़द्दुस अज़ रायूमे सिफ़ाते बशरी व [illegible] आं."

ہے کہ اِندریوں اور عقل سے حاصل (ادراکی، حسی، عقلی) تجربہ علم یا گیان سے جدا ہے. اِس انوبھو کے دو پہلو ہیں—ایک عقلِ ہدایت یعنی بنانے والے کے بارے میں جانکاری اور دوسرا عقل معاش، بنائی ہوئی چیزوں کی جانکاری. علم تین طرح کا ہے—(1) علم توحید، یہ گیان کہ ایشور ایک ہے، (2) علم معارفت—خدا کے کاموں کا گیان؛ اور (3)—علم شریعت—خدا کے حکموں کا گیان. لیکن اِس علم کے بھی پرے ایک بھیتری دیٹھ ہے جسے معارفت کہتے ہیں "معارفت عبادت از باز شناختن علوم مجمل درصورت تفاصیل." (دیٹھ اُس جاننے کا نام ہے جو گیانوں میں معمولی اور غیر معمولی کی پہچان سے حاصل ہوتی ہے). وہ بتلاتے ہیں کہ بھیتری دیٹھ (معرفت) سمادھی (وجد) سے ملتی ہے، اور اِسی لئے زبان میں طاقت نہیں کہ وہ اُسے بیان کرسکے. تجربہ اور گیان اِس کے لئے کیول بھومکا (دیباچے) کے سمان ہیں. اِس لئے علم کے بغیر دیٹھ (معرفت) ناممکن ہے، اور علم دیٹھ کے بنا ایک بوجھا ہے. سب سے اونچی دیٹھ (معرفت)، معرفت الٰہی (ایشور کی دیٹھ) ہے، جو آتما کی پہچان پر نربھر کرتی ہے. کہا ہے—"من عرف نفسہٗ عرف ربہٗ."

"جو آتما میں دیٹھ رکھتا ہے وہی پرماتما کو پہچانتا ہے."

ایشور کیا ہے، اُس کا منشیہ سے کیا سمبندھ ہے—اِس پر سہراوردی کے وچار اُن کے علم اور معرفت (گیان اور دیٹھ) کے سدھانتوں میں شامل ہیں. اُن کے وچار سے خدا پورن ست اور شدھ تتو ہے جو گن اور تعریفوں سے پرے ہے. "اللہ، احد، صمد، منزہ از والدو ولد، و معونت و مدد، و مقدس از شبیہ و نظیر و وزیر و مشیر."

خدا ایک اور سناتن ہے. اُس کا نہ کوئی پیدا کرنے والا ہے اور نہ خود اُس سے ہی کوئی پیدا ہوتا ہے. اُس کو نہ کوئی مدد دیتا ہے اور نہ وہ کسی کی مدد چاہتا ہے. نہ اُس کا کوئی ثانی ہے، نہ کوئی اُس کے سمان ہے، نہ کوئی اُس کا سہائتا دینے والا وزیر ہے اور نہ کوئی صلاح دینے والا منتری! دیش، کال، گن، آکار، سنکھیا، پریمان وغیرہ سے اُسے کوئی سمبندھ نہیں. وہ دلیل، تجربے، اِندریہ گیان، اور قیاس آدی سے اپراپیہ اُن سے دور اور آزاد ہے. "ہرچہ در عقل و فہم و حواس و قیاس گنجد ذات خداوند سبحان ازاں منزہ و مقدس است."

لیکن یہ پورن چیتنا وہ چمکتا دمکتا تیج ہے جو ہمیشہ کے لئے چھپا نہیں رہ سکتا. سہراوردی کا بیان ہے—"مراد از تجلی انکشاف شمس حقیقت حق است، تعالیٰ و تقدس از غموم صفات بشری و غیبت آں."

सकता है. एक तो ज़मीन की सतह पर नालियां खोदकर किसी दूसरे कुंए से इसमें पानी लाया जा सकता है या फिर उसी कुंए की तह की ज़मीन को इतना और खोदा जाय कि अन्दुरूनी सोते से ख़ुद बख़ुद फूटकर पानी ऊपर आ जाय. दूसरी तरह का आया हुआ पानी पहिली तरह से आए हुए पानी के मुक़ाबले में ज़्यादा साफ़ और ज़्यादा अटूट होगा. ठीक इसी तरह इनसान का मन (क़ल्ब) एक कुआं है, नालियां पांच इन्द्रियां, और उनके द्वारा लाया गया पानी, तजरुबे (प्रत्यक्ष ज्ञान) पर आश्रित ज्ञान की तरह है. लेकिन दूसरे तरह का ज्ञान वह है जो छिपे हुए सोते से कुएं की तह की मट्टी के हट जाने पर अपने आप निकल आता है. यह वह सीधा ज्ञान है जो लौहे-महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टी) पर लिखा हुआ है, और यह उस दैवी सत् का ज्ञान है जो ईश्वर की दया से खोजने वाले की आत्मा को रोशन करता है.

दूसरी मिसाल—एक राजा से कहा गया कि रोमन और चीनी बड़े अच्छे चित्रकार हैं. उन दोनों की चतुराई की तुलना करने की ग़रज़ से राजा ने अपने कमरे की एक दीवार चीनी कलाकारों और सामने वाली रोमन कलाकारों को दी. दोनों के बीच में एक पर्दा डाल दिया गया. रोमन लोगों ने तरह तरह के रङ्ग इकट्ठे किए. लेकिन चीनियों ने बिला किसी रंग के ही अपना काम शुरू किया. जब दोनों ने अपना काम ख़तम कर लिया तो उनकी चित्रकारी का मुआयना करने के लिए राजा बुलाया गया. रोमन लोगों की सुन्दर तस्वीरों को देखकर राजा बहुत ही ख़ुश हुआ और फिर चीनियों की दीवार की ओर मुड़ा जिस पर कोई भी रंग इस्तेमाल नहीं किया गया था. राजा ने अचरज से पूछा 'तस्वीर कहां है ?' तब चीनियों ने बीच का पर्दा हटा दिया और रोमन चित्र की सारी सुन्दरता की परछांई उस चीनी दीवार पर पड़ी. इतना ही नहीं बल्कि चीनियों ने अपनी दीवार पर ऐसी अद्भुत पालिश की थी कि परछांई असली तस्वीर से भी कहीं ख़ूबसूरत लगी और उसकी जगमगाहट के सामने असली तस्वीर फीकी पड़ गई.

ईश्वर के भक्त इन चीनियों की तरह से ही हैं. वे अपने दिल के आईने को इस तरह शुद्ध और निर्मल कर लेते हैं कि सनातन सत्य उसमें अपने पूरे प्रकाश के साथ चमकने लगता है, लेकिन पोथी पढ़ने वाले पन्डित रोम वालों की तरह से हैं; उनका ध्यान सिर्फ़ बाहरी दुनिया की शोभा तक ही सीमित (महदूद) रहता है.

इस्लामी रहस्यवाद के फ़लसफ़े की तरक़्क़ी में शहाबुद्दीन सुहरावर्दी (1145—1234 ईस्वी) ने बड़ा भारी हिस्सा लिया. इस विषय पर उनकी लिखी हुई पुस्तक 'अवारिफ़ुल मआरिफ़' एक मुकम्मिल ग्रन्थ है. सुहरावर्दी ने इल्मों के फ़र्क़ को और भी भली भांति से जांचा है, उन्होंने बतलाया

سکتا ھے . ایک تو زمین کی سطح پر نالیاں کھود کر کسی دوسرے کنو ئیں سے اِس میں پانی لایا جاسکتا ھے یا پھر اُسی کنوئیں کی تہ کی زمین کو اِتنا اور کھودا جائے کہ اندرونی سوتے سے خود بخود پھوٹ کر پانی اُوپر آجائے . دوسری طرح کا آیا ہوا پانی پہلی طرح سے آئے ہوئے پانی کے مقابلے میں زیادہ صاف اور زیادہ اٹوٹ ہوگا. ٹھیک اِسی طرح اِنسان کا من (قلب) ایک کنواں ھے' نالیاں پانچ اِندریاں' اور اُن کے دوارا لایا گیا پانی' تجربے (پرتیکش گیان) پر آشرت گیان کی طرح ھے . لیکن دوسرے طرح کا گیان وہ ھے جو چھپے ہوئے سوتے سے کنوئیں کی تہ کی مٹی کے ہٹ جانے پر اپنے آپ نکل آتا ھے . یہ وہ سیدھا گیان ھے جو لوح محفوظ (سرکشت پٹی) پر لکھا ہوا ھے' اور یہ اُس دیوی ست کا گیان ھے جو ایشور کی دیا سے کھوجنے والے کی آتما کو روشن کرتا ھے .

دوسری مثال—ایک راجہ سے کہا گیا کہ رومن اور چینی بڑے اچھے چترکار ہیں . اُن دونوں کی چترائی کی تلنا کرنے کی غرض سے راجہ نے اپنے کمرے کی ایک دیوار چینی کلاکاروں اور سامنے والی رومن کلاکاروں کو دی . دونوں کے بیچ میں ایک پردہ ڈال دیا گیا . رومن لوگوں نے طرح طرح کے رنگ اِکٹھے کئے . لیکن چینیوں نے بلا کسی رنگ کے ہی اپنا کام شروع کیا . جب دونوں نے اپنا کام ختم کرلیا تو اُن کی چترکاری کا معائنہ کرنے کے لئے راجہ بلایا گیا . رومن لوگوں کی سندر تصویروں کو دیکھکر راجہ بہت ہی خوش ہوا اور پھر چینیوں کی دیوار کی اور مڑا جس پر کوئی بھی رنگ اِستعمال نہیں کیا گیا تھا . راجہ نے اچرج سے پوچھا 'تصویر کہاں ھے ؟' تب چینیوں نے بیچ کا پردہ ہٹا دیا اور رومن چتر کی ساری سندرتا کی پرچھائیں اُس چینی دیوار پر پڑی . اِتنا ہی نہیں بلکہ چینیوں نے اپنی دیوار پر ایسی ادبھت پالش کی تھی کہ پرچھائیں اصلی تصویر سے بھی کہیں خوبصورت لگی اور اُس کی جگمگاہٹ کے سامنے اصلی تصویر پھیکی پڑگئی .

ایشور کے بھکت اِن چینیوں کی طرح سے ہی ہیں . وہ اپنے دل کے آئینے کو اِس طرح شدھ اور نرمل کرلیتے ہیں کہ سناتن ستیہ اُس میں اپنے پورے پرکاش کے ساتھ چمکنے لگتا ھے' لیکن پوتھی پڑھنے والے پنڈت روم والوں کی طرح سے ہیں ؛ اُن کا دھیان صرف باہری دنیا کی شوبھا تک ہی سیمت (محدود) رہتا ھے .

اِسلامی رہسیہ واد کے فلسفے کی ترقی میں شہاب الدین سہروردی (1145—1234 عیسوی) نے بڑا بھاری حصہ لیا . اِس وشئے پر اُن کی لکھی ہوئی پستک 'عوارف المعارف' ایک مکمل گرنتھ ھے . سہروردی نے علموں کے فرق کو اور بھی بھلی بھانتی سے جانچا ھے . اُنہوں نے بتلایا

विचार-धारा पर काफ़ी सोच विचार किया था, उनको अरब के दार्शनिकों में सबसे मौलिक मानता है. इन्होंने इसलामी फ़लसफ़े पर यूनान का जो असर पड़ा था उसको इस तरह से उखाड़ कर फेंक दिया कि वह पूरब में फिर न पनप सका.

ग़ज़ाली का जन्म 1066 ईस्वी में तूस नामक जगह में हुआ था, उन्होंने अपना जीवन एक धर्मशास्त्री और भाष्य-कार की हैसियत से शुरू किया लेकिन बाद में फ़लसफ़े की ओर उनका मन झुका. बग़दाद के मशहूर निज़ामिया कालिज के वह प्रोफ़ेसर मुक़र्रर किए गये. कुछ समय के बाद उनके दिमाग़ में एक इन्क़लाब हुआ और उनकी आत्मा में उथल पुथल मची. फ़लसफ़े की तरफ़ से विश्वास हट गया और वह नास्तिक हो गए. अपनी जगह से इस्तीफ़ा देकर उन्होंने तपस्या के द्वारा शान्ति हासिल की. मक्का आदि तीर्थ स्थानों की यात्रा करके उन्होंने ध्यान (ज़िक्र) में मन लगाया. आख़िरकार उनकी परेशान आत्मा को शान्ति मिली. वह नेशापुर वापिस आए और वहां कालिज में पढ़ाने लगे. इसके थोड़े ही समय बाद वह अपने जन्म स्थान तूस लौटे जहां सन 1111 ईस्वी में उनका देहान्त हो गया.

'इह्या-उल-उलूम' ग़ज़ाली का सब से उत्तम रचनात्मक ग्रंथ है. इसमें उन्होंने धर्म और फ़लसफ़ा सम्बन्धी सब मसलों पर ग़ौर किया है. ज्ञान या इल्म के बारे में उनका कहना है कि यह दो प्रकार का है—अक़्ली यानी अक़्ल या बुद्धि से सम्बन्ध रखने वाला और दीनी यानी रूह से सम्बन्ध रखने वाला. पहिले तरह का इल्म वैज्ञानिक इल्म है और आंखों देखे सबूत, दलील और अध्ययन इसके हासिल करने के साधन हैं. एक ओर औषधिशास्त्र (तिब), गणित ज्योमेट्री, ज्योतिश शास्त्र और दूसरी ओर धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र तथा व्याकरण आदि इसकी शाखाएं हैं. दूसरी तरह का ज्ञान इल्मे मकाशिफ़ा यानी आत्मा के साक्षात्कार का ज्ञान है. इसका मक़सद उस ईश्वर को हासिल करना है जिसके सिवा सब असत् है. यह मनुश्य को सारे फंदों से छुड़कर सत् का साक्षात्कार कराता है. मन (ख़ातिर) में चञ्चलता पैदा करने वाली इन्द्रियों को स्थिर करना, हृदय की शुद्धि (तज़किया-ए- नफ़्स) और गूढ़ तत्वों पर चिंतन (मराक़बा और मकाशफ़ा) इसके लिए पहली शर्त है. पहली तरह के दुनियावी इल्म की सचाई अनिश्चित है, लेकिन आत्मिक ज्ञान की निश्चित, क्योंकि यह सचमुच ईश्वर ही का सामना करा देता है. पहिली तरह का ज्ञान दूसरी तरह के ज्ञान से नीचे दर्जे का है, इसलिए जब तक वह दूसरे तरह के ज्ञान के विकास में साधक है तब तक तो ठीक है वरना बिल्कुल बेकार.

इन दोनों प्रकार के ज्ञानों के बीच में फ़र्क़ दिखलाने के लिए ग़ज़ाली ने दो मिसालें दी हैं. पहिली—किसी खेत में एक कुआं खोदा गया. इसमें पानी दो तरह से भरा जा

وچار دھارا پر کافی سوچ وچار کیا تھا' اُن کو عرب کے دارشنکوں میں سب سے مولک مانتا ھے۔ اُنھوں نے اِسلامی فلسفے پر یونان کا جو اثر پڑا تھا اُس کو اِس طرح سے اُکھاڑ پھینک دیا کہ وہ پورب میں پھر نہ پنپ سکا۔

غزالی کا جنم 1066 عیسوی میں طوس نامک جگہ میں ھوا تھا' اُنھوں نے اپنا جیون ایک دھرم شاستری اور بھاشیہ‌کار کی حیثیت سے شروع کیا لیکن بعد میں فلسفے کی اور اُن کا من جھکا۔ بغداد کے مشہور نظامیہ کالج کے وہ پروفیسر مقرر کئے گئے۔ کچھ سمے کے بعد اُن کے دماغ میں ایک اِنقلاب ھوا اور اُن کی آتما میں اُتھل پتھل مچی۔ فلسفے کی طرف سے وشواس ھٹ گیا اور وہ ناستک ھوگئے۔ اپنی جگہ سے استیفیٰ دیکر اُنھوں نے تپسیا کے دوارا شانتی حاصل کی۔ مکہ آدی تیرتھ استھانوں کی یاترا کرکے اُنھوں نے دھیان (ذکر) میں من لگایا۔ آخرکار اُن کی پریشان آتما کو شانتی ملی۔ وہ نیشاپور واپس آئے اور وھاں کالج میں پڑھانے لگے۔ اِس کے تھوڑے ھی سمے بعد وہ اپنے جنم استھان طوس لوٹے جہاں سن 1111 عیسوی میں اُن کا دیہانت ھوگیا۔

'یحییٰ العلوم' غزالی کا سب سے اُتم رچناتمک گرنتھ ھے۔ اِس میں اُنھوں نے دھرم اور فلسفہ سمبندھی سب مسلوں پر غور کیا ھے۔ گیان یا علم کے بارے میں اُن کا کہنا ھے کہ یہ دو پرکار کا ھے—عقلی یعنی عقل یا بدھی سے سمبندھ رکھنے والا اور دینی یعنی روح سے سمبندھ رکھنے والا۔ پہلے طرح کا علم ویگیانک علم ھے اور آنکھوں دیکھے ثبوت' دلیل اور ادھین اِس کے حاصل کرنے کے سادھن ھیں۔ ایک اور اوشدھی شاستر (طب)' گنت' جیومیٹری' جیوتش شاستر اور دوسری اور دھرم شاستر' نیتی شاستر تتھاویاکرن آدی اِس کی شاکھائیں ھیں۔ دوسری طرح کا گیان علم مکاشفہ یعنی آتما کے ساکشاتکار کا گیان ھے۔ اِس کا مقصد اُس ایشور کو حاصل کرنا ھے جس کے سوا سب اَست ھے۔ یہ منشیہ کو سارے پھندوں سے چھڑا کر ست کا ساکشاتکار کراتا ھے۔ من (خاطر) میں چلچلتا پیدا کرنے والی اِندریوں کو استھر کرنا' ھردے کی شدھی (تذکیۂ نفس) اور گوڑھ تتوں پر چنتن (مراقبہ اور مکاشفہ) اِس کے لئے پہلی شرط ھے۔ پہلی طرح کے دنیاوی علم کی سچائی انشچت ھے' لیکن آتمک گیان کی نشچت' کیونکہ یہ سچ مچ ایشور ھی کا سامنا کرادیتا ھے۔ پہلی طرح کا گیان دوسری طرح کے گیان سے نیچے درجے کا ھے' اِس لئے جب تک یہ دوسرے طرح کے گیان کے وکاس میں سادھک ھے تب تک تو ٹھیک ھے ورنہ بالکل بیکار۔

اِن دونوں پرکار کے گیانوں کے بیچ میں فرق دکھلانے کے لئے غزالی نے دو مثالیں دی ھیں۔ پہلی—کسی کھیت میں ایک کنواں کھودا گیا۔ اِس میں پانی دو طرح سے بھرا جا

वेदान्त और तसव्वुफ़

लेखक—डाक्टर ताराचन्द

अनुवादक—विश्वम्भरनाथ पांडे

रामानुज का समय हमें अपने इतिहास के उस ज़माने में ले आता है जबकि उत्तरी हिन्दुस्तान इसलाम के असर में आ चुकता है और हिन्दू धर्म में इसलामी विचार और संस्कार मिलने लगते हैं. लेकिन इसके साथ ही साथ इसलाम धर्म भी हिन्दू-शास्त्र और दर्शन के तरीक़ों और ख्यालों को जज्ब करता है जिससे दोनों एक दूसरे के क़रीब आ जाते हैं. इसलिए, इन दोनों का मेल जोल किस तरह शुरू हुआ यह जानना बहुत ज़रूरी है.

तसव्वुफ़ या इसलामी रहस्यवाद की नींव क़ुरान के उपदेशों पर ही रखी गई है. सूफ़ी सम्प्रदाय अपने सिद्धों की चरितावली हज़रत मुहम्मद से ही शुरू करते हैं और उनमें से बहुत से हज़रत अली को उनका पहला ख़लीफ़ा मानते हैं. यहां पर सूफ़ी धर्म के शुरू ज़माने के चर्चे की कोई ज़रूरत नहीं, लेकिन मन्सूर-उल-हल्लाज, जिनका जन्म 858 ईस्वी में ईरान में इस्तख़ के पास तूर नामक गांव में हुआ था, के बारे में कुछ कहना ज़रूरी है. उनकी जीवनी से मालूम होता है कि वह हिन्दुस्तान में आकर गुजरात और काश्मीर में ठहरे थे और फिर उसके बाद ख़ुरासान गए. अख़ीर में बग़दाद जाकर रहने लगे और वहीं पर उपदेश देने लगे. इनके विचार पुराने ख्यालवाले लोगों को पसन्द न आए और इब्न दाऊद-उल-इस्फ़हानी ने जो ज़ाहिरिया सम्प्रदाय के आलिम थे उनके ख़िलाफ़ फ़तवा दे दिया. वज़ीर के सामने मुक़द्दमा हुआ और 922 ईस्वी में उनको फांसी दी गई. मन्सूर के इस ऐलान से कि 'मैं' और 'हक़' एक ही है (अनलहक़) उस वक़्त भी जनता पर काफ़ी असर पड़ा. इसी के साथ उनकी राय, कि हज वग़ैरा पांचों फ़र्ज़ों की जगह और संस्कार ले सकते हैं, बड़ी बहस-मुबाहिसा का सबब बनी. मन्सूर की शिक्षा थी कि ईश्वर (ख़ुदा) सृष्टि की सारी सीमाओं के परे है और ईश्वर और आदमी की रूह दोनों अख़ीर में एक हो जाते हैं. इस उसूल को 'हुलूले लाहूत फ़ी अन्नासूत' कहते हैं.

मन्सूर के 200 साल बाद इमाम मुहम्मद ग़ज़ाली हुए. उनको 'हुज्जत-उल-इसलाम' यानी 'इसलाम का सबूत' कहा जाता है और वे मुसलमानों में सबसे ऊंचे दर्जे के पंडित समझे जाते हैं. फ़्रांसीसी लेखक रेनां, जिसने मुसलिम

ویدانت اور تصوف

لیکھک—ڈاکٹر تارا چند

انووادک—وشومبھر ناتھ پانڈے

رامانج کا سمے ہمیں اپنے اِتہاس کے اُس زمانے میں لے آتا ہے جبکہ اُتری ہندستان اِسلام کے اثر میں آچکتا ہے اور ہندو دھرم میں اِسلامی وچار اور سنسکار ملنے لگتے ہیں. لیکن اِس کے ساتھ ہی ساتھ اِسلام دھرم بھی ہندو شاستر اور درشن کے طریقوں اور خیالوں کو جذب کرتا ہے جس سے دونوں ایک دوسرے کے قریب آجاتے ہیں. اِس لئے، اِن دونوں کا میل جول کس طرح شروع ہوا یہ جاننا بہت ضروری ہے.

تصوف یا اِسلامی رہسیہ واد کی نیو قرآن کے اُپدیشوں پر ہی رکھی گئی ہے. صوفی سمپردائے اپنے سدھوں کی چریتاولی حضرت محمد سے ہی شروع کرتے ہیں اور اُن میں سے بہت سے حضرت علی کو اُن کا پہلا خلیفہ مانتے ہیں. یہاں پر صوفی دھرم کے شروع زمانے کے چرچے کی کوئی ضرورت نہیں، لیکن منصورالحلاج، جنکا جنم 858 عیسوی میں ایران میں اِستخر کے پاس طور نامک گاؤں میں ہوا تھا، کے بارے میں کچھ کہنا ضروری ہے. اُن کی جیونی سے معلوم ہوتا ہے کہ وہ ہندستان میں آکر گجرات اور کاشمیر میں ٹھہرے تھے اور پھر اُس کے بعد خراسان گئے. آخیر میں بغداد جاکر رہنے لگے اور وہیں پر اُپدیش دینے لگے. اِن کے وچار پرانے خیال والے لوگوں کو پسند نہ آئے اور ابن داؤد الاصفہانی نے جو ظاہریہ سمپردائے کے عالم تھے اُن کے خلاف فتویٰ دے دیا. وزیر کے سامنے مقدمہ ہوا اور 922 عیسوی میں اُن کو پھانسی دی گئی. منصور کے اِس اعلان سے کہ "میں" اور "حق" ایک ہی ہیں (اناالحق) اُس وقت بھی جنتا پر کافی اثر پڑا. اِسی کے ساتھ اُن کی رائے، کہ حج وغیرہ پانچوں فرضوں کی جگہ اور سنسکار لے سکتے ہیں، بڑی بحث مباحثہ کا سبب بنی. منصور کی شکشا تھی کہ ایشور (خدا) سرشٹی کی ساری سیماؤں کے پرے ہے اور ایشور اور آدمی کی روح دونوں آخیر میں ایک ہوجاتے ہیں. اِس اُصول کو 'حلول لاہوت فی الناسوت' کہتے ہیں.

منصور کے 200 سال بعد اِمام محمد غزالی ہوئے. اُن کو 'حجۃ الاسلام' یعنی 'اِسلام کا ثبوت' کہا جاتا ہے اور وہ مسلمانوں میں سب سے اُونچے درجہ کے پنڈت سمجھے جاتے ہیں. فرانسیسی لیکھک رینا، جس نے مسلم

सकता. सन्यास से भी आदमी सिद्धि यानी कमाल हासिल नहीं कर सकता. असली ब्रह्म की शान्ति उन्हीं को हासिल होती है जो हमेशा सबकी भलाई के कामों में लगे रहते हैं."

पारसी धर्म की किताब "पतीत पशेमानी" में एक सच्चा दीनदार आदमी ईश्वर से प्रार्थना करता है कि :—

"अगर मैंने इनसानी समाज के भाईचारे के खिलाफ़ अपने बाप, अपनी मां, अपनी बहन, अपने भाई, अपनी स्त्री या अपने बच्चों के साथ कोई गुनाह किया हो, या अपने 'गुरू', अपने 'मार्ग दर्शक', अपने किसी रिश्तेदार या अपने किसी जान पहचान वाले के साथ कोई ग़लत बरताव किया हो, या अपने शहर वालों, अपने साझीदारों, अपने पड़ोसियों, अपने गांव वालों या अपने नौकरों किसी के साथ भी ग़लत बरताव किया हो तो मुझे उसका दुख और पछतावा है और मैं ऐ ईश्वर ! तुझसे प्रार्थना करता हूं कि तू मुझे माफ़ करदे."

आख़ीर में हम सूफ़ी साहित्य से "अबु बिन अधम" नाम की मशहूर सुन्दर कविता का अनुवाद नीचे देते हैं :—

"अधम का बेटा अबु—उल्लाह उसकी नसल को बढ़ावे !

"एक दिन रात को शान्ति के गहरे सपने से चौंक कर उठा !

"उसके कमरे में चान्दनी छिटकी हुई थी.

"वह चान्दनी कमरे की शोभा को इस तरह बढ़ा रही थी जिस तरह खिले हुए नरगिस के फूल.

"उस चान्दनी में अबु ने देखा कि एक फ़रिश्ता सोने की एक किताब लिये उसमें कुछ लिख रहा है.

"मन की सच्ची शान्ति ने अधम के बेटे को निडर बना दिया था.

"उसने उस फ़रिश्ते से पूछा—'तुम क्या लिख रहे हो ?'

"फ़रिश्ते ने अपना सिर उठाया और बड़े मिठास से अबु की तरफ़ देख कर जवाब दिया.

"मैं उन सब के नाम लिख रहा हूं जो ईश्वर से प्रेम करते हैं.'

"अबु ने फिर पूछा—'क्या मेरा नाम उनमें है ?'

"फ़रिश्ते ने जवाब दिया—'नहीं ! तुम्हारा नाम उनमें नहीं है.'

"अबु ने फिर धीरे से लेकिन खूब खुश होकर कहा—'तब मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं कि मेरा नाम उन लोगों में लिख लो जो अपने भाई इनसानों से प्रेम करते हैं.'

"फ़रिश्ते ने लिख लिया और वह गुम हो गया.

"अगली रात फ़रिश्ता फिर आया और उसके नूर से अबु फिर जाग उठा.

"फ़रिश्ते ने अबु को अब उन लोगों के नाम लिखे हुए दिखाए जो ईश्वर से प्रेम करते हैं और जिन्हें ईश्वर की बरकतें हासिल हैं.

"अब ! अबु बिन अधम का नाम उनमें सब से ऊपर था."

سکتا. سنیاس سے بھی آدمی سدھی یعنی کمال حاصل نہیں کر سکتا. اصلی برہم کی شانتی اُنہیں کو حاصل ہوتی ہے جو ہمیشہ سب کی بھلائی کے کاموں میں لگے رہتے ہیں."

پارسی دھرم کی کتاب "پتیت پشیمانی" میں ایک سچا دیندار آدمی ایشور سے پرارتھنا کرتا ہے کہ :—

"اگر میں نے اِنسانی سماج کے بھائی چارے کے خلاف اپنے باپ، اپنی ماں، اپنی بہن، اپنے بھائی، اپنی اِستری، یا اپنے بچوں کے ساتھ کوئی گناہ کیا ہو، یا اپنے گرو، اپنے 'مارگ درشک'، اپنے کسی رشتہ دار یا اپنے کسی جان پہچان والے کے ساتھ کوئی غلط برتاؤ کیا ہو، یا اپنے شہر والوں، اپنے ساجھی داروں، اپنے پڑوسیوں، اپنے گاؤں والوں یا اپنے نوکروں کسی کے ساتھ بھی غلط برتاؤ کیا ہو تو مجھے اُس کا دکھ اور پچھتاوا ہے اور میں اے ایشور! تجھ سے پرارتھنا کرتا ہوں کہ تو مجھے معاف کر دے."

آخیر میں ہم صوفی ساہتیہ سے "آبو بن آدھم" نام کی مشہور سندر کویتا کا انواد نیچے دیتے ہیں :—

"آدھم کا بیٹا ابو—اللہ اُس کی نسل کو بڑھاوے!

"ایک دن رات کو شانتی کے گہرے سپنے سے چونک کر اُٹھا.

"اُس کے کمرے میں چاندنی چھٹکی ہوئی تھی.

"وہ چاندنی کمرے کی شوبھا کو اِس طرح بڑھا رہی تھی جس طرح کھلے ہوئے نرگس کے پھول.

"اُس چاندنی میں ابو نے دیکھا کہ ایک فرشتہ سونے کی ایک کتاب لئے اُس میں کچھ لکھ رہا ہے.

"من کی سچی شانتی نے آدھم کے بیٹے کو نڈر بنا دیا تھا.

"اُس نے اُس فرشتے سے پوچھا—'تم کیا لکھ رہے ہو؟'

"فرشتے نے اپنا سر اُٹھایا اور بڑے مٹھاس سے ابو کی طرف دیکھ کر جواب دیا.

"میں اُن سب کے نام لکھ رہا ہوں جو ایشور سے پریم کرتے ہیں."

"ابو نے پھر پوچھا—'کیا میرا نام اُن میں ہے؟'

"فرشتے نے جواب دیا—'نہیں! تمہارا نام اُن میں نہیں ہے.'

"ابو نے پھر دھیرے سے لیکن خوب خوش ہو کر کہا—'تب میں تم سے پرارتھنا کرتا ہوں کہ میرا نام اُن لوگوں میں لکھ لو جو اپنے بھائی اِنسانوں سے پریم کرتے ہیں.'

"فرشتے نے لکھ لیا اور وہ گم ہوگیا.

"اگلی رات فرشتہ پھر آیا اور اُس کے نور سے ابو پھر جاگ اُٹھا.

"فرشتے نے ابو کو اب اُن لوگوں کے نام لکھے ہوئے دکھائے جو ایشور سے پریم کرتے ہیں اور جنہیں ایشور کی برکتیں حاصل ہیں.

"اب! ابو بن ادھم کا نام اُن میں سب سے اوپر تھا."

पारसी किताब गाथा में लिखा है :—

"दूसरों की तरफ़ अपना फ़र्ज़ पूरा करने और नेक काम करने के रास्ते को पकड़ो. जो आदमी दूसरों के साथ नेकी करना छोड़ देता है वह धोके में है. उसका अपना भला कभी नहीं हो सकता."

यहूदी किताब मिशना में लिखा है :—

"आदमी के लिये असली चीज़ किताबें पढ़ना नहीं है. असली चीज़ है दूसरों के साथ नेकी करना."

कबीर साहब ने कहा है :—

"पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ पंडित भया न कोय
ढाई अच्छर "प्रेम" के पढ़े सो पंडित होय

इन्जील में ईश्वर कहता है :—

"जो आदमी अपने फ़र्ज़ की तरफ़ से अपने कान बन्द कर लेता है उसकी प्रार्थना भी नफ़रत की चीज़ है....... जब तुम अपने हाथ प्रार्थना के लिये फैलाओगे तो मैं तुम्हारी तरफ़ से अपनी आंखें फेर लूंगा, और जब तुम बार बार प्रार्थना करोगे तो मैं कान बन्द कर लूंगा, इसलिये कि तुम्हारे हाथ अपने भाइयों के ख़ून से रंगे हुए हैं."

हिन्दू पुराण में लिखा है कि :—

"रुद्राक्ष के दाने या तुलसी की माला पहरना या माथे पर तीन रंग का तिलक लगाना, शरीर पर भस्म का मलना, तीर्थों की यात्रा करना, बड़ी बड़ी नदियों में स्नान करना, आग में हवन और यज्ञ करना, जप करना और मन्दिरों में जाकर देवता के दर्शन करना, यह सब मिलकर भी आदमी को पाक नहीं कर सकते, जिस तरह कि दूसरे प्राणियों की सेवा और दूसरों की भलाई के कामों में लगा रहना उसे पाक करता है."

इन्जील में लिखा है :—

"हर वह आदमी जो ईश्वर ईश्वर चिल्लाता रहता है स्वर्ग के राज में दाख़िल नहीं हो सकता, ईश्वर के राज में वही दाख़िल होगा जो उस पिता परमेश्वर का हुकुम मानता है......ईश्वर कहता है कि जो लोग दूसरों पर ज़ुल्म करते हैं उनसे मैं यह कहूंगा कि जाओ मुझसे दूर रहो, मैं तुम्हे नहीं जानता."

सूफ़ी कहता है कि :—

"अगर मैं यह देखूं कि एक अन्धा बेचारा जा रहा है और कुआं सामने है और फिर मैं ख़ामोश बैठा रहूं तो मैं गुनहगार हूं."

चीनी ताओ धर्म की किताब में लिखा है कि :—

"अपनी अक़ल और अपने ज्ञान से दूसरों को फ़ायदा पहुंचाना ही सच्ची अक़लमन्दी है, अपनी दौलत दूसरे ज़रूरतमन्दों में बांटना एक नेक काम है."

गीता में लिखा है :—

"दुनिया में काम न करने से आदमी ऊंचा नहीं उठ

پارسی کتاب گاتھا میں لکھا ہے :—

"دوسروں کی طرف اپنا فرض پورا کرنے اور نیک کام کرنے کے راستے کو پکڑو۔ جو آدمی دوسروں کے ساتھ نیکی کرنا چھوڑ دیتا ہے وہ دھوکے میں ہے۔ اُس کا اپنا بھلا کبھی نہیں ہو سکتا۔"

یہودی کتاب مشنا میں لکھا ہے :—

"آدمی کے لئے اصلی چیز کتابیں پڑھنا نہیں ہے۔ اصلی چیز ہے دوسروں کے ساتھ نیکی کرنا۔"

کبیر صاحب نے کہا ہے :—

"پوتھی پڑھ پڑھ جگ موا پنڈت بھیا نہ کوئے
"ڈھائی اکچھر "پریم" کے پڑھے سو پنڈت ہوئے

اِنجیل میں ایشور کہتا ہے :—

"جو آدمی اپنے فرض کی طرف سے اپنے کان بند کر لیتا ہے اُس کی پرارتھنا بھی نفرت کی چیز ہے.....جب تم اپنے ہاتھ پرارتھنا کے لئے پھیلاؤگے تو میں تمہاری طرف سے اپنی آنکھیں پھیر لونگا، اور جب تم بار بار پرارتھنا کروگے تو میں کان بند کر لونگا، اِس لئے کہ تمہارے ہاتھ اپنے بھائیوں کے خون سے رنگے ہوئے ہیں۔"

ہندو پران میں لکھا ہے کہ :—

"رُدراکش کے دانے یا تلسی کی مالا پہرنا یا ماتھے پر تین رنگ کا تلک لگانا، شریر پر بھسم کا ملنا، تیرتھوں کی یاترا کرنا، بڑی بڑی ندیوں میں اسنان کرنا، آگ میں ہون اور یگیہ کرنا، جپ کرنا اور مندروں میں جا کر دیوتا کے درشن کرنا، یہ سب مل کر بھی آدمی کو پاک نہیں کر سکتے، جس طرح کہ دوسرے پرانیوں کی سیوا اور دوسروں کی بھلائی کے کاموں میں لگا رہنا اُسے پاک کرتا ہے۔"

اِنجیل میں لکھا ہے :—

"ہر وہ آدمی جو ایشور ایشور چلاتا رہتا ہے سورگ کے راج میں داخل نہیں ہو سکتا، ایشور کے راج میں وہی داخل ہوگا جو اُس پتا پرمیشور کا حکم مانتا ہے......ایشور کہتا ہے کہ جو لوگ دوسروں پر ظلم کرتے ہیں اُن سے میں یہ کہوں گا کہ جاؤ مجھ سے دور رہو میں تمہیں نہیں جانتا۔"

صوفی کہتا ہے کہ :—

"اگر میں یہ دیکھوں کہ ایک اندھا بیچارا جا رہا ہے اور کنواں سامنے ہے اور پھر میں خاموش بیٹھا رہوں تو میں گنہگار ہوں۔"

چینی تاؤ دھرم کی کتاب میں لکھا ہے کہ :—

"اپنی عقل اور اپنے گیان سے دوسروں کو فائدہ پہنچانا ہی سچی عقلمندی ہے، اپنی دولت دوسرے ضرورتمندوں میں بانٹنا ایک نیک کام ہے۔"

گیتا میں لکھا ہے :—

"دنیا میں کام نہ کرنے سے آدمی اونچا نہیں اٹھ

वेदों में भी सारे इनसानी समाज को एक जिस्म बताया गया है और कहा गया है कि :—

"जो लोग विद्या पढ़ते पढ़ाते हैं वह सब इस एक जिस्म का मुंह हैं, जो दूसरों की रक्षा करते हैं वह इस जिस्म के बाज़ू हैं, जो अपने और सब के लिये धन कमाते हैं वह पेट हैं और जो केवल सेवा के कामों में लगे हैं वह इस जिस्म के पैर हैं."

सूफ़ी कहता है :—

"बनी आदम आज़ाए यक दीगर अन्द
कि दर आफ़रीनश ज़ यक जौहर अन्द
चूं उज़वे ब दर्द आवरद रोज़गार
दिगर उज़्वहा रा न मानद क़रार
तू कज़ मेहनते दीगरां बेग़मी
न शायद कि नामत निहन्द आदमी."

यानी—आदम की औलाद यानी सब इनसान एक जिस्म हैं और सब एक दूसरे के हाथ पैर हैं, क्योंकि सब की पैदाइश एक ही अस्ल से है. अगर बदन के एक अंग में दर्द हो तो बाक़ी हिस्से आराम से नहीं रह सकते. जो आदमी दूसरों के दुख दर्द से दुखी नहीं होता और उन्हें आराम पहुंचाने की कोशिश नहीं करता वह इनसान कहलाने का हक़दार नहीं है."

एक और सूफ़ी ने लिखा है :—

"एक फ़क़ीर किसी ख़ानक़ाह में दूसरे फ़क़ीरों के साथ रहता था. पर वह दिल वाला था. ख़ानक़ाह के क़ायदों को तोड़कर वह ख़ानक़ाह से निकल पड़ा और एक मदरसे में जाकर बच्चों को पढ़ाने लगा. मैंने उससे पूछा कि अल्लाह की इबादत करने वालों और लड़के पढ़ाने वालों में तुमने क्या फ़र्क़ देखा कि तुमने उस तरीक़े को छोड़कर यह काम अख़्तियार कर लिया? उसने जवाब दिया कि जब समन्दर में बाढ़ आती है तो ख़ानक़ाह के रहने वाले अपने अपने कम्बलों को बचाने की कोशिश करते हैं और यह बच्चे पढ़ाने वाले डूबते हुए इनसानों को बचाने की कोशिश करते हैं."

एक और सूफ़ी ने कहा है :—

"अल्लाह तक पहुंचने का रास्ता सिवाए ख़िदमते ख़ल्क़ के यानी लोगों की सेवा के और कोई नहीं है. माला लेकर अल्लाह का नाम रटने से या नमाज़ पढ़ने से या गुदड़ी ओढ़ लेने से अल्लाह नहीं मिलता.

मुहम्मद साहब की एक मशहूर हदीस है :—

"केवल कोशिश करना मेरा काम है कामयाबी नाकामयाबी अल्लाह के हाथ है."

यही विचार इन्हीं शब्दों में बार बार गीता के अन्दर आया है.

ویدوں میں بھی سارے اِنسانی سماج کو ایک جسم بتایا گیا ہے اور کہا گیا ہے کہ :—

" جو لوگ ودیا پڑھتے پڑھاتے ہیں وہ سب اِس ایک جسم کا منہ ہیں' جو دوسروں کی رکشا کرتے ہیں وہ اِس جسم کے بازو ہیں' جو اپنے اور سب کے لئے دھن کماتے ہیں وہ دھڑ ہیں اور جو کیول سیوا کے کاموں میں لگے ہیں وہ اِس جسم کے پیر ہیں ."

صوفی کہتا ہے :—

" بنی آدم اعضاء یک دیگر اند
کہ در آفرینش ز یک جوہر اند
چوں عضوے بہ درد آورد روزگار
دیگر عضوہا را نہ ماند قرار
تو کز محنت دیگراں بے غمی
نہ شاید کہ نامت نہند آدمی"

یعنی—آدم کی اولاد یعنی سب اِنسان ایک جسم ہیں اور سب ایک دوسرے کے ہاتھ پیر ہیں' کیونکہ سب کی پیدائش ایک ہی اصل سے ہے . اگر بدن کے ایک انگ میں درد ہو تو باقی حصے آرام سے نہیں رہ سکتے . جو آدمی دوسروں کے دکھ درد سے دکھی نہیں ہوتا اور اُنہیں آرام پہونچانے کی کوشش نہیں کرتا وہ اِنسان کہلانے کا حقدار نہیں ہے ."

ایک اور صوفی نے لکھا ہے :—

"ایک فقیر کسی خانقاہ میں دوسرے فقیروں کے ساتھ رہتا تھا. پر وہ دل والا تھا. خانقاہ کے قاعدوں کو توڑ کر وہ خانقاہ سے نکل پڑا اور ایک مدرسہ میں جا کر بچوں کو پڑھانے لگا. میں نے اُس سے پوچھا کہ اللہ کی عبادت کرنے والوں اور لڑکے پڑھانے والوں میں تم نے کیا فرق دیکھا کہ تم نے اُس طریقے کو چھوڑ کر یہ کام اختیار کر لیا ؟ اُس نے جواب دیا کہ جب سمندر میں باڑھ آتی ہے تو خانقاہ کے رہنے والے اپنے اپنے کمبلوں کو بچانے کی کوشش کرتے ہیں اور یہ بچے پڑھانے والے ڈوبتے ہوئے اِنسانوں کو بچانے کی کوشش کرتے ہیں ."

ایک اور صوفی نے کہا ہے :—

" اللہ تک پہنچنے کا راستہ سوائے خدمت خلق کے یعنی لوگوں کی سیوا کے اور کوئی نہیں ہے . مالا لے کر اللہ کا نام رٹنے سے یا نماز پڑھنے سے یا گدڑی اوڑھ لینے سے اللہ نہیں ملتا ."

محمد صاحب کی ایک مشہور حدیث ہے :—

" کیول کوشش کرنا میرا کام ہے کامیابی ناکامیابی اللہ کے ہاتھ ہے ."

یہی وچار اِنہیں شبدوں میں بار بار گیتا کے اندر آیا ہے .

यह है कि तुम यतीमों और बेवाओं के पास जाकर उनके दुख को दूर करो और अपने को दुनिया की बुराइयों से बचाए रखो. ऐ मेरे भाइयो ! जो आदमी यह कहे कि मैं ईश्वर में और धर्म में विश्वास रखता हूं, पर उसके काम अच्छे न हों उसे उस विश्वास से क्या फ़ायदा ! उसका विश्वास उसे नहीं बचा सकेगा. विश्वास कामों से पूरा होता है. जिस तरह शरीर बिना आत्मा के मुर्दा है इसी तरह विश्वास बिना अच्छे कामों के मुर्दा है."

यहूदियों में खतने का रिवाज था. इस रिवाज की तरफ़ इशारा करते हुए इन्जील में लिखा है कि:—

"खतना कराना या न कराना कोई बात नहीं. बात असली यही है कि ईश्वर की आज्ञाओं को माना जावे."

"जो नेकी मैं करना चाहता हूं वह नहीं कर पाता और जिस बुराई से मैं बचना चाहता हूं वह मैं कर डालता हूं."

इसी से मिलता हुआ विचार महाभारत में यूं प्रगट किया गया है :—

"मैं जानता हूं कि मेरा धर्म क्या है, फिर भी मैं उसकी तरफ़ नहीं जा पाता. मैं जानता हूं कि अधर्म क्या है, फिर भी मैं उधर को झुकता हूं !!

इन्जील में लिखा है :—

"क्या हम सब का बनाने वाला एक ही ईश्वर नहीं है ? तब फिर कोई आदमी अपने भाई दूसरे आदमी के साथ दग़ा कैसे कर सकता है......जिस तरह जिस्म एक होता है और उसके अलग अलग अंग यानी हाथ पैर वग़ैरह होते हैं इसी तरह हम सब एक जिस्म हैं और हम सब उसी जिस्म के अलग अलग अंग हैं, चाहे यहूदी हों या ग़ैर यहूदी, चाहे ग़ुलाम हों या आज़ाद. जिस्म के अलग अलग अंगों से अलग अलग काम भी लिया जाता है. ईश्वर एक है और हर एक से उसकी योग्यता के अनुसार काम लेता है. ईश्वर एक है. आत्मा एक है. वही घट घट में मौजूद है. एक का दुख सबका दुख है. एक का मान सब का मान है. यही ईश्वर की आज्ञा है कि जो कोई ईश्वर से प्रेम करे वह अपने भाई आदमी से प्रेम करे."

बौद्ध धर्म के एक ग्रन्थ में लिखा है :—

"जो कोई अपने बाएं हाथ को मैले से गन्दा होने देता है और उसे अपने दाहने हाथ की मदद से ठीक ठीक नहीं धोता वह बहुत जल्दी अपने शरीर के सब अंगों को नापाक कर लेगा. सब अंग मिल कर ही तो शरीर हैं. हम सब इनसान कुल इनसानी शरीर के अंग हैं. हर अंग को चाहिये कि वह हर दूसरे अंग का ध्यान रखे और उसकी सेवा करता रहे."

चीनी ग्रन्थ 'ली-की' में लिखा है :—

"हमें अपने जीवन में दूसरों के काम आना चाहिये."

یہ ہے کہ تم یتیموں اور بیواؤں کے پاس جا کر اُن کے دکھ کو دور کرو اور اپنے کو دنیا کی برائیوں سے بچائے رکھو . اے میرے بھائیو ! جو آدمی یہ کہے کہ میں ایشور میں اور دھرم میں وشواس رکھتا ہوں' پر اُس کے کام اچھے نہ ہوں اُسے اُس وشواس سے کیا فائدہ ! اُس کا وشواس اُسے نہیں بچا سکے گا . وشواس کاموں سے پورا ہوتا ہے . جس طرح شریر بنا آتما کے مردہ ہے اِسی طرح وشواس بنا اچھے کاموں کے مردہ ہے ."

یہودیوں میں خطنہ کا رواج تھا . اِس رواج کی طرف اِشارہ کرتے ہوئے اِنجیل میں لکھا ہے کہ :—

" خطنہ کرانا یا نہ کرانا کوئی بات نہیں . بات اصلی یہی ہے کہ ایشور کی آگیاؤں کو مانا جاوے ."

" جو نیکی میں کرنا چاہتا ہوں وہ نہیں کر پاتا اور جس برائی سے میں بچنا چاہتا ہوں وہ میں کر ڈالتا ہوں ."

اِسی سے ملتا ہوا وچار مہابھارت میں یوں پرگٹ کیا گیا ہے :—

" میں جانتا ہوں کہ میرا دھرم کیا ہے' پھر بھی میں اُس کی طرف نہیں جا پاتا . میں جانتا ہوں کہ ادھرم کیا ہے' پھر بھی میں اُدھر کو جھکتا ہوں ."

اِنجیل میں لکھا ہے :—

" کیا ہم سب کا بنانے والا ایک ہی ایشور نہیں ہے ؟ تب پھر کوئی آدمی اپنے بھائی دوسرے آدمی کے ساتھ دغا کیسے کر سکتا ہے ..... جس طرح جسم ایک ہوتا ہے اور اُس کے الگ الگ انگ یعنی ہاتھ پیر وغیرہ ہوتے ہیں اِسی طرح ہم سب ایک جسم ہیں اور ہم سب اُسی جسم کے الگ الگ انگ ہیں' چاہے یہودی ہوں یا غیر یہودی' چاہے غلام ہوں یا آزاد . جسم کے الگ الگ انگوں سے الگ الگ کام بھی لیا جاتا ہے . ایشور ایک ہے اور ہر ایک سے اُس کی یوگتا کے انوسار کام لیتا ہے . ایشور ایک ہے . آتما ایک ہے . وہی گھٹ گھٹ میں موجود ہے . ایک کا دکھ سب کا دکھ ہے . ایک کا مان سب کا مان ہے . یہی ایشور کی آگیاں ہے کہ جو کوئی ایشور سے پریم کرے وہ اپنے بھائی آدمی سے پریم کرے ."

بودھ دھرم کے ایک گرنتھ میں لکھا ہے :—

" جو کوئی اپنے بائیں ہاتھ کو میلے سے گندہ ہونے دیتا ہے اور اُسے اپنے داھنے ہاتھ کی مدد سے ٹھیک ٹھیک نہیں دھوتا وہ بہت جلدی اپنے شریر کے سب انگوں کو ناپاک کر لے گا . سب انگ مل کر ہی تو شریر ہیں . ہم سب انسان کل اِنسانی شریر کے انگ ہیں . ہر انگ کو چاہئے کہ وہ ہر دوسرے انگ کا دھیان رکھے اور اُسکی سیوا کرتا رہے ."

چینی گرنتھ لی - کی میں لکھا ہے :—

" ہمیں اپنے جیون میں دوسروں کے کام آنا چاہئے ."

महाभारत में लिखा है :—

"तपस् तीर्थम् क्षमा तीर्थम् तीर्थमि इन्द्रिय निग्रह:
"सर्व भूत दया तीर्थम् ध्यानम् तीर्थम अनुत्तमम्
"एतानिपंच तीर्थानि सत्यम् शष्ठम् प्रकीर्तितम्
"देहे तिष्ठन्ति सर्वस्य तेषु स्नानम् समाचरेत्
"दानम् तीर्थम् दमस्तीर्थम् सन्तोषस्तीर्थम उच्यते
"ब्रह्मचर्यम् परम् तीर्थम् तीर्थम् च प्रियवादिता
"ज्ञानम् तीर्थम् धृतिस्तीर्थम् तपस्तीर्थम मुदाहृतम्
"तीर्थानामपि तत्तीर्थम् विशुद्धिर्मनस: परा."

यानी—तप यानी रियाज़त एक तीर्थ है, क्षमा यानी दूसरों के क़सूरों को माफ़ कर देना एक तीर्थ है, अपनी इन्द्रियों को क़ाबू में रखना एक तीर्थ है, सब प्रानियों पर दया करना तीर्थ है, ईश्वर में ध्यान लगाना बहुत अच्छा तीर्थ है, यह पांचों पांच तीर्थ हैं और सच बोलना छटा तीर्थ है. यह सब तीर्थ सब आदमियों के जिस्म के अन्दर मौजूद हैं. आदमी को इन्हीं तीर्थों में अच्छी तरह नहाना चाहिये. दूसरों को दान देना तीर्थ है, दम यानी अपने नफ़्स पर क़ाबू रखना तीर्थ है, संतोश यानी क़नाअत करना तीर्थ है, ब्रह्मचर्य यानी नेक चलन रहना बहुत बड़ा तीर्थ है, सबसे मीठे बोलना तीर्थ है, ज्ञान यानी मार्फ़त तीर्थ है, धीरज रखना यानी सब्र करना तीथ है. और इन सब तीर्थों का भी तीर्थ यह है कि आदमी अपने मन को पाक रक्खे.

बौद्ध धर्म की किताब धम्म पद में लिखा है :—

"नंगे रहना, सिर पर लम्बी लम्बी जटाएं रखना, बदन पर मिट्टी और भभूत मलना, बड़े बड़े उपवास करना, चट्टानों पर सोना और तरह तरह से अपने बदन को तकलीफ़ें देना, यह सब चीज़ें ऐ दोस्त! तुझे पाक नहीं कर सकतीं जब तक कि तू अपने दिल को सब नापाक ख़ाहिशों से ख़ाली न कर ले, जटाओं से और मृगछाला ओढ़ने से क्या लाभ, जबकि तेरे अन्दर पापों ने घर बना रखा है. तू बाहर के शरीर को पाक करने की कोशिश करता है, धर्म का असली रास्ता यह नहीं है, धर्म का असली रास्ता है अपने दिल को पापों और बुरी इच्छाओं से पाक रखना."

मनुस्मृति में लिखा है :—

"वेदों का पढ़ना, तपस्या करना, यज्ञ करना, त्याग करना, यम और नियमों का पालन करना, दान देना, इनमें से कोई काम उस आदमी का भला नहीं कर सकता जिसके दिल के अन्दर बुराई मौजूद है."

इन्जील में लिखा है :—

"मुबारक है वह आदमी जो लोभ और मोह के क़ाबू में नहीं आता, क्योंकि जब वह ईश्वर के सामने जाएगा तो उसे जीवन का वह ताज मिलेगा जिसका ईश्वर ने अपने प्रेमियों से वादा किया है, पाक धर्म जो ईश्वर को प्यारा है

مہابھارت میں لکھا ھے :—

"تپس تیرتھم شما تیرتھم تیرتھم اِندریہ نگرہ
"سرو بھوت دیا تیرتھم دھیانم تیرتھم انوتمم
"ایتانی پنچ تیرتھانی ستیم ششٹھم پرکیرتیتم
"دیہے تشٹھنتی سروسیہ تیشو سنانم سماچریت
"دانم تیرتھم دمس تیرتھم سنتوشس تیرتھم اُچیتے
"برھمچریم پرم تیرتھم تیرتھم چہ پریہ‌وادتا
"گیانم تیرتھم دھریتس‌تیرتھم تپس تیرتھم مداھریتم
"تیرتھا نامابی تت تیرتھم وشدھرمن‌سہ پرا"

یعنی—تپ یعنی ریاضت ایک تیرتھ ھے' شما یعنی دوسروں کے قصوروں کو معاف کر دینا ایک تیرتھ ھے' اپنی اندریوں کو قابو میں رکھنا ایک تیرتھ ھے' سب پرانیوں پر دیا کرنا تیرتھ ھے' ایشور میں دھیان لگانا بہت اچھا تیرتھ ھے' یہ پانچوں پانچ تیرتھ ھیں اور سچ بولنا چھٹا تیرتھ ھے۔ یہ سب تیرتھ سب آدمیوں کے جسم کے اندر موجود ھیں۔ آدمیوں کو انہیں تیرتھوں میں اچھی طرح نہانا چاھئے۔ دوسروں کو دان دینا تیرتھ ھے' دم یعنی اپنے نفس پر قابو رکھنا تیرتھ ھے' سنتوش یعنی قناعت کرنا تیرتھ ھے' برھمچریہ یعنی نیک چلن رھنا بہت بڑا تیرتھ ھے' سب سے میٹھے بولنا تیرتھ ھے' گیان یعنی معرفت تیرتھ ھے' دھیرج رکھنا' یعنی صبر کرنا تیرتھ ھے' اور اِن سب تیرتھوں کا بھی تیرتھ ھے کہ آدمی اپنے من کو پاک رکھے۔

بودھ دھرم کی کتاب دھم پد میں لکھا ھے :—

"ننگے رھنا' سر پر لمبی لمبی جٹائیں رکھنا' بدن پر مٹی اور بھبوت ملنا' بڑے بڑے اُپواس کرنا' چٹانوں پر سونا اور طرح طرح سے اپنے بدن کو تکلیفیں دینا' یہ سب چیزیں اے دوست! تجھے پاک نہیں کر سکتیں جب تک کہ تو اپنے دل کو سب ناپاک خواھشوں سے خالی نہ کر لے' جٹاؤں سے اور مرگ چھالا اوڑھنے سے کیا لابھ' جبکہ تیرے اندر پاپوں نے گھر بنا رکھا ھے۔ تو باھر کے شریر کو پاک کرنے کی کوشش کرتا ھے دھرم کا اصلی راستہ یہ نہیں ھے' دھرم کا اصلی راستہ ھے اپنے دل کو پاپوں اور بری اِچھاؤں سے پاک رکھنا۔"

منوسمرتی میں لکھا ھے :—

"ویدوں کا پڑھنا' تپسیا کرنا' یگیہ کرنا' تیاگ کرنا' یم اور نیموں کا پالن کرنا' دان دینا' اِن میں سے کوئی کام اُس آدمی کا بھلا نہیں کر سکتا جس کے دل کے اندر برائی موجود ھے۔"

اِنجیل میں لکھا ھے :—

"مبارک ھے وہ آدمی جو لوبھ اور موہ کے قابو میں نہیں آتا' کیونکہ جب وہ ایشور کے سامنے جائے گا تو اُسے جیون کا وہ تاج ملے گا جس کا ایشور نے اپنے پریمیوں سے وعدہ کیا ھے۔ پاک دھرم جو ایشور کو پیارا ھے

"हज़ारों काबों से एक दिल बेहतर है"

मुहम्मद साहब की एक मशहूर हदीस है :—

"सय्यदुल क़ौम ख़ादिमुल क़ौम" यानी—क़ौम का सरदार वही है जो क़ौम की सब से ज़ियादा ख़िदमत करता है.

चीनी ग्रन्थ ताओ-तेह-किंग में लिखा है :—

"जो लोग बड़ा बनना चाहते हैं उन्हें चाहिये कि सबसे छोटे बनकर रहें और सब की सेवा करें."

इन्जील में लिखा है :—

"जो लोग दीन यानी मुन्कसिर मिज़ाज हैं वही धरती के मालिक होंगे, स्वर्ग का राज उन्हीं को मिलेगा......तुम में से जो कोई सरदार बनना चाहे उसे चाहिये कि सब की सेवा करे, जो कोई तुम में बड़ा बनना चाहता है उसे चाहिये कि सब की ख़िदमत करे......जो कोई अपने को ऊंचा मानेगा वह नीचे गिरेगा और जो कोई अपने को नीचा करके चलेगा उसे ऊंचा उठाया जायगा......तुम में जो सब से बड़ा है वही तुम सब का सेवक होगा......जो तुम में सब से बड़ा है उसे चाहिये कि सब से छोटा होकर रहे, और जो सरदार है उसे चाहिये कि सब का सेवक बनकर रहे."

क़ुरआन में लिखा है :—

"अल्लाह के स से नज़दीक और उसकी निगाह में सबसे बड़ा वही है जो तुम सब में दूसरों के साथ सब से ज्यादा नेकी करता है."

मनुस्मृति में लिखा है :—

"सच्चा ब्राह्मन आदर सम्मान से हमेशा इस तरह भागता है जिस तरह ज़हर के कांटे से और अपमान और निरादर का इस तरह स्वागत करता है जिस तरह अमृत का."

सूफ़ी कहता है :—

"ब एहसान आसूदा करदन दिले
बेह अज़ अल्फ़ रकअत बहर मंज़िले
दिल बदस्त आवर कि हज्जे अकबर अस्त
अज़ हज़ारां काबा यक दिल बेहतर अस्त
दिल गुज़रगाहे जलीले अकबर अस्त
काबा बुतगाहे ख़लीले आज़र अस्त."

यानी—किसी एक आदमी के साथ भी नेकी करके उसके दिल को ख़ुश करना ज़्यादा अच्छा है बनिस्बत इसके कि आदमी काबे की हज्ज को जाए और हर मंज़िल पर एक एक हज़ार रकअत नमाज़ पढ़ता जाए. दूसरे के दिल को अपने हाथ में ले क्योंकि यही सब से बड़ा हज्ज है, हज़ारों काबों से एक दिल बढ़कर है. आदमी का दिल ख़ुद अल्लाह के आने जाने की जगह है जब कि वह पत्थर का काबा केवल आज़र के बेटे ख़लील यानी हज़रत इबराहीम का बनाया हुआ है.

"ہزاروں کعبوں سے ایک دل بہتر ہے"

محمد صاحب کی ایک مشہور حدیث ہے :—

"سید القوم خادم القوم" یعنی—قوم کا سردار وہی ہے جو قوم کی سب سے زیادہ خدمت کرتا ہے."

چینی گرنتھ تاؤ - تہ - کنگ میں لکھا ہے :—

"جو لوگ بڑا بننا چاہتے ہیں انہیں چاہئے کہ سب سے چھوٹے بن کر رہیں اور سب کی سیوا کریں."

انجیل میں لکھا ہے :—

"جو لوگ دین یعنی منکسر مزاج ہیں وہی دھرتی کے مالک ہونگے، سورگ کا راج انہیں کو ملیگا.. ...تم میں سے جو کوئی سردار بننا چاہے اسے چاہئے کہ سب کی سیوا کرے، جو کوئی تم میں بڑا بننا چاہتا ہے اسے چاہئے کہ سب کی خدمت کرے ......جو کوئی اپنے کو اونچا مانے گا وہ نیچے گرے گا اور جو کوئی اپنے کو نیچا کرکے چلےگا اسے اونچا اٹھایا جائےگا......تم میں جو سب سے بڑا ہے وہی تم سب کا سیوک ہوگا......جو تم میں سب سے بڑا ہے اسے چاہئے کہ سب سے چھوٹا ہوکر رہے، اور جو سردار ہے اسے چاہئے کہ سب کا سیوک بنکر رہے."

قرآن میں لکھا ہے :—

"اللہ کے سب سے نزدیک اور اس کی نگاہ میں سب سے بڑا وہی ہے جو تم سب میں دوسروں کے ساتھ سب سے زیادہ نیکی کرتا ہے."

منوسمرتی میں لکھا ہے :—

"سچا براہمن آدر سمان سے ہمیشہ اس طرح بھاگتا ہے جس طرح زہر کے کانٹے سے، اور اپمان اور نرادر کا اس طرح سواگت کرتا ہے جس طرح امرت کا."

صوفی کہتا ہے :—

"بہ احسان آسودہ کردن دلے
بہ از الف رکعت بہ ہر منزلے
دل بدست آور کہ حج اکبراست
از ہزاراں کعبہ یک دل بہتراست
دل گذرگاہ جلیل اکبراست
کعبہ بتگاہ خلیل آزر است"

یعنی—کسی ایک آدمی کے ساتھ بھی نیکی کرکے اس کے دل کو خوش کرنا زیادہ اچھا ہے بہ نسبت اس کے کہ آدمی کعبہ کی حج کو جائے اور ہر منزل پر ایک ایک ہزار رکعت نماز پڑھتا جائے. دوسرے کے دل کو اپنے ہاتھ میں لے کیونکہ یہی سب سے بڑا حج ہے، ہزاروں کعبوں سے ایک دل بڑھکر ہے. آدمی کا دل خود اللہ کے آنے جانے کی جگہ ہے جب کہ وہ پتھر کا کعبہ کیول آزر کے بیٹے خلیل یعنی حضرت ابراہیم کا بنایا ہوا ہے.

हिन्दू किताब निरुक्त में लिखा है :—

"जिस आदमी को सब वेद ज़बानी याद हैं पर जो उनके अर्थों को नहीं जानता वह एक लकड़ी के कुन्दे की तरह है जिसपर बोझ लदा हुआ है. और जो अर्थ को भी जानता है और अपने उस ज्ञान के अनुसार नेक काम करता है वह उन पापों से बचता हुआ जो आत्मा को बान्धते और नीचे घसीटते हैं स्वर्ग को प्राप्त करता है."

वशिष्ठ स्मृति में लिखा है :—

"सब वेदों को उनके छयों अंगों समेत यदि कोई आदमी बड़ी मेहनत के साथ भी पढ़ ले पर उसके काम अच्छे न हों तो वेद उसे नहीं बचा सकते. मरने के समय वेद उसे इस तरह छोड़कर चले जाएंगे जिस तरह चिड़िया के बच्चे बड़े होने पर घोंसले को छोड़कर चले जाते हैं."

गीता में लिखा है :—

"जीवन के उस चक्र को जो ईश्वर ने चला दिया है जो आदमी ठीक ठीक चलने में मदद नहीं देता यानी दूसरों के साथ नेकी नहीं करता, हे अर्जुन ! वह पाप करता है और उसका जीना बेकार है.

बौद्ध ग्रन्थ धम्मपद में लिखा है:—

"जो आदमी विद्वानों की सी बातें बहुत करता है, पर दूसरों के साथ नेकी नहीं करता वह उस नासमझ आदमी की तरह है जो दूसरे की गायों को बार बार गिनता है, लेकिन जिसे एक घूंट दूध भी पीने को नहीं मिलता."

मनुस्मृति में लिखा है :—

"नेक काम करना ही सब से बड़ा धर्म है. सब वेदों और स्मृतियों की यही तालीम है. इसलिये समझदार आदमी को चाहिये कि अपने को ठीक रखते हुए हमेशा नेक काम करता रहे. जो ब्राह्मन नेक कामों से हटा हुआ है उसे वेद नहीं बचा सकते, और जो नेक काम करता रहता है उसे जीवन के सब अच्छे फल मिलते हैं."

महाभारत में लिखा है :—

"वह पढ़ने वाले और पढ़ाने वाले और सब लोग जो बड़ी बड़ी किताबों के केवल शब्द पढ़ते रहते हैं और उन्हीं पर बहस करते रहते हैं वह सब एक बुरी आदत में फंसे हुए और मूर्ख हैं. पंडित वही है जो दूसरों के साथ नेकी करता है."

सूफ़ी कहता है कि :—

"चाहे तुमने कितना भी इल्म पढ़ा हो अगर तुम्हारे काम नेक नहीं हैं तो तुम जाहिल हो. तब तुम एक ऐसे जानवर की तरह हो जिस पर किताबों का बोझ लदा हुआ है, पर जो न सच्चाई को जानता है और न कुछ समझता है."

ہندو کتاب نرکت میں لکھا ھے :—

"جس آدمی کو سب وید زبانی یاد ھیں پر جو اُن کے آرتھوں کو نہیں جانتا وہ ایک لکڑی کے کندے کی طرح ھے جس پر بوجھ لدا ھوا ھے . اور جو آرتھ کو بھی جانتا ھے اور اپنے اُس گیان کے انوسار نیک کام کرتا ھے وہ اُن پاپوں سے بچتا ھوا جو آتما کو باندھتے اور نیچے گھسیٹتے ھیں سورگ کو پراپت کرتا ھے."

وششٹھ سمرتی میں لکھا ھے :—

"سب ویدوں کو اُن کے چھیوں انگوں سمیت یدی کوئی آدمی بڑی محنت کے ساتھ بھی پڑھ لے پر اُس کے کام اچھے نہ ھوں تو وید اُسے نہیں بچاسکتے . مرنے کے سمے وید اُسے اِس طرح چھوڑکر چلے جائینگے جس طرح چڑیا کے بچے بڑے ھونے پر گھونسلے کو چھوڑکر چلے جاتے ھیں ."

گیتا میں لکھا ھے :—

"جیون کے اُس چکر کو جو ایشور نے چلا دیا ھے جو آدمی ٹھیک ٹھیک چلنے میں مدد نہیں دیتا یعنی دوسروں کے ساتھ نیکی نہیں کرتا، ھے آرجن ! وہ پاپ کرتا ھے اور اُس کا جینا بے کار ھے ."

بودھ گرنتھ دھم پد میں لکھا ھے :—

"جو آدمی ودوانوں کی سی باتیں بہت کرتا ھے، پر دوسروں کے ساتھ نیکی نہیں کرتا وہ اُس ناسمجھ آدمی کی طرح ھے جو دوسرے کی گایوں کو بار بار گنتا ھے، لیکن جسے ایک گھونٹ دودھ بھی پینے کو نہیں ملتا ."

منوسمرتی میں لکھا ھے :—

"نیک کام کرنا ھی سب سے بڑا دھرم ھے . سب ویدوں اور سمرتیوں کی یہی تعلیم ھے ، اِس لئے سمجھدار آدمی کو چاھئے کہ اپنے کو ٹھیک رکھتے ھوئے ھمیشہ نیک کام کرتا رھے. جو براھمن نیک کاموں سے ھٹا ھوا ھے اُسے وید نہیں بچاسکتے، اور جو نیک کام کرتا رھتا ھے اُسے جیون کے سب اچھے پھل ملتے ھیں ."

مہابھارت میں لکھا ھے :—

"وہ پڑھنے والے اور پڑھانے والے اور سب لوگ جو بڑی بڑی کتابوں کے کیول شبد پڑھتے رھتے ھیں اور اُنھیں پر بحث کرتے رھتے ھیں وہ سب ایک بری عادت میں پھنسے ھوئے اور مورکھ ھیں . پنڈت وھی ھے جو دوسروں کے ساتھ نیکی کرتا ھے ."

صوفی کہتا ھے کہ :—

"چاھے تم نے کتنا بھی علم پڑھا ھو اگر تمھارے کام نیک نہیں ھیں تو تم جاھل ھو . تب تم ایک ایسے جانور کی طرح ھو جس پر کتابوں کا بوجھ لدا ھوا ھے، پر جو نہ سچائی کو جانتا ھے اور نہ کچھ سمجھتا ھے ."

जो शब्द भी मेरे मुंह से निकले वही उसका नाम है, जो कुछ भी मैं सुनूं वही सुमिरन यानी उसकी याद है, जो कुछ मैं खाऊं पियूं वह सब उसी की पूजा यानी इबादत है, घर और जंगल दोनों को मैं एक बराबर देखता हूं, दुई का ख़्याल ही मैंने अपने दिल से निकाल दिया है.

पुराने मिस्री धर्म में मौत के देवता को 'औसीरस' कहा गया है. हिन्दुओं में उसे यमराज कहते हैं. क़ुरआन में अल्लाह के उसी रूप का नाम अल्क़ाबिज़ है. जो रूहें बेगुनाह और पाक होती हैं उन्हें भी मौत के बाद औसीरस नाम से पुकारा जाता है. प्राचीन मिस्र की मशहूर किताब 'बुक आफ़ दी डेड' में लिखा है :—

"औसीरस को जाने दो. तुम देख रहे हो कि वह बेगुनाह है......वह ज़मीन पर सच्चाई से रहा, उसने सच्चा ही खाना खाया......इसीलिये ईश्वर ने उसका स्वागत किया......उसने अल्लाह के भूकों को खाना खिलाया, अल्लाह के प्यासों को पानी पिलाया और अल्लाह के नंगो को कपड़ा पहनाया."

'पात्रेदानम' यानी हक़दार को दान देना, 'अन्नदानम' यानी भूकों को खाना खिलाना, 'विद्यादानम्' यानी बेपढ़ों को पढ़ाना, इन तीनों कामों की भारत के धर्म ग्रन्थों में बार बार तारीफ़ की गई है और यह सब के लिये फ़र्ज़ बताए गए हैं.

अल्लाह के इश्क़ यानी भक्ति का आनन्द लेना और अपने आप को ईश्वर के अर्पण कर देना ही काफ़ी नहीं है. जो आदमी ख़ुद आज़ाद हो गया हो उसका यह भी फ़र्ज़ है कि वह उन लोगों के लिये जो अभी तक ग़ुलाम हैं यानी तरह तरह की दुनियवी इच्छाओं की बेड़ियों मे जकड़े हुए हैं उनके लिये ख़ादिम की तरह काम करे. उसे अपने रात दिन के कामों में इस बात को समझना और इस पर अमल करना चाहिये कि सारी मानव जाति बल्कि सब जानदार एक ही बहुत बड़ी बिरादरी हैं जिसका कोई अन्त नहीं. सच्चा ज्ञान और सच्ची भक्ति दोनों पति पत्नि की तरह हैं. पर यदि इन दोनों से अच्छे कामों यानी नेक आमाल के बच्चे पैदा न हों तो यह दोनों निकम्मे और बांझ हैं. धार्मिक विश्वास और साइन्सी अक़्ल बिना नेक कामों के निकम्मे ही नहीं बुरे हैं. नेक काम ही आदमी के धार्मिक विश्वास के गवाह होते हैं. आदमी के दिल का अक़ीदा वही है जिस के अनुसार वह काम करता है. असली विश्वास शब्दों से साबित नहीं होता कामों से साबित होता है. विश्वास का सबूत शहीदों का ख़ून होता है, वही विश्वास का असल बीज होता है.

इन्जील में लिखा है :—

"तुम उन्हें उनके फलों यानी कामों से पहचानोगे."

جو شبد بھی میرے منھ سے نکلے وھی اُس کا نام ھے' جو کچھ بھی میں سنوں وھی سمرن یعنی اُس کی یاد ھے' جو کچھ بھی میں کھاؤں پیوں وہ سب اُسی کی پوجا یعنی عبادت ھے' گھر اور جنگل دونوں کو میں ایک برابر دیکھتا ھوں' دوئی کا خیال ھی میں نے اپنے دل سے نکال دیا ھے ۔

پرانے مصری دھرم میں موت کے دیوتا کو 'آوسیرس' کہا گیا ھے ۔ ھندؤں میں اُسے یمراج کہتے ھیں ۔ قرآن میں اللہ کے اُسی روپ کا نام القابض ھے ۔ جو روحیں بےگناہ اور پاک ھوتی ھیں اُنھیں بھی موت کے بعد اوسیرس نام سے پکارا جاتا ھے ۔ پراچین مصر کی مشہور کتاب 'بک آف دی ڈیڈ' میں لکھا ھے :—

"اوسیرس کو جانے دو. تم دیکھ رھے ھو کہ وہ بےگناہ ھے...... وہ زمین پر سچائی سے رہا' اُس نے سچا ہی کھانا کھایا...... اِسیلئے ایشور نے اُس کا سواگت کیا......اُس نے اللہ کے بھوکوں کو کھانا کھلایا' اللہ کے پیاسوں کو پانی پلایا اور اللہ کے ننگوں کو کپڑا پہنایا ."

'پاترے دانم' یعنی حقدار کو دان دینا' 'ان دانم' یعنی بھوکوں کو کھانا کھلانا' 'ودیا دانم' یعنی بےپڑھوں کو پڑھانا' اِن تینوں کاموں کی بھارت کے دھرم گرنتھوں میں بار بار تعریف کی گئی ھے اور یہ سب کے لئے فرض بتائے گئے ھیں ۔

اللہ کے عشق یعنی بھکتی کا آنند لینا اور اپنے آپ کو ایشور کے ارپن کردینا ھی کافی نہیں ھے ۔ جو آدمی خود آزاد ھوگیا ھو اُس کا یہ بھی فرض ھے کہ وہ اُن لوگوں کے لئے جو ابھی تک غلام ھیں یعنی طرح طرح کی دنیوی اِچھاؤں کی بیڑیوں میں جکڑے ھوئے ھیں اُن کے لئے خادم کی طرح کام کرے ۔ اُسے اپنے رات دن کے کاموں میں اِس بات کو سمجھنا اور اِس پر عمل کرنا چاھئے کہ ساری مانو جاتی بلکہ سب جاندار ایک ھی بہت بڑی برادری ھیں جس کا کوئی انت نہیں ۔ سچا گیان اور سچی بھکتی دونوں پتی پتنی کی طرح ھیں ۔ پر یدی اِن دونوں سے اچھے کاموں یعنی نیک اعمال کے بچے پیدا نہ ھوں تو یہ دونوں نکمے اور بانجھ ھیں. دھارمک وشواس اور سائنسی عقل بنا نیک کاموں کے نکمے ھی نہیں برے ھیں ۔ نیک کام ھی آدمی کے دھارمک وشواس کے گواہ ھوتے ھیں ۔ آدمی کے دل کا عقیدہ وھی ھے جس کے انوسار وہ کام کرتا ھے. اصلی وشواس شبدوں سے ثابت نہیں ھوتا کاموں سے ثابت ھوتا ھے ۔ وشواس کا ثبوت شہیدوں کا خون ھوتا ھے' وھی وشواس کا اصل بیج ھوتا ھے.

اِنجیل میں لکھا ھے :—

"تم انھیں اُن کے پھلوں یعنی کاموں سے پہچانو گے ."

बचालूंगा, तू फ़िक्र मत कर, हे अर्जुन ! अच्छी तरह समझ ले कि मेरा भक्त कभी नष्ट नहीं होता."

"तू जो कुछ करे, जो कुछ खावे, जो कुछ आहुति दे, जो कुछ दान दे, जो कुछ तपस्या करे, ऐ अर्जुन ! सब मुझे अर्पण कर."

इन्जील में लिखा है :—

"ऐ वह सब लोगो जो थक गए हो और जिन के दिलों पर चिन्ताओं का बोझ है, मेरे पास आओ. मैं तुम्हें आराम पहुंचाऊंगा......पूरे दिल से ईश्वर से प्रेम करो......हम जियें तो ईश्वर के लिये और मरें तो ईश्वर के लिये, इसलिये हम चाहे जियें और चाहे मरें हम ईश्वर के हैं......तुम चाहे खाओ और चाहे पियो और चाहे कुछ भी काम करो, जो करो सब ईश्वर के लिये और उसी की शान के लिये करो."

हज़रत ईसा ने कहा है कि :—

"ऐ वह लोगो जिन पर मेरे पिता की बरकतें हैं, ईश्वर के राज के वारिस बनो......क्योंकि जब मैं भूका था तुम ने मुझे खाना दिया, जब मैं प्यासा था तुम ने मुझे पानी दिया......मैं नंगा था और तुमने मुझे कपड़े पहनाए." (मत्ती की इन्जील)

चीन के मशहूर महात्मा लाओ-त्से ने लिखा है :—

"ताओ यानी धर्म का रास्ता यही है कि हम अपने लिये या अपने को सामने रखकर कोई काम न करें, हम जो काम करें उनमें नतीजों की चिन्ता न करें, खावें और सवाद की फ़िक्र न करें, छोटी चीज़ को बड़ी और बड़ी को छोटी समझें, और कोई हमें नुक़सान पहुंचावे तो उसका बदला नेकी से दें" (लाओ-त्से-किंग)

पारसी धर्म की किताब गाथा में लिखा है :—

"ऐ मज़दा यानी ईश्वर ! ज़रतुश्त अपना तन और अपनी आत्मा तुझे अर्पण करता है......नेक काम करने वाला जो कुछ भी करता है, ऐ ईश्वर ! सब तेरे ही लिये करता है."

कबीर साहब ने इस हालत को "सहज समाधि" कहा है और इसे इन शब्दों में बयान किया है :—

"जहं जहं डोलौं सो परिकरमा, जो कछु करौं सो सेवा
जब सोवौं तब करौं दन्डवत, पूजौं और न देवा
कहौं सो नाम सुनौं सो सुमिरन खावौं पियौं सो पूजा
गिरह उजाड़ एक सम लेखौं भाव मिटावौं दूजा."

यानी—मैं जहां जहां भी चलूं वही भगवान की परिक्रमा यानी तवाफ़ है, मैं जो कुछ भी करूं वही ईश्वर की सेवा यानी ख़िदमत है, मैं जब भी सोऊं मेरा सोना उसकी दंडवत यानी सिजदा है, मैं किसी और देवी देवता को नहीं पूजता.

بچا لوں گا' تو فکر مت کر' ہے آرجن ! اچھی طرح سمجھ لے کہ میرا بھگت کبھی نشٹ نہیں ہوتا ."

"تو جو کچھ کرے' جو کچھ کھاوے' جو کچھ آہوتی دے' جو کچھ دان دے' جو کچھ تپسیا کرے' اے آرجن ! سب مجھے آرپن کر ."

اِنجیل میں لکھا ہے :—

"اے وہ سب لوگو جو تھک گئے ہو اور جن کے دلوں پر چنتاؤں کا بوجھ ہے' میرے پاس آؤ . میں تمہیں آرام پہونچاؤنگا .....پورے دل سے ایشور سے پریم کرو .... ہم جئیں تو ایشور کے لئے اور مریں تو ایشور کے لئے' اِس لئے ہم چاہے جئیں اور چاہے مریں ہم ایشور کے ہیں..... تم چاہے کھاؤ اور چاہے پیو اور چاہے کچھ بھی کام کرو جو کرو سب ایشور کے لئے اور اُسی کی شان کے لئے کرو ."

حضرت عیسیٰ نے کہا ہے کہ :—

"اے وہ لوگو جن پر میرے پتا کی برکتیں ہیں' ایشور کے راج کے وارث بنو.....کیونکہ جب میں بھوکا تھا تم نے مجھے کھانا دیا' جب میں پیاسا تھا تم نے مجھے پانی دیا.....میں ننگا تھا اور تم نے مجھے کپڑے پہنائے ." (متی کی اِنجیل)

چین کے مشہور مہاتما لاؤ - تسے نے لکھا ہے :—

"تاؤ یعنی دھرم کا راستہ یہی ہے کہ ہم اپنے لئے یا اپنے کو سامنے رکھ کر کوئی کام نہ کریں' ہم جو کام کریں اُن میں نتیجوں کی چنتا نہ کریں' کھاویں اور سواد کی فکر نہ کریں' چھوٹی چیز کو بڑی اور بڑی کو چھوٹی سمجھیں' اور کوئی ہمیں نقصان پہونچاوے تو اُس کا بدلا نیکی سے دیں ." (لاؤتسے کنگ)

پارسی دھرم کی کتاب گاتھا میں لکھا ہے :—

"اے مزدہ یعنی ایشور ! زرتشت اپنا تن اور اپنی آتما تجھے ارپن کرتا ہے.....نیک کام کرنے والا جو کچھ بھی کرتا ہے' اے ایشور ! سب تیرے ہی لئے کرتا ہے ."

کبیر صاحب نے اِس حالت کو "سہج سمادھی" کہا ہے اور اِسے اِن شبدوں میں بیان کیا ہے :—

"جہیں جہیں ڈولوں سو پریکرما جو کچھو کروں سو سیوا
جب سوؤں تب کروں دنڈوت پوجوں اور نہ دیوا
کہوں سو نام سنوں سو سمرن کھاؤں پیؤں سو پوجا
گرہ اُجاڑ ایک سم لیکھوں بھاؤ مٹاؤں دوجا."

یعنی—میں جہاں بھی جہاں چلوں وہی بھگوان کی پریکرما یعنی طواف ہے' میں جو کچھ بھی کروں وہی ایشور کی سیوا یعنی خدمت ہے' میں جب بھی سوؤں میرا سونا اُس کی ڈنڈوت یعنی سجدہ ہے' میں کسی اور دیوی دیوتا کو نہیں پوجتا .

"हज़ारों काबों से एक दिल बेहतर है"

डाक्टर भगवानदास

इससे पहले के एक लेख में हम कह चुके हैं कि अलग अलग धर्मों की ख़ास ख़ास किताबों को अगर हम असल ज़बान में एक दूसरे से मिलाकर पढ़ें तो हमें उन सब के अन्दर एक ही से विचार और एक ही प्रीतम का प्यारा मुखड़ा दिखाई देगा. बुतपरस्ती आदमी की आत्मा पर बेड़ियों का काम करती है. पर बुत परस्ती से भी अधिक ख़तरनाक बेड़ियां वेद परस्ती, क़ुरआन-परस्ती और इंजील-परस्ती हैं. धर्म के मामले में मेरा तेरा और अहंकार यानी ख़ुदी वैसी ही बुरी और ख़तरनाक हैं जैसी हमारे आए दिन के बरताव में.

इस ख़ुदी से ऊपर उठने का एक तरीक़ा दुनिया के बड़े से बड़े महापुरुषों ने हमें यह बताया है कि हम सब काम उस रूहेकुल यानी परम-आत्मा के नाम पर उसी की राह में और उसी को अर्पण करके करें जो सब के अन्दर है. यह मानकर करें कि जो कुछ हम कर रहे हैं उसी की मरज़ी है, उसी की आज्ञा है. तब ही हज़रत ईसा का यह वाक्य—"ईश्वर ! तेरी इच्छा पूरी हो, मेरी नहीं" धीरे धीरे हमारे जीवन का आवश्यक अंग बन सकता है. केवल इसी तरह हम अपनी आत्मा को उस परमआत्मा के साथ मिलाकर एक कर सकेंगे. और यह एकता हमारे प्रेम, हमारी इबादत और हमारे सब छोटे बड़े कामों में चमक उठेगी. तब ही हमारे अन्दर हक़ का ज़हूर होगा.

क़ुरआन में लिखा है कि :—

"ग़रीबों, यतीमों और क़ैदियों को केवल अल्लाह के लिये और उसी की मुहब्बत के नाम पर खाना दो. अपने लिये किसी तरह का इनाम या बदला न चाहो, शुक्रिये की भी इच्छा न करो."

और लिखा है कि :—

"मेरी सब दुआएं, मेरी क़ुरबानियां, मेरा जीवन और मेरी मौत सब उसी अल्लाह के लिये हैं जो सब दुनियाओं का मालिक है."

"हम पूरे दिल से उसी अल्लाह पर भरोसा करते हैं, वही हमारी सब से अच्छी पनाह, हमारा आश्रय है."

गीता में ईश्वर ने कहा है :—

"मुझमें अपने मन को लगा, मुझ से प्रेम कर, मेरे ही लिये क़ुरबानी कर, मुझे नमस्कार कर, मैं तुझे सब पापों से

"ھزاروں کعبوں سے ایک دل بہتر ھے"

ڈاکٹر بھگوان داس

اِس سے پہلے کے ایک لیکھ میں ہم کہہ چکے ھیں کہ الگ الگ دھرموں کی خاص خاص کتابوں کو اگر ہم اصل زبان میں ایک دوسرے سے ملاکر پڑھیں تو ھمیں اُن سب کے اندر ایک ھی سے وچار اور ایک ھی پریتم کا پیارا مکھڑا دکھائی دے گا. بت پرستی آدمی کی آتما پر بیڑیوں کا کام کرتی ھے. پر بت پرستی سے بھی ادھک خطرناک بیڑیاں وید پرستی، قرآن پرستی، اور اِنجیل پرستی ھیں. دھرم کے معاملے میں میرا تیرا اور اھنکار یعنی خودی ویسی ھی بری اور خطرناک ھیں جیسی ھمارے آئے دن کے برتاؤ میں.

اِس خودی سے اوپر اُٹھنے کا ایک طریقہ دنیا کے بڑے سے بڑے مہاپرشوں نے ھمیں یہ بتایا ھے کہ ھم سب کام اُس روح کل یعنی پرم آتما کے نام پر اُسی کی راہ میں اور اُسی کو ارپن کرکے کریں جو سب کے اندر ھے. یہ مان کر کریں کہ جو کچھ ھم کر رھے ھیں اُسی کی مرضی ھے، اُسی کی آگیاں ھے. تب ھی حضرت عیسیٰ کا یہ واکیہ—"ایشور! تیری اچھا پوری ھو، میری نہیں" دھیرے دھیرے ھمارے جیون کا آوشیک انگ بن سکتا ھے. کیول اِسی طرح ھم اپنی آتما کو اُس پرم آتما کے ساتھ ملاکر ایک کرسکیں گے. اور یہ ایکتا ھمارے پریم، ھماری عبادت اور ھمارے سب چھوٹے بڑے کاموں میں چمک اُٹھے گی. تب ھی ھمارے اندر حق کا ظہور ھوگا.

قرآن میں لکھا ھے کہ :—

"غریبوں، یتیموں اور قیدیوں کو کیول اللہ کے لئے اور اُسی کی محبت کے نام پر کھانا دو. اپنے لئے کسی طرح کا انعام یا بدلا نہ چاھو، شکریہ کی بھی اِچھا نہ کرو."

اور لکھا ھے کہ :—

"میری سب دعائیں، میری قربانیاں، میرا جیون اور میری موت سب اُسی اللہ کے لئے ھیں جو سب دنیاؤں کا مالک ھے."

"ھم پورے دل سے اُسی اللہ پر بھروسہ کرتے ھیں، وھی ھماری سب سے اچھی پناہ، ھمارا آشرے ھے."

گیتا میں ایشور نے کہا ھے :—

"مجھ میں اپنے من کو لگا، مجھ سے پریم کر، میرے ھی لئے قربانی کر، مجھے نمسکار کر، میں تجھے سب پاپوں سے

मार्च 1955 مارچ

नया हिन्द نیا ہند

जिल्द 19 جلد नम्बर 3 نمبر

मार्च 1955 مارچ

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی
145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद 145، مٹھی گنج، الٰہ آباد

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-
Foreign Rs. 10/-
Single Copy As. /10/- only

नया हिन्द

इस नम्बर के ख़ास लेख

"हज़ारों काबों से एक दिल बेहतर है"

—डाक्टर भगवानदास

वेदान्त और तसव्वुफ़

—विश्वम्भरनाथ पांडे

जज़िया : इतिहास और असलियत

—श्री हमीद हसन

आजकल की कुछ छोटी चीनी कहानिया

—अनुवाद—मुजीब रिज़वी

मोहम्मद साहब का जानवरों से प्रेम

—श्री मुजीब रिज़वी

اس نمبر کے خاص لیکھ

"ہزاروں کعبوں سے ایک دل بہتر ہے"

—ڈاکٹر بھگوان داس

ویدانت اور تصوف

—وشومبھر ناتھ پانڈے

جزیہ : اِتہاس اور اصلیت

—شری حمید حسن

آجکل کی کچھ چھوٹی چینی کہانیاں

انوواد—مجیب رضوی

محمد صاحب کا جانوروں سے پریم

—شری مجیب رضوی

इसके अलावा

اس کے علاوہ

कहानी, स्केच, समालोचना, हमारी राय आदि

کہانی، اسکیچ، سمالوچنا، ہماری رائے آدی

...नी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

हिन्दी घर

कलचर पर हर तरह की किताबें मिलने का एक बड़ा केन्द्र—पाठक हिन्दी, उर्दू, अंग्रेज़ी की अपनी मन-पसन्द किताबों के लिये हमें लिखें।

हमारी नई किताबें

महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी और उर्दू में)
लेखक—गान्धीवाद के माने जाने
विद्वान : श्री मंज़र अली सोख्ता
सफ़े 225, क़ीमत दो रुपया

—:o:—

गान्धी बाबा

(बच्चों के लिये बहुत दिलचस्प किताब)
लेखिका—क़ुदसिया ज़ैदी
भूमिका—पन्डित जवाहरलाल नेहरू
मोटा कागज़, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तसवीरें
दाम दो रुपया

—:o:—

पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किताबें

गीता और क़ुरान

275 सफ़े, दाम ढाई रुपया

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सफ़े, दाम बारह आने

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक़

क़ीमत बारह आने

पंजाब हमें क्या सिखाता है

क़ीमत चार आने

बंगाल और उससे सबक़

क़ीमत दो आने

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुट्ठीगंज इलाहाबाद

ہندی گھر

کلچر پر ہر طرح کی کتابیں ملنے کا ایک بڑا کیندر—پاٹھک ہندی اردو، انگریزی کی من پسند کتابوں کے لئے ہمیں لکھیں۔

ہماری نئی کتابیں

مہاتما گاندھی کی وصیت

(ہندی اور اردو میں)
لیکھک—گاندھی واد کے مانے جانے
ودوان: شری منظر علی سوختہ
صفحے 225 قیمت دو روپیہ

—:o:—

گاندھی بابا

(بچوں کے لئے بہت دلچسپ کتاب)
لیکھکا—قدسیہ زیدی
بھومکا—پنڈت جواہر لال نہرو
موٹا کاغذ، موٹا ٹائپ، بہت سی رنگین تصویریں
دام دو روپیہ

—:o:—

پنڈت سندرلال جی کی لکھی کتابیں

گیتا اور قران

275 صفحے، دام ڈھائی روپیہ

ہندو مسلم ایکتا

100 صفحے دام بارہ آنے

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

قیمت بارہ آنے

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

قیمت چار آنے

بنگال اور اس سے سبق

قیمت دو آنے۔

ہندستانی کلچر سوسائٹی

145، مٹھی گنج الہ آباد

Printed and Published by Suresh Ramabhai, at the Naya Hind Press, 145, Muthiganj, Allahabad.

हमारे यहां मिलने वाली कुछ और किताबें — ہمارے یہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں

नोट—यह किताबें सिर्फ हिन्दी में हैं।

नाम किताब	लेखक	दाम			لیکھک	نام کتاب
1. शेर ओ शायरी	श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय	8	0	0	شری ایودھیا پرساد گوئلیی	شعر و شاعری .1
2. शेर ओ सुखन	,,	8	0	0	,,	شعر و سخن .2
3. गहरे पानी पैठ	,,	2	8	0	,,	گہرے پانی پیٹھ .3
4. हमारे आराध्य	श्री बनारसीदास चतुर्वेदी	3	0	0	شری بنارسی داس چترویدی	ہمارے آرادھیہ .4
5 संस्मरण	,,	3	0	0	,,	سنسمرن .5
6. दो हजार वर्ष पुरानी कहानियां	श्री जगदीशचन्द्र जैन	3	0	0	شری جگدیش چندر جین	دو ہزار ورش پرانی کہانیاں .6
7. ज्ञान गंगा	श्री नारायण प्रसाद जैन	6	0	0	شری نارائن پرساد جین	گیان گنگا .7
8. पथ चिन्ह	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	2	0	0	شری شانتی پریہ دویدی	پتھ چنہہ .8
9 पंथ प्रदीप	शान्ति, एम. ए.	2	0	0	شانتی ایم . اے	پنتھ پردیپ 9
10. आकाश के तारे धरती के फूल	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	2	0	0	شری کنہیالال مشر پربھاکر	آکاش کے تارے دھرتی کے پھول .10
11. मुक्ति दूत	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम ए.	[illegible]	0	0	شری ویریندر کمار جین ایم . اے	مکتی دوت .11
12. मिलन यामिनी	श्री बच्चन	4	0	0	شری بچن	ملن یامنی .12
13. रजत रश्मि	डाक्टर रामकुमार वर्मा	2	8	0	ڈاکٹر رام کمار ورما	رجت رشمی .13
14. मेरे बापू	श्री तन्मय बुखारिया	2	8	0	شری تنمے بکھاریا	میرے باپو .14
15. विश्व संघ की ओर	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	3	0	0	پنڈت سندرلال، بھگوان داس کیلا	وشو سنگھ کی اور .15
16. भारतीय अर्थशास्त्र	श्री भगवानदास केला		0	0	شری بھگوان داس کیلا	بھارتیہ ارتھ شاستر .16
17. भारतीय शासन	,,	3	0	0	,,	بھارتیہ شاسن .17
18. नागरिक शास्त्र	,,	2	4	0	,,	ناگرک شاستر .18
19. साम्राज्य और उनका पतन	,,	2	8	0	,,	سامراج اور اُن کا پتن .19
20. भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन	,,	1	4	0	,,	بھارتیہ سوادھینتا آندولن .20
21. सर्वोदय अर्थ व्यवस्था	,,	1	8	0	,,	سرووَدیہ ارتھ ویوستھا .21
22. हमारी आदिम जातियां	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल विनय	3	8	0	شری بھگوان داس کیلا اور شری اکھل ونے	ہماری آدم جاتیاں .22
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल एल. बी गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, भगवानदास केला	2	0	0	شری دیا شنکر دوبے ایم . اے . ایل ایل . بی . گجادھر پرساد، امبشٹ، بھگوان داس کیلا	ارتھ شاستر شبداولی .23
24. नागरिक शिक्षा	भगवानदास केला श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	شری بھگوان داس کیلا دیا شنکر دوبے	ناگرک شکشا .24
25. राष्ट्र मंडल शासन	श्री दयाशंकर दुबे	1	8	0	دیا شنکر دوبے	راشٹر منڈل شاسن .25
26. [illegible]	महात्मा भगवानदीन	3	0	0	مہاتما بھگوان دین	[illegible] .26
27. [illegible] की हिम्मत !	,,	1	0	0	,,	[illegible] کی ہمت .27
28. [illegible]	,,	0	8	0	,,	[illegible] .28
29. [illegible]	,,	1	0	0	,,	[illegible] .29

मिलने का पता—

मैनेजर 'नया हिन्द'

[illegible]

के बाहर रहने की पूरी आजादी हो. इस विधान के मुताबिक़ विश्व राज्य के मातहत सिर्फ़ एक जल, स्थल और हवाई सेना होगी. मुख़्तलिफ़ देशों की भीतरी सुरक्षा के लिये पुलिस के छोटे छोटे दस्ते भी रहेंगे लेकिन उनके हथियार मामूली दरजे के होंगे. विश्व राज्य राजनैतिक इकाई के आदर्श पर चलेगा. जब तक हमारा मक़सद जंग को रोकना है तब तक यह बात मामूली है कि सेना की इकाई एक देश की है अथवा देशों के समूह की है, या विश्व व्यापी संघ की है. उसका ख़ास मक़सद संसार को भावी महायुद्ध से बचाना होगा.

सवाल उठ सकता है कि क्या इस सरकार के मनमाना करने का ख़तरा है ? हां, है लेकिन भावी युद्ध के ख़तरे के सामने इस ख़तरे की कोई क़ीमत नहीं है. ऐटम बम के ख़तरे के आगे विश्व सरकार की मनमानी का ख़तरा कोई बड़ा ख़तरा नहीं रहता. अगर समझौते से इस तरह की विश्व सरकार बन जाती है तो वह दुनिया के लिये बहुत ही फ़ायदेमन्द साबित होगी. वरना हर जंग से एक ख़ास मुल्क ताक़तवर बन जाता है और वह अपनी हैवानी ताक़त से दुनिया की एक बड़ी आबादी को अपनी मरज़ी के मुताबिक़ चलने को मजबूर करता है. आज मानव समस्याओं को विश्व सरकार के ही ज़रिये हल किया जा सकता है. यह तसल्ली की बात है कि विचारवान लोग विश्व सरकार की योजना को मानव तरक़्क़ी का आला मकसद मानते हैं.

बहुत से लोग विश्व सरकार के ऊपर उसकी अन्तर-राष्ट्रीय सैनिक इकाई के ऊपर इस नुक़्तेनज़र से एतराज़ कर सकते हैं कि भविश्य में उसके फ़ासिस्त बन जाने का ख़तरा है. बेशक यह ख़तरा है ही, लेकिन अगर इसमें ख़तरा है तो यह उस ख़तरे के सामने कुछ भी नहीं है जो अन्तर-राष्ट्रीय अराजकता क़ायम रहने से पैदा होगा.

किन्तु विश्व राज्य की स्थापना तभी मुमकिन हो सकती है जब मुख़्तलिफ़ मुल्क अपना क़ौमी ग़ुरूर, अपने लोभ, अपने शक को जीत सकें. अगर दुनिया के मुल्क ऐसा करने मे कामयाब नहीं होते तो मानव इतिहास में वैज्ञानिक युग का दौर बहुत छोटा समझा जायेगा और मानव को फिर से अपने आदिम युग के पुरखों के समान कन्द मूल फल खा कर गुफाओं में रहना पड़ेगा.

इस समय इनसान तरक़्क़ी और बरबादी के चौराहे पर खड़ा है. उसे दो में से एक रास्ता चुनना है—महान सुख का रास्ता या भयंकर सर्वनाश का रास्ता. यह उसके ऊपर है कि वह कौन सा रास्ता चुने !

—विश्वम्भरनाथ पांडे

کے باہر رہنے کی پوری آزادی ہو۔ اِس ودھان کے مطابق وشو راجیہ کے ماتحت صرف ایک جل، استھل اور ہوائی سینا ہوگی۔ مختلف دیشوں کی بھیتری سورکشا کے لئے پولس کے چھوٹے چھوٹے دستے بھی رہینگے، لیکن اُن کے ہتھیار معمولی درجے کے ہونگے۔ وشو راجیہ راجنیتک اِکائی کے آدرش پر چلے گا۔ جب تک ہمارا مقصد جنگ کو روکنا ہے تب تک یہ بات معمولی ہے کہ سینا کی اکائی ایک دیش کی ہے، اتھوا دیشوں کے سموہ کی ہے یا وشو ویاپی سنگھ کی ہے۔ اُس کا خاص مقصد سنسار کو بھاوی مہا یدھ سے بچانا ہوگا۔

سوال اُٹھ سکتا ہے کہ کیا اِس سرکار کے منمانا کرنے کا خطرہ ہے؟ ہاں، ہے لیکن بھاوی یدھ کے خطرے کے سامنے اِس خطرے کی کوئی قیمت نہیں ہے۔ ایٹم بم کے خطرے کے آگے وشو سرکار کی منمانی کا خطرہ کوئی بڑا خطرہ نہیں رہتا۔ اگر سمجھوتے سے اِس طرح کی وشو سرکار بن جاتی ہے تو وہ دنیا کے لئے بہت ہی فائدے مند ثابت ہوگی۔ ورنہ ہر جنگ سے ایک خاص ملک طاقتور بن جاتا ہے اور وہ اپنی حیوانی طاقت سے دنیا کی ایک بڑی آبادی کو اپنی مرضی کے مطابق چلنے کو مجبور کرتا ہے۔ آج مانو سمسیاؤں کو وشو سرکار کے ہی ذریعے حل کیا جا سکتا ہے۔ یہ تسلی کی بات ہے کہ وچاروان لوگ وشو سرکار کی یوجنا کو مانو ترقی کا اعلیٰ مقصد مانتے ہیں۔

بہت سے لوگ وشو سرکار کے اوپر اور اُس کی انترراشٹریہ سینک اکائی کے اوپر اِس نقطہ نظر سے اعتراض کر سکتے ہیں کہ بھوشیہ میں اُس کے فاسسٹ بن جانے کا خطرہ ہے۔ بیشک یہ خطرہ ہے ہی، لیکن اگر اِس میں خطرہ ہے تو یہ اُس خطرے کے سامنے کچھ بھی نہیں ہے جو انترراشٹریہ اراجکتا قائم رہنے سے پیدا ہوگا۔

کنتو وشو راجیہ کی استھاپنا تبھی ممکن ہو سکتی ہے جب مختلف ملک اپنا قومی غرور، اپنے لوبھ، اپنے شک کو جیت سکیں۔ اگر دنیا کے ملک ایسا کرنے میں کامیاب نہیں ہوتے تو مانو اتہاس میں ویگیانک یگ کا دور بہت چھوٹا سمجھا جائیگا اور مانو کو پھر سے اپنے آدِم یگ کے پُرکھوں کے سمان کند مول پھل کھا کر گپھاؤں میں رہنا پڑیگا۔

اِس سمے انسان ترقی اور بربادی کے چوراہے پر کھڑا ہے۔ اُسے دو میں سے ایک راستہ چننا ہے—مہان سکھ کا راستہ یا بھینکر سروناش کا راستہ۔ یہ اُس کے اوپر ہے کہ وہ کون سا راستہ چنے!

—وشومبھر ناتھ پانڈے

की गई, लेकिन किसी संतोशजनक नतीजे पर नहीं पहुंचे. आज राजनितिज्ञों के मुरझाये चेहरे इसे क़ुबूल कर रहे हैं कि जंग को रोकने के लिये अबतक कोई तरीक़ा नहीं निकाला जा सका. इनसानी भूलों और बेवक़ूफ़ियों का जो लम्बा लेखा जोखा उनके सामने है उसे देखते हुये वह निश्चित रूप से कह सकते हैं कि तीसरी जंग होकर ही रहेगी. हां, यह दूसरी बात है कि वह कब हो. महान शक्तियों के बीच युद्ध रोकने की काग़ज़ी योजना तैयार कर देना बहुत आसान है. यह बड़े दुख की बात है कि दुनिया की राजनीति आज जिन लोगों के हाथों मे है, वे मर जाना पसन्द करेंगे लेकिन अक़्ल के साथ जीना पसन्द नहीं करेंगे. विश्व शान्ति के रास्ते में आज सब से बड़ी रुकावट राष्ट्रीयता साबित हो रही है और इस रुकावट को ऐटम बम का ख़तरा भी ख़त्म नहीं कर पाया.

तीसरा महायुद्ध ऐटम बम को लेकर लड़ा जाता है तो संसार में जो कुछ भी क़ीमती है, वह सब बरबाद हो जायेगा. संगठित सरकारें भी सम्भवत: क़ायम न रह सकेंगी. वैज्ञानिक और वैज्ञानिकों की अनुसंधान शालाएं सब से पहले बरबाद की जायेंगी और अन्त में ऐटम बम बनाने वाला या किसी प्रकार का वैज्ञानिक युद्ध लड़ने वाला कोई इनसान जीवित न बच पायेगा. इस तीसरे महायुद्ध के बाद सम्भवत: कुछ सदियों तक हमें असभ्य, लेकिन मुक़ाबलेतन कहीं ज़्यादा शान्तिपूर्न ज़िन्दगी बिताने का मौक़ा मिले.

प्रोफ़ेसर अलबर्ट आइनस्टीन ने अपने एक बयान में हाल में कहा है : अगर ऐटम बम की लड़ाई हुई तो दुनिया के दो-तिहाई इनसान काल के गाल में चले जायेंगे. ऐसी हालत में एक ही तरीक़ा है जो दुनिया को सर्वनाश से बचा सकता है और वह है विश्व सरकार की स्थापना. संसार के सभी देशों को और ख़ासकर अमरीका, सोवियत यूनियन और इंगलैंड को अपनी सैनिक व्यवस्था और अस्त्र शस्त्र और अपनी सेनाएं इस विश्व राज्य के सुपुर्द कर देनी होंगी. जिन देशों के पास अणु बम बनाने का भेद है उन्हें यह भेद भी इस अखिल विश्व सरकार के हवाले कर देना होगा. सोवियत यूनियन, अमरीका और भारत के एक एक प्रतिनिधि लेकर एक विधान परिषद बनाई जा सकती है. भारत का प्रतिनिधि इसलिये ज़रूरी है कि भारत शान्ति का अखंड उपासक है. इन तीनों देशों के विचार धाराओं के समन्वय से ही विश्व सरकार का सर्वमान्य विधान बन सकता है. जब ये तीन बड़े देश क़ाबिल सहायकों की मदद से इस तरह विश्व सरकार का विधान बना लें तब इन छोटे छोटे मुल्कों को शामिल होने का न्योता दें. शामिल करने में उनके ऊपर किसी तरह का दबाव न डाला जाये. अगर वे न शामिल होना चाहें तब भी अपने को पूरी तरह सुरक्षित और हर सुविधा का अधिकारी समझें. उन्हें विश्व सरकार

کی گئی، لیکن کسی سنتوش‌جنک نتیجے پر نہیں پہونچے. آج راجنیتگیوں کے مرجھائے چہرے اِسے قبول کر رہے ہیں کہ جنگ کو روکنے کے لئے اب تک کوئی طریقہ نہیں نکالا جا سکا . اِنسانی بھولوں اور بیوقوفیوں کا جو لمبا لیکھا جوکھا اُن کے سامنے ہے اُسے دیکھتے ہوئے وے نشچت روپ سے کہ سکتے ہیں کہ تیسری جنگ ہو کر ہی رہے گی . ہاں، یہ دوسری بات ہے کہ وہ کب ہو . مہان شکتیوں کے بیچ یدھ روکنے کی کاغذی یوجنا تیار کر دینا بہت آسان ہے . یہ بڑے دکھ کی بات ہے کہ دنیا کی راجنیتی آج جن لوگوں کے ہاتھوں میں ہے، وے مر جانا پسند کرینگے لیکن عقل کے ساتھ جینا پسند نہیں کرینگے . وشو شانتی کے راستے میں آج سب سے بڑی رکاوٹ راشٹریتا ثابت ہو رہی ہے اور اِس رکاوٹ کو ایٹم بم کا خطرہ بھی ختم نہیں کر پایا .

تیسرا مہایدھ ایٹم بم کو لے کر لڑا جاتا ہے تو سنسار میں جو کچھ بھی قیمتی ہے، وہ سب برباد ہو جائے گا . سنگٹھت سرکاریں بھی سمبھوتہ قائم نہ رہ سکینگی . ویگیانک اور ویگیانکوں کی انوسندھان شالائیں سب سے پہلے برباد کی جائینگی اور انت میں ایٹم بم بنانے والا یا کسی پرکار کا ویگیانک یدھ لڑنے والا کوئی اِنسان جیوت نہ بچ پائے گا . اِس تیسرے مہایدھ کے بعد سمبھوتہ کچھ صدیوں تک ہمیں اسبھیہ، لیکن مقابلےتن کہیں زیادہ شانتی پورن زندگی بتانے کا موقعہ ملے .

پروفیسر البرٹ آئن اسٹین نے اپنے ایک بیان میں حال میں کہا ہے : اگر ایٹم بم کی لڑائی ہوئی تو دنیا کے دو - تہائی انسان کال کے گال میں چلے جائینگے . ایسی حالت میں ایک ہی طریقہ ہے جو دنیا کو سروناش سے بچا سکتا ہے اور وہ ہے وشو سرکار کی استھاپنا . سنسار کے سبھی دیشوں کو اور خاص کر امریکہ، سوویت یونین اور اِنگلینڈ کو اپنی سینک ویوستھا اور استر شستر اور اپنی سینائیں اِس وشو راجیہ کے سپرد کر دینی ہونگی . جن دیشوں کے پاس انو بم بنانے کا بھید ہے اُنہیں یہ بھید بھی اِس اکھل وشو سرکار کے حوالے کر دینا ہوگا . سوویت یونین، امریکہ اور بھارت کے ایک ایک پرتیندھی لے کر ایک ودھان پریشد بنائی جا سکتی ہے . بھارت کا پرتیندھی اِس لئے ضروری ہے کہ بھارت شانتی کا اکھنڈ اُپاسک ہے . اِن تینوں دیشوں کے وچار دھاراؤں کے سمنوے سے ہی وشو سرکار کا سرو مانیہ ودھان بن سکتا ہے . جب یہ تین بڑے دیش قابل سہائکوں کی مدد سے اِس طرح وشو سرکار کا ودھان بنا لیں تب اِن چھوٹے چھوٹے ملکوں کو شامل ہونے کا نیوتا دیں . شامل کرنے میں اُن کے اُوپر کسی طرح کا دباؤ نہ ڈالا جائے . اگر وے نہ شامل ہونا چاہیں تب بھی اپنے کو پوری طرح سورکشت اور ہر سویدھا کا ادھیکاری سمجھیں . اُنہیں وشو سرکار

आज हर मुल्क के विचारवान व्यक्ति तीसरी जंग के भयंकर नतीजों से पूरी तरह वाक़िफ़ हो चुके हैं. ऐटम और हाइड्रोजन बम क़यामत की शक्ल में सारी दुनिया की ओर देख रहे हैं लेकिन दुनिया को इससे बचाने के लिये जितने शीघ्र हमें अपने राजनैतिक ढांचे में तब्दीली करना चाहिये उतने शीघ्र हम वह तब्दीली नहीं कर रहे हैं. इस सम्बन्ध में आज तरह तरह के सुझाव लोगों के सामने पेश किये जा रहे हैं. कुछ लोग यह कहते हैं कि एक इस तरह का समझौता होना चाहिये कि जिन देशों के पास ऐटम और हाइड्रोजन बम हैं वे युद्ध के समय उनका इस्तेमाल न करें लेकिन क्या यह मुमकिन है ! क्या अमरीका ने नाटो ताक़तों को ऐटम बम नहीं दे दिया है ? जिस समय महायुद्ध शुरू होगा इन बमों का इस्तेमाल करने का लालच लोग रोक न सकेंगे. एक दूसरा सुझाव है कि इन बमों को अधिक से अधिक भयंकर बनाने के बारे में जो वैज्ञानिक छानबीन जारी है उन्हें रोक दिया जाय लेकिन क्या यह मुमकिन है ? यह एक निश्चित सत्य है कि हिरोशिमा और नागासाकी के ऊपर जो ऐटम बम फेंके गये थे उनसे पच्चीस हज़ार गुना ज़्यादा ख़तरनाक बम बनाये जा चुके हैं और कोई भी अन्तर्राष्ट्रीय समझौता इन भयंकर बमों की तैयारी को नहीं रोक सकता.

कुछ लोगों को यह उम्मीद है कि भविष्य में युद्ध को इसलिये रोका जा सकेगा कि लोगों का ख़्याल है कि इन बमों से संसार की तहज़ीब और कल्चर का नाश हो जायगा. लेकिन हमारा पिछला तजरुबा हम में कोई ऐसी उम्मीद पैदा नहीं करता. बारूद की ईजाद से लेकर ऐटम बम की ईजाद तक जब जब भी नये नये ख़ौफ़नाक अस्त्र शस्त्र बने कुछ न कुछ नासमझ आदमियों ने इसलिये उनका स्वागत किया कि इससे युद्ध की सम्भावना कम हो जायगी, लेकिन क्या कभी इन भोले आदमियो की उम्मीद सच साबित हुई ? इस के विपरीत युद्ध में अधिक से अधिक भयंकरता ही आती गई.

कुछ लोगों की राय है कि युद्ध को रोकने की सिर्फ़ एक ही तरकीब हो सकती है और वह यह कि कोई एक दल बेहद ताक़तवर हो जाये.लेकिन क्या यह ऐटम बम के ज़माने में मुमकिन है ? अभी कुछ दिन पहले अमरीका को इस बात का दावा था कि उसके पास हाइड्रोजन बमों का एक ज़ख़ीरा है लेकिन अभी सुप्रीम सोवियत पार्लिमेन्ट मे फ़ारेन मिनिस्टर मोलोतोव ने ऐलान किया कि रूस के पास अमरीका के मुक़ाबले में हाइड्रोजन बम का कहीं बड़ा ज़ख़ीरा है.

दूसरे महायुद्ध की समाप्ति के बाद यू. एन. ओ. ने जंग को रोकने की काफ़ी कोशिशें की हैं. कई बार विदेश मन्त्रियों का सम्मेलन किया गया. स्थाई समझौतों पर बहस

آج ہر ملک کے وچاروان ویکتی تیسری جنگ کے بھینکر نتیجوں سے پوری طرح واقف ہوچکے ہیں . ایٹم اور ہائیڈروجن بم قیامت کی شکل میں ساری دنیا کی اور دیکھ رہے ہیں لیکن دنیا کو اِس سے بچانے کے لئے جتنے شیگھر ہمیں اپنے راجنیتک ڈھانچے میں تبدیلی کرنا چاہئے اُتنے شیگھر ہم وہ تبدیلی نہیں کررہے ہیں . اِس سمبندھ میں آج طرح طرح کے سجھاؤ لوگوں کے سامنے پیش کئے جا رہے ہیں . کچھ لوگ یہ کہتے ہیں کہ اِس طرح کا ایک سمجھوتہ ہونا چاہئے کہ جن دیشوں کے پاس ایٹم اور ہائیڈروجن بم ہیں وے یدھ کے سمے اُن کا استعمال نہ کریں لیکن کیا یہ ممکن ہے ؟ کیا امریکہ نے ناٹو طاقتوں کا ایٹم بم نہیں دے دیا ہے ؟ جس سمے مہایدھ شروع ہوگا اِن بموں کا استعمال کرنے کا لالچ لوگ روک نہ سکیں گے . ایک دوسرا سجھاؤ ہے کہ اِن بموں کو ادھک بھینکر بنانے کے بارے میں جو ویگیانک چھان بین جاری ہے اُنھیں روک دیا جائے . لیکن کیا یہ ممکن ہے ؟ یہ ایک نشچت ستیہ ہے کہ ہیروشما اور ناگا ساکی کے اُوپر جو ایٹم بم پھینکے گئے تھے اُن سے پچیس ہزار گنا زیادہ خطرناک بم بنائے جا چکے ہیں اور کوئی بھی انتر راشٹریہ سمجھوتہ اِن بھینکر بموں کی تیاری کو نہیں روک سکتا .

کچھ لوگوں کو یہ اُمید ہے کہ بھوشیہ میں یدھ کو اِس لئے روکا جا سکیگا کہ لوگوں کا خیال ہے کہ اِن بموں سے سنسار کی تہذیب اور کلچر کا ناش ہو جائیگا . لیکن ہمارا پچھلا تجربہ ہم میں ایسی اُمید پیدا نہیں کرتا . بارود کی اِیجاد سے لیکر ایٹم بم کی اِیجاد تک جب بھی نئے نئے خوفناک استر شستر بنے کچھ نہ کچھ ناسمجھ آدمیوں نے اِس لئے اُن کا سواگت کیا کہ اِس سے یدھ کی سمبھاونا کم ہو جائیگی' لیکن کیا کبھی اِن بھولے آدمیوں کی اُمید سچ ثابت ہوئی ؟ اِس کے وپریت یدھ میں ادھک سے ادھک بھینکرتا ہی آتی گئی .

کچھ لوگوں کی رائے ہے کہ یدھ کو روکنے کی صرف ایک ہی ترکیب ہو سکتی ہے اور وہ یہ کہ کوئی ایک دل بےحد طاقتور ہو جائے . لیکن کیا یہ ایٹم بم کے زمانے میں ممکن ہے ؟ ابھی کچھ دن پہلے امریکہ کو اِس بات کا دعویٰ تھا کہ اس کے پاس ہائیڈروجن بموں کا ایک ذخیرہ ہے' لیکن ابھی سوپریم سوویت پارلیمینٹ میں فارین منسٹر مولوتوف نے اعلان کیا کہ روس کے پاس امریکہ کے مقابلے میں ہائیڈروجن بم کا کہیں بڑا ذخیرہ ہے .

دوسرے مہایدھ کی سماپتی کے بعد یو. این. او. نے جنگ کو روکنے کی کافی کوششیں کی ہیں . کئی بار ودیش منتریوں کا سمیلن کیا . استھائی سمجھوتوں پر بحث

ने वालों के लिये अथवा हजारों बेगुनाह नागरिकों के वध करने वालों के लिये कोई सजा नहीं है. विचार जगत में इस झूठे दर्शन सिद्धान्त को हमें पराजित करना है. इतिहास के दौर में नात्सीवाद या फासिस्तवाद कोई यकबयक घटना नहीं है. यदि ऐसा होता तो, हिटलर, मुसोलनी और तोजो की मौत पर हम शान्तिमय जीवन की आशा कर सकते थे. सचाई यह है कि जब तक दुनिया में जंग को मजहबी फ़र्ज़ समझा जायगा, तब तक शान्ति का क़ायम होना मुमकिन नहीं दिखाई देता.

दूसरी जंग के ख़त्म होते ही, दूरन्देशों ने तीसरी लड़ाई की आवाजें सुननी शुरू कर दी थीं. पहले यह आवाज हल्की थी, फिर धीरे धीरे इसकी तेजी से आसमान गूंज उठा और घने काले बादलों की छाया बढ़ती जा रही है. आज दुनिया का हर शख्स अपने दिल में यह सोचता है कि क्या सचमुच तीसरी लड़ाई के नगाड़े बजने वाले हैं. यू. एन. ओ. के ऊपर अब भी सारी दुनिया को कुछ न कुछ आशा बंधी हुई है. इसीलिये भारत जैसे देश जो उससे निराश हो चुके हैं, फिर भी उसका पल्ला थामे हुये हैं. डूबती हुई दुनिया के लिये तिनका भी एक सहारा बन सकता है. यह भी आशा लगी है कि संसार के देशों के बीच में एशिया और अफ्रीका के देशों को एक बाइज्जत जगह मिलेगी और दुनिया से साम्राज्यवाद का खात्मा होगा और साम्राज्यवाद के मिटते ही लड़ाई का लालच भी मिट जायगा. लेकिन जैसी हालत इस समय है और जिस तरह बड़ी ताक़तें अपनी सैनिक तैयारियां कर रही हैं और जिस ढर्रे पर चल रही है और जिस तरह वहां युद्ध देवता की पूजा हो रही है उससे एक ही नतीजा समझ में आता है कि तीसरा महायुद्ध भी कुछ समय के लिये टल सकता है, लेकिन देर सवेर तीसरे महायुद्ध के बादल बिना बरसे छूटेंगे नहीं.

इस विचारधारा के लोगों का कहना है कि दुनिया को स्थायी शान्ति की स्थापना को दृष्टि में रखते हुये यह ऐलान करना ही पड़ेगा, कि जंग एक हैवानी और ज़ालिमाना वहशत है. आसमान के सातों परदों पर उसका इतिहास खून और आग से लिखा गया है. मानव सभ्यता के लिये एक अपमान है. जंग का मतलब घायलों की कराहें, बमबारी से घायल मासूम औरतों और बच्चों की चीखें और बरसों के बाद जंग के खात्मे पर हजारों सैनिकों और जवानों का अंधे, लूले, लंगड़े और फेफड़ों से खून थूकते हुये, पागलखानों की दीवारों से सर टकराते हुये दिखाई देना. आज मासूम इन्सानियत की आत्मा को साम्राज्यवादी राजनीतिज्ञों के बन्धन से छूटकर इस बात का ऐलान करना होगा कि दुनिया के सब जुर्मों में युद्ध एक सबसे खौफ़नाक जुर्म है.

دینے والوں کے لئے اتھوا ہزاروں بے گناہ ناگرکوں کے ودھ کرنے والوں کے لئے کوئی سزا نہیں ہے۔ وچار جگت میں اس جھوٹے درشن سدھانت کو ہمیں پراجت کرنا ہے۔ اتیہاس کے دور میں ناتسیواد یا فاسستواد کوئی یک بیک گھٹنا نہیں ہے۔ یدی ایسا ہوتا تو، ہٹلر، مسولنی اور توجو کی موت پر ہم شانتی مے جیون کی آشا کرسکتے تھے۔ سچائی یہ ہے کہ جب تک دنیا میں جنگ کو مذہبی فرض سمجھا جائیگا، تب تک شانتی کا قائم ہونا ممکن نہیں دکھائی دیتا۔

دوسری جنگ کے ختم ہوتے ہی، دور اندیشوں نے تیسری لڑائی کی آوازیں سننی شروع کردی تھیں۔ پہلے یہ آواز ہلکی تھی، پھر دھیرے دھیرے اس کی تیزی سے آسمان گونج اٹھا اور گھنے کالے بادلوں کی چھایا بڑھتی جا رہی ہے۔ آج دنیا کا ہر شخص اپنے دل میں یہ سوچتا ہے کی کیا سچ مچ تیسری لڑائی کے نگاڑے بجنے والے ہیں۔ یو۔ این۔ او۔ کے اوپر اب بھی ساری دنیا کو کچھ نہ کچھ آشا بندھی ہوئی ہے۔ اسی لئے بھارت جیسے دیش جو اس سے نراش ہوچکے ہیں، پھر بھی اس کا پلہ تھامے ہوئے ہیں۔ ڈوبتی ہوئی دنیا کے لئے تنکا بھی ایک سہارا بن سکتا ہے۔ یہ بھی آشا لگی ہے کہ سنسار کے دیشوں کے بیچ میں ایشیا اور افریقہ کے دیشوں کو ایک باعزت جگہ ملیگی اور دنیا سے سامراجیہواد کا خاتمہ ہوگا اور سامراجیہواد کے مٹتے ہی لڑائی کا لالچ بھی مٹ جائیگا۔ لیکن جیسی حالت اس سمے ہے اور جس طرح بڑی طاقتیں اپنی سینک تیاریاں کر رہی ہے اور جس ڈھرے پر چل رہی ہیں اور جس طرح وہاں یدھ دیوتا کی پوجا ہو رہی ہے اس سے ایک ہی نتیجہ سمجھ میں آتا ہے کہ تیسرا مہایدھ بھی کچھ سمے کے لئے ٹل سکتا ہے، لیکن دیر سویر تیسرے مہایدھ کے بادل بنا برسے چھٹینگے نہیں۔

اس وچار دھارا کے لوگوں کا کہنا ہے کہ دنیا کو استھائی شانتی کی استھاپنا کو درشٹی میں رکھتے ہوئے یہ اعلان کرنا ہی پڑیگا کہ جنگ ایک حیوانی اور ظالمانہ وحشت ہے۔ آسمان کے ساتوں پردوں پر اس کا اتیہاس خون اور آگ سے لکھا گیا ہے۔ مانو سبھیتا کے لئے ایک اپمان ہے۔ جنگ کا مطلب ہے گھائلوں کی کراہیں، بمباری سے گھائل معصوم عورتوں اور بچوں کی چیخیں اور برسوں کے بعد جنگ کے خاتمے پر ہزاروں سینکوں اور جوانوں کا اندھے، لولے، لنگڑے اور پھیپھڑوں سے خون تھوکتے ہوئے پاگل خانوں کی دیواروں سے سر ٹکراتے ہوئے دکھائی دینا۔ آج معصوم انسانیت کی آتما کو سامراجیہوادی راجنیتگیوں کے بندھن سے چھوٹکر اس بات کا اعلان کرنا ہوگا کہ دنیا کے سب جرموں میں یدھ ایک سب سے خوفناک جرم ہے۔

जिसमें किसी बाहर वाले को दख़ल देने का किसी तरह का कोई हक़ नहीं है.

(3) अमरीकी सरकार को चाहिये कि अपना जहाज़ी बेड़ा और अपनी फ़ौजें फ़ौरन फ़ारमूसा से हटा ले ताकि चीन की सरकार और वहां की जनता आज़ादी के साथ बिना किसी तरह की बाहर की मदाख़लत के अपने घरेलू झगड़े को जिस तरह चाहे तै कर सके.

हमें पूरा विश्वास है कि हिन्दुस्तान की जनता बिना भेद भाव के इन दोनों सवालों पर जब और जहां मौक़ा होगा अपनी साफ़ साफ़ आवाज़ ऊंची करेगी. एक यह कि जहां तक मुमकिन हो जंग न हो, और अगर हो भी तो उस में ऐटमी हथियारों का इस्तेमाल न होने पावे, और दूसरी यह कि अमरीका की सरकार फ़ारमूसा से अपनी फ़ौजों को हटा ले और आइन्दा कोई किसी दूसरे के घरेलू मामले में दख़ल न दे.

6. 2. 55 — सुन्दरलाल

جس میں کسی باہر والے کو دخل دینے کا کسی طرح کا کوئی حق نہیں ہے.

(3) امریکی سرکار کو چاہئے کہ اپنا جہازی بیڑا اور اپنی فوجیں فوراً فارموسا سے ہٹا لے تاکہ چین کی سرکار اور وہاں کی جنتا آزادی کے ساتھ بنا کسی طرح کی باہر کی مداخلت کے اپنے گھریلو جھگڑے کو جس طرح چاہے طے کر سکے.

ہمیں پورا وشواس ہے کہ ہندستان کی جنتا بنا بھید بھاؤ کے ان دونوں سوالوں پر جب اور جہاں موقعہ ہوگا اپنی صاف صاف آواز اونچی کرے گی. ایک یہ کہ جہاں تک ممکن ہو جنگ نہ ہو اور اگر ہو تو اس میں ایٹمی ہتھیاروں کا استعمال نہ ہونے پاوے اور دوسری یہ کہ امریکہ کی سرکار فارموسا سے اپنی فوجوں کو ہٹالے اور آئندہ کوئی کسی دوسرے کے گھریلو معاملے میں دخل نہ دے.

— سندرلال 6. 2. '55

ऐटम बम और विश्व सरकार

यूनाइटेड नेशन्स की असेम्बली विश्व शान्ति के लिये जो कोशिशें कर रही है उसके नतीजों के बारे में दुनिया के विचारवान लोगों के दिलों में एक संदेह सा पैदा हो गया है. मित्र राष्ट्रों के युद्ध में जीतने की जितनी सम्भावना थी उससे कहीं कम आज शान्ति की सम्भावना दिखाई दे रही है. दुनिया के हित चिन्तकों को युद्ध के नतीजे की जितनी चिन्ता न थी उतनी उन्हें शान्ति के नतीजे की चिन्ता हो उठी है. आज की अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के तीनों प्रधान केन्द्रों—वाशिंगटन, लन्दन और मास्को—मे यह शुबहे की भावना व्याप्त है. एक दूसरे की तरफ़ संदेह होने के सबब आज दुनिया के बड़े बड़े मुल्क सिर से पैर तक अपने को हथियार से लाद रहे हैं. उनके दिल एक दूसरे की तरफ़ ख़ौफ़नाक शुबहे और नफ़रत से भर गये हैं. दुनिया के सभी मर्द, औरत और बच्चों को एक भयंकर आफ़त अपने सामने दिखाई दे रही है. अंधी शान, बड़प्पन के झूठे अभिमान और आर्थिक हानि के भय ने लगभग हर मुल्क के शासकों के दिमाग़ में घर कर लिया है. जीवन का ऐसा दर्शन, जो विजय और अधिकार में भेद को बढ़ाता है, जो युद्ध को धर्म बना देता है, जो डकैती को सैनिक पोशाक में सजाकर उसे देशभक्त कहता है और जो क़त्ल और ज़ुल्म को पवित्र और उदार कर्त्तव्य बताता है, इस समय उन्नति कर रहा है. आज उन लोगों के लिये तो क़ानूनी शिकंजे हैं जो किसी व्यक्ति के घर में आग लगा दें या किसी व्यक्ति को क़त्ल कर दें, लेकिन शहर के शहर जला

ایٹم بم اور وشو سرکار

یونائیٹڈ نیشنس کی اسمبلی وشو شانتی کے لئے جو کوششیں کر رہی ہے اس کے نتیجوں کے بارے میں دنیا کے وچاروان لوگوں کے دلوں میں ایک سندیہ سا پیدا ہوگیا ہے. متر راشٹروں کے یدھ میں جیتنے کی جتنی سمبھاونا تھی اس سے کہیں کم آج شانتی کی سمبھاونا دکھائی دے رہی ہے. دنیا کے ہت چنتکوں کو یدھ کے نتیجے کی جتنی چنتا نہ تھی اتنی انہیں شانتی کے نتیجے کی چنتا ہو اٹھی ہے. آج کی انتر راشٹریہ راجنیتی کے تینوں پردھان کیندروں—واشنگٹن، لندن اور ماسکو—میں یہ شبہے کی بھاونا ویاپت ہے. ایک دوسرے کی طرف سندیہ ہونے کے سبب آج دنیا کے بڑے بڑے ملک سر سے پیر تک اپنے کو ہتھیار سے لاد رہے ہیں. ان کے دل ایک دوسرے کی طرف خوفناک شبہے اور نفرت سے بھر گئے ہیں. دنیا کے سبھی مرد، عورت اور بچوں کو ایک بھینکر آفت اپنے سامنے دکھائی دے رہی ہے. اندھی شان، بڑپن کے جھوٹے ابھیمان اور آرتھک ہانی کے بھے نے لگ بھگ ہر ملک کے شاسکوں کے دماغ میں گھر کر لیا ہے. جیون کا ایسا درشن، جو وجے اور ادھیکار میں بھید کو بڑھاتا ہے، جو یدھ کو دھرم بنا دیتا ہے، جو ڈکیتی کو سینک پوشاک میں سجاکر اسے دیش بھکت کہتا ہے اور جو قتل اور ظلم کو پوتر اور اُدار کرتویہ بتاتا ہے، اس سمے اُنتی کر رہا ہے. آج ان لوگوں کے لئے تو قانونی شکنجے ہیں جو کسی ویکتی کے گھر میں آگ لگادیں یا کسی ویکتی کو قتل کردیں، لیکن شہر کے شہر جلا

कहलाती थीं पूरी हमदर्दी रखती थी. एक एक गांव ने इस आज़ाद चीन फ़ौज का स्वागत किया और उसका साथ दिया. तीन बरस की उस आज़ादी की जंग की तारीख़ दुनिया भर के देश भक्तों के लिये ग़ौर से पढ़ने की चीज़ है. पीछे हटते हटते च्यांग-काई-शेक और उसकी बची खुची फ़ौज ने फ़ारमूसा के टापू में पनाह ली. अमरीकी जल सेना वहां देशघातक च्यांग-काई-शेक की रक्षा और सहायता के लिये पहुंच गई. माओ-त्से-तुंग की फ़ौज के पास अभी इतनी जल सेना नहीं थी कि वह हाथ के हाथ फ़ारमूसा को भी च्यांग-काई-शेक से छुड़ा ले. उन्हें चीन के बाक़ी देश को भी फिर से आबाद करना था. इन छै बरस के अन्दर जिस तरह माओ-त्से-तुंग और उनकी सरकार ने अपने से पहले के वीरान और ग़ुलाम चीन को आज़ाद और फिर से आबाद करके ख़ुशहाल बनाया है उसकी कहानी अब दुनिया भर में फैल चुकी है. लेकिन इस तमाम समय में नए चीन की सरकार बराबर यह महसूस करती रही कि ग़ैरों के हाथों में फ़ारमूसा चीन की छाती पर हमेशा के लिये एक ख़ंजर की तरह है. हाल में उन्होंने एक एक कर फ़ारमूसा के आस पास के टापुओं पर क़ब्ज़ा करना शुरू कर दिया. कई छोटे बड़े टापू वह ले भी चुके हैं. पर वह ख़ाहमख़ाह अमरीका से लड़ना नहीं चाहते. इसलिये उन्होंने अमरीका से मांग की है कि वह अपनी फ़ौजें फ़ारमूसा और उसके आस पास से हटा ले. अमरीकी सरकार इससे इन्कार कर रही है. मामला ठीक इस समय यहीं पर अटका हुआ है. ठीक आज के दिन फ़ारमूसा दुनिया भर में सब से बड़ी ख़तरे की जगह दिखाई देता है. कल क्या होगा कौन जाने. हम ऊपर कह चुके हैं कि हमें अच्छे से अच्छे नतीजों की आशा रखते हुए बुरे से बुरे नतीजों के लिये तैयार रहना चाहिये. हमें यह भी अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि फ़ारमूसा में अमरीकी जहाज़ी बेड़े और अमरीकी फ़ौजों का रहना केवल नए चीन ही की छाती पर नहीं भारत की छाती पर और सारे एशिया की छाती के ऊपर एक ख़ंजर की तरह है. एक की ग़ुलामी में हम सबकी ग़ुलामी और एक की आज़ादी में हम सबकी आज़ादी है. ख़ासकर इस मामले में अपने पुराने और प्यारे पड़ोसी चीन की ग़ुलामी में हमारी ग़ुलामी और चीन की आज़ादी में हमारी आज़ादी है. यह शब्द हम बहुत तोल कर और पूरी ज़िम्मेदारी के साथ चारों तरफ़ के हालात को देखकर कह रहे हैं.

फ़ारमूसा के मामले में हमारी स्थिति बिल्कुल साफ़ है और वह यह है :—

(1) फ़ारमूसा और उसके आस पास के सब टापू चीन का हिस्सा हैं, चीनी क़ौमी जिस्म के अंग हैं.

(2) नए चीन की सरकार और च्यांग-काई-शेक के गिरोह के बीच का झगड़ा चीन का एक घरेलू झगड़ा है

کہلاتی تھیں پوری ہمدردی رکھتی تھی. ایک ایک گاؤں نے اِس آزاد چین فوج کا سواگت کیا اور اُس کا ساتھ دیا . تین برس کی اُس آزادی کی جنگ کی تاریخ دنیا بھر کے دیش بھکتوں کے لئے غور سے پڑھنے کی چیز ھے . پیچھے ھٹتے ھٹتے چیانگ - کائی - شیک اور اُس کی بچی کھچی فوج نے فارموسا کے ٹاپو میں پناہ لی . امریکی جل سینا یہاں دیش گھاتک چیانگ - کائی - شیک کی رکشا اور سہائتا کے لئے پہنچ گئی . ماؤ تسے تنگ کی فوج کے پاس ابھی اتنی جل سینا نہیں تھی کہ وہ ھاتھ کے ھاتھ فارموسا کو بھی چیانگ - کائی - شیک سے چھڑا لے . اُنہیں چین کے باقی دیش کو بھی پھر سے آباد کرنا تھا . اِن چھ برس کے اندر جس طرح ماؤ - تسے - تنگ اور اُن کی سرکار نے اپنے سے پہلے کے ویران اور غلام چین کو آزاد اور پھر سے آباد کر کے خوشحال بنایا ھے اُس کی کہانی اب دنیا بھر میں پھیل چکی ھے . لیکن اِس تمام سمے میں نئے چین کی سرکار برابر یہ محسوس کرتی رھی کہ غیروں کے ھاتھوں میں فارموسا چین کی چھاتی پر ھمیشہ کے لئے ایک خنجر کی طرح ھے . حال میں اُنہوں نے ایک ایک کر فارموسا کے آس پاس کے ٹاپوؤں پر قبضہ کرنا شروع کر دیا . کئی چھوٹے بڑے ٹاپو وہ لے بھی چکے ھیں . پر وہ خواہمخواہ امریکہ سے لڑنا نہیں چاھتے . اس لئے اُنہوں نے امریکہ سے مانگ کی ھے کہ وہ اپنی فوجیں فارموسا اور اُس کے آس پاس سے ھٹا لے . امریکی سرکار اِس سے اِنکار کر رھی ھے . معاملہ ٹھیک اِس سمے یہیں پر اٹکا ھوا ھے . ٹھیک آج کے دن فارموسا دنیا بھر میں سب سے بڑی خطرے کی جگہ دکھائی دیتا ھے . کل کیا ھوگا کون جانے . ھم اوپر کہ چکے ھے کہ ھمیں اچھے سے اچھے نتیجوں کی آشا رکھتے ھوئے برے سے برے نتیجوں کے لئے تیار رھنا چاھئے . ھمیں یہ بھی اچھی طرح سمجھ لینا چاھئے کہ فارموسا میں امریکی جہازی بیڑے اور امریکی فوجوں کا رھنا کیول نئے چین ھی کی چھاتی پر نہیں بھارت کی چھاتی پر اور سارے ایشیا کی چھاتی کے اوپر ایک خنجر کی طرح ھے . ایک کی غلامی میں ھم سب کی غلامی اور ایک کی آزادی میں ھم سب کی آزادی ھے. خاص کر اس معاملے میں اپنے پرانے اور پیارے پڑوسی چین کی غلامی میں ھماری غلامی اور چین کی آزادی میں ھماری آزادی ھے . یہ شبد ھم بہت تول کر اور پوری ذمہ داری کے ساتھ چاروں طرف کے حالات کو دیکھکر کہ رھے ھیں .

فارموسا کے معاملے میں ھماری اِستھتی بالکل صاف ھے اور وہ یہ ھے :—

(1) فارموسا اور اُس کے آس پاس کے سب ٹاپو چین کا حصہ ھیں، چینی قومی جسم کے انگ ھیں .

(2) نئے چین کی سرکار اور چیانگ - کائی - شیک کے گروہ کے بیچ کا جھگڑا چین کا ایک گھریلو جھگڑا ھے .

एक मवाद कभी जरमनों को जरमनों से और पच्छिमी यूरोप के लोगों को पूरबी यूरोप के लोगों से लड़ाने की सोचता है, कभी इन्डोचाइना में फ़साद खड़े करता है, कभी कोई बहाना लेकर ब्रिटिश ग्युगाइना के लोगों की आज़ादी छीनना चाहता है, कभी गोटेमाला के धन पर क़ब्ज़ा करना चाहता है, कभी दक्खिन कोरिया को उत्तर कोरिया से लड़ाकर उत्तर कोरिया की कानों को हथियाना चाहता है, कभी फ़ारमोसा को चीन से अलग करके देशघातक च्यांग-काई-शेक की आड़ में जब मौक़ा मिल सके चीन को फिर से ग़ुलाम बनाने की सोचता है, कभी गिलगिट में अपने फ़ौजी अड्डे बनाना चाहता है, कभी अफ़रीक़ा में वहां के पुराने असली बाशिन्दों को अपने ढोर चराने के लिये जिन्दा रखकर उस महाद्वीप की धन सम्पत्ति को हमेशा के लिये अपने क़ाबू मे करना चाहता है वग़ैरह वग़ैरह. ज़ाहिर है कि यह मवाद कहीं भी फोड़े की शकल में नमूदार हो और कहीं भी फूटे, जब तक पूरी दुनिया का जिस्म इस मवाद से पाक नहीं होता, तब तक दुनिया का कोई मुल्क और किसी मुल्क की जनता इस ख़तरे से बची नहीं कही जासकती. अपनी ताक़त को बढ़ाने का ख़ास ज़रिया इन लोगों के लिये जंग है. दुनिया दो बड़ी बड़ी जंगों की बरबादी को देख चुकी है. तीसरी जंग से जो बरबादी हो सकती है उसका गुमान करके भी दिल कांप उठता है, इसीलिये ज़रूरत है कि दुनिया के सब मुल्कों की जनता मिलकर जहांतक मुमकिन हो सके जंग न होने दे, और अगर सारी कोशिश करने पर भी जंग हो ही जावे तो अपने दिलों को उस मुसीबत का सामना करने के लिये मज़बूत कर ले. वियना की सभा में चीनी नुमाइन्दे ने बड़ी सुन्दरता के साथ कहा था कि—हमारी स्थिति तीन बातों में है. पहली तह कि हम जंग नहीं चाहते, दूसरी यह कि हम जंग से नहीं डरते, तीसरी यह कि हम सबका मिलकर रहना है.

ठीक इस समय जब हम यह नोट लिख रहे हैं इनसानी क़ौम के जिस्म के इस ज़हरीले मवाद का सब से अधिक ज़ोर हमारी उत्तर पूरबी सीमा के उस पार फ़ारमूसा के टापू पर दिखाई देता है. चीनी लोग फ़ारमूसा का 'ताइवान' कहते हैं. फ़ारमूसा और उसके आस पास के सब टापू चीन का अंग हैं. सन 1946 से लेकर 1949 तक तीन बरस जब माओ-त्से-तुंग के अधीन चीन की कम्युनिस्ट फ़ौज और च्यांग-काई-शेक की फ़ौज में जंग रही अमरीका की सरकार ने ज़बरदस्ती हर तरह से च्यांग-काई-शेक को मदद दी. बावजूद इस मदद के च्यांग-काई-शेक की फ़ौजें बराबर हारती और पीछे हटती चली गईं. कारन बिलकुल साफ़ था. च्यांग-काई-शेक की फ़ौजों ने विदेशियों के साथ मिलकर मुल्क को वीरान कर रखा था. देश की सारी जनता उन कम्युनिस्ट फ़ौजों के साथ जो "आज़ाद चीन फ़ौज"

ایک مواد کبھی جرمنوں کو جرمنوں سے اور پچھمی یورپ کے لوگوں کو پوربی یورپ کے لوگوں سے لڑانے کی سوچتا ہے، کبھی انڈوچائنا میں فساد کھڑے کرتا ہے، کبھی کوئی بہانا لے کر برٹش گیوگائنا کے لوگوں کی آزادی چھیننا چاہتا ہے، کبھی گوٹے مالا کے دھن پر قبضہ کرنا چاہتا ہے، کبھی دکھن کوریا کو اتر کوریا سے لڑا کر اتر کوریا کی کانوں کو ہتھیانا چاہتا ہے، کبھی فارموسا کو چین سے الگ کر کے دیش گھاتک چیانگ - کائی - شیک کی آڑ میں جب موقعہ مل سکے چین کو پھر سے غلام بنانے کی سوچتا ہے، کبھی گلگٹ میں اپنے فوجی اڈے بنانا چاہتا ہے، کبھی افریقہ میں وہاں کے پرانے اصلی باشندوں کو اپنے ڈھور چرانے کے لئے زندہ رکھ کر اس مہادیپ کی دھن سمپتی کو ہمیشہ کے لئے اپنے قابو میں کرنا چاہتا ہے وغیرہ وغیرہ۔ ظاہر ہے کہ یہ مواد کہیں بھی پھوڑے کی شکل میں نمودار ہو اور کہیں بھی پھوٹے، جب تک پوری دنیا کا جسم اس مواد سے پاک نہیں ہوتا، تب تک دنیا کا کوئی ملک اور کسی ملک کی جنتا اس خطرے سے بچی نہیں کہی جا سکتی۔ اپنی طاقت کو بڑھانے کا خاص ذریعہ ان لوگوں کے لئے جنگ ہے۔ دنیا دو بڑی بڑی جنگوں کی بربادی کو دیکھ چکی ہے۔ تیسری جنگ سے جو بربادی ہو سکتی ہے اس کا گمان کر کے بھی دل کانپ اٹھتا ہے، اسی لئے ضرورت ہے کہ دنیا کے سب ملکوں کی جنتا ملکر جہاں تک ممکن ہو سکے جنگ نہ ہونے دے، اور اگر ساری کوشش کرنے پر بھی جنگ ہو ہی جاوے تو اپنے دلوں کو اس مصیبت کا سامنا کرنے کے لئے مضبوط کر لے۔ وئینا کی سبھا میں چینی نمائندے نے بڑی سندرتا کے ساتھ کہا تھا کہ — ہماری استھتی تین باتوں میں ہے۔ پہلی یہ کہ ہم جنگ نہیں چاہتے، دوسری یہ کہ ہم جنگ سے نہیں ڈرتے، تیسری یہ کہ ہم سب کو ملکر رہنا ہے۔

ٹھیک اس سمے جب ہم یہ نوٹ لکھ رہے ہیں انسانی قوم کے جسم کے اس زہریلے مواد کا سب سے ادھک زور ہماری اتر پوربی سیما کے اس پار فارموسا کے ٹاپو پر دکھائی دیتا ہے۔ چینی لوگ فارموسا کو 'تائیوان' کہتے ہیں۔ فارموسا اور اس کے آس پاس کے سب ٹاپو چین کا انگ ہیں۔ سن 1946 سے لے کر سن 1949 تک تین برس جب ماؤ-تسے-تنگ کے ادھین چین کی کمیونسٹ فوج اور چیانگ - کائی - شیک کی فوج میں جنگ رہی امریکہ کی سرکار نے زبردستی ہر طرح سے چیانگ - کائی - شیک کو مدد دی۔ باوجود اس مدد کے چیانگ - کائی - شیک کی فوجیں برابر ہارتی اور پیچھے ہٹتی چلی گئیں۔ کارن بالکل صاف تھا۔ چیانگ - کائی - شیک کی فوجوں نے ودیشیوں کے ساتھ ملکر ملک کو ویران کر رکھا تھا۔ دیش کی ساری جنتا ان کمیونسٹ فوجوں کے ساتھ جو "آزاد چین فوج"

हमारे सामने काम यह है कि जो मुसीबतें, जो तबाही और जो बरबादी ऐटमी जंग से पैदा हो सकती हैं उनसे दुनिया को बचाया जावे और दुनिया की सब क़ौमों को अपनी अपनी आज़ाद ज़िन्दगी बसर करने, अपने अपने देश के धन दौलत को बढ़ाने और मिलकर सबकी सलामती और सबकी ख़ुशहाली में एक दूसरे को मदद देने का पूरा पूरा मौक़ा दिया जावे."

सभा ने एक ख़ास अपील यूरोप की जनता के नाम जारी की जिसमें जरमनी के दो टुकड़े किये जाने, पच्छिम जरमनी के ग़ैरों के हाथों हथियारबन्द किये जाने और ऐटमी हथियारों के इस्तेमाल का कड़ा विरोध किया गया, और साफ़ ऐलान कर दिया गया कि "यूरोप के लोग इस गुनाह को हरगिज़ होने नहीं देंगे." इस अपील में यह भी साफ़ कह दिया गया है कि ख़ुद पच्छिम जरमनी की जनता इस तरह हथियारों से लैस किये जाने के ख़िलाफ़ है और जरमनी के दोनों हिस्सों की आम जनता मिलना चाहती है और फिर से अपने सारे मुल्क को एक करके दुनिया के सारे मुल्कों की जनता के साथ शान्ति से रहना चाहती है.

पच्छिमी यूरोप को जंग से ख़तरा

इंगलैंड, फ़्रांस, बेलजियम और हालैंड की जनता और एक दरजे तक इन चारों देशों की सरकारें भी जहां तक हो सके जंग से और ख़ासकर ऐटमी जंग से बचना चाह रही हैं. इसकी वजह साफ़ है. 3 जनवरी सन 1955 के इंगलैंड के अख़बार "लन्दन टाइम्स" में एक लेख में निकला था :—

"इंगलैंड के उद्योग धन्दों के बड़े से बड़े केन्द्र सब एक दूसरे के पास पास हैं. इन सब बड़े बड़े केन्द्रों को बिलकुल मिटा देने के लिये पांच या अधिक से अधिक दस बम बिलकुल काफ़ी होंगे. इनके साथ साथ इंगलैंड की आधी आबादी ख़तम हो जाएगी. फ़्रांस के बड़े बड़े केन्द्रों और बेलजियम और हालैंड के बड़े बड़े केन्द्रों को ख़तम कर देने के लिये इस से भी कम बमों की ज़रूरत पड़ेगी. बाक़ी बचे हुए लोगों के दिलों और दिमाग़ों पर इस आफ़त का जो असर होगा वह अलग रहा."

फ़ारमूसा

साम्राज प्रेमी दल को जब यूरोप वालों को यूरोप वालों से लड़ाना और यूरोप में आग लगाना भी इतना आसान दिखाई न दिया तो मालूम होता है निगाहें फिर एक बार एशिया की तरफ़ गईं. सच्ची बात यह है कि मानव समाज के शरीर में साम्राज प्रेम का यह एक ही ज़हरीला मवाद है जो कभी एक जगह फोड़े की शकल में दिखाई देता है और कभी दूसरी जगह फूटता हुआ नज़र आता है. यही

ہمارے سامنے کام یہ ہے کہ جو مصیبتیں' جو تباہی اور جو بربادی ایٹمی جنگ سے پیدا ہوسکتی ہیں اُن سے دنیا کو بچایا جاوے اور دنیا کی سب قوموں کو اپنی اپنی آزاد زندگی بسر کرنے' اپنے اپنے دیش کے دھن دولت کو بڑھانے اور ملکر سب کی سلامتی اور سب کی خوشحالی میں ایک دوسرے کو مدد دینے کا پورا پورا موقع دیا جاوے."

سبھا نے ایک خاص اپیل یورپ کی جنتا کے نام جاری کی جس میں جرمنی کے دو ٹکڑے کئے جانے' پچھم جرمنی کے غیروں کے ہاتھوں ہتیار بند کئے جانے اور ایٹمی ہتیاروں کے استعمال کا کڑا وِرودھ کیا گیا' اور صاف اعلان کر دیا گیا کہ "یورپ کے لوگ اِس گناہ کو ہرگز ہونے نہیں دینگے." اِس اپیل میں یہ بھی صاف کہ دیا گیا ہے کہ خود پچھم جرمنی کی جنتا اِس طرح ہتیاروں سے لیس کئے جانے کے خلاف ہے اور جرمنی کے دونوں حصوں کی عام جنتا ملنا چاہتی ہے اور پھر سے اپنے سارے ملک کو ایک کر کے دنیا کے سارے ملکوں کی جنتا کے ساتھ شانتی سے رہنا چاہتی ہے .

پچھمی یورپ کو جنگ سے خطرہ

اِنگلینڈ' فرانس' بلجیم اور ہالینڈ کی جنتا اور ایک درجہ تک اِن چاروں دیشوں کی سرکاریں بھی جہاں تک ہو سکے جنگ سے اور خاص کر ایٹمی جنگ سے بچنا چاہ رہی ہیں . اِس کی وجہ صاف ہے . 3 جنوری سن 1955 کے انگلینڈ کے اخبار "لنڈن ٹائمس" میں ایک لیکھ میں نکلا تھا :—

"اِنگلینڈ کے ادیوگ دھندوں کے بڑے سے بڑے کیندر سب ایک دوسرے کے پاس پاس ہیں . اِن سب بڑے بڑے کیندروں کو بالکل مٹا دینے کے لئے پانچ یا ادھک سے ادھک دس بم بالکل کافی ہونگے . اِن کے ساتھ ساتھ اِنگلینڈ کی آدھی آبادی ختم ہو جائے گی . فرانس کے بڑے بڑے کیندروں اور بلجیم اور ہالینڈ کے بڑے بڑے کیندروں کو ختم کر دینے کے لئے اس سے بھی کم بموں کی ضرورت پڑے گی . باقی بچے ہوئے لوگوں کے دلوں اور دماغوں پر اِس آفت کا جو اثر ہوگا وہ الگ رہا ."

فارموسا

سامراج پریمی دل کو جب یورپ والوں کو یورپ والوں سے لڑانا اور یورپ میں آگ لگانا بھی اتنا آسان دکھائی نہ دیا تو معلوم ہوتا ہے نگاہیں پھر ایک بار ایشیا کی طرف گئیں. سچی بات یہ ہے کہ مانو سماج کے شریر میں سامراج پریم کا یہ ایک ہی زہریلا مواد ہے جو کبھی ایک جگہ پھوڑے کی شکل میں دکھائی دیتا ہے اور کبھی دوسری جگہ پھوٹتا ہوا نظر آتا ہے . یہی

उसूलों की रक्षा के लिये चीन और रूस दोनों के साथ हिन्दुस्तान कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा है और खड़ा रहेगा."

आख़ीर में हमने कहा कि :—"भारत को विश्वास है कि आजकल के बादल छटेंगे और आपकी यह शानदार सभा अपना ऊंचा उद्देश पूरा करेगी, दुनिया की शान्ति, तरक़्क़ी और ख़ुशहाली क़ायम रहेगी और उसी के ज़रिये दुनिया की सब क़ौमों की एकता चमक उठेगी. हिन्दुस्तान दिल से चाहता है कि ऐटम बम जैसे इनसानी क़त्लेआम के हथियारों का इस्तेमाल बन्द कर दिया जावे और जहांतक मुमकिन हो दुनिया जंग से बची रहे. पर इसके साथ ही अगर दुनिया को इस अग्नि परीक्षा में से निकलना ही पड़े तो हिन्दुस्तान ज़रा भी इससे भयभीत नहीं है. आप सबके साथ वह इस आज़माइश का मुक़ाबला करने के लिये तैयार है, क्योंकि हिन्दुस्तान को विश्वास है कि दुनिया की जनता की शक्ति के सामने आख़ीर में कोई हथियार या कोई ज़ुल्म नहीं ठहर सकता. हम इस मुसीबत से बचने और दुनिया को बचाने की भरसक कोशिश करेंगे. लेकिन अगर हमें इस मुसीबत से गुज़रना ही पड़ा तो हमें यह भी विश्वास है कि दुनिया की जनता इस आज़माइश में से उसी तरह चमकती हुई बाहर आएगी जिस तरह आग में से सोना, ज़ुल्मों में से सचाई या सलीब पर से हज़रत ईसा."

वियना के कुछ प्रस्ताव

वियना की सभा ने जो प्रस्ताव अपनी 19 तारीख़ की बैठक में पास किये उनमें और बातों के साथ कहा गया है कि :—

"दुनिया की जनता पिछले तजरबे से अच्छी तरह जानती है कि दुनिया को दो अखाड़ों (Blocs) में बान्ट देने, अपना अपना बल और अपनी अपनी छावनियां बढ़ाने और अपने अन्तर्राष्ट्रीय अरमानों को पूरा करने के लिये जंग करने की इस पालिसी का नतीजा केवल यही हो सकता है कि माली अराजकता, बरबादी, ग़रीबी और लड़ाई झगड़े बढ़ें. दुनिया की यह अमन तहरीक दुनिया की जनता से अपील करती है कि वह इन नए ख़तरों की अहमियत को समझे और जिस तरह भी हो अपने को उनसे बचाने की कोशिश करे. दुनिया के लोग अगर मिलकर कोशिश करेंगे तो वह इन अलग अलग अखाड़ों की पालिसी को ख़त्म कर सकेंगे. वह दोनों तरफ़ की सरकारों को मजबूर कर सकते हैं कि वह शान्ति के साथ एक दूसरे से बातचीत करें, हथियारों को अलग कर दें और ऐटम की नई शक्ति को केवल दुनिया के रचनात्मक कामों और सबकी भलाई के लिये इस्तेमाल करें. मानव समाज चुपचाप ऐटमी जंग की आग में ढकेला जाना गवारा नहीं करेगा....

اُصولوں کی رکشا کے لئے چین اور روس دونوں کے ساتھ ھندستان کندھے سے کندھا ملا کر کھڑا ھے اور کھڑا رھے گا."

آخیر میں ھم نے کہا کہ :—" بھارت کو وشواس ھے کہ آجکل کے بادل چھٹینگے اور آپ کی یہ شاندار سبھا اپنا اونچا اُدیش پورا کرے گی، دنیا کی شانتی، ترقی اور خوشحالی قائم رھے گی اور اُسی کے ذریعہ دنیا کی سب قوموں کی ایکتا چمک اُٹھے گی. ھندستان دل سے چاھتا ھے کہ ایٹم بم جیسے اِنسانی قتل عام کے ھتیاروں کا استعمال بند کر دیا جاوے اور جہاں تک ممکن ھو دنیا جنگ سے بچی رھے. پر اِس کے ساتھ ھی اگر دنیا کو اِس اگنی پریکشا میں سے نکلنا ھی پڑے تو ھندستان ذرا بھی اِس سے بھے بھیت نہیں ھے. آپ سب کے ساتھ وہ اِس آزمائش کا مقابلہ کرنے کے لئے تیار ھے، کیونکہ ھندستان کو وشواس ھے کہ دنیا کی جنتا کی شکتی کے سامنے آخیر میں کوئی ھتیار یا کوئی ظلم نہیں ٹھہر سکتا. ھم اِس مصیبت سے بچنے اور دنیا کو بچانے کی بھرسک کوشش کرینگے. لیکن اگر ھمیں اِس مصیبت سے گزرنا ھی پڑا تو ھمیں یہ بھی وشواس ھے کہ دنیا کی جنتا اِس آزمائش میں سے اُسی طرح چمکتی ھوئی باھر آئے گی جس طرح آگ میں سے سونا، ظلموں میں سے سچائی یا صلیب پر سے حضرت عیسیٰ."

وئینا کے کچھ پرستاؤ

وئینا کی سبھا نے جو پرستاؤ اپنی 19 تاریخ کی بیٹھک میں پاس کئے اُن میں اور باتوں کے ساتھ کہا گیا ھے کہ :—

" دنیا کی جنتا پچھلے تجربے سے اچھی طرح جانتی ھے کہ دنیا کو دو اکھاڑوں (Blocs) میں بانٹ دینے، اپنا اپنا بل اور اپنی اپنی چھاؤنیاں بڑھانے، اور اپنے انتر راشٹریہ ارمانوں کو پورا کرنے کے لئے جنگ کرنے کی اِس پالیسی کا نتیجہ کیول یہی ھو سکتا ھے کہ مالی اراجکتا، بربادی، غریبی اور لڑائی جھگڑے بڑھیں. دنیا کی یہ امن تحریک دنیا کی جنتا سے اپیل کرتی ھے کہ وہ اِن نئے خطروں کی اھمیت کو سمجھے اور جس طرح بھی ھو اپنے کو اُن سے بچانے کی کوشش کرے. دنیا کے لوگ اگر مل کر کوشش کرینگے تو وہ اِن الگ الگ اکھاڑوں کی پالیسی کو ختم کر سکیں گے. وہ دونوں طرف کی سرکاروں کو مجبور کر سکتے ھیں کہ وہ شانتی کے ساتھ ایک دوسرے سے بات چیت کریں، ھتیاروں کو الگ کر دیں اور ایٹم کی نئی شکتی کو کیول دنیا کے رچناتمک کاموں اور سب کی بھلائی کے لئے استعمال کریں. مانو سماج چپ چاپ ایٹمی جنگ کی آگ میں ڈھکیلا جانا گوارا نہیں کرے گا.....

'फ़ुज़ूलख़र्च बेटे की कहानी' और 'खोई हुई भेड़ की कहानी' हिन्दुस्तानियों को अच्छी लगती हैं और उनके दिलों और दिमाग़ों में एक ख़ास असर पैदा करती हैं. यह बात ध्यान देने की है कि अंग्रेज़ी राज के ख़िलाफ़ लड़ने के दिनों में और जब से हमने आज़ादी हासिल की है तब से अब तक हिन्दुस्तानियों और अंग्रेज़ों के बीच एक दूसरे से नफ़रत या एक दूसरे की बुराई इतनी कम दिखाई दी है. हम अंग्रेज़ी राज से नफ़रत करते थे. हम उसे शैतानी राज मानते थे. पर इसके बावजूद हम अंग्रेज़ों से प्यार करते हैं और अंग्रेज़ क़ौम में जो बहुत से अच्छे अच्छे गुण हैं उनकी हमारे दिल में क़द्र है और हमेशा रहेगी."

आजकल की समस्याओं की चरचा करते हुए हमने कहा कि :—

"हथियारबन्द लड़ाई में भी चीज़ों की कुछ हद होती है. हमारे सारे इतिहास में उन सब हथियारबन्द लड़ाइयों में जिनमें हिन्दुस्तान ने हिस्सा लिया आपको सैकड़ों और हज़ारों मिसालें मिलेंगी जिनमें अगर दोनों लड़ने वालों में से एक के हाथ से तलवार गिर गई तो सामने के बहादुर ने उस समय तक के लिये अपना हाथ रोक लिया जबतक कि पहले सिपाही ने अपनी तलवार फिर से न संभाल ली. निहत्थे और बेगुनाह लोगों पर हमला करना हम कायरता समझते हैं. हमें उसमें नीचता और दुष्टता की गन्ध आती है. हर हिन्दुस्तानी समझता है कि जो लोग ठन्डे ठन्डे बैठ कर बेगुनाह और निहत्थे मरदों, औरतों और बच्चों, यहांतक कि चारपाइयों पर लेटे हुए बीमारों और माओं की गोद में हुमकते हुए बच्चों को क़तल करने की तजवीज़ें कर सकते हैं वह मुहज़्ज़ब यानी सभ्य कहलाने या इनसान समझे जाने के भी हक़दार नहीं हैं. आदमी के अन्दर इस तरह के शैतानी रुजहानों को देखकर भारत के लोग दुख और ग़ैरत से भर जाते हैं. मैं आपको यक़ीन दिलाता हूं कि जो भी नेक कोशिशें आप इनसानी ख़ुदकुशी के इन रुजहानों को रोकने और दुनिया की शान्ति और ख़ुशहाली को बचाए रखने के लिये कर रहे हैं और करेंगे उन कोशिशों में समूचा भारत आप के साथ है और सदा आप के साथ रहेगा."

भारत, चीन और रूस के बढ़ते हुए सम्बन्धों और दोनों तरफ़ से डेलीगेशनों के आने जाने की चर्चा करते हुए हमने कहा कि :—

"हमें पूरा विश्वास है कि चीन और रूस दोनों अमन चाहते हैं, जंग नहीं चाहते. हमें विश्वास है कि वह दोनों उन देशों के साथ जिन का राजकाजी या माली संगठन उनसे नहीं मिलता, अमन से रहना चाहते हैं. वह किसी दूसरे के मामले में ज़बरदस्ती दख़ल देना नहीं चाहते. इसलिये इन ऊंचे

فضول خرچ بیٹے کی کہانی' اور کھوئی ہوئی بھیڑ کی کہانی' ہندستانیوں کو اچھی لگتی ہیں اور اُن کے دلوں اور دماغوں میں ایک خاص اثر پیدا کرتی ہیں۔ یہ بات دھیان دینے کی ہے کہ انگریزی راج کے خلاف لڑنے کے دنوں میں اور جب سے ہم نے آزادی حاصل کی ہے تب سے اب تک ہندستانیوں اور انگریزوں کے بیچ ایک دوسرے سے نفرت یا ایک دوسرے کی برائی اتنی کم دکھائی دی ہے۔ ہم انگریزی راج سے نفرت کرتے تھے۔ ہم اُسے شیطانی راج مانتے تھے۔ پر اِس کے باوجود ہم انگریزوں سے پیار کرتے ہیں اور انگریز قوم میں جو بہت سے اچھے اچھے گن ہیں اُن کی ہمارے دل میں قدر ہے اور ہمیشہ رہے گی۔"

آج کل کی سمسیاؤں کی چرچا کرتے ہوئے ہم نے کہا کہ:—

"ہتھیار بند لڑائی میں بھی چیزوں کی کچھ حد ہوتی ہے۔ ہمارے سارے اِتہاس میں اُن سب ہتھیار بند لڑائیوں میں جن میں ہندستان نے حصہ لیا آپ کو سیکڑوں اور ہزاروں مثالیں ملیں گی جن میں اگر دونوں لڑنے والوں میں سے ایک کے ہاتھ سے تلوار گر گئی تو سامنے کے بہادر نے اُس سمے تک کے لئے اپنا ہاتھ روک لیا جب تک کہ پہلے سپاہی نے اپنی تلوار پھر سے نہ سنبھال لی۔ نہتھے اور بےگناہ لوگوں پر حملہ کرنا ہم کایرتا سمجھتے ہیں۔ ہمیں اُس میں نیچتا اور دشٹتا کی گندھ آتی ہے۔ ہر ہندستانی سمجھتا ہے کہ جو لوگ ٹھنڈے ٹھنڈے بیٹھکر بےگناہ اور نہتھے مردوں' عورتوں اور بچوں' یہاں تک کہ چارپائیوں پر لیٹے ہوئے بیماروں اور ماؤں کی گود میں ہمکتے ہوئے بچوں کو قتل کرنے کی تجویزیں کر سکتے ہیں وہ مہذب یعنی سبھیہ کہلانے یا اِنسان سمجھے جانے کے بھی حقدار نہیں ہیں۔ آدمی کے اندر اِس طرح کے شیطانی رجحانوں کو دیکھکر بھارت کے لوگ دکھ اور غیرت سے بھر جاتے ہیں۔ میں آپ کو یقین دلاتا ہوں کہ جو بھی نیک کوشش آپ اِنسانی خودکشی کے اِن رجحانوں کو روکنے اور دنیا کی شانتی اور خوشحالی کو بچائے رکھنے کے لئے کر رہے ہیں اور کریں گے ان کوششوں میں سموچا بھارت آپ کے ساتھ ہے اور سدا آپ کے ساتھ رہے گا۔"

بھارت' چین اور روس کے بڑھتے ہوئے سمبندھوں اور دونوں طرف سے ڈیلیگیشنوں کے آنے جانے کی چرچا کرتے ہوئے ہم نے کہا کہ:—

"ہمیں پورا وشواس ہے کہ چین اور روس دونوں امن چاہتے ہیں' جنگ نہیں چاہتے۔ ہمیں وشواس ہے کہ وہ دونوں اُن دیشوں کے ساتھ جن کا راج کاجی یا مالی سنگٹھن اُن سے نہیں ملتا' امن سے رہنا چاہتے ہیں۔ وہ کسی دوسرے کے معاملے میں زبردستی دخل دینا نہیں چاہتے۔ اِس لئے اِن اُونچے

देते हैं—पहला यह है कि सारा मानव समाज एक कुनबा है (वसुधैव कुटुम्बकं) और हम सब को एक दूसरे के साथ वैसा ही बरताव करना चाहिये जैसा एक कुनबे के लोग एक दूसरे के साथ करते हैं. हमारे पुराने ऋषियों ने सारे इनसानी समाज की तुलना एक शरीर यानी एक जिस्म के साथ की है जिसके हम सब हाथ पैर वग़ैरा हैं. ज़ाहिर है कि अगर हाथ या पैर में दर्द हो तो सर आराम से नहीं रह सकता. हमारा दूसरा उसूल यह है, और यह पहले उसूल से ही साफ़ निकलता है, कि हमें किसी दूसरे को तकलीफ़ नहीं देनी चाहिये (अहिंसा). इस सदी के शुरू में हमारे महान नेता महात्मा गांधी का सामने आना और हिन्दुस्तान का उनकी अनोखी रहनुमाई में अहिन्सा के ज़रिये विदेशी राज से आज़ादी के लिये लड़ना कोई अचानक बातें नहीं थीं. इनकी जड़ें हमारे इतिहास में, हमारी ऊंची से ऊंची परम्पराओं में और हमारे जीवन में गहरी गई हुई थीं. मैं बड़ी नम्रता के साथ अपील करना चाहता हूं कि दूसरे देशों के हमारे साथी हिन्दुस्तान की आज़ादी की लड़ाई के इतिहास को बिना पहले से राय क़ायम किये और हमदर्दी के साथ पढ़ने और समझने की कोशिश करें. क़ुदरती तौर पर हिन्दुस्तान जंग को पसन्द नहीं करता. हम यूं भी जंग के ख़िलाफ़ हैं और मुल्कों मुल्कों के बीच के झगड़े तय करने के लिये हम जंग को हरगिज़ अच्छा तरीक़ा नहीं मानते."

भारत सरकार की उन कोशिशों का ज़िक्र करते हुए जो वह मुल्कों मुल्कों के बीच के झगड़ों को आपसी बातचीत से तय कराने के लिये करती रही है हमने कहा कि—"भारत को इस बात का पक्का विश्वास है कि दुनिया के सब झगड़े चाहे वह राजकाजी हों, माली हों या कोई और शान्ति के साथ बातचीत करके तय किये जा सकते हैं, बशर्तेकि हम में काफ़ी सब्र हो और हमारे दिलों में नेकी हो."

हमने यह भी कहा कि :—

"मैंने हिन्दुस्तान की जो राय आपके सामने रक्खी है उससे एक और नतीजा अपने आप निकलता है और वह बहुत अहम है. हम बुराई और बुराई करने वाले में साफ़ फ़रक़ करते हैं. हमें बुराई से नफ़रत है पर बुराई करने वाले से हम प्यार करते हैं. हमें इसमें कोई बात अनोखी या परस्पर विरोधी दिखाई नहीं देती. हमारे कुनबे का अगर कोई आदमी जिस्मानी तौर पर बीमार पड़ जाता है तो हम में से कोई उस से नफ़रत नहीं करता. इसके विपरीत उसके रोग के कारन हम उसे और भी अधिक प्यार करते हैं, उसकी सेवा करते हैं और उसकी तीमारदारी करते हैं. तब फिर अगर कोई हमारा भाई किसी नैतिक यानी इख़लाक़ी बीमारी का शिकार हो जाय तो हम उसके साथ दूसरी तरह का बरताव क्यों करें? इन्जील के अन्दर

دیتے ہیں — پہلا یہ ہے کہ سارا مانو سماج ایک کنبہ ہے (وسو دھیو کٹمبکم) اور ہم سب کو ایک دوسرے کے ساتھ ویسا ہی برتاؤ کرنا چاہئے جیسا ایک کنبے کے لوگ ایک دوسرے کے ساتھ کرتے ہیں. ہمارے پرانے رشیوں نے سارے انسانی سماج کی تولنا ایک شریر یعنی ایک جسم کے ساتھ کی ہے جس کے ہم سب ہاتھ پیر وغیرہ ہیں. ظاہر ہے کہ اگر ہاتھ یا پیر میں درد ہو تو سر آرام سے نہیں رہ سکتا. ہمارا دوسرا اُصول یہ ہے، اور یہ پہلے اُصول سے ہی صاف نکلتا ہے، کہ ہمیں کسی دوسرے کو تکلیف نہیں دینی چاہئے (اہنسا). اِس صدی کے شروع میں ہمارے مہان نیتا مہاتما گاندھی کا سامنے آنا اور ہندستان کا اُن کی انوکھی رہنمائی میں اہنسا کے ذریعہ ودیشی راج سے آزادی کے لئے لڑنا کوئی اچانک باتیں نہیں تھیں. ان کی جڑیں ہمارے اتہاس میں، ہماری اونچی سے اونچی پرمپراؤں میں اور ہمارے جیون میں گہری گئی ہوئی تھیں. میں بڑی نمرتا کے ساتھ اپیل کرنا چاہتا ہوں کہ دوسرے دیشوں کے ہمارے ساتھی ہندستان کی آزادی کی لڑائی کے اتہاس کو بنا پہلے سے رائے قائم کئے اور ہمدردی کے ساتھ پڑھنے اور سمجھنے کی کوشش کریں. قدرتی طور پر ہندستان جنگ کو پسند نہیں کرتا. ہم یوں بھی جنگ کے خلاف ہیں اور ملکوں ملکوں کے بیچ کے جھگڑے طے کرنے کے لئے ہم جنگ کو ہرگز اچھا طریقہ نہیں مانتے."

بھارت سرکار کی اُن کوششوں کا ذکر کرتے ہوئے جو وہ ملکوں ملکوں کے بیچ کے جھگڑوں کو آپسی بات چیت سے طے کرانے کے لئے کرتی رہی ہے ہم نے کہا کہ — "بھارت کو اِس بات کا پکا وشواس ہے کہ دنیا کے سب جھگڑے چاہے وہ راج کاجی ہوں، مالی ہوں یا کوئی اور شانتی کے ساتھ بات چیت کرکے طے کئے جاسکتے ہیں، بشرطیکہ ہم میں کافی صبر ہو اور ہمارے دلوں میں نیکی ہو."

ہم نے یہ بھی کہا کہ :—

"میں نے ہندستان کی جو رائے آپ کے سامنے رکھی ہے اُس سے ایک اور نتیجہ اپنے آپ نکلتا ہے اور وہ بہت اہم ہے. ہم برائی اور برائی کرنے والے میں صاف فرق کرتے ہیں. ہمیں برائی سے نفرت ہے پر برائی کرنے والے سے ہم پیار کرتے ہیں. ہمیں اِس میں کوئی بات انوکھی یا پرسپر ورودھی دکھائی نہیں دیتی. ہمارے کنبہ کا اگر کوئی آدمی جسمانی طور پر بیمار پڑ جاتا ہے تو ہم میں سے کوئی اُس سے نفرت نہیں کرتا. اِس کے وپریت اُس کے روگ کے کارن ہم اُسے اور بھی ادھک پیار کرتے ہیں، اُس کی سیوا کرتے ہیں اور اس کی تیمارداری کرتے ہیں. تب پھر اگر کوئی ہمارا بھائی کسی نیتک یعنی اخلاقی بیماری کا شکار ہو جائے تو ہم اُس کے ساتھ دوسری طرح کا برتاؤ کیوں کریں؟ انجیل کے اندر

भाशन में नाटो कौन्सिल के उस फैसले की तरफ़ बैठक का ध्यान दिलाया और दुनिया के लोगों से अपील की कि वह इस खतरे से मानव जाति को बचाने के लिये अपनी आवाज़ बुलन्द करें.

बैठक में सब फैसले एक राय से किये गए. 19 जनवरी की बैठक में इन पंक्तियों के लेखक की सदारत में यह तय हुआ कि नीचे लिखी अपील के ऊपर सब मुल्कों के अधिक से अधिक आदमियों के दस्तखत कराए जायें ताकि दुनिया के करोड़ों बेगुनाह इनसानों को इस आफ़त से बचाने के लिये हवा तय्यार हो सके और साम्राज प्रेमियों का दिल बदल सके. अपील का मसौदा यह है :—

"ऐटमी लड़ाई की तय्यारियों के ख़िलाफ़ अपील"

"आज कुछ सरकारें ऐटम बमों की लड़ाई छेड़ देने की तय्यारियां कर रही हैं.

"वह लोगों से यह मनवाने की कोशिश कर रही हैं कि ऐटम बमों की लड़ाई जरूरी है.

"इस तरह के हथियारों के उपयोग का नतीजा आख़ीर में एक दूसरे को मिटा डालना होगा.

"हम ऐलान करते हैं कि जो सरकार ऐटमी हथियारों की लड़ाई छेड़ेगी उस पर से लोगों का ऐतबार बिल्कुल जाता रहेगा और दुनिया के सब लोग और सब क़ौमे उस पर लानत भेजेंगी.

"अब और हमेशा हम उनका विरोध करेंगे जो ऐटमी लड़ाई की तय्यारी और उसकी व्यवस्था करेंगे.

"हम ज़ोरों के साथ यह मांग करते हैं कि ऐटमी हथियारों के जितने अम्बार जहां भी मौजूद हों उन सब को नष्ट कर दिया जावे और आगे के लिये इस तरह के हथियारों का बनाया जाना एकदम बन्द कर दिया जाये."

वीयना की बैठक में यह भी तय हुआ कि मई सन 1955 में फ़िनलैन्ड की राजधानी हिलसिनकी में तमाम मुल्कों के और हर राजकाजी विचार के इस तरह के लोगों की एक बहुत बड़ी सभा (World Assembly) की जावे जो जंग के ख़िलाफ़ और शान्ति के हक़ में हों, ताकि सब मिलकर इस सारी हालत पर ग़ौर करें और दुनिया को ऐटमी जंग के भयंकर नतीजों से बचाने की कोशिश करें.

भारत की स्थिति

19 जनवरी की बैठक में इस मामले पर अपने देश की स्थिति को बताते हुए हमने अपने भाशन में कहा कि :—

"भारत परम्परा से शान्ति का उपासक है. हमारे हज़ारों बरस के इतिहास में, हमारे सारे जीवन और सारे साहित्य में, जो उसूल सबसे अधिक चमकते हुए दिखाई

بھاشن میں ناٹو کونسل کے اُس فیصلے کی طرف بیٹھک کا دھیان دلایا اور دنیا کے لوگوں سے اپیل کی کہ وہ اِس خطرے سے مانو جاتی کو بچانے کے لئے اپنی آواز بلند کریں ۔

بیٹھک میں سب فیصلے ایک رائے سے کئے گئے ۔ 19 جنوری کی بیٹھک میں اِن پنکتیوں کے لیکھک کی صدارت میں یہ طے ہوا کہ نیچے لکھی اپیل کے اوپر سب ملکوں کے ادھک سے ادھک آدمیوں کے دستخط کرلیے جائیں تاکہ دنیا کے کروڑوں بےگناہ انسانوں کو اِس آفت سے بچانے کے لئے ہوا تیار ہوسکے اور سامراج پریمیوں کا دل بدل سکے ۔ اپیل کا مسودہ یہ ہے :—

"ایٹمی لڑائی کی تیاریوں کے خلاف اپیل"

"آج کچھ سرکاریں ایٹم بموں کی لڑائی چھیڑ دینے کی تیاریاں کررہی ہیں ۔

"وہ لوگوں سے یہ منوانے کی کوشش کررہی ہیں کہ ایٹم بموں کی لڑائی ضروری ہے ۔

"اِس طرح کے ہتھیاروں کے اُپیوگ کا نتیجہ آخیر میں ایک دوسرے کو مٹا ڈالنا ہوگا ۔

"ہم اعلان کرتے ہیں کہ جو سرکار ایٹمی ہتھیاروں کی لڑائی چھیڑے گی اُس پر سے لوگوں کا اعتبار بالکل جاتا رہےگا اور دنیا کے سب لوگ اور سب قومیں اُس پر لعنت بھیجیں گی ۔

"اب اور ہمیشہ ہم اُن کا ورودھ کرینگے جو ایٹمی لڑائی کی تیاری اور اُس کی ویوستھا کرینگے ۔

"ہم زوروں کے ساتھ یہ مانگ کرتے ہیں کہ ایٹمی ہتھیاروں کے جتنے انبار جہاں بھی موجود ہوں اُن سب کو نشٹ کردیا جاوے اور آگے کے لئے اِس طرح کے ہتھیاروں کا بنایا جانا ایکدم بند کردیا جائے ۔"

وئینا کی بیٹھک میں یہ بھی طے ہوا کہ مئی سن 1955 میں فن لینڈ کی راجدھانی ھلسنکی میں تمام ملکوں کے اور ہر راجکاجی وچار کے اِس طرح کے لوگوں کی ایک بہت بڑی سبھا (World Assembly) کی جاوے جو جنگ کے خلاف اور شانتی کے حق میں ہوں، تاکہ سب ملکر اِس ساری حالت پر غور کریں اور دنیا کو ایٹمی جنگ کے بھینکر نتیجوں سے بچانے کی کوشش کریں ۔

بھارت کی استھتی

19 جنوری کی بیٹھک میں اِس معاملے پر اپنے دیش کی استھتی کو بتاتے ہوئے ہم نے اپنے بھاشن میں کہا کہ :—

"بھارت پرمپرا سے شانتی کا اُپاسک ہے ۔ ہمارے ہزاروں برس کے اتہاس میں، ہمارے سارے جیون اور سارے ساہتیہ میں، جو اصول سب سے ادھک چمکتے ہوئے دکھائی

तय हुआ कि यूरोप में या एशिया में ऐटम बम और हाइड्रोजिन बम की लड़ाई छेड़ देने के लिये अमरीका की सरकार को अपने दूसरे साथियों यानी इंगलैन्ड, फ्रांस वग़ैरा की सरकारों से सलाह करने की ज़रूरत न होगी. अमरीका की सरकार को पूरा अधिकार है कि दुनिया में जब जहां ठीक समझे इस तरह के बमों की लड़ाई शुरू कर दे.

इसके साफ़ मानी यह हैं कि अगर एशिया के लोगों को एशिया के लोगों से आसानी के साथ नहीं लड़ाया जा सकता तो यूरोप के लोगों को यूरोप के लोगों से लड़ाकर ही अपना मतलब पूरा किया जाय.

वियना की शान्ति सभा

इस पर यूरोप के अमनपसन्द लोगों के अन्दर जिन्हें अपने बाल बच्चे और घरबार प्यारे हैं एक तहलका मच गया. 17, 18 और 19 जनवरी सन 1955 को आस्ट्रिया की राजधानी वियना में वर्ल्ड कौन्सिल आफ़ पीस (दुनिया भर के क़ौमों की अमन कौन्सिल) की ब्युरो यानी वरकिंग कमेटी की एक ज़रूरी बैठक बुलाई गई. उस बैठक में इंगलैन्ड, फ्रांस, इटली, पच्छिमी जरमनी, पूरबी जरमनी, बेलजियम, हालैन्ड, सुइज़रलैन्ड जैसे यूरोप के देशों के अलावा रूस, चीन, भारत, जापान, इन्डोनीशिया, ब्रह्मा, टरकी, ईरान, कैनेडा, आस्ट्रेलिया, दक्खिन अमरीका के देश, वग़ैरा वग़ैरा यानी एक अमरीका को छोड़कर दुनिया के लगभग सब देशों के नुमाइन्दे मौजूद थे. इन पंक्तियों का लेखक भी वियना की उस बैठक में मौजूद था.

वियना की बैठक में इस बात पर ग़ौर किया गया कि ऐटम बमों की उस लड़ाई के नतीजे जिसकी यह साम्राज प्रेमी तजवीज़ कर रहे हैं कितने भयंकर हो सकते हैं. इस तरह के ख़तरनाक बम दोनों दलों के पास काफ़ी तादाद में मौजूद हैं. इनमें से कुछ नए बम ऐसे हैं जो उस बम के मुक़ाबले में, जो दस साल पहले जापान के शहर हीरोशिमा पर फेंका गया था, पच्चीस हज़ार गुना ज़्यादा ताक़तवर हैं. सब मुल्कों के बड़े से बड़े साइन्सदानों की राय है कि अगर इस तरह की लड़ाई एक बार छिड़ गई तो वह "दोनों तरफ़ से आत्महत्या" (Mutual Suicide) की लड़ाई होगी, और मुमकिन है कि उसके नतीजे की शकल में तमाम इनसानी नसल दुनिया से नेस्त नाबूद हो जावे. यह भी मुमकिन है कि ऐसी लड़ाई से हमारी इस धरती टुकड़े हो जावें और कोई जानदार इस पर न बच सके.

वर्ल्ड कौन्सिल आफ़ पीस के प्रेसीडेन्ट प्रोफ़ेसर जूलियो क्यूरी ने, जो इस समय दुनिया की पाक से पाक और महान से महान आत्माओं में से हैं, जिनका दिल मानव जाति के प्रेम से लबालब भरा हुआ है, और जो ख़ुद दुनिया के बड़े से बड़े साइन्सदानों में गिने जाते हैं, अपने शुरू के

طے ھوا کہ یورپ میں یا ایشیا میں ایٹم بم اور ھائڈروجن بم کی لڑائی چھیڑ دینے کے لئے امریکہ کی سرکار کو اپنے دوسرے ساتھیوں یعنی انگلینڈ، فرانس وغیرہ کی سرکاروں سے صلاح کرنے کی ضرورت نہ ھوگی۔ امریکہ کی سرکار کو پورا ادھیکار ھے کہ دنیا میں جب جہاں ٹھیک سمجھے اس طرح کے بموں کی لڑائی شروع کردے۔

اِس کے صاف معنی یہ ھیں کہ اگر ایشیا کے لوگوں کو ایشیا کے لوگوں سے آسانی کے ساتھ نہیں لڑایا جاسکتا تو یورپ کے لوگوں کو یورپ کے لوگوں سے لڑاکر ھی اپنا مطلب پورا کیا جائے

وئینا کی شانتی سبھا

اِس پر یورپ کے امن پسند لوگوں کے اندر جنھیں اپنے بال بچے اور گھر بار پیارے ھیں اِک تہلکہ مچ گیا۔ 17، 18 اور 19 جنوری سن 1955 کو آسٹریا کی راجدھانی وئینا میں ورلڈ کونسل آف پیس (دنیا بھر کے قوموں کی امن کونسل) کی بیورو یعنی ورکنگ کمیٹی کی ایک ضروری بیٹھک بلائی گئی۔ اِس بیٹھک میں انگلینڈ، فرانس، اِٹلی، پچھمی جرمنی، پوربی جرمنی، بلجیم، ھالینڈ، سوئزرلینڈ جیسے یورپ کے دیشوں کے علاوہ روس، چین، بھارت، جاپان، انڈونیشیا، برھما، ترکی، ایران، کنیڈا، آسٹریلیا، دکھن امریکہ کے دیش وغیرہ وغیرہ یعنی ایک امریکہ کو چھوڑ کر دنیا کے لگ بھگ سب دیشوں کے نمائندے موجود تھے۔ ان پنکتیوں کا لیکھک بھی وئینا کی اُس بیٹھک میں موجود تھا۔

وئینا کی بیٹھک میں اِس بات پر غور کیا گیا کہ ایٹم بموں کی اُس لڑائی کے نتیجے جس کی یہ سامراج پریمی تجویز کررھے ھیں کتنے بھینکر ھوسکتے ھیں۔ اِس طرح کے خطرناک بم دونوں دلوں کے پاس کافی تعداد میں موجود ھیں۔ اِن میں سے کچھ نئے بم ایسے ھیں جو اُس بم کے مقابلے میں، جو دس سال پہلے جاپان کے شہر ھیروشما پر پھینکا گیا تھا، پچیس ھزار گنا زیادہ طاقتور ھیں۔ سب ملکوں کے بڑے سے بڑے سائنس دانوں کی رائے ھے کہ اگر اِس طرح کی لڑائی ایک بار چھڑ گئی تو وہ "دونوں طرف سے آتم ھتیا" (Mutual Suicide) کی لڑائی ھوگی، اور ممکن ھے کہ اُس کے نتیجے کی شکل میں تمام انسانی نسل دنیا سے نیست نابود ھو جاوے۔ یہ بھی ممکن ھے کہ ایسی لڑائی سے ھماری اِس دھرتی کے ٹکڑے ھو جاویں اور کوئی جاندار اِس پر نہ بچ سکے۔

ورلڈ کونسل آف پیس کے پریسیڈنٹ پروفیسر جولیو کیوری نے، جو اِس سمے دنیا کی پاک سے پاک اور مہان سے مہان آتماؤں میں سے ھیں، جن کا دل مانو جاتی کے پریم سے لبالب بھرا ھوا ھے، اور جو خود دنیا کے بڑے سے بڑے سائنس دانوں میں گنے جاتے ھیں، اپنے شروع کے

अभी चार दिन हुए एशिया के कुछ देशों खासकर फ़ारमोसा, कोरिया, जापान, फ़िलिप्पाइन, न्युज़ीलैन्ड, और आस्ट्रेलिया के साथ अलग फ़ौजी समझौते करके अमरीका की सरकार ने इस महाद्वीप के अन्दर अपना एक ज़बरदस्त फ़ौजी संगठन खड़ा करने की कोशिश शुरू की. यह कोशिश बराबर जारी है. ज़िम्मेदार अमरीकी हाकिमों ने खुले शब्दों में कहना शुरू किया कि हम "एशिया वालों को एशिया वालों से लड़ाकर" अपना मतलब पूरा करेंगे. चाल बहुत पुरानी है. पर अब ज़माना तेज़ी से बदल रहा है. इस खुली आवाज़ के सुनाई देते ही एशिया के लोग चौकन्ने हो गए. एशियाई क़ौमों की कानफ़्रेन्सें हुईं, हो रही हैं और होने जा रही हैं. हिन्दुस्तान और चीन ने एकता के पांच सुनहरे उसूलों का एलान करके आपस में दोस्ती का समझौता किया. यह पांच उसूल बहुत सीधे साधे हैं :—एक दूसरे की आज़ादी और सलामती का आदर करना, एक दूसरे के अन्दर के मामलों में किसी तरह का दख़ल न देना, मिलकर रहना, दूसरे पर हमला न करना और आपसी तिजारत वग़ैरा में वह तरीक़ा बरतना जो दोनों को मन्ज़ूर हो और जिस से दोनों का फ़ायदा हो. इन्हीं उसूलों पर एशिया की सब क़ौमें एक होती जा रही हैं. यह उसूल दुनिया के सब मुल्कों के लिये मिलकर अमन से रहने के बुनियादी और सबके भले के उसूल हैं. दिखाई देने लगा कि एशिया के लोगों को एशिया के लोगों से लड़ाना अब इतना आसान नहीं है.

साम्राज प्रेमियों ने अब दूसरी तरफ़ ध्यान दिया. जिस तरह का फ़ौजी संगठन इस गुट ने कुछ एशियाई देशों के साथ समझौते करके खड़ा किया है जिसे "सीटो" (S.E.A.T.O.), कहा जाता है उसी तरह का एक दूसरा फ़ौजी संगठन उन्होंने पच्छिमी यूरोप और अमरीका के कुछ मुल्कों को मिलाकर खड़ा किया है जिसे "नाटो" (N.A.T.O.) कहा जाता है. इस नाटो कौन्सिल की एक बैठक दिसम्बर सन 1954 में पैरिस में हुई. जरमनी के दो टुकड़े किये जा चुके हैं—एक पच्छिमी जरमनी जिसमें अमरीका का बोलबाला है और दूसरा पूरबी जरमनी जो रूस के असर में है. पैरिस की कौन्सिल ने तय किया कि पच्छिमी जरमनी को अच्छी तरह हथियारों और फ़ौजों से लैस किया जावे, और नाटो संगठन के अन्दर जिन जिन मुल्कों की फ़ौजें शामिल हैं उन सब को अधिकार दिया जावे कि वह ऐटम बम और हाइड्रोजिन बम लड़ाई में इस्तेमाल करने के लिये तैयार हो जाएं. यह भी तय हुआ कि इन सब फ़ौजों को ऐटम बम और हाइड्रोजिन बम मुहय्या कर दिये जावें. मालूम हुआ कि यूरोप और एशिया में दोनों जगह, यहां तक कि फ़ारमोसा, कोरिया और जापान में अमरीकी फ़ौजों के पास इस तरह के ख़तरनाक हथियार काफ़ी तादाद में पहुंच चुके हैं. यह भी

ابھی چار دن ہوئے ایشیا کے کچھ دیشوں خاص کر فارموسا' کوریا' جاپان' فلپائن' نیوزیلینڈ اور آسٹریلیا کے ساتھ الگ فوجی سمجھوتے کرکے امریکہ کی سرکار نے اِس مہادیپ کے اندر اپنا ایک زبردست فوجی سنگٹھن کھڑا کرنے کی کوشش شروع کی ۔ یہ کوشش برابر جاری ہے ۔ ذمہ دار امریکی حاکموں نے کھلے شبدوں میں کہنا شروع کیا کہ ہم "ایشیا والوں کو ایشیا والوں سے لڑا کر" اپنا مطلب پورا کرینگے ۔ چال بہت پرانی ہے ۔ پر اب زمانہ تیزی سے بدل رہا ہے ۔ اِس کھلی آواز کے سنائی دیتے ہی ایشیا کے لوگ چوکنے ہوگئے ۔ ایشیائی قوموں کی کانفرنسیں ہوئیں' ہو رہی ہیں اور ہونے جارہی ہیں ۔ ہندستان اور چین نے ایکتا کے پانچ سنہرے اُصولوں کا اعلان کرکے آپس میں دوستی کا سمجھوتا کیا ۔ یہ پانچ اصول بہت سیدھے سادھے ہیں :—
ایک دوسرے کی آزادی اور سلامتی کا آدر کرنا' ایک دوسرے کے اندر کے معاملوں میں کسی طرح کا دخل نہ دینا' مل کر رہنا' دوسرے پر حملہ نہ کرنا اور آپسی تجارت وغیرہ میں وہ طریقہ برتنا جو دونوں کو منظور ہو اور جس سے دونوں کا فائدہ ہو ۔ اِنہیں اُصولوں پر ایشیا کی سب قومیں ایک ہوتی جارہی ہیں ۔ یہ اصول دنیا کے سب ملکوں کے لئے ملکر امن سے رہنے کے بنیادی اور سب کے بھلے کے اصول ہیں ۔ دکھائی دینے لگا کہ ایشیا کے لوگوں کو ایشیا کے لوگوں سے لڑانا اب اتنا آسان نہیں ہے ۔

سامراج پریمیوں نے اب دوسری طرف دھیان دیا ۔ جس طرح کا فوجی سنگٹھن اس گٹ نے کچھ ایشیائی دیشوں کے ساتھ سمجھوتے کرکے کھڑا کیا ہے جیسے "سیٹو" (S.E.A.T.O.)' کہا جاتا ہے اُسی طرح کا ایک دوسرا فوجی سنگٹھن اِنہوں نے پچھمی یورپ اور امریکہ کے کچھ ملکوں کو ملاکر کھڑا کیا ہے جسے "ناٹو" (N.A.T.O.) کہا جاتا ہے ۔ اِس ناٹو کونسل کی ایک بیٹھک دسمبر سن 1954 میں پیرس میں ہوئی ۔ جرمنی کے دو ٹکڑے کئے جا چکے ہیں—ایک پچھمی جرمنی جس میں امریکہ کا بول بالا ہے اور دوسرا پوربی جرمنی جو روس کے اثر میں ہے ۔ پیرس کی کونسل نے طے کیا کہ پچھمی جرمنی کو اچھی طرح ہتھیاروں اور فوجوں سے لیس کیا جاوے' اور ناٹو سنگٹھن کے اندر جن جن ملکوں کی فوجیں شامل ہیں اُن سب کو ادھیکار دیا جاوے کہ وہ ایٹم بم اور ہائڈروجن بم لڑائی میں استعمال کرنے کے لئے تیار ہو جائیں ۔ یہ بھی طے ہوا کہ اِن سب فوجوں کو ایٹم بم اور ہائڈروجن بم مہیا کردئے جاویں ۔ معلوم ہوا کہ یورپ اور ایشیا میں دونوں جگہ یہاں تک کہ فارموسا' کوریا اور جاپان میں امریکی فوجوں کے پاس اِس طرح کے خطرناک ہتھیار کافی تعداد میں پہونچ چکے ہیں۔ یہ بھی

हमारी राय

ہماری رائے

साम्राज प्रेमी दल और उसकी चालें

एक तरफ़ एशिया और अफ़रीका की पुरानी क़ौमें और वह दूसरी क़ौमें जो कुछ अरसे से ग़ैरों की राजकाजी या तिजारती गुलामी में दबी हुई थीं आज़ाद होने और फलने फूलने की कोशिशों में लगी हुई हैं, और दूसरी तरफ़ पच्छिम की कुछ क़ौमों के कुछ पूंजीपति दल जिनकी साम्राज की प्यास अभी बुझी नहीं है या जिनकी दूसरों को चूसकर मोटा होने की लालसा अभी मिटी नहीं है जगह जगह अपनी इस लालसा को पूरा करने की कोशिश में हैं. यह है थोड़े से शब्दों में इस वक्त की दुनिया की हालत का निचोड़.

साम्राज प्रेमी दल में इस समय सब से आगे अमरीका की सरकार और वहां के वह फ़ौजी और तिजारती गिरोह हैं जिन के हाथों में वहां की हकूमत है. इनके साथ इंगलैन्ड, फ्रांस, इटली, हालैन्ड, और बेलजियम जैसे कुछ देशों के पूंजीपति गिरोह भी शामिल हैं. इनकी कोशिशें दुनिया के अनेक हिस्सों में तरह तरह से जारी हैं.

रोमन साम्राज के समय से आज तक दुनिया के साम्राज प्रेमियों का एक ख़ास ढंग यह रहा है कि जिन देशों पर वह अपना राज जमाना चाहते हैं उनमें फूट पैदा करें और हो सके तो उनके टुकड़े कर डालें. आयरलैन्ड में अल्सटर के निवासियों को बाक़ी आइरिश लोगों से फाड़ कर आयरलैन्ड के दो टुकड़े करना, मिस्र में सूडान को बाक़ी मिस्र से अलग करना, फ़िलस्तीन में दूर दूर से लाकर यहूदियों को बसाना और अरबों और यहूदियों को एक दूसरे से लड़ाना, लगभग एक पीढ़ी पहले तक उत्तर ईरान को दक्खिन ईरान से अलग करना, हाल में जरमनी की दो और आस्ट्रिया की चार फांकें करना, चलते चलते हिन्दुस्तान को तीन हिस्सों में काट देना, कोरिया को उत्तर कोरिया और दक्खिन कोरिया में बांट देना, फ़ारमोसा को चीन से अलग करके वहां एक अलग सरकार बनाए रखने की कोशिश करना वग़ैरा वग़ैरा सब इसी फूट नीति के अनेक रूप हैं.

سامراج پریمی دل اور اُس کی چالیں

ایک طرف ایشیا اور افریقہ کی پرانی قومیں اور وہ دوسری قومیں جو کچھ عرصہ سے غیروں کی راجکاجی یا تجارتی غلامی میں دبی ہوئی تھیں آزاد ہونے اور پھلنے پھولنے کی کوششوں میں لگی ہوئی ہیں، اور دوسری طرف پچھم کی کچھ قوموں کے کچھ پونجی پتی دل جن کی سامراج کی پیاس ابھی بجھی نہیں ہے یا جن کی دوسروں کو چوس کر موٹا ہونے کی لالسا ابھی مٹی نہیں ہے جگہ جگہ اپنی اِس لالسا کو پورا کرنے کی کوشش میں ہیں ۔ یہ ہے تھوڑے سے شبدوں میں اِس وقت کی دنیا کی حالت کا نچوڑ ۔

سامراج پریمی دل میں اِس سمے سب سے آگے امریکہ کی سرکار اور وہاں کے وہ فوجی اور تجارتی گروہ ہیں جن کے ہاتھوں میں وہاں کی حکومت ہے ۔ اِن کے ساتھ انگلینڈ، فرانس، اِٹلی، ہالینڈ اور بلجیم جیسے کچھ دیشوں کے پونجی پتی گروہ بھی شامل ہیں ۔ ان کی کوششیں دنیا کے انیک حصوں میں طرح طرح سے جاری ہیں ۔

رومن سامراج کے سمے سے آج تک دنیا کے سامراج پریمیوں کا ایک خاص ڈھنگ یہ رہا ہے کہ جن دیشوں پر وہ اپنا راج جمانا چاہتے ہیں اُن میں پھوٹ پیدا کریں اور ہوسکے تو اُن کے ٹکڑے کرڈالیں ۔ آئرلینڈ میں السٹر کے نواسیوں کو باقی آئرش لوگوں سے پھاڑکر آئرلینڈ کے دو ٹکڑے کرنا، مصر میں سوڈان کو باقی مصر سے الگ کرنا، فلسطین میں دور دور سے لاکر یہودیوں کو بسانا اور عربوں اور یہودیوں کو ایک دوسرے سے لڑانا، لگ بھگ ایک پیڑھی پہلے تک اُتر ایران کو دکھن ایران سے الگ کرنا، حال میں جرمنی کی دو اور آسٹریا کی چار پھانکیں کرنا، چلتے چلتے ہندستان کو تین حصوں میں کاٹ دینا، کوریا کو اُتر کوریا اور دکھن کوریا میں بانٹ دینا، فارموسا کو چین سے الگ کرکے وہاں ایک الگ سرکار بنائے رکھنے کی کوشش کرنا وغیرہ وغیرہ سب اِسی پھوٹ نیتی کے انیک روپ ہیں ۔

सुन्दर नमूने हमें इसमें मिलते हैं. शाही सैनिकों, मिनिस्टरों, सरकारी अफ़सरों, सबके चरित्र पर सुन्दर रोशनी पड़ती है.

'दि गोल्डन खिंगन माउन्टेन्स' पुनसेक का लिखा है. इसमें क्रान्ति विरोधी शक्तियों का किस तरह दमन किया गया यह चित्रित किया गया है. 'व्हीट' (गेहूं) और 'दि ओल्ड शेफ़र्ड' (बूढ़ा चरवाहा) बड़े सुन्दर रेखाचित्र हैं. सम्पादकीय केवल दो सफ़े का है और लेखों का परिचय देता है.

इसी नम्बर में कुछ सुन्दर चित्र भी हैं. 'आन दि वे होम (वापस घर जाते हुये) और 'फ़ारेस्ट' (वन) सुन्दर और भावपूर्न तिरंगे चित्र हैं. 'याकों का क़ाफ़ला' यकरंगा लेकिन पुरअसर चित्र है.

चाइनीज़ लिटरेचर अंग्रेज़ी भाशा भाशियों को आधुनिक और पुरातन दोनों तरह के साहित्य और चित्रों से परिचय कराने का उत्तम माध्यम है. हमें उम्मीद है इसका स्टैन्डर्ड बराबर इसी तरह ऊंचा रहेगा.

—विश्वम्भरनाथ पांडे

سندر نمونے ھمیں اِس میں ملتے ھیں. شاھی سینکوں' منسٹروں' سرکاری افسروں' سب کے چرتر پر سندر روشنی پڑتی ھے .

' دی گولڈن کھنگن ماؤنٹینس' پن‌سیک' کا لکھا ھے . اِس میں کرانتی, ورودھی شکتیوں کا کس طرح دمن کیا گیا یہ چترت کیا گیا ھے . ' وھیٹ ' (گیہوں) اور ' دی اولڈ شیفرڈ' (بوڑھا چرواھا) بڑے سندر ریکھا چتر ھیں . سمپادکیہ کیول دو صفحے کا ھے اور لیکھوں کا پریچے دیتا ھے .

اِسی نمبر میں کچھ سندر چتر بھی ھیں . 'آن دی وے ھوم' (واپس گھر جاتے ھوئے) اور فاریسٹ' (ون) سندر اور بھاؤپورن ترنگے چتر ھیں. ' یاکوں کا قافلہ' یکرنگا لیکن پراثر چتر ھیں .

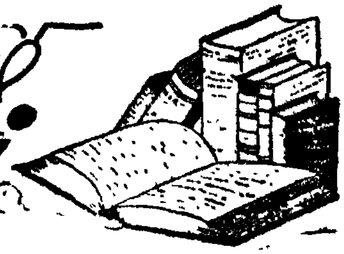
چائنیز لٹریچر انگریزی بھاشا بھاشیوں کو آدھونک اور پراتن دونوں طرح کے ساھتیہ اور چتروں سے پریچے کرانے کا اُتم مادھیم ھے . ھمیں اُمید ھے اِس کا اِسٹینڈرڈ برابر اِسی طرح اُونچا رھے گا .

— وشومبھر ناتھ پانڈے

हज़रत अयूब मुसलमानों के एक बहुत माने हुए वली हुए हैं. वह बड़े दयालु थे. उनके सीने में ज़ख्म हो गये थे और उनमें कीड़े पड़ गये थे. एक रोज़ आप मदीने में एक स्थान पर खड़े हुए थे कि चन्द कीड़े ज़ख्म से निकलकर ज़मीन पर गिर पड़े. तब आपने उन कीड़ों को ज़मीन से उठाकर दुबारा अपने ज़ख्म में रख लिया. लोगों के पूछने पर हज़रत ने फ़रमाया— "क़ुदरत ने इन कीड़ों की ख़ूराक यही दी है, अलहदा होने पर मर जायेंगे. जब हम किसी में जान नहीं डाल सकते, तब हमें उनकी जान लेने का क्या हक़ है ?"

حضرت ایوب مسلمانوں کے ایک بہت مانے ھوئے ولی ھوئے ھیں . وہ بڑے دیالو تھے . اُن کے سینے میں زخم ھوگئے تھے اور اُن میں کیڑے پڑگئے تھے . ایک روز آپ مدینے میں ایک استھان پر کھڑے ھوئے تھے کہ چند کیڑے زخم سے نکل کر زمین پر گر پڑے . تب آپ نے اُن کیڑوں کو زمین سے اُٹھاکر دوبارہ اپنے زخم میں رکھ لیا . لوگوں کے پوچھنے پر حضرت نے فرمایا—"قدرت نے اِن کیڑوں کی خوراک یہیں دی ھے' علیحدہ ھونے پر مر جائینگے . جب ہم کسی میں جان نہیں ڈال سکتے' تب ھمیں اُن کی جان لینے کا کیا حق ھے ؟"

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

चाइनीज़ लिटरेचर (4-1954)

अंगरेज़ी ज़बान का चीनी तिमाही. एडीशन माओ तुन; सफ़े—205; मिलने का पता—फ़ारेन लैंग्वेज प्रेस, 26 कुओ-हुइ-चीह, पीकिंग, चाइना; क़ीमत—लिखी नहीं.

अंगरेज़ी ज़बान में इस चीनी तिमाही रिसाले का चौथा नम्बर हमारे सामने है. छपाई सफ़ाई इसकी बेहद सुन्दर है. काग़ज़ उम्दा लगाया गया है.

इन नम्बर में 'दी लाइफ़ आफ़ दी स्कालर्स' (विद्वानों की ज़िन्दगी) और 'दि पैलेस आफ़ इटर्नल यूथ' (अमर यौवन का महल) क्रमशः वु-चिङ्ग-त्सु और हुङ्ग-शेङ्ग के लिखे हुये हैं. सन 1954 में पहले लेखक की 200 वीं और दूसरी की 250 वीं मृत्यु तिथि मनाई गई. दोनों लेखकों का जन्म उस समय हुआ जब मांचू-शासन के अन्दर जनता पर तरह तरह के ज़ुल्म और अत्याचार हो रहे थे. राज्य द्वारा बनाये हुये नियम विद्वानों के लिये एक शिकञ्जे का काम दे रहे थे. असली विद्वत्ता की कोई क़ीमत न थी. विद्वानों का आत्म सम्मान घुट घुट कर ख़त्म हो रहा था. नक़ली विद्वत्ता का मुलम्मा चढ़ा कर जाहिल पेश पेश थे. महलों में ऐशो इशरत का बोलबाला था. चारों ओर हास-विलास चलते थे. राज्य भर की सुन्दरियां, अच्छे से अच्छे कुलों की दासी के रूप में महल में लाई जाती थीं. सम्राट की कृपादृष्टि जिस पर हो जाती थी उसे 'रखेल' (Concubine) का दरजा दिया जाता था. इसके लिये वह ख़ुद और उसका परिवार सम्राट की कृतज्ञता जताता था. इसे सम्राट का 'महान प्रेम' कहकर बर्नन किया गया है. किन्तु इन रचनाओं में कला है, उस ज़माने के चीनी सामाजिक रीत रिवाजों की झांकियां इनमें मिलती हैं. पैलेस आफ़ दि इटर्नल यूथ के लेखक में ऊंचे दरजे की कवित्व शक्ति है. कविता के कुछ

چائنیز لٹریچر (4-1954)

انگریزی زبان کا چینی ساہی . ایڈیٹر ماؤ تن؛ صفحے— 206؛ ملنے کا پتہ—فارین لنگوئیج پریس' 26 کوؤ - ہوئی - چیہہ' پیکنگ' چائنا؛ قیمت—لکھی نہیں .

انگریزی زبان میں اِس چینی ساہی رسالے کا چوتھا نمبر ہمارے سامنے ہے . چھپائی صفائی اِس کی بیحد سندر ہے . کاغذ عمدہ لگایا گیا ہے .

اِس نمبر میں 'دی لائف آف دی اسکالرس' (ودوانوں کی زندگی) اور ' دی پیلیس آف اِٹرنل یوتھ ' (امر یوون کا محل) کرمشہ وُو . چنگ . تزو اور ہونگ - شینگ کے لکھے ہوئے ہیں . سن 1954 میں پہلے لیکھک کی 200 ویں اور دوسرے کی 250 ویں مرتیو تتھی منائی گئی . دونوں لیکھکوں کا جنم اُس سمے ہوا جب مانچو - شاسن کے اندر جنتا پر طرح طرح کے ظلم اور اتیاچار ہو رہے تھے . راجیہ دوارا بنائے ہوئے نیم ودوانوں کے لئے ایک شکنجے کا کام دے رہے تھے . اصلی ودوتا کی کوئی قیمت نہ تھی . ودوانوں کا آتم سمان گھٹ گھٹ کر ختم ہو رہا تھا . نقلی ودوتا کا ملمع چڑھا کر جاہل پیش پیش تھے . محلوں میں عیش و عشرت کا بول بالا تھا . چاروں اور ہاس ولاس چلتے تھے . راجیہ بھر کی سندریاں' اچھے سے اچھے کلوں کی داسی کے روپ میں محل میں لائی جاتی تھیں . سمراٹ کی کرپا درشٹی جس پر ہو جاتی تھی اُسے ' رکھیل ' (Concubine) کا رتبہ دیا جاتا تھا . اِس کے لئے وہ خود اور اُس کا پریوار سمراٹ کی کرتگیتا جتاتا تھا . اِسے سمراٹ کا ' مہان پریم' کہہ کر ورنن کیا گیا ہے . کنتو اِن رچناؤں میں کلا ہے . اُس زمانے کے چینی سماجک ریتی رواجوں کی جھانکیاں اِن میں ملتی ہیں . پیلیس آف دی اٹرنل یوتھ کے لیکھک میں اونچے درجے کی کوِتو شکتی ہے . کویتا کے کچھ

मज़हब के दिन लद गये. जिस तरह परिवार के मामले हम परिवार के अन्दर ही तय कर लेते हैं उसी तरह राष्ट्र राष्ट्र के झगड़े आपस में मिल बैठकर तय होने चाहियें. अगर ऐसा नहीं करके हम चालू रवैये से ही चिपके रहते हैं तो यह उसी तरह की नासमझी होगी जैसे कि गर्मी आजाने पर भी जाड़े के ऊनी कपड़े पहने रहने में होगी. इसी तरह केन्द्रीकरन के भी दिन लद गये. 'सरकार रहेगी लेकिन दबाने वाली या शोषक शक्ति की नहीं बल्कि फूलों को एक दूसरे से जोड़वाले धागे की तरह रहेगी. माला की खूबी इसी में है कि धागा दीखे नहीं. उसी तरह समाज रचना की खूबी यह होगी कि सरकार दीखेगी नहीं.

इसी को ईसा ईश्वर की हुकूमत कहते थे. इसी को गांधी जी ने रामराज्य कहा. इसी को विनोबा जी शासनमुक्त समाज कहते हैं. इस समाज की तरफ़ हम जितना ज़्यादा बढ़ते हैं उतनी ही विश्वशान्ति मज़बूत और क़ायम का रूप लेती है, और विश्वशान्ति के लिये जो नया समाज मन्दिर बनेगा उस की दीवारें ग्रामोद्योग की ही हो सकती हैं.

एक बार एक परोपकारी बन्धु के पास रात के वक़्त एक फ़रिश्ता आया और नोटबुक दिखाकर बोला—"मैं इसमें उन बड़े लोगों का नाम लिख रहा हूं जो सच्चे दिल से ईश्वर की सेवा करते हैं. कहिये, इसमें आपका नाम लिखूं या नहीं ?" परोपकारी बन्धु ने नम्रतापूर्वक कहा—"क्षमा कीजिये महाशय, मेरा नाम इस डायरी में न लिखें. मैं तो ईश्वर के बन्दों की सेवा करता हूं, यदि मनुष्य सेवकों की कोई डायरी आपके पास हो, तब सहर्ष उसमें मेरा नाम लिख सकते हैं, क्योंकि—

खुदा के बन्दे तो हैं हज़ारों बनों में फिरते हैं मारे मारे
मैं उनका बन्दा बनूंगा जिनको खुदा के बन्दों से प्यार होगा

सुबह उठकर देखा तो सब से पहले सुनहरे हर्फ़ों में उसी का नाम डायरी में दर्ज था !

مذہب کے دن لد گئے. جس طرح پریوار کے معاملے هم پریوار کے اندر هی طے کرلیتے هیں اُسی طرح راشٹر راشٹر کے جھگڑے آپس میں مل بیٹھ کر طے هونے چاهئیں . اگر ایسا نہیں کرکے هم چالو رویہ سے هی چپکے رهتے هیں تو یہ اُسی طرح کی ناسمجھی هوگی جیسے کہ گرمی آ جانے پر بھی جاڑے کے اُونی کپڑے پہنے رهنے میں هوگی. اِسی طرح کیندریکرن کے بھی دن لد گئے . سرکار رهے گی لیکن دبانے والی یا شوشک شکتی کی نہیں بلکہ پھولوں کو ایک دوسرے سے جوڑنے والے دھاگے کی طرح رهے گی . مالا کی خوبی اِسی میں هے کہ دھاگا دیکھے نہیں . اُسی طرح سماج رچنا کی خوبی یہ هوگی کہ سرکار دیکھیگی نہیں .

اِسی کو عیسیٰ ایشور کی حکومت کہتے ھے . اِسی کو گاندھی جی نے رام راجیہ کہا . اِسی کو ونوبا جی شاسن مکت سماج کہتے هیں . اِس سماج کی طرف جتنا هم زیادہ بڑھتے هیں اُتنی هی وشوشانتی مضبوط اور قائم کا روپ لیتی هے اور وشوشانتی کے لئے جو نیا سماج مندر بنے گا اُس کی دیواریں گراموديوگ کی هی هو سکتی هیں .

ایک بار ایک پروپکاری بندھو کے پاس رات کے وقت ایک فرشتہ آیا اور نوٹ بک دکھا کر بولا— " میں اِس میں اُن بڑے لوگوں کا نام لکھ رها هوں جو سچے دل سے ایشور کی سیوا کرتے هیں . کہئے' اس میں آپ کا نام لکھ لوں یا نہیں ؟ " پروپکاری بندھو نے نمرتا پوروک کہا— " چھما کیجئے مہاشئے' میرا نام اِس ڈائری میں نہ لکھیں . میں تو ایشور کے بندوں کی سیوا کرتا هوں' یدی منشیہ سیوکوں کی کوئی ڈائری آپ کے پاس هو' تب سهرش اُس میں میرا نام لکھ سکتے هیں' کیونکہ—

خدا کے بندے تو هیں هزاروں بنوں میں پھرتے هیں مارے مارے
میں اُن کا بندہ بنونگا جن کو خدا کے بندوں سے پیار هوگا

صبح اُٹھکر دیکھا تو سب سے پہلے سنہرے حرفوں میں اِسی کا نام ڈائری میں درج تھا !

है. उसी चीज़ को महात्मा गान्धी जी ने ट्रस्टीशिप या थातीदारी के सिद्धान्त के तौर पर पेश किया. उस चीज़ को अमली जामा पहनाने के लिये सन्त विनोबा ने भूदान-यज्ञ का कार्यक्रम हमारे सामने रखा है. ज़मीन हो या सम्पत्ति, इन पर निजी मालकियत अब किसी एक व्यक्ति की नहीं रहनी चाहिये, न सरकार की ही रहनी चाहिये. चीज़ों पर मालकियत समाज की हो, और सम्पत्ति फुटबाल की गेन्द की तरह समाज में लुढ़कती रहे, एक हाथ से दूसरे हाथ में आती जाती रहे. यानी जिस तरह परिवार के अन्दर सम्पत्ति की मालकियत नहीं होती, उसी तरह समाज के अन्दर भी सम्पत्ति की निजी मालकियत नहीं रहनी चाहिये. जो चीज़ है वह समाज की. व्यक्ति अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ एक ट्रस्टी के तौर पर उसका इस्तेमाल कर सकता है.

ग्रामोद्योग और विश्वशान्ति का चोली और दामन का साथ है, लेकिन आज ज़रूरत न होने पर आगे के लिये उसका संग्रह नहीं करेगा. संग्रह समाज में होगा. व्यक्ति में नहीं. इसके लिये फिर यह ज़रूरी होगा कि हर व्यक्ति मेहनत करे. यह नहीं कि कुछ लोग मेहनत ही करते रहें और कुछ लोग उस मेहनत का मज़ा लेते रहें. सभी मेहनत करेंगे और सभी उसका मज़ा लेंगे. चाहे प्रोफ़ेसर हो, चाहे वैज्ञानिक, चाहे जज, चाहे राज्यकर्ता, चाहे सार्वजनिक कार्यकर्ता, हर किसी को उत्पादक शरीर श्रम फ़र्ज़ समझकर करना होगा. शरीर श्रम को एक सामाजिक नित्य कर्म का रूप मिलेगा. वह समाज धर्म बनेगा. व्यक्ति श्रम परायण होगा और उसकी सारी सेवा समाज के लिये अर्पित होगी. प्रसाद के रूप में जो कुछ समाज से उसे मिलेगा, वह उसे ग्रहन करेगा. अगर यह नहीं होता है तो दुखी दुखी ही रहेंगे और अशान्ति बढ़ती जायगी.

निजी मालकियत ख़तम हो और हर कोई कुछ न कुछ उत्पादक श्रम करे, दूसरे शब्दों में अपनी बुनियादी ज़रूरतों में हर आदमी जहां तक हो सके ख़ुद मुख़्तार हो. हर घर या हर गांव स्वावलम्बी हो, दूसरों का कम से कम मोहताज हो. जितना स्वावलम्बन बढ़ेगा उतनी ही शान्ति बढ़ेगी. जब गांव गांव अपने पैरों पर खड़े होंगे तो खाना कपड़ा जैसी बुनयादी चीज़ों के लिये बड़े बड़े कारख़ानों की ज़रूरत नहीं रहेगी. हर गांव इसमें ख़ुद काफ़ी होगा. यह बिना ग्रामोद्योग के नामुमकिन है. अब तक ग्रामोद्योग बहुत कुछ लाचारी के रूप में दुनिया में चले. लेकिन विज्ञान बता रहा है कि आगे ग्रामोद्योग इसलिये चलने चाहियें कि दुनिया में शान्ति क़ायम हो और मनुष्य ज़िन्दा रह सके. बुनियादी ज़रूरतों के लिये बड़े बड़े कारख़ानों के दिन लद गये. हथियारबन्दी के दिन लद गये. हिफ़ाज़त के लिये फ़ौजी

ھے. اُسی چیز کو مہاتما گاندھی جی نے ٹرسٹیشپ یا تھاتی‌داری کے سدھانت کے طور پر پیش کیا. اُس چیز کو عملی جامہ پہنانے کے لئے سنت ونوبا نے بھودان یگیہ کا کاریہ‌کرم ھمارے سامنے رکھا ھے. زمین ھو یا سمپتی، اِن پر نجی مالکیت اب کسی ایک ویکتی کی نہیں رھنی چاھئیے، نہ سرکار کی ھی رھنی چاھئے. چیزوں پر مالکیت سماج کی ھو، اور سمپتی فٹ بال کی گیند کی طرح سماج میں لڑھکتی رھے، ایک ھاتھ سے دوسرے ھاتھ میں آتی جاتی رھے. یعنی جس طرح پریوار کے اندر سمپتی کی مالکیت نہیں ھوتی، اُسی طرح سماج کے اندر بھی سمپتی کی نجی مالکیت نہیں رھنی چاھئیے. جو چیز ھے وہ سماج کی. ویکتی اپنی ضرورت کے مطابق ایک ٹرسٹی کے طور پر اُس کا استعمال کر سکتا ھے.

گرامودیوگ اور وشو شانتی کا چولی اور دامن کا ساتھ ھے، لیکن آج ضرورت نہ ھونے پر آگے کے لئے اُس کا سنگرہ نہیں کرے گا. سنگرہ سماج میں ھوگا، ویکتی میں نہیں. اس کے لئے پھر یہ ضروری ھوگا کہ ھر ویکتی محنت کرے. یہ نہیں کہ کچھ لوگ محنت ھی کرتے رھیں اور کچھ لوگ اُس محنت کا مزا لوٹتے رھیں. سبھی محنت کرینگے اور سبھی اُس کا مزا لینگے. چاھے پروفیسر ھو، چاھے وگیانک، چاھے جج، چاھے راجیہ کرتا، چاھے سارو جنک کاریہ‌کرتا، ھر کسی کو اُتپادک شریر شرم فرض سمجھکر کرنا ھوگا. شریر شرم کو ایک سماجک نتیہ کرم کا روپ ملے گا. وہ سماج دھرم بنے گا. ویکتی شرم پرایَن ھوگا اور اُس کی ساری سیوا سماج کے لئے اَرپت ھوگی. پرساد کے روپ میں جو کچھ سماج سے اُسے ملے گا، وہ اُسے گرھن کرے گا. اگر یہ نہیں ھوتا ھے تو دوکھی دوکھی ھی رھیں گے اور اشانتی بڑھتی جائے گی.

نجی مالکیت ختم ھو اور ھر کوئی کچھ نہ کچھ اُتپادک شرم کرے، دوسرے شبدوں میں اپنی بنیادی ضرورتوں میں ھر آدمی جہاں تک ھو سکے خود مختار ھو. ھر گھر یا ھر گاؤں سواولمبی ھو، دوسروں کا کم سے کم محتاج ھو. جتنا سواولمبن بڑھے گا اُتنی ھی شانتی بڑھے گی. جب گاؤں گاؤں اپنے پیروں پر کھڑے ھونگے تو کھانا کپڑا جیسی بنیادی چیزوں کے لئے بڑے بڑے کارخانوں کی ضرورت نہیں رھے گی. ھر گاؤں اِس میں خود کافی ھوگا. یہ بنا گرامودیوگ کے ناممکن ھے. اب تک گرامودیوگ بہت کچھ لاچاری کے روپ میں دنیا میں چلے. لیکن وگیان بتا رھا ھے کہ آگے گرامودیوگ اِس لئے چلنے چاھئیں کہ دنیا میں شانتی قائم ھو اور منشیہ زندہ رہ سکے. بنیادی ضرورتوں کے لئے بڑے بڑے کارخانوں کے دن لد گئے. ھتیاربندی کے دن لد گئے. حفاظت کے لئے فوجی

उद्योग अब खतम कर दिये जायें ? या विज्ञान जो तरक्की कर रहा है उससे मुंह मोड़कर पीछे की ओर हटा जाये. पीछे की तरफ़ न हटने की ज़रूरत है न हटाया जा सकता है. विज्ञान डंके की चोट पर बता रहा है कि जब भौगोलिक रूप से दुनिया एक परिवार बनी है तो सामाजिक रूप से भी दुनिया को एक परिवार बनना चाहिये. इसलिये जो गुण और मूल्य परिवार के अन्दर मान्य हैं उनको समाज के अन्दर भी मान्यता मिलनी चाहिये. अगर उन गुणों और मूल्यों से परिवार के अन्दर आनन्द रहता है तो फिर समाज के अन्दर क्यों नहीं रहेगा ?

परिवार की दो खास खूबियां हैं. एक तो यह कि परिवार के अन्दर निजी मालकियत नहीं होती. परिवार में सुख और दुख बांट लिया जाता है. परिवार में किसी भी सदस्य की कमाई क्यों न हो उसमें सब सदस्य शरीक होते हैं. दूसरी यह है कि परिवार में हर कोई दूसरे की खातिर मर मिटना चाहता है. यह भावना काम करती है कि घर में दूसरे को पहले मिल जाये पीछे मुझे मिले. माता घर में सब से ज्यादा काम करती है लेकिन सबसे बाद में खाती है. बच्चे सबसे कम कमाई करते हैं लेकिन सबसे पहले खाते हैं. बाप की भी यही कोशिश रहती है कि किस तरह बच्चे मुझसे ज्यादा बढ़ चढ़ जायें. परिवार के अन्दर हर चीज सब के लिये है. ऐसा नहीं होता कि अगर उसमें आठ आदमी हैं तो छै खा पी लें और दो को उस वक़्त तक भूका रखा जाये जब तक पैदावार या आमदनी काफ़ी न हो. अगर कम है तो सब लोग कम खायेंगे. अगर ज्यादा है तो सब लोग ज्यादा खायेंगे. लेकिन घर के बाहर आकर समाज के अन्दर हम क्या देखते हैं ? बिल्कुल उलटा नक़्शा है. हर चीज़ पर मालकियत का रोब जमाया जाता है. हर किसी की यह कोशिश रहती है कि मुझे पहले मिले, और दूसरों को बाद में. इसी का नतीजा है कि विज्ञान जितने सुख और वैभव का आविष्कार करता जाता है, उतने ही वह चन्द गिने चुने लोगों के हाथ में पहुंचता जाता है, और ज्यादा से ज्यादा लोग उससे वंचित होते जाते हैं, और देश देश की सरकारें दूसरे देशों को तरह तरह की चीज़ों के लिये तरसाना और अपने पर आधारित रखवाना चाहती हैं. इस तरह विज्ञान सत्ता के वस में खेल रहा है, और दुनिया में ग़रीबी और अशान्ति फैल रही है.

यह हालत अगर ज्यादा दिनों चलती रही तो विज्ञान मनुष्य जाति को ही मिटा डालेगा. हिन्सा और विज्ञान के संयोग से दुनिया का नाश ही होने वाला है. समय आ गया है कि इस पर गहराई से विचार किया जाय और ठीक रास्ते की तरफ़ दुनिया चले. वह रास्ता वही है जो सब धर्मों के सन्तों, साधुओं और पैग़म्बरों ने हमेशा से बताया. जो बात उन्होंने बताई उसी की तरफ़ विज्ञान इशारा कर रहा

اُدیوگ اَب ختم کردئے جائیں ؟ یا وگیان جو ترقی کررہا ہے اُس سے منھ موڑکر پیچھے کی اور ہٹا جائے؟ پیچھے کی طرف نہ ہٹنے کی ضرورت ہے نہ ہٹایا جاسکتا ہے۔ وگیان ڈنکے کی چوٹ پر بتا رہا ہے کہ جب بھوگولک روپ سے دنیا ایک پریوار بنی ہے تو سماجک روپ سے بھی دنیا کو ایک پریوار بننا چاہئے۔ اِس لئے جو گن اور مولیہ پریوار کے اندر مانیہ ہیں اُن کو سماج کے اندر بھی مانتا ملنی چاہئے۔ اگر اُن گنوں اور مولیوں سے پریوار کے اندر آنند رہتا ہے تو پھر سماج کے اندر کیوں نہیں رہیگا ؟

پریوار کی دو خاص خوبیاں ہیں۔ ایک تو یہ کہ پریوار کے اندر نجی مالکیت نہیں ہوتی۔ پریوار میں سکھ اور دکھ بانٹ لیا جاتا ہے۔ پریوار میں کسی بھی سدسیہ کی کمائی کیوں نہ ہو اُس میں سب سدسیہ شریک ہوتے ہیں۔ دوسری یہ ہے کہ پریوار میں ہر کوئی دوسرے کی خاطر مرمٹنا چاہتا ہے۔ یہ بھاؤنا کام کرتی ہے کہ گھر میں دوسرے کو پہلے مل جائے پیچھے مجھے ملے۔ ماتا گھر میں سب سے زیادہ کام کرتی ہے لیکن سب سے بعد میں کھاتی ہے۔ بچے سب سے کم کمائی کرتے ہیں لیکن سب سے پہلے کھاتے ہیں۔ باپ کی بھی یہی کوشش رہتی ہے کہ کس طرح بچے مجھ سے زیادہ بڑھ چڑھ جائیں۔ پریوار کے اندر ہر چیز سب کے لئے ہے۔ ایسا نہیں ہوتا کہ اگر اُس میں آٹھ آدمی ہیں تو چھ کھا پی لیں اور دو کو اُس وقت تک بھوکا رکھا جائے جب تک پیداوار یا آمدنی کافی نہ ہو۔ اگر کم ہے تو سب لوگ کم کھائینگے۔ اگر زیادہ ہے تو سب لوگ زیادہ کھائینگے۔ لیکن گھر کے باہر آ کر سماج کے اندر ہم کیا دیکھتے ہیں ؟ بالکل اُلٹا نقشہ ہے۔ ہر چیز پر مالکیت کا رعب جمایا جاتا ہے۔ ہر کسی کی یہ کوشش رہتی ہے کہ مجھے پہلے ملے، اور دوسرے کو بعد میں۔ اِسی کا نتیجہ ہے کہ وگیان جتنے سکھ اور ویبھو کا آوشکار کرتا جاتا ہے، اُتنے ہی وہ چند گنے چنے لوگوں کے ہاتھ میں پہونچتا جاتا ہے اور زیادہ سے زیادہ لوگ اُس سے ونچت ہوتے جاتے ہیں، اور دیش دیش کی سرکاریں دوسرے دیشوں کو طرح طرح کی چیزوں کے لئے ترسانا اور اپنے پر آدھارت رکھوانا چاہتی ہیں۔ اِس طرح وگیان ستتا کے بس میں کھیل رہا ہے، اور دنیا میں غریبی اور اشانتی پھیل رہی ہے۔

یہ حالت اگر زیادہ دنوں چلتی رہی تو وگیان منشیہ جاتی کو ہی مٹا ڈالے گا۔ ہنسا اور وگیان کے سنیوگ سے دنیا کا ناش ہی ہونے والا ہے۔ سمے آ گیا ہے کہ اِس پر گہرائی سے وچار کیا جائے اور ٹھیک راستے کی طرف دنیا چلے۔ وہ راستہ وہی ہے جو سب دھرموں کے سنتوں، سادھوؤں اور پیغمبروں نے ہمیشہ سے بتایا۔ جو بات اُنھوں نے بتائی اُسی کی طرف وگیان اِشارہ کر رہا

रही है, फ़ौज पर ख़र्चा बढ़ रहा है. साधारण नागरिक को फ़ौजी तालीम देने की कोशिश हो रही है. बल्कि एक सूरत में देखें तो हमारी हालत और भी गई बीती है. पिछले तीन सौ, चार सौ बरस से इंगलैन्ड के अन्दर देश के अन्दरूनी मामलों में कभी भी वहां की सरकार को गोली नहीं चलानी पड़ी है. लेकिन हिन्दुस्तान को आज़ाद हुये अभी आठ बरस भी पूरे नहीं हुये हैं. मगर हर साल ही कहीं न कहीं, किसी न किसी मामले पर पुलिस को गोली चलानी पड़ती है. इसलिये बुनियादी तौर पर हिन्दुस्तान की सरकार भी हथियार की ताक़त की पाबन्द बनी हुई है.

हथियार जब बढ़ते हैं तब केन्द्रीय सरकार की ताक़त और भी मज़बूत हो जाती है. हथियारों के नाम पर सरकारें समान्य जीवन के अनेक पहलुओं पर ज़्यादा से ज़्यादा क़बज़ा जमा लेती हैं. दुनिया भर में आज हर देश के अन्दर वहां की सरकार, वहां की जनता पर पहले से कहीं ज़्यादा हावी है. जब केन्द्र के हाथ में दिन दुगुनी रात चौगुनी सत्ता आती जाती है तो देश के आर्थिक मामलों में इसका नियंत्रण अपने आप ही बढ़ता जाता है. वहां के उद्योग, वहां के कल कारख़ाने, वहां की अनाज की पैदावार और उसका बंटवारा, वहां का खानपान तक सरकार के हाथ में आजाता है. आज अगर अमरीका की सरकार चाहे तो अपने लोगों को एक प्याला चाय या रोटी के टुकड़े के लिये तरसा सकती है. इंगलैन्ड की सरकार चाहे तो अपने यहां के लोगों को एक एक इंच कपड़े के लिये हैरान कर सकती है. ख़ुश-क़िस्मती से हिन्दुस्तान में हालत अभी इस दर्जे तक नहीं गिरी है. जब सरकार के हाथ में देश का व्यापार और उद्योग धन्दे आते हैं तो उसका लाज़मी नतीजा यह होता है कि घर घर और गांव गांव चलने वाले धन्दे ख़तम हो जाते हैं. छोटे छोटे, अपने बल पर खड़े होने वाले कारीगर बेकार हो जाते हैं. उन्हें या तो बड़े बड़े कारख़ानो में काम करना होता है जहां उन्हें बैल से ऊंचा दरजा नहीं मिलता, या फिर अपने घर बेकार, मुहताज पड़े रहते हैं. इसलिये दुनिया में जितना ज़्यादा केन्द्रीकरण होता जाता है उतना ही उद्योगीकरण बढ़ता जाता है, और उतने ही ग्रामोद्योग नष्ट होते जाते हैं. हम कह सकते हैं कि जिस मात्रा में ग्रामोद्योग मिटते हैं उतना केन्द्रीकरण बढ़ता है और उस मात्रा में विश्व शान्ति के लिये ख़तरा बढ़ता है और डर फैलता जाता है.

यह दर्दनाक दृश्य हर मुल्क में देखने को मिलता है. आज वही देश कुछ थोड़े सुखी हैं जहां बड़े बड़े उद्योग कम तादाद में हैं. उन्हीं देशों के लोगों के दिल में कुछ शान्ति है जो अपने उद्योग ख़ुद कर लेते हैं और बाहरवालों का मुंह नहीं ताकते. तो सवाल पैदा होता है कि क्या बड़े

رہی ہے، فوج پر خرچہ بڑھ رہا ہے. سادھارن ناگرک کو فوجی تعلیم دینے کی کوشش ہو رہی ہے. بلکہ ایک صورت میں دیکھیں تو ہماری حالت اور بھی گئی بیتی ہے. پچھلے تین سو، چار سو برس سے انگلینڈ کے اندر دیش کے اندرونی معاملوں میں کبھی بھی وہاں کی سرکار کو گولی نہیں چلانی پڑی ہے. لیکن ہندستان کو آزاد ہوئے ابھی آٹھ برس بھی پورے نہیں ہوئے ہیں. مگر ہر سال ہی کہیں نہ کہیں، کسی نہ کسی معاملہ پر پولس کو گولی چلانی پڑتی ہے. اس لئے بنیادی طور پر ہندستان کی سرکار بھی ہتیار کی طاقت کی پابند بنی ہوئی ہے.

ہتیار جب بڑھتے ہیں تب کیندریہ سرکار کی طاقت اور بھی مضبوط ہوجاتی ہے. ہتیاروں کے نام پر سرکاریں سامانیہ جیون کے انیک پہلوؤں پر زیادہ سے زیادہ قبضہ جما لیتی ہیں. دنیا بھر میں آج ہر دیش کے اندر وہاں کی سرکار، وہاں کی جنتا پر پہلے سے کہیں زیادہ حاوی ہے. جب کیندر کے ہاتھ میں دن دوگنی رات چوگنی ستتا آتی جاتی ہے تو دیش کے آرتھک معاملوں میں اس کا نینترن اپنے آپ ہی بڑھتا جاتا ہے. وہاں کے اُدیوگ، وہاں کے کل کارخانے، وہاں کی اناج کی پیداوار اور اس کا بٹوارہ، وہاں کا کھان پان تک سرکار کے ہاتھ میں آجاتا ہے. آج اگر امریکہ کی سرکار چاہے تو اپنے لوگوں کو ایک پیالہ چائے یا روٹی کے ٹکڑے کے لئے ترسا سکتی ہے. انگلینڈ کی سرکار چاہے تو اپنے یہاں کے لوگوں کو ایک ایک انچ کپڑے کے لئے حیران کرسکتی ہے. خوش‌قسمتی سے ہندستان میں حالت ابھی اس درجہ تک نہیں گری ہے. جب سرکار کے ہاتھ میں دیش کا ویاپار اور اُدیوگ دھندے آتے ہیں تو اُس کا لازمی نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ گھر گھر اور گاؤں گاؤں چلنے والے دھندے ختم ہو جاتے ہیں. چھوٹے چھوٹے، اپنے بل پر کھڑے ہونے والے کاریگر بیکار ہو جاتے ہیں. انہیں یا تو بڑے بڑے کارخانوں میں کام کرنا ہوتا ہے جہاں انہیں بیل سے اونچا درجہ نہیں ملتا، یا پھر اپنے گھر بیکار، محتاج پڑے رہتے ہیں. اس لئے دنیا میں جتنا زیادہ کیندریکرن ہوتا جاتا ہے اتنا ہی اُدیوگیکرن بڑھتا جاتا ہے، اور اُتنے ہی گرامودیوگ نشٹ ہوتے جاتے ہیں. ہم کہہ سکتے ہیں کہ جس ماترا میں گرامودیوگ مٹتے ہیں اُتنا کیندریکرن بڑھتا ہے اور اُس ماترا میں وشوشانتی کے لئے خطرہ بڑھتا ہے اور ڈر پھیلتا جاتا ہے.

یہ دردناک درشیہ ہر ملک میں دیکھنے کو ملتا ہے. آج وہی دیش کچھ تھوڑے سکھی ہیں جہاں بڑے بڑے اُدیوگ کم تعداد میں ہیں. اُنہیں دیشوں کے لوگوں کے دل میں کچھ شانتی ہے جو اپنے اُدیوگ خود کرلیتے ہیں اور باہر والوں کا منہ نہیں تاکتے. تو سوال پیدا ہوتا ہے کہ کیا بڑے

था ? अगर था तो यह सोचकर कुछ सन्तोष होता है कि अगरचे बौद्ध धर्म के धार्मिक पहलू को ब्राह्मणों के कर्ममान्ड और रूढ़ियों के जंगल में चारों तरफ़ से ढक दिया था फिर भी राजनैतिक क्षेत्र में बौद्ध धर्म की जड़ें दूर दूर तक गहरी पहुंच गई थीं. बौद्ध धर्म ने हिन्दू समाज में इनसानियत पैदा की. बौद्ध धर्म ने भारतीय राजनीति से कौटिल्य की कुबुद्धि को इस तरह बाहर कर दिया, जिस तरह किसी का भूत झाड़ा जाता है. लेकिन राजनीति में कौटिल्य बार बार पैदा होते रहते हैं और दिखाई देते रहते हैं. यूरोप में कौटिल्य ने मैशियेवैली के रूप में जन्म लिया, विज्ञान के सूक्ष्म परों के ऊपर इसी भावना ने फिर से एशिया में प्रवेश किया. कौटिल्य की भावना फिर हमारे राजनैतिक जीवन पर क़ाबू हासिल कर रही है और करेगी, जब तक कि बुद्ध जैसी ही कोई महान आत्मा आकर हमारी उससे रक्षा न करे.

تھا؟ اگر تھا تو یہ سوچ کر کچھ سنتوش ھوتا ھے کہ اگرچہ بودھ دھرم کے دھارمک پہلو کو براھمنوں کے کرم کانڈ اور روڑھیوں کے جنگل میں چاروں طرف سے ڈھک دیا تھا پھر بھی راجنیتک چھیتر میں بودھ دھرم کی جڑیں دور دور تک گہری پہونچ گئی ہیں . بودھ دھرم نے ھندو سماج میں اِنسانیت پیدا کی . بودھ دھرم نے بھارتیہ راج نیتی سے کوتیلہ کی کودھی کو اِس طرح باھر کر دیا' جس طرح کسی کا بھوت جھاڑا جاتا ھے . لیکن راج نیتی میں کوتیلہ بار بار پیدا ھوتے رہتے ھیں اور دکھائی دیتے رہتے ھیں . یورپ میں کوتیلہ نے میشیہ ویلی کے روپ میں جنم لیا' وگیان کے سوکشم پروں کے اوپر اِسی بھاؤنا نے پھر سے ایشیا مں پرویش کیا . کوتلیہ کی بھاؤنا پھر ھمارے راجنیتک جیون پر قابو حاصل کر رہی ھے اور کرے گی' جب تک کہ بدھ جیسی ھی کوئی مہان آتما آ کر ھماری اُس سے رکشا نہ کرے .

ग्रामोद्योग और विश्वशान्ति

श्री सुरेशराम भाई

विज्ञान ने इस धरती को एक परिवार बना दिया है. बहत्तर घंटे के अन्दर हम किसी सिरे से दूसरे सिरे तक पहुंच सकते हैं. लेकिन फिर भी आपस में एक दूसरे का डर बना है. शायद इतिहास भर में दुनिया में कभी भी इतना डर नहीं छाया हुआ था जितना कि आज है. बड़ी अजीब बात है. विज्ञान ने एक से एक बढ़कर करामातें दिखाई हैं. खाना, कपड़ा और जीवन के दूसरे साधन जितने आज हासिल हैं उतने कभी नहीं थे. फिर भी इतना डर ! इतनी बे ऐतबारी ! यही सबब है कि सभी देशों में ज़ोरों से हथियार बढ़ाये जा रहे हैं. जितना बड़ा देश उतनी बड़ी हथियारबन्दी. जो छोटे देश हैं वह भी ज़रूरत से ज़्यादा हथियार रखने की तमन्ना रखते हैं. अगर ख़ुद हथियार बना नहीं पाते तो दूसरे देशों से मांगते हैं. इस तरह दुनिया बड़े बड़े गुटों में बंट गई है. सभी छोटे बड़े राष्ट्र इन दो में से एक गुट में शामिल हो गये हैं. हां, कुछ हिन्दुस्तान जैसे भी हैं जो इनसे अलग रहकर एक तीसरा हलक़ा बनाना चाहते हैं जो लड़ाई से दूर रहे. लेकिन हिन्दुस्तान में भी दूसरे देशों की तरह हथियारबन्दी बढ़

گرامودیوگ اور وشوشانتی

شری سریش رام بھائی

وگیان نے اِس دھرتی کو ایک پریوار بنا دیا ھے . بہتر گھنٹے کے اندر ھم کسی سرے سے دوسرے سرے تک پہونچ سکتے ھیں . لیکن پھر بھی آپس میں ایک دوسرے کا ڈر بنا ھے . شاید اِتہاس بھر میں دنیا میں کبھی بھی اتنا ڈر نہیں چھایا ھوا تھا جتنا کہ آج ھے . بڑی عجیب بات ھے . وگیان نے ایک سے ایک بڑھکر کراماتیں دکھائی ھیں . کھانا' کپڑا اور جیون کے دوسرے سادھن جتنے آج حاصل ھیں اُتنے کبھی نہیں تھے . پھر بھی اتنا ڈر ! اتنی بےاعتباری ! یہی سبب ھے کہ سبھی دیشوں میں زوروں سے ھتیار بڑھائے جا رہے ھیں . جتنا بڑا دیش اُتنی بڑی ھتیار بندی . جو چھوٹے دیش ھیں وہ بھی ضرورت سے زیادہ ھتیار رکھنے کی تمنا رکھتے ھیں . اگر خود ھتیار بنا نہیں پاتے تو دوسرے دیشوں سے مانگتے ھیں . اِس طرح دنیا بڑے بڑے گٹوں میں بنٹ گئی ھے . سبھی چھوٹے بڑے راشٹر اِن دو میں سے ایک گٹ میں شامل ھوگئے ھیں . ھاں' کچھ ھندستان جیسے بھی ھیں جو اِن سے الگ رہ کر ایک تیسرا حلقہ بنانا چاھتے ھیں جو لڑائی سے دور رھے . لیکن ھندستان میں بھی دوسرے دیشوں کی طرح ھتیار بندی بڑھ

समय से दिखाई देना शुरू हो गया. इन चीज़ों के होते हुये फ़ाहियान की पुस्तक में हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म के कोई आपसी झगड़े दिखाई नहीं देते तो क्या आश्चर्य है. क्योंकि उस समय तक बौद्ध धर्म इतना बदल गया था कि वह हिन्दू धर्म ही का एक ऐसा विचित्र और अप्राकृतिक रूप रह गया था जिसे देखकर हिन्दू धर्म के पुनरुद्धार के समय में भी ब्राह्मण लोग हंसते थे और नफ़रत दिखाते थे.

अन्धविश्वासों का जो घना जंगल शुरू के बोधिवृक्ष के चारों तरफ़ उग खड़ा हुआ था, उससे बाहर निकलकर उस स्वतन्त्र वायुमन्डल में प्रवेश करना, जिसका ख़ाका फ़ाहियान ने खींचा है, बड़ा सुखद मालूम होता है. गुप्त सम्राटों के ज़माने में राजनैतिक जीवन की जो सब से ख़ास चीज़ मालूम होती है आज़ादी थी. फ़ाहियान का अपना बयान इतना चमकता हुआ है कि उसे उसी के शब्दों मे देना ठीक होगा. वह लिखता है—"लोग सुखी और ख़ुशहाल हैं. न किसी की रजिस्ट्री होती है और न राज की तरफ़ से किसी तरह की रोक थाम है. सिर्फ़ जो लोग राजा की ज़मीन जोतते हैं वे जो कुछ उस ज़मीन से मुनाफ़ा कमाते है उस पर लगान अदा कर देते हैं. जो जाना चाहते हैं जा सकते हैं. जो ठहरना चाहें ठहर सकते हैं. राजा की तरफ़ से किसी को शारीरिक दन्ड नहीं दिया जाता. मुजरिमो पर उनके जुर्म के अनुसार केवल जुर्माना ले लिया जाता है, यहां तक कि राज के ख़िलाफ़ बग़ावत करने वाले से भी. अगर वह दूसरी बार वही जुर्म करे तब सिर्फ़ दाहिना हाथ काट लिया जाता है. देश भर में कोई किसी जानदार की हिंसा नहीं करता, न कोई शराब पीता है, न कोई प्याज़ या लहसुन खाता है. लेकिन चांडालों को बस्ती से अलग रखा जाता है. चांडाल एक तरह के पतित लोग होते हैं." वास्तव में वह एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था थी, जिसमे एक मात्र कलंक की चीज़ चांडालो का अस्तित्व था. इस शान और क़रीब क़रीब आदर्श शासन की उस फ़ौलादी स्वेच्छा शासन के साथ तुलना करनी चाहिये जिसका कौटिल्य ने समर्थन किया है. इस तरह की तुलना से हमें समाजवाद और व्यक्तिवाद का वह भेद जो युगों से चला आ रहा है साफ़ दिखाई देने लगता है. कौटिल्य एक ऐसे समाज का चित्र हमारे सामने पेश करता है "जनता को पीस देने वाली नौकरशाही के प्राणनाशक फ़ौलादी पंजे के अन्दर जिसका दम घुट रहा था." पांच सदियां गुज़र जाने के बाद एक ऐसी शासन पद्धति देखने को मिलती है जहां ज़्यादा से ज़्यादा राजनैतिक क्षमता और उसके साथ व्यक्ति की स्वतन्त्रता में कम से कम हस्तक्षेप दोनों मिले हुये दिखाई देते हैं. क्या वह बौद्ध धर्म जो राजर्षि अशोक ने इतनी दया के साथ दुनिया के सामने रखा इस तब्दीली की वजह नहीं

سمے سے دکھائی دینا شروع ہوگیا۔ ان چیزوں کے ہوتے ہوئے فاھیان کی پستک میں ہندو دھرم اور بودھ دھرم کے کوئی آپسی جھگڑے دکھائی نہیں دیتے تو کیا آشچریہ ہے۔ کیونکہ اُس سمے تک بودھ دھرم اتنا بدل گیا تھا کہ وہ ہندو دھرم ہی کا ایک ایسا وچتر اور اپراکرتک روپ رہ گیا تھا جسے دیکھکر ہندو دھرم کے پنرودھار کے سمے میں بھی براہمن لوگ ہنستے تھے اور نفرت دکھاتے تھے۔

اندھ وشواسوں کا جو گھنا جنگل شروع کے بودھی ورکش کے چاروں طرف اُگ کھڑا ہوا تھا، اُس سے باہر نکل کر اُس سوتنتر وایومنڈل میں پرویش کرنا، جسکا خاکہ فاھیان نے کھینچا ہے، بڑا سوکھد معلوم ہوتا ہے۔ گپت سمراٹوں کے زمانے میں راجنیتک جیون کی جو سب سے خاص چیز معلوم ہوتی ہے آزادی تھی۔ فاھیان کا اپنا بیان اتنا چمکتا ہوا ہے کہ اُسے اُسی کے شبدوں میں دینا ٹھیک ہوگا۔ وہ لکھتا ہے — "لوگ سکھی اور خوشحال ہیں۔ نہ کسی کی رجسٹری ہوتی ہے اور نہ راج کی طرف سے کسی طرح کی روک تھام ہے۔ صرف جو لوگ راجہ کی زمین جوتتے ہیں وے جو کچھ اُس زمین سے منافع کماتے ہیں اس پر لگان ادا کر دیتے ہیں۔ جو جانا چاہتے ہیں جا سکتے ہیں۔ جو ٹھہرنا چاہیں ٹھہر سکتے ہیں۔ راجہ کی طرف سے کسی کو شاریرک دنڈ نہیں دیا جاتا۔ مجرموں پر اُن کے جرم کے انوسار کیول جرمانہ لے لیا جاتا ہے۔ یہاں تک کہ راج کے خلاف بغاوت کرنے والے سے بھی۔ اگر وہ دوسری بار وہی جرم کرے تب صرف داہنا ہاتھ کاٹ لیا جاتا ہے۔ دیش بھر میں کوئی کسی جاندار کی ہنسا نہیں کرتا، نہ کوئی شراب پیتا ہے، نہ کوئی پیاز یا لہسن کھاتا ہے۔ لیکن چانڈالوں کو بستی سے الگ رکھا جاتا ہے۔ چانڈال ایک طرح کے پتت لوگ ہوتے ہیں۔" واستو میں وہ ایک آدرش سماجک ویوستھا تھی، جس میں ایک ماتر کلنک کی چیز چانڈالوں کا استتو تھا۔ اِس شان اور قریب قریب آدرش شاسن کی اُس فولادی سوِیچھا شاسن کے ساتھ تُلنا کرنی چاہئے جس کا کوٹلیہ نے سمرتھن کیا ہے۔ اِس طرح کی تُلنا سے ہمیں سماجواد اور ویکتی واد کا وہ بھید جو یگوں سے چلا آ رہا ہے صاف دکھائی دینے لگتا ہے۔ کوٹلیہ ایک ایسے سماج کا چتر ہمارے سامنے پیش کرتا ہے "جنتا کو پیس دینے والی نوکر شاہی کے پران ناشک فولادی پنجے کے اندر جس کا دم گھٹ رہا تھا۔" پانچ صدیاں گذر جانے کے بعد ایک ایسی شاسن پدھتی دیکھنے کو ملتی ہے جہاں زیادہ سے زیادہ راجنیتک چھمتا اور اُس کے ساتھ ویکتی کی سوتنترتا میں کم سے کم ہستکشیپ دونوں ملے ہوئے دکھائی دیتے ہیں۔ کیا وہ بودھ دھرم جو راجرشی اشوک نے اِسی دیا کے ساتھ دنیا کے سامنے رکھا اِس تبدیلی کی وجہ نہیں

इस तरह के धार्मिक साम्राज्य का रहस्य जानने के लिये भी हमें दूर जाने की जरूरत नहीं है. फ़ाहियान के अपने बयानों से ही हमें इसका पता चल जाता है. बौद्ध धर्म के अन्दर यह चीज़ क़ुदरती और मौलिक थी. भगवान बुद्ध ने जो सब से बड़ा काम किया वह यही था कि उन्होंने अपने भीतरी ज्ञान की नई मदिरा को हिन्दू धर्म की पुरानी बोतलों में डाला. लेकिन यह मदिरा इतनी तेज़ थी, इसका असर इतना जादू भरा था कि उसने अन्ध विश्वासों और रूढ़ियों के उस सब रहे सहे कचरे को जो सदियों के ब्राह्मण-प्रभुत्व ने उन बोतलों में जमा कर दिया था बाहर निकाल कर फेंक दिया. दूसरे शब्दों में बुद्ध ने हिन्दू धर्म का बहैसियत एक धर्म के विरोध नहीं किया, बल्कि ब्राह्मणों ने जिस धर्म को अपना पेशा बना रखा था उसका विरोध किया. ब्राह्मणों ने भी इसका बदला लिया. धीरे धीरे उन्होंने बौद्ध धर्म पर वार किया. उसे अपने क़ाबू में किया, उसके अन्दर मूर्ति पूजा और उसके साथ चलने वाली भावना को दाख़िल कराया, बौद्ध धर्म के शुद्ध प्रारम्भिक तेज को रूढ़ियों के बादल से ढक दिया, उसे इतनी चतुराई के साथ तोड़ा और मरोड़ा कि फ़ाहियान के समय का बौद्ध धर्म सनातन हिन्दू धर्म के सब बाह्याडम्बरों से घिरा हुआ दिखाई देता था, यहां तक कि स्वयं बुद्ध भगवान हिन्दू देवताओं में से एक दिखाई देने लगते हैं जिन्हें ब्रह्मा ने अपना सन्देश देकर दुनिया में भेजा था. बौद्ध धर्म का रूप कहां से कहां पहुंचा. समय ने उससे किस तरह बदला लिया. बुद्ध ने बिलकुल साफ़ साफ़ शब्दों में—"जादू टोने, शकुन परीक्षा, फलित, देवताओं के नाम पर बलि, जन्तर मन्तर" जैसी चीजों की ज़बरदस्त मनाही की थी. लेकिन फ़ाहियान जिस बौद्ध धर्म का हमें हाल सुनाता है उसमें यह सब चमत्कार भरे हुये हैं. स्वयं बौद्ध के पद चिन्हों के, उनकी खोपड़ी की, उनके दांतों की, उनके पीकदान की, उनके दन्ड कमन्डल की, सबकी पूजा होती थी. जहां कहीं बुद्ध भगवान ने अपने गीले कपड़े सुखाये या अपने केश मुंडवाये या पैर के नाख़ून कटवाये वहीं एक स्तूप खड़ा हो गया. चीनी भाशा में तक्षशिला का अर्थ "सिर मुंडवाना" है. तक्षशिला का नाम तक्षशिला इसलिये पड़ा क्योंकि कहा जाता था कि वहां पर बुद्ध ने एक भूखे बाघ को आहार पहुचाने के लिये अपना शरीर दे दिया था ! बुद्ध भगवान अपनी माता को, जो मर चुकी थीं, अपना धर्म समझाने के लिये तीन महीने स्वर्ग में जाकर रहे थे. जब वहां से उतरे तो पहले पहल कपिशा में क़दम रखा; इसलिये वह एक तीर्थ बन गया. अयोध्या के बाहर एक जगह है जहां बुद्ध भगवान ने दतून करके उसे ज़मीन में गाड़ दिया था और वह दतून उसी क्षण एक दस फ़ुट ऊंचा दरख़्त बन गई. बनारस में बुद्ध ने जिन लोगों को अपना धर्म समझाया, उसमें से पांच सौ अन्धों को उसी

اِس طرح کے دھارمک سامراجیہ کا رھسیہ جاننے کے لئے بھی ھمیں دور جانے کی ضرورت نہیں ھے۔ فاھیان کے اپنے بیانوں سے ھی ھمیں اِس کا پتہ چل جاتا ھے۔ بودھ دھرم کے اندر یہ چیز قدرتی اور مولک تھی۔ بھگوان بدھ نے جو سب سے بڑا کام کیا وہ یہی تھا کہ اُنھوں نے اپنے بھیتری گیان کی نئی مدرا کو ھندو دھرم کی پرانی بوتلوں میں ڈالا۔ لیکن یہ مدرا اتنی تیز تھی، اِس کا اثر اتنا جادو بھرا تھا کہ اِس نے اندھ وشواسوں اور روڑھیوں کے اُس سب رھے سہے کچرے کو جو صدیوں کے براھمن - پربھتو نے اِن بوتلوں میں جمع کر دیا تھا باھر نکال کر پھینک دیا۔ دوسرے شبدوں میں بدھ نے ھندو دھرم کا بحیثیت ایک دھرم کے وورودھ نہیں کیا، بلکہ براھمنوں نے جس دھرم کو اپنا پیشہ بنا رکھا تھا اُس کا وورودھ کیا۔ براھمنوں نے بھی اِس کا بدلہ لیا۔ دھیرے دھیرے اُنھوں نے بودھ دھرم پر وار کیا۔ اُسے اپنے قابو میں کیا، اُس کے اندر مورتی پوجا اور اُس کے ساتھ چلنے والی بھاؤنا کو داخل کرایا، بودھ دھرم کے شدھ پرارمبھک تیج کو روڑھیوں کے بادل سے ڈھک دیا، اُسے اتنی چترائی کے ساتھ توڑا اور مروڑا کہ فاھیان کے سمے کا بودھ دھرم سناتن ھندو دھرم کے سب واھیہ آڈمبروں سے گھرا ھوا دکھائی دیتا تھا، یہاں تک کہ سوَیم بدھ بھگوان ھندو دیوتاؤں میں سے ایک دکھائی دینے لگتے ھیں جنھیں برھما نے اپنا سندیش دےکر دنیا میں بھیجا تھا۔ بودھ دھرم کا روپ کہاں سے کہاں پہنچا۔ سمے نے اُس سے کس طرح بدلہ لیا۔ بدھ نے بالکل صاف صاف شبدوں میں—"جادو ٹونے، شکن، پریکشا، پھلت، دیوتاؤں کے نام پر بلی، جنتر منتر" جیسی چیزوں کی زبردست مناھی کی تھی۔ لیکن فاھیان جس بودھ دھرم کا ھمیں حال سناتا ھے اُس میں یہ سب چمتکار بھرے ھوئے ھیں۔ سوَیم بدھ کے پد چنھوں کے، اُن کی کھوپڑی کی، اُن کے دانتوں کی، اُن کے پیکدان کی، اُن کے ڈنڈ کمنڈل کی، سب کی پوجا ھوتی تھی۔ جہاں کہیں بدھ بھگوان نے اپنے گیلے کپڑے سکھائے یا اپنے کیش منڈوائے یا پیر کے ناخون کٹوائے وھیں ایک استوپ کھڑا ھو گیا۔ چینی بھاشا میں تکشلا کا ارتھ "سر منڈوانا" ھے۔ تکشلا کا نام تکشلا اِس لئے پڑا کیونکہ کہا جاتا تھا کہ وھاں پر بدھ نے ایک بھوکے باگھ کو آھار پہنچانے کے لئے اپنا شریر دے دیا تھا! بدھ بھگوان اپنی ماتا کو، جو مر چکی تھیں، اپنا دھرم سمجھانے کے لئے تین مہینے سورگ میں جا کر رھے تھے۔ جب وھاں سے اترے تو پہلے پہل کپیشا میں قدم رکھا؛ اِس لئے وہ ایک تیرتھ بن گیا۔ ایودھیا کے باھر ایک جگہ ھے جہاں بدھ بھگوان نے دتون کر کے اُسے زمین میں گاڑ دیا تھا اور وہ دتون اُسی چھن ایک دس فٹ اونچا درخت بن گئی۔ بنارس میں بدھ نے جن لوگوں کو اپنا دھرم سمجھایا، اُس میں سے پانچ سو اندھوں کو اُسی

का आचार-व्यवहार और बौद्ध धर्म का जनता पर सुन्दर प्रभाव था. अगर आचार-व्यवहार से मनुश्य योग्य और उत्तम होता है, तो इन चीजों ने जरूर ही पुरातन भारत के भिक्खुओं और सन्यासियों को क़ाबिल और उत्तम बनाया था. फ़ाहियान लिखता है—"गोमति के विहार में भिक्खुओं का आचार व्यवहार बहुत गम्भीर रहता है. वे अपनी पूजा और ध्यान में मग्न रहते हैं. वे निश्चित क्रम के मुताबिक़ व्यवस्था के साथ बैठते हैं. वे जरा भी शोरगुल नहीं करते. ज्यादातर वक़्त मौन रहते हैं. वे अपने भिक्षापात्र को नहीं भरते न परोसने वालों से ज्यादा खाना मांगते हैं. जब किसी चीज की जरूरत होती है तो हाथ के इशारे से मांगते हैं." राजाओं का आचार-व्यहावर, उनके तौर तरीक़े उस जमाने में उतने ही निर्दोष समझे जाते थे, जितने साधुओं और भिक्खुओं के. फ़ाहियान को यह देखकर बड़ी ही तसल्ली हुई कि राजा लोग साधुओं और भिक्खुओं की बड़ी इज्जत करते थे. "जब ये लोग बौद्ध भिक्खुओं को कोई चीज भेंट करते हैं, तो अपने मुकुट सर से उतार लेते हैं और जब उन्हें खाना खिलाते हैं, तो अपने बाल बच्चों और खास खास दरबारियों समेत सामने खड़े रहते हैं. खाना हो चुकने के बाद वे जमीन पर ख़ुद फ़र्श बिछा कर प्रधान भिक्खु की तरफ़ मुंह करके बैठ जाते हैं. इन लोगों के सामने वे चौकियों या किसी ऊंची चीज पर बैठने का साहस नहीं कर सकते." बौद्धकाल का यह बयान इसलिये और भी महत्व का है क्योंकि फ़ाहियान गुप्त साम्राज्य के समय भारत आया था. अङ्गरेज इतिहासकार बड़े ख़ुश होकर उस काल को—"हिन्दू प्रतिक्रिया का समय कहते हैं." कम से कम जहां तक फ़ाहियान के लिखे हुये बयानों का सम्बन्ध है न हमें किसी प्रतिक्रिया की कोई निशानी मिलती है और न बौद्ध धर्मावलम्बियों को किसी तरह की तकलीफ़ें दिये जाने का जिक्र मिलता है." फ़ाहियान यह भी साफ़ लिखता है कि उन दिनों अयोध्या में और उसके आस पास कट्टर हिन्दू धर्म के मानने वाले मौजूद थे. एक जगह उसने लिखा है कि—"यहां पर 96 अबौद्ध सम्प्रदायों के लोग मौजूद हैं जो सब के सब भौतिक संसार (माद्दी दुनिया) को सत्य मानते हैं." लेकिन एक ऐसे ईश्वर की कल्पना जो एक ख़ास सम्प्रदाय के लोगों से बाहर दूसरी सम्प्रदायों के इष्ट-देवों को ईर्षा की दृष्टि से देखता हो, जिसे अङ्गरेजी मे "A jealous god" कहते हैं, इस तरह की कोई कल्पना ही वास्तव में पाश्चात्य कल्पना है. इस तरह की कोई कल्पना या मजहबी तंगनजरी हमें समुद्रगुप्त और विक्रमादित्य के उन शासनकालों में भी बिलकुल दिखाई नहीं देती, जिन शासनकालों में हमें उत्तर भारत के अन्दर हिन्दू कला और हिन्दू संस्कृति का आश्चर्यजनक पुनरुद्धार देखने को मिलता है.

کا اچار ویوہار اور بودھ دھرم کا جنتا پر سندر پربھاؤ تھا۔ اگر آچار ویوہار سے منشیہ یوگیہ اور اُتم ہوتا ہے، تو ان چیزوں نے ضرور ہی پراتن بھارت کے بھکشوؤں اور سنیاسیوں کو قابل اور اُتم بنایا تھا۔ فاهیان لکھتا ہے—"گومتی کے وہار میں بھکشوؤں کا اچار ویوہار بہت گمبھیر رہتا ہے۔ وے اپنی پوجا اور دھیان میں مگن رہتے ہیں۔ وے نشچت کرم کے مطابق ویوستھا کے ساتھ بیٹھتے ہیں۔ وے ذرا بھی شور غل نہیں کرتے۔ زیادہ تر وقت مون رہتے ہیں۔ وے اپنے بھکشاپاتر کو نہیں بھرتے، نہ پروسنے والوں سے زیادہ کھانا مانگتے ہیں۔" جب کسی چیز کی ضرورت ہوتی ہے تو ہاتھ کے اشارے سے مانگتے ہیں۔" راجاؤں کا آچار ویوہار، ان کے طور طریقے اس زمانے میں اتنے ہی نردوش سمجھے جاتے تھے جتنے سادھوؤں اور بھکشوؤں کے۔ فاهیان کو یہ دیکھ کر بڑی ہی تسلی ہوئی کہ راجا لوگ سادھوؤں اور بھکشوؤں کی بڑی عزت کرتے تھے۔ "جب یہ لوگ بودھ بھکشوؤں کو کوئی چیز بھینٹ کرتے ہیں، تو اپنے مکٹ سر سے اتار لیتے ہیں اور جب انہیں کھانا کھلاتے ہیں، تو اپنے بال بچوں اور خاص خاص درباریوں سمیت سامنے کھڑے رہتے ہیں۔ کھانا ہو چکنے کے بعد وے زمین پر خود فرش بچھا کر پردھان بھکشو کی طرف منھ کر کے بیٹھ جاتے ہیں۔ ان لوگوں کے سامنے وے چوکیوں یا کسی اونچی چیز پر بیٹھنے کا ساہس نہیں کر سکتے۔" بودھ کال کا یہ بیان اس لئے اور بھی مہتو کا ہے کیونکہ فاهیان گپت سامراجیہ کے سمے بھارت آیا تھا۔ انگریز اتہاسکار بڑے خوش ہو کر اُس کال کو—"ہندو پرتیکریا کا سمے کہتے ہیں۔" کم سے کم جہاں تک فاهیان کے لکھے ہوئے بیانوں کا سمبندھ ہے نہ ہمیں کسی پرتیکریا کی کوئی نشانی ملتی ہے اور نہ بودھ دھرماولمبیوں کو کسی طرح کی تکلیفیں دئیے جانے کا ذکر ملتا ہے۔" فاهیان یہ بھی صاف لکھتا ہے کہ ان دنوں ایودھیا میں اور اُس کے آس پاس کٹر ہندو دھرم کے ماننے والے موجود تھے۔ ایک جگہ اُس نے لکھا ہے کہ—"یہاں پر 96 ابودھ سمپردایوں کے لوگ موجود ہیں جو سب کے سب بھوتک سنسار (مادی دنیا) کو ستیہ مانتے ہیں۔" لیکن ایسے ایشور کی کلپنا جو ایک خاص سمپردائے کے لوگوں سے باہر دوسری سمپردایوں کے اشٹ دیوں کو ایرشا کی درشٹی سے دیکھتا ہو، جسے انگریزی میں "A jealous god" کہتے ہیں، اس طرح کی کوئی کلپنا ہی واستو میں پاشچاتیہ کلپنا ہے۔ اس طرح کی کوئی کلپنا یا مذہبی تنگ نظری ہمیں سمدر گپت اور وکرمادتیہ کے ان شاسن کالوں میں بھی بالکل دکھائی نہیں دیتی، جن شاسن کالوں میں ہمیں اتر بھارت کے اندر ہندو کلا اور ہندو سنسکرتی کا آشچریہ جنک پنرودھار دیکھنے کو ملتا ہے۔

सूखी हड्डियों के अलावा कोई रास्ता दिखाने वाला न मिलता;" चाहे हिन्दुकुश पहाड़ की बरफ़ीली चोटियां होतीं "जहां अगला क़दम रखने की जगह न होती और आंखों में अंधेरा छा जाता," और चाहे समुद्र की लहरें होतीं "जो गरजती हुई, उठकर एक दूसरे से टकरातीं और फेन छोड़तीं, जिन में बड़े बड़े घड़ियाल और समुद्री जीव-जन्तु किलोलें करते." इन सब आफ़तों में फ़ाहियान के सामने एक ही मक़सद होता कि ज्ञान की मशाल को और धर्म की सच्ची भावना को उसे अपने देश "बाहरी दुनिया" में यानी चीन ले जाना है. "उसकी आत्मा की भीतरी ज्योति ही उदास घड़ियों में उसे ढारस बंधाती और उसे रास्ता दिखाती थी."

फ़ाहियान के लिये चीन वास्तव में "बाहरी दुनिया" था. भारत में बौद्ध धर्म का जो गौरव था और जो प्रतिमा थी उसकी तुलना में चीन बाहरी दुनिया ही था. अफ़ग़ानिस्तान से लेकर गंगा के दहाने तक, जहां फ़ाहियान दो बरस तक बौद्ध सूत्रों का अध्ययन और बौद्ध मूर्तियों का देखांकन करता रहा, सारा देश बौद्ध मठों और विहारों के जाल से गुंथा पड़ा था. बौद्ध धर्म के कुछ पुराने केन्द्र (मरकज़) ज़रूर फीके पड़ गये थे. मिसाल के तौर पर बुद्ध की जन्मभूमि कपिलवस्तु के सम्बन्ध में फ़ाहियान लिखता है—"कपिलवस्तु में न राजा रह गया है न जनता. सारी नगरी खंडहर और वीरान हो गई है, महज़ कुछ पुजारी और क़रीब दस परिवार वहां रहते हैं. रास्ते में शेर और जंगली हाथियों के हमले का ख़ौफ़ रहता है." फ़ाहियान लिखता है—"कपिलवस्तु जाने वाले यात्रियों को ख़तरे से बहुत बचकर जाना चाहिये." कुशीनगर, जहां भगवान बुद्ध निर्वान को प्राप्त हुये, इसी तरह वीरान पड़ा था. ऐसा मालूम होता है कि अशोक के बाद की सदियों में बौद्ध धर्म धीरे धीरे अपनी जन्मभूमि छोड़कर अधिक उत्तर में केन्द्रीभूत हो गया था. अफ़ग़ानिस्तान में उस समय कम से कम तीन हज़ार बौद्ध भिक्खु रहे होंगे. सरहद में बन्नू का ज़िला बौद्ध धर्म का केन्द्र था, जहां बौद्ध मठों और विहारों में हज़ारों बौद्ध भिक्खु और सन्यासी रहते थे. ये सब के सब 'हीनयान के मानने वाले थे. ख़ुतन में 'गोमति' नाम का एक बहुत बड़ा विहार था. पेशावर में सम्राट कनिष्क का एक पगोडा (बुद्ध-मन्दिर) था जो "चार सौ फ़ुट ऊंचा था जिसमें तरह तरह के बेल बूटे पच्चीकारी और सुनहला काम बना हुआ था." यह पगोडा यात्रियों के लिये बड़ा दिल खींचने वाली चीज़ थी. फ़ाहियान के मुताबिक़—"दुनिया के सब पगोडाओं में पेशावर का यह पगोडा सब में बड़ा और सब में आलीशान है." लेकिन जिस चीज़ ने फ़ाहियान को सब से अधिक खींचा वह यह मठ, विहार और मन्दिर नहीं थे बल्कि बौद्ध भिक्खुओं का ऊंचे दरजे

سوکھی ہڈیوں کے علاوہ کوئی راستہ دکھانے والا نہ ملتا؛" چاہے ہندوکش پہاڑ کی برفیلی چوٹیاں ہوتیں "جہاں اگلا قدم رکھنے کی جگہ نہ ہوتی اور آنکھوں میں اندھیرا چھا جاتا" اور چاہے سمدر کی لہریں ہوتیں "جو گرجتی ہوئی اُٹھ کر ایک دوسرے سے ٹکراتیں اور پھین چھوڑتیں' جن میں بڑے بڑے گھڑیال اور سمدری جیو جنتو کاولیں کرتے." ان سب آفتوں میں فاہیان کے سامنے ایک ہی مقصد ہوتا کی گیان کی مشعل کو اور دھرم کی سچی بھاونا کو اُسے اپنے دیش "باہری دنیا" میں یعنی چین لے جانا ہے. "اُس کی آتما کی بھیتری جیوتی ہی اداس گھڑیوں میں اُسے ڈھارس بندھاتی اور راستہ دکھاتی تھی."

فاہیان کے لئے چین واستو میں "باہری دنیا" تھا. بھارت میں بودھ دھرم کا جو گورو تھا اور جو پرتما تھی اُس کی تولنا میں چین باہری دنیا ہی تھا. افغانستان سے لےکر گنگا کے دہانے تک' جہاں فاہیان دو برس تک بودھ سوتروں کا ادھین اور بودھ مورتیوں کا دیکھانکن کرتا رہا' سارا دیش بودھ مٹھوں اور وہاروں کے جال سے گوندھا پڑا تھا. بودھ دھرم کے کچھ پرانے کیندر (مرکز) ضرور پھیکے پڑگئے تھے. مثال کے طور پر بدھ کی جنم بھومی کپل وستو کے سمبندھ میں فاہیان لکھتا ہے—"کپل وستو میں نہ راجہ رہ گیا ہے نہ جنتا. ساری نگری کھنڈر اور ویران ہوگئی ہے' محض کچھ پجاری اور قریب دس پریوار وہاں رہتے ہیں. راستے میں شیر اور جنگلی ہاتھیوں کے حملے کا خوف رہتا ہے." فاہیان لکھتا ہے—"کپل وستو جانے والے یاتریوں کو خطرے سے بہت بچ کر جانا چاہئے." کوشی نگر جہاں بھگوان بدھ نروان کو پراپت ہوئے اِسی طرح ویران پڑا تھا. ایسا معلوم ہوتا ہے کہ اشوک کے بعد کی صدیوں میں بودھ دھرم دھیرے دھیرے اپنی جنم بھومی چھوڑکر ادھک اُتر میں کیندری بھوت ہوگیا تھا. افغانستان میں اُس سمے کم سے کم تین ہزار بودھ بھکھو رہے ہونگے. سرحد میں بنو کا ضلع بودھ دھرم کا کیندر تھا' جہاں بودھ مٹھوں اور وہاروں میں ہزاروں بودھ بھکھو اور سنیاسی رہتے تھے. یہ سب کے سب 'ہینیان' کے ماننے والے تھے. ختن میں 'گومتی' نامک ایک بہت بڑا وہار تھا. پیشاور میں سمراٹ کنشک کا ایک پگودا (بودھ مندر) تھا جو "چار سو فٹ اُونچا تھا جس میں طرح طرح کے بیل بوٹے' پچی کاری اور سنہلا کام بنا ہوا تھا." یہ پگودا یاتریوں کے لئے بڑا دل کھینچنے والی چیز تھی. فاہیان کے مطابق—"دنیا کے سب پگوداؤں میں پیشاور کا یہ پگودا سب میں بڑا اور سب میں عالیشان ہے." لیکن جس چیز نے فاہیان کو سب میں ادھک کھینچا وہ یہ مٹھ' وہار اور مندر نہیں تھے بلکہ بودھ بھکھوؤں کا اُونچے درجے

जो वह अपनी उस पुरातन (क़दीम) यात्रा में बांस की पत्तियों और रेशम पर लिखकर छोड़ गया है, जिसकी उस यात्रा के सामने आज की बग़ैर रुके अटलांटिक की हवाई यात्रा फीकी और मामूली मालूम होती है. फ़ाहियान की वह यात्रा हमें आज की अपनी जल्दबाज़ी की उपयोगिता पर सोचने को मजबूर करती है.

फ़ाहियान के यात्रा बनन से ऐसा मालूम होता है कि यात्रा के शुरू में उसके साथ कुछ थोड़े से साथी भी थे. कम से कम उनका कारा शहर तक साथ रहा. कारा शहर रूसी तुर्किस्तान के पास कहीं रहा होगा. वहां के बाशिन्दे "तबियतों के ख़ूंख़ार और अजनबियों के तरफ़ अपने बर्ताव में इतने कमीने" थे कि फ़ाहियान के तीन साथियों ने वापस चीन लौट जाने का फ़ैसला किया. हुइ-चिंग नाम का एक चौथा साथी 'सफ़ेद कोह' की बरफ़ीली चोटियों पर फ़ाहियान के हाथों में ही मौत का शिकार हुआ. वहां इतनी ठन्ड थी "कि दांत कटकटाते थे और सारा बदन थर थर कांपता था." सिर्फ़ एक साथी फ़ाहियान के साथ भारत पहुंचा; लेकिन यहां आकर जो उसने बौद्ध धर्म की शान देखी और उसकी तुलना में उसे अपने देश मे बौद्ध धर्म की हालत इतनी हेच मालूम हुई कि उसने भारत में रहकर ही निर्वान हासिल करने की साधना का फ़ैसला किया. फ़ाहियान के सामने एक महान मिशन था. बड़ी से बड़ी आफ़तें और बड़े से बड़े आकर्षन उसे अपने मक़सद से डिगा न सकते थे. उसे तो वापस चीन पहुंच कर अपने देश में बौद्ध धम की बुनियादों को मज़बूत करना था. उसके रास्ते में ज़बरदस्त रुकावटें थीं. यात्रा के शुरू मे ही गोबी के हज़ारों मील लम्बे चौड़े रेगिस्तान को पार करने का सवाल था. फ़ाहियान लिखता है—"गोबी के रेगिस्तान में न आसमान में परिन्दे थे न धरती पर जानवर. गरम गरम हवा चारों ओर भूत की तरह भनभनाती फिरती थी, जिसके मुक़ाबले के मानी थे—मौत !"

उत्तर भारत के बरफ़ीले पहाड़ गोबी के रेगिस्तान से कुछ कम ख़तरनाक न थे, बारहों महीने, सर्दी और गर्मी में जिनकी चोटियां फ़ुटों बरफ़ से ढकी रहती हैं. फ़ाहियान का ऐसा विश्वास था कि उन चोटियो पर—"ख़ौफ़नाक जन्तु रहते हैं जो ज़रा से छेड़ने पर ज़हरीली हवा की फुंकार मारते हैं और जिनके नथनों से बारिश, बरफ़ और पत्थर बरसने लगते हैं." फ़ाहियान लिखता है—"इन जन्तुओं से दस हज़ार आदमियों में से कहीं एक बचकर निकल पाता है." फ़ाहियान बचकर निकल आया, लेकिन वह ऐसा वैसा यात्री तो नहीं था. उसके दिल में विश्वास की एक ऐसी ज़बर्दस्त आग थी जो पहाड़ों को हिला सकती थी, चाहे पथहीन रेगिस्तान होता—"जहां भूले भटके यात्रियों की

جو وہ اپنی اُس پراتن (قدیم) یاترا میں بانس کی پتیوں اور ریشم پر لکھ کر چھوڑ گیا ہے، جس کی اُس یاترا کے سامنے آج کی بغیر رکے اٹلانٹک کی ہوائی یاترا پھیکی اور معمولی معلوم ہوتی ہے. فاهیان کی وہ یاترا ہمیں آج کی اپنی جلدبازی کی اُپیوگتا پر سوچنے کو مجبور کرتی ہے.

فاهیان کی یاترا ورنن سے ایسا معلوم ہوتا ہے کہ یاترا کے شروع میں اُس کے ساتھ کچھ تھوڑے سے ساتھی بھی تھے. کم سے کم اُن کا کارا شہر تک ساتھ رہا. کارا شہر روسی ترکستان کے پاس کہیں رہا ہوگا. وہاں کے باشندے "طبیعتوں کے خونخوار اور اجنبیوں کے طرف اپنے برتاؤ میں اتنے کمینے" تھے کہ فاهیان کے تین ساتھیوں نے واپس چین لوٹ جانے کا فیصلہ کیا. ہوئی چنگ نام کا ایک چوتھا ساتھی 'سفید کوہ' کی برفیلی چوٹیوں پر فاهیان کے ہاتھوں میں ہی موت کا شکار ہوا. وہاں اتنی ٹھنڈ تھی "کہ دانت کٹ کٹاتے تھے اور سارا بدن تھرتھر کانپتا تھا." صرف ایک ساتھی فاهیان کے ساتھ بھارت پہونچا؛ لیکن یہاں آکر جو اس نے بودھ دھرم کی شان دیکھی اور اُس کی تولنا میں اُسے اپنے دیش میں بودھ دھرم کی حالت اتنی ہیچ معلوم ہوئی کہ اُس نے بھارت میں رہ کر ہی نروان حاصل کرنے کی سادھنا کا فیصلہ کیا. فاهیان کے سامنے ایک مہان مشن تھا. بڑی سے بڑی آفتیں اور بڑے سے بڑے آکرشن اُسے اپنے مقصد سے ڈگا نہ سکتے تھے. اُسے تو واپس چین پہونچ کر اپنے دیش میں بودھ دھرم کی بنیادوں کو مضبوط کرنا تھا. اس کے راستے میں زبردست رکاوٹیں تھیں. یاترا کے شروع میں ہی گوبی کے ہزاروں میل لمبے چوڑے ریگستان کو پار کرنے کا سوال تھا. فاهیان لکھتا ہے—"گوبی کے ریگستان میں نہ آسمان میں پرندے تھے نہ دھرتی پر جانور. گرم گرم ہوا چاروں اور بھوت کی طرح بھنبھناتی پھرتی تھی، جس کے مقابلے کے معنی تھے—موت!"

اتر بھارت کے برفیلے پہاڑ گوبی کے ریگستان سے کچھ کم خطرناک نہ تھے، بارہوں مہینے، سردی اور گرمی میں جن کی چوٹیاں فٹوں برف سے ڈھکی رہتی ہیں. فاهیان کا ایسا وشواس تھا کہ اُن چوٹیوں پر—"خوفناک جنتو رہتے ہیں جو ذرا سے چھیڑنے پر زہریلی ہوا کی پھنکار مارتے ہیں اور جن کے نتھنوں سے بارش، برف اور پتھر برسنے لگتے ہیں." فاهیان لکھتا ہے—"اِن جنتوؤں سے دس ہزار آدمیوں میں سے کہیں ایک بچ کر نکل پاتا ہے." فاهیان بچ کر نکل آیا، لیکن وہ ایسا ویسا یاتری تو نہیں تھا. اس کے دل میں وشواس کی ایک ایسی زبردست آگ تھی جو پہاڑوں کو ہلا سکتی تھی، چاہے پتھہین ریگستان ہوتا—"جہاں بھولے بھٹکے یاتریوں کی

फ़ाहियान की भारत यात्रा

श्री के० पी० एस० मेनन, आइ० सी० एस०

भाप और पेट्रोल से चलने वाली सवारियों के जमाने में आज बेचारे घोड़े की कोई क़द्र ही नहीं रह गई. रेलवे ट्रेन और मोटरकार भी अब पुरानी पड़ने लगीं. हवाई उड़ान का अब जमाना आ गया है. पलक मारते सैकड़ों मील की दूरी नाप ली जाती है. इस तेज रफ़्तार जमाने में जब हम महान चीनी यात्री फ़ाहियान की यात्रा के वर्क़ उलटते हैं तो हमें हैरत होती है कि दस हजार मील की यात्रा, और वह भी पैदल, कैसे पूरी की गई होगी ! फ़ाहियान चौथी सदी का एक मशहूर चीनी बौद्ध भिक्षु था. उसकी भारत-यात्रा की वजह चीनी बौद्धों के लिये यहां से बौद्ध धर्म ग्रन्थों का ले जाना था. उसकी महान यात्रा ज्ञान की खोज और सत्य की शोध में थी. मध्य चीन से वह पैदल रवाना हुआ. गोबी के ख़ौफ़नाक रेगिस्तान और हिन्दुकुश की बर्फ़ीली पर्वत-श्रेनियों को पार करता हुआ वह पैदल बङ्गाल की खाड़ी तक आया और वहां से जहाज द्वारा लंका और जावा की यात्रा करते हुये वह वापस चीन पहुंचा. उसकी समुद्र-यात्रा पैदल यात्रा से भी कहीं ज्यादा ख़तरनाक साबित हुई. फ़ाहियान की इस यात्रा में 15 बरस लगे, जिनमें से 9 बरस चलने में बीते और बाक़ी पढ़ने में. वह अपनी यात्रा में कम से कम तीस मुल्कों के बीच से होकर गुजरा. वह अपनी यात्रा की सख़्ती और अकेलेपन के बारे में लिखता है—"यात्रा में हमें सिर्फ़ अपनी ही परछाईं दिखाई देती थी और जिसे देखकर हमारा दिल उदासी से भर जाता था." अपने देश की टीस उसके इन शब्दों से जाहिर होती है—"जब मैंने लंका में देखा कि एक व्यापारी रेशमी चीनी पंखा भगवान बुद्ध की प्रतिमा पर भेंट चढ़ा रहा है, तो मेरा दिल भर आया और मेरी आंखें आंसुओं से भर गईं." अगर फ़ाहियान आज इस बीसवीं सदी में पैदा हुआ होता, तो उसने अपनी यात्रा और ही तरह से की होती. वह नाश्ता करने के बाद अपने घर चांगान से हवाई जहाज से रवाना हुआ होता, आसाम के किसी हवाई अड्डे पर उसने दोपहर को भोजन किया होता और रात के खाने के वक़्त कलकत्ते पहुंच गया होता. उसने अमरीकन तरीक़े से अपनी भारत-यात्रा पर एक पुस्तक भी लिखी होती जिसे हम 'माडर्न यात्रा' वर्नन कह सकते थे. लेकिन उसका यह वर्नन उस वर्नन से कितना भिन्न होता

فاهیان کی بھارت یاترا

شری کے . پی . ایس . مینن، آئی . سی . ایس .

بھاپ اور پیٹرول سے چلنے والی سواریوں کے زمانے میں آج بیچارے گھوڑے کی کوئی قدر ھی نہیں رہ گئی . ریلوے ٹرین اور موٹرکار بھی اب پرانی پڑنے لگیں . ھوائی اُڑان کا اب زمانہ آگیا ھے . پلک مارتے سیکڑوں میل کی دوری ناپ لی جاتی ھے. اِس تیز رفتار زمانے میں جب ھم مہان چینی یاتری فاهیان کی یاترا کے ورق اُلٹتے ھیں تو ھمیں حیرت ھوتی ھے کہ دس ھزار میل کی یاترا، اور وہ بھی پیدل، کیسے پوری کی گئی ھوگی! فاهیان چوتھی صدی کا مشہور چینی بودھ بھکشو تھا . اس کی بھارت یاترا کی وجہ چینی بودھوں کے لئے یہاں سے بودھ دھرم گرنتھوں کا لے جانا تھا . اُس کی مہان یاترا گیان کی کھوج اور ستیہ کی شودھ میں تھی . مدھیہ چین سے وہ پیدل روانہ ھوا . گوبی کے خوفناک ریگستان اور ھندوکش کی برفیلی پربت شرینیوں کو پار کرتا ھوا وہ پیدل بنگال کی کھاڑی تک آیا اور وھاں سے جہاز دوارا لنکا اور جاوا کی یاترا کرتے ھوئے وہ واپس چین پہونچا . اُس کی سمندر یاترا پیدل یاترا سے بھی کہیں زیادہ خطرناک ثابت ھوئی . فاهیان کی اِس یاترا میں 15 برس لگے، جن میں سے 9 برس چلنے میں بیتے اور باقی پڑھنے میں . وہ اپنی یاترا میں کم سے کم تیس ملکوں کے بیچ سے ھوکر گذرا . وہ اپنی یاترا کی سختی اور اکیلے پن کے بارے میں لکھتا ھے—"یاترا میں ھمیں صرف اپنی ھی پرچھائیں دکھائی دیتی تھی اور جسے دیکھ کر ھمارا دل اُداسی سے بھر جاتا تھا ." اپنے دیش کی ٹیس اس کے اِن شبدوں سے ظاھر ھوتی ھے— "جب میں نے لنکا میں دیکھا کہ ایک ویاپاری ریشمی چینی پنکھا بھگوان بودھ کی پرتیما پر بھینٹ چڑھا رھا ھے، تو میرا دل بھر آیا اور میری آنکھیں آنسوں سے بھر گئیں ." اگر فاهیان آج اِس بیسویں صدی میں پیدا ھوا ھوتا، تو اُس نے اپنی یاترا اور ھی طرح سے کی ھوتی . وہ ناشتہ کرنے کے بعد اپنے گھر چانگان سے ھوائی جہاز سے روانہ ھوا ھوتا، آسام کے کسی ھوائی اڈے پر اُس نے دوپہر کو بھوجن کیا ھوتا اور رات کے کھانے کے وقت کلکتے پہونچ گیا ھوتا. اُس نے امریکن طریقے سے اپنی بھارت یاترا پر ایک پستک بھی لکھی ھوتی جسے ھم 'ماڈرن یاترا' ورنن کہہ سکتے تھے . لیکن اُس کا یہ ورنن اُس ورنن سے کتنا بھن ھوتا

रहा हूं. मेरा घोड़ा कुछ इस अन्दाज़ से चलता और मुड़ता था कि मानों उसे पता था कि मुझे कहां जाना है. धीरे धीरे धुएं का एक गुबार नज़र आने लगा. उसके बाद धीमे पड़ते हुए अंगारों की लौ मुझे दिखाई दी. मैंने देखा कि एक शख़्स अलाव के पास लेटा है. हालांकि मुझे उसकी शक्ल नहीं दिखाई दे रही थी फिर भी मुझे विश्वास था कि यही हमारा शिकार है. बड़ी सतर्कता से मैंने आगे बढ़ना शुरू किया. जब अलाव सिर्फ़ सौ गज़ रह गया तो मैंने देखा कि वह शख़्स आग की ओर पैर किये ज़मीन पर दाहिनी करवट लेटा है. उसका घोड़ा पास ही खड़ा था. मैं कह रहा हूं कि मैंने उस शख़्स को देखा पर वास्तव में मैं सपना देख रहा था. सपने में ही घोड़े से उतर कर मैं उस शख़्स की ओर पैदल दबे पांव बढ़ा. फिर मुझे यह ख़याल हुआ कि कहीं आहट पा कर वह भाग न जाय. मैंने राइफ़ल सम्हाली और उसे निशाना बना कर घोड़ा दबाया. 'धांय' की आवाज़ चारों ओर गूंज गई. मैं चौंक पड़ा और मेरा सपना टूट गया. तब से मैं ख़ुद हैरान हूं कि मैं कैसे यहां आ पहुंचा."

"बात अभी मैंने ख़त्म ही की थी कि मेरे साथियों की निगाहें ठन्डे पड़ते हुये अलाव की ओर गईं. आंखों के सामने सचमुच एक आग की ढेरी जल रही थी और धीमी पड़ती हुई ज्वाला की बुझती लौ में वहां सचमुच एक आदमी की आकृति लेटी हुई दिखाई दे रही थी. साथियों ने फुरती से आगे बढ़कर उसे घेर लिया. लेकिन आहट पाकर भी वह आदमी टस से मस नहीं हुआ. राइफ़लें सम्हाले लोग उसके बिलकुल पास जाकर खड़े हो गये. उस व्यक्ति की छाती पर कुछ काला सा धब्बा दिखाई दे रहा था. लोगों ने जब फीकी पड़ती हुई चांदनी की तरफ़ उसका मुंह किया तो उन्हें मालूम हुआ कि वह बेजान है. उसके दिल पर बुलेट ने जो प्रवेश मार्ग खुला छोड़ दिया था उसी से लाल झरने की रवानी के साथ उसके प्रान बह चुके थे.

"मैं उस शख़्स को पहचानता नहीं था लेकिन मेरे दूसरे साथी उस गोरे मुजरिम से पूरी तरह वाक़िफ़ थे. और जैसी मुझे उम्मीद थी दरअस्ल उस शख़्स की खोपड़ी मेरे वैज्ञानिक प्रयोगों में बहुत कारगर साबित हुई."

ग़ुलाम और आज़ाद में यही फ़र्क़ है कि ग़ुलाम मरने के लिये जीता है और आज़ाद जीने के लिये मरता है, ग़ुलाम की ज़िन्दगी मौत के बराबर है मगर आज़ाद की मौत भी ज़िन्दगी है.

—अज्ञात

رہا ہوں. میرا گھوڑا کچھ اس انداز سے چلتا اور مڑتا تھا کہ مانو اسے پتہ تھا کہ مجھے کہاں جانا ہے . دھیرے دھیرے دھوئیں کا ایک غبار نظر آنے لگا. اس کے بعد دھیمے پڑتے ہوئے انگاروں کی لو مجھے دکھائی دی . میں نے دیکھا کہ ایک شخص الاؤ کے پاس لیٹا ہے . حالانکہ مجھے اس کی شکل نہیں دکھائی دے رہی تھی پھر بھی مجھے وشواس تھا کہ یہی ہمارا شکار ہے . بڑی سترکتا سے میں نے آگے بڑھنا شروع کیا . جب الاؤ صرف سو گز رہ گیا تو میں نے دیکھا کہ وہ شخص آگ کی اور پیر کئے زمین پر داہنی کروٹ لیٹا ہے . اس کا گھوڑا پاس ہی کھڑا تھا . میں کہہ رہا ہوں کہ میں نے اس شخص کو دیکھا پر واستو میں میں سپنا دیکھ رہا تھا . سپنے میں ہی گھوڑے سے اتر کر میں اس شخص کی اور پیدل دبے پاؤں بڑھا . پھر مجھے یہ خیال ہوا کہ کہیں آہٹ پا کر وہ بھاگ نہ جائے . میں نے رائفل سنبھالی اور اسے نشانہ بنا کر گھوڑا دبایا . ' دھائیں ' کی آواز چاروں اور گونج گئی . میں چونک پڑا اور میرا سپنا ٹوٹ گیا . تب سے میں خود حیران ہوں کہ میں کیسے یہاں آ پہونچا ."

" بات ابھی میں نے ختم ہی کی تھی کہ میرے ساتھیوں کی نگاہیں ٹھنڈے پڑتے ہوئے الاؤ کی اور گئیں . آنکھوں کے سامنے سچ مچ ایک آگ کی ڈھیری جل رہی تھی اور دھیمی پڑتی ہوئی جوالا کی بجھتی لو میں وہاں سچ مچ ایک آدمی کی آکرتی لیٹی ہوئی دکھائی دے رہی تھی . ساتھیوں نے پھرتی سے آگے بڑھکر اسے گھیر لیا . لیکن آہٹ پا کر بھی وہ آدمی ٹس سے مس نہیں ہوا . رائفلیں سنبھالے لوگ اس کے بالکل پاس جا کر کھڑے ہوگئے . اس ویکتی کی چھاتی پر کچھ کالا سا دھبہ دکھائی دے رہا تھا . لوگوں نے جب پھیکی پڑتی ہوئی چاندنی کی طرف اس کا منھ کیا تو انہیں معلوم ہوا کہ وہ بےجان ہے . اس کے دل پر بولیٹ نے جو پرویش مارگ کھلا چھوڑ دیا تھا اسی سے لال جھرنے کی روانی کے ساتھ اس کے پران بہہ چکے تھے ."

' میں اس شخص کو پہچانتا نہیں تھا لیکن میرے دوسرے ساتھی اس گورے مجرم سے پوری طرح واقف تھے . اور جیسی مجھے امید تھی دراصل اس شخص کی کھوپڑی میرے ویگیانک پریوگوں میں بہت کارگر ثابت ہوئی ."

غلام اور آزاد میں یہی فرق ہے کہ غلام مرنے کے لئے جیتا ہے اور آزاد جینے کے لئے مرتا ہے' غلام کی زندگی موت کے برابر ہے مگر آزاد کی موت بھی زندگی ہے .

—اگیات

"नाच समारोह में मेरे इस तरह उल जलूल दाखिल होने से महिलाओं को खासी दिली चोट पहुंची. बाद में मुझे बताया गया कि कई महिलायें चीख पड़ीं और एक या दो को तो ग़श आ गया. लोकाचार के विरुद्ध मेरा आचरन देखकर साथी हैरत में थे. उनका कुछ समय तो महिलाओं की ज़ख्मी भावनाओं को शान्त करने में गया और उसके बाद उन्हें मेरी फ़िक्र हुई. इतने में किसी ने घोड़े की टाप सुनी. मेरे साथी फ़ौरन अस्तबल की ओर लपके. उन्हें मामला नाज़ुक मालूम होने लगा.

"और मेरा कहीं पता न था. अस्तबल का दरवाज़ा खुला हुआ था. न वहां मेरा घोड़ा था, न उसकी ज़ीन और न लगाम. साथियों ने जल्दी जल्दी अपने अपने घोड़े कसे. उन्हें परेशानी यह थी कि मुझे खोजने वे किधर जाते. माना मैं राइफ़ल से लैस था फिर भी आस्ट्रेलिया की घनी झाड़ियों की भूल भुलइयों में फंसकर निकल सकना मज़ाक़ न था. मेरी मुमकिन बदक़िस्मती की कल्पना करके साथी फ़िक्र से भर उठे.

"चतुर्दशी का चांद चारों ओर अपनी ज्योत्स्ना बिखेर रहा था. हवा ज्यों ही क़ुदरत का दुपट्टा उड़ाने की कोशिश करती बादल के दो एक टुकड़े चांद के सामने इस तरह आ जाते मानो क़ुदरत शर्मा कर खिड़कियों पर पर्दे डाल रही हो. अगर और दूसरा मौक़ा होता तो यह घुड़सैर ख़ासी मज़ेदार रहती; किन्तु इस बेसिर पैर की ढूंढ़ खोज से साथियों को बेहद परेशानी थी. वे परेशान से थे कि अचानक उन्हें पास ही से कहीं राइफ़ल छूटने की आवाज़ सुनाई दी. आवाज़ को अन्दाज़ करके घोड़े के मुंह उन्होंने उधर ही फेर दिये. एड़ लगी और घोड़े हवा में तैरने लगे. थोड़ी दूर पर उन्हें हलका धुंआ आसमान की ओर उठता हुआ दिखाई दिया. साथी उसी ओर बढ़े. थोड़ी दूर और चलकर उन्हें बुझती हुई आग की फीकी लौ दरख़्तों के झुरमुट में आंख मिचौनी खेलती दिखाई दी. साथियों ने सतर्क होकर आगे बढ़ना शुरू किया. इतने में मैं उन्हें नंगे पैर अपने सफ़ेद स्लीपिंग सूट में खड़ा दिखाई दिया. मेरा घोड़ा भी पास ही खड़ा था. मेरी आंखें चौपट खुली हुई थीं और मेरी राइफ़ल से धुएं की आख़री सांसें निकल रही थीं. आग की ढेरी और मुझमें क़रीब 60 गज़ का फ़ासला था.

"साथियों ने मुझे घेर कर एक साथ सवाल करने शुरू कर दिये. जो कुछ मैं जानता था मैंने उन्हें सुनाना शुरू कर दिया—'रात जल्दी ही मैं सोने चला गया था. दिन भर का थका था इसलिये नींद ने फ़ौरन ही मुझे अपने दामन में समेट लिया. इसके बाद मैंने एक सपना देखना शुरू किया. दिमाग़ उसी गोरे के ख़याल से भरा हुआ था. सपने में मैंने देखा कि चांदनी रात में मैं घोड़े पर उसका पीछा कर

" ناچ سماروہ میں میرے اِس طرح اُول جلول داخل ہونے سے مہلاؤں کو خاصی دلی چوٹ پہونچی ۔ بعد میں مجھے بتایا گیا کہ کئی مہلائیں چیخ پڑیں اور ایک یا دو کو تو غش آ گیا ۔ لوکاچار کے وِرودھ میرا آچرن دیکھکر ساتھی حیرت میں تھے ۔ اُن کا کچھ سمے تو مہلاؤں کی زخمی بھاؤناؤں کو شانت کرنے میں گیا اور اُسکے بعد انہیں میری فکر ہوئی ۔ اتنے میں کسی نے گھوڑے کی ٹاپ سنی ۔ میرے ساتھی فوراً اصطبل کی اور لپکے ۔ اِنہیں معاملہ نازک معلوم ہونے لگا ۔

" اور میرا کہیں پتہ نہیں تھا ۔ اصطبل کا دروازہ کھلا ہوا تھا ۔ نہ وہاں میرا گھوڑا تھا' نہ اُس کی زین اور نہ لگام ۔ ساتھیوں نے جلدی جلدی اپنے اپنے گھوڑے کسے ۔ اِنہیں پریشانی یہ تھی کہ مجھے کھوجنے وے کدھر جاتے ۔ مانا میں رائفل سے لیس تھا پھر بھی آسٹریلیا کی گھنی جھاڑیوں کی بھول بھلیوں میں پھنس کر نکل سکنا مذاق نہ تھا ۔ میری ممکن بدقسمتی کی کلپنا کر کے ساتھی فکر سے بھر اُٹھے ۔

" چتردشی کا چاند چاروں اور اپنی جیوتسنا بکھیر رہا تھا ۔ ہوا جیوں ہی قدرت کا دوپٹہ اڑانے کی کوشش کرتی بادل کے دو ایک ٹکڑے چاند کے سامنے اِس طرح آ جاتے مانو قدرت شرما کر کھڑکیوں پر پردے ڈال رہی ہو ۔ اگر اور دوسرا موقع ہوتا تو یہ گھوڑ سیر خاصی مزیدار رہتی' کنتو اِس بے سر پیر کی ڈھونڈھ کھوج سے ساتھیوں کو بے حد پریشانی تھی ۔ وے پریشان سے تھے کہ اچانک انہیں پاس ہی سے کہیں رائفل چھوٹنے کی آواز سنائی دی ۔ آواز کو انداز کر کے گھوڑے کے منھ انہوں نے ادھر ہی پھیر دیئے ۔ ایڑ لگی اور گھوڑے ہوا میں تیرنے لگے ۔ تھوڑی دور پر انہیں ہلکا دھواں آسمان کی اور اٹھتا ہوا دکھائی دیا ۔ ساتھی اُسی اور بڑھے ۔ تھوڑی دور اور چل کر انہیں بجھتی ہوئی آگ کی پھیکی لو درختوں کے جھرمٹ میں آنکھ مچولی کھیلتی دکھائی دی ۔ ساتھیوں نے سترک ہو کر آگے بڑھنا شروع کیا ۔ اتنے میں میں انہیں ننگے پیر اپنے سفید سلیپنگ سوٹ میں کھڑا دکھائی دیا ۔ میرا گھوڑا بھی پاس ہی کھڑا تھا ۔ میری آنکھیں بالکل کھلی ہوئی تھیں اور میری رائفل سے دھوئیں کی آخری سانسیں نکل رہی تھیں ۔ آگ کی ڈھیری اور مجھ میں قریب 60 گز کا فاصلہ تھا ۔

" ساتھیوں نے مجھے گھیر کر ایک ساتھ سوال کرنے شروع کر دیئے ۔ جو کچھ میں جانتا تھا میں نے انہیں سنانا شروع کر دیا —' رات جلدی ہی میں سونے چلا گیا تھا ۔ دن بھر کا تھکا تھا اس لئے نیند نے فوراً ہی مجھے اپنے دامن میں سمیٹ لیا ۔ اس کے بعد میں نے ایک سپنا دیکھنا شروع کیا ۔ دماغ اُسی گورے کے خیال سے بھرا ہوا تھا ۔ سپنے میں میں نے دیکھا کہ چاندنی رات میں میں گھوڑے پر اس کا پیچھا کر

परेशान हो गई और आम लोगों के दिल दहल गये. इस पर कुछ बहादुर और साहसी लोगों ने फ़ैसला किया कि एक दल संगठित करके इस नाहनजार गोरे को, जिन्दा या मुर्दा, किसी तरह पकड़ कर लाया जाय. मेरे दिल में उस अंग्रेज की खोपड़ी पाने का कोई खास लालच न था; हालांकि अनुसन्धान में ऐसी खोपड़ी बड़ी क़ीमती और काम की साबित हो सकती थी. इसलिये कुछ तो दिल बहलाव के ख्याल से और कुछ वैज्ञानिक प्रयोग के उद्देश्य से मैं भी स्वयंसेवकों के इस दल में भरती हो गया.

"और वह गोरा भी खासा मुजरिम था. उसने हमें खूब ही छकाया. बाल बाल वह हमारे पंजे से बचकर निकल जाता. वहां के जंगलों और पहाड़ों से वह पूरी तरह वाक़िफ़ था. घुड़सवारी और निशानेबाजी में सचमुच उसका कोई सानी न था. अजब कैफ़ियत थी उसकी—यह आया और वह गया और हम मुंह ताकते रह जाते थे. वह सारी कहानी सुनाकर मैं तुम्हें बेज़ार न करूंगा. उस मानव नाटक के अन्तिम दृश्य का ही जिक्र करूंगा.

"ज्यों ही हमें उसके पते की सूचना मिलती हम फ़ौरन उसकी तलाश में रवाना होते. हफ्तों हमने एक दिन से ज्यादा किसी जगह आराम नहीं किया. जिस शहर में हम ठहरते वहां के धनी मानी हमारी दावतें करते और अपने बढ़िया घोड़े हमारे हवाले कर देते. पीछा करते हुये एक दिन हम ऐलिसस्प्रिंग नामक एक पहाड़ी नगर में पहुंचे. नगर के मेयर की आलीशान कोठी के सामने हमारे घोड़े रुके. कोठी के भीतर किसी सिलसिले में मेहमानों की ख़ातिर तवाजो हो रही थी. हालांकि हम लोग काफ़ी तादाद में थे फिर भी घर की मालकिन ने दिल से हमारा स्वागत किया. रात के भोजन के बाद नाच और संगीत का समां बंधा. मुझे खुद नाच से कोई शौक़ नहीं. मेरी सारी जिन्दगी प्रकृति की उपासना में ही बीती है और मैंने क़ुदरत के खुले सफ़े पढ़ने में ही उम्र काटी है. गृहस्वामी से छुट्टी लेकर मैं सोने चला गया. सारा दिन घोड़े की पीठ पर ही कटा था. जैसे ही लेटा, गहरी नींद तारी हो गई.

"इसके बाद जो कुछ मैंने अपने साथियों से सुना, वही तुम्हें सुना रहा हूं. लोग नाच रंग और शराब में डूबे हुए थे. पियानो की मधुर गति बिठोवन के एक गीत पर ताल भर रही थी. नवयुवक और युवतियां कमर में हाथ डाले कोरस दुहरा रहे थे कि सहसा स्लीपिंग ड्रेस में ही मैं उस मजमे में हाथ में राइफल लिये दाखिल हुआ और कमरे से निकल मकान के पीछे अस्तबल की ओर गया. सर मेरा पीछे की ओर झुका हुआ था और आंखें उस तरह खुली हुई थीं कि मानो पास की चीज़ों से बेख़बर मैं बहुत दूर ग़ैब की कोई चीज़ देख रहा हूं.

پریشان ہوگئی اور عام لوگوں کے دل دہل گئے۔ اس پر کچھ بہادر اور ساھسی لوگوں نے فیصلہ کیا کہ ایک دل سنگٹھت کر کے اِس ناھنجار گورے کو، زندہ یا مردہ، کسی طرح پکڑ کر لایا جائے۔ میرے دل میں اُس انگریز کی کھوپڑی پانے کا کوئی خاص لالچ نہ تھا، حالانکہ انوسندھان میں ایسی کھوپڑی بڑی قیمتی اور کام کی ثابت ہو سکتی تھی۔ اِس لئے کچھ تو دل بہلاؤ کے خیال سے اور کچھ وگیانک پریوگ کے اُدیش سے میں بھی سویم سیوکوں کے اِس دل میں بھرتی ہوگیا۔

" اور وہ گورا بھی خاصہ مجرم تھا۔ اِس نے ہمیں خوب ہی چھکایا۔ بال بال وہ ہمارے پنجے سے بچ کر نکل جاتا۔ وہاں کے جنگلوں اور پہاڑوں سے وہ پوری طرح واقف تھا۔ گھوڑ سواری اور نشانہ بازی میں سچ مچ اس کا کوئی ثانی نہ تھا۔ عجب کیفیت تھی اس کی — یہ آیا اور وہ گیا اور ہم منہ تاکتے رہ جاتے تھے۔ وہ ساری کہانی سنا کر میں تمہیں بیزار نہ کروں گا۔ اُس مانو ناٹک کے انتم درشیہ کا ہی ذکر کرونگا۔

" جیوں ہی ہمیں اُن کے پتہ کی سوچنا ملتی ہم فوراً اُس کی تلاش میں روانہ ہوتے۔ ہفتوں ہم نے ایک دن سے زیادہ کسی جگہ آرام نہیں کیا۔ جس شہر میں ہم ٹھہرتے وہاں کے دھنی مانی ہماری دعوتیں کرتے اور اپنے بڑھیا گھوڑے ہمارے حوالے کر دیتے۔ پیچھا کرتے ہوئے ایک دن ہم ایلس اسپرنگ نامک ایک پہاڑی نگر میں پہونچے۔ نگر کے میئر کی عالیشان کوٹھی کے سامنے ہمارے گھوڑے رکے۔ کوٹھی کے بھیتر کسی سلسلے میں مہمانوں کی خاطر تواضع ہو رہی تھی۔ حالانکہ ہم لوگ کافی تعداد میں تھے پھر بھی گھر کی مالکن نے دل سے ہمارا سواگت کیا۔ رات کے بھوجن کے بعد ناچ اور سنگیت کا سماں بندھا۔ مجھے خود ناچ سے کوئی شوق نہیں۔ میری ساری زندگی پرکرتی کی اُپاسنا میں ہی بیتی ہے اور میں نے قدرت کے کھلے صفحے پڑھنے میں ہی عمر کاٹی ہے۔ گرہ سوامی سے چھٹی لے کر میں سونے چلا گیا۔ سارا دن گھوڑے کی پیٹھ پر ہی کٹا تھا۔ جیسے ہی لیٹا، گہری نیند طاری ہو گئی۔

" اس کے بعد جو کچھ میں نے اپنے ساتھیوں سے سنا، وہی تمہیں سنا رہا ہوں۔ لوگ ناچ رنگ اور شراب میں ڈوبے ہوئے تھے۔ پیانو کی مدھر گتی بتھوون کے ایک گیت پر تال بھر رہی تھی۔ نویوک اور یوتیاں کمر میں ہاتھ ڈالے کورس دہرا رہے تھے کہ سہسا سیلپنگ ڈریس میں ہی میں اِس مجمع میں ہاتھ میں رائفل لئے داخل ہوا اور کمرے سے نکل مکان کے پیچھے اصطبل کی اور گیا۔ سر میرا پیچھے کی اور جھکا ہوا تھا اور آنکھیں اس طرح کھلی ہوئی تھیں کہ مانو پاس کی چیزوں سے بےخبر میں بہت دور غیب کی کوئی چیز دیکھ رہا ہوں۔

काले कुनबे रहते थे. कभी कभी अपवाद की तरह अन्धड़ और तूफ़ान नाशाइस्तगी बरतने लगते थे वरना पूरे बरस भर मन्द मन्द वायु झील के जल को गुदगुदी करती रहती थी. लहरें जलवायु को गलबांही देने के लिये भुजायें फैलाती थीं तो वायु बल खाती हुई किनारे की ओर सघन कुंजों में भाग जाती थी. झील का नीला जल किनारे के चारों ओर पीली पीली रेत के फैलाव में ऐसा लगता था मानो पुखराज के बीचों बीच किसी ने नीलम जड़ दिया हो. झील के एक किनारे गहरे लाल पत्थर की पहाड़ियां धब्बों की तरह फैली हुई थीं और इन पहाड़ियों के पास कास के सफ़ेद घने उगे फूल ऐसे लगते थे मानो क़ुदरत के महावर लगे पैरों में पायज़ेब पड़ी हों. सूर्य की पहली किरनों के मंजुल प्रभात में हज़ारों जलचर तट की रेत पर संख, सीपी और घोंघों का कवच पहने इस तरह फिरते थे मानों झील की रानी के बाडीगार्ड पैरेड कर रहे हों.

"झील के चारों ओर फैले हुये हरे भरे जंगल झील से कुछ कम सुहावने न थे. शोभनीय वृक्ष, कुसुमित झाड़ियां, फूलों के भार से लदी लतायें और नाज़ुक फ़र्न अपने बिखरे हुये रूप में भी बेहद सुन्दर लगते थे. मैगनोलिया के सफ़ेद फूल सुनहले रङ्ग के बड़े बड़े सूरजमुखी, ख़ुशबू से तर मेरोज़ा, तारिकाओं की तरह खिली हुई यूथिका और मनहर नील गुम्फा आस्ट्रेलिया के इस मर्मस्थल को मदविभोर किये रहते थे. हवा के ज़र्रे ज़र्रे में ख़ुशबू समाई रहती थी. इन सघन कुंजों के पीछे बादाम और अख़रोट, सेब और नाशपाती, नारियल और साबूदाने के दरख़्त बेतरतीब खड़े हुये थे और इनसे परे छोटी छोटी पहाड़ियां धावड़ा, सागवन और शीशम के दरख़्तों का भार लादे बोझिल पड़ी हुई थीं.

"जाने कैसे क़ुदरत का यह मनोरम प्राणस्थल सुबह के टूटे हुये सपने की तरह यकायक मिट गया. दानव रेगिस्तान सारी हरियाली निगल कर तीन हज़ार मील के फैलाव की यह अटूट जल राशि पी गया. इस रेगिस्तान की छान बीन करते हुये मुझे कई आश्चर्यजनक तजरुबे हुये. अपनी इसी खोज में आबादी से क़रीब एक हज़ार मील दूर मैं एक दुर्घटना में फंस गया. एक बीहड़ और ख़तरनाक पहाड़ी से उतरते हुये खड्ड में गिर कर मैंने अपनी दोनों टांगें तोड़ लीं. बदक़िस्मती से मैं बिलकुल अकेला था. मुझे अपना खाना भी जुटाना पड़ता और अपनी टूटी टांगों को भी अपने पीछे घसीटना पड़ता. ख़ुदा जाने कैसे सारा रास्ता तय करके मैं वापस आबादी में पहुंचा. पूरी तरह ठीक होने में मुझे महीनों लग गये. अच्छा होकर जी बहलाने के लिये मैं सामाजिक राग रंग में लग गया.

"इसी सबब एक गोरे मुजरिम के कारनामों से आस्ट्रेलिया में तहलका मचा हुआ था. सरकार और पुलिस दोनों

جانے بنے رہتے تھے ۔ کبھی کبھی اپواد کی طرح آندھی اور طوفان ناشائستگی برتنے لگتے تھے ورنہ پورے برس بھر مند مند وایو جھیل کے جل کو گدگدی کرتی رہتی تھی ۔ لہریں جل وایو کو گل باہیں دینے کے لئے بھجائیں پھیلاتی تھیں تو وایو بل کھاتی ہوئی کنارے کی اور سگھن کنجوں میں بھاگ جاتی تھی ۔ جھیل کا نیلا جل کنارے کے چاروں اور پیلی پیلی ریت کے پھیلاؤ میں ایسا لگتا تھا مانو پکھراج کے بیچوں بیچ کسی نے نیلم جڑ دیا ہو ۔ جھیل کے ایک کنارے گہرے لال پتھر کی پہاڑیاں دھبوں کی طرح پھیلی ہوئی تھیں اور ان پہاڑیوں کے پاس کاس کے سفید گھنے اُگے پھول ایسے لگتے تھے مانو قدرت کے مہاور لگے پیروں میں پائزیب پڑی ہوں ۔ سوریہ کی پہلی کرنوں کے منجل پربھات میں ہزاروں جلچر تٹ کی ریت پر سنکھ، سیپی اور گھونگھوں کا کوچ پہنے اس طرح پھرتے ہیں مانو جھیل کی رانی کے باڈی گارڈ پریڈ کر رہے ہوں ۔

"جھیل کے چاروں اور پھیلے ہوئے ہرے بھرے جنگل جھیل سے کچھ کم سہاونے نہ تھے ۔ شوبھنیہ ورکچھ، کسمت جھاڑیاں، پھولوں کے بھار سے لدی لتائیں اور نازک فرم اپنے بکھرے ہوئے روپ میں بھی بیحد سندر لگتے تھے ۔ میگنولیا کے سفید پھول سنہلے رنگ کے بڑے بڑے سورج مکھی، خوشبو سے تر میروزا، تاریکاؤں کی طرح کھلی ہوئی یوتھیکا اور منہر نیل گمفا آسٹریلیا کے اس مرم استھل کو مد وبھور کئے رہتے تھے ۔ ہوا کے ذرے ذرے میں خوشبو سمائی رہتی تھی ۔ ان سگھن کنجوں کے پیچھے بادام اور اخروٹ، سیب اور ناشپاتی، ناریل اور سابودانے کے درخت بےترتیب کھڑے ہوئے تھے اور ان سے پرے چھوٹی چھوٹی پہاڑیاں، گھاؤڑا، ساگون اور شیشم کے درختوں کا بھار لادے بوجھل پڑی ہوئی تھیں ۔

"جانے کیسے قدرت کا یہ منورم پران استھل صبح کے ٹوٹے ہوئے سپنے کی طرح یکایک مٹ گیا ۔ دانو ریگستان ساری ہریالی نگل کر تین ہزار میل کے پھیلاؤ کی یہ اٹوٹ جل راشی پی گیا ۔ اس ریگستان کی چھان بین کرتے ہوئے مجھے کئی آشچریجنک تجربے ہوئے ۔ اپنی اسی کھوج میں آبادی سے قریب ایک ہزار میل دور میں ایک درگھٹنا میں پھنس گیا ۔ ایک بیہڑ اور خطرناک پہاڑی سے اُترتے ہوئے کھڈ میں گر کر میں نے اپنی دونوں ٹانگیں توڑلیں ۔ بدقسمتی سے میں بالکل اکیلا تھا ۔ مجھے اپنا کھانا بھی جٹانا پڑتا اور اپنی ٹوٹی ٹانگوں کو بھی اپنے پیچھے گھسیٹنا پڑتا ۔ خدا جانے کیسے سارا راستہ طے کرکے میں واپس آبادی میں پہونچا ۔ پوری طرح ٹھیک ہونے میں مجھے مہینوں لگ گئے ۔ اچھا ہوکر جی بہلانے کے لئے میں سماجک راگ رنگ میں لگ گیا ۔

"اسی سبب ایک گورے مجرم کے کارناموں سے آسٹریلیا میں تہلکہ مچا ہوا تھا ۔ سرکار اور پولس دونوں

और पापुआ की जातियों का मूल निकास मैलेनेशिया के टापुओं से हुआ है और असल में दक्खिनी समुद्र की सारी जातियों का मूल सोता उसी तरह एक है जिस तरह यूरोप और एशिया में फैली हुई आर्य जातियों का.

इसी सिलसिले में प्रोफ़ैसर अकसर अपनी स्पेन यात्रा का भी ज़िक्र करते थे. वहां कादिज़ में एक स्पेनिअर्ड की खोपड़ी ने उन्हें बेहद लुभाया था. विकसित खोपड़ियों को जीवित देह से जुदा देखने की ख्वाहिश के पीछे प्रोफ़ैसर की कोई कापालिक भावना न थी. वह तो मानव जाति शास्त्र के विशेषज्ञ थे और कौन जाने किसी आदिम काल में कापालिकों के बलिगृह में ही इस शास्त्र की नींव पड़ी हो. उस स्पेनिअर्ड की तन्दुरुस्ती दिनों दिन बिगड़ती जा रही थी. प्रोफ़ैसर के पास इतना वक़्त न था कि वह ज़्यादा दिनों तक वहां ठहर सकते! वह इस परेशानी में थे कि मौत की धीमी चाल को उसके प्राणों में किस तरह तेज़ किया जाय. प्रोफ़ैसर को पता चला कि उस खोपड़ी के मालिक का एक ऐयाश और दुराचारी भतीजा है. प्रोफ़ैसर ने उसके साथ अपनी दोस्ती बढ़ाई और बातों बातों में उसे समझाया कि उसके चचा की हालत बहुत नाज़ुक है और उसके बचने की कोई उम्मीद नहीं है. अपने बारे में उन्होंने उसे बताया कि वे इनसानों की भलाई के लिये वैज्ञानिक छानबीन में लगे हुये हैं. भतीजे के साथ यह सौदा तय हुआ कि चचा के मरने पर उसे चार सौ रुपये दिये जायंगे और इसके एवज़ में भतीजा अपने चचा की खोपड़ी प्रोफ़ैसर के हवाले कर देगा. इस सौदे के बाद एक दिन सुना गया कि चचा की अचानक मौत हो गई. वादे के मुताबिक़ भतीजे को सारी रक़म चुका दी गई. मगर वह, जो भतीजा था, ज़िन्दगी में उसके कोई उसूल ही न थे. रक़म लेकर उसने प्रोफ़ैसर को अंगूठा दिखाया और अपने चचा को दफ़ना दिया.

किस तरह अपनी रक़म की पाई पाई प्रोफ़ैसर ने उससे वसूल कर ली यह भी एक दिलचस्प क़िस्सा है. मगर इस समय मैं एक दूसरी ही घटना तुम्हें सुनाने बैठा था. प्रोफ़ैसर की ही यह कही हुई है और उन्हीं के शब्दों में तुम्हें ज्यों की त्यों मैं इसे सुना रहा हूं—

"मैं उस समय उन बची खुची जातियों का पता लगाने में मसरूफ़ था जो मिटती जा रही हैं. आज आस्ट्रेलिया के ठीक मर्मस्थल में हज़ारों मील लम्बा चौड़ा रेगिस्तान है. लेकिन किसी ज़माने में यही तीन हज़ार मील के फैलाव में मीठे पानी की एक बेहद खुशनुमा झील थी. उसके चारों ओर लाखों पेड़ थे जिन पर करोड़ों परिन्द कलरव करते रहते थे. ऊपर साफ़ नीला आसमान का चंदोवा तना रहता था और सूर्य भगवान दिन में 16-घन्टे अपनी किरनों के ताने

اور پاپوآ کی جاتیوں کا مول نکاس میلےنیشیا کے ٹاپوؤں سے ہوا ہے اور اصل میں دکھنی سمدر کی ساری جاتیوں کا مول سوتا اسی طرح ایک ہے جس طرح یورپ اور ایشیا میں پھیلی ہوئی آریہ جاتیوں کا۔

اِسی سلسلے میں پروفیسر اکثر اپنی اسپین یاترا کا بھی ذکر کرتے تھے۔ وہاں کادز میں ایک اسپینیرڈ کی کھوپڑی نے انہیں بیحد لبھایا تھا۔ وکست کھوپڑیوں کو جیوت دیہہ سے جدا دیکھنے کی خواہش کے پیچھے پروفیسر کی کوئی کاپالک بھاؤنا نہ تھی۔ وہ تو مانو جاتی شاستر کے وشیشگیہ تھے اور کون جانے کسی آدم کال میں کپالکوں کے بیلگرہ میں ہی اِس شاستر کی نیو پڑی ہو۔ اُس اسپینیرڈ کی تندرستی دنوں دن بگڑتی جارہی تھی۔ پروفیسر کے پاس اتنا وقت نہ تھا کہ وہ زیادہ دنوں تک وہاں ٹھہر سکتے! وہ اِس پریشانی میں تھے کہ موت کی دھیمی چال کو اُس کے پرانوں میں کس طرح تیز کیا جائے۔ پروفیسر کو پتہ چلا کہ اس کھوپڑی کے مالک کا ایک عیاش اور دوراچاری بھتیجا ہے۔ پروفیسر نے اُس کے ساتھ اپنی دوستی بڑھائی اور باتوں باتوں میں اُسے سمجھایا کہ اُس کے چچا کی حالت بہت نازک ہے اور اس کے بچنے کی کوئی امید نہیں ہے۔ اپنے بارے میں انہوں نے اُسے بتایا کہ وے انسانوں کی بھلائی کے لئے ویگیانک چھان بین میں لگے ہوئے ہیں۔ بھتیجے کے ساتھ یہ سودا طے ہوا کہ چچا کے مرنے پر اسے چار سو روپئے دیئے جائینگے اور اس کے عیوض میں بھتیجا اپنے چچا کی کھوپڑی پروفیسر کے حوالے کردےگا۔ اس سودے کے بعد ایک دن سنا گیا کہ چچا کی اچانک موت ہوگئی۔ وعدے کے مطابق بھتیجے کو ساری رقم چکادی گئی۔ مگر وہ، جو بھتیجا تھا، زندگی میں اس کے کوئی اصول ہی نہ تھے۔ رقم لیکر اس نے پروفیسر کو انگوٹھا دکھایا اور اپنے چچا کو دفنا دیا۔

کس طرح اپنی رقم کی پائی پائی پروفیسر نے اُس سے وصول کرلی یہ بھی ایک دلچسپ قصہ ہے۔ مگر اس سمے میں ایک دوسری ہی کہانی تمہیں سنانے بیٹھا تھا۔ پروفیسر کی ہی یہ کہی ہوئی ہے اور انہیں کے شبدوں میں تمہیں جیوں کی تیوں میں اِسے سنا رہا ہوں—

"میں اس سمے اُن بچی کھچی جاتیوں کا پتہ لگانے میں مصروف تھا جو مٹتی جارہی ہیں۔ آج آسٹریلیا کے ٹھیک مرمستھل میں ہزاروں میل لمبا چوڑا ریگستان ہے۔ لیکن کسی زمانے میں یہیں تین ہزار میل کے پھیلاؤ میں میٹھے پانی کی ایک بیحد خوشنما جھیل تھی۔ اُس کے چاروں اور لاکھوں پیڑ تھے جن پر کروڑوں پرند کلرو کرتے رہتے تھے اوپر صاف نیلے آسمان کا چندوہا تنا رہتا تھا اور سوریہ بھگوان دن میں 16 گھنٹے اپنی کرنوں کے تانے

महज़ क़यास

विश्वम्भरनाथ पांडे

जो वाक़या मैं तुम्हें सुनाने जा रहा हूं उसकी सच्चाई का मैं ज़िम्मा नहीं लेता. न यह मेरी गढ़ी हुई है और न मैंने इसे सीधा इसके गढ़ने वाले से ही सुना है. मुमकिन है यह गंगा-जमुनी बनकर मेरे पास पहुंची हो. इसके मूल रचयिता एक वैज्ञानिक थे जो अपने गम्भीर अनुसन्धानों के बीच जी बहलाने के लिये कभी कभी गप भाड़ लिया करते थे. क़ुदरत के सनातन तत्व सदा ही उनकी आंखों के सामने रहते थे और इसलिये उनके यह छोटे मोटे गप जीवन की अटपटी यात्रा के महज़ विराम चिह्न थे. उनकी कल्पना रोमांस के तारों को छू कर, अचरज भरे राग और ऐसे ऐसे असर पैदा करती थी जो सम्भावना (मुमकिनात) से परे होते थे.

लोग प्रोफ़ैसर को ख़ब्ती समझते; लेकिन अपने क़िस्म के ख़ब्तियों में भी प्रोफ़ैसर का दरजा बहुत ऊंचा था. कहां के वे असली रहने वाले हैं, इसका किसी को पता न था. और उससे कुछ पूछना भी फ़िज़ूल था. उनके जवाब सत्य-असत्य की विभाजक रेखा पर झूमते हुये उतरते थे. उनके चारों ओर सन्देह की लकीर बराबर बढ़ती ही जाती थी. कैसे, कहां से, और क्यों आस्ट्रेलिया में आकर वे रहे, इस पर बीते हुये ज़माने की गहरी परत पड़ चुकी थी. हां, यह बात सभी जानते थे कि प्रोफ़ैसर मानव जाति शास्त्र (anthropology) के विशेषज्ञ थे.

जब मैं उनसे पहली बार मिला उस वक़्त उनके साथ एक पापुअन लड़का रहता था. इतना काला था वह कि कोयले के टुकड़े से उस पर सफ़ेद निशान बनाया जा सकता था. प्रोफेसर बड़े प्यार से उस बच्चे के सर पर हाथ फेरते और उसे तन्दुरुस्त और बड़े होने का आशीर्वाद देते थे. लड़का होशियार था और वे समझते थे कि पचीसा लांघकर उसकी खोपड़ी पूरी तरह विकसित हो जायगी. प्रोफ़ैसर को उस दिन का इन्तज़ार था जब इस पापुअन की विकसित खोपड़ी हाथ में लेकर वह उसकी अन्दर बाहर से जांच कर सकेंगे.

उनके अनुसन्धान घर में टेबुल पर आस्ट्रेलिया, न्यूगिनि, मलाया और सुमात्रा के आदिमवासियों की कई खोपड़ियां रखी थीं. इस लड़के की खोपड़ी से उनकी तुलना करके प्रोफ़ैसर यह साबित करना चाहते थे कि इन देशों

محض قیاس

وشومبھر ناتھ پانڈے

جو واقعہ میں تمہیں سنانے جارہا ہوں اُس کی سچائی کا میں ذمہ نہیں لیتا. نہ یہ میری گڑھی ہوئی ھے اور نہ میں نے اسے سیدھا اس کے گڑھنے والے سے ہی سنا ھے . ممکن ھے یہ گنگا جمنی بن کر میرے پاس پہونچی ہو . اس کے مول رچیتا ایک ویگیانک تھے جو اپنے گمبھیر انوسندھانوں کے بیچ جی بہلانے کے لئے کبھی کبھی جھاڑ لیا کرتے تھے . قدرت کے سناتن تتو سدا ہی ان کی آنکھوں کے سامنے رہتے تھے اور اس لئے اُن کے یہ چھوٹے موٹے گپ جیون کی اٹپٹی یاترا کے محض ورام چنہ تھے . ان کی کلپنا رومانس کے تاروں کو چھوکر، اچرج بھرے راگ اور ایسے ایسے اثر پیدا کرتی تھی جو سمبھاونا (ممکنات) سے پرے ہوتے تھے .

لوگ پروفیسر کو خبطی سمجھتے؛ لیکن اپنے قسم کے خبطیوں میں بھی پروفیسر کا درجہ بہت اُونچا تھا . کہاں کے وے اصلی رہنے والے ہیں، اس کا کسی کو پتہ نہ تھا . اور ان سے کچھ پوچھنا بھی فضول تھا . ان کے جواب ستیہ‌استیہ کی وبھاجک ریکھا پر جھومتے ہوئے اُترتے تھے. ان کے چاروں اور سندیہ کی لکیر برابر بڑھتی ہی جاتی تھی . کیسے، کہاں سے، اور کیوں آسٹریلیا میں آکر وے رہے، اس پر بیتے ہوئے زمانے کی گہری پرت پڑچکی تھی . ہاں، یہ بات سبھی جانتے تھے کہ پروفیسر مانو جاتی شاستر (anthropology) کے وشیشگیہ تھے .

جب میں اُن سے پہلی بار ملا اس وقت ان کے ساتھ ایک پاپون لڑکا رہتا تھا . اتنا کالا تھا وہ کہ کوئلے کے ٹکڑے سے اس پر سفید نشان بنایا جاسکتا تھا . پروفیسر بڑے پیار سے اُس بچے کے سر پر ہاتھ پھیرتے اور اُسے تندرست اور بڑے ہونے کا آشیرواد دیتے تھے. لڑکا ہوشیار تھا اور وے سمجھتے تھے کہ پچیسا لانگھ کر اُس کی کھوپڑی پوری طرح وکست ہوجائیگی، پروفیسر کو اُس دن کا انتظار تھا جب اِس پاپون کی وکست کھوپڑی ہاتھ میں لےکر وے اس کی اندر باہر سے جانچ کرسکیں گے .

اُن کے انوسندھان گھر میں ٹیبل پر آسٹریلیا، نیوگنی، ملایا اور سماترا کے آدیواسیوں کی کئی کھوپڑیاں رکھی تھیں . اس لڑکے کی کھوپڑی سے اُن کی تولنا کرکے پروفیسر یہ ثابت کرنا چاہتے تھے کہ ان دیشوں

कितना सुन्दर विचार और पहचान है ! मुसलमानों के लिए 'पराए' 'विदेशी' आदि शब्दों को लगा कर उन्हें दूसरा मानने की कल्पना भी नहीं उठ सकती ! मन को मूस कर यानी मस कर (वश में कर), और साहिब के रुख— (आत्मोन्मुख) होकर, जो ज्ञान मुसल्ला गह—(केवल ज्ञान को प्राप्त कर), टिक जाता है—सिद्ध हो जाता है, वही मुसलमान है. हिन्दू मुसलिम भेद पर वे कहते हैं—

"मन की द्विविधा मान कर, भये एक सों दोय !"

बनारसीदास जी की नजर में हिन्दू और मुसलमानों की लड़ाई उन दो भाइयों के समान थी जो अपने खेत में अलसी और जवस बोने के लिए लड़ रहे थे, पर वस्तु वास्तव में एक ही थी. वह लड़ाई ज्ञानी 'द्विभाशिया' के मिलने पर तत्काल शान्त हो गई.

बनारसीदास हिन्दू मुसलिम विभेद पर कहते हैं—

एक रूप हिन्दू तुरक, दूजी दशा न कोय।
मन की द्विविधा मान कर, भये एक सों दोय ॥

दोऊ भूले भरम में, करें वचन की टेक।
'राम-राम' हिन्दू कहें, तुर्क 'सलामालेक' ॥

इनके पुस्तक बांचिये, वेहू पढ़ें कितेब।
एक वस्तु के नाम द्वय, जैसे शोभा, जेब ॥

तिन को द्विविधा-जे लखें, रंग बिरंगी चाम।
मेरे नैनन देखिये, घट-घट अन्तर राम ॥

आज यदि लोग बनारसीदास जी की आंखों से देखने की तकलीफ़ करें तो, उन्हें साफ़ दिखाई देगा कि यह सब भेदाभेद 'मन की द्विविधा मान कर' ही पैदा हुआ और उसी के चक्कर में फंस मनुश्य भ्रम में भूल कर भेद-भाव पर अड़ा हुआ है.

کتنا سندر وچار اور پہچان ھے ! مسلمانوں کے لئے ' پرائے ' ' ودیشی ' آدی شبدوں کو لگا کر انہیں دوسرا ماننے کی کلپنا بھی نہیں اٹھ سکتی ! من کو مھس کر یعنی مس کر (وش میں کر)' اور صاحب کے رخ (آتمون مکھ) ھو کر' جو گیان مسلا گہہ—(کیول گیان کو پراپت کر)' ٹک جاتا ھے—سدھ ھو جاتا ھے' وھی مسلمان ھے . ھندو مسلم بھید پر وے کہتے ھیں—

" من کی دویدھا مان کر' بھئے ایک سوں دوئے ! "

بنارسی داس جی کی نظر میں ھندو اور مسلمانوں کی لڑائی اُن دو بھائیوں کے سمان تھی جو اپنے کھیت میں السی اور جوس بونے کے لئے لڑ رھے تھے' پر وستو واستو میں ایک ھی تھی. وہ لڑائی گیان ' دوئی بھاشیا ' کے ملنے پر تتکال شانت ھوگئی.

بنارسی داس ھندو مسلم وبھید پر کہتے ھیں—

ایک روپ ھندو تورک' دوجی دشا نہ کوئے'
من کی دویدھا مان کر' بھئے ایک سوں دوئے .

دوؤں بھولے بھرم میں' کریں وچن کی ٹیک'
' رام رام ' ھندو کہیں ' ترک ' سلام عالیک .

اِن کے پستک بانچئے' وبھو پڑھیں کتیب'
ایک وستو کے نام دوئے' جیسے شوبھا' زیب .

تن کوں دویدھا جے لکھیں' رنگ برنگی چام'
مورے نینن دیکھئے' گھٹ گھٹ انتر رام .

آج یدی لوگ بنارسی داس جی کی آنکھوں سے دیکھنے کی تکلیف کریں تو' انہیں صاف دکھائی دے گا کہ یہ سب بھیدابھید ' من کی دویدھا مان کر' ھی پیدا ھوا ھے اور اُسی کے چکر میں پھنس منشیہ بھرم میں بھول کر بھید بھاؤ پر اڑا ھوا ھے .

कवि लिखने के लिये तब तक क़लम नहीं उठाता जब तक उसकी स्याही प्रेम की आहों से शराबोर नहीं हो जाती.

—शेक्सपियर

کوی لکھنے کے لئے تب تک قلم نہیں اُٹھاتا جب تک اُس کی سیاھی پریم کی آھوں سے شرابور نہیں ھوجاتی .

—شیکسپیر

अकबर के समकालीन जैन कवि बनारसीदास

श्री जमनालाल जैन

कवि शेखर बनारसीदास जी ने भी अपने ढंग से हिन्दू मुसलमान समस्या पर धार्मिक निगाह से रोशनी डाली है. बनारसीदास जी जिस जमाने में जीवित थे, उस समय सम्राट अकबर का शासन सूर्य चमक रहा था. सम्राट अकबर से उन्हें बेहद प्रेम था. जब संवत् 1662 विक्रम में अकबर की मौत हुई तब उस समाचार को सुन बनारसीदास सुधिहीन होकर गिर पड़े और लहूलुहान हो गए थे—

अकसमात बानारसी, सुनि 'अकबर को काल,
सीढ़ी परि बैठ्यो हुतो, भयौ भरमचित चाल.

आइ तबाला गिरि परयौ, सक्यौ न आपा राखि,
फूटि भाल लोहू चल्यौ, कह्यौ 'देव' मुख भाखि.

लागी चोट पखान की, भयौ गृहांगन लाल,
हाइ ! हाइ ! सब करि उठे, मात तात बेहाल.

'प्रेम की पीर' का सच्चा अनुभव करने वाले ऐसे ही लोग हुआ करते हैं जो अपने जीवन को भी संकट में डाल देते हैं ! प्रेम की पीर का जिक्र करना कुछ और है और उसको अमल में उतार कर अनुभव करना कुछ और ! पहिली कला है, दूसरी सजीव पीड़ा !

हिन्दी-साहित्य के लिए यह बड़े गौरव की बात है कि कवि बनारसीदास ने भी अपने विचार हिन्दू मुस्लिम समन्वय पर जाहिर किए हैं. अगरचे उन्होंने बहुत ही थोड़े में—अति संक्षेप में—अपने विचारों को लिखा है, परन्तु उनमें जो गहरा मतलब, ऊंची भावनाएं और जो गहरी सचाई छिपी हुई है, वह सिर्फ अनुभव करने की ही चीज है. फिर, उनके सम्बन्ध में इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि वे एक शुद्ध 'जैन' कवि थे. जैन कवि यद्यपि शुद्ध मानवता और नैतिकता के कवि रहे हैं, तथापि वे साम्प्रदायिकता के लिए अति से अधिक बदनाम भी रहे हैं और हैं. ऐसी हालत में यदि बनारसीदास जैसे फक्कड़ शिरोमणि कवि राष्ट्रीय समस्या पर 'कुछ भी' कहता है तो, वह गौरव की वस्तु हो जाती है. कविवर ने मुसलमान की पहचान बताते हुए कहा है कि—

जो मन मूसै आपनो, साहिब के रुख होय,
ज्ञान मुसल्ला गह टिकै, मुसलमान है सोय.

اکبر کے سمکالین جین کوی بنارسی داس

شری جمنالال جین

کوی شیکھر بنارسی داس جی نے بھی اپنے ڈھنگ سے ہندو مسلمان سمسیا پر دھارمک نگاہ سے روشنی ڈالی ہے ۔ بنارسی داس جی جس زمانے میں جیوت تھے، اُس سمے سمراٹ اکبر کا شاسن سوریہ چمک رہا تھا ۔ سمراٹ اکبر سے اُنھیں بےحد پریم تھا. جب سموت 1662 وکرم میں اکبر کی موت ہوئی تب اُس سماچار کو سن بنارسی داس سدھی ہین ہوکر گر پڑے اور لہولہان ہوگئے تھے—

اکسمات بانارسی، سنی اکبر کو کال،
سیڑھی پر بیٹھیو ہوتو، بھئیو بھرمچت چال ۔
آئی تبالہ گر پرئیو، سکیو نہ آپا راکھ،
پھوٹی بھال لوہو چلیوٗ، کہیوٗ 'دیو' مکھ بھاکھ ۔
لاگی چوٹ پکھان کی، بھیوٗ گرھانگن لال،
ہائے ! ہائے ! سب کری اُٹھے، مات تات بےحال ۔

'پریم کی پیر' کا سچا انوبھو کرنے والے ایسے ہی لوگ ہوا کرتے ہیں جو اپنے جیون کو بھی سنکٹ میں ڈال دیتے ہیں ! پریم کی پیر کا ذکر کرنا کچھ اور ہے اور اُس کو عمل میں اُتارکر انوبھو کرنا کچھ اور ۔ پہلی کلا ہے، دوسری سجیو پیڑا !

ہندی ساہتیہ کے لئے یہ بڑے گورو کی بات ہے کہ کوی بنارسی داس نے بھی اپنے وچار ہندو مسلم سنوئے پر ظاہر کئے ہیں ۔ اگرچہ اُنھوں نے بہت ہی تھوڑے میں—اتی سنکشیپ میں—اپنے وچاروں کو لکھا ہے، پرنتو اُن میں جو گہرا مطلب، اُونچی بھاونائیں اور جو گہری سچائی چھپی ہوئی ہے، وہ صرف انوبھو کرنے کی ہی چیز ہے ۔ پھر، اُن کے سمبندھ میں اِس بات کو نہیں بھولنا چاہئیے کہ وے ایک شدھ 'جین' کوی تھے ۔ جین کوی یدپی شدھ مانوتا اور نیتکتا کے کوی رہے ہیں، تتھاپی وے سامپردائکتا کے لئے اتی سے ادھک بدنام بھی رہے ہیں اور ہیں ۔ ایسی حالت میں یدی بنارسی داس جیسا پھکڑ شرومنی کوی راشٹریہ سمسیا پر 'کچھ بھی' کہتا ہے تو، وہ گورو کی وستو ہو جاتی ہے ۔ کویور نے مسلمان کی پہچان بتاتے ہوئے کہا ہے کہ—

جو من موسے آپنو، صاحب کے رکھ ہوئے،
گیان موسلا گہ ٹکے، مسلمان ہے سوئے ۔

सागर (सागर), रावत (राजपूत), पायक (पियादा), धानुक (तीर-अंदाज), बसीठ (एलची), सेवती, मौलसिरी आदि.

तारीख़ फ़ीरोजशाही में, जो चौदहवीं सदी में लिखी गयी थी, हिन्दी शब्दों की भरमार है. इनमें से चन्द एक चुन लीजिये : मंदा (मंडी) सौंधार (उधार), लादी (सामान ढोने वाला), सुख-आसन (पालकी), मंडल (जलसा).

सैरुल-औलिया में, जो इसी जमाने की किताब है, हिन्दी के कई शब्द आये हैं, जैसे : लांघन, भागसी (क़ैदख़ाना).

यह फ़ेहरिस्त इतनी लम्बी हो सकती है कि पाठक पढ़ते पढ़ते उकता जायेंगे. मतलब यह है कि फ़ारसी और हिन्दी में शासक-शासित का नाता न था. दोनों ने एक दूसरे का असर क़ुबूल किया; हां, इससे पहले शब्दों को अपने अपने सांचों में ढाल लिया. हिन्दी जिस तरह ज़, ख़, और क़ को हज़म न कर सकती थी, फ़ारसी 'ट' 'ड' 'ड़' की ताव न ला सकती थी.

मुग़ल बादशाहों के जमाने में तो हिन्दुस्तानी फ़ारसी पर हिन्दी का रंग रच गया था. शाहजहां के दरबारी कवि अबू तालिब कलीम के कुछ मिसरों में हिन्दी की घुलावट देखिये :

मना बर बादए तंबोलियां दिल...
ज़ हुस्ने शुस्तए धोबी चे गोयम...
बुताने राजपूतो शेख़ज़ादा...
चे चंबर शोलए शमअस्त बेदूद...
के वस्फ़े मौलसिरी रा बर निगारम...

फ़ारसी व्याकरण का अटल नियम है कि संधि केवल फ़ारसी शब्दों में ही हो सकती है. पर 'झरोकए दर्शन' जैसी तरकीबें भी देखने में आती हैं. बहुत से हिन्दी मुहावरे भी फ़ारसी में घुल मिल गये, जैसे : बीड़ा तंबूल गिरफ़्तन (बीड़ा उठाना).

अल्ला अल्ला रे हस्तिये शायर
क़ल्ब गुन्चे का आंख शबनम की

—जिगर

ساگر (ساگر)' راوت (راجپوت)' پایک (پیادہ)' دھانک (تیرانداز)' بسیٹھ (ایلچی) سیوتی' مولسری آدی ۔

تاریخ فیروز شاهی میں' جو چودھویں صدی میں لکھی گئی تھی' هندی شبدوں کی بھرمار ھے ۔ اِن میں سے چند ایک چن لیجئے : مندا (منڈی)' سوندھار (اُدھار)' لادی (سامان ڈھونے والا)' سکھ آسن (پالکی)' منڈل (جلسہ).

سیرالولیا میں' جو اِسی زمانے کی کتاب ھے' هندی کے کئی شبد آئے ھیں' جیسے : لانگھن' بھاگسی (قیدخانہ) ۔

یہ فہرست اِتنی لمبی هو سکتی ھے کہ پاٹھک پڑھتے پڑھتے اُکتا جائینگے ۔ مطلب یہ ھے کہ فارسی اور هندی میں شاسک شاسِت کا ناتا نہ تھا ۔ دونوں نے ایک دوسرے کا اثر قبول کیا' ھاں' اِس سے پہلے شبدوں کو اپنے اپنے سانچوں میں ڈھال لیا ۔ هندی جس طرح ز' خ' اور ق کو هضم نہ کر سکتی تھی' فارسی ' ٹ ' ' ڈ ' ' ڑ ' کی تاب نہ لا سکتی تھی ۔

مغل بادشاھوں کے زمانے میں تو هندستانی فارسی پر هندی کا رنگ رچ گیا تھا ۔ شاھجہاں کے درباری کوی ابوطالب کلیم کے کچھ مصرعوں میں هندی کی گھلاوٹ دیکھئے :

منا بر بادۂ تمبولیاں دل...
ز حسن شستۂ دھوبی چہ گویم ..
بتان راجپوت و شیخ زادہ...
چہ چنبر شعلۂ شمع ست بےدود...
کے وصف مولسری را برنگارم...

فارسی ویاکرن کا اٹل نیم ھے کہ سندھی کیول فارسی شبدوں میں ھی هو سکتی ھے ۔ پر ' جھروکۂ درشن' جیسی ترکیبیں بھی دیکھنے میں آتی ھیں ۔ بہت سے هندی محاورے بھی فارسی میں گھل مل گئے' جیسے ۔ بیڑا تنبول گرفتن (بیڑا اُٹھانا) ۔

اللہ اللہ رے هستئی شاعر
قلب غنچہ کا آنکھ شبنم کی

—جگر

विज्ञान और नये नये कल कारख़ाने दुनिया की शक्ल को इस तरह बदल रहे हैं कि सारी दुनिया तेज़ी के साथ एक आर्थिक इकाई बनती जा रही है. मानव जाति का भविष्य तभी सुन्दर और ज्योतिर्मय हो सकता है जबकि हम 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के पाठ को—सम्पूर्ण मानव जाति की एकता की सच्चाई को—पूरी तरह दिल में उतार लें.

फ़ारसी पर हिन्दी का असर

मौलवी सिराजुद्दीन आज़र

तुर्क और मुग़ल जब हिन्दुस्तान में आये तो ऐसा मालूम होता था कि उनके और हिन्दुस्तानियों के कलचर में कोई समानता नहीं है. दोनों बोल-चाल, रंग-ढंग, रहन-सहन में एक दूसरे से बिलकुल अलग थे. फिर भी धीरे धीरे उन्होंने एक दूसरे पर जैसा गहरा असर डाला, वह इस बात की दलील है कि क़ौमें अपनी ख़ासियतों को अलग अलग ख़ानों में नहीं बन्द कर सकतीं. इस आपसी लेन-देन की एक मिसाल हिन्दी पर फ़ारसी का और फ़ारसी पर हिन्दी का असर है.

फ़ारसी में हिन्दी शब्दों की मिलावट महमूद ग़ज़नवी के ज़माने से शुरू हो गयी थी. उस युग के बड़े बड़े कवियों और लेखकों—जैसे फ़िरदौसी, उन्सरी, फ़र्रुख़ी, असदी और सनाई—ने इन हिन्दी शब्दों का इस्तेमाल किया है :

कोतवाल, नौबहार (विहार), लगन, कतारा (कटार) चन्दन और पानी.

ग़ज़नवी घराने के शाह मसूद के समकालीन कवि रूनी ने दंद (दंत), जौहर और जत (जाट) का इस्तेमाल किया है.

मसूद साद सुलेमान के यहां हिन्दी के यह शब्द मिलते हैं—कत (तख़्त), मारामार, बर्शगाल (वर्षा-काल).

ताजुद्दीन रेज़ा ने 'सेर' और 'मन' का प्रयोग किया है.

तबक़ात नासरी तेरहवीं सदी ईस्वी में लिखी गयी थी. उसमें हिन्दी के यह शब्द मिलते हैं : सील (शिला) लक (लाख).

अमीर ख़ुसरो की फ़ारसी में हिन्दी की पुट मिलना कोई अजीब बात नहीं. इनमें से कुछ की बानगी देखिये :

وگیان اور نئے نئے کل کارخانے دنیا کی شکل کو اِس طرح بدل رہے هیں کہ ساری دنیا تیزی کے ساتھ ایک ارتھک اکائی بنتی جارهی هے . مانوجاتی کا بھوشیہ تب هی سندر اور جیوتر مئے هو سکتا هے. جبکہ هم ' وسودھیو کٹمبکم ' کے پاٹھ کو—سمپورن مانو جاتی کی ایکتا کی سچائی کو—پوری طرح دل میں اُتار لیں .

فارسی پر هندی کا اثر

مولوی سراج الدین آذر

ترک اور مغل جب هندستان میں آئے تو ایسا معلوم هوتا تھا کہ اُن کے اور هندستانیوں کے کلچر میں کوئی سمانتا نہیں هے . دونوں بول چال' رنگ ڈھنگ' رهن سهن میں ایک دوسرے سے بالکل الگ تھے . پھر بھی دھیرے دھیرے اُنھوں نے ایک دوسرے پر جیسا گہرا اثر ڈالا' وہ اِس بات کی دلیل هے کہ قومیں اپنی خاصیتوں کو الگ الگ خانوں میں نہیں بند کرسکتیں . اِس آپسی لین دین کی ایک مثال هندی پر فارسی کا اور فارسی پر هندی کا اثر هے .

فارسی میں هندی شبدوں کی ملاوٹ محمود غزنوی کے زمانے سے شروع هوگئی تھی . اُس یگ کے بڑے بڑے کویوں اور لیکھکوں—جیسے فردوسی' عنصری' فرروخی' اسدی اور صناعی— نے اِن هندی شبدوں کا استعمال کیا هے :

کوتوال' نوبہار (وهار) لگن' کتارا (کٹار) چندن اور پانی.

غزنوی گھرانے کے شاہ مصعود کے سمکالین کوی رونی نے دند (دنت)' جوهر اور جت (جاٹ) کا استعمال کیا هے .

مصعود سعد سلیمان کے یہاں هندی کے یہ شبد ملتے هیں— کت (تخت)' مارامار' برشگال (ورشا کال) .

تاج الدین رضا نے 'سیر' اور 'من' کا پریوگ کیا هے .

طبقات ناصری تیرهویں صدی عیسوی میں لکھی گئی تھی. اُس میں هندی کے یہ شبد ملتے هیں : سیل (شلا) لک (لاکھ) .

امیر خسرو کی فارسی میں هندی کی پٹ ملنا کوئی عجیب بات نہیں . اِن میں سے کچھ کی بانگی دیکھئے :

किया जा रहा है. दुनिया के बड़े से बड़े वैज्ञानिक मस्तिष्क इसमें लगे हुये हैं. इस खोज का नतीजा भावी युद्धों पर कितना भयंकर पड़ सकता है इसकी कल्पना करते हुए अमरीका की कारनेगी इन्स्टिट्यूट के प्रेज़िडेन्ट ने हाल में कहा था—"अणु की छिपी हुई शक्ति इन क्षुद्र-दृष्टि राजनीतिज्ञों के हाथों में सभ्यता के लिये नरक की आग साबित होगी."

इन बातों से पता चलता है कि मनुष्य शायद प्रकृति की रोशनी में बढ़ने और उस 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' के प्रेम में अपनी आत्मा को विकसित करने के बजाय फिर हज़ारों वर्ष पहले की जंगली हालत को लौटना चाहता है. केवल यह कहने से काम न चलेगा कि विज्ञान का उपयोग भलाई और बुराई दोनों के लिये किया जा सकता है. हर समझदार मनुष्य को बड़ी गहराई से इस बात पर विचार करना होगा कि विज्ञान के ज़रिये सभ्यता की उन्नति बजाय बढ़ने के रुक क्यों गई ? वैज्ञानिक लोग इन बुरे नतीजों की ज़िम्मेवारी से बच नहीं सकते. हर देश के शिक्षितों को अब यह समझ लेना होगा कि—"मानव जाति को केवल उन्नति के साधन दे देना ही काफ़ी नहीं है, इससे कहीं ज्यादा जरूरी यह है कि उन्हें इन साधनों का ठीक ठीक इस्तेमाल करना सिखाया जावे."

हमारी पीढ़ी तक के आदमी बुरी तरह नाकामयाब रहे. 25 साल के अन्दर दो महायुद्ध हो चुके. अभी तीसरे की सम्भावना है या नहीं, यह कौन कह सकता है ? इस छोटी सी पृथ्वी की सारी आबादी एक भयंकर तूफ़ान में फंसी हुई है. विवेक और बुद्धिमत्ता संसार से मिटती हुई दिखाई दे रही हैं. इनसान दिन पर दिन फिर से दरिन्दा होता जा रहा है. इस आफ़त का कोई न कोई हल निकालना होगा. हिन्दुस्तान में महात्मा गान्धी ने इस आफ़त से निकलने के एक रास्ते की तरफ़ संकेत किया है. उनका कहना है कि अहिंसात्मक रह कर, जान बूझ कर अपने ऊपर कष्ट लेना और कष्ट सहना ही इस आफ़त से बचने का एक मात्र उपाय है. इस तरह के कष्ट सहन द्वारा ही दुनिया के सब आदमियों और सब क़ौमों में सामाजिक और राजनैतिक समता और न्याय क़ायम हो सकता है. दूसरे लोग हमें दूसरी तरह के हल भी सुझा रहे हैं.

लड़ाई के बाद दुनिया के पुनर्निर्माण की तजवीज़ें बन रही हैं. किन्तु इन तजवीज़ों से उस समय तक कोई लाभ नहीं हो सकता जब तक हमारे व्यवहार के उसूल बजाय सारी मनुष्य जाति की भलाई के अपने अपने राष्ट्र का हित और अपना अपना लाभ हैं, या जब तक कि हमारी मुख्य संचालक शक्ति ख़ुदग़रज़ी है. एक देश से दूसरे देश के आने जाने के साधन कितनी तेज़ी के साथ बढ़ते जा रहे हैं,

کیا جا رہا ھے ۔ دنیا کے بڑے سے بڑے ویگیانک مستشک اِس میں لگے ھوئے ھیں ۔ اِس کھوج کا نتیجہ بھاوی یدھوں پر کتنا بھینکر پڑ سکتا ھے اِس کی کلپنا کرتے ھوئے امریکہ کی کارنیگی انسٹیٹیوٹ کے پریزیڈنٹ نے حال میں کہا تھا—" انو کی چھپی ھوئی شکتی اِن چھدر درشٹی راجنیتگیوں کے ھاتھوں میں سبھیتا کے لئے نرک کی آگ ثابت ھوگی ۔"

اِن باتوں سے پتہ چلتا ھے کہ منشیہ شاید پرکرتی کی روشنی میں بڑھنے اور اس ' ستیم شوم سندرم ' کے پریم میں اپنی آتما کو وکست کرنے کے بجائے پھر ھزاروں ورش پہلے کی جنگلی حالت کو لوٹنا چاھتا ھے ۔ کیول یہ کہنے سے کام نہ چلے گا کہ وگیان کا اپیوگ بھلائی اور برائی دونوں کے لئے کیا جا سکتا ھے ۔ ھر سمجھدار منشیہ کو بڑی گہرائی سے اِس بات پر وچار کرنا ھوگا کہ وگیان کے ذریعہ سبھیتا کی اُنتی بجائے بڑھنے کے رک کیوں گئی ویگیانک لوگ اِن برے نتیجوں کی ذمہ واری سے بچ نہیں سکتے ۔ ھر دیش کے شکشتوں کو اب یہ سمجھ لینا ھوگا کہ—" مانو جاتی کو کیول اُنتی کے سادھن دے دینا ھی کافی نہیں ھے، اِس سے کہیں زیادہ ضروری یہ ھے کہ اُنہیں اِن سادھنوں کا ٹھیک ٹھیک اِستعمال کرنا سکھایا جاوے ۔"

ھماری پیڑھی تک کے آدمی بری طرح ناکامیاب رھے ۔ 25 سال کے اندر دو مہایدھ ھو چکے ۔ ابھی تیسرے کی سمبھاونا ھے یا نہیں، یہ کون کہہ سکتا ھے ؟ اِس چھوٹی سی پرتھوی کی ساری آبادی ایک بھینکر طوفان میں پھنسی ھوئی ھے ۔ وویک اور بدھیمتا سنسار سے مٹتی ھوئی دکھائی دے رھی ھیں ۔ اِنسان دن پر دن پھر سے درندہ ھوتا جا رہا ھے ۔ اِس آفت کا کوئی نہ کوئی حل نکالنا ھوگا ۔ ھندستان میں مہاتما گاندھی نے اِس آفت سے نکلنے کے ایک راستے کی طرف سنکیت کیا ھے ۔ اُن کا کہنا ھے کہ اھنساتمک رہ کر، جان بوجھ کر اپنے اوپر کشٹ لینا اور کشٹ سہنا ھی اِس آفت سے بچنے کا ایک ماتر اُپائے ھے ۔ اِس طرح کے کشٹ سہن دوارا ھی دنیا کے سب آدمیوں اور سب قوموں میں سماجک اور راجنیتک سمتا اور نیائے قائم ھوسکتا ھے ۔ دوسرے لوگ ھمیں دوسری طرح کے حل بھی سجھا رھے ھیں ۔

لڑائی کے بعد دنیا کے پونر نرمان کی تجویزیں بن رھی ھیں ۔ کنتو اِن تجویزوں سے اُس سمے تک کوئی لابھ نہیں ھو سکتا جب تک ھمارے ویوھار کے اصول بجائے ساری منشیہ جاتی کی بھلائی کے اپنے اپنے راشٹر کا ھت اور اپنا اپنا لابھ ھیں، یا جب تک کہ ھماری مکھیہ سنچالک شکتی خود غرضی ھے ۔ ایک دیش سے دوسرے دیش کے آنے جانے کے سادھن کتنی تیزی کے ساتھ بڑھتے جا رھے ھیں،

लिया. इस हिस्से का नाम अब 'सल्फ़ेनिलामाइड' पड़ा. इसके बाद लन्दन के एक अस्पताल ने औरतों की कई तरह की बीमारियों पर 'सल्फ़ेनिलामाइड' को आजमाया. जापे के बाद जो आम तौर पर औरतों को बुख़ार हो जाता है उसमें यह दवा बहुत मुफ़ीद साबित हुई. इस बीमारी से मौतों की तादाद एकदम 25 फ़ीसदी घट गई. फिर कई मुल्कों में और जगह जगह की मेडिकल संस्थाओं ने तरह तरह से इस दवा के तजरुबे किये. नतीजा यह है कि आज डाक्टर मे और डाक्टर मेकर के आख़री तजरुबों के नतीजे की शक्ल में हमें इसी से निमोनिया के लिये एक बहुत अच्छी और अपूर्व दवा मिल गई है. बम्बई की हैफ़किन इन्स्टिट्यूट के कर्नल सोखे और डाक्टर दीक्षित ने इसी से 'सल्फ़ियाज़ोल' नाम की एक अचूक दवा प्लेग के बीमारों के लिये खोज निकाली है. अमरीका में 'बैसिलरी' पेचिश के लिए, इसी से 'सल्फ़गौनीडाइन' नाम की एक बहुत कारगर दवा तैयार की गई है. इन सब बातों से साबित है कि विज्ञान की नज़र और उसका सारा काम अन्तर्राष्ट्रीय है. भूगोल, जाति, नसल, धर्म और सम्प्रदायों की सब दीवारों को तोड़ने में विज्ञान हमें सब से ज्यादा मदद देता है.

लेकिन यह सब तसवीर का सिर्फ़ एक पहलू है. आज दुनिया के बहुत से लोग यह देखकर कि विज्ञान की शक्ति और उसके ज़बर्दस्त हथियार लाखों और करोड़ों आदमियों का क़त्लेआम करने और उन्हें ग़ुलाम बनाने के लिये काम में लाये जा सकते हैं, विज्ञान पर बड़े बड़े आक्षेप कर रहे हैं और उसकी और अधिक तरक़्क़ी से भयभीत हैं. उनके डर बहुत दरजे तक सच्चे हैं. लोगों का विश्वास है कि विज्ञान ने सभ्यता के साथ विश्वासघात किया है. पिछले महायुद्ध के बाद ही संसार के शासकों ने इस बात को महसूस कर लिया था कि आगे के युद्धों में विजय बड़ी बड़ी सेनाओं पर निर्भर नहीं है बल्कि इस बात पर निर्भर है कि किसके पास कितने ज्यादा मानव हत्या के वैज्ञानिक साधन हैं. हर देश में यह आवाज़ सुनाई देने लगी है कि विज्ञान का सब से बड़ा काम लड़ाई जीतने में मदद देना है. नतीजा हुआ ज़हरीली गैसों और तरह तरह के नये बमों की ईजाद और ऐसी तोपें जो 90 मील के फ़ासले से कई कई टन के भयंकर गोले फेंक सकती हैं. सन 1919 की सन्धि से किसी को सन्तोष न हुआ. हर मुल्क में नये युद्ध की तैयारी होने लगी. सैकड़ों और हज़ारों वैज्ञानिक तरह तरह की युद्ध की सामग्री तैयार करने में लग गये. आजकल की सेना मनुष्यों की सेना के बजाय मशीनों की सेना दिखाई देती है. अभी इस समय जैसा मैं ऊपर लिखा चुका हूं एक छोटे से अणु के अन्दर जो अपार शक्ति छिपी हुई है उसे बाहर निकालने और उससे काम लेने की कोशिश में अथाह धन ख़र्च

لیا. اِس حصے کا نام اب 'سلفےنلامائڈ' پڑا . اِس کے بعد لندن کے ایک اسپتال نے عورتوں کی کئی طرح کی بیماریوں پر 'سلفے نلامائڈ' کو آزمایا. جاپے کے بعد جو عام طور پر عورتوں کو بخار ہو جاتا ہے اُس میں یہ دوا بہت مفید ثابت ہوئی . اِس بیماری سے موتوں کی تعداد ایک دم 25 فیصدی گھٹ گئی. پھر کئی ملکوں میں اور جگہ جگہ کی میڈیکل سنستھاؤں نے طرح طرح سے اِس دوا کے تجربے کئے . نتیجہ یہ ہے کہ آج ڈاکٹر مے اور ڈاکٹر میکر کے آخری تجربوں کے نتیجے کی شکل میں ہمیں اِسی سے نیمونیا کے لئے ایک بہت اچھی اور اپورو دوا مل گئی ہے . بمبئی کی ہیفکن انسٹیٹیوٹ کے کرنل سوکھے اور ڈاکٹر دکچھت نے اِسی سے 'سلفیازول' نام کی ایک اچوک دوا پلیگ کے بیماروں کے لئے کھوج نکالی ہے . امریکہ میں 'بیسیلری' پیچش کے لئے اِسی سے 'سلفگونیڈائن' نام کی ایک بہت کارگر دوا تیار کی گئی ہے . اِن سب باتوں سے ثابت ہے کہ وگیان کی نظر اور اِس کا سارا کام انترراشٹریہ ہے . بھوگول' جاتی نسل' دھرم اور سمپردایوں کی سب دیواروں کو توڑنے میں وگیان ہمیں سب سے زیادہ مدد دیتا ہے .

لیکن یہ سب تصویر کا صرف ایک پہلو ہے . آج دنیا کے بہت سے لوگ یہ دیکھکر کہ وگیان کی شکتی اور اُسکے زبردست ہتیار لاکھوں اور کروڑوں آدمیوں کا قتل عام کرنے اور اُنھیں غلام بنانے کے لئے کام میں لائے جا سکتے ہیں' وگیان پر بڑے بڑے آکشیپ کر رہے ہیں اور اس کی اور ادھک ترقی سے بھے بھیت ہیں . اُن کے ڈر بہت درجے تک سچے ہیں . لوگوں کا وشواس ہے کہ وگیان نے سبھیتا کے ساتھ وشواسگھات کیا ہے . پچھلے مہایدھ کے بعد ہی سنسار کے شاسکوں نے اِس بات کو محسوس کر لیا تھا کہ آگے کے یدھوں میں وجے بڑی بڑی سیناؤں پر نربھر نہیں ہے بلکہ اِس بات پر نربھر ہے کہ کس کے پاس کتنے زیادہ مانو ہتیا کے ویگیانک سادھن ہیں . ہر دیش میں یہ آواز سنائی دینے لگی ہے کہ وگیان کا سب سے بڑا کام لڑائی جیتنے میں مدد دینا ہے . نتیجہ ہوا زہریلی گیسوں اور طرح طرح کے نئے بموں کی ایجاد اور ایسی توپیں جو 90 میل کے فاصلے سے کئی کئی ٹن کے بھینکر گولے پھینک سکتی ہیں . سن 1919 کی سندھی سے کسی کو سنتوش نہ ہوا . ہر ملک میں نئے یدھ کی تیاری ہونے لگی . سیکڑوں اور ہزاروں ویگیانک طرح طرح کی یدھ کی سامگری تیار کرنے میں لگ گئے. آجکل کی سینا منشیوں کی سینا کے بجائے مشینوں کی سینا دکھائی دیتی ہے . ابھی اِس سمے جیسا میں اوپر دکھا چکا ہوں ایک چھوٹے سے انو کے اندر جو اپار شکتی چھپی ہوئی ہے اُسے باہر نکالنے اور اُسی سے کام لینے کی کوشش میں اتھاہ دھن خرچ

बराबर तेज़ी के साथ गर्दिश करता रहता है. उस केन्द्र के मुख्तलिफ़ हिस्सों को जो ताक़तें इकट्ठा किये रखती हैं और उसी के अन्दर की जो विद्युत शक्तियां उन हिस्सों को एक दूसरे से दूर फेंकने की कोशिश करती रहती हैं, इन दोनों तरह की शक्तियों में बराबर कशमकश जारी रहती है. नतीजा यह हुआ कि जब बाहर से बड़े तेज़ी के साथ न्यूट्रान को इस केन्द्र में धंसाया गया तो वह बन्दूक़ के घोड़े का सा काम करता है और इस नन्हे से केन्द्र के एक वज़न के दो टुकड़े कर डालता है. इनमें एक टुकड़ा बैरिअम और लैन्थनम की तरह का होता है और एक दूसरी तरह का. इसके बाद यह सब बातें अतलन्तिक समुद्र को पार करके अमरीका पहुंचीं. कोलम्बिया विश्वविद्यालय में और प्रोफ़ेसर लारेन्स की उस प्रयोगशाला में, जो 'साइक्लोट्रान' की ईजाद के लिये दुनिया भर में मशहूर है, यह तजरुबे नये सिरे से दोहराये गये और आगे बढ़ाये गये. इस सारी खोज से अभी तक सबसे अधिक विचित्र बात यह निकली कि यूरेनियम के अणु के टूटने से कितनी ज़बरदस्त शक्ति पैदा हो सकती है और इसे तोड़ना और इस शक्ति से काम लेना आदमी के बस की बात है. एक ग्राम यूरेनियम को इस तरह तोड़ने से ठीक उतनी शक्ति पैदा हो सकती है और आदमी के काम आ सकती है जितनी दो टन कोयला जलाने से.

इसी तरह से एक दूसरी मिसाल इस दस बरस के अन्दर की उस हैरतअंगेज़ दवा की ईजाद है जिसे 'सलफ़े-निलामाइड' कहते हैं. यह दवा, जो इनसानी क़ौम के लिये एक बरकत साबित हुई है, जिस तरह से ईजाद हुई है, उसमें देशों की अलग अलग सरहदों और उनके अलग अलग झन्डों का सारा फ़र्क़ मिट गया. सब से पहले इसका पता जर्मनी में लगा और वह भी एक बड़े अजीब ढङ्ग से, रंगों के उद्योग धन्धे और उनके तजरुबों के सम्बन्ध में. वहां इस दवा को 'प्रोन्टोसिल' नाम दिया गया. सन 1935 में जर्मन वैज्ञानिक डाक्टर डोमाग ने बड़ी होशियारी के साथ चूहों पर इसके तजरुबे किये. डाक्टर डोमाग ने अपने तजरुबों के नतीजों को प्रकाशित किया. उनसे पता चला कि खाल की सूजन की उस बीमारी में, जिसे 'एरीसिपेलास' कहते हैं, प्रोन्टोसिल ग़ज़ब के काम की चीज़ है और उस बीमारी का बड़ा पक्का इलाज है. इसी पर डाक्टर डोमाग को मेडिसिन में नोबल पुरस्कार मिला. वह इसके पूरी तरह हक़दार थे. इसके बाद पैरिस इन्स्टिट्यूट ने इस मामले को अपने हाथ में ले लिया. उन्होंने खूब खोज करके और तरह तरह के तजरुबे करके पता लगाया कि प्रोन्टोसिल का सारा अच्छा असर उसके केवल एक ख़ास हिस्से में सीमित है, उन्होंने इस हिस्से को बाक़ी प्रोन्टोसिल से अलग कर

برابر تیزی کے ساتھ گردش کرتا رہتا ہے۔ اس کیندر کے مختلف حصوں کو جو طاقتیں اکٹھا کئے رکھتی ہیں اور اسی کے اندر کی جو ودیت شکتیاں ان حصوں کو ایک دوسرے سے دور پھینکنے کی کوشش کرتی رہتی ہیں، ان دونوں طرح کی شکتیوں میں برابر کشمکش جاری رہتی ہے۔ نتیجہ یہ ہوا کہ جب باہر سے بڑی تیزی کے ساتھ نیوٹران کو اس کیندر میں دھنسایا گیا تو وہ بندوق کے گھوڑے کا سا کام کرتا ہے اور اس ننھے سے کیندر کے ایک وزن کے دو ٹکڑے کر ڈالتا ہے۔ ان میں ایک ٹکڑا بیریم اور لینتھنم کی طرح کا ہوتا ہے اور ایک دوسری طرح کا۔ اس کے بعد یہ سب باتیں اٹلانٹک سمدر کو پار کر کے امریکہ پہونچیں۔ کولمبیا وشو ودیالے میں اور پروفیسر لارنس کی اس پریوگ شالا میں، جو 'سائیکلوٹران' کی ایجاد کے لئے دنیا بھر میں مشہور ہے، یہ تجربے نئے سرے سے دہرائے گئے اور آگے بڑھائے گئے۔ اس ساری کھوج سے ابھی تک سب سے ادھک وچتر بات یہ نکلی کہ یورینیم کے انو کے ٹوٹنے سے کتنی زبردست شکتی پیدا ہو سکتی ہے اور اسے توڑنا اور اس شکتی سے کام لینا آدمی کے بس کی بات ہے۔ ایک گرام یورینیم کو اس طرح توڑنے سے ٹھیک اتنی شکتی پیدا ہو سکتی ہے اور آدمی کے کام آ سکتی ہے جتنی دو ٹن کوئلہ جلانے سے۔

اسی طرح سے ایک دوسری مثال اس دس برس کے اندر کی اس حیرت انگیز دوا کی ایجاد ہے جسے 'سلفے نیلامائڈ' کہتے ہیں۔ یہ دوا، جو انسانی قوم کے لئے ایک برکت ثابت ہوئی ہے، جس طرح سے ایجاد ہوئی ہے اس میں دیشوں کی الگ الگ سرحدوں اور ان کے الگ الگ جھنڈوں کا سارا فرق مٹ گیا۔ سب سے پہلے اس کا پتہ جرمنی میں لگا اور وہ بھی بڑے ایک عجیب ڈھنگ سے، رنگوں کے ادیوگ دھندے اور ان کے تجربوں کے سمبندھ میں۔ وہاں اس دوا کو 'پرونٹوسل' نام دیا گیا۔ سن 1935 میں جرمن ویگیانک ڈاکٹر ڈوماگ نے بڑی ہوشیاری کے ساتھ چوہوں پر اس کے تجربے کئے۔ ڈاکٹر ڈوماگ نے اپنے تجربوں کے نتیجوں کو پرکاشت کیا۔ ان سے پتہ چلا کہ کھال کی سوجن کی اس بیماری میں، جسے 'ایری سپلس' کہتے ہیں، پرونٹوسل غضب کے کام کی چیز ہے اور اس بیماری کا بڑا پکا علاج ہے۔ اسی پر ڈاکٹر ڈوماگ کو میڈیسن میں نوبل پرسکار ملا۔ وہ اس کے پوری طرح حقدار تھے۔ اس کے بعد پیرس انسٹیٹیوٹ نے اس معاملے کو اپنے ہاتھ میں لے لیا۔ انہوں نے خوب کھوج کر کے اور طرح طرح کے تجربے کر کے پتہ لگایا کہ پرونٹوسل کا سارا اچھا اثر اس کے کیول ایک خاص حصے میں سیمت ہے۔ انہوں نے اس حصے کو باقی پرونٹوسل سے الگ کر

फ़र्क़ कर सकता है और न एक लाख वोल्ट की बिजली की शक्ति. इन अणुओं का टूटना अपने ही ढंग से और खुद बखुद होता है. इसलिये जो शक्ति उनके टूटने से पैदा होती है उसे हम इनसान अभी अपने किसी काम में नहीं ला सकते या बहुत ही कम और मुशिकल से ला सकते हैं. सन 1938 में यह देखा गया कि ये भारी अणु एक नई तरह से भी तोड़े जा सकते हैं. रोम के विज्ञान वेत्ता फ़र्मी ने इस पर सोचा और तजरुबे किये. यूरेनियम का अणु प्रकृति में सब से भारी अणु समझा जाता था. उसका एटेमिक वज़न 238 था. फ़र्मी ने बिजली का एक और अणु जिसे हम 'न्यूट्रान' कहते हैं यूरेनियम के अणु के अन्दर धंसाने की कोशिश की विज्ञान की अब तक की ईजादों ने फ़र्मी के लिये रास्ता खोल दिया. विज्ञान में जिन्हें हम अणु कहते हैं और जो आंख से दिखाई नहीं दे सकते उनमें से एक एक अणु पूरे एक एक सौर जगत के समान होता है. जिस तरह एक सौर जगत के अन्दर बीच में एक बड़ा सूर्य है जिसमें गरम (Positive) बिजली होती है, उसके चारों तरफ़ एक तरह की हवा होती है जिसमें पृथ्वी चांद जैसे नरम (Negative) बिजली वाले छोटे छोटे ग्रह होते हैं, उसी तरह हर अदृश्ट अणु के अन्दर बीच में एक बड़ी चीज़ गरम बिजली वाली और उसके चारों तरफ़ हवा में अनेक छोटी छोटी चीज़ें नरम बिजली वाली होती हैं. विशाल सौर जगत और अदृश्ट अणु दोनों का रूप बिल्कुल एक है. दोनों एक दूसरे की नक़ल हैं. दोनों में हवा की नरमी भारी केन्द्र की गरमी का सन्तुलन करती रहती है. इस तरह पर वह न्यूट्रान जो बड़ी तेज़ी के साथ धंसाया गया यूरेनियम के केन्द्र में समा गया. फ़र्मी ने अपने प्रयोगों से मालूम किया कि इस क्रिया के अन्दर ऐसे नये नये ढङ्ग के अणु बन गये जो यूरेनियम के अणु से भारी थे. फ़र्मी यहीं तक जा सका. फ़र्मी के बाद बर्लिन के विज्ञान वेत्ता हैन (Hahn) ने आगे के तजरुबे किये. हैन शायद दुनिया का इस ख़ास विषय में सब से बड़ा विज्ञान वेत्ता है. हैन के तजरुबों से पता लगा कि यूरेनियम के अणु को तोड़ने की इस क्रिया में बेरिअम की तरह की धातु के अणु बन जाते हैं. इसके बाद पैरिस की प्रसिद्ध वैज्ञानिक मैडम क्यूरी ने हमें यह दिखलाया कि लैन्थनम नामक एक नादिर क़िस्म की मिट्टी में जो ख़ासियतें हैं वे बैरिअम से बहुत मिलती जुलती हैं. इसके बाद कापेन-हेगेन (डेनमार्क) के वैज्ञानिक डाक्टर बोर ने फिर इस बात की खोज शुरू की कि गणित के हिसाब से रेनियम का अणु कहां तक अचल है. उन्होंने अब तक की मानता को ग़लत साबित करते हुये हमें पहली बार यह बताया कि यूरेनियम के अणु का भारी केन्द्र अचल होने के बजाय

فرق کرسکتا ہے نہ ایک لاکھ وولٹ کی بجلی کی شکتی۔ ان انوؤں کا ٹوٹنا اپنے ہی ڈھنگ سے اور خود بخود ہوتا ہے۔ اس لئے جو شکتی ان کے ٹوٹنے سے پیدا ہوتی ہے اسے ہم انسان ابھی اپنے کسی کام میں نہیں لا سکتے یا بہت ہی کم اور مشکل سے لا سکتے ہیں۔ سن 1938 میں یہ دیکھا گیا کہ یہ بھاری انو ایک نئی طرح سے بھی توڑے جاسکتے ہیں۔ روم کے وگیان ویتا فرمی نے اِس پر سوچا اور تجربے کئے۔ یورینیم کا انو پرکرتی میں سب سے بھاری انو سمجھا جاتا تھا۔ اس کا ایٹیمک وزن 238 تھا۔ فرمی نے بجلی کا ایک اور انو جسے ہم 'نیوٹران' کہتے ہیں یورینیم کے انو کے اندر دھنسانے کی کوشش کی۔ وگیان کی اب تک کی ایجادوں نے فرمی کے لئے راستہ کھول دیا۔ وگیان میں جنہیں ہم انو کہتے ہیں اور جو آنکھ سے دکھائی نہیں دے سکتے ان میں سے ایک ایک انو پورے ایک ایک سورجگت کے سمان ہوتا ہے۔ جس طرح ایک سورجگت کے اندر بیچ میں ایک بڑا سوریہ ہے جس میں گرم (Positive) بجلی ہوتی ہے، اس کے چاروں طرف ایک طرح کی ہوا ہوتی ہے جس میں پرتھوی' چاند جیسے نرم (Negative) بجلی والے چھوٹے چھوٹے گرہ ہوتے ہیں' اسی طرح ہر ادرشٹ انو کے اندر بیچ میں ایک بڑی چیز گرم بجلی والی اور اس کے چاروں طرف ہوا میں انیک چھوٹی چھوٹی چیزیں نرم بجلی والی ہوتی ہیں۔ وشال سورجگت اور ادرشٹ انو دونوں کا روپ بالکل ایک ہے۔ دونوں ایک دوسرے کی نقل ہیں۔ دونوں میں ہوا کی نرمی بھاری کیندر کی گرمی کا سنتولن کرتی رہتی ہے۔ اِس طرح پر وہ نیوٹران جو بڑی تیزی کے ساتھ دھنسایا گیا یورینیم کے کیندر میں سما گیا۔ فرمی نے اپنے پریوگوں سے معلوم کیا کہ اِس کریا کے اندر ایسے نئے نئے ڈھنگ کے انو بن گئے جو یورینیم کے انو سے بھاری ہے۔ فرمی کے بعد برلن کے وگیان ویتا حین (Hahn) نے آگے کے تجربے کئے۔ حین شاید دنیا کا اِس خاص وِشئے میں سب سے بڑا وگیان ویتا ہے۔ حین کے تجربوں سے پتہ لگا کہ یورینیم کے انو کو توڑنے کی اِس کریا میں بیریم کی طرح کی دھاتو کے انو بن جاتے ہیں۔ اِس کے بعد پیرس کی پرسدھ ویگیانک میڈم کیوری نے ہمیں یہ دکھایا کہ لینتھنم نامک ایک نادر قسم کی مٹی میں جو خاصیتیں ہیں وے بیریم سے بہت ملتی جلتی ہیں۔ اس کے بعد کاپن ہیگن (ڈنمارک) کے ویگیانک ڈاکٹر بور نے پھر اِس بات کی کھوج شروع کی کہ گنت کے حساب سے یورینیم کا انو کہاں تک اچل ہے۔ انہوں نے اب تک کی مانتا کو غلط ثابت کرتے ہوئے ہمیں پہلی بار یہ بتایا کہ یورینیم کے انو کا بھاری کیندر اچل ہونے کے بجائے

मौत सत्य की होती है. विज्ञान हमें यह सिखाता है कि युद्ध के ज़माने में भी मानसिक ईमानदारी का पालन न करना एक बहुत बड़ा जुर्म है. विज्ञान हमें धीरज सिखाता है, हमें पक्षपात रहित बनाता है. वह हमें झट से नतीजे पर पहुंचने से रोकता है. वह कल्पना और सन्देह दोनों को क़ीमती समझता है और दोनों के महत्व पर ज़ोर देता है. भावुकता और पक्षपात से भरी इस दुनिया में वह हमें प्रमानों को तोलना सिखाता है. वह दुनिया को गुमराह करने वाले प्रचार के खिलाफ़ एक गारन्टी है. विज्ञान ही इस तरह का न्याय-युक्त जनमत तय्यार कर सकता है जो हमारी राजनैतिक और सामाजिक सब बुराइयों को दूर कर सके. वैज्ञानिक वृत्ति के ऊपर ही जनतन्त्र का भविश्य निर्भर है.

और दूसरी बातों की अपेक्षा विज्ञान की उन्नति ने इस बात को सब से अधिक साफ़ किया है कि बौद्धिक जीवन की एकता में ही आधुनिक सभ्यता की एकता है, और अपने नाश की क़ीमत पर ही इस बौद्धिक जीवन की एकता के हम टुकड़े टुकड़े कर सकते हैं. विज्ञान ने आज जो कुछ भी तरक़्क़ी की है वह एक देश या एक व्यक्ति के कारन नहीं बल्कि अनेक देशों के उन अनेक व्यक्तियों के कारन की है जो अपने बुद्धिमत्तापूर्न खोज और लगातार प्रयोगों द्वारा मनुश्य को सब के भले और सब के फ़ायदे की ओर ले जाना चाहते हैं. आदमी की सिरजन भावना को हम स्थानीय और राश्ट्रीय हदों के अन्दर नहीं बांध सकते. विचार जब घेरों के अन्दर बन्द कर दिये जाते हैं तो वे मुरझा जाते हैं लेकिन जब दुनिया के अलग अलग हिस्सों के उपजाऊ दिमाग़ों में उनके बीज पड़ते हैं तो उनसे आश्चर्यजनक फल पैदा होते हैं. विज्ञान के महाग्रंथ के एक पूरे अध्याय की रचना भी किसी एक व्यक्ति के वश की बात नहीं. आम तौर पर शुरूआत एक अकेली डरती हुई आवाज़ से होती है जो दिमाग़ में एक सवाल पैदा करके चुप हो जाती है. फिर इसी आवाज़ की गूंज विज्ञान के मुख़्तलिफ़ मैदानों में सुनाई देती है और फिर अनेक प्रयोग-शालाओं में इस गूंज को रूप और आकार मिलता है.

हाल में विज्ञान के अन्दर जो सब से बड़ी बड़ी खोजें की गई हैं उनमें से कुछ की मिसाल देकर मैं यह दिखाऊंगा कि इस मैदान में सब देशों के मिलकर काम करने और एक दूसरे को सहयोग देने की कितनी सख़्त ज़रूरत पड़ती है. युरेनियम, थोरियम और रेडिअम जैसी नई नई धातुओं के भारी अणु जब टूट टूट कर छोटे अणु बनने लगते हैं तो उस टूटने की क्रिया में उनके अन्दर से बेहद शक्ति पैदा होती है. इन भारी अणुओं के जल्दी जल्दी टूटने या धीरे धीरे टूटने पर यानी उनकी गति पर हम कोई असर नहीं डाल सकते, न दस हज़ार डिगरी का तापमान इसमें कोई

موت ستیہ کی ہوتی ہے ۔ وگیان ہمیں یہ سکھاتا ہے کہ یدھ کے زمانے میں بھی مانسک ایمانداری کا پالن نہ کرنا ایک بہت بڑا جرم ہے. وگیان ہمیں دھیرج سکھاتا ہے' ہمیں پکشپات رہت بناتا ہے ۔ وہ ہمیں جھٹ سے نتیجہ پر پہونچنے سے روکتا ہے ۔ وہ کلپنا اور سندیہہ دونوں کو قیمتی سمجھتا ہے اور دونوں کے مہتو پر زور دیتا ہے. بھاؤکتا اور پکشپات سے بھری اِس دنیا میں وہ ہمیں پرمانوں کو تولنا سکھاتا ہے ۔ وہ دنیا کو گمراہ کرنے والے پرچار کے خلاف ایک گارنٹی ہے ۔ وگیان ہی اِس طرح کا نیائے یکت جنمت تیار کرسکتا ہے جو ہماری راج نیتک اور ساماجک سب برائیوں کو دور کرسکے ۔ وگیانک ورتی کے اُوپر ہی جن تنتر کا بھوشیہ نربھر ہے ۔

اور دوسری باتوں کی اَپیکشا وگیان کی اُنتی نے اِس بات کو سب سے ادھک صاف کیا ہے کہ بودھک جیون کی ایکتا میں ہی آدھونک سبھیتا کی ایکتا ہے' اور اپنے ناش کی قیمت پر ہی اِس بودھک جیون کی ایکتا کے ہم ٹکڑے ٹکڑے کرسکتے ہیں۔ وگیان نے آج جو کچھ بھی ترقی کی ہے وہ ایک دیش یا ایک ویکتی کے کارن نہیں بلکہ انیک دیشوں کے اُن انیک ویکتیوں کے کارن کی ہے جو اپنے بدھیمتاپورن کھوج اور لگاتار پریوگوں دوارا منش کو سب کے بھلے اور سب کے فائدے کی اور لے جانا چاہتے ہیں ۔ آدمی کی سرجن بھاونا کو ہم استھانیہ اور راشٹریہ حدوں کے اندر نہیں باندھ سکتے ۔ وچار جب گھیروں کے اندر بند کردیئے جاتے ہیں تو وے مرجھا جاتے ہیں لیکن جب دنیا کے الگ الگ حصوں کے اُپجاؤ دماغوں میں ان کے بیج پڑتے ہیں تو اُن سے آشچریجنک پھل پیدا ہوتے ہیں ۔ وگیان کے مہاگرنتھ کے ایک پورے ادھیائے کی رچنا بھی کسی ایک ویکتی کے وش کی بات نہیں. عام طور پر شروعات ایک اکیلی ڈرتی ہوئی آواز سے ہوتی ہے جو دماغ میں ایک سوال پیدا کرکے چپ ہو جاتی ہے ۔ پھر اِسی آواز کی گونج وگیان کے مختلف میدانوں میں سنائی دیتی ہے اور پھر انیک پریوگ شالاؤں میں اِس گونج کو روپ اور آکار ملتا ہے ۔

حال میں وگیان کے اندر جو بڑی بڑی کھوجیں کی گئی ہیں اُن میں سے کچھ کی مثال دے کر میں یہ دکھاؤنگا کہ اِس میدان میں سب دیشوں کے مل کر کام کرنے اور ایک دوسرے کو سہیوگ دینے کی کتنی سخت ضرورت پڑتی ہے ۔ یورینیم' تھوریم اور ریڈیم جیسی نئی نئی دھاتوں کے بھاری انو جب ٹوٹ ٹوٹ کر چھوٹے انو بننے لگتے ہیں تو اس ٹوٹنے کی کریا میں ان کے اندر سے بےحد شکتی پیدا ہوتی ہے ۔ اُن بھاری انوؤں کے جلدی جلدی ٹوٹنے یا دھیرے دھیرے ٹوٹنے پر یعنی ان کی گتی پر ہم کوئی اثر نہیں ڈال سکتے. نہ دس ہزار ڈگری کا تاپمان اِس میں کوئی

विज्ञान और आधुनिक जीवन

डाक्टर सर ज्ञानचन्द्र घोष डी. एस-सी., एफ. एन. आइ.

आज दुनिया में साइन्स की जो तरक़्क़ी दिखाई दे रही है उसके पीछे आदमी की अन्यतम सृजन-बुद्धि और उसका अपार श्रम है. विज्ञान एक पद्धति है, एक विश्वास (एतक़ाद) है, एक सिद्धांत (उसूल) है. वह ऐसी नपी तुली देख भाल, खोजों और तजरुबों का एक तरीक़ा और एक सिलसिला है जो पूरी ईमानदारी के साथ दर्ज किये जाते हैं. विज्ञान को यह विश्वास है कि सत्य की खोज की जा सकती है और सत्य खोज करने योग्य है.

मानव समस्याओं के हल करने में विज्ञान का यह पहलू अकसर नज़र अन्दाज़ कर दिया जाता है. विज्ञान का अपना एक टेकनीक है, एक तरीक़ा है और उसकी अपनी बेहतरीन मर्यादाएं हैं. अगर इन्सान के व्यवहार के दूसरे मैदानों में कठिनाइयों के हल करने के लिए इस वैज्ञानिक टेकनीक को काम में लाया जाने लगे तो दुनिया की हालत बहुत बेहतर हो सकती है. किसी भी समस्या के सामने आ जाने पर वैज्ञानिक करता क्या है ? वह उस समस्या से ताल्लुक़ रखने वाली तमाम युक्तिपूर्न (मुदल्लल) बातों की फ़ेहरिस्त बनाता है. उसमें वह हर दलील के गुण और दोषों की छानबीन करता है. बड़े धीरज के साथ वह उन सब दलीलों की छान बीन और उनका वर्गीकरन करता है. इसी वर्गीकरन में वह उनमें आपसी ताल्लुक़ खोजता है. इसके बाद उन सब बातों में एक सिलसिला जोड़ने के लिए वह एक निर्देशक सिद्धांत फ़र्ज़ कर लेता है. फिर नये नये प्रयोग करके वह इस सिद्धांत की सच्चाई की जांच करता है और नई हक़ीक़तों की रोशनी में वह इस काल्पनिक सिद्धांत में तब्दीली करता है या उसे बेकार समझ कर छोड़ देता है. उसके सारे प्रयोगों का सार यह है कि जब तक नई नई सच्चाइयां खुलती रहें वह नतीजे पर पहुंचने से रुका रहता है और मानसिक ईमानदारी के साथ लगातार अपनी दलीलों की छान बीन और परख करता रहता है, और उन्हें सत्य की कसौटी पर कसता रहता है.

वैज्ञानिक खोज मनुष्य में एक तरह का मानसिक अनुशासन पैदा करती है. उससे आदमी को पक्षपात छोड़ कर ईमानदारी के साथ खोज करने की आदत पड़ती है. आज दुनिया को भ्रम में डालने वाली जो अनेक समस्याएं खड़ी हो गई हैं उनके हल करने में यह मानसिक अनुशासन बहुत कुछ मदद दे सकता है. लोग कहते हैं कि युद्ध में पहली

وگیان اور آدھونک جیون

ڈاکٹر سر گیان چندر گھوش ڈی. ایس. سی.، ایف. این. آئی.

آج دنیا میں سائنس کی جو ترقی دکھائی دے رہی ہے اس کے پیچھے آدمی کی انیتم سرجن بدھی اور اس کا اپار شرم ہے. وگیان ایک پدھتی ہے، ایک وشواس (اعتقاد) ہے، ایک سدھانت (اصول) ہے. وہ ایسی نپی تلی دیکھ بھال، کھوجوں اور تجربوں کا ایک طریقہ اور ایک سلسلہ ہے جو پوری ایمانداری کے ساتھ درج کئے جاتے ہیں. وگیان کو یہ وشواس ہے کہ ستیہ کی کھوج کی جاسکتی ہے اور ستیہ کھوج کرنے یوگیہ ہے.

مانو سمسیاؤں کو حل کرنے میں وگیان کا یہ پہلو اکثر نظرانداز کردیا جاتا ہے. وگیان کا اپنا ایک ٹیکنیک ہے، ایک طریقہ ہے اور اس کی اپنی بہترین مریادائیں ہیں. اگر انسان کے ویوہار کے دوسرے میدانوں میں کٹھنائیوں کے حل کرنے کے لئے اس ویگیانک ٹیکنیک کو کام میں لیا جانے لگے تو دنیا کی حالت بہت بہتر ہوسکتی ہے. کسی بھی سمسیا کے سامنے آجانے پر ویگیانک کرتا کیا ہے ؟ وہ اس سمسیا سے تعلق رکھنے والی تمام یکتی پورن (مدلل) باتوں کی فہرست بناتا ہے. اس میں وہ ہر دلیل کے گن اور دوشوں کی چھان بین کرتا ہے. بڑے دھیرج کے ساتھ وہ ان سب دلیلوں کی چھان بین اور ان کا ورگی کرن کرتا ہے. اسی ورگی کرن میں وہ ان میں آپسی تعلق کھوجتا ہے. اس کے بعد ان سب باتوں میں ایک سلسلہ جوڑنے کے لئے وہ ایک نردیشک سدھانت فرض کرلیتا ہے. پھر نئے نئے پریوگ کرکے وہ اس سدھانت کی سچائی کی جانچ کرتا ہے اور نئی حقیقتوں کی روشنی میں وہ اس کالپنک سدھانت میں تبدیلی کرتا ہے یا اسے بیکار سمجھ کر چھوڑ دیتا ہے. اس کے سارے پریوگوں کا سار یہ ہے کہ جب تک نئی نئی سچائیاں کھلتی رہیں وہ نتیجے پر پہونچنے سے رکا رہتا ہے اور مانسک ایمانداری کے ساتھ لگاتار اپنی دلیلوں کی چھان بین اور پرکھ کرتا رہتا ہے، اور انہیں ستیہ کی کسوٹی پر کستا رہتا ہے.

ویگیانک کھوج منشیہ میں ایک طرح کا مانسک انوشاسن پیدا کرتی ہے. اس سے آدمی کو پکشپات چھوڑکر ایمانداری کے ساتھ کھوج کرنے کی عادت پڑتی ہے. آج دنیا کو بھرم میں ڈالنے والی جو انیک سمسیائیں کھڑی ہوگئی ہیں ان کے حل کرنے میں یہ مانسک انوشاسن بہت کچھ مدد دے سکتا ہے. لوگ کہتے ہیں کہ یدھ میں پہلی

पढ़ें तब हमें अपने आप अलग अलग चेहरों के अन्दर एक ही दोस्त का प्यारा चेहरा दिखाई दे जायगा. फ़ारसी की मशहूर किताब मासुक़ीमा में बार बार बड़े सुन्दर शब्दों में कहा गया है—

कि बचश्माने दिल मबीं जुज़ दोस्त
हरचे बीनी बिदां कि मज़हरे ओस्त

यानी अपने दिल की आंख से सिवाय दोस्त के और कुछ मत देख. जो भी तुझे दिखाई देता है उसे जान ले कि वह उसी एक प्यारे का रूप है.

پڑھیں تب ہمیں اپنے آپ الگ الگ چہروں کے اندر ایک ہی دوست کا پیارا چہرہ دکھائی دے جائے گا. فارسی کی مشہور کتاب مامقیمہ میں بار بار سندر شبدوں میں کہا گیا ہے—

کہ بہ چشمان دل مبیں جز دوست
ہرچہ بینی بدان کہ مظہر اوست

یعنی اپنے دل کی آنکھ سے سوائے دوست کے اور کچھ مت دیکھ . جو بھی تجھے دکھائی دیتا ہے اُسے جان لے کہ وہ اُسی ایک پیارے کا روپ ہے .

झलकते रहते हैं. मामूली जनता के दिलों में उस एक घट घट व्यापी आत्मा की जोत अक्सर इतनी अच्छी चमकती है कि जनता खुद बड़ी आसानी से यह तै कर लेती है कि किस रीत रिवाज को ओढ़े रहे और किस को उतार फेंके. जनता यह भी अधिक अच्छी तरह समझ लेती है कि आखिरकार सब रीत रिवाजों के पीछे आत्मा एक ही है और जिसका मन साफ़ हो उसे ऊपरी रीत रिवाजों के फ़र्क़ में पड़ने की ज़रूरत नहीं है.

शब्दों और नाम रूपों को चिपटे रहने से जो अन्याय और अनर्थ होता है उसे देखकर ही दुनिया को उस से बचाने के लिये दुनिया में हमेशा नये नये राह दिखाने वाले आते रहे हैं. ईसाई धर्म में प्रोटेस्टेन्ट धर्म की बुनियाद इसी तरह पड़ी. वैदिक धर्म की इसी गिरावट की वजह से बोद्ध धर्म पैदा हुआ. जैन धर्म, शंकर का अद्वैत्य, रामानन्द, चेतन और तुलसीदास की भक्ति, कबीर साहब का प्रेम धर्म, गुरु नानक का सिक्ख मत और स्वामी दयानन्द की आर्य समाज सब बुनियादें इसी तरह की लहरें थीं. इस्लाम में भी सैकड़ों सूफ़ी, वहाबी, बहाई, क़ादयानी वग़ैरा वग़ैरा असल में हमें इस ख़तरे से आगाह करते रहे हैं. योग सूत्रों में शब्द और अर्थ का फ़र्क़ करने पर बहुत अधिक ज़ोर दिया गया है. सुक़रात ने भी अपनी किताबों में यही तालीम दी है. वह लोगों से बार बार सवाल करके यही जानने और बताने की कोशिश किया करता था कि उनके शब्दों के पीछे मतलब क्या है. वह उन्हें समझाता था कि लोग अक्सर शब्दों के मानी या तो उल्टे करने लगते हैं और या उनके दिमाग़ों में केवल शब्द ही शब्द रह जाते हैं, मानी कोई रहते ही नहीं.

इंजील में लिखा है—"शब्दों पर मत चिपको, शब्द आदमी को मार डालते हैं, मानी की तरफ़ जाओ, उसी से तुम्हें अमर जीवन मिलेगा.

"हाड़ मांस की चीज़ों को आत्मा यानी रूह की आंखों से देखो, यह न करो कि उल्टा आत्मा की चीज़ों को हाड़ मांस की आंखों से देखो."

इस नेक और क़ीमती सलाह पर हम चलें तो हम एक दूसरे से नफ़रत करना छोड़ दें और उसकी जगह एक दूसरे से प्यार करना सीख लें. यह प्यार करना ही सब मज़हबों का असल उसूल और सब का असली मक़सद है. दुनिया के शीशे के अन्दर से हमें रूहानी चीज़ों के अक्स को देखने की कोशिश करनी चाहिये. शब्दों की पूजा या किसी एक ज़बान के शब्दों की पूजा बुतपरस्ती से भी ज़्यादा ख़तरनाक है. इससे बचने का एक अच्छा तरीक़ा यह भी है कि हम कई कई मज़हबी ज़बानों को सीखें और अलग अलग मज़हबी किताबों को सामने रखकर एक दूसरे से मिलाते हुए उन्हें

جھلکتے رہتے ہیں . معمولی جنتا کے دلوں میں اُس ایک گھٹ گھٹ ویاپی آتما کی جوت اکثر اتنی اچھی چمکتی ھے کہ جنتا خود بڑی آسانی سے یہ طے کر لیتی ھے کہ کس ریت رواج کو اوڑھے رھے اور کس کو اُتار پھینکے . جنتا یہ بھی ادھک اچھی طرح سمجھ لیتی ھے کہ آخرکار سب ریت رواجوں کے پیچھے آتما ایک ھی ھے اور جس کا من صاف ھو اُسے اوپری ریت رواجوں کے فرق میں پڑنے کی ضرورت نہیں ھے .

شبدوں اور نام روپوں کو چپٹے رہنے سے جو انیائے اور انرتھ ھوتا ھے اُسے دیکھ کر ھی دنیا کو اُس سے بچانے کے لئے دنیا میں ھمیشہ نئے نئے راہ دکھانے والے آتے رھے ھیں . عیسائی دھرم میں پروٹسٹنٹ دھرم کی بنیاد اِسی طرح پڑی . ویدک دھرم کی اِسی گراوٹ کی وجہ سے بودھ دھرم پیدا ھوا . جین دھرم، شنکر کا ادوئیہ، رامانند، چیتن اور تلسی داس کی بھکتی، کبیر صاحب کا پریم دھرم، گرو نانک کا سکھ مت اور سوامی دیانند کی آریہ سماج سب بنیادیں اِسی طرح کی لہریں تھیں . اِسلام میں بھی سیکڑوں صوفی، وھابی، بہائی، قادیانی وغیرہ وغیرہ اصل میں ھمیں اِسی خطرے سے آگاہ کرتے رھے ھیں . یوگ سوتروں میں شبد اور ارتھ کا فرق کرنے پر بہت ادھک زور دیا گیا ھے . سقراط نے بھی اپنی کتابوں میں یہی تعلیم دی ھے . وہ لوگوں سے بار بار سوال کر کے یہی جاننے اور بتانے کی کوشش کیا کرتا تھا کہ ان کے شبدوں کے پیچھے مطلب کیا ھے . وہ اُنھیں سمجھاتا تھا کہ لوگ اکثر شبدوں کے معنی یا تو اُلٹے کرنے لگتے ھیں اور یا اُن کے دماغوں میں کیول شبد ھی شبد رہ جاتے ھیں، معنی کوئی رہتے ھی نہیں .

اِنجیل میں لکھا ھے—" شبدوں پر مت چپکو، شبد آدمی کو مار ڈالتے ھیں، معنی کی طرف جاؤ، اُسی سے تمہیں امر جیون ملے گا ."

" ھاڑمانس کی چیزوں کو آتما یعنی روح کی آنکھوں سے دیکھو، یہ نہ کرو کہ اُلٹا آتما کی چیزوں کو ھاڑ مانس کی آنکھوں سے دیکھو ."

اِس نیک اور قیمتی صلاح پر ھم چلیں تو ھم ایک دوسرے سے نفرت کرنا چھوڑ دیں اور اُس کی جگہ ایک دوسرے سے پیار کرنا سیکھ لیں . یہ پیار کرنا ھی سب مذھبوں کا اصل اصول اور سب کا اصلی مقصد ھے . دنیا کے شیشے کے اندر سے ھمیں روحانی چیزوں کے عکس کو دیکھنے کی کوشش کرنی چاھئے . شبدوں کی پوجا یا کسی ایک زبان کے شبدوں کی پوجا بت پرستی سے بھی زیادہ خطرناک ھے . اِس سے بچنے کا ایک اچھا طریقہ یہ بھی ھے کہ ھم کئی کئی مذھبی زبانوں کو سیکھیں اور الگ الگ مذھبی کتابوں کو سامنے رکھ کر ایک دوسرے سے ملاتے ھوئے اُنھیں

खुद अपने को मिटाती रहती हैं. कभी तो अलग अलग लोग अलग अलग शब्दों का उपयोग करते हैं पर उन शब्दों से उनका मतलब एक ही होता है. केवल वह एक दूसरे को समझ नहीं पाते या दिलों में खिंचें पैदा हो जाने से यानी उनके दिलों पर शैतान का ग़ल्बा पैदा हो जाने से ज़बरदस्ती एक दूसरे को उल्टा समझते रहते हैं. दुनिया में जितने झगड़े और फ़िसाद होते हैं लगभग सबकी वजह यही होती है कि हम शब्दों के पीछे या शब्दों से आगे बढ़कर असलियत को या तो समझ नहीं पाते या समझने के लिये तैयार नहीं होते. मौलाना रूम ने अपनी मशहूर किताब मसनवी में बार बार कहा है—"लफ़्ज़ों में मत फंस, मानी की तरफ़ जा." राजनीति में भी जब जब लोग कामयाबी के साथ मिल जुल कर झगड़ों को तै करना चाहते हैं और शान्ति या अमन क़ायम करना चाहते हैं तब तब उन्हें यही करना पड़ता है कि बार बार बैठकर मेहनत के साथ एक दूसरे की बात सुनें और एक दूसरे के मतलब समझें और समझावें. ग़लत समझने का मतलब ही न समझना है. ग़लत समझने से ही आदमी एक दूसरे का दुश्मन बनता है. फिर हर वह आदमी जिसकी बोली या ढंग हमसे अलग है हमें अपना दुश्मन दिखाई देने लगता है.

यही हाल उन लोगों का है जो दुनिया के जिस्मानी रोगों को अच्छा करने का दावा करते हैं. दुनिया के रूहानी डाक्टरों की तरह यह जिस्मानी डाक्टर भी एक दूसरे से लड़ते रहते हैं और अधिकतर केवल शब्दों पर लड़ते रहते हैं और एक दूसरे को नफ़रत की निगाह से देखते हैं. इनमें से अक्सर में भी रोगी को अच्छा करने की इच्छा इतना ज़ोरदार नहीं होती जितनी अपने अपने ढंग और अपने अपने इलाज के तरीक़े को चिपटे रहने की ज़िद. हर एक के अपने अपने शब्द होते हैं. ऐलोपैथिक डाक्टर अपने शब्द बोलता है, होम्योपैथ अपने शब्द, हकीम अपने शब्द और वैद अपने. हर एक को अपने ही शब्द ठीक मालूम होते हैं और वही प्यारे मालूम होते हैं. पर जबकि यह अपने मोटे मोटे शब्दों के जाल में फंसे रहते हैं और उन्हीं पर लड़ते रहते हैं, मामूली अनपढ़ आदमी भी यह जान जाता है कि उसे किस डाक्टर, हकीम या वैद से फ़ायदा होगा. वह बेहतर जानता है कि कौन अधिक अच्छा करता है और कौन अधिक मारता है. वह उनके शब्दों के धोके में नहीं आता. वह यह भी जानता है कि किस रोग में उसे किस से अधिक फ़ायदा हो सकता है और सब से फ़ायदा उठा लेता है. आख़िरकार डाक्टर, हकीम या वैद सब उसी मामूली आदमी की ही तो पैदाइश हैं. वही उन्हें खिलाता, पिलाता और चलाता है. इसी तरह धर्म मज़हब के मामलों में शब्दों के जंजाल में फंसे हुए मौलवी, पंडित और पादरी

خود اپنے کو مٹاتی رہتی ہیں. کبھی تو الگ الگ لوگ الگ الگ شبدوں کا اپیوگ کرتے ہیں پر اُن شبدوں سے اُن کا مطلب ایک ہی ہوتا ہے. کیول وہ ایک دوسرے کو سمجھ نہیں پاتے یا دلوں میں ضدیں پیدا ہو جانے سے یعنی اُن کے دلوں پر شیطان کا غلبہ پیدا ہو جانے سے زبردستی ایک دوسرے کو اُلٹا سمجھتے رہتے ہیں. دنیا میں جتنے جھگڑے اور فساد ہوتے ہیں لگ بھگ سب کی وجہ یہی ہوتی ہے کہ ہم شبدوں کے پیچھے یا شبدوں سے آگے بڑھ کر اصلیت کو یا تو سمجھ نہیں پاتے یا سمجھنے کے لئے تیار نہیں ہوتے. مولانا روم نے اپنی مشہور کتاب مثنوی میں بار بار کہا ہے—"لفظوں میں مت پھنس' معنی کی طرف جا." راج نیتی میں بھی جب جب لوگ کامیابی کے ساتھ مل جل کر جھگڑوں کو طے کرنا چاہتے ہیں اور شانتی یا امن قائم کرنا چاہتے ہیں تب تب اُنہیں یہی کرنا پڑتا ہے کہ بار بار بیٹھ کر محنت کے ساتھ ایک دوسرے کی بات سنیں اور ایک دوسرے کا مطلب سمجھیں اور سمجھاویں. غلط سمجھنے کا مطلب ہی نہ سمجھنا ہے. غلط سمجھنے سے ہی آدمی ایک دوسرے کا دشمن بنتا ہے. پھر ہر وہ آدمی جس کی بولی یا ڈھنگ ہم سے الگ ہے ہمیں اپنا دشمن دکھائی دینے لگتا ہے.

یہی حال اُن لوگوں کا ہے جو دنیا کے جسمانی روگوں کو اچھا کرنے کا دعویٰ کرتے ہیں. دنیا کے روحانی ڈاکٹروں کی طرح یہ جسمانی ڈاکٹر بھی ایک دوسرے سے لڑتے رہتے ہیں اور ادھکتر کیول شبدوں پر لڑتے رہتے ہیں اور ایک دوسرے کو نفرت کی نگاہ سے دیکھتے ہیں. اِن میں سے اکثر میں بھی روگی کو اچھا کرنے کی اچھا اتنی زور دار نہیں ہوتی جتنی اپنے اپنے ڈھنگ اور اپنے اپنے علاج کے طریقہ کو چپٹے رہنے کی ضد. ہر ایک کے اپنے اپنے شبد ہوتے ہیں. ایلوپیتھک ڈاکٹر اپنے شبد بولتا ہے' ہومیوپیتھ اپنے شبد' حکیم اپنے شبد اور وید اپنے. ہر ایک کو اپنے ہی شبد ٹھیک معلوم ہوتے ہیں اور وہی پیارے معلوم ہوتے ہیں. پر جبکہ یہ اپنے اپنے موٹے موٹے شبدوں کے جال میں پھنسے رہتے ہیں اور اُنہیں پر لڑتے رہتے ہیں' معمولی اَن پڑھ آدمی بھی یہ جان جاتا ہے کہ اُسے کس ڈاکٹر' حکیم یا وید سے فائدہ ہوگا. وہ بہتر جانتا ہے کہ کون ادھک اچھا کرتا ہے اور کون ادھک مارتا ہے. وہ ان کے شبدوں کے دھوکے میں نہیں آتا. وہ یہ بھی جانتا ہے کہ کس روگ میں اُسے کس سے ادھک فائدہ ہو سکتا ہے اور سب سے فائدہ اُٹھا لیتا ہے. آخرکار ڈاکٹر' حکیم یا وید سب اُسی معمولی آدمی کی ہی تو پیدائش ہیں. وہی اِنہیں کھلاتا' پلاتا اور چلاتا ہے. اِسی طرح دھرم مذہب کے معاملوں میں شبدوں کے جنجال میں پھنسے ہوئے مولوی' پنڈت اور پادری

झूठ, नेकी और बदी या उजाला और अंधेरा. हमारे अंदर की खुदी के इस तरह के फैलाव बड़े बड़े देशों की सामाजिक और नैतिक हवा को गन्दा कर देते हैं और क़ौमों के दिलों और दिमाग़ों को कुन्द और लकीर के फ़क़ीर बना देते हैं. हेनरी टामस ने अपनी किताब 'दी हिस्टोरी आफ़ हियूमन रेस' में लिखा है कि केवल ईसाई पादरियों की आज्ञा पर एक करोड़ से ज़्यादा इन्सान समय समय पर ज़िन्दा जला दिये गये. यह करतूत केवल एक मज़हब के नाम पर हुई. दूसरे मज़हबों के नाम पर जो इस तरह के पाप हुए हैं, और कम या ज़्यादा सब मज़हबों के नाम पर हुए हैं, उनका हिसाब किसी ने नहीं लगाया.

इस तरह वह सुन्दर और संजीदा रीत रिवाज जो आदमी के दिल को दुनिया से खींच कर एक अल्लाह में लगा देने के लिये बनाये गये थे वही रिवाज एक दूसरे के ख़िलाफ़ तलवारें खींचने का कारन बन जाते हैं और आदमी को आदमी से क़त्ल करवाते हैं जब कि हर मज़हब में और उन मज़हबों में भी जो सब से अधिक कट्टर समझे जाते हैं, मज़हब के मामले में हर तरह की ज़बरदस्ती को साफ़ साफ़ शब्दों में मना किया गया है.

क़ुरान में साफ़ लिखा है :—

"ला इकराह फ़िद्दीन"

यानी दीन के मामले में किसी के साथ किसी तरह की ज़बरदस्ती नहीं होनी चाहिये.

क़ुरान में लिखा है—"तुम्हारा दीन तुम्हारे लिये और मेरा दीन मेरे लिये."

क़ुरान में ईमान वालों को हिदायत की गई है कि—

"लोगों को अपने रब के रास्ते पर लाओ, समझदारी के शब्दों के साथ और नरम और मीठी बातों के साथ."

क़ुरान में यह चीज़ भी साफ़ साफ़ और बार बार कही गई है कि—

"हर क़ौम के लिये हमने अलग अलग श्रेय और मिनहाज यानी अलग अलग रीत रिवाज बना दिये हैं जिन पर चलकर वह अल्लाह तक पहुंच सकते हैं. अल्लाह अगर चाहता तो सब को एक उम्मत यानी एक क़ौम बना देता. पर उसने ऐसा नहीं किया. इसलिये सब लोगों को चाहिये कि जो रास्ता उन्हें बता दिया गया है उसी पर चलें और नेकी के कामों में एक दूसरे से बढ़ने की कोशिश करें. कोई दूसरे पर हंसे नहीं क्योंकि हो सकता है कि जिस पर तुम हंस रहे हो वह तुम से अच्छा हो."

शब्दों की माया अपार है. शब्दों और तरह तरह के नारों से बड़े बड़े नेक काम भी हो जाते हैं और बड़े बड़े गुनाह यानी पाप भी. बड़े बड़े बलवे, दंगे, फ़िसाद और जंग शब्दों से ही होते हैं. ग़लत नारों से क़ौमें की क़ौमें पीढ़ियों तक धोखे में पड़ी रहती हैं और एक दूसरे को और

جھوٹ' نیکی اور بدی یا اُجالا اور اندھیرا ۔ ہمارے اندر کی خودی کے اس طرح کے پھیلاؤ بڑے بڑے دیشوں کی سماجک اور نیتک ہوا کو گندہ کر دیتے ہیں اور قوموں کے دلوں اور دماغوں کو کند اور لکیر کے فقیر بنا دیتے ہیں۔ ہنری ٹامس نے اپنی کتاب 'دی اسٹوری آف ہیومن ریس' میں لکھا ہے کہ کیول عیسائی پادریوں کی آگیاں پر ایک کروڑ سے اوپر انسان سمے سمے پر زندہ جلا دیئے گئے ۔ یہ کرتوت کیول ایک مذہب کے نام پر ہوئی ۔ دوسرے مذہبوں کے نام پر جو اس طرح کے پاپ ہوئے ہیں' اور کم یا زیادہ سب مذہبوں کے نام پر ہوئے ہیں' اُن کا حساب کسی نے نہیں لگایا ۔

اس طرح وہ سندر اور سنجیدہ ریت رواج جو آدمی کے دل کو دنیا سے کھینچ کر ایک اللہ میں لگا دینے کے لئے بنائے گئے تھے وہی رواج ایک دوسرے کے خلاف تلواریں کھینچنے کا کارن بن جاتے ہیں اور آدمی کو آدمی سے قتل کرواتے ہیں جبکہ ہر مذہب میں اور اُن مذہبوں میں بھی جو سب سے ادھک کٹر سمجھے جاتے ہیں' مذہب کے معاملے میں ہر طرح کی زبردستی کو صاف صاف شبدوں میں منع کیا گیا ہے ۔

قرآن میں صاف لکھا ہے :—

"لااکراہ فی الدین"

یعنی دین کے معاملے میں کسی کے ساتھ کسی طرح کی زبردستی نہیں ہونی چاہئے ۔

قرآن میں لکھا ہے :—"تمہارا دین تمہارے لئے اور میرا دین میرے لئے ۔"

قرآن میں ایمان والوں کو ہدایت کی گئی ہے کہ—

"لوگوں کو اپنے رب کے راستے پر لاؤ' سمجھداری کے شبدوں کے ساتھ اور نرم اور میٹھی باتوں کے ساتھ ۔"

قرآن میں یہ چیز بھی صاف صاف اور بار بار کہی گئی ہے کہ—

ہر قوم کے لئے ہم نے الگ الگ شرع اور منہاج یعنی الگ الگ ریت رواج بنا دیئے ہیں جن پر چل کر وہ اللہ تک پہونچ سکتے ہیں ۔ اللہ اگر چاہتا تو سب کو ایک اُمت یعنی ایک قوم بنا دیتا ۔ پر اُس نے ایسا نہیں کیا ۔ اس لئے سب لوگوں کو چاہئے کہ جو راستہ اُنہیں بتا دیا گیا ہے اُسی پر چلیں اور نیکی کے کاموں میں ایک دوسرے سے بڑھنے کی کوشش کریں ۔ کوئی دوسرے پر ہنسے نہیں کیونکہ ہوسکتا ہے کہ جس پر تم ہنس رہے ہو وہ تم سے اچھا ہو ۔"

شبدوں کی مایا اپار ہے ۔ شبدوں اور طرح طرح کے نعروں سے بڑے بڑے نیک کام بھی ہو جاتے ہیں اور بڑے بڑے گناہ یعنی پاپ بھی ۔ بڑے بڑے بلوے' دنگے' فساد اور جنگ شبدوں سے ہی ہوتے ہیں ۔ غلط نعروں سے قوموں کی قومیں پیڑھیوں تک دھوکے میں پڑی رہتی ہیں اور ایک دوسرے کو اور

शब्द और अर्थ

डाक्टर भगवानदास

पिछले एक लेख में हम दिखा चुके हैं कि ज्ञान यानी मार्फ़त के रास्ते पर चलने वालों की राह में सब से बड़ा खतरा यह होता है कि वह अपने छोटे से आपे को यानी अपनी निजी आत्मा को ही असल आत्मा समझ बैठते हैं और यह भूल जाते हैं कि यह उनकी आत्मा एक छोटी सी आत्मा है, केवल एक धोका है. और असल आत्मा यानी असली आपा वही सर्व आत्मा यानी रूहे कुल है जो घट घट के अन्दर और सब के अन्दर है. इसी तरह जो लोग भक्ति यानी इश्क़ के रास्ते पर चलते हैं उन से सब से बड़ी ग़लती यह होती है कि वह अपने से बाहर किसी एक पीर, मुर्शिद, गुरु, आचार्य, पोप, या किसी एक छोटे से देवी देवता को ही परम आत्मा या कुल मालिक समझ बैठते हैं. बेअन्त या अनन्त को हर सीमित यानी महदूद वजूद के अन्दर देखने की कोशिश करना बिल्कुल ठीक और सराहनीय है लेकिन महदूद को बेहद या बेअन्त समझ बैठना ग़लती और धोका है. इसी तरह जो लोग कर्मकान्ड की राह पर चलते हैं यानी जो शरअ और मिनहाज पर चलकर अपने दीनी फ़र्ज़ को पूरा करना चाहते हैं उनसे सबसे बड़ी ग़लती यह होती है कि वह अक्सर अपनी खास तरह की रस्मों, अपनी खास पूजा विधि, अपने संस्कारों और अपने रीत रिवाजों को ही सबके लिये सब जगह और सब हालतों में ठीक और ज़रूरी मान बैठते हैं. वह अपने रीत रिवाजों से इस बुरी तरह चिपकते हैं कि उन्हें अपने ही रिवाज ठीक और सबके रिवाज ग़लत दिखाई देने लगते हैं. असलियत से भटक कर वह नाम रूप में फंस जाते हैं.

ग़ौर से देखा जाये तो इन तीनों रास्तों की यह तीनों तरह की ग़लतियां एक ही जड़ से पैदा होती हैं. वह जड़ है हमारे अन्दर की ख़ुदी, हमारा अहंकार. यह अहंकार ही सब शैतानों का बादशाह है. हमारी यह तीनों तरह की ग़लतियां इसी के तीन रूप हैं. ज़बरदस्ती दूसरों को अपने मज़हब में लाना, अन्धी तबलीग़ और अन्धी शुद्धि दूसरी तरह के रीत रिवाजों के मानने वालों को हैरिटिक, काफ़िर या मलेच्छ कहकर मार डालना, या ज़िन्दा जला देना और धर्म मज़हब के नाम पर जंग हमारे अन्दर की इसी शैतानियत के नतीजे हैं. हम अगर समझें तो धर्म और युद्ध यानी मज़हब और जंग इनमें कोई वास्ता ही नहीं हो सकता. यह एक दूसरे के वैसे ही विरुद्ध होते हैं जैसे सच और

شبد اور ارتھ

ڈاکٹر بھگوان داس

پچھلے ایک لیکھ میں ہم دکھا چکے ھیں کہ گیان یعنی معرفت کے راستے پر چلنے والوں کی راہ میں سب سے بڑا خطرہ یہ ھوتا ھے کہ وہ اپنے چھوٹے سے آپے کو یعنی اپنی نجی آتما کو ھی اصل آتما سمجھ بیٹھتے ھیں اور یہ بھول جاتے ھیں کہ یہ اُن کی آتما ایک چھوٹی سی آتما ھے' کیول ایک دھوکا ھے. اور اصل آتما یعنی اصلی آپا وھی سروآتما یعنی روح کل ھے جو گھٹ گھٹ کے اندر اور سب کے اندر ھے . اسی طرح جو لوگ بھکتی یعنی عشق کے راستے پر چلتے ھیں اُن سے سب سے بڑی غلطی یہ ھوتی ھے کہ وہ اپنے سے باھر کسی ایک پیر' مرشد' گرو' آچاریہ' پوپ' یا کسی ایک چھوٹے سے دیوی دیوتا کو ھی پرم آتما یا کل مالک سمجھ بیٹھتے ھیں . بےانت یا اننت کو ھر سیمت یعنی محدود وجود کے اندر دیکھنے کی کوشش کرنا بالکل ٹھیک اور سراھنیہ ھے لیکن محدود کو بےحد یا بےانت سمجھ بیٹھنا غلطی اور دھوکا ھے . اسی طرح جو لوگ کرم‌کانڈ کی راہ پر چلتے ھیں یعنی جو شرع اور منہاج پر چل‌کر اپنے دینی فرض کو پورا کرنا چاھتے ھیں اُن سے سب سے بڑی غلطی یہ ھوتی ھے کہ وہ اکثر اپنی خاص طرح کی رسموں' اپنی خاص پوجا ودھی' اپنے سنسکاروں اور اپنے ریت‌رواجوں کو ھی سب کے لئے سب جگہ اور سب حالتوں میں ٹھیک اور ضروری مان بیٹھتے ھیں . وہ اپنے ریت‌رواجوں سے اس بری طرح چپکتے ھیں کہ انھیں اپنے ھی رواج ٹھیک اور سب کے رواج غلط دکھائی دینے لگتے ھیں. اصلیت سے بھٹک‌کر وہ نام روپ میں پھنس جاتے ھیں .

غور سے دیکھا جائے تو اِن تینوں راستوں کی یہ تینوں طرح کی غلطیاں ایک ھی جڑ سے پیدا ھوتی ھیں . وہ جڑ ھے ھمارے اندر کی خودی' ھمارا اھنکار . یہ اھنکار ھی سب شیطانوں کا بادشاہ ھے . ھماری یہ تینوں طرح کی غلطیاں اسی کے تین روپ ھیں . زبردستی دوسروں کو اپنے مذھب میں لانا' اندھی تبلیغ اور اندھی شدھی' دوسری طرح کے ریت‌رواجوں کے ماننے والوں کو ھیریٹک' کافر یا ملیچھ کہہ کر مار ڈالنا' یا زندہ جلا دینا اور دھرم مذھب کے نام پر جنگ ھمارے اندر کی اسی شیطانیت کے نتیجے ھیں . ھم اگر سمجھیں تو دھرم اور یدھ یعنی مذھب اور جنگ ان میں کوئی واسطہ ھی نہیں ھوسکتا . یہ ایک دوسرے کے ویسے ھی وردھ ھوتے ھیں جیسے سچ اور

मुरदा रूढ़ियों और कर्मकान्ड से घबरा कर हाफ़िज़ ने कहा है—

फ़ाश मी गोयमो अज़ गुफ़्तए ख़ुद दिल शादम
बन्दए इश्क़मो अज़ हर्दो जहां आज़ादम
नेस्त बर लौहे दिलम जुज़ अलिफ़े क़ामते यार
चे कुनम हर्फ़े दिगर याद नदाद उस्तादम

यानी—मैं साफ़ साफ़ कहता हूं और अपनी बात के कहने से मेरा दिल ख़ुश है, मैं इश्क़ का बन्दा हूं और दोनों जहान से आज़ाद हूं, मेरे दिल की तख़्ती पर सिवाय मेरे प्रियतम के चिन्ह रूप 'अलिफ़'* के और कोई अक्षर लिखा हुआ नहीं है, मैं क्या करूं मेरे उस्ताद ने और कोई अक्षर सिखाया ही नहीं !

इस तरह की कविताओं का अनेक बार ख़ास ख़ास सुनने वालों के दिलों पर चमत्कारिक असर हुआ है. कभी कभी केवल एक शेर सुनकर लोगों की मौतें भी हो गई हैं† और जिन लोगों पर इन लोगों के असर हुये हैं वे हमेशा कोई कमज़ोर दिल या कमज़ोर दिमाग़ के इनसान भी न थे. मैं केवल एक मिसाल दूंगा. ईरान के मशहूर सन्त शेख़ अली हज़ीम ने अपने जीवन चरित्र में लिखा है—

"एक दिन रात को मैं कुछ दोस्तों के साथ बाग़ में बैठा हुआ था. अचानक मुझे गहरा 'हाल' आ गया. सारी रात मेरी उसी में गुज़र गई. उस हालत को बयान कर सकना नामुमकिन है. वह हालत क़रीब क़रीब मौत की हालत से मिलती हुई थी. मेरी यह हालत उन दोस्तों में से एक के मुंह से यह शेर सुनकर हुई थी—

"इमशब बेया ता दर चमन साज़ेम पुर पैमाना रा
तू शमो गुल रा दाग़ कुन, मन बुलबुलो परवाना रा

यानी—"ऐ मेरे प्रीतम (परमात्मा) आज की रात आ ताकि बाग़ में चलकर हम प्रेम के पैमाने को लबालब भर सकें, तू शमा और गुल को जला डाल और मैं बुलबुल और परवाने को शर्मा दूं."

---

* स्वामी रामतीर्थ एक उर्दू मासिक पत्रिका निकाला करते थे जिसका नाम 'अलिफ़' था और जिसके टाइटल पेज पर लिखा रहता था—'इक्को अलिफ़ तेरे दरकार', यानी सिवाय एक अलिफ़ के तुझे किसी की ज़रूरत नहीं है.

—सम्पादक

† इलाहाबाद के मशहूर सूफ़ी मौलाना मोहम्मद हुसैन की मौत अजमेर में उर्स के मौक़े पर क़व्वाली का एक शेर सुनते सुनते ही हुई थी.

—सम्पादक

مردہ روڑھیوں اور کرم کانڈ سے گھبرا کر حافظ نے کہا ھے—

فاش می گویم و از گفتۂ خود دل شادم
بندۂ عشقم و از ہر دو جہاں آزادم
نیست بر لوح دلم جز الف قامت یار
چہ کنم حرف دگر یاد نداد استادم

یعنی—میں صاف صاف کہتا ھوں اور اپنی بات کے کہنے سے میرا دل خوش ھے، میں عشق کا بندہ ھوں اور دونوں جہان سے آزاد ھوں، میرے دل کی تختی پر سوائے میرے پریتم کے چنھ روپ " الف " * کے اور کوئی اکشر لکھا ھوا نہیں ھے، میں کیا کروں میرے استاد نے اور کوئی اکشر سکھایا ھی نہیں !

" اِس طرح کی کویتاؤں کا انیک بار خاص خاص سننے والوں کے دلوں پر چمتکارک اثر ھوا ھے . کبھی کبھی کیول ایک شعر سن کر لوگوں کی موتیں بھی ھوگئی ھیں † اور جن لوگوں پر اِن لوگوں کے اثر ھوئے ھیں وے ھمیشہ کوئی کمزور دل یا کمزور دماغ کے اِنسان بھی نہ تھے . میں کیول ایک مثال دونگا . ایران کے مشہور سنت شیخ علی حزیم نے اپنے جیون چرتر میں لکھا ھے—

" ایک دن رات کو میں کچھ دوستوں کے ساتھ باغ میں بیٹھا ھوا تھا . اچانک مجھے گہرا " حال " آ گیا . ساری رات میری اُسی میں گذر گئی . اُس حالت کو بیان کر سکنا ناممکن ھے . وہ حالت قریب قریب موت کی حالت سے ملتی ھوئی تھی . میری یہ حالت اُن دوستوں میں سے ایک کے منہ سے یہ شعر سن کر ھوئی تھی—

اِمشب بیا تا در چمن سازیم پر پیمانہ را
تو شمع و گل را داغ کن من بلبل و پروانہ را

یعنی—" اے میرے پریتم (پرماتما) آج کی رات آ تاکہ باغ میں چل کر ھم پریم کے پیمانہ کو لبالب بھر سکیں، تو شمع اور گل کو جلا ڈال اور میں بلبل اور پروانے کو شرما دوں . "

---

* سوامی رام تیرتھ ایک اردو ماسک پترکا نکالا کرتے تھے جس کا نام " الف " تھا اور جس کے ٹائٹل پیج پر لکھا رھتا تھا—" اِکو الف تیرے درکار " یعنی سوائے ایک الف کے تجھے کسی کی ضرورت نہیں ھے .

—سمپادک .

† الہ آباد کے مشہور صوفی مولانا محمد حسین کی موت اجمیر میں عرس کے موقع پر قوالی کا ایک شعر سنتے سنتے ھی ھوئی تھی .

—سمپادک .

यानी—कारीगर अपने कारख़ाने के अन्दर छुपा हुआ है, तू कारख़ाने के अन्दर जा तो तू उसे साफ़ साफ़ देख लेगा !

हकीम सनाई का उपदेश है—

'तलब' ऐ आशिक़ाने ख़ुश रफ़्तार !
तलब ऐ *शाहिदाने शीरींकार !
दर जहां शाहिदे व मा फ़ारिग़ !
दर क़दह जरएं व मा हुशियार !
ख़ेज़ ता जा-बरूए बेनिशीनम,
बादे ईं ख़ाकतूदए ग़द्दार !
पसब जारोबे 'ला' फ़रो रूबम,
कौकब अज़ सक़्फ़े गुम्बदे दव्वार !
ता ज ख़ुद बिशनवद न अज़ मनो तो
'लेमनल मुल्को !' वाहिद उल क़हहार

अर्थात्—ऐ नेक चलन प्रेमियो, ढूंढ़ो ! ऐ मीठे स्वर वाले प्रीतमो, ख़ुशी मनाओ ! हमारा प्रीतम इसी जहान में मौजूद है और हमारे दिल सूने पड़े हैं ! प्याले में शराब का घूंट मौजूद है, और हमारा होश क़ायम है ! उठो और अपने मुंह के पानी (अहम भाव) से ख़ाक के इस ग़द्दार ढेर (पृथ्वी) को दबा दो ! 'नेस्ती' (ईश्वर के अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं) की झाड़ू लेकर, आसमान के इस घूमने वाले गुम्बद की छत से सब तारों को बुहार फेंको ! ताकि वह एकमेवाद्वितीयम, सर्वशक्तिमान परमेश्वर ख़ुद अपने कानों से यह आवाज़ सुने—'इस सबका मालिक कौन है ?'❋ मेरे और तुम्हारे कानों से नहीं !

ईरान का मशहूर सन्त कवि हाफ़िज़ इन शब्दों में मृत्यु का आह्वान करता है—

ख़ुर्रम आं रोज़ कज़ीं मंज़िले वीरां बेरवम
राहते जां तलबम वज़ पए जानां बेरवम
ब हवादारिये ऊ ज़र्रा सिफ़त रक़्स कुनम
न लबे चश्मए ख़ुर्शीदे दरख़शां बेरवम

यानी—मुबारिक वह दिन होगा जिस दिन मैं इस उजड़ी हुई सराय से जाऊंगा, उस दिन मैं रूहानी सुख की खोज करता हुआ अपने प्रीतम को ढूंढूंगा. हवा के अन्दर एक ज़र्रे की तरह नाचता हुआ, मैं उस चमकते हुए सूर्य के प्रेम की रोशनी में नाचता हुआ, अपने उस प्रीतम तक जा पहुंचूंगा !

❋ आख़री लाइन में क़ुरान के इस वाक्य की ओर इशारा है कि प्रलय के बाद जब सब सृष्टि मिट जायगी तो ग़ैब से आवाज़ आयेगी—'इस सबका मालिक कौन है.

—लेखक.

یعنی—کاریگر اپنے کارخانہ کے اندر چھپا ہوا ہے، تو کارخانے کے اندر جا، تو تو اُسے صاف صاف دیکھ لیگا !

حکیم صنائی کا اُپدیش ہے—

'طلب' اے عاشقان خوش رفتار !
طلب اے شاہدان شیریں کار !
در جہاں شاہدے و ما فارغ !
در قدح جرئے و ما هشیار !
خیز تا را بروئے بنشینم،
باد ایں خاک تودۂ غدار
پسب جاروب 'لا' فرو روبم،
کوکب از شق گمبد دوار
تا ز خود بشنود نہ از من و تو
'لمن الملکو !' واحد القہار

ارتھات—اے نیک چلن پریمیو، ڈھونڈھو ! اے میٹھے سور والے پریتمو، خوشی مناؤ ! ہمارا پریتم اِسی جہان میں موجود ہے اور ہمارے دل سونے پڑے ہیں ! پیالے میں شراب کا گھونٹ موجود ہے، اور ہمارا ہوش قائم ہے ! اُٹھو اور اپنے منہ کے پانی (اہم بھاؤ) سے خاک کے اِس غدار ڈھیر (پرتھوی) کو دبا دو ! 'نیستی' (ایشور کے اترکت اور کچھ ہے ہی نہیں) کی جھاڑو لے کر، آسمان کے اِس گھومنے والے گمبد کی چھت سے سب تاروں کو بہار پھینکو ! تاکہ وہ ایکمیوادوتیئیم، سروشکتیمان پرمیشور خود اپنے کانوں سے یہ آواز سنے—'اِس سب کا مالک کون ہے ؟'❋ میرے اور تمہارے کانوں سے نہیں !

ایران کا مشہور سنت کوی حافظ اِن سب شبدوں میں مرتیو کا آھوان کرتا ہے—

خرم آں روز کزیں منزل ویراں بروم
راحت جاں طلبم و ز پئے جاناں بروم
با هوا داریِ او ذرہ صفت رقص کنم
تہ لب چشمۂ خورشید درخشاں بروم

یعنی—مبارک وہ دن ہوگا جس دن میں اِس اُجڑی ہوئی سرائے سے جاؤں گا، اُس دن میں روحانی سکھ کی کھوج کرتا ہوا اپنے پریتم کو ڈھونڈھوں گا . ہوا کے اندر ایک ذرہ کی طرح ناچتا ہوا، میں اُس چمکتے ہوئے سوریہ کے پریم کی روشنی میں ناچتا ہوا، اپنے اُس پریتم تک جا پہونچونگا !

❋ آخری لائن میں قرآن کے اِس واکیہ کی اور اِشارہ ہے کہ پرلے کے بعد جب سب سرشٹی مٹ جائے گی تو غیب سے آواز آئیگی—'اِس سب کا مالک کون ہے.

—لیکھک .

मौलाना जलालुद्दीन रूमी जब अपनी सत्ता और कीर्ति के शिखर पर थे, उस समय उन्होंने सूफ़ियों के शब्दों में "दुनिया को लात मार दी थी." हकीम सनाई की बाबत लिखा है कि ग़ज़नी के बादशाह सुलतान बहराम शाह ने हकीम सनाई की क़ाबलियत और धार्मिकता का क़ायल होकर अपनी बहिन से उनकी शादी करनी चाही और उसके साथ उन्हें बहुतसा धन, ख़िताब और दरबार में ऊंचा ओहदा देना चाहा. हकीम सनाई छोटी उम्र में ही दुनिया छोड़ चुके थे. उन्होंने सुलतान की इस तजवीज़ का जवाब दिया—

मन न मरदे ज़नो ज़रो जाहम
बाख़ुदा गर कुनम बगर ख़ाहम
गर तु ताजम देही व एहसानम
बा सरे तो के ताज नस्तानम

यानी—मैं वह मर्द नहीं हूं कि स्त्री से या धन से, या पदवी से कोई सम्बन्ध रखूं! ख़ुदा की क़सम! मुझे इनमें से किसी की ज़रूरत नहीं है, अगर तुम मुझे अपना ताज भी दे दो और मुझ पर अहसान करो, तो तुम्हारे सर की क़सम मैं हरगिज़ न लूंगा.

एक ख़ास बात यह है कि इस तरह के कवियों ने कभी भी किसी दुनयवी आदमी की तारीफ़ या निन्दा में कविता नहीं लिखी. इनकी कवितायें दार्शनिक विचारों और रूहानी तजरुबों का एक ख़ज़ाना हैं. जिस तरह संगीत को समझने के लिये आदमी को अपना कान सिधाना पड़ता है इसी तरह इन सूफ़ी कवियों को समझने और उनका पूरा आनन्द लेने के लिये मनुश्य को अपनी रूह और अपने दिल को ख़ास तरह से साधना पड़ता है.

हज़रत अली ने एक जगह लिखा है—

दवाओका फ़ीका व मा तशअरू
व दाओका मिनका व मा तब्सेरू
व तज़अमू अन्नका जिर्मुन सग़ीरो
व फ़ीकन तवा आलमन-उल-अकबरू
व अन्त किताब-उल-मुबीन-उल-लज़ी
बे अहरुफ़ेही यज़हर-उल मुज़मरू

यानी—ऐ इनसान! तेरा इलाज तेरे ही अन्दर है और तुझे नहीं मालूम! तेरी बीमारी की जड़ें तेरे ही अन्दर हैं और तुझे दिखाई नहीं देतीं! और क्या तू यह समझता है कि तू इस दुनिया में एक छोटी सी चीज़ है? लेकिन तेरे अन्दर ये महान दुनिया लिपटी हुई पड़ी है. तू एक खुली हुई किताब है, जिसके अक्षरों को पढ़कर सब छुपे हुये रहस्य खुल जाते हैं!

मौलाना जलालुद्दीन रूमी ने कहा है—

कारकुन दर कारगह बाशद निहां
तू बिरो दर कारगह बीनश अयां!

مولانا جلال الدین رومی جب اپنی ستتا اور کیرتی کے شکھر پر تھے، اُس سمے اُنھوں نے صوفیوں کے شبدوں میں "دنیا کو لات مار دی تھی." حکیم صناعی کی بابت لکھا ھے کہ غزنی کے بادشاہ سلطان بہرام شاہ نے حکیم صناعی کی قابلیت اور دھارمکتا کا قایل ھوکر اپنی بہن سے ان کی شادی کرنی چاہی اور اُس کے ساتھ اُنھیں بہت سا دھن، خطاب اور دربار میں اُونچا عہدہ دینا چاھا. حکیم صناعی چھوٹی عمر میں ھی دنیا چھوڑ چکے تھے. اُنھوں نے سلطان کی اِس تجویز کا جواب دیا—

من نہ مردے زن و زر و جاھم
با خدا گر کنم وگر خواھم
گر تو تاجم دھی و احسانم
با سر تو کے تاج نستانم

یعنی—میں وہ مرد نہیں ھوں کہ استری سے یا دھن سے، یا پدوی سے کوئی سمبندھ رکھوں! خدا کی قسم! مجھے اِن میں سے کسی کی ضرورت نہیں ھے، اگر تم مجھے اپنا تاج بھی دے دو اور مجھ پر احسان کرو، تو تمھارے سر کی قسم میں ھرگز نہ لونگا.

ایک خاص بات یہ ھے کہ اِس طرح کے کویوں نے کبھی بھی کسی دنیوی آدمی کی تعریف یا نندا میں کویتا نہیں لکھی. ان کی کویتائیں دارشنک وچاروں اور روحانی تجربوں کا ایک خزانہ ھیں. جس طرح سنگیت کو سمجھنے کے لئے آدمی کو اپنا کان سدھانا پڑتا ھے اِسی طرح ان صوفی کویوں کو سمجھنے اور اُن کا پورا آنند لینے کے لئے منشیہ کو اپنی روح اور اپنے دل کو خاص طرح سے سادھنا پڑتا ھے.

حضرت علی نے ایک جگہ لکھا ھے—

دواؤکی فیکا و ماتشعر
دواؤکی منکا و ما تبصر
وتزعم انکی جرمل صغیر
وفیا تواعالم الکبر
وانت کتاب المبین الذی
بہ آہ روفیہی یظھرالل مضمر

یعنی—اے اِنسان! تیرا علاج تیرے ھی اندر ھے اور تجھے نہیں معلوم! تیری بیماری کی جڑیں تیرے ھی اندر ھیں اور تجھے دکھائی نہیں دیتیں! اور کیا تو یہ سمجھتا ھے کہ تو اِس دنیا میں ایک چھوٹی سی چیز ھے؟ لیکن تیرے اندر یہ مہان دنیا لپٹی ھوئی پڑی ھے. تو ایک کھلی ھوئی کتاب ھے، جس کے اکشروں کو پڑھ کر سب چھپے ھوئے رھسیہ کھل جاتے ھیں!

مولانا جلال الدین رومی نے کہا ھے—

کارکن در کارگہ باشد نہاں
تو برو در کارگہ بینش عیاں

सौन्दर्य तो रहता ही है; लेकिन उसके साथ साथ सीप को भी रगड़ रगड़ कर इतना चमका दिया जाता है कि सीप भी ख़ुद मोती दिखाई देने लगती है. इटली के कवि दान्ते का नरक का चित्र, और बहिश्त की वह तसवीर, जिसमें सुन्दर सुन्दर बाग़ लगे हुए हैं, नहरें बह रही हैं और बड़ी बड़ी काली काली आंखों वाले स्त्री और पुरुश बसते हैं, जिनकी जवानी कभी ख़त्म नहीं हो सकती; ये सब कविता की इसी दूसरी अवस्था के नमूने हैं. दुनिया के ज़्यादातर कवि इसी अवस्था के कवि हैं. अरबी और फ़ारसी में भी इसके नमूने भरे पड़े हैं. मैं सिर्फ़ एक मिसाल दूंगा. ईरानी कवि सलमान सावजी लिखता है—

दर दुर्जे दुर अक़ीक़े लबत नक़्दे जां निहाद
जिनसे अज़ीज़ याफ़्त बजाये निहां निहाद
क़ुफ़्ले ज़लाल बर दरे आं दुर्जे अद लबत
ख़ालत ज़े अम्बर आमद-ओ-मोहरे बरां निहाद

यानी—तेरे लाल होठों ने जान के ख़ज़ाने को मोतियों (दांतों) के पिटारे के अन्दर हिफ़ाज़त से रख दिया है. इतने क़ीमती जौहर को इसी तरह छिपाकर रखना चाहिये. उस पिटारे के ढक्कन पर तेरे लबों ने लालों का एक ताला लगा दिया है और तेरे अम्बरी तिल ने उस ताले पर एक छोटी सी मुहर लगादी है.

इसी तरह की मिसालें एक ज़माने की अरबी कविता में से भी दी जा सकती हैं.

इसके बाद कविता का तीसरा ज़माना आता है. यह ज़माना कविता की प्रौढ़ावस्था का है और कला की दृश्टि से सब से ज़्यादा अहमियत का है.

इस अवस्था में कविता शब्दों और अलंकारों से ऊपर उठ जाती है. मालूम होता है उसने अपने आदर्श को प्राप्त कर लिया. कविता अब इनसान की इस छोटी सी ख़ूबी और सांसारिक जीवन से ऊपर उठ जाती है. वह रूहानियत में ग़ोते लगाने लगती है. बहिश्त के सुख उसे अब तुच्छ और निकम्मे मालूम होने लगते हैं. क़ुदरती तौर पर रूढ़ियों, कर्मकान्डों और अन्ध परम्पराओं से उसे अब नफ़रत होने लगती है. दुनिया शायर पर तरह तरह के इलज़ाम लगाती है लेकिन शायर इसकी ख़ाक परवाह नहीं करता. वह अब महज़ शायर नहीं है. वह द्रश्टा है, सन्त है. कविता उसके दिल से निकलती है, दिमाग़ से नहीं. उसमें बिजली की सी ताक़त होती है. लोग उसे समझते कम हैं, लेकिन पसन्द सब करते हैं. हज़रत मोहम्मद साहब के दामाद हज़रत अली, शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी, हाफ़िज़, शम्स तबरेज़, मौलाना जलालुद्दीन रूमी, हकीम सनाई, जामी, फ़रीदुद्दीन अत्तार सब इसी श्रेणी के कवि हैं. इन लोगों के बेलौस और पाक जीवन ने लाखों को इनका गिरवीदा बना रखा था.

سوندریہ تو رہتا ہی ہے؛ لیکن اُس کے ساتھ ساتھ سیپ کو بھی رگڑ رگڑ کر اتنا چمکا دیا جاتا ہے کہ سیپ بھی خود موتی دکھائی دینے لگتی ہے۔ اِٹلی کے کوی دانتے کا نرک کا چتر، اور بہشت کی وہ تصویر، جس میں سندر سندر باغ لگے ہوئے ہیں، نہریں بہ رہی ہیں اور بڑی بڑی کالی کالی آنکھوں والے استری اور پورش بستے ہیں، جن کی جوانی کبھی ختم نہیں ہوسکتی؛ یہ سب کویتا کی اِسی دوسری اوستھا کے نمونے ہیں۔ دنیا کے زیادہتر کوی اِسی اوستھا کے کوی ہیں۔ عربی اور فارسی میں بھی اِس کے نمونے بھرے پڑے ہیں۔ میں صرف ایک مثال دونگا۔ ایرانی کوی سلمان ساؤجی لکھتا ہے—

در درج در عقیق لبت نقد جاں نہاد
جنس عزیز یافت بجائے نہاں نہاد
قفل زلال بر در آں درج زد لبت
خالت ز عنبر آمد و مہرے براں نہاد

یعنی—تیرے لال ہونٹوں نے جان کے خزانے کو موتیوں (دانتوں) کے پٹارے کے اندر حفاظت سے رکھ دیا ہے۔ اِتنے قیمتی جوہر کو اِسی طرح چھپاکر رکھنا چاہئیے۔ اُس پٹارے کے ڈھکن پر تیرے لبوں نے لالوں کا ایک تالا لگا دیا ہے اور تیرے عنبری تل نے اُس تالے پر ایک چھوٹی سی مہر لگا دی ہے۔

اِسی طرح کی مثالیں ایک زمانے کی عربی کویتا میں سے بھی دی جاسکتی ہیں۔

اِس کے بعد کویتا کا تیسرا زمانہ آتا ہے۔ یہ زمانہ کویتا کی پروڑھاوستھا کا ہے اور کلا کی درشٹی سے سب سے زیادہ اہمیت کا ہے۔

اِس اوستھا میں کویتا شبدوں اور النکاروں سے اُوپر اُٹھ جاتی ہے۔ معلوم ہوتا ہے اُس نے اپنے آدرش کو پراپت کرلیا۔ کویتا اب اِنسان کی اِس چھوٹی سی خوبی اور سانسارک جیون سے اُوپر اُٹھ جاتی ہے۔ وہ روحانیت میں غوطے لگانے لگتی ہے۔ بہشت کے سکھ اُسے اب تچھ اور نکمے معلوم ہونے لگتے ہیں۔ قدرتی طور پر روڑھیوں، کرم کانڈوں اور اندھ پرمپراؤں سے اُسے اب نفرت ہونے لگتی ہے۔ دنیا شاعر پر طرح طرح کے الزام لگاتی ہے لیکن شاعر اِس کی خاک پرواہ نہیں کرتا: وہ اب محض شاعر نہیں ہے۔ وہ درشٹا ہے، سنت ہے۔ کویتا اُس کے دل سے نکلتی ہے، دماغ سے نہیں۔ اُس میں بجلی کی سی طاقت ہوتی ہے۔ لوگ اُسے سمجھتے کم ہیں، لیکن پسند سب کرتے ہیں۔ حضرت محمد صاحب کے داماد حضرت علی، شیخ عبدالقادر جیلانی، حافظ، شمس طبریز، مولانا جلال الدین رومی، حکیم سنائی، جامی، فریدالدین عطار سب اِسی شرینی کے کوی ہیں۔ اِن لوگوں کے بےلوث اور پاک جیون نے لاکھوں کو اِن کا گرویدہ بنا رکھا تھا۔

अरबी और फ़ारसी शायरी की एक झलक

डाक्टर मुस्तफ़ा इस्माइल अली एम० ए०, पी-एच० डी०

ब नमूदमे निशाने ज़ जमाले दोस्त लेकिन
दो जहां बहम बरआयद सरे शोरोशर नदारम

यानी—मैं अपने प्रीतम के रूप की एक झलक दूसरों को दिखा देता. लेकिन डर यह है कि एक झलक ही से दोनों जहान दरहम बरहम हो जायेंगे और वह शोरोशर उठेगा कि जिसका कोई अन्त न होगा.

चित्रकारी, मूर्ति-गढ़ने, घर बनाने और संगीत की तरह शायरी में भी आदमी का दिमाग़ पूरी साधुता और पूरी सुन्दरता के आदर्श को चित्रित करने और साक्षात् करने की कोशिश करता है. जिस तरह आदमी की ज़िन्दगी की तीन ख़ास हालतें होती हैं—बचपन, जवानी और अधेड़-पन—उसी तरह आदमी के आदर्श की भी तीन हालतें होती हैं. हर देश की शायरी को इन तीनों हालतों में से होकर निकलना पड़ता है.

पहली अवस्था में शायरी बहुत सीधी सादी होती है. कवि अपने समय के नैतिक आदर्शों को चित्रित करने की कोशिश करता है—जैसे बहादुरी फ़ैयाज़ी, धीरज, बुद्धिमत्ता वग़ैरा. इसलाम से पहिले के कुछ अरब कवि और ईरान के फ़िरदौसी, अनसारी वग़ैरा इसी तरह के कवि थे. इन कवियों की कविताएं बिलकुल सीधी सादी हैं. उनमें किसी तरह की बनावट नहीं. जो कवि के दिल में है वही उसकी क़लम से निकलता है. फ़िरदौसी की नीचे लिखी लाइन इसकी एक मिसाल है—

ख़ुदावन्दे बाला व पस्ती तुई
नदानम चे ई हरचे हस्ती तुई

यानी—हे ईश्वर इस लोक का और स्वर्ग लोक का तू ही मालिक है, मुझे नहीं मालूम कि तू क्या है, लेकिन जो कुछ भी तू हो, तू है ज़रूर.

दूसरी अवस्था कविता की जवानी की अवस्था है. कविता में अब पेचीदगी आने लगती है. उसकी ख़ूबसूरती बढ़ती है. उसमें ख़ुदी उभरने लगती है. चुने चुने शब्द, चुने चुने वाक्य, उपमायें, अलंकार और इस्तआरे, इन सब की, भरमार होने लगती है. इस अवस्था में कवि सब से ज़्यादा प्रेम के गीत गाता है, कोई सूक्ष्म प्रेम नहीं, बल्कि क़ुदरत और उसकी ठोस चीज़ों के साथ जीता जागता प्रेम. इस अवस्था में इख़लाक़ी मयार (नैतिक आदर्श) यानी मोती का

عربی اور فارسی شاعری کی ایک جھلک

ڈاکٹر مصطفیٰ اسمعیل علی ایم . اے، پی . ایچ . ڈی.

بہ نمودمے نشانے ز جمالِ دوست لیکن
دو جہاں بہم برآید سر شور و شر ندارم

یعنی—میں اپنے پریتم کے روپ کی ایک جھلک دوسروں کو دکھا دیتا . لیکن ڈر یہ ھے کہ ایک جھلک ھی سے دونوں جہان درہم برہم ھو جاوینگے اور وہ شور و شر اٹھیگا کہ جس کا کوئی انت نہ ھوگا .

چترکاری، مورتی گڑھنے، گھر بنانے اور سنگیت کی طرح شاعری میں بھی آدمی کا دماغ پوری سادھوتا اور پوری سندرتا کے آدرش کو چترت کرنے اور ساکشات کرنے کی کوشش کرتا ھے . جس طرح آدمی کی زندگی تین خاص حالتیں ھوتی ھیں—بچپن، جوانی اور ادھیڑپن—اسی طرح آدمی کے آدرش کی بھی تین حالتیں ھوتی ھیں . ھر دیش کی شاعری کو ان تینوں حالتوں میں سے ھوکر نکلنا پڑتا ھے .

پہلی اوستھا میں شاعری بہت سیدھی سادی ھوتی ھے . کوی اپنے سمے کے نیتک آدرشوں کو چترت کرنے کی کوشش کرتا ھے—جیسے بہادری، فیاضی، دھیرج، بدھیمتا وغیرہ . اسلام سے پہلے کے کچھ عرب کوی اور ایران کے فردوسی، انصاری وغیرہ اسی طرح کے کوی تھے . ان کویوں کی کویتائیں بالکل سیدھی سادی ھیں . ان میں کسی طرح کی بناوٹ نہیں . جو کوی کے دل میں ھے وھی اس کی قلم سے نکلتا ھے . فردوسی کی نیچے لکھی لائن اس کی ایک مثال ھے—

خداوند بالا و پستی توئی
ندانم چہ ای، ھرچہ ھستی توئی

یعنی—ھے ایشور اس لوک کا اور سورگ لوک کا تو ھی مالک ھے، مجھے نہیں معلوم کہ تو کیا ھے، لیکن جو کچھ بھی تو ھو، تو ھے ضرور .

دوسری اوستھا کویتا کی جوانی کی اوستھا ھے . کویتا میں اب پیچیدگی آنے لگتی ھے . اس کی خوبصورتی بڑھتی ھے . اس میں خودی ابھرنے لگتی ھے . چنے چنے شبد، چنے چنے واکیہ، اپمائیں، النکار اور استعارے، ان سب کی، بھرمار ھونے لگتی ھے . اس اوستھا میں کوی سب سے زیادہ پریم کے گیت گاتا ھے، کوئی سوکشم پریم نہیں، بلکہ قدرت اور اس کے ٹھوس پدارتھوں کے ساتھ جیتا جاگتا پریم . اس اوستھا میں اخلاقی معیار (نیتک آدرش) یعنی موتی کا

"इस इमेन्सिपेशन ऐक्ट के मुताबिक़ कैथोलिक सम्प्रदाय के लोगों को पार्लिमेन्ट के दोनों हाउसों के मेम्बर चुने जाने की, और बहुत थोड़े से ओहदों को छोड़कर और सब मुक़ामों और देशी ओहदों पर मुक़र्रर होने की इजाज़त हो गई. इस तरफ़ अब बहुत कम काम बाक़ी रह गया. लेकिन यहूदियों को सन 1858 तक पार्लिमेन्ट के मेम्बर होने की इजाज़त न थी, और न 1871 तक सिवाय इंगलैन्ड की प्रोटेस्टेन्ट सम्प्रदाय के दूसरी किसी सम्प्रदाय के लोग यूनिवर्सिटियों में उसी आज़ादी से भरती हो सकते थे.

फ्रान्स के एक फ़िलासफ़र ने अपनी पुस्तक "मारकस औरीलियस" में बिल्कुल ठीक लिखा है—

"रोमन साम्राज्य से बड़ा साम्राज्य अब तक कोई नहीं हुआ. उस साम्राज्य के दो बड़े बड़े और प्रशंसा के पात्र सम्राट ऐन्टोनिनस पायस और मारकस औरीलियस थे. संसार के इतिहास में इतने योग्य और बुद्धिमान सम्राटों की सिर्फ़ एक ही मिसाल और मिलती है, जिसमें शाही तख़्त पर बैठने वाले आदमियों को भी बुद्धिमानी विरसे में मिली थी. यह मिसाल तीन महान मुग़ल सम्राटों की है—बाबर, हुमायूं और अकबर. इनमें से आख़री सम्राट अकबर में और मारकस औरीलियस में अनेक बातों में आश्चर्यजनक समानता थी.❀

"اِس ایمنسیپیشن ایکٹ کے مطابق کیتھولک سمپردائے کے لوگوں کو پارلیمنٹ کے دونوں ہاؤسوں کے ممبر چنے جانے کی، اور بہت تھوڑے سے عہدوں کو چھوڑ کر اور سب مقاموں اور دیشی عہدوں پر مقرر ہونے کی اِجازت ہو گئی. اِس طرف اب بہت کم کام باقی رہ گیا. لیکن یہودیوں کو سن 1858 تک پارلیمنٹ کے ممبر ہونے کی اِجازت نہ تھی، اور نہ سن 1871 تک سوائے اِنگلینڈ کی پروٹسٹنٹ سمپردائے کے دوسری کسی سمپردائے کے لوگ یونیورسٹیوں میں اُسی آزادی سے بھرتی ہو سکتے تھے.

فرانس کے ایک فلسفر نے اپنی پستک "مارکس اوریلیس" میں بالکل ٹھیک لکھا ہے—

"رومن سامراجیہ سے بڑا سامراجیہ اب تک کوئی نہیں ہوا. اُس سامراجیہ کے دو بڑے بڑے اور پرشنسا کے پاتر سمراٹ اینٹونینس پایس اور مارکس اوریلیس تھے. سنسار کے اِتہاس میں اِتنے یوگیہ اور بدھیمان سمراٹوں کی صرف ایک ہی مثال اور ملتی ہے، جس میں شاہی تخت پر بیٹھنے والے آدمیوں کو بھی بدھیمانی ورثہ میں ملی تھی. یہ مثال تین مہان مغل سمراٹوں کی ہے—بابر، ہمایوں اور اکبر. اِن میں سے آخری سمراٹ اکبر میں اور مارکس اوریلیس میں انیک باتوں میں آشچریہ جنک سمانتا تھی.*

जो आवश्यकता से अधिक दौलत इकट्ठा करता है वह चोरी करता है और चोरी का धन कच्चा पारा है. वह पच नहीं सकता. अन्त में वह चोरी की मिल्कियत न रहेगी. ऐसा विश्वास रख अपने अहिंसक उपाय हमें करते ही जाना चाहिये.

—गांधी

جو آوشیکتا سے ادھک دولت اِکٹھا کرتا ہے وہ چوری کرتا ہے اور چوری کا دھن کچا پارہ ہے. وہ پچ نہیں سکتا. انت میں وہ چوری کی ملکیت نہ رہیگی. ایسا وشواس رکھ اپنے اہنسک اُپائے ہمیں کرتے ہی جانا چاہئیے.

—گاندھی

❀ यह लेख लेखक की पुस्तक "Life and Experiences" की दूसरी जिल्द के एक अध्याय का अंश है—सम्पादक.

* یہ لیکھ لیکھک کی پستک "Life and Experinces" کی دوسری جلد کے ایک ادھیائے کا انش ہے—سمپادک.

"कुछ लोग सुधारकों के सम्प्रदाय में शामिल होना चाहते थे. बहुत से शामिल हो भी गए. इस पर बादशाह फ़िलिप (1556-98) ने उनके साथ बड़ी ज़ालिमाना जंग शुरू कर दी, जो तीस बरस तक जारी रही. फ़िलिप ने नए सम्प्रदाय को मिटा देने का फ़ैसला कर लिया और मरते वक़्त तक इस जंग को जारी रखा. उसने हुक्म दे दिया कि जो आदमी भी नए सम्प्रदाय के असूलों को ग़लत कहने और न मानने से इनकार कर दे उसे ज़िन्दा जला दिया जावे. इस बात का ठीक ठीक पता नहीं चलता कि लोकन्ट्रीज़ में इस हुक्म के मुताबिक़ कितने जलाए गए. लेकिन ड्यूक आफ़ ऐल्वा ने एक बार बड़े घमन्ड के साथ कहा था कि अपने शासन के पांच या छै बरस के अन्दर मैंने खुद अट्ठारह हज़ार से ऊपर आदमियों को इस तरह शान्ति के साथ जलवा दिया."

इस भयंकर परिस्थिति के मुक़ाबले में हिन्दुस्तान की हालत बहुत ज़्यादा अच्छी और बेहतर मालूम होती है. मलाबार के समुद्र तट पर मुसलमानों के हमले का असर नहीं हो सका. वहां के हिन्दू राजा की उदारता की हम तारीफ़ किये बिना नहीं रह सकते. ईसा की पहली या दूसरी सदी में सीरिया से कुछ ईसाई कोचिन और त्रावणकोर में आकर उतरे. वहां के हिन्दू राजा ने उनका स्वागत किया, उनकी मेहमाननवाज़ी की और उन्हें बिना किसी तरह की रोक टोक के अपने धर्म को मानने और उस पर चलते रहने की पूरी इजाज़त दी.

इसके ख़िलाफ़ इसी समय इंगलैन्ड में न सिर्फ़ रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय के लोगों को बल्कि उन प्रोटेस्टैन्टों तक को, जो ख़ास ख़ास धार्मिक असूलों को मानने से इन्कार करते थे, ख़ास ख़ास ओहदों और अधिकारों से क़ानूनन वंचित रखा जाता था, जिससे उन्हें ख़ासी असुविधा सहनी पड़ती थी.

जार्ज बर्टन ऐडेम्स की "कान्सटीट्यूशनल हिस्ट्री आफ़ इंगलैन्ड" (193) में लिखा है—

"चार्ल्स दूसरे के ज़माने में जो 'टैस्ट ऐक्ट' पास हुआ, उसका मक़सद यह था कि कोई रोमन कैथोलिक किसी सरकारी ओहदे पर न रह सके. इसके लिए एक ऐसी कसौटी मुक़र्रर की गई, जिससे कोई बच न सकता था. इसका नतीजा यह था कि कोई भी सरकारी ओहदेदार अगर छिपा छिपाया रोमन कैथोलिक होता था, तो उसे खुले तौर पर ऐलान करना पड़ जाता था.

आख़िरकार सन 1828 में "टैस्ट ऐक्ट" रद्द किया गया. अगले साल 'कैथोलिक इमेन्सिपेशन ऐक्ट' पास किया गया जो और भी ज़्यादा महत्व का था.

"کچھ لوگ سدھارکوں کے سمپردائے میں شامل ہونا چاہتے تھے، بہت سے شامل ہو بھی گئے۔ اس پر بادشاہ فلپ (155?-98) نے اُن کے ساتھ بڑی ظالمانہ جنگ شروع کر دی، جو تیس برس تک جاری رہی۔ فلپ نے نئے سمپردائے کو مٹا دینے کا فیصلہ کر لیا اور مرتے وقت تک اِس جنگ کو جاری رکھا۔ اُس نے حکم دے دیا کہ جو آدمی بھی نئے سمپردائے کے اُصولوں کو غلط کہنے اور نہ ماننے سے اِنکار کر دے اُسے زندہ جلا دیا جاوے۔ اِس بات کا ٹھیک ٹھیک پتہ نہیں چلتا کہ لوکنٹریز میں اِس حکم کے مطابق کتنے جلائے گئے۔ لیکن ڈیوک آف ایلوا نے ایک بار بڑے گھمنڈ کے ساتھ کہا تھا کہ اپنے شاسن کے پانچ یا چھ برس کے اندر میں نے خود اٹھارہ ہزار سے اوپر آدمیوں کو اِس طرح شانتی کے ساتھ جلوا دیا۔"

اِس بھینکر پرستھتی کے مقابلہ میں ہندستان کی حالت بہت زیادہ اچھی اور بہتر معلوم ہوتی ہے۔ ملا بار کے سمدر تٹ پر مسلمانوں کے حملے کا اثر نہیں ہو سکا۔ وہاں کے ہندو راجا کی اُدارتا کی ہم تعریف کئے بنا نہیں رہ سکتے۔ عیسیٰ کی پہلی یا دوسری صدی میں سیریا سے کچھ عیسائی کوچن اور ٹراونکور میں آ کر اُترے۔ وہاں کے ہندو راجا نے اُن کا سواگت کیا، اُن کی مہمان نوازی کی اور اُنہیں بنا کسی طرح کی روک ٹوک کے اپنے دھرم کو ماننے اور اُس پر چلتے رہنے کی پوری اِجازت دی۔

اِس کے خلاف اِسی سمے اِنگلینڈ میں نہ صرف رومن کیتھولک سمپردائے کے لوگوں کو بلکہ اُن پروٹیسٹینٹوں تک کو، جو خاص خاص دھارمک اُصولوں کو ماننے سے انکار کرتے تھے، خاص خاص عہدوں اور ادھیکاروں سے قانوناً ونچت رکھا جاتا تھا، جس سے اُنہیں خاصی اسودھا سہنی پڑتی تھی۔

جارج برٹن ایڈمس کی "کانسٹی ٹیوشنل ہسٹری آف اِنگلینڈ" (19 8) میں لکھا ہے—

"چارلس دوسرے کے زمانے میں جو 'ٹیسٹ ایکٹ' پاس ہوا، اُس کا مقصد یہ تھا کہ کوئی رومن کیتھولک کسی سرکاری عہدے پر نہ رہ سکے۔ اِس کے لئے ایک ایسی کسوٹی مقرر کی گئی، جس سے کوئی بچ نہ سکتا تھا۔ اِس کا نتیجہ یہ تھا کہ کوئی بھی سرکاری عہدیدار اگر چھپا چھپایا رومن کیتھولک ہوتا تھا، تو اُسے کھلے طور پر اِس کا اعلان کرنا پڑ جاتا تھا۔

آخرکار سن 1828 میں "ٹیسٹ ایکٹ" رد کیا گیا۔ اگلے سال "کیتھولک ایمنسپیشن ایکٹ" پاس کیا گیا جو اور بھی زیادہ مہتو کا تھا۔

गड्डा पान सीधे अपने खेत से लाकर चढ़ा देता है. मुख दुख दोनों में इस छन्द की समाधि का लोगों के जीवन के साथ एक खास और गहरा ताल्लुक़ रहता है."

टेलर अपनी पुस्तक "टोपोग्रैफ़ी आफ़ ढाका" (1840, सफ़ा 257.) में लिखता है—"मज़हबी झगड़े हिन्दू और मुसलमानों में शायद ही कभी देखने में आते हों. दोनों धर्मों के लोग पूरे प्रेम और मेल जोल के साथ रहते हैं. ज़्यादातर हिन्दू और मुसलमान भेद भाव से इतना ऊपर उठ गए हैं कि वह एक ही हुक़्क़े से पीते हैं."

धार्मिक उदारता के मामले में हिन्दुस्तान और यूरोप का मुक़ाबला बहुत ही आंखें खोलने वाला है. थोड़े दिनों पहले तक का यूरोप का सारा इतिहास मज़हब के नाम पर निस्सन्देह बहुत ही शर्मनाक क़िस्म के अन्यायों का इतिहास है. सलीबी (क्रूसेड) लड़ाइयों में पीटर दी हरमिट जैसे पोपों और पादरियों के फ़तवों और आग उगलने वाले शापों से जोश में आकर लाखों यूरोपियन क्रूसेडरों ने अपने घरों और बाल बच्चों से सदा के लिए अलग होकर उन दिनों के सफ़र की नाक़ाबिले बयान मुसीबतों को सहते हुए हज़रत ईसा की क़ब्र को उन मुसलमानों से बचाने की कोशिश की जिन्हें वह 'इन्फ़िडल' या नास्तिक कहते थे; इतना ही नहीं, सिर्फ़ धार्मिक विश्वासों के फ़रक़ के कारन यूरोप भर में सदियों वह भयंकर आपसी लड़ाइयां जारी रहीं, जिनमें देश के देश वीरान हो गए और यूरोप का सारा नक़शा ख़ून से रंग गया. आइये यूरोप के बादशाहों का ठीक उसी ज़माने के हिन्दुस्तान के बादशाहों के साथ मुक़ाबला करें.

बकल अपनी किताब "हिस्ट्री आफ़ सिविलीज़ेशन" में लिखता है—

"अपनी हुकूमत के आख़िरी दिनों में चार्ल्स पांचवां बड़े घमन्ड के साथ यह कहा करता था कि मैंने अपने देश के मुक़ाबले में हमेशा अपने धर्म को तरजीह दी और मेरी सब से पहली और सब से ज़बरदस्त ख़्वाहिश हमेशा यही रही कि ईसाई धर्म के हितों को क़ायम रखा जावे. लोकन्ट्रीज़ में दूसरी सम्प्रदायों के लोगों के ख़िलाफ़ उसने जो जो कार्रवाइयां कीं, उनसे ज़ाहिर होता है कि वह अपने धर्म को फैलाने के लिए कितने जोश के साथ काम करता था. उस ज़माने के विश्वस्त लेखकों के मुताबिक़ उसके शासन-काल में नीदरलैन्ड्स के अन्दर पचास हज़ार से लेकर एक लाख आदमी तक सिर्फ़ अपने मज़हबी एतक़ादों (धार्मिक विचारों) के कारन मारे गए. 1520 और 1550 के बीच में उसने बहुत से नए क़ानून इस मतलब से जारी किये कि जिन लोगों पर यह जुर्म साबित हो जावे कि वह बादशाह के मज़हबी उसूलों को नहीं मानते, उन्हें या तो क़तल कर दिया जावे, या ज़िन्दा जला दिया जावे और या ज़िन्दा ज़मीन में गाड़ दिया जावे."

کا ناریل سیدھے اپنے کھیت سے لاکر چڑھا دیتا ہے. سکھ دکھ دونوں میں اس سنت کی سمادھی کا لوگوں کے جیون کے ساتھ ایک خاص اور گہرا تعلق رہتا ہے."

ٹیلر اپنی پستک "ٹوپوگریفی آف ڈھاکا" (1840، صفحہ 257) میں لکھتا ہے—"مذہبی جھگڑے ہندو اور مسلمانوں میں شاید ہی کبھی دیکھنے میں آتے ہوں. دونوں دھرموں کے لوگ پورے پریم اور میل جول کے ساتھ رہتے ہیں. زیادہ‌تر ہندو اور مسلمان بھید بھاؤ سے اتنا اوپر اٹھ گئے ہیں کہ وہ ایک ہی حقہ سے پیتے ہیں."

دھارمک اُدارتا کے معاملہ میں ہندستان اور یورپ کا مقابلہ بہت ہی آنکھیں کھولنے والا ہے. تھوڑے دنوں پہلے تک کا یورپ کا سارا اِتہاس مذہب کے نام پر نسندیہہ بہت ہی شرمناک قسم کے انیایوں کا اِتہاس ہے. صلیبی (کروسیڈ) لڑائیوں میں پیٹر دی ہرمٹ جیسے پوپوں اور پادریوں کے فتووں اور آگ اگلنے والے شاپوں سے جوش میں آکر لاکھوں یوروپین کروسیڈروں نے اپنے گھروں اور بال بچوں سے سدا کے لئے الگ ہو کر اُن دنوں کے سفر کی ناقابل بیان مصیبتوں کو سہتے ہوئے حضرت عیسیٰ کی قبر کو اُن مسلمانوں سے بچانے کی کوشش کی جنہیں وہ 'انفڈل' یا ناستک کہتے تھے' اتنا ہی نہیں' صرف دھارمک وشواسوں کے فرق کے کارن یورپ بھر میں صدیوں وہ بھینکر آپسی لڑائیاں جاری رہیں' جن میں دیش کے دیش ویران ہوگئے اور یورپ کا سارا نقشہ خون سے رنگ گیا. آیئے یورپ کے بادشاہوں کا ٹھیک اُسی زمانے کے ہندستان کے بادشاہوں کے ساتھ مقابلہ کریں.

بکل اپنی کتاب "ہسٹری آف سولیزیشن" میں لکھتا ہے—

"اپنی حکومت کے آخری دنوں میں چارلس پانچواں بڑے گھمنڈ کے ساتھ یہ کہا کرتا تھا کہ میں نے اپنے دیش کے مقابلہ میں ہمیشہ اپنے دھرم کو ترجیح دی اور میری سب سے پہلی اور سب سے زبردست خواہش یہی رہی کہ عیسائی دھرم کے ہتوں کو قائم رکھا جاوے. لوکنٹریز میں دوسری سمپردایوں کے لوگوں کے خلاف اُس نے جو جو کارروائیاں کیں' اُن سے ظاہر ہوتا ہے کہ وہ اپنے دھرم کو پھیلانے کے لئے کتنے جوش کے ساتھ کام کرتا تھا. اُس زمانے کے وشوست لیکھکوں کے مطابق اُس کے شاسن کال میں نیدرلینڈس کے اندر پچاس ہزار سے لے کر ایک لاکھ آدمی تک صرف اپنے مذہبی اعتقادوں (دھارمک وچاروں) کے کارن مارے گئے. 1520 اور 1550 کے بیچ میں اُس نے بہت سے نئے قانون اِس مطلب سے جاری کئے کہ جن لوگوں پر یہ جرم ثابت ہو جاوے کہ وہ بادشاہ کے مذہبی اصولوں کو نہیں مانتے' انہیں یا تو قتل کر دیا جاوے' یا زندہ جلا دیا جاوے اور یا زندہ زمین میں گاڑ دیا جاوے."

और जात पांत के कठोर बन्धनों से ऊपर उठकर कुल इनसानों की समता और मानव प्राणी की महत्ता का उपदेश दिया. रामानुज का अनुयायी रामानन्द ऊंची जाति का ब्राह्मन था. उसने हिन्दी में सब जातों के लोगों को—यहां तक कि चमारों और अन्त्यजों को भी—राम की भक्ति का उपदेश दिया. उनके शागिर्दों में सब से महान रैदास और कबीर थे. कबीर जाति का जुलाहा था. कबीर ने उपदेश दिया कि हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों का खुदा एक है. राम और रहीम में कोई अन्तर नहीं है और असल में सब धर्म बराबर हैं. महाराष्ट्र में नामदेव ने मराठी भाषा में उपदेश दिया कि हिन्दुओं का ईश्वर और मुसलमानों का अल्लाह एक ही है. नामदेव और ब्राह्मन सन्त एकनाथ दोनों पूरी आज़ादी के साथ अन्त्यजों से मिलते जुलते थे और मनुष्य मात्र की पवित्रता और महत्ता का उपदेश देते थे. बंगाल के बाउल जगह जगह घूमकर यह उपदेश दे रहे थे कि मनुष्य मनुष्य है और सब जाति भेदों और धर्म भेदों से ऊपर है. चैतन्य ने नदिया और बंगाल भर में भक्ति के सोते बहाये, और मनुष्य की समता का उपदेश दिया. चैतन्य के शागिर्दों में अनेक मुसलमान थे. उत्तर भारत में वल्लभाचार्य ने वैश्नव सम्प्रदाय क़ायम की. नानक ने उपदेश दिया कि इसलाम और हिन्दू धर्म दोनों में सत्य एक बराबर मिल सकता है. नानक ने जात पांत के भेदों को तोड़ा और सब के साथ प्रेम और उदारता का प्रचार किया. नानक के चेलों में भी बहुत से मुसलमान थे."

सच यह है कि हिन्दू मुसलिम भेद भाव हाल ही की गढ़ी हुई या पैदा की हुई चीज़ है. उन्नीसवीं सदी में इसका पता न था. मेरे अपने लड़कपन की बात है कि हमारे यहां जब दुर्गा पूजा होती थी तो मेरे बाप, मेरे बाबा और मेरे परबाबा गदेपुर के क़ाज़ियों को यात्राओं में शामिल होने के लिए दावत दिया करते थे, और वे लोग हमेशा हमारे निमंत्रन पर आते थे और दुर्गा की यात्राओं में शरीक होते थे. गदेपुर का गांव हमारे अपने गांव के पास था. यही हाल बंगाल भर में सब जगह था. दोनों बड़े बड़े धर्मों के लोगों में पूरी तरह मेल जोल और प्रेम का ताल्लुक़ था.

बैंकले-पटे ने अपनी पुस्तक "दी रोमान्स आफ ऐन ईस्टर्न कैपिटल" में सन 1906 के आपसी प्रेम को इन शब्दों में बयान किया है—

"शेख़ मुहम्मद यूसुफ़ की समाधि पर हिन्दू भी सिर झुकाते हैं. यदि किसी दहक़ान को अपनी फ़सल के अच्छे न होने का डर होता है तो वह मुट्ठी भर नाज लाकर चढ़ाता है. किसी का बच्चा बीमार होता है या डंगर बीमार होता है तो वह समाधि पर आकर मन्नत मानता है. यदि फ़सल बहुत अच्छी होती है तो किसान शुक्रिये के तौर पर एक

اور جات پانت کے کٹھور بندھنوں سے اوپر اٹھ کر کل انسانوں کی سمتا اور مانو پرانی کی مہتا کا اپدیش دیا . رامانج کا انویائی رامانند اونچی جاتی کا براھمن تھا . اس نے ھندی میں سب ذاتوں کے لوگوں کو—یہاں تک کہ چماروں اور انتیجوں کو بھی—رام کی بھکتی کا اپدیش دیا . اُن کے شاگردوں میں سب سے مہان ریداس اور کبیر تھے . کبیر جاتی کا جولاھا تھا . کبیر نے اپدیش دیا کہ ھندوؤں اور مسلمانوں دونوں کا خدا ایک ھے . رام اور رحیم میں کوئی انتر نہیں ھے اور اصل میں سب دھرم برابر ھیں . مہاراشٹر میں نام دیو نے مراٹھی بھاشا میں اپدیش دیا کہ ھندوؤں کا ایشور اور مسلمانوں کا اللہ ایک ھی ھے . نام دیو اور براھمن سنت ایکناتھ دونوں پوری آزادی کے ساتھ انتیجوں سے ملتے جلتے تھے اور منشیہ ماتر کی پوترتا اور مہتا کا اپدیش دیتے تھے . بنگال کے باؤل جگہ جگہ گھوم کر یہ اپدیش دے رہے تھے کہ منشیہ منشیہ ھے اور سب جاتی بھیدوں اور دھرم بھیدوں سے اوپر ھے . چیتنیہ نے ندیا میں اور بنگال بھر میں بھکتی کے سوتے بہائے' اور منشیہ کی سمتا کا اپدیش دیا . چیتنیہ کے شاگردوں میں انیک مسلمان تھے . اتر بھارت میں ولبھاچاریہ نے وشنو سمپردائے قایم کی . نانک نے اپدیش دیا کہ اسلام اور ھندو دھرم دونوں میں ستیہ ایک برابر مل سکتا ھے . نانک نے جات پانت کے بھیدوں کو توڑا اور سب کے ساتھ پریم اور اداریا کا پرچار کیا . نانک کے چیلوں میں بھی بہت سے مسلمان تھے."

سچ یہ ھے کہ ھندو مسلم بھید بھاؤ حال ھی کی گڑھی ہوئی یا پیدا کی ہوئی چیز ھے . انیسویں صدی میں اس کا پتہ نہ تھا . میرے اپنے لڑکپن کی بات ھے کہ ھمارے یہاں جب درگا پوجا ہوتی تھی تو میرے باپ' میرے بابا اور میرے پردادا گدے پور کے قاضیوں کو یاتراؤں میں شامل ہونے کے لئے دعوت دیا کرتے تھے' اور وہ لوگ ھمیشہ ھمارے نمنترن پر آتے تھے اور درگا کی یاتراؤں میں شریک ہوتے تھے . گدے پور کا گاؤں ھمارے اپنے گاؤں کے پاس تھا . یہی حال بنگال بھر میں سب جگہ تھا . دونوں بڑے بڑے دھرموں کے لوگوں میں پوری طرح میل جول اور پریم کا تعلق تھا .

بریڈلے برٹ نے اپنی پستک "دی رومانس آف این ایسٹرن کیپیٹل" میں سن 1906 کے آپسی پریم کو ان شبدوں میں بیان کیا ھے—

"شیخ محمد یوسف کی سمادھی پر ھندو بھی سر نواتے ھیں . یدی کسی دہقان کو اپنی فصل کے اچھے نہ ہونے کا ڈر ہوتا ھے تو مٹھی بھر اناج لا کر چڑھاتا ھے . کسی کا بچہ بیمار ہوتا ھے یا ڈنگر بیمار ہوتا ھے تو وہ سمادھی پر آکر منت مانتا ھے . یدی فصل خوب اچھی ہوتی ھے تو کسان شکریہ کے طور پر ایک

ही धार्मिक उदारता की नीति का पालन किया और अपनी सल्तनत के कारोबार में हिन्दुओं के सहयोग की क़द्र की. लेकिन यह दिखाया जा चुका है कि अलाउद्दीन खिलजी के ज़माने से लेकर कभी किसी भी हिन्दू को अपने धार्मिक विश्वासों के कारन किसी तरह की हानि नहीं सहनी पड़ी, न उसके नागरिक अधिकारों में फ़रक़ पड़ा.

हिन्दुस्तान पर शुरू ज़माने से विदेशी हमले होते रहे थे, लेकिन अक्सर होता यह था कि विदेशी हमलावर पूरी तरह हिन्दू समाज के अन्दर रल मिल कर एक हो जाते थे. यही हाल शकों का हुआ, लेकिन मुसलमान हमलावर इस तरह मिलकर एक न हो सकते थे. इसकी वजह बयान करते हुये के० पी० मित्र ने अपनी "इन्डियन हिस्ट्री फ़ार मैट्रिकुलेशन" (सफ़ा 115-16) में लिखा है कि—

"मुसलिम सभ्यता एक अलग और अपने ही ढंग की चीज़ थी, वह जल्दी से हिन्दू सभ्यता में मिलकर एक न हो सकती थी. मुसलमान बादशाह अपनी लड़ाइयों को जेहाद समझते थे, उन्होंने मन्दिरों को तोड़ा, हिन्दुओं को मुसलमान बनाया और उनको सताया. लेकिन धीरे धीरे दोनों मज़हबों के लोगों में उदारता और प्रेम के भाव जागने लगे. मुसलिम बादशाहों ने हिन्दुओं को अपना वज़ीर बनाया, हिन्दू सरदारों की मदद ली, हिन्दू स्त्रियों से शादियां कीं और हिन्दू साहित्य खासकर देशी भाशाओं के साहित्य का संरक्षन किया और उसे तरक़्क़ी दी. विजयनगर के हिन्दू राजाओं ने मुसलिम सिपाहियों को अपनी सेनाओं में भर्ती किया; उन्हें जागीरें दीं, उनके लिये मसजिदें बनवाईं और उनके धार्मिक विश्वासों का मान रखा. इसी तरह मुसलिम सुलतानों ने हिन्दू सिपाहियों को अपनी फ़ौजों में नौकर रखा. लड़ाई के मैदानों में हिन्दुओं और मुसलमानों के मेल जोल से दोनों की ज़बानें भी मिलती चली गईं; इसी मेल जोल से उर्दू ज़बान पैदा हुई. कशमीर के मुसलमान बादशाह ज़ैनुल आबदीन ने अपने राज के बड़े बड़े ओहदों पर हिन्दुओं को मुक़र्रर किया और धार्मिक उदारता से काम लिया. इसी तरह बंगाल का हुसेनशाह भी उदार विचारों का शासक था. इन सब लोगों ने देशी भाशाओं को खूब बढ़ाया. संस्कृत व्याकरन के बन्धनों से मुक्त होकर बङ्गला भाशा का स्वतन्त्रता के साथ बढ़ना और फलना फूलना एक बड़े दर्जे तक हुसेन शाह और नसरत शाह के संरक्षन का नतीजा है. वर्तमान बंगला उनकी ऋणी है. कृत्तिवास की बंगला रामायन और काशीदास का महाभारत बंगालियों के घर घर में मिलते हैं. विद्यापति और चंडीदास जैसे कवियों ने उन्हीं के संरक्षन में अपने गीत-काव्य गाये.

"विश्व प्रेम के पुजारी सुधारकों ने सब धर्म मज़हबों के सार का प्रचार किया और धर्म की सड़ी गली रूढ़ियों

ہی دھارمک اُدارتا کی نیتی کا پالن کیا اور اپنی سلطنت کے کاروبار میں ہندوؤں کے سہیوگ کی قدر کی. لیکن یہ دکھایا جا چکا ہے کہ علاؤالدین خلجی کے زمانے سے لے کر کبھی کسی بھی ہندو کو اپنے دھارمک وشواسوں کے کارن کسی طرح کی ہانی نہیں سہنی پڑی، نہ اُس کے ناگرک ادھکاروں میں فرق پڑا .

ہندستان پر شروع زمانے سے ودیشی حملے ہوتے رہے تھے، لیکن اکثر ہوتا یہ تھا کہ ودیشی حملہ‌آور پوری طرح ہندو سماج کے اندر رل مل کر ایک ہو جاتے تھے . یہی حال شکوں کا ہوا، لیکن مسلمان حملہ‌آور اِس طرح مل کر ایک نہ ہو سکتے تھے . اِس کی وجہ بیان کرتے ہوئے کے . پی . متر نے اپنی "اِنڈین ہسٹری فار میٹریکولیشن" (صفحہ 115-16) میں لکھا ہے کہ—

" مسلم سبھیتا ایک الگ اور اپنے ہی ڈھنگ کی چیز تھی، وہ جلدی سے ہندو سبھیتا میں مل کر ایک نہ ہو سکتی تھی . مسلمان بادشاہ اپنی لڑائیوں کو جہاد سمجھتے تھے، اُنھوں نے مندروں کو توڑا، ہندوؤں کو مسلمان بنایا اور اُن کو ستایا . لیکن دھیرے دھیرے دونوں مذہبوں کے لوگوں میں اُدارتا اور پریم کے بھاؤ جاگنے لگے . مسلم بادشاہوں نے ہندوؤں کو اپنا وزیر بنایا، ہندو سرداروں کی مدد لی، ہندو اِستریوں سے شادیاں کیں اور ہندو ساہتیہ خاص کر دیشی بھاشاؤں کے ساہتیہ کا سنرکشن کیا اور اُسے ترقی دی . وجے نگر کے ہندو راجاؤں نے مسلم سپاہیوں کو اپنی سیناؤں میں بھرتی کیا؛ اُنھیں جاگیریں دیں، اُن کے لئے مسجدیں بنوائیں اور اُن کے دھارمک وشواسوں کا مان رکھا . اِسی طرح مسلم سلطانوں نے ہندو سپاہیوں کو اپنی فوجوں میں نوکر رکھا . لڑائی کے میدانوں میں ہندوؤں اور مسلمانوں کے میل جول سے دونوں کی زبانیں بھی ملتی چلی گئیں؛ اِسی میل جول سے اُردو زبان پیدا ہوئی . کشمیر کے مسلمان بادشاہ زین‌العابدین نے اپنے راج کے بڑے بڑے عہدوں پر ہندوؤں کو مقرر کیا اور دھارمک اُدارتا سے کام لیا . اِسی طرح بنگال کا حسین شاہ بھی اُدار وچاروں کا شاسک تھا . اِن سب لوگوں نے دیشی بھاشاؤں کو خوب بڑھایا . سنسکرت ویاکرن کے بندھنوں سے مکت ہو کر بنگلا بھاشا کا سوتنترتا کے ساتھ بڑھنا اور پھلنا پھولنا ایک بڑے درجے تک حسین شاہ اور نصرت شاہ کے سنرکشن کا نتیجہ ہے . ورتمان بنگلا اُن کی رِنی ہے . کرتی‌واس کی بنگلا راماین اور کاشی داس کا مہابھارت بنگالیوں کے گھر گھر میں ملتے ہیں . ودیا پتی اور چنڈی‌داس جیسے کویوں نے اُنھیں کے سنرکشن میں اپنے گیت کاویہ گائے .

" وشوپریم کے پجاری سدھارکوں نے سب دھرم مذہبوں کے سار کا پرچار کیا اور دھرم کی سڑی گلی روڑھیوں

मन्सूबदार सूबे का सबसे बड़ा सेनापति था. राजा जानकी राम अलीवर्दी खां का सबसे एतबारी मन्त्री था. उसके दोनों लड़के राजा दुर्लभराम और राजा रामनरायण उतने ही ऊंचे ऊंचे पदों पर मुक़र्रर थे. माल के मोहकमों में चिम्मनराय, बीरुदत्त, कीर्तिचन्द, अमृतराय, चिन्तामणि दास और गोकुलचन्द सर्वोच्च पदों पर थे. कुछ दिनों बाद ढाका का राजा राजवल्लभ बहुत छोटी सी हैसियत से तरक्क़ी करते करते नायब सूबेदार के ओहदे पर पहुंच गया. दूसरे हुक्मरानों के साथ पत्र व्यवहार या बातचीत करने के लिये राजाराम को पूरे अख्तियार मिले हुए थे. दीवान मानिकचन्द और उम्मेदराम दोनों दरबार के स्तम्भ थे. केवल माल और ख़ज़ाने के मोहकमों में ही नहीं, बल्कि सेनापतियों की हैसियत से भी हिन्दुओं का बड़ा मान था. दुर्लभराम, मानिकचन्द, मोहनलाल और श्यामसुन्दर ने लड़ाई के मैदानों में बड़ी बड़ी वीरता दिखलाई. मैलकम ने अपनी पुस्तक 'क्लाइव', (जिल्द 1 सफ़ा 254) में लिखा है कि जिस समय मीर जाफ़र अपनी बहुत बड़ी सेना सहित सिराजुद्दौला को छोड़कर हट जाने के लिये राजी हो गया; उस विपदा के समय एक बङ्गाली हिन्दू मोहनलाल और एक बंगाली मुसलमान मीर मदन ने आख़ीर दम तक सिराजुद्दौला का साथ न छोड़ा. दोनों अपनी अपनी सेनाओं सहित वीरता के साथ अन्त तक लड़ते रहे, अगरचे इन सब से भी सिराजुद्दौला की क़िस्मत न पलट सकी.

सच यह है कि नवाब अलीवर्दी ख़ां को जितनी मुसीबतें बर्दाश्त करनी पड़ीं वह सब अपने मुसलमान अमीरों के विश्वासघात और उनकी दग़ा के सबब झेलनी पड़ीं. यह मुसलमान सरदार मराठों के साथ मिलकर अलीवर्दी ख़ां को धोखा देने में ज़रा भी संकोच न करते थे. यह बिलकुल सच्ची घटना है कि उस ज़माने के बंगाल में फ़िरक़ापरस्ती या धार्मिक भेद-भाव का कहीं निशान भी ढूंढ़े से नहीं मिलता. लोग सिर्फ़ अपने निजी हानि लाभ को ही देखते थे और उसी के मुताबिक़ चलते थे.

इतिहास से साफ़ पता चलता है कि 13 वीं सदी ईस्वी से लेकर प्लासी की लड़ाई तक मुसलिम शासन काल में बंगाल के हिन्दुओं को कभी भी यह महसूस करने का मौक़ा नहीं मिला कि उनके ऊपर किसी विदेशी की हकूमत थी. यह भी एक ख़ास बात है कि सिर्फ़ एक बीरभूम के राजा को छोड़कर बंगाल के और सब बड़े बड़े ज़मींदार हिन्दू थे. बंगला ग्रन्थ के "नवाबी अमल" का लेखक काली प्रसन्न बैनर्जी लिखता है कि कुल ज़मींदारियों का सिर्फ़ 16 वां हिस्सा मुसलमानों के हाथों में था.

भारत के इतिहास को सरसरी निगाह से देखने वाला आदमी यह समझता होगा कि सिर्फ़ शहन्शाह अकबर ने

نائب صوبے کا سب سے بڑا سیناپتی تھا ۔ راجہ جانکی رام علی وردی خاں کا سب سے اعتباری منتری تھا ۔ اس کے دونوں لڑکے راجہ درلبھ رام اور راجہ رام نراین اُتنے ہی اونچے اونچے پدوں پر مقرر تھے ۔ مال کے محکموں میں چمن رائے، ویرودت، کیرتی چند، امرت رائے، چنتا منی داس اور گوکل چند سروچ پدوں پر تھے ۔ کچھ دنوں بعد ڈھاکہ کا راجہ راج ولبھ بہت چھوٹی سی حیثیت سے ترقی کرتے کرتے نایب صوبےدار کے عہدے پر پہونچ گیا ۔ دوسرے حکمرانوں کے ساتھ پتر ویوہار یا بات چیت کرنے کے لئے راجارام کو پورے اختیار ملے ہوئے تھے ۔ دیوان مانک چند اور امیدرام دونوں دربار کے استمبھ تھے ۔ کیول مال اور خزانے کے محکموں میں ہی نہیں، بلکہ سیناپتیوں کی حیثیت سے بھی ہندوؤں کا بڑا مان تھا ۔ درلبھ رام، مانک چند، موہن لال اور شیام سندر نے لڑائی کے میدانوں میں بڑی بڑی ویرتا دکھائی ۔ میلکم نے اپنی پستک "کلایو" (جلد 1 صفحہ 254) میں لکھا ہے کہ جس سمے میر جعفر اپنی بہت بڑی سینا سہت سراج الدولہ کو چھوڑ کر ہٹ جانے کے لئے راضی ہو گیا، اُس ویدا کے سمے ایک بنگالی ہندو موہن لال اور ایک بنگالی مسلمان میر مدن نے آخیر دم تک سراج الدولہ کا ساتھ نہ چھوڑا ۔ دونوں اپنی اپنی سیناؤں سہت ویرتا کے ساتھ انت تک لڑتے رہے، اگرچہ ان سب سے بھی سراج الدولہ کی قسمت نہ پلٹ سکی ۔

سچ یہ ہے کہ نواب علی وردی خاں کو جتنی مصیبتیں برداشت کرنی پڑیں وہ سب اپنے مسلمان امیروں کے وشواس گھات اور اُن کی دغا کے سبب جھیلنی پڑیں ۔ یہ مسلمان سردار مراٹھوں کے ساتھ مل کر علی وردی خاں کو دھوکا دینے میں ذرا بھی سنکوچ نہ کرتے تھے ۔ یہ بالکل سچی گھٹنا ہے کہ اُس زمانے کے بنگال میں فرقہ پرستی یا دھارمک بھید بھاؤ کا، کہیں نشان بھی ڈھونڈھے سے نہیں ملتا ۔ لوگ صرف اپنے نجی ہانی لابھ کو ہی دیکھتے تھے اور اُسی کے مطابق چلتے تھے ۔

اتہاس سے صاف پتہ چلتا ہے کہ 13ویں صدی عیسوی سے لے کر پلاسی کی لڑائی تک مسلم شاسن کال میں بنگال کے ہندوؤں کو کبھی بھی یہ محسوس کرنے کا موقع نہیں ملا کہ اُن کے اوپر کسی ودیشی کی حکومت تھی ۔ یہ بھی ایک خاص بات ہے کہ صرف ایک ویربھوم کے راجہ کو چھوڑ کر بنگال کے اور سب بڑے بڑے زمیندار ہندو تھے ۔ بنگلا گرنتھ کے "نوابی عمل" کا لیکھک کالی پرسن بینرجی لکھتا ہے کہ کل زمینداروں کا صرف 16واں حصہ مسلمانوں کے ہاتھوں میں تھا ۔

بھارت کے اتہاس کو سرسری نگاہ سے دیکھنے والا آدمی یہ سمجھتا ہوگا کہ صرف شہنشاہ اکبر نے

लिये मुसलमान बादशाह इन सबके खिलाफ़ हिन्दुओं से काम लेते थे. ये भाव दिल्ली के बड़े से बड़े शक्तिशाली सम्राटों से लेकर छोटे से छोटे मुसलमान सरदारों तक सब में मौजूद था. इसी के साथ साथ हिन्दुओं का धन और उनकी क़ाबलियत भी अपना असर डालती थी. बहुत दर्जे तक इन्हीं कारनों से हिन्दुस्तान में मुसलिम हुकूमत आसानी से क़ायम हो सकी और इतने दिनों तक चलती रही. राज के बदल जाने से सिवाय हिन्दू महाराजाओं और उनके खास खास आदमियों के और किसी पर कोई खास असर न पड़ता था. छोटे छोटे राजे और सरदार हिन्दू महाराजा की जगह मुसलमान बादशाह को अपना अधिराज मानने लगे थे और खिराज देने लगे थे. अपनी छोटी छोटी रियासतों के अन्दर उनकी हैसियत और उनके सब अधिकार क़रीब क़रीब ज्यों के त्यों बने रहते थे.

"हिन्दू वज़ीरों और अफ़सरों को अपने हिन्दू अधिराज की सेवा में रहने से शायद उतना फ़ायदा न था, जितना किसी निकम्मे और विलासी मुग़ल अधिराज की सेवा में रहने से. धार्मिक मामलों में सबको पूरी आज़ादी थी. हिन्दुओं के प्राचीन रिवाजों में, जिनकी वे बड़ी क़द्र करते थे, बहुत कम दख़ल दिया जाता था, बल्कि बिलकुल दख़ल नहीं दिया जाता था. दूसरी बातों में ये लोग आपस में इतने बटे हुए थे, इनकी इतनी अलग अलग जातें और बिरादरियां थीं कि ये अपने विजेताओं को बाहर निकालने के लिए मिलकर कोशिश न करते थे और मुसलमान विजेताओं ने कई वजहों और तरह तरह के मतलब से सिवाय नाम मात्र के अधिराज होने के हुकूमत के क़रीब क़रीब सब अधिकार उन्हीं के हाथों में रहने दिये."

मुरशिद क़ुली खां ने, जिस ज़माने में वह बंगाल के अन्दर औरंगज़ेब का वायसराय था, अपने माल के सब अफ़सर और वज़ीर विश्वस्त हिन्दू ही मुक़र्रर किये. वह सब बातों में अपने इन हिन्दू सलाहकारों की राय से ही काम करता था. इनमें खास दर्पनारायण, भूपतिराय, किशोरराय, जसवन्तराय और रघुनन्दन थे. ब्रोकले बर्ट ने लिखा है कि मुर्शिद क़ुली खां का वज़ीर जसवन्तराय बहुत बुद्धिमान शासक था और माल और खज़ाने के मोहकमों का बहुत ज़बर्दस्त जानकार था, देश की तिजारत को बढ़ाने की उसने अपनी शक्ति भर कोशिश की. मुर्शिद क़ुली खां ने ऊंचे से ऊंचे फ़ौजी ओहदे भी हिन्दुओं ही को दे रखे थे. लाहौरीमल और दलीपसिंह उसके मशहूर ज़बर्दस्त सेनापति थे. ज़मींदारों में से रामजीवन, दयाराम और रघुराम समय समय पर बहुत ज़िम्मेवारी के सैनिक ओहदों पर रह चुके थे.

नवाब अलीवर्दी खां के शुरू के ज़माने में एक हिन्दू

لئے مسلمان بادشاہ اِن سب کے خلاف ھندوؤں سے کام لیتے تھے ، یہ بھاؤ دلی کے بڑے سے بڑے شکتی‌شالی سمراٹوں سے لیکر چھوٹے سے چھوٹے مسلمان سرداروں تک سب میں موجود تھا ۔ اِسی کے ساتھ ساتھ ھندوؤں کا دھن اور اُن کی قابلیت بھی اپنا اثر ڈالتی تھی ۔ بہت درجہ تک اِنھیں کارنوں سے ھندستان میں مسلم حکومت آسانی سے قایم ھوسکی اور اتنے دنوں تک چلتی رھی ۔ راج کے بدل جانے سے سوائے ھندو مہاراجاؤں اور اُن کے خاص خاص آدمیوں کے اور کسی پر کوئی خاص اثر نہ پڑتا تھا ۔ چھوٹے چھوٹے راجے اور سردار ھندو مہاراجہ کی جگہ مسلمان بادشاہ کو اپنا ادھیراج ماننے لگے تھے اور خراج دینے لگے تھے ۔ اپنی چھوٹی چھوٹی ریاستوں کے اندر اُن کی حیثیت اور اُن کے سب ادھیکار قریب قریب جیوں کے تیوں بنے رھتے تھے ۔

"ھندو وزیروں اور افسروں کو اپنے ھندو ادھیراج کی سیوا میں رھنے سے شاید اُتنا فایدہ نہ تھا' جتنا کسی نکمے اور ولاسی مغل ادھیراج کی سیوا میں رھنے سے ۔ دھارمک معاملوں میں سب کو پوری آزادی تھی ۔ ھندوؤں کے پراچین رواجوں میں' جن کی وے بڑی قدر کرتے تھے' بہت کم دخل دیا جاتا تھا' بلکہ بالکل دخل نہیں دیا جاتا تھا ۔ دوسری باتوں میں یہ لوگ آپس میں اِتنے بٹے ھوئے تھے' اِن کی اِتنی الگ الگ ذاتیں اور برادریاں تھیں کہ یہ اپنے وجیتاؤں کو باھر نکالنے کے لئے ملکر کوشش نہ کرتے تھے اور مسلمان وجیتاؤں نے کئی وجہوں اور طرح طرح کے مطلب سے سوائے نام ماتر کے ادھیراج ھونے کے حکومت کے قریب قریب سب ادھیکار اُنھیں کے ھاتھوں میں رھنے دئے ۔"

مرشد قلی خاں نے' جس زمانہ میں وہ بنگال کے اندر اورنگزیب کا وایسرائے تھا' اپنے مال کے سب افسر اور وزیر وشوست ھندو ھی مقرر کئے ۔ وہ سب باتوں میں اپنے اِن ھندو صلاحکاروں کی رائے سے ھی کام کرتا تھا ۔ اِن میں خاص درپنارائن' بھوپتی رائے' کشور رائے' جسونت رائے اور رگھونندن تھے ۔ بروکلے برٹ نے لکھا ھے کہ مرشد قلی خاں کا وزیر جسونت رائے بہت بدھمان شاسک تھا اور مال اور خزانے کے محکموں کا بہت زبردست جانکار تھا' دیش کی تجارت کو بڑھانے کی اُس نے اپنی شکتی بھر کوشش کی ۔ مرشد قلی خاں نے اونچے سے اونچے فوجی عہدے بھی ھندوؤں ھی کو دے رکھے تھے ۔ لاھوری مل اور دلیپ سنگھ اُس کے مشہور زبردست سیناپتی تھے ۔ زمینداروں میں سے رام جیون' دیا رام اور رگھو رام سمے سمے پر بہت ذمہ واری کے سینک عہدوں پر رہ چکے تھے ۔

نواب علی وردی خاں کے شروع کے زمانے میں ایک ھندو

बड़े संरक्षक थे. विद्यापति ने अपने अमर काव्य में इनमें से एक का यश-गान किया है. बंगाल में उन दिनों जमीन्दारों की क़रीब क़रीब वही हालत थी जो मंझले ज़माने के यूरोप में वहां के फ़्यूडल सामन्तों की. मुसलमान बादशाहों ने बंगाल के मशहूर "बारह भुइयों" से नियत सालाना ख़िराज लेकर उन्हें बिलकुल आज़ाद छोड़ रखा था और जब कभी मुग़ल या पठान हुकूमत में कोई कमज़ोरी आती थी, तो यह ख़िराज भी बन्द हो जाता था. देश के भीतरी शासन में इन 12 बंगाली सामन्तों के साथ किसी तरह का दख़ल नहीं किया जाता था.

लोगों में जो आपसी झगड़े या मुक़दमे होते थे, वे ज़्यादातर दोनों फ़रीक़ के चुने हुए पंचों के ज़रिये तै कर दिये जाते थे. बहुत छोटे छोटे मुक़दमे गांव की पंचायत के सामने पेश हो जाते थे और पंचायत का फ़ैसला आख़िरी होता था.

इन 12 सामन्तों में से ज़्यादातर हिन्दू थे. मेजर जनरल सर जान मैलकम ने अपनी पुस्तक "दी लाइफ़ आफ़ रॉबर्ट क्लाइव" (1836, जिल्द 1) में लिखा है—

"जब इन हिन्दू राजाओं के अधिकार मुसलमान बादशाहों के हाथों में आगए, तो दीवानी और माल के मोहकमों का पूरा इन्तज़ाम और देश के भीतरी शासन की वे सब बारीकियां और छोटे मोटे इन्तज़ाम, जिन पर हुकूमत की मशीन का ठीक ठीक चलना हमेशा मुनहसिर होता है, क़रीब क़रीब सब उन्हीं लोगों के हाथों में रहे, जिनके हाथों में मुसलमानों के आने के पहले रह चुके थे. ख़ज़ाने का सबसे बड़ा हाकिम कोई न कोई हिन्दू होता था, जो कभी वज़ीर कहलाता था और कभी नायब. इस वज़ीर या नायब का ही देश के अमीर से अमीर साहूकारों और धनवान हिन्दुओं से सम्बन्ध होता था.

"एक बहुत होशियार और हाज़िरजवाब मुसलमान बादशाह से पूछा गया कि आप अपने हम-मज़हब मुसलमानों के मुक़ाबले में हिन्दू अफ़सरों और मैनेजरों को क्यों इतना ज़्यादा पसन्द करते हैं ? उसने जवाब दिया—'मुसलमान छलनी की तरह होता है, उसमें जो चीज़ डाली जाय, ज़्यादातर फ़ौरन बाहर निकल जाती है. हिन्दू स्पंज की तरह होता है, उसमें जो डाला जाय सब समा जाता है और ज़रूरत के वक़्त दबाने से फिर निकल आता है.

"और भी बातें थीं, जिनके सबब से मुसलमान बादशाह और नवाब अपने दरबार में और अपनी फ़ौजों में दोनों जगह हिन्दुओं को मुक़र्रर करते थे और उन्हें बढ़ाते थे. इन बादशाहों और नवाबों के अपने रिश्तेदार ख़ुदपरस्त होते थे और बग़ावत करते रहते थे. यही हाल मुसलमान सरदारों और उनके अनुयायियों का था. इन सबको दबाये रखने के

بڑے سنرکشک تھے۔ ودیاپتی نے اپنے امر کاویہ میں ان میں سے ایک کا یش گان کیا ہے۔ بنگال میں اُن دنوں زمینداروں کی قریب قریب وہی حالت تھی جو منجھلے زمانے کے یورپ میں وہاں کے فیوڈل سامنتوں کی۔ مسلمان بادشاہوں نے بنگال کے مشہور "بارہ بھوئیوں" سے نیت سالانہ خراج لیکر انہیں بالکل آزاد چھوڑ رکھا تھا اور جب کبھی مغل یا پٹھان حکومت میں کوئی کمزوری آتی تھی، تو یہ خراج بھی بند ہو جاتا تھا۔ دیش کے بھیتری شاسن میں اِن 12 بنگالی سامنتوں کے ساتھ کسی طرح کا دخل نہیں کیا جاتا تھا۔

لوگوں میں جو آپسی جھگڑے یا مقدمے ہوتے تھے، وے زیادہ‌تر دونوں فریق کے چنے ہوئے پنچوں کے ذریعہ طے کردئے جاتے تھے۔ بہت چھوٹے چھوٹے مقدمے گاؤں کی پنچایت کے سامنے پیش ہو جاتے تھے اور پنچایت کا فیصلہ آخری ہوتا تھا۔

اِن 12 سامنتوں میں سے زیادہ‌تر ہندو تھے۔ میجر جنرل سر جان میلکم نے اپنی پستک "دی لائف آف رابرٹ کلایو" (1836، جلد 1) میں لکھا ہے—

"جب اِن ہندو راجاؤں کے ادھیکار مسلمان بادشاہوں کے ہاتھوں میں آگئے، تو دیوانی اور مال کے محکموں کا پورا انتظام اور دیش کے بھیتری شاسن کی وے سب باریکیاں اور چھوٹے موٹے انتظام، جن پر حکومت کی مشین کا ٹھیک ٹھیک چلنا ہمیشہ منحصر ہوتا ہے، قریب قریب سب انہیں لوگوں کے ہاتھوں میں رہے، جن کے ہاتھوں میں مسلمانوں کے آنے کے پہلے رہ چکے تھے۔ خزانہ کا سب سے بڑا حاکم کوئی نہ کوئی ہندو ہوتا تھا، جو کبھی وزیر کہلاتا تھا، اور کبھی نایب۔ اِس وزیر یا نایب کا ہی دیش کے امیر سے امیر ساہوکاروں اور دھنوان ہندوؤں سے سمبندھ ہوتا تھا۔

ایک بہت ہوشیار اور حاضر جواب مسلمان بادشاہ سے پوچھا گیا کہ آپ اپنے ہم مذہب مسلمانوں کے مقابلہ میں ہندو افسروں اور مینیجروں کو کیوں اِتنا زیادہ پسند کرتے ہیں؟ اُس نے جواب دیا—"مسلمان چھلنی کی طرح ہوتا ہے، اُس میں جو چیز ڈالی جائے، زیادہ‌تر فوراً باہر نکل آتی ہے۔ ہندو اِسپنج کی طرح ہوتا ہے، اُس میں جو ڈالا جائے سب سما جاتا ہے اور ضرورت کے وقت دبانے سے پھر نکل آتا ہے۔"

اور بھی باتیں تھیں، جن کے سبب سے مسلمان بادشاہ اور نواب اپنے دربار میں اور اپنی فوجوں میں دونوں جگہ ہندوؤں کو مقرر کرتے تھے اور انہیں بڑھاتے تھے۔ اُن بادشاہوں اور نوابوں کے اپنے رشتہ‌دار خودپرست ہوتے تھے اور بغاوت کرتے رہتے تھے۔ یہی حال مسلمان سرداروں اور اُن کے انویائیوں کا تھا۔ اِن سب کو دبائے رکھنے کے

कभी दिलेर खां को इन राजपूतों के पीछे पीछे रवाना किया. लेकिन जितनी बेएतबारी उसे इन हिन्दू सरदारों की थी, उससे ज्यादा बेएतबारी शहज़ादे मोअज्ज़म, अकबर और अपने दूसरे बेटों की थी. वह हमेशा इस बात से डरता रहता था कि उसके बेटे कहीं उसी की नक़ल न कर बैठें. औरंगज़ेब के मरने के बाद मोग़ल बादशाहत तेज़ी के साथ टुकड़े टुकड़े होने लगी और उसी तेज़ी के साथ स्वाधीन राजाओं की हैसियत या मुसलमान हुक्मरानों के मातहत सेनापतियों की हैसियत से, देश के शासन में हिन्दुओं का बल बढ़ता चला गया.

हिन्दुओं की उदारता की एक मिसाल हम पारसियों की दे सकते हैं. ये लोग उन पुराने ईरानियों की औलाद हैं, जो आठवीं सदी ईस्वी में, जब अरबों ने ईरान को जीत लिया तो हिन्दुस्तान में जाकर बस गए. ये लोग सबसे पहले गुजरात के समुद्र तट पर संजन नामक जगह पर आकर ठहरे थे. वहां के हिन्दू राजाओं ने इनका बड़े मान और इज्ज़त के साथ स्वागत किया.

हिन्दुओं की बहादुराना उदारता की बहुत सी मिसालें दी जा सकती हैं. उनमें से एक यह है—औरङ्गज़ेब के लड़के मुहम्मद अकबर ने अपने बाप के ख़िलाफ़ बग़ावत करके राजपूतों की मदद से तख्त पर क़ब्ज़ा करना चाहा. उसकी कोशिश नाकाम रही, लेकिन राजपूत सरदार दुर्गादास अपने को तरह तरह के ख़तरों में डालकर भी उस अभागे शहज़ादे को बड़ी बहादुरी के साथ राजा शम्भू जी मरहठे के दरबार तक अपने साथ ले गया. औरंगज़ेब अपने पोते और अपनी पोती दोनों को अपने पास बुला लेना चाहता था, उसे दुर्गादास से समझौता करना पड़ा. जदुनाथ सरकार ने अपनी पुस्तक 'औरंगज़ेब' (जिल्द 5, सफ़ा 281-2) में इस घटना को इन साफ़ साफ़ शब्दों में बयान किया है—

"मोहम्मद अकबर का दुधमुहां बेटा बुलन्द अख्तर और उसकी बेटी सफ़ीयतुन्निसा दोनों मारवाड़ में अकबर के राठौर दोस्तों के पास रह गए थे. ये दोनो बच्चे इतने कम उमर थे कि भाग दौड़ की तकलीफ़ों को बर्दाश्त न कर सकते थे, इसलिये दुर्गादास ने सन 1681 में उन्हें एक ऐसी बेनाम जगह में, जहां किसी का भी पहुंचना मुश्किल था, गिरधर जोशी नामक एक ब्राह्मन के सुपुर्द कर दिया. सन 1681 से सन 1696 तक ये दोनों बालक वहीं रहते रहे और न सिर्फ़ उनकी तन्दुरुस्ती और उनके सदाचार का ही पूरा पूरा ख्याल रखा गया, बल्कि इसलाम मज़हब की भी उन्हें पूरी पूरी तालीम दी जाती रही."

अपने घर के नज़दीक बंगाल में हम देखते हैं कि यहां भी उस ज़माने में फ़िरक़ापरस्ती देखने को नहीं मिलती. बंगाल के ख़ुदमुख्तार पठान सुलतान बंगाला शाहा के बहुत

کبھی دلیر خاں کو اِن راجپوتوں کے پیچھے پیچھے روانہ کیا ۔ لیکن جتنی بےاعتباری اُسے اِن ہندو سرداروں کی تھی' اُس سے زیادہ بےاعتباری شہزادے معظم' اکبر اور اپنے دوسرے بیٹوں کی تھی ۔ وہ ہمیشہ اس بات سے ڈرتا رہتا تھا کہ اُس کے بیٹے کہیں اُسی کی نقل نہ کر بیٹھیں ۔ اورنگزیب کے مرنے کے بعد مغل بادشاہت تیزی کے ساتھ ٹکڑے ٹکڑے ہونے لگی اور اُسی تیزی کے ساتھ سوادھین راجاؤں کی حیثیت یا مسلمان حکمرانوں کے ماتحت سیناپتیوں کی حیثیت سے' دیش کے شاسن میں ہندوؤں کا بل بڑھتا چلا گیا ۔

ہندوؤں کی اُدارتا کی ایک مثال ہم پارسیوں کی دے سکتے ہیں ۔ یہ لوگ اُن پرانے ایرانیوں کی اولاد ہیں' جو آٹھویں صدی عیسوی میں' جب عربوں نے ایران کو جیت لیا تو ہندوستان میں جاکر بس گئے ۔ یہ لوگ سب سے پہلے گجرات کے سمدرتٹ پر سنجن نامک جگہ پر آکر ٹھہرے تھے ۔ وہاں کے ہندو راجاؤں نے ان کا بڑے مان اور عزت کے ساتھ سواگت کیا ۔

ہندوؤں کی بہادرانہ اُدارتا کی بہت سی مثالیں دی جاسکتی ہیں ۔ اُن میں سے ایک یہ ہے—اورنگزیب کے لڑکے محمد اکبر نے اپنے باپ کے خلاف بغاوت کرکے راجپوتوں کی مدد سے تخت پر قبضہ کرنا چاہا ۔ اُس کی کوشش ناکام رہی' لیکن راجپوت سردار درگا داس اپنے کو طرح طرح کے خطروں میں ڈالکر بھی اس ابھاگے شہزادے کو بڑی بہادری کے ساتھ راجہ شمبھو جی مرہٹے کے دربار تک اپنے ساتھ لے گیا ۔ اورنگزیب اپنے پوتے اور اپنی پوتی دونوں کو اپنے پاس بلا لینا چاہتا تھا' اُسے درگا داس سے سمجھوتہ کرنا پڑا ۔ جدوناتھ سرکار نے اپنی پستک "اورنگزیب" (جلد 5' صفحہ 281-2) میں اِس گھٹنا کو اِن صاف صاف شبدوں میں بیان کیا ہے—

"محمد اکبر کا دودھ مونہا بیٹا بلند اختر اور اُس کی بیٹی صفیۃ النساء دونوں مارواڑ میں اکبر کے راٹھور دوستوں کے پاس رہ گئے تھے ۔ یہ دونوں بچے اتنے کم عمر تھے کہ بھاگ دوڑ کی تکلیفوں کو برداشت نہ کرسکتے تھے' اِس لئے درگا داس نے سن 1681 میں اُنہیں ایک ایسی بےنام جگہ میں' جہاں کسی کا بھی پہونچنا مشکل تھا' گردھر جوشی نامک ایک براہمن کے سپرد کردیا ۔ سن 1681 سے سن 1696 تک یہ دونوں بالک وہیں رہتے رہے اور نہ صرف اُن کی تندرستی اور اُن کے سداچار کا ہی پورا پورا خیال رکھا گیا' بلکہ اِسلام مذہب کی بھی اُنہیں پوری پوری تعلیم دی جاتی رہی ۔"

اپنے گھر کے نزدیک بنگال میں ہم دیکھتے ہیں کہ یہاں بھی اُس زمانے میں فرقہ پرستی دیکھنے کو نہیں ملتی ۔ بنگال کے خود مختار پٹھان سلطان بنگلا شاہا کے بہت

उसके जुल्मों के होते हुए भी हेमू ने सल्तनत को टुकड़े टुकड़े होने से रोके रखा."

सम्राट औरंगजेब 1659 ई० से 1707 ई० तक दिल्ली के तख्त पर रहा. औरंगजेब के जमाने में भी साम्राज्य के अन्दर बड़ी बड़ी जिम्मेवारी के ओहदे हिन्दुओं को मिले हुए थे. बङ्गाल में मुर्शिद कुली खां औरंगजेब का वायसराय था. मुर्शिद कुली खां के मातहत दीवानी के मोहकमे के तमाम बड़े बड़े ओहदे सिर्फ हिन्दुओं ही के हाथों में थे. हिन्दुओं का उन पर एकाधिपत्य था. बड़े बड़े फ़ौजी ओहदे भी हिन्दुओं को मिले हुए थे. अगर मुग़ल सम्राट की प्रकृति के अन्दर हिन्दुओं से नफ़रत होती, तो वह अपने वायसराय को इससे रोक देता, बल्कि ऐसा करने के लिये उसे डांटता. दिल्ली दरबार के अन्दर भी माल के मोहकमे का असली कर्ता धर्ता और सब से बड़ा अफ़सर हिन्दू था.

जदुनाथ सरकार ने अपनी किताब "औरंगजेब" (जिल्द 3 पृष्ठ 72) में लिखा है—

"इस पर भी जब जाफ़र खां वजीर आजम बनाया गया, और जब तक तख्त के लिये लड़ाइयां होती रहीं वही वजीर आजम रहा, उस तमाम समय में माल के मोहकमे की असली हुकूमत और सारा इन्तजाम बूढ़े और तजुरबेकार नायब दीवान रघुनाथ खत्री के हाथों में रहा. दीवान रघुनाथ 'राम-ए-रायां' कहलाता था. तख्त पर बैठने के बाद औरंगजेब ने दीवानी के इस आरजी इन्तजाम को जारी रखा और 15 जून सन 1658 को दीवान रघुनाथ को राजा का ख़िताब देकर दरबार के अमीरों में शामिल कर लिया. राजा रघुनाथ निहायत ईमानदार, मेहनती, अपने कारोबार में होशियार और राज के कारोबार के लिये असाधारन योग्यता रखने वाला आदमी था."

आम तौर पर यह कहा जाता है कि औरंगजेब ने अपने तास्सुब और अपनी अनुदारता से अपनी हिन्दू रिआया को नाराज कर लिया. लेकिन एलफिंस्टन ने अपनी "हिस्ट्री आफ़ इण्डिया" में लिखा है कि औरंगजेब की हुकूमत में भी—

"यह पता नहीं चलता कि किसी एक हिन्दू को भी अपने मजहब की वजह से मौत की सजा या क़ैद की सजा या माली सजा बर्दाश्त करनी पड़ी हो, या किसी एक शख्स से भी कभी अपने पुरखों के मजहब पर खुले अमल करने के लिए जवाब तलब किया गया हो."

औरंगजेब को जब शिवाजी के खिलाफ़ फ़ौज भेजनी पड़ी तो उसने राजपूत सरदार जसवन्त सिंह और उसके बाद जय सिंह को इस काम के लिए भेजा. यह भी सच है कि औरंगजेब अविश्वासी स्वभाव का था और उसने कभी

اُس کے ظلموں کے ہوتے ہوئے بھی ہیموں نے سلطنت کو ٹکڑے ٹکڑے ہونے سے روکے رکھا ."

سمراٹ اورنگزیب 1659 عیسوی سے 1707 عیسوی تک دلی کے تخت پر رہا . اورنگزیب کے زمانے میں بھی سامراجیہ کے اندر بڑی بڑی ذمہ واری کے عہدے ہندوؤں کو ملے ہوئے تھے . بنگال میں مرشد قلی خاں اورنگزیب کا وائسرائے تھا . مرشد قلی خاں کے ماتحت دیوانی کے محکمے کے تمام بڑے بڑے عہدے صرف ہندوؤں ہی کے ہاتھوں میں تھے. ہندوؤں کا اُن پر ایکادھپتیہ تھا . بڑے بڑے فوجی عہدے بھی ہندوؤں کو ملے ہوئے تھے . اگر مغل سمراٹ کی پرکرتی کے اندر ہندوؤں سے نفرت ہوتی' تو وہ اپنے وائسرائے کو اِس سے روک دیتا' بلکہ ایسا کرنے کے لئے اُسے ڈانٹتا . دلی دربار کے اندر بھی مال کے محکمے کا اصلی کرتا دھرتا اور سب سے بڑا افسر ہندو تھا .

جدو ناتھ سرکار نے اپنی کتاب "اورنگزیب" (جلد 3 پرشٹھ 72) میں لکھا ہے—

"اِس پر بھی جب جعفر خاں وزیرآعظم بنایا گیا' اور جب تک تخت کے لئے لڑائیاں ہوتی رہیں وہی وزیرآعظم رہا' اُس تمام سمے میں مال کے محکمہ کی اصلی حکومت اور سارا انتظام بوڑھے اور تجربہ‌کار نایب دیوان رگھوناتھ کھتری کے ہاتھوں میں رہا . دیوان رگھوناتھ 'رام - اے - رایاں' کہلاتا تھا . تخت پر بیٹھنے کے بعد اورنگزیب نے دیوانی کے اِس عارضی انتظام کو جاری رکھا اور 15 جون سن 1658 کو دیوان رگھوناتھ کو راجا کا خطاب دیکر دربار کے امیروں میں شامل کرلیا . راجا رگھوناتھ نہایت ایماندار' محنتی' اپنے کاروبار میں ہوشیار اور راج کے کاروبار کے لئے اسادھارن یوگتا رکھنے والا آدمی تھا ."

عام طور پر یہ کہا جاتا ہے کہ اورنگزیب نے اپنے تعصب اور اپنی انوداریا سے اپنی ہندو رعایا کو ناراض کرلیا . لیکن الفنسٹن نے اپنی "ہسٹری آف اِنڈیا" میں لکھا ہے کہ اورنگزیب کی حکومت میں بھی—

"یہ پتہ نہیں چلتا کہ کسی ایک ہندو کو بھی اپنے مذہب کی وجہ سے موت کی سزا یا قید کی سزا یا مالی سزا برداشت کرنی پڑی ہو' یا کسی ایک شخص سے بھی کبھی اپنے پرکھوں کے مذہب پر کھلے عمل کرنے کے لئے جواب طلب کیا گیا ہو ."

"اورنگزیب کو جب شواجی کے خلاف فوج بھیجنی پڑی تو اُس نے راجپوت سردار جسونت سنگھ اور اُس کے بعد جے سنگھ کو اِس کام کے لئے بھیجا . یہ بھی سچ ہے کہ اورنگزیب اوشواسی سبھاؤ کا تھا اور اُس نے کبھی

अजीब मालूम होगी, लेकिन बात यही है कि साम्प्रदायिकता अभी हाल की पैदावार है और राजनैतिक गरज को पूरा करने के लिये उसे बढ़ाया गया.

एलफिंसटन ने अपनी 'हिस्ट्री आफ़ इन्डिया' में लिखा है—

"हिन्दुओं को कुछ नाचीज़ समझा जाता था, लेकिन उन्हें दुश्मन नहीं समझा जाता था. उन्हें जज़िया देना होता था और उनसे कुछ और भेद भाव भी था, लेकिन उनके अपने धर्म के पालन करने में किसी तरह की रुकावट नहीं थी, न उन्हें इसके लिये कोई तकलीफ़ दी जाती थी. बहुत से हिन्दुओं का ज़िक्र फ़ौजी सेनापतियों की हैसियत से आता है. ये लोग शायद ज़मींदार होते थे, जो अपने अपने यहां की फ़ौजों के नायक बनकर आते थे, मुमकिन है कि वे बादशाह के मुक़र्रर किये हुए अफ़सर न रहे हों; लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि दीवानी के मोहकमों में और ख़ासकर माल और ख़ज़ाने के मोहकमों में बहुत से हिन्दू बड़े बड़े ओहदों पर मुक़र्रर थे...मुबारक ख़िलजी ने सन 1317 से सन 1321 तक हुकूमत की. उसके ज़माने में दरबार और हुकूमत का सारा रंग ढंग ही हिन्दू था.

"शेरशाह की फ़ौज में हिन्दुओं को बड़े बड़े ओहदे दिये जाते थे. शेरशाह की यह नीति उसके शुरू के दिनों से ही चली आती थी. उसके अच्छे से अच्छे सेनापतियों में से एक ब्रह्मजीत गौड़ था. चौंसा और बिलग्राम की लड़ाई के बाद ब्रह्मजीत गौड़ को हुमायूं का पीछा करने के लिये भेजा गया था. इतिहास से पता चलता है कि इससे बहुत पहले हिन्दू महमूद ग़ज़नी के ज़माने में भी मुसलमान सेना के अफ़सर मुक़र्रर किये जाते थे.

"शेरशाह पहला आदमी था, जिसने एक ऐसा भारतीय साम्राज्य क़ायम करने की कोशिश की जो सारी भारतीय जनता की हमदर्दी के सहारे क़ायम था." इतिहास लेखक कीन लिखता है कि "इस पठान की हुकूमत से जितनी बुद्धिमत्ता प्रकट होती है, उतनी किसी भी दूसरी हुकूमत में ज़ाहिर नहीं होती. अंग्रेज़ी हुकूमत में भी उतनी बुद्धिमत्ता दिखाई नहीं देती."

"मोहम्मद आदिलशाह ने (1553 ई०) अपनी हुकूमत का सारा कारोबार हेमू नाम के एक हिन्दू को सौंप रखा था. हेमू किसी समय एक छोटा सा दुकानदार रह चुका था और कहा जाता है कि देखने में वह और भी ज़्यादा छोटा और मामूली सा मालूम होता था. लेकिन इन सब बाहरी कमियों के होते हुए भी हेमू में वह योग्यता थी और उसके दिमाग़ में इतनी ताक़त थी कि दरबार के अभिमानी और युद्ध प्रेमी सरदारों और अमीरों के बीच में वह अपने बड़प्पन को क़ायम रख सकता था, और बादशाह की बेवक़ूफ़ियों और

عجیب معلوم ہوگی، لیکن بات یہی ہے کہ سامپردایکتا ابھی حال کی پیداوار ہے اور راجنیتک غرض کو پورا کرنے کے لئے اسے بڑھایا گیا.

الفنسٹن نے اپنی 'ہسٹری آف انڈیا' میں لکھا ہے—

"ہندوؤں کو کچھ ناچیز سمجھا جاتا تھا، لیکن انہیں دشمن نہیں سمجھا جاتا تھا. انہیں جزیہ دینا ہوتا تھا اور ان سے کچھ اور بھید بھاؤ بھی تھا، لیکن ان کے اپنے دھرم کے پالن کرنے میں کسی طرح کی رکاوٹ نہیں تھی، نہ انہیں اس کے لئے کوئی تکلیف دی جاتی تھی. بہت سے ہندوؤں کا ذکر فوجی سیناپتیوں کی حیثیت سے آتا ہے. یہ لوگ شاید زمیندار ہوتے تھے، جو اپنے اپنے یہاں کی فوجوں کے نایک بنکر آتے تھے، ممکن ہے کہ وے بادشاہ کے مقرر کئے ہوئے افسر نہ رہے ہوں، لیکن اس میں کوئی شک نہیں کہ دیوانی کے محکموں میں اور خاصکر مال اور خزانے کے محکموں میں بہت سے ہندو بڑے بڑے عہدوں پر مقرر تھے... . مبارک خلجی نے سن 1317 سے سن 1321 تک حکومت کی. اس کے زمانے میں دربار اور حکومت کا سارا رنگ ڈھنگ ہی ہندو تھا.

"شیر شاہ کی فوج میں ہندوؤں کو بڑے بڑے عہدے دیئے جاتے تھے. شیر شاہ کی یہ نیتی اس کے شروع کے دنوں سے ہی چلی آتی تھی. اس کے اچھے سے اچھے سیناپتیوں میں سے ایک برہمجیت گوڑ تھا. چونسہ اور بلگرام کی لڑائی کے بعد برہمجیت گوڑ کو ہمایوں کا پیچھا کرنے کے لئے بھیجا گیا تھا. اتہاس سے پتہ چلتا ہے کہ اس سے بہت پہلے ہندو محمود غزنی کے زمانے میں بھی مسلمان سینا کے افسر مقرر کئے جاتے تھے.

"شیر شاہ پہلا آدمی تھا، جس نے ایک ایسا بھارتیہ سامراجیہ قایم کرنے کی کوشش کی جو ساری بھارتیہ جنتا کی ہمدردی کے سہارے قایم تھا." اتہاس لیکھک کین لکھتا ہے کہ "اس پٹھان کی حکومت سے جتنی بدھیمتا پرکٹ ہوتی ہے، اتنی کسی بھی دوسری حکومت میں ظاہر نہیں ہوتی. انگریزی حکومت میں بھی اتنی بدھیمتا دکھائی نہیں دیتی."

"محمد عادل شاہ نے (1553 عیسوی) اپنی حکومت کا سارا کاروبار ہیموں نام کے ایک ہندو کو سونپ رکھا تھا. ہیموں کسی سمے ایک چھوٹا سا دوکاندار رہ چکا تھا اور کہا جاتا ہے کہ دیکھنے میں وہ اور بھی زیادہ چھوٹا اور معمولی سا معلوم ہوتا تھا. لیکن ان سب باہری کمیوں کے ہوتے ہوئے بھی ہیموں میں وہ یوگیتا تھی اور اس کے دماغ میں اتنی طاقت تھی کہ دربار کے ابھیمانی اور یدھ پریمی سرداروں اور امیروں کے بیچ میں وہ اپنے بڑپن کو قایم رکھ سکتا تھا، اور بادشاہ کی بیوقوفیوں اور

बीसवीं सदी से पहले का भारत

स्वर्गीय आचार्य प्रफुल्लचन्द्र राय

एलफिन्स्टन अपनी पुस्तक में लिखता है—

"अलाउद्दीन खिलजी 1295 ई० से 1314 ई० तक दिल्ली का सुलतान था. वह कहा करता था कि मजहब का मुल्क की हुकूमत के साथ कोई ताल्लुक़ नहीं. मजहब सिर्फ़ आदमी की निजी जिन्दगी की चीज है, बल्कि सच पूछिये तो घर में बैठकर मनबहलाव की चीज है."

छै सौ बरस बाद बीसवीं सदी के शुरू में लेनिन कहा करता था—"मजहब लोगों की अफ़ीम है." कमालपाशा की राय थी कि—"जिस तरह ज्वालामुखी पहाड़ से निकला हुआ राख का ढेर खूब मोटा और कड़ा होकर नीचे की धधकती हुई आग को ढंक देता है, उसी तरह मजहब सारी क़ौम की धधकती हुई आत्मा को ढंके और दबाये रखता है."—("ग्रे वुल्फ़" आर्मस्ट्रांग सफ़ा 241.)

के० क़ानूनगो ने अपनी पुस्तक "शेरशाह" में लिखा है—"शेरशाह (1542-45) का मक़सद यह था कि सल्तनत का सारा कारोबार मजहब को बिलकुल अलग रखकर चलाया जावे, हुकूमत का मजहब से कोई सम्बन्ध न रहे, वह समझता था कि मजहब का लोगों के सामाजिक या सार्वजनिक जीवन से कोई ताल्लुक़ नहीं, मजहब हर आदमी की अपनी चीज है, जिसका ताल्लुक़ सिर्फ़ उसकी निजी जिन्दगी से है."

ग्रांट डफ़ ने अपनी "हिस्ट्री आफ़ दी मरहट्टाज" में लिखा है कि—"सन 1739 में जब नादिरशाह का हमला हुआ तो पेशवा बाजीराव ने अपने राज बढ़ाने आदि की सब तजवीजों को रोक दिया और कहा कि 'हमारे आपसी झगड़े अब सब बेमानी हैं, हिन्दुस्तान भर में सिर्फ़ एक ही दुश्मन है......हिन्दुओं और मुसलमानों सब को, दक्खिन की सब ताक़तों को, एक जगह मिल जाना चाहिये."

चौदहवीं सदी ईस्वी तक मुसलमानों की हुकूमत न सिर्फ़ उत्तर भारत में बल्कि दक्खिन में भी खासी अच्छी तरह जम गई थी. उस समय से लेकर बीसवीं सदी के शुरू तक 600 बरस के हिन्दुस्तान के इतिहास से यह जाहिर है कि उस तमाम समय में इस देश के अन्दर साम्प्रदायिकता या फ़िरक़ापरस्ती का कहीं शायद नाम भी न था, यह बात

بیسویں صدی سے پہلے کا بھارت

سورگیہ آچاریہ پرپھلہ چندر رائے

الفنسٹن اپنی پستک میں لکھتا ہے—

"علاؤالدین خلجی 1295 عیسوی سے 1314 عیسوی تک دلی کا سلطان تھا۔ وہ کہا کرتا تھا کہ مذہب کا ملک کی حکومت کے ساتھ کوئی تعلق نہیں۔ مذہب صرف آدمی کی نجی زندگی کی چیز ہے' بلکہ سچ پوچھئے تو گھر میں بیٹھکر من بہلاؤ کی چیز ہے۔"

چھ سو برس بعد بیسویں صدی کے شروع میں لینن کہا کرتا تھا—"مذہب لوگوں کی افیم ہے۔" کمال پاشا کی رائے تھی کہ —"جس طرح جوالامکھی پہاڑ سے نکلا ہوا راکھ کا ڈھیر خوب موٹا اور کڑا ہوکر نیچے کی دھدھکتی ہوئی آگ کو ڈھنک دیتا ہے' اسی طرح مذہب ساری قوم کی دھدھکتی ہوئی آتما کو ڈھنکے اور دبائے رکھتا ہے۔"—("گرے ولف" آرم اسٹرانگ صفحہ 241.)

کے۔ قانونگو نے اپنی پستک "شیر شاہ" میں لکھا ہے—"شیر شاہ (1542-45) کا مقصد یہ تھا کہ سلطنت کا سارا کاروبار مذہب کو بالکل الگ رکھکر چلایا جاوے' حکومت کا مذہب سے کوئی سمبندھ نہ رہے۔ وہ سمجھتا تھا کہ مذہب کا لوگوں کے سماجک یا ساروجنک جیون سے کوئی تعلق نہیں' مذہب ہر آدمی کی اپنی چیز ہے' جس کا تعلق صرف اس کی نجی زندگی سے ہے۔

گرانٹ ڈف نے اپنی "ہسٹری آف دی مرہٹاز" میں لکھا ہے کہ—"سن 1739 میں جب نادر شاہ کا حملہ ہوا تو پیشوا باجی راؤ نے اپنے راج بڑھانے آدی کی سب تجویزوں کو روک دیا اور کہا کہ 'ہمارے آپسی جھگڑے اب سب بے معنی ہیں' ہندستان بھر میں صرف ایک ہی دشمن ہے......ہندوؤں اور مسلمانوں سب کو دکھن کی سب طاقتوں کو' ایک جگہ مل جانا چاہئے۔"

چودھویں صدی عیسوی تک مسلمانوں کی حکومت نہ صرف اتر بھارت میں بلکہ دکھن میں بھی خاصی اچھی طرح جم گئی تھی۔ اس سمے سے لیکر بیسویں صدی کے شروع تک 600 برس کے ہندستان کے اتہاس سے یہ ظاہر ہے کہ اس تمام سمے میں اس دیش کے اندر سامپردائکتا یا فرقہ پرستی کا کہیں شاید نام بھی نہ تھا۔ یہ بات

अब रहा पूरे शरीर को दफ़न करने का रिवाज सो यह रिवाज भी वैदिक आर्यों में एक समय मौजूद था. शतपथ ब्राह्मन में क़ब्र के इस्तेमाल के बारे में लिखा है—"यह बिल्कुल ठीक आदमी जितनी लम्बी बनानी चाहिए, ताकि उसमें किसी दूसरे के लिये जगह न रहे, ऊपर मिट्टी से ढंक कर दोनों तरफ़ किनारा बना लेना चाहिए. फिर उसे पत्थरों से घेर देना चाहिए." (13. 8. 1, 2. 9, 12) इतिहास से पता चलता है कि और बहुत से देशों और दूसरी सभ्यताओं में भी पहले गाड़ने का रिवाज रहा है और फिर धीरे धीरे जलाने का रिवाज पड़ा है."

मोहन-जो-दड़ो और हड़प्पा की खुदाई की और चीज़ों का ज़िक्र भी वेदों में मिलता है; उदाहरन के लिये ऋग्वेद में 'अट्टालिका' यानी' ईंट की हवेली का ज़िक्र आता है. सिन्धु नदी की सभ्यता के दूसरे धार्मिक रिवाजों के बारे में ख़ुद सर जान मार्शल ने लिखा है—"इनमें से बहुत से मज़हबी एतक़ाद वैदिक काल के पिछले हिस्से में और वेदों के बाद के संस्कृत साहित्य में मिलते हैं. मोहन-जो-दड़ो और हड़प्पा में जितनी धार्मिक ढंग की चीज़ें मिली हैं, वह ख़ास तौर पर हिन्दुस्तानी मालूम होती हैं." आजकल आम लोग जिसे हिन्दू धर्म कहते हैं, उसकी क़रीब क़रीब सब बातें सिन्धु नदी की सभ्यता में मिलती हैं. 'स्वस्तिका' का चिन्ह दोनों जगह मिलता है. वैदिक देवताओं सूर्य, अग्नि, सोम और अदिति की पूजा से सम्बन्ध रखने वाली सब क्रियाएं और रूढ़ियां इस नई सभ्यता में मिली हैं.

मोहन-जो-दड़ो और हड़प्पा में मनुश्यों की जो खोपड़ियां मिली हैं, उन तक के बारे में विद्वानों और विशेशज्ञों का मत है कि ठीक उसी तरह की खोपड़ियां हम आजकल के हिन्दुस्तान के रहने वाले अपने कन्धों के ऊपर लिये फिरते हैं.

सारांश यह कि वैदिक काल की संस्कृति और सिन्धु नदी के किनारे के लोगों की संस्कृति और आजकल की हिन्दुस्तानी संस्कृति तीनों कोई अलग अलग एक दूसरे से बेसिलसिला चीज़ें नहीं हैं; बल्कि वह संस्कृति की एक ही धारा है, जो हज़ारों बरस पहले से लेकर आज तक बहती चली आ रही है और जिस में समय और परिस्थिति के फेर के मुताबिक़ संसार की और सब चीज़ों की तरह तब्दीलियां होती रही हैं और होती रहेंगी.

اب رہا پورے شریر کو دفن کرنے کا رواج سو یہ رواج بھی ویدک آریوں میں ایک سمے موجود تھا . شتپتھ براہمن میں قبر کے استعمال کے بارے میں لکھا ہے —" یہ بالکل ٹھیک آدمی جتنی لمبی بنانی چاہئے' تاکہ اس میں کسی دوسرے کے لئے جگہ نہ رہے' اوپر مٹی سے ڈھنک کر دونوں طرف کنارا بنا لینا چاہئے . پھر اسے پتھروں سے گھیر دینا چاہئے ." (13.8.1,?,9,12) اتہاس سے پتہ چلتا ہے کہ اور بہت سے دیشوں اور دوسری سبھیتاؤں میں بھی پہلے گاڑنے کا رواج رہا ہے اور پھر دھیرے دھیرے جلانے کا رواج پڑا ہے . "

موہن جو - ڑرو . اور ہڑپہ کی کھدائی اور چیزوں کا ذکر بھی ویدوں میں ملتا ہے . اداھرن کے لئے رگ وید میں ' اٹالکا ' یعنی اینٹ کی حویلی کا ذکر آتا ہے . سندھو ندی کی سبھیتا کے دوسرے دھارمک رواجوں کے بارے میں خود سرجان مارشل نے لکھا ہے —" ان میں سے بہت سے مذہبی اعتقاد ویدک کال کے پچھلے حصے میں اور ویدوں کے بعد کے سنسکرت ساہتیہ میں ملتے ہیں . موہن . جو - دڑو اور ہڑپہ میں جتنی دھارمک ڈھنگ کی چیزیں ملی ہیں' وہ خاص طور پر ہندستانی معلوم ہوتی ہیں ." آجکل عام لوگ جسے ہندو دھرم کہتے ہیں' اُس کی قریب قریب سب باتیں سندھو ندی کی سبھیتا میں ملتی ہیں . ' سوستیکا ' کا چنھ دونوں جگہ ملتا ہے . ویدک دیوتاؤں سوریہ' اگنی' سوم اور ادیتی کی پوجا سے سمبندھ رکھنے والی سب کریائیں اور روڑھیاں اس نئی سبھیتا میں ملی ہیں .

موہن - جو - دڑو اور ہڑپہ میں منشیوں کی جو کھوپڑیاں ملی ہیں' ان تک کے بارے میں ودوانوں اور وشیشگیوں کا مت ہے کہ ٹھیک اسی طرح کی کھوپڑیاں ہم آج کل کے ہندستان کے رہنے والے اپنے کندھوں کے اوپر لئے پھرتے ہیں .

سارانش یہ کہ ویدک کال کی سنسکرتی اور سندھو ندی کے کنارے کے لوگوں کی سنسکرتی اور آجکل کی ہندستانی سنسکرتی تینوں کوئی الگ الگ ایک دوسرے سے بے سلسلہ چیزیں نہیں ہیں؛ بلکہ وہ سنسکرتی کا ایک ہی دھارا ہے' جو ہزاروں برس پہلے سے لے کر آج تک بہتی چلی آ رہی ہے اور جس میں سمے اور پرستھتی کے پھیر کے مطابق سنسار کی اور سب چیزوں کی طرح تبدیلیاں ہوتی رہی ہیں اور ہوتی رہیں گی .

हुए हैं इत्यादि. श्री के० एन० दीक्षित ने अपनी पुस्तक "प्री हिस्टारिक सिविलीजेशन आफ़ दी इन्डस वैली" में लिखा है कि इस चित्रकारी में यह दिखाया गया है कि उस ज़माने के विश्वासों (एतक़ादों) के मुताबिक़ मरने के बाद मनुष्य की क्या क्या गति होती थी. ऋग्वेद के अनुसार मौत के देवता यम के साथ दो कुत्ते रहते हैं (ऋग्वेद 10. 16, 10-12). ऋग्वेद ही से यह भी पता चलता है कि वैदिक काल में मुर्दे के पास तीर और कमान रख देने का रिवाज था. (ऋग्वेद 10,18.9). वैदिक काल में लोगों को विश्वास था कि—"ज़िन्दा इनसानों का फ़र्ज़ है कि वे मुरदा मनुश्यों के लिये दूसरी दुनिया में रास्ता तैयार कर दें, यम के राज्य में उनकी महान यात्रा के लिये खाने पीने का सामान उनके साथ रख दें और रास्ते की नदियों को पार करने का उनके लिये इन्तज़ाम कर दें. 'उत्क्रान्ति' या 'वैतरनी' गाय से यह काम लिया जाता था. लोग अकसर मरने से पहले ख़ुद ब्राह्मन को गाय दान दे देते थे या उनके पुत्र दे देते थे. यही काम 'अनुस्तरनी गाय' से लिया जाता था. यह गाय अर्थी के साथ साथ ले जाई जाती थी. फिर उसके अंग अंग अलग कर के मुर्दे के अंगों पर रख दिये जाते थे. उसके गुर्दे मुर्दे के हाथों में दे दिये जाते थे और कह दिया जाता था कि यह गुर्दे यम के कुत्तों के खाने के लिये हैं" वग़ैरा.

हड़प्पा के बर्तनों पर जो बैलों की सी शक्लें हैं, वह मालूम होता है 'वैतरनी' और 'अनुस्तरनी' हैं. 'ऋग्वेद' (10. 16. 7) में, 'अश्वलायन गृह्य सूत्र' (4. 3) में, 'ऐतरेय ब्राह्मन' (3. 8) में और 'कात्यायन स्रोत सूत्र' (25. 7. 30), इन सब में अनुस्तरनी गाय का ज़िक्र आता है. और रामायन (4. 44. 65) में, महाभारत (2. 373; २. 6054, 4148) और हरिवंश (7736, 9511) में वैतरनी का ज़िक्र आता है. ऋग्वेद में "इस सम्बन्ध में अग्नि का आह्वान करते हुए लिखा है—

"हे जात वेदस् यह बकरा तुम्हारा भाग है, इसे जला दो. तुम्हारी तेज़ लपट, तुम्हारी चमक दमक इसे जला डाले, और इस मुरदा आदमी को पवित्र आत्माओं के लोक तक पहुंचा दो." (10, 16. 4).

इस बकरे के भी अंग अंग अलग करके लाश के ऊपर रख दिये जाते थे. ऋग्वेद के इसी मंडल के दूसरे मन्त्रों में अन्त्येष्टि क्रिया की और सब तफ़सीलें दी हुई हैं.

हड़प्पा के कुछ बर्तनों में बहुत छोटे बच्चों की लाशें भी मिली हैं. हिन्दुओं में आज तक कहीं कहीं छोटे बच्चों को हांडी में बन्द करके दफ़न करने का रिवाज मौजूद है. मध्य एशिया की खुदाइयों में भी इस तरह का रिवाज मिला है.

ہوئے ہیں اتیادی۔ شری کے۔ این۔ دکچھت نے اپنی پستک " دی ہسٹارک سولائزیشن آف دی انڈس ویلی " میں لکھا ہے کہ اِس چترکاری میں یہ دکھایا گیا ہے کہ اُس زمانے کے وشواسوں (اعتقادوں) کے مطابق مرنے کے بعد منشیہ کی کیا کیا گتی ہوتی تھی۔ رگ وید کے انوسار موت کے دیوتا یم کے ساتھ دو کتے رہتے ہیں (رگ وید 12-10-16 .10) رگ وید ہی سے یہ بھی پتہ چلتا ہے کہ ویدک کال میں مردے کے پاس تیر اور کمان رکھ دینے کا رواج تھا. (رگ وید 10,18.9) ویدک کال میں لوگوں کو وشواس تھا کہ—" زندہ انسانوں کا فرض ہے کہ وے مردہ منشیوں کے لئے دوسری دنیا میں راستہ تیار کر دیں' یم کے راجیہ میں اُن کی مہان یاترا کے لئے کھانے پینے کا سامان اُن کے ساتھ رکھ دیں اور راستے کی ندیوں کو پار کرنے کا اُن کے لئے انتظام کر دیں۔ ' اتکرانتی ' یا ' ویترنی ' گئے سے یہ کام لیا جاتا تھا۔ لوگ اکثر مرنے سے پہلے خود براہمن کو گئے دان دے دیتے تھے یا اُن کے پتر دے دیتے تھے۔ یہی کام ' انسترنی گئے ' سے لیا جاتا تھا۔ یہ گئے ارتھی کے ساتھ ساتھ لے جائی جاتی تھی۔ پھر اُس کے انگ انگ الگ کر کے مردے کے انگوں پر رکھ دئے جاتے تھے۔ اِس کے گردے مردے کے ہاتھوں میں دے دئے جاتے تھے اور کہہ دیا جاتا تھا کہ یہ گردے یم کے کتوں کے کھانے کے لئے ہیں" وغیرہ۔

ہڑپہ کے برتنوں پر جو بیلوں کی سی شکلیں ہیں' وہ معلوم ہوتا ہے ' ویترنی' اور انسترنی ہیں۔ ' رگ وید' (10.16.7) میں' ' اشولاین گرہ سوتر ' (4.3) میں' ایتریہ براہمن' (3.8) میں اور ' کاتیاین سٹروت سوتر' (25.7.30) اِن سب میں انوسترنی گئے کا ذکر آتا ہے۔ اور رامائن (4.44.65) میں' مہابھارت (2.373.3.6054,4148) اور ہری ونش (7736,9511) میں ویترنی کا ذکر آتا ہے۔ رگ وید میں " اِس سمبندھ میں اگنی کا آہوان کرتے ہوئے لکھا ہے—

" ہے جات ویدس یہ بکرا تمہارا بھاگ ہے' اسے جلا دو۔ تمہاری تیز لپٹ' تماری چمک دمک اِسے جلا ڈالے' اور اِس مردہ آدمی کو پوتر آتماؤں کے لوک تک پہنچا دو." (10,16.4).

اِس بکرے کے بھی انگ انگ الگ کر کے لاش کے اوپر رکھ دئے جاتے تھے۔ رگ وید کے اِسی منڈل کے دوسرے منتروں میں انتیشٹ کریا کی اور سب تفصیلیں دی ہوئی ہیں۔

ہڑپہ کے کچھ برتنوں میں بہت چھوٹے بچوں کی لاشیں بھی ملی ہیں۔ ہندوں میں آج تک کہیں کہیں چھوٹے بچوں کو ہانڈی میں بند کر کے دفن کرنے کا رواج موجود ہے۔ مدھیہ ایشیا کی کھدائیوں میں بھی اِس طرح کا رواج ملا ہے۔

"उद्धीत:" अर्थात् मुर्दे को बाहर छोड़ देना और जानवरों को खाने देना (18. 2. 34).

'बृहदारन्यक उपनिशद्' में याज्ञवल्क्य ने साकल से बात करते हुए कहा है—"हे अहर्ल्लिक, जब दिल हमारे जिस्म को छोड़कर कहीं और चला जाता है, तब समझ रक्खो कि कुत्ते उस शरीर को खाते हैं, पक्षी उसके टुकड़े टुकड़े करते हैं, हृदय के न होने के कारन शरीर का यह अन्त होता है." (अध्याय 3 ब्राह्मन, 10, 25). जाहिर है कि उस जमाने में मुरदा शरीर को पशुओं और पक्षियों के खाने के लिए छोड़ देने का रिवाज भी था, और उसके कुछ दिनों बाद बची हुई हड्डियों को जमा करके दफ़न कर देने का रिवाज पड़ा. उसी उपनिशद् में लिखा है कि जब याज्ञवल्क्य ने साकल को हरा दिया और साकल का सिर कटकर गिर पड़ा, तो साकल के शागिर्द साकल की हड्डियां जमा करके अन्त्येश्टि क्रिया के लिए ले गये रास्ते में 'दस्युओं' ने उन पर हमला किया और उन हड्डियों को 'रत्न' समझ कर छीन ले गये. (309, 26).

'कौशीतकी अरन्यक' में और 'अथर्ववेद' में (18.2.19) दोनों में अन्त्येश्टि क्रिया के मन्त्र दिये हुए हैं और सारी विधि मौजूद है. एक मन्त्र (80.3) उस समय पढ़ा जाता था, जब मरने वाले मनुश्य को चारपाई से उतार कर जमीन पर रखते थे. दूसरा मन्त्र (80.38) उस समय पढ़ा जाता था, जब लाश को गाड़ी या अर्थी से उतार कर चिता पर रखते थे, और तीसरा मन्त्र (82-33) उस समय पढ़ा जाता था, जब बची हुई हड्डियों वाला बर्तन जमीन में गाड़ा जाता था. इस तरह जिन रिवाजों का पता सिन्धु में चलता है, वह ही सब रिवाज वैदिक काल में मौजूद थे.

मोहन-जो-दड़ो और हड़प्पा की खुदाइयों से पता चलता है कि वहां धातुओं में सबसे ज्यादा तांबे का उपयोग होता था. ऋग्वेद में भी तांबे के बर्तनों का काफ़ी जिक्र मिलता है, खासकर यज्ञ के लिए तांबे के बर्तन ही सबसे पवित्र समझे जाते थे, और यह विचार हिन्दुओं में आज तक चला आता है.

हड़प्पा में कुछ बर्तन ऐसे भी मिले हैं, जिनमें दोनों तरफ़ कुछ चित्र बने हुए हैं. इन चित्रों में बीच में बैल की सी शक्ल के जानवर हैं. एक आदमी बैल के गले में रस्सी डाले हुये है. रस्सी का एक सिरा उसके हाथ में है और दूसरा पांव के नीचे. आदमी के बायें हाथ में तीर कमान है. यह बर्तन वे हैं, जिनमें रखकर मुर्दों की हड्डियां गाड़ी गई थीं. एक तरफ़ एक कुत्ता है, जो एक जानवर की दुम अपने मुंह में पकड़े हुये है......एक और तरफ़ एक बड़ा बकरा बना हुआ है, जिसके बड़े बड़े सींगों पर त्रिशूल बने

"اُدھیت" ارتھاتھ مردے کو باھر چھوڑ دینا اور جانوروں کو کھانے دینا (18 . 2 . 34) .

'برھدارنیک اپنشد' میں یاگیہ ولکیہ نے ساکل سے بات کرتے ہوئے کہا ھے—"ہے آھلرک' جب دل ہمارے جسم کو چھوڑکر کہیں اور چلا جاتا ھے' تب سمجھ رکھو کہ کتے اُس شریر کو کھاتے ھیں' پنچھی اُس کے ٹکڑے ٹکڑے کرتے ھیں' ھردے کے نہ ھونے کے کارن شریر کا یہ انت ھوتا ھے." (ادھیائے 3 براھمن' 10, 25) . ظاھر ھے کہ اُس زمانے میں مردہ شریر کو پشوؤں اور پنچھیوں کے کھانے کے لئے چھوڑ دینے کا رواج بھی تھا' اور اِس کے کچھ دنوں بعد بچی ہوئی ھڈیوں کو جمع کرکے دفن کردینے کا رواج پڑا . اُسی اپنیشد میں لکھا ھے کہ جب یاگیہ والکیہ نے ساکل کو ھرادیا اور ساکل کا سر کٹکر گر پڑا' تو ساکل کے شاگرد ساکل کی ھڈیاں جمع کرکے انتیشٹ کریا کے لئے لے گئے . راستے میں 'دسیوں' نے اُن پر حملہ کیا اور اُن ھڈیوں کو 'رتن' سمجھ کر چھین لے گئے (309, 26) .

'کوشتکی ارنیک' میں اور 'اتھرووید' میں (18 .2 .19) دونوں میں انتیشٹ کریا کے منتر دیئے ہوئے ھیں اور ساری ودھی موجود ھے . ایک منتر (80.3) اُس سمے پڑھا جاتا تھا' جب مرنے والے منشیہ کو چارپائی سے اُتار کر زمین پر رکھتے تھے . دوسرا منتر (80.38) اِس سمے پڑھا جاتا تھا' جب لاش کو گاڑی یا ارتھی سے اُتار کر چتا پر رکھتے تھے' اور تیسرا منتر (82-33) اس سمے پڑھا جاتا تھا جب بچی ہوئی ھڈیوں والا برتن زمین میں گاڑا جاتا تھا . اِس طرح جن رواجوں کا پتہ سندھو میں چلتا ھے' وہ ہی سب رواج ویدک کال میں موجود تھے .

موھن-جو-دڑو اور ھڑپہ کی کھدائیوں سے پتہ چلتا ھے کہ وھاں دھاتوں میں سب سے زیادہ تانبے کا اُپیوگ ھوتا تھا . رگوید میں بھی تانبے کے برتنوں کا کافی ذکر ملتا ھے' خاص کر یگیہ کے لئے تانبے کے برتن ھی سب سے پوتر سمجھے جاتے تھے' اور یہ وچار ھندوؤں میں آج تک چلا آتا ھے .

ھڑپہ میں کچھ برتن ایسے بھی ملے ھیں' جن میں دونوں طرف کچھ چتر بنے ہوئے ھیں . اِن چتروں میں بیچ میں بیل کی سی شکل کے جانور ھیں . ایک آدمی بیل کے گلے میں رسی ڈالے ہوئے ھے . رسی کا ایک سرا اِس کے ھاتھ میں ھے اور دوسرا پاؤں کے نیچے . آدمی کے بائیں ھاتھ میں تیر کمان ھے . یہ برتن وہ ھیں' جن میں رکھ کر مردوں کی ھڈیاں گاڑی گئی تھیں . ایک طرف ایک کتا ھے' جو ایک جانور کی دم اپنے منہ میں پکڑے ہوئے ھے...... ایک اور طرف ایک بڑا بکرا بنا ہوا ھے' جس کے بڑے بڑے سینگوں پر ترشول بنے

की उस सभ्यता में चलता है, उसी का पता वेदों में भी चलता है, और ये दोनों सभ्यतायें अलग अलग नहीं बल्कि एक थीं. बुद्ध के शरीर के साथ भी यही किया गया था, पहले दाह कर्म और पीछे जगह जगह हड्डियों का बर्तनों में रख कर गाड़ा जाना.

'अग्नि पुराण' में लिखा है कि मुर्दे को पूरा नहीं जलाना चाहिए. हड्डियां बच जानी चाहिएँ और ब्राह्मणों को चाहिए कि चौथे दिन क्षत्री, पांचवें दिन वैश्य, सातवें दिन शूद्र, नवें दिन अस्थियों को जमा करके बर्तन में रखकर गाड़ दें (अग्नि पुराण 158-18, 50).

बंगाल में अभी तक कहीं कहीं जहां 'रघुनन्दन स्मृति' नहीं चलती, यही किया जाता है और कुछ पूजा पाठ के साथ चौथे दिन अस्थियां गाड़ी जाती हैं.

हड़प्पा में आदमियों की हड्डियों के साथ जानवरों की भी हड्डियां मिली हैं. ऋग्वेद में लिखा है—

अजो भागस्तपसा तं तपस्व तं ते शोचि-
स्तपतु तं ते अर्चिः । यास्ते शिवास्तन्वो
जातवेदस्ताभि र्वहैनं सुकृतामुलोकम्

—ऋग्वेद 10. 16. 4

इससे मालूम होता है कि बकरा परलोक में मनुष्य को रास्ता दिखाने के लिये साथ साथ जला दिया जाता था. अथर्ववेद में लिखा है कि सवारी का एक बैल मृत मनुष्य के साथ इसलिये जला दिया जाता था कि परलोक में मनुष्य उस पर सवार हो कर जा सके (Vedic Index Vol. 1 p. 9).

सारांश यह कि हड़प्पा में मुर्दे की हड्डियों के साथ साथ कुछ जानवरों की हड्डियों का मिलना कोई अचरज की बात नहीं है और न इससे यह दो तहज़ीबें अलग अलग तहज़ीबें साबित होती हैं.

मोहन-जो-दड़ो और हड़प्पा में मुर्दों की हड्डियों के साथ साथ कुछ छोटे छोटे बर्तन, चिड़ियां, मछलियां, माला के दाने, हाथ के कड़े, चमचे, मिट्टी के बर्तन, पानी का घड़ा आदि भी मिले हैं. अथर्ववेद में अन्त्येष्टि क्रिया के सम्बन्ध में लिखा है—"देवता लोग और ऋतुयें इस यज्ञ की आहुति को, भोजन को, चमचों को, और यज्ञ के बर्तनों और औज़ारों को ठीक कर लें, और हे मृत मनुष्य तुम इनके साथ उन रास्तों से जाओ, जिनसे देवता जाते हैं, और जिनसे यज्ञ करने वाले स्वर्ग को जाते हैं."

मार्शल साहब ने लिखा है कि सिंधु में मृत शरीर को जंगली जानवरों के सामने छोड़ देने और फिर बचे हुए अंगों को दफ़न कर देने का भी रिवाज था. अथर्ववेद में भी अन्त्येष्टि के दो और विधान हैं. एक "परोप्त" और दूसरा

کہ اُس سبھیتا میں چلتا ہے' اُسی کا پتہ ویدوں میں بھی چلتا ہے' اور یہ دونوں سبھیتائیں الگ الگ نہیں بلکہ ایک تھیں ۔ بدھ کے شریر کے ساتھ بھی یہی کیا گیا تھا' پہلے داہ کرم اور پیچھے جگہ جگہ ہڈیوں کا برتنوں میں رکھ کر گاڑا جانا ۔

'اگنی پران' میں لکھا ہے کہ مردے کو پورا نہیں جلانا چاہئے۔ ہڈیاں بچ جانی چاہئیے اور براہمنوں کو چاہئے کہ چوتھے دن چھتری' پانچویں دن ویشیہ' ساتویں دن شودر' نویں دن استھیوں کو جمع کرکے برتن میں رکھ کر گاڑ دیں (اگنی پران 153-18,50) ۔

بنگال میں ابھی تک کہیں کہیں جہاں 'رگھونندن اسمرتی' نہیں چلتی' یہی کیا جاتا ہے اور کچھ پوجا پاٹھ کے ساتھ چوتھے دن استھیاں گاڑی جاتی ہیں ۔

ہڑپہ میں آدمیوں کی ہڈیوں کے ساتھ جانوروں کی بھی ہڈیاں ملی ہیں ۔ رگ وید میں لکھا ہے—

اجو بھاگست پسا تم تپسوتم تے شوچستپتو تم تے ارچی ۔ یاستے شواستو نیوجات وید استابھی یہ ہین سوکرتا سولوکم—رگ وید 10. 16.4

اس سے معلوم ہوتا ہے کہ بکرا پرلوک میں منشیہ کو راستہ دکھانے کے لئے ساتھ ساتھ جلا دیا جاتا تھا ۔ اتھرو وید میں لکھا ہے کہ سواری کا ایک بیل مرت منشیہ کے ساتھ اس لئے جلا دیا جاتا تھا کہ پرلوک میں منشیہ اُس پر سوار ہوکر جاسکے ۔ (Vedic Index Vol. 1. p. 9)

سارانش یہ کہ ہڑپہ میں مردے کی ہڈیوں کے ساتھ ساتھ کچھ جانوروں کی ہڈیوں کا ملنا کوئی اچرج کی بات نہیں ہے اور نہ اس سے یہ دو تہذیبیں الگ الگ تہذیبیں ثابت ہوتی ہیں ۔

موہن-جو-دڑو اور ہڑپا میں مردوں کی ہڈیوں کے ساتھ ساتھ کچھ چھوٹے چھوٹے برتن' چڑیاں' مچھلیاں' مالا کے دانے' ہاتھ کے کڑے' چمچے' مٹی کے برتن' پانی کا گھڑا آدی بھی ملے ہیں۔ اتھرو وید میں انتیشٹ کریا کے سمبندھ میں لکھا ہے—"دیوتا لوگ اور رتوئیں اس یگیہ کی آہوتی کو' بھوجن کو' چمچوں کو' اور یگیہ کے برتنوں اور اوزاروں کو ٹھیک کرلیں' اور ہے مرت منشیہ تم ان کے ساتھ اُن راستوں سے جاؤ' جن سے دیوتا جاتے ہیں' اور جن سے یگیہ کرنے والے سورگ کو جاتے ہیں ۔"

مارشل صاحب نے لکھا ہے کہ سندھو میں مرت شریر کو جنگلی جانوروں کے سامنے چھوڑ دینے اور پھر بچے ہوئے انگوں کو دفن کر دینے کا بھی رواج تھا ۔ اتھرو وید میں بھی انتیشٹ کے دو اور ودھان ہیں۔ ایک "پروپت" اور دوسرا

शेवां युवस्व हरसा जहूषाणो दधृग्विधक्ष्यन् पर्यंखयाते.—
ऋग्वेद 10. 16. 7

यानी—हे, मृत मनुश्य ! गाय की खाल को आग की लपटों से बचने के लिये कवच की तरह ओढ़े रहो. बहुत काफ़ी चरबी तुम्हारे ऊपर लपेट दी गई है, इसकी वजह से प्रचन्ड अग्नि, जो तुम्हें जबरदस्ती जला डालना चाहती है, सब अंगों को नहीं लपेट पायेगी.

इस ऋचा से दोनों रिवाजों का पता चलता है, एक यह कि मुर्दे को जलाने से पहले गाय की खाल में लपेट दिया जाता था और दूसरा यह कि सारे शरीर को जला कर राख नहीं किया जाता था.

इसी से अगली ऋचा में लिखा है—"हे अग्नि, इस चमचे को खराब न करना, सोम पीने वाले देवता इससे प्रसन्न होंगे. देवताओं के पीने के लिये यह चमचा रख दिया गया है." इससे पता चलता है कि चिता के अन्दर दूसरी दुनिया में मृत मनुश्य के काम आने के लिए बर्तन और दूसरी चीजें भी रख दी जातीं थीं. चिता के पास ही एक ओर आग जला दी जाती थी, जिसमें होम किया जाता था और पत्र के जरिये देवताओं और पितरों तक खाना पहुंचाया जाता था (10. 6, 9. 12).

अथर्ववेद में लिखा है—"हे अग्नि, मृत मनुस्य पर दया करते हुए इसे जलाना, बहुत अधिक न जला डालना, शरीर को जलाकर खत्म न कर देना" (अथर्ववेद 18, 6).

अथर्ववेद में मुर्दे के साथ बकरे के जलाये जाने का भी ज़िक्र आता है. लिखा है—"यह बकरा तपस का हिस्सा है, इसे जला देना" (18. 2. 8).

'अश्वलायन गृह्य सूत्रों में अन्त्येश्टि की पूरी तफ़सील दी हुई है और लिखा है कि मरने के दसवें दिन एक बर्तन के अन्दर हड्डियां जमा कर ली जाती थीं, मर्द की एक तरह के बर्तन में और स्त्री की दूसरी तरह के बर्तन में. और लिखा है कि—"हड्डियों को अंगूठे और चौथी उंगली से एक एक करके उठाना चाहिए और एक एक करके बर्तन में इस तरह रखना चाहिए कि आवाज न होने पावे. पहले पैरों की हड्डियां रखनी चाहिए और आखिर में सिर की. अच्छी तरह जमा करके और छाज से फटक कर हड्डियों के बर्तन को एक गढ़े में गाड़ देना चाहिए और उस पर यह मन्त्र पढ़ना चाहिए......बर्तन को ढंककर उस पर मिट्टी डालकर फिर यह मन्त्र पढ़ना चाहिए......फिर बिना पीछे मुड़कर देखे चला आना चाहिए और जल में नहा कर मृत मनुश्य का श्राद्ध करना चाहिए (4. 5. 1, 2, 5–10).

मोहन-जो-दड़ो में भी जो बर्तन मिले हैं, उनमें मुर्दों की जली हुई हड्डियां ही हैं, बिना जला शरीर नहीं. जाहिर है कि अन्त्येश्टि क्रिया के जिन जिन रिवाजों का पता सिन्धु

شیواں کرشو اسا جوہرشانو دھرشوکشیں پریانکھیاتے—رگ وید
10. 16. 7

یعنی—ہے مرت منشیہ ! گائے کی کھال کو آگ کی لپٹوں سے بچنے کے لئے کوچ کی طرح اوڑھے رہو. بہت کافی چربی تمہارے اوپر لپیٹ دی گئی ہے' اس کی وجہ سے پرچنڈ اگنی' جو تمہیں زبردستی جلا ڈالنا چاہتی ہے' سب انگوں کو نہیں لپیٹ پائیگی.

اس رچا سے دونوں رواجوں کا پتہ چلتا ہے' ایک یہ کہ مردے کو جلانے سے پہلے گائے کی کھال میں لپیٹ دیا جاتا تھا اور دوسرا یہ کہ سارے شریر کو جلا کر راکھ نہیں کیا جاتا تھا .

اسی سے اگلی رچا میں لکھا ہے—"ہے اگنی' اس چمچے کو خراب نہ کرنا" سوم پینے والے دیوتا اس سے پرسن ہونگے. دیوتاؤں کے پینے کے لئے یہ چمچہ رکھ دیا گیا ہے ." اس سے پتہ چلتا ہے کہ چتا کے اندر دوسری دنیا میں مرت منشیہ کے کام آنے کے لئے برتن اور دوسری چیزیں بھی رکھ دی جاتی تھیں . چتا کے پاس ہی ایک اور آگ جلا دی جاتی تھی' جس میں ہوم کیا جاتا تھا اور پتر کے ذریعہ دیوتاؤں اور پتروں تک کھانا پہونچایا جاتا تھا (0 . 16, 9.12) .

اتھرو وید میں لکھا ہے—"ہے اگنی مرت منشیہ پر دیا کرتے ہوئے اسے جلانا' بہت ادھک نہ جلا ڈالنا' شریر کو جلاکر ختم نہ کر دینا." (اتھرو وید 18,6) .

اتھرو وید میں مردے کے ساتھ بکرے کے جلائے جانے کا بھی ذکر آتا ہے. لکھا ہے—"یہ بکرا تپس کا حصہ ہے' اسے جلا دینا."
.(18 . 2.8)

'اشولاین گرھیہ سوتروں میں انتیشٹ کی پوری تفصیل دی ہوئی ہے اور لکھا ہے کہ مرنے کے دسویں دن ایک برتن کے اندر ہڈیاں جمع کرلی جاتی تھیں' مرد کی ایک طرح کے برتن میں اور استری کی دوسری طرح کے برتن میں . اور لکھا ہے کہ—"ہڈیوں کو انگوٹھے اور چوتھی انگلی سے ایک ایک کرکے اٹھانا چاہئے اور ایک ایک کرکے برتن میں اس طرح رکھنا چاہئے کہ آواز نہ ہونے پاوے . پہلے پیروں کی ہڈیاں رکھنی چاہئے اور آخر میں سر کی . اچھی طرح جمع کرکے اور چھاج سے پھٹککر ہڈیوں کے برتن کو ایک گڈھے میں گاڑ دینا چاہئے اور اس پر یہ منتر پڑھنا چاہئے......برتن کو ڈھنککر اس پر مٹی ڈال کر پھر یہ منتر پڑھنا چاہئے......پھر بنا پیچھے مڑکر دیکھے چلا آنا چاہئے اور جل میں نہاکر مرت منشیہ کا شرادھ کرنا چاہئے .(4. 5. 1, 2, 5-10)

موہن-جو-دڑو میں بھی جو برتن ملے ہیں' ان میں مردوں کی جلی ہوئی ہڈیاں ہی ہیں' بنا جلا شریر نہیں . ظاہر ہے کہ انتیشٹ کریا کے جن جن رواجوں کا پتہ سندھو

मिले हैं, जिनमें आदमी की जली हुई हड्डियां और राख मौजूद है, और उसके साथ साथ कुछ बर्तनों में जली हुई या बे जली हुई चीज़ें हैं, या और ऐसी चीज़ें हैं, जिनकी बाबत यह समझा जाता था कि वे अगली दुनिया में मरे हुए आदमी के काम आयेंगी.* मार्शल साहब ने लिखा है कि— "कहीं कहीं यह भी रिवाज था कि मुर्दे को पहले जंगली जानवरों के सामने रख दिया जाता था, और फिर उनके खाने से जो कुछ बच जाता था उसे गाड़ दिया जाता था. हड़प्पा में शरीर के सिर्फ़ कुछ हिस्से दफ़न किये हुए ही मिले हैं, कुछ मिसालें पूरे शरीर के दफ़न करने की भी मिली हैं, लेकिन बहुत ही कम.

अब हमें यह देखना है कि वैदिक काल में मुर्दे की अन्त्येष्टि क्रिया के क्या क्या रिवाज थे. ऋग्वेद से पता चलता है कि उस ज़माने में दोनों रिवाज थे 'अन अग्नि दग्ध' और 'अग्नि दग्ध'. पूरे शरीर को बिना जलाये ज़मीन में गाड़ देने का रिवाज भी ऋग्वेद में मिलता है. (ऋग्वेद 10, 18. 11) 'शतपथ ब्राह्मन से पता चलता है कि ब्राह्मन ग्रन्थों के समय भी यह रिवाज मौजूद था (13.8. 1.9) ऋग्वेद की एक ऋचा है—"हे पृथ्वी इस मुर्दे को इस तरह अपने अन्दर लपेट लो जिस तरह माता अपने बच्चे को अपने आंचल में लपेट लेती है,...हे मृत पुरुश मैंने तुम्हारे चारों तरफ़ मिट्टी डाल दी है, तुम्हें इससे चोट न लगे. इसमें मैंने पत्थर का बर्तन खाने के लिए रख दिया है" (ऋग्वेद 10, 18. 10-13) ऋग्वेद में मुर्दे को जलाने के भी रिवाज का ज़िक्र आता है. एक जगह लिखा है—

मैनमग्ने विदहो माभि शोचो मास्य त्वचं चिक्षिपो मा शरीरम् । यदा शृतं कृणवो जातवेदोऽथेमेनं प्रहिणुतात् पितृभ्यः—ऋग्वेद 10. 16. 1

मानी—हे अग्नि ! इसे जलाकर बिल्कुल ही ख़तम न कर देना, न इसे तकलीफ़ देना, और न इसकी त्वचा या शरीर के टुकड़ों को इधर उधर बखेरना.

इस तरह ऋग्वेद में गाड़ने और जलाने दोनों के रिवाज मिलते हैं. पहले शुरू में गाड़ने का रिवाज था और बाद में जलाने का रिवाज चल पड़ा. यह भी साफ़ पता चलता है कि पूरा शरीर नहीं जला डाला जाता था. विन्टरनीत्स ने भी लिखा है कि अधिक पुराने समय में हिन्दुस्तान में गाड़ने का रिवाज ही आम था. आजकल हिन्दुओं में सिर्फ़ सन्यासियों को और बहुत छोटे बच्चों को गाड़ा जाता है. किसी किसी बीमारी में जैसे चेचक की बीमारी में भी गाड़ने का रिवाज है. ऋग्वेद का एक और मन्त्र है—

अग्नेर्वर्म परि गोभिर्व्ययस्व संप्रोर्णुष्व पीवसा मेदसा च

ملے ہیں' جن میں آدمیوں کی جلی ہوئی ہڈیاں اور راکھ موجود ہیں' اور اس کے ساتھ ساتھ کچھ برتنوں میں جلی ہوئی یا بے جلی ہوئی چیزیں ہیں' یا اور ایسی چیزیں ہیں جن کی بابت یہ سمجھا جاتا تھا کہ وے اگلی دنیا میں مرے ہوئے آدمی کے کام آئیں گی* مارشل صاحب نے لکھا ہے کہ—"کہیں کہیں یہ بھی رواج تھا کہ مردے کو پہلے جنگلی جانوروں کے سامنے رکھ دیا جاتا تھا' اور پھر ان کے کھانے سے جو کچھ بچ جاتا تھا اسے گاڑ دیا جاتا تھا. ہڑپا میں شریر کے صرف کچھ حصے دفن کئے ہوئے ہی ملے ہیں. کچھ مثالیں پورے شریر کے دفن کرنے کی بھی ملی ہیں' لیکن بہت ہی کم

اب ہمیں یہ دیکھنا ہے کہ ویدک کال میں مردے کی انتیشٹ کریا کے کیا کیا رواج تھے. رگ وید سے پتہ چلتا ہے کہ اُس زمانے میں دونوں رواج تھے 'ان اگنی دگدھ' اور 'اگنی دگدھ'. پورے شریر کو بنا جلائے زمین میں گاڑ دینے کا رواج بھی رگ وید میں ملتا ہے. (رگ وید 10'18 .11) 'شت پتھ براہمن سے پتہ چلتا ہے کہ براہمن گرنتھوں کے سمے بھی یہی رواج موجود تھا. (13.8. 1.9) رگ وید کی ایک رچا ہے—" ہے پرتھوی اِس مردے کو اِس طرح اپنے اندر لپیٹ لو جس طرح ماتا اپنے بچے کو اپنے آنچل میں لپیٹ لیتی ہے'......ہے مرت پرش میں نے تمہارے چاروں طرف مٹی ڈال دی ہے' تمہیں اِس سے چوٹ نہ لگے. اِس میں میں نے پتھر کا برتن کھانے کے لئے رکھ دیا ہے" (رگ وید 10-18.10.13) رگ وید میں مردے کو جلانے کے بھی رواج کا ذکر آتا ہے. ایک جگہ لکھا ہے—

مین مگنے ودھو مابھی شوچو ماسیہ توچ وکچھپو ما شریرم. یدا شرتنت کرنوو جات وید تھیمن پرھنوتا پتربھیہ :—رگ وید 10 . 16 . 1

یعنی—ہے اگنی ! اِسے جلا کر بالکل ہی ختم نہ کر دینا' نہ اِسے تکلیف دینا' اور نہ اِس کی توچا یا شریر کے ٹکڑوں کو اِدھر اُدھر بکھیرنا.

اِس طرح رگ وید میں گاڑنے اور جلانے دونوں کے رواج ملتے ہیں. پہلے شروع میں گاڑنے کا رواج تھا اور بعد میں جلانے کا رواج چل پڑا. یہ بھی صاف پتہ چلتا ہے کہ پورا شریر نہیں جلا ڈالا جاتا تھا. ونٹر نیتز نے بھی لکھا ہے کہ ادھک پرانے سمے میں ہندستان میں گاڑنے کا رواج ہی عام تھا. آجکل ہندوؤں میں صرف سنیاسیوں کو اور بہت چھوٹے بچوں کو گاڑا جاتا ہے. کسی کسی بیماری میں جیسے چیچک کی بیماری میں بھی گاڑنے کا رواج ہے. رگ وید کا ایک اور منتر ہے—

اگنیرورم پری گوبھیر ویلیسو سمپرورنشو پی وسا میدسا چ

* Sir John Marshall. Vol. 1 pp. 79-81, 89-90 etc.

(9. 112. 2). उस जमाने के लोग खाने पीने के लिए भी लकड़ी और पत्थर के बर्तन काम में लाते थे (ऋग्वेद 965.6;10.75.3;10.101.10). उस जमाने के वैदिक आर्य लोहे का इस्तेमाल नहीं जानते थे. 'तैत्तरेय ब्राह्मन' बाद का लिखा हुआ है. उसमें भी हजामत बनाने के लिये तांबे के उस्तुरे का जिक्र आता है (10.5) ऋग्वेद की छान बीन करने से पता चलता है कि उस जमाने में पत्थर, लकड़ी तांबा, कांसा और चमड़े के बर्तन और औजार ही काम में आते थे. कम से कम ऋग्वेद का जमाना लोहे के इस्तेमाल का जमाना नहीं था.

दूसरा सवाल दोनों सभ्यताओं के समय का है. सिन्धु की सभ्यता के समय का अन्दाजा ईसा से तीन चार हजार साल पहले का किया जाता है. मैक्समूलर का अन्दाजा था कि ऋग्वेद का समय ईसा से 1500 साल पहले का था. लेकिन मैक्समूलर ने ख़ुद साफ़ साफ़ लिखा है कि यह महज अन्दाजा है जो ग़लत हो सकता है (मैक्समूलर—ए हिस्ट्री आफ एनशियन्ट संस्कृत लिटरेचर, सफ़ा 434,435). और कुछ दिनों की खोज के बाद एक दूसरे विद्वान विन्टर-नीत्ज ने राय दी है कि—"कोई पक्के तौर पर यह नहीं कह सकता कि वेदों की ऋचायें ईसा से 1000 साल पहले लिखी गई थीं या 1500 साल पहले, या 2000 साल पहले या 3,000 साल पहले.* बाल गंगाधर तिलक ने गणित के हिसाब से साबित करने की कोशिश की कि कम से कम कुछ वैदिक ऋचायें ईसा से 6000 साल पहले की हैं. जैकोबी ने ईसा से 4500 साल पहले वैदिक सभ्यता का जमाना बताया है. इस सब से यह साबित होता है कि मोहन-जो-दड़ो और हड़प्पा की सभ्यता का समय वैदिक सभ्यता से पहले का नहीं है. कम से कम दोनों का एक ही जमाना है.

तीसरी बात, जिससे सिन्धु की उस सभ्यता और वैदिक सभ्यता के एक होने या अलग अलग होने का अन्दाजा लगाया जा सकता है, वह दोनों में मुर्दे की अन्त्येष्टि क्रिया का ढङ्ग है. मार्शल साहब का कहना है कि दोनों के ढङ्ग बिलकुल अलग अलग थे; लेकिन असलियत इस के खिलाफ़ है. मार्शल साहब ही के मुताबिक़ सिंधु की सभ्यता में हमें तीन तरह की अन्त्येष्टि क्रिया मिलती है. (1) पूरा शरीर जमीन में गाड़ देना, (2) शरीर का कुछ हिस्सा जमीन में गाड़ देना और (3) लाश को पहले जलाकर फिर बचे कुचे हिस्से को गाड़ देना. मार्शल साहब लिखते हैं कि—"जहां तक पता चला है, वहां तक यही मालूम होता है कि सिंधु की सभ्यता की तरक़्क़ी के दिनों में सब से ज्यादा आम रिवाज जलाने का था. खुदाई में इस तरह के बड़े बड़े बर्तन

(9 . 112 . 2) . اس زمانے کے لوگ کھانے پینے کے لئے بھی لکڑی اور پتھر کے برتن کام میں لاتے تھے . (رگ وید 10 . 101 . 10 ; 3 . 75 . 10 ; 6 . 965) . اُس زمانے کے ویدک آریہ لوہے کا استعمال نہیں جانتے تھے . 'تیتریہ براہمن' بعد کا لکھا ہوا ہے . اس میں بھی حجامت بنانے کے لئے تانبے کے استرے کا ذکر آتا ہے (10 . 5) . رگ وید کی چھان بین کرنے سے پتہ چلتا ہے کہ اُس زمانے میں پتھر' لکڑی' تانبہ' کانسہ اور چمڑے کے برتن اور اوزار ہی کام میں آتے تھے . کم سے کم رگ وید کا زمانہ لوہے کے استعمال کا زمانہ نہیں تھا .

دوسرا سوال دونوں سبھیتاؤں کے سمے کا ہے . سندھو کی سبھیتا کا اندازہ عیسیٰ سے تین چار ہزار سال پہلے کا کیا جاتا ہے . میکس ملر کا اندازہ تھا کہ رگ وید کا سمے عیسیٰ سے 1500 سال پہلے کا تھا . لیکن میکس ملر نے خود صاف صاف لکھا ہے کہ یہ محض اندازہ ہے جو غلط ہوسکتا ہے (میکس ملر—اے ہسٹری آف اینشینٹ سنسکرت لٹریچر' صفحہ 435 ,434). اور کچھ دنوں کی کھوج کے بعد ایک دوسرے ودوان ونٹرنیٹز نے رائے دی ہے کہ—"کوئی پکے طور پر یہ نہیں کہ سکتا کہ ویدوں کی رچنائیں عیسیٰ سے 1000 سال پہلے لکھی گئی تھیں یا 1500 سال پہلے' یا 2000 سال پہلے یا 3000 سال پہلے* بال گنگا دھر تلک نے گنت کے حساب سے ثابت کرنیکی کوشش کی کہ کم سے کم کچھ ویدک رچنائیں عیسیٰ سے 6000 سال پہلے کی ہیں . جیکوبی نے عیسیٰ سے 4500 سال پہلے ویدک سبھیتا کا زمانہ بتایا ہے . اِس سب سے یہ ثابت ہوتا ہے کہ موہن-جو-دڑو اور ہڑپا کی سبھیتا کا سمے ویدک سبھیتا سے پہلے کا نہیں ہے . کم سے کم دونوں کا ایک ہی زمانہ ہے .

تیسری بات' جس سے سندھو کی اُس سبھیتا اور ویدک سبھیتا کے ایک ہونے یا الگ الگ ہونے کا اندازہ لگایا جاسکتا ہے' وہ دونوں میں مردے کی انتیشٹی کریا کا ڈھنگ ہے . مارشل صاحب کا کہنا ہے کہ دونوں کے ڈھنگ بالکل الگ الگ تھے' لیکن اصلیت اِس کے خلاف ہے . مارشل صاحب ہی کے مطابق سندھو کی سبھیتا میں ہمیں تین طرح کی انتیشٹی کریا ملتی ہے . (1) پورا شریر زمین میں گاڑ دینا' (2) شریر کا کچھ حصہ زمین میں گاڑ دینا اور (3) لاش کو پہلے جلاکر پھر بچے کھچے حصے کو گاڑ دینا . مارشل صاحب لکھتے ہیں کہ—"جہاں تک پتہ چلا ہے' وہاں تک یہی معلوم ہوتا ہے کہ سندھو کی سبھیتا کی ترقی کے دنوں میں سب سے زیادہ عام رواج جلانے کا تھا . کھدائی میں اس طرح کے بڑے بڑے برتن

* Winter Nitz—Oeschisechteder Mdischen Literature, pp. 249-50.

में अवैदिक विचारों और सम्प्रदायों का ज़ोर था. इसी के साथ साथ बौद्ध और जैन प्रचारकों ने उसी देश के लोगों को आर्य कहकर बयान किया है. इससे साबित है कि 'आर्य' शब्द ख़ास गुनों या ख़ास संस्कृति का नाम था, जाति का नहीं.

बौद्धों ने तो इस शब्द को और भी ऊंचा पहुंचाया. उसे सांस्कृतिक (कल्चरी) से बढ़ा कर अध्यात्मिक (रूहानी) कर दिया. बौद्ध ग्रन्थों और शिला लेखों के मुताबिक़ "आर्य वह है, जो अपनी वासनाओं या देश की रूढ़ियों और रस्म रिवाजों का दास नहीं है और जो अपने को ख़ुद समझ कर चलता है." *

सम्राट चन्द्रगुप्त के प्रधान मन्त्री कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में आर्य शब्द को राजनैतिक (सियासी) अर्थों में इस्तेमाल किया है. शूद्र को उसने 'आर्यप्राण' अर्थात् जन्म से आर्य कहा है. (अध्याय 13-181) वह लिखता है कि—"जो आदमी किसी दास को धोखा देकर उसका धन लेगा या एक आर्य की हैसियत से उस दास के जो हक़ हैं, उनसे उसे वंचित (महरूम) करेगा (आर्य भाव अपहरन्ता) उस पर उससे आधा जुर्माना किया जायगा, जितना उस आदमी पर जो किसी आर्य की स्वतन्त्रता छीने." (अध्याय 13-182). और आगे चलकर "जो आदमी अपने को बेचकर किसी का दास बन जायगा, उसकी सन्तान आर्य ही होगी." और "कोई दास अगर अपनी दासता की क़ीमत अदा कर देगा, तो उसी समय से वह फिर आर्य हो जायगा (अर्थ शास्त्र सफ़ा 222-224, डाक्टर शाम शास्त्री का अनुवाद). यहां पर यह बात साफ़ है कि आर्य शब्द 'श्रेष्ठ' और 'सभ्य' (मुहज़्ज़ब) के अर्थों में उपयोग होते होते राजनैतिक अर्थों में भी आने लगा, क़रीब क़रीब उन्हीं अर्थों में, जिनमें अंग्रेज़ी शब्द 'सिटीज़न' आता है.

सर जान मार्शल की राय है कि ईसा से तीन चार हज़ार साल पहले की सिन्धु की सभ्यता वैदिक सभ्यता से ऊंचे दर्जे की और बिलकुल एक अलग सभ्यता थी. लेकिन मोहन-जो-दड़ो और हड़प्पा की खुदाई में जो चीज़ें निकली हैं, उनका अगर ऋग्वेद के समय की सभ्यता से मुक़ाबला किया जावे, तो दोनों में काफ़ी समानता दिखाई देती है, दोनों एक मालूम होती हैं. हम यहां एक दो मोटी मोटी बातें बयान करेंगे.

सिन्धु की सभ्यता के बारे में अभी तक पता चला है कि वह लोग लोहे का इस्तेमाल नहीं जानते थे और ज़्यादातर लकड़ी, पत्थर, कांसा वग़ैरह के औज़ार ही काम में लाते थे. ऋग्वेद में उन दिनों पत्थर के नोकदार तीरों के इस्तेमाल होने का साफ़ ज़िक्र मिलता है

میں اویدک وچاروں اور سمپردایوں کا زور تھا . اِسی کے ساتھ ساتھ بودھ اور جین پرچارکوں نے اُسی دیش کے لوگوں کو آریہ کہ کر بیان کیا ہے . اِس سے ثابت ہے کہ 'اریہ' شبد خاص گنوں یا خاص سنسکرتی کا نام تھا' جاتی کا نہیں .

بودھوں نے تو اِس شبد کو اور بھی اُونچا پہونچایا . اُسے سانسکرتک (کلچری) سے بڑھاکر ادھیاتمک (روحانی) کردیا . بودھ گرنتھوں اور شلا لیکھوں کے مطابق 'آریہ وہ ہے' جو اپنی واسناؤں یا دیش کی روڑھیوں اور رسم رواجوں کا داس نہیں ہے اور جو اپنے کو خود سمجھ کر چلتا ہے . *

سمراٹ چندرگپت کے پردھان منتری کوٹلیہ نے اپنے ارتھ شاستر میں اریہ شبد کو راج نیتک (سیاسی) ارتھوں میں استعمال کیا ہے. شودر کو اُس نے 'اریہ پران' ارتھات جنم سے آریہ کہا ہے. (ادھیائے 181 - 13) وہ لکھتا ہے کہ—"جو آدمی کسی داس کو دھوکا دے کر اس کا دھن لیگا یا ایک آریہ کی حیثیت سے اُس داس کے جو حق ہیں' اُن سے اُسے ونچت (محروم) کریگا (اریہ بھاؤ اپہرنتا) اس پر اُس سے آدھا جرمانہ کیا جائیگا' جتنا اس آدمی پر جو کسی آریہ کی سوتنترتا چھینے ." (ادھیائے 182 - 13). اور آگے چل کر "جو آدمی اپنے کو بیچ کر کسی کا داس بن جائیگا' اُس کی سنتان آریہ ہی ہوگی." اور "کوئی داس اگر اپنی داستا کی قیمت ادا کردے گا' تو اُسی سمے سے وہ پھر آریہ ہوجائیگا (ارتھ شاستر' صفحہ 222,224' ڈاکٹر شام شاستری کا انواد) . یہاں پر یہ بات صاف ہے کہ آریہ شبد 'شریشٹھ اور 'سبھیہ' (مہذب) کے ارتھوں میں اُپیوگ ہوتے ہوتے راج نیتک ارتھوں میں بھی آنے لگا' قریب قریب انھیں ارتھوں میں' جن میں انگریزی شبد 'سٹیزن' آتا ہے .

سر جان مارشل کی رائے ہے کہ عیسیٰ سے تین چار ہزار سال پہلے کی سندھو کی سبھیتا ویدک سبھیتا سے اُونچے درجے کی اور بالکل ایک الگ سبھیتا تھی. لیکن موہن - جو - دڑو اور ہڑپا کی کھدائی میں جو چیزیں نکلی ہیں' ان کا اگر رگ وید کے سمے کی سبھیتا سے مقابلہ کیا جاوے' تو دونوں میں کافی سمانتا دکھائی دیتی ہے . دونوں ایک معلوم ہوتی ہیں . ہم یہاں ایک دو موٹی موٹی باتیں بیان کریں گے .

سندھو کی سبھیتا کے بارے میں ابھی تک پتہ چلا ہے کہ وہ لوگ لوہے کا استعمال نہیں جانتے تھے اور زیادہ تر لکڑی' پتھر' کانسے وغیرہ کے اوزار ہی کام میں لاتے تھے . رگ وید میں اُن دنوں پتھر کے نوکدار تیروں کے استعمال ہونے کا صاف ذکر ملتا ہے

* B. M. Barua and G. Sinha Bharhut Inscriptions, p. 6 (1926).

महाभारत के द्रोण पर्व में दुर्योधन ने सिन्धराज की बात न मानने पर अपने को 'अनार्य' कहकर धिक्कारा है. सभा पर्व में द्रौपदी ने यह शिकायत की है कि 'अनार्य' लोगों ने युधिष्ठिर को बहका कर उससे जुआ खिलवा दिया. गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन की कमज़ोरी को 'अनार्य' कह कर बुरा कहा है. संस्कृत नाटकों में छोटे छोटे लोग बड़े बड़े लोगों को 'आर्य' कहकर पुकारते हैं, पत्नि अपने पति को 'आर्य पुत्र' कहकर पुकारती है. ब्राह्मन लोग अपने धर्म को सदा 'आर्य धर्म' कहते थे. बौद्ध लोग अपने धर्म को 'आर्य पथ' कहते थे.

वेदों के समय में अलग अलग कुलों या क़बीलों के अलग अलग नाम थे. लेकिन सब कुलों के समूह का कोई एक नाम नहीं था. आर्य शब्द तो इस जाति या समूह के अर्थों में आता ही नहीं था. जैसे भरत कुल के लोगों को ऋग्वेद में 'भरतम् जनम्' (3.53. 12) कहा है. सिकन्दर के हमले के समय तक इस देश में यही रिवाज था. अफ़ग़ानिस्तान और पंजाब के रहने वालों को मिलाकर यूनानी लेखकों ने 'इन्डियन' कहकर पुकारा है. इन्डियन या हिन्दू इन दोनों में से कोई भी लफ़्ज़ इस देश का नहीं है. ईरानी सम्राट दारा के शिला लेख में सिन्धु नदी के आस पास के बाशिन्दों को 'हिन्दु' लिखा है. ईरानी लोग सिन्धु नदी के इलाक़े को 'हिन्द' कहा करते थे, इसी से बाद में 'हिन्दु' बना. आज तक अरब लोग हिन्दुस्तान के हिन्दू और मुसलमानों सब को 'हिन्दी' कहकर पुकारते हैं और तुर्क लोग 'हिन्दली' कहकर पुकारते हैं. ईरानी हिन्द से यूनानी इन्ड और इन्डिया बने. उसी से अंग्रेज़ी इन्डियन (Indian), जर्मन इन्डिएन (Indien) फ्रेन्च हिन्दू (Hindou) और आजकल के यूनानियों का इन्दु (Indou) शब्द बने.

इस तरह अफ़ग़ानिस्तान से लेकर उत्तर भारत के मैदानों तक के सब रहने वालों का उस समय तक कोई एक नाम नहीं था. मौर्य साम्राज्य के बाद 'मानव धर्म शास्त्र' में हिमालय से लेकर बिन्ध्या तक के सारे देश का नाम 'आर्यावर्त' रक्खा गया. पुरानों में इस देश का नाम भरत के नाम पर भारतवर्ष मिलता है. पुरानों में और बौद्ध पुस्तकों में इस देश का जम्बु द्वीप नाम भी मिलता है. जम्बु वृक्ष का नाम है. लेकिन पुरानों के लिखे जाने के समय का ठीक ठीक पता नहीं चलता. स्मृतियों में आर्यावर्त उस देश को कहा गया है, जिसमें ब्राह्मन लोग बे रोक टोक वर्नाश्रम धर्म का पालन कर सकते हैं.

आर्य शब्द का अर्थ कभी भी कोई ख़ास जाति नहीं लिया गया, इसका पता इस बात से भी चलता है कि पास्क ने 'निरुक्त' में मगध के राज्य को 'अनार्य जनपद' कहा है, क्योंकि महावीर और बुद्ध वग़ैरह के पहले से मगध

مہابھارت کے درونو پرو میں دریودھن نے سندھ راج کی بات نہ ماننے پر اپنے کو ' اناریہ ' کہ کر دھکارا ھے . سبھا پرو میں دروپدی نے یہ شکایت کی ھے کہ 'اناریہ' لوگوں نے یدھشٹھر کو بہکاکر اُس سے جوا کھلوا دیا . گیتا میں شری کرشن نے ارجن کی کمزوری کو 'اناریہ' کہ کر برا کہا ھے. سنسکرت ناٹکوں میں چھوٹے چھوٹے لوگ بڑے بڑے لوگوں کو 'اریہ' کہ کر پکارتے ھیں' پتنی اپنی پتی کو 'اریہ پتر' کہ کر پکارتی ھے . براھمن لوگ اپنے دھرم کو سدا 'اریہ دھرم' کہتے تھے . بودھ لوگ اپنے دھرم کو 'اریہ پتھ' کہتے تھے .

ویدوں کے سمے میں الگ الگ کلوں یا قبیلوں کے الگ الگ نام تھے . لیکن سب کلوں کے سموہ کا کوئی ایک نام نہیں تھا . اریہ شبد تو اِس جاتی یا سموہ کے ارتھوں میں آتا ھی نہیں تھا . جیسے بھرت کل کے لوگوں کو رگ وید میں 'بھرتم جنم' (3 . 53 . 12) کہا ھے . سکندر کے حملے کے سمے تک اِس دیش میں یہی رواج تھا . افغانستان اور پنجاب کے رھنے والوں کو ملاکر یونانی لیکھکوں نے 'انڈین' کہ کر پکارا ھے . انڈین یا ھندو اِن دونوں میں سے کوئی بھی لفظ اِس دیش کا نہیں ھے. ایرانی سمراٹ دارا کے شلا لیکھ میں سندھو ندی کے آس پاس کے باشندوں کو 'ھندو' لکھا ھے . ایرانی لوگ سندھو ندی کے علاقے کو 'ھند' کہا کرتے تھے' اِسی سے بعد میں 'ھندو' بنا . آج تک عرب لوگ ھندستان کے ھندو اور مسلمانوں سب کو 'ھندی' کہ کر پکارتے ھیں اور ترک لوگ 'ھندلی' کہ کر پکارتے ھیں . ایرانی ھند سے یونانی اِنڈ اور اِنڈیا بنے . اُسی سے انگریزی اِنڈین (Indian)' جرمن اِنڈئین (Indien) فرنچ ھندو (Hindou) اور آجکل کے یونانیوں کا اندو (Indou) شبد بنے .

اِس طرح افغانستان سے لے کر اتر بھارت کے میدانوں تک کے سب رھنے والوں کا اُس سمے تک کوئی ایک نام نہیں تھا . موریہ سامراجیہ کے بعد 'مانو دھرم شاستر' میں ھمالے سے لیکر وندھیا تک کے سارے دیش کا نام 'آریہ ورت' رکھا گیا . پرانوں میں اُس دیش کا نام بھرت کے نام پر بھارت ورش ملتا ھے. پرانوں میں اور بودھ پستکوں میں اِس دیش کا جمبو دیپ نام بھی ملتا ھے . جمبو ورکچھ کا نام ھے . لیکن پرانوں کے لکھے جانے کے سمے کا ٹھیک ٹھیک پتہ نہیں چلتا. اسمرتیوں میں آریہ ورت اُس دیش کو کہا گیا ھے' جس میں براھمن لوگ بے روک ٹوک ورنا شرم دھرم کا پالن کرسکتے ھیں .

اریہ شبد کا ارتھ کبھی بھی کوئی خاص جاتی نہیں لیا گیا اس کا پتہ اِس بات سے بھی چلتا ھے کہ یاسک نے "نروکت" میں مگدھ کے راجیہ کو 'اناریہ جن پد' کہا ھے' کیونکہ مہاویر اور بدھ وغیرہ کے پہلے سے مگدھ

वैदिक साहित्य (अदब) में या संस्कृत साहित्य में 'आर्य' किसी खास नसल या जाति का नाम नहीं है. यूरोप वालों के मुताबिक 'आर्य' क़ौम के लोगों के बाल सुनहरे रंग के होते थे. लेकिन वैदिक साहित्य में जगह जगह उस समय के ब्राह्मनों के 'काले बालों' का जिक्र आता है. सच यह है कि जिन लोगों को आर्य कहा जाता है, वे अगर कहीं बाहर से भी इस देश में आए तब भी वे जिन देशों में होकर आए, वहां के पुराने बाशिन्दों से मिलते जुलते और उनसे ब्याह-शादी करते हुए आये. जब वे यहां पहुंचे तो वे दुनिया की और जातियों से अलग कोई एक खास जाति नहीं रह गये थे. सर जान मार्शल ने भी लिखा है कि—"जहां तक इतिहास से पता चलता है सिन्ध और पंजाब के लोगों में बहुत सी जातियां मिली हुई थीं, और हमें यह मानने के लिये कोई सबब नहीं दिखाई देता कि इससे पहले के जमाने में भी यहां के सब लोग किसी एक अलग नसल के रहे हों." असल में 'आर्य' शब्द से मुराद एक खास सभ्यता या एक खास संस्कृति से है, किसी खास जाति से नहीं. इस तरह की हर सभ्यता में कई अलग अलग जातियों के लोग सामाजिक और आर्थिक वजहों से मिल कर रहने लगते हैं और फिर रल मिल कर एक हो जाते हैं. यही हाल आर्यों का था. एक सभ्यता, एक संस्कृति या एक जबान होना अलग बात है, और एक नसल या जाति होना दूसरी बात है. इसके अलावा जहां जहां पुराने आर्यों की हड्डियां मिली हैं, उनमें लम्बी खोपड़ी वाले और चौड़ी खोपड़ी वाले दोनों तरह के लोग मिलते हैं और इनके बीच के मिले जुले भी मिलते हैं.

अब हम यह देखेंगे कि पुराने संस्कृत साहित्य में 'आर्य' शब्द किन अर्थों में आया है. मेरा कहना है कि जाति के अर्थों में यह शब्द कहीं आया ही नहीं. यह शब्द जहां भी आया है 'सभ्य', 'शिष्ट', 'श्रेष्ठ', 'उदार' आदि माइनों में आया है. महीधर के मुताबिक आर्य शब्द का अर्थ पहले वैश्य होता था. 'वाजसनेय संहिता' और 'शतपथ ब्राह्मन' में भी यह शब्द इन्हीं अर्थों में इस्तेमाल हुआ है. और अधिक शुरू में आर्य शब्द का अर्थ 'किसान' होता था. इन्हीं अर्थों में वेदों में 'शूद्रार्यों' समास आता है. ऋग्वेद में (1.51.8) ऊपर के तीन वर्नों के लोगों को 'आर्य' कहा गया है. आर्य का उलटा 'दास' है (1.51.89). कहीं कहीं यह शब्द सिर्फ वैश्य के लिये भी आया है. आम तौर पर ऋग्वेद में आर्य शब्द का अर्थ होता है 'ईमानदार', 'दयावान', 'नेक', 'स्वामी', 'सभ्य', (ऋग्वेद 1.13.8. 4.30.18.5,34.9). वेदों के बाद संस्कृत साहित्य में भी यह शब्द इसी तरह के अर्थों में आता है, खास जाति के अर्थों में कहीं नहीं आता. रामायन में राक्षस इन्द्रजीत ने जहां अपने चचा विभीषन को उसकी दगा के लिये मलामत (लानत) की है, वहां उसे 'अनार्य' कहा गया है.

ویدک ساهتیہ (ادب) میں یا سنسکرت ساهتیہ میں 'آریہ' کسی خاص نسل یا جاتی کا نام نہیں ھے . یورپ والوں کے مطابق 'آریہ' قوم کے لوگوں کے بال سنہرے رنگ کے ہوتے تھے . لیکن ویدک ساهتیہ میں جگہ جگہ اُس سمے کے براهمنوں کے 'کالے بالوں' کا ذکر آتا ھے . سچ یہ ھے کہ جن لوگوں کو آریہ کہا جاتا ھے' وے اگر کہیں باہر سے بھی اِس دیش میں آئے تب بھی وہ جن دیشوں میں ھو کر آئے' وهاں کے پرانے باشندوں سے ملتے جلتے اور اُن سے بیاہ شادی کرتے ہوئے آئے . جب وے یہاں پہنچے تو وے دنیا کی اور جاتیوں سے الگ کوئی ایک خاص جاتی نہیں رہ گئے تھے . سرجان مارشل نے بھی لکھا ھے کہ—" جہاں تک اتہاس سے پتہ چلتا ھے سندھ اور پنجاب کے لوگوں میں بہت سی جاتیاں ملی ہوئی تھیں' اور ہمیں یہ ماننے کے لئے کوئی سبب نہیں دکھائی دیتا کہ اِس سے پہلے کے زمانے میں بھی یہاں کے سب لوگ کسی ایک الگ نسل کے رہے ھوں ." اصل میں 'آریہ' شبد سے مراد ایک خاص سبھیتا یا ایک خاص سنسکرتی سے ھے' کسی خاص جاتی سے نہیں . اِس طرح کی ہر سبھیتا میں کئی الگ الگ جاتیوں کے لوگ سماجک اور آرتھک وجہوں سے مل کر رہنے لگتے ھیں اور پھر رل مل کر ایک ھو جاتے ھیں . یہی حال آریوں کا تھا . ایک سبھیتا' ایک سنسکرتی یا ایک زبان ہونا الگ بات ھے' اور ایک نسل یا جاتی ہونا دوسری بات ھے . اِس کے علاوہ جہاں جہاں پرانے آریوں کی هڈیاں ملی ھیں' اُن میں لمبی کھوپڑی والے اور چوڑی کھوپڑی والے دونوں طرح کے لوگ ملتے ھیں اور اِن کے بیچ کے ملے جلے بھی ملتے ھیں .

اب هم یہ دیکھیں گے کہ پرانے سنسکرت ساهتیہ میں 'آریہ' شبد کن ارتھوں میں آیا ھے . میرا کہنا ھے کہ جاتی کے ارتھوں میں یہ شبد کہیں آیا ھی نہیں . یہ شبد جہاں بھی آیا ھے 'سبھیہ' 'ششٹ' 'شریشٹھ' 'اُدار' آدی معنوں میں آیا ھے . مہیدھر کے مطابق آریہ شبد کا ارتھ پہلے ویشیہ ہوتا تھا . 'واجسنئے سنہتا' اور 'شتپتھ براهمن' میں بھی یہ شبد انہیں ارتھوں میں استعمال ہوا ھے . اور آدھک شروع میں آریہ شبد کا ارتھ 'کسان' ہوتا تھا . انہیں ارتھوں میں ویدوں میں 'شودر آریو' سماس آتا ھے . رگ وید میں (1. 51 . 8) اوپر کے تین ورنوں کے لوگوں کو 'آریہ' کہا گیا ھے . آریہ کا الٹا 'داس' ھے (1 . 51 . 89) کہیں کہیں یہ شبد صرف ویش کے لئے بھی آیا ھے . عام طور پر رگ وید میں آریہ شبد کا ارتھ ہوتا ھے 'ایماندار' 'دیاوان' 'نیک' 'سوامی' 'سبھیہ' (رگ وید 1 13. 8. 4. 30. 18. 5,34.9). ویدوں کے بعد کے سنسکرت ساهتیہ میں بھی یہ شبد اِسی طرح کے ارتھوں میں آتا ھے' خاص جاتی کے ارتھ میں کہیں نہیں آتا . رامائن میں راکشس اندرجیت نے جہاں اپنے چچا وبھیکھن کو اُس کی دغا کے لئے ملامت (لانت) کی ھے' وهاں اسے 'اناریہ' کہا گیا ھے .

सिन्धु सभ्यता बनाम वैदिक सभ्यता

डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त

सिन्ध के अन्दर मोहन-जो-दड़ो में और पंजाब के अंदर हड़प्पा में जो नई खुदाइयां हुई हैं, उनसे हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता और संस्कृति पर नई रोशनी पड़ी है. दुनिया के विद्वान अन्त में किन नतीजों पर पहुंचेंगे, यह अभी नहीं कहा जा सकता. सर जान मार्शल ने, जो इस विद्या के सब से बड़े जानकार समझे जाते हैं, अपनी पुस्तक 'मोहन-जो-दड़ो एन्ड इन्डस वैली सिविलिज़ेशन' में लिखा है कि इस इलाक़े में आर्यों के आने से पहले, यानी ईसा से तीन चार हज़ार साल पहले, जो लोग रहते थे उनकी सभ्यता और उनकी संस्कृति बहुत ही ऊंचे दर्जे की थी. उनके मकान पक्की ईंटों के और कई कई मंज़िले होते थे, उनकी गलियां, बाज़ार और शहर बड़े ख़ूबसूरत बने हुए थे, शहरों में तन्दुरुस्ती और सफ़ाई का बहुत अच्छा इन्तज़ाम था वग़ैरह. उसके बाद जो आर्य लोग वहां पहुंचे, उनकी संस्कृति इनसे बहुत कम दर्जे की थी, यहां तक कि शुरू में इनके मकान कच्चे गारे के होते थे वग़ैरा; और सिन्धु की पुरानी सभ्यता और आर्य सभ्यता यह दोनों दो अलग अलग सभ्यतायें थीं.

सर जान मार्शल की इस राय का एक ख़ास असर यह हुआ कि दुनिया के जो लोग, ख़ास कर यूरोप के जो लोग, अपने को आर्य जाति कहकर और दुनिया को सबसे पहले सभ्य बनाने वाला बता कर, इसका घमंड किया करते थे, उनका घमंड कुछ हलका पड़ गया. यूरोप के विद्वानों में यह ख़ब्त इतना बढ़ गया था और अभी तक इतना बढ़ा हुआ है कि इङ्गलिस्तान, जर्मनी, फ़्रान्स, इटली आदि अलग अलग देशों के विद्वान यह साबित करने की कोशिशों में लगे हुये थे कि आर्य जाति के लोग सब से पहले उन्हीं के देश में पैदा हुए और वहीं से दुनिया भर में फैल कर उन्होंने दुनिया को सभ्य बनाया. गो कि दुनिया के ज़्यादातर विद्वानों का यही मत है कि आर्य जाति के लोग पहले पहल मध्य एशिया में पैदा हुये और वहां से सब जगह फैले.

जो हो, हम यहां यह दिखाना चाहते हैं कि 'आर्य' शब्द किसी ख़ास नसल के लोगों या किसी ख़ास जाति का वाचक नहीं है और न किसी ख़ास नसल के लोगों को इस बात का घमंड हो सकता है कि उन्होंने ही दुनिया को सब से पहले सभ्य बनाया.

سندھو سبھیتا بنام ویدک سبھیتا

ڈاکٹر بھوپیندر ناتھ دت

سندھ کے اندر موہن۔ جو۔ دڑو میں اور پنجاب کے اندر ھڑپا میں جو نئی کھدائیاں ہوئی ہیں' اُن سے ھندستان کی پرانی سبھیتا اور سنسکرتی پر نئی روشنی پڑی ھے۔ دنیا کے ودوان انت میں کن نتیجوں پر پہونچینگے' یہ ابھی نہیں کہا جا سکتا۔ سرجان مارشل نے' جو اِس ودیا کے سب سے بڑے جانکار سمجھے جاتے ہیں' اپنی پستک' موہن۔ جو۔ دڑو اینڈ انڈس ویلی سولیزیشن' میں لکھا ھے کہ اِس علاقہ میں آریوں کے آنے سے پہلے' یعنی عیسیٰ سے تین چار ھزار سال پہلے' جو لوگ رھتے تھے ان کی سبھیتا اور اُن کی سنسکرتی بہت ھی اونچے درجے کی تھی۔ اُن کے مکان پکی اینٹوں کے اور کئی کئی منزلے ھوتے تھے' اُن کی گلیاں' بازار اور شہر بڑے خوبصورت بنے ھوئے تھے' شہروں میں تندرستی اور صفائی کا بہت اچھا انتظام تھا وغیرہ۔ اِس کے بعد جو آریہ لوگ وھاں پہنچے' اِن کی سنسکرتی اِن سے بہت کم درجے کی تھی' یہاں تک کی شروع میں اِن کے مکان کچے گارے کے ھوتے تھے وغیرہ؛ اور سندھو کی پرانی سبھیتا اور آریہ سبھیتا یہ دونوں دو الگ الگ سبھیتائیں تھیں۔

سرجان مارشل کی اِس رائے کا ایک خاص اثر یہ ھوا کہ دنیا کے جو لوگ' خاص کر یورپ کے جو لوگ' اپنے کو آریہ جاتی کہ کر اور دنیا کو سب سے پہلے سبھیہ بنانے والا بتا کر' اِس کا گھمنڈ کیا کرتے تھے' اُنکا گھمنڈ کچھ ھلکا پڑ گیا. یورپ کے ودوانوں میں یہ خبط اتنا بڑھ گیا تھا اور ابھی تک اتنا بڑھا ھوا ھے کہ انگلستان' جرمنی' فرانس' اٹلی آدی الگ الگ دیشوں کے ودوان یہ ثابت کرنے کی کوششوں میں لگے ھوئے تھے کہ آریہ جاتی کے لوگ سب سے پہلے انھیں کے دیش میں پیدا ھوئے اور وھیں سے دنیا بھر میں پھیل کر اُنھوں نے دنیا کو سبھیہ بنایا۔ گوکہ دنیا کے زیادہتر ودوانوں کا یہی مت ھے کہ آریہ جاتی کے لوگ پہلے پہل مدھیہ ایشیا میں پیدا ھوئے اور وھاں سے سب جگہ پھیلے۔

جو ھو' ھم یہاں یہ دکھانا چاھتے ھیں کہ 'آریہ' شبد کسی خاص نسل کے لوگوں یا کسی خاص جاتی کا واچک نہیں ھے اور نہ کسی خاص نسل کے لوگوں کو اس بات کا گھمنڈ ھو سکتا ھے کہ اُنھوں نے ھی دنیا کو سب سے پہلے سبھیہ بنایا۔

फ़रवरी 1955 فروری

नया हिन्द   نیا ہند

जिल्द 19 جلد   नम्बर 2 نمبر

फरवरी 1955 فروری

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी   **ہندستانی کلچر سوسائٹی**

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद   145، مٹھی گنج، الہ آباد

नया हिन्द

इस नम्बर के ख़ास लेख | **اِس نمبر کے خاص لیکھ**

[illegible]

—[illegible]

[illegible]

—[illegible]

[illegible]

—[illegible]

[illegible]

—[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

—[illegible]

इसके अलावा | اسکے علاوہ

[illegible] … आदि

...तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद | ...ستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد

... 1955

इसके मुताल्लिक़ बहुत कुछ बुनियादी काम हिस्ट्री रिकार्ड कमीशन और उसकी रीजनल अनुसन्धान कमेटियों ने कर लिया है. पुरातत्त्व से भी हमें भारत के प्राचीन और मध्य-युग का इतिहास समझने में काफ़ी सहायता मिलती है. पुरातत्त्व (archaeology) इतिहास का लंगोटिया साथी है. तारीख़ी वाक़यात पुरातत्त्व की रोशनी में ज़्यादा साफ़ दिखाई देने लगते हैं. पुरातत्त्व के सिलसिले में अभी बेश-क़ीमत छानबीन बाक़ी है. अभी तक हम मोहन-जो-दड़ो और हड़प्पा के शिलालेख तक पढ़ने में कामयाब नहीं हो सके. चित्रकला, निर्मानकला और मूर्तिकला से इतिहास लिखने में जो मदद मिल सकती है वह पूरी तरह नहीं ली गई. मानव विज्ञान शास्त्र, नृवंश विद्या, पौरानिक कहानियां और मानव शास्त्र के अध्ययन से भी इतिहास लिखने में बहुत बड़ी सहायता मिलती है.

हमारे मुल्क में इस सिलसिले में कई संस्थायें बड़ा क़ीमती काम कर रही हैं. इनमें रायल एशियाटिक सोसाइटी, भारत इतिहासिक संशोधक मन्डल, भन्डारकर ओरियन्टल रिसर्च इन्स्टिट्यूट, बिहार, उड़ीसा, आन्ध्र और करनाटक की हिस्टारिकल रिसर्च सोसाइटीज़, उत्तरप्रदेश, पंजाब, महाकोशल और कलकत्ते की हिस्ट्री सोसाइटीज़, कामरूप अनुसन्धान समिति, बंगीय साहित्य परिषद, वारीन्द्र रिसर्च सोसाइटी, महाबोध सोसाइटी, इन्डियन सोसाइटी आफ़ ओरियन्टल आर्ट, इन्डियन रिसर्च इन्स्टिट्यूट, रामकृष्ण मिशन इन्स्टिट्यूट आफ़ कल्चर, वेंकटेश्वर ओरियन्टल इन्स्टिट्यूट, न्युमेसमैटिक सोसाइटी, भारतीय इतिहास परिषद, इन्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, इन्डियन हिस्टारिकल-रिकार्ड्स कमीशन, गांधी संस्कृति केन्द्र आदि संस्थायें प्रमुख हैं.

—विश्वम्भरनाथ पांडे

اِس کے متعلق بہت کچھ بنیادی کام هسٹری ریکارڈ کمیشن اور اُس کی ریجنل انوسندهان کمیٹیوں نے کر لیا هے . پراتتو سے بھی همیں بھارت کے پراچین اور مدهیہ یگ کا اِتیہاس سمجھنے میں کافی سہائتا ملتی هے . پراتتو (archaeology) اِتہاس کا لنگوٹیا ساتھی هے . تاریخی واقعات پراتتو کی روشنی میں زیادہ صاف دکھائی دینے لگتے هیں . پراتتو کے سلسلے میں ابھی بیش قیمت چھان بین باقی هے . ابھی تک هم موهن - جو - دڑو اور هڑپا کے شلالیکھ تک پڑھنے میں کامیاب نہیں هوسکے . چترکلا، نرمان کلا اور مورتی کلا سے اِتیہاس لکھنے میں جو مدد مل سکتی هے وہ پوری طرح نہیں لی گئی . مانو وگیان شاستر، نرونش ودیا، پوراڻک کہانیاں، اور مانو شاستر کے ادھین سے بھی اِتیہاس لکھنے میں بہت بڑی سہائتا ملتی هے .

همارے ملک میں اِس سلسلے میں کئی سنستھائیں بڑا قیمتی کام کر رهی هیں . اِن میں رایل ایشیاٹک سوسائٹی، بھارت اِتیہاسک سنشودهک منڈل، بھنڈارکر اورینٹل ریسرچ اِنسٹی ٹیوٹ، بہار، اُڑیسا، آندهر اور کرناٹک کی هسٹاریکل ریسرچ سوسائٹیز، اُترپردیش، پنجاب، مہاکوشل اور کلکتہ کی هسٹری سوسائٹیز، کامروپ، انوسندهان سمیتی، بنگیہ ساهتیہ پریشد، ویریندر ریسرچ سوسائٹی، مہابودھ سوسائٹی، اِنڈین سوسائٹی آف اورینٹل آرٹ، اِنڈین ریسرچ اِنسٹیٹیوٹ، رام کرشن مشن اِنسٹی ٹیوٹ آف کلچر، ویںکٹیشور اورینٹل اِنسٹی ٹیوٹ، نیومسمیٹک سوسائٹی، بھارتیہ اِتیہاس پریشد، اِنڈین هسٹری کانگریس، اِنڈین هسٹاریکل ریکارڈس کمیشن، گاندهی سنسکرتی کیندر آدی سنستھائیں پرمکھ هیں .

—وشومبھر ناتھ پانڈے

इस धरती पर जानदार चीजें रहती हैं. आदमी की नसल को यहां रहते हुये क़रीब तीस हजार बरस हो गये. सर जेम्स जीन्स की यह भी राय है कि हमारी यह धरती अभी दस लाख बरस और चल सकती है.

हमारी हिस्ट्री का यही अनोखापन है कि हम, जहां तक हमसे हो सकता है, पीछे जाने की कोशिश करते हैं क्योंकि जितनी तब्दीलियां और उलटफेर दुनिया में हुये हैं हम उन सब को समझना चाहते हैं. हमारे जमाने की सबसे बड़ी और सबसे चमकती हुई बात तब्दीली है. पुराने जमाने की बाबत जो कुछ सामग्री हमारे पास मौजूद है उससे पता चलता है कि उस जमाने में और भी बड़ी बड़ी तब्दीलियां हुई हैं. पर इन सब तब्दीलियों के अन्दर से हमें इतिहास की एक लगातार धारा, एक अटूट सिलसिला साफ़ नज़र आता है जिससे हमारा और पिछले जमाने के लोगों का नाता जुड़ जाता है. उसी अटूटपन की वजह से हम उन लोगों के दिलों और दिमाग़ों को थोड़ा बहुत समझ सकते हैं. उनकी दुनिया हमारी दुनिया से अलग दुनिया थी. फिर भी अलग अलग जमानों की यह सब दुनियायें एक डोर में बंधी हुई हैं. हिस्ट्री की कुंजी इन्हीं दो लफ़्ज़ों में है—तब्दीली और अटूटपन.

आज सवाल यह है कि हम अपने मुल्क की नई हिस्ट्री की शुरुआत कहां से करें. तारीख़ के विद्वान उसे अलग-अलग हिस्सों से शुरू करते हैं—Ancient, Mediaeval और Modern. हम जिस हिन्दुस्तान को जानते हैं वह हमारे जमाने का है. जिन लोगों को हम अच्छी तरह जानते हैं वह हम खुद हैं. हम जो हिस्ट्री बना सकते हैं वह इसी सामग्री और इन्हीं काग़ज़ों, सिक्कों, इमारतों, हड्डियों और दूसरी पुरानी चीज़ों से बना सकते हैं जो हम तक पहुंच पाई हैं. जिसे हम बीता जमाना कहते हैं उसका सब मसाला और गवाहियां आज हमारे चारों तरफ़ जमा हैं. ऐसी हालत में सब से अच्छा यही मालूम होता है कि हम अपने इस जमाने से शुरू करके पीछे को हटते हुये हिस्ट्री के शुरू तक पहुंचने की कोशिश करें.

जहां तक इतिहास की सामग्री का सवाल है नैशनल आर्चीज़, नैशनल लाइब्रेरी, मुख़्तलिफ़ सूबों में सरकारी रिकार्ड, देशी राजाओं और मठों में एकत्रित सामग्री महत्व-पूर्ण हैं. विदेशों की बहुत सी लाइब्रेरियों में बेशक़ीमत भारतीय रिकार्ड मौजूद हैं. लेकिन ग़ैर सरकारी रिकार्ड, जिनका थोड़ा सा हिस्सा हमारे सामने आया है, सरकारी रिकार्डों से भी ज्यादा क़ीमती साबित हो सकते हैं. सरकारी रिकार्डों में बहुत सी घटनाओं का अधूरा बयान मिलता है जो निजी रोज़नामचों, चिट्ठी पत्रियों, बयानों या दूसरे निजी काग़ज़ात से पूरा हो सकता है.

اس دھرتی پر جاندار چیزیں رہتی ہیں ۔ آدمی کی نسل کو یہاں رہتے ہوئے قریب تیس ہزار برس ہو گئے ۔ سر جیمس جینس کی یہ بھی رائے ہے کہ ہماری یہ دھرتی ابھی دس لاکھ برس اور چل سکتی ہے ۔

ہماری ہسٹری کا یہی انوکھاپن ہے کہ ہم، جہاں تک ہم سے ہو سکتا ہے، پیچھے جانے کی کوشش کرتے ہیں کیونکہ جتنی تبدیلیاں اور اُلٹ پھیر دنیا میں ہوئے ہیں ہم اُن سب کو سمجھنا چاہتے ہیں ۔ ہمارے زمانے کی سب سے بڑی اور سب سے چمکتی ہوئی بات تبدیلی ہے ۔ پرانے زمانے کی بابت جو کچھ سامگری ہمارے پاس موجود ہے اُس سے پتہ چلتا ہے کہ اُس زمانے میں اور بھی بڑی بڑی تبدیلیاں ہوئی ہیں ۔ پر ان سب تبدیلیوں کے اندر سے ہمیں اتہاس کی ایک لگاتار دھارا ایک اٹوٹ سلسلہ صاف نظر آتا ہے جس سے ہمارا اور پچھلے زمانے کے لوگوں کا ناتا جڑ جاتا ہے ۔ اُسی اٹوٹ پن کی وجہ سے ہم اُن لوگوں کے دلوں اور دماغوں کو تھوڑا بہت سمجھ سکتے ہیں ۔ اُن کی دنیا ہماری دنیا سے الگ دنیا تھی ۔ پھر بھی الگ الگ زمانوں کی یہ سب دنیائیں ایک ڈور میں بندھی ہوئی ہیں ۔ ہسٹری کی کنجی انہیں دو لفظوں میں ہے — تبدیلی اور اٹوٹ پن ۔

آج سوال یہ ہے کہ ہم اپنے ملک کی نئی ہسٹری کی شروعات کہاں سے کریں ۔ تاریخ کے ودوان اُسے الگ الگ حصوں سے شروعات کرتے ہیں — Ancient, Mediaeval اور Modern. ہم جس ہندوستان کو جانتے ہیں وہ ہمارے زمانے کا ہے ۔ جن لوگوں کو ہم اچھی طرح جانتے ہیں وہ ہم خود ہیں ۔ ہم جو ہسٹری بنا سکتے ہیں وہ اِسی سامگری اور انہیں کاغذوں، سکوں، عمارتوں، ہڈیوں اور دوسری پرانی چیزوں سے بنا سکتے ہیں جو ہم تک پہونچ پائی ہیں ۔ جسے ہم بیتا زمانہ کہتے ہیں اُس کا سب مصالحہ اور گواہیاں آج ہمارے چاروں طرف جمع ہیں ۔ ایسی حالت میں سب سے اچھا یہی معلوم ہوتا ہے کہ ہم اپنے اِس زمانے سے شروع کر کے پیچھے کو ہٹتے ہوئے ہسٹری کے شروع تک پہونچنے کی کوشش کریں ۔

جہاں تک اِتہاس کی سامگری کا سوال ہے نیشنل آرچیوز، نیشنل لائبریری، مختلف صوبوں میں سرکاری ریکارڈ، دیشی راجاؤں اور مٹھوں میں ایکترت سامگری مہتوپورن ہیں ۔ ودیشوں کی بہت سی لائبریریوں میں بیش قیمت بھارتیہ ریکارڈ موجود ہیں ۔ لیکن غیر سرکاری ریکارڈ جن کا تھوڑا سا حصہ ہمارے سامنے آیا ہے سرکاری ریکارڈوں سے بھی زیادہ قیمتی ثابت ہوسکتے ہیں ۔ سرکاری ریکارڈوں میں بہت سی گھٹناؤں کا ادھورا بیان ملتا ہے جو نجی روزنامچوں، چٹھی پتریوں، بیانوں یا دوسرے نجی کاغذات سے پورا ہوسکتا ہے ۔

सिफ़र बनने के लिये नहीं. हमें अफ़सोस है जब हम गान्धी जी के असूलों पर लोगों को कसकर देखते हैं तो अभी तक चारों ओर महज़ सिफ़र ही सिफ़र नज़र आते हैं. लेकिन मायूस होने की बात नहीं. गान्धी जी के अर्थों में विनोबा जैसे समाजवादी अपनी ताक़त को दसियों, सैकड़ों और हज़ारों गुना बढ़ाते हुये भारत में सच्चे समाजवाद की दाग़बेल डालते हुये आगे बढ़ रहे हैं.

—विश्वम्भरनाथ पांडे

इतिहास की नई सामग्री

पिछले महीने अहमदाबाद में कुल हिन्द हिस्ट्री कांग्रेस का इजलास हुआ था. और बातों के साथ उसने इतिहास (तारीख़) के अध्ययन के लिये इतिहास की सामग्री के दायरे को ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ाने पर ज़ोर दिया ताकि तारीख़ी छान बीन के काम में आसानी हो.

हिस्ट्री कांग्रेस के ये इजलास हर साल होते हैं जिनमें इतिहास की छानबीन पर हर साल नई रोशनी डाली जाती है. हमारे देश के इतिहास के विद्वान पिछली चौथाई सदी से इस बात की ज़ोरदार कोशिश कर रहे हैं कि हमारे देश के इतिहास की—पुराने इतिहास की, मंझले ज़माने के इतिहास की और मौजूदा इतिहास की सिलसिलेवार कड़ियां इकट्ठा की जायं. इस ज़माने के अन्दर पिछले इतिहास की सामग्री इतनी तेज़ी के साथ बढ़ी है कि जैसी पहले कभी नहीं बढ़ी थी. आज से 50 बरस पहले इतिहास के ऐसे विद्वान थे जो समझते थे कि कुल इतिहास हज़रत ईसा से चार हज़ार बरस पहले शुरू होता था. पर अब यह ज़माना बड़ा लम्बा होता जाता है. क़रीब क़रीब हर साल पुराने इतिहास की खोज करने वाले किसी न किसी ऐसी पुरानी सभ्यता को खोदकर हमारे सामने रख देते हैं कि जिसका पहले से हमें गुमान भी नहीं रहता. इन पुराने शहरों और पुरानी सभ्यताओं को खोदकर निकालने वालों के अलावा जब हम ज़मीन के अन्दर की चीज़ों का पता लगाने वालों, आदमियों और जानवरों की पुरानी नसलों का पता लगाने वालों और दूसरे तरह तरह के साइन्स वालों की खोजों और ईजादों पर निगाह डालते हैं तो पहले हमें पता चलता है कि हमारी हिस्ट्री हज़ारों बरस पहले से शुरू होनी चाहिये और फिर हम धीरे धीरे लाखों बरस पीछे तक पहुंच जाते हैं, यहांतक कि हमारा सिर चकराने लगता है. हमें पता चलता है कि जितना हम समझे थे हिस्ट्री उससे कहीं लम्बी और पुरानी चीज़ है.

हिस्ट्री में हम कितना पीछे जा सकते हैं ? हमारी इस ज़मीन की उमर का अन्दाज़ा क़रीब क़रीब दो अरब बरस किया जाता है. कहा जाता है कि क़रीब 30 करोड़ बरस मे

صفر بننے کے لئے نہیں . ھمیں افسوس ھے جب ھم گاندھی جی کے اصولوں پر لوگوں کو کس کر دیکھتے ھیں تو ابھی تک چاروں اور محض صفر ھی صفر نظر آتے ھیں . لیکن مایوس ھونے کی بات نہیں . گاندھی جی کے ارتھوں میں ونوبا جیسے سماج وادی اپنی طاقت کو دسیوں، سیکڑوں اور ھزاروں گنا بڑھاتے ھوئے بھارت میں سچے سماج واد کی داغ بیل ڈالتے ھوئے آگے بڑھ رھے ھیں .

—وشومبھر ناتھ پانڈے

اِتہاس کی نئی سامگری

پچھلے مہینے احمدآباد میں کل ھند ھسٹری کانگریس کا اِجلاس ھوا تھا . اور باتوں کے ساتھ اُس نے اتہاس (تاریخ) کے ادھین کے لئے اتہاس کی سامگری کے دائرے کو زیادہ سے زیادہ بڑھانے پر زور دیا تاکہ تاریخی چھان بین کے کام میں آسانی ھو .

ھسٹری کانگریس کے یہ اجلاس ھر سال ھوتے ھیں جن میں اتہاس کی چھان بین پر ھر سال نئی روشنی ڈالی جاتی ھے . ھمارے دیش کے اتہاس کے ودوان پچھلی چوتھائی صدی سے اِس بات کی زوردار کوشش کر رھے ھیں کہ ھمارے دیش کے اتہاس کی—پرانے اتہاس کی، منجھلے زمانے کے اتہاس کی اور موجودہ اِتہاس کی سلسلہ وار کڑیاں اِکٹھا کی جائیں . اِس زمانے کے اندر پچھلے اِتہاس کی سامگری اِتنی تیزی کے ساتھ بڑھی ھے کہ جیسی پہلے کبھی نہیں بڑھی تھی . آج سے 50 برس پہلے اِتہاس کے ایسے ودوان تھے جو سمجھتے تھے کہ کل اِتہاس حضرت عیسیٰ سے چار ھزار برس پہلے شروع ھوتا تھا . پر اب یہ زمانہ بڑا لمبا ھوتا جاتا ھے . قریب قریب ھر سال پرانے اِتہاس کی کھوج کرنے والے کسی نہ کسی ایسی پرانی سبھیتا کو کھود کر ھمارے سامنے رکھ دیتے ھیں کہ جس کا پہلے سے ھمیں گمان بھی نہیں رھتا . اِن پرانے شہروں اور پرانی سبھیتا کو کھود کر نکالنے والوں کے علاوہ جب ھم زمین کے اندر کی چیزوں کا پتہ لگانے والوں، آدمیوں اور جانوروں کی پرانی نسلوں کا پتہ لگانے والوں اور دوسرے طرح طرح کے سائنس والوں کی کھوجوں اور ایجادوں پر نگاہ ڈالتے ھیں تو پہلے ھمیں پتہ چلتا ھے کہ ھماری ھسٹری ھزاروں برس پہلے سے شروع ھونی چاھئے اور پھر ھم دھیرے دھیرے لاکھوں برس پیچھے تک پہونچ جاتے ھیں، یہاں تک کہ ھمارا سر چکرانے لگتا ھے . ھمیں پتہ چلتا ھے کہ جتنا ھم سمجھے تھے ھسٹری اُس سے کہیں لمبی اور پرانی چیز ھے .

ھسٹری میں ھم کتنا پیچھے جا سکتے ھیں ؟ ھماری اِس زمین کی عمر کا اندازہ قریب قریب دو ارب برس کیا جاتا ھے . کہا جاتا ھے کہ قریب 30 کروڑ برس سے

"कोई असत्य से सत्य को नहीं पा सकता. सत्य को पाने के लिये हमेशा सत्य का आचरन करना ही होगा. क्या अहिंसा और सत्य की जोड़ी है ? नहीं. सत्य में अहिंसा छिपी हुई है और अहिंसा में सत्य. इसीलिये मैंने कहा है कि अहिंसा और सत्य एक ही सिक्के के दो रुख हैं. दोनों की क़ीमत एक ही है. केवल पढ़ने मे ही फ़र्क़ है. एक तरफ़ अहिंसा है दूसरी तरफ़ सत्य. जहां तक मैं जानता हूं दुनिया में कोई भी ऐसा देश नहीं है जो पूरी तरह समाजवादी हो. मेरे बताये हुये साधनों के बिना ऐसा समाज क़ायम करना नामुमकिन है."

हम गान्धी जी के ये विचार बड़ी विनम्रता के साथ कांग्रेस जनों के सोचने-विचारने के लिये पेश करते हैं. समाजवाद का सिर्फ़ प्रस्ताव पास कर देने से मुल्क में समाजवाद की बुनियाद नहीं पड़ जायगी. वह तभी पड़ेगी जब रास्ता दिखानेवाले अगुआ अपनी जिन्दगी में उसके उसूलों पर अमल करने लगे तभी हर सिफ़र के साथ उनकी क़ीमत दस गुनी बढ़ती जायगी. सुनहली वर्दीधारी अरदलियों, प्राइवेट सेक्रेटरियों, डीलक्स कारों, सैलूनों और हवाई सफ़रों की तड़क भड़क के बीच में ठीक किस जगह समाजवाद शुरू होगा यह हम नहीं समझ रहे. सन 1938 में गान्धी जी ने कांग्रेस के वज़ीरों को हिदायत देते हुये लिखा था कि उन्हें तीसरे दरजे मे सफ़र करना चाहिये ताकि वे जनता के सम्पर्क मे रहें. उन्हें सरकारी मोटरों को सिर्फ़ सरकारी कामो के लिये इस्तेमाल करना चाहिये. ग़ैर सरकारी काम के वक़्त उन्हें किराये की सवारियां इस्तेमाल करना चाहिये. उन्हें कोई भी ऐसा काम नहीं करना चाहिये जिससे उनके और जनता के बीच में एक दीवार खड़ी हो जाय.

हमें ख़ुशी है कि कांग्रेस ने एक सादगी कमेटी मुक़र्रर की थी जिसने ये सुझाव दिये हैं कि वज़ीरों की ज़िन्दगी में जो तड़क भड़क आ गई है उससे जनता और उनकी जिन्दगी मे एक खाई सी पैदा हो गई है. इस खाई को भरने के लिये फिर से सादगी के मयार क़ायम करने की जरूरत है. सुझावों मे तनख़्वाह कम करने, बढ़िया मोटरें न इस्तेमाल करने और सादगी लाने पर ज़ोर दिया गया है.

जहां एक ओर कांग्रेस वालों से हमारा यह सवाल है वहां दूसरी ओर वामपक्षी दलों से भी हमारा अनुरोध है कि समाजवाद या साम्यवाद को उन्होने अपनी जिन्दगी मे कितना उतारा ? वे ख़ुद एक हुये या महज़ सिफ़र ही हैं ? उनके जीवन में सादगी, सचाई और अहिंसा ने कितना घर बनाया है ? वे एक क़दम आगे बढ़कर देशवासियो को उमीदें दिला रहे हैं मगर गान्धी जी की बताई हुई कसौटी पर जनता उन्हें कस कर देखेगी और तब उनके साथ क़ीमत को दस गुना करने की ख़्वाहिश लेकर साथ होगी महज़

"کوئی استیہ سے ستیہ کو نہیں پاسکتا ۔ ستیہ کو پانے کے لئے ہمیشہ ستیہ کا آچرن کرنا ہی ہوگا ۔ کیا اہنسا اور ستیہ کی جوڑی ہے ؟ نہیں ۔ ستیہ میں اہنسا چھپی ہوئی ہے اور اہنسا میں ستیہ ۔ اِسی لئے میں نے کہا ہے کہ اہنسا اور ستیہ ایک ہی سکے کے دو رخ ہیں ۔ دونوں کی قیمت ایک ہی ہے ۔ کیول پڑھنے میں ہی فرق ہے ۔ ایک طرف اہنسا ہے دوسری طرف ستیہ ۔ جہاں تک میں جانتا ہوں دنیا میں کوئی بھی ایسا دیش نہیں ہے جو پوری طرح سماجوادی ہو ۔ میرے بتائے ہوئے سادھنوں کے بنا ایسا سماج قائم کرنا ناممکن ہے ۔"

ہم گاندھی جی کے یہ وچار بڑی ونمرتا کے ساتھ کانگریس جنوں کے سوچنے وچارنے کے لئے پیش کرتے ہیں ۔ سماجواد کا صرف پرستاؤ پاس کردینے سے ملک میں سماجواد کی بنیاد نہیں پڑ جائیگی ۔ وہ تبھی پڑیگی جب راستہ دکھانے والے اگوا اپنی زندگی میں اُس کے اصولوں پر عمل کرنے لگیں تبھی ہر صفر کے ساتھ اُن کی قیمت دس گنی بڑھتی جا ئیگی ۔ سنہری وردیدھاری اردلیوں، پرائیویٹ سکریٹریوں، ڈیلکس کاروں، سیلونوں اور ہوائی سفروں کی تڑک بھڑک کے بیچ میں ٹھیک کس جگہ سماجواد شروع ہوگا یہ ہم نہیں سمجھ رہے ۔ سن 1938 میں گاندھی جی نے کانگریس کے وزیروں کو ہدایت دیتے ہوئے لکھا تھا کہ اُنھیں تیسرے درجے میں سفر کرنا چاہئے تاکہ وے جنتا کے سمپرک میں رہیں ۔ اُنھیں سرکاری موٹروں کو صرف سرکاری کاموں کے لئے استعمال کرنا چاہئے ۔ غیر سرکاری کام کے وقت اُنھیں کرائے کی سواریاں استعمال کرنا چاہئے ۔ اُنھیں کوئی بھی ایسا کام نہیں کرنا چاہئے جس سے اُن کے اور جنتا کے بیچ میں ایک دیوار کھڑی ہو جائے ۔

ہمیں خوشی ہے کہ کانگریس نے ایک سادگی کمیٹی مقرر کی تھی جس نے یہ سجھاؤ دئے ہیں کہ وزیروں کی زندگی میں جو تڑک بھڑک آگئی ہے اُس سے جنتا اور اُن کی زندگی میں ایک کھائی سی پیدا ہوگئی ہے ۔ اِس کھائی کو بھرنے کے لئے پھر سے سادگی کے معیار قائم کرنے کی ضرورت ہے ۔ سجھاؤں میں تنخواہ کم کرنے، بڑھیا موٹریں نہ استعمال کرنے اور سادگی لانے پر زور دیا گیا ہے ۔

جہاں ایک اور کانگریس والوں سے ہمارا یہ سوال ہے وہاں دوسری اور وامپکشی دلوں سے بھی ہمارا انورودھ ہے کہ سماجواد یا سامیہواد کو اُنھوں نے اپنی زندگی میں کتنا اُتارا ؟ وے خود ایک ہوئے یا محض صفر ہی ہیں ؟ اُن کے جیون میں سادگی، سچائی اور اہنسا نے کتنا گھر بنایا ہے ؟ وے ایک قدم آگے بڑھکر دیشواسیوں کو اُمیدیں دلا رہے ہیں مگر گاندھی جی کی بتائی ہوئی کسوٹی پر جنتا اُنھیں کس کر دیکھے گی اور تب اُن کے ساتھ قیمت کو دس گنا کرنے کی خواہش لیکر ساتھ ہوگی محض

हम यहां हरिजन के सम्पादक और कांग्रेस के नेताओं और कार्यकर्ताओं का ध्यान पूज्य महात्मा गांधी की समाजवादी की व्याख्या की ओर दिलाना चाहते हैं. गांधी जी ने 6 जुलाई सन '47 को दिल्ली से 'समाजवादी कौन' सुर्खी से लिखा था :—

"समाजवाद एक सुन्दर शब्द है. जहां तक मैं जानता हूं समाजवाद में समाज के सारे मेम्बर बराबर होते हैं, न कोई नीचा और न कोई ऊंचा. किसी आदमी के शरीर में सिर इसलिये ऊंचा नहीं है कि वह सब से ऊपर है और पांव के तलवे इसलिये नीचे नहीं हैं कि वह जमीन को छूते हैं. जिस तरह इनसान के जिस्म के तमाम हिस्से बराबर हैं उसी तरह समाज रूपी शरीर के सभी अंग बराबर हैं. यही समाजवाद है.

"इस वाद में राजा और प्रजा, धनी और ग़रीब, मालिक और मजदूर सब बराबर हैं. इस तरह समाजवाद यानी अद्वैतवाद. उसमें दुई या भेदभाव की गुंजाइश ही नहीं है.

"सारी दुनिया के समाज पर नजर डालें तो हम देखेंगे कि हर जगह दुई है. एकता या अद्वैत कहीं नाम को भी नहीं दिखाई देता. यह आदमी ऊंचा है, वह आदमी नीचा है. यह हिन्दू है वह मुसलमान है, तीसरा ईसाई है, चौथा पारसी है, पांचवां सिख है, छठा यहूदी है. इनमें भी बहुत सी उपजातियां हैं. मेरे अद्वैतवाद में यह सब एक हो जाते हैं, एकता में समा जाते हैं.

"इस वाद तक पहुंचने के लिये हम एक दूसरे की तरफ़ ताकते न बैठें. जब तक सारे लोग समाजवादी न बन जायें, तब तक हम कोई हलचल न करें, अपनी जिन्दगी में फेर-फार करके हम महज़ तक़रीर देते रहें, पार्टियां बनाते रहें और बाज़ पक्षी की तरह जहां शिकार मिल जाय वहां उस पर टूट पड़ें, यह समाजवाद हरगिज़ नहीं है. समाजवाद जैसी शानदार चीज़ झड़प मारने से हम से दूर हो जाने वाली है.

"समाजवाद की शुरूआत पहले समाजवादी से होती है. अगर एक भी ऐसा समाजवादी हो, तो उस पर सिफ़र बढ़ाये जा सकते हैं. पहले सिफ़र से उसकी क़ीमत दस गुनी हो जायगी. इसके बाद बढ़ाया जाने वाला हर सिफ़र पहले की तादाद को दस गुनी बढ़ाता जायगा. लेकिन अगर पहला सिफ़र ही हो तो उसके आगे कितने ही सिफ़र क्यों न बढ़ाये जायें उनकी क़ीमत सिफ़र ही रहेगी. सिफ़रों के लिखने में मेहनत और काग़ज़ की बरबादी ही होगी.

"यह समाजवाद बड़ी शुद्ध चीज़ है. राजा को मार कर राजा और प्रजा एक से नहीं बन सकेंगे. मालिक का सिर काट कर मज़दूर मालिक नहीं हो सकेंगे. यही बात सब पर लागू की जा सकती है.

ہم یہاں ہریجن کے سمپادک اور کانگریس کے نیتاؤں اور کاریہ‌کرتاؤں کا دھیان پوجیہ مہاتما گاندھی کی سماج‌وادی کی ویاکھیا کی اور دلانا چاہتے ہیں. گاندھی جی نے 6 جولائی سن '47 کو دلی سے 'سماج وادی کون' سرخی سے لکھا تھا :—

" سماج واد ایک سندر شبد ہے. جہاں تک میں جانتا ہوں سماج‌واد میں سماج کے سارے میمبر برابر ہوتے ہیں' نہ کوئی نیچا اور نہ کوئی اونچا. کسی آدمی کے شریر میں سر اس لئے اونچا نہیں ہے کہ وہ سب سے اوپر ہے اور پاؤں کے تلوے اس لئے نیچے نہیں ہیں کہ وہ زمین کو چھوتے ہیں جس طرح انسان کے جسم کے تمام حصے برابر ہیں اسی طرح سماج روپی شریر کے سبھی انگ برابر ہیں. یہی سماج‌واد ہے.

" اس واد میں راجا اور پرجا' دھنی اور غریب' مالک اور مزدور سب برابر ہیں. اس طرح سماج واد یعنی ادویت واد. اس میں دوئی یا بھید بھاو کی گنجائش ہی نہیں ہے.

" ساری دنیا کے سماج پر نظر ڈالیں تو ہم دیکھیں گے کہ ہر جگہ دوئی ہے. ایکتا یا ادویت کہیں نام کو بھی نہیں دکھائی دیتا. یہ آدمی اونچا ہے' وہ آدمی نیچا ہے. یہ ہندو ہے وہ مسلمان ہے' تیسرا عیسائی ہے' چوتھا پارسی ہے' پانچواں سکھ ہے' چھٹا یہودی ہے. ان میں بھی بہت سی اپجاتیاں ہیں. میرے ادویت واد میں سب ایک ہو جاتے ہیں' ایکتا میں سما جاتے ہیں.

" اس واد تک پہونچنے کے لئے ہم ایک دوسرے کی طرف تاکتے نہ بیٹھیں. جب تک سارے لوگ سماج‌وادی نہ بن جائیں' تب تک ہم کوئی ہل چل نہ کریں' اپنی زندگی میں پھیر پھار کر کے ہم محض تقریر دیتے رہیں' پارٹیاں بناتے رہیں اور باز پکشی کی طرح جہاں شکار مل جائے وہاں اس پر ٹوٹ پڑیں' یہ سماج واد ہرگز نہیں ہے. سماج واد جیسی شاندار چیز جھڑپ مارنے سے ہم سے دور ہو جانے والی ہے.

" سماج واد کی شروعات پہلے سماج‌وادی سے ہوتی ہے. اگر ایک بھی ایسا سماج‌وادی ہو' تو اس پر صفر بڑھائے جا سکتے ہیں. پہلے صفر سے اس کی قیمت دس گنی ہو جائے گی. اس کے بعد بڑھایا جانے والا ہر صفر پہلے کی تعداد کو دس گنی بڑھاتا جائے گا. لیکن اگر پہلا صفر ہی ہو تو اس کے آگے کتنے ہی صفر کیوں نہ بڑھائے جائیں اس کی قیمت صفر ہی رہے گی. صفروں کے لکھنے میں محنت اور کاغذ کی بربادی ہی ہوگی.

" یہ سماج‌واد بڑی شدھ چیز ہے. راجا کو مار کر راجا اور پرجا ایک سے نہیں بن سکیں گے. مالک کا سر کاٹ کر مزدور مالک نہیں ہو سکیں گے. یہی بات سب پر لاگو کی جا سکتی ہے.

हमें खुशी है कि सिवाय फ़िलिप्पाइन के सभी मुल्क हमदर्दी के साथ इस दावतनामे पर ग़ौर कर रहे हैं. एशिया और अफ़रीक़ा के ये 25 मुल्क, जिनकी आबादी दुनिया की दो-तिहाई होती है, एक ज़बरदस्त शान्ति मोरचे का काम देंगे. चीन, हिन्देशिया, हिन्द-चीन, और जापान एक तरफ़, ईरान, मिस्र, इराक़, सऊदी अरब और यमन दूसरी तरफ़ यूरोप और अमरीका की साम्राज्वादी नीति से सताये हुये हैं. एशिया और यूरोप की करोड़हा करोड़ जनता साम्राज्य-वादियों की नीति के कारन आज अशिक्षा, भूक, नंग, बीमारी और बेकारी का शिकार है. आज इन दोनों महाद्वीपों के नेताओं का फ़र्ज़ है कि वह डेढ़ अरब से ज़्यादा इनसान के बच्चों का स्तर ऊंचा उठायें, उन्हें नंग और भूक से बचायें और इनसानी ज़िन्दगी की ज़रूरी नियामतें उनके लिये भी मोहय्या करें.

इस नुक़्तेनज़र से यह एफ़रेशियन कान्फ्रेंस पिछड़े हुये ख़ित्ते को आगे बढ़ाने का एक ज़बरदस्त अमली क़दम है. दूसरी ओर अगर यह मुल्क यह भी फ़ैसला करें कि उन्हें शहनशाहतों की ख़ौफ़नाक जंगों से अपने को अलहदा रखना है तो इसमें किसी को हैरानी न होनी चाहिये. तीसरी जंग को रोकने का इससे ज़बरदस्त तरीक़ा कोई दूसरा नहीं है कि एशिया और अफ़रीक़ा के निवासी गोरे साम्राज्यवादियों से साफ़ साफ़ यह कह दें कि हम तुम्हारी किसी लड़ाई में जंगी-चारे (Cannon-fodder) का काम न देंगे.

ख़ुशी की बात है कि पंडित जवाहर लाल के बयान के मुताबिक़, निमंत्रित मुल्कों में से ज़्यादातर के कान्फ्रेन्स में शामिल होने के लिये रज़ामन्दी देने वाले जवाब आ चुके हैं. सारी दुनिया दिलचस्पी के साथ इस कान्फ्रेन्स के फ़ैसलों का रास्ता देखेगी.

—विश्वम्भरनाथ पांडे

ہمیں خوشی ہے کہ سوائے فلپائن کے سبھی ملک ہمدردی کے ساتھ اِس دعوت نامہ پر غور کر رہے ہیں۔ ایشیا اور افریقہ کے یہ 25 ملک جن کی آبادی دنیا کی دو - تہائی ہوتی ہے، ایک زبردست شانتی مورچے کا کام دیں گے۔ چین، ہند - ایشیا، ہند - چین، اور جاپان ایک طرف، ایران، مصر، عراق، سعودی عرب اور یمن دوسری طرف یورپ اور امریکہ کی سامراجیہ وادی نیتی سے ستائے ہوئے ہیں۔ ایشیا اور یورپ کی کروڑہا کروڑ جنتا سامراجیہ وادیوں کی نیتی کے کارن آج اشکشا، بھوک، ننگ، بیماری اور بیکاری کا شکار ہے۔ آج اِن دونوں مہادیپوں کے نیتاؤں کا فرض ہے کہ وہ ڈیڑھ ارب سے زیادہ اِنسان کے بچوں کا استر اونچا اٹھائیں، اُنہیں ننگ اور بھوک سے بچائیں اور اِنسانی زندگی کی ضروری نعمتیں اُن کے لئے بھی مہیا کریں۔

اِس نقطہ نظر سے یہ ایفریشین کانفرنس پچھڑے ہوئے خطہ کو آگے بڑھانے کا ایک زبردست عملی قدم ہے۔ دوسری اور اگر یہ ملک یہ بھی فیصلہ کریں کہ اُنہیں شہنشاہتوں کی خوفناک جنگوں سے اپنے کو علیحدہ رکھنا ہے تو اِس میں کسی کو حیرانی نہ ہونی چاہئے۔ تیسری جنگ کو روکنے کا اِس سے زبردست طریقہ کوئی دوسرا نہیں ہے کہ ایشیا اور افریقہ کے نواسی گورے سامراجیہ وادیوں سے صاف صاف یہ کہہ دیں کہ ہم تمہاری کسی لڑائی میں جنگی - چارے (Cannon-fodder) کا کام نہ دینگے۔

خوشی کی بات ہے کہ پنڈت جواہر لال کے بیان کے مطابق نمنترت ملکوں میں سے زیادہ تر کے کانفرنس میں شامل ہونے کے لئے رضامندی دینے والے جواب آچکے ہیں۔ ساری دنیا دلچسپی کے ساتھ اِس کانفرنس کے فیصلوں کا راستہ دیکھے گی۔

—وشومبھر ناتھ پانڈے

समाजवादी व्यवस्था की ओर

कांग्रेस के अवाड़ी (मद्रास) इजलास ने लोक कल्यान-कारी राज व्यवस्था की जगह अपना मक़सद बदल कर समाजवादी व्यवस्था कर लिया. महात्मा गांधी द्वारा संस्थापित पत्र 'हरिजन' ने इस पर शुरू में ही नुक्ताचीनी करते हुये लिखा था कि अपने लक्ष्य को इस सस्ते तरीक़े से कांग्रेस को नहीं बदलना चाहिये. दो-एक तरमीमें, जो कांग्रेस का लक्ष्य 'सर्वोदय' रखना चाहती थीं गिर गईं. मौलाना आज़ाद ने तक़रीर करते हुये यह कहा कि बज़ात ख़ुद लफ़्ज़ों की कोई अहमियत नहीं होती. समाजवाद के अन्दर सर्वोदय की भी पूरी गुंजाइश है.

سماج وادی ویوستھا کی اور

کانگریس کی اواڑی (مدراس) اجلاس نے لوک کلیانکاری راج ویوستھا کی جگہ اپنا مقصد بدل کر سماج وادی ویوستھا کر لیا۔ مہاتما گاندھی دوارا سنستھاپت پتر 'ہریجن' نے اِس پر شروع میں ہی نکتہ چینی کرتے ہوئے لکھا تھا کہ اپنے لکش کو اِس سستے طریقے سے کانگریس کو نہیں بدلنا چاہئے۔ دو - ایک ترمیمیں، جو کانگریس کا لکش 'سروودے' رکھنا چاہتی تھیں گر گئیں۔ مولانا آزاد نے تقریر کرتے ہوئے یہ کہا کہ بذات خود لفظوں کی کوئی اہمیت نہیں ہوتی۔ سماج واد کے اندر سروودے کی بھی پوری گنجائش ہے۔

साम्राज्यवादी हुक्मरां और पूंजीशाह अपनी ख़ुदग़र्जियों की पूर्ति में आज दुनिया को मौत की खन्दक़ में ढकेलना चाहते हैं. एक ज़माना था जब जनता इनके बहकावे में आकर जंग को 'मुनासिब और सिर्फ़ एक रास्ता' समझती थी. आज शान्ति का मोरचा सारी दुनिया में बुलन्दी पकड़ रहा है. चारों ओर से शान्ति के जयगीत सुनाई देते हैं. दुनिया समझ गई है कि थैलीशाह और साम्राज्यशाह उसकी भावनाओं को उकसा कर उन्हें 'लड़ाई के चारे' की तरह इस्तेमाल करते थे.

सच तो यह है कि हज़रत ईसा की वह सीख आज पूरी अहमीयत के साथ हमारे सामने है कि जो लोग तलवार से जीतेंगे वह तलवार से ही मिट जावेंगे. क्या भगवान बुद्ध ने ही दूसरे लफ़्ज़ों में इसे नहीं कहा कि—

नफ़रत नफ़रत से शान्त न होगी !
.ग़ुस्सा .ग़ुस्से से शान्त न होगा !
दुशमनी दुशमनी से शान्त न होगी !
नफ़रत, ग़ुस्सा और दुशमनी प्रेम से ही शान्त होंगी.

गान्धी जी ने भी हमें ज़ोरदार और अमली तरीक़े से इसी बात की तालीम दी. आज शान्ति का मोरचा हमें प्रेम और अहिंसात्मक तरीक़े से मज़बूत करना है ताकि जंग-बाज़ भी इस बात की शिकायत न कर सकें कि शान्तिवादियों के शान्ति के नारे के पीछे नफ़रत और हिंसा है.

—विश्वम्भरनाथ पांडे

एफ़्रो-एशियन कान्फ़्रेंस

दिसम्बर के आख़री हफ़्ते में इन्डोनीशिया की राजधानी जाकार्ता के क़रीब बोगोर में हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, लंका, बर्मा और इन्डोनीशिया के प्रधानमंत्रियों का एक सम्मेलन हुआ. पांचों प्राइम मिनिस्टरों ने एशिया और अफ़रीक़ा की बेहतरी, भलाई और फ़ायदे के लिहाज़ से इस बात पर ग़ौर किया कि क्यों न अफ़रीक़ा और एशिया के 25 मुल्कों का एक बड़ा सम्मेलन बुलाया जाय जिसमें अफ़रीक़ा और एशियाई मुल्कों की आज़ादी और उनकी समस्याओं पर विचार किया जाय. यह तजवीज़ पांचों मुल्कों के प्राइम-मिनिस्टरों ने एक राय से मंज़ूर की. यह भी फ़ैसला किया कि चीन, जापान, मिस्र, अरब मुल्क, फ़िलिप्पाइन, नैपाल वग़ैरह सब मुल्कों को इस सम्मेलन में शामिल होने की दावत दी जाय. निमंत्रित मुल्कों में सिर्फ़ फ़िलस्तीन की यहूदी रियासत छोड़ दी गई है और दक्खिन अफ़रीक़ा को भी फ़ेहरिस्त में शामिल नहीं किया गया. दोनों मुल्कों को दावत न देने की वजहें बिलकुल साफ़ हैं. दक्खिन अफ़रीक़ा की गोरी हकूमत को एशिया और अफ़रीक़ा के गेहुंये, पीले और सांवले रंग से सख़्त नफ़रत है और यहूदी राज के जिस तरह के ताल्लुक़ात सभी अरब मुल्कों से हैं उससे उसे दावत देने में एक उलझन पैदा होती.

سامراجیہوادی حکمراں اور پونجی شاہ اپنی خودغرضیوں کی پورتی میں آج دنیا کو موت کی خندق میں ڈھکیلنا چاہتے ہیں ۔ ایک زمانہ تھا جب جنتا اِن کے بہکاوے میں آکر جنگ کو 'مناسب اور صرف ایک راستہ' سمجھتی تھی ۔ آج شانتی کا مورچہ ساری دنیا میں بلندی پکڑ رہا ہے ۔ چاروں اور سے شانتی کے جئے گیت سنائی دیتے ہیں ۔ دنیا سمجھ گئی ہے کہ تھیلی شاہ اور سامراجیہ شاہ اُس کی بھاؤناؤں کو اُکسا کر اُنھیں 'لڑائی کے چارے' کی طرح اِستعمال کرتے تھے ۔

سچ تو یہ ہے کہ حضرت عیسیٰ کی وہ سیکھ آج پوری اہمیت کے ساتھ ہمارے سامنے ہے کہ جو لوگ تلوار سے جیتیں گے وہ تلوار سے ہی مٹ جاویں گے ۔ کیا بھگوان بدھ نے ہی دوسرے لفظوں میں اِسے نہیں کہا کہ—

نفرت نفرت سے شانت نہ ہوگی ۔
غصہ غصے سے شانت نہ ہوگا ۔
دشمنی دشمنی سے شانت نہ ہوگی ۔
نفرت، غصہ اور دشمنی پریم سے ہی شانت ہونگی ۔

گاندھی جی نے بھی ہمیں زوردار اور عملی طریقے سے اِسی بات کی تعلیم دی ۔ آج شانتی کا مورچہ ہمیں پریم اور اہنساتمک طریقے سے مضبوط کرنا ہے تاکہ جنگ باز بھی اِس بات کی شکایت نہ کرسکیں کہ شانتی وادیوں کے شانتی کے نعرے کے پیچھے نفرت اور ہنسا ہے ۔

—وشومبھر ناتھ پانڈے

ایفرو-ایشین کانفرنس

دسمبر کے آخری ہفتے میں انڈونیشیا کی راجدھانی جاکارتا کے قریب بوگور میں ہندستان، پاکستان، لنکا، برما اور انڈونیشیا کے پردھان منتریوں کا ایک سمیلن ہوا ۔ پانچوں پرائم منسٹروں نے ایشیا اور افریقہ کی بہتری، بھلائی اور فایدہ کے لحاظ سے اِس بات پر غور کیا کہ کیوں نہ افریقہ اور ایشیا کے 25 ملکوں کا ایک بڑا سمیلن بلایا جائے جس میں افریقہ اور ایشیائی ملکوں کی آزادی اور اُن کی سمسیاؤں پر وچار کیا جائے ۔ یہ تجویز پانچوں ملکوں کے پرائم منسٹروں نے ایک رائے سے منظور کی ۔ یہ بھی فیصلہ کیا کہ چین، جاپان، مصر، عرب ملک، فلپائن، نیپال وغیرہ سب ملکوں کو اِس سمیلن میں شامل ہونے کی دعوت دی جائے ۔ نمنترت ملکوں میں صرف فلسطین کی یہودی ریاست چھوڑ دی گئی ہے اور دکھن افریقہ کو بھی فہرست میں شامل نہیں کیا گیا ۔ دونوں ملکوں کو دعوت نہ دینے کی وجہیں بالکل صاف ہیں ۔ دکھن افریقہ کی گوری حکومت کو ایشیا اور افریقہ کے گیہوئے، پیلے اور سانولے رنگ سے سخت نفرت ہے اور یہودی راج کے جس طرح کے تعلقات سبھی عرب ملکوں سے ہیں اِس سے اُسے دعوت دینے میں ایک اُلجھن پیدا ہوتی ۔

ही दुनिया के सब हवाई जहाज़ निकलते हैं और इन देशों में तेल और पेट्रोल के सागर भरे पड़े हैं. अमरीका ने सऊदी अरब से पेट्रोल का ठेका लिया है. फ़लस्तीन में वह यहूदियों को पूरी तरह बसाना चाहता है. तुर्की और यूनान को क़र्ज़ देकर, ईरान और पाकिस्तान को रुपया देकर अमरीका अपना हाथ इन रियासतों पर रखना चाहता है जिससे वहां रूस का असर न हो सके. रूस भी कब चुप बैठ सकता है. उसकी बचत इसी में है कि इस हिस्से में उसके बैरी का असर न हो. प्रशान्त मे भी इस समय जो क़िलेबन्दी हो रही है, जिस तरह अमरीका प्रशान्त के जज़ीरों में अपना असर जमा रहा है, उससे शान्ति और सुलह के आसार कम और आगे आने वाली कलह, लड़ाई और मारकाट के लक्षन ज्यादा दीख रहे हैं.

इस तरह अगर हम अपने चारो तरफ़ निगाह दौड़ायें तो हम को जान पड़ेगा कि अमरीकी शहनशाहियत आज हमलावर तरीक़ों से दुनिया की शान्ति को बरबाद करना चाहती है. दूसरी ओर अफ़रीक़ा और सुदूरपूर्व की क़ौमें आज अपनी आज़ादी को प्राप्त करने के लिये हर मुमकिन कोशिश कर रही हैं. लेकिन अब तक जिन बड़ी ताक़तों ने उनको अपने पैरों तले कुचल रखा है और जो उन ग़रीबों की ग़रीबी से ही अमीर बनी बैठी हैं, वह उनको आज़ाद नहीं होने देना चाहतीं. साम्राज्य की प्यास और आज़ादी की भूख की टक्कर लड़ाई के जन्म का पहला कारन है.

आज जंग रोकने की कुछ शर्तें ये हैं—

(1) तरह तरह के ढंग से हुकूमत चलाने वाले मुल्क इस बात पर राज़ी हों कि किसी दूसरे मुल्क की राजकाजी नीति मे किसी दूसरे मुल्क को दख़ल देने का कोई हक़ नहीं. एक दूसरे के ख़िलाफ़ समाजी ज़िन्दगी के तरीक़े वाले भी दुनिया में अमन से रह सकते हैं.

(2) अफ़रीक़ा और एशिया के ग़ुलाम मुल्कों को पूरी तरह आज़ाद किया जाय और पिछड़े हुये मुल्को की आर्थिक और समाजी बेहतरी के लिये सब मुल्क मिल कर मदद दें.

(3) हर मुल्क की जनता में इस बात का ज़ोरदार प्रचार किया जाय कि आधुनिक लड़ाइयों में सब में ज्यादा मरन और बरबादी बेगुनाह जनता की ही होती है. लड़ाई के नतीजे में किसी मुल्क को भी फ़ायदा नहीं पहुंचता. चुनांचे जंगी मोरचों के मुक़ाबले में शान्ति के मोरचों को मज़बूत बनाने में जनता पूरी पूरी मदद दे.

(4) मुल्कों को इस बात का फ़ैसला करना है कि वह किसी भी सूरत में आपसी फ़ैसले की कसौटी जंग को न बनायेंगे.

(5) हाईड्रोजन और एटम बम बनाने पर देर सवेर बन्दिश.

ہی دنیا کے سب ہوائی جہاز نکلتے ہیں اور ان دیشوں میں تیل اور پٹرول کے ساگر بھرے پڑے ہیں . امریکہ نے سعودی عرب سے پٹرول کا ٹھیکا لیا ہے . فلسطین میں وہ یہودیوں کو پوری طرح بسانا چاہتا ہے . ترکی اور یونان کو قرض دے کر ایران اور پاکستان کو روپیہ دے کر امریکہ اپنا ہاتھ ان ریاستوں پر رکھنا چاہتا ہے جس سے وہاں روس کا اثر نہ ہو سکے . روس بھی کب چپ بیٹھ سکتا ہے . اس کی بچت اسی میں ہے کہ اس حصہ میں اس کے بیری کا اثر نہ ہو . پرشانت میں بھی اس سمے جو قلعہ بندی ہو رہی ہے، جس طرح امریکہ پرشانت کے جزیروں میں اپنا اثر جما رہا ہے، اس سے شانتی اور صلح کے آثار کم اور آگے آنے والی کلہ لڑائی اور مارکاٹ کے لکچن زیادہ دیکھ رہے ہیں .

اس طرح اگر ہم اپنے چاروں طرف نگاہ دوڑائیں تو ہم کو جان پڑے گا کہ امریکی شہنشاہیت آج حملہ آور طریقوں سے دنیا کی شانتی کو برباد کرنا چاہتی ہے . دوسری اور افریقہ اور سدور پورو کی قومیں آج اپنی آزادی کو پراپت کرنے کے لئے ہر ممکن کوشش کر رہی ہیں . لیکن اب تک جن بڑی طاقتوں نے ان کو اپنے پیروں تلے کچل رکھا ہے اور جو ان غریبوں کی غریبی سے ہی امیر بنی بیٹھی ہیں، وہ ان کو آزاد نہیں ہونے دینا چاہتیں . سامراجیہ کی پیاس اور آزادی کی بھوکھ کی ٹکر لڑائی کے جنم کا پہلا کارن ہے .

آج جنگ روکنے کی کچھ شرطیں یہ ہیں—

(1) طرح طرح کے ڈھنگ سے حکومت چلانے والے ملک اس بات پر راضی ہوں کہ کسی دوسرے ملک کی راجکاجی نیتی میں کسی دوسرے ملک کو دخل دینے کا کوئی حق نہیں . ایک دوسرے کے خلاف سماجی زندگی کے طریقے والے بھی دنیا میں امن سے رہ سکتے ہیں .

(2) افریقہ اور ایشیا کے غلام ملکوں کو پوری طرح آزاد کیا جائے اور پچھڑے ہوئے ملکوں کی آرتھک اور سماجی بہتری کے لئے سب ملک مل کر مدد دیں .

(3) ہر ملک کی جنتا میں اس بات کا زوردار پرچار کیا جائے کہ آدھونک لڑائیوں میں سب میں زیادہ مرن اور بربادی بےگناہ جنتا کی ہی ہوتی ہے . لڑائی کے نتیجے میں کسی ملک کو بھی فائدہ نہیں پہونچتا . چنانچہ جنگی مورچوں کے مقابلے میں شانتی کے مورچوں کو مضبوط بنانے میں جنتا پوری پوری مدد دے .

(4) ملکوں کو اس بات کا فیصلہ کرنا ہے کہ وہ کسی بھی صورت میں آپسی فیصلے کی کسوٹی جنگ کو نہ بنائیںگے .

(5) ہائیڈروجن اور ایٹم بم بنانے پر دیر سویر بندش .

आस लगाये हुये थी कि यह नई कमेटी लड़ाई को हमेशा के लिये मिटा देगी और दो आदमियों के झगड़ों की तरह सल्तनतों के झगड़ों को भी क़ानून से तै करने का सिलसिला पड़ जायेगा. यह भी आस लगी है कि शहंशाहियत यानी साम्राज्यवाद और पूंजीवाद का दम टूटने वाला है और इनका ख़ात्मा होते ही लड़ाई का लालच ही मिट जायेगा. इस तरह के सोचने वाले सुनहरे सपने देखने लगे हैं. कुछ लोग यह भी ख़्याल करने लगे हैं कि अब एटम की ताक़त के इस्तेमाल पर रोक लग जायेगी. हथियारों का बनना और रखना बन्द हो जायेगा. दुनिया में अमन होगा और लड़ाई सदा के लिये मिट जायेगी.

जबकि एक ओर यह सपने देखे जा रहे हैं, दूसरी ओर तीसरी लड़ाई के लिये ख़ौफ़नाक से ख़ौफ़नाक हथियार ईजाद किये जा रहे हैं. एटम बमों का ज़ख़ीरा इकट्ठा होता जा रहा है जिनकी भयंकरता इस क़दर बढ़ गई है कि वैज्ञानिकों को तीसरी लड़ाई के नतीजे में सिवाय इनसानी क़ौम की बरबादी के और कुछ नहीं दिखाई देता.

छोटी रियासतों के झगड़े ही लड़ाई का हीला होते हैं और यह रियासतें बड़ी ताक़तों के लिये टट्टी की आड़ का काम देती हैं. असली कारन बड़ी रियासतों की धन-धरती की प्यास और उनके आपसी बैर होते हैं. आज की दुनिया में यह बात साफ़ नजर आ रही है. लड़ाई में भले ही सोवियत रूस, अमरीका और इंगलैन्ड एक ही तरफ़ से लड़े और एक दूसरे में दोस्ती थी पर अमरीका का पूंजीवाद सांप सोवियत के कम्यूनिज्म को अपने लिये नेवला सा बैरी समझता है. लड़ाई ख़त्म होते ही एक दूसरे के डर ने जोर पकड़ा. अमरीका और इंगलैन्ड के शाही लुटेरों को सोवियत और चीन के भूत ने सताना शुरू किया. पहली लड़ाई के बाद भी रूस के साथ ऐसा ही बर्ताव किया गया था. सोवियत रूस ने इंगलैन्ड से दोस्ती करनी चाही, फिर भी चर्चिल पार्टी ने और मज़दूर पार्टी के बड़े वज़ीर मैकडोनल्ड ने रूस के साथ दुशमनी और बेईमानी का बर्ताव किया. दूसरी लड़ाई के बाद ही फिर इंगलैन्ड और अमरीका ने रूस के ख़िलाफ़ अपनी कूटनीतिक साज़िशें शुरू कर दीं. आज उन्होंने पूर्वी यूरोप के ख़िलाफ़ एक तरह का घेरा सा डाल रखा है. सिर्फ़ फ़र्क़ इतना है कि आज सोवियत रूस कमज़ोर नहीं है. हर देश में सोवियत की दोस्ताना पार्टियां काम कर रही हैं. अगर शान्ति चाहिये तो अमरीका को यह घेरेबन्दी का रास्ता छोड़ना होगा. पर अमरीका से इसकी उम्मीद करना बेकार है.

मिडिल ईस्ट में भी यही कशमकश जारी है. अमरीका इस हिस्से पर क़ाबू पाने के लिये बेचैन है. वह यहां अपना साम्राज्य चाहता है और इङ्गलैंड कब यहां से दूर होना पसन्द करेगा? ख़ासकर जब इस हिस्से के ऊपर से होकर

آس لگائے ہوئے تھی کہ یہ نئی کمیٹی لڑائی کو ہمیشہ کے لئے مٹا دیگی اور دو آدمیوں کے جھگڑوں کی طرح سلطنتوں کے جھگڑوں کو بھی قانون سے طے کرنے کا سلسلہ پڑ جائیگا ۔ یہ بھی آس لگی ہے کہ شہنشاہیت یعنی سامراجیہواد اور پونجی واد کا دم ٹوٹنے والا ہے اور اِن کا خاتمہ ہوتے ہی لڑائی کا لالچ ہی مٹ جائیگا ۔ اِس طرح کے سوچنے والے سنہرے سپنے دیکھنے لگے ہیں ۔ کچھ لوگ یہ بھی خیال کرنے لگے ہیں کہ اب ایٹم کی طاقت کے استعمال پر روک لگ جائیگی ۔ ہتھیاروں کا بننا اور رکھنا بند ہو جائیگا ۔ دنیا میں امن ہوگا اور لڑائی سدا کے لئے مٹ جائیگی ۔

جب کہ ایک اُور یہ سپنے دیکھے جا رہے ہیں، دوسری اُور تیسری لڑائی کے لئے خوفناک سے خوفناک ہتھیار ایجاد کئے جا رہے ہیں ۔ ایٹم بموں کا ذخیرا اکٹھا ہوتا جا رہا ہے جن کی بھیانکرتا اِس قدر بڑھ گئی ہے کہ وگیانکوں کو تیسری لڑائی کے نتیجے میں سوائے انسانی قوم کی بربادی کے اور کچھ نہیں دکھائی دیتا ۔

چھوٹی ریاستوں کے جھگڑے ہی لڑائی کا حیلہ ہوتے ہیں اور یہ ریاستیں بڑی طاقتوں کے لئے ٹٹی کی آڑ کا کام دیتی ہیں ۔ اصلی کارن بڑی ریاستوں کی دھن دھرتی کی پیاس اور اُن کے آپسی بیر ہوتے ہیں ۔ آج کی دنیا میں یہ بات صاف نظر آرہی ہے ۔ لڑائی میں بھلے ہی سوویت روس، امریکہ اور اِنگلینڈ ایک ہی طرف سے لڑے اور ایک دوسرے میں دوستی تھی پر امریکہ کا پونجی واد سانپ سوویت کے کمیونزم کو اپنے لئے نیولا سا بیری سمجھتا ہے ۔ لڑائی ختم ہوتے ہی ایک دوسرے کے ڈر نے زور پکڑا ۔ امریکہ اور اِنگلینڈ کے شاہی لٹیروں کو سوویت اور چین کے بھوت نے ستانا شروع کیا ۔ پہلی لڑائی کے بعد بھی روس کے ساتھ ایسا ہی برتاؤ کیا گیا تھا ۔ سوویت روس نے اِنگلینڈ سے دوستی کرنی چاہی، پھر بھی چرچل پارٹی نے اور مزدور پارٹی کے بڑے وزیر میکڈونلڈ نے روس کے ساتھ دشمنی اور بےایمانی کا برتاؤ کیا ۔ دوسری لڑائی کے بعد ہی پھر اِنگلینڈ اور امریکہ نے روس کے خلاف اپنی کوٹنیتک سازشیں شروع کردیں ۔ آج اُنہوں نے پوربی یوروپ کے خلاف ایک طرح کا گھیرا سا ڈال رکھا ہے ۔ صرف فرق اِتنا ہے کہ آج سوویت روس کمزور نہیں ہے ۔ ہر دیش میں سوویت کی دوستانہ پارٹیاں کام کر رہی ہیں ۔ اگر شانتی چاہئے تو امریکہ کو یہ گھیرےبندی کا راستہ چھوڑنا ہوگا ۔ پر امریکہ سے اِس کی اُمید کرنا بیکار ہے ۔

مڈل ایسٹ میں بھی یہی کشمکش جاری ہے ۔ امریکہ اِس حصے پر قابو پانے کے لئے بیچین ہے ۔ وہ یہاں اپنا سامراجیہ چاہتا ہے اور اِنگلینڈ کب یہاں سے دور ہونا پسند کرے گا ؟ خاص کر جب اِس حصے کے اوپر سے ہو کر

हमारी राय

ہماری رائے

एटम और हाइड्रोजन बम बनाम शान्ति मोरचा

30 दिसम्बर को जाकार्ता से बोलते हुये पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एटम और हाइड्रोजन बमों के ख़तरे से दुनिया को आगाह करते हुये कहा—"अगर एटम और हाइड्रोजन बमों के फूटने के प्रयोग बन्द न किये गये तो आसमान ज़हरीली हवाओं से भर जायगा और सबकी ज़िन्दगी ख़तरे में हो जायगी. हम जानते हैं कि जंगों के मुताल्लिक़ आजकल साइन्स वाले क्या कहते हैं ? फ़्रान्स के फ़िज़िक्स के नोबुल इनाम पाने वाले प्रिन्स लुइ दे ब्रागी ने दूसरे वैज्ञानिकों की राय को दोहराते हुये कहा है कि छै या सात एटम बमों के फूटने से हवायें ज़हरीली हो जायगीं और दुनिया के रहने वालों के लिये नुक़सानदह साबित होंगी." पंडित नेहरू ने आगे कहा कि "रेडियो एक्टिव किरनें दुनिया के वातावरन को ज़हरीला कर देंगी और उसका नतीजा यह भी हो सकता है कि इनसानी क़ौम नेस्त नाबूद हो जाय."

उसी दिन हुबली में बोलते हुये हिन्दुस्तान के मशहूर साइन्सदां डाक्टर चन्द्रशेखर व्यंकट रमन ने कहा कि "अगर वह सब ताक़तें जिनके पास एटम बम हैं एटम की लड़ाई से एक दूसरे को नेस्त नाबूद कर दें तो दुनिया की इसमें बेहतरी हो जाय. हां दुनिया को दोबारा जन्म लेना पड़ेगा."

पहली लड़ाई के ख़त्म होते ही दूरन्देशों ने दूसरी लड़ाई का साया देखना शुरू कर दिया था. यह बात किसी से छिपी न थी कि वरसाई के सुलहनामे में ही अगली लड़ाई के बीज मौजूद थे. अब दूसरी लड़ाई की तोपों की आवाज़ अभी मुशकिल से धीमी हो पाई है कि फिर तीसरी लड़ाई के नगाड़े लोगों को बजते सुनाई देने लगे हैं. वैसे इस बात पर एतबार नहीं होता कि हिरोशिमा और स्टालिनग्राड के बाद इतनी जल्दी आदमी का कलेजा पत्थर का हो जायेगा कि वह तीसरी लड़ाई की तैयारी करने लगे. यू. एन. ओ. को बने भी आठ बरस बीत चुके. सारी दुनिया उस पर

ایٹم اور ھائڈروجن بم بنام شانتی مورچہ

30 دسمبر کو جاکارتا سے بولتے ہوئے پنڈت جواہر لال نہرو نے ایٹم اور ھائڈروجن بموں کے خطرے سے دنیا کو آگاہ کرتے ہوئے کہا—"اگر ایٹم اور ھائڈروجن بموں کے پھوٹنے کے پریوگ بند نہ کئے گئے تو آسمان زہریلی ہواؤں سے بھر جائیگا اور سب کی زندگی خطرے میں ہوجائیگی. ہم جانتے ہیں کہ جنگوں کے متعلق آجکل سائنس والے کیا کہتے ہیں ؟ فرانس کے فزکس کے نوبل انعام پانے والے پرنس لوئی دے براگی نے دوسرے ویگیانکوں کی رائے کو دہراتے ہوئے کہا ہے کہ چھ یا سات ایٹم بموں کے پھوٹنے سے ہوائیں زہریلی ہو جائینگی اور دنیا کے رہنے والوں کے لئے نقصان دہ ثابت ہونگی." پنڈت نہرو نے آگے کہا کہ "ریڈیو ایکٹو کرنیں دنیا کے واتاورن کو زہریلا کردینگی اور اُس کا نتیجہ یہ بھی ہو سکتا ہے کہ اِنسانی قوم نیست نابود ہو جائے."

اُسی دن ہبلی میں بولتے ہوئے ہندستان کے مشہور سائنسداں ڈاکٹر چندر شیکھر وینکٹ رمن نے کہا کہ "اگر وہ سب طاقتیں جن کے پاس ایٹم بم ہیں ایٹم کی لڑائی سے ایک دوسرے کو نیست نابود کردیں تو دنیا کی اِس میں بہتری ہوجائے. ہاں دنیا کو دو بارہ جنم لینا پڑیگا."

پہلی لڑائی کے ختم ہوتے ہی دوراندیشوں نے دوسری لڑائی کا سایہ دیکھنا شروع کردیا تھا. یہ بات کسی سے چھپی نہ تھی کہ ورسائی کے صلحنامے میں ہی اگلی لڑائی کے بیج موجود تھے. اب دوسری لڑائی کی توپوں کی آواز ابھی مشکل سے دھیمی ہو پائی ہے کہ پھر تیسری لڑائی کے نگاڑے لوگوں کو بجتے سنائی دینے لگے ہیں. ویسے اِس بات پر اعتبار نہیں ہوتا کہ ہیروشیما اور اسٹالن گراڈ کے بعد اِتنی جلدی آدمی کا کلیجہ پتھر کا ہو جائیگا کہ وہ تیسری لڑائی کی تیاری کرنے لگے. یو. این. او. کو بنے بھی آٹھ برس بیت چکے. ساری دنیا اُس پر



अमरीका और इंगलिस्तान ने जर्मनी को फिर से हथियार बन्द करने का फैसला किया है।

امریکہ اور انگلستان نے جرمنی کو پھر سے ہتھیار بند کرنے کا فیصلہ کیا ہے

उसे सख़्त से सख़्त जिस्मानी तकलीफ़ें देते हैं मगर उफ़ करने के लिये उसके लब मानो बने ही नहीं. उसके जिस्म से ख़ून रिस रिस कर बह सकता है मगर फ़ौलादी आत्मा से आह् नहीं निकल सकती.

मौक़ा पाकर साथियों की मदद से तेह्-फ़ु अपने घायल जिस्म को घसीटता हुआ भागता है. साथियों से मिलता है और काम करने वालों की अगली क़तार में फिर से शामिल होता है.

पूरा उपन्यास एक 'वार डायरी' के ताने बाने में बुना गया है. बदलती हुई हालतों में चीनी किसान किस तरह अपने को नई हालतों और नये ख़्यालों के मुताबिक़ ढालते हैं, किस तरह क्रान्ति को कामयाब बनाने में वह रसद से माओ की सेना को मदद देते हैं, किस तरह बदलती हुई परिस्थितियां चीन के समाजी जीवन पर अपना असर डालती हैं और किस तरह एक से एक बढ़कर क़ुरबानियो की मिसालें पेश होती हैं—यह सब उपन्यासकार ने अपने सीधे-साधे किन्तु सहज तर्ज़ पर बयान किया है.

पूरा उपन्यास नये चीन की उभरती हुई ज़िन्दगी पर एक सर्चलाइट डालता है. उपन्यास में उन हालतों का ज़िक्र है जब सफल क्रान्ति के लिये संघर्ष चल रहा था. कुओमिनताङ्ग अपनी आख़री लड़ाई लड़ रहा था. लेकिन उपन्यास के उस चित्रन में ही क्रान्ति की कामयाबी की एक निश्चित उम्मीद छिपी हुई थी. लेखक ने क्रान्ति की सफलता पर और भी अफ़साने लिखे हैं. इस अफ़साने से उसकी मंशा यह दिखाने की है कि माओ की कामयाबी के पीछे चीन की करोड़ों जनता का, चीन के किसानों का त्याग और बलिदान है जिसकी वजह से क्रान्ति सफल हुई.

उपन्यास दिलचस्प है और उसमें एक रवानी है. छपाई सफ़ाई बहुत उम्दा है.

—विश्वम्भरनाथ पांडे

اُسے سخت سے سخت جسمانی تکلیفیں دیتے هیں مگر اُف کرنے کے لئے اُس کے لب مانو بنے هی نہیں. اس کے جسم سے خون رس رس کر بہ سکتا هے مگر فولادی آتما سے آہ نہیں نکل سکتی.

موقع پاکر ساتھیوں کی مدد سے تہ-فو اپنے گھایل جسم کو گھسیٹتا هوا بھاگتا هے. ساتھیوں سے ملتا هے اور کام کرنے والوں کی اگلی قطار میں پھر سے شامل هوتا هے.

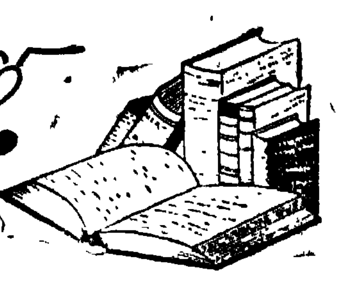
پورا اُپنیاس ایک 'وار ڈایری' کے تانے بانے میں بنا گیا هے. بدلتی هوئی حالتوں میں چینی کسان کس طرح اپنے کو نئی حالتوں اور نئے خیالوں کے مطابق ڈھالتے هیں' کس طرح کرانتی کو کامیاب بنانے میں وہ رسد سے ماؤ کی سینا کو مدد دیتے هیں' کس طرح بدلتی هوئی پرستھتیاں چین کے سماجی جیون پر اپنا اثر ڈالتی هیں اور کس طرح ایک سے ایک بڑھ کر قربانیوں کی مثالیں پیش هوتی هیں—یہ سب اُپنیاسکار نے اپنے سیدھے سادھے کنتو سہج طرز پر بیان کیا هے.

پورا اُپنیاس نئے چین کی اُبھرتی هوئی زندگی پر ایک سرچ لائٹ ڈالتا هے. اُپنیاس میں اُن حالتوں کا ذکر هے جب سپھل کرانتی کے لئے سنگھرش چل رہا تھا. کومنتانگ اپنی آخری لڑائی لڑ رہا تھا. لیکن اُپنیاس کے اِس چترن میں هی کرانتی کی کامیابی کی ایک نشچت اُمید چھپی هوئی تھی. لیکھک نے کرانتی کی سپھلتا پر اور بھی افسانے لکھے هیں. اس افسانے سے اُس کی منشا یہ دکھانے کی هے کہ ماؤ کی کامیابی کے پیچھے چین کی کروڑوں جنتا کا' چین کے کسانوں کا تیاگ اور بلیدان هے جس کی وجہ سے کرانتی سپھل هوئی.

اُپنیاس دلچسپ هے اور اُس میں ایک روانی هے. چھپائی صفائی بہت عمدہ هے.

—وشومبھر ناتھ پانڈے

कुछ किताबें



کچھ کتابیں

वाल आफ़ ब्रांज़्ह

अंग्रेज़ी ज़बान में लिखा हुआ उपन्यास (अफ़साना)—लिखने वाले ल्यु-चिंग; छापने वाले—फ़ारेन लैंग्वेज प्रेस, पीकिंग, 1954; सफ़े 283 डिमाई साइज़.

मूल उपन्यास चीनी ज़बान में लिखा गया था. यह उसका अंग्रेज़ी तर्जुमा सिडनी शैपिरो का किया हुआ है. वाल आफ़ ब्रांज़्ह का हिन्दी में तर्जुमा होगा—कांसे की दीवार. कांसे की दीवार की सफ़ाई देते हुये चीन के प्रेज़ीडेन्ट माओ ने कहा था—"साथियो, कांसे की असली दीवार क्या है ? वह जनता है, करोड़ों की तादाद में, जो दिल से और सचमुच क्रान्ति की क़न्द्र करते हैं. वही कांसे की असली दीवार है. कोई ताक़त इस दीवार को नहीं तोड़ सकती. यह अभेद्य दीवार है. प्रतिक्रान्ति भी इसे नहीं तोड़ सकती......"

लेखक ने माओ की इस तक़रीर से ही अपने अफ़साने का नाम 'वाल आफ़ ब्रांज़्ह' कांसे की दीवार चुना. उपन्यास का मुख्य नायक शिह-तेह-कु एक कम्युनिस्ट नौजवान है. वह मशहूर कम्यूनिस्ट सेना एट्थ रूट आर्मी में घायलों को उठाने का काम करता है. अफ़सरों ने उसकी जांफ़िशानी से काम करने की तारीफ़ की और उसे इनाम दिये. कम्युनिस्ट और कुओमिनतांग सेनाओं का युद्ध चलता है. कुओमिनतांग सेना रसद चाहती है. वह गांवों पर धावे बोलती है. गांव वाले कम्युनिस्ट सेना को रसद पहुंचाते हैं. उनके बड़े बड़े क़ाफ़िले निकलते हैं. तेह-कु उन्हें रास्ता दिखाता और दुश्मनों की बमबारी से आगाह करता हुआ चलता है. वह एक आदर्श जांबाज़ कम्युनिस्ट कार्यकर्त्ता है. न वह मौत से डरता है न ज़ुल्मों से. वह किसानों को आगाह करने में अपनी जान से खेलता है. अन्त में दुशमन उसे गिरफ़्तार करते हैं.

وال آف برانزھ

انگریزی زبان میں لکھا ہوا اُپنیاس (افسانہ)—لکھنے والے لیو چنگ؛ چھاپنے والے—فارین لینگویج پریس' پیکنگ' 1954؛ صفحے 283 ڈمائی سائز .

مول اُپنیاس چینی زبان میں لکھا گیا تھا . یہ اُس کا انگریزی ترجمہ سڈنی شیپیرو کا کیا ہوا ہے . وال آف برانزھ کا ہندی ترجمہ ہوگا—کانسے کی دیوار . کانسے کی دیوار کی صفائی دیتے ہوئے چین کے پریزیڈینٹ ماؤ نے کہا تھا—"ساتھیو' کانسے کی اصلی دیوار کیا ہے ؟ وہ جنتا ہے' کروڑوں کی تعداد میں جو دل سے اور سچ مچ کرانتی کی قدر کرتے ہیں . وہی کانسے کی اصلی دیوار ہیں . کوئی طاقت اِس دیوار کو نہیں توڑ سکتی . یہ ابھیدیہ دیوار ہے . پرتی‌کرانتی بھی اِسے نہیں توڑ سکتی......"

لیکھک نے ماؤ کی اِس تقریر سے ہی اپنے افسانے کا نام 'وال آف برانزھ' کانسے کی دیوار چنا . اُپنیاس کا مکھیہ نایک شہ - تیہ - کو ایک کمیونسٹ نوجوان ہے . وہ مشہور کمیونسٹ سینا ایٹتھ روٹ آرمی میں گھایلوں کو اُٹھانے کا کام کرتا ہے . افسروں نے اس کی جانفشانی سے کام کرنے کی تعریف کی اور اُسے اِنعام دیئے . کمیونسٹ اور کوؤمنتانگ سیناؤں کا یدھ چلتا ہے . کوؤمنتانگ سینا رسد چاہتی ہے . وہ گاؤں پر دھاوے بولتی ہے . گاؤں والے کمیونسٹ سینا کو رسد پہونچاتے ہیں . اُن کے بڑے بڑے قافلے نکلتے ہیں . تہ - کو اُنھیں راستہ دکھاتا اور دشمنوں کی بمباری سے آگاہ کرتا ہوا چلتا ہے . وہ ایک آدرش جانباز کمیونسٹ کاریہ‌کرتا ہے . نہ وہ موت سے ڈرتا ہے نہ ظلموں سے . وہ کسانوں کو آگاہ کرنے میں اپنی جان سے کھیلتا ہے . انت میں دشمن اُسے گرفتار کرتے ہیں .

अवध के शौक़ीनों ने इसे और शोख़ किया. कुछ नादान दोस्तों और कुछ दाना दुश्मनों ने अफ़रातफ़री से फ़ायदा उठाया और ज़बान का एक दूसरा ही तर्ज़ ईजाद कर डाला. नतीजा यह हुआ कि एक ज़बान के दो ढङ्ग चल पड़े और इनमें आपस में खींच तान होने लगी. तारीख़ के पुराने और नये दौरों पर ध्यान दीजिए और इनसे सीख लीजिये. हर ज़माने में दो शक्तियों का अमल दिखाई देता है—एक तरफ़ फ़िरक़ों, नस्लों, रस्मों और रिवाजों की बहुतायत है तो दूसरी तरफ़ एकता की ताक़त, जो इन्हें मिलाकर एक सभ्यता पैदा करती है. हर दौर में यही अमल जारी रहा है. कसरत में वहदत का तमाशा होता नज़र आता है. आज भी वही कशमकश है. हिन्दुस्तान रक़बा और आबादी में एक बहुत बड़ा देस है. इसमें कई नस्लों के आदमी बसते हैं, कितने ही मज़हब हैं, कुछ की जन्म भूमि हिन्दुस्तान है, कुछ की बाहर के देस. इनकी रीतें और रस्में अलग हैं, रवायतें जुदा हैं, ज़ाती क़ानून, धर्म के ठिकाने न्यारे हैं. लेकिन यह सब कुछ होते हुए भी एक तारीख़ी क़ूवत है जो कड़ियों को जोड़ कर एक मज़बूत ज़ंजीर डाल रही है, मालूम नहीं कब से, लेकिन तारीख़ के ज़माने से बहुत पहले से, क़िस्मत का यही फ़ैसला है.

दुनिया में न किसी ज़माने में, न किसी मुल्क में कोई भी राज बहुत दिन चला है, जो एक समाज की बुनियादों पर न खड़ा हो. एक समाज का आसरा हमारे दिलों का मेल मिलाप है. दिलों में मुहब्बत एक दूसरे के तरीक़ों, ख़यालों और भावों की इज़्ज़त से, अपने में सब देश वालों को और सब देशवालों में अपने को देखने से पैदा होती है. यही वजह है कि हमारा समाज मिलवां होगा, जिसमें हिन्दुस्तान के कुल बाशिन्दे शामिल होंगे. इस मिलवां समाज से जो तहज़ीब पैदा होगी वह एक मुश्तरका ख़ान्दान की मुश्तरका जायदाद होगी. इस नये समाज, नई सभ्यता की ज़रूरतों को एक मिलवां ज़बान ही पूरा कर सकती है. यह वही ज़बान हो सकती है जो अपने पुरखों का आदर और मेहमानों का स्वागत करती है. इसका देस की किसी बोली से वैर नहीं, लेकिन इस पर किसी ख़ास फ़िरक़े का टीका नहीं है. यह ज़बान पुरानी भी है, नई भी. इसमें वह ध्वनियां भी हैं जिन्हें हमारे कान वैदिक काल से सुनते चले आये हैं और वह भी जिन्हें हमारे भाई तारीख़ के तीसरे दौर में अपने साथ लाये. पर इसके क़ानून क़ायदे अपने हैं और यह कभी दूसरी ज़बान की हुकूमत मानने को तैयार नहीं. यह ज़बान भूकी नंगी नहीं, क्योंकि यह लफ़्ज़ों के लिये संस्कृत, अरबी, फ़ारसी, अंग्रेज़ी, सभी से ख़िराज ले सकती है. इसके साहित्य का भण्डार भरा है. पर इसके आने वाले साहित्य के सामने इसके पुराने कारनामे ऐसे ही फीके दिखाई देंगे जैसे सूरज के सामने सवेरे के तारे.

اودھ کے شوقینوں نے اسے اور شوخ کیا. کچھ نادان دوستوں اور کچھ دانا دشمنوں نے افراتفری سے فائدہ اٹھایا اور زبان کا ایک دوسرا ہی طرز ایجاد کرڈالا. نتیجہ یہ ہوا کہ ایک زبان کے دو ڈھنگ چل پڑے اور ان میں آپس میں کھینچ تان ہونے لگی. تاریخ کے پرانے اور نئے دوروں پر دھیان دیجئے اور ان سے سیکھ لیجئے. ہر زمانے میں دو شکتیوں کا عمل دکھائی دیتا ہے— ایک طرف فرقوں، نسلوں، رسموں اور رواجوں کی بہتایت ہے تو دوسری طرف ایکتا کی طاقت، جو انہیں ملاکر ایک سبھیتا پیدا کرتی ہے. ہر دور میں یہی عمل جاری رہا ہے. کثرت میں وحدت کا تماشہ ہوتا نظر آتا ہے. آج بھی وہی کشمکش ہے. ہندستان رقبہ اور آبادی میں ایک بہت بڑا دیس ہے. اس میں کئی نسلوں کے آدمی بستے ہیں، کتنے ہی مذہب ہیں، کچھ کی جنم بھومی ہندستان ہے، کچھ کی باہر کے دیس. ان کی ریتیں اور رسمیں الگ ہیں، روایتیں جدا ہیں، ذاتی قانون، دھرم کے ٹھکانے نیارے ہیں. لیکن یہ سب کچھ ہوتے ہوئے بھی ایک تاریخی قوت ہے جو کڑیوں کو جوڑ کر ایک مضبوط زنجیر ڈال رہی ہے، معلوم نہیں کب سے، لیکن تاریخ کے زمانے سے بہت پہلے سے، قسمت کا یہی فیصلہ ہے.

دنیا میں نہ کسی زمانے میں، نہ کسی ملک میں کوئی بھی راج بہت دن چلا ہے، جو ایک سماج کی بنیادوں پر نہ کھڑا ہو. ایک سماج کا آسرا ہمارے دلوں کا میل ملاپ ہے. دلوں میں محبت ایک دوسرے کے طریقوں، خیالوں اور بھاؤں کی عزت سے، اپنے میں سب دیش والوں کو اور سب دیش والوں میں اپنے کو دیکھنے سے پیدا ہوتی ہے. یہی وجہ ہے کہ ہمارا سماج ملواں ہوگا، جسمیں ہندستان کے کل باشندے شامل ہونگے. اس ملواں سماج سے جو تہذیب پیدا ہوگی وہ ایک مشترکہ خاندان کی مشترکہ جائداد ہوگی. اس نئے سماج، نئی سبھیتا کی ضرورتوں کو ایک ملواں زبان ہی پورا کرسکتی ہے. یہ وہی زبان ہوسکتی ہے جو اپنے پرکھوں کا آدر اور مہمانوں کا سواگت کرتی ہے. اسکا دیس کی کسی بولی سے بیر نہیں، لیکن اس پر کسی خاص فرقے کا ٹیکا نہیں ہے. یہ زبان پرانی بھی ہے، نئی بھی. اس میں وہ دھونیاں بھی ہیں جنھیں ہمارے کان ویدک کال سے سنتے چلے آئے ہیں اور وہ بھی جنھیں ہمارے بھائی تاریخ کے تیسرے دور میں اپنے ساتھ لائے. پر اس کے قانون قاعدے اپنے ہیں اور یہ کبھی دوسری زبان کی حکومت ماننے کو تیار نہیں. یہ زبان بھوکی ننگی نہیں، کیونکہ یہ لفظوں کے لئے سنسکرت، عربی، فارسی، انگریزی، سبھی سے خراج لے سکتی ہے. اس کے ساہتیہ کا بھنڈار بھرا ہے. پر اس کے آنیوالے ساہتیہ کے سامنے اس کے پرانے کارنامے ایسے ہی پھیکے دکھائی دیں گے جیسے سورج کے سامنے سویرے کے تارے.

ज़बानों का रिवाज था. एक ज़बान ऊंचे दरजे के लोगों और पढ़े लिखों की होती थी और दूसरी आम लोगों, गांव वालों की. पहले दौर के पन्डितों और दरबानों की ज़बान संस्कृत थी, लेकिन साधारन आदमी देस के जुदा जुदा इलाक़ों में अलग अलग बोलियां बोलते थे जो सीधी सादी और आसान थीं. दूसरे दौर में मज़हबी प्रचार के लिए पाली और अर्ध मागधी काम में आने लगीं और कुछ महाराजाओं ने पाली को सरकारी काम में भी इस्तेमाल किया, लेकिन बाद में संस्कृत का बोलबाला हुआ और प्राकृतें बोली-ठोली होकर रहीं. कहीं मराठी प्राकृत बोली जाती थी तो कहीं सूरसेनी और कहीं मगधी. तीसरा दौरा आया तो दिल्ली के तुर्क और मुग़ल सम्राटों ने फ़ारसी को दफ़्तरी ज़बान ठहराया. उन्नीसवीं सदी तक यही हालत रही. पढ़ने लिखने में अरबी, फ़ारसी और संस्कृत काम में आती थीं. पर हिन्दुस्तानियों की बहुत बड़ी तादाद हिन्दुस्तानी, ब्रज, अवधी, बंगला, गुजराती, मराठी वग़ैरा भाशायें बोलती थीं. इनकी रुचि और स्वभाव का यही तक़ाज़ा था कि वे अपने भाव और विचारों को इन्हीं के ज़रिये ज़ाहिर करें. इसलिए इस ज़माने में हिन्दू और मुसलमान दोनों मिल कर इन भाशाओं का साहित्य बनाते रहे.

उन्नीसवी सदी से तारीख़ का नया दौर शुरू हुआ. पहले पहल तो इस ज़माने में भी पुरानी लकीरों पर काम चला. लेकिन फ़ारसी और संस्कृत की जगह अंग्रेज़ी ज़बान ने ली. पर जैसे जैसे स्वदेशी और स्वराज का ज़ोर बढ़ा परदेसी भाशा की तरफ़ से जी हटने लगा. अब यह सवाल पैदा हुआ कि देश की कौन सी भाशा इस लायक़ है कि उसे कुल हिन्द की बोली माना जाय. इसमें एक यह पेच था कि आज़ादी और बराबरी के ज़माने में आम और ख़ास की बोली और भाशा में फ़र्क़ नहीं हो सकता था इसलिए फ़ारसी, संस्कृत न पढ़ाई का ज़रिया और न सरकार दरबार के कामों के लिए कुल देश की भाशा मानी जा सकती थी. यह मरतबा किसी देसी बोली को ही दिया जा सकता है. देखा तो हर सूबे की अपनी ज़बान है और इसमें अच्छा ख़ासा अदब है. लेकिन इन सूबाई ज़बानों में एक ऐसी है जिसका फैलाव सबसे ज़्यादा है, जिसकी सेवा उत्तर में ही नहीं दक्खिन में भी है. यह ज़बान बहुत पुरानी है. चौदहवीं सदी से आज तक लगातार इसमें साहित्य तैयार होता रहा है. हिन्दुस्तान के सभी मज़हबों ने इसमें प्रचार किया है और सब ने इसकी तरक़्क़ी में हिस्सा लिया है. अठारहवीं सदी के शुरू तक यह ज़बान जिस तरह बोली और लिखी जाती थी वह एक मिला जुला तर्ज़ था. इसमें ठेठ हिन्दी का ठाठ भी था और फ़ारसी का भी चटख़ारा. लेकिन जब मुहम्मदशाही दरबार का असर पड़ा तो इसके तर्ज़ में नया रंग पैदा हो गया. ईरानी, तूरानी, नये पुराने विलायती अमीरों को यह रंग ऐसा भाया कि उन्होंने पुरानी ज़बान को बदल डाला.

زبانوں کا رواج تھا. ایک زبان اونچے درجے کے لوگوں اور پڑھے لکھوں کی ہوتی تھی اور دوسری عام لوگوں، گاؤں والوں کی. پہلے دور کے پنڈتوں اور دربانوں کی زبان سنسکرت تھی. لیکن سادھارن آدمی دیس کے جدا جدا علاقوں میں الگ الگ بولیاں بولتے تھے جو سیدھی سادی اور آسان تھیں. دوسرے دور میں مذہبی پرچار کے لئے پالی اور اردھ ماگدھی کام میں آنے لگیں اور کچھ مہاراجاؤں نے پالی کو سرکاری کام میں بھی استعمال کیا، لیکن بعد میں سنسکرت کا بول بالا ہوا اور پراکرتیں بولی ٹھولی ہوکر رہیں. کہیں مراٹھی پراکرت بولی جاتی تھی تو کہیں سورسینی اور کہیں مگدھی. تیسرا دور آیا تو دلی کے ترک اور مغل سمراٹوں نے فارسی کو دفتری زبان ٹھہرایا. انیسویں صدی تک یہی حالت رہی. پڑھنے لکھنے میں عربی، فارسی اور سنسکرت کام میں آتی تھیں. پر ہندستانیوں کی بہت بڑی تعداد ہندستانی، برج، اودھی، بنگلا، گجراتی، مراٹھی وغیرہ بھاشائیں بولتی تھیں. ان کی روچی اور سوبھاؤ کا یہی تقاضہ تھا کہ وے اپنے بھاؤ اور وچاروں کو انہیں کے ذریعہ ظاہر کریں. اس لئے اس زمانے میں ہندو اور مسلمان دونوں مل کر ان بھاشاؤں کا ساہتیہ بناتے رہے.

انیسویں صدی سے تاریخ کا نیا دور شروع ہوا. پہلے پہل تو اس زمانے میں بھی پرانی لکیروں پر کام چلا. لیکن فارسی اور سنسکرت کی جگہ انگریزی زبان نے لی. پر جیسے جیسے سودیشی اور سوراج کا زور بڑھا پردیسی بھاشا کی طرف سے جی ہٹنے لگا. اب یہ سوال پیدا ہوا کہ دیش کی کونسی بھاشا اس لائق ھے کہ اسے کل ہند کی بولی مانا جائے. اس میں ایک یہ پیچ تھا کہ آزادی اور برابری کے زمانے میں عام اور خاص کی بولی اور بھاشا میں فرق نہیں ہوسکتا تھا اس لئے فارسی، سنسکرت نہ پڑھائی کا ذریعہ اور نہ سرکار دربار کے کاموں کے لئے کل دیش کی بھاشا مانی جاسکتی تھی. یہ مرتبہ کسی دیسی بولی کو ہی دیا جاسکتا ھے. دیکھا تو ہر صوبے کی اپنی زبان ھے اور اس میں اچھا خاصا ادب ھے. لیکن ان صوبائی زبانوں میں ایک ایسی ھے جس کا پھیلاؤ سب سے زیادہ ھے، جس کی سیوا اتر ہی نہیں دکھن میں بھی ھے. یہ زبان بہت پرانی ھے. چودھویں صدی سے آج تک لگاتار اس میں ساہتیہ تیار ہوتا رہا ھے. ہندستان کے سبھی مذہبوں نے اس میں پرچار کیا ھے اور سب نے اس کی ترقی میں حصہ لیا ھے. اٹھارھویں صدی کے شروع تک یہ زبان جس طرح بولی اور لکھی جاتی تھی وہ ایک ملا جلا طرز تھا. اس میں ٹھیٹھ ہندی کا ٹھاٹھ بھی تھا اور فارسی کا بھی چٹخارا. لیکن جب محمد شاہی دربار کا اثر پڑا تو اس کے طرز میں نیا رنگ پیدا ہوگیا. ایرانی، تورانی، نئے پرانے ولایتی امیروں کو یہ رنگ ایسا بھایا کہ انہوں نے پرانی زبان کو بدل ڈالا.

करता था, उसकी पैदावार उसके लिए काफ़ी थी, उसकी ज़रूरतें कम और इनमें तब्दीलियां नहीं होती थीं, अब काफ़ी नहीं. अब तमाम हिन्दुस्तान की एक मंडी है, जिस में दूर और पास के सब गांव लेन देन करते हैं. सारे देश का व्यौपार एक साख पर क़ायम है और कुल कारोबार हुन्डी पर्चे पर चलता है. क़ुदरत ने मुल्क में अपनी नियामतें इस तरह फैलाई हैं कि कोई हिस्सा बिना दूसरे हिस्सों की मदद के ख़ुशहाल नहीं रह सकता—कहीं गेहूं उगता है तो कहीं चावल, कहीं नमक मिलता है तो कहीं लकड़ी, कोयला; कहीं लोहा निकलता है तो कहीं सोना; और सब मिलकर ही एक दूसरे की ज़रूरतों को पूरा कर सकते हैं.

समाजी ज़िन्दगी में भी इन्क़लाब है. ज़ात-पांत का ज़ोर घट रहा है. क़बीलों और फ़िर्क़ों की तक़सीम तो ग़ायब ही हो गई! आज कौन शरीफ़ है, कौन रज़ील? समाज में इज़्ज़त और सरकार में ओहदे पाने के लिए न ब्राह्मन क्षत्री होने की ज़रूरत है, न सैयद और पठान. जनम और ख़ानदान से कोई ऊंच नीच नहीं बनता. बराबरी का ज़माना है. क़ानून के सामने सब यकसां हैं. मर्द ही नहीं औरतों में भी बराबरी की तलब है. रहने सहने के तरीक़े बदल रहे हैं. हम एक से मकानों और बंगलों में रहते हैं, एकसां फ़र्नीचर इस्तेमाल करते हैं, एकसा लिबास पहनते हैं, एक ढंग से मेज़ कुर्सी पर कांटे छुरी की आदत डाल रहे हैं, चाय पीने में मक्खन तोश का नाश्ता करते हैं. बाहर ही नहीं, हमारे अन्दर का फ़र्नीचर भी यकसां है. योरप की विद्याओं ने एशियाई इल्मों की जगह ले ली है. सोचने के ढंग गौतम और कनाद, इब्न रुश्द और इब्न सीना से नहीं, कान्ट और हैगेल, न्यूटन और आइन्सटाइन से सीखते हैं. हम मनु और अबु हनीफ़ा की कतरब्यौंत करते हैं.

यह ज़रूर है कि अभी हमारे मनों में अपनी तरफ़ से दुबिधा है, अपने ऊपर पूरा भरोसा नहीं. हिन्दुस्तान के कुल बाशिन्दों को कन्धे मिलाकर खड़ा होना है. इनमें से किसी ने कंधा डाल दिया तो सब का काम बिगड़ जायगा.

आने वाले ज़माने का तमद्दुन इन्हीं ज़रूरतों और बुनियादों पर खड़ा होगा. यह बारह खंभा जिन सुतूनों के सहारे दुनिया की तेज़ और तुन्द आंधियों का सामना करेगा वह इस मुल्क के रहने वालों की जमाअतें हैं जो इस वक़्त बिखरी हुई और उदास दिखाई देती हैं—लेकिन जल्द मिलेंगी और अपनी ताक़त को पहचानेंगी. वह सभ्यता की ऐसी इमारत बनायेंगी जिसके मुक़ाबले में पुराने महल मंद पड़ जायंगे. ज़माना इस नये तमद्दुन का बेचैनी के साथ इन्तज़ार कर रहा है.

इस नये समाज और नये तमद्दुन की ज़बान क्या होगी? आइए तारीख़ से मश्विरा करें. यह एक बड़े अचम्भे की बात है कि हमारे देश की तारीख़ के हर दौर में दो तरह की

کرتا تھا، اُس کی پیداوار اس کے لئے کافی تھی، اس کی ضرورتیں کم اور اِن میں تبدیلیاں نہیں ہوتی تھیں، اب کافی نہیں۔ اب تمام ہندستان کی ایک منڈی ہے، جس میں دور اور پاس کے سب گاؤں لین دین کرتے ہیں۔ سارے دیش کا ویوپار ایک ساکھ پر قائم ہے اور کل کاروبار ہنڈی پرچے پر چلتا ہے۔ قدرت نے ملک میں اپنی نعمتیں اِس طرح پھیلائی ہیں کہ کوئی حصہ بنا دوسرے حصوں کی مدد کے خوشحال نہیں رہ سکتا—کہیں گیہوں اُگتا ہے تو کہیں چاول، کہیں نمک ملتا ہے تو کہیں لکڑی، کوئلہ؛ کہیں لوہا نکلتا ہے تو کہیں سونا؛ اور سب مل کر ہی ایک دوسرے کی ضرورتوں کو پورا کرسکتے ہیں۔

سماجی زندگی میں بھی اِنقلاب ہے۔ ذات پانت کا زور گھٹ رہا ہے۔ قبیلوں اور فرقوں کی تقسیم تو غائب ہی ہوگئی! آج کون شریف ہے، کون رذیل؟ سماج میں عزت اور سرکار میں عہدے پانے کے لئے نہ براہمن چھتری ہونے کی ضرورت ہے، نہ سید اور پٹھان۔ جنم اور خاندان سے کوئی اونچ نیچ نہیں بنتا۔ برابری کا زمانہ ہے۔ قانون کے سامنے سب یکساں ہیں۔ مرد ہی نہیں عورتوں میں بھی برابری کی طلب ہے۔ رہنے سہنے کے طریقے بدل رہے ہیں۔ ہم ایک سے مکانوں اور بنگلوں میں رہتے ہیں، ایک سا فرنیچر اِستعمال کرتے ہیں، ایک سا لباس پہنتے ہیں، ایک ڈھنگ سے میز کرسی پر کانٹے چھری کی عادت ڈال رہے ہیں، چائے پینے میں مکھن توش کا ناشتہ کرتے ہیں۔ باہر ہی نہیں، ہمارے اندر کا فرنیچر بھی یکساں ہے۔ یورپ کی ودیاؤں نے ایشیائی علموں کی جگہ لے لی ہے۔ سوچنے کے ڈھنگ گوتم اور کناد، اِبن رشد اور اِبن سینا سے نہیں، کانٹ اور ہیگل، نیوٹن اور آئنسٹائن سے سیکھتے ہیں۔ ہم منو اور ابوحنیفہ کی کتربیونت کرتے ہیں۔

یہ ضرور ہے کہ ابھی ہمارے منوں میں اپنی طرف سے دوبدھا ہے، اپنے اُوپر پورا بھروسہ نہیں۔ ہندستان کے کل باشندوں کو کندھے ملاکر کھڑا ہونا ہے۔ اِن میں سے کسی نے کندھا ڈال دیا تو سب کا کام بگڑ جائیگا۔

آنے والے زمانے کا تمدن انہیں ضرورتوں اور بنیادوں پر کھڑا ہوگا۔ یہ بارہ کھمبا جن ستونوں کے سہارے دنیا کی تیز اور تند آندھیوں کا سامنا کریگا وہ اِس ملک کے رہنے والوں کی جماعتیں ہیں جو اِس وقت بکھری ہوئی اور اُداس دکھائی دیتی ہیں—لیکن جلد ملیں گی اور اپنی طاقت کو پہچانیں گی۔ وہ سبھیتا کی ایسی عمارت بنائینگی جس کے مقابلے میں پرانے محل مند پڑجائینگے۔ زمانہ اِس نئے تمدن کا بےچینی کے ساتھ اِنتظار کر رہا ہے۔

اِس نئے سماج اور نئے تمدن کی زبان کیا ہوگی؟ آئیے تاریخ سے مشورہ کریں۔ یہ ایک بڑے اچنبھے کی بات ہے کہ ہمارے دیش کی تاریخ کے ہر دور میں دو طرح کی

मौलवी और पंडितों, सरकारी दरबारी उहदादारों को छोड़ कर जो संस्कृत, फ़ारसी और अरबी सीखते थे, बाक़ी सभी हिन्दू मुसलमान हिन्दी बोलियां बोलते थे और इन्हीं में अपने विचार और भाव ज़ाहिर करते थे. उर्दू, ब्रज, अवधी, बंगला, पंजाबी बोलियों में सैकड़ों हिन्दू मुसलमान शायर हुए जिनके कारनामों से इनके ख़ज़ाने मालामाल हैं.

भाशा, साहित्य और कला में किसी क़ौम की आत्मा का परतव दिखाई देता है. इससे इसके गुनों का और इसकी असलियत का पता लगता है. इनकी यकसानियत क़ौमी आत्मा की एकता को ज़ाहिर करती है. यह एकता ज़िन्दगी के और अंगों में भी दिखाई देती है—मसलन् चाल चलन के उसूलों और सचाई के रास्तों की तलाश में. इन पर ग़ौर करें तो बावजूद मज़हबी फ़रक़ों के एक गहरी समानता पाई जाती है. दुनिया की ख़्वाहिशों से दिल हटाना, जो कुछ मिल गया उस पर सब्र करना, आदमी आदमी से मुहब्बत करना—अल्लाह से लौ लगाना, जिन्होंने दुनिया को तज दिया है और अन्दरूनी शक्ति को पा लिया है उनका सत्संग करना, गुरु या पीर को राह दिखानेवाला मानना और उसकी इज़्ज़त करना—यह ऐसे ख़्याल थे जो हिन्दुस्तान के सभी लोगों में मुश्तरिक थे. साधू-सन्तों और सूफ़ी दरवेशों ने इस इश्क़ के मज़हब, प्रेम के धर्म का प्रचार किया और कुल हिन्दुस्तान को भाईचारे के रिश्तों में बांध दिया. इनके दिलों में कैसी सफ़ाई और हिम्मत थी. मुहम्मद अली क़ुतुबशाह, जो गोल्कंडा के बादशाह और अकबर के हमअसर थे, यों बेधड़क बयान करते हैं—कुफ़् रीति क्या हूर इस्लाम रीति—हर एक रीति में इश्क़ का राज़ है. यह था इन चन्द सौ सालों में हाकिमों के तबक़े और ग़ैर मज़हब के लोगों की तबीयतों का मिलन. कबीर, नानक, दादू, तुकाराम, मुईउद्दीन, बाबा फ़रीद, रज्जब, और बहुतेरे हिन्दू और मुसलमानों ने इन्हीं विचारों को फैलाया है. इस तबियत से ख़ूबसूरती के वे पुतले तैयार हुए जिनको देखकर आज भी हमारी रगों का ख़ून तेज़ी से बहने लगता है. इसी दिल से वे जज़्बे पैदा हुए जिन्होंने हिन्दुस्तान से कुछ दिनों के लिए दुई को मिटा दिया.

अठारहवीं सदी के पूरे होते होते इस तमद्दुन ने भी दम तोड़ा. तारीख़ के तीन दौर ख़तम हो चुके थे. उन्नीसवीं सदी ने चौथे दौर का डौल डाला. आज हम तारीख़ के इस दौर में से गुज़र रहे हैं. लेकिन अभी तो मंज़िल की पहली सीढ़ियों पर ही हैं. इस भूल भुलइयां में आगे क्या है इसकी जांच उस धुंधले ख़ाके से हो सकती है जो इस वक़्त हमारी आंखों के सामने है. आज हिन्दुस्तान की आर्थिक ज़िन्दगी एक नये ढङ्ग पर चल रही है. दस्तकारी की जगह कारख़ाने ले रहे हैं. गांव की शान्त और सादा रविश ख़तम हो चुकी. वह हालत जिसमें हर एक गांव अपने ऊपर आप भरोसा

مولوی اور پنڈتوں، سرکاری درباری عہدہ داروں کو چھوڑ کر جو سنسکرت، فارسی اور عربی سیکھتے تھے، باقی سبھی ھندو مسلمان ھندی بولیاں بولتے تھے اور انھیں میں اپنے وچار اور بھاؤ ظاھر کرتے تھے، اردو، برج، اودھی، بانگلہ، پنجابی بولیوں میں سیکڑوں ھندو مسلمان شاعر ھوئے جن کے کارناموں سے ان کے خزانے مالا مال ھیں ۔

بھاشا، ساھتیہ اور کلا میں کسی قوم کی آتما کا پرتو دکھائی دیتا ھے ۔ اس سے اس کے گنوں کا اور اس کی اصلیت کا پتہ لگتا ھے ۔ ان کی یکسانیت قومی آتما کی ایکتا کو ظاھر کرتی ھے. یہ ایکتا زندگی کے اور انگوں میں بھی دکھائی دیتی ھے — مثلاً چال چلن کے اصولوں اور سچائی کے راستوں کی تلاش میں ۔ ان پر غور کریں تو باوجود مذھبی فرقوں کے ایک گہری سمانتا پائی جاتی ھے ۔ دنیا کی خواھشوں سے دل ھٹانا، جو کچھ مل گیا اُس پر صبر کرنا، آدمی آدمی سے محبت کرنا — اللہ سے لو لگانا، جنھوں نے دنیا کو تیج دیا ھے اور اندرونی شکتی کو پالیا ھے ان کا ست سنگ کرنا، گرو یا پیر کو راہ دکھانے والا ماننا اور اُس کی عزت کرنا — یہ ایسے خیال تھے جو ھندستان کے سبھی لوگوں میں مشترک تھے ۔ سادھو سنتوں اور صوفی درویشوں نے اس عشق کے مذھب، پریم کے دھرم کا پرچار کیا اور کل ھندستان کو بھائی چارے کے رشتوں سے باندھ دیا ۔ ان کے دلوں میں کیسی صفائی اور ھمت تھی ۔ محمد علی قطب شاہ، جو گولکنڈا کے بادشاہ اور اکبر کے ھمعصر تھے، یوں بےدھڑک بیان کرتے ھیں — کفر ریتی کیا حور اسلام ریتی — ھر ایک ریتی میں عشق کا راز ھے. یہ تھا ان چند سو سالوں میں حاکموں کا طبقہ اور غیر مذھب کے لوگوں کی طبیعتوں کا ملن ۔ کبیر، نانک، دادو، تکارام، معین الدین، بابا فرید، رجب، اور بہتیرے ھندو اور مسلمانوں نے انھیں وچاروں کو پھیلایا ھے ۔ اس طبیعت سے خوبصورتی کے وے پتلے تیار ھوئے جن کو دیکھ کر آج بھی ھماری رگوں کا خون تیزی سے بہنے لگتا ھے ۔ اسی دل سے وے جذبے پیدا ھوئے جنھوں نے ھندستان سے کچھ دنوں کے لئے دوئی کو مٹا دیا ۔

اٹھارھویں صدی کے پورے ھوتے ھوتے اس تمدن نے بھی دم توڑا ۔ تاریخ کے تین دور ختم ھوچکے تھے ۔ انیسویں صدی نے چوتھے دور کا ڈول ڈالا ۔ آج ھم تاریخ کے اس دور میں سے گذر رھے ھیں ۔ لیکن ابھی تو منزل کی پہلی سیڑھیوں پر ھی ھیں ۔ اس بھول بھلیاں میں آگے کیا ھے اس کی جانچ اُس دھندلے خاکے سے ھوسکتی ھے جو اس وقت ھماری آنکھوں کے سامنے ھے ۔ آج ھندستان کی آرتھک زندگی ایک نئے ڈھنگ پر چل رھی ھے ۔ دستکاری کی جگہ کارخانے لے رھے ھیں ۔ گاؤں کی شانت اور سادہ روش ختم ھوچکی ۔ وہ حالت جس میں ھر ایک گاؤں اپنے اوپر آپ بھروسہ

करना है. हिन्दुस्तान में इस्लाम को फैलाने वाले इतने बादशाह और फ़ौजी कमान्दार नहीं थे जितने दरवेश, सूफ़ी, मस्तक़लन्दर थे जिन्हें राज दरबारों से सरोकार न था. यह अल्लाहवाले प्रेम के मतवाले, ग़रीबों, बेकसों और दीन दुखियों के साथी और हमदर्द थे. इनके आपस के बर्ताव का असर हाकिमों पर भी पड़ा और इस तरह मार धाड़ और डराने धमकाने की जगह अच्छे रिश्ते क़ायम हुए. दुश्मनी दोस्ती में बदली. तुर्क अपने साथ अपनी सभ्यता लाये. इनके समाज का ढांचा और राज का तरीक़ा राजपूतों से कुछ ज्यादा मुख्तलिफ़ न था. लेकिन धर्मों का फ़र्क़ और ज़बानें जुदा जुदा थीं. अब तक जितनी क़ौमें हिन्दुस्तान में आई थीं, उनके मज़हब कुछ अहमियत न रखते थे. इसलिये उन्होंने हिन्दू मज़हब अख्तियार कर लिये. लेकिन इस्लाम की हैसियत इनसे बिल्कुल अलग थी. इसके उसूल, पूजा पाठ के तरीक़े, क़ानून, रस्में और रिवाज ख़ास थे. और मुसलमानों की ज़िन्दगी पर इनका गहरा असर था. यह आसान नहीं था कि इस्लाम दूसरे मज़हबों में घुल जाता या उनके दबाव को क़बूल करता. लेकिन हिन्दुस्तान की सृष्टि ही में मेल जोल का गुन है. यह कैसे हो सकता था कि दो तहज़ीबें हिन्दुस्तान मे एक साथ रहें, और बिल्कुल एक दूसरे से अलग अलग रहें ? हिन्दू और इस्लामी तहज़ीब ने एक दूसरे की देखा देखी रंग बदला. हिन्दुओं के पुराने तरीक़े पलटे और मुसलमानों ने हिन्दू तरीक़ों को अपनाया. हिन्दू और मुसलमानी ज़ेहनों का मेल हुआ. दो अलहदा दुनियायें एक में समो गईं. एक नया तमद्दुन तैयार हुआ. इसके दुनियावी और रूहानी पहलुओं पर ध्यान दें तो इसकी यकसानियत का कुछ अन्दाज़ा हो सकता है.

ज़िन्दगी में हमारी सब से पहली ज़रूरत खाने पीने, कपड़ा पहनने और घर ठिकाने की है. इस ज़रूरत को पूरा करने ही के लिये हम खेती बाड़ी, धन्धे, दस्तकारी, बनिज-ब्यौपार करते हैं. अगर हम इस छ: सौ वर्ष की तारीख़ पर नज़र डालें जो तेरहवीं सदी से शुरू होकर उन्नीसवीं तक ख़तम होती है तो मालूम होता है कि इस ज़माने में हमारी ज़रूरतों को पूरा करने के तरीक़े हिन्दू मुसलमानों में यकसां थे. हम एक तरह से रहते थे, एक से कपड़े पहनते थे, एक से खाने खाते थे. हमारे खेल कूद, दिल्लगी, चहल पहल के सामान यकसां थे. ज़िन्दगी की मंज़िलों को एक साथ काटते थे और एक ही तरह निभाते थे. बच्चों के जनम, लड़के लड़कियों की ब्याह शादी, मरने के बाद शोक मनाने के तरीक़े मिलते जुलते थे. इस ज़माने में हिन्दू और मुसलमानों ने जो तसवीरें खींचीं, महल, मक़बरे, मन्दिर और मस्जिदें तामीर कीं, राग रागनियां अलापीं, बाजे ईजाद किये, इनमें हिन्दू मुसलमान का कोई फ़र्क़ न था. इने गिने

کرتا ہے ۔ ہندستان میں اسلام کو پھیلانے والے اتنے بادشاہ اور فوجی کماندار نہیں تھے جتنے درویش، صوفی، مست قلندر تھے جنہیں راج درباروں سے سروکار نہ تھا. یہ اللہ والے پریم کے متوالے، غریبوں بیکسوں اور دین دکھیوں کے ساتھی اور ہمدرد تھے. ان کے آپس کے برتاؤ کا اثر حاکموں پر بھی پڑا اور اِس طرح مار دھاڑ اور ڈرانے دھمکانے کی جگہ اچھے رشتے قائم ہوئے ۔ دشمنی دوستی میں بدلی ۔ ترک اپنے ساتھ اپنی سبھیتا لائے ۔ اِن کے سماج کا ڈھانچہ اور راج کا طریقہ راجپوتوں سے کچھ زیادہ مختلف نہ تھا ۔ لیکن دھرموں کا فرق اور زبانیں جدا جدا تھیں ۔ اب تک جتنی قومیں ہندستان میں آئی تھیں، اِن کے مذہب کچھ اہمیت نہ رکھتے تھے ۔ اِس لئے انھوں نے ہندو مذہب اختیار کر لئے ۔ لیکن اسلام کی حیثیت اُن سے بالکل الگ تھی ۔ اِس کے اصول، پوجا پات کے طریقے، قانون، رسمیں اور رواج خاص تھے ۔ اور مسلمانوں کی زندگی پر اِن کا گہرا اثر تھا ۔ یہ آسان نہیں تھا کہ اسلام دوسرے مذہبوں میں گھل جاتا یا اُن کے دباؤ کو قبول کرتا ۔ لیکن ہندستان کی سرشتی ہی میں میل جول کا گن ہے ۔ یہ کیسے ہو سکتا تھا کہ دو تہذیبیں ہندستان میں ایک ساتھ رہیں، اور بالکل ایک دوسرے سے الگ الگ رہیں ؟ ہندو اور اسلامی تہذیب نے ایک دوسرے کی دیکھا دیکھی رنگ بدلا ۔ ہندوؤں کے پرانے طریقے پلٹے اور مسلمانوں نے ہندو طریقوں کو اپنایا ۔ ہندو اور مسلمانی ذہنوں کا میل ہوا ۔ دو علیحدہ دنیائیں ایک میں سمو گئیں۔ ایک نیا تمدن تیار ہوا ۔ اِس کے دنیاوی اور روحانی پہلوؤں پر دھیان دیں تو اِس کی یکسانیت کا کچھ اندازہ ہو سکتا ہے ۔

زندگی میں ہماری سب سے پہلی ضرورت کھانے پینے، کپڑا پہنے اور گھر ٹھکانے کی ہے ۔ اِس ضرورت کو پورا کرنے ہی کے لئے ہم کھیتی باڑی، دھندے، دستکاری، بنج بیوپار کرتے ہیں ۔ اگر ہم اِس چھ سو ورش کی تاریخ پر نظر ڈالیں جو تیرہویں صدی سے شروع ہو کر اُنیسویں تک ختم ہوتی ہے تو معلوم ہوتا ہے کہ اِس زمانے میں ہماری ضرورتوں کو پورا کرنے کے طریقے ہندو مسلمانوں میں یکساں تھے ۔ ہم ایک طرح سے رہتے تھے، ایک سے کپڑے پہنتے تھے، ایک سے کھانے کھاتے تھے ۔ ہمارے کھیل کود، دلگی، چہل پہل کے سامان یکساں تھے ۔ زندگی کی منزلوں کو ایک ساتھ کاٹتے تھے اور ایک ہی طرح نبھاتے تھے ۔ بچوں کے جنم، لڑکے لڑکیوں کی بیاہ شادی، مرنے کے بعد شوک منانے کے طریقے ملتے جلتے تھے ۔ اِس زمانے میں ہندو اور مسلمانوں نے جو تصویریں کھینچیں، محل، مقبرے، مندر اور مسجدیں تعمیر کیں، راگ راگنیاں الاپیں، باجے ایجاد کئے، اِن میں ہندو مسلمان کا کوئی فرق نہ تھا ۔ اِنے گنے

और क़बीलों की जड़ें मज़बूत. एक समाज के जन्म के लिये अभी इन्तज़ार की ज़रूरत थी.

तौभी फ़िरक़ों की कड़ियां ढीली हो चुकी थीं और मुल्क के बड़े बड़े इलाक़ों को एक ही इन्तज़ाम के सिलसिलों में गठे रहने की आदत पड़ रही थी. अमन और शान्ति का दायरा बढ़ गया था. धन दौलत और कारीगरी में अनोखी तरक़्क़ी हुई थी. ब्योपार की मंडियां और साहूकारी की साख कुल देस में ही नहीं, परदेसों में फैल रही थी. कला और साहित्य, फ़न और अदब ख़ूब चमक रहे थे. आज भी इनकी आबो ताब हमारी आंखों को चौंधियाती हैं. अजंता की तस्वीरों, एल्यूरा के मन्दिरों, सांची और सारनाथ, भरहत और अमरावती की मूर्तियों, अशोक की लाटों की कारीगरी के सामने दुनिया की कला पानी भरती है. इस ज़माने के गुनी, कलावंत और पंडित चीन से रूम और मिस्र तक अपना जवाब नहीं रखते थे. फ़लसफ़ा और अदब में इनके कारनामे सदा के लिये ज़िन्दा हैं. दर्शन, इतिहास, क़ानून, साइन्स और मज़हब के ऐसे धुरन्धर आलिम पैदा हुये, जिनका इस दिन तक इल्म की दुनिया में डंका बजता है. जब तक आदमी के दिल में अदब की क़दर है, तब तक कालिदास का नाम जीता है. हिन्दू तमद्दुन के सूरज को चढ़ने और आसमान की छत तक पहुंचने में 12 सदियां लगीं. इसकी रोशनी से हिन्दुस्तान में जगमगाहट और पड़ोस के देशों में नूर फैला. पर दुनिया का क़ायदा है कि ज्वार के बाद भाटा, बढ़ने के बाद घटने का वक़्त आता है. उतार में भी समय लगता है. 600 वर्ष तक हिन्दू सभ्यता को राजपूतों ने जीता रक्खा. लेकिन आख़िर में राजपूतों की फ़िरक़ाबंदियों ने राज की बुनियादों को खोखला कर दिया. जात पांत के भेद इतने बढ़ गये और कट्टर हो गये कि समाज में शक्ति बाक़ी नहीं रही. मतों के बखेड़ों और करमकांड के जंजाल से आदमी घबरा उठे. बौद्ध और जैन, वैश्नव, शैव और शाक्त के पुजारी एक दूसरे के बैरी हो गये. तारीख़ ने हिन्दू सभ्यता का वर्क़ उलट दिया और हिन्दुस्तान में एक नये दौर की शुरूआत हुई.

पहले तो अरबों ने सिन्ध की वादी में हिन्दू तहज़ीब की क़ूवत को आज़माया. पर अब भी इसमें जान बाक़ी थी. इसने कुछ जगह तो छोड़ी लेकिन अरबों को बहुत आगे न बढ़ने दिया. 300 वर्ष बाद अफ़ग़ानिस्तान की तरफ़ से तुर्कों के हमले शुरू हुए और बारहवीं सदी के आख़ीर तक उत्तरी हिन्दुस्तान राजपूतों के हाथों से निकल गया. नये क़बीलों, नये धर्म और नये तमद्दुन का हिन्दुस्तान में दाख़िला हुआ. राजपाट की लालच ने अमीरों और सरदारों, राजाओं और सामन्तों में लड़ाइयां कराईं. लेकिन इसे इस्लाम और हिन्दू धर्म की लड़ाई समझना बड़ी ग़लती

اور قبیلوں کی جڑیں مضبوط ۔ ایک سماج کے جنم کے لئے ابھی انتظار کی ضرورت تھی ۔

تو بھی فرقوں کی کڑیاں ڈھیلی ہو چکی تھیں اور ملک کے بڑے بڑے علاقوں کو ایک ہی انتظام کے سلسلوں میں گٹھے رہنے کی عادت پڑ رہی تھی ۔ امن اور شانتی کا دایرہ بڑھ گیا تھا ۔ دھن دولت اور کاریگری میں انوکھی ترقی ہوئی تھی ۔ بیوپار کی منڈیاں اور ساہوکاری کی ساکھ کل دیس میں ہی نہیں' پردیسوں میں پھیل رہی تھی ۔ کلا اور ساہتیہ' فن اور ادب خوب چمک رہے تھے ۔ آج بھی اُن کی آب و تاب ہماری آنکھوں کو چوندھیاتی ہیں ۔ اجنتا کی تصویروں' ایلورا کے مندروں' سانچی اور سارناتھ' بھرہت اور امراوتی کی مورتیوں' اشوک کی لاٹوں کی کاریگری کے سامنے دنیا کی کلا پانی بھرتی ہے ۔ اِس زمانے کے گنی' کلاونت اور پنڈت چین سے روم اور مصر تک اپنا جواب نہیں رکھتے تھے ۔ فلسفہ اور ادب میں اِن کے کارنامے سدا کے لئے زندہ ہیں ۔ درشن' اِتہاس' قانون' سائنس اور مذہب کے ایسے دھرندھر عالم پیدا ہوئے' جن کا اِس دن تک علم کی دنیا میں ڈنکا بجتا ہے ۔ جب تک آدمی کے دل میں ادب کی قدر ہے' تب تک کالیداس کا نام جیتا ہے ۔ ہندو تمدن کے سورج کو چڑھنے اور آسمان کی چھت تک پہنچنے میں 12 صدیاں لگیں ۔ اس کی روشنی سے ہندستان میں جگمگاہٹ اور پڑوس کے دیشوں میں نور پھیلا ۔ پر دنیا کا قاعدہ ہے کہ جوار کے بعد بھاٹا' بڑھنے کے بعد گھٹنے کا وقت آتا ہے ۔ اتار میں بھی سمے لگتا ہے ۔ 600 ورش تک ہندو سبھیتا کو راجپوتوں نے جیتا رکھا ۔ لیکن آخر میں راجپوتوں کی فرقہ بندیوں نے راج کی بنیادوں کو کھوکھلا کر دیا ۔ ذات پات کے بھید اتنے بڑھ گئے اور کٹر ہوگئے کہ سماج میں شکتی باقی نہیں رہی ۔ متوں کے بکھیڑوں اور کرم کانڈ کے جنجال سے آدمی گھبرا اٹھے ۔ بودھ اور جین' ویشنو' شیو اور شاکت کے پجاری ایک دوسرے کے بیری ہوگئے ۔ تاریخ نے ہندو سبھیتا کا ورق اُلٹ دیا اور ہندستان میں ایک نئے دور کی شروعات ہوئی ۔

پہلے تو عربوں نے سندھ کی وادی میں ہندو تہذیب کی قوت کو آزمایا ۔ پر اب بھی اِس میں جان باقی تھی ۔ اِس نے کچھ جگہ تو چھوڑی لیکن عربوں کو بہت آگے نہ بڑھنے دیا ۔ 300 ورش بعد افغانستان کی طرف سے ترکوں کے حملے شروع ہوئے اور بارھویں صدی کے آخیر تک اتری ہندستان راجپوتوں کے ہاتھوں سے نکل گیا ۔ نئے قبیلوں' نئے دھرم اور نئے تمدن کا ہندستان میں داخلہ ہوا ۔ راج پاٹ کی لالچ نے امیروں اور سرداروں' راجاؤں اور سامنتوں میں لڑائیاں کرائیں ۔ لیکن اِسے اسلام اور ہندو دھرم کی لڑائی سمجھنا بڑی غلطی

अन्दर की सैर की तरफ़ झुकी थीं. सांस को रोक, ध्यान बांध, इन्द्रियों को क़ाबू में कर, कर्मों के अटल क़ानून, आवागमन के अटूट चक्कर से छुटकारा पाना, इसमें आदमी की ख़ैर समझते थे. इनकी ज़बान मुंह में क़लाबाज़ियां खाती थी, मुड़ती, तालु की छत को छूती, लहराती, अनोखी धुनें निकालती थी.

इन दोनों धारों के मिलने से जो सभ्यता पैदा हुई इसका वेदों और ब्राह्मनों में परछांवां दिखाई देता है. उसकी बुनियाद वह समाज थी, जो ज़ातों में बंटी हुई थी. उत्तरी हिन्दुस्तान में इस क़िस्म की कितनी ही समाजें थीं. हर एक का इन्तिज़ाम और राज अलग था और इनमें आपस में लाग डांट रहती थी. इन राज्यों में सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी राजे हुकूमत करते थे. इन फ़िरक़ों में कौशलों और पौरवों का नाम सब से ज़्यादा मशहूर था. अयोध्या और हस्तिनापुर इनके तमद्दुन के गहवारे थे. राम और कृश्न, जिन्हें आज भी हम प्रेम और भक्ति के साथ याद करते हैं, इस सभ्यता के आदर्श थे. इसकी कोख से दर्शन, फ़लसफ़ा के वह जवाहिर निकले जो उपनिशदों के अमर उपदेशों में जमा हैं और जिनकी ज्योति से हमारे दिलों में रोशनी है.

हज़ार डेढ़ हज़ार वर्ष तक यह नदी बड़े जोश ख़रोश के साथ बहती रही. फिर इसकी चाल मद्धिम पड़ी, इसका निर्मल जल गन्दा होने लगा. महाभारत की भयानक लड़ाई के बाद इसकी तह घास फूस से भर गई. अब निराई की ज़रूरत हुई. वह लोग जिन्होंने इस तमद्दुन को तरक़्क़ी दी थी, पूरब और दक्खिन में फैल चुके थे. इनमें नये ख़ूनों की शुरूआत हो चुकी थी. पुरानी समाजें ज़माने की टक्करों से घिस चुकी थीं. पुराने राज मिट चुके थे. हिन्दुस्तान इन्क़लाब के लिये तैयार था. महावीर और गौतम बुद्ध ने पुरानी दुनिया को पलट दिया और उस नई दुनिया का सन्देश दिया, जिसकी ज़मीन नई और आसमान नया था. ईसा से 600 वर्ष पहले वैदिक बुनियादों पर नई सभ्यता की इमारत बननी शुरू हुई. इसके हर खंड में नये और पुराने का मेल था. इसका मसाला एशिया और योरुप से इकट्ठा हुआ. ईरान, यूनान, और रोम, चीन, तूरान और ख़ुरासान से ईंट और चूना, लकड़ी और लोहा आया. इन सब मुल्कों से आदमियों के गिरोह के गिरोह ठट के ठट हिन्दुस्तान में आये, और यहां आकर बसे. हून और शक, कुशान और बख़्तरी, जाट और गूजर सब ने यहां पनाह ली. इनसे हिन्दुस्तानी क़बीलों की खींचतान हुई जिसका फल हिन्दू तहज़ीब के रूप में दिखाई दिया. इस ज़माने में मौर्यों, सतवाहनों और गुप्तों के साम्राज क़ायम हुए. पहली मर्तबा यह कोशिश हुई कि सारे देस को एक छत्र की छाया में लाया जाय. लेकिन देस का फैलाव बहुत था और फ़िरक़ों

اندر کی سیر کی طرف جھکی تھیں، سانس کو روک، دھیان باندھ، اندریوں کو قابو میں کر، کرموں کے اٹل قانون، آوا گمن کے اٹوٹ چکر سے چھٹکارا پانا، اِس میں آدمی کی خیر سمجھتے تھے۔ اِن کی زبان منھ میں قلابازیاں کھاتی تھی، مڑتی تالو کی چھت کو چھوتی، لہراتی، انوکھی دھنیں نکالتی تھی۔

اِن دونوں دھاروں کے ملنے سے جو سبھیتا پیدا ہوئی اِس کا ویدوں اور براھمنوں میں پرچھاواں دکھائی دیتا ھے۔ اِس کی بنیاد وہ سماج تھی، جو ذاتوں میں بنٹی ہوئی تھی۔ اتری ھندستان میں اِس قسم کی کتنی ہی سماجیں تھیں۔ ہر ایک کا انتظام اور راج الگ تھا۔ اور اِن میں آپس میں لاگ ڈانٹ رھتی تھی۔ اِن راجیوں میں سوریہ ونشی اور چندرونشی راجے حکومت کرتے تھے۔ اِن فرقوں میں کوشلوں اور پورووں کا نام سب سے زیادہ مشہور تھا۔ ایودھیا اور ھستناپور اِن کے تمدن کے گہوارے تھے۔ رام اور کرشن، جنھیں آج بھی ھم پریم اور بھکتی سے یاد کرتے ھیں، اِس سبھیتا کے آدرش تھے۔ اِسکی کوکھ سے درشن، فلسفہ کے وہ جواہر نکلے جو اُپنشدوں کے امر اُپدیشوں میں جمع ھیں اور جن کی جیوتی سے ھمارے دلوں میں روشنی ھے۔

ھزار ڈیڑھ ھزار ورش تک یہ ندی بڑے جوش خروش کے ساتھ بہتی رھی۔ پھر اِسکی چال مدھم پڑی، اِسکا نرمل جل گندا ھونے لگا۔ مہا بھارت کی بھیانک لڑائی کے بعد اِس کی تہ گھاس پھوس سے بھر گئی۔ اب نرائی کی ضرورت ھوئی۔ وہ لوگ جنھوں نے اِس تمدن کو ترقی دی تھی، پورب اور دکھن میں پھیل چکے تھے۔ اِن میں نئے خونوں کی شروعات ھو چکی تھی۔ پرانی سماجیں زمانے کی ٹکروں سے گھس چکی تھیں۔ پرانے راج مٹ چکے تھے۔ ھندستان اِنقلاب کے لئے تیار تھا۔ مہاویر اور گوتم بدھ نے پرانی دنیا کو پلٹ دیا اور اس نئی دنیا کا سندیش دیا، جسکی زمین نئی اور آسمان نیا تھا۔ عیسیٰ سے 600 ورش پہلے ویدک بنیادوں پر نئی سبھیتا کی عمارت بننی شروع ھوئی۔ اِس کے ھر کھنڈ میں نئے اور پرانے کا میل تھا۔ اِس کا مصالحہ ایشیا اور یورپ سے اکٹھا ھوا۔ ایران، یونان، اور روم، چین، توران اور خراسان سے اینٹ اور چونا، لکڑی اور لوھا آیا۔ اِن سب ملکوں سے آدمیوں کے گروہ کے گروہ ٹھٹ کے ٹھٹ ھندستان میں آئے، اور یہاں آ کر بسے۔ ھن اور شک، کوشان اور بختری، جاٹ اور گوجر سب نے یہاں پناہ لی۔ اِن سے ھندستانی قبیلوں کی کھینچ تان ھوئی جس کا پھل ھندو تہذیب کے روپ میں دکھائی دیا۔ اِس زمانے میں موریوں، ستواھنوں اور گپتوں کے سامراج قائم ھوئے۔ پہلی مرتبہ یہ کوشش ھوئی کہ سارے دیس کو ایک چھتر کی چھایا میں لایا جائے۔ لیکن دیس کا پھیلاؤ بہت تھا اور فرقوں

हिन्दुस्तानी कलचर और नया समाज

डाक्टर ताराचन्द एम. ए., डी. फ़िल. (आक्सन)

हमारा देश पुरानी लकीरों को छोड़ कर नये रास्तों पर चल रहा है. यह राहें किधर जाती हैं, और हमें कहां ले जायंगी, हर एक के दिल में इसके समझने और जानने की ख़्वाहिश है. पर हम अपने देश के आने वाले रूप को इस तरह जान सकते हैं जब गये ज़माने की तब्दीलियों को जानें. हमारे जीवन का झुकाव किस तरफ़ है, हमारे समाज का कैसा संगठन बनने वाला है, और इस समाज की सभ्यता किस ढङ्ग की होगी, इस सभ्यता की भाषा का कैसा रूप रंग होगा, इसके जानने के लिये हमें गुज़रे ज़माने की जांच करनी चाहिये.

आइये हिन्दुस्तान की तारीख़ के पन्नों पर निगाह डालें. पहले सफ़े पर हम देखते हैं कि आर्य क़बीले उत्तर पच्छिम की घाटियों से इस देश में घुस रहे हैं. वह पंजाब की नदियों के किनारे बस्तियां बसाते हैं, और गङ्गा, जमुना और सरस्वती की वादियों में फैल जाते हैं. उत्तरी हिन्दुस्तान में इनकी समाजें और राज क़ायम होते हैं. आर्यों और हिन्दुस्तान के पुराने निवासियों में लड़ाइयां होती हैं. लेकिन आख़िर में आर्य, द्राविड़ और मुन्डा नस्लें एक दूसरे में घुल मिल जाती हैं और इससे हिन्दुस्तान के पहले तमद्दुन की दाग़-बेल पड़ती है.

इस तमद्दुन की ख़ूबी यह है कि इसमें सभ्यता की दो धारें इस तरह से मिल गयी हैं, जैसे गङ्गा और जमुना की नदियां. आर्यों की निगाह दुनिया के बाहरी रंग रूप पर मोहित थी—धन दौलत, दूध पूत की चाह इनकी तबीयतों को गुदगुदाती थी. यह मनचले बहादुर और लड़ाके लोग सच्चाई और निडरता को आदमी का असली जौहर मानते थे. गल्लाबानों की ज़िन्दगी बसर करते थे. दिल चौंचाल थे. हिम्मतें बढ़ी हुई थीं. यह न देवताओं से डरते थे, न आदमियों से दबते थे; हंसमुख, खुले दिल और आज़ाद थे. नाच गाने के शौक़ीन थे. देवी देवताओं के भजन और गीत बनाते और गाते थे. इनकी भाषा करारी पर लचकदार और रसीली थी. इनके ख़्याल में गहराई और दिलेरी थी.

हिन्दुस्तान के पुराने निवासी खेती का पेशा करते थे. इनके मिज़ाज में नरमी और ज़माने के थप्पड़ों को सहने की आदत थी. इस दुखभरी दुनिया से मुंह मोड़, आंखें

هندستانی کلچر اور نیا سماج

ڈاکٹر تارا چند ایم . اے .' ڈی . فل . (آکسن)

ہمارا دیش پرانی لکیروں کو چھوڑ کر نئے راستوں پر چل رہا ہے . یہ راہیں کدھر جاتی ہیں' اور ہمیں کہاں لے جائیں گی' ہر ایک کے دل میں اِس کے سمجھنے اور جاننے کی خواہش ہے . پر ہم اپنے دیش کے آنے والے روپ کو اِس طرح جان سکتے ہیں جب گئے زمانے کی تبدیلیوں کو جانیں . ہمارے جیون کا جھکاؤ کس طرف ہے' ہمارے سماج کا کیسا سنگٹھن بننے والا ہے' اور اِس سماج کی سبھیتا کس ڈھنگ کی ہوگی ' اِس سبھیتا کی بھاشا کا کیسا روپ رنگ ہوگا' اِس کے جاننے کے لئے ہمیں گذرے زمانے کی جانچ کرنی چاہئے .

آیئے ہندستان کی تاریخ کے پنوں پر نگاہ ڈالیں . پہلے صفحے پر ہم دیکھتے ہیں کہ آریہ قبیلے اتر پچھم کی گھاٹیوں سے اس دیش میں گھس رہے ہیں . وہ پنجاب کی ندیوں کے کنارے بستیاں بساتے ہیں' اور گنگا' جمنا اور سرسوتی کی وادیوں میں پھیل جاتے ہیں . اتری ہندستان میں اِن کی سماجیں اور راج قائم ہوتے ہیں . آریوں اور ہندستان کے پرانے نواسیوں میں لڑائیاں ہوتی ہیں . لیکن آخر میں آریہ' دراوڑ اور منڈا نسلیں ایک دوسرے میں گھل مل جاتی ہیں اور اس سے ہندستان کے پہلے تمدن کی داغ بیل پڑتی ہے .

اِس تمدن کی خوبی یہ ہے کہ اِس میں سبھیتا کی دو دھاریں اِس طرح سے مل گئی ہیں' جیسے گنگا اور جمنا کی ندیاں . آریوں کی نگاہ دنیا کے باہری رنگ روپ پر موہت تھی—دھن دولت' دودھ پوت کی چاہ اُن کی طبیعتوں کو گدگداتی تھی . یہ منچلے بہادر اور لڑاکے لوگ سچائی اور نڈرتا کو آدمی کا اصلی جوہر مانتے تھے . گلہ بانوں کی زندگی بسر کرتے تھے . دل چونچال تھے . ہمتیں بڑھی ہوئی تھیں . یہ نہ دیوتاؤں سے ڈرتے تھے' نہ آدمیوں سے دبتے تھے؛ ہنس مکھ' کھلے دل اور آزاد تھے . ناچ گانے کے شوقین تھے . دیوی دیوتاؤں کے بھجن اور گیت بناتے اور گاتے تھے . اِن کی بھاشا کراری پر لچک دار اور رسیلی تھی . اِن کے خیال میں گہرائی اور دلیری تھی .

ہندستان کے پرانے نواسی کھیتی کا پیشہ کرتے تھے . اِن کے مزاج میں نرمی اور زمانے کے تھپیڑوں کو سہنے کی عادت تھی . اِس دکھ بھری دنیا سے منہ موڑ' آنکھیں

है, उस बेअन्त से इन्कार का नाम ही नास्तिकता है. यही हमारी महदूद हस्ती है.

यूरोप के एक विद्वान ने कहा है कि :—

"किसी मजहब के अनोखेपन या ख़ुसूसियत को समझना हो तो उन चीजों से नहीं समझना चाहिये जो उस मजहब में दूसरे मजहबों से मिलती हुई हैं. बल्कि उस चीज से समझना चाहिये जो उन मिलती जुलती चीजों के ऊपर उस मजहब की अपनी ख़ास मुहर है." बात सच है और जाहिर है. अगर हम हर मजहब के अनोखेपन को ही समझना चाहें तो सचमुच हमें सब मजहबों को टटोलकर देखना चाहिये और मजहब मजहब के फ़र्क़ पर ही जोर देना चाहिये, एक सी बातों पर नहीं. पर क्या सचमुच हमें इसकी जरूरत है ? क्या यह अच्छा है ? क्या इससे फ़ायदा है ? क्या इससे दुनिया का भला हो सकता है ? हर आदमी का रूप रंग हर दूसरे आदमी से अलग होता है. उठना बैठना और सोचने के तरीक़े भी अलग अलग होते हैं. हर कुनबे का अपना अपना ढंग होता है—हर क़ौम का, हर क़बीले का. बहुत सी बातों में सब एक दूसरे से अलग अलग होते हैं. पर क्या इन अलग अलग बातों पर जोर देना जरूरी है और मुफ़ीद है ? क्या यह काफ़ी नहीं है कि हम इन अलग अलग फ़र्क़ों को सिर्फ़ समझ लें और गवारा कर लें ? हर आदमी की आवाज अलग होती है जिस से वह अंधेरे में भी पहचाना जा सकता है. इसलिये अगर दो आदमी एक ही बात कहें तो क्या हम उनकी आवाजों के फ़र्क़ की वजह से इस बात को मानने से इन्कार कर दें कि उन दोनों का मतलब एक ही है ? दुनिया की आजकल की हालत में क्या इसकी जरूरत नहीं है कि हम फ़र्क़ों को बिल्कुल मिटाने की कोशिश किये बग़ैर उन्हें जहां तक हो सके नर्म करने की कोशिश करें. बिल्कुल मिटाने की कोशिश करना तो क़ुदरत के भी ख़िलाफ़ होगा क्योंकि क़ुदरत के अन्दर कसरत में वहदत और अनेकता में ही एकता है. पर क्या मैं और तू, मेरा कुनबा, मेरी नस्ल, मेरा क़बीला, मेरी क़ौम और मेरे रंग के लोग, यह सब आवाजें हद से ज्यादा नहीं बढ़ चुकी हैं ? क्या अब इस बात की जरूरत नहीं है कि हम अपनी मुश्तरका इन्सानियत पर जोर दें, यह समझें कि हम सब इन्सान हैं, सब आदम की औलाद हैं ? कसरत में वहदत देखने का यही एक तरीक़ा है. इसी निगाह को जगाने और बढ़ाने से समाज, समाजी जिन्दगी, सच्चा समाजवाद और इन्सानी भाईचारा मुमकिन हो सकते हैं. सूफ़ी कहता है :—

"जिस किसी के दिल में सच्चा कुफ़्र पैदा हो गया वह फिर इस ऊपर के इस्लाम से बेजार हो गया. उसे उसकी जरूरत नहीं रही."

ہے . اس بے انت سے انکار کا نام ہی ناستکتا ہے . یہی ہماری محدود ہستی ہے .

یورپ کے ایک ودوان نے کہا ہے کہ :—

" کسی مذہب کے انوکھے پن یا خصوصیت کو سمجھنا ہو تو ان چیزوں سے نہیں سمجھنا چاہئے جو اس مذہب میں دوسرے مذہبوں سے ملتی ہوئی ہیں . بلکہ اس چیز سے سمجھنا چاہئے جو ان ملتی جلتی چیزوں کے اوپر اس مذہب کی اپنی خاص مہر ہے ." بات سچ ہے اور ظاہر ہے . اگر ہم ہر مذہب کے انوکھے پن کو ہی سمجھنا چاہیں تو سچ مچ ہمیں سب مذہبوں کو ٹٹول کر دیکھنا چاہئے اور مذہب مذہب کے فرق پر ہی زور دینا چاہئے' ایک سی باتوں پر نہیں . پر کیا سچ مچ ہمیں اس کی ضرورت ہے ؟ کیا یہ اچھا ہے ؟ کیا اس سے فائدہ ہے ؟ کیا اس سے دنیا کا بھلا ہو سکتا ہے ؟ ہر آدمی کا روپ رنگ ہر دوسرے آدمی سے الگ ہوتا ہے . اٹھنا بیٹھنا اور سوچنے کے طریقے بھی الگ الگ ہوتے ہیں . ہر کنبے کا اپنا اپنا ڈھنگ ہوتا ہے—ہر قوم کا' ہر قبیلے کا . بہت سی باتوں میں سب ایک دوسرے سے الگ الگ ہوتے ہیں . پر کیا ان الگ الگ باتوں پر زور دینا ضروری ہے اور مفید ہے ؟ کیا یہ کافی نہیں ہے کہ ہم ان الگ الگ فرقوں کو صرف سمجھ لیں اور گوارا کر لیں ؟ ہر آدمی کی آواز الگ ہوتی ہے جس سے وہ اندھیرے میں بھی پہچانا جا سکتا ہے . اس لئے اگر دو آدمی ایک ہی بات کہیں تو کیا ہم ان کی آوازوں کے فرق کی وجہ سے اس بات کو ماننے سے انکار کر دیں کہ ان دونوں کا مطلب ایک ہی ہے ؟ دنیا کی آج کل کی حالت میں کیا اس کی ضرورت نہیں ہے کہ ہم فرقوں کو بالکل مٹانے کی کوشش کئے بغیر انہیں جہاں تک ہو سکے نرم کرنے کی کوشش کریں . بالکل مٹانے کی کوشش کرنا تو قدرت کے بھی خلاف ہوگا کیونکہ قدرت کے اندر کثرت میں وحدت اور انیکتا میں ہی ایکتا ہے . پر کیا میں اور تو' میرا کنبہ' میری نسل' میرا قبیلہ' میری قوم اور میرے رنگ کے لوگ' یہ سب آوازیں حد سے زیادہ نہیں بڑھ چکی ہیں ؟ کیا اب اس بات کی ضرورت نہیں ہے کہ ہم اپنی مشترکہ انسانیت پر زور دیں' یہ سمجھیں کہ ہم سب انسان ہیں' سب آدم کی اولاد ہیں ؟ کثرت میں وحدت دیکھنے کا یہی ایک طریقہ ہے . اسی نگاہ کو جگانے اور بڑھانے سے سماج' سماجی زندگی' سچا سماج واد اور انسانی بھائی چارہ ممکن ہو سکتے ہیں . صوفی کہتا ہے :—

" جس کسی کے دل میں سچا کفر پیدا ہو گیا وہ پھر اس اوپر کے اسلام سے بیزار ہوگیا . اسے اس کی ضرورت نہیں رہی ."

यह फ़रेब ठीक उलटा है इस ऊंची सच्चाई का, इस बुलन्द ख्याली का कि सब सच्चाई, सब नेकी और सब सुन्दरता उसी एक आत्मा, परम आत्मा या रूहे कुल में हैं जो असल 'मैं' हूं. सचमुच यह असल "मैं" ही दुनिया को बचा सकता है. इस ऊंची घट घट व्यापी "मैं" का मजहब ही अकेला सच्चा मजहब है. लेकिन यह "मैं" और यह मजहब तो सब मजहबों के अन्दर फैला हुआ है. सब इसी से क़ायम हैं. इसी के कारन यह सब मजहब आदमी के मददगार बन सकते हैं. यही सब में सुलह कराने वाली चीज है. यही सब को बांधने वाला सुनहरा धागा है. यह न हो तो सब टुकड़े टुकड़े हो जावें. इसी को तो जगाना और जानना है. घट घट के अन्दर व्यापक आत्मा से बड़ी और कौन चीज हो सकती है. यही तो "मैं" है. यही तो "मैं" हूं. इसी के अन्दर तो सारी दुनिया है. हमारी इस छोटी ख़ुदी से ज्यादा छोटी कौन सी चीज हो सकती है जो मन दो मन हाड़ मांस तक महदूद है और बराबर जन्म, मरन, जवानी और बुढ़ापा, सेहत और बीमारी के चक्करों में फंसी रहती है. फिर भी यह छोटी सी ख़ुदी उस बेअन्त लामहदूद आत्मा को अपनी बालिश्त से नापने की कोशिश करती है! उसकी यह कोशिश भी ठीक ही तो है क्योंकि आख़िर असलियत में यह वही है.

हमारी आत्मा हमारे सब अलग अलग मजहबों से ऊपर और बड़ी है. यह इस बात से भी साबित है कि हर आदमी चाहे वह बड़ा विद्वान हो और चाहे बिल्कुल अनपढ़, जब चाहे अपनी अन्दर की आवाज पर अपना ऊपरी मजहब बदल सकता है और बदलता रहता है और उसकी जगह जिस मजहब को चाहे अख़्तयार कर सकता है. इस से जाहिर है कि उसके अन्दर कोई चीज ऐसी है जो सब अलग अलग मजहबों से ऊंची और बालातर है. एक सूफ़ी ने कहा है :—

चूं हक़ीक़त रा मुजव्वज हम तुई
ऐन हक़ ईनस्त ऐनुलहक़ तुई

यानी—चूंकि असलियत को पहचानने वाला तुही है इसलिये ऐन सच यही है कि असली सच्चाई भी तुही है.

सूफ़ी कहता है कि "उम्मुलकिताब" यानी "सब किताबों की वह मां जो अल्लाह के पास बताई जाती है आदमी की रूह ही है."

असल असलियत को समझने में यानी असल आत्मा को पहचानने में आदमी ग़लती इसलिये करता है कि उसने अपने को इस धोके में डाल रक्खा है कि वह यही मुट्ठी भर हाड़, मांस और ख़ून की पोटली है. बेअन्त यानी लामहदूद को महदूद बनाकर वह महदूद को लामहदूद बनाने की कोशिश करता है. ख़ुदा का उल्टा ही ख़ुदी यानी शैतान है. ब्रह्म से इन्कार ही जीव है. सच्चाई की घटिया नक़ल कूट

یہ فریب ٹھیک اُلٹا ہے اِس اُونچی سچائی کا، اِس بلند خیالی کا کہ سب سچائی، سب نیکی اور سب سندرتا اُسی ایک آتما، پرم آتما یا روحِ کل میں ہیں جو اصل 'میں' ہوں. سچ مچ یہ اصل "میں" ہی دنیا کو بچا سکتا ہے. اِس اُونچی گھٹ گھٹ ویاپی "میں" کا مذہب ہی اکیلا سچا مذہب ہے. لیکن یہ "میں" اور یہ مذہب تو سب مذہبوں کے اندر پھیلا ہوا ہے. سب اِسی سے قائم ہیں. اِسی کے کارن یہ سب مذہب آدمی کے مددگار بن سکتے ہیں. یہی سب میں صلح کرانے والی چیز ہے. یہی سب کو باندھنے والا سنہرا دھاگا ہے. یہ نہ ہو تو سب ٹکڑے ٹکڑے ہوجاویں. اِسی کو تو جگانا اور جاننا ہے. گھٹ گھٹ کے اندر ویاپک آتما سے بڑی اور کون چیز ہو سکتی ہے. یہی تو "میں" ہے. یہی تو "میں" ہوں. اِسی کے اندر تو ساری دنیا ہے. ہماری اُس چھوٹی خودی سے زیادہ چھوٹی کون سی چیز ہو سکتی ہے جو من دو من ہاڑ مانس تک محدود ہے اور برابر جنم، مرن، جوانی اور بڑھاپا، صحت اور بیماری کے چکروں میں پھنسی رہتی ہے. پھر بھی یہ چھوٹی سی خودی اُس بےانت لامحدود آتما کو اپنی بالشت سے ناپنے کی کوشش کرتی ہے! اُسکی یہ کوشش بھی ٹھیک ہی تو ہے کیونکہ آخر اصلیت میں یہ وہی ہے.

ہماری آتما ہمارے سب الگ الگ مذہبوں سے اوپر اور بڑی ہے. یہ اس بات سے بھی ثابت ہے کہ ہر آدمی چاہے وہ بڑا ودوان ہو اور چاہے بالکل اَن پڑھ، جب چاہے اپنی اندر کی آواز پر اپنا اوپری مذہب بدل سکتا ہے اور بدلتا رہتا ہے اور اُسکی جگہ جس مذہب کو چاہے اختیار کر سکتا ہے. اِس سے ظاہر ہے کہ اُس کے اندر کوئی چیز ایسی ہے جو سب الگ الگ مذہبوں سے اونچی اور بالاتر ہے. ایک صوفی نے کہا ہے :—

چوں حقیقت را مجوز هم توئی
عین حق اینست عین‌الحق توئی

یعنی—چونکہ اصلیت کو پہچاننے والا تو ہی ہے اِس لئے عین سچ یہی ہے کہ اصلی سچائی بھی تو ہی ہے.

صوفی کہتا ہے کہ "اُم‌الکتاب" یعنی "سب کتابوں کی وہ ماں جو اللہ کے پاس بتائی جاتی ہے آدمی کی روح ہی ہے."

اصل اصلیت کو سمجھنے میں یعنی اصل آتما کو پہچاننے میں آدمی غلطی اس لئے کرتا ہے کہ اس نے اپنے کو اس دھوکے میں ڈال رکھا ہے کہ وہ یہی مٹھی بھر ہاڑ، مانس اور خون کی پوٹلی ہے. بےانت یعنی لامحدود کو محدود بناکر وہ محدود کو لامحدود بنانے کی کوشش کرتا ہے. خدا کا اُلٹا ہی خودی یعنی شیطان ہے. برہم سے انکار ہی جیو ہے. سچائی کی گھٹیا نقل جھوٹ

सब को दबाना या मिटाना ज़रूरी है !" यह लोग इस खुली सच्चाई को भूल जाते हैं कि सबके जिस्म एक प्रकृति या माद्दे के बने हुए हैं और सब की आत्माएं या रूहें एक ही परम आत्मा या रूहे कुल से निकली हैं.

अलग अलग मज़हबों के मानने वालों के इस झूटे दावे के पीछे एक गहरी सच्चाई छिपी है. हर मज़हब में कुछ आम बुनियादी बातें होती हैं और कुछ न कुछ ख़ास बात भी होती है. हर मज़हब किसी न किसी एक ख़ास सच्चाई या एक ख़ास नेकी या ख़ास तरह के नेक काम पर ज़ोर देता है और दूसरी सच्चाइयों, दूसरी नेकियों और दूसरे अच्छे कामों की निस्बत उसे बढ़ कर बताता है. यह बात आम तौर पर उस ख़ास देश, उस ख़स ज़माने या उन ख़ास हालात की वजह से होती है जिनमें वह मज़हब जन्म लेता है. मिसाल के लिये वैदिक धर्म में घट घट में रहने वाली एक आत्मा, और अलग अलग लोगों के अलग अलग फ़र्ज़ों के अनुसार समाज का संगठन करने पर ज़ोर दिया गया है. यहूदी धर्म में ईश्वर के कड़े इन्साफ़ और ईश्वर में बिश्वास करने वाले लोगों की रक्षा पर ज़ोर दिया गया है. पार्सी धर्म में पाकीज़गी, सच्चाई और ईमान्दारी पर ज़ोर दिया गया है. बौद्ध धर्म में त्याग और दया पर, ईसाई धर्म में बुराई का बदला बुराई से न देने पर, और दूसरों के लिये अपने को क़ुर्बान करने पर, इसलाम में सब इन्सानों की बराबरी और भाईचारे पर और ज़ुल्म का मुक़ाबिला करने पर वग़ैरा वग़ैरा. लेकिन धीरे धीरे सब मज़हबों की यह ख़ास बातें एक अजीब शकल अख़्तयार कर लेती हैं और हर मज़हब के लोग यह मानने लगते हैं कि उनके मज़हब को क़ायम करने वाला महापुरुश ही आदमी और ख़ुदा के बीच में सिफ़ारिश करने वाला या नाता जोड़ने वाला हो सकता है. जिस आदमी की वह सिफ़ारिश करदे वही निजात पायेगा और कोई निजात नहीं पा सकता और न कोई सिफ़ारिश कर सकता है.

जब आदमी "मेरा मज़हब" कहता है तो उसके इस कहने में एक और सच्चाई छिपी होती है जिसे अगर वह जान जावे तो वह सच्चाई ही उसके तांबे को पारस की तरह छू कर सोना कर दे. आपसी झगड़े की जगह आदमी फिर बड़ी से बड़ी शान्ति के मैदान में पहुंच जावे. "मेरा मज़हब" का मतलब है "मैं का मज़हब, आत्मा का मज़हब, उसी आत्मा का जो सबके अन्दर है, यानी परम आत्मा का या रूहे कुल का मज़हब."

"मेरा मज़हब ही अकेला सच्चा मज़हब है, जोमैं मानता हूं वही ठीक है, जो मैं करता हूं वही ठीक अमल है." मामूली तौर पर यह ज़बरदस्त धोका, यह झूटा घमन्ड, यह पागलपन, आदमी की छोटी ख़ुदी का यह माया जाल,

سب کو دبانا یا مٹانا ضروری ہے!" یہ لوگ اِس کھلی سچائی کو بھول جاتے ہیں کہ سب کے جسم ایک پرکرتی یا مادے کے بنے ہوئے ہیں اور سب کی آتمائیں یا روحیں ایک ہی پرم آتما یا روح کل سے نکلی ہیں۔

الگ الگ مذہبوں کے ماننے والوں کے اِس جھوٹے دعوی کے پیچھے ایک گہری سچائی چھپی ہے۔ ہر مذہب میں کچھ عام بنیادی باتیں ہوتی ہیں اور کچھ نہ کچھ خاص بات بھی ہوتی ہے۔ ہر مذہب کسی نہ کسی ایک خاص سچائی یا ایک خاص نیکی یا خاص طرح کے نیک کام پر زور دیتا ہے اور دوسری سچائیوں، دوسری نیکیوں اور دوسرے اچھے کاموں کی نسبت اُسے بڑھکر بتلاتا ہے۔ یہ بات عام طور پر اُس خاص دیش، اُس خاص زمانے یا اُن خاص حالات کی وجہ سے ہوتی ہے جن میں وہ مذہب جنم لیتا ہے۔ مثال کے لئے ویدک دھرم میں گھٹ گھٹ میں رہنے والی ایک آتما، اور الگ الگ لوگوں کے الگ الگ فرضوں کے انوسار سماج کا سنگٹھن کرنے پر زور دیا گیا ہے۔ یہودی دھرم میں ایشور کے کڑے اِنصاف اور ایشور میں وشواس کرنے والے لوگوں کی رکشا پر زور دیا گیا ہے۔ پارسی دھرم میں پاکیزگی، سچائی اور ایمانداری پر زور دیا گیا ہے۔ بودھ دھرم میں تیاگ اور دیا پر، عیسائی دھرم میں برائی کا بدلہ برائی سے نہ دینے پر، اور دوسروں کے لئے اپنے کو قربان کرنے پر، اِسلام میں سب اِنسانوں کی برابری اور بھائی چارے پر اور ظلم کا مقابلہ کرنے پر وغیرہ وغیرہ۔ لیکن دھیرے دھیرے سب مذہبوں کی یہ خاص باتیں ایک عجیب شکل اختیار کرلیتی ہیں اور ہر مذہب کے لوگ یہ ماننے لگتے ہیں کہ اُن کے مذہب کو قائم کرنے والا مہاپرش ہی آدمی اور خدا کے بیچ میں سفارش کرنے والا یا ناتا جوڑنے والا ہوسکتا ہے۔ جس آدمی کی وہ سفارش کردے وہی نجات پائیگا اور کوئی نجات نہیں پاسکتا اور نہ کوئی سفارش کرسکتا ہے۔

جب آدمی "میرا مذہب" کہتا ہے تو اُس کے اِس کہنے میں ایک اور سچائی چھپی ہوتی ہے جسے اگر وہ جان جاوے تو وہ سچائی ہی اُس کے تانبے کو پارس کی طرح چھوکر سونا کردے۔ آپسی جھگڑے کی جگہ آدمی پھر بڑی سے بڑی شانتی کے میدان میں پہونچ جاوے۔ "میرا مذہب" کا مطلب ہے "میں کا مذہب، آتما کا مذہب، اُسی آتما کا جو سب کے اندر ہے، یعنی پرم آتما کا یا روح کل کا مذہب۔"

"میرا مذہب ہی اکیلا سچا مذہب ہے، جو میں مانتا ہوں وہی ٹھیک ہے، جو میں کرتا ہوں وہی ٹھیک عمل ہے۔" معمولی طور پر یہ زبردست دھوکا، یہ جھوٹا گھمنڈ، یہ پاگل پن، آدمی کی چھوٹی خودی کا یہ مایا جال،

इन्सानी भाईचारे का असली रास्ता

اِنسانی بھائی چارے کا اصلی راستہ

डाक्टर भगवानदास

पिछले लेखों में हम दिखा चुके हैं कि दुनिया के अलग अलग मजहबों में बहुत सी बुनियादी बातें एक सी हैं. मजहबों की इन मिलती जुलती बातों में अच्छी बातें भी हैं और बुरी बातें भी. अच्छी बातों की बहुत सी मिसालें हम दे चुके हैं. बुरी बातों की एक खास मिसाल यह है कि हर मजहब कुछ दिनों चल कर सैकड़ों फ़िरक़ों, साम्प्रदायों और जमाअतों में बंट जाता है. इस का कारन आदमी के अन्दर की वह कमजोरी है जिसे हम 'ख़ुदी' कहते हैं और जो धर्म मजहब में भी अपना रंग लाए बिना नहीं रहती. हर एक अपनी ही राय को ठीक समझता है. लोगों के आपसी झगड़े भी इन फ़िरक़ों और साम्प्रदायों के बनने मे बहुत बड़ा हिस्सा लेते हैं. इससे भी अधिक बुरी एक बात यह है कि हर मजहब के अन्दर तरह तरह के गुप्त यानी खुफ़िया फ़िरक़े इस तरह के भी पैदा हो जाते हैं जिन्हें जादू, वाम मार्ग और शैतानी ताक़तों की पूजा कहकर बयान किया जा सकता है और किया जाता है. इस तरह की साम्प्रदायों में कहीं कहीं गंदी रस्में भी चल पड़ी हैं. यहां तक कि देवी देवताओं के नाम पर आदमी की क़ुर्बानी और मासूम बच्चों का क़त्ल तक होने लगता है. इस तरह के फ़िरक़ों और रिवाजों की तरफ़ हमें बराबर निगाह रखनी चाहिये और उनसे लड़ना चाहिये. हर रोशनी के पीछे कहीं न कहीं गहरा साया भी होता है. सुन्दर से सुन्दर आदमी या जानवर अपने जिस्म से गंदगी और मल मूत्र भी निकालता है. अच्छी से अच्छी मशीन कहीं न कहीं राख, फ़ुज़ला और गंदगी भी बाहर फेंकती है. इस तरह की चीज़ों को हमेशा साफ़ करते रहने, पोंछते रहने और धोते रहने की जरूरत होती है.

हर मजहब जब अपनी असल ऊंचाई से गिर जाता है और झूटे मुल्ला, पुरोहितों और गुमराह करने वाले ख़ुदग़र्ज़ रहनुमाओं के हाथों में पड़ जाता है तो उसके मानने वालों में से हर एक यह कहने लगता है कि:—"एक मेरा मजहब ही सच्चा मजहब है, यही एक असली और पुराना धर्म है. कम से कम मेरा यह धर्म और सब से कहीं अच्छा है. मेरे मजहब के मानने वाले ही धरमात्मा और मोमिन हैं और धर्मों के मानने वाले मलेच्छ, काफ़िर और पेगन हैं, और उन

ڈاکٹر بھگوان داس

پچھلے لیکھوں میں ہم دکھا چکے ہیں کہ دنیا کے الگ الگ مذہبوں میں بہت سی بنیادی باتیں ایک سی ہیں۔ مذہبوں کی اِن ملتی جلتی باتوں میں اچھی باتیں بھی ہیں اور بری باتیں بھی۔ اچھی باتوں کی بہت سی مثالیں ہم دے چکے ہیں۔ بری باتوں کی ایک خاص مثال یہ ہے کہ ہر مذہب کچھ دنوں چل کر سیکڑوں فرقوں، سامپردایوں اور جماعتوں میں بنٹ جاتا ہے۔ اِس کا کارن آدمی کے اندر کی وہ کمزوری ہے جسے ہم 'خودی' کہتے ہیں اور جو دھرم مذہب میں بھی اپنا رنگ لائے بنا نہیں رہتی۔ ہر ایک اپنی ہی رائے کو ٹھیک سمجھتا ہے۔ لوگوں کے آپسی جھگڑے بھی اِن فرقوں اور سامپردایوں کے بننے میں بہت بڑا حصہ لیتے ہیں۔ اِس سے بھی ادھک بری ایک بات یہ ہے کہ ہر مذہب کے اندر طرح طرح کے گپت یعنی خفیہ فرقے اِس طرح کے بھی پیدا ہوجاتے ہیں جنہیں جادو، وام مارگ اور شیطانی طاقتوں کی پوجا کہہ کر بیان کیا جاسکتا ہے اور کیا جاتا ہے۔ اِس طرح کے سامپردایوں میں کہیں کہیں گندی رسمیں بھی چل پڑی ہیں۔ یہاں تک کہ دیوی دیوتاؤں کے نام پر آدمی کی قربانی اور معصوم بچوں کا قتل تک ہونے لگتا ہے۔ اِس طرح کے فرقوں اور رواجوں کی طرف ہمیں برابر نگاہ رکھنی چاہئے اور اُن سے لڑنا چاہئے۔ ہر روشنی کے پیچھے کہیں نہ کہیں گہرا سایہ بھی ہوتا ہے۔ سندر سے سندر آدمی یا جانور اپنے جسم سے گندگی اور مل موتر بھی نکالتا ہے۔ اچھی سے اچھی مشین کہیں نہ کہیں راکھ، فضلہ اور گندگی بھی باہر پھینکتی ہے۔ اِس طرح کی چیزوں کو ہمیشہ صاف کرتے رہنے، پونچھتے رہنے اور دھوتے رہنے کی ضرورت ہوتی ہے۔

ہر مذہب جب اپنی اصل اُونچائی سے گر جاتا ہے اور جھوٹے ملا، پروہتوں اور گمراہ کرنے والے خودغرض رہنماؤں کے ہاتھوں میں پڑجاتا ہے تو اُس کے ماننے والوں میں سے ہر ایک یہ کہنے لگتا ہے کہ:—"ایک میرا مذہب ہی سچا مذہب ہے، یہی ایک اصلی اور پرانا دھرم ہے۔ کم سے کم میرا یہ دھرم اور سب سے کہیں اچھا ہے۔ میرے مذہب کے ماننے والے ہی دھرماتما اور مومن ہیں اور دھرموں کے ماننے والے ملیچھ، کافر اور پیگن ہیں۔ اور اُن

आवाज धीमी पड़ी और वह धीमे धीमे बोलता रहा, पर इतने धीमे नहीं कि लोग सुन न सकें:

"मेरे बच्चों ने जो चीज शुरू की, उसको पूरा करना मेरा कर्त्तव्य है. उनको हरगिज यह बात पसंद न होती कि मैं अपने दर्द को लेकर एक कोने में मुंह छिपाये पड़ा रहूं. इस चीज के लिये उन्होंने जान नहीं दी. उनके मर जाने से जो कमी हो गई है, अब तक मैंने उस कमी को पूरा करने की कोशिश नहीं की है. मगर हमारे नेता लेनिन की मृत्यु से हमारी आंखें खुल गई हैं. मुझको अपने पिछले जमाने की जवाबदेही करने के लिये न कहो. आज से हमारी नई जिन्दगी शुरू होती है."

जखार के दिल में दर्द से भरी हुई यादें घुमड़ रही थीं, उसके चेहरे पर मानो बादल सा छा गया था, मगर उसका चेहरा कठोर था. लेकिन जब उसको पार्टी में लेने के समर्थन में हाथों का एक समुन्दर लहराया तो उसकी आंखें चमकने लगीं और उसका पके बालों वाला सिर गर्व से तन गया.

नये लोगों को पार्टी में लेने की यह कार्रवाई बहुत रात गये तक चलती रही. सब से अच्छे और ऐसे लोग ही लिये गये, जिन्हें सब लोग जानते थे और जिनकी जिन्दगियों में कहीं कोई धब्बा न था.

लेनिन की मृत्यु ने लाखों मजदूरों को बालशेविक बनाया. नेता चला गया मगर पार्टी बदस्तूर क़ायम रही, उसमें कहीं कोई कमजोरी नहीं आई. कोई दरख्त जिसकी विशाल जड़ें धरती में मजबूती के साथ गड़ी होती हैं, उसके सिरे को अगर काट भी दिया जाय, तब भी वह मरता नहीं.

हे मेरी आत्मा! तू इस तरह मत जी, जिस तरह अब तक प्रशंसारहित होकर जीती रही है और हे आत्मा! जब तू मरे, तब इस तरह मरे, मानो मरी ही नहीं.

—मुतनब्बी

آواز دھیمی پڑی اور وہ دھیمے دھیمے بولتا رہا' پر اتنے دھیمے نہیں کہ لوگ سن نہ سکیں :

"میرے بچوں نے جو چیز شروع کی' اُس کو پورا کرنا میرا کرتویہ ھے. اُن کو ھرگز یہ بات پسند نہ ھوتی کہ میں اپنے درد کو لے کر ایک کونے میں منھ چھپائے پڑا رھوں. اِس چیز کے لئے انھوں نے جان نہیں دی. ان کے مر جانے سے جو کمی ھوگئی ھے' اب تک میں نے اس کمی کو پورا کرنے کی کوشش نہیں کی ھے. مگر ھمارے نیتا لینن کی مرتیو سے ھماری آنکھیں کھل گئی ھیں. مجھ کو اپنے پچھلے زمانے کی جوابدھی کرنے کے لئے نہ کہو. آج سے ھماری نئی زندگی شروع ھوتی ھے."

دخار کے دل میں درد سے بھری ھوئی یادیں گھمڑ رھی تھیں' اُس کے چہرے پر مانو بادل سا چھا گیا تھا. مگر اُس کا چہرہ کٹھور تھا. لیکن جب اُس کو پارٹی میں لینے کے سمرتھن میں ھاتھوں کا ایک سمندر لہرایا تو اس کی آنکھیں چمکنے لگیں اور اُس کا پکے بالوں والا سر گرو سے تن گیا.

نئے لوگوں کو پارٹی میں لینے کی یہ کارروائی بہت رات گئے تک چلتی رہی. سب سے اچھے اور ایسے لوگ ھی لئے گئے' جنھیں سب لوگ جانتے تھے اور جن کی زندگیوں میں کہیں کوئی دھبہ نہ تھا.

لینن کی مرتیو نے لاکھوں مزدوروں کو بولشیوک بنایا. نیتا چلا گیا مگر پارٹی بدستور دایم رھی' اس میں کہیں کوئی کمزوری نہیں آئی. کوئی درخت جس کی وشال جڑیں دھرتی میں مضبوطی کے ساتھ گڑی ھوتی ھیں' اُس کے سرے کو اگر کاٹ بھی دیا جائے' تب بھی وہ مرتا نہیں.

ھے میری آتما! تو اِس طرح مت جی' جس طرح اب تک پرشنسا رھت ھو کر جیتی رھی ھے اور ھے آتما! جب تو مرے' تب اس طرح مرے' مانو مری ھی نہیں.

—متنبی

"कोई सवाल ?" सिरोतेंको की आवाज़ ने शान्ति को भंग किया.

उपस्थित लोगों में खलबली सी मची, मगर किसी ने पहिले सभापति की बात का जवाब नहीं दिया. तब एक फ़ायरमैन, जो सीधे अपने इंजिन से चला आ रहा था और कालिख की तरह काला हो रहा था, निश्चयात्मक स्वर में बोला:

"पूछने को क्या है ? हम उसे जानते नहीं क्या ? उसे पार्टी में ले लो और क्या !"

लुहार गिलिया का चेहरा गर्मी और आवेश से लाल हो रहा था. उसने अपनी फटी हुई आवाज़ से चिल्ला कर कहा:

"यह बिलकुल ठीक ढंग का कामरेड है, कभी ग़द्दारी नहीं करेगा. तुम उस पर भरोसा कर सकते हो. वोट ले लो सिरोतेंको !"

हाल के पिछले हिस्से में से, जहां कोमसोमोल बैठे हुये थे, और जो उस अंधेरे में दिखाई नहीं दे रहा था, कोई उठा और बोला:

"कामरेड कोर्चागिन बतलायें कि उन्होंने क्यों किसानी जीवन अपनाया है और कैसे उसका मेल मजदूर मनोवृत्ति के साथ बिठाते हैं ?"

हाल में नाराज़गी की एक हलकी सी भुनाभुनाहट पैदा हुई और किसी ने ऐतराज़ करते हुये कहा:

"तुम ऐसे क्यों नहीं बोलते जिससे सीधे सादे लोग भी तुम्हारी बात समझ सकें ? खूब वक़्त चुना तुमने भी क़ाबलियत बघारने के लिये......"

मगर आर्तेम ने जवाब देना शुरू कर दिया था:

"यह बिलकुल ठीक बात उसने पूछी है कामरेड. उसने बिलकुल ठीक कहा है कि मैंने किसानी जीवन अपना लिया है. मगर मैं कहना चाहता हूं कि मैंने अपने मजदूर विवेक के साथ विश्वासघात नहीं किया है. बहरहाल आज से वह चीज़ खत्म भी हो गई. मैं अपने परिवार को रेलवे यार्ड के पास और ले आ रहा हूं, यही ज़्यादा अच्छा रहेगा. वह मनहूस खेत बहुत दिनों से मेरे गले में फंसता रहा है."

एक बार फिर आर्तेम का दिल कांपा जब उसने अपने समर्थन में उठे हुये हाथों के उस जंगल को देखा, और सिर ऊंचा करके जब वह आकर अपनी सीट पर बैठा तो उसे ऐसा लग रहा था जैसे उड़ा जा रहा हो. अपने पीछे उसने सिरोतेंको को ऐलान करते सुना: "सर्व सम्मति से पास."

मंच पर खड़ा होने वाला तीसरा आदमी पोलेनतावस्की का पहिले का मददगार ज़खार ब्रुज़ाक था. वह ख़ामोश तबियत का बुड्ढा आदमी खुद बहुत दिनों से इंजिन ड्राइवर था. उसने जब अपनी मेहनत की ज़िन्दगी का वर्नन खत्म किया और कहानी को उस दिन तक ले आया, तो उसकी

"کوئی سوال؟" سرونینکو کی آواز نے شانتی کو بھنگ کیا۔

اُپستھت لوگوں میں کھلبلی سی مچی، مگر کسی نے پہلے سبھاپتی کی بات کا جواب نہیں دیا۔ تب ایک فائرمین، جو سیدھے اپنے انجن سے چلا آرہا تھا اور کالکھ کی طرح کالا ہو رہا تھا، نشچیاتمک سور میں بولا:

"پوچھنے کو کیا ہے؟ ہم اُسے جانتے نہیں کیا؟ اُسے پارٹی میں لے لو اور کیا!"

لوہار گلیا کا چہرہ گرمی اور آویش سے لال ہو رہا تھا۔ اس نے اپنی پھٹی ہوئی آواز سے چلاکر کہا:

"یہ بالکل ٹھیک ڈھنگ کا کامریڈ ہے، کبھی غداری نہیں کرےگا۔ تم اُس پر بھروسہ کرسکتے ہو۔ ووٹ لے لو سیروتینکو!"

ہال کے پچھلے حصہ میں سے، جہاں کوم سومول بیٹھے ہوئے تھے، اور جو اُس اندھیرے میں دکھلائی نہیں دے رہا تھا، کوئی اُٹھا اور بولا:

"کامریڈ کورچاگن بتلائیں کہ انہوں نے کیوں کسانی جیون اپنایا ہے اور کیسے اس کا میل مزدور منوورتی کے ساتھ بٹھاتے ہیں؟"

ہال میں ناراضگی کی ایک ہلکی سی بھنبھناہٹ پیدا ہوئی اور کسی نے اعتراض کرتے ہوئے کہا:

"تم ایسے کیوں نہیں بولتے جس سے سیدھے سادے لوگ بھی تمہاری بات سمجھ سکیں؟ خوب وقت چنا تم نے بھی قابلیت بگھارنے کے لئے......"

مگر آرتیوم نے جواب دینا شروع کردیا تھا:

"یہ بالکل ٹھیک بات اُس نے پوچھی ہے کامریڈ۔ اُس نے بالکل ٹھیک کہا ہے کہ میں نے کسانی جیون اپنا لیا ہے۔ مگر میں کہنا چاہتا ہوں کہ میں نے اپنے مزدور ویویک کے ساتھ وشواس گھات نہیں کیا ہے۔ بہر حال آج سے وہ چیز ختم بھی ہوگئی۔ میں اپنے پریوار کو ریلوے یارڈ کے پاس اور لے آرہا ہوں۔ یہی زیادہ اچھا رہیگا۔ وہ منحوس کھیت بہت دنوں سے میرے گلے میں پھنستا رہا ہے۔"

ایک بار پھر آرتیم کا دل کانپا جب اس نے اپنے سمرتھن میں اُٹھے ہوئے ہاتھوں کے اُس جنگل کو دیکھا، اور سر اونچا کرکے جب وہ آکر اپنی سیٹ پر بیٹھا تو اُسے ایسا لگ رہا تھا جیسے اُڑا جا رہا ہو۔ اپنے پیچھے اُس نے سیروتینکو کو اعلان کرتے ہوئے سنا: "سرو سمتی سے پاس۔"

منچ پر کھڑا ہونے والا تیسرا آدمی پولینتاوسکی کا پہلے کا مددگار زخار بروذاک تھا۔ یہ خاموش طبیعت کا بوڑھا آدمی خود بہت دنوں سے انجن ڈرائیور تھا۔ اس نے جب اپنی محنت کی زندگی کا ورنن ختم کیا اور کہانی کو اس دن تک لے آیا، تو اُس کی

सत्रह साल का समझा और इस तरह मुझे एक मैकेनिक के मददगार का काम मिल गया. जहां तक मेरे मौजूदा काम का ताल्लुक़ है, मैं आठ साल से यहां काम कर रहा हूं. अपनी पिछली जिन्दगी के बारे में मुझे इससे ज्यादा कुछ नहीं कहना है. यहां की मेरी जिन्दगी के बारे में आप सब जानते ही हैं."

आर्तेम ने अपनी टोपी से माथा पोंछा और एक लम्बी सांस ली. अभी तक उसने खास बात नहीं कही थी. और इसी को कहना सब से कठिन काम था, मगर कहना तो था ही. और कोई वह अनिवार्य सवाल पूछ बैठे, इससे पहिले ही कहना था. लिहाजा अपनी घनी भवों में बल डालते हुए, उसने अपनी कहानी को जारी रक्खा:

"तुम सबको मुझसे यह सवाल पूछने का हक़ है कि मैं क्रांति के पहिले दिनों में बोलशेविक पार्टी में क्यों नहीं शरीक हुआ ? आप मुझसे यह सवाल पूछ सकते हैं. मगर मैं इसका क्या जवाब दूं ? अभी मैं बुड्ढा तो हुआ नहीं, तब नहीं तो अब सही. मगर सवाल यह है कि अब तक मुझे यह रास्ता क्यों नहीं दिखाई दिया ? मैं सीधे सीधे बात करूंगा क्योंकि मेरे पास छिपाने को कुछ नहीं. वह रास्ता हमें दिखाई नहीं दिया और यह हमारी ही ग़लती थी. हमें 1918 में ही इस रास्ते को पकड़ना चाहिये था जब हमने जर्मनों के खिलाफ़ बग़ावत की थी. मल्लाह जुखराई ने बहुत बार हम से यही बात कही. 1920 में आ कर ही मैंने पहिली बार राइफ़ल उठाई. तूफ़ान के खत्म होने पर और श्वेत रूसियों को काले सागर में ढकेल कर हम लोग घर लौट आये. उसके बाद फिर परिवार, बच्चे...... मैं घर गिरस्ती में एक दम उलझ गया. मगर अब जबकि कामरेड लेनिन नहीं हैं और पार्टी ने हमको पुकारा है, तो मैंने पीछे मुड़ कर अपनी जिन्दगी को देखा है और समझ रहा हूं कि उसमें किस चीज़ की कमी थी. अपने राज की हिफ़ाज़त करना ही काफ़ी नहीं है, हमें लेनिन की जगह एक बड़े परिवार की तरह एकता की मजबूत डोर में बंध कर रहना है ताकि सोवियत राज फ़ौलाद के पहाड़ की तरह मज़बूती से खड़ा रहे और उसे कोई हिला नहीं सके. हमको बोलशेविक बनना ही है. यही हमारी पार्टी है, या मैं झूट कहता हूं ?"

इन्हीं सीधे सादे शब्दों में मगर गहरी ईमानदारी से मैकेनिक आर्तेम ने अपनी बात कही और जब उसकी बात खत्म हुई तो जहां उसे थोड़ी थोड़ी लाज भी लग रही थी कि कैसे वह यों धारा प्रवाह बोलता गया, वहां उसे यह भी महसूस हुआ कि जैसे उसके कंधे पर से कोई भारी बोझ उतर गया और अच्छी तरह तनकर खड़े होते हुये वह आने वाले सवालों का इन्तज़ार करने लगा.

سترہ سال کا سمجھا اور اِس طرح مجھے ایک مکینک کے مددگار کا کام مل گیا . جہاں تک میرے موجودہ کام کا تعلق ہے، میں آٹھ سال سے یہاں کام کر رہا ہوں . اپنی پچھلی زندگی کے بارے میں مجھے اِس سے زیادہ کچھ نہیں کہنا ہے . یہاں کی میری زندگی کے بارے میں آپ سب جانتے ہی ہیں .

آرتیم نے اپنی ٹوپی سے ماتھا پونچھا اور ایک لمبی سانس لی. ابھی تک اُس نے خاص بات نہیں کہی تھی . اور اسی کو کہنا سب سے کٹھن کام تھا، مگر کہنا تو تھا ہی . اور کوئی وہ انیوارِیہ سوال پوچھ بیٹھے، اِس کے پہلے ہی کہنا تھا . لہذا اپنی گھنی بھوؤں میں بل ڈالتے ہوئے، اُس نے اپنی کہانی کو جاری رکھا :

"تم سب کو مجھ سے یہ سوال پوچھنے کا حق ہے کہ میں کرانتی کے پہلے دنوں میں بولشیوک پارٹی میں کیوں نہیں شریک ہوا ؟ آپ مجھ سے یہ سوال پوچھ سکتے ہیں . مگر میں اِس کا کیا جواب دوں ؟ ابھی میں بوڑھا تو ہوا نہیں، تب نہیں تو اب سہی. مگر سوال یہ ہے کہ اب تک مجھے یہ راستہ کیوں نہیں دکھائی دیا ؟ میں سیدھے سیدھے بات کروں گا کیونکہ میرے پاس چھپانے کو کچھ نہیں . وہ راستہ ہمیں دکھائی نہیں دیا اور یہ ہماری ہی غلطی تھی . ہمیں 1918 میں ہی اِس راستے کو پکڑنا چاہئے تھا جب ہم نے جرمنوں کے خلاف بغاوت کی تھی. ملاح جوکھرائی نے بہت بار ہم سے یہی بات کہی . 1920 میں آکر ہی میں نے پہلی بار رائفل اٹھائی . طوفان کے ختم ہونے پر اور شویت روسیوں کو کالے ساگر میں ڈھکیل کر ہم لوگ گھر لوٹ آئے . اُس کے بعد پھر پریوار، بچے......میں گھر گرہستی میں ایکدم الجھ گیا . مگر اب جبکہ کامریڈ لینن نہیں ہیں اور پارٹی نے ہم کو پکارا ہے، تو میں نے پیچھے مڑکر اپنی زندگی کو دیکھا ہے اور سمجھ رہا ہوں کہ اُس میں کس چیز کی کمی تھی . اپنے راج کی حفاظت کرنا ہی کافی نہیں ہے، ہمیں لینن کی جگہ ایک بڑے پریوار کی طرح ایکتا کی مضبوط ڈور میں بندھ کر رہنا ہے تاکہ سوویت راج فولاد کے پہاڑ کی طرح مضبوطی سے کھڑا رہے اور اُسے کوئی ہلا نہیں سکے . ہم کو بولشیوک بننا ہی ہے. یہی ہماری پارٹی ہے، یا میں جھوٹ کہتا ہوں؟"

انہیں سیدھے سادے شبدوں میں مگر گہری ایمانداری سے مکینک آرتیم نے اپنی بات کہی اور جب اُس کی بات ختم ہوئی تو جہاں اُسے تھوڑی تھوڑی لاج بھی لگ رہی تھی کہ وہ کیسے وہ یوں دھارا پرواہ بولتا گیا، وہاں اُسے یہ بھی محسوس ہوا کہ جیسے اُس کے کندھے پر سے کوئی بھاری بوجھ اتر گیا اور اچھی طرح تن کے کھڑے ہوتے ہوئے وہ آنے والے سوالوں کا اِنتظار کرنے لگا.

साल बढ़ा कर बताई थी. तीन साल तक मैंने उस जर्मन के लिये काम किया मगर कोई काम न सीख सका क्योंकि मुझे घर की सेवा टहल के काम करने पड़ते थे और दौड़ दौड़ कर वोडका लानी पड़ती थी. मेरा मालिक बुरी तरह पीता था.........वह मुझे कोयला और लोहा लाने के लिये भी भेजता !......मालिकन ने तो मुझे बिलकुल ग़ुलाम ही बना दिया था: मुझे आलू छीलने पड़ते, बर्तन धोने पड़ते. अक्सर मार पड़ती और ख़्वाहमख़्वाह, क्योंकि उनको मारने की आदत पड़ी हुई थी. अगर मैं अपनी मालकिन को ख़ुश न कर सकता तो वह कस कर मेरे मुंह पर थप्पड़ मारती और उसकी हालत यह थी कि अपने पति के पीने के कारन वह हमेशा ग़ुस्से में भरी बैठी रहती थी. मैं उससे भाग कर सड़क पर पहुंच जाता, मगर कहां जाता, किससे शिकायत करता ? मेरी मां चालीस मील दूर थी और फिर मुझे वह अपने पास रख भी तो नहीं सकती थी........और कारख़ाने में भी तो हालत कुछ बेहतर न थी. मालिक के भाई उसके इंचार्ज थे. बड़ा सूअर था वह आदमी. उसे मुझको तंग करने में मज़ा आता था. कभी वह मुझसे कहता, "ऐ छोकरे, वह वाशर को उठाला', और कोने में भट्टी की तरफ़ इशारा करता. मैं दौड़ कर जाता और वाशर को उठा लेता और ज़ोर से चीख़ पड़ता क्योंकि वह ताज़ा ताज़ा भट्टी से निकल कर पड़ा होता, और गोकि ज़मीन पर पड़ा हुआ वह काला नज़र आता, मगर छूते ही आग लग जाती और तब मैं तो दर्द से चीख़ता पड़ा होता और उसके पेट में हंसते हंसते बल पड़ जाते. मैं यह तकलीफ़ और बरदाश्त न कर सका और भाग कर अपने घर मां के पास चला गया. मगर वह समझ नहीं पाती थी कि मेरा वह क्या बन्दोबस्त करे, लिहाज़ा वह मुझे फिर उसी जर्मन के यहां ले गई. मुझे याद है, वह पूरे रास्ते रोती गई. कहीं तीसरे साल जाकर उन्होंने मुझे कुछ कुछ काम सिखलाना शुरू किया, मगर मार पीट बदस्तूर चलती रही. मैं फिर भाग गया और इस बार स्तारो कोन्स्तान्तिनोव पहुंचा. वहां मुझे एक सासेज के कारख़ाने में काम मिल गया और मैंने डेढ़ साल डिब्बे ढोने के पीछे बर्बाद किये. फिर हमारे मालिक ने जुए के पीछे कारख़ाने को तबाह कर दिया, चार महीने तक हमें एक कौड़ी भी न दी और ग़ायब हो गया. इस तरह मैं उस ख़ंदक़ में से निकला. तब मैंने ज़मेरिका की गाड़ी पकड़ी और वहां काम ढूंढने निकला. संयोग से वहांप र मुझे एक रेलवे मज़दूर मिला जिसे मुझ पर दया आई. जब मैंने उसको बतलाया कि मैं थोड़ा बहुत मैकेनिक का काम जानता हूं, तो वह मुझको अपने मालिक के पास ले गया और बोला कि यह मेरा भतीजा है और मुझे काम देने की सिफ़ारिश की. मेरा डील डौल ऐसा था कि उन्होंने मुझे

سال بڑھاکر بتائی تھی ۔ تین سال تک میں نے اُس جرمن کے لئے کام کیا مگر کوئی کام نہ سیکھ سکا کیونکہ مجھے گھر کی سیوا ٹہل کے کام کرنے پڑتے تھے اور دوڑ دوڑ کر ووڈکا لانی پڑتی تھی ۔ میرا مالک بری طرح پیتا تھا..... وہ مجھے کوئلہ اور لوہا لانے کے لئے بھی بھیجتا !......مالکن نے تو مجھے بالکل غلام ہی بنا دیا تھا : مجھے آلو چھیلنے پڑتے' برتن دھونے پڑتے ۔ اکثر مار پڑتی اور خواہ‌مخواہ' کیونکہ ان کو مارنے کی عادت پڑی ہوئی تھی ۔ اگر میں اپنی مالکن کو خوش نہ کرسکتا تو وہ کس کر میرے منہ پر تھپڑ مارتی اور اُس کی حالت یہ تھی کہ اپنے پتی کے پینے کے کارن وہ ہمیشہ غصے میں بھری بیٹھی رہتی تھی ۔ میں اُس سے بھاگ کر سڑک پر پہونچ جاتا' مگر کہاں جاتا' کس سے شکایت کرتا ؟ میری ماں چالیس میل دور تھی اور پھر مجھے وہ اپنے پاس رکھ بھی تو نہیں سکتی تھی...... اور کارخانے میں بھی تو حالت کچھ بہتر نہ تھی ۔ مالک کے بھائی اُس کے اِنچارج تھے ۔ بڑا سور تھا وہ آدمی ۔ اُسے مجھکو تنگ کرنے میں مزا آتا تھا ۔ کبھی وہ مجھسے کہتا' اے چھوکرے' وہ واشرتو اُٹھالا' اور کونے میں بھٹی کی طرف اشارہ کرتا ۔ میں دوڑکر جاتا اور واشرکو اُٹھا لیتا اور زور سے چیخ پڑتا کیونکہ وہ تازہ تازہ بھٹی سے نکل کر پڑا ہوتا' اور گو کہ زمین پر پڑا ہوا وہ کالا نظر آتا' مگر چھوتے ہی آگ لگ جاتی اور تب میں تو درد سے چیختا پڑا ہوتا اور اُس کے پیٹ میں ہنستے ہنستے بل پڑ جاتے ۔ میں یہ تکلیف اور برداشت نہ کرسکا اور بھاگ کر اپنے گھر ماں کے پاس چلا گیا ۔ مگر وہ سمجھ نہیں پاتی تھی کہ میرا وہ کیا بندوبست کرے' لہذا وہ مجھے پھر اُسی جرمن کے یہاں لے گئی ۔ مجھے یاد ہے' وہ پورے راستے روتی گئی ۔ کہیں تیسرے سال جاکر انہوں نے مجھے کچھ کچھ کام سکھلانا شروع کیا' مگر مارپیٹ بدستور چلتی رہی ۔ میں پھر بھاگ گیا اور اِس بار ستارو کونستانتی‌نوو پہونچا۔ وہاں مجھے ایک ساسیج کے کارخانے میں کام مل گیا اور میں نے ڈیڑھ سال ڈبے ڈھونے کے پیچھے برباد کئے ۔ پھر ہمارے مالک نے جوئے کے پیچھے کارخانے کو برباد کردیا' چار مہینے تک ہمیں ایک کوڑی بھی نہ دی اور غائب ہوگیا ۔ اِس طرح میں اُس خندق میں سے نکلا ۔ تب میں نے ژمیریکا کی گاڑی پکڑی اور وہاں کام ڈھونڈ نے نکلا ۔ سنیوگ سے وہاں پر مجھے ایک ریلوے مزدور ملا جسے مجھ پر دیا آئی ۔ جب میں نے اس کو بتلایا کہ میں تھوڑا بہت میکینک کا کام جانتا ہوں' تو وہ مجھ کو اپنے مالک کے پاس لے گیا اور بولا کہ یہ میرا بھتیجا ہے اور مجھے کام دینے کی سفارش کی۔ میرا ڈیل ڈول ایسا تھا کہ انہوں نے مجھے

जिससे उसकी आकृति बड़ी चुस्त-दुरुस्त नजर आ रही थी, जैसी छुट्टी के दिन अच्छे अच्छे कपड़ों के पहनने पर नजर आती है. आर्तेम हाल की ओर मुड़ा और उसे एक परीचित स्त्री के चेहरे की झलक मिली. वह राजगीर की लड़की गालिना थी जो अपनी दर्जिन साथियों के साथ वहां बैठी हुई थी. वह उसे सहानुभूतिपूर्ने मुस्कराहट की आंखों से देख रही थी और उस मुस्कराहट में आर्तेम ने समर्थन पाया, और और भी कुछ, जिसे शब्दों में रख सकना उसके लिये सम्भव न था.

उसने सिरोतेंको को कहते सुना, "लोगों को अपने बारे में बतलाओ आर्तेम !"

मगर आर्तेम के लिये अपनी कहानी शुरू करना आसान न था. ऐसी बड़ी सभा में बोलने का वह आदी न था और उसने यकायक महसूस किया कि जिन्दगी ने जो कुछ उसके अन्दर भर दिया था, उन सब को व्यक्त करना उसकी शक्ति के बाहर था. शब्दों के लिये वह अटक रहा था और अपनी घबराहट के कारन ही बोलने में उसे और भी मुश्किल हो रही थी. इसके पहले उसने कभी ऐसा नहीं महसूस किया था. उसको इस बात की तीक्षन चेतना थी कि वह किसी बड़े परिवर्तन के मोड़ पर खड़ा है, कि वह एक ऐसा क़दम उठाने जा रहा है जो उसकी कठोर ऐंठी हुई, घुटी हुई जिन्दगी में गरमाहट भर देगा और उसकी जिन्दगी फिर बेमानी न रह जायेगी.

आर्तेम ने शुरू किया, "हम लोग चार आदमी थे."

हाल में शान्ति थी. छः सौ लोग उत्सुकता से हुए इस टेढ़ी नाक वाले लम्बे मजदूर को सुन रहे थे, जिसकी आंखें घनी भवों के नीचे छिपी हुई थीं.

"मेरी मां अमीर लोगों के घरों में रसोई पकाया करती थी. मुझे अपने बाप की कुछ खास याद नहीं है, उसमें और मेरी मां में नहीं बनती थी. वह बहुत ज्यादा शराब पीता था. इसलिये मेरी मां को ही हम बच्चों की देख भाल करनी पड़ती थी. इतने लोगों के खाने का इन्तजाम करना उसके लिये आसान न था. सवेरे से लेकर रात तक वह बैल की तरह काम में जुटी रहती थी और इसके लिये उसे महीने में चार रूबल और खाना मिलता था. मैं इतना खुश-क़िस्मत था कि मुझे दो साल स्कूल में पढ़ने का मौक़ा मिला. उन्होंने मुझे पढ़ना लिखना सिखाया. मगर जब मैं नौ साल का हुआ तो मेरी मां के सामने इसके अलावा कोई रास्ता न था कि मुझे ले जाकर एक करखाने में भर्ती करा दे. तीन साल तक मैंने सिर्फ़ खाने पर काम किया......उस कारखाने का मालिक फ़ेस्टर नाम का एक जर्मन था. पहिले वह मुझे लेना न चाहता था क्योंकि मैं बहुत छोटा था. मगर मैं बहुत तगड़ा था और फिर मेरी मां ने मेरी उम्र दो

جس سے اُس کی آکرتی بڑی چست - درست نظر آ رہی تھی' جیسی چھٹی کے دن اچھے اچھے کپڑوں کے پہننے پر نظر آتی ھے . آرتیم هال کی اور مڑا اور اُسے ایک پرچت استری کے چہرے کی جھلک ملی . یہ راج‌گیر کی لڑکی گالینا تھی جو اپنی درزن ساتھیوں کے ساتھ وهاں بیٹھی هوئی تھی . وہ اُسے سہانبھوتی پورن مسکراهٹ کی آنکھوں سے دیکھ رهی تھی اور اُس مسکراهٹ میں آرتیم نے سمرتھن پایا' اور اور بھی کچھ' جسے شبدوں میں رکھ سکنا اُس کے لئے سمبھو نہ تھا .

اُس نے سروتینکو کو کہتے سنا' "لوگوں کو اپنے بارے میں بتلاؤ آرتیم !"

مگر آرتیم کے لئے اپنی کہانی شروع کرنا آسان نہ تھا . ایسی بڑی سبھا میں بولنے کا وہ عادی نہ تھا اور اُس نے یکایک محسوس کیا کہ زندگی نے جو کچھ اُس کے اندر بھر دیا تھا' ان سب کو ویکت کرنا اُس کی شکتی کے باهر تھا . شبدوں کے لئے وہ اٹک رہا تھا اور اپنی گھبراهٹ کے کارن هی بولنے میں اُسے اور بھی مشکل هو رهی تھی . اِس کے پہلے اُس نے کبھی ایسا نہیں محسوس کیا تھا . اُس کو اِس بات کی تیکشن چیتنا تھی کہ وہ کسی بڑے پریورتن کے موڑ پر کھڑا ھے' کہ وہ ایک ایسا قدم اُٹھانے جا رہا ھے جو اُس کی کٹھور' اینٹھی هوئی' گھوٹی هوئی زندگی میں گرماهٹ بھردے‌گا اور اس کی زندگی پھر بے معنی نہ رہ جائے‌گی .

آرتیم نے شروع کیا' "هم لوگ چار آدمی تھے ."

هال میں شانتی تھی. چھ سو لوگ اُتسکتا سے اِس ٹیڑھی ناک والے لمبے مزدور کو سن رہے تھے' جس کی آنکھیں گھنی بھوؤں کے نیچے چھپی هوئی تھیں .

"میری ماں امیر لوگوں کے گھروں میں رسوئی پکایا کرتی تھی . مجھے اپنے باپ کی کچھ خاص یاد نہیں ھے' اس میں اور میری ماں میں نہیں بنتی تھی . وہ بہت زیادہ شراب پیتا تھا. اِس لئے میری ماں کو هی هم بچوں کی دیکھ بھال کرنی پڑتی تھی . اتنے لوگوں کے کھانے کا اِنتظام کرنا اس کے لئے آسان نہ تھا. سویرے سے لیکر رات تک وہ بیل کی طرح کام میں جٹی رهتی تھی اور اُس کے لئے اُسے مہینے میں چار روبل اور کھانا ملتا تھا . میں اتنا خوش قسمت تھا کہ مجھے دو سال اسکول میں پڑھنے کا موقع ملا . انہوں نے مجھے پڑھنا لکھنا سکھایا. مگر جب میں نو سال کا هوا تو میری ماں کے سامنے اس کے علاوہ کوئی راستہ نہ تھا کہ مجھے لے جاکر ایک کارخانے میں بھرتی کرادے . تین سال تک میں نے صرف کھانے پر کام کیا... اُس کارخانے کا مالک فیسٹر نام کا ایک جرمن تھا. پہلے وہ مجھے لینا نہ چاهتا تھا کیونکہ میں بہت چھوٹا تھا. مگر میں بہت تگڑا تھا اور پھر میری ماں نے میری عمر دو

मगर फिर शान्ति छा गई जब पोलेनतावस्की, जिसका नाम सूची में सब से पहले था, आकर सभा के सामने खड़ा हुआ.

अपनी जिन्दगी की कहानी सुनाते समय उसके मन में जो उद्वेग था, उसको वह बुड्ढा इंजन ड्राइवर छिपा नहीं सका.

"......मैं आपको क्या बतलाऊं साथियो! आप सभी जानते हैं कि उन दिनों में हम मजदूरों की जिन्दगी कैसी थी. मैंने जिन्दगी भर गुलाम की तरह मेहनत की, फिर भी बुढ़ापे में आकर मैं भिखमंगा ही रहा. जब क्रान्ति आई तो मुझे यह कहने में संकोच नहीं है कि मैं अपने को गृहस्ती की परेशानियों के बोझ से दबा हुआ एक बुड्ढा आदमी समझता रहा और पार्टी के अन्दर नहीं आया. और गोकि मैंने कभी दुश्मन का साथ नहीं दिया, फिर भी खुद संघर्ष में मैंने कम ही भाग लिया. 1905 में मैं वार्सा मे मोटर के करखाने में हड़ताल कमेटी का मेम्बर था और बोल्शेविकों के साथ था. तब मैं जवान था और मुझ में लड़ने की शक्ति थी. मगर अब उन बीती बातों को याद करने से क्या फ़ायदा? इलिच के मरने से मेरे दिल पर भारी धक्का सा लगा है, हमने अपना दोस्त और साथी खो दिया है और आज यह आख़िरी बार मैं अपने बुड्ढे होने की बात कह रहा हूं. मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि कैसे अपनी बात कहूं क्योंकि मुझे कभी भाशन देना नहीं आया. मगर मैं सिर्फ़ इतना कहना चाहता हूं कि मेरा रास्ता बोल्शेविकों का रास्ता है, दूसरा कोई रास्ता नहीं है.

उस इंजन ड्राइवर ने अपने पके बालों वाले सर को झटका दिया और उसकी सफ़ेद भवों के नीचे उसकी आंखें श्रोताओं को दृढ़ता से देखती रहीं जैसे उनके फ़ैसले का इन्तजार कर रही हों.

उस छोटे से पके बालों वाले आदमी की अर्ज़ी के ख़िलाफ़ विरोध की एक भी आवाज नहीं उठी और सब लोगों ने वोट दिया. इस वोट में ग़ैर पार्टी के लोगों को भी शरीक किया गया.

पोलेनतावस्की जब सभापति मन्डली की मेज़ से हटा तो वह कम्युनिस्ट पार्टी का मेम्बर था.

हर आदमी समझ रहा था कि कोई ऐतिहासिक बात हो रही है. अब उस इंजन ड्राइवर की जगह विशालकाय आर्तेम खड़ा था. उस मैकेनिक की समझ में नहीं आ रहा था कि अपने हाथों का क्या करे, लिहाजा वह बार बार अपनी खूब बालों वाली फ़र की टोपी को तान रहा था. उसकी भेड़ की खाल की जाकट, जिसके सिरे एकदम घिस गए थे, खुली हुई थी. मगर उसकी भूरी फ़ौजी वर्दी के गले तक पहुंचने वाले कालर में पीतल के दो बटन लगे हुए थे,

مگر پھر شانتی چھا گئی جب پولینتاوسکی، جس کا نام سوچی میں سب سے پہلے تھا، آکر سبھا کے سامنے کھڑا ہوا۔

اپنی زندگی کی کہانی سناتے سمے اس کے من میں جو ادویگ تھا، اسکو وہ بوڑھا انجن ڈرائیور چھپا نہیں سکا۔

"..... میں آپ کو کیا بتلاؤں ساتھیو! آپ سبھی جانتے ہیں کہ ان دنوں میں ہم مزدوروں کی زندگی کیسی تھی۔ میں نے زندگی بھر غلام کی طرح محنت کی، پھر بھی بڑھاپے میں آکر میں بھکمنگے کا بھکمنگا ہی رہا۔ جب کرانتی آئی تو مجھے یہ کہنے میں سنکوچ نہیں ہے کہ میں اپنے کو گرہستی کی پریشانیوں کے بوجھ سے دبا ہوا ایک بوڑھا آدمی سمجھتا رہا اور پارٹی کے اندر نہیں آیا۔ اور گو کہ میں نے کبھی دشمن کا ساتھ نہیں دیا، پھر بھی خود سنگھرش میں میں نے کم ہی بھاگ لیا۔ 1905 میں میں وارسا میں موٹر کے کارخانے میں ہڑتال کمیٹی کا ممبر تھا اور بولشیوکوں کے ساتھ تھا۔ تب میں جوان تھا اور مجھ میں لڑنے کی شکتی تھی۔ مگر اب ان بیتی باتوں کو یاد کرنے سے کیا فائدہ؟ الیچ کے مرنے سے میرے دل پر بھاری دھکا لگا ہے، ہم نے اپنا دوست اور ساتھی کھو دیا ہے اور آج یہ آخری بار میں اپنے بوڑھے ہونے کی بات کہہ رہا ہوں۔ میں سمجھ نہیں پا رہا ہوں کہ کیسے اپنی بات کہوں کیونکہ مجھے کبھی بھاشن دینا نہیں آیا۔ مگر میں صرف اتنا کہنا چاہتا ہوں کہ میرا راستہ بولشیوکوں کا راستہ ہے، دوسرا کوئی راستہ نہیں ہے۔"

اس انجن ڈرائیور نے اپنے پکے بالوں والے سر کو جھٹکا دیا اور اس کی سفید بھوؤں کے نیچے اس کی آنکھیں شروتاؤں کو دڑھتا سے دیکھتی رہیں جیسے ان کے فیصلے کا انتظار کر رہی ہوں۔

اس چھوٹے سے پکے بالوں والے آدمی کی عرضی کے خلاف ورودھ کی ایک بھی آواز نہیں اٹھی اور سب لوگوں نے ووٹ دیا۔ اس ووٹ میں غیر پارٹی لوگوں کو بھی شریک کیا گیا۔

پولینتاوسکی جب سبھاپتی منڈلی کی میز سے ہٹا تو وہ کمیونسٹ پارٹی کا ممبر تھا۔

ہر آدمی سمجھ رہا تھا کہ کوئی ایتہاسک بات ہو رہی ہے۔ اب اس انجن ڈرائیور کی جگہ وشالکایہ آرتیم کھڑا تھا۔ اس مکینک کی سمجھ میں نہیں آرہا تھا کہ اپنے ہاتھوں کا کیا کرے، لہذا وہ بار بار اپنی خوب بالوں والی فر کی ٹوپی کو تان رہا تھا۔ اس کی بھیڑ کی کھال کی جاکٹ، جس کے سرے ایکدم گھس گئے تھے، کھلی ہوئی تھی۔ مگر اس کی بھوری فوجی وردی کے گلے تک پہونچنے والے کالر میں پیتل کے دو بٹن لگے ہوئے تھے،

थी, हाल के दरवाज़े के पास खड़े हुए दो लम्बे लम्बे फ़र के दरख़्त बर्फ़ का लबादा पहने खड़े थे. मगर हाल के अन्दर अंगीठियों और छः सौ लोगों की सांसों के कारन घुटन महसूस हो रही थी. ये छः सौ लोग पार्टी द्वारा बुलाई हुई इस शोक सभा में आये थे.

हाल में कहीं बात चीत की भुनभुनाहट नहीं थी. गहरे दर्द ने लोगों की आवाज़ें रूंध दी थीं और वे एक दूसरे से धीरे धीरे फुसफुसा कर बातें कर रहे थे और उन तमाम सैकड़ों लोगों की आंखों में दुख और चिन्ता के भाव थे. वे एक ऐसी किश्ती के मल्लाह थे जिसकी पतवार चलाने वाला तूफ़ान में ही उनसे बिछड़ गया था.

ब्यूरो के मेम्बरों ने शान्ति से मंच पर आसन ग्रहन किया. मोटे तगड़े सिरोतेंको ने सावधानी से घंटी उठाई, धीरे से उसको बजाया और वापिस मेज़ पर रख दिया. इतने ही से हाल में शान्ति छा गई.

मुख्य भाशन के बाद पार्टी संगठन का मन्त्री सिरोतेंको बोलने के लिए उठा. और यद्यपि उसने जो घोशना की, वह शोक सभा के लिए कुछ असाधारन ही थी, मगर किसी को उससे आश्चर्य नहीं हुआ.

उसने कहा, "कई मज़दूरों ने इस सभा से मांग की है कि वह पार्टी की मेम्बरी की अर्ज़ी पर विचार करें. इस अर्ज़ी पर सैंतीस साथियों के हस्ताक्षर हैं." और उसने वह अर्ज़ी पढ़ कर सुना दी:

"दक्षिन पश्चिम रेलवे शेपेतोवका स्टेशन की बोल्शेविक पार्टी के रेलवे संगठन की सेवा में.

"हमारे नेता की मृत्यु हमारे लिए पुकार है कि हम बोल्शेविक पार्टी में शामिल हों. और हम इस सभा से अनुरोध करते हैं कि वह इस बात पर विचार करें कि हम लेनिन की पार्टी के सदस्य होने के योग्य हैं या नहीं."

इस छोटे से वक्तव्य पर दो कालम भर कर हस्ताक्षर थे. सिरोतेंको ने उन्हें पढ़ कर सुना दिया और हर नाम के बाद वह थोड़ी देर के लिए रुक जाता था ताकि श्रोताओं को वह नाम याद हो जाय.

स्तानिस्लाव सिग्मन्डोविच पोलेनतावस्की, इंजन ड्राइवर, छत्तीस साल की सर्विस."

हाल में समर्थन की ध्वनि गूंज गई.

"आर्तेम आन्द्रीएविच कोर्चागिन, मेकेनिक, सत्रह साल की सर्विस.

"ज़खार फिलिप्पोविच ब्रुज़ाक, इंजन ड्राइवर, इक्कीस साल की सर्विस."

मंच पर बैठा हुआ वह आदमी जैसे जैसे गठीले हाथों वाले और रेलवे मज़दूरों की बिरादरी के पुराने तपे हुए लोगों का नाम पुकारता जाता था, वैसे वैसे हाल में शोर बढ़ता जाता था.

تھی' ھال کے دروازے کے پاس کھڑے ھوئے دو لمبے لمبے فر کے درخت برف کا لبادہ پہنے کھڑے تھے۔ مگر ھال کے اندر انگیٹھیوں اور چھ سو لوگوں کی سانسوں کے کارن گھٹن محسوس ھو رھی تھی۔ یہ چھ سو لوگ پارٹی دوارا بلائی ھوئی اس شوک سبھا میں آئے تھے۔

ھال میں کہیں بات چیت کی بھنبھناھٹ نہیں تھی۔ گہرے درد نے لوگوں کی آوازیں روندھ دی تھیں۔ اور وے ایک دوسرے سے دھیرے دھیرے پھس پھسا کر باتیں کر رہے تھے اور اُن تمام سیکڑوں لوگوں کی آنکھوں میں دکھ اور چنتا کے بھاؤ تھے۔ وے ایک ایسی کشتی کے ملاح تھے جسکی پتوار چلانے والا طوفان میں ھی اُن سے بچھڑ گیا تھا۔

بیورو کے ممبروں نے شانتی سے منچ پر آسن گرھن کیا۔ موٹے تگڑے سروتینکو نے ساودھانی سے گھنٹی اٹھائی' دھیرے سے اس کو بجایا اور واپس میز پر رکھ دیا۔ اتنے ھی سے ھال میں شانتی چھا گئی۔

مکھیہ بھاشن کے بعد پارٹی سنگٹھن کا منتری سروتینکو بولنے کے لئے اٹھا۔ اور یدیپی اس نے جو گھوشنا کی' وہ شوک سبھا کے لئے کچھ اسادھارن ھی تھی' مگر کسی کو اس سے آشچریہ نہیں ھوا۔

اس نے کہا' "کئی مزدوروں نے اس سبھا سے مانگ کی ھے کہ وہ پارٹی کی ممبری کی عرضی پر وچار کریں۔ اس عرضی پر سینتیس ساتھیوں کے ھستاکشر ھیں۔" اور اس نے وہ عرضی پڑھکر سنادی:

" دکچھن پچھم ریلوے شیپیتوکا اسٹیشن کی بولشیوک پارٹی کے ریلوے سنگٹھن کی سیوا میں۔

" ھمارے نیتا کی مرتیو ھمارے لئے پکار ھے کہ ھم بولشیوک پارٹی میں شامل ھوں۔ اور ھم اس سبھا سے انورودھ کرتے ھیں کہ وہ اس بات پر وچار کریں کہ ھم لینن کی پارٹی کے سدسیہ ھونے کے یوگیہ ھیں یا نہیں۔"

اس چھوٹے سے وکتویہ پر دو کالم بھر کر ھستاکشر تھے۔ سروتینکو نے انہیں پڑھ کر سنا دیا اور ھر نام کے بعد وہ تھوڑی دیر کے لئے رک جاتا تھا تاکہ شروتاؤں کو وہ نام یاد ھو جائے۔

" استانسلاو سگمنڈووچ پولینتاوسکی' انجن ڈرائیور' چھتیس سال کی سروس۔"

ھال میں سمرتھن کی دھونی گونج گئی۔

" آرتیم اندرائیوچ کورچاگن' مکینک' سترہ سال کی سروس۔"

" زخار فلپووچ برجاک' انجن ڈرائیور' اکیس سال کی سروس۔"

منچ پر بیٹھا ھوا وہ آدمی جیسے جیسے گٹھیلے ھاتھوں والے اور ریلوے مزدوروں کی برادری کے پرانے تپے ھوئے لوگوں کا نام پکارتا جاتا تھا' ویسے ویسے ھال میں شور بڑھتا جاتا تھا۔

सही होगी. कुछ देर बाद उसने इस आदमी को पहचाना. यह स्थानीय पार्टी संगठन का मन्त्री था.

इंजन की मरम्मत करने वाले मज़दूर पिट में से कूद कर बाहर आये और उन्होंने मौन होकर उस आदमी की मौत की ख़बर सुनी जिसका नाम सारी दुनिया में गूंज रहा था.

फाटक के बाहर कहीं एक इंजन सीटी दे रहा था, जिसे सुनकर ये लोग कांप गये. इंजन की इस दर्द में डूबी हुई आवाज़ के बाद वैसी ही आवाज़ दूर पर एक और इंजन ने की, उसके बाद एक और ने. उनकी इस आवाज़ में बिजली घर के साइरेन ने योग दिया. साइरेन की आवाज़ बुलन्द और बम के उड़ते हुए छर्रों की तरह तेज़ और चुभने वाली थी. फिर ये आवाज़ें ज़रा देर बाद कीव के लिए रवाना होने वाली मुसाफ़िर गाड़ी के ख़ूबसूरत "एस" इंजन की भारी गूंजती हुई आवाज़ में डूब गईं.

ख़ुफ़िया का आदमी चौंक गया जब शेपेतोवका-वार्सा एक्सप्रेस के पोलिश इंजन के ड्राइवर ने इंजनों की इन सीटियों का कारन जानने पर कान लगाकर उसको सुना और फिर धीरे धीरे अपना हाथ उठाकर सीटी की रस्सी को खींचा. वह जनता था कि यह आख़री बार उसको ऐसा करने का मौक़ा मिल रहा है, इसके बाद उसे फिर कभी यह गाड़ी चलाने को न मिलेगी. मगर उसके हाथ ने सीटी के तार को न छोड़ा और उसके इंजन की चीख़ ने पोलिश दूतों और कूट-नीतिज्ञों को चौंका कर उन्हें अपने नरम कोचों से उठा दिया.

रेलवे के अहाते में लोगों की भीड़ जमा थी. वे तमाम फाटकों के अन्दर चले आ रहे थे और जब वह विशाल इमारत ठसाठस भर गई, तो शोक सभा निस्तब्ध शान्ति के वातावरन में आरम्भ हुई. पार्टी की शेपेतोवका एरिया कमेटी के मन्त्री, पुराने बोल्शेविक शाराब्रिन ने तक़रीर की.

"साथियो! लेनिन, दुनिया भर के मज़दूरों के नेता लेनिन मर गये. पार्टी की अपूर्णीय क्षति हुई है, क्योंकि वह आदमी उठ गया जिसने बोल्शेविक पार्टी का निर्मान किया और उसको दुश्मनों के प्रति निर्मम होना सिखलाया.... हमारी पार्टी और हमारे वर्ग के नेता की मृत्यु मज़दूर वर्ग की सर्वोत्तम सन्तानों के लिए एक पुकार है कि वे आकर हमारी पार्टी में शामिल हों.....

शोक संगीत की धुनें गूंज उठीं. वहां पर उपस्थित उन सैकड़ों लोगों ने अपनी टोपियां उतार लीं और वह आर्तेम जो पन्द्रह बरस से नहीं रोया था, उसको लगा कि जैसे दर्द से उसका गला घुट रहा है और उसके वे मज़बूत चौड़े कन्धे हिल उठे.

आदमियों की भीड़ के दबाव से रेलवे मज़दूरों के क्लब की दीवारें भी मानो कराह रही थीं. बाहर बड़ी सख़्त सर्दी

صحیح ہوگی ۔ کچھ دیر بعد اس نے اس آدمی کو پہچانا ۔ یہ استھانیہ پارٹی سنگٹھن کا منتری تھا ۔

انجن کی مرمت کرنے والے مزدور پٹ میں سے کود کر باہر آئے اور انہوں نے مون ہو کر اُس آدمی کی موت کی خبر سنی جس کا نام ساری دنیا میں گونج رہا تھا ۔

پھاٹک کے باہر کہیں ایک انجن سیٹی دے رہا تھا، جسے سن کر یہ لوگ کانپ گئے ۔ انجن کی اس درد میں ڈوبی ہوئی آواز کے بعد ویسی ہی آواز دور پر ایک اور انجن نے کی، اس کے بعد ایک اور نے ۔ ان کی اس آواز میں بجلی گھر کے سائرن نے یوگ دیا ۔ سائرن کی آواز بلند اور بم کے اڑتے ہوئے چھروں کی طرح تیز اور چبھنے والی تھی ۔ پھر یہ آوازیں ذرا دیر بعد کیو کے لئے روانہ ہونے والی مسافر گاڑی کے خوبصورت " ایس " انجن کی بھاری گونجتی ہوئی آواز میں ڈوب گئیں ۔

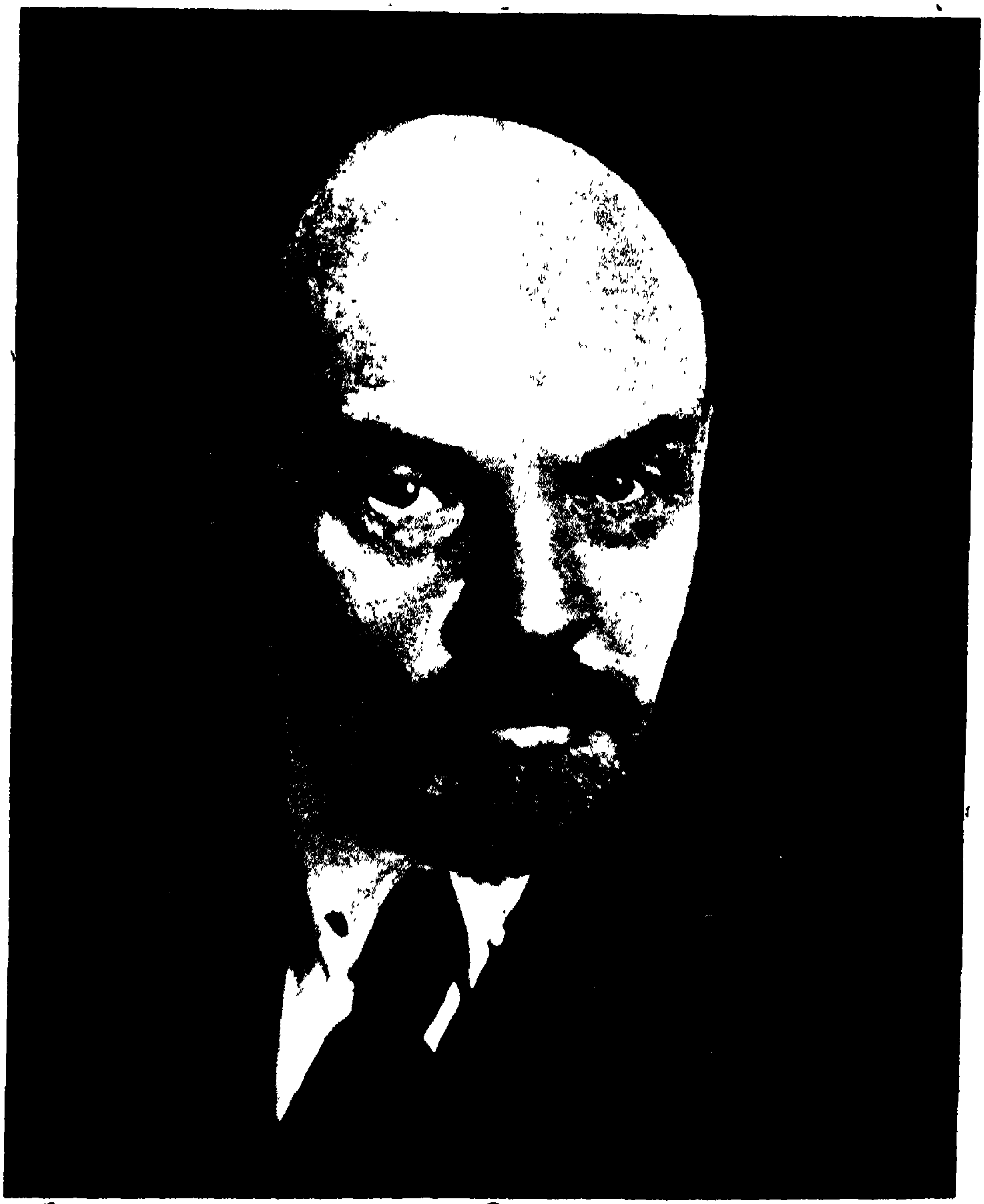
خفیہ کا آدمی چونک گیا جب شیپیتوکا ۔ وارسا اکسپریس کے پولش انجن کے ڈرائیور نے انجنوں کی ان سیٹیوں کا کارن جاننے پر، کان لگا کر اس کو سنا اور پھر دھیرے دھیرے اپنا ہاتھ اٹھا کر سیٹی کی رسی کو کھینچا ۔ وہ جانتا تھا کہ یہ آخری بار اس کو ایسا کرنے کا موقع مل رہا ہے، اس کے بعد اُسے پھر کبھی یہ گاڑی چلانے کو نہ ملے گی ۔ مگر اس کے ہاتھ نے سیٹی کے تار کو نہ چھوڑا اور اس کے انجن کی چیخ نے پولش دوتوں اور کوٹ نیتگیوں کو چونکا کر انہیں اپنے نرم کوچوں سے اٹھا دیا ۔

ریلوے کے احاطے میں لوگوں کی بھیڑ جمع تھی ۔ وے تمام پھاٹکوں کے اندر چلے آ رہے تھے اور جب وہ وشال عمارت ٹھساٹھس بھر گئی، تو شوک سبھا نستبدھ شانتی کے واتاورن میں آرمبھ ہوئی ۔ پارٹی کی شیپیتوکا ایریا کمیٹی کے منتری، پرانے بولشیویک شرابرن نے تقریر کی ۔

" ساتھیو ! لینن، دنیا بھر کے مزدوروں کے نیتا لینن مر گئے ۔ پارٹی کی اپورنیہ چھتی ہوئی ہے، کیونکہ وہ آدمی اٹھ گیا جس نے بولشیوک پارٹی کا نرمان کیا اور اس کو دشمنوں کے پرتی نرمم ہونا سکھلایا ......ہماری پارٹی اور ہمارے ورگ کے نیتا کی مرتیو مزدور ورگ کی سروتم سنتانوں کے لئے ایک پکار ہے کہ وے آ کر ہماری پارٹی میں شامل ہوں ......"

شوک سنگیت کی دھنیں گونج اٹھیں ۔ وہاں پر اُپستھت سیکڑوں لوگوں نے اپنی ٹوپیاں اتار لیں اور وہ آرتیم جو پندرہ برس سے نہیں رویا تھا، اُس کو لگا کہ جیسے درد سے اُسکا گلا گھٹ رہا ہے اور اُس کے وے مضبوط چوڑے کندھے ہل اٹھے ۔

آدمیوں کی بھیڑ کے دباؤ سے ریلوے مزدوروں کے کلب کی دیواریں بھی مانو کراہ رہی تھیں ۔ باہر بڑی سخت سردی



सोवियन् रूस के जन्म दाता : लेनिन

سوویت روس کے جنم داتا لینن

इलिच लेनिन की मृत्यु हो गई." बुड्ढा उठकर खड़ा हो गया, उसने फ़ीते को उठा लिया और उसको ऐसे घूरने लगा जैसे उसमें छेद कर देगा. जिस बात का विश्वास करने से वह इनकार कर रहा था, उस पर काग़ज़ के उस टुकड़े ने तसदीक़ की मुहर लगा दी थी. उसका चेहरा ऐसा ज़र्द पड़ गया जैसे उसमें जान ही बाक़ी न हो. वह अपने दूसरे साथियों की तरफ़ मुड़ा और उसकी चीख़ उनके कानों में पड़ी : "लेनिन मर गए ?"

इस भयानक मृत्यु की ख़बर तारघर के खुले हुए दरवाज़े में से निकली और आंधी की तरह स्टेशन में फैल गई और तूफ़ान के डैनों पर सवार होकर रेल की पटरियां और स्विचों से जाकर टकराई और बर्फ़ के तूफ़ान के साथ साथ रेलवे वर्कशाप के बर्फ़ से ढके हुए फाटकों को चीरती हुई अन्दर घुस गई.

मरम्मत करने वाले कुछ मज़दूर पहले से ही पिट पर खड़े हुए एक इन्जन की मरम्मत कर रहे थे. बूढ़ा पोलेनतावस्की ख़ुद अपने इंजन के नीचे घुसकर उन जगहों को बतला रहा था जिनमें गड़बड़ी थी. ज़ख़ार, मुज़ाख़ और आर्तेम आतिशदान की मुड़ी हुई लोहों की सुलाख़ों को सीधा कर रहे थे. ज़ख़ार उसको निहाई पर रखे हुए था और आर्तेम हथौड़ा चला रहा था.

ज़ख़ार अधेड़ हो गया था. पिछले कुछ सालों ने उसके माथे पर गहरी झुर्रियां डाल दी थीं और उसकी कनपटी के बाल सफ़ेद हो चले थे. उसकी कमर झुक गई थी और उसकी गढ़े में धंसी हुई आंखों में स्याही थी.

दरवाज़े में खड़े हुए किसी आदमी की छायाकृति क्षन भर के लिए दिखाई दी और फिर रात का अंधेरा उसको निगल गया. लोहे पर हथौड़ों की चोटों ने उसकी पहली चीख़ को डुबो दिया, मगर जब वह इंजन पर काम करते हुए आदमियों के पास पहुंचा तो आर्तेम के हाथ का हथौड़ा उठा का उठा रह गया.

"साथियो ! लेनिन मर गये !"

हथौड़ा धीरे धीरे आर्तेम के कन्धे से नीचे आ गया और उसके हाथों ने ख़ामोशी से उसको नीचे कंकरीट के फ़र्श पर रख दिया.

"क्या हुआ ? तुमने क्या कहा ?" कहते हुए आर्तेम ने यह भयानक ख़बर लाने वाले आदमी की चमड़े की जाकट को पागल की तरह झटके से पकड़ लिया.

और उसने हांफते हुए, बर्फ़ से ढके हुए, अपनी धीमी, टूटी हुई आवाज़ में दुहराया :

"हां साथियो, लेनिन मर गये !"

और चूंकि उस आदमी ने बात धीरे से कही थी, इसलिए आर्तेम ने समझ लिया कि यह भयानक ख़बर ज़रूर

الیچ لینن کی مرتیو هو گئی ." بوڑھا اچھل کر کھڑا هو گیا' اس نے فیتے کو اٹھا لیا اور اس کو ایسے گھورنے لگا جیسے اس میں چھید کر دیگا . جس بات کا وشواس کرنے سے وہ انکار کر رہا تھا' اس پر کاغذ کے اس ٹکڑے نے تصدیق کی مہر لگا دی تھی . اس کا چہرہ ایسا زرد پڑ گیا جیسے اس میں جان هی باقی نہ هو . وہ اپنے دوسرے ساتھیوں کی طرف مڑا اور اس کی چیخ ان کے کانوں میں پڑی : " لینن مر گئے ! "

اس بھیانک مرتیو کی خبر تار گھر کے کھلے هوئے دروازے میں سے نکلی اور آندھی کی طرح اسٹیشن میں پھیل گئی اور طوفان کے ڈینوں پر سوار هو کر ریل کی پٹریوں اور سوئچوں سے جا کر ٹکرائی اور برف کے طوفان کے ساتھ ساتھ ریلوے ورک شاپ کے برف سے ڈھکے هوئے پھاٹکوں کو چیرتی هوئی اندر گھس گئی .

مرمت کرنے والے کچھ مزدور پہلے سے هی پٹ پر کھڑے هوئے ایک انجن کی مرمت کر رہے تھے . بوڑھا پولینتاوسکی خود اپنے انجن کے نیچے گھس کر اُن جگہوں کو بتلا رہا تھا جن میں گڑبڑی تھی . زخار' بوراخ اور آرتیم آتشدان کی مڑی هوئی لوهے کی سلاخوں کو سیدھا کر رہے تھے . زخار اُس کو نہائی پر رکھے هوئے تھا اور ارتم ھتھوڑا چلا رہا تھا .

زخار ادھیڑ هو گیا تھا . پچھلے کچھ سالوں نے اُس کے ماتھے پر گہری جھریاں ڈال دی تھیں اور اُس کی کنپٹی کے بال کچھ سفید هو چلے تھے . اس کی کمر جھک گئی تھی اور اس کی گڑھے میں دھنسی هوئی آنکھوں میں سیاهی تھی .

دروازے میں کھڑے هوئے کسی آدمی کی چھایاکرتی چھن بھر کے لئے دکھلائی دی اور پھر رات کا اندھیرا اس کو نگل گیا . لوهے پر ھتھوڑوں کی چوٹوں نے اس کی پہلی چیخ کو ڈبو دیا' مگر جب وہ انجن پر کام کرتے هوئے آدمیوں کے پاس پہونچا تو آرتیم کے هاتھ کا ھتھوڑا اٹھا کا اٹھا رہ گیا .

" ساتھیو ! لینن مر گئے ! "

ھتھوڑا دھیرے دھیرے آرتیم کے کندھے سے نیچے آ گیا اور اس کے هاتھوں نے خاموشی سے اس کو نیچے کنکریٹ کے فرش پر رکھ دیا .

" کیا هوا ؟ تم نے کیا کہا ؟ " کہتے هوئے آرتیم نے یہ بھیانک خبر لانے والے آدمی کی چمڑے کی جاکٹ کو پاگل کی طرح جھٹکے سے پکڑ لیا .

اور اس نے هانپتے هوئے' برف سے ڈھکے هوئے' اپنی دھیمی' ٹوٹی هوئی آواز میں دھرایا :

" هاں ساتھیو' لینن مر گئے ! "

اور چونکہ اس آدمی نے بات دھیرے سے کہی تھی' اس لئے آرتیم نے سمجھ لیا کہ یہ بھیانک خبر ضرور

पढ़ने के लिए, जिन्हें उसने बीच में ही छोड़ दिया था, फ़ीते की तरफ़ हाथ बढ़ाया.

तार की मशीन ने ये शब्द लिखे थे :

"21 जनवरी की शाम को छः बजकर पचास मिनट पर......"

तार बाबू ने जल्दी जल्दी ये शब्द लिखे, फ़ीते को नीचे रख दिया और अपने सिर को हाथ पर टिका कर आगे की बात सुनने लगा.

"कल गोर्की में मृत्यु हो गई......" धीरे धीरे उसने ये शब्द कागज़ पर उतार दिये. अपनी लम्बी जिन्दगी में उसने न जाने कितने सन्देश लिखे थे, ख़ुशी के सन्देश और ग़म के संदेश; कितनी बार दूसरों के दर्द और दूसरों की ख़ुशी की ख़बर उसी ने सबसे पहले सुनी थी ! अपने काम के सिलसिले में उसने न जाने कब से तार के उन छोटे संदेशों के अर्थ पर ध्यान देना छोड़ दिया था, उसका तो काम बस इतना था कि ध्वनियों को पकड़े और मशीन की तरह उनको काग़ज़ पर उतार दे.

यह भी किसी की मौत की ख़बर थी और किसी को इसकी सूचना दी जा रही थी. तार बाबू के शुरू के वह शब्द "सब के लिए, सब के लिए, सब के लिए" भूल गये. मशीन ने टिक टिक करके व्लाडीमीर इलिच" लिखा और बुड्ढे तार बाबू ने उसको अक्षरों में उतार दिया. उसके ऊपर कोई असर नहीं हुआ, बस थोड़ी-सी थकान मालूम हुई. व्लाडीमीर इलिच के नाम का आदमी कहीं मर गया था और किसी को दुख की यह ख़बर मिलेगी, दर्द की एक चीख़ किसी के सीने से निकलेगी मगर उसको इससे क्या ? मशीन डेश-डाट-डेश-डाट बोलती जा रही थी. अपनी उस सुपरिचित ध्वनि में से तार बाबू ने पहला अक्षर पकड़ा और उसे तार के फ़ारम पर लिखा. यह अंगरेज़ी का "एल" था. फिर दूसरा अक्षर आया "ई". उसके बाद ही उसने लिखा "एन", फिर जल्दी ही जोड़ा "आई". फिर आख़िरी अक्षर लिखा "एन".

इसके बाद मशीन ने बिरम दिया और क्षन भर के लिए तार बाबू की आंखें अपने लिखे हुए शब्द "लेनिन" पर ठहर गईं.

मशीन टपटपाती रही मगर अब वह परिचित नाम तार बाबू की चेतना में दाख़िल हुआ. उसने एक फिर उस संदेश के आख़िरी शब्द पर निगाह डाली "लेनिन". क्या ? लेनिन ? तार की सारी इबारत उसके मन में बिजली की तरह कौंध गई. वह तार के फ़ारम को घूरता हुआ बैठा रहा और अपने काम की बत्तीस बरस की जिन्दगी में वह पहली बार अपने लिखे हुए शब्दों का विश्वास नहीं कर सका.

उसने तीन बार उस लाइन पर जल्दी जल्दी निगाह दौड़ाई, मगर वे शब्द ज़रा भी नहीं बदले : "व्लाडीमीर

پڑھنے کے لئے، جنھیں اس نے بیچ میں ہی چھوڑ دیا تھا، فیتے کی طرف ہاتھ بڑھایا ۔

تار کی مشین نے یہ شبد لکھے تھے :

"21 جنوری کی شام کو چھ بج کر پچاس منٹ پر . . ."

تار بابو نے جلدی جلدی یہ شبد لکھے، فیتے کو نیچے رکھ دیا اور اپنے سر کو ہاتھ پر ٹکا کر آگے کی بات سننے لگا ۔

"کل گورکی میں مرتیو ہو گئی... ." دھیرے دھیرے اُسنے یہ شبد کاغذ پر اتار دیئے ۔ اپنی لمبی زندگی میں اُسنے نہ جانے کتنے سندیش لکھے تھے، خوشی کے سندیش اور غم کے سندیش؛ کتنی بار دوسروں کے درد اور دوسروں کی خوشی کی خبر اُسی نے سب سے پہلے سنی تھی ! اپنے کام کے سلسلےمیں اس نے نہ جانے کب سے تارکے ان چھوٹے سندیشوں کے ارتھ پر دھیان دینا چھوڑ دیا تھا، اُس کا تو کام بس اتنا تھا کہ دھونیوں کو پکڑے اور مشین کی طرح اُن کو کاغذ پر اُتار دے ۔

یہ بھی کسی کی موت کی خبر تھی اور کسی کو اِس کی سوچنا دی جا رہی تھی ۔ تار بابو کو شروع کے وہ شبد "سب کے لئے، سب کے لئے، سب کے لئے" بھول گئے ۔ مشین نے ٹک ٹک کر کے "ولاڈی میر الیچ" لکھا اور بوڑھے تار بابو نے اس کو اکشروں میں اُتار دیا ۔ اُس کے اوپر کوئی اثر نہیں ہوا، بس تھوڑی سی تھکان معلوم ہوئی ۔ ولاڈی میر الیچ کے نام کا آدمی کہیں مر گیا اور کسی کو دکھ کی یہ خبر ملے گی، درد کی ایک چیخ کسی کے سینے سے نکلے گی، مگر اُس کو اس سے کیا ؟ مشین ڈیش - ڈاٹ - ڈیش - ڈاٹ بولتی جا رہی تھی ۔ اپنی اُس سوپرچت دھونی میں سے تار بابو نے پہلا اکشر پکڑا اور اُسے تار کے فارم پر لکھا ۔ یہ انگریزی کا "ایل" تھا ۔ پھر دوسرا اکشر آیا "ای"۔ اُس کے بعد ہی اس نے لکھا "این" پھر جلدی ہی جوڑا "آئی"۔ پھر آخر اکشر لکھا "این"۔

اُس کے بعد مشین نے وِرام دیا اور چھن بھر کے لئے تار بابو کی آنکھیں اپنے لکھے ہوئے شبد "لینن" پر ٹھہر گئیں ۔

مشین ٹپٹپاتی رہی مگر اب وہ پرچت نام تار بابو کی چیتنا میں داخل ہوا ۔ اس نے ایکبار پھر اُس سندیش کے آخری شبد پر نگاہ ڈالی "لینن"۔ کیا ؟ لینن ؟ تار کی ساری عبارت اس کے من میں بجلی کی طرح کوندھ گئی ۔ وہ تار کے فارم کو گھورتا ہوا بیٹھا رہا اور اپنے کام کی بتیس برس کی زندگی میں وہ پہلی بار اپنے لکھے ہوئے شبدوں کا وشواس نہیں کر سکا ۔

اس نے تین بار اس لائن پر جلدی جلدی نگاہ دوڑائی، مگر وے شبد ذرا بھی نہیں بدلے : "ولاڈی میر

जब लेनिन की मौत का ऐलान हुआ

लेखक—निकोलाई आस्त्रोवस्की; अनुवादक—अमृतराय

बड़ी सख्त और बेदर्द सर्दी से सन 1924 की शुरुआत हुई. जनवरी का बर्फ़ानी पंजा बर्फ़ से ढकी हुई धरती पर जमा हुआ था और महीने के दूसरे पखवारे में आंधी और तूफ़ान का ज़बरदस्त ज़ोर था.

दक्खिन-पच्छिमी रेलवे लाइनें बर्फ़ से ढकी हुई थीं. आदमी पगलाई हुई प्राकृतिक शक्तियों से लड़ रहे थे. बर्फ़ की सफ़ाई करने वाले फावड़े बर्फ़ को काट काट कर रेलगाड़ियों के लिए रास्ता बना रहे थे. टेलीग्राफ़ के तार बर्फ़ के बोझ से आंधी और तूफ़ान के कारन टूटे जा रहे थे और बारह लाइनों में से कुल तीन काम कर रही थीं—एक इंडो यूरोपियन और दो सरकारी लाइनें.

शेपेतोव्का स्टेशन के तार घर में तीन आले अनवरत खटखटा रहे थे, मगर उनकी भाशा ऐसी थी जो सिर्फ़ जानकार आदमी की ही समझ में आ सकती थी.

आपरेटर लड़कियां अभी जवान थीं, मगर अभी उन्होंने बीस किलोमीटर से ज़्यादा फ़ीता न टपटपाया होगा जब कि उनके बग़ल का बुड्ढा तार बाबू दो सौ किलोमीटर से ज़्यादा कर चुका था. अपने नौजवान साथियों की तरह उस बुड्ढे को तार से भेजा गया सन्देश समझने के लिए उस फ़ीते को पढ़ना नहीं पड़ता था, न वह मुश्किल शब्दों और वाक्यांशों की ही पहेली में उलझता था, और न उसके माथे पर झुर्रियां ही पड़ती थीं. उसका ढंग यह था कि शब्द पढ़ता जा रहा था और मशीन उसको टपटपाती जा रही थी. तभी उसके कान में शब्द पड़े, "सब के लिये, सब के लिए !"

"बर्फ़ साफ़ करने के बारे में कोई दूसरा सरकुलर होगा", बुड्ढे तार बाबू ने उन शब्दों को लिखते हुए अपने मन में कहा. बाहर बर्फ़ का तूफ़ान ज़ोरों से चल रहा था जिससे बड़ी बड़ी बर्फ़ आकर खिड़की से टकराती थी. तार बाबू ने सोचा कि खिड़की पर कोई दस्तक दे रहा है. उसकी आंखें आवाज़ की ओर मुड़ गईं और वह छन भर के लिए खिड़की के शीशे पर बर्फ़ से बनी हुई आकृतियों को देखने लगा. कोई भी नक़्क़ाश पत्ती की ऐसी अच्छी नक़्क़ाशी न कर सकता था.

उसके विचार इधर उधर बहने लगे और थोड़ी देर के लिए उसने तार के आले को सुनना बन्द कर दिया. मगर थोड़ी ही देर बाद उसने निगाह नीची की और उन शब्दों को

جب لینن کی موت کا اعلان ہوا

لیکھک — نکولائی آستروسکی؛ انوادک — امرت رائے

بڑی سخت اور بے درد سردی سے سن 1924 کی شروعات ہوئی۔ جنوری کا برفانی پنجہ برف سے ڈھکی ہوئی دھرتی پر جما ہوا تھا اور مہینے کے دوسرے پکھوارے میں آندھی اور طوفان کا زبردست زور تھا۔

دکچھن-پچھمی ریلوے لائنیں برف سے ڈھکی ہوئی تھیں۔ آدمی پگلائی ہوئی پراکرتک شکتیوں سے لڑ رہے تھے۔ برف کی صفائی کرنے والے پھاوڑے برف کو کاٹ کاٹ کر ریل گاڑیوں کے لئے راستہ بنا رہے تھے۔ ٹیلگراف کے تار برف کے بوجھ سے آندھی اور طوفان کے کارن ٹوٹے جا رہے تھے اور بارہ لائنوں میں سے کل تین کام کر رہی تھیں — ایک انڈو یوروپین اور دو سرکاری لائنیں۔

شےپیتوکا اسٹیشن کے تارگھر میں تین آلے انورت کھٹکھٹا رہے تھے، مگر اُن کی بھاشا ایسی تھی جو صرف جانکار آدمی کی ہی سمجھ میں آ سکتی تھی۔

آپریٹر لڑکیاں ابھی جوان تھیں، مگر ابھی انہوں نے بیس کیلومیٹر سے زیادہ فیتہ نہ ٹپ ٹپایا ہوگا جبکہ اُن کے بغل کا بوڑھا تار بابو دو سو کیلومیٹر سے زیادہ کر چکا تھا۔ اپنے نوجوان ساتھیوں کی طرح اُس بوڑھے کو تار سے بھیجا گیا سندیش سمجھنے کے لئے اُس فیتے کو پڑھنا نہیں پڑتا تھا، نہ وہ مشکل شبدوں اور واکیانشوں کی ہی پہیلی میں اُلجھتا تھا، اور نہ اُس کے ماتھے پر جھریاں ہی پڑتی تھیں۔ اس کا ڈھنگ یہ تھا کہ شبد پڑھتا جا رہا تھا اور مشین اُس کو ٹپ ٹپاتی جا رہی تھی۔ تبھی اس کے کان میں شبد پڑے، "سب کے لئے، سب کے لئے!"

"برف صاف کرنے کے بارے میں دوسرا سرکلر ہوگا" بوڑھے تار بابو نے اُن شبدوں کو لکھتے ہوئے اپنے من میں کہا۔ باہر برف کا طوفان زوروں سے چل رہا تھا جس سے بڑی بڑی برف آکر کھڑکیوں سے ٹکراتی تھی۔ تار بابو نے سوچا کہ کھڑکی پر کوئی دستک دے رہا ہے۔ اُس کی آنکھیں آواز کی اور مڑ گئیں اور وہ چھن بھر کے لئے کھڑکی کے شیشے پر برف سے بنی ہوئی آکرتیوں کو دیکھنے لگا۔ کوئی بھی نقاش پتی کی ایسی اچھی نقاشی نہ کر سکتا تھا۔

اس کے وچار اِدھر اُدھر بہنے لگے اور تھوڑی دیر کے لئے اس نے تار کے آلے کو سننا بند کر دیا۔ مگر تھوڑی ہی دیر بعد اس نے نگاہ نیچی کی اور ان شبدوں کو

अहिंसा पर चीनी कविताएं

(14)

(बौद्ध मन्दिरों में रिवाज है कि पूजा के वक़्त लोग तीन तरह की 'पनाह' लेते हैं और कहते हैं:—"मैं बुद्ध की शरन (पनाह) लेता हूं, मैं धर्म की शरन लेता हूं और मैं संघ (जमाअत) की शरन लेता हूं." चीनी बौद्ध मन्दिरों में लोग यह बात अपनी तरफ़ से भी कहते हैं और जानवरों की तरफ़ से भी कहते हैं, और यह कहकर कुछ पकड़े हुए जानवरों और पंछियों को रिहा कर देते हैं. इस रस्म में साफ़ पानी और किसी दरख़्त की हरी शाख़ें काम में लाई जाती हैं.)

"रिहाई की रस्म"

"साफ़ पानी की बूंदें
"हरी शाखों से टपकती हुई
"कितनी अच्छी और ठंडी लगती हैं !
"सब सब तरह के दुखों से छुटकारा पाजाएं !
"सब ज्ञान (मारफ़त) के राजा बुद्ध की शरन में आ जाएं !"

इस संग्रह में ऐसी बहुत सी कविताएं हैं जो संस्कृत साहित्य की कविताओं से या जिनकी कहानी संस्कृत कहानियों से मिलती हुई हैं. एक कविता में रेशम का कपड़ा पहनने को भी रेशम के कीड़ों की हिंसा की वजह से बुरा कहा गया है. अहिंसा के सवाल पर भारत और चीन के विचारों की समता की दृष्टि से यह संग्रह बहुत ही अच्छा और क़ीमती है. हम चाहते हैं कि देश की हर अच्छी लाइब्रेरी में यह किताब रखी जाये.

—सुन्दरलाल

अहिंसा धर्म का तक़ाज़ा है कि हम दूसरों को अधिक से अधिक सुविधाएं प्राप्त करा देने के लिये स्वयं अधिक से अधिक असुविधाएं सहें—यहां तक कि अपनी जान भी जोखम में डाल दें.

—महात्मा गांधी

اھنسا پر چینی کویتائیں

(14)

(بودھ مندروں میں رواج ھے کہ پوجا کے وقت لوگ تین طرح کی ' پناہ ' لیتے ھیں اور کہتے ھیں : —" میں بدھ کی شرن (پناہ) لیتا ھوں، میں دھرم کی شرن لیتا ھوں اور میں سنگھ (جماعت) کی شرن لیتا ھوں ." چینی بودھ مندروں میں لوگ یہ بات اپنی طرف سے بھی کہتے ھیں اور جانوروں کی طرف سے بھی کہتے ھیں، اور اور یہ کہہ کر کچھ پکڑے ھوئے جانوروں اور پنچھیوں کو رھا کر دیتے ھیں . اِس رسم میں صاف پانی اور کسی درخت کی ھری شاخیں کام میں لائی جاتی ھیں .)

" رھائی کی رسم "

" صاف پانی کی بوندیں
" ھری شاخوں سے ٹپکتی ھوئیں
" کتنی اچھی اور ٹھنڈی لگتی ھیں !
" سب سب طرح کے دکھوں سے چھٹکارا پا جائیں !
" سب گیان (معرفت) کے راجا بدھ کی شرن میں آ جائیں !"

اِس سنگرہ میں ایسی بہت سی کویتائیں ھیں جو سنسکرت ساھتیہ کی کویتاؤں سے یا جن کی کہانی سنسکرت کہانیوں سے ملتی ھوئی ھیں . ایک کویتا میں ریشم کا کپڑا پہننے کو بھی ریشم کے کیڑوں کی ھنسا کی وجہ سے برا کہا گیا ھے. اھنسا کے سوال پر بھارت اور چین کے وچاروں کی سمتا کی درشٹی سے یہ سنگرہ بہت ھی اچھا اور قیمتی ھے . ھم چاھتے ھیں کہ دیش کی ھر اچھی لائبریری میں یہ کتاب رکھی جائے .

سندرلال

اھنسا دھرم کا تقاضا ھے کہ ھم دوسروں کو ادھک سے ادھک سویدھائیں پراپت کرا دینے کے لئے سویم ادھک سے ادھک اسویدھائیں سہیں—یہاں تک کہ اپنی جان بھی جوکھم میں ڈال دیں .

—مہاتما گاندھی

"जान हर वक़्त खतरे में है.
"क्योंकि दिल सबके चीते के दिल हैं.
"मत कहो कि दूसरों का मांस चरबीला और ताक़तवर होता है,
"कि उससे तुम्हारे बदन में ताक़त आ जायगी !
"ज़िन्दगी आनी जानी है जैसे सुबह की ओस !
"हमारे दिलों में सबके लिये दया होनी चाहिये.
"आदमियों में और जानवरों में किसी में भी चीते का दिल नहीं होना चाहिये.
"छोटे और बड़े सब जानदारों की तरफ़ अपने अन्दर अहिंसा की ऊंची भावना पैदा करो."

---

(12)

"फुसला कर भगा ले जाना"

"जिसमें जान है उसमें जीने की ख्वाहिश भी है.
"इस में आदमी और जानवरों में कोई फ़रक़ नहीं.
"किसी की जान लेना सब से बड़ा अन्याय है.
"किसी ज़िन्दा जानवर को काटना सबसे अधिक दर्दनाक है.
"किसी पंछी को पकड़ लो और अभी मारो मत
"तब भी वह सहमकर अधमरा हो जाता है.
"जब उसका गला काटा जाता है तब वह दर्द से तड़पता है.
"आदमी जब इस बात पर सोचे
"तो किसका दिल गवारा कर सकता है कि वह मांस खाए."

---

(13)

"खाना पकाने की पाक जगह और जानवरों का क़त्ल"

"ज़िन्दा ग़रीब जानवरों को सताया जाता है और काटा जाता है.
"वह फड़फड़ाते हैं, तड़पते हैं और आख़ीर सांस तक जान बचाने की कोशिश करते हैं.
"फिर उनके टुकड़े टुकड़े किये जाते हैं.
"इसके बाद उन्हें पकाया जाता है, देगची में भूना जाता है.
"आदमी केवल अपनी दावत के मज़े के लिये उन पर यह ज़ुल्म ढाता है.
"और फिर आदमी कहता है कि इसमें कोई गुनाह नहीं !
"तो फिर भगवान जाने कि गुनाह है क्या चीज़ !"

" جان هر وقت خطرے میں هے .
" کیونکه دل سب کے چیتے کے دل هیں .
" مت کہو که دوسروں کا مانس چربیلا اور طاقتور هوتا هے،
که اُس سے تمہارے بدن میں طاقت آ جائے گی !
" زندگی آنی جانی هے جیسے صبح کی اُوس !
" همارے دلوں میں سب کے لئے دیا هونی چاهئے .
" آدمیوں میں اور جانوروں میں کسی میں بھی چیتے کا دل نہیں هونا چاهئے .
" چھوٹے اور بڑے سب جانوروں کی طرف اپنے اندر اهنسا کی اونچی بھاؤنا پیدا کرو ."

---

(12)

" پھسلا کر بھگا لے جانا "

" جس میں جان هے اُس میں جینے کی خواهش بھی هے .
" اِس میں آدمی اور جانوروں میں کوئی فرق نہیں .
" کسی کی جان لینا سب سے بڑا انیائے هے .
" کسی زندہ جانور کو کاٹنا سب سے ادهک دردناک هے .
" کسی پنچھی کو پکڑ لو اور ابھی مارو مت
" تب بھی وہ سہم کر ادھ مرا هو جاتا هے .
" جب اُس کا گلا کاٹا جاتا هے تب وہ درد سے تڑپتا هے .
" آدمی جب اِس بات پر سوچے
" تو کس کا دل گوارا کر سکتا هے که وہ مانس کھائے ."

---

(13)

" کھانا پکانے کی پاک جگه اور جانوروں کا قتل "

" زندہ غریب جانوروں کو ستایا جاتا هے اور کاٹا جاتا هے .
" وہ پھڑپھڑاتے هیں، تڑپتے هیں اور آخیر سانس تک جان بچانے کی کوشش کرتے هیں .
" پھر اُن کے ٹکڑے ٹکڑے کئے جاتے هیں .
" اس کے بعد انہیں پکایا جاتا هے، دیگچی میں بھونا جاتا هے .
" آدمی کیول اپنی دعوت کے مزے کے لئے اُن پر یه ظلم ڈھاتا هے .
" اور پھر آدمی کہتا هے که اِس میں کوئی گناہ نہیں !
" تو پھر بھگوان جانے که گناہ هے کیا چیز !"

---

(9)

"लालच देकर मारना"

"वह आदमी पानी के किनारे फ़ुरसत से बैठा हुआ मछलियां फंसा रहा है.
"उसकी ख़ुशी दूसरों की जान लेने में है !
"अपने दिल में वह यह महसूस नहीं करता
"कि मैं दूसरों का गला काट रहा हूं.

---

(10)

"जानवर को काटना"

"जब किसी की उंगली पकड़ कर खौलते पानी में डबो दी जाय
"तो उसे ऐसा लगता है कि उसका सारा बदन जल रहा है.
"जब किसी के कहीं सुई चुभो दी जाय
"तो उसे ऐसा लगता है कि उसका सारा बदन टुकड़े टुकड़े हुआ जा रहा है.
"जब कोई आदमी किसी जिन्दा मछली को काटने लगता है तो वह मछली आदमी से रहम की दरख़्वास्त करती है !
"छुरी की तेज धार को देखकर मुर्गी का बच्चा सहम जाता है !
"जाहिर है उन्हें भी तकलीफ़ होती है.
"पर बेरहम इन्सान यह सब देखता है और परवाह नहीं करता !"

---

(11)

"मारने की कला"

"आदमी का सिर ऊपर को और आंखें दाएं बाएं को होती हैं.
"जानवरों की आंखें नीचे को देखती हैं और उनके बदन पीछे को होते हैं.
"आदमी बड़े बड़े हथियारों से बहादुरी के साथ लड़ाइयां लड़ता है.
"जानवर केवल अपने दांतों और पंजों से लड़ते हैं.
"अफ़सोस ! यही दुनिया है.
"जीवन में अमन आमान कहीं नहीं !
"बस्ती में चीता आ जाता है तो लोग डर के मारे भागने लगते हैं.

(9)

" لالچ دے کر مارنا "

" وہ آدمی پانی کے کنارے فرصت سے بیٹھا ہوا مچھلیاں پھنسا رہا ہے .
" اُس کی خوشی دوسروں کی جان لینے میں ہے !
" اپنے دل میں وہ یہ محسوس نہیں کرتا
" کہ میں دوسروں کا گلا کاٹ رہا ہوں ."

---

(10)

" جانور کو کاٹنا "

" جب کسی کی اُنگلی پکڑ کر کھولتے پانی میں ڈبو دی جائے
"تو اُسے ایسا لگتا ہے کہ اُس کا سارا بدن جل رہا ہے .
" جب کسی کے کہیں سوئی چبھو دی جائے
" تو اُسے ایسا لگتا ہے کہ اُس کا سارا بدن ٹکڑے ٹکڑے ہوا جا رہا ہے .
" جب کوئی آدمی کسی زندہ مچھلی کو کاٹنے لگتا ہے تو وہ مچھلی آدمی سے رحم کی درخواست کرتی ہے !
" چھری کی تیز دھار کو دیکھ کر مرغی کا بچہ سہم جاتا ہے !
" ظاہر ہے اُنھیں بھی تکلیف ہوتی ہے .
" پر بے رحم انسان یہ سب دیکھتا ہے اور پرواہ نہیں کرتا !"

---

(11)

" مارنے کی کلا "

" آدمی کا سر اوپر کو اور آنکھیں دائیں بائیں کو ہوتی ہیں.
" جانوروں کی آنکھیں نیچے کو دیکھتی ہیں اور ان کے بدن پیچھے کو ہوتے ہیں .
" آدمی بڑے بڑے ہتھیاروں سے بہادری کے ساتھ لڑائیاں لڑتا ہے .
" جانور کیول اپنے دانتوں اور پنجوں سے لڑتے ہیں .
" افسوس ! یہی دنیا ہے .
" جیون میں امن آمان کہیں نہیں !
" بستی میں چیتا آ جاتا ہے تو لوگ ڈر کے مارے بھاگنے لگتے ہیں .

(6)

"जंगों का कारन"

"हमारे दिलों में नफ़रत का समन्दर हिलोरें ले रहा है !
"हम पीढ़ी दर पीढ़ी एक दूसरे को पके हुए मांस के प्याले खाते खिलाते देखते हैं !
"अगर तुम दुनिया की जंगों का कारन जानना चाहते हो,
"तो आधी रात के वक़्त जानवर कटने की जगह जाकर उनकी दर्दनाक आवाज़ों को सुनो."

---

(7)

"क़ैदी चिड़िया"

"किसी आदमी को पकड़कर क़ैद कर दिया जाय
"तो वह दिन भर दुखी और उदास रहता है,
"तब फिर वह पंछी जिसे
"पिंजरे में बन्द कर दिया गया है
"दिन भर क्या महसूस करता होगा ?
"अगर आदमी पिंजरे के पंछी की आवाज़ों को प्रेम से और ध्यान लगाकर सुन सके,
"तो उसका दिल चूर चूर हो जावे.
"इसलिये उस पंछी को छोड़ दो और जहां वह चाहे आज़ादी के साथ उड़ने दो."

---

(8)

"सबको अपनी जान प्यारी है"

"अगर तुम बहुत दिनों जीना चाहते हो तो मेरी बात ध्यान से सुनो.
"जब भी कोई काम करो तो अच्छी तरह सोच विचार कर करो.
"अगर तुम्हें अपनी जान प्यारी है तो तुम्हें चाहिये कि दूसरों की जान की भी हिफ़ाज़त करो.
"यही एक दूसरे की तरफ़ हमारा सच्चा धर्म यानी फ़र्ज़ है.
"अगर तुम दूसरों की मुसीबत में उनके काम आओ
"तो दूसरे भी तुम्हारे काम आवेंगे."

---

(6)

"جنگوں کا کارن"

"ھمارے دلوں میں نفرت کا سمندر ھلوریں لے رھا ھے !
"ھم پیڑھی در پیڑھی ایک دوسرے کو پکے ھوئے مانس کے پیالے کھاتے کھلاتے دیکھتے ھیں
"گر تم دنیا کی جنگوں کا کارن جاننا چاھتے ھو'
"تو آدھی رات کے وقت جانور کٹنے کی جگہ جاکر اُن کی دردناک آوازوں کو سنو ."

---

(7)

" قیدی چڑیا "

" کسی آدمی کو پکڑ کر قید کر دیا جائے
" تو وہ دن بھر دکھی اور اُداس رہتا ھے'
" تب پھر وہ پنچھی جسے
" پنجرے میں بند کر دیا گیا ھے
" دن بھر کیا محسوس کرتا ھوگا ؟
" اگر آدمی پنجرے کے پنچھی کی آوازوں کو پریم سے اور دھیان لگا کر سن سکے'
" تو اس کا دل چور چور ھو جاوے .
" اِس لئے اس پنچھی کو چھوڑ دو اور جہاں وہ چاھے آزادی کے ساتھ اُڑنے دو ."

---

(8)

"سب کو اپنی جان پیاری ھے"

" اگر تم بہت دنوں جینا چاھتے ھو تو میری بات دھیان سے سنو .
" جب بھی کوئی کام کرو تو اچھی طرح سوچ وچار کر کرو .
" اگر تمھیں اپنی جان پیاری ھے تو تمھیں چاھئے کہ دوسروں کی جان کی بھی حفاظت کرو .
" یہی ایک دوسرے کی طرف ھمارا سچا دھرم یعنی فرض ھے .
" اگر تم دوسروں کی مصیبت میں اُن کے کام آؤ
" تو دوسرے بھی تمھارے کام آوینگے ."

"इन बेजबान जानवरों को अपने प्यारों से बिछड़ने का
वैसा ही दुख होता है जैसा आदमी को.
"पर आदमी को अपना रोना दिखाई देता है, उनका
नहीं दिखाई देता !"

---

(3)

"सबज़ी में ताक़त"

"मुबारक हैं वह लोग जो साग सबजी खाकर रहते हैं.
"क्योंकि उन्हें खाना भी अच्छा मिलता है और उनका
जमीर यानी अन्तर आत्मा भी गुनाह से पाक रहती है.
"बरसात के बाद की ओस जब खेतों में भर जाती है
"तरह तरह की साग सबजियां फूलती और फलती हैं,
"हम पेट भरकर खा सकते हैं.
"हैरान हूं कि लोग जानवरों का मांस क्यों खाते हैं !"

---

(4)

"चिड़ियों का शिकार"

"कौन कहता है कि जानवरों में जान दूसरी तरह की है ?
"उनकी हड्डियां, उनका मांस और उनकी खाल सब
वैसी ही हैं जैसी हमारी.
"इसलिये हमें चाहिये कि दरख्तों के ऊपर बैठी चिड़ियों
का शिकार न करें.
"उनके घोंसलों के अन्दर उनके बच्चे अपनी माओं के
लौटने का इन्तज़ार कर रहे हैं."

---

(5)

(एक आदमी एक भेड़ को काटने के लिये खींचकर ले जा रहा है. भेड़ के बच्चे जो बाड़े में बंद हैं कवि के शब्दों में मां से कुछ कहते हैं.)

"मां ! हमें छोड़कर मत जाओ."

"दुनिया में सबसे दर्दनाक चीज है
"मां का बच्चों से अलग किया जाना.
"मां बड़े दुख भरे दिल से बच्चों से अलग होती है
"और कहती है :—
"बच्चो ! मैं अब हमेशा के लिये तुम्हें छोड़कर जा रही हूं."

"ان بے زبان جانوروں کو اپنے پیاروں سے بچھڑنے کا ویسا ہی
دکھ ہوتا ہے جیسا آدمی کو .
"پر آدمی کو اپنا رونا دکھائی دیتا ہے، اُن کا نہیں دکھائی
دیتا !"

---

(3)

"سبزی میں طاقت"

"مبارک ہیں وہ لوگ جو ساگ سبزی کھاکر رہتے ہیں .
"کیونکہ اُنہیں کھانا بھی اچھا ملتا ہے اور اُن کا ضمیر یعنی
انتر آتما بھی گناہ سے پاک رہتی ہے .
"برسات کے بعد کی اُوس جب کھیتوں میں بھر جاتی ہے
"طرح طرح کی ساگ سبزیاں پھولتی اور پھلتی ہیں،
"ہم پیٹ بھرکر کھا سکتے ہیں .
"حیران ہوں کہ لوگ جانوروں کا مانس کیوں کھاتے ہیں!"

---

(4)

"چڑیوں کا شکار"

"کون کہتا ہے کہ جانوروں میں جان دوسری طرح کی ہے؟
"اُن کی ہڈیاں، اُن کا مانس اور اُن کی کھال سب ویسی
ہی ہیں جیسی ہماری .
"اِس لئے ہمیں چاہئے کہ درختوں کے اُوپر بیٹھی چڑیوں کا
شکار نہ کریں .
"اُن کے گھونسلوں کے اندر اُن کے بچے اپنی ماؤں کے لوٹنے
کا اِنتظار کررہے ہیں ."

---

(5)

(ایک آدمی ایک بھیڑ کو کاٹنے کے لئے کھینچ کر لے جا رہا ہے . بھیڑ کے بچے جو باڑے میں بند ہیں کوی کے شبدوں میں ماں سے کچھ کہتے ہیں)

"ماں ! ہمیں چھوڑکر مت جاؤ"

"دنیا میں سب سے دردناک چیز ہے
"ماں کا بچوں سے الگ کیا جانا .
"ماں بڑے دکھ بھرے دل سے بچوں سے الگ ہوتی ہے
"اور کہتی ہے :—
"بچو ! میں اب ہمیشہ کے لئے تمہیں چھوڑکر جارہی ہوں."

परहेज़ करने वाले मिलते हैं. शायद इसकी वजह यही है कि वहां आम तौर पर सब जानवरों का मांस मिला जुला रहता है और मुसलमानों को एक ख़ास जानवर के मांस से परहेज़ है.

डाक्टर रघुबीर की इस विद्वत्तापूर्ण किताब से मालूम होता है कि बौद्ध धर्म के दूसरे विचारों के साथ साथ अहिंसा का विचार यानी निरामिष भोजन या मांस से परहेज़ करने का विचार भी भारत से चीन पहुंचा और वहां के कुछ लोगों, ख़ासकर वहां के लेखकों और कवियों, पर इसका ख़ासा असर पड़ा. अब हम इस किताब की कविताओं में से नमूने के तौर पर कुछ का हिन्दुस्तानी अनुवाद नीचे देते हैं.

❀ ❀ ❀

(1)

(लोग कुछ सूअर काटने के लिये ले जा रहे हैं. उन्हें देखकर यह कविता लिखी गई है.)

"हमारे मांस का मांस"

"इन सूअरों के भी जान है.
"इन के बदन भी उन्हीं पांच तत्त्वों (पानी, मिट्टी, आग, हवा और प्रकाश) से बने हैं जिन से हमारे बदन बने हैं.
"इनके दुख और इनकी बेबसी को देखकर,
"दिल दया से पानी पानी होने लगता है.
"अपनी बेज़बान भाशा में
"यह आदमी से चिल्ला चिल्ला कर कह रहे हैं—
"दूसरे जानदारों की जान बचाओ. उन्हें मारो मत !
"आदमी अगर जानवरों का मांस न खावे
"तो आदमी आदमी में प्रेम बढ़ाने के लिये भी यह एक बहुत बड़ा क़दम होगा."

---

(2)

"दुखिया मां"

"जानरों में भी मां और बच्चों में प्रेम होता है.
"कुतिया अपने बच्चों की किस तरह हिफ़ाज़त करती है.
"गाय अपने बछड़े को कैसा चाहती है.
"मुर्गी अपने बच्चों की किस तरह देख भाल करती है.
"मछली अपने बच्चों को रात दिन ख़तरे से बचाती रहती है.
"पर आदमी केवल अपनी ज़बान के सवाद के लिये
"बच्चों को मार कर मां से और मां को मारकर बच्चों से जुदा कर देता है.

پرهیز کرنے والے ملتے هیں. شاید اِس کی وجه یهی هے که وهاں عام طور پر سب جانوروں کا مانس ملا جلا رهتا هے اور مسلمانوں کو ایک خاص جانور کے مانس سے پرهیز هے.

ڈاکٹر رگھوبیر کی اِس ودوتاپورن کتاب سے معلوم هوتا هے که بودھ دھرم کے دوسرے وچاروں کے ساتھ ساتھ اهنسا کا وچار یعنی نرامش بھوجن یا مانس سے پرهیز کرنے کا وچار بھی بھارت سے چین پهونچا اور وهاں کے کچھ لوگوں، خاص کر وهاں کے لیکھکوں اور کویوں، پر اِس کا خاصه اثر پڑا. اب هم اِس کتاب کی کویتاؤں میں سے نمونے کے طور پر کچھ کا هندستانی انوواد نیچے دیتے هیں.

❀ ❀ ❀

(1)

(لوگ کچھ سور کاٹنے کے لئے لے جارهے هیں. اُنهیں دیکھ کر یه کویتا لکھی گئی هے.)

"همارے مانس کا مانس"

"اِن سوروں کے بھی جان هے.
"اِن کے بدن بھی اُنهیں پانچ تتوں (پانی، مٹی، آگ، هوا اور پرکاش) سے بنے هیں جن سے همارے بدن بنے هیں.
"اِن کے دکھ اور اِن کی بےبسی کو دیکھ کر،
"دل دیا سے پانی پانی هونے لگتا هے.
"اپنی بے زبان بھاشا میں
"یه آدمی سے چلا چلا کر کهه رهے هیں—
"دوسرے جانداروں کی جان بچاؤ. اُنهیں مارو مت !
"آدمی اگر جانوروں کا مانس نه کھاوے
"تو آدمی آدمی میں پریم بڑھانے کے لئے بھی یه ایک بهت بڑا قدم هوگا."

---

(2)

"دکھیا ماں"

"جانوروں میں بھی ماں اور بچوں میں پریم هوتا هے.
"کتیا اپنے بچوں کی کس طرح حفاظت کرتی هے.
"گائے اپنے بچھڑے کو کیسا چاهتی هے.
"مرغی اپنے بچوں کی کس طرح دیکھ بھال کرتی هے.
"مچھلی اپنے بچوں کو رات دن خطرے سے بچاتی رهتی هے.
"پر آدمی کیول اپنی زبان کے سواد کے لئے
"بچوں کو مارکر ماں سے اور ماں کو مارکر بچوں سے جدا کردیتا هے.

"अहिंसा पर चीनी कविताएं और तसवीरें"

"اہنسا پر چینی کویتائیں اور تصویریں"

सुन्दरलाल

سندر لال

नागपुर की इन्टरनेशनल एकेडमी आफ़ इन्डियन कलचर ने "चाइनीज़ पोएम्स ऐंड पिक्चर्स आन अहिंसा" (अहिंसा पर चीनी कविताएं और तसवीरें) नाम से एक बड़े काम की और बड़ी सुन्दर किताब हाल में निकाली है. इस किताब में अहिंसा पर पचास चीनी कविताएं चीनी भाशा और सुन्दर चीनी अक्षरों में छपी हुई हैं. हर कविता के सामने वाले पन्ने पर उस कविता से सम्बन्ध रखने वाली एक तसवीर है. तसवीर भी चीनी चित्रकार की खींची हुई है. साथ साथ हर कविता का अंग्रेज़ी अनुवाद और संस्कृत अनुवाद भी दिया गया है. दोनों अनुवाद मशहूर विद्वान डाक्टर रघुवीर के किये हुए और बहुत ही अच्छे हैं. जिल्द बहुत सुन्दर है.

चीन के लोग आम तौर पर मांस खाते हैं और किसी ख़ास जानवर के मांस से भी परहेज़ नहीं करते. मांस से परहेज़ करने वाले और केवल साग सबज़ी पर गुज़ारा करने वाले लोग भी वहां हैं. ख़ासकर बौद्ध पुरोहितों और महंतों में इस तरह के लोग बहुत मिलते हैं. इनमें कुछ ऐसे भी हैं जो दूध को मांस में शुमार करते हैं और इसीलिये दूध और दूध से बनी चीज़ों से भी परहेज़ करते हैं. लेकिन इस तरह के लोगों की तादाद चीन भर में बहुत कम है. शायद हज़ारों में इक्का दुक्का होगी. हमारे देश में भी कुल मिलाकर मांस खाने वालों की तादाद न खाने वालों से बहुत ज़्यादा है. पर चीन के मुक़ाबले में हमारे देश में मांस से परहेज़ करने वालों की तादाद भी बहुत ज़्यादा है. चीन में बहुत से लोग ऐसे ज़रूर हैं जो कभी कभी मांस खाना छोड़ देते हैं या ख़ास ख़ास दिनों में मांस नहीं खाते. बहुत से लोग अपनी सालग्रह के दिन मांस नहीं खाते. बहुत से पूर्नमाशी के दिन मांस नहीं खाते. बहुत से और ख़ास ख़ास मौक़ों और त्योहारों पर नहीं खाते. शंघाई में और पीकिंग में दोनों जगह इस तरह के भोजनालय और होटल मौजूद हैं जहां मांस नहीं पकता और बिना मांस का खाना आसानी से मिल सकता है. वहां आम तौर पर जिस जानवर से देश के किसी सूबे में खेती का काम लिया जाता है उसका मांस उस सूबे में नहीं खाया जाता. इस तरह पर कहीं गाय बैल के मांस से परहेज़ किया जाता है, कहीं भैंस के मांस से और कहीं ऊंट के मांस से वग़ैरा. उस देश में यह एक अजीब बात है कि वहां बहुत से मुसलमान मर्द और औरतें निरामिष भोजी यानी मांस से

ناگپور کی انٹرنیشنل اکیڈمی آف انڈین کلچر نے "چائنیز پوئمس اینڈ پکچرس آن اہنسا" (اہنسا پر چینی کویتائیں اور تصویریں) نام سے ایک بڑے کام کی اور بڑی سندر کتاب حال میں نکالی ہے . اس کتاب میں اہنسا پر پچاس چینی کویتائیں چینی بھاشا اور سندر چینی اکشروں میں چھپی ہوئی ہیں . ہر کویتا کے سامنے والے پنے پر اس کویتا سے سمبندھ رکھنے والی ایک تصویر ہے . تصویر بھی چینی چترکار کی کھینچی ہوئی ہے. ساتھ ساتھ ہر کویتا کا انگریزی انوواد اور سنسکرت انوواد بھی دیا گیا ہے . دونوں انوواد مشہور ودوان ڈاکٹر رگھوویر کے کئے ہوئے اور بہت ہی اچھے ہیں . جلد بہت سندر ہے .

چین کے لوگ عام طور پر مانس کھاتے ہیں اور کسی خاص جانور کے مانس سے بھی پرہیز نہیں کرتے . مانس سے پرہیز کرنے والے اور کیول ساگ سبزی پر گزارہ کرنے والے لوگ بھی وہاں ہیں . خاص کر بودھ پروہتوں اور مہنتوں میں اس طرح کے لوگ بہت ملتے ہیں . ان میں کچھ ایسے بھی ہیں جو دودھ کو مانس میں شمار کرتے ہیں اور اسی لئے دودھ اور دودھ سے بنی چیزوں سے بھی پرہیز کرتے ہیں . لیکن اس طرح کے لوگوں کی تعداد چین بھر میں بہت کم ہے . شاید ہزاروں میں اکا دکا ہوگی . ہمارے دیش میں بھی کل ملاکر مانس کھانے والوں کی تعداد نہ کھانے والوں سے بہت زیادہ ہے . پر چین کے مقابلے میں ہمارے دیش میں مانس سے پرہیز کرنے والوں کی تعداد بھی بہت زیادہ ہے . چین میں بہت سے لوگ ایسے ضرور ہیں جو کبھی کبھی مانس کھانا چھوڑ دیتے ہیں یا خاص خاص دنوں میں مانس نہیں کھاتے . بہت سے لوگ اپنی سالگرہ کے دن مانس نہیں کھاتے . بہت سے پورن ماشی کے دن مانس نہیں کھاتے. بہت سے اور خاص خاص موقعوں اور تیوہاروں پر نہیں کھاتے . شنگھائی میں اور پیکنگ میں دونوں جگہ اس طرح کے بھوجنالیہ اور ہوٹل موجود ہیں جہاں مانس نہیں پکتا اور بنا مانس کا کھانا آسانی سے مل سکتا ہے . وہاں عام طور پر جس جانور سے دیش کے کسی صوبے میں کھیتی کا کام لیا جاتا ہے اس کا مانس اس صوبے میں نہیں کھایا جاتا . اس طرح پر کہیں گائے بیل کے مانس سے پرہیز کیا جاتا ہے، کہیں بھینس کے مانس سے اور کہیں اونٹ کے مانس سے وغیرہ . اس دیش میں یہ ایک عجیب بات ہے کہ وہاں بہت سے مسلمان مرد اور عورتیں نرامش بھوجی یعنی مانس سے

ऊपर तेज़ सूरज तड़क रहा था और उसके माथे का पसीना चू चू कर लाल मिट्टी पर कीच के लेसड़ बना रहा था.

मैं घबराकर कटीले घेरे से बाहर निकला लेकिन भर्राई हुई आवाज़ में प्रभु ईसा के चरनों में उसकी याचना की प्रतिध्वनि बराबर मेरे कानों में गूंजती रही.

❀ ❀ ❀

अगले रविवार को सवेरे बेनब्रिज से ब्लैक्ले जाने वाली बस में मैं सवार हुआ. सुबह की ताज़ा हवा फ़र्र-फ़र्र करके मोटर बस की खिड़कियाँ चीर कर निकल जाती थी. मोटर समतल चौड़ी सड़क पर भन्नाटे के साथ दौड़ रही थी.

बस में मेरी बग़ल में ही एक दया-मूर्ति पादरी बैठे हुये थे जो अगले पड़ाव पर अपना धर्मोपदेश देने जा रहे थे.

"क्या यह सही है" मैंने उनसे पूछा "कि इन उम्दा सड़कों को निग्रो क़ैदियों की चेन-गैंगों ने बनाया है और क्या आप बता सकते हैं इन गैंगों के साथ कैसा सलूक किया जाता है ?"

उसने हैरत भरी निगाहों से मेरी तरफ़ देखा.

"मुझे सचमुच नहीं मालूम" उसने आजिजी से भरी मुस्कराहट के साथ कहा "क्योंकि मुझे यहां रहते अभी सिर्फ़ छै बरस ही तो हुये हैं !❀

❀लेख के चित्रों और सामग्री के लिये मैं श्री जे० एल० स्पाइवाक का अहसानमंद हूं—लेखक.

ईसा का सन्देश

लेखक—डाक्टर जे. सी. कुमारप्पा.

अनुवादक—सुरेश रामभाई.

इस किताब में हज़रत ईसा के सन्देश की व्याख्या ऐसे लाजवाब ढंग से की गई है कि पढ़ने वाला बड़ी आसानी से यह समझ जायगा कि ईसाई धर्म की ख़ास तालीम क्या है और हज़रत ईसा ने इनसान-इनसान की बराबरी, भाई चारे, प्रेम और अहिंसा पर कितना ज़ोर दिया है.

महात्मा गांधी ने इस किताब के बारे में कहा है कि

"हर आस्तिक से, चाहे वह ईसाई हो या किसी और धर्म का मानने वाला हो, मेरी सिफ़ारिश है कि इसे पढ़े... "

सुन्दर जिल्द, बढ़िया काग़ज़, क़रीब सवा सौ सफ़े की किताब का दाम सिर्फ़ एक रुपया.

मिलने का पता.

मैनेजर, 'नया हिन्द', 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद.

اوپر تیز سورج تڑک رہا تھا اور اس کے ماتھے کا پسینہ چو چو کر لال مٹی پر کیچ کے لیسڑ بنا رہا تھا .

میں گھبرا کر کٹیلے گھیرے سے باہر نکلا لیکن بھرائی ہوئی آواز میں پربھو عیسیٰ کے چرنوں میں اس کی یاچنا کی پرتی دھونی برابر میرے کانوں میں گونجتی رہی .

❀ ❀ ❀

اگلے رویوار کو سویرے بین برج سے بلیکلے جانے والی بس میں میں سوار ہوا . صبح کی تازہ ہوا فر - فر کرکے موٹر بس کی کھڑکیاں چیر کر نکل جاتی تھی . موٹر سمتل چوڑی سڑک پر بھنناتے کے ساتھ دوڑ رہی تھی .

بس میں میری بغل میں ہی ایک دیامورتی پادری بیٹھے ہوئے تھے جو اگلے پڑاؤ پر اپنا دھرم اپدیش دینے جا رہے تھے .

" کیا یہ صحیح ہے " میں نے اُن سے پوچھا " کہ اِن عمدہ سڑکوں کو نیگرو قیدیوں کے چین گینگوں نے بنایا ہے اور کیا آپ بتا سکتے ہیں اِن گینگوں کے ساتھ کیسا سلوک کیا جاتا ہے؟"

اُس نے حیرت بھری نگاہوں سے میری طرف دیکھا .

" مجھے سچ مچ نہیں معلوم " اُس نے عاجزی سے بھری مسکراہٹ کے ساتھ کہا " کیونکہ مجھے یہاں رہتے ابھی صرف چھ برس ہی تو ہوئے ہیں !"

* لیکھ کے چتروں اور سامگری کے لئے میں شری جے. ایل اسپائی واک کا احسانمند ہوں — لیکھک .

عیسیٰ کا سندیش

لیکھک — ڈاکٹر جے . سی . کمارپا.

انوادک — سریش رام بھائی.

اِس کتاب میں حضرت عیسیٰ کے سندیش کی ویاکھیا ایسے لاجواب ڈھنگ سے کی گئی ہے کہ پڑھنے والا بڑی آسانی سے یہ سمجھ جائیگا کہ عیسائی دھرم کی خاص تعلیم کیا ہے اور حضرت عیسیٰ نے انسان انسان کی برابر بھائی چارے، پریم اور اہنسا پر کتنا زور دیا ہے .

مہاتما گاندھی نے اِس کتاب کے بارے میں کہا ہے کہ

"ہر آستک سے، چاہے وہ عیسائی ہو یا کسی اور دھرم کا ماننے والا ہو، میری سفارش ہے کہ اِسے پڑھے..."

سندر جلد، بڑھیا کاغذ، قریب سوا سو صفحے کی کتاب کا دام صرف ایک روپیہ .

ملنے کا پتہ .

مینیجر، 'نیا ہند'، 145 مٹھی گنج، الہ آباد .

मैंने लड़के के पास जाकर देखा, वह आंख मूंदे धीमी आवाज़ में कह रहा था—"हे प्रभु ! देख तेरे बच्चों के साथ ये लोग किस तरह का सलूक कर रहे हैं !!"

ज़मीन से तीन इञ्च ऊपर उसकी कमर लटक रही थी. हाथ पैरों की नसें सूज गई थीं और खून का दौर रुक गया था. उसकी देह का बोझ उसकी रीढ़ की हड्डी को मानो फाड़े डाल रहा था.

पसीना धारोंधार माथे से चू रहा था और आंसुओं की बूंदें टप टप उसकी आंखों से ढुलक रही थीं.

मैंने पूछा—"कब तक आप इन्हें इस तरह 'स्टाक' में रखते हैं ?

वार्डन जे० डी० विलियम्स ने जवाब दिया—"एक वक़्त में एक घंटे से ज़्यादा नहीं. जब ये बेहोश हो जाते हैं तब हम इन्हें खोल देते हैं. जब ये होश में आकर ज़रा स्वस्थ होते हैं तो हम इन्हें फिर इसी तरह कस देते हैं."

"और इसने क़ुसूर क्या किया था ?" मैंने पूछा.

"यह खाने के लिये नखरे कर रहा था"—वार्डन ने तैश में जवाब दिया.

"क्या बेतों की सज़ा इससे ज़्यादा बारहम नहीं है ?"—मैंने पूछा. विलियम्स ने जवाब दिया—"मुझे पता नहीं ! अब जो कड़ी से कड़ी सज़ा हम दे सकते हैं वह "रैक" में इन्हें ज़रा 'तान' देते हैं."

मैं सोचने लगा यह "रैक" में "तानना" क्या बला है !

जार्जिया की पागल कर देने वाली गर्मी में सुबह से शाम तक अथक परिश्रम करने से कभी कभी ये निग्रो क़ैदी पहरेदारों के हुक्म की नुक्ताचीनी कर बैठते हैं. मेरे सामने एक इसी तरह की घटना घटी और उस 'बदतमीज़' क़ैदी के हाथों में हथकड़ी पहना दी गई और हथकड़ी में रस्सी बांध कर उसे "रैक" के खम्भे के पास लाया गया. उसे टखनों से कमर तक रस्सियों से कस कर उस खम्भे में जकड़ कर बांध दिया गया और गोरे वार्डन के हुक्म से हथकड़ी से बंधी रस्सी ख़ूब खींच तान कर सामने के दूसरे खम्भे में बांध दी गई.

क़ैदी का धड़ आगे खिंचता चला गया और उसके दोनों हाथ कस गये. वह तकलीफ़ के मारे चीख़ने लगा !

उसके दोनों फैले हुये हाथों के बीच में उसका सिर लटक गया !

उधर उसके हाथ, गर्दन और चेहरे पर पसीने की बूंदें उभर आईं और इधर मेरे सारे बदन में सिहरन दौड़ गई.

उसके हाथ मानो कंधों पर से उखड़े जा रहे थे.

बदक़िस्मत क़ैदी भर्राई आवाज़ में "लार्ड जीजज़ क्राइस्ट !" की टेर लगाने लगा.

میں نے لڑکے کے پاس جا کر دیکھا، وہ آنکھ موندے دھیمی آواز میں کہہ رہا تھا—" ہے پربھو ! دیکھ تیرے بچوں کے ساتھ یہ لوگ کس طرح کا سلوک کر رہے ہیں !!"

زمین سے تین انچ اوپر اس کی کمر لٹک رہی تھی. ہاتھ پیروں کی نسیں سوج گئی تھیں اور خون کا دور رک گیا تھا. اُس کی دیہہ کا بوجھ اُس کی ریڑھ کی ہڈی کو مانو پھاڑے ڈال رہا تھا.

پسینہ دھاروں دھار ماتھے سے چو رہا تھا اور آنسوؤں کی بوندیں ٹپ ٹپ اس کی آنکھوں سے ڈھلک رہی تھیں.

میں نے پوچھا—" کب تک آپ انھیں اس طرح 'اسٹاک' میں رکھتے ہیں ؟

وارڈن جے. ڈی. ولیمس نے جواب دیا—" ایک وقت میں ایک گھنٹہ سے زیادہ نہیں. جب یہ بےہوش ہو جاتے ہیں تب ہم انھیں کھول دیتے ہیں. جب یہ ہوش میں آکر ذرا سوستھ ہوتے ہیں تو ہم انھیں پھر اسی طرح کس دیتے ہیں."

" اور اس نے قصور کیا کیا تھا ؟ " میں نے پوچھا.

" یہ کھانے کے لئے نخرے کر رہا تھا "—وارڈن نے طیش میں جواب دیا.

" کیا بیتوں کی سزا اس سے زیادہ بارحم نہیں ہے ؟ "—میں نے پوچھا. ولیمس نے جواب دیا—"مجھے پتہ نہیں ! اب جو کڑی سے کڑی سزا ہم دے سکتے ہیں وہ ' ریک ' میں انھیں ذرا ' تان ' دیتے ہیں."

میں سوچنے لگا یہ " ریک " میں ' تاننا " کیا بلا ہے!

جارجیا کی پاگل کر دینے والی گرمی میں صبح سے شام تک اتھک پریشرم کرنے سے کبھی کبھی یہ نیگرو قیدی پہریداروں کے حکم کی نقطہ چینی کر بیٹھتے ہیں. میرے سامنے ایک اسی طرح کی گھٹنا گھٹی اور اُس ' بدتمیز ' قیدی کے ہاتھوں میں ہتھکڑی پہنا دی گئی اور ہتھکڑی میں رسی باندھ کر اُسے " ریک " کے کھمبے کے پاس لایا گیا. اُسے ٹخنوں سے کمر تک رسیوں سے کس کر اُس کھمبے میں جکڑ کر باندھ دیا گیا اور گورے وارڈن کے حکم سے ہتکڑی سے بندھی رسی خوب کھینچ تان کر سامنے کے دوسرے کھمبے میں باندھ دی گئی.

قیدی کا دھڑ آگے کھنچتا چلا گیا اور اُس کے دونوں ہاتھ کس گئے. وہ تکلیف کے مارے چیخنے لگا !

اُس کے دونوں پھیلے ہوئے ہاتھوں کے بیچ میں اُس کا سر لٹک گیا !

ادھر اُس کے ہاتھ، گردن اور چہرے پر پسینے کی بوندیں اُبھر آئیں اور ادھر میرے سارے بدن میں سہرن دوڑ گئی.

اُس کے ہاتھ مانو کندھوں پر سے اُکھڑے جا رہے تھے.

بدقسمت قیدی بھرائی آواز میں " لارڈ جیجز کرائسٹ! " کی ٹیر لگانے لگا.



निग्रो युवक के हाथ पैर बांध कर कड़ी धूप में जलती रेत पर डाल दिया गया है
نیگرو یووک کے ہاتھ پیر باندھ کر کڑی دھوپ میں جلتی ریت پر ڈال دیا گیا ہے



स्टाक की सजा दी जा रही है
سٹاک کی سزا دی جا رہی ہے



एक निग्रो बन्धु को न्यूयार्क में पेड़ पर लिंच किया गया था
ایک نیگرو بندھو کو نیویارک میں پیڑ پر لنچ کیا گیا تھا



रैक के शिकंजे में ताना जा रहा है
ریک کے شکنجے میں تانا جا رہا ہے

(4)

कई सप्ताह बाद मैं सेमिनल काउन्टी कैम्प के स्टाकेड (कटीले बाड़े) में था. गरमी से तपी हुई हवा हुमस बनकर मौसम का दम घोंट रही थी. टीन की छत और लकड़ी के तख्तों की दीवारें तेज सूरज की तपिश से तप कर बैरकों को भट्टी में तब्दील कर रही थीं. टूटी हुई जाली के भीतर भोजनालय में थक की थक मक्खियां भिनभिना रही थीं और जंग लगे कटीले बाड़ों की चहारदीवारी अपनी बारीक परछाईं लाल मिट्टी पर फेंक रही थी कि जिसके दायरे में धूप की झुलस से बचने के लिये दुर्गा चीटियों की क़तारें बिल तलाश कर रही थीं.

इसी कड़कड़ाती धूप में हाथ पैर बंधा हुआ 16-17 बरस का एक बालक क़ैदी खम्भे से जकड़ा हुआ पड़ा था. उसकी आंखें बन्द थीं और उसका सर जमीन पर इस तरह लटक गया था मानो गर्दन की हड्डी टूट गई हो.

मैंने उसके पास जाकर पूछा—"बच्चे! तुम्हें बहुत तकलीफ़ है?"

प्यास से जले होंठों को सूखी जबान से चाटकर गीला करते हुये उसने धीरे से आंखें खोलीं और फिर मींच लीं. मैंने वार्डन से पूछा—"इस लड़के ने क्या क़ुसूर किया था?"

वार्डन ने कहा—"इसने उलटकर पहरेदार की बात का जवाब दिया था. आप यक़ीन रखिये," वार्डन ने जोर देकर कहा, "जब ये लड़के बेहोश हो जाते हैं तो हम इन्हें खोल देते हैं."

मैंने पूछा—"इन लोगों को सजा देने का क्या यही तरीक़ा है?"

"नहीं, और दूसरी सजायें 'स्टाक' और 'रैक' की भी हैं," वार्डन ने इत्तला के तौर पर कहा.

मैं मन में सोचने लगा तीन सौ बरस पहले मजहबी खूंरेजियों के दिनों में यह "स्टाक" की सजा दी जाती थी. लकड़ी के फ्रेम में मुजरिम के दोनों हाथ और दोनों पैर डाल कर कस दिये जाते थे. वह उसमें लटके लटके बेहोश हो जाता था. लेकिन वेब्स्टर डिक्शनरी तक में लिखा है कि यह खौफ़नाक सजा सौ बरस पहले हमेशा के लिये बन्द हो चुकी है. पर जब बरली काउन्टी स्टाकेड में मैंने एक 19 बरस के निग्रो लड़के को "स्टाक" में लटके देखा तो मेरे अचरज का ठिकाना न रहा. तीन सौ बरस पहले कम से कम मुजरिम को एक तख्ते पर बैठाकर स्टाक में कसा जाता था. पर तीन सौ बरस बाद इस सजा में इतनी तब्दीली हुई है कि हाथ पैर कस कर नीचे से तख्ता खींच लिया जाता है और क़ैदी अधर में लटकता रहता है!

(4)

کئی سپتاہ بعد میں سیمینل کاؤنٹی کیمپ کے اسٹاکیڈ (کٹیلے باڑے) میں تھا۔ گرمی سے تپی ہوئی ہوا ہمس بنکر موسم کا دم گھونٹ رہی تھی۔ ٹین کی چھت اور لکڑی کے تختوں کی دیواریں تیز سورج کی تپش سے تپ کر بیرکوں کو بھٹی میں تبدیل کر رہی تھیں۔ ٹوٹی ہوئی جالی کے بھیتر بھوجنالیہ میں تھک کی تھک مکھیاں بھنبھنا رہی تھیں اور زنگ لگے کٹیلے باڑوں کی چہاردیواری اپنی باریک پرچھائیں لال مٹی پر پھینک رہی تھی کہ جس کے دائرے میں دھوپ کی جھلس سے بچنے کے لئے دُرگا چیونٹیوں کی قطاریں بل تلاش کر رہی تھیں۔

اِسی کڑکڑاتی دھوپ میں ہاتھ پیر بندھا ہوا 16-17 برس کا ایک بالک قیدی کھمبے سے جکڑا ہوا پڑا تھا۔ اُس کی آنکھیں بند تھیں اور اُس کا سر زمین پر اِس طرح لٹک گیا تھا مانو گردن کی ہڈی ٹوٹ گئی ہو۔

میں نے اُس کے پاس جا کر پوچھا—"بچے! تمہیں بہت تکلیف ہے؟"

پیاس سے جلے ہونٹھوں کو سوکھی زبان سے چاٹ کر گیلا کرتے ہوئے اُس نے دھیرے سے آنکھیں کھولیں اور پھر میچ لیں۔ میں نے وارڈن سے پوچھا—"اس لڑکے نے کیا قصور کیا تھا؟"

وارڈن نے کہا—"اِس نے اُلٹ کر پہریدار کی بات کا جواب دیا تھا۔ آپ یقین رکھئے" وارڈن نے زور دے کر کہا "جب یہ لڑکے بیہوش ہو جاتے ہیں تو ہم اِنہیں کھول دیتے ہیں۔"

میں نے پوچھا—"ان لوگوں کو سزا دینے کا کیا یہی طریقہ ہے؟"

"نہیں، اور دوسری سزائیں 'اسٹاک' اور 'ریک' کی بھی ہیں" وارڈن نے اطلاع کے طور پر کہا۔

میں من میں سوچنے لگا تین سو برس پہلے مذہبی خونریزیوں کے دنوں میں یہ "اسٹاک" کی سزا دی جاتی تھی۔ لکڑی کے فریم میں مجرم کے دونوں ہاتھ اور دونوں پیر ڈال کر کس دیے جاتے تھے۔ وہ اس میں لٹکے لٹکے بیہوش ہو جاتا تھا۔ لیکن ویبسٹر ڈکشنری تک میں لکھا ہے کہ یہ خوفناک سزا سو برس پہلے ہمیشہ کے لئے بند ہو چکی ہے۔ پر جب برلی کاؤنٹی اسٹاکیڈ میں میں نے ایک 19 برس کے نیگرو لڑکے کو "اسٹاک" میں لٹکے دیکھا تو میرے اچرج کا ٹھکانا نہ رہا۔ تین سو برس پہلے کم سے کم مجرم کو ایک تختے پر بیٹھا کر اسٹاک میں کسا جاتا تھا پر تین سو برس بعد اس سزا میں اتنی تبدیلی ہوئی ہے کہ ہاتھ پیر کس کر نیچے سے تختہ کھینچ لیا جاتا ہے اور قیدی ادھر میں لٹکتا رہتا ہے!

बस—करो ! बस—करो ! बस—करो ! या ख़ुदा !

हर "बस" पर बेलचा मिट्टी के अन्दर धंस जाता था और हर "करो" पर ठेले के भीतर पहुंच जाता था.

इन बदक़िस्मतों के इस गीत में, कि जिन्हें मौत या निजात तक झुकने और उठने की सजा मिली थी—एक ऐसी कसक और दिल को पिघला देने वाली एक ऐसी टीस थी कि जो बरबस प्रानों में घुसकर कलेजे में अटक कर रह जाती थी—

हे—प्रभू ! हे—प्रभ ! बस—करो ! हे—प्रभू !
बस—करो ! हे—प्रभू ! हे—प्रभू ! बस—करो !
जिस्म—हुआ ! चूर—चूर ! चूर—चूर ! जिस्म—हुआ !
हे—प्रभू ! बस—करो ! हे—प्रभू ! बस—करो !

वार्डन बीठले ने हंसी का ठहाका लगाकर कहा—"कम्बख़्तो ! क्या तुम लोग इससे और अधिक जल्दी जल्दी गीत नहीं दोहरा सकते ताकि काम ज्यादा हो सके ?"

× × ×

अटलान्टा के दफ़्तर में जो डाक्टरी रिपोर्टें पड़ी हुई थीं उनमें दर्ज था—

(1) क्लार्क काउन्टी कैम्प स्टाकेड का निग्रो क़ैदी बिल हैरिस 13 जून, सन 1931 को चार घंटे की बीमारी के बाद पांच बजे शाम को मिरगी के दौरे से मर गया. (मैं अचम्भे से सोच रहा था कि जलती दोपहरी मे सुबह से लेकर शाम तक बिना आराम काम करने की बीमारी का नाम ही क्या मिरगी है !!!).

(2) जार्जिया की सड़क बनाते हुये जार्ज जॉनसन नामक निग्रो क़ैदी, उम्र 27 वर्ष, ऊंचाई 5 फ़ुट 10½ इंच, वज़न 161 पौंड, 23 फ़रवरी, सन 1931 को तीन बजे सुबह तपेदिक़ से मर गया !

(3) चैथम काउन्टी चेन-गैंग का जार्ज नील, उम्र 20 वर्ष, तेजाब, तारपीन और साबुन मिलाकर पीने से मर गया ! (मैं सोचने लगा इन जंजीरी टोलियों में काम करने की बनिस्बत मौत का ख़्याल इन लोगों को कितना अच्छा लगता होगा !).

अटलांटा के दफ़्तर में क़ैदियों की मौत के ढेरों सर्टिफ़िकेट ख़ूबसूरत मोटे लिफ़ाफ़ों में लाल फ़ीतों से बंधे हुये और क़रीने से सहाये हुये रखे थे, जिनमें मिरगी, तपेदिक़, हार्टफ़ेल, लू और इसी तरह की कई बीमारियों की ख़ानापुरी से लैस, कार्डों से भी गई बीती मौत की कहानियां दर्ज पड़ी थीं ! और देश के कोनों कतरों में काले रंग की कुछ अभागी मांयें, बहनें और बीवियां रो रोकर अपनी आंखें सुजा रही थीं !

بس—کرو ! بس—کرو ! بس کرو ! یا خدا .

ہر "بس" پر بیلچہ مٹی کے اندر دھنس جاتا تھا اور ہر "کرو" پر ٹھیلے کے بھیتر پہونچ جاتا تھا .

اِن بدقسمتوں کے اِس گیت میں، کہ جنھیں موت یا نجات تک جھکنے اور اُٹھنے کی سزا ملی تھی—ایک ایسی کسک اور دل کو پگھلا دینے والی ایک ایسی ٹیس تھی کہ جو بربس پرانوں میں گھس کر کلیجے میں اٹک کر رہ جاتی تھی—

ہے—پربھو ! ہے—پربھو ! بس—کرو ! ہے—پربھو !
بس—کرو ! ہے—پربھو ! ہے—پربھو ! بس—کرو !
جسم—ہوا ! چور—چور ! چور—چور ! جسم—ہوا !
ہے—پربھو ! بس—کرو ! ہے—پربھو ! بس—کرو !

وارڈن وھیٹلے نے ہنسی کا ٹھاکا لگاکر کہا—"کمبختو ! کیا تم لوگ اِس سے اور ادھک جلدی جلدی گیت نہیں دوہرا سکتے تاکہ کام زیادہ ہوسکے؟"

× × ×

اٹلانٹا کے دفتر میں جو ڈاکٹری رپورٹیں پڑی ہوئی تھیں اُن میں درج تھا—

(1) کلارک کاؤنٹی کیمپ اسٹاکیڈ کا نیگرو قیدی بل ہیرس 13 جون، 1931 کو چار گھنٹے کی بیماری کے بعد پانچ بجے شام کو مرگی کے دورے سے مرگیا. (میں اچنبھے سے سوچ رہا تھا کہ جلتی دوپہری میں صبح سے لیکر شام تک بنا آرام کام کرنے کی بیماری کا نام ہی کیا مرگی ہے !!!).

(2) جارجیا کی سڑک بناتے ہوئے جارج جانسن نامک نیگرو قیدی، عمر 27 ورش، اونچائی 5 فٹ 10½ انچ، وزن 161 پونڈ، 23 فروری، سن 1931 کو تین بجے صبح دق سے مر گیا !

(3) چیتھم کاؤنٹی چین - گینگ کا جارج نیل، عمر 20 ورش، تیزاب، تارپین اور صابن ملا کر پینے سے مر گیا ! (میں سوچنے لگا اِن زنجیری ٹولیوں میں کام کرنے کی بہ نسبت موت کا خیال اِن لوگوں کو کتنا اچھا لگتا ہوگا !) .

اٹلانٹا کے دفتر میں قیدیوں کی موت کے ڈھیروں سرٹیفکیٹ خوبصورت موٹے لفافوں میں لال فیتوں سے بندھے ہوئے اور قرینے سے تھائے ہوئے رکھے تھے، جن میں مرگی، دق، ہارٹ فیل، لو اور اِسی طرح کی کئی بیماریوں کی خانہ پوری سے لیس، کارڈوں سے بھی گئی بیتی موت کی کہانیاں درج پڑی تھیں ! اور دیش کے کونوں کتروں میں کالے رنگ کی کچھ ابھاگی مائیں، بہنیں اور بیویاں رو رو کر اپنی آنکھیں سجا رہی تھیں !

भरी पड़ी हैं ? क्या इन काग़ज़ों में बीमारियों, चोटों और मौतों पर डाक्टरों की लम्बी लम्बी रिपोर्टें नहीं हैं ? क्या इन धूल से ढकी हुई फ़ाइलों के भीतर निराश ज़िन्दगियों की अनेक दर्दनाक कहानियां नहीं बन्द पड़ी हैं ?"

कमिश्नर ज़रा नरम होकर बोला—"हमारे पास पैसा कहां है ! सरकार हमें इतना कम पैसा देती है कि हमारे लिये सब कैम्पों की जांच पड़ताल कर सकना नामुमकिन है. हमारे दफ़्तर में क़ैदियों के पास से शिकायतें आती हैं लेकिन पैसों की कमी से हम उनकी छानबीन नहीं कर सकते !"

मैंने कहा—"मैं आपके कैम्पों को देखना चाहता हूं. क्या आप मुझे इसकी इजाज़त देंगे ?"

कमिश्नर ने मुझे अनुमति-पत्र देते हुये कहा—"आप शौक़ से जाइये पर आप को हैवानी ज़ुल्म देखने को न मिलेंगे !"

بھری پڑی ھیں؟ کیا اِن کاغذوں میں بیماریوں' چوٹوں اور موتوں پر ڈاکٹروں کی لمبی لمبی رپورٹیں نہیں ھیں؟ کیا ان دھول سے ڈھکی ھوئی فائلوں کے بھیتر نراش زندگیوں کی انیک دردناک کہانیاں نہیں بند پڑی ھیں؟"

کمشنر ذرا نرم ھوکر بولا—"ھمارے پاس پیسہ کہاں ھے! سرکار ھمیں اتنا کم پیسہ دیتی ھے کہ ھمارے لئے سب کیمپوں کی جانچ پڑتال کرسکنا ناممکن ھے. ھمارے دفتر میں قیدیوں کے پاس سے شکائتیں آتی ھیں لیکن پیسوں کی کمی سے ھم اُن کی چھان بین نہیں کرسکتے!"

میں نے کہا—"میں آپ کے کیمپوں کو دیکھنا چاھتا ھوں. کیا آپ مجھے اِس کی اِجازت دینگے؟"

کمشنر نے مجھے انومتی پتر دیتے ھوئے کہا—"آپ شوق سے جائیے پر آپ کو حیوانی ظلم دیکھنے کو نہ ملیں گے!"

(3)

इसके कई दिनों बाद मैं जार्जिया की एक सड़क दुरुस्त करते हुए एक चेन-गैङ्ग के सामने खड़ा था. इस गैंग का वार्डन कालिज का निकला हुआ सी० एच० वीठले नामक एक नौजवान था. सड़क जगह जगह से टूटी हुई थी और उसके दोनों किनारों पर लाल कंकरीली मिट्टी के बहुत से ढेर लगे हुये थे, जिसे बेलचों से ठेलों में भर कर सड़क की टूटनों में गिराया जा रहा था. सारे बेलचे एक साथ ही मिट्टी के भीतर धंसते थे और एक साथ ही उठकर ठेलों के भीतर गिरते थे. एक सुर ताल के साथ क़ैदियों की कमर झुकती थी और उठती थी. क़ैदियों में से ही एक कामदार "हे जवान !" की धुन लगा रहा था और उसी की आवाज़ पर बेलचे उठते और गिरते थे. सूरज की तेज़ किरनें उनके नंगे बदन को भेद रही थीं और कभी कभी उन्हें मुंह खोलकर सांस लेने की कोशिश करनी पड़ती थी. उनके माथे और उनकी पीठ से पसीने की धारें बह रही थीं. उनका धारीदार जांघिया गीला होकर बदन से चिपक गया था. वह झुकते और उठते थे; एक मिनिट में चौदह बार झुकते और उठते थे. मिनिट के बाद मिनिट और घन्टे के बाद घन्टे गुज़रते थे और वे उसी तरह जलती दोपहरी मे, सुबह से शाम तक झुकते और उठते थे, मिनिट में चौदह बार झुकते और उठते थे.

धूल उड़ उड़कर बादल बनकर हवा में छा रही थी और उनके नथनों, फेफड़ों और कानों में चादर की तहों की तरह लिपटी जा रही थी.

मेरे कानों में रह रहकर क़ैदियों के पुरदर्द गीत की धुन पड़ रही थी.

(3)

اِس کے کئی دنوں بعد میں جارجیا کی ایک سڑک درست کرتے ھوئے ایک چین - گینگ کے سامنے کھڑا تھا. اِس گینگ کا وارڈن کالج کا نکلا ھوا سی. ایچ. وھیٹلے نامک ایک نوجوان تھا. سڑک جگہ جگہ سے ٹوٹی ھوئی تھی اور اُس کے دونوں کناروں پر لال کنکریلی مٹی کے بہت سے ڈھیر لگے ھوئے تھے' جسے بیلچوں سے ٹھیلوں میں بھرکر سڑک کی ٹوٹنوں میں گرایا جا رھا تھا. سارے بیلچے ایک ساتھ ھی مٹی کے بھیتر دھنستے تھے اور ایک ساتھ ھی اُٹھ کر ٹھیلوں کے بھیتر گرتے تھے. ایک سر تال کے ساتھ قیدیوں کی کمر جھکتی تھی اور اُٹھتی تھی. قیدیوں میں سے ھی ایک کامدار "ھے جوان!" کی دھن لگا رھا تھا اور اسی کی آواز پر بیلچے اُٹھتے اور گرتے تھے. سورج کی تیز کرنیں اُن کے ننگے بدن کو بھید رھی تھیں اور کبھی کبھی انھیں منھ کھولکر سانس لینے کی کوشش کرنی پڑتی تھی. اُن کے ماتھے اور اُن کی پیٹھ سے پسینے کی دھاریں بہہ رھی تھیں. اُن کا دھاریدار جانگھیا گیلا ھوکر بدن سے چپک گیا تھا. وے جھکتے اور اُٹھتے تھے؛ ایک منٹ میں چودہ بار جھکتے اور اُٹھتے تھے. منٹ کے بعد منٹ اور گھنٹے کے بعد گھنٹے گزرتے تھے اور وے اُسی طرح جلتی دوپہری میں' صبح سے شام تک جھکتے اور اُٹھتے تھے' منٹ میں چودہ بار جھکتے اور اُٹھتے تھے.

دھول اُڑ اُڑ کر بادل بن کر ھوا میں چھا رھی تھی اور اُن کے نتھنوں' پھیپھڑوں اور کانوں میں چادر کی تہوں کی طرح لپٹی جا رھی تھی.

میرے کانوں میں رہ رہ کر قیدیوں کے پردرد گیت کی دھن پڑ رھی تھی.

मैं उठकर सामने के बैरक के दरवाज़े के पास आया. दरवाज़े के पास रखे हुये पेशाब के टब से उठती हुई भयङ्कर सड़ायन हवा के झोंके के साथ मेरे दिमाग़ में घुस गई. मैं हटकर बैरक के बग़ल में टहलने लगा. धारीदार जांघिया पहने हुये निग्रो क़ैदियों की एक क़तार ज़मीन पर चटाइयों पर लेटी हुई थी. फीकी रोशनी में पसीने की बूंदें रह रहकर उनकी नंगी छातियों पर चमक उठती थीं.

एक क़ैदी ने थके हुये हाथों से अपनी जांघ खुजलाई, दूसरे ने कन्धे पर काटते हुये खटमल को हथेली से मसल दिया और एक, जिसकी आंखों में नींद नहीं थी, कोहनी पर सर रखे हुये उदास आंखों से शून्य में देख रहा था.

मैंने पहरेदार से पूछा—"आखिर इन लोगों ने ऐसा क्या क़ुसूर किया है जो इस तरह ज़ंजीर में कसकर कटघरे में बन्द किये गये हैं ?"

"यह कुछ न पूछिये ! आवारागर्दी से लेकर ये लोग क़त्ल तक के मुजरिम हैं !"

तीस दिन और तीस बरस के सज़ायाफ़्तों में कोई फ़र्क़ नहीं किया गया था. एक लड़का जो मुशकिल से 17 बरस का था अपने गरम माथे को बेड़ियों के ठंडे लोहे से सेहला रहा था; उसके बग़ल में रह रहकर दमे से खोंखता हुआ एक दुबला पतला बूढ़ा पड़ा हुआ था जो पचासे को पार कर चुका था.

पहरेदार ने कहा—"यह क़ातिल है !"

(2)

अमरीका में क़ैदियों के इन कैम्पों का इन्तज़ाम स्टेट प्रिज़न कमीशन के द्वारा मुक़र्रर वार्डन करते हैं. इस कमीशन मे तीन मेम्बर होते हैं जिन्हें छै बरस के लिये जनता चुनती है. कमीशन का हैड क्वार्टर अटलान्टा शहर में है जहां बहुत सी फ़ाइलों और ख़तों के ढेर के बीच कमिश्नर विवियन ई० स्टेनली बाज़ाब्ता आफ़िस के समय बैठते हैं.

मिलने पर कहने लगे—"ये चेन-गैङ्ग (ज़ंजीरी टोलियां) अच्छी भी हैं और बुरी भी हैं. हम कोशिश कर रहे हैं कि बुरे क़ैदियों से जल्द से जल्द हमारा पिंड छूट जाये."

मैंने पूछा—"सुना है क़ैदी बहुधा जान से मार डाले जाते हैं. हैबतनाक जुल्मों के क़ुसूर में कभी कभी वार्डरों को भी बर्ख़ास्त कर दिया जाता है ?"

कमिश्नर स्टेनली ने ग़ुस्से से भरकर जवाब दिया—"आपको इन सब बातों से मतलब ? अपने क़ैदियों की देखभाल का काम हमारा है."

मैंने आजिज़ी से कहा—"लेकिन क्या आपकी इन फ़ाइलों में हैवानी ज़ुल्मों के लिये क़ैदियों की शिकायतें नहीं

میں اُٹھکر سامنے کے بیرک کے دروازے کے پاس آیا. دروازے کے پاس رکھے ہوئے پیشاب کے ٹب سے اُٹھتی ہوئی بھینکر سڑائن ہوا کے جھونکے کے ساتھ میرے دماغ میں گھس گئی. میں ہٹ کر بیرک کے بغل میں ٹہلنے لگا. دھاریدار جانگھیا پہنے ہوئے نیگرو قیدیوں کی ایک قطار زمین پر چٹائیوں پر لیٹی ہوئی تھی. پھیکی روشنی میں پسینے کی بوندیں رہ رہ کر ان کی ننگی چھاتیوں پر چمک اُٹھتی تھیں.

ایک قیدی نے تھکے ہوئے ہاتھوں سے اپنی جانگھ کھجلائی، دوسرے نے کندھے پر کاٹتے ہوئے کھٹمل کو ہتھیلی سے مسل دیا اور ایک، جس کی آنکھوں میں نیند نہیں تھی، کہنی پر سر رکھے ہوئے اُداس آنکھوں سے شونیہ میں دیکھ رہا تھا.

میں نے پہریدار سے پوچھا—"آخر اِن لوگوں نے ایسا کیا قصور کیا ہے جو اِس طرح زنجیر میں کس کر کٹگھرے میں بند کئے گئے ہیں؟"

"یہ کچھ نہ پوچھئے! آوارہ گردی سے لیکر یہ لوگ قتل تک کے مجرم ہیں!"

تیس دن اور تیس برس کے سزا یافتوں میں کوئی فرق نہیں کیا گیا تھا. ایک لڑکا جو مشکل سے 17 برس کا تھا اپنے گرم ماتھے کو بیڑیوں کے ٹھنڈے لوہے سے سہلا رہا تھا؛ اُس کے بغل میں رہ رہ کر دمہ سے کھونکھتا ہوا ایک دبلا پتلا بوڑھا پڑا ہوا تھا جو پچاسے کو پار کرچکا تھا.

پہریدار نے کہا—"یہ قاتل ہے!"

(2)

امریکہ میں قیدیوں کے اِن کیمپوں کا اِنتظام اِسٹیٹ پریزن کمیشن کے دوارا مقرر وارڈن کرتے ہیں. اِس کمیشن میں تین میمبر ہوتے ہیں جنہیں چھ برس کے لئے جنتا چنتی ہے. کمیشن کا ہیڈ کوارٹر اٹلانٹا شہر میں ہے جہاں بہت سی فائلوں اور خطوں کے ڈھیر کے بیچ کمشنر وویَن ای. اسٹینلی باضابطہ آفس کے سمے بیٹھتے ہیں.

ملنے پر کہنے لگے—"یہ چین گینگ (زنجیری ٹولیاں) اچھی بھی ہیں اور بری بھی ہیں. ہم کوشش کر رہے ہیں کہ برے قیدیوں سے جلد سے جلد ہمارا پنڈ چھوٹ جائے."

میں نے پوچھا—"سنا ہے قیدی بہودھا جان سے مار ڈالے جاتے ہیں. ہیبتناک ظلموں کے قصور میں کبھی کبھی وارڈروں کو بھی برخاست کردیا جاتا ہے؟"

کمشنر اسٹینلی نے غصے سے بھرکر جواب دیا—"آپ کو اِن سب باتوں سے مطلب؟ اپنے قیدیوں کی دیکھ بھال کا کام ہمارا ہے."

میں نے عاجزی سے کہا—"لیکن کیا آپ کی اِن فائلوں میں حیوانی ظلموں کے لئے قیدیوں کی شکایتیں نہیں

पेश करता था जब कि बौद्ध तर्क-शास्त्री क़ुरान और हदीस दोनों से इनकार करता था. इसके बाद बहस ख़ुदापरस्ती पर शुरू हो गई और बौद्ध लाजवाब होने लगा और उसने हार की शर्म से बचने के लिये, कहते हैं, एक दिन उस मुसलमान विद्वान को ज़हर देकर मरवा डाला. लेकिन इस नाख़ुशगवार वाक़ये से यह धर्म-चर्चा रुकी नहीं और उस ज़माने की किताबों में इनके ऐसे ज़िक्र मिलते हैं जिन से ज़ाहिर होता है कि हिन्दू मुसलमानों की मिली जुली धर्म-चर्चा बराबर चलती रहती थी.*

پیش کرتا تھا جب کہ بودھ ترک شاستری قرآن اور حدیث دونوں سے اِنکار کرتا تھا . اِس کے بعد بحث خدا پرستی پر شروع ہوگئی اور بودھ لاجواب ہونے لگا اور اس نے ہار کی شرم سے بچنے کے لئے' کہتے ہیں' ایک دن اُس مسلمان ودوان کو زہر دیکر مروا ڈالا . لیکن ناخوشگوار واقعہ سے یہ دھرم چرچا رکی نہیں اور اُس زمانے کی کتابوں میں اِن کے ایسے ذکر ملتے ہیں جن سے ظاہر ہوتا ہے کہ ہندو مسلمانوں کی ملی جلی دھرم چرچا چلتی رہتی تھی .*

चेन-गैङ्ग !

چین گینگ !

विश्वम्भरनाथ पांडे

وشومبھر ناتھ پانڈے

बारिश का चांद रह रहकर कुहासे की चादर हटाने की कोशिश कर रहा था. चांदनी ओस की बूंदों से अलसाई आंखों को धोकर कटीले तारों से घिरी हुई दुनिया की एक दर्जन बैरकों पर कभी कभी अपनी उदास निगाह डाल लेती थी !

एक बैरक के आगे लकड़ी की ख़स्ता सीढ़ियों पर बैठे हुये हम धीमे सुरों में बातें कर रहे थे. रात की ख़ामोशी जब तब बैरक के भीतर से उठते हुये ख़र्राटों से टूट जाती थी. ऐसा लगता था मानो कटघरों में बन्द जंगली जानवर गुर्रा रहे हों. बैरक की धन्नियों में लटकी हुई दो कलूटी लालटेनें अपने पज़मुर्दा चेहरों से फीकी पीली रोशनी चारों ओर फेंक रही थीं !

ख़र्राटों के कोरस को एक हल्की सी झंकार इस तरह सुर ताल में बांधने की कोशिश कर रही थी, मानो बांसों की झाड़ियों से रगड़ खाता हुआ कोई बनैला पशु जा रहा हो !

"यह क्या है ?" मैंने पूछा.

"ये मूंज की चटाइयां हैं" पहरेदार ने जवाब दिया. "जब ये लोग करवट बदलते हैं तो....आप समझे ?"

"हां", मैंने कहा, "और यह झंकार ?"

"ये उनकी बेड़ियों में पड़ी हुई ज़ंजीरें हैं."

एक मच्छर भुनभुना कर मेरी गर्दन पर बैठ गया. मैंने हथेली से उसे दबोच दिया. एक मक्खी भिनभिना कर मेरी नाक के चारों ओर घूमने लगी !

بارش کا چاند رہ رہ کر کوھاسے کی چادر ہٹانے کی کوشش کر رہا تھا. چاندنی اُوس کی بوندوں سے السائی آنکھوں کو دھوکر کٹیلے تاروں سے گھری ہوئی دنیا کی ایک درجن بیرکوں پر کبھی کبھی اپنی اُداس نگاہ ڈال لیتی تھی !

ایک بیرک کے آگے لکڑی کی خستہ سیڑھیوں پر بیٹھے ہوئے ہم دھیمے سروں میں باتیں کر رہے تھے . رات کی خاموشی جب تب بیرک کے بھیتر سے اُٹھتے ہوئے خراٹوں سے ٹوٹ جاتی تھی. ایسا لگتا تھا مانو کٹگھروں میں بند جنگلی جانور غرا رہے ہوں . بیرک کی دھنیوں میں لٹکی ہوئی دو کلوٹی لالٹینیں اپنے پژمردہ چہرے سے پھیکی پیلی روشنی چاروں اُور پھینک رہی تھیں !

خراٹوں کے کورس کو ایک ہلکی سی جھنکار اِس طرح سرتال میں باندھنے کی کوشش کر رہی تھی' مانو بانسوں کی جھاڑیوں سے رگڑ کھاتا ہوا کوئی بنیلا پشو جا رہا ہو !

"یہ کیا ہے؟" میں نے پوچھا .

"یہ مونج کی چٹائیاں ہیں" پہریدار نے جواب دیا . "جب یہ لوگ کروٹ بدلتے ہیں تو...... آپ سمجھے؟"

"ہاں" میں نے کہا' "اور یہ جھنکار؟"

"یہ اُن کی بیڑیوں میں پڑی ہوئی زنجیریں ہیں ."

ایک مچھر بھنبھناکر میری گردن پر بیٹھ گیا . میں نے ہتھیلی سے اُسے دبوچ دیا . ایک مکھی بھنبھناکر میری ناک کے چاروں اور گھومنے لگی !

---

* इस लेख के लिखने में स्व० मौलवी ज़ियाउद्दीन की अप्रकाशित पुस्तक से मदद ली गई है.—लेखक

* اس لیکھ کے لکھنے میں سورگیہ مولوی ضیاالدین کی پرکاشت پسنک سے مدد لی گئی ہے .—لیکھک

के दरबार में ज्योतिश और वैद्यक के सब से ऊंचे पदों पर हिन्दू पंडित ही मुक़र्रर थे. मुसलमानों के दिलों में हिन्दुस्तान के ज्ञान की रहस्यमय गहराई की थाह लेने की, ज्ञानी, ध्यानी और सृजनशील भारत को जानने की बेहद जिज्ञासा पैदा हुई. अरब के विद्वान ज्ञान के सच्चे उपासक थे और अनगिनत तादाद में अरब यात्री, विद्वान, मुवर्रिख़ और भौगोलिक भारत में आ आकर ज्ञान के इस अटूट भंडार से मालामाल होने लगे. हारूं-अर-रशीद के वज़ीर यहवा बरमकी ने एक विद्वान को इस बात के लिये मुक़र्रर किया कि वह हिन्दुस्तान में प्रचलित विविध धर्मों, और हिन्दुस्तान की जड़ी बूटियों के बारे में अपनी मुफ़स्सिल रिपोर्ट पेश करे. इब्न अन-नजीम का कहना है कि उसने बतारीख़ 349 हिजरी की अलकिन्दी के हाथ की लिखी हुई इस रिपोर्ट की एक कापी देखी है. इब्न अन-नजीम के मुताबिक़ इस रिपोर्ट में बल्लभराय की राजधानी महानगर के देव मन्दिरों और मुलतान और भारत के विविध धर्मों और मतमतान्तरो का भी बयान था. इब्न अन-नजीम ने पूरी किताब का ख़ुलासा भी दिया है. जिन मत मतान्तरो का इसमे बयान है उनमें से कुछ यह हैं—महाकालिया, आदित्यभक्तिया, चन्द्रभक्तिया, वक्रान्तिया (जिसके अनुयायी जंजीर पहनते थे), गंगायात्रिया, राजपुत्रिया और एक और फ़िरक़ा जिसके मानने वाले लम्बे बाल रखते थे, शराब से परहेज़ करते थे, और औरतों से बचते थे.*

हिन्दुस्तान के पश्चिमी किनारे में जगह जगह हिन्दू मुसलमानों की जिस तरह की मिली जुली आबादियां उस समय बस गई थीं और जिस तरह दोनों फ़िरके एक दूसरे मे दिलचस्पी ले रहे थे उससे साफ़ है कि दोनों एक दूसरे के धर्म की अध्यात्मिक और नैतिक गहराइयों में ग़ोता लगाने की कोशिश कर रहे थे. उनकी यह जिज्ञासा आपस के गहरे ताल्लुक़ात और मेल जोल से ही पूरी हो सकती थी.‡

उस समय के एक राजा की बाबत लिखा है कि उसने ख़लीफ़ा हारूं-अर-रशीद को ख़त लिखकर किसी ऐसे मुसलिम विद्वान को भेजने की दरख़्वास्त की जो राजा के हिन्दू पंडितों से मज़हबी बहस कर सके. इसी घटना का एक दूसरा बयान यह है कि राजा ने मुसलमान विद्वान को इसलिये बुलाया ताकि वह एक बौद्ध तर्कशास्त्री से तर्क कर सके. यह सही भी हो सकता है. बहरहाल वह मुसलिम विद्वान भारत आया, लेकिन उस बौद्ध तर्क-शास्त्री के सामने उसकी एक न चली. कई दिन तक बहस होती रही. मुसलमान तार्किक क़ुरान और हदीस को आख़री सनद कह कर

کے دربار میں جیوتش اور ویدیک کے سب سے اونچے پدوں پر ھندو پنڈت ھی مقرر تھے. مسلمانوں کے دلوں میں ھندستان کے گیان کی رھسیہ مئے گہرائی کی تھاہ لینے کی، گیانی، دھیانی اور سرجن شیل بھارت کو جاننے کی بیحد جگیاسا پیدا ھوئی. عرب کے ودوان گیان کے سچے اُپاسک تھے اور انگنت تعداد میں عرب یاتری، ودوان، مورخ اور بھوگولک بھارت میں آ آ کر گیان کے اِس اٹوٹ بھنڈار سے مالا مال ھونے لگے. ھاروں الرشید کے وزیر یحیٰی برمکی نے ایک ودوان کو اِس بات کے لئے مقرر کیا کہ وہ ھندستان میں پرچلت وودھ دھرموں، اور ھندستان کی جڑی بوٹیوں کے بارے میں اپنی مفصل رپورٹ پیش کرے. ابن النعیم کا کہنا ھے کہ اُس نے بتاریخ 349 ھجری کی الکندی کے ھاتھ کی لکھی ھوئی اِس رپورٹ کی ایک کاپی دیکھی ھے. ابن النعیم کے مطابق اِس رپورٹ میں والبھ رائے کی راجدھانی مہانگر کے دیومندروں اور ملتان اور بھارت کے وودھ دھرموں اور مت متانتروں کا بھی بیان تھا. ابن النعیم نے پوری کتاب کا خلاصہ بھی دیا ھے. جن مت متانتروں کا اِس میں بیان ھے اُن میں سے کچھ یہ ھیں—مہاکالیا، آدتیہ بھکتیا، چندر بھکتیا، وکرانتیا (جس کے انویائی زنجیر پہنتے تھے)، گنگا یاتریا، راج پتریا اور ایک اور فرقہ جس کے ماننے والے لمبے بال رکھتے تھے، شراب سے پرھیز کرتے تھے، اور عورتوں سے بچتے تھے.*

ھندستان کے پچھمی کنارے میں جگہ جگہ ھندو مسلمانوں کی جس طرح کی ملی جلی آبادیاں اُس سمئے بس گئیں تھیں اور جس طرح دونوں فرقے ایک دوسرے میں دلچسپی لے رھے تھے اُس سے صاف ھے کہ دونوں ایک دوسرے کے دھرم کی آدھیاتمک اور نیتک گہرائیوں میں غوطہ لگانے کی کوشش کر رھے تھے. اُن کی یہ جگیاسا آپس کے گہرے تعلقات اور میل جول سے ھی پوری ھوسکتی تھی.‡

اُس سمئے کے ایک راجا کی بابت لکھا ھے کہ اُس نے خلیفہ ھاروں الرشید کو خط لکھکر کسی ایسے مسلم ودوان کو بھیجنے کی درخواست کی جو راجا کے ھندو پنڈتوں سے مذھبی بحث کر سکے. اِسی گھٹنا کا ایک دوسرا بیان یہ ھے کہ راجا نے مسلمان ودوان کو اِس لئے بلایا تاکہ وہ ایک بودھ ترک شاستری سے ترک کرسکے. یہ صحیح بھی ھوسکتا ھے. بہر حال وہ مسلم ودوان بھارت آیا، لیکن اُس بودھ ترک شاستری کے سامنے اُس کی ایک نہ چلی. کئی دن تک بحث ھوتی رھی. مسلمان تارکک قرآن اور حدیث کو آخری سند کہہ کر

---

* Fibrist, pp. 355-359.

‡ अरब और हिन्द के ताल्लुक़ात. ‡ عرب اور ھند کے تعلقات.

से प्रेम करने और एक दूसरे के धर्म का ज्यादा से ज्यादा ज्ञान हासिल करने की ख्वाहिश भी बढ़ी. मिसाल के तौर पर मसूदी लिखता है—"खम्भात का राजा मुसलमानों और दूसरे मजहब वालों के साथ, जो उसके दरबार में आते थे, धार्मिक विचारों का आदान प्रदान करता था."*

इसी तरह से बुजुर्ग बिन शहरयार लिखता है कि अलौर के राजा महरुग ने, जिसका राज्य उपरले और निचले काश्मीर के बीच में था, मनसूरा के राजा को लिखा कि वह किसी ऐसे आदमी को भेजे जो हिन्दवी भाशा में इसलाम के उसूलों को उसे समझा सके. मनसूरा के शासक ने अब्दुल्ला नामी एक क़ाबिल शख्स को, जो तीन बरस तक मन्सूरा में रह चुका था, अलौर भेजा. उसने क़ुरान का हिन्दी में तर्जुमा करके रोज राजा को सुनाना शुरू किया. राजा पर उसका गहरा असर पड़ा.† इस तरह के असर पड़ने उस वक़्त क़ुदरती थे. इसके बाद मुसलिम देशों में हिन्दुओं की आमद रफ़्त शुरू हुई और दोनों के बीच के सामाजिक ताल्लुक़ात और अधिक गहरे और दिलचस्प होते गये. सुलेमान लिखता है—

"इराक़ के बन्दरगाह सैराफ़ में बहुत से हिन्दू रहते हैं और जब कोई अरब सौदागर उनकी दावत करता है तो उनकी तादाद सौ तक पहुंच जाती है. उनमें से हर शख्स का खाना अलग अलग रकाबियों में परसा जाता है क्योंकि एक ही रकाबी में कोई एक दूसरे के साथ नहीं खाता.‡ इन्हीं हिन्दुओं के मुताल्लिक़ बुजुर्ग बिन शहरयार कहता है—

"ये लोग बोल चाल की अरबी इस क़दर सफ़ाई से और धारा-प्रवाह (फ़साहत से) बोलते हैं कि हमारे आलिम फ़ाज़िल मौलवी दंग और हैरान रह जाते हैं. इन लोगों में आम तौर पर सिन्धी, गुजराती और मुलतानी हैं जो अनन्त काल से हमारे मुल्कों के साथ तिजारत करते आ रहे हैं."§

इस तिजारती सम्बन्ध से हिन्दुस्तान मुसलिम मुल्कों के गहरे ताल्लुक़ में आया और इसलामी दुनिया पर अपने ज्ञान (इल्म), विज्ञान (साइन्स), अध्यात्म और धर्म का असर डाल पाया. अरब और ईरानी सौदागर हिन्दुस्तान से तिजारती माल के साथ साथ कला और विज्ञान के खेवे भी ले जाते थे.

दूसरी तरफ़ अब्बासी खलीफ़ाओं के दरबार की मानसिक उदारता और धार्मिक मेल जोल से खिंचकर हिन्दू पंडित बड़ी तादाद में बग़दाद में इकट्ठा होने लगे. खलीफ़ा

سے پریم کرنے اور ایک دوسرے کے دھرم کا زیادہ سے زیادہ گیان حاصل کرنے کی خواہش بھی بڑھی۔ مثال کے طور پر مسعودی لکھتا ہے—"کھمبات کا راجا مسلمانوں اور دوسرے مذہب والوں کے ساتھ، جو اُس کے دربار میں آتے تھے، دھارمک وچاروں کا آدان پردان کرتا تھا۔"*

اِس طرح سے بزرگ بن شہریار لکھتا ہے کہ الور کے راجا مہروگ نے، جس کا راجیہ اُپرلے اور نچلے کشمیر کے بیچ میں تھا، منصورہ کے راجا کو لکھا کہ وہ کسی ایسے آدمی کو بھیجے جو ہندوی بھاشا میں اسلام کے اصولوں کو اُسے سمجھا سکے۔ منصورہ کے شاسک نے عبداللہ نامی ایک قابل شخص کو، جو تین برس تک منصورہ میں رہ چکا تھا، الور بھیجا۔ اس نے قرآن کا ہندی میں ترجمہ کرکے روز راجا کو سنانا شروع کیا۔ راجا پر اُس کا گہرا اثر پڑا۔† اس طرح کے اثر پڑنے اُس وقت قدرتی تھے۔ اِس کے بعد مسلم دیشوں میں ہندوؤں کی آمدرفت شروع ہوئی اور دونوں کے بیچ کے سماجک تعلقات اور ادھک گہرے اور دلچسپ ہوتے گئے۔ سلیمان لکھتا ہے—

"عراق کے بندرگاہ سیراف میں بہت سے ہندو رہتے ہیں اور جب کوئی عرب سوداگر اُن کی دعوت کرتا ہے تو اُن کی تعداد سو تک پہنچ جاتی ہے۔ اُن میں سے ہر شخص کا کھانا الگ الگ رکابیوں میں پرسا جاتا ہے کیونکہ ایک ہی رکابی میں کوئی ایک دوسرے کے ساتھ نہیں کھاتا۔"‡ انہیں ہندوؤں کے متعلق بزرگ بن شہریار کہتا ہے—

"یہ لوگ بول چال کی عربی اس قدر صفائی سے اور دھارا پرواہ (فصاحت سے) بولتے ہیں کہ ہمارے عالم فاضل مولوی دنگ اور حیران رہ جاتے ہیں۔ ان لوگوں میں عام طور پر سندھی، گجراتی اور ملتانی ہیں جو اننت کال سے ہمارے ملکوں کے ساتھ تجارت کرتے آرہے ہیں۔"§

اِس تجارتی سمبندھ سے ہندوستان مسلم ملکوں کے گہرے تعلق میں آیا اور اسلامی دنیا پر اپنے گیان (علم)، وگیان (سائنس)، ادھیاتم اور دھرم کا اثر ڈال پایا۔ عرب اور ایرانی سوداگر ہندوستان سے تجارتی مال کے ساتھ ساتھ کلا اور وگیان کے کھیوے بھی لے جاتے تھے۔

دوسری طرف عباسی خلیفاؤں کے دربار کی مانسک اُدارتا اور دھارمک میل جول سے کھنچ کر ہندو پنڈت بڑی تعداد میں بغداد میں اکٹھا ہونے لگے۔ خلیفہ

* Muruj-uz-Zahab (Paris), Vol 1. pp. 253-54.

† Ajaib al-Hind, pp. 2-3.

‡ Voyage du Merchand Arb (Frrand), p. 139.

§ Ajaib-al-Hind, p.147.

है और गुरूर उसे छू तक नहीं गया. शहरयार लिखता है—"यही वजह है कि बौद्ध मुसलमानों से इतना प्रेम करते हैं और उनके साथ इतनी हमदर्दी रखते हैं."* सुलेमान सौदागर लिखता है—"राजा बल्हर की तरह राजा गुज्र भी अरबों के तरह दोस्ताना बर्ताव रखता है."†

अस्ताख़री 951 ईसवी में हिन्दुस्तान आया था. उसके भूगोल के ग्रन्थ में हिन्दुस्तान का बयान है. अस्ताख़री ने सबसे पहले हिन्दुस्तान के एक सूबे सिन्ध का नक़्शा तैयार किया. अस्ताख़री के वक़्त तक ख़ास ख़ास शहरों में हिन्दू-मुसलिम तिजारत के केन्द्र क़ायम हो चुके थे. एक मुसलिम लेखक के मुताबिक़ इन केन्द्रों मे हिन्दू और मुसलमानों के सामाजिक मेलजोल के नतीजे में मिले जुले रस्म रिवाज और व्यवहार के क़ायदे बनते जा रहे थे. इब्न हौक़ल लिखता है—"मुलतान में हिन्दू और मुसलमान एक ही सी पोशाक पहनते हैं और एक ही फ़ैशन के बाल संवारते हैं. मनसूरा और मुलतान और आस पास के शहरों में दोनो यकसां अरबी और सिन्धी जबान बोलते हैं."‡ बिसहरी लिखता है कि—"सिन्ध में अरबी, फ़ारसी और सिन्धी तीनो यकसां समझी जाती हैं."§ अस्ताख़री और इब्न हौक़ल लिखते हैं कि हिन्दू इलाक़ों में मुसलमान जगह जगह बस गये थे और उन्होंने इबादत के लिये मसजिदें तामीर करली थीं. सुलेमान सौदागर सिंहल के सम्बन्ध मे लिखता है कि "सिंहल में विभिन्न धर्मों के अनुयायी बसते हैं और सिंहल का राजा इन मुख़तलिफ़ धर्मावलम्बियों को अपने अपने धर्म के पालन करने की इजाज़त देता है."$

यह साफ़ है कि व्यापार के केन्द्र कल्चरी आदान प्रदान के भी केन्द्र थे. इनमें ख़ास शहर ख़ुज़दार, महफ़ूज़ जाह, मन्सूरह और जन्दौर आदि थे. जो मुसलमान इन शहरों में बस गये थे वह क़ौम के अरब थे. वह भारतीयों में इस दरजे मिल जुल गये कि कुछ पीढ़ियों बाद उनका पहचाना जाना भी नामुमकिन हो गया.

इन के तर्ज़ तरीक़े, आचार विचार बिलकुल हिन्दुओं जैसे हो गये. इन लोगों की एक अलग ही जमात बन गई जो पूरे दक्षिण भारत में फैल गई. इनमें से एक जमात अली को शिव का अवतार समझकर पूजा करती थी.

तिजारती सम्बन्ध के साथ साथ ज्यों ज्यों सांस्कृतिक (कलचरी) आदान प्रदान बढ़ा त्यों त्यो भारतीयों और अरबों में एक दूसरे को जानने, समझने और एक दूसरे

ھے اور غرور اُسے چھو تک نہیں گیا . شہریار لکھتا ھے—"یہی وجہ ھے کہ بودھ مسلمانوں سے اتنا پریم کرتے ھیں اور اُن کے ساتھ اِتنی ھمدردی رکھتے ھیں."* سلیمان سوداگر لکھتا ھے—"راجا بلھر کی طرح راجا گجر بھی عربوں کے طرف دوستانہ برتاؤ رکھتا ھے ."†

استاخری 951 عیسوی میں ھندستان آیا تھا . اُس کے بھوگول کے گرنتھ میں ھندستان کا بیان ھے. استاخری نے سب سے پہلے ھندستان کے ایک صوبہ سندھ کا نقشہ تیار کیا . استاخری کے وقت تک خاص خاص شہروں میں ھندو مسلم تجارت کے کیندر قایم ھوچکے تھے . ایک مسلم لیکھک کے مطابق اِن کیندروں میں اور ھندو اور مسلمانوں کے ساماجک میل جول کے نتیجہ میں ملے جلے رسم رواج اور ویوھار کے قاعدے بنتے جا رھے تھے . ابن ھوقل لکھتا ھے—"ملتان میں ھندو اور مسلمان ایک ھی سی پوشاک پہنتے ھیں اور ایک ھی فیشن کے بال سنوارتے ھیں. منصورہ اور ملتان اور آس پاس کے شہروں میں دونوں یکساں عربی اور سندھی زبان بولتے ھیں ."‡ بسھری لکھتا ھے کہ—"سندھ میں عربی، فارسی اور سندھی تینوں یکساں سمجھی جاتی ھیں ."§ استاخری اور ابن ھوقل لکھتے ھیں کہ ھندو علاقوں میں مسلمان جگہ جگہ بس گئے تھے اور انھوں نے عبادت کے لئے مسجدیں تعمیر کرلی تھیں . سلیمان سوداگر سنگھل کے سمبندھ میں لکھتا ھے کہ "سنگھل میں وبھن دھرموں کے انویائی بستے ھیں اور سنگھل کا راجا اِن مختلف دھرماولمبیوں کو اپنے اپنے دھرم کے پالن کرنے کی اِجازت دیتا ھے ."$

یہ صاف ھے کہ ویاپار کے کیندر کلچری آدان پردان کے بھی کیندر تھے . اِن میں خاص شہر خزدار، محفوظ جاہ، منصورہ اور جندور آدی تھے. جو مسلمان اِن شہروں میں بس گئے تھے وہ قوم کے عرب تھے . وے بھارتیوں میں اِس درجہ مل جل گئے کہ کچھ پیڑھیوں بعد اُن کا پہچانا جانا بھی ناممکن ھوگیا .

اِن کے طرز طریقے، آچار وچار بالکل ھندوؤں جیسے ھوگئے . اِن لوگوں کی ایک الگ ھی جماعت بن گئی جو پورے دکچھن بھارت میں پھیل گئی . اِن میں سے ایک جماعت علی کو شو کا اوتار سمجھکر پوجا کرتی تھی .

تجارتی سمبندھ کے ساتھ ساتھ جیوں جیوں سانسکرتک (کلچری) آدان پردان بڑھا تیوں تیوں بھارتیوں اور عربوں میں ایک دوسرے کو جاننے، سمجھنے اور ایک دوسرے

---

* Ibid, p. 481.

† Voyage du Merchant Sulayman (Paris), p. 119.

‡ Ibn Hauqal (de Goeje), p. 232.

§ Ahsan ut-Taqasim, p. 482.

$ Voyage du Merchant Sulayman (Paris), p. 119.

अंगरेज इतिहासकार (मुवर्रिख़) सर विलियम म्यूर अफ़सोस के साथ लिखता है—

"यह बात याद रखनी चाहिये कि अरब विजेता (फ़ातेह) जो रवय्या मातहत क़ौमों के साथ बरतते थे वह हिन्दुस्तान में आकर बिलकुल उलट गया. मन्दिरों को ज्यों का त्यों महफ़ूज़ छोड़ दिया गया और मूर्ति-पूजा की कोई मनाही नहीं की गई. जैसा कि वेल ने लिखा है 'हिन्दुस्तान की लड़ाई धर्म युद्ध या जेहाद नहीं रह गई क्योंकि वहां धर्म बदलने का सवाल ही नहीं उठाया गया.' सिन्ध में अल्लाह की परिस्तिश के साथ साथ मूर्तियों की पूजा की भी इजाज़त हो गई......और इस तरह बावजूद इसलामी हुकूमत के भारत एक मूर्ति-पूजक मुल्क बना रह गया."*

जर्मन विद्वान वान क्रेमर लिखता है—

"सिन्ध में अबुल क़ासिम की हुकूमत में और उसके बाद भी ब्राह्मनों का आदर और मान ज्यों का त्यों क़ायम रहा. ज़मीन की मालगुज़ारी भी 3 फ़ीसदी ज्यों की त्यों जारी रखी गई. हिन्दुओं को खुली इजाज़त थी कि वह मन-माने मन्दिर बनवायें, मुसलमानों के साथ व्यापार करें और निडर होकर अपनी बढ़ती के लिये जो कुछ मुनासिब समझें करें."†

इस पर आसानी से यक़ीन किया जा सकता है कि इन हालतों के अन्दर दोनों मज़हब एक दूसरे की तरफ़ बहुत दरजे तक उदार हो गये होंगे और दोनों में संस्कृतिक सम्बन्ध क़ायम हुआ होगा. लेकिन सिन्ध ही अकेला ऐसा सूबा नहीं था जहां दोनों फ़िरक़ों के बीच दोस्ताना सामाजिक व्यवहार चल रहा था. भारत के तमाम पश्चिमी किनारे के मुसलमान हिन्दुओं के साथ मिल जुल कर प्रेम पूर्वक रह रहे थे. मुसलिम यात्रियों के मुताबिक़ मुसलमानों और भारतीय बौद्धों में बेहद भाई चारा हो गया था. बुज़ुर्ग बिन शहरयार नवीं सदी के भारत के पश्चिमी तट के बारे में अपने निजी तजुरबों के बल पर लिखता है—"बिकुर या भिक्खुओं का फ़िरक़ा सिंहल का रहने वाला है. इन्हें मुसलमानों से मोहब्बत है और मुसलमानों की तरफ़ यह बेहद उदार हैं."‡ इन भिक्खुओं ने इसलाम के बारे में जानकारी हासिल करने के लिये अपना एक प्रतिनिधि अरब भेजा. यह प्रतिनिधि ख़लीफ़ा उमर के समय अरब पहुंचा. वापस लौटते हुए मकरान में उसकी मौत हो गई लेकिन उसका एक साथी सही सलामत सिंहल पहुंचा और वहां उसने इसलाम के बारे में अपनी जानकारी लोगों को बताई. उसने बताया कि मुसलमानों का ख़लीफ़ा निहायत सादा ज़िन्दगी बसर करता

انگریز اِتہاسکار (مورخ) سر ولیم میور افسوس کے ساتھ لکھتا ہے—

"یہ بات یاد رکھنی چاہئے کہ عرب وجیتا (فاتح) جو رویہ ماتحت قوموں کے ساتھ برتتے تھے وہ ہندستان میں جاکر بالکل اُلٹ گیا. مندروں کو جیوں کا تیوں محفوظ چھوڑ دیا گیا اور مورتی پوجا کی کوئی مناہی نہیں کی گئی. جیسا کہ ویل نے لکھا ہے 'ہندستان کی لڑائی دھرم یدھ یا جہاد نہیں رہ گئی کیونکہ وہاں دھرم بدلنے کا سوال ہی نہیں اُٹھایا گیا.' سندھ میں اللہ کی پرستش کے ساتھ ساتھ مورتیوں کی پوجا کی بھی اِجازت ہوگئی......اور اِس طرح باوجود اِسلامی حکومت کے بھارت ایک مورتی پوجک ملک بنا رہ گیا."*

جرمن ودوان وان کریمر لکھتا ہے—

"سندھ میں ابوالقاسم کی حکومت میں اور اُس کے بعد بھی براہمنوں کا آدر اور مان جیوں کا تیوں قایم رہا. زمین کی مالگذاری بھی 3 فیصدی جیوں کی تیوں جاری رکھی گئی. ہندوؤں کو کھلی اجازت تھی کہ وے منمانے مندر بنوائیں' مسلمانوں کے ساتھ ویاپار کریں اور نڈر ہوکر اپنی بڑھتی کے لئے جو کچھ مناسب سمجھیں کریں."†

اِس پر آسانی سے یقین کیا جاسکتا ہے کہ اِن حالتوں کے اندر دونوں مذہب ایک دوسرے کی طرف بہت درجہ تک اُدار ہوگئے ہونگے اور دونوں میں سانسکرتک سمبندھ قایم ہوا ہوگا. لیکن سندھ ہی اکیلا ایسا صوبہ نہیں تھا جہاں دونوں فرقوں کے بیچ دوستانہ سماجک ویوہار چل رہا تھا. بھارت کے تمام پچھمی کنارے کے مسلمان ہندوؤں کے ساتھ مل جل کر پریم پوروک رہ رہے تھے. مسلم یاتریوں کے مطابق مسلمانوں اور بھارتیہ بودھوں میں بیحد بھائی چارا ہوگیا تھا. بزرگ بن شہریار نویں صدی کے بھارت کے پچھمی تٹ کے بارے میں اپنے نجی تجربوں کے بل پر لکھتا ہے—"بکور یا بھکھوؤں کا فرقہ سنگھل کا رہنے والا ہے. اِنہیں مسلمانوں سے محبت ہے اور مسلمانوں کی طرف یہ بیحد اُدار ہیں."‡ اِن بھکھوؤں نے اِسلام کے بارے میں جانکاری حاصل کرنے کے لئے اپنا ایک پرتیندھی عرب بھیجا. یہ پرتیندھی خلیفہ عمر کے سمئے عرب پہونچا. واپس لوٹتے ہوئے مکران میں اُس کی موت ہوگئی لیکن اُس کا ایک ساتھی صحیح سلامت سنگھل پہونچا اور وہاں اُس نے اِسلام کے بارے میں اپنی جانکاری لوگوں کو بتائی. اُس نے بتایا کہ مسلمانوں کا خلیفہ نہایت سادہ زندگی بسر کرتا

* The Caliphate it Rise, Decline and Fall, by W. Muir, pp. 354-3"5
† Islamic Culture, Vol. 1, No. 2, p. 205.
‡ Ajaib al-Hind (ed. P. A. Von Der Lith), p. 155.

(951 ईसवी), मसूदी (945 ईसवी), मुताहर इब्न ताहिर, अल बेरूनी (999 ईसवी), इब्न बतूता (943 ईसवी), हमदुल्ला मुस्तफ़ी और बाद के दूसरे मुसलिम इतिहासकारों ने उस ज़माने के हिन्दुस्तान के बारे में बहुत क़ीमती तारीख़ी, तिजारती, भौगोलिक और सामाजिक जानकारी की बातें अपनी पुस्तकों में दर्ज की हैं.

अब्बासियों के ज़माने की अरबी संस्कृति ने यूनानी और भारतीय आर्य-संस्कृति से ही जन्म लिया है. अरब-अब्बासी संस्कृति का बाहरी रूप हालांकि सेमेटिक और ईरानी था लेकिन उसका वैज्ञानिक और आध्यात्मिक ज्ञान, उसकी वैद्यक और फ़िलासफ़ी पर गहरा भारतीय और बाद में यूनानी असर पड़ा. उसके अरबी ढांचे में भारतीय आत्मा रौशन हो रही थी. सिन्ध की फ़तह के बाद भारत की माली दौलत के साथ साथ भारत की अध्यात्मिक दौलत भी ख़लीफ़ा के दरबार में पहुंची. भारतीय विश्वविद्यालयों में तक्षशिला में ज़रूर मुसलिम विद्यार्थी रहे होंगे. काशमीर उस ज़माने में संस्कृति का ख़ास केन्द्र था जहां ईरानी-बौद्ध विद्यार्थी तालीम हासिल करने आया करते थे. अब्बासी कल्चर को ख़लीफ़ा के बरमकी (बौद्ध) वज़ीरों ने जो बढ़ावा और चेतना दी वह बिला शक तारीफ़ के क़ाबिल है. क़ानून और न्याय के मन्त्रियों की हैसियत से और कल्चरी रोशनी की हैसियत से कोई भी ईरानी या अरब राजकुल उनका मुक़ाबला नहीं कर सकता. यह बरमकी उस समय बौद्ध धर्म से इसलाम में दाख़िल हुये थे और इन्हीं की कोशिश से अरबों और भारतीयों में गहरा सांस्कृतिक सम्बंध क़ायम हुआ था. इन्हीं की कोशिशों से इसलामी संस्कृति ने खुले दिल से भारतीय संस्कृति की देन को दोनों हाथो से स्वीकार किया.

जब मुसलानों ने सन 707 ईसवी में सिन्ध विजय किया तो उन्होंने देखा कि देश बौद्धों और ब्राह्मन शासकों मे बंटा हुआ है और ब्राह्मन धीरे धीरे बौद्धों को पछाड़ते जा रहे हैं. ब्राह्मनों और अरबों के संघर्ष में बौद्धों ने अरबों का साथ दिया और इस तरह अरबों की सिन्ध विजय को आसान बना दिया. सिन्ध विजय करने के बाद अबुल क़ासिम ने ऐलान किया कि "भारतवासी भी एक अल्लाह की परिस्तिश करते हैं और उनके मन्दिर भी ईसाइयों के गिरजों, यहूदियों के सिनागागों और मागियों के आतिशकदों की तरह हैं और उसी तरह से यह लोग अहले किताब हैं जिस तरह से ईसाई और यहूदी."* सिन्ध विजय के बाद से ही अरबों और भारतीयों में एक ऐसी मज़बूत प्रेम भावना क़ायम हो गई जिसमें ख़लीफ़ा तक ने सिन्ध में मन्दिरों को गिराने या इसलाम के प्रचार की इजाज़त नहीं दी.

* (Balazuri, p. 439)

(951ع) مسودی (945ع)، مطاہر ابن طاہر، البیرونی (999ع)، ابن بطوطہ (943 عیسوی)، حمداللہ مصطفی اس زمانے کے اور بعد کے دوسرے مسلم اِتہاسکاروں نے اُس زمانے کے ھندستان کے بارے میں بہت قیمتی تاریخی، تجارتی، بھوگولک اور سماجک جانکاری کی باتیں اپنی پستکوں میں درج کی ھیں ۔

عباسیوں کے زمانے کی عربی سنسکرتی نے یونانی اور بھارتیہ آریہ سنسکرتی سے ھی جنم لیا ھے ۔ عرب عباسی سنسکرتی کا باھری روپ حالانکہ سیمیٹک اور ایرانی تھا لیکن اُس کا ویگیانک اور آدھیاتمک گیان، اُس کی ویدیک اور اُس کی فلسفی پر گہرا بھارتیہ اور بعد میں یونانی اثر پڑا ۔ اُس کے عربی ڈھانچہ میں بھارتیہ آتما روشن ھو رھی تھی ۔ سندھ کی فتح کے بعد بھارت کی مالی دولت کے ساتھ ساتھ بھارت کی آدھیاتمک دولت بھی خلیفہ کے دربار میں پہونچی ۔ بھارتیہ وشودیالوں میں تکشلا میں ضرور مسلم ودیارتھی رھے ھونگے ۔ کاشمیر اُس زمانہ میں سنسکرتی کا خاص کیندر تھا جہاں ایرانی بودھ ودیارتھی تعلیم حاصل کرنے آیا کرتے تھے ۔ عباسی کلچر کو خلیفہ کے برمکی (بودھ) وزیروں نے جو بڑھاوا اور چیتنا دی وہ بلا شک تعریف کے قابل ھے ۔ قانون اور نیائے کے منتریوں کی حیثیت سے اور کلچری روشنی کی حیثیت سے کوئی بھی ایرانی یا عرب راج کل اُن کا مقابلہ نہیں کرسکتا ۔ یہ برمکی اُس سمئے بودھ دھرم سے اِسلام میں داخل ھوئے تھے اور اِنھیں کی کوشش سے عربوں اور بھارتیوں میں گہرا سانسکرتک سمبندھ قایم ھوا تھا ۔ اِنھیں کی کوششوں سے اِسلامی سنسکرتی نے کھلے دل سے بھارتیہ سنسکرتی کی دین کو دونوں ھاتھوں سے سویکار کیا ۔

جب مسلمانوں نے سن 707 عیسوی میں سندھ وجے کیا تو اُنھوں نے دیکھا کہ دیش بودھوں اور براھمن شاسکوں میں بٹا ھوا ھے اور براھمن دھیرے دھیرے بودھوں کو پچھاڑتے جا رھے ھیں ۔ براھمنوں اور عربوں کے سنگھرش میں بودھوں نے عربوں کا ساتھ دیا اور اِس طرح عربوں کی سندھ وجے کو آسان بنا دیا ۔ سندھ وجے کرنے کے بعد ابوالقاسم نے اعلان کیا کہ "بھارتواسی بھی ایک اللہ کی پرستش کرتے ھیں اور اُن کے مندر بھی عیسائیوں کے گرجوں، یہودیوں سناگاگوں اور ماگیوں کے آتشکدوں کی طرح ھیں اور اسی طرح سے یہ لوگ اھل کتاب ھیں جس طرح سے عیسائی اور یہودی ." سندھ وجے کے بعد سے ھی عربوں اور بھارتیوں میں ایک ایسی مضبوط پریم بھاونا قایم ھوگئی جس میں خلیفہ تک نے سندھ میں مندروں کو گرانے یا اِسلام کے پرچار کی اِجازت نہیں دی ۔

तरह पेश की जाती थीं. इन बातों से मुसलमान हिन्दुस्तान के और ज़्यादा क़रीब आते थे और उसे अपना पाक मुल्क समझकर उससे मुहब्बत करने लगते थे. लोग उस वक़्त तक दन्त कथायें नहीं गढ़ा करते जब तक कि उसके पीछे कोई ख़ास वजह न हो.

इसी तरह हिन्दू भी मुसलमानों के काबे को अपना ही धर्म मन्दिर समझते थे. एक ज़माने में काबा, अरब और अरब के आस पास रहने वाले, सभी धर्म मज़हब वालों का एक पाक मरक़ज़ था. नीचे के बयान को नामुमकिन मानते हुये भी हमें उससे हैरत में नहीं आना चाहिये. बर्टन लिखता है—

"हिन्दू पन्डित इस बात को दावे के साथ कहते हैं कि मक्के में शिव और पार्वती 'कपोतेश्वर' और 'कपोतेश्वरी' के रूप में विराजमान हैं...कुछ लेखकों का कहना है कि हज़रत मुहम्मद के समय मक्का के देवी देवताओं में लकड़ी में खुदी हुई कपोतेश्वर और कपोतेश्वरी की मूर्तियां थीं जिन्हें हज़रत अली ने पैग़म्बर के कन्धों पर चढ़कर नीचे गिरा दिया था."*

विलफ़ोर्ड लिखता है—

"हिन्दू कहते हैं कि मक्का अथवा 'मोक्षेश' या 'मोक्ष-स्थान' में जो काला पत्थर अथवा 'संग-ए-अस्वद' है वह 'मोक्षेश्वर' भगवान शिव के अवतार का प्रतीक है. भगवान शिव और पार्वती ने अल-हेजाज़ के अपने भक्तों की तपस्या से ख़ुश होकर मोक्षेश्वर के रूप में मक्का में अवतार लिया था."†

उस ज़माने के मुसलमान यात्रियों और मुसन्निफ़ों ने भारत की उस समय की हालत को अपने ग्रंथों में दर्ज किया है. सिंध के इतिहास पर पहला ग्रंथ 'छछ-नामा' है, जो मूल रूप में अरबी में लिखा गया. वह मुसलिम इतिहासकारों की हिन्दुस्तान पर पहली इतिहास की पुस्तक है. 'छछ-नामा' के बाद इब्न ख़ुरदादबीह ने सन 815 ईसवी में हिन्दुस्तान के भूगोल पर एक पुस्तक लिखी. एक दूसरी पुस्तक अबु ज़ाहिद ने सन 916 ईसवी में लिखी जिसमें सुलेमान सौदागर की भारत और चीन की यात्राओं का बयान दर्ज है. इसमें हिन्दुस्तान की मज़हबी और सामाजिक हालतों पर बहुत काफ़ी रोशनी डाली गई है. इसी ज़माने का एक दूसरा इतिहासकार अबु ज़ाहिद अलबलख़ी (934 ईसवी) है जिसने हिन्दुस्तान के इतिहास पर बहुत मुस्तनद और तफ़सील से लिखा है और जिसका बाद के लेखकों ने भी सनद के तौर पर हवाला दिया है. इनके अतिरिक्त इब्न रिस्ताह (903 ईसवी), अबु दुल्फ़ (943 ईसवी), अस्तख़री

طرح پیش کی جاتی تھیں . اِن باتوں سے مسلمان ھندستان کے اور زیادہ قریب آتے تھے اور اُسے اپنا پاک ملک سمجھکر اُس سے محبت کرنے لگتے تھے . لوگ اُس وقت تک دنت کتھائیں نہیں گڑھا کرتے جب تک کہ اُس کے پیچھے کوئی خاص وجہ نہ ھو .

اسی طرح ھندو بھی مسلمانوں کے کعبہ کو اپنا ھی دھرم مندر سمجھتے تھے . ایک زمانہ میں کعبہ، عرب اور عرب کے آس پاس رھنے والے، سبھی دھرم مذھب والوں کا ایک پاک مرکز تھا . نیچے کے بیان کو نامکن مانتے ھوئے بھی ھمیں اُس سے حیرت میں نہیں آنا چاھئے . برٹن لکھتا ھے—

" ھندو پنڈت اس بات کو دعوے کے ساتھ کہتے ھیں کہ مکہ میں شو اور پاروتی ' کپوتیشور ' اور ' کپوتیشوری ' کے روپ میں وراجمان ھیں ... کچھ لیکھکوں کا کہنا ھے کہ حضرت محمد کے سمے مکہ کے دیوی دیوتاؤں میں لکڑی میں کھدی ھوئی کپوتیشور اور کپوتیشوری کی مورتیاں تھیں جنھیں حضرت علی نے پیغمبر کے کندھوں پر چڑھ کر نیچے گرا دیا تھا . "*

ولفورڈ لکھتا ھے—

" ھندو کہتے ھیں کہ مکہ اتھوا ' موکشیش ' یا ' موکش استھان ' میں جو کالا پتھر اتھوا ' سنگ اسود ' ھے وہ ' موکشیشور ' بھگوان شو کے اوتار کا پرتیک ھے . بھگوان شو اور پاروتی نے الحجاز کے اپنے بھکتوں کی تپسیا سے خوش ھو کر موکشیشور کے روپ میں مکہ میں اوتار لیا تھا . "†

اُس زمانے کے مسلمان یاتریوں اور مصنفوں نے بھارت کی اُس سمے کی حالت کو اپنے گرنتھوں میں درج کیا ھے . سندھ کے اِتہاس پر پہلا گرنتھ ' چھچھ - نامہ ' ھے، جو مول روپ میں عربی میں لکھا گیا . وہ مسلم اتہاسکاروں کی ھندستان پر پہلی اِتہاس کی پستک ھے ' چھچھ - نامہ ' کے بعد ابن خرداد بہ نے سن 815 عیسوی میں ھندستان کے بھوگول پر ایک پستک لکھی . ایک دوسری پستک ابوزاھد نے سن 916 عیسوی میں لکھی جس میں سلیمان سوداگر کی بھارت اور چین کی یاتراؤں کا بیان درج ھے . اِس میں ھندستان کی مذھبی اور سماجک حالتوں پر بہت کافی روشنی ڈالی گئی ھے . اِسی زمانہ کا ایک دوسرا اِتہاسکار ابوزاھد البلخی (934 عیسوی) ھے جس نے ھندستان کے اِتہاس پر بہت مستند اور مفصل سے لکھا ھے اور جس کا بعد کے لیکھکوں نے بھی سند کے طور پر حوالہ دیا ھے . ان کے اترکت ابن رستاح (903ع)، ابودلف (943 عیسوی)، استاخری

* Burton's Pilgrimage to Al-Madinah, Vol. 11, p. 174.

† AS. Soc. Vols. III and IV.

वापस लौटते हुये रास्ते में उसकी मौत हो गई. मरते समय चेरूमन ने मुसलमानों को शाही फ़रमान के ज़रिये मसजिदें बनाने की इजाज़त दे दी. उसी के मुताबिक़ मलाबार में कई जगह मसजिदें बनाई गईं. बलाज़ूरी भी सन 842 ईसवी के क़रीब पश्चिमोत्तर भारत के एक राजा के इसलाम क़ुबूल करने की घटना सुनाता है.* बुज़ुर्ग बिन शहरयार और सौदागर सुलेमान, जो नवीं सदी में हिन्दुस्तान आये थे, लिखते हैं कि हिन्दुस्तान के राजाओं के दिलों में मुसलमानों की तरफ़ से बेहद सद्भावना मौजूद थी.

पता नहीं कैसे मुसलमानों के दिलों में यह विश्वास घर कर गया है कि इनसानी क़ौम के पहले पैग़म्बर और पहले इनसान हज़रत आदम बहिश्त से निकाले जाने के बाद हिन्दुस्तान में सिंहलद्वीप में आकर उतरे. हिन्दुस्तान में जो ख़ुशबूदार फूल और जड़ी बूटी भरी पड़ी हैं वह हज़रत आदम ही बहिश्त के नन्दनवन से यहां लाये थे. जिस पत्थर पर हज़रत आदम उतरे उस पर उनके क़दमों का निशान आज तक मौजूद है. इसी पत्थर के निशान को सिंहल के बौद्ध भगवान बुद्ध के क़दमों का निशान समझकर ताज़ीम करते हैं. बाद के मुसलिम लेखकों ने दूसरे देशों के मुक़ाबले में भारत के बड़प्पन पर इस बिना पर और ज्यादा ज़ोर दिया है कि हज़रत आदम मानव जाति के पहले पैग़म्बर थे और अल्लाह ने अपना हुक्म सब से पहले उन्हीं को सुनाया और आदम चूंकि उस वक़्त हिन्दुस्तान में थे इसलिये हिन्दुस्तान ही को सब से पहले अल्लाह का हुक्म सुनने का फ़ख़्र हो सकता है. मुमकिन है कि शायद इसीलिये इसलाम के पैग़म्बर ने फ़रमाया है—"मैं हिन्दुस्तान से बहकर आई हुई अल्लाह के ज्ञान की मन्द मन्द सुगन्ध सूंघ रहा हूं." आम मुसलमानों के लिये हिन्दुस्तान की सरज़मीन की पाकीज़गी की यह आख़िरी और ज़बर्दस्त दलील है. इस तरह की कहानियां क्यों शुरू हुईं इसकी मैं वजह नहीं खोज सका लेकिन फिर भी ये भारत के मुसलमानों के आम विश्वास का जुज़ बनी हुई हैं. पढ़े लिखे और समझदार लोग भी इन दन्त कथाओं को लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ सच मानते हैं.

इब्न बतूता (1377 ईसवी) ने भी हज़रत आदम के इस पवित्र चरन-चिन्ह की ज़ियारत (यात्रा) की थी. इस चिन्ह को देखकर उसने लिखा है—"हज़रत आदम का यह पवित्र चरन-चिन्ह एक ऊंचे काले पत्थर पर नक़्श है. यह चिन्ह पत्थर पर इतना अंदर धंस गया है कि अब तक ज्यों का त्यों क़ायम है. यह निशान सवा आठ फ़ुट लम्बा है."† इस सच्चाई को साबित करने के लिये कि हिन्दुस्तान सब देशों का सिरमौर है इस तरह की दलीलें आख़री सबूत की

واپس لوٹتے ہوئے راستہ میں اس کی موت ہوگئی . مرتے سمے چیرومن نے مسلمانوں کو شاہی فرمان کے ذریعہ مسجدیں بنانے کی اجازت دے دی. اُسی کے مطابق ملابار میں کئی جگہ مسجدیں بنائی گئیں . بلاجوری بھی سن 812 عیسوی کے قریب پچھموتر بھارت کے ایک راجا کے اسلام قبول کرنے کی گھٹنا سناتا ھے .* بزرگ بن شہریار اور سوداگر سلیمان جو نویں صدی میں ھندستان آئے تھے' لکھتے ھیں کہ ھندستان کے راجاؤں کے دلوں میں مسلمانوں کی طرف سے بیحد سدبھاونا موجود تھی .

پتہ نہیں کیسے مسلمانوں کے دلوں میں یہ وشواس گھر کر گیا کہ انسانی قوم کے پہلے پیغمبر اور پہلے انسان حضرت آدم بہشت سے نکالے جانے کے بعد ھندستان میں سنگھل دیپ میں آکر اُترے . ھندستان میں جو خوشبودار پھول اور جڑی بوٹی بھری پڑی ھیں وہ حضرت آدم ھی بہشت کے نندن بن سے یہاں لائے تھے . جس پتھر پر حضرت آدم اُترے اس پر ان کے قدموں کا نشان آج تک موجود ھے . اسی پتھر کے نشان کو سنگھل کے بودھ بھگوان بدھ کے قدموں کا نشان سمجھکر تعظیم کرتے ھیں . بعد کے مسلم لیکھکوں نے دوسرے دیشوں کے مقابلے میں بھارت کے بڑپن پر اِس بنا پر اور زیادہ زور دیا ھے کہ حضرت آدم مانو جاتی کے پہلے پیغمبر تھے اور اللہ نے اپنا حکم سب سے پہلے اُنہیں کو سنایا اور آدم چونکہ اُس وقت ھندستان میں تھے اِس لئے ھندستان ھی کو سب سے پہلے اللہ کا حکم سننے کا فخر ھو سکتا ھے . ممکن ھے کہ شاید اِسی لئے اسلام کے پیغمبر نے فرمایا ھے—" میں ھندستان سے بہہ کر آئی ھوئی اللہ کے گیان کی مند مند سگندھ سونگھ رہا ھوں ." عام مسلمانوں کے لئے ھندستان کی سر زمین کی پاکیزگی کی یہ آخری اور زبردست دلیل ھے . اِس طرح کی کہانیاں کیوں شروع ھوئیں اِس کی میں وجہ نہیں کھوج سکا لیکن پھر بھی یہ بھارت کے مسلمانوں کے عام وشواس کی جز بنی ھوئی ھیں . پڑھے لکھے اور سمجھدار لوگ بھی اِن دنت کتھاؤں کو لفظ-بہ-لفظ سچ مانتے ھیں .

ابن بطوطہ (1377 عیسوی) نے بھی حضرت آدم کے اِس پوتر چرن-چنھ کی زیارت (یاترا) کی تھی . اِس چنھ کو دیکھ کر اُس نے لکھا ھے—" حضرت آدم کا یہ پوتر چرن-چنھ ایک اونچے کالے پتھر پر نقش ھے . یہ چنھ پتھر پر اتنا اندر دھنس گیا ھے کہ اب تک جیوں کا تیوں قائم ھے . یہ نشان سوا آٹھ فٹ لمبا ھے ."† اِس سچائی کو ثابت کرنے کے لئے کہ ھندستان سب دیشوں کا سرمور ھے اس طرح کی دلیلیں آخری ثبوت کی

---

* फ़ुतूह अल—बलदान (लेडेन) पृष्ठ—446. .446—فتوح البلدان (لیڈن) پرشٹھ

† Ibn Batuta (H. A. R. Gibb p. 295.

तैयार करके खलीफ़ा की खिदमत में पेश की.* इस बात के भी बहुत से सुबूत मिलते हैं कि सातवीं सदी ईसवी के शुरू में ईरान से लगे हुये हिन्दुस्तान के सूबों के साथ अरब व्यापारियों का तिजारती सम्बन्ध क़ायम था और वे जाटों और मद्रों से परिचित थे. चूंकि हिन्दुस्तान के इन हिस्सों पर एक समय ईरानियों की हुकूमत थी इसलिये इन हिस्सों के हिन्दुस्तानी क़बीलों और ईरानियों के बीच नज़दीकी ताल्लुक़ात रहे होंगे. जब ईरान ने इसलाम क़बूल किया तो तिजारती सम्बन्ध के साथ साथ यह नज़दीकी और ज्यादा बढ़ी होगी. एक बात हमें और ध्यान में रखनी चाहिये कि एक ज़माने में ख़ुरासान, और तुर्किस्तान तथा ईरान में बौद्ध धर्म का बेहद प्रचार था और बौद्ध धर्म के अनुयायी इराक़, मोसल और शाम की सरहद तक फैले हुये थे. इन देशों के निवासियों ने हालांकि बौद्ध धर्म की जगह इसलाम स्वीकार कर लिया था फिर भी उनके दिलों में हिन्दुस्तान के लिए एक मुहब्बत और इज्ज़त की भावना ज़रूर रही होगी.

जबकि आपस के ताल्लुक़ात बहुत थोड़े थे तब भी मुसलमान हिन्दुस्तान को दुनिया का सब में अधिक तहज़ीब-याफ़्ता मुल्क समझकर उसकी बेहद क़द्र और इज्ज़त करने लगे थे. प्रमान के तौर पर हिन्दुस्तान की तारीफ़ में इसलाम के पैग़म्बर और उनके मशहूर अनुयाइयों की रवायतें लफ़्ज़-ब-लफ़्ज़ पेश की जाती थीं. इस तरह की रिवायतों पर थोड़ा बहुत मतभेद हो सकता है लेकिन यह बात दावे के साथ कही जा सकती है कि शुरू ज़माने के इसलाम के साहित्य में हिन्दुस्तान की बेहद तारीफ़ें भरी पड़ी हैं.

उस समय के अरब सौदागरों ने गुजरात के बल्हर राजाओं और मलाबार के सामुरी राजाओं को अपनी तरफ़ बेहद मेहरबान और दोस्ती से भरा हुआ पाया. समुद्र के किनारे किनारे उन्हें अपनी बस्तियां बसाने और मसजिदें बनाने की इजाज़त थी. इन मुसलमानों ने हिन्दू लड़कियों से ही शादी की जिनकी मिली जुली औलादें मलाबार में 'मोफ़ला' और कोकण में 'हटिया' के नाम से मशहूर हुई. यदि हम मलाबार के राजा चेरूमन पेरूमल के इसलाम क़बूल करने की आम फ़हम कहानी स्वीकार कर लें तो हमें हिन्दुस्तान की मुसलिम नौआबादियों का समय पैग़म्बर की ज़िन्दगी के ही क़रीब मानना पड़ेगा. कहानी यह है कि अरब सौदागरों का एक जत्था सिंहलद्वीप में 'आदम की चोटी' की यात्रा करने के लिये रवाना हुआ. क्रैंगानोर के बन्दरगाह में राजा चेरूमल पेरूमल ने इन सौदागरों का स्वागत किया. सौदागरों ने पैग़म्बर मोहम्मद द्वारा चांद के टुकड़े किये जाने की कहानी राजा को सुनाई. राजा ने इसलाम स्वीकार कर लिया और चुपचाप इन सौदागरों के साथ मदीने की यात्रा की.

تیار کر کے خلیفہ کی خدمت میں پیش کی۔* اِس بات کے بھی بہت سے ثبوت ملتے ہیں کہ ساتویں صدی عیسوی کے شروع میں ایران سے لگے ہوئے ہندستان کے صوبوں کے ساتھ عرب بیوپاریوں کا تجارتی سمبندھ قائم تھا اور وے جاٹوں اور مدروں سے پریچت تھے۔ چونکہ ہندستان کے اِن حصوں پر ایک سمے ایرانیوں کی حکومت تھی اِس لئے اِن حصوں کے ہندستانی قبیلوں اور ایرانیوں کے بیچ نزدیکی تعلقات رہے ہونگے۔ جب ایران نے اسلام قبول کیا تو تجارتی سمبندھ کے ساتھ ساتھ یہ نزدیکی اور زیادہ بڑھی ہوگی۔ ایک بات ہمیں اور دھیان میں رکھنی چاہئے کہ ایک زمانے میں خراسان' اور ترکستان تتھا ایران میں بودھ دھرم کا بیحد پرچار تھا اور بودھ دھرم کے انویائی عراق' موصل اور شام کی سرحد تک پھیلے ہوئے تھے۔ اِن دیشوں کے نواسیوں نے حالانکہ بودھ دھرم کی جگہ اسلام سویکار کر لیا تھا پھر بھی اُن کے دلوں میں ہندستان کے لئے ایک محبت اور عزت کی بھاونا ضرور رہی ہوگی۔

جبکہ آپس کے تعلقات بہت تھوڑے تھے تب بھی مسلمان ہندستان کو دنیا کا سب میں ادھک تہذیب یافتہ ملک سمجھ کر اُس کی بیحد قدر اور عزت کرنے لگے تھے۔ پرمان کے طور پر ہندستان کی تعریف میں اسلام کے پیغمبر اور اُن کے مشہور انویائیوں کی روایتیں لفظ بہ لفظ پیش کی جاتی تھیں۔ اِس طرح کی روایتوں پر تھوڑا بہت مت بھید ہو سکتا ہے لیکن یہ بات دعوے کے ساتھ کہی جا سکتی ہے کہ شروع زمانے کے اسلام کے ساہتیہ میں ہندستان کی بیحد تعریفیں بھری پڑی ہیں۔

اُس سمے کے عرب سوداگروں نے گجرات کے بلہر راجاؤں اور ملابار کے سامری راجاؤں کو اپنی طرف بیحد مہربان اور دوستی سے بھرا ہوا پایا۔ سمدر کے کنارے کنارے اُنہیں اپنی بستیاں بسانے اور مسجدیں بنانے کی اجازت تھی۔ اِن مسلمانوں نے ہندو لڑکیوں سے ہی شادی کی جن کی ملی جلی اولادیں ملابار میں 'موپلہ' اور کوکن میں 'نائیت' کے نام سے مشہور ہوئیں۔ یدی ہم ملابار کے راجا چیرومن پیرومل کے اسلام قبول کرنے کی عام فہم کہانی سویکار کر لیں تو ہمیں ہندستان کی مسلم نو آبادیوں کا سمے پیغمبر کی زندگی کے ہی قریب ماننا پڑیگا۔ کہانی یہ ہے کہ عرب سوداگروں کا ایک جتھا سنگھل دیپ میں 'آدم کی چوٹی' کی یاترا کرنے کے لئے روانہ ہوا۔ کرینگانور کے بندرگاہ میں راجا چیرومن پیرومل نے اِن سوداگروں کا سواگت کیا۔ سوداگروں نے پیغمبر محمد دوارا چاند کے ٹکڑے کئے جانے کی کہانی راجا کو سنائی۔ راجا نے اِسلام سویکار کر لیا اور چپ چاپ اِن سوداگروں کے ساتھ مدینہ کی یاترا کی۔

* Islami Culture Vol. 1, No. 2, pp. 190-91.

उम्मीदों के लिये जगाकर तैयार कर दिया. ये परिवर्तन अपने आप में फ़ायदेमन्द या नुक़सानदह हैं इसका फ़ैसला मैं नहीं कर सकता, लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि इस तब्दीली ने भारत की समाजी बुनियादों को ही बदल दिया. आर्यों के आगमन ने भारत की समाजी जिन्दगी को जिस तरह जड़ से हिला दिया था तुर्कों का हमला उससे थोड़ा ही कुछ कम रहा. लेकिन तूफ़ान के बाद शान्ति लाजमी है. भूकम्प के बाद तामीर जरूरी है. जब नदियों का सङ्गम होता है तो दोनों नदियों की धारायें गुजरते हुये टकराती हैं लेकिन फ़ौरन ही वे शान्ति होकर रल मिलकर एक धारा मे बहने लग जाती हैं. प्रयाग के बाद गंगा जमुना की धारा मे कोई फ़र्क़ नहीं रह जाता. उसी तरह हिन्दू और मुसलमान आपस में टकरा कर मुहब्बत के एक इनसानी संगम में मिले थे और फिर उनकी संस्कृतियां रल मिल कर भारतीय संस्कृति की अखन्ड धारा बनकर बहने लगी थीं कि जिस ने सनअत और हिरफ़त, कला और विज्ञान, साहित्य और कविता, चित्रकला और मूर्तिकला सभी को सरसब्ज़ और हरा भरा कर दिया था. लेकिन हम कलचरी मेल जोल की, उस अखन्ड धारा को खन्ड खन्ड करने की, जमुना की धारा को गंगा की धारा से अलहदा करने की शर्मनाक कोशिश करने लगे.

भारत में तुर्कों के हमलों के तीन सौ बरस पहले मुसलमानों में भारत की महान सभ्यता और उसके ज्ञान के अगाध भन्डार को समझने और उसके तरफ़ आदर प्रकट करने की लगातार कोशिश हो रही थी. भारत और अरब के बीच बहुत पुराने जमाने से तिजारती ताल्लुक़ात चले आ रहे थे लेकिन मौजूदा ताल्लुक़ात का सिरा हम उसी वक़्त से जोड़ सकते हैं जब अरबों ने अपने पूर्वी साम्राज्य में तहज़ीब के नये नये मरक़ज़ क़ायम किये. ख़लीफ़ा उमर के जमाने तक इसलामी दुनिया को हिन्दुस्तान के बारे में बहुत कम सच्ची जानकारी थी. हिन्दुस्तान के समुद्री किनारों के बारे में अरब और ईरानी मल्लाहों को थोड़ी बहुत वाक़फ़ियत थी और वे हिन्दुस्तान की तिजारती दौलत की तारीफ़ के गीत गाया करते थे. जब ख़लीफ़ा उमर ने एक अरब मल्लाह से हिन्दुस्तान के बारे में पूछा तो वह तारीफ़ के पुल बांधने लगा कि—"हिन्दुस्तान के दरिया मोतियों से भरे हैं और उसके पहाड़ों में हीरे जवाहरातों की खानें हैं और उसके पेड़ पौधे ख़ुशबुओं से मुअत्तर हैं." लेकिन हिन्दुस्तान के बारे में सही सही जानकारी हासिल करने की पहली कोशिश शायद ख़लीफ़ा उसमान के ज़माने में की गई. उसमान ने 624 और 661 ईसवी के बीच हकीम बिन जबाला को मुक़र्रर किया कि वह पता लगाकर हिन्दुस्तान के बारे में सही सही ख़बरें ख़लीफ़ा को दे. जबाला ने हिन्दुस्तान आ कर यहां के बारे में एक रिपोर्ट (Thaghar-al-Hind)

اُمیدوں کے لئے جگا کر تیار کر دیا۔ یہ پریورتن اپنے آپ میں فایدہ مند یا نقصان دہ ہیں اِس کا فیصلہ میں نہیں کر سکتا، لیکن اِس میں کوئی شک نہیں کہ اِس تبدیلی نے بھارت کی سماجی بنیادوں کو ہی بدل دیا۔ آریوں کے آگمن نے بھارت کی سماجی زندگی کو جس طرح جڑ سے ہلا دیا تھا ترکوں کا حملہ اُس سے تھوڑا ہی کچھ کم رہا۔ لیکن طوفان کے بعد شانتی لازمی ہے۔ بھوکمپ کے بعد تعمیر ضروری ہے۔ جب ندیوں کا سنگم ہوتا ہے تو دونوں ندیوں کی دھارائیں گزرتے ہوئے ٹکراتی ہیں لیکن فوراً ہی وے شانت ہو کر رل مل کر ایک دھارا میں بہنے لگ جاتی ہیں۔ پریاگ کے بعد گنگا جمنا کی دھارا میں کوئی فرق نہیں رہ جاتا۔ اُسی طرح ہندو اور مسلمان آپس میں ٹکرا کر محبت کے ایک اِنسانی سنگم میں ملے تھے اور پھر اُن کی سنسکرتیاں رل مل کر بھارتیہ سنسکرتی کی اکھنڈ دھارا بن کر بہنے لگی تھیں کہ جس نے صنعت اور حرفت، کلا اور وگیان، ساہتیہ اور کویتا، چترکلا اور مورتی کلا سبھی کو سرسبز اور ہرا بھرا کر دیا تھا۔ لیکن ہم کلچری میل جول کی، اُس اکھنڈ دھارا کو کھنڈ کھنڈ کرنے کی، یمونا کی دھارا کو گنگا کی دھارا سے علیحدہ کرنے کی شرمناک کوشش کرنے لگے۔

بھارت میں ترکوں کے حملوں کے تین سو برس پہلے سے مسلمانوں میں بھارت کی مہان سبھیتا اور اُس کے گیان کے اگادھ بھنڈار کو سمجھنے اور اُس کے طرف آدر پرکٹ کرنے کی لگاتار کوشش ہو رہی تھی۔ بھارت اور عرب کے بیچ بہت پرانے زمانے سے تجارتی تعلقات چلے آ رہے تھے لیکن موجودہ تعلقات کا سرا ہم اسی وقت سے جوڑ سکتے ہیں جب عربوں نے اپنے پوروی سامراجیہ میں تہذیب کے نئے نئے مرکز قائم کئے۔ خلیفہ عمر کے زمانے تک اسلامی دنیا کو ہندستان کے بارے میں بہت کم سچی جانکاری تھی۔ ہندستان کے سمندری کناروں کے بارے میں عرب اور ایرانی ملاحوں کو تھوڑی بہت واقفیت تھی اور وے ہندستان کی تجارتی دولت کی تعریف کے گیت گایا کرتے تھے۔ جب خلیفہ عمر نے ایک عرب ملاح سے ہندستان کے بارے میں پوچھا تو وہ تعریف کے پل باندھنے لگا کہ—"ہندستان کے دریا موتیوں سے بھرے ہیں اور اُس کے پہاڑوں میں ہیرے جواہرات کی کانیں ہیں اور اُس کے پیڑ پودھے خوشبوؤں سے معطر ہیں۔" لیکن ہندستان کے بارے میں صحیح صحیح جانکاری حاصل کرنے کی پہلی کوشش شاید خلیفہ عثمان کے زمانے میں کی گئی۔ عثمان نے 624 اور 664 عیسوی کے بیچ حکیم بن جبالہ کو مقرر کیا کہ وہ پتا لگا کر ہندستان کے بارے میں صحیح صحیح خبریں خلیفہ کو دے۔ جبالہ نے ہندستان آکر یہاں کے بارے میں ایک رپورٹ (Thaghar-al-Hind)

हिन्दू-मुसलमानों के कलचरी मेल-जोल की शुरूआत

डाक्टर लतीफ़ दफ़्तरी एम० ए०, डी०, फ़िल०

तुर्कों के पंजाब आने के एक सदी बाद ही हिन्दू और मुसलमानों के कलचरी मेल जोल की पहली दाग़बेल मिली-जुली बोली के रूप में पड़ी. हिन्दी और फ़ारसी ने मिलकर उर्दू बोली को जन्म दिया. मिली जुली बोली की पैदायश इस बात को ज़ाहिर करती है कि उस वक़्त तक हिन्दू और मुसलमानों में मेल-जोल की एक ख़्वाहिश हमारी सामाजिक, नैतिक, और दिमाग़ी ज़िन्दगी के हर ख़ित्ते में गहराई के साथ प्रवेश कर रही थी. इस मिली जुली चेतना ने कलचरी मेल जोल की गहरी छाप हमरी कला, हमारे साहित्य और हमारे धर्म के ऊपर छोड़ी है.

भारत में इस कलचरी मेल जोल की छान बीन की अब तक बहुत थोड़ी कोशिश की गई है. इस सम्बन्ध में जो चन्द पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं उनमें मौलवी सैयद सुलेमान नदवी की 'अरब और हिन्द के ताल्लुक़ात', डाक्टर डी० आर० भन्डारकर की The Slow Progress of Islam in India, डाक्टर ताराचन्द की The Influence of Islam on Indian Culture और एक यूरोपीय विद्वान की पुस्तक Scriptorum Arabum de Rebus Iudicis loci et Opuscula Inedita आदि मुख्य हैं. पिछले सैकड़ों बरस में अनेक मुसलमान सन्तों, राजनीतिज्ञों और विद्वानों ने हिन्दुस्तान में हिन्दू और मुसलमानों के मिलने से जो समस्यायें पैदा हो गई थीं उनके प्रेम पूर्न हल खोजने में बहुत सा चिन्तन और मनन किया है. भारतीय विद्वानों द्वारा इन कोशिशों को जितना महत्व दिया जाना चाहिये उतना महत्व नहीं दिया गया. महत्व देना तो दूर रहा दोनों सम्प्रदायों के विद्वान अनैतिहासिक और भ्रान्त दलीलों द्वारा मिली जुली भारतीय संस्कृति को खन्ड खन्ड करने के और हिन्दू और मुसलमानों के दिलों को एक दूसरे से फाड़ने की कोशिश कर रहे थे. हिन्दू और मुसलमानों ने सैकड़ों बरस तक जिस भारतीय संस्कृति को इतना समृद्ध बनाया है उन्हीं की औलाद आज शर्मनाक तरीक़ों से उसकी धज्जियां उड़ाने में मशग़ूल हैं.

तुर्कों का हिन्दुस्तान में आना एक उतना ही अजीब-ओ-ग़रीब क़ुदरती वाक़्या है जितना तूफ़ानों का एक जगह से दूसरी जगह मंडराना ! तुर्कों ने आकर हिन्दुस्तान को उसकी जड़ों तक हिला दिया और लोगों को झकझोर कर नई

هندو مسلمانوں کے کلچری میل جول کی شروعات

ڈاکٹر لطیف دفتری اے . ایم .' ڈی .' فل .

ترکوں کے پنجاب آنے کے ایک صدی بعد ھی هندو اور مسلمانوں کے کلچری میل جول کی پہلی داغ بیل ملی جلی بولی کے روپ میں پڑی . هندی اور فارسی نے ملکر اردو بولی کو جنم دیا . ملی جلی بولی کی پیدائش اِس بات کو ظاهر کرتی هے کہ اُس وقت تک هندو اور مسلمانوں میں میل-جول کی خواهش هماری ساماجک' نیتک' اور دماغی زندگی کے هر خطہ میں گہرائی کے ساتھ پرویش کر رهی تھی . اِس ملی جلی چیتنا نے کلچری میل جول کی گہری چھاپ هماری کلا' همارے ساهتیہ اور همارے دھرم کے اوپر چھوڑی هے .

بھارت میں اِس کلچری میل جول کی چھان بین کی اب تک بہت تھوڑی کوشش کی گئی هے . اِس سمبندھ میں جو چند پستکیں پرکاشت هوئی هیں اُن میں مولوی سید سلیمان ندوی کی 'عرب اور هند کے تعلقات' ڈاکٹر ڈی . آر . بھنڈارکر کی The Slow Progress of Islam in India, ڈاکٹر تارا چند کی The Influence of Islam on Indian Culture اور ایک یوروپین ودوان کی پستک Scriptorum Arabum de Rebns Indicis loci et Opuscula Inedita آدی مکھیہ هیں . پچھلے سیکڑوں برس میں انیک مسلمان سنتوں' راجنیتگیوں اور ودوانوں نے هندستان میں هندو اور مسلمانوں کے ملنے سے جو سمسیائیں پیدا هوگئی تھیں اُن کے پریم پورن حل کھوجنے میں بہت سا چنتن اور منن کیا هے . بھارتیہ ودوانوں دوارا اِن کوششوں کو جتنا مہتو دیا جانا چاهئے اتنا مہتو نہیں دیا گیا . مہتو دینا تو دور رها دونوں سمپردایوں کے ودوان انیتہاسک اور بھرانت دلیلوں دوارا ملی جلی بھارتیہ سنسکرتی کو کھنڈ کھنڈ کرنے کے اور هندو اور مسلمانوں کے دلوں کو ایک دوسرے سے پھاڑنے کی کوشش کر رهے تھے . هندو اور مسلمانوں نے سیکڑوں برس تک جس بھارتیہ سنسکرتی کو اتنا سمردھ بنایا هے اُنهیں کی اولاد آج شرمناک طریقوں سے اُس کی دھجیاں اُڑانے میں مشغول هیں .

ترکوں کا هندستان میں آنا ایک اُتنا هی عجیب و غریب قدرتی واقعہ هے جتنا طوفانوں کا ایک جگہ سے دوسری جگہ منڈرانا ! ترکوں نے آکر هندستان کو اُس کی جڑوں تک هلا دیا اور لوگوں کو جھنجھوڑ کر نئی

थे उन्होंने पहले महायुद्ध के पहले भारत की यात्रा भी की थी. एक बार भारत के विशय में बातचीत होते समय हम ने सुझाया कि ऐसा मालूम होता है कि ब्रिटिश सरकार की मन्शा भारतीय ईसाइयों की मदद से एक तीसरी अल्पसंख्यक जनता की समस्या खड़ी करने की है. उन्होंने कहा कि यह सच है, तथा उस समय के भाग्य-विधाताओं ने, उनसे कहा कि उनकी यह योजना कि वह इन आदिम जातियों को ईसाई बना कर हिन्दुओं और मुसलमानों के मुक़ाबले में इन्हें तीसरी अल्प-संख्यक जनता बनाकर पेश करेंगे. जो लोग ईसाई हो गये वह रोमन लिपि में अपनी भाशा लिखना सीखते हैं तथा प्रत्येक प्रकार से अभारतीय बनते हैं. इनकी समस्या भविश्य के लिये एक जटिल समस्या है. अब समय आ गया है कि हमारे समाज शास्त्री, इतिहासज्ञ और राजनीतिज्ञ परिस्थति पर संजीदगी से विचार करें. निश्चय ही इन जातियों के लिये एक मात्र उपाय यही है कि वह अपने पड़ोसियों की भांति भारतीय नागरिक बन जायें. वे किसी भी धर्म को चुन लें, इसकी अपेक्षा नहीं, किन्तु भारत की सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक उन्नति से उनका संबन्ध जोड़ना बहुत ज़रूरी है.

تھے انہوں نے پہلے مہایدھ کے پہلے بھارت کی یاترا بھی کی تھی. ایک بار بھارت کے وشے میں بات چیت ہوتے سمے' ہم نے سجھایا کہ ایسا معلوم ہوتا ہے کہ برٹش سرکار کی منشا بھارتیہ عیسائیوں کی مدد سے ایک تیسری الپ سنکھیک جنتا کی سمسیا کھڑی کرنے کی ہے . انہوں نے کہا کہ یہ سچ ہے' تتھا اُس سمے کے بھارت کے بھاگیہ ودھاتاؤں نے' ان سے کہا کہ ان کی یہ یوجنا ہے کہ وہ اِن آدم جاتیوں کو عیسائی بنا کر ہندؤں اور مسلمانوں کے مقابلے میں انہیں تیسری الپ - سنکھیک جنتا بنا کر پیش کریں گے . جو لوگ عیسائی ہو گئے وہ رومن لیپی میں اپنی بھاشا لکھنا سیکھتے ہیں تتھا پرتیک پرکار سے ابھارتیہ بنتے ہیں . اِن کی سمسیا بھوشیہ کے لئے ایک جٹل سمسیا ہے . اب سمے آ گیا ہے کہ ہمارے سماج شاستری' اتہاسگیہ اور راج نیتگیہ پرستھتی پر سنجیدگی سے وچار کریں . نشچے ہی اِن جاتیوں کے لئے ایک ماتر اپائے یہی ہے کہ وہ اپنے پڑوسیوں کی بھانتی بھارتیہ ناگرک بن جائیں . وے کسی بھی دھرم کو چن لیں' اِس کی اپیکشا نہیں' کنتو بھارت کی سانسکرتک تتھا ایتہاسک اُنتی سے اُن کا سمبندھ جوڑنا بہت ضروری ہے .

रहा है. वहां पर भी इन आदिम जातियों को बाड़ों में जिन्हें 'जाति क्षेत्र' कहते हैं, बन्द रखा जाता है और गोरी जातियों की सभ्यता और धर्म स्वीकार कर लेने पर भी उन्हें बड़ा दुखी जीवन बिताना पड़ता है. लेखक ने अमरीका में कनेडा की 'ओजीबवा' (Ogibwa) जाति के समान दुखी जाति दूसरी कोई नहीं देखी. उस जाति के मन्त्री ने लेखक को बताया कि उन्हें जीवन में कोई दूसरा मौक़ा ही नहीं दिया जाता. जबकि अमरीका की औद्योगिक सभ्यता तेज़ी से आगे बढ़ रही है, और उनके पड़ोसी समृद्धि के सागर में गोते लगा रहे हैं, और आधुनिक सभ्यता की सारी नियामतों का उपभोग कर रहे हैं, उन्हें अमरीका के बीते हुए युग के चिन्ह स्वरूप उसी अवस्था में रखा जा रहा है.

लेकिन भारतवर्ष की इन 'आदिम' कही जाने वाली जातियों की समस्या इससे अलग है. वह भारतीय जाति की ही एक अंश हैं. वह उन जातियों की निशानी है जो अभी तक भारतीय सभ्यता के नाम से प्रसिद्ध सांस्कृतिक समन्वय में मिलाई नहीं जा सकीं. इन जातियों के लोग सुसंस्कृत भारतीय राष्ट्र के पिछड़े हुए अंग हैं. अगर भारतीय इतिहास के परदे पर अंगरेज़ों का आगमन न होता, तो यह लोग अब तक हिन्दू समाज में मिल गये होते. प्रो॰ घूरे उन्हें 'पिछड़े हुए' हिन्दू कहते हैं.

मुख़्तलिफ़ ताक़तें

ऐसा महसूस होता है कि इस तरह के बंटवारे के लिये अलग अलग ताक़तें काम कर रही हैं. ख़ुद हम में से बहुत से लोग तथा हमारे विदेशी शुभचिन्तक उन्हें उन बाड़ों में जिन्हें 'राष्ट्रीय पार्क' कहा जायगा बन्द रखना चाहते हैं. लेकिन हम पहले ही अमरीकन आदिम जातियों की बुरी दशा का हवाला दे चुके हैं. वह वहीं सड़ रहे हैं. उत्तरी अमरीका में इस प्रकार के मानव दुख का नज़ारा रोमांचकारी है इस तरह से भारत की इन 'आदिम' कही जाने वाली जातियों को 'राष्ट्रीय पार्क' नाम के बाड़ों में बन्द कर देने से, जहां वह प्राचीन भारत की यादगार और विदेशियों की उत्सुक आंखों का निशाना बन कर रहें, उनकी कोई भलाई नहीं होगी. प्रो० गैडगिल इस तरह आदिम जातियों की इस बनाई गई समस्या में "नवीन उपायों से देश के शोशन" का उद्देश्य देखते हैं, जो कि पश्चिम का आविष्कार है. और यह तो गोरी जातियों की प्रसार नीति तथा सारे संसार में औद्योगिक क्रान्ति के प्रचार के फलस्वरूप उत्पन्न बहुत सी समस्याओं में से सिर्फ़ एक है. (घूरे की पुस्तक की भूमिका). बहुत दिन पहले जब लेखक जर्मनी में विद्यार्थी था, तो डा० ओटो से उसका परिचय हुआ, जो पहले गाटिंजन Gottengin) और फिर मारबर्ग (Marburg) विश्वविद्यालय में 'उदार ईसाई दर्शन' के अध्यापक थे. वह भारत के मित्र

رہا ھے. وہاں پر بھی اِن آدم جاتیوں کو باڑوں میں جنھیں 'جاتی- چھیتر' کہتے ھیں' بند رکھا جاتا ھے اور گوری جاتیوں کی سبھیتا اور دھرم سویکار کر لینے پر بھی اِنھیں بڑا دکھی جیون بتانا پڑتا ھے . لیکھک نے امریکہ میں کینیڈا کی ' اوجیبوا ' (Ogibwa) جاتی کے سمان دکھی جاتی دوسری کوئی نہیں دیکھی . اُس جاتی کے منتری نے لیکھک کو بتایا کہ اِنھیں جیون میں کوئی دوسرا موقعہ ھی نہیں دیا جاتا . جب کہ امریکہ کی اودیوگک سبھیتا تیزی سے آگے بڑھ رھی ھے' اور اُن کے پڑوسی سمردھی کے ساگر میں غوطے لگا رھے ھیں' اور آدھونک سبھیتا کی ساری نعمتوں کا اُپ بھوگ کر رھے ھیں' انھیں امریکہ کے بیتے ھوئے یگ کے چنھ سوروپ اُسی اوستھا میں رکھا جا رھا ھے .

لیکن بھارت ورش کی ان ' آدم ' کہی جانے والی جاتیوں کی سمسیا اِس سے الگ ھے . وے بھارتیہ جاتی کی ھی ایک انش ھے . وے اُن جاتیوں کی نشانی ھے جو ابھی تک بھارتیہ سبھیتا کے نام سے پرسدھ سانسکرتک سمنوے میں ملائی نہیں جا سکیں . اِن جاتیوں کے لوگ سوسنسکرت بھارتیہ راشٹر کے پچھڑے ھوئے انگ ھیں . اگر بھارتیہ اِتہاس کے پردے پر انگریزوں کا آگمن نہ ھوتا تو یہ لوگ اب تک ھندو سماج میں مل گئے ھوتے . پروفیسر گھورے انھیں ' پچھڑے ھوئے ' ھندو کہتے ھیں .

مختلف طاقتیں

ایسا محسوس ھوتا ھے کہ اِس طرح کے بنٹوارے کے لئے الگ الگ طاقتیں کام کر رھی ھیں . خود ھم میں سے بہت سے لوگ تتھا ھمارے ودیشی شبھ چنتک انھیں اُن باڑوں میں جنھیں 'راشٹریہ پارک' کہا جائیگا بند رکھنا چاھتے ھیں. لیکن ھم پہلے ھی امریکن آدم جاتیوں کی بری دشا کا حوالہ دے چکے ھیں . وے وھیں سڑ رھے ھیں اُتری امریکہ میں اِس پرکار کے مانو دکھ کا نظارہ رومانچکاری ھے . اِس طرح سے بھارت کی اِن ' آدم ' کہی جانے والی جاتیوں کو ' راشٹریہ پارک ' نام کے باڑوں میں بند کر دینے سے' جہاں وہ پراچین بھارت کی یادگار اور ودیشیوں کی اُتسک آنکھوں کا نشانہ بن کر رھیں' اُن کی کوئی بھلائی نہیں ھوگی . پروفیسر گیڈگل اِس طرح آدم جاتیوں کی اِس بنائی گئی سمسیا میں " نوین اپایوں سے دیش کے شوشن " کا ادیش دیکھتے ھیں' جو کہ پچھم کا اوشکار ھے . اور یہ تو گوری جاتیوں کی پرسار نیتی تتھا سارے سنسار میں ادیوگک کرانتی کے پرچار کے پھل سوروپ اتپن بہت سی سمسیاؤں میں سے صرف ایک ھے . (گھورے کی پستک کی بھومکا) . بہت دن پہلے جب لیکھک جرمنی میں ودیارتھی تھا' تو ڈاکٹر اوٹو سے اُس کا پریچے ھوا' جو پہلے گاٹینجن (Gottengin) اور پھر ماربرگ (Marburg) وشودیالیہ میں 'ادار عیسائی درشن' کے ادھیاپک تھے . وے بھارت کے متر

हिन्दू तथा अहिन्दू जातियों के अन्तर को घातक समझते थे. (रिपोर्ट पृ० 158). सर हर्बर्ट रिज़ले ने कहा था "हिन्दुत्व और पिछड़ी जातियों के धर्म के बीच कोई बारीक बंटवारे की रेखा नहीं खींची जा सकती. दोनों एक दूसरे में मिल गये हैं." (दि पीपुल आफ़ इण्डिया सेकण्ड ऐडीशन पृष्ठ 218, 133, 145). सर ई० ए० गेट ने कहा था "यह कहना बहुत ही कठिन है कि किसी स्टेज पर किसी आदमी को हिन्दू कहा जाय." (सेन्सस आफ़ इण्डिया 1911—जिल्द 1, भाग 1, पृ० 129-30). बिहार और उड़ीसा की 1921 की मर्दुमशुमारी के सुपरिनटेण्डेण्ट मि० टेलेन्टस ने एक animist तथा एक हिन्दू के बीच फ़रक़ स्थापित करने में इस कठिनाई को मंजूर किया था. (सेन्सस आफ़ इण्डिया 1921—बिहार एन्ड उड़ीसा रिपोर्ट, पृ० 125). बम्बई की 1921 की मर्दुमशुमारी के सुपरिनटेन्डेन्ट मि० सिजविक ने कहा था—

"अगली मर्दुमशुमारी में वह सब जो अभी animists में रखे गये हैं, हिन्दुओं के साथ मिला दिये जायें." (बम्बई रिपोर्ट, पृ० 67). सन 1931 में सेन्सस कमिश्नर डा० जे० ए० हटन ने कहा था "हिन्दू धर्म तथा इन क़बीलों के धर्मों के बीच बंटवारे की रेखा खींचना मुश्किल है, किन्तु इन परवर्ती लोगों को हिन्दुत्व में मिला लेना सरल है." (सेन्सस 1931, पृ० 391-417). इस तरह यह साफ़ देख पड़ता है कि ऐसा एक ताक़तवर मत है, जो इन असभ्य कही जाने वाली जातियों तथा हिन्दू समाज को कुछ गिरोहों में यकजाइयत स्थापित करता है, और इन दोनों के बीच खींची गई किसी भी सीमा विभाजक रेखा को बिल्कुल कृत्रिम मानता है.

ग़लत नामकरन

ऊपर की दलील को मानते हुए हमें यह महसूस होता है कि, 'जाति' शब्द से किया गया नामकरन ही ग़लत है. हम यह कह सकते हैं कि यह आदिम कहे जाने वाले वह भारतीय हैं जो पिछड़े रह गये हैं. यह उन मानवों के निशान हैं, जिन्हें आर्य नहीं बनाया गया था. यह कहना ग़लत है कि वह एक 'भिन्न जाति' की सन्तान हैं और इसलिये उन्हें सौतेली मां के से दुलार भरे बरताव की ज़रूरत है. दूसरी ओर उन्हें 'जाति क्षेत्रों' के बाड़ों में बन्द करके, उनके साथ अन्याय किया जा रहा है क्योंकि उन्हें अपने पड़ोसियों की सभ्यता सीखने का मौक़ा नहीं दिया जाता. यह विचित्र बात है कि उनमें से जो ईसाई या मुसलमान बन जाते हैं उन्हें अपने पैतृक-गृह को छोड़ने का मौक़ा मिल जाता है, तथा शरीयत क़ानून और देश के क़ानूनों से फ़ायदा उठाने की सुविधा भी मिल जाती है.

ऐसा मालूम होता है उत्तरी अमरीका की तरह यहां भारत में भी उसी तरह की प्रनाली का व्यवहार किया जा

ھندو تتھا اھندو جاتیوں کے انتر کو گھاتک سمجھتے تھے . (رپورٹ پرشٹھ 158) . سرھربرٹ رزلے نے کہا تھا "ھندتو اور پچھڑی جاتیوں کے دھرم کے بیچ کوئی باریک بٹوارے کی ریکھا نہیں کھینچی جا سکتی . دونوں ایک دوسرے میں مل گئے ھیں ." (دی پیپل آف انڈیا سیکنڈ ایڈیشن' پرشٹھ 218' 133' 145) . سر ای . اے گیٹ نے کہا تھا "یہ کہنا بہت ھی کٹھن ھے کہ کسی اسٹیج پر کسی آدمی کو ھندو کہا جائے ." (سینسس آف انڈیا 1911—جلد 1' بھاگ 1' پرشٹھ 129-30) . بہار اور اڑیسہ کی 1921 کی مردم شماری کے سپرنٹینڈینٹ مسٹر . ٹیلینٹس نے ایک Animist تتھا ایک ھندو کے بیچ فرق استھاپت کرنے میں اس کٹھنائی کو منظور کیا تھا . (سینسس آف انڈیا 1921—بہار اینڈ اڑیسہ رپورٹ' پرشٹھ 125) . بمبئی کی 1921 کی مردم شماری کے سپرنٹینڈینٹ مسٹر سجوک نے کہا تھا—

" اگلی مردم شماری میں وہ سب جو ابھی Animists میں رکھے گئے ھیں' ھندؤں کے ساتھ ملا دئیے جائیں." (بمبئی رپورٹ' پرشٹھ 67) . سن 1931 میں سینسس کمشنر ڈاکٹر . جے اے . ھٹن نے کہا تھا " ھندو دھرم اور ان قبیلوں کے دھرموں کے بیچ بٹوارے کی ریکھا کھینچنا مشکل ھے' کنتو ان پرورتی لوگوں کو ھندتو میں لینا سرل ھے ." (سینسس 1931' پرشٹھ 391-417) . اس طرح یہ صاف دکھ پڑتا ھے کہ ایسا ایک طاقتور مت ھے' جو ان اسبھیہ کہی جانے والی جاتیوں تتھا ھندو سماج کو کچھ گروھوں میں یکجائیت استھاپت کرتا ھے' اور ان دونوں کے بیچ کھینچی گئی کسی بھی سیما وبھاجک ریکھا کو بالکل کرترم مانتا ھے .

غلط نام کرن

اوپر کی دلیل کو مانتے ھوئے ھمیں یہ محسوس ھوتا ھے کہ "جاتی' شبد سے کیا گیا نام کرن ھی غلط ھے . ھم یہ کہہ سکتے ھیں کہ یہ آدم کہے جانے والے وہ بھارتیہ ھیں جو پچھڑے رہ گئے ھیں . یہ اُن مانوں کے نشان ھیں' جنھیں آریہ نہیں بنایا گیا تھا . یہ کہنا غلط ھے کہ وہ ایک ' بھن جاتی ' کی سنتان ھیں اور اس لئے اُنھیں سوتیلی ماں کے سے دلار بھرے برتاؤ کی ضرورت ھے . دوسری اور اُنھیں ' جاتی چھیتروں ' کے باڑوں میں بند کر کے' ان کے ساتھ انیایہ کیا جا رھا ھے کیونکہ انھیں اپنے پڑوسیوں کی سبھیتا سیکھنے کا موقع نہیں دیا جاتا . یہ وچتر بات ھے کہ اُن میں سے جو عیسائی یا مسلمان بن جاتے ھیں انھیں اپنے پیترک - گرہ کو چھوڑنے کا موقع مل جاتا ھے' تتھا شریعت قانون اور دیش کے قانونوں سے فائدہ اٹھانے کی سویدھا بھی مل جاتی ھے .

ایسا معلوم ھوتا ھے اُتری امریکہ کی طرح یہاں بھارت میں بھی اُسی طرح کی پرنالی کا ویوھار کیا جا

दस अश्वमेध यज्ञ किये थे. दूसरों को इन लेखों में 'वाकाटक' कहा गया है जो पहले दक्षिण में रहा करते थे. यह राजा अपने आप को क्षत्रिय या ब्रह्म-क्षत्रिय कहते थे तथा उनके शासन में शैवमत का प्रचार हुआ. इसी प्रकार हम देखते हैं कि सात वाहन-साम्राज्य के पतन के बाद दक्षिन में 'काहृष्मत' नाम की एक द्राविड़ जाति शक्तिशाली हो गई (देखो—डी० एन० सरकार—सकसेसर्स आफ़ दी सातवाहन, पृष्ठ 216), तथा स्मृतियों के मुताबिक़ दूसरी ऐसी ही जातियां (जरनल हिस्टारिकल क्वारटरली—सितम्बर 1940, पृष्ठ 566) मिलती हैं. आज भी हम छोटा नागपुर में नागवंशी राजपूतों को पाते हैं, जो अपना निकास ऐतिहासिक नवनाग तथा गोवंशी राजपूतों से बतलाते हैं. उनके संदिग्ध पुरखों की छाया उनके नामों और उनकी पैदाइश की परम्परा में छिपी है. आज भी उसी प्रदेश में असभ्य भुइयां तथा 'भूमिज' जातियां भी अपने आपको क्षत्रिय कहती हैं (देखो—रिज़ले—ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स आफ़ बंगाल).

ब्रिटिश राज्य में

किन्तु उस प्रदेश में ब्रिटिश राज्य के स्थापित होते ही शूद्र जातियों के विकास और सामाजिक उन्नति का रास्ता रुक गया. वर्ग संघर्ष की वह क़ुदरती ताक़त जो उन्हें आगे बढ़ा रही थी और जिसने उन्हें सामाजिक परम्परा में ऊंची जगह दिलाई थी, अब बेजान हो गई. आजकल उन्हें मध्य भारत की जंगली जातियां क़रार दे दिया गया है और उनके बारे में बहुत सी मनुष्य जाति-विज्ञान सम्बन्धी तथा सामाजिक कल्पनाएं गढ़ ली गई हैं. यह कहा जाता है कि वह हिन्दुओं के असर से दबी हुई हैं और उनकी जातियां ख़त्म होती जा रही हैं. इसलिये इन आदिम जातियों की, जिनका अपने पड़ोसियों से कोई ताल्लुक़ नहीं है, ज़रूर हिफ़ाज़त की जानी चाहिये. इस कारन अब उन्हें बाड़ों में बन्द किया जा रहा है जिन्हें 'जाति-क्षेत्र (Tribal Area) कहा जाता है, (छोटा नागपुर का कोल्हन जिला इसकी मिसाल है), जहां वह अपनी आज़ाद ज़िन्दगी बिता सकें. उनमें किसी बाहरी आदमी को घुसने नहीं दिया जाता था. बहुत से स्थानों में हिन्दू कार्यकर्ताओं को जाने नहीं दिया जाता था. दूसरी ओर, उनकी एक बहुत बड़ी तादाद पहले हिन्दू बन चुकी है और आज भी बन रही है, और उन्हें क्षत्रियों की पदवी हासिल है, जैसा कि प्रो० घूरे ने भी साक्षी दी है (देखो—दि एबारजिनीज़ सो काल्ड, एण्ड देअर फ्यूचर).

सरकार उनके साथ जिस प्रकार का व्यवहार करती है. उसके विषय में बहुत से वाद विवाद प्रचलित हैं. सन 1881 में भारत की मुर्दुमशुमारी के कमिश्नर मि० जे० बेन्स इन

دس اشومیدھ یگیہ کئے تھے ۔ دوسروں کو اِن لیکھوں میں 'واکاٹک' کہا گیا ھے جو پہلے دکھچن میں رھا کرتے تھے. یہ راجا اپنے آپ کو چھتریہ یا برھم - چھتریہ کہتے تھے تتھا اُن کے شاسن میں شیومت کا پرچار ھوا. اِسی پرکار ھم دیکھتے ھیں کہ سات واھن سامراجیہ کے پتن کے بعد دکچھن میں ' کلھشمت ' نام کی ایک دراوڑ جاتی شکتی شالی ھوگئی (دیکھو—ڈی - این - سرکار— سکسیسرس آف دی سات واھن' پرشٹھ 216)' تتھا اسمرتیوں کے مطابق دوسری ایسی ھی جاتیاں (جنرل ہسٹاریکل کوارٹرلی—ستمبر 1940' پرشٹھ 566) ملتی ھیں ۔ آج بھی ھم چھوٹا ناگپور میں ناگونشی راجپوتوں کو پاتے ھیں' جو اپنا نکاس اتہاسک نوناگ تتھا گو ونشی راجپوتوں سے بتلاتے ھیں ۔ اُن کے سندگدھ پرکھوں کی چھایا اُن کے ناموں اور اُن کی پیدائش کی پرمپرا میں چھپی ھے ۔ آج بھی اُسی پردیش میں اسبھیہ بھوئیاں تتھا ' بھومج ' جاتیاں بھی اپنے آپ کو چھتریہ کہتی ھیں (دیکھو—رزلے—ٹرائبس اینڈ کاسٹس آف بنگال) ۔

برٹش راجیہ میں

کنتو اِس پردیش میں برٹش راجیہ کے استھاپت ھوتے ھی شودر جاتیوں کے وکاس اور سماجک اُنتی کا راستہ رک گیا ۔ ورگ سنگھرش کی وہ قدرتی طاقت جو اُنھیں آگے بڑھا رھی تھی اور جس نے اُنھیں سماجک پرمپرا میں اونچی جگہ دلائی تھی' اب بے جان ھوگئی ۔ آجکل اِنھیں مدھیہ بھارت کی جنگلی جاتیاں قرار دے دیا گیا ھے اور اُن کے بارے میں بہت سی منشیہ جاتی - وگیان سمبندھی تتھا سماجک کلپنائیں گڑھ لی گئیں ھیں ۔ یہ کہا جاتا ھے کہ وہ ھندوؤں کے اثر سے دبی ھوئی ھیں اور اُنکی جاتیاں ختم ھوتی جا رھی ھیں ۔ اِس لئے اِن آدم جاتیوں کی' جن کا اپنے پڑوسیوں سے کوئی تعلق نہیں ھے' ضرور حفاظت کی جانی چاھئے ۔ اِس کارن اب اِنھیں باڑوں میں بند کیا جا رھا ھے جنھیں ' جاتی-چھیتر' (Tribal Area) کہا جاتا ھے' (چھوٹا ناگپور کا کولھن ضلع اِس کی مثال ھے)' جہاں وے اپنی آزاد زندگی بتا سکیں ۔ اُن میں کسی باھری آدمی کو گھسنے نہیں دیا جاتا تھا. بہت سے استھانوں میں ھندو کاریہ کرتاؤں کو جانے نہیں دیا جاتا تھا ۔ دوسری اور' اُن کی ایک بہت بڑی تعداد پہلے ھندو بن چکی ھے اور آج بھی بن رھی ھے' اور اِنھیں چھتریوں کی پدوی حاصل ھے' جیسا کہ پروفیسر گھورے نے بھی ساکچھی دی ھے (دیکھو—دی ایبارجنیز سوکالڈ' اینڈ دیئر فیوچر).

سرکار اُن کے ساتھ جس پرکار کا بیوھار کرتی ھے' اُس کے وشئے میں بہت سا واد - وواد پرچلت ھے ۔ سن 1881 میں بھارت کی مردم شماری کے کمشنر مسٹر ۔ جے ۔ بینس اِن

कोटि को lift हासिल करना था. अगरचे इस समय में उनको ब्राह्मनों के समान कर्मकाण्ड के हक़ हासिल नहीं थे, फिर भी जाति के मुताबिक़ यह नियम बदलते रहते थे. बागडी लोगों में भी ब्राह्मन हैं. बंगाल के बूनो और संथाल जातियों को भी ब्राह्मन पुरोहित-पुजारी मिलते हैं, और इसी तरह छोटा नागपुर के कुलीन कोलों (हो़स) को भी! इससे आगे की तरक़्क़ी उन्हें मिलती है, जब कि उन्हें असत्-शूद्रों की कोटि में मान लिया गया, और वे वर्णाश्रम-व्यवस्था में शामिल कर लिये गये. इस समय उनको ब्राह्मन-वर्न के समान कर्मकाण्ड के हक़ हासिल हो गये. लेकिन इससे भी ज्यादा तरक़्क़ी उन्हें 'सत्-शूद्र' बन जाने पर मिली. इसके आगे की सीढ़ी तो फिर जाति की राजनैतिक और सामाजिक शक्ति के मुताबिक़ उनके क्षत्रिय या ब्राह्मन माने जाने पर मुनहसिर थी. कोई भी निश्पक्ष विचारक इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि तरक़्क़ी का यह तरीक़ा अनादि काल से हिन्दू समाज में चला आ रहा है. इस तरह हिन्दू-धर्म वर्णाश्रम समाज के बाहर से भी लोगों को क़ुबूल करता रहा है और मध्य भारत के जंगल तो प्राचीन समय से इस प्रकार के धर्म-परिवर्तन का स्थान रहे हैं. हिन्दू समाज के संकट काल में वे अन्त्यज और निम्न कोटि के शूद्र ही उसे बचाने के लिये आगे आये थे. जब यह लोग इस प्रकार शिखर पर पहुंच गये, तो क़ुदरतन उन्होंने ब्राह्मनों के सारे आचार अपना लिये, और पुरोहितों ने महाकाव्यों से उनकी वंशावली भी खोज निकाली. इस प्रकार हिन्दू समाज के 'चन्द्र वंशी' और 'सूर्य वंशी' क्षत्रिय राज्यों का इतिहास के मध्य-युग में निर्मान हुआ.

किन्तु बाहर के हमलों ने इस क़ुदरती तरक़्क़ी के तरीक़े में बाधा दी. शरीर-विज्ञान शास्त्री इबटसन ने जाटों तथा राजपूतों के रक्त-सम्बन्धों के बारे में कहा है कि पहले तो किसी कुटुम्ब या क़बीले का सरदार अपने बाहुबल से या और किसी तरह से राजत्व के सिंहासन पर क़बज़ा करता था, और फिर उसके कुटुम्ब के लोग भी उसके साथ उस ऊंची श्रेनी में पहुंच जाते थे. लेकिन मुसलमानों के आक्रमणों के समय से राजत्व के इस तरीक़े में रुकावट हो गई (सिर्फ़ उत्तर भारत में ही). इसलिये और अधिक क्षत्रियों या राजपूतों का विकास नहीं हुआ. लेकिन मध्य और दक्षिणी भारत में हमें ऐसी बहुत सी जातियां मिलती हैं जिनकी पैदाइश संदिग्ध है और जिनमें अनार्य रक्त की मिलावट भी साफ़ है, जिन्होंने सातवाहनों के साम्राज्य के पतन के बाद राजत्व की सत्ता हासिल की. विश्णुपुरान में इस प्रदेश के नवनाग तथा विंध्यशक्ति कुलों का ज़िक्र है. उनमें से पहले का ज़िक्र एपीग्राफ़िक रेकार्ड्स में भी और शिलालेखों पर भी मिलता है, जिसमें उन्हें 'भारशिव' नाम दिया गया है, जिन्होंने गङ्गा की घाटी को जीत कर

کوٹی کو lift حاصل کرنا تھا. اگرچہ اس سمے میں اُن کو براہمنوں کے سمان کرم کانڈ کے حق حاصل نہیں تھے، پھر بھی جاتی کے مطابق یہ نیم بدلتے رہتے تھے. باگڑی لوگوں میں بھی براہمن ہیں. بنگال کے بونو اور سنتھال جاتیوں کو بھی براہمن پروہت — پجاری ملتے ہیں، اور اسی طرح چھوٹا ناگپور کے کلین کولوں (ہوس) کو بھی! اس سے آگے کی ترقی انہیں ملتی ہے، جبکہ انہیں اَست. شودروں کی کوٹی میں مان لیا گیا، اور وے ورنا شرم ویوستھا میں شامل کر لئے گئے. اس سمے اُن کو براہمن-ورن کے سمان کرم کانڈ کے حق حاصل ہوگئے. لیکن اس سے بھی زیادہ ترقی انہیں 'ست-شودر' بن جانے پر ملی. اس کے آگے کی سیڑھی تو پھر جاتی کی راج نیتک اور سماجک شکتی کے مطابق اُن کے چھتریہ یا براہمن مانے جانے پر منحصر تھی. کوئی بھی نشپکچھ وچارک اس بات سے انکار نہیں کر سکتا کہ ترقی کا یہ طریقہ انادی کال سے ہندو سماج میں چلا آ رہا ہے. اس طرح ہندو-دھرم ورنا آشرم سماج کے باہر سے بھی لوگوں کو قبول کرتا رہا ہے اور مدھیہ بھارت کے جنگل تو پراچین سمے سے اس پرکار کے دھرم-پریورتن کا استھان رہے ہیں. ہندو سماج کے سنکٹ کال میں وے انتیج اور نمن کوٹی کے شودر ہی اُسے بچانے کے لئے آگے آئے تھے. جب یہ لوگ اس پرکار شکھر پر پہونچ گئے، تو قدرتاً انہوں نے براہمنوں کے سارے آچار اپنا لئے، اور پروہتوں نے مہاکاویوں سے اُن کی ونشاولی بھی کھوج نکالی. اس پرکار ہندو سماج کے 'چندر ونشی' اور 'سوریہ ونشی' چھتریہ راجیوں کا اتہاس کے مدھیہ-یگ میں نرمان ہوا.

کنتو باہر کے حملوں نے اس قدرتی ترقی کے طریقے میں بادھا دی. شریر-وگیان شاستری ابٹ سن نے جاٹوں تتھا راجپوتوں کے رکت سمبندھوں کے بارے میں کہا ہے کہ پہلے تو کسی کٹمب یا قبیلے کا سردار اپنے باہوبل سے یا اور کسی طرح سے راجتو کے سنگھاسن پر قبضہ کرتا تھا، اور پھر اُس کے کٹمب کے لوگ بھی اُس کے ساتھ اُس اونچی شرینی میں پہونچ جاتے تھے. لیکن مسلمانوں کے آکرمنوں (حملوں) کے سمے سے راجتو کے اس طریقے میں رکاوٹ ہوگئی (صرف اُتر بھارت میں ہی). اس لئے اور ادھک چھتریوں یا راجپوتوں کا وکاس نہیں ہوا. لیکن مدھیہ اور دکچھنی بھارت میں ہمیں ایسی بہت سی جاتیاں ملتی ہیں جن کی پیدائش سندگدھ ہے اور جن میں اناریہ رکت کی ملاوٹ بھی صاف ہے، جنہوں نے ساتواہنوں کے سامراجیہ کے پتن کے بعد راجتو کی ستا حاصل کی. وشنوپران میں اس پردیش کے نوناگ تتھا وندھیہ شکتی کلوں کا ذکر ہے. اُن میں سے پہلے کا ذکر ایپیگرافک ریکارڈس میں بھی اور شلالیکھوں پر بھی ملتا ہے، جس میں انہیں 'بھارشِو' نام دیا گیا ہے، جنہوں نے گنگا کی گھاٹی کو جیت کر

फ़ैसला है. यह साम्राज्यवादी ताक़तों तथा औपनिवेशिक नीति की हां में हां मिलाने वाला नहीं है. इसलिये हम इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि इनसानों का एक ख़ास गिरोह, जो अपने आपको प्राचीन क़बीलों के अन्ध-विश्वासों और जंगली रिवाजों के पंजे से मुक्त करके नये वातावरन और नई उत्तेजना से असर लेने में समर्थ हो सकता है वह उन दूसरे गिरोहों से जो मानव जाति के आगे चलने वाले गिरोह के साथ क़दम मिलाकर चल नहीं सकते जरूर ही ज्यादा तरक़्क़ी कर जाता है. इसी सबब से, यह कहा जा सकता है कि कुछ लोग अधिक तरक़्क़ी कर जाते हैं जब कि बाक़ी लोग पिछड़े ही रहते हैं.

जाति या क़बीलों के बारे में यह साधारन मत बना लेने के बाद हमें भारत के इतिहास पर इसको परखना चाहिये. यह तो प्राचीन भारतीय साहित्य से अपने आप जाहिर है कि हमारे पूर्वज जानते थे कि अलग अलग तरह की संस्कृति के लोग देश में हैं. इसी कारन से याज्ञवल्क्य जैसे स्मृतिकारो ने राजाओं को जीती हुई जातियों के आचारों (देशाचार, लोकाचार) पर हमला करने की सलाह दी. इसी सूत्र को पकड़ कर शुक्र ने कहा कि मुक़ामी रीति रिवाजों का सम्मान करना चाहिये. जब कि उसके पहले गौतम जैसे स्मृतिकार ने यह भी कह दिया था कि मुक़ामी आचार (देश धर्म), क़बीले अथवा जाति-गत आचार (जाति-धर्म) और कुटुम्ब के आचार (कुल धर्म) को प्रमान रूप में क़ुबूल कर लेना चाहिये, यदि वे वेद-विरुद्ध न हों. (वैदिक रूल्स 9/20).

इस तरह संस्कृति की क़ानून की पोथियों,—स्मृतियों को देखते हुए हम इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि ब्राह्मनों ने हमेशा मिलावट और संयोग (दूसरों को अपने में मिलाने) की नीति का पालन किया. वे अलग अलग वंश-गत गिरोहों के आचारों को जबरन नश्ट करने के हक़ में नहीं थे. इसका नतीजा यह हुआ कि हिन्दुओं के आचारों मे अलहदगी बनी रही, जो आज भी एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में जाने पर मिलती है. इसी सूत्र के आधार को लेकर, स्मृतियों तथा शास्त्रों ने 'वर्णाश्रम-धर्म' के मुताबिक़ समाज को चार वर्नों में बांटा तथा 'अन्त्यजों' को बाहर ही रहने दिया. यही मेदस (Medes or Made's) या मेदास (मनु और यम संहिता) तथा भील (Bhillas) (ब्रह्म वैवर्त पुराण) हैं. इस तरह वह लोग आज के आदिम निवासियों से भी अपरिचित नहीं थे. शास्त्रों के मुताबिक़ सामाजिक परम्परा का सिलसिला इस प्रकार है—द्विज, सत्-शूद्र, असत्-शूद्र, अन्त्यज. हिन्दू समाज के इस निरन्तर विकास की छान बीन करने पर हमें मालूम होता है कि हिन्दू समाज में अन्त्यजों को जो पहली तरक़्क़ी हासिल हुई, वह उनका 'असत्' शूद्रों की सब से नीची

فیصلہ ھے . یہ سامراجیہوادی طاقتوں تتھا اپنویشک نیتی کی ھاں میں ھاں ملانے والا نہیں ھے . اس لئے ھم اِس نتیجہ پر پہونچتے ھیں کہ اِنسانوں کا ایک خاص گروہ' جو اپنے آپ کو پراچین قبیلوں کے آندھ وشواسوں اور جنگلی رواجوں کے پنجے سے مکت کرکے نئے واتاورن اور نئی اُتیجنا سے اثر لینے میں سمرتھ ھوسکتا ھے وہ اُن دوسرے گروھوں سے جو مانو جاتی کے آگے چلنے والے گروہ کے ساتھ قدم ملاکر چل نہیں سکتے ضرور ھی زیادہ ترقی کر جاتا ھے . اِسی سبب سے' یہ کہا جا سکتا ھے کہ کچھ لوگ آدھک ترقی کر جاتے ھیں جب کہ باقی لوگ پچھڑے ھی رھتے ھیں .

جاتی یا قبیلوں کے بارے میں یہ سادھارن مت بنا لینے کے بعد ھمیں بھارت کے اِتہاس پر اِس کو پرکھنا چاھئے . یہ تو پراچین بھارتیہ ساھتیہ سے اپنے آپ ظاھر ھے کہ ھمارے پوروج جانتے تھے کہ الگ الگ طرح کی سنسکرتی کے لوگ دیش میں ھیں. اِسی کارن سے یاگیہ والک جیسے اسمرتکاروں نے راجاؤں کو جیتی ھوئی جاتیوں کے آچاروں (دیشاچار' لوکاچار) پر حملہ کرنے کی صلاح دی. اِسی سوتر کو پکڑ کر شکر نے کہا کہ مقامی ریتی رواجوں کا سمان کرنا چاھئے. جب کہ اس کے پہلے گوتم جیسے اسمرتکار نے یہ بھی کہدیا تھا کہ مقامی آچار (دیش دھرم)' قبیلے اتھوا جاتی - گت آچار (جاتی - دھرم) اور کٹمب کے آچار (کل دھرم) کو پرمان روپ میں قبول کرلینا چاھئے' یدی وے وید ورُدھ نہ ھوں . (ویدک رولس 9/20).

اِس طرح سنسکرتی کی قانون کی پوتھیوں'—اسمرتیوں کو دیکھتے ھوئے ھم اِس نتیجے پر پہونچتے ھیں کہ براھمنوں نے ھمیشہ ملاوٹ اور سنیوگ (دوسروں کو اپنے میں ملانے) کی نیتی کا پالن کیا. وے الگ الگ ونش گت گروھوں کے آچاروں کو جبرن نشٹ کرنے کے حق میں نہیں تھے . اِس کا نتیجہ یہ ھوا کہ ھندوؤں کے آچاروں میں علیحدگی بنی رھی' جو آج بھی ایک پرانت سے دوسرے پرانت میں جانے پر ملتی ھے . اِسی سوتر کے آدھار کو لےکر' اسمرتیوں تتھا شاستروں نے 'ورناشرم دھرم' کے مطابق سماج کو چار ورنوں میں بانٹا تتھا انتیجوں' کو باھر ھی رھنے دیا . یہی میدس (Medes or Made's) یا میداس (منو اور یم سمہیتا) تتھا بھیل (Bhillas) (برھم ویورت پران) ھیں . اِس طرح وہ لوگ آج کے آدم نواسیوں سے بھی اپرچت نہیں تھے. شاشتروں کے مطابق سماجک پرمپرا کا سلسلہ اِس پرکار ھے—دوج' ست - شودر' است شودر' انتیج . ھندو سماج کے اِس نرنتر وکاس کی چھان بین کرنے پر ھمیں معلوم ھوتا ھے کہ ھندو سماج میں اِنتیجوں کو جو پہلی ترقی حاصل ھوئی' وہ اُن کا 'است' شودروں کی سب سے نیچی

ऐसे धमनी शिरा-केन्द्र हैं जो, ऐसा जाहिर होता है कि उन्हें अगर क़ुदरत ने सब के लिये कुछ ख़ासियतों से सम्पन्न किया था, फिर भी कृत्रिम रूप से दबाव डालकर उन से दूसरे काम भी लिये जा सकते हैं. इससे हमने यह सिद्ध कर दिया कि कोई भी ऐसी बिल्कुल न बदलने वाली शिरा-शक्तियां नहीं हैं, और वे सिर्फ़ सम्बन्ध क्रम से ही स्थिर हैं. यह मनोरंजक बात है कि बरसों की महत्वपूर्न खोज के ये नतीजे, एक निर्वासित जर्मन प्रोफ़ेसर ईचेन द्वारा इस जाति-सिद्धान्त की खोखली सत्ता के दिखावे के लिये लिखी हुई एक पुस्तक में इकट्ठा हैं. ("मास्को न्यूज़", जून 4, 1943). इस खोज ने मनुश्य की बनावट में वातावरन के प्रभाव पर ज़ोर दिया है. बर्लिन यूनिवर्सिटी के मनुश्य जाति-विज्ञान के स्वर्गीय (मरहूम) प्रो० वान लुशेन ने भी इस बात पर ज़ोर दिया था कि वातावरन ही जाति को ढालता है. अमेरिकन समाज-विज्ञान के पिता प्रो० लेस्टर एफ़० वार्ड ने कहा है कि दुनिया के नज़रिये में होने वाली तब्दीली एक जाति को भी बदल देती है. (देखो—एपलाइड सोशियालाजी). इस सबका मतलब यह है कि एक ख़ास गिरोह यानी 'जाति', अगर उसे वस्तुओं के नये मान दिये जायं और उसके जीवन सम्बन्धी विचारों में तब्दीली कर दी जाय, तो वह अपने आपको बदल देती है. दूसरे शब्दों में, यों कहिए कि, किसी जाति के मनोविज्ञान को बदला जा सकता है. इतिहास ने इस बात की बार बार साक्षी दी है. इस तरह की सबसे अहम तब्दीली आजकल यूरोप और एशिया के सोवियत यूनियन की जातियों में हो रही है.

इसलिये यह साफ़ है कि मनुश्यों के एक ख़ास गिरोह में जिसे जाति के नाम से पुकारा जाता है, कोई अपरिवर्त्तन-शील परम्परागत विशेशताएं नहीं होतीं. 'जाति' की परिभाशा इस प्रकार की जा सकती है कि "मानवों का वह ख़ास गिरोह जो एक ही प्रकार के भाशा सम्बन्धी तथा सांस्कृतिक बन्धनों से बंधा है" यानी एक ख़ानदानी इकाई है. गिरोह के भीतर भले ही अलग-अलग (Biotypes) यानी जातीय ख़सियतें हो सकती हैं. वंश क्रम से पूरी तरह से विशुद्ध लोगों का कोई गिरोह, यानी जिस में एक प्रकार का रक्त-मिश्रन (Biotype) हो, इस इनसानी दुनिया में मुशकिल है.

अन्तर्जातीय सम्बन्धों का तरीक़ा

आजकल के सोवियत के वंश-विज्ञान-शास्त्री कहते हैं कि मौजूदा जातियों, (यानी मानव गिरोह), प्राचीन क़बीलों के आपसी अन्तर्जातीय सम्बन्धों, ख़ून की मिलावट तथा आपसी सांस्कृतिक असरों से बनी हैं. उन्होंने साफ़ कहा है कि कोई भी जाति 'ऊंची' या 'नीची' नहीं है. ("मास्को-न्यूज़"—12, जनवरी 1944). यह निश्पक्ष विज्ञान का

ایسے دھمنی شرا - کیندر ہیں جو، ایسا ظاہر ہوتا ہے کہ انہیں اگر قدرت نے سب کے لئے کچھ خاصیتوں سے سمپن کیا تھا، پھر بھی کرترم روپ سے دباؤ ڈالکر اُن سے دوسرے کام بھی لئے جاسکتے ہیں. اِس سے ہم نے یہ سدھ کر دیا کہ کوئی بھی ایسی بالکل نہ بدلنے والی شرا - شکتیاں نہیں ہیں، اور وے صرف سمبندھ کرم سے ہی استھر ہیں. یہ منورنجک بات ہے کہ برسوں کی مہتوپورن کھوج کے یہ نتیجے ایک نرواست جرمن پروفیسر ایچین دوارا اِس جاتی - سدھانت کی کھوکھلی ستتا کے دکھاوے کے لئے لکھی ہوئی ایک پستک میں اکٹھا ہیں. ("ماسکو نیوز" جون 4، 1943). اِس کھوج نے منشیہ کی بناوٹ میں واتاورن کے پربھاؤ پر زور دیا ہے. برلن یونیورسٹی کے منشیہ جاتی - وگیان کے سورگیہ (مرحوم) پروفیسر وان لوشین نے بھی اِس بات پر زور دیا تھا کہ واتاورن ہی جاتی کو ڈھالتا ہے. امریکن سماج - وگیان کے پتا پروفیسر لیسٹر ایف وارڈ نے کہا ہے کہ دنیا کے نظریہ میں ہونے والی تبدیلی ایک جاتی کو بھی بدل دیتی ہے (دیکھو—اپلائڈ شوشیالاجی). اِس سب کا مطلب یہ ہے کہ ایک خاص گروہ یعنی 'جاتی' اگر اسے وستوؤں کے نئے مان دیئے جائیں اور اُس کے جیون سمبندھی وچاروں میں تبدیلی کردی جائے، تو وہ اپنے آپ کو بدل دیتی ہے. دوسرے شبدوں میں یوں کہئے کہ، کسی جاتی کے منووگیان کو بدلا جاسکتا ہے. اِتہاس نے اِس بات کی بار بار ساکشی دی ہے. اِس طرح کی سب سے اہم تبدیلی آجکل یورپ اور ایشیا کے سویت یونین کی جاتیوں میں ہو رہی ہے.

اِس لئے یہ صاف ہے کہ منشیوں کے ایک خاص گروہ میں جسے جاتی کے نام سے پکارا جاتا ہے، کوئی اپریورتن شیل پرمپراگت وشیشتائیں نہیں ہوتیں. 'جاتی' کی پری بھاشا اِس پرکار کی جاسکتی ہے کہ "مانووں کا وہ خاص گروہ جو ایک ہی پرکار کے بھاشا سمبندھی تتھا سانسکرتک بندھنوں سے بندھا ہے" یعنی ایک خاندانی اکائی ہے. گروہ کے بھیتر بھلے ہی الگ الگ (Biotypes) یعنی جاتیہ خاصیتیں ہوسکتی ہیں. ونش کرم سے پوری طرح سے وشدھ لوگوں کا کوئی گروہ، یعنی جس میں ایک ہی پرکار کا رکت مشرن (Biotype) ہو، اِس اِنسانی دنیا میں مشکل ہے.

انتر جاتیہ سمبندھوں کا طریقہ

آجکل کے سوویت کے ونش - وگیان - شاستری کہتے ہیں کہ موجودہ جاتیوں، (یعنی مانو گروہ)، پراچین قبیلوں کے آپسی انتر جاتیہ سمبندھوں، خون کی ملاوٹ تتھا آپسی سانسکرتک اثروں سے بنی ہیں. انہوں نے صاف کہا ہے کہ کوئی بھی جاتی 'اُونچی' یا 'نیچی' نہیں ہے ("ماسکو نیوز"—1944، جنوری 12). یہ نشپکش وگیان کا

भारत पर असर

अब हमें देखना चाहिये कि इन साम्राज्यवादी विचार-धाराओं का भारत पर क्या असर पड़ा. हम अपना इतिहास, समाज-विज्ञान और मनुष्य-जाति-विज्ञान सब कुछ अंगरेज वैज्ञानिकों की आंखों से देखते और पढ़ते हैं. हमें यह मानने पर मजबूर किया जाता है कि "वैदिक काल के लोग गोरी जातियों की एक शाखा थे जो इस गर्म महाद्वीप में कहीं दूर से आये थे. आजकल हमको सिखाया जा रहा है कि वेदों की यह गोरी जाति, उत्तरी यूरोप की नारडिक जाति या दूसरी किसी ठन्डे प्रदेश में निवास करने वाली जाति थी. फिर हमें यह मानने पर मजबूर किया जाता है कि हम प्राचीन भारत के यूरेशियन (वर्नसंकर जाति) हैं—जिसका जन्म नारडिक जाति तथा भारत की काली जातियों की मिलावट से हुआ है. नारडिक लोगों के अलावा, इसके फलस्वरूप, आज के भारतीयों के मातृवंश से सम्बन्ध रखने वाले निग्रो लोगों की खोज सारे भारत में की जा रही है. साम्राज्यवादी और उनके ऐजेन्ट विज्ञान का मुलम्मा चढ़ा कर इन बातों को कहते हैं, और हम हैरान होकर 'ठीक है' कह देते हैं.

इस तरह हमारे पूर्वजों ने अपने लिये जो कुछ कहा है उसको हमारे दिमाग़ से उखाड़ फेंकने की कोशिश की जाती है. बचपन से ही हमें वैज्ञानिक सत्य के इस जहर को पीने और पचाने पर मजबूर किया जाता है, और आज कुछ पीढ़ियां बीतते ही हम उन्हें भारत के सामाजिक इतिहास की ठीक शुरूआत मान बैठे हैं. लेकिन मौजूदा जमाने में कुछ विरोधी स्वर भी सुनाई पड़ रहे हैं. कुछ लोग वैदिक आर्यों के इस नारडिक-मूल की तरफ़ सन्देह करने लगे हैं; वे गुर्जर-प्रतिहारों का मूल खिजर-तुर्कों को, राजपूत तथा जाटों का मूल सकों को, तथा सिन्धु-घाटी की सभ्यता के मूल को अवैदिक मानने में संकोच करने लगे हैं.

जातिगत विशुद्धता

दूसरी ओर खुद यूरोप के विद्वान आज वैज्ञानिक जातियों की जन्म गत विशुद्धता में सन्देह करने लगे हैं. फिर वह नया सिद्धान्त, कि (Glandular Secretion) ग्रन्थि-रस खोपड़ी की हड्डियों की बनावट पर असर डालते हैं, मनुष्य-शरीर विज्ञान की परम्परागत मान्यता को चुनौती दे रहा है तथा आखरी तौर पर लेनिनग्राद के पावलोव इन्सटीट्यूट के वैज्ञानिकों ने शरीर की धमनियों और शिरा-जाल की खासियत (अर्थात् अपने को मौक़े के मुताबिक़ ढाल लेने की ताक़त) सम्बन्धी बरसों की खोज के बल पर ऐसे नतीजे निकाले हैं, जिनके बारे में शरीर-विज्ञान के आचार्य प्रो॰ पीटर अनोखिन का कहना है कि—"इस सवाल पर खोज करने से हमें यह यक़ीन हो गया है कि कुछ

بھارت پر اثر

اب ھمیں دیکھنا چاھئے کہ ان سامراجیہ وادی وچار - دھاراؤں کا بھارت پر کیا اثر پڑا . ھم اپنا اِتہاس' سماج - وگیان اور منشیہ - جاتی - وگیان سب کچھ انگریز ویگیانکوں کی آنکھوں سے دیکھتے اور پڑھتے ھیں . ھمیں یہ ماننے پر مجبور کیا جاتا ھے کہ "ویدک کال کے لوگ گوری جاتیوں کی ایک شاکھا تھے جو اِس گرم مہادیپ میں کہیں دور سے آئے تھے . آجکل ھمکو سکھایا جا رھا ھے کہ ویدوں کا یہ گوری جاتی' اُتری یورپ کی نارڈک جاتی یا دوسری کسی ٹھنڈے پردیش میں نواس کرنے والی جاتی تھی . پھر ھمیں یہ ماننے پر مجبور کیا جاتا ھے کہ ھم پراچین بھارت کے یوریشین (ورن سنکر جاتی) ھیں—جس کا جنم نارڈک جاتی تتھا بھارت کی کالی جاتیوں کے ملاوٹ سے ھوا ھے . نارڈک لوگوں کے علاوہ' اِس کے پھل سروپ' آج کے بھارتیوں کے ماتروَنش سے سمبندھ رکھنے والے نیگرو لوگوں کی کھوج سارے بھارت میں کی جا رھی ھے. سامراجیہ وادی اور اُن کے ایجنٹ وگیان کا ملمع چڑھاکر اِن باتوں کو کہتے ھیں' اور ھم حیران ھوکر 'ٹھیک ھے' کہہ دیتے ھیں .

اِس طرح ھمارے پورvجوں نے اپنے لئے جو کچھ کہا ھے اُس کو ھمارے دماغ سے اُکھاڑ پھینکنے کی کوشش کی جاتی ھے . بچپن سے ھی ھمیں ویگیانک ستیہ کے اِس زھر کو پینے اور پچانے پر مجبور کیا جاتا ھے' اور آج کچھ پیڑھیاں بیتتے ھی ھم انھیں بھارت کے سماجک اِتہاس کی ٹھیک شروعات مان بیٹھے ھیں . لیکن موجودہ زمانے میں کچھ ورودھی سور بھی سنائی پڑ رھے ھیں . کچھ لوگ ویدک آریوں کے اِس نارڈک مول کی طرف سندیہ کرنے لگے ھیں؛ وے گرجر - پرتیھاروں کا مول خضر ترکوں کو راجپوت تتھا جاٹوں کا مول سکوں کو تتھا سندھ گھاٹی کی سبھیتا کے مول کو اویدک ماننے میں سنکوچ کرنے لگے ھیں .

جاتی گت وشدھتا

دوسری اور خود یورپ کے ودوان آج ویگیانک جاتیوں کی جنم گت وشدھتا میں سندیہ کرنے لگے ھیں. پھر وہ نیا سدھانت' کہ (Glandular Secretion) گرنتھ - رس کھوپڑی کی ھڈیوں کی بناوٹ پر اثر ڈالتے ھیں' منشیہ - شریر وگیان کی پرم پراگت مانیتا کو چنوتی دے رھا ھے تتھا آخری طور پر لینن گراڈ کے پاؤلوو انسٹیٹیوٹ کے وگیانکوں نے شریر کی دھمنیوں اور شراجال کی خاصیت (ارتھات اپنے کو موقع کے مطابق ڈھال لینے کی طاقت) سمبندھی برسوں کی کھوج کے بل پر ایسے نتیجے نکالے ھیں' جن کے بارے میں شریر - وگیان کے آچاریہ پروفیسر پیٹر انوکھن کا کہنا ھے کہ—"اِس سوال پر کھوج کرنے سے ھمیں یہ یقین ھوگیا ھے کہ کچھ

भाशा-विभागों में बंटते ही, यूरोप की जातियां अलग अलग राश्ट्रों के रूप में दिखाई देने लगीं. फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति ने तो यूरोप की सामन्तशाही सभ्यता के कफ़न में आखरी कील का काम किया. इस महान क्रान्ति के नारे थे मानव की समानता और आज़ादी. जाति, धर्म और वर्ग का कोई भेद इसमें माना नहीं गया. फ़्रान्स की राज्य क्रान्ति का असर समूचे यूरोप पर पड़ा, और उन्नीसवीं सदी के राश्ट्रीय यूरोप का उदय उसी का नतीजा था. लेकिन उन्नीसवीं सदी के शुरू से ही कुछ देश अपने महाद्वीप के बाहर नवाबादियां बनाने लग गये थे. इस युग के पहले भी हालेन्ड, इन्गलैन्ड तथा फ़्रान्स ने अमरीका, एशिया तथा दूसरे स्थानों में उपनिवेश बनाये थे. लेकिन नेपोलियन के युद्धों के बाद तो आर्थिक ज़रूरतों ने यूरोप के देशों के पूंजीवादी वर्ग में यह भूमि की भूख तेज़ी से जगादी और दूसरी औद्योगिक क्रान्ति के बाद उद्योगवाद के उदय के साथ, तो उस महाद्वीप की, आर्थिक नुक़्ते नज़र से उन्नत जातियों में, उपनिवेशों के लिये छीना झपटी और खींचातानी शुरू हो गई.

इस औद्योगिक पूंजीवादी श्रेनी के उसूलों ने यूरोपीय चेतना का नज़रिया ही बदल दिया. वह पश्चिमी यूरोप, जो अब तक मानव जाति की आज़ादी के लिये क्रान्तियों का घर था, उसकी विचार धारा पूंजीवाद से प्रभावित होकर साम्राज्यवाद से जकड़ गई. इस प्रकार औपनिवेशिक साम्राज्यों के उदय के साथ, इस औपनिवेशीय साम्राज्यवाद की ज़रूरतों का पूरा करने के लिये नये विचारों की परम्पराएं गढ़ी गईं. इन नई राजनैतिक तथा सामाजिक विचार धाराओं का मूल-मन्त्र था 'क़ौम' का सवाल. अब लोगों की पहचान उनके चमड़े, बालों, आंखों, रंग, सिर तथा नाक की बनावट से की जाने लगी. इसका नतीजा यह हुआ कि कुछ जातियां ऊंची मान ली गईं तथा कुछ हीन और पिछड़ी हुई क़रार दे दी गईं. इसके अलावा उपनिवेशों के पराधीन लोगों को सदा क़ाबू में रखने के लिये और बहुत से सिद्धान्त गढ़े जाने लगे, जैसे "क़ौमी क़ाबलियत" "गोरी जातियों का बोझ", "जाति की परम्परागत पूंजी" वग़ैरा.

उन्नीसवीं सदी का आखरी हिस्सा इसी तरह के साम्राज्य-वादी हथियारों के प्रचार का काल था, जो वैज्ञानिक सचाइयों की शक्ल में हमारे सामने रखे जाते थे. आख़ीर में, हेगेल का यह विचार कि जर्मन जाति ही इनसानों में सबसे ऊंची है, मोर्चे पर लाया गया. इस सिद्धान्त के मुताबिक़ जर्मन जाति, यानी प्राचीन टयूटानिक (Teutonic) की औलाद ही, प्राचीन आर्यों के उत्तराधिकारी और मानव जाति में सब से ऊंचे थे. इस 'जर्मनवाद' ने ही बाद में 'नारडिकवाद' का रूप लिया, जिसने बाद में 'हेरेनवाल्क'—अर्थात स्वामी-जाति-सिद्धान्त का जामा पहना है.

بھاشا-وبھاگوں میں بنتے ہی، یورپ کی جاتیاں الگ الگ راشٹروں کے روپ میں دکھائی دینے لگیں. فرانس کی راجیہ-کرانتی نے تو یورپ کی سامنت شاہی سبھیتا کے کفن میں آخری کیل کا کام کیا. اِس مہان کرانتی کے نعرے تھے مانو کی سمانتا اور آزادی. جاتی، دھرم اور ورگ کا کوئی بھید اس میں مانا نہیں گیا. فرانس کی راجیہ کرانتی کا اثر سمچے یورپ پر پڑا، اور انیسویں صدی کے راشٹریہ یورپ کا اُدے اُسی کا نتیجہ تھا. لیکن انیسویں صدی کے شروع سے ہی کچھ دیش اپنے مہادیپ کے باہر نوآبادیاں بنانے لگ گئے تھے. اِس یگ کے پہلے بھی ہالینڈ، انگلینڈ تتھا فرانس نے امریکہ، ایشیا تتھا دوسرے استھانوں میں اپنیویش بنائے تھے. لیکن نیپولین کے یدھوں کے بعد تو آرتھک ضرورتوں نے یورپ کے دیشوں کے پونجی وادی ورگ میں یہ بھومی کی بھوکھ تیزی سے جگا دی اور دوسری اودیوگک کرانتی کے بعد اُدیوگ واد کے اُدے کے ساتھ، تو اُس مہادیپ کی، آرتھک نقطہ نظر سے اُنت جاتیوں میں، اپنیویشوں کے لئے چھینا جھپٹی اور کھینچاتانی شروع ہوگئی.

اِس اودیوگک پونجی وادی شرینی کے اصولوں نے یورپیہ چیتنا کا نظریہ ہی بدل دیا. وہ پچھمی یورپ، جو اب تک مانو جاتی کی آزادی کے لئے کرانتیوں کا گھر تھا، اُس کی وچار دھارا پونجی واد سے پربھاوت ہوکر سامراجیہ واد سے جکڑ گئی. اِس پرکار اوپنیویشک سامراجیوں کے اُدے کے ساتھ، اِس اپنیویشیہ سامراجیہ واد کی ضرورتوں کو پورا کرنے کے لئے نئے وچاروں کی پرمپرائیں گڑھی گئیں. اِن نئی راجنیتک تتھا سماجک وچار دھاراؤں کا مول منتر تھا 'قوم' کا سوال. اب لوگوں کی پہچان اُن کے چمڑے، بالوں، آنکھوں، رنگ، سر تتھا ناک کی بناوٹ سے کی جانے لگی. اِس کا نتیجہ یہ ہوا کہ کچھ جاتیاں اُونچی مان لی گئیں. تتھا کچھ ہین اور پچھڑی ہوئی قرار دے دی گئیں. اِس کے علاوہ اپنیویشوں کے پرادھین لوگوں کو سدا قابو میں رکھنے کے لئے اور بہت سے سدھانت گڑھے جانے لگے، جیسے "قومی قابلیت" "گوری جاتیوں کا بوجھ" "جاتی کی پرمپراگت پونجی" وغیرہ.

اُنیسویں صدی کا آخری حصہ اِسی طرح کے سامراجیہ وادی ہتھیاروں کے پرچار کا کال تھا، جو ویگیانک سچائیوں کی شکل میں ہمارے سامنے رکھے جاتے تھے. آخیر میں، ہیگل کا یہ وچار کہ جرمن جاتی ہی اِنسانوں میں سب سے اُونچی ہے، مورچے پر لایا گیا. اِس سدھانت کے مطابق جرمن جاتی، یعنی پراچین ٹیوٹانک (Teutonic) کی اولاد ہی، پراچین آریوں کے اُترادھیکاری اور مانو جاتی میں سب سے اُونچے تھے. اِس 'جرمن واد' نے ہی بعد میں 'نارڈک واد' کا روپ لیا، جس نے بعد میں 'ہیرین والک'—ارتھات سوامی-جاتی-سدھانت کا جامہ پہنا ہے.

भारत की पिछड़ी हुई जातियों का सवाल

डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त

इनसानी नस्लों की साइन्स से पता चलता है कि आदिम मानव जातियों को जब अपने क़बीले के बाहर के अनजान आदमियों से काम पड़ता था तो उनको उन आदमियों के बारे में सिर्फ़ इतना ही जानने की ज़रूरत होती थी कि वह उनके अपने क़बीले का है या नहीं.

इसी समाजी तथा मनोवैज्ञानिक ख़्याल ने प्राचीन हिन्दुओं को अपने क़ौमी समाज को दूसरों से अलहदा करने के लिये अपने को 'आर्य' नाम से ज़ाहिर करने का विचार दिया. प्राचीन पारसी लोगों ने भी अपने तथा ईरान के बाहर रहने वाले दूसरे लोगों के बीच इसी तरह का एक अन्तर रखा और उन्हें 'दाहल' (Dahal) और 'साकल' (Sacal) नाम से पुकारा. इसी तरह प्राचीन यहूदियों ने अपने आपको अपने फ़िरके या समाज से बाहर वाले लोगों से जो 'जेन्टाइल्स' (Gentiles) के नाम से पुकारे जाते थे, अलग रखा. और इसी ढंग से प्राचीन ग्रीक-निवासियों में हेलेन के ख़ानदान वाले अपने को 'हेलेनीज़' और दूसरों को 'बर्बर' (Barbarians) कहते थे.

किसी अजनबी को अपने फ़िरक़े से बाहर समझने की यह भावना आज तक मौजूद है; और इसमें सन्देह नहीं कि उनकी ज़्यादातर मुसीबतों का सबब यही अपने समुदाय के बाहर के लोगों को अजनबी समझने की भावना है.

इसी भावना के सबब पुराने धर्मों के अलग अलग क़ौमी आधार बन गये हैं. सिर्फ़ उस काल में आकर जबकि संसार में बौद्ध, ईसाई तथा इसलाम जैसे सार्वभौम धर्मों का जन्म हुआ, तब उनकी सब को मिलाने और आत्मसात करने की ताक़त ही उनके भक्तों या पैरोकारों की इस 'मेरे' 'तेरे' की भावना को कुछ सीमा तक कम कर सकी. इस तरह की चिन्ता-धारा के फलस्वरूप धर्म क़ौमियत का आधार बन गया. इसने लोगों को दूसरों को अपना भाई मानना सिखाया, लेकिन सिर्फ़ उसी दशा में जब कि वे एक ही धर्म के मानने वाले हों. पच्छिमी एशिया में यह भावना अब तक मौजूद है, और कुछ हद तक पूर्वी यूरोप में भी. एक धर्म के ज़रिये एकता की इस भावना को लेकर मंझले ज़माने में और आज भी युद्ध और क़त्लेआम हुए हैं और हो रहे हैं.

राष्ट्र

लेकिन यूरोपियन संस्कृति के नये जनम और क्रान्ति के युग के साथ, तथा जातियों के मुख़्तलिफ़ राज्यों और

بھارت کی پچھڑی ھوئی جاتیوں کا سوال

ڈاکٹر بھوپیندرناتھ دت

اِنسانی نسلوں کی سائنس سے پتہ چلتا ھے کہ آدم مانو جاتیوں کو جب اپنے قبیلے کے باھر کے انجان آدمیوں سے کام پڑتا تھا تو اُن کو اُن آدمیوں کے بارے میں صرف اتنا ھی جاننے کی ضرورت ھوتی تھی کہ وہ اُن کے اپنے قبیلے کا ھے یا نہیں .

اِسی سماجی تتھا منووگیانک خیال نے پراچین ھندوؤں کو اپنے قومی سماج کو دوسروں سے علیحدہ کرنے کے لئے اپنے کو 'آریہ' نام سے ظاھر کرنے کا وچار دیا . پراچین پارسی لوگوں نے بھی اپنے تتھا ایران کے باھر رھنے والے دوسرے لوگوں کے بیچ اسی طرح کا ایک انتر رکھا اور انھیں 'داھل' (Dahal) اور 'ساکل' (Sacal) نام سے پکارا . اِسی طرح پراچین یہودیوں نے اپنے آپ کو اپنے فرقے یا سماج سے باھر والے لوگوں سے جو 'جینٹائلس' (Gentiles) کے نام سے پکارے جاتے تھے' الگ رکھا . اور اِسی ڈھنگ سے پراچین گریک - نواسیوں میں ھیلین کے خاندان والے اپنے کو 'ھیلینیز' اور دوسروں کو 'بربر' (Barbarians) کہتے تھے .

کسی اجنبی کو اپنے فرقے سے باھر سمجھنے کی یہ بھاؤنا آج تک موجود ھے؛ اور اس میں سندیہ نہیں کہ اُن کی زیادہتر مصیبتوں کا سبب یہی اپنے سمودائے کے باھر کے لوگوں کو اجنبی سمجھنے کی بھاؤنا ھے .

اِسی بھاؤنا کے سبب پرانے دھرموں کے الگ الگ قومی آدھار بن گئے ھیں . صرف اُس کال میں جاکر جب کہ سنسار میں بودھ' عیسائی تتھا اِسلام جیسے ساروبھوم دھرموں کا جنم ھوا' تب اُن کی سب کو ملانے اور آتمسات کرنے کی طاقت ھی اُن کے بھکتوں یا پیروکاروں کی اِس 'میرے' - 'تیرے' کی بھاؤنا کو کچھ سیما تک کم کرسکی . اس طرح کی چنتا - دھارا کے پھل سروپ دھرم قومیت کا آدھار بن گیا . اُس نے لوگوں کو دوسروں کو اپنا بھائی ماننا سکھایا' لیکن صرف اُسی دشا میں جب کہ وے ایک ھی دھرم کے ماننے والے ھوں. پچھمی ایشیا میں یہ بھاؤنا اب تک موجود ھے' اور کچھ حد تک پوربی یورپ میں بھی . ایک دھرم کے ذریعہ ایکتا کی اِس بھاؤنا کو لیکر منجھلے زمانے میں اور آج بھی یدھ اور قتل عام ھوئے ھیں اور ھورھے ھیں .

راشٹر

لیکن یوروپین سنسکرتی کے نئے جنم اور کرانتی کے یگ کے ساتھ' تتھا جاتیوں کے مختلف راجیوں اور

सरमद का तीसरा अक़ीदा यह था कि इस सर्वोच्च धर्म तक पहुंचने के लिये रूढ़ियों और परम्पराओं के बन्धनों को तोड़ना ज़रूरी है जो इनसान को अपने सड़े गले मज़हबों से बांध रखती हैं और इसीलिये वे कहते हैं—

तर्क करदम चाराहाए जुमला अज़ मावाए ख़ेश
नूरे हक़ रा दीदाअम अज़ ज़ेर ता बालाए ख़ेश
गर तु मी ख्वाही चुनी हमशां जुदा अज़ जाए ख़ुद
ता बबीनी मज़हरे हक़ जुम्ला सर ता पाए ख़ेश

यानी—

"मैं सब रूढ़ियों के साथ अपने सम्बन्ध का त्याग करता हूं;
मैं अपने सर से पैर तक सत्य की रोशनी को देख रहा हूं;
अगर तू मेरी ही तरह हो जाना चाहता है तो अपनी जगह छोड़ दे;
ताकि तू सत्य के ज़हूर को मेरी ही तरह देख सके."

सरमद का चौथी अक़ीदा यह था कि पैग़म्बरों, अवतारों, और सब धर्मों के संस्थापकों के लिये उनके दिल में यकसां इज़्ज़त थी. उन्होंने कृष्ण और मोहम्मद, राम और लछमन की यकसां तारीफ़ के गीत गये हैं, क्योंकि इन महापुरुशों ने एक ही सच्चाई का प्रचार किया है. सत्य एक ही है अगरचे वह अलग अलग नाम रूपों में ज़ाहिर हुआ है. वे ढोंगी मुल्लाओं, पुरोहितों, पंडितों और उपाध्यायों के ख़िलाफ़ थे जो जनता की धार्मिक भावनाओं से बेजा फ़ायदा उठाते हैं. इनके बारे में सरमद कहते हैं—

यारां च क़द्र राहे दोरंगी दारन्द
मसहफ़ व बग़ल दीने फ़िरंगी दारन्द
पैवस्ता बहम चो माहरहाए शतरंज
दर दिलहम फ़िक्र ख़ाना जंगी दारन्द

यानी—

"यार लोग किस क़दर दोरंगी चाल चलते हैं!
बग़ल में क़ुरान है और मज़हब फ़िरंगियों का है!
हमेशा शतरञ्ज के मोहरों की तरह
ये लोगों को लड़ाने की तरकीबें सोचते रहते हैं."

सरमद आने वाले ज़माने को देख सकते थे. उस समय का भारत उनकी शिक्षा पर चलने में लाचार था और शायद आज का भारत भी उनकी शिक्षा पर चलने में मजबूर है लेकिन मज़हबे इन्सानियत यानी प्रेम धर्म के जिन उसूलों का सरमद ऐलान कर गये हैं उन उसूलों की पाक त्रिवेनी में आज स्नान करके ही इनसानी दुनिया को निजात मिल सकती है.

سرمد کا تیسرا عقیدہ یہ تھا یہ اِس سروچ دھرم تک پہنچنے کے لئے روڑھیوں آور پرمپراؤں کے بندھنوں کو توڑنا ضروری ھے جو اِنسان کو اپنے سڑے گلے مذھبوں سے باندھ رکھتی ھیں اور اس لئے وے کہتے ھیں—

ترک کردم چارہ ھائے جملہ از ماوائے خویش
نور حق را دیدہ ام از زیرتا بالائے خویش
گر تو می خواھی چنیں ھم شاں جدا از جائے خود
تابہ بینی مظہر حق جملہ سر تا پائے خویش

یعنی—

" میں روڑھیوں کے ساتھ اپنے سمبندھ کا تیاگ کرتا ھوں؛
میں اپنے سر سے پیر تک ستیہ کی روشنی کو دیکھ رھا ھوں؛
اگر تو میری ھی طرح ھونا چاھتا ھے تو اپنی جگہ چھوڑ دے؛
تاکہ تو ستیہ کے ظہور کو میری ھی طرح دیکھ سکے ."

سرمد کا چوتھا عقیدہ یہ تھا کہ سب پیغمبروں، اوتاروں اور سب دھرموں کے سنستھاپکوں کے لئے اُن کے دل میں یکساں عزت تھی . انھوں نے کرشن اور محمد، رام اور لچھمن کی یکساں تعریف کے گیت گائے ھیں، کیونکہ اِن مہاپرشوں نے ایک ھی سچائی کا پرچار کیا ھے . ستیہ ایک ھی ھے اگرچہ وہ الگ الگ نام روپوں میں ظاھر ھوا ھے . وے ڈھونگی ملاؤں پروھتوں، پنڈتوں اور اپادھیاؤں کے خلاف تھے جو جنتا کی دھارمک بھاؤناؤں سے بیجا فائدہ اُٹھاتے ھیں . اِن کے بارے میں سرمد کہتے ھیں—

یاراں چہ قدر راہ دو رنگی دارند
مصحف بہ بغل دین فرنگی دارند
پیوستہ بہم چو مہرھائے شطرنج
در دلہم فکر خانہ جنگی دارند

یعنی—

" یار لوگ کس قدر دو رنگی چال چلتے ھیں !
بغل میں قرآن ھے اور مذھب فرنگیوں کا ھے !
ھمیشہ شطرنج کے مہروں کی طرح
یہ لوگوں کو لڑانے کی ترکیبیں سوچتے رھتے ھیں."

سرمد آنے والے زمانے کو دیکھ سکتے تھے . اس سمے کا بھارت اُن کی شکشا پر چلنے میں لاچار تھا اور شاید آج کا بھارت بھی اُن کی سکشا پر چلنے میں مجبور ھے لیکن مذھب اِنسانیت یعنی پریم دھرم کے جن اصولوں کا سرمد اعلان کر گئے ھیں اُن اصولوں کی پاک تریوینی میں آج اسنان کرکے ھی انسانی دنیا کو نجات مل سکتی ھے .

हमवारा चिरा दर पये ओ मी गरदी
सरमद अगर ओ खुदास्त खुद मी आयद

यानी—

"ऐ सरमद ! अगर उस में वफ़ा है तो वह खुद आयेगा,
और अगर उसका आना मुनासिब है तो वह खुद आयेगा,
तुम रात-दिन इसे खोजते क्यों भटकते फिरते हो ?
ऐ सरमद ! अगर वह खुदा है तो वह खुद आयेगा."

सरमद की इस ऊपर की रुबाई में तमाम धर्म मज़हबों का सार निचुड़ कर इकट्ठा हो गया है. हिन्दू धर्म का विश्वास है कि भक्त के इशारे पर भगवान नाचते हैं, यही इसलाम की स्पिरिट है और ईसाई धर्म की इसी भावना को मशहूर अंग्रेज़ रहस्यवादी कवि टामसन ने अपनी पुस्तक "Hound of Heaven" में ज़ाहिर किया है. अपने अन्दर ही खुदा के नूर को देखना सब से ऊंचा मज़हब है.

सरमद उसूली आदमी थे. वे सच्चे अर्थों में सर्वधर्म समभावी थे. अगर धर्म ऊंची भावनाओं का नाम है तो वे सर से पैर तक धार्मिक थे. अकबर की तरह वे हिकमते अमल नहीं जानते थे. उनकी कोशिशों की क़ीमत महज़ ऐतिहासिक नहीं है. उनकी क़ीमत आध्यात्मिक (इखलाक़ी) है और भारत के फ़िरक़ापरस्ती के सवाल के हल करने में उनके धार्मिक सिद्धान्तों का आज भी सफलतापूर्वक उपयोग हो सकता है. इस नुक़्ते नज़र से उनके यह दो सिद्धान्त बहुत महत्वपूर्न है.

(1) उनकी धार्मिक उदारता पन्थों और फ़िरक़ों के झगड़ों से ऊपर उठकर सभी धर्मों में एक समान सच्चाई के दर्शन करती है. सरमद "एक साथ ही अपने का आतिश-परस्त, यहूदी, ईसाई, बुतपरस्त और मुसलमान कहते थे." उन्होंने सभी धर्मों की मौलिक सच्चाई को देख लिया था.

(2) उन्हें सब धर्म मज़हबों की एकता में विश्वास था. उन्हें ईश्वर की एकता में विश्वास था और वे सब धर्मों में उसी एक ईश्वर का ज़हूर देखते थे.

धर्मों के गोरखधन्धे की छानबीन करते हुए सरमद कहते हैं—

आशिक़ो इश्क़ बुतो बुतगरो अय्यारे कीस्त
काबओ दैरो मसजिद हमाजा तारीकीस्त
गर दर आई ब चमन वहदते यकरंगी बीं
ग़ौर कुन आशिक़ो माशूक़ो गुलोखार यकीस्त

यानी—

"प्रियतम और प्रेम, मूर्ति और मूर्ति गढ़ने वाला कौन है ?
काबा, बुतखाना और मसजिद सब जगह अंधेरा है !
अगर तू खुदाई एकता के चमन में आकर देखे;
तो तू पायेगा कि प्रियतम और प्रियतमा, फूल और काटें सब एक ही हैं.

ھموارہ چرا در پئے او می گردی
سرمد اگر او خداست خود می آید

یعنی—

" اے سرمد ! اگر اُس میں وفا ھے تو وہ خود آئے گا
اور اگر اُس کا آنا مناسب ھے تو وہ خود آئے گا
تم رات دن اُسے کھوجتے کیوں بھٹکتے پھرتے ھو ؟
اے سرمد ! اگر وہ خدا ھے تو خود آئے گا ."

سرمد کی اِس اوپر کی رباعی میں تمام دھرم مذھبوں کا سار نچوڑ کر اکٹھا ھوگیا ھے . ھندو دھرم کا وشواس ھے کہ بھکت کے اِشارے پر بھگوان ناچتے ھیں' یہی اِسلام کی اِسپرٹ ھے اور عیسائی دھرم کی اِسی بھاؤنا کو مشہور انگریز رھسیہ وادی کوی ٹامسن نے اپنی پستک "Hound of Heaven" میں ظاھر کیا ھے . اپنے اندر ھی خدا کے نور کو دیکھنا سب سے اونچا مذھب ھے .

سرمد اصولی آدمی تھے . وے سچے ارتھوں میں سرودھرم سمبھاوی تھے . اگر دھرم اونچی بھاؤناؤں کا نام ھے تو وہ سر سے پیر تک دھارمک تھے . اکبر کی طرح وہ حکمت عمل نہیں جانتے تھے . اُن کی کوششوں کی قیمت محض اتہاسک نہیں ھے . اُن کی قیمت ادھیاتمک (اخلاقی) ھے اور بھارت کے فرقہ پرستی کے سوال کے حل کرنے میں اُن کے دھارمک سدھانتوں کا آج بھی سپھلتا پوروک اُپیوگ ھو سکتا ھے . اِس نقطہ نظر سے اُن کے یہ دو سدھانت بہت مہتو پورن ھے—

(1) اُن کی دھارمک اُدارتا پنتھوں اور فرقوں کے جھگڑوں سے اوپر اُٹھکر سبھی دھرموں میں ایک سمان سچائی کے درشن کرتی ھے . سرمد " ایک ساتھ ھی اپنے کو آتش پرست' یہودی' عیسائی' بت پرست اور مسلمان کہتے تھے ." انھوں نے سبھی دھرموں کی مولک سچائی کو دیکھ لیا تھا .

(2) انھیں سب دھرم مذھبوں کی ایکتا میں وشواس تھا . اِنھیں ایشور کی ایکتا میں وشواس تھا اور وے سب دھرموں میں اُسی ایک ایشور کا ظہور دیکھتے تھے .

دھرموں کے گورکھ دھندھے کی چھان بین کرتے ھوئے سرمد کہتے ھیں—

عاشق و عشق بت و بت گر و عیارے کیست
کعبہ و دیر و مسجد ھمہ جا تاریکیست
گر در آئی بہ چمن وحدت یکرنگی بیں
غور کن عاشق و معشوق و گل و خار یکیست

یعنی—

"پریتم اور پریم' مورتی اور مورتی گڑھنے والا کون ھے؟
کعبہ' بت خانہ اور مسجد سب جگہ اندھیرا ھے!
اگر تو خدائی ایکتا کے چمن میں آ کر دیکھے'
تو تو پائیگا کہ پریتم اور پریتما' پھول اور کانٹے سب ایک ھی ھیں.

था और जन्नत की बादशाहत हासिल करना था. दुनिया की इस नाशमान बादशाहत से वह बहुत ऊंचा उठ गया था. काश सरमद की पेशीनगोई पूरी हो गई होती तो भारत की इन तीन सदियों का इतिहास सुनहरे हरफों में लिखा गया होता. भारतीय राष्ट्रीयता ने दारा के पतन के बाद सरमद की शहादत से जो ज़बरदस्त नुक़्सान उठया उसका तख़मीना आसानी से नहीं लगाया जा सकता. औरङ्गज़ेब ने मुल्लाओं के फ़तवे पर ज़ाहिरा इस बिना पर सरमद को मौत की सजा दी कि "वह इसलाम छोड़ कर दिगम्बर मुनि हो गये थे" पर दरअसल दारा के प्रति सरमद का प्रेम ही औरंगज़ेब की आंखों में खटक रहा था.

सरमद अनासक्त थे और सच्चे अर्थों में अपरिग्रही थे. जिसने लखूखा रुपयों की जायदाद ग़रीबों में तक़सीम करवा दी हो उसे फिर चार गिरह लंगोटी से कोई लगाव रह सकता था? जिसकी भावनायें बच्चों की तरह निर्मल हो गई हों उसमें कहीं इन्द्रिय-जनित जिन्सी वासनायें बाक़ी रह सकती हैं? जिसने प्रेम का चोला पहन लिया हो क्या उसे फिर तन ढकने के लिये कपड़ों की जरूरत रह जाती है? सरमद के हृदय में देह-जनित शर्म की कोई गुञ्जाइश ही न रह गई थी और तभी वह औरंगज़ेब के सवाल करने पर गर्व के साथ अपने दिगम्बर वेश पर कहते हैं—

आंकस कि तुरा ताजे जहांबानी दाद
मारा हमां असबाबे परीशानी दाद
पोशां लिबास हर केरा ऐबे दाद
बेऐब रा लिबासे उरियानी दाद

यानी—

"जिसने कि तुझे बादशाहत का ताज बख़्शा
उसी ने हमें परेशानियां बख़्शीं;
जिस में उसने कुछ ऐब देखे उसे कपड़े पहनाये
और बे ऐबों को उसने दिगम्बरी का लिबाभ दिया."

यों तो सरमद ने इसलाम की तारीफ़ में भी बहुत कुछ कहा है लेकिन उनकी सब से सुन्दर रुबाइयां वही हैं जिस में उन्होंने इसलाम और हिन्दू धर्म का मेल जोल किया है. दोनों धर्मों की रूढ़ियों और कर्म कान्डों को छोड़कर उन्होने दोनों धर्मों के बुनियादी उसूलों की मिलावट पर जोर दिया है. उन्ही तत्त्वों के अन्दर उन्होंने अल्लाह के ज़हूर का दर्शन किया है. अल्लाह की दिखावटी परिस्तिश के बजाये अल्लाह की राह में साधना करने में ही उनका ऐतक़ाद था. अपनी राह की सच्चाई में इन्हें इतना असीम विश्वास था कि वे समझते थे कि ईश्वर अपने आप उनकी ख़बर लेगा. वे अपनी एक रुबाई में कहते हैं—

सरमद अगरश वफ़ास्त ख़ुद मी आयद
वर आमदनश बजास्त ख़ुद मी आयद

تھا اور جنت کی بادشاہت حاصل کرنا تھا ۔ دنیا کی اِس ناشمان بادشاہت سے وہ بہت اُونچا اُٹھ گیا تھا ۔ کاش سرمد کی پیشینگوئی پوری ہوگئی ہوتی تو بھارت کی اِن تین صدیوں کا اِتہاس سنہرے حرفوں میں لکھا گیا ہوتا ۔ بھارتیہ راشٹریتا نے دارا کے پتن کے بعد سرمد کی شہادت سے جو زبردست نقصان اُٹھایا اُس کا تخمینہ آسانی سے نہیں لگایا جاسکتا ۔ اورنگزیب نے مسلمانوں کے فتوی پر ظاہرہ اِس بنا پر سرمد کو موت کی سزادی کہ "وہ اِسلام چھوڑکر دگمبرمنی ہوگئے تھے" پر دراصل دارا کے پرتی سرمد کا پریم ھی اورنگزیب کی آنکھوں میں کھٹک رہا تھا ۔

سرمد آناسکت تھے اور سچے ارتھوں میں اپریگرھی تھے ۔ جس نے لکھوکھا روپیوں کی جائداد غریبوں میں تقسیم کروادی ھو اُسے پھر چار گرہ لنگوٹی سے لگاؤ رہ سکتا تھا؟ جس کی بھاونائیں بچوں کی طرح نرمل ھوگئیں ھوں اُس میں کہیں اندریہ - جنت (جنسی) واسنائیں باقی رہ سکتی ھیں؟ جس نے پریم کا چولا پہن لیا ھو کیا اُسے پھر تن ڈھکنے کے لئے کپڑوں کی ضرورت رہ جاتی ھے؟ سرمد کے ہردے میں دیہہ جنت شرم کی کوئی گنجائش ھی نہ رہ گئی تھی اور تبھی وہ اورنگزیب کے سوال کرنے پر گرو کے ساتھ اپنے دگمبر ویش پر کہتے ھیں—

آنکس کہ ترا تاج جہانبانی داد
مارا ھمہ اسباب پریشانی داد
پوشاں لباس ھرکرا عیبے داد
بےعیب را لباس عریانی داد

یعنی—

"جس نے کہ تجھے بادشاہت کا تاج بخشا
اُسی نے ھمیں پریشانیاں بخشیں ۔
جس میں اُس نے کچھ عیب دیکھے اُسے کپڑے پہنائے
اور بے عیبوں کو اُس نے دگمبری کا لباس دیا ۔"

یوں تو سرمد نے اسلام کی تعریف میں بھی بہت کچھ کہا ھے لیکن اُن کی سب سے سندر رباعیاں وھی ھیں جن میں اُنھوں نے اسلام اور ھندو دھرم کا میل جول کیا ھے ۔ دونوں دھرموں کی روڑھیوں اور کرم کانڈوں کو چھوڑ کر اُنھوں نے دونوں دھرموں کے بنیادی اُصولوں کی ملاوٹ پر زور دیا ھے ۔ انھیں تتوں کے اندر اُنھوں نے اللہ کے ظہور کا درشن کیا ھے ۔ اللہ کی دکھاوٹی پرستش کے بجائے اللہ کی راہ میں سادھنا کرنے میں ھی اُن کا اعتقاد تھا ۔ اپنی راہ کی سچائی میں اُنھیں اتنا اسیم وشواس تھا کہ وے سمجھتے تھے کہ ایشور اپنے آپ اُن کی خبر لے گا ۔ وے اپنی ایک رباعی میں کہتے ھیں—

سرمد اگرش وفاست خود می آید
ور آمدنش بجاست خود می آید

सरमद के इस सवाल से बहुत से रूढ़िवादी मुसलमानों ने सरमद पर मूर्ति पूजक होने का इलजाम लगाकर उनकी निन्दा की है और सरमद के बहुत से हिन्दू प्रशंसकों ने उन्हें हिन्दू समझ कर उनकी तारीफ़ की है. लेकिन असलियत यह है कि वह निन्दा-स्तुति दोनों से बहुत ऊंचे उठ गये थे. हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों के बुनियादी उसूल उनके रोम-रोम में पैवस्त थे. उन्हें अल्लाह और रसूल में सचमुच कोई खता नहीं दिखाई दी थी क्योंकि उन्होंने सदा रसूल की तारीफ़ ही की है. ऊपर की रुबाई में आज़ाद-ख़याली की वही झलक है जो ईरान के सूफ़ियों और मशहूर अङ्गरेजी कवि शेली की कविताओं में हमें मिलती है. रूढ़ियों में जकड़ी हुई दुनिया जिस चीज़ को धर्म कहती है उसके मुक़ाबले में इन लोगों ने अपने आज़ाद मानव धर्म को 'कुफ़्र' कहकर पुकारा है. इनका धर्म रूढ़ियों से बोझिल नहीं, प्रेम का धर्म है. जब मौलवियों ने सरमद पर 'दिगम्बर मुनि' होने का इलज़ाम लगाया तो सरमद ने जवाब दिया—

शाहे शाहांनेम जाहिद चूं तो उरियां नेस्तम
जौक़ो शौक़ो शोरिशम लेकिन परीशां नेस्तम
बुतपरस्तम काफ़िरम अज़ अहले ईमां नेस्तम
सूए मसजिद मी रवम अम्मा मुसलमां नेस्तम

यानी—

"ऐ जाहिद मैं राज राजेश्वर हूं, मैं तेरी तरह नङ्गा नहीं हूं;
मैं जौक़, शौक़ और शोरिश हूं, पर तेरी तरह परेशान नहीं हूं;
मैं मूर्ति पूजक हूं, काफ़िर हूं और ईमान वालों में से नहीं हूं
मैं मसजिद की तरफ़ जा रहा हूं पर मैं मुसलमान नहीं हूं !"

सरमद नङ्गे-भिखमङ्गों के बीच जामा मसजिद की सीढ़ियों को ही अपना घर बनाये हुये थे पर फिर भी वह रूढ़ि-अर्थों में मुसलमान नहीं थे. वह जामा मसजिद में भी अपनी बुतपरस्ती ले जाना चाहते थे.

दिल्ली में युवराज दाराशिकोह ने सरमद का प्रेम पूर्वक स्वागत किया. दारा उनकी "बेहद इज़्ज़त करते थे" और "अकसर इस दिगम्बर मुनि की सेवा में हाज़िर होते थे." सरमद और सरमद के मशहूर हिन्दू योगी दोस्त लालदास का दारा पर बेइन्तहा असर पड़ा जिसकी बदौलत दारा की नज़रों से हिन्दू और मुसलमान का फ़र्क़ मिट गया और दारा के हृदय से मानव प्रेम, मज़हबे इश्क़ की वह धारा फूटी जिसने भारत के समाजी आसमान को यकरङ्गी बना दिया. दारा ने अपनी मशहूर किताब "मज्मा-उल-बहरैन" (दो समुन्दरों के सङ्गम) में इसलामी सूफ़ीवाद और वेदान्ती रहस्यवाद का सुन्दर मेल जोल किया है. सरमद ने पेशीनगोई की थी कि शाहजहां के बाद दारा हिन्दुस्तान का बादशाह होगा पर दारा को तो शहीदों का बादशाह बनना था, मज़हबे इन्सानियत का रहबर बनना

سرمد کے اِس سوال سے بہت سے روڑھی‌وادی مسلمانوں نے سرمد پر مورتی پوجک ہونے کا الزام لگاکر اُن کی نندا کی ھے اور سرمد کے بہت سے ھندو پرشنسکوں نے انھیں ھندو سمجھ کر اُن کی تعریف کی ھے. لیکن اصلیت یہ ھے کہ وے نندا - استوتی دونوں سے بہت اُونچے اُٹھ گئے تھے . ھندو دھرم اور اِسلام دونوں کے بنیادی اصول اُن کے روم روم میں پیوست تھے . انھیں اللہ اور رسول میں سچ مچ کوئی خطا نہیں دکھائی دی تھی کیونکہ انھوں نے سدا رسول کی تعریف ھی کی ھے. اُوپر کی رباعی میں آزاد خیالی کی وھی جھلک ھے جو ایران کے صوفیوں اور مشہور انگریزی کوی شیلی کی کویتاؤں میں ھمیں ملتی ھے . روڑھیوں میں جکڑی ھوئی دنیا جس چیز کو دھرم کہتی ھے اُس کے مقابلے میں اِن لوگوں نے اپنے آزاد مانو دھرم کو 'کفر' کہ کر پکارا ھے . اِن کا دھرم روڑھیوں سے بوجھل نہیں' پریم کا دھرم ھے . جب مولویوں نے سرمد پر 'دگمبر منی' ھونے الزام لگایا تو سرمد نے جواب دیا—

شاہ شاہانیم زاھد چوں تو عریاں نیستم
ذوق و شوق و شورشم لیکن پریشاں نیستم
بت پرستم کافرم از اہل ایماں نیستم
سوئے مسجد می روم اما مسلماں نیستم

یعنی—

"اے زاھد میں راج راجیشور ھوں' میں تیری طرح ننگا نہیں ھوں؛
میں ذوق' شوق اور شورش ھوں' پر تیری طرح پریشان نہیں ھوں؛
میں مورتی پوجک ھوں' کافر ھوں اور ایمان والوں میں سے نہیں ھوں؛
میں مسجد کی طرف جا رھا ھوں پر میں مسلمان نہیں ھوں!"

سرمد ننگے بھکمنگوں کے بیچ جامع مسجد کی سیڑھیوں کو ھی اپنا گھر بنائے ھوئے تھے پر پھر بھی وہ روڑھی - ارتھوں میں مسلمان نہیں تھے . وے جامع مسجد میں بھی اپنی بت پرستی لے جانا چاھتے تھے .

دلی میں یوراج داراشکوہ نے سرمد کا پریم پوروک سواگت کیا . دارا اُن کی "بےحد عزت کرتے تھے" اور "اکثر اِس دگمبر منی کی سیوا میں حاضر ھوتے تھے ." سرمد اور سرمد کے مشہور ھندو یوگی دوست لال داس کا دارا پر بے اِنتہا اثر پڑا جس کی بدولت دارا کی نظروں سے ھندو اور مسلمان کا فرق مٹ گیا اور دارا کے ھردے سے مانو پریم' مذھب عشق کی وہ دھارا پھوٹی جس نے بھارت کے سماجی آسمان کو یکرنگی بنادیا . دارا نے اپنی مشہور کتاب "مجموعۃالبحرین" (دو سمندروں کے سنگم) میں اِسلامی صوفی واد اور ویدانتی رھسیہ واد کا سندر میل جول کیا ھے . سرمد نے پیشین گوئی کی تھی کہ شاھجہاں کے بعد دارا ھندستان کا بادشاہ ھوگا پر دارا کو تو شہیدوں کا بادشاہ بننا تھا' مذھب اِنسانیت کا رھبر بننا

प्रेम-योगी सरमद   پریم یوگی سرمد

प्रो० मोहम्मद अहसान फ़ारूक़ी एम० ए०

सरमद इसलाम के एक मशहूर और बहुत बड़े सन्त हुए हैं. शहन्शाह अकबर ने जिस 'मज़हबे इनसानी' (मानव धर्म) की बुनियादें रखीं, जिस हिन्दू-मुसलिम एकता का प्रचार किया और मुख़्तलिफ़ संस्कृतियों का जिस एक हिन्दुस्तानी कल्चर के सांचे में ढाला, कला की दुनिया में उसकी सब में सुन्दर मिसाल ताजमहल के रूप में है. उसी युग में जब हिन्दू-मुसलिम एकता की पुख़्ता बुनियाद पड़ रही थीं एक चमकते हुए सितारे की तरह हिन्दुस्तान के आसमान में सन्त सरमद का उदय हुआ.

सरमद जन्म से यहूदी थे. इसलाम क़ुबूल करने के बाद एक सौदागर की हैसियत से वह एक धनी तिजारती क़ाफ़िले के साथ हिन्दुस्तान आये. सिन्ध में ठट्ठा का शहर उस ज़माने में अरब मुल्कों के साथ हिन्दुस्तान की तिजारत का एक बहुत बड़ा मरकज़ था. जिन दिनों सरमद ठट्ठा में ठहरे हुए थे उन्हीं दिनों उनकी एक नौजवान जैन मुनि अभयचन्द के साथ भेंट हुई. अभयचन्द के उपदेशों का उन पर इतना गहरा असर पड़ा कि उन्होंने अपनी तमाम जायदाद ग़रीबों में बांट दी और ख़ुद कपड़ों तक को त्याग कर नग्न दिगम्बर मुनि बनकर हिन्दू और जैन शास्त्रों की गहरी छानबीन और खोज करने में लग गये. सरमद बचपन से ही सत्य के खोजी थी. यहूदी धर्म, ईसाई धर्म, इसलाम और ईरान के सूफ़ी धर्म की उन्होंने गहरी छान-बीन की थी लेकिन किसी से भी उनकी आत्मा को तसल्ली नहीं मिली. भारतीय और जैन दर्शन के अध्ययन ने सरमद के दिल में ज्ञान की ज्वाला जला दी. वह साकार और निराकार, कुफ़्र और इसलाम, पैग़म्बर और लछमनो-राम का सारा भेद भाव भूल गये. उनका हृदय प्रेम के धर्म में शराबोर हो गया. वह हैरान होकर ख़ुद अपने से पूछने लगे—

सरमद बजहां बसे निकों नाम शुदी
अज़ मज़हबे कुफ़्र सूए इसलाम शुदी
आख़िर चे ख़ता दीदी ब अल्लाहो रसूल
सरगश्ता मुरीद लछमनो-राम शुदी

यानी—

"सरमद तूने दुनिया में बहुत नाम कमाया,
मज़हबे-कुफ़्र छोड़कर इसलाम की तरफ़ आया,
आख़िर तूने अल्लाह और रसूल में क्या ख़ता देखी,
कि उन्हें छोड़कर राम और लछमन का भक्त हो गया ?"

پروفیسر محمد احسان فاروقی ایم . اے .

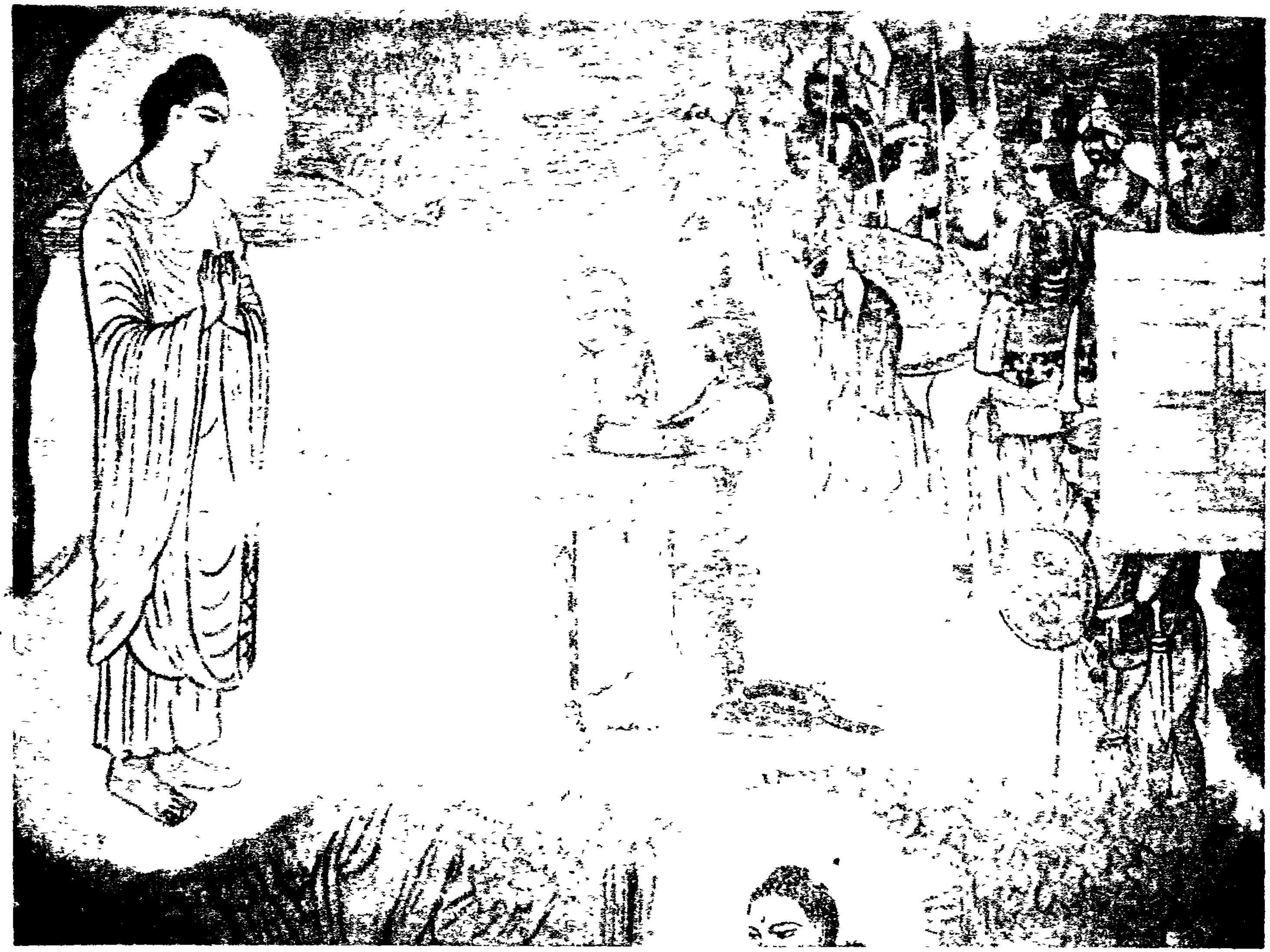
سرمد اسلام کے ایک مشہور اور بہت بڑے سنت ہوئے ہیں . شہنشاہ اکبر نے جس 'مذہب انسانی' (مانو دھرم) کی بنیادیں رکھیں' جس ہندو - مسلم ایکتا کا پرچار کیا اور مختلف سنسکرتیوں کو جس ایک ہندستانی کلچر کے سانچے میں ڈھالا' کلا کی دنیا میں اس کی سب میں سندر مثال تاج محل کے روپ میں ہے . اسی یگ میں جب ہندو - مسلم ایکتا کی پختہ بنیادیں پڑ رہی تھیں ایک چمکتے ہوئے ستارے کی طرح ہندستان کے آسمان میں سنت سرمد کا ادے ہوا .

سرمد جنم سے یہودی تھے . اسلام قبول کرنے کے بعد ایک سوداگر کی حیثیت سے وہ ایک دھنی تجارتی قافلے کے ساتھ ہندستان آئے . سندھ میں ٹھٹھا کا شہر اس زمانہ میں عرب ملکوں کے ساتھ ہندستان کی تجارت کا ایک بہت بڑا مرکز تھا . جن دنوں سرمد ٹھٹھا میں ٹھہرے ہوئے تھے انہیں دنوں ان کی ایک نوجوان جین منی ابھے چند کے ساتھ بھینٹ ہوئی . ابھے چند کے اپدیشوں کا ان پر اتنا گہرا اثر پڑا کہ انہوں نے اپنی تمام جائداد غریبوں میں بانٹ دی اور خود کپڑوں تک کو تیاگ کر ننگ دگمبر منی بنکر ہندو اور جین شاستروں کی گہری چھان بین اور کھوج کرنے میں لگ گئے . سرمد بچپن سے ہی ستیہ کے کھوجی تھے . یہودی دھرم' عیسائی دھرم' اسلام اور ایران کے صوفی دھرم کی انہوں نے گہری چھان بین کی تھی لیکن کسی سے بھی ان کی آتما کو تسلی نہیں ملی . بھارتیہ اور جین - درشن کے ادھین نے سرمد کے دل میں گیان کی جوالا جلا دی . وہ ساکار اور نراکار' کفر اور اسلام' پیغمبر اور لچھمن و رام کا سارا بھید - بھاؤ بھول گئے . ان کا ہردے پریم کے دھرم میں شرابور ہوگیا . وہ حیران ہوکر خود اپنے سے پوچھنے لگے—

سرمد بہ جہاں بسے نکو نام شدی
از مذہب کفر سوئے اسلام شدی
آخر چہ خطا دیدی بہ اللہ و رسول
سرگشتہ مرید لچھمن و رام شدی

یعنی—

"سرمد تونے دنیا میں بہت نام کمایا'
مذہب کفر چھوڑکر اسلام کی طرف آیا'
آخر تونے اللہ اور رسول میں کیا خطا دیکھی'
کہ انہیں چھوڑکر رام اور لچھمن کا بھگت ہوگیا؟"



भगवान बुद्ध की शान्ति की अपील पर लड़ने वाले राजा अपने अपने हथियार डाल रहे हैं.

34772

जनवरी 1955 جنوری

एटम और हाइड्रोजन बम बनाम शान्ति मोरचा—विश्वम्भरनाथ पांडे; एफ्रो-एशियन कान्फ्रेन्स—विश्वम्भरनाथ पांडे; समाजवादी व्यवस्था की ओर—विश्वम्भरनाथ पांडे, इतिहास की नई व्याख्या—विश्वम्भरनाथ पांडे,

ایٹم اور ہائیڈروجن بم بنام شانتی مورچا —وشمبھر ناتھ پانڈے؛ ایفرو - ایشین کانفرنس —وشمبھر ناتھ پانڈے؛ سماجوادی ویوستھا کی اور—وشمبھر ناتھ پانڈے؛ اتہاس کی نئی ویاکھیا—وشمبھر ناتھ پانڈے۔

नया हिन्द نیا ہند

जिल्द 19 جلد   नम्बर 1 نمبر

जनवरी 1955 جنوری

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी ہندستانی کلچر سوسائٹی

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

نیا ہند

इस नम्बर के ख़ास लेख | اس نمبر کے خاص لیکھ

प्रेम योगी सरमद
—प्रो. मो. अ. फ़ारूक़ी

भारत की बिखरी हुई जातियाँ
—डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त

हिन्द मुसलमानों का कलचरी मेल
—डाक्टर लतीफ़ [illegible]

इनसानी भाई चारे का असली रास्ता
—डाक्टर भगवानदास

हिन्दुस्तानी कलचर और नया समाज
—डाक्टर तारा चन्द

[illegible]

कहानी, [illegible]

...स्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद | ...ستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد